

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रन्थ-सूची

[चतुर्थ भाग]

(जयपुर के बारह जैन ग्रंथ भण्डारों में संग्रहीत दस हजार से अधिक ग्रंथों की सूची, १८०
ग्रंथों की प्रशस्तियां तथा ४२ प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों का परिचय सहित)

भूमिका लेखकः—

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल

अध्यक्ष हिन्दी विभाग, काशी विश्व विद्यालय, वाराणसी

सम्पादकः—

डा० कस्तूरचंद कासलीवाल

एम. ए. पी-एच. डी., शास्त्री

पं० अनूपचंद न्यायतीर्थ

साहित्यरत्न



प्रकाशक :—

केशरलाल बरुशी

मंत्री :—

प्रबन्धकारिणी कमेटी

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

महावीर भवन, जयपुर

★ विषय-सूची ★

१ प्रकाशकीय		पत्र संख्या १-२
२ भूमिका		३-४
३ प्रस्तावना		५-२३
४ प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों का परिचय		२४-४८
५ " " विवरण		४९-५६
६ विषय		पत्र संख्या
१ सिद्धान्त एवं चर्चा		१-४७
२ धर्म एवं आचार शास्त्र		४८-६८
३ अध्यात्म एवं योगशास्त्र		६९-१२८
४ न्याय एवं दर्शन		१२९-१४१
५ पुराण साहित्य		१४२-१५६
६ काव्य एवं चरित्र		१६०-२१२
७ कथा साहित्य		२१३-२५६
८ व्याकरण साहित्य		२५७-२७०
९ कोश		२७१-२७८
१० ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान		२७९-२८५
११ आयुर्वेद		२८६-३०७
१२ चन्द्र एवं अलंकार		३०८-३१५
१३ संगीत एवं नाटक		३१६-३१८
१४ लोक विज्ञान		३१९-३२३
१५ सुभाषित एवं नीति शास्त्र		३२४-३४६
१६ मंत्र शास्त्र		३४७-३५२
१७ काम शास्त्र		३५३
१८ शिल्प शास्त्र		३५४

		पत्र संख्या
१६ लक्षण एवं समीक्षा		३५५-३५६
२० फागु रासा एवं वेदित साहित्य		३६०-३६७
२१ गणित शास्त्र		३६८-३६९
२२ इतिहास		३७०-३७८
२३ स्तोत्र साहित्य		३७९-४५२
२४ पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य		४५३-४५६
२५ गुटका संग्रह		४५७-७६६
२६ अवशिष्ट साहित्य		७६६-८००
७ ग्रंथानुक्रमशिका		८०१-८८४
८ ग्रंथ एवं ग्रंथकार		८८५-९२८
९ शासकों की नामावलि		९२९-९३०
१० ग्राम एवं नगरों की नामावलि		९३१-९३६
११ शुद्धाशुद्धि पत्र		९४०-९४३



★ प्रकाशकीय ★

ग्रंथ सूची के चतुर्थ भाग को पाठकों के हाथों में देते हुये मुझे प्रसन्नता होती है। ग्रंथ सूची का यह भाग अब तक प्रकाशित ग्रंथ सूचियों में सबसे बड़ा है और इसमें १० हजार से अधिक ग्रंथों का विवरण दिया हुआ है। इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भंडारों के ग्रंथों की सूची दी गई है। इस प्रकार सूची के चतुर्थ भाग सहित अब तक जयपुर के १७ तथा श्री भद्रावीरजी का एक, इस तरह १८ भंडारों के अनुमानतः २० हजार ग्रंथों का विवरण प्रकाशित किया जा चुका है।

ग्रंथों के संकलन को देखने से पता चलता है कि जयपुर प्रारम्भ से ही जैन साहित्य एवं संस्कृति का केन्द्र रहा है और दिगम्बर शास्त्र भंडारों की दृष्टि से सारे राजस्थान में इसका प्रथम स्थान है। जयपुर बड़े बड़े विद्वानों का जन्म स्थान भी रहा है तथा इस नगर में होने वाले टोडरमल जी, जयचन्द जी, सदासुखजी जैसे भद्रान् विद्वानों ने सारे भारत के जैन समाज का साहित्यिक एवं धार्मिक दृष्टि से पथ-प्रदर्शन किया है। जयपुर के इन भंडारों में विभिन्न विद्वानों के हाथों से लिखी हुई पाण्डुलिपियां प्राप्त हुई हैं जो राष्ट्र एवं समाज की अमूल्य निधियों में से हैं। जयपुर के पाटोदी के मन्दिर के शास्त्र भंडार में ५० टोडरमल जी द्वारा लिखे हुये गोम्मटसार जीवकांड की मूल पाण्डुलिपियां प्राप्त हुई हैं जिसका एक चित्र हमने इस भाग में दिया है। इसी तरह ब्रह्म रायमल्ल, जोधराज गोदीका, कुशालचंद आदि अन्य विद्वानों के द्वारा लिखी हुई प्रतियां हैं।

इस ग्रंथ सूची के प्रकाशन से भारतीय साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य को कितना लाभ पहुँचेगा इसका सही अनुमान तो विद्वान् ही कर सकेंगे किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इस भाग के प्रकाशन से संस्कृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी की सैकड़ों प्राचीन एवं अज्ञात रचनाएँ प्रकाश में आयी हैं। हिन्दी की अभी १३ वीं शताब्दी की एक रचना जिनदत्त चौपई जयपुर के पाटोदी के मन्दिर में उपलब्ध हुई है जिसको संभवतः हिन्दी भाषा की सर्वाधिक प्राचीन रचनाओं में स्थान मिल सकेगा तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास में वह उल्लेखनीय रचना कहलायी जा सकेगी। इसके प्रकाशन की व्यवस्था शीघ्र ही की जा रही है। इससे पूर्व प्रद्युम्न चरित की रचना प्राप्त हुई थी जिसको सभी विद्वानों ने हिन्दी की अमूर्त रचना स्वीकार किया है।

जैन सूची प्रकाशन के अतिरिक्त क्षेत्र के साहित्य शोध संस्थान की ओर से अब तक ग्रंथ सूची के तीन भाग, प्रशस्ति संग्रह, सर्वार्थसिद्धिस्तार, तामिल भाषा का जैन साहित्य, Jainism a key to true happiness तथा प्रद्युम्नचरित आठ ग्रंथों का प्रकाशन हो चुका है। सूची प्रकाशन के अतिरिक्त राजस्थान के विभिन्न नगर, कस्बे एवं गांवों में स्थित ७० से भी अधिक भंडारों की ग्रंथ सूचियां बनायी जा

चुकी हैं जो हमारे संस्थान में हैं, तथा जिनसे विद्वान एवं साहित्य शोध में लगे हुये विद्यार्थी लाभ उठाते रहते हैं। ग्रंथ सूचियों के साथ २ करीब ४०० से भी अधिक महत्वपूर्ण एवं प्रचीन ग्रंथों की प्रशस्तियां एवं परिचय लिखे जा चुके हैं जिन्हें भी पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की योजना है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी पद भी इन भंडारों में प्रचुर संख्या में मिलते हैं। ऐसे करीब २००० पदों का हमने संग्रह कर लिया है जिन्हें भी प्रकाशित करने की योजना है तथा संभव है इस वर्ष हम इसका प्रथम भाग प्रकाशित कर सकें। इस तरह खोज पूर्ण साहित्य प्रकाशन के जिस उद्देश्य से क्षेत्र ने साहित्य शोध संस्थान की स्थापना की थी हमारा वह उद्देश्य धीरे धीरे पूरा हो रहा है।

भारत के विभिन्न विद्यालयों के भारतीय भाषाओं मुख्यतः प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश हिन्दी एवं राजस्थानी भाषाओं पर खोज करने वाले सभी विद्वानों से निवेदन है कि वे प्राचीन साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य पर खोज करने का प्रयास करें। हम भी उन्हें साहित्य उपलब्ध करने में दयाशक्ति सहयोग देंगे।

ग्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के जिन जिन शास्त्र भंडारों की सूची दी गई है मैं उन भंडारों के सभी व्यवस्थापकों का तथा विशेषतः श्री साधूलालजी बज, अनूपचंदजी दीवान, पं० भंवरलालजी न्यायतीर्थ, श्रीराजमलजी गोधा, समीरमलजी आवड़ा, कपूरचंदजी रांबका, एवं प्रो. सुल्तानसिंहजी जैन का आभारी हूँ जिन्होंने हमारे शोध संस्थान के विद्वानों को शास्त्र भंडारों की सूचियां बनाने तथा समय समय पर वहां के ग्रंथों को देखने में पूरा सहयोग दिया है। आशा है भविष्य में भी उनका साहित्य सेवा के पुनीत कार्य में सहयोग मिलता रहेगा।

हम श्री डा० वासुदेव शरणजी अमवाल, हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के हृदय से आभारी हैं जिन्होंने अस्वस्थ होते हुये भी हमारी प्रार्थना स्वीकार करके ग्रंथ सूची की भूमिका लिखने की कृपा की है। भविष्य में उनका प्राचीन साहित्य के शोध कार्य में निर्देशन मिलता रहेगा ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

इस ग्रंथ के विद्वान् सम्पादक श्री डा० कस्तूरचंदजी कासलीवाल एवं उनके सहयोगी श्री पं० अनूपचंदजी न्यायतीर्थ तथा श्री सुगनचंदजी जैन का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने विभिन्न शास्त्र भंडारों को देखकर लगन एवं परिश्रम से इस ग्रंथ को तैयार किया है। मैं जयपुर के सुयोग्य विद्वान् श्री पं० चैन-सुखदासजी न्यायतीर्थ का भी हृदय से आभारी हूँ कि जिनका हमको साहित्य शोध संस्थान के कार्यों में पथ-प्रदर्शन व सहयोग मिलता रहता है।

भूमिका

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी, जयपुर के कार्यकर्त्ताओं ने कुछ ही वर्षों के भीतर अपनी संस्था को भारत के साहित्यिक मानचित्र पर उभरे हुए रूप में टांक दिया है। इस संस्था द्वारा संचालित जैन साहित्य शोध संस्थान का महत्वपूर्ण कार्य सभी विद्वानों का ध्यान हटाने अपनी ओर खींच लेने के लिए पर्याप्त है। इस संस्था को श्री कस्तूरचंद जी कासलीवाल के रूप में एक मौन साहित्य साधक प्राप्त हो गए। उन्होंने अपने संकल्प बल और अद्भुत कार्यशक्ति द्वारा जयपुर एवं राजस्थान के अन्य नगरों में जो शास्त्र भंडार पुराने समय से चले आते हैं, उनकी छान बीन का महत्वपूर्ण कार्य अपने ऊपर चड़ा लिया। शास्त्र भंडारों की जांच पड़ताल करके उनमें संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश, राजस्थानी और हिन्दी के जो अनेकानेक ग्रंथ सुरक्षित हैं, उनकी कतारबद्ध वर्गीकृत और परिचयपूर्ण सूची बनाने का कार्य बिना रुके हुए कितने ही वर्षों तक कासलीवाल जी ने किया है। सौभाग्य से उन्हें अतिशय क्षेत्र के संचालक और प्रबंधकों के रूप में ऐसे सहयोगी मिले जिन्होंने इस कार्य के राष्ट्रीय महत्व को पहचान लिया और सूची पत्रों के विभिन्न प्रकाशन के लिए आर्थिक प्रबंध भी कर दिया। इस प्रकार का मणिकांचन संयोग बहुत ही फलप्रद हुआ। परिचयात्मक सूची ग्रंथों के तीन भाग पड़ले मुद्रित हो चुके हैं। जिनमें लगभग दस सहस्र ग्रंथों का नाम और परिचय आ चुका है। हिन्दी जनतम में इन ग्रंथों का व्यापक स्वागत हुआ और विश्वविद्यालयों में शोध करने वाले विद्वानों को इन ग्रंथों के द्वारा बहुत सी अज्ञात नई सामग्री का परिचय प्राप्त हुआ।

उससे प्रोत्साहित होकर इस शोध संस्थान ने अपने कार्य को और अधिक वेगयुक्त करने का निश्चय किया। उसका प्रत्यक्ष फल ग्रंथ सूची के इस चतुर्थ भाग के रूप में हमारे सामने है। इसमें एक साथ ही लगभग १० सहस्र नए हस्तलिखित ग्रंथों का परिचय दिया गया है। परिचय यद्यपि संक्षिप्त है किन्तु उसके लिखने में विवेक से काम लिया गया है जिससे महत्वपूर्ण या नई सामग्री की ओर शोध कर्त्ता विद्वानों का ध्यान अवश्य आकृष्ट हो सकेगा। ग्रंथ का नाम, ग्रंथकर्त्ता का नाम, ग्रंथ की भाषा, लेखन की तिथि, ग्रंथ पूर्ण है या अपूर्ण इत्यादि तथ्यों का यथा संभव परिचय देते हुए महत्वपूर्ण सामग्री के उद्धरण या अवतरण भी दिये गये हैं। प्रस्तुत सूची पत्र में तीन सौ से ऊपर गुटकों का परिचय भी सम्मिलित है। इन गुटकों में विविध प्रकार की साहित्यिक और जीवनोपयोगी सामग्री का संग्रह किया जाता था। शोध कर्त्ता विद्वान यथावकाश जब इन गुटकों की व्योरेवार परीक्षा करेंगे तो उनमें से साहित्य की बहुत सी नई सामग्री प्राप्त होने की आशा है। ग्रंथ संख्या ५५०६ गुटका संख्या १२५ में भारतवर्ष के भौगोलिक विस्तार का परिचय देते हुए १२४ देशों के नामों की सूची अत्यन्त उपयोगी है। पृथ्वीचंद्र चरित्र आदि वर्णक ग्रंथों में इस प्रकार की और सी भौगोलिक सूचिया मिलती हैं। उनके साथ इस सूची

का तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी होगा। किसी समय इस सूची में ६८ देशों की संख्या रुढ़ हो गई थी। ज्ञात होता है कालान्तर में यह संख्या १२४ तक पहुँच गई। गुटका संख्या २२ (ग्रंथ संख्या ५४०२) में नगरों की बसापत का संयन्वार व्यौरा भी उल्लेखनीय है। जैसे संवत् १६१२ अकबर पातसाह आगरो बसायो : संवत् १७१४ औरंगज़ाह पातसाह औरंगाबाद बसायो : संवत् १२४५ विमल मंत्री स्वर हुवा विमल बसाई।

विकास की उन पिछली शक्तियों में हिन्दी साहित्य के कितने विविध साहित्य रूप थे यह भी अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण विषय है। इस सूची को देखते हुये उनमें से अनेक नाम सामने आते हैं। जैसे स्तोत्र, पाठ, संग्रह, कथा, रासो, रास, पूजा, मंगल, जयमाल, प्रश्नोत्तरी, मंत्र, अष्टक, सार, समुच्चय, वर्णन, सुभाषित, चौपई, शुभमालिका, निशाणी, जकड़ी, व्याहलो, बधावा, चिनती, पत्री, आरती, बोल, चरचा, विचार, बात, गीत, लीला, चरित्र, छंद, छाप्य, भावना, बिनोद, कल्प, नाटक, प्रशस्ति, धमाल, चौडालिया, चौमासिया, बारासा, बढोई, बेलि, हिंदोलणा, चूतडी, सज्माय, बाराखड़ी, भक्ति, वन्दना, पञ्चीसी, बत्तीसी, पचासा, बावनी, सतसई, सामायिक, सहस्रनाम, नामावली, गुरुवावली, स्तवन, संवोधन, सोडलो आदि। इन विविध साहित्य रूपों में से किसका कब आरम्भ हुआ और किस प्रकार विकास और विस्तार हुआ, यह शोध के लिये रोचक विषय है। उसकी बहुमूय सामग्री इन भंडारों में सुरक्षित है।

राजस्थान में कुल शास्त्र भंडार लगभग दो सौ हैं और उनमें संचित ग्रंथों की संख्या लगभग दो लाख के आंकी जाती है। हर्ष की बात है कि शोध संस्थान के कार्यकर्ता इस भारी दायित्व के प्रति-जानरूक हैं। पर स्वभावतः यह कार्य दीर्घकालीन साहित्यिक साधना और बहुव्यय की अपेक्षा रखता है। जिस प्रकार अपने देश में पूना का भंडारकर इन्स्टीट्यूट, तंजोर की सरस्वती महल लाइब्रेरी, मद्रास विश्वविद्यालय की ओरियन्टल मेनस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी या कलकत्ते की बंगाल एशियाटिक सोसाइटी का ग्रंथ भंडार हस्तलिखित ग्रंथों को प्रकाश में लाने का कार्य कर रहे हैं और उनके कार्य के महत्व को मुक्त कंठ से सभी स्वीकार करते हैं, आशा है कि उसी प्रकार महवीर अतिशय क्षेत्र के जैन साहित्य शोध संस्थान के कार्य की ओर भी जनता और शासन दोनों का ध्यान शीघ्र आकृष्ट होगा और यह संस्था जिस सहायता की पात्र है, वह उसे सुलभ की जायगी। संस्था ने अब तक अपने साधनों से बड़ा कार्य किया है, किन्तु जो कार्य शेष हैं वह कहीं अधिक बड़ा है और इसमें संदेह नहीं कि अवश्य करने योग्य है। ११ वीं शती से १६ वीं शती के मध्य तक जो साहित्य रचना होती रही उसकी मंचित निधि का कुबेर जैसा समृद्ध कोष ही हमारे सामने आ गया है। आज से केवल १५ वर्ष पूर्व तक इन भंडारों के अस्तित्व का पता बहुत कम लोगों को था और उनके संबंध में ज्ञान बिन का कार्य तो कुछ हुआ ही नहीं था। इस सबको देखते हुये इस संस्था के महत्वपूर्ण कार्य का व्यापक स्वागत किया जाना चाहिये।

प्रस्तावना

राजस्थान शताब्दियों से साहित्यिक क्षेत्र रहा है। राजस्थान की रियासतें यद्यपि विभिन्न राजाओं के अधीन थीं जो आपस में भी लड़ा करती थीं फिर भी इन राज्यों पर देहली का सीधा सम्पर्क नहीं रहने के कारण यहां अधिक राजनीतिक उथल पुथल नहीं हुई और सामान्यतः यहां शान्ति एवं व्यवस्था बनी रही। यहां राजा महाराजा भी अपनी प्रजा के सभी धर्मों का समादर करते रहे इसलिये उनके शासन में सभी धर्मों को स्वतन्त्रता प्राप्त थी।

जैन धर्मानुयायी सदैव शान्तिप्रिय रहे हैं। इनका राजस्थान के सभी राज्यों में तथा विशेषतः जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, उदयपुर, बूंदी, कोटा, अलवर, भरतपुर आदि राज्यों में पूर्ण प्रभुत्व रहा। शताब्दियों तक वहां के शासन पर उनका अधिकार रहा और वे अपनी स्वामिभक्ति, शासनदक्षता एवं सेवा के कारण सदैव ही शासन के सर्वोच्च स्थानों पर कार्य करते रहे।

प्राचीन साहित्य की सुरक्षा एवं नवीन साहित्य के निर्माण के लिये भी राजस्थान का वातावरण जैनों के लिये बहुत ही उपयुक्त सिद्ध हुआ। यहां के शासकों ने एवं समाज के सभी वर्गों ने उस ओर बहुत ही रुचि दिखायी इसलिये सैकड़ों की संख्या में नये नये ग्रंथ तैयार किये गये तथा हजारों प्राचीन ग्रंथों की प्रतिलिपियां तैयार करवा कर उन्हें नष्ट होने से बचाया गया। आज भी हस्तलिखित ग्रंथों का जितना सुन्दर संग्रह नागौर, बीकानेर, जैसलमेर, अजमेर, आमेर, जयपुर, उदयपुर, ऋषभदेव के ग्रंथ भंडारों में मिलता है उतना महत्वपूर्ण संग्रह भारत के बहुत कम भंडारों में मिलेगा। ताड़पत्र एवं कागज दोनों पर लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रतियां इन्हीं भंडारों में उपलब्ध होती हैं। यही नहीं अपभ्रंश, हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा का अधिकांश साहित्य इन्हीं भंडारों में संग्रहीत किया हुआ है। अपभ्रंश साहित्य के संग्रह की दृष्टि से नागौर एवं जयपुर के भंडार उल्लेखनीय हैं।

अजमेर, नागौर, आमेर, उदयपुर, डूंगरपुर एवं ऋषभदेव के भंडार भट्टारकों की साहित्यिक गतिविधियों के केन्द्र रहे हैं। ये भट्टारक केवल धार्मिक नेता ही नहीं थे किन्तु इनकी साहित्य रचना एवं उनकी सुरक्षा में भी पूरा हाथ था। ये स्थान स्थान पर भ्रमण करते थे और वहां से ग्रंथों को बटोर कर इनको अपने मुख्य मुख्य स्थानों पर संग्रह किया करते थे।

शास्त्र भंडार सभी आकार के हैं कोई छोटा है तो कोई बड़ा। किसी में केवल स्वाध्याय में काम आने वाले ग्रंथ ही संग्रहीत किये हुये होते हैं तो किसी किसी में सब तरह का साहित्य मिलता है। साधारणतः हम इन ग्रंथ भंडारों को ४ श्रेणियों में बांट सकते हैं।

१. पांच हजार ग्रंथों के संग्रह वाले शास्त्र भंडार
२. पांच हजार से कम एवं एक हजार से अधिक ग्रंथ वाले शास्त्र भंडार

३. एक हजार से कम एवं पांचसौ से अधिक ग्रंथ वाले शास्त्र भंडार
४. पांचसौ ग्रंथों से कम वाले शास्त्र भंडार

इन शास्त्र भंडारों में केवल धार्मिक साहित्य ही उपलब्ध नहीं होता किन्तु काव्य, पुराण, ज्योतिष, आयुर्वेद, गणित आदि विषयों पर भी ग्रंथ मिलते हैं। प्रत्येक मानव की रुचि के विषय, कथा कहानी एवं नाटक भी इनमें अच्छी संख्या में उपलब्ध होते हैं। यही नहीं, सामाजिक राजनीतिक एवं अर्थशास्त्र पर भी ग्रंथों का संग्रह मिलता है। कुछ भंडारों में जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये अलभ्य ग्रंथ भी संग्रहीत किये हुये मिलते हैं। ये शास्त्र भंडार खोज करने वाले विद्यार्थियों के लिये शोध संस्थान हैं लेकिन भंडारों में साहित्य की इतनी अमूल्य सम्पत्ति होते हुये भी कुछ वर्षों पूर्व तक ये विद्वानों के पहुँच के बाहर रहे। अब कुछ समय बदला है और भंडारों के व्यवस्थापक ग्रंथों के दिखलाने में उतनी आना-कानी नहीं करते हैं। यह परिवर्तन वास्तव में खोज में लीन विद्वानों के लिये शुभ है। आज के २० वर्ष पूर्व तक राजस्थान के ६० प्रतिशत भंडारों को न तो किसी जैन विद्वान ने देखा और न किसी जैन विद्वान ने इन भंडारों के महत्व को जानने का प्रयास ही किया। अब गत १०, १५ वर्षों से इधर कुछ विद्वानों का ध्यान आकृष्ट हुआ है और सर्व प्रथम हमने राजस्थान के ७५ के करीब भंडारों को देखा है और शेष भंडारों को देखने की योजना बनाई जा चुकी है।

ये ग्रंथ भंडार प्राचीन युग में पुस्तकालयों का काम भी देते थे। इनमें बैठ कर स्वाध्याय प्रेमी शास्त्रों का अध्ययन किया करते थे। उस समय इन ग्रंथों की सूत्रियां भी उपलब्ध हुआ करती थी तथा ये ग्रंथ लकड़ी के पुट्टों के बीच में रखकर सूत अथवा सिल्क के कीतों से बांधे जाते थे। फिर उन्हें कपड़े के वेष्टनों में बांध दिया जाता था। इस प्रकार ग्रंथों के वैज्ञानिक रीति से रखे जाने के कारण इन भंडारों में ११ वीं शताब्दी तक के लिखे हुये ग्रंथ पाये जाते हैं।

जैसा कि पहिले कहा जा चुका है कि ये ग्रंथ भंडार नगर कस्बे एवं गांवों तक में पाये जाते हैं इसलिये राजस्थान में उनकी वास्तविक संख्या कितनी है इसका पता लगाना कठिन है। फिर भी यहां अनुमानतः छोटे बड़े २०० भंडार होंगे जिनमें ११, २ लाख से अधिक हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है।

जयपुर प्रारम्भ से ही जैन संस्कृति एवं साहित्य का केन्द्र रहा है। यहां १५० से भी अधिक जिन मंदिर एवं चैत्यालय हैं। इस नगर की स्थापना संवत् १७८४ में महाराजा सवाई जयसिंहजी द्वारा की गई थी तथा उसी समय आमेर के बजाय जयपुर को राजधानी बनाया गया था। महाराजा ने इसे साहित्य एवं कला का भी केन्द्र बनाया तथा एक राज्यकीय पोथीखाने की स्थापना की जिसमें भारत के विभिन्न स्थानों से लाये गये सैकड़ों महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रंथ संग्रहीत किये हुये हैं। यहां के महाराजा प्रतापसिंहजी भी विद्वान थे। इन्होंने कितने ही ग्रंथ लिखे थे। इनका लिखा हुआ एक ग्रंथ संगीतसार जयपुर के बड़े मन्दिर के शास्त्र भंडार में संग्रहीत है।

१८ वीं एवं १९ वीं शताब्दी में जयपुर में अनेक उच्च कोटि के विद्वान् हुये जिन्होंने साहित्य की अपार सेवा की। इनमें दौलतराम कासलीवाल (१८ वीं शताब्दी) टोडरमल (१८ वीं शताब्दी) गुमानीराम (१८, १९ वीं शताब्दी) टेकचन्द (१८ वीं शताब्दी) दीपचन्द कासलीवाल (१८ वीं शताब्दी) जयचन्द्र छाबड़ा (१९ वीं शताब्दी) केशरीसिंह (१९ वीं शताब्दी) नेमिचन्द पाटनी (१९ वीं शताब्दी) नन्दलाल छाबड़ा (१९ वीं शताब्दी) स्वरूपचन्द विलास (१९ वीं शताब्दी) सदासुख कासलीवाल (१९ वीं शताब्दी) मन्नालाल खिन्टूका (१९ वीं शताब्दी) पारसदास निगोत्या (१९ वीं शताब्दी) जैतराम (१९ वीं शताब्दी) पन्नालाल चौधरी (१९ वीं शताब्दी) दुलीचन्द (१९ वीं शताब्दी) आदि विद्वानों के नाम उल्लेखनीय हैं। इनमें अधिकांश हिन्दी के विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी के प्रचार के लिये सैकड़ों प्राकृत एवं संस्कृत ग्रंथों पर भाषा टीका लिखी थी। इन विद्वानों ने जयपुर में ग्रंथ भण्डारों की स्थापना की तथा उनमें प्राचीन ग्रंथों की लिपियां करके विराजमान की। इन विद्वानों के अतिरिक्त यहां सैकड़ों लिपिकार हुये जिन्होंने भावकों के अनुरोध पर सैकड़ों ग्रंथों की लिपियां की तथा नगर के विभिन्न भण्डारों में रखी गई।

ग्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भण्डारों के ग्रंथों का विवरण दिया गया है ये सभी शास्त्र भण्डार यहां के प्रमुख शास्त्र भण्डार हैं और इनमें दस हजार से भी अधिक ग्रंथों का संग्रह है। महत्वपूर्ण ग्रंथों के संग्रह की दृष्टि से अ, ज तथा ज्ञ भण्डार प्रमुख हैं। ग्रंथ सूची में आये हुये इन भण्डारों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

१. शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पाटोदी (अ भण्डार)

यह भण्डार दि० जैन पाटोदी के मन्दिर में स्थित है जो जयपुर की चौकड़ी मोदीग्रामा में है। यह मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध जैन पंचायती मन्दिर है। इसका प्रारम्भ में 'आदिनाथ चैत्यालय' भी नाम था। लेकिन बाद में यह पाटोदी का मन्दिर के नाम से ही कहलाया जाने लगा। इस मन्दिर का निर्माण जोधराज पाटोदी द्वारा कराया गया था। लेकिन मन्दिर के निर्माण की निश्चित तिथि का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। फिर भी यह अवश्य कहा जा सकता है कि इसका निर्माण जयपुर नगर की स्थापना के साथ हुआ था। मन्दिर निर्माण के पश्चात् यहां शास्त्र भण्डार की स्थापना हुई। इसलिये यह शास्त्र भण्डार २०० वर्ष से भी अधिक पुराना है।

मन्दिर प्रारम्भ से ही भट्टारकों का केन्द्र बना रहा तथा आमेर के भट्टारक भी यहीं आकर रहने लगे। भट्टारक हेमचन्द्रकीर्ति, सुरेन्द्रकीर्ति, सुखेन्द्रकीर्ति एवं नरेन्द्रकीर्ति का क्रमशः संवत् १८१४,

१८२२, १८६३, तथा १८७६ में यहीं पट्टाभिषेक^१ हुआ था। इस प्रकार इनका इस मन्दिर से करीब १०० वर्ष तक सीधा सम्पर्क रहा।

प्रारम्भ में यहां का शास्त्र भंडार भट्टारकों की देख रेख में रहा इसलिये शास्त्रों के संग्रह में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती रही। यहां शास्त्रों की लिखने लिखवाने की भी अच्छी व्यवस्था थी इसलिये श्रावकों के अनुरोध पर यहीं ग्रंथों की प्रतिलिपियां भी होती रहती थी। भट्टारकों का जब प्रभाव क्षीण होने लगा तथा जब वे साहित्य की ओर अपेक्षा दिखलाने लगे तो यहां के भंडार की व्यवस्था श्रावकों ने संभाल ली। लेकिन शास्त्र भंडार में संग्रहीत ग्रंथों को देखने के पश्चात् यह पता चलता है कि श्रावकों ने शास्त्र भंडार के ग्रंथों की संख्या वृद्धि में विशेष अभिरुचि नहीं दिखलाई और उन्होंने भंडार को उसी अवस्था में सुरक्षित रखा।

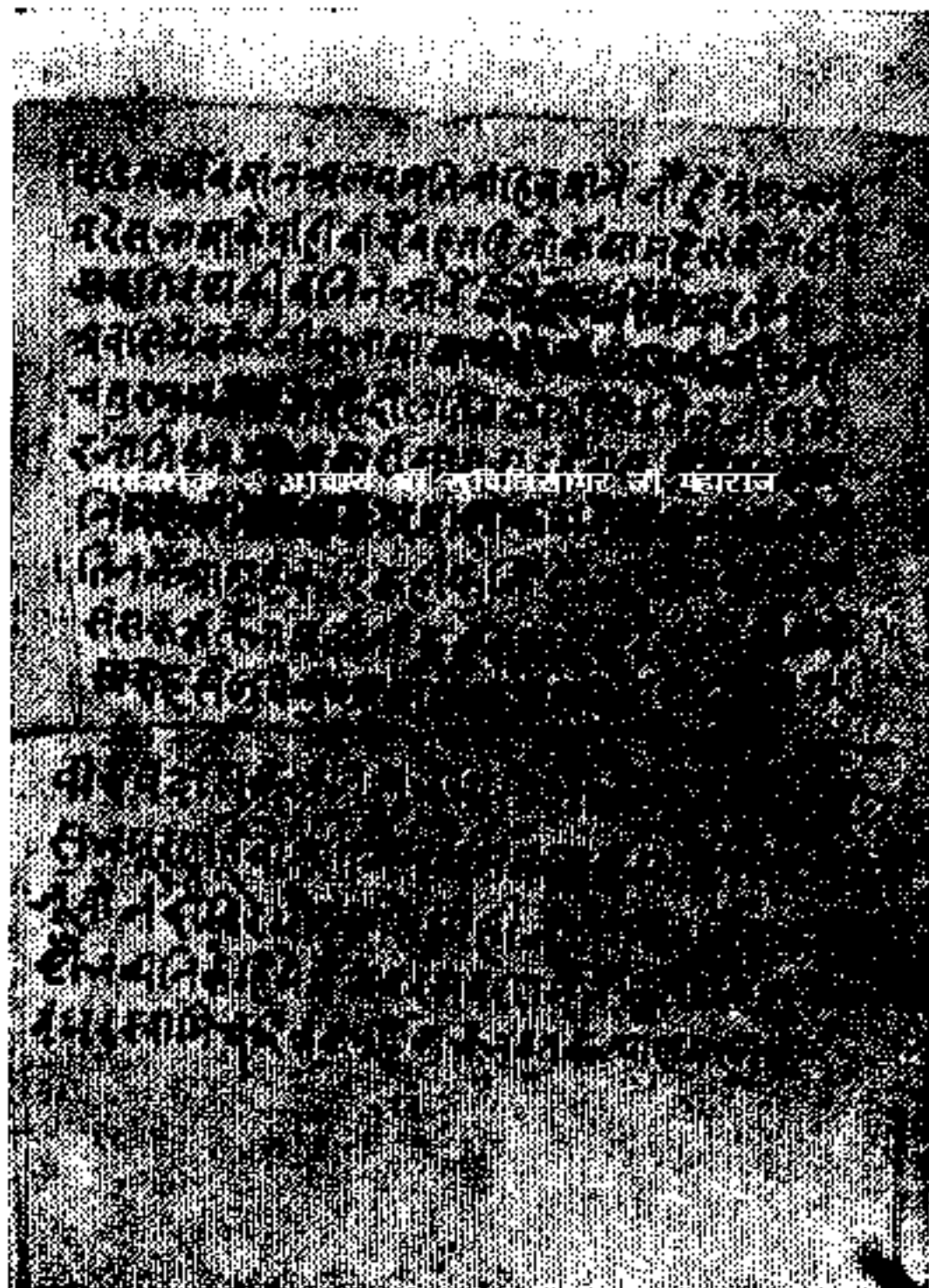
हस्तलिखित ग्रंथों की संख्या

भंडार में शास्त्रों की कुल संख्या २२५७ तथा गुटकों की संख्या ३०८ है। लेकिन एक एक गुटके में बहुत से ग्रंथों का संग्रह होता है इसलिये गुटकों में १८०० से भी अधिक ग्रंथों का संग्रह है। इस प्रकार इस भंडार में चार हजार ग्रंथों का संग्रह है। भक्तासर, स्तोत्र एवं तत्त्वार्थसूत्र की एक एक ताडपत्रीय प्रति को छोड़ कर शेष सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। इसी भंडार में कपडे पर लिखे हुये कुछ जम्बूद्वीप एवं अढाईद्वीप के चित्र एवं यन्त्र, मंत्र आदि का उल्लेखनीय संग्रह है।

भंडार में महाकवि पुष्पदन्त कृत जसहर चरित (यशोधर चरित) की प्रति सबसे प्राचीन है जो संवत् १४०७ में चन्द्रपुर दुर्ग में लिखी गई थी। इसके अतिरिक्त यहां १५ वीं, १६ वीं, १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दी में लिखे हुये ग्रंथों की संख्या अधिक है। प्राचीन प्रतियों में गोम्मटसार जीवकांड, तत्त्वार्थसूत्र (सं० १४५८) द्रव्यसंग्रह वृत्ति (ब्रह्मदेव-सं० १६३५), उपासकाचार दोहा (सं० १५५५), धर्मसंग्रह श्रावकाचार (संवत् १५४२) श्रावकाचार (गुणभूषणाचार्य संवत् १५६२,) समयसार (१५६४), विश्वानन्द कृत अष्टसहस्री (१७६१) उत्तरपुराण टिप्पण प्रभाचन्द (सं० १५७५) शान्तिनाथ पुराण (अशोककवि सं. १५५२) ऐमिणाह चरित (लक्ष्मण देव सं. १६३६) नागकुमार चरित्र (मल्लिषेण कवि सं. १५६४) वरांग चरित्र (वर्द्धमान देव सं. १५६४) नवकार श्रावकाचार (सं० १६१२) आदि सैकड़ों ग्रंथों की उल्लेखनीय प्रतियां हैं। ये प्रतियां सम्पादन कार्य में बहुत लाभप्रद सिद्ध हो सकती हैं।

विभिन्न विषयों से सम्बन्धित ग्रंथ

शास्त्र भंडार में प्रायः सभी विषयों के ग्रंथों का संग्रह है। फिर भी पुराण, चरित्र, काव्य, कथा, व्याकरण, आयुर्वेद के ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। पूजा एवं स्तोत्र के ग्रंथों की संख्या भी पर्याप्त



पं० दौलतरामजी कासलीवाल कृत जीवन्धर चरित्र की
मूल पाण्डुलिपि के दो पत्र

है। गुटकों में स्तोत्रों एवं कथाओं का अच्छा संग्रह है। आयुर्वेद के सैकड़ों नुसखे इन्हीं गुटकों में लिखे हुये हैं जिनका आयुर्वेदिक विद्वानों द्वारा अध्ययन किया जाना आवश्यक है। इसी तरह विभिन्न जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी पदों का भी इन गुटकों में एवं स्वतन्त्र रूप से बहुत अच्छा संग्रह मिलता है। हिन्दी के प्रायः सभी जैन कवियों ने हिन्दी में पद लिखे हैं जिनका अभी तक हमें कोई परिचय नहीं मिलता है। इसलिये इस दृष्टि से भी गुटकों का संग्रह महत्वपूर्ण है। जैन विद्वानों के पद आध्यात्मिक एवं स्तुति परक दोनों ही हैं और उनकी तुलना हिन्दी के अच्छे से अच्छे कवि के पदों से की जा सकती है। जैन विद्वानों के अतिरिक्त कबीर, सूरदास, मल्लकराम, आदि कवियों के पदों का संग्रह भी इस भंडार में मिलता है।

अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथ

शास्त्र भंडार में संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा में लिखे हुये सैकड़ों अज्ञात ग्रंथ प्राप्त हुये हैं जिनमें से कुछ ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय आगे दिया गया है। संस्कृत भाषा के ग्रंथों में व्रतकथा कोष (सकलकीर्ति एवं देवेन्द्रकीर्ति) आशाधर कृत भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र की संस्कृत टीका एवं रत्नत्रय विधि भट्टारक सकलकीर्ति का परमात्मराज स्तोत्र, भट्टारक प्रभाचंद्र का मुनिसुव्रत छंद, आशाधर के शिष्य विनयचंद्र की भूपालचतुर्विंशति स्तोत्र की टीका के नाम उल्लेखनीय हैं। अपभ्रंश भाषा के ग्रंथों में लक्ष्मण देव कृत ऐमिणाह चरित, नरसेन की जिनरात्रिविधान कथा, मुनिगुणभद्र का रोहिणी विधान एवं दशलक्ष्ण कथा, विमल सेन की सुगंधदशमीकथा अज्ञात रचनाएँ हैं। हिन्दी भाषा की रचनाओं में रत्न कविकृत जिनदत्त चौपई (सं. १३५४) मुनिसकलकीर्ति की कर्मचूरिवेलि (१७ वीं शताब्दी) ब्रह्म गुलाल का समोशरणवर्णन, (१७ वीं शताब्दी) विश्वभूषण कृत पार्श्वनाथ चरित्र, कृपाराम का ज्योतिष सार, पृथ्वीराज कृत कृष्णरुक्मिणीवेलि की हिन्दी गद्य टीका, बूचराज का भुवनकीर्ति गीत, (१७ वीं शताब्दी) विहारी सतसई पर हरिचरणदास की हिन्दी गद्य टीका, तथा उनका ही कविवल्लभ ग्रंथ, पद्मभगत का कृष्णरुक्मिणीमंगल, हीरकवि का सागरदत्त चरित (१७ वीं शताब्दी) कल्याणकीर्ति का चारुदत्त चरित, हरिवंश पुराण की हिन्दी गद्य टीका आदि ऐसी रचनाएँ हैं जिनके सम्वन्ध में हम पहिले अन्धकार में थे। जिनदत्त चौपई १३ वीं शताब्दी की हिन्दी पद्य रचना है और अब तक उपलब्ध सभी रचनाओं से प्राचीन है। इसी प्रकार अन्य सभी रचनाएँ महत्वपूर्ण हैं। ग्रंथ भंडार की दशा संतोषप्रद है। अधिकांश ग्रंथ वेष्टनों में रखे हुये हैं।

२. बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार (क भंडार)

बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार वि० जैन बड़ा तेरहपंथी मन्दिर में स्थित है। इस मन्दिर में वीं शास्त्र भंडार है जिनमें एक शास्त्र भंडार की ग्रंथ सूची एवं उसका परिचय ग्रंथसूची द्वितीय भाग में

दे दिया गया है। दूसरा शास्त्र भंडार इसी मन्दिर में बाबा दुलीचन्द द्वारा स्थापित किया गया था इस लिये इस भंडार को उन्हीं के नाम से पुकारा जाता है। दुलीचन्दजी जयपुर के मूल निवासी नहीं थे किन्तु वे महाराष्ट्र के पूना जिले के फलटन नामक स्थान के रहने वाले थे। वे जयपुर हस्तलिखित शास्त्रों के साथ यात्रा करते हुये आये और उन्होंने शास्त्रों की सुरक्षा की दृष्टि से जयपुर को उचित स्थान जानकर यहीं पर शास्त्र संग्रहालय स्थापित करने का निश्चय कर लिया।

इस शास्त्र भंडार में ८५० हस्तलिखित ग्रंथ हैं जो सभी दुलीचन्दजी द्वारा स्थान स्थान की यात्रा करने के पश्चात् संग्रहीत किये गये थे। इनमें से कुछ ग्रंथ स्वयं बाबाजी द्वारा लिखे हुये हैं तथा कुछ श्रावकों द्वारा उन्हें प्रदान किये हुये हैं। वे एक जैन साधु के समान जीवन यापन करते थे। ग्रंथों की सुरक्षा, लेखन आदि ही उनके जीवन का एक मात्र उद्देश्य था। उन्होंने सारे भारत की तीन बार यात्रा की थी जिसका विस्तृत वर्णन जैन यात्रा दर्पण में लिखा है। वे संस्कृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा उन्होंने १५ से भी अधिक ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद किया था जो सभी इस भंडार में संग्रहीत हैं।

यह शास्त्र भंडार पूर्णतः व्यवस्थित है तथा सभी ग्रंथ अलग अलग चेष्टनों में रखे हुये हैं। एक एक ग्रंथ तीन तीन एवं कोई कोई तो चार चार चेष्टनों में बंधा हुआ है। शास्त्रों की ऐसी सुरक्षा जयपुर के किसी भंडार में नहीं मिलेगी। शास्त्र भंडार में मुख्यतः संस्कृत एवं हिन्दी के ग्रंथ हैं। हिन्दी के ग्रंथ अधिकांशतः संस्कृत ग्रंथों की भाषा टीकायें हैं। वैसे तो प्रायः सभी विषयों पर यहां ग्रंथों की प्रतियां मिलती हैं लेकिन मुख्यतः पुराण, कथा, चरित, धर्म एवं सिद्धान्त विषय से संबंधित ग्रंथों ही का यहां अधिक संग्रह है।

भंडार में आप्तमीमांसातत्त्वति (आः विद्यानन्दि) की सुन्दर प्रति है। क्रियाकलाप टीका की संवत् १५३४ की लिखी हुई प्रति इस भंडार की सबसे प्राचीन प्रति है जो मांडवगढ़ में सुल्तान गया-सुदीन के राज्य में लिखी गई थी। तत्त्वार्थसूत्र की स्वर्णमयी प्रति दर्शनीय है। इसी तरह यहां गोम्मटसार, त्रिलोकसार आदि कितने ही ग्रंथों की सुन्दर सुन्दर प्रतियां हैं। ऐसी अच्छी प्रतियां कदाचित् ही दूसरे भंडारों में देखने को मिलती हैं। त्रिलोकसार की सचित्र प्रति है तथा इतनी बारीक एवं सुन्दर लिखी हुई है कि वह देखते ही बनती है। पन्नालाल चौधरी के द्वारा लिखी हुई डालूराम कृत द्वादशांग पूजा की प्रति भी (सं० १८७६) दर्शनीय ग्रंथों में से है।

१६ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान् पं० पन्नालालजी संधी का अधिकांश साहित्य यहां संग्रहीत है। इसी तरह भंडार के संस्थापक दुलीचन्द की भी यहां सभी रचनायें मिलती हैं। उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों में अल्हू कवि का प्राकृतछन्दकोष, विनयचन्द की द्विसंधान काव्य टीका, बादिचन्द्र सूरि का पवनदूत काव्य, हानार्णव पर नयविलास की संस्कृत टीका, गोम्मटसार पर सकलभूषण एवं धर्मचन्द की संस्कृत टीकायें हैं। हिन्दी रचनाओं में देवीसिंह छावडा कृत

उपदेशरत्नमाला भाषा (सं० १७६६) हरिकिशन का भद्रबाहु चरित (सं० १७८७) दत्तपति जैसवाल की मन-मोदन पंचविंशति भाषा (सं० १६१६) के नाम उल्लेखनीय हैं। इस भंडार में हिन्दी पदोंका भी अच्छा संग्रह है। इन कवियों में माणकचन्द, हीराचंद, दौलतराम, भागचन्द, मंगलचन्द, एवं जयचन्द छाबड़ा के हिन्दी पद उल्लेखनीय हैं।

३. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोबनेर (ख भंडार)

यह शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोबनेर में स्थापित है जो खेजडे का रास्ता, चांदपोल बाजार में स्थित है। यह मन्दिर कब बना था तथा किसने बनवाया था इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है लेकिन एक ग्रंथ प्रशस्ति के अनुसार मन्दिर की मूल नायक प्रतिमा पं० पन्नालाल जी के समय में स्थापित हुई थी। पंडितजी जोबनेर के रहने वाले थे तथा इनके लिखे हुए जलहोयविमान, धर्मचक्र पूजा आदि ग्रंथ भी इस भंडार में मिलते हैं। इनके द्वारा लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रति संवत् १६२२ की है।

शास्त्र भंडार में ग्रंथ संग्रह करने में पहिले पं० पन्नालालजी का तथा फिर उन्हीं के शिष्य पं० बख्तावरलाल जी का विशेष सहयोग रहा था। दोनों ही विद्वान ज्योतिष, आयुर्वेद, मंत्रशास्त्र, पूजा साहित्य के संग्रह में विशेष अभिरुचि रखते थे इसलिये यहां इन विषयों के ग्रंथों का अच्छा संकलन है। भंडार में ३४० ग्रंथ हैं जिनमें २३ गुटके भी हैं। हिन्दी भाषा के ग्रंथों से भी भंडार में संस्कृत के ग्रंथों की संख्या अधिक है जिससे पता चलता है कि ग्रंथ संग्रह करने वाले विद्वानों का संस्कृत से अधिक प्रेम था।

भंडार में १७ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी के ग्रंथों की अधिक प्रतियां हैं। सबसे प्राचीन प्रति पद्मनन्दिपंचविंशति की है जिसकी संवत् १५७८ में प्रतिलिपि की गई थी। भंडार के उल्लेखनीय ग्रंथों में पं० आशाधर की आराधनासार टीका एवं नागौर के भट्टारक ज्ञेमेन्द्रकीर्ति कृत राजपंथामंडलपूजन उल्लेखनीय ग्रंथ हैं। आशाधर ने आराधनासार की यह वृत्ति अपने शिष्य मुनि विनयचंद के लिये की थी। प्रेमी जी ने इस टीका को जैन साहित्य एवं इतिहास में अप्राप्य लिखा है। रघुवंश काव्य की भंडार में सं० १६८० की अच्छी प्रति है।

हिन्दी ग्रंथों में शांतिकुशल का अंजनारास एवं पृथ्वीराज का रुक्मिणी विवाहलो उल्लेखनीय ग्रंथ हैं। यहां बिहारी सतसई की एक ऐसी प्रति है जिसके सभी पृष्ठ वर्ण क्रमानुसार लिखे हुये हैं। मानसिंह का मानविनोद भी आयुर्वेद विषय का अच्छा ग्रंथ है।

४. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर (ग भंडार)

यह मन्दिर बोंली के कुआ के पास चौकड़ी मोदीखाना में स्थित है पहिले यह 'नेमिनाथ के मंदिर' के नाम से भी प्रसिद्ध था लेकिन वर्तमान में यह चौधरियों के चैत्यालय के नाम से प्रसिद्ध है। यहां छोटा

सा शास्त्र भंडार है जिसमें केवल १०८ हस्तलिखित ग्रंथ हैं। इनमें ७५ हिन्दी के तथा शेष संस्कृत भाषा के ग्रंथ हैं। संग्रह सामान्य है तथा प्रतिदिन स्वाध्याय के उपयोग में आने वाले ग्रंथ हैं। शास्त्र भंडार करीब १४० वर्ष पुराना है। कालुरामजी साहू यहां उत्साही सज्जन हो गये हैं जिन्होंने कितने ही ग्रंथ लिखवाकर शास्त्र भंडार में विराजमान किये थे। इनके द्वारा लिखवाये हुये ग्रंथों में पं. जयचन्द्र खन्ना कृत ध्यानाष्टाव भाषा (सं. १८२२) सुशालचन्द्र कृत त्रिलोकसार भाषा (सं० १८८४) दौलतरामजी कासलीवाल कृत आदि पुराण भाषा सं. १८८६ एवं दीनर ठोलिया कृत होलिका चरित (सं. १८८६) के नाम उल्लेखनीय हैं। भंडार व्यवस्थित है।

४. शास्त्र भंडार दि. जैन नया मन्दिर बैराठियों का जयपुर (घ भंडार)

‘घ’ भंडार जौहरी बाजार मोतीसिंह भोसियों के रास्ते में स्थित नये मन्दिर में संग्रहीत है। यह मन्दिर बैराठियों के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। शास्त्र भंडार में १५० हस्तलिखित ग्रंथ हैं जिनमें बीरनन्दि कृत चन्द्रप्रभ चरित की प्रति सबसे प्राचीन है। इसे संवत् १५२४ भाद्रपद शुद्ध ७ के दिन लिखा गया था। शास्त्र संग्रह की दृष्टि से भंडार छोटा ही है किन्तु इसमें कितने ही ग्रंथ उल्लेखनीय हैं। प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों में गुणभद्राचार्य कृत उत्तर पुराण (सं० १६०६,) ब्रह्मजिनदास कृत हरिवंश पुराण (सं० १६४१,) दीपचन्द्र कृत ज्ञानदर्पण एवं लोकसेन कृत दशलक्षणकथा की प्रतियां उल्लेखनीय हैं। श्री राजहंसोपाध्याय की पञ्चदशशतक की टीका संवत् १५७६ के ही अगहन मास की लिखी हुई है। ब्रह्मजिनदास कृत अष्टावीस मूलगुणरास एवं दान कथा (हिन्दी) तथा ब्रह्म अजित का हंसतिलकरास उल्लेखनीय ग्रंथों में हैं। भंडार में ऋषिमंडल स्तोत्र, ऋषिमंडल पूजा, निर्वाणकान्ध, अष्टावक्रा जयमाल की स्वर्णाक्षरी प्रतियां हैं। इन प्रतियों के बाँधें सुन्दर बेल बूटों से युक्त हैं तथा कला पूर्ण हैं। जो बेल एक धार एक पत्र पर आगई वह फिर आगे किसी पत्र पर नहीं आई है। शास्त्र भंडार सामान्यतः व्यवस्थित है।

६. शास्त्र भंडार दि. जैन मन्दिर संधीजी जयपुर (ङ भंडार)

संधीजी का जैन मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध एवं विशाल मन्दिर है। यह चौकड़ी मोदीखाना में महावीर पार्क के पास स्थित है। मन्दिर का निर्माण दीवान भूथारामजी संधी द्वारा कराया गया था। ये महाराज जयसिंहजी के शासन काल में जयपुर के प्रधान मंत्री थे। मन्दिर की मुख्य चंवरी में सोने एवं काच का कार्य हो रहा है। वह बहुत ही सुन्दर एवं कला पूर्ण है। काच का ऐसा अच्छा कार्य बहुत ही कम मन्दिरों में मिलता है।

मन्दिर के शास्त्र भंडार में ६७६ हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है। सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। अधिकांश ग्रंथ १८ वीं एवं १९ वीं शताब्दी के लिखे हुये हैं। सबसे नवीन ग्रंथ णमोत्कारकाव्य है जो संवत् १६६५ में लिखा गया था। इससे पता चलता है कि समाज में अब भी ग्रंथों की प्रति-

लिपियां करवा कर भंडारों में विराजमान करने की परम्परा है। इसी तरह आचार्य कुन्दकुन्द कृत पंचास्तिकाय की सबसे प्राचीन प्रति है जो संवत् १४८७ की लिखी हुई है।

ग्रंथ भंडार में प्राचीन प्रतियों में भ. हर्षकीर्ति का अनेकार्थशत संवत् १६६७, धर्मकीर्ति की कौमुदीकथा संवत् १६६३, पद्मानन्दि श्रावकाचार संवत् १६१३, भ. शुभचंद्र कृत पाण्डवपुराण सं. १६१३, बनारसी विलास सं० १७१५, मुनि श्रीचन्द्र कृत पुराणसार सं० १५४३, के नाम उल्लेखनीय हैं। भंडार में संवत् १५३० की किराताजुनीय की भी एक सुन्दर प्रति है। दशरथ निगोल्या ने धर्म परीक्षा की भाषा संवत् १७१८ में पूर्ण की थी। इसके एक वर्ष बाद सं० १७१६ की ही लिखी हुई भंडार में एक प्रति संग्रहीत है। इसी भंडार में महेश कवि कृत हम्मीररासो की भी एक प्रति है जो हिन्दी की एक सुन्दर रचना है। किशनलाल कृत कृष्णबालविलास की प्रति भी उल्लेखनीय है।

शास्त्र भंडार में ६६ गुटके हैं। जिनमें भी हिन्दी एवं संस्कृत पाठों का अच्छा संग्रह है। इनमें हर्षकवि कृत चंद्रहंसकथा सं० १७०८, हरिदास की ज्ञानोपदेश बत्तीसी (हिन्दी) मुनिभद्र कृत शान्तिनाथ स्तोत्र (संस्कृत) आदि महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

७. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर (च भंडार)

(श्रीचन्द्रग्राम दि० जैन सरस्वती भवन)

यह सरस्वती भवन छोटे दीवानजी के मन्दिर में स्थित है जो अमरचंदजी दीवान के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। ये जयपुर के एक लंबे समय तक दीवान रहे थे। इनके पिता शिवजीलालजी भी महाराजा जगतसिंहजी के समय में दीवान थे। इन्होंने भी जयपुर में ही एक मन्दिर का निर्माण कराया था। इसलिये जो मन्दिर इन्होंने बनाया था वह बड़े दीवानजी का मन्दिर कहलाता है और दीवान अमरचंदजी द्वारा बनाया हुआ है वह छोटे दीवानजी के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। दोनों ही विशाल एवं कला पूर्ण मन्दिर हैं तथा दोनों ही गुमान पंथ आन्नाप के मन्दिर हैं।

भंडार में ८३० हस्तलिखित ग्रंथ हैं। सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। यहां संस्कृत ग्रंथों का विशेषतः पूजा एवं सिद्धान्त ग्रंथों का अधिक संग्रह है। ग्रंथों को भाषा के अनुसार निम्न प्रकार विभाजित किया जा सकता है।

संस्कृत ४१८, प्राकृत ६८, अपभ्रंश ४, हिन्दी ३४० इसी तरह विषयानुसार जो ग्रंथ हैं वे निम्न प्रकार हैं।

धर्म एवं सिद्धान्त १४७, अध्यात्म ६२, पुराण ३०, कथा ३८, पूजा साहित्य १५२, स्तोत्र ८१ अन्य विषय ३२०।

इन ग्रंथों के संग्रह करने में स्वयं अमरचंदजी दीवान ने बहुत रुचि ली थी क्योंकि उनके

समयकालीन विद्वानों में से नवलराम, गुमान्तीराम, जयचन्द छाबड़ा, डालराम । मन्नालाल खिन्दूका, स्वरूपचन्द बिलास के नाम उल्लेखनीय हैं और संभवतः इन्हीं विद्वानों के सहयोग से वे ग्रंथों का इतना संग्रह कर सके होंगे । प्रतिमासांतचतुर्दशीत्रतोद्यापन सं० १८७७, गोम्मटसार सं० १८८६, पंचतन्त्र सं० १८८७, लत्र चूडामणि सं० १८६१ आदि ग्रंथों की प्रतिलिपियां करवा कर इन्होंने भंडार में विराजमान की थी ।

भंडार में अधिकांश संग्रह १६ वीं २० वीं शताब्दी का है किन्तु कुछ ग्रंथ १६ वीं एवं १७ वीं शताब्दी के भी हैं । इनमें निम्न ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं ।

पूर्णचन्द्राचार्य	उपसर्गहरस्तोत्र	लं० का सं० १५५३	संस्कृत
पं० अभ्रदेव	लब्धिविधानकथा	सं० १६०७	"
अमरकीर्ति	पट्कर्मोपदेशरत्नमाला	सं० १६२२	अपभ्रंश
पूज्यपाद	सर्वार्थसिद्धि	सं० १६२५	संस्कृत
पुष्पदन्त	यशोधर चरित्र	सं० १६३०	अपभ्रंश
ब्रह्मनेमिदत्त	नेमिनाथ पुराण	सं० १६४६	संस्कृत
जोधराज	श्रवचनसार भाषा	सं० १७३०	हिन्दी

अज्ञात कृतियों में तेजपाल कविरचित लक्ष्मणविष्णुचरित्र (अपभ्रंश) तथा हरचंद गंगवाल कृत सुकुमाल चरित्र भाषा (२० का० १६१८) के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं ।

८. दि० जैन मन्दिर गोधों का जयपुर (छ भंडार)

गोधों का मन्दिर घी वालों का रास्ता, नागोरियों का चौक जौहरी बाजार में स्थित है । इस मन्दिर का निर्माण १८ वीं शताब्दी के अन्त में हुआ था और मन्दिर निर्माण के पश्चात् ही यहां शास्त्रों का संग्रह किया जाना प्रारम्भ हो गया था । बहुत से ग्रंथ यहां सांगानेर के मन्दिरों में से भी लाये गये थे । वर्तमान में यहां एक सुव्यवस्थित शास्त्र भंडार है जिसमें ६१६ हस्तलिखित ग्रंथ एवं १०२ गुटके हैं । भंडार में पुराण, चरित, कथा एवं स्तोत्र साहित्य का अच्छा संग्रह है । अधिकांश ग्रंथ १७ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी तक के लिखे हुये हैं । शास्त्र भंडार में व्रतकथाकोश की संवत् १५८६ में लिखी हुई प्रति सबसे प्राचीन है । यहां हिन्दी रचनाओं का भी अच्छा संग्रह है । हिन्दी की निम्न रचनायें महत्वपूर्ण हैं जो अन्य भंडारों में सहज ही में नहीं मिलती हैं ।

चिन्तामणिजययाल	ठक्कुर कवि	हिन्दी	१६ वीं शताब्दी
सीमन्धर स्तवन	"	"	" "
गीत एवं आदिनाथ स्तवन	पद्म कवि	"	" "

नेमीश्वर चौमासा	सुनि सिंहनन्दि	हिन्दी	१७ वीं शताब्दी
चेतनगीत	"	"	" "
नेमीश्वर रास	सुनि रतनकीर्ति	"	" "
नेमीश्वर द्विबोलना	"	"	" "
द्रव्यसंग्रह भाषा	हेमराज	"	२० का० १७१६
चतुर्दशीकथा	ढाळूराम	"	१७६५

उक्त रचनाओं के अतिरिक्त जैन हिन्दी कवियों के पदों का भी अच्छा संग्रह है। इनमें वृच-राज, डीहल, कनककीर्ति, प्रभाचन्द्र, सुनि शुभचन्द्र, मनराम एवं अजयराम के पद विशेषतः उल्लेखनीय हैं। संवत् १६२६ में रचित ढूंगरकवि की होलिका चौपई भी ऐसी रचना है जिसका परिचय प्रथम बार मिला है। संवत् १८२० में रचित हरचंद गंगवाल कृत पंचकल्याणक पाठ भी ऐसी ही सुन्दर रचना है।

संस्कृत ग्रंथों में उमास्वामि विरचित पंचपरमेष्ठी स्तोत्र महत्वपूर्ण है। सूची में उसका पाठ उद्धृत किया गया है। भंडार में संग्रहीत प्राचीन प्रतियों में विमलनाथ पुराण सं० १६६६, गुणभद्राचार्य कृत धन्यकुमार चरित सं० १६५२, विदग्धमुखमंडन सं० १६-३, सारस्वत दीपिका सं० १६५७, नाममाला (धनंजय) सं० १६४३, धर्म परीक्षा (अमितगति) सं० १६५३, समयसार नाटक (वनारसीदास) सं० १७०४ आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

६ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर यशोदानन्दजी जयपुर (ज भंडार)

यह मन्दिर जैन यति यशोदानन्दजी द्वारा सं० १८४८ में बनवाया गया था और निर्माण के कुछ समय पश्चात् ही यहां शास्त्र भंडार की स्थापना कर दी गई। यशोदानन्दजी स्वयं साहित्यिक व्यक्ति थे इसलिये उन्होंने थोड़े समय में ही अपने यहां शास्त्रों का अच्छा संकलन कर लिया। वर्तमान में शास्त्र भंडार में ३५३ ग्रंथ एवं १३ गुटके हैं। अधिकांश ग्रंथ १८ वीं शताब्दी एवं उसके बाद की शताब्दियों के लिखे हुये हैं। संग्रह सामान्य है। उल्लेखनीय ग्रंथों में चन्द्रप्रभाकृत पंजिका सं० १५६४, पं० देवी-चन्द कृत हितोपदेश की हिन्दी गद्य टीका, हैं। प्राचीन प्रतियों में आ० कुन्दकुन्द कृत समयसार सं० १६१४, आशाधर कृत सागरधर्मसूत सं० १६२८, केशवमिश्रकृत तर्कभाषा सं० १६६६ के नाम उल्लेखनीय हैं। यह मन्दिर चौड़ा रास्ते में स्थित है।

१० शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर विजयराम पांड्या जयपुर (भ भंडार)

विजयराम पांड्या ने यह मन्दिर कब बनवाया इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन मन्दिर की दशा को देखते हुये यह जयपुर बसने के समय का ही बना हुआ जान पड़ता है। यह मन्दिर

पानों का दरीवा चौ० रामचन्द्रजी में स्थित है। यहाँ का शास्त्र भंडार भी कोई अग्नी दशा में नहीं है। बहुत से ग्रंथ जीर्ण हो चुके हैं तथा बहुत सों के पूरे पत्र भी नहीं हैं। वर्तमान में यहाँ २७५ ग्रंथ एवं ७६ गुटके हैं। शास्त्र भंडार को देखते हुये यहाँ गुटकों का अच्छा संग्रह है। इनमें विश्वभूषण की नेमीश्वर की लहरी, पुण्यरत्न की नेमिनाथ पूजा, श्याम कवि की तीन चौबीसी चौपाई (र. का. १७५६) स्योजी-राम सोगाणी की लग्नचन्द्रिका भाषा के नाम उल्लेखनीय हैं। इन छोटी छोटी रचनाओं के अतिरिक्त रूपचन्द्र, दरिगाह, मनराम, हर्षकीर्ति, कुमुदचन्द्र आदि कवियों के पद भी संग्रहीत हैं साइ लोहट कृत पटलेश्यावेलि एवं जमुराम का राजनीतिशास्त्र भाषा भी हिन्दी की उल्लेखनीय रचनाएँ हैं।

११ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ जयपुर (ज भंडार)

दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ जयपुर का प्रसिद्ध जैन मन्दिर है। यह खवासजी का रास्ता चौ० रामचन्द्रजी में स्थित है। मन्दिर का निर्माण संवत् १८०५ में सोनी गोत्र वाले किसी श्रावक ने कराया था इसलिये यह सोनियों के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। यहाँ एक शास्त्र भंडार है जिसमें ४४० ग्रंथ एवं १८ गुटके हैं। इनमें सबसे अधिक संख्या संस्कृत भाषा के ग्रंथों की है। माणिक्य सूरि कृत मलोदय काव्य भंडार की सबसे प्राचीन प्रति है जो सं० १४४५ की लिखी हुई है। यद्यपि भंडार में ग्रंथों की संख्या अधिक नहीं है किन्तु अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों तथा प्राचीन प्रतियों का यहाँ अच्छा संग्रह है।

इन अज्ञात ग्रंथों में अपभ्रंश भाषा का विजयसिंह कृत अजितनाथ पुराण, कवि दामोदर कृत शोमिणाह चरित्र, गुणनन्दि कृत वीरनन्दि के चन्द्रप्रभकाव्यकी पंजिका, (संस्कृत) महापंडित जगन्नाथ कृत नेमिनरेन्द्र स्तोत्र (संस्कृत) मुनि पद्मनन्दि कृत वर्द्धमान काव्य, शुभचन्द्र कृत तत्त्ववर्णन (संस्कृत) चन्द्रमुनि कृत पुराणसार (संस्कृत) इन्द्रजीत कृत मुनिसुव्रत पुराण (हि०) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

यहाँ ग्रंथों की प्राचीन प्रतियाँ भी पर्याप्त संख्या में संग्रहीत हैं। इनमें से कुछ प्रतियों के नाम निम्न प्रकार हैं।

सूची की क्र. सं.	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार नाम	ले. काल	भाषा
१५३५	पटपाहुड	आ० कुन्दकुन्द	१५१६	प्रा०
२३५०	वर्द्धमानकाव्य	पद्मनन्दि	१५१८	संस्कृत
१८३६	स्थाद्वादसंजरी	मल्लिषेण सूरि	१५२१	"
१८३६	अजितनाथपुराण	विजयसिंह	१५८०	अपभ्रंश
२०६८	शोमिणाहचरित्र	दामोदर	१५८२	"
२३२३	यशोधरचरित्र टिप्पण	प्रभाचन्द्र	१५८५	संस्कृत
११७३	सागारधर्मामृत	आशाधर	१५६५	"

सूची की क्र. सं.	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार नाम	ले. काल	भाषा
२५४१	कथाकोश	हरिषेणाचार्य	१५६७	संस्कृत
३८७६	जिनशतकटीका	नरसिंह भट्ट	१५६४	"
२२५	तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द्र	१६३३	"
२०२६	चित्रचूडामणि	वादीभसिंह	१६०५	"
२११३	धन्यकुमारचरित्र	आ० गुणभद्र	१६०३	"
२११५	नागकुमार चरित्र	धर्मधर	१६१६	"

इस भंडार में कपड़े पर संवत् १५१६ का लिखा हुआ प्रतिष्ठा पाठ है। जयपुर के भंडारों में उपलब्ध कपड़े पर लिखे हुये ग्रंथों में यह ग्रंथ सबसे प्राचीन है। यहां यशोधर चरित की एक सुन्दर एवं कला पूर्ण सचित्र प्रति है। इसके दो चित्र ग्रंथ सूची में देखे जा सकते हैं। चित्र कला पर मुगल कालीन प्रभाव है। यह प्रति करीब २०० वर्ष पुरानी है।

१२ आमेर शास्त्र भंडार जयपुर (ट भंडार)

आमेर शास्त्र भंडार राजस्थान के प्राचीन ग्रंथ भंडारों में से है। इस भंडार की एक ग्रंथ सूची सन् १९४८ में क्षेत्र के शोध संस्थान की ओर से प्रकाशित की जा चुकी है। उस ग्रंथ सूची में १५०० ग्रंथों का विवरण दिया गया था। गत १३ वर्षों में भंडार में जिन ग्रंथों का और संग्रह हुआ है उनकी सूची इस भाग में दी गई है। इन ग्रंथों में मुख्यतः जयपुर के छाबड़ों के मन्दिर के तथा बाबू ज्ञानचंदजी खिन्दूका द्वारा भेट किये हुये ग्रंथ हैं। इसके अतिरिक्त भंडार के कुछ ग्रंथ जो पहिले वाली ग्रंथ सूची में आने से रह गये थे उनका विवरण इस भाग में दे दिया गया है।

इन ग्रंथों में पुण्यदंत कृत उत्तरपुराण भी है जो संवत् १३६६ का लिखा हुआ है। यह प्रति इस सूची में आये हुये ग्रंथों में सबसे प्राचीन प्रति है। इसके अतिरिक्त १६ वीं १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दी में लिखे हुये ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। भंडार के इन ग्रंथों में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति विरचित छांदसीय कविता (हिन्दी), ज० जिनदास कृत चौरासी न्यातिमाला (हिन्दी), लाभवर्द्धन कृत पान्ढवचरित (संस्कृत), लाखो कविकृत पार्श्वनाथ चौपाई (हिन्दी) आदि ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं। गुटकों में मनोहर मिश्र कृत मनोहरमंजरी, उदयमानु कृत भोजरासो, अग्रदास के कविता, तिपरदास कृत रुक्मिणी कृष्णजी का रासो, जनमोहन कृत स्नेहलीला, श्याममिश्र कृत रागमाला, विनयकीर्ति कृत अष्टाहिका रासो तथा बंसीदास कृत रोहिणीविधिवथा उल्लेखनीय रचनायें हैं। इस प्रकार आमेर शास्त्र भंडार में प्राचीन ग्रंथों का अच्छा संकलन है।

ग्रंथों का विषयानुसार वर्गीकरण

ग्रंथ सूची को अधिक उपयोगी बनाने के लिये ग्रंथों का विषयानुसार वर्गीकरण करके उन्हें २५ विषयों में विभाजित किया गया है। विविध विषयों के ग्रंथों के अध्ययन से पता चलता है कि जैन आचार्यों ने प्रायः सभी विषयों पर ग्रंथ लिखे हैं। साहित्य का संभवतः एक भी ऐसा विषय नहीं होगा जिस पर इन विद्वानों ने अपनी कलम नहीं चलाई हो। एक ओर जहाँ इन्होंने धार्मिक एवं आगम साहित्य लिख कर भंडारों को भरा है वहाँ दूसरी ओर काव्य, चरित्र, पुराण, कथा कोश आदि लिख कर अपनी विद्वत्ता की छाप लगाई है। श्रावकों एवं सामान्य जन के हित के लिये इन आचार्यों एवं विद्वानों ने सिद्धान्त एवं आचार शास्त्र के सूक्ष्म से सूक्ष्म विषय का विश्लेषण किया है। सिद्धान्त की इनकी गहन एवं सूक्ष्म चर्चा शायद ही अन्य धर्मों में मिल सके। पूजा साहित्य लिखने में भी ये किसी से पीछे नहीं रहे। इन्होंने प्रत्येक विषय की पूजा लिखकर श्रावकों को इसको जीवन में उतारने की प्रेरणा भी दी है। पूजाओं की जयमालाओं में कभी कभी इन विद्वानों ने जैन धर्म के सिद्धान्तों का बड़ी उत्तमता से वर्णन किया है। ग्रंथ सूची के इसी भाग में १५०० से अधिक पूजा ग्रंथों का उल्लेख हुआ है।

धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त लौकिक साहित्य पर भी इन आचार्यों ने खूब लिखा है। तीर्थ-करों एवं शलाकाओं के महापुरुषों के पावन जीवन पर इनके द्वारा लिखे हुये बड़े बड़े पुराण एवं काव्य ग्रंथ मिलते हैं। ग्रंथ सूची में प्रायः सभी महत्वपूर्ण पुराण साहित्य के ग्रंथ आगये हैं। जैन सिद्धान्त एवं आचार शास्त्र के सिद्धान्तों को कथाओं के रूप में वर्णन करने में जैन आचार्यों ने अपने पारिष्ट्य का अच्छा प्रदर्शन किया है। इन भंडारों में इन विद्वानों द्वारा लिखा हुआ कथा साहित्य प्रभुर साम्रा में मिलता है। ये कथाएँ रोचक होने के साथ साथ शिक्षाप्रद भी हैं। इसी प्रकार व्याकरण, ज्योतिष एवं आयुर्वेद पर भी इन भंडारों में अच्छा साहित्य संग्रहीत है। गुटकों में आयुर्वेद के नुसखों का अच्छा संग्रह है। सैकड़ों ही प्रकार के नुसखे दिये हुये हैं जिन पर खोज होने की अत्यधिक आवश्यकता है। इस बार हमने फागु, रासो एवं बेलि साहित्य के ग्रंथों का अतिरिक्त वर्णन दिया है। जैन आचार्यों ने हिन्दी में छोटे छोटे सैकड़ों रासो ग्रंथ लिखे हैं जो इन भंडारों में संग्रहीत हैं। अकेले ब्रह्म जिनदास के ४० से भी अधिक रासो ग्रंथ मिलते हैं। जैन भंडारों में १४ वीं शताब्दी के पूर्व से रासो ग्रंथ मिलने लगते हैं। इसके अतिरिक्त अध्ययन करने की दृष्टि से संग्रहीत किये हुये इन भंडारों में जैन विद्वानों के काव्य, नाटक, कथा, ज्योतिष, आयुर्वेद, कोष, नीतिशास्त्र, व्याकरण आदि विषयों के ग्रंथों का भी अच्छा संकलन मिलता है। जैन विद्वानों ने कालिदास, माघ, भारवि आदि प्रसिद्ध कवियों के काव्यों का संकलन ही नहीं किया किन्तु इन पर विस्तृत टीकाएँ भी लिखी हैं। ग्रंथ सूची के इसी भाग में ऐसे कितने ही काव्यों का उल्लेख आया है। भंडारों में ऐतिहासिक रचनाएँ भी पर्याप्त संख्या में मिलती हैं। इनमें भट्टारक पट्टावलि, भट्टारकों के छन्द, गीत, चोमासा वर्णन, वंशोत्पत्ति वर्णन, देहली के बादशाहों एवं अन्य राज्यों के राजाओं के वर्णन एवं नगरों की बसावत का वर्णन मिलता है।

विविध भाषाओं में रचित साहित्य

राजस्थान के शास्त्र भंडारों में उत्तरी भारत की प्रायः सभी भाषाओं के ग्रंथ मिलते हैं। इनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी एवं गुजराती भाषा के ग्रंथ मिलते हैं। संस्कृत भाषा में जैन विद्वानों ने बृहद् साहित्य लिखा है। आ० समन्तभद्र, अकलंक, विद्यानन्दि, जितसेन, गुणभद्र, वर्द्धमान भट्टारक, सोमदेव, वीरनन्दि, हेमचन्द्र, आशाधर, सकलकीर्ति आदि सैकड़ों आचार्य एवं विद्वान् हुये हैं जिन्होंने संस्कृत भाषा में विविध विषयों पर सैकड़ों ग्रंथ लिखे हैं जो इन भंडारों में मिलते हैं। यही नहीं उन्होंने अजैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये काव्य एवं नाटकों की टीकाएँ भी लिखी हैं। संस्कृत भाषा में लिखे हुये यशस्तिलक चम्पू, वीरनन्दि का चन्द्रप्रभकाव्य, वर्द्धमानदेव का वरांगचरित्र आदि ऐसे काव्य हैं जिन्हें किसी भी महाकाव्य के समकक्ष बिठाया जा सकता है। इसी तरह संस्कृत भाषा में लिखा हुआ जैनाचार्यों का दर्शन एवं न्याय साहित्य भी उच्च कोटि का है।

प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा के क्षेत्र में तो केवल जैनाचार्यों का ही अधिकांशतः योगदान है। इन भाषाओं के अधिकांश ग्रंथ जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये ही मिलते हैं। ग्रंथ सूची में अपभ्रंश में एवं प्राकृत भाषा में लिखे हुये पर्याप्त ग्रंथ आये हैं। महाकवि स्वयंभू, पुष्पदंत, अमरकीर्ति, नयनन्दि जैसे महाकवियों का अपभ्रंश भाषा में उच्च कोटि का साहित्य मिलता है। अब तक इस भाषा के १०० से भी अधिक ग्रंथ मिल चुके हैं और वे सभी जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हैं।

इसी तरह हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा के ग्रंथों के संबंध में भी हमारा यही मत है कि इन भाषाओं की जैन विद्वानों ने खूब सेवा की है। हिन्दी के प्रारंभिक युग में जब कि इस भाषा में साहित्य निर्माण करना विद्वत्ता से परे समझा जाता था, जैन विद्वानों ने हिन्दी में साहित्य निर्माण करना प्रारम्भ किया था। जयपुर के इन भंडारों में हमें १३ वीं शताब्दी तक की रचनाएँ मिल चुकी हैं। इनमें जिनदत्त चौपई सर्व प्रमुख है जो संवत् १३५४ (१२६७ ई.) में रची गयी थी। इसी प्रकार भ० सकलकीर्ति, ब्रह्म जिनदास, भट्टारक भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, शुभचन्द्र, लीहल, बूचराज, ठक्कुरसी, पल्ल आदि विद्वानों का बहुलसा प्राचीन साहित्य इन भंडारों में प्राप्त हुआ है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी एवं राजस्थानी साहित्य के अतिरिक्त जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये ग्रंथों का भी यहां अच्छा संकलन है। पृथ्वीराज कृत कृष्णरुक्मिणी वेलि, बिहारी सतसई, केशवदास की रसिकप्रिया, सूर एवं कबीर आदि कवियों के हिन्दीपद, जयपुर के इन भंडारों में प्राप्त हुये हैं। जैन विद्वान कभी कभी एक ही रचना में एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग भी करते थे। धर्मचन्द्र प्रबन्ध इस दृष्टि से अच्छा उदाहरण कहा जा सकता है।

स्वयं ग्रंथकारों द्वारा लिखे हुये ग्रंथों की मूल प्रतियाँ

जैन विद्वान् ग्रंथ रचना के अतिरिक्त स्वयं ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ भी किया करते थे। इन विद्वानों द्वारा लिखे गये ग्रंथों की पाण्डुलिपियाँ राष्ट्र की धरोहर एवं अमूल्य सम्पत्ति है। ऐसी पाण्डुलिपियों का प्राप्त होना सहज बात नहीं है लेकिन जयपुर के इन भंडारों में हमें स्वयं विद्वानों द्वारा लिखी हुई निम्न पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हो चुकी हैं।

सूची की क्र. सं.	ग्रंथकार	ग्रंथ नाम	लिपि संवत्
८४८	कनककीर्ति के शिष्य सदा राम	पुरुषार्थ सिद्धयुपाय	१७०७
१०४२	रत्नकरन्दश्रावकाचार भाषा	सदासुख कासलीवाल	१६२०
६७	गोष्मटसार जीवकांड भाषा	पं. टोडरमल	१८ वीं शताब्दी
२६२५	नाममाला	पं० भारामल्ल	१६४३
३६५२	पंचमंगलपाठ	खुशालचन्द काला	१८४४
५४३३	शीलरासा	जोधराज गोदीका	१७५०
५३८२	मिथ्यात्व खंडन	वस्तराम साह	१८३५
५७२८	गुटका	देकचंद	—
५६५७	परमात्म प्रकाश एवं तत्त्वसार	डालूराम	—
६०४४	छीयालीस ठाणा	ब्रह्मरायमल्ल	१६१३

गुटकों का महत्व

शास्त्र भंडारों में हस्तलिखित ग्रंथों के अतिरिक्त गुटके भी संग्रह में होते हैं। साहित्यिक रचनाओं के संकलन की दृष्टि से ये गुटके बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इनमें विविध विषयों पर संकलन किये हुए कभी कभी ऐसे पाठ मिलते हैं जो अन्यत्र नहीं मिलते। ग्रंथ सूची में आये हुये बारह भंडारों में ८५० गुटके हैं। इनमें सबसे अधिक गुटके अ भंडार में हैं। अधिकांश गुटकों में पूजा स्तोत्र एवं कथाएँ ही मिलती हैं लेकिन प्रत्येक भंडार में कुछ गुटके ऐसे भी मिल जाते हैं जिनमें प्राचीन एवं अलभ्य पाठों का संग्रह होता है। ऐसे गुटकों का अ, ज, व एवं ट भंडार में अच्छा संकलन है। १३ वीं शताब्दी की हिन्दी रचना जिनदत्त चौपई अ भंडार के एक गुटके में ही प्राप्त हुई है। इसी तरह अपभ्रंश की कितनी ही कथाएँ, ब्रह्मजिनदास, शुभचन्द, छीहल, ठक्कुरसी, पल्ह, मनराम आदि प्राचीन कवियों की रचनाएँ भी इन्हीं गुटकों में मिली हैं। हिन्दी पदों के संकलन के तो ये एकमात्र स्रोत हैं। अधिकांश हिन्दी विद्वानों का पद साहित्य इनमें संकलित किया हुआ होता है। एक एक गुटके में कभी कभी तो ३००, ४०० पद संग्रह किये हुये मिलते हैं। इन गुटकों में ही ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध होती है। पट्टावलि, छन्द, गीत, वंशावलि, बादशाहों के विवरण, नगरों की बसावत आदि सभी इनमें

ही मिलते हैं। प्रत्येक शास्त्र भंडार के व्यवस्थापकों का कर्तव्य है कि वे अपने यहां के गुप्तकों को बहुत ही समझा कर रखें जिससे वे नष्ट नहीं होने पायें क्योंकि हमने देखा है कि बहुत से भंडारों के गुप्तकों बिना घेष्टनों में बंधे हुये ही रखे रहते हैं और इस तरह धीरे धीरे उन्हें नष्ट होने की मानों आकाश देदी जाती है।

शास्त्र भंडारों की सुरक्षा के संबंध में :

राजस्थान के शास्त्र भंडार अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं इसलिये उनकी सुरक्षा के प्रश्न पर सबसे अधिक विचार किया जाना चाहिये। छोटे छोटे गांवों में जहां जैनों के एक-एक दो-दो घर रह गये हैं वहां उनकी सुरक्षा होना अत्यधिक कठिन है। इसके अतिरिक्त कस्बों की भी यही दशा है। वहां भी जैन समाज का शास्त्र भंडारों की ओर कोई ध्यान नहीं है। एक तो आजकल छपे हुये ग्रंथ मिलने के कारण हस्तलिखित ग्रंथों की कोई स्वाध्याय नहीं करते हैं, दूसरे वे लोग इनके महत्व को भी नहीं समझते हैं। इसलिये समाज को हस्तलिखित ग्रंथों की सुरक्षा के लिये ऐसा कोई उपाय ढूंढना चाहिये जिससे उनका उपयोग भी होता रहे तथा वे सुरक्षित भी रह सकें। यह तो निश्चित ही है कि छपे हुए ग्रंथ मिलने पर उन्हें कोई पढ़ना नहीं चाहता। इसके अतिरिक्त इस ओर रुचि न होने के कारण आगे आने वाली प्रगति तो उन्हें पढ़ना ही भूल जावेगी। इसलिये यह निश्चित सा है कि भविष्य में ये ग्रंथ केवल विद्वानों के लिये ही उपयोगी रहेंगे और वे ही उन्हें पढ़ना तथा देखना अधिक पसन्द करेंगे।

ग्रंथ भंडारों की सुरक्षा के लिये हमारा यह सुझाव है कि राजस्थान के सभी जिलों के कार्यालयों पर इनका एक एक संग्रहालय स्थापित हो तथा उप प्राप्त के सभी शास्त्र भंडारों के ग्रंथ उन संग्रहालय में संग्रहीत कर लिये जायें, किन्तु यदि किसी किसी उपजिलों एवं कस्बों में भी जैनों की अच्छी धरती है तो उन्हीं स्थानों पर भंडारों को रखने दिया जावे। जिलेवार यदि संग्रहालय स्थापित हो जायें तो वहां रिसर्च स्कालर्स आसानी से पहुंच कर उनका उपयोग कर सकते हैं तथा उनकी सुरक्षा का भी पूर्णतः प्रबन्ध हो सकता है। इसके अतिरिक्त राजस्थान में जयपुर, अलवर, भरतपुर, नागौर, बीकानेर, धूँदी, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा आदि स्थानों पर इनके बड़े बड़े संग्रहालय खोल दिये जायें तथा अनुसन्धान प्रेमियों को उन्हें देखने एवं पढ़ने की पूरी सुविधाएं दी जायें तो ये हस्तलिखित के ग्रंथ फिर भी सुरक्षित रह सकते हैं अन्यथा उनका सुरक्षित रहना बड़ा कठिन होगा।

जयपुर के भी कुछ शास्त्र भंडारों को छोड़कर अन्य भंडार कोई विशेष अच्छी स्थिति में नहीं है। जयपुर के अब तक हमने १६ भंडारों की सूची तैयार की है लेकिन किसी भंडार में घेष्टन नहीं हैं तो कहीं बिना पुष्टों के ही शास्त्र रखे हुये हैं। हमारी इस असावधानी के कारण ही सैकड़ों ग्रंथ अपूर्ण हो गये हैं। यदि जयपुर के शास्त्र भंडारों के ग्रंथों का संग्रह एक केन्द्रीय संग्रहालय में कर लिया जावे तो उस

समय हमारा वह संग्रहालय जयपुर के दर्शनीय स्थानों में से गिना जावेगा। प्रति वर्ष सैकड़ों की संख्या में शोध विद्यार्थी आवेंगे और जैन साहित्य के विविध विषयों पर खोज कर सकेंगे। इस संग्रहालय में शास्त्रों की पूर्ण सुरक्षा का ध्यान रखा जावे और इसका पूर्ण प्रबन्ध एक संस्था के अधीन हो। आशा है जयपुर का जैन समाज हमारे इस निवेदन पर ध्यान देगा और शास्त्रों की सुरक्षा एवं उनके उपयोग के लिये कोई निश्चित योजना बना सकेगा।

ग्रंथ सूची के सम्बन्ध में

ग्रंथ सूची के इस भाग को हमने सर्वोत्तम सुन्दर बनाने का पूर्ण प्रयास किया है। प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों की ग्रंथ प्रशस्ति एवं लेखक प्रशस्तियां दी गई हैं जिनसे विद्वानों को उनके कर्ता एवं लेखन-काल के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी मिल सके। गुटकों में महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध होती है इसलिये बहुत से गुटकों के पूरे पाठ एवं शेष गुटकों के उल्लेखनीय पाठ दिये हैं। ग्रंथ सूची के अन्त में ग्रंथानुक्रमणिका, ग्रंथ एवं ग्रंथकार, ग्राम नगर एवं उनके शासकों का उल्लेख ये चार परिशिष्ट दिये हैं। ग्रंथानुक्रमणिका को देखकर सूची में आये हुये किसी भी ग्रंथ का परिचय शीघ्र मालूम किया जा सकता है क्योंकि बहुत से ग्रंथों के नाम से उनके विषय के सम्बन्ध में स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती। ग्रंथानुक्रमणिका में ४२०० ग्रंथों का उल्लेख आया है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ग्रंथ सूची में निर्दिष्ट ६५ सभी ग्रंथ मूल ग्रंथ हैं तथा शेष उन्हीं की प्रतियां हैं। इसी प्रकार ग्रंथ एवं ग्रंथकार परिशिष्ट से एक ही ग्रंथकार के इस सूची में कितने ग्रंथ आये हैं इसकी पूर्ण जानकारी मिल सकती है। ग्राम एवं नगरों के परिशिष्ट में इन मंडारों में किस किस ग्राम एवं नगरों में रचे हुये एवं लिखे हुये ग्रंथ संग्रहीत हैं यह जाना जा सकता है। इसके अतिरिक्त ये नगर कितने प्राचीन थे एवं उनमें साहित्यिक गतिविधियां किस प्रकार चलती थी इसका भी हमें आभास मिल सकता है। शासकों के परिशिष्ट में राजस्थान एवं भारत के विभिन्न राजा, महाराजा एवं बादशाहों के समय एवं उनके राज्य के सम्बन्ध में कुछ २ परिचय प्राप्त हो जाता है। ऐतिहासिक तथ्यों के संकलन में इस प्रकार के उल्लेख बहुत प्रामाणिक एवं महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। प्रस्तावना में ग्रंथ मंडारों के संक्षिप्त परिचय के अतिरिक्त अन्त में ४६ अज्ञात ग्रंथों का परिचय भी दिया गया है जो इन ग्रंथों की जानकारी प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगा। प्रस्तावना के साथ में ही एक अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों की सूची भी दी गई है इस प्रकार ग्रंथ सूची के इस भाग में अन्य सूचियों से सभी तरह की अधिक जानकारी देने का पूर्ण प्रयास किया है जिससे पाठक अधिक से अधिक लाभ उठा सकें। ग्रंथों के नाम, ग्रंथकर्ता का नाम, उनके रचनाकाल, भाषा आदि के साथ-साथ उनके आदि अन्त भाग पूर्णतः ठीक २ देने का प्रयास किया गया है फिर भी कमियां रहना स्वाभाविक है। इसलिये विद्वानों से हमारा उदार दृष्टि अपनाने का अनुरोध है तथा यदि कहीं कोई कमी हो तो हमें सूचित करने का कष्ट करें जिससे भविष्य में इन कमियों को दूर किया जा सके।

धन्यवाद समर्पण

हम सर्व प्रथम क्षेत्र की प्रबन्ध कारिणी कमेटी एवं विशेषतः उसके मंत्री महोदय श्री केशरलालजी बख्शी को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने ग्रंथ सूची के चतुर्थ भाग को प्रकाशित करवा कर समाज एवं जैन साहित्य की सेवा करने वाले विद्वानों का महान् उपकार किया है। क्षेत्र कमेटी द्वारा जो साहित्य शोध संस्थान संचालित हो रहा है वह सम्पूर्ण जैन समाज के लिये अनुकरणीय है एवं उसे नई दिशा की ओर ले जाने वाला है। भविष्य में शोध संस्थान के कार्य का और भी विस्तार किया जावेगा ऐसी हमें आशा है। ग्रंथ सूची में उल्लिखित सभी शास्त्र भंडार के व्यवस्थापक महोदयों को एवं विशेषतः श्री नथमलजी बज, समीरमलजी छात्रड़ा, पूनमचंदजी सोगाणी, इन्दरलालजी पापड़ीवाल एवं सोहनलालजी सोगाणी, अनूपचंदजी दीवाण, भंवरलालजी न्यायतीर्थ, राजमलजी गोधा, प्रो० सुल्तानसिंहजी, कपूरचंदजी रांवका, आदि सज्जनों के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने हमें ग्रंथ भंडार की सूचियां बनाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया एवं अब भी समय समय पर भंडार के ग्रंथ दिखलाने में सहयोग देते रहते हैं। श्रद्धेय पं० चैनमुखदासजी न्यायतीर्थ के प्रति हम कृतज्ञांजलियां अर्पित करते हैं जिनकी सतत प्रेरणा एवं मार्ग-दर्शन से साहित्योद्धार का यह कार्य दिया जा रहा है। हमारे सहयोगी भा० सुगतचंदजी को भी हम धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिनका ग्रंथ सूची को तैयार करने में हमें पूर्ण सहयोग मिला है। जैन साहित्य सदन देहली के व्यवस्थापक पं० परमानन्दजी शास्त्री के भी हम हृदय से आभारी हैं। जिन्होंने सूची के एक भाग को देखकर आवश्यक सुझाव देने का कष्ट किया है।

अन्त में आदरणीय डा. वासुदेवशरणजी सा. अमघाल, अध्यक्ष हिन्दी विभाग काशी विश्व-विद्यालय, वाराणसी के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने ग्रंथ सूची की भूमिका लिखने की कृपा की है। डाक्टर सा. का हमें सदैव मार्ग-दर्शन मिलता रहता है जिसके लिये उनके हम पूर्ण कृतज्ञ हैं।

महावीर भवन, जयपुर
दिनांक १०-११-६१

कस्तूरचंद कासलीवाल
अनूपचंद न्यायतीर्थ

प्राचीन एवं अज्ञात रचनाओं का परिचय

१ अमृतधर्मरस काव्य

श्रावक धर्म पर यह एक सुन्दर एवं सरस संस्कृत काव्य है। काव्य में २४ प्रकरण हैं। भट्टारक गुरुचन्द्र इसके रचयिता हैं जिन्होंने इसे लोहट के पुत्र सावलदास के पठनार्थ लिखा था। स्वयं ग्रंथकार ने अपनी प्रशस्ति निम्न प्रकार लिखी है—

महे श्रीकुन्दकुंदाचार्य तत्पट्टे श्रीसहस्रकीर्तिः तत्पट्टे श्रीत्रिभुवनकीर्तिदैव तत्पट्टे श्रीगुरु-
रत्नकीर्ति तत्पट्टे श्री ५गुणचन्द्रदेवभट्टविरचितमहाग्रंथ कर्मज्ञयार्थ लोहट सुत पंडित श्री सावलदास
पठनार्थ ॥ काव्य की एक प्रति जे भंडार में है। प्रति अशुद्ध है तथा उसमें प्रथम २ पृष्ठ नहीं हैं।

२ आध्यात्मिक गाथा

इस रचना का दूसरा नाम पट् पद छाप्य है। यह भट्टारक लक्ष्मीचन्द्र की रचना है जो संभवतः भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में हुये थे। रचना अपभ्रंश भाषा में विवद्ध है तथा उच्चकोटि की है। इसमें संसार की नश्वरता का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया गया है। इसमें २८ पद हैं। एक पद नीचे देखिये—

विरक्षा जाणहि पुणो विरक्षा सेवन्ति अप्पणो सामि, विरक्षा ससहावरया परदब्ब परम्मुहा विरला ।
ते विरक्षा जमि अत्थि जिकिचि परदब्बु ए इच्छहि, ते विरक्षा ससहाव करहि रुइ गियमणि पिच्छहि ॥
विरक्षा सेवहि सामि गित्तु गिय देह वसंतउ, विरक्षा जाणहि अप्पु शुद्ध चैयण गुणवंतउ ।
मणु पत्तणु दुल्लह लहिवि सरवय कुलु उत्तमु जियउ, जिणु एस पयंपइ णिसुणि बुइ गाह भणिण छप्पउ कियउ ॥

इसकी एक प्रति जे भंडार में सुरक्षित है। यह प्रति आचार्य नेमिचन्द्र के पढ़ने के लिये लिखी गई थी।

३ आराधनासार प्रबन्ध

आराधनासार प्रबन्ध में मुनि प्रभाचन्द्र विरचित संस्कृत कथाओं का संग्रह है। मुनि प्रभा-
चन्द्र देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे। किन्तु प्रभाचन्द्र के शिष्य थे मुनि पद्मनन्दि जिनके द्वारा विरचित 'वर्द्ध-
मान पुराण' का परिचय आगे दिया गया है। प्रभाचन्द्र ने प्रत्येक कथा के अन्त में अपना परिचय दिया
है। एक परिचय देखिये—

श्रीमूलसंघे वरभारतीये गच्छे वलात्कारगणेति रम्ये ।
श्रीकुन्दकुन्दाख्यमुनीन्द्रवंशे जातं प्रभाचन्द्रमहायतीन्द्रः ॥

देवेन्द्रचन्द्रार्कसम्भर्चितेन तेन प्रभाचन्द्रमुनीश्वरेण ।
अनुग्रहार्थं रचितः सुधाकयैः आराधनासारकथाप्रबन्धः ॥
तेनक्रमेणैव भयास्वशक्त्या श्लोकैः प्रसिद्धैश्च निगद्यते च ।
मार्गेण किं भानुकरप्रकाशे स्वलीलया गच्छति सर्वलोके ॥

आराधनासार बहुत सुन्दर कथा ग्रंथ है । यह अभी तक अप्रकाशित है ।

४ कवि वल्लभ

क भंडार में हरिचरणदास कृत दो रचनायें उपलब्ध हुई हैं । एक विहारी सतसई पर हिन्दी गद्य टीका है तथा दूसरी रचना कवि वल्लभ है । हरिचरणदास ने कृष्णोपासक प्राणनाथ के पास विहारी सतसई का अध्ययन किया था । ये श्रीनन्द पुरोहित की जाति के थे तथा 'मोहन' उनके आभयदाता थे जो बहुत ही उदार प्रकृति के थे । विहारी सतसई पर टीका इन्होंने संवत् १८३४ में समाप्त की थी । इसके एक वर्ष पश्चात् इन्होंने कविवल्लभ की रचना की । इसमें काव्य के लक्षणों का वर्णन किया गया है । पूरे काव्य में २८४ पद्य हैं । संवत् १८५२ में लिखी हुई एक प्रति क भंडार में सुरक्षित है ।

५ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा

देवीसिंह छाबडा १८ वीं शताब्दी के हिन्दी भाषा के विद्वान् थे । ये जिनदास के पुत्र थे । संवत् १७६६ में इन्होंने श्रावक माधोदास गोलालारे के आग्रह पर उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला की छन्दो-बद्ध रचना की थी । मूल ग्रंथ प्राकृत भाषा का है और वह नेमिचन्द्र भंडारी द्वारा रचित है । कवि नरवर निवासी थे जहां कूर्म वंश के राजा अत्रसिंह का राज्य था ।

उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला भाषा हिन्दी का एक सुन्दर ग्रंथ है जो पूर्णतः प्रकाशन योग्य है । पूरे ग्रंथ में १६८ पद्य हैं जो दोहा, चौपई, चौबोला, गीताछंद, नाराच, सोरठा आदि छन्दों में निबद्ध है । कवि ने ग्रंथ समाप्ति पर जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है—

वातसल गोती सूचरो, संचई सकल बखान ।
गोलालारे सुभमती, माधोदास सुजान ॥१६०॥

चौपई

महाकठिन प्राकृत की वांती, जगत मांदि प्रगटै सुखदानी ।
या विधि चिता मनि सुभाषी, भाषा छंद मांदि अभिलाषी ॥
श्री जिनदास तनुज लघु भाषा, खंडेलवाल सावरा साखा ।
देवीस्थंभ नाम सब भाषै, कवित मांदि चिता मनि राखै ॥

दीक्षा छंद

श्री सिद्धान्त उपदेशमाला रत्नगुन मंडित करी ।
सब सुकवि कंठा करहु, भूषित सुमनसोभित विधिकरी ॥
जिम सूर्य के प्रकास सेती तम बितान बिलात है ।
इमि पढ़ै परमागम सुवांनी विदत रुचि अवदात है ॥

दोहा

सुखविधान नरवरपती, छत्रस्यंध अवतंस ।
कीरति घंत प्रवीन मति, राजत कूरम वंश ॥१६४॥
जाके राज सुचैन सौ, विनां ईति अरु भीति ।
रच्यो ग्रंथ सिद्धान्त सुभ, यह उपगार सुनीति ॥१६५॥
सत्रहसै अरु छपनवै, संवत् विक्रमराज ।
भादव वदि एकादसी, शनिदिन सुविधि समाज ॥१६६॥
ग्रंथ कियो पूरन सुविधि नरवर नगर संभार ।
जै समझै याको अरथ ते पावै भवपार ॥१६७॥

चौबोला

साजन यदि की तीज आदि सौ आरंभ्यो यह ग्रंथ ।
भादव वदि एकादशि तक लौ परमपुन्य को पंथ ॥
एक महिना आठ दिना मैं कियो समापत आनि ।
पढ़ै गुनै प्रकटै चितामनि बोध सदा सुख दांनि ॥१६८॥

इति उपदेशसिद्धांतरत्नमाला भाषा ॥

६ गोम्मटसार टीका

गोम्मटसार की यह संस्कृत टीका आ० सकलभूषण द्वारा विरचित है । टीका के प्रारम्भ में लिपिकार ने टीकाकार के विषय में लिखा है वह निम्न प्रकार है:—

“अथ गोम्मटसार ग्रंथ गाथा बंध टीका करणाटक भाषा में है उसके अनुसार सकलभूषण ने संस्कृत टीका बनाई सो लिखिये है ।

टीका का नाम मन्दप्रबोधिका है जिसका टीकाकार ने संगलाचरण में ही उल्लेख किया है:—

मुनि सिद्धं प्रणम्याहं नेमिचन्द्रजिनेश्वरं ।
टीकां गुम्मतसारस्य कुर्वे मन्दप्रबोधिकां ॥१॥

लेकिन अभयचन्द्राचार्य ने जो गोम्मतसार पर संस्कृत टीका लिखी थी उसका नाम भी मन्द-प्रबोधिका ही है । 'मुख्यतः साहब ने उसको गाथा नं० ३२३ तक ही पाया जाना लिखा है, लेकिन जयपुर के 'क' भण्डार में संग्रहीत इस प्रति में आ० सकल भूषण दिया है । इसकी विद्वानों द्वारा विस्तृत खोज होनी चाहिये । टीका के अन्त में जो टीकाकाल लिखा है वह संवत् १५७६ का है ।

विक्रमादित्यभूषण्य विख्यातो च मनोहरे ।
दशपंचशते वर्षे षडभिः संयुतसप्ततौ (१५७६)

टीका का आदि भाग निम्न प्रकार है:—

श्रीमदप्रतिहतप्रभावस्याद्वादसप्तसन-गुहाअंतरनिवासि प्रवादिसंघसिधुरसिहायमानसिंहनंदि
मुनीन्द्राभिर्नंदित गंगवंशललामराजः सर्वज्ञाद्यनेकरुणनामधेय-श्रीमद्रामस्तदेव महावल्लभ-महामात्य
पदविराजमान रणरंगमल्लसहाय पराक्रमगुणरत्नभूषणः सन्यस्तवरत्ननिलैश्चादिविविधगुणनाम समा-
सादितकीर्तिकांतश्रीमच्छासुं डरायः भव्यपुंडरीक द्रव्यानुयोगप्रशन्नानुरूपरूपं महाकर्मप्राभृतसिद्धान्त
जीवस्थानाख्यप्रथमखंडार्थसंग्रहं गोम्मतसारनामधेय-पंचसंग्रहशास्त्र प्रारभ समस्तसैद्धान्तिकचूडामणि
श्रीमन्नेमिचंद्रसैद्धान्तचक्रवर्ति तद् गोम्मतसारप्रथमावयवभूतं जीवकांडं विरचयस्तत्रादौमलगालनपुण्यावाप्ति
शिष्टाचारपरिपालननास्तिकतापरिहारादिफलजननसमर्थ विशिष्टेष्टदेवतानमस्काररूपधर मंगलपूर्वक
प्रकृतशास्त्रकथनप्रतिष्ठासूचकं गाथा सूचकं कथयति ।

अन्तिम भाग

नत्वा श्रीवद्धमानांतान् वृषभादि जिनेश्वरात् ।
धर्ममार्गोपदेशत्वात् सर्वकल्याणदायिकान् ॥ १ ॥
श्रीचन्द्रादिप्रभातं च नत्वा स्याद्वाददेशकं ।
श्रीमद्गुम्मतसारस्य कुर्वे शास्तां प्रशस्तिकां ॥ २ ॥
श्रीमतः शक राजस्य शाके वर्तति सुन्दरे ।
चतुर्दशशते चैक-चत्वारिंशत्-समन्विते ॥ ३ ॥
विक्रमादित्यभूषण्य विख्याते च मनोहरे ।
दशपंचशते वर्षे षडभिः संयुतसप्ततौ ॥ ४ ॥

कार्तिके चाशिते पक्षे त्रयोदश्यां शुभ दिने ।
 शुक्ले च हस्तनक्षत्रे योगो च प्रीति नामनि ॥ ५ ॥
 श्रीमच्छ्रीमूलसंघे च नंदाम्नाये लसद्गणे ।
 वलात्कारे जगन्ममे गच्छे सारस्वताभिधे ॥ ६ ॥
 श्रीमत्कंदर्पराज्ये सुरेश्वर्यके भवत ।
 पद्मादिनंदि वित्याख्यो भट्टारकविचक्षणः ॥ ७ ॥
 तत्पट्टांभोजमास्तु चंद्रांतश्च शुभादिक ।
 तत्पदस्योभवच्छ्रीमाम् जिनचंद्राभिधोगणी ॥ ८ ॥
 तत्पट्टे सद्गुरुर्युक्तो भट्टारकपदेश्वरः ।
 पंचाचाररतो नित्यं प्रभावन्दो जितेन्द्रियः ॥ ९ ॥
 तत्शिष्यो धर्मचन्द्रश्च तत्कमांबुधि चंद्रमा ।
 तदाम्नाये भवत भव्यास्ते वर्ण्यते यथाक्रमं ॥ १० ॥
 पुरे नागपुरे रम्ये राजो मङ्गदखानके ।
 पाटणीगोत्रके धुर्ये खण्डेलवालान्वयभूषणे ॥ ११ ॥
 दानादिभिर्गुणैर्युक्तः लूणानामविचक्षणः ।
 तस्य भार्या भवत् शस्ता लूणाश्री धाभिधानिका ॥ १२ ॥
 तयोः पुत्रः समाख्यातः पर्वताख्यो विचारकः ।
 राज्यमान्यो जनैः सेव्यः संधभारधुरंधर ॥ १३ ॥
 तस्य भार्यास्ति सत्साध्वी पर्वतश्रीति नामिका ।
 शीलादिगुणसंपन्ना पुत्रत्रयसमन्विताः ॥ १४ ॥
 प्रथमो जिनदासाख्यो गृहभारधुरंधरः ।
 तस्य भार्या भवत्साध्वी जौणादेयविचक्षणा ॥ १५ ॥
 वानादिगुणसंयुक्ता द्वितीया च सुहागिणी ।
 प्रथमायास्तु पुत्रः स्यात् तेजपालो गुणान्वितो ॥ १६ ॥
 द्वितीयो देवदत्ताख्यो गुरुभक्तः प्रसन्नधीः ।
 पतिव्रता गुरुर्युक्ता भार्यादेवासिरीति च ॥ १७ ॥
 पितुर्भक्तो गुरुर्युक्तो होलानामातृतीयकः ।
 होलादेया च तद्भार्या होलश्री द्वितीयिका ॥ १८ ॥
 लिखायि वृत्तं निखिलै सुभक्तितः ।
 सिद्धान्तशास्त्रमिदं हि गुम्मत ॥

धर्मादिचंद्राय स्वकर्तृदानये ।

हितोक्तये श्री सुखिने नियुक्तये ॥१६॥

७ चन्दनमलयागिरि कथा

चन्दनमलयागिरि की कथा हिन्दी की प्रेम कथाओं में प्रसिद्ध कथा है । यह रचना मुनि भद्र-
सेन की है जिसका वर्णन उन्होंने निम्न प्रकार किया है—

मम उपकारी परमगुरु, गुण अक्षर दातार, बंदे ताके चरण जुग, भद्रसेन मुनि सार ॥३॥

रचना की भाषा पर राजस्थानी का पूर्ण प्रभाव है । कुछ पद्य पाठकों के अवलोकनार्थ नीचे
दिये जा रहे हैं—

सीतल जल सरवर भरे, कमल मधुप भणकार । पणघट पांगी भरए कौं, जार बहुत पणिहार ॥

× × × × ×

चंदन विनु मलयागरी, दिन दिन सूकत जात । औं प्रावस जलधार विनु, बनवेली कुमिलात ॥

× × × × ×

अगनि मांकि जरिवौ भलौ, भलौ ज विष कौ पान । शील खंडिवौ नहिं भलौ, कहि कहु शील समान ॥

× × × × ×

चंदन आषत देखि करि, ऊठि दियो सनमान । उतरौ आपणौ धाम है, हम तुम होई पिछान ॥

रचना में कहीं कहीं गाथायें भी उद्धृत की हुई हैं । पद्य संख्या १८८ है । रचनाकाल एवं
लेखन काल दोनों ही नहीं दिये हुये हैं लेकिन प्रति की प्राचीनता की दृष्टि से रचना १७वीं शताब्दी की
होनी चाहिये । भाषा एवं शैली की दृष्टि से रचना सुन्दर है । श्री मोतीलाल^१ मेनारिया ने इसका रचना
काल सं. १६७५ माना है । इसका दूसरा नाम कलिकायचमी^२ कथा भी मिलता है । अभी तक भद्रसेन
की एक ही रचना उपलब्ध हुई है । इस रचना की एक सचित्र प्रति अभी हाल में ही हमें भटारकीय शास्त्र
मंडार इंगरपुर में प्राप्त हुई है ।

८ चारुवत्त चरित्र

यह कल्याणकीर्ति की रचना है । ये भटारक सकलकीर्ति की परम्परा में होने वाले मुनि देव-
कीर्ति के शिष्य थे । कल्याणकीर्ति ने चारुवत्त चरित्र को संवत् १६६२ में समाप्त किया था । रचना में

१. राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ सं० १९१

२. राजस्थान के जैन शास्त्र मंडारों की ग्रंथ सूची भाग २ पृ० सं० २३६

सैठ चारुदत्त के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। रचना चौपई एवं दूहा छन्द में है लेकिन राग भिन्न भिन्न है। इसका दूसरा नाम चारुदत्तरास भी है।

कल्याणकीर्ति १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। अब तक इनकी पार्श्वनाथ^१ रासो: (सं० १६६७) कावनी^२, जीराबलि पार्श्वनाथ स्तवन: (सं०) नयग्रह स्तवन (सं०) तीर्थकर विनती^३ (सं० १७२३) आदी-श्वर^४ बधावा आदि रचनायें मिल चुकी हैं।

६ चौरासी जातिजयमाल

ब्रह्म जिनदास १५ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान् थे। ये संस्कृत एवं हिन्दी दोनों के ही प्रगाढ़ विद्वान् थे तथा इन दोनों ही भाषाओं में इनकी ६० से भी अधिक रचनायें उपलब्ध होती हैं। जयपुर के इन भंडारों में भी इनकी अभी कितनी ही रचनायें मिली हैं जिनमें से चौरासी जातिजयमाल का वर्णन यहां दिया जा रहा है।

चौरासी जातिजयमाल में माला की बोली के उत्सव में सम्मिलित होने वाली ८४ जैन जातियों का नामोल्लेख किया है। माला की बोली बढाने में एक जाति से दूसरी जाति वाले व्यक्तियों में बड़ी उत्सुकता रहती थी। इस जयमाल में सबसे पहिले गोलालार अन्त में चतुर्थ जैन श्रावक जाति का उल्लेख किया गया है। रचना ऐतिहासिक है एवं इसकी भाषा हिन्दी (राजस्थानी) है। इसमें कुल ४३ पद्य हैं। ब्रह्म जिनदास ने जयमाल के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है।

ते समकित वंतह बह्व गुण जुत्तहं, माल सुणो तहमे एकमनि।

ब्रह्म जिनदास भासै विबुध प्रकासै, पढई गुणो जे धर्म धनि ॥४३॥

इसी चौरासी जाति जयमाला समाप्त।

इति जयमाल के आगे चौरासी जाति की दूसरी जयमाल है जिसमें २६ पद्य हैं और वह संभवतः किसी अन्य कवि की है।

१० जिनदत्तचौपई

जिनदत्त चौपई हिन्दी का आदिकालिक काव्य है जिसको रत्न कवि ने संवत् १३५४ (सन् १२६७) भादवा सुदी पंचमी के दिन समाप्त किया था।

१.	राजस्थान जैन शास्त्र भंडारों की ग्रंथ सूची भाग २	पृष्ठ ७४
२.	" " "	पृष्ठ १०६
३.	" " भाग ३	पृष्ठ १४१
४.	" " "	पृष्ठ १५२

भट्टारक सकलकीर्ति कृत यशोधर चरित्र की सचित्र प्रति के दो सुन्दर चित्र



यह सचित्र प्रति जयपुर के दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है ।
 राजा यशोधर दुःस्वप्न की शांति के लिये अन्य जीवों की बलि न
 चढ़ा कर स्वयं की बलि देने को तैयार होता है ।
 रानी हाहाकार करती है ।

[दूसरा चित्र अगले पृष्ठ पर देखिये]

चित्र नं० २



जिन चैत्यालय एवं राजमहल का एक दृश्य
(ग्रंथ सूची क्र. सं. २२६५ वेष्टन संख्या ११४)

संवत् तेरहसे चउवण्णे, भाव्य सुदिपंचमगुरु विण्णे ।
स्याति नवत्त चंदु तुलहती, कवइ रल्लु पणवइ सुरसती ॥२८॥

कवि जैन धर्मावलम्बी थे तथा जाति से जैसवाल थे । उनकी माता का नाम सिरिया तथा पिता का नाम आते था ।

जइसवाल कुलि उत्तम जाति, वाईसइ पाडल उत्ताति ।
पंचउलीया आतेकउपूतु, कवइ रल्लु जिणदत्तु चरित्तु ॥

जिनवत्त चौपई कथा प्रधान काव्य है इसमें कविने अपनी काव्यत्व शक्ति का अधिक प्रदर्शन न करते हुये कथा का ही सुन्दर रीति से प्रतिपादन किया है । ग्रंथ का आधार पं. लाखू द्वारा विरचित जिणवत्तचरिड (सं. १२७५) है जिसका उल्लेख स्वयं ग्रंथकार ने किया है ।

मइ जोयउ जिनदत्तपुराणु, लाखू विरयउ अइसू पमाण ॥

ग्रंथ निर्माण के समय भारत पर अलाउद्दीन खिलजी का राज्य था । रचना प्रधानतः चौपई छन्द में निबद्ध है किन्तु वस्तुबंध, दोहा, नाराच, अर्धनाराच आदि छन्दों का भी कहीं २ प्रयोग हुआ है । इसमें कुल पद्य ५५४ हैं । रचना की भाषा हिन्दी है जिस पर अपभ्रंश का अधिक प्रभाव है । वैसे भाषा सरल एवं सरस है । अधिकांश शब्दों को उकारान्त बनाकर प्रयोग किया गया है जो उस समय की परम्परा सी मालूम होती है । काव्य कथा प्रधान होने पर भी उसमें रोमांचकता है तथा काव्य में पाठकों की उत्सुकता बनी रहती है ।

काव्य में जिनदत्त मगध देशान्तर्गत वसन्तपुर नगर सेठ के पुत्र जीवदेव का पुत्र था । जिनेन्द्र भगवान की पूजा अर्चना करने से प्राप्त होने के कारण उसका नाम जिनदत्त रखा गया था । जिनदत्त व्यापार के लिये सिंगल आदि द्वीपों में गया था । उसे व्यापार में अतुल लाभ के अतिरिक्त वहां से उसे अनेक अलौकिक विद्यायें एवं राजकुमारियां भी प्राप्त हुई थीं । इस प्रकार पूरी कथा जिनदत्त के जीवन की सुन्दर कहानियों से पूर्ण है ।

११ ज्योतिषसार

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है ज्योतिषसार ज्योतिष शास्त्र का ग्रंथ है । इसके रचयिता हैं श्री कृपाराम जिन्होंने ज्योतिष के विभिन्न ग्रंथों के आधार से संवत् १७४२ में इसकी रचना की थी । कवि के पिता का नाम तुलाराम था और वे शाहजहांपुर के रहने वाले थे । पाठकों की जानकारी के लिये ग्रंथ में से दो उद्धरण दिये जा रहे हैं:—

केदरियों चौथो भवन, सप्तमदसमौ जान । पंचम अरु नोमौ भवन, येह त्रिकोण बखान ॥६॥
तीजो षसटम ग्यारमों, घर दसमों कर लेखि । इनकौ उपरै कहत है, सर्वग्रंथ में देखि ॥७॥

बरष लग्यो जा अंस में, सोह दिन चित धारि । वा दिन उतनी घडी, जु पल श्रीते लगविचारि ॥४०॥
लगन लिखे ते गिरह जी, जा घर बैठो आय । ता घर के मूल मुकल को कीजे मित बनाय ॥४१॥

१२ ज्ञानार्णव टीका

आचार्य शुभचन्द्र विरचित ज्ञानार्णव संस्कृत भाषा का प्रसिद्ध ग्रन्थ है । स्वाध्याय करने वालों का प्रिय होने के कारण इसकी प्रायः प्रत्येक शास्त्र भंडार में हस्तलिखित प्रतियां उपलब्ध होती हैं । इसकी एक टीका विद्यानन्दि के शिष्य श्रुतसागर द्वारा लिखी गई थी । ज्ञानार्णव की एक अन्य संस्कृत टीका जयपुर के अ भंडार में उपलब्ध हुई है । टीकाकार है पं. नयविलास । उन्होंने इस टीका को मुगल सम्राट अकबर जलालुद्दीन के राजस्व मंत्री टोडरमल के पुत्र रिषिदास के अवगार्थ एवं पठनार्थ लिखी थी । इसका उल्लेख टीकाकार ने ग्रन्थ के प्रत्येक अध्याय के अंत में निम्न प्रकार किया है:—

इति शुभचन्द्राचार्यविरचिते ज्ञानार्णवमूलसूत्रे योगप्रदीपाधिकारे पं. नयविलासेन साह पासां तत्पुत्र साह टोडर तत्पुत्र साह रिषिदासेन स्वश्रवणार्थं पंडित जिनदासोद्यमेन कारापितेन द्वादशभावना प्रकरणे द्वितीयः ।

टीका के प्रारम्भ में भी टीकाकार ने निम्न प्रशस्ति लिखी है—

शास्वत् साहि जलालदीनपुरतः प्राप्त प्रतिलोदयः ।
श्रीमान् मुगलवंशशारद-शशि-विश्वोपकारोद्यतः ।
नाम्ना कृष्ण इति प्रसिद्धिर्भवम् सत्तात्रधर्मोद्यतः ।
तन्मन्त्रीश्वर टोडरो गुणयुतः सर्वोधिकाराधितः ॥६॥
श्रीमन् टोडरसाह पुत्र निपुणः सद्दानचिन्तामणिः ।
श्रीमन् श्रीरिषिदास धर्मनिपुणः प्राप्तोन्नतिस्वश्रिया ।
तेनाहं समवादि निपुणो न्यायाद्यलीलाङ्गयः ।
श्रोतुं श्रुतिमता परं सुविषया ज्ञानार्णवस्य स्फुटं ॥७॥

उक्त प्रशस्ति से यह जाना जा सकता है कि सम्राट अकबर के राजस्व मंत्री टोडरमल संभवतः जैन थे । इनके पिता का नाम साह पाशा था । स्वयं मंत्री टोडरमल भी कवि थे और इनका एक मंजुन "अब तेरो मुख देखू जिनंदा" जैन भंडारों में कितने ही गुटको में मिलता है ।

नयविलास की संस्कृत टीका का उल्लेख पीटर्सन ने भी किया है लेकिन उन्होंने नामोल्लेख के अतिरिक्त और कोई परिचय नहीं दिया है । पं. नयविलास का विशेष परिचय अभी खोज का विषय है ।

१३ ऐमिणाह चरिए—महाकवि दामोदर

महाकवि दामोदर कृत ऐमिणाह चरिए अपभ्रंश भाषा का एक सुन्दर काव्य है । इस काव्य में पांच संधियां हैं जिनमें भगवान् नेमिनाथ के जीवन का वर्णन है । महाकवि ने इसे संवत् १२८७ में समाप्त किया था जैसा निम्न पुर्वह छन्द (एक प्रकार का दोहा) में दिया हुआ है:—

धारहस्याई सत्तसियाई, विक्कमरायहो कालहं । पमारहं पट्ट समुद्धरण, शरवर देवापालहं ॥१४५॥

दामोदर मुनि सूरसेन के प्रशिष्य एवं महामुनि कमलभद्र के शिष्य थे । इन्होंने इस ग्रंथ की पंडित रामचन्द्र के आदेश से रचना की थी । ग्रंथ की भाषा सुन्दर एवं ललित है । इसमें घत्ता, दुर्बई, वस्तु छंद का प्रयोग किया गया है । कुल पद्यों की संख्या १४५ है । इस काव्य से अपभ्रंश भाषा का शनैः शनैः हिन्दी भाषा में किस प्रकार परिवर्तन हुआ यह जाना जा सकता है ।

इसकी एक प्रति ऐ भंडार में उपलब्ध हुई है । प्रति अपूर्ण है तथा प्रथम ७ पत्र नहीं हैं । प्रति सं० १५८२ की लिखी हुई है ।

१४ तत्त्ववर्णन

यह मुनि शुभचन्द्र की संस्कृत रचना है जिसमें संक्षिप्त रूप से जीवादि द्रव्यों का लक्षण वर्णित है । रचना छोटी है और उसमें केवल ५१ पद्य हैं । प्रारम्भ में ग्रंथकर्त्ता ने निम्न प्रकार विषय वर्णन करने का उल्लेख किया है:—

तत्त्वातत्त्वस्वरूपज्ञं सार्व्वं सर्व्वगुणाकरं । वीरं नत्वा प्रवक्ष्येऽहं जीवद्रव्यादिलक्षणं ॥१॥

जीवाजीवमिदं द्रव्यं युग्मसाद् जिनेश्वरा । जीवद्रव्यं द्विधातत्र शुद्धाशुद्धविकल्पतः ॥२॥

रचना की भाषा सरल है । ग्रंथकार ने रचना के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है:—

श्री कंजकीर्तिसद्देवैः शुभेन्दुमुनितेरितै । जिनागमानुसारेण सम्यक्त्वव्यक्ति-हेतवे ॥५०॥

मुनि शुभचन्द्र भट्टारक शुभचन्द्र से भिन्न विद्वान हैं । ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान थे । इनके द्वारा लिखी हुई अभी हिन्दी भाषा की भी रचनायें मिली हैं । यह रचना ऐ भंडार में संग्रहीत है । यह आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी ।

१५ तत्त्वार्थसूत्र भाषा

प्रसिद्ध जैनाचार्य उमास्वामि के तत्त्वार्थसूत्र का हिन्दी पद्यमें अनुवाद बहुत कम विद्वानों ने किया है । अभी क भंडार में इस ग्रंथ का हिन्दीपद्यानुवाद मिला है जिसके कर्त्ता हैं श्री छोटेलाल, जो अलीगढ़ ग्रान्त के मेहूगांव के रहने वाले थे । इनके पिता का नाम मोतीलाल था । ये जैसवाल जैन थे तथा काशी नगर में आकर रहने लगे थे । इन्होंने इस ग्रंथ का पद्यानुवाद संवत् १६३२ में समाप्त किया था ।

छोटेलाल हिन्दी के अच्छे विद्वान थे । इनकी अब तक तत्त्वार्थसूत्र भाषा के अतिरिक्त और रचनायें भी उपलब्ध हुई हैं । ये रचनायें चौबीस तीर्थंकर पूजा, पंचपरमेष्ठी पूजा एवं नित्यनियमपूजा हैं । तत्त्वार्थ सूत्र का आदि भाग निम्न प्रकार है ।

मोक्ष की राह बनायत जे । अरु कर्म पहाड करै चकचूरा,
विश्वसुतर के ज्ञायक है ताही, लब्धि के हेत नमौं परिपूरा ।
सम्यग्दर्शन चरित ज्ञान कहे, याहि मारग मोक्ष के सूर,
तत्त्व को अर्थ करो सरधान सो सम्यग्दर्शन मजहूरा ॥१॥

कवि ने जिन पयों में अपना परिचय दिया है वे निम्न प्रकार हैं:—

जिलो अलीगढ़ जानियो मेढूगाम सुधाम । मोतीलाल सुपुत्र है छोटेलाल सुनाम ॥१॥
जैसवाल कुल जाति है श्रेणी वीसा जान । वंश इत्याक महान में लयो जन्म भू आन ॥२॥
काशी नगर सुआय कै सैनी संगति पाय । उदयरज भाई लखो सिखरचन्द गुण काय ॥३॥
छंद भेद जानों नहीं और गणागण सोय । केवल भक्ति सुधर्म की वसी सुद्वय मोय ॥४॥
ता प्रभाव या सूत्र की छंद प्रतिज्ञा सिद्धि । भाई सु भवि जन सोधियो होय जगत प्रसिद्ध ॥५॥
मंगल श्री अर्हत है सिद्ध साध चपसार । तिन नुति मनवच काय यह मेरो विघन बिकार ॥६॥
छंद बंध श्री सूत्र के किये सु बुधि अनुसार । मूलग्रंथ कूं देखिके श्री जिन हिरदै धारि ॥७॥
कारसास की अष्टमी पहलो पत्त निहार । अठसटि ऊन सहस्र दो संवत रीति विचार ॥८॥

इति छंदबन्धसूत्र संपूर्ण ।

संवत् १६५३ चैत्र कृष्ण १३ बुधे ।

१६ दर्शनसार भाषा

नथमल नाम के कई विद्वान हो गये हैं । इनमें सबसे प्रसिद्ध १८ वीं शताब्दी के नथमल बिलात्ता थे जो मूलतः आगरे के निवासी थे किन्तु बाद में हीरापुर (हिएडौन) आकर रहने लगे थे । उक्त विद्वान के अतिरिक्त १६ वीं शताब्दी में दूसरे नथमल हुये जिन्होंने कितने ही ग्रंथों की भाषा टीका लिखी । दर्शनसार भाषा भी इन्हीं का लिखा हुआ है जिसे उन्होंने संवत् १६२० में समाप्त किया था । इसका उल्लेख स्वयं कवि ने निम्न प्रकार किया है ।

बीस अधिक उगणीस सै शात, श्रावण प्रथम चोथि शनिवार ।

कृष्णपक्ष में दर्शनसार, भाषा नथमल लिखी सुधार ॥५६॥

दर्शनसार मूलतः वेचसेन का ग्रंथ है जिसे उन्होंने संवत् १६६० में समाप्त किया था । नथमल ने इसी का पद्यानुवाद किया है ।

नथमल द्वारा लिखे हुये अन्य ग्रंथों में महीपालचरितभाषा (संवत् १६१८), योगसार भाषा (संवत् १६१६), परमात्मप्रकाश भाषा (संवत् १६१६), रत्नकरण्डआवकाचार भाषा (संवत् १६२०), षोडश-

कारणभावना भाषा (संवत् १६२१) अष्टाहिकाकथा (संवत् १६२२), रत्नत्रय जयमाला (संवत् १६२४) उल्लेखनीय हैं ।

१७ दर्शनसार भाषा

१८ वीं एवं १९ वीं शताब्दी में जयपुर में हिन्दी के बहुत विद्वान् होगये हैं । इन विद्वानों ने हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए सैकड़ों प्राकृत एवं संस्कृत के ग्रंथों का हिन्दी गद्य एवं पद्य में अनुवाद किया था । इन्हीं विद्वानों में से पं० शिवजीलालजी का नाम भी उल्लेखनीय है । ये १८ वीं शताब्दी के विद्वान थे और इन्होंने दर्शनसार की हिन्दी गद्य टीका संवत् १८२३ में समाप्त की थी । गद्य में राजस्थानी शैली का उपयोग किया गया है । इसका एक उदाहरण देखिये:—

सांच कहतां जीव के उपरिलोक दूखो वा तूपो । सांच कहने वाला तो कहै ही कहा जग का भय करि राजदंड छोडि देना है वा जूँवा का भय करि राजमनुष्य कपडा पटक देय है ? तैसे निदने वाले निदा, स्तुति करने वाले स्तुति करो, सांच बोला तो सांच कहै ।

१८ धर्मचन्द्र प्रबन्ध

धर्मचन्द्र प्रबन्ध में मुनि धर्मचन्द्र का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । मुनि, भट्टारकों एवं विद्वानों के सम्बन्ध में ऐसे प्रबन्ध बहुत कम उपलब्ध होते हैं इस दृष्टि से यह प्रबन्ध एक महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक रचना है । रचना प्राकृत भाषा में है विभिन्न छन्दों की २० गायार्थें हैं ।

प्रबन्ध से पता चलता है कि मुनि धर्मचन्द्र भ० प्रभाचन्द्र के शिष्य थे । ये सकल कला में प्रवीण एवं आगम शास्त्र के पारगामी विद्वान थे । भारत के सभी प्रान्तों के आचर्यों में उनका पूर्ण प्रभुत्व था और समय २ पर वे आकर उनकी पूजा किया करते थे ।

प्रबन्ध की पूरी प्रति ग्रंथ सूची के पृष्ठ ३६६ पर दी हुई है ।

१९ धर्मविलास

धर्मविलास ब्रह्म जिनदास की रचना है । कवि ने अपने आपको सिद्धान्तचक्रवर्ति आ० नेमिचन्द्र का शिष्य लिखा है । इसलिये ये भट्टारक सकलकीर्ति के अनुज एवं उनके शिष्य प्रसिद्ध विद्वान भ० जिनदास से भिन्न विद्वान हैं । इन्होंने प्रथम संगलाचरण में भी आ० नेमिचन्द्र को नमस्कार किया है ।

मध्वकमलमायंडं सिद्धजिण तिहुपनिद सदपुञ्जं । नेमिशसि गुरुवीरं पण्डीय तियशुद्धभोवमहणं ॥१॥

ग्रंथ का नाम धर्मपंचविंशतिका भी है । यह प्राकृत भाषा में निबद्ध है तथा इसमें केवल २६ गायार्थें हैं । ग्रंथ की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति त्रिविधसैद्धान्तिकचक्रवर्त्याचार्यश्रीनेमिचन्द्रस्य प्रियशिष्यब्रह्मजिनदासविरचितं धर्मपंच-
विंशतिका नाम शास्त्रसमाप्तम् ।

२० निजामणि

यहाँ प्रसिद्ध विद्वान् ब्रह्म जिनदास की कृति है जो जयपुर के 'क' भण्डार में उपलब्ध हुई है । रचना छोटी है और उसमें केवल ५४ पद्य हैं । इसमें चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति एवं अन्य शलाका महापुरुषों का नामोल्लेख किया गया है । रचना स्तुति परक होते हुये भी आध्यात्मिक है । रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है:—

श्री सकल जिनेश्वर देव, हूँ तब पाय करूँ सेव ।
हवे निजामणि कहुँ सार, जिम जपक तरे संसार ॥ १ ॥
हो जपक सुणे जिनवाणि, संसार अधिर तू जाणि ।
इहां रखा नहिं कोई थीर, हवे मन दृढ करो निज धीर ॥ २ ॥
ग्या आदिश्वर जगीसार, ते जुगला धर्म निवार ।
ग्या अजित जिनेश्वर चंग, जिने कियो कर्म नो भंग ॥ ३ ॥
ग्या संभय भव हर स्वामी, ते जिनवर मुक्ति हि गामी ।
ग्या अभिनंदन आनंद, जिने मोड्यो भव नो कंद ॥ ४ ॥
ग्या सुमति सुमति दातार, जिने रण सुमी जित्यो मार ।
ग्या पद्मप्रभ जगिवास, ते मुक्ति तणा निवास ॥ ५ ॥
ग्या सुपार्श्व जिन जगीसार, जसु पास न रहियो मार ।
ग्या चंद्रप्रभ जगीचंद्र, जिने त्रिमुख कियो आनन्द ॥ ६ ॥

× × × × ×

ए निजामणि कहि सार, ते सयल सुख भंडार ।
जे जपक सुणे ए चंग, ते सौख्य पाये अभंग ॥ ७ ॥
श्री सकलकीर्ति गुरु ध्याउ, मुनि मुचनकीर्ति गुणगाउ ।
ब्रह्म जिनदास भणोसार, ए निजामणि भवतार ॥ ८ ॥

२१ नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

यह स्तोत्र वादिराज जगन्नाथ कृत है । ये भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे तथा टोडारामसिंह (जयपुर) के रहने वाले थे । अब तक इनकी श्वेताम्बर पराजय (केवलि मुक्ति निराकरण), सुख निधान, चतुर्विंशति संधान स्वोपपन्न टीका एवं शिव साधन नाम के चार ग्रंथ उपलब्ध हुये थे । नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

इसकी पांचवी कृति है जिसमें दोडारायसिंह के प्रसिद्ध नेमिनाथ मन्दिर की मूलनायक प्रांतमा नेमिनाथ का स्तवन किया गया है। ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। रचना में ४१ छन्द हैं तथा अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है:—

श्रीमन्नेमिनरेन्द्रकीर्तिरतुलं चित्तोत्सवं च कृतात् ।
पूर्वार्थनिकमवार्जितं च कलुषं भक्तस्य वै जर्हतात् ॥
उद्धृत्या पद एव शर्मदपदे, स्तोतुमहो.....।
शाश्वत् स्त्रीजगदीशनिर्मलहृदि प्रायः सदा वर्ततात् ॥४१॥

उक्त स्तोत्र की एक प्रति ज भण्डार में संग्रहीत है जो संवत् १७०४ की लिखी हुई है।

२२ परमात्मराज स्तोत्र

भट्टारक सकलकीर्ति द्वारा विरचित यह दूसरी रचना है जो जयपुर के शास्त्र भंडारों में उपलब्ध हुई है। यह सुन्दर एवं भावपूर्ण स्तोत्र है। कवि ने इसे सहस्रश्लोक लिखा है। स्तोत्र की भाषा सरल एवं सुन्दर है। इसकी एक प्रति जयपुर के क भंडार में संग्रहीत है। इसमें १६ पद्य हैं। स्तोत्र की पूरी प्रति ग्रंथ सूची के पृष्ठ ४०३ पर दे दी गयी है।

२३ पासचरिण

पासचरिण अपभ्रंश भाषा की रचना है जिसे कवि तेजपाल ने सिवदास के पुत्र घूघलि के शिष्ये निबद्ध की थी। इसकी एक अपूर्ण प्रति न भण्डार में संग्रहीत है। इस प्रति में ८ से ७७ तक पत्र हैं जिन में आठ संधियों का विवरण है। आठवीं संधि की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इयसिरि पास चरित्तं रइयं कइ तेजपाल साणंद अणुसंणियसुहदं घूघलि सिवदास पुत्तेण
सगगुगवाल स्त्रीजा सुपसाएण लब्धएण अरविंद दिक्खा अट्टमसंधी परिसमत्तो ॥

तेजपाल ने ग्रंथ में दुवई, घत्ता एवं कडवक इन तीन छन्दों का उपयोग किया है। पहिले घत्ता फिर दुवई तथा सबके अन्त में कडवक इस क्रम से इन छन्दों का प्रयोग हुआ है। रचना अभी अप्रकाशित है।

तेजपाल १४ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। इनकी दो रचनाएं संभवनाथ चरित एवं वरांग चरित पहिले प्राप्त हो चुकी हैं।

२४ पार्श्वनाथ चौपई

पार्श्वनाथ चौपई कवि लाखो की रचना है जिसे उन्होंने संवत् १७३४ में समाप्त किया था।

कवि राजस्थानी विद्वान् थे तथा वगहटका ग्राम के रहने वाले थे । उस समय मुगल बादशाह औरंगजेब का शासन था । पार्श्वनाथ चौपई में २६८ पद्य हैं जो सभी चौपई में हैं । रचना सरस भाषा में निबद्ध है ।

१५ पिंगल छन्द शास्त्र

छन्द शास्त्र पर माखन कवि द्वारा लिखी हुई यह बहुत सुन्दर रचना है । रचना का दूसरा नाम माखन छंद विलास भी है । माखन कवि के पिता जिनका नाम गोपाल था स्वयं भी कवि थे । रचना में दोहा चौबोला, जगज्ज, सोरठा, सदनसोजन, हरिमालिका संवधारी, मालती, डिल्ल, करहंछा समानिका, मुजंगप्रयात, भंजुभाषिणी, सारंगिका, तरंगिका, भ्रमरावलि, मालिनी आदि कितने ही छन्दों के लक्षण दिये हुये हैं ।

माखन कवि ने इसे संवत् १८६३ में समाप्त किया था । इसकी एक अपूर्ण प्रति 'अ' भण्डार के संग्रह में है । इसका आदि भाग सूची के ३१० पृष्ठ पर दिया हुआ है ।

२६ पुण्यास्रवकथा कोश

टेकचन्द १८ वीं शताब्दी के प्रमुख हिन्दी कवि हो गये हैं । अबतक इनकी २० से भी अधिक रचनायें प्राप्त हो चुकी हैं । जिन में से कुछ के नाम निम्न प्रकार हैं:—

पंचपरमेष्ठी पूजा, कर्मदहन पूजा, तीनलोक पूजा (सं० १८२८) सुदृष्टि तरंगिणी (सं० १८३८) सोलहकारण पूजा, व्यसनराज वर्णन (सं० १८२७) पञ्चकल्याण पूजा, पञ्चमेरु, पूजा, दशाध्याय सूत्र गद्य टीका, अध्यात्म बारहखड़ी, आदि । इनके पद भी मिलते हैं जो अध्यात्म रस से ओतप्रोत हैं ।

टेकचंद के पितामह का नाम दीपचंद एवं पिता का नाम रामकृष्ण था । दीपचंद स्वयं भी अच्छे विद्वान् थे । कवि खण्डेलवाल जैन थे । ये मूलतः जयपुर निवासी थे लेकिन फिर साहिपुरामें जाकर रहने लगे थे । पुण्यास्रवकथाकोश इनकी एक और रचना है जो अभी जयपुर के 'क' भण्डार में प्राप्त हुई है । कवि ने इस रचना में जो अपनापरिचय दिया है वह निम्न प्रकार है:—

दीपचन्द साधमी भए, ते जिनधर्म विषै रत थए ।
तिन से पुरस तरु संगपाय, कर्म जोग्य नहीं धर्म सुहाय ॥ ३२ ॥
दीपचन्द तन तैं तन भयो, ताको नाम हली हरि दीयो ।
रामकृष्ण तैं जो तन थाय, हठीचंद ता नाम धराय ॥ ३३ ॥
सो फिरि कर्म उदै तैं आय, साहिपुरै थिति कीनी जाय ।
तहां भी बहुत काल विन ज्ञान, खोयो मोह उदै तैं आनि ॥

×

×

×

साहिपुरा सुभथान में, श्लो सहारो पाप ।
 धर्म लियो जिन देव को, नरभव सफल कराय ॥
 नृप उमेद ता पुर विषै, करै राज बलवान ।
 तिन अपने मुजबलथकी, अरि शिर कीहनी आनि ॥
 ताके राज सुराज में ईतिनैति नही जान ।
 अवलू पुर में सुखथकी तिण्ठे हरप जु आनि ॥
 करी कथा इस ग्रंथ की, छंद बंध पुर मांहि ।
 ग्रंथ करन कछु बीचि में, आकुल उपजी नांहि ॥ ५३ ॥
 साहि नगर साछै भयो, पायो सुभ अवकास ।
 पूरण ग्रंथ सुख तैं कीयौ, पुण्याश्रव पुण्यावास ॥ ५४ ॥

चौपई एवं दोहा छन्दों में लिखा हुआ एक सुन्दर ग्रंथ है । इसमें ७६ कथाओं का संग्रह है । कवि ने इसे संवत् १८२२ में समाप्त किया था जिसका रचना के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख है:—

संवत् अष्टादश सत जानि, उपरि बीस दोय फिरि आनि ।
 कागुण सुदि ग्यारसि निसमांहि, कियो समाप्त उर हुल साहि ॥ ५५ ॥

प्रारम्भ में कवि ने लिखा है कि पुण्याश्रव कथा कोश पहिले प्राकृत भाषा में निबद्ध था लेकिन जब उसे जन साधारण नहीं समझने लगा तो सकल कीर्ति आदि विद्वानों ने संस्कृत में उसकी रचना की । जब संस्कृत समझना भी प्रत्येक के लिए क्लिष्ट होगया तो फिर आगरे में धनराम ने उसकी वचनिका की । टेकचंद ने संभवतः इसी वचनिका के आधार पर इसकी छन्दोबद्ध रचना की होगी । कविने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

साधर्मी धनराम जु भए, संस्कृत परवीन जु थए ।
 तौ यह ग्रंथ आगरै धान, कीयो वचनिका सरल बखान ॥
 जिन धुनि तो विन अक्षर होय, गरुधर समझै और न कोय ।
 तो प्राकृत में करै बखान, तब सब ही सुनि है गुणखानि ॥ ३ ॥
 तब फिरि बुधि हीनता लई, संस्कृत बानी श्रुति ठई ।
 फेरि अल्प बुध ज्ञान की होय, सकल कीर्ति आदिक जोय ॥
 तिन यह महा सुगम करि लीए, संस्कृत अति सरल जु कीए ॥

२७ बारहभाषा

पंच रश्मू अपभ्रंश भाषा के प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं । इनकी प्रायः सभी रचनायें अपभ्रंश

भाषा में ही मिलती हैं जिनकी संख्या २० से भी अधिक है। कवि १५ वीं शताब्दी के विद्वान थे और मध्यप्रदेश—ग्वालियर के रहने वाले थे। बारह भावना कवि की एक मात्र रचना है जो हिन्दी में लिखी हुई मिली है लेकिन इसकी भाषा पर भी अपभ्रंश का प्रभाव है। रचना में ३६ पद्य हैं। रचना के अन्त में कवि ने ज्ञान की अगाधता के बारे में बहुत सुन्दर शब्दों में कहा है:—

कथन कहाणी ज्ञान की, कहन सुनन की नाहि। आपन्ही में पाइए, जब देखै बड मांहि ॥

रचना के कुछ सुन्दर पद्य निम्न प्रकार हैं:—

संसार रूप कोई वस्तु नाही, भेदभाव अज्ञान। ज्ञान दृष्टि धरि देखिए, सब ही सिद्ध समान ॥

× × × × × ×
धर्म करावौ धरम करि, किरिया धरम न होय। धरम जु जानत वस्तु है, जो पहचानै कोय ॥

× × × × × ×
करन करावन ग्यान नहि, पढ़ि अर्थ बखानत और। ग्यान दिष्टि यिन उपजै, मोहा तणी हु कोर ॥

रचना में रङ्गू का नाम कहीं नहीं दिया है केवल प्रंथ समाप्ति पर “इति श्री रङ्गू कृत बारह भावना संपूर्ण” लिखा हुआ है जिससे इसको रङ्गू कृत लिखा गया है।

२८ भुवनकीर्ति गीत

भुवनकीर्ति भट्टारक सकलकीर्ति के शिष्य थे और उनकी मृत्यु के पश्चात् ये ही भट्टारक की गद्दी पर बैठे। राजस्थान के शास्त्र भंडारों में भट्टारकों के सम्बन्ध में कितने ही गीत मिले हैं इनमें बूचराज एवं भ० शुभचन्द्र द्वारा लिखे हुये गीत प्रमुख हैं। इस गीत में बूचराज ने भट्टारक भुवनकीर्ति की तपस्या एवं उनकी बहुश्रुतता के सम्बन्ध में गुणानुवाद किया गया है। गीत ऐतिहासिक है तथा इससे भुवन कीर्ति के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में जानकारी मिलती है। बूचराज १६ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान^१ थे इनके द्वारा रची हुई अबतक पांच और रचनाएं मिल चुकी हैं। पूरा गीत अविकल रूप से सूची के पृष्ठ ६६६-६६७ पर दिया हुआ है।

२९ भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्रटीका

महा पं० आशाधर १३ वीं शताब्दी के संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान थे। इनके द्वारा लिखे गये कितने ही ग्रंथ मिलते हैं जो जैन समाज में बड़े ही आदर की दृष्टि से पढ़े जाते हैं। आपकी भूपाल चतुर्विंशतिस्तोत्र की संस्कृत टीका कुछ समय पूर्व तक अप्राप्य थी लेकिन अब इसकी २ प्रतियां जयपुर के अ भंडार में उपलब्ध हो चुकी हैं। आशाधर ने इसकी टीका अपने प्रिय शिष्य विनयचन्द्र के लिये

^१ विस्तृत परिचय के लिए देखिये डा० कासलीवाल द्वारा लिखित बूचराज एवं उनका साहित्य—जैन सन्देश शोधक-११

की थी। टीका बहुत सुन्दर है। टीकाकार ने विनयचन्द्र का टीका के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख दिया है:—

उपशम इव मूर्तिः पूतकीर्तिः स तस्माद् । अजनि विनयचन्द्रः सत्त्वकोरैकचन्द्रः ॥

जगदमृतसगर्भाः शास्त्रसन्दर्भगर्भाः । शुचिचरित सङ्गिष्णोर्यस्य धिन्वन्ति वाचः ॥

विनयचन्द्र ने कुछ समय पश्चात् आशाधर द्वारा लिखित टीका पर भी टीका लिखी थी जिसकी एक प्रति 'अ' भण्डार में उपलब्ध हुई है। टीका के अन्त में "इति विनयचन्द्रनरेन्द्रविरचितभूपाल-स्तोत्रसमाप्तम्" लिखा है। इस टीका की भाषा एवं शैली आशाधर के समान है।

३० मनमोदनपंचशती

कवि छत्त अथवा छत्रपति हिन्दी के प्रसिद्ध कवि होगये हैं। इनकी मुख्य रचनाओं में 'कृष्ण-जगावन चरित्र' पहिले ही प्रकाश में आ चुका है जिसमें तुलसीदास के समकालीन कवि ब्रह्म गुलाल के जीवन चरित्र का अति सुन्दरता से वर्णन किया गया है। इनके द्वारा विरचित १०० से भी अधिक पद हमारे संग्रह में हैं। ये अवांगढ़ के निवासी थे। पं० बन्वारीलालजी के शब्दों में छत्रपति एक आदर्शवादी लेखक थे जिनका धन संचय की ओर कुछ भी ध्यान न था। ये पांच आने से अधिक अपने पास नहीं रखते थे तथा एक घण्टे से अधिक के लिये वह अपनी दुकान नहीं खोलते थे।

छत्रपति जैसवाल थे। अभी इनकी 'मनमोदनपंचशति' एक और रचना उपलब्ध हुई है। इस पंचशती को कवि ने संवत् १६१६ में समाप्त किया था। कवि ने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

वीर भये असरीर गई षट सत पन बरसहि । प्रघटो विक्रम दैत तनौ संवत् सर सरसहि ॥

उनिसइसत षोडशहि पोष प्रतिपदा उजारी । पूर्वाषाढ चछत्र अर्क दिन सब सुखकारी ॥

वर वृद्धि जोग सिद्धत इहमंथ समापित करिलियो । अनुपम असेष आनंद धन भोगत निवसत धिर थयो ॥

इसमें ५१३ पद्य हैं जिसमें सवैया, दोहा आदि छन्दों का प्रयोग किया गया है। कवि के शब्दों में पंचशती में सभी स्फुट कवित्त है जिनमें भिन्न २ रसों का वर्णन है—

सकलसिद्धियम सिद्धि कर पंच परमगुर जेह । तिन पद पंकज कौ सदा प्रनमौ धरि मन नेह ॥

नहि अधिकार प्रबंध नहि फुटकर कवित्त समस्त । जुदा जुदा रस बरनऊं स्वादो चतुर प्रशस्त ॥

मित्र की प्रशंसा में जो पद्य लिखे हैं उनमें से दो पद्य देखिये।

मित्र होय जो न करें चारि बात कौं । उछेद तन धन धर्म मंत्र अनेक प्रकार के ॥

दोष देखि दारै पीठ पीछे होय जस गावै । कारज करत रहै सदा उपकार के ॥

साधारण रीति नहीं स्वारथ की प्रीति जाके । जब तब वचन प्रकासत पचार के ॥
दिल को उदार निरवाहै जो पै दे करार । मति कौ सुठार गुनवीसरै न यार के ॥२१३॥
अंतरंग बाहिज सधुर जैसी किसमिस । धनखरचन कौ कुवेरवांनि धर है ॥
गुन के बधाय कूं जैसे चन्द सायर कूं । दुख तम चूरिवे कूं दिन दुपहर है ॥
कारण के सारिने कूं नर नरु विधन है । मंत्र के सिखायवे कूं मानों सुरगुर है ॥
ऐसे सार मित्र सौ न कीजिये जुदाई कभी । धन भन तन सब बारि देना बर है ॥२१४॥

इस तरह मनमोहन पंचशती हिन्दी की बहुत ही सुन्दर रचना है जो शीघ्र ही प्रकाशन योग्य है ।

३१ मित्रविलास

मित्रविलास एक संग्रह ग्रंथ है जिसमें कवि घासी द्वारा विरचित विभिन्न रचनाओं का संकलन है । घासी के पिता का नाम बहालसिंह था । कवि ने अपने पिता एवं अपने मित्र भारामल के आग्रह से मित्र विलास की रचना की थी । ये भारामल संभवतः वे ही विद्वान हैं जिन्होंने दर्शनकथा, शीलकथा, वातकथा आदि कथाएँ लिखी हैं । कवि ने इसे संवत् १७८६ में समाप्त किया था जिसका उल्लेख ग्रंथ के अन्त में निम्न प्रकार हुआ है:—

कर्म रिपु सो तो चारों गति मैं घसीट फिर्यौ, ताही के प्रसाद सेती घासी नाम पायौ है ।
भारामल मित्र वो बहालसिंह पिता मेरो, तिनकीसहाय सेती ग्रंथ ये बनायौ है ॥
या मैं भूल चूक जो हो सुधि सो सुधार लीजो, सो पै कृपा दृष्टि कीज्यो भाव ये जनायौ है ।
दिगन्धि सतजान हरि को चतुर्थ ठान, फागुण सुदि चौथ सान निजगुण गायौ है ॥

कवि ने ग्रंथ के प्रारम्भ में वर्णनीय विषय का निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

मित्र विलास महासुखदैन, चरनु वस्तु स्वाभाविक ऐन ।
प्रगट देखिये लोक संभार, संग प्रसाद अनेक प्रकार ॥
शुभ अशुभ मन की प्राप्ति होय, संग कुसंग तयो फल सोय ।
पुद्गल वस्तु की निरणय ठीक, हम कूं करनी है तहकीक ॥

मित्र विलास की भाषा एवं शैली दोनों ही सुन्दर हैं तथा पाठकों के मन को लुभावने वाली है । ग्रंथ प्रकाशन योग्य है ।

घासी कवि के पद भी मिलते हैं ।

३२ रागमाला—श्याममिश्र

राग रागिनियों पर निबद्ध रागमाला श्याम मिश्र की एक सुन्दर कृति है । इसका दूसरा नाम

कासम रसिक विलास भी है। श्याममिश्र आगरे के रहने वाले थे लेकिन उन्होंने कासमखां के संरक्षण में जाकर लाहौर में इसकी रचना की थी। कासमखां उस समय वहां का उदार एवं रसिक शासक था। कवि ने निम्न शब्दों में उसकी प्रशंसा की है।

कासमखांन सुजान कृपा कवि पर करी।
रागनि की माला करिवे को चित धरी ॥

दोहा

सेख खान के वंश में उपज्यौ कासमखांन।
निस दीपक ज्यौ चन्द्रमा, दिन दीपक ज्यौ मान ॥
कवि बरनै छवि खान की, सौ बरनी नहीं जाय।
कासमखांन सुजान की अंग रही छवि छाया ॥

रागमाला में भैरोंराग, मालकोशराग, हिंडोलनाराग, दीपकराग, गुणकरीराग, रामकली, ललितरागिनी, विलावलरागिनी, कामोद, नट, केदारो, आसावरी, मल्हार आदि रागरागनियों का वर्णन किया गया है।

श्याममिश्र के पिता का नाम चतुर्भुज मिश्र था। कवि ने रचना के अन्त में निम्न प्रकार वर्णन किया है—

संवत् सौरहसे वरष, उपर बीते दोइ।
फागुन बुदी सनोदसी, सुनौ गुनी जन कोइ ॥

सोरठा

पोथी रची लाहौर, श्याम आगरे नगर के।
राजघाट है ठौर, पुत्र चतुरभुज मिश्र के ॥

इति रागमाला ग्रंथ श्याममिश्र कृत संपूरण।

३३ रुक्मणिकुण्डजी को रासो

यह तिपरदास की रचना है। रासो के प्रारम्भ में महाराजा भीमक की पुत्री रुक्मिणी के सौन्दर्य का वर्णन है। इसके पश्चात् रुक्मिणी के विवाह का प्रस्ताव, भीमक के पुत्र रुक्मि द्वारा शिशुपाल के साथ विवाह करने का प्रस्ताव, शिशुपाल को निमंत्रण तथा उनके सदलबल विवाह के लिये प्रस्ताव, रुक्मिणी का कुण्ड को पत्र लिख सन्देश भिजवाना, कुण्डजी द्वारा प्रस्ताव स्वीकृत करना तथा

सदलबल के साथ भीमनगरी की ओर प्रस्थान, पूजा के बहाने रुक्मिणी का मन्दिर की ओर जाना, रुक्मिणी का सौन्दर्य वर्णन, श्रीकृष्ण द्वारा रुक्मिणी को रथ में बैठाना, कृष्ण शिशुपाल युद्ध वर्णन, रुक्मिणी द्वारा कृष्ण की पूजा एवं उनका द्वारिका नगरी को प्रस्थान आदि का वर्णन किया गया है।

रासो में दूहा, कलश, ओटक, नाराच जाति छंद आदि का प्रयोग किया गया है। रासो की भाषा राजस्थानी है।

नाराच जातिछंद

आखंड भरीष सोहती, त्रिभवरूप मोहती ।
रुणं भणंत नेवरी, सुचल चरण घुघरी ॥
मय भवै भवक भाल, श्रवण हंस सोमती ।
रतन हीर जडित जाम, खीर ली अनोपती ॥
मलमल ज चंद सूर, सीस फूल सोहए ।
वासिग बेणि रत्न जेम, सिरह मणिज मोहए ॥
सोवन मै रलहार, जडित कंठ मै रत्न ।
अखंड जाति जडित ली, नाकिड जलादुलै ॥

३४ लग्नचन्द्रिका

यह ज्योतिष का ग्रंथ है जिसकी भाषा स्योजीराम सौगाणी ने की थी। कवि आमेर के निवासी थे। इनके पिता का नाम कंवरपाल तथा गुरु का नाम पं० जैचन्दजी था। अपने गुरु एवं उनके शिष्यों के आग्रह से ही कवि ने इसकी भाषा संवत् १८७४ में समाप्त की थी। लग्नचन्द्रिका ज्योतिष का संस्कृत में अच्छा ग्रंथ है। भाषा टीका में ५२३ पद्य हैं। इसकी एक प्रति भू भंडार में सुरक्षित है।

इनके लिखे हुये हिन्दी पद एवं कवित्त भी मिलते हैं:—

३५ लब्धिविधान चौपई

लब्धिविधान चौपई एक कथात्मक कृति है इसमें लब्धिविधान व्रत से सम्बन्धित कथा दी हुई है। यह व्रत चैत्र एवं भाद्रप मास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया एवं तृतीया के दिन किया जाता है। इस व्रत के करने से पापों की शान्ति होती है।

चौपई के रचयिता हैं कवि भीषम जिनका नाम प्रथमबार सुना जा रहा है। कवि सांगानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। ये खण्डेलवाल जैन थे तथा गोधा इनका मोत्र था। सांगानेर में उस समय स्वाध्याय एवं पूजा का खूब प्रचार था। इन्होंने इसे संवत् १६१७ (सन् १५६०) में समाप्त किया था।

दोहा और चौपई मिला कर पद्यों की संख्या २०१ है। कवि ने जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है:—

संवत् सोलहसै सतरौ, फगुण मास जबै उतरौ।
उजल पाखि तेरसि तिथि जाण, ता दिन कथा गदी परवाणि ॥६६॥
बरतै निवाली मांहि विख्यात, जैनधर्म तसु गोधा जाति।
यह कथा भीषम कवि कही, जिनपुराण मांहि जैसी लही ॥६७॥
सांगानेरी बसै सुभ गांध, मान नृपति तस चहु खंड नाम।
जहि कै राजि सुखी सब लोग, सकल वस्तु को कीजे भोग ॥६८॥
जैनधर्म की महिमा बणी, संतिक पूजा होई तिहघणी।
भावक लोक बसै सुजाण, सांझ संवारा सुणै पुराण ॥६९॥
आठ विधि पूजा जिएश्वर करै, रागदोष नहीं मन में धरै।
दान चारि सुपात्र देय, मनिष जन्म कौ लाहौ लेच ॥७०॥
कहा बंध चौपई जाणि, पूरा हुआ दोइसै प्रमाण।
जिनवाणी का अन्त न जास, मधि जीब जे लई सुखवास ॥७१॥

इति श्री लब्धि विधान की चौपई संपूर्ण।

३६ बद्धमानपुराण

इसका दूसरा नाम जिनरात्रिव्रत महात्म्य भी है। मुनि पद्मनन्दि इस पुराण के रचयिता हैं। यह ग्रंथ दो परिच्छेदों में विभक्त है। प्रथम सर्ग में ३५६ तथा दूसरे परिच्छेद में २०५ पद्य हैं। मुनि पद्मनन्दि प्रभाचन्द्र मुनि के पट्ट के थे। रचना संवत् इसमें नहीं दिया गया है लेकिन लेखन काल के आधार से यह रचना १५ वीं शताब्दी से पूर्व होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त ये प्रभाचन्द्र मुनि संभवतः वेही हैं जिन्होंने आराधनासार प्रबन्ध की रचना की थी और जो भ० देवेन्द्रकीर्ति के प्रमुख शिष्य थे।

३७ विषहरन विधि

यह एक आयुर्वेदिक रचना है जिसमें विभिन्न प्रकार के विष एवं उनके मुक्ति का उपाय बतलाया गया है। विषहरन विधि संतोष वैद्य की कृति है। ये मुनिहरण के शिष्य थे। इन्होंने इसे कुछ प्राचीन ग्रंथों के आधार पर तथा अपने गुरु (जो स्वयं भी वैद्य थे) के बताये हुए ज्ञान के आधार पर हिन्दी पद्य में लिखकर इसे संवत् १७४१ में पूर्ण किया था। ये चन्द्रपुरी के रहने वाले थे। ग्रंथ में १२७ दोहा चौपई छन्द हैं। रचना का प्रारम्भ निम्न प्रकार से हुआ है:—

अथ विषहरन लिख्यते—

दोहरा—श्री गनेस सरस्वती, सुमरि गुर चरननु चितलाय ।
पेत्रपाल दुखहरन कौ, सुमति सुवृधि बताय ॥

चौपई

श्री जिनचंद सुवाच वखांति, रच्यौ सोभाग्य ते यह हरष मुनिजान ।
इन सीख दीनी जीव दया आनि, संतोष बैद्य लइ तिरह्मनि ॥२॥

३८ व्रतकथाकोश

इसमें व्रत कथाओं का संग्रह है जिनकी संख्या ३७ से भी अधिक हैं । कथाकार पं० दामोदर एवं देवेन्द्रकीर्ति हैं । दोनों ही धर्मचन्द्र सूरि के शिष्य थे । ऐसा मालूम पड़ता है कि देवेन्द्रकीर्ति का पूर्व नाम दामोदर था इसलिये जो कथायें उन्होंने अपनी गृहस्थावस्था में लिखी थीं उनमें दामोदर व्रत लिख दिया है तथा साधु बनने के पश्चात् जो कथायें लिखी उनमें देवेन्द्रकीर्ति लिख दिया गया । दामोदर का उल्लेख प्रथम, षष्ठ, एकादश, द्वादश, चतुर्दश, एवं एकविंशति कथाओं की समाप्ति पर आया है ।

कथा कोश संस्कृत गद्य में है तथा भाषा, भाव एवं शैली की दृष्टि से सभी कथायें उच्चस्तर की हैं । इसकी एक अपूर्ण प्रति अ भंडार में सुरक्षित है । इसकी दूसरी अपूर्ण प्रति ग्रंथ संख्या २५४३ पर देखें । इसमें ४४ कथाओं तक पाठ है ।

३९ व्रतकथाकोश

भट्टारक सकलकीर्ति १५ वीं शताब्दी के प्रकांड विद्वान् थे । इन्होंने संस्कृत भाषा में बहुत ग्रंथ लिखे हैं जिनमें आदिपुराण, धन्यकुमार चरित्र, पुराणसार संग्रह, यशोधर चरित्र, वर्द्धमान पुराण आदि के नाम उल्लेखनीय हैं । अपने जबरदस्त प्रभाव के कारण उन्होंने एक नई भट्टारक परम्परा को जन्म दिया जिसमें ब्र० जिनदास, सुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, शुभचन्द जैसे उच्चकोटि के विद्वान् हुये ।

व्रतकथा कोश अभी उनकी रचनाओं में से एक रचना है । इसमें अधिकांश कथायें उन्हीं के द्वारा विरचित हैं । कुछ कथायें अभ्र पंडित तथा रत्नकीर्ति आदि विद्वानों की भी हैं । कथायें संस्कृत पद्य में हैं । भ० सकलकीर्ति ने सुगन्धदशमी कथा के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है:—

असमगुण समुद्रान्, स्वर्ग मोक्षाय हेतून् ।

प्रकटित शिवमार्गान्, सद्गुरुन् पंचपूज्यान् ॥

विस्तृत परिचय देखिये डा० कातलीवाल द्वारा लिखित बुधराज एवं उनका साहित्य—जैन सन्देशा शोधार्क

त्रिभुवनपतिभवैस्तीर्थनाथादिमुख्यान् ।
जगति सकलकीर्त्या संस्तुवे तद् गुणाख्यै ॥

प्रति में ३ पत्र (१४३ से १४५) बाद में लिखे गये हैं । प्रति प्राचीन तथा संभवतः १७ वीं शताब्दी की लिखी हुई है । कथा कोश में कुल कथाओं की संख्या ५० है ।

४० समोसरण

१७ वीं शताब्दी में ब्रह्म गुलाल हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि हो गये हैं । इनके जीवन पर कवि छत्रपति ने एक सुन्दर काव्य लिखा है । इनके पिता का नाम हल्ल था जो चन्दवार के राजा कीर्ति के आश्रित थे । ब्रह्म गुलाल स्वांग भरना जानते थे और इस कला में पूर्ण प्रवीण थे । एक बार इन्होंने मुनि का स्वांग भरा और ये मुनि भी बन गये । इनके द्वारा विरचित अब तक २ रचनाएं उपलब्ध हो चुकी हैं । जिसमें त्रेपन क्रिया (संवत् १६६५) गुलाल पच्चीसी, जलगतन क्रिया, विवेक चौपई, छपण जगवन चरित्र (१६७१), रसविधान चौपई एवं धर्मस्वरूप के नाम उल्लेखनीय हैं ।

‘समोसरण’ एक स्तोत्र के रूप में रचना है जिसे इन्होंने संवत् १६६८ में समाप्त किया था । इसमें भगवान महावीर के समवसरण का वर्णन किया गया है जो ६७ पद्यों में पूर्ण होता है । इन्होंने इसमें अपना परिचय देते हुये लिखा है कि वे जयनन्दि के शिष्य थे ।

स रहसै अढसठिसमै, माघ दसै सित पक्ष ।

गुलाल ब्रह्म भनि गीत गति, जयोनन्दि पद सिद्ध ॥६६॥

४१ सोनागिर पच्चीसी

यह एक ऐतिहासिक रचना है जिसमें सोनागिर सिद्ध क्षेत्र का संक्षिप्त वर्णन दिया हुआ है । दिगम्बर विद्वानों ने इस तरह के क्षेत्रों के वर्णन बहुत कम लिखे हैं इसलिये भी इस रचना का पर्याप्त महत्व है । सोनागिर पहिले द्रविडा स्टेट में था अब वह मध्यप्रदेश में है । कवि भागीरथ ने इसे संवत् १८६१ ज्येष्ठ सुदी १४ को पूर्ण किया था । रचना में क्षेत्र के मुख्य मन्दिर, परिक्रमा एवं अन्य मन्दिरों का भी संक्षिप्त वर्णन दिया हुआ है । रचना का अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है:—

मेला है जहा कौ कातिक सुद पूतौ को,

हाट हू बजार नाना भांति जुरि आए हैं ।

भावधर बंदन कौ पूजत जिनेंद्र काज,

पाप मूल निकंदन कौ दूर हू सै धाए है ॥

गोठै जैउ नारे पुनि दान दैह नाना विधि,

सुर्ग पंथ जाइवे कौ पूरन पद पाए है ।

कीजिये सहाइ पाइ आप हैं भागीरथ,
गुरुन के प्रताप सौन गिरी के गुण गाए हैं ॥

दोहा

जेठ सुदी चौदस भली, जा दिन रची बनाइ ।
संवत् अष्टादस इकिसठ, संवत् लेउ गिनाइ ॥
पढ़ै सुनै जो भाव धर, ओरे देख सुनाइ ।
मनबंछित फल कौ लिये, सो पूरन पद कौ पाइ ॥

४२ हम्मीररासो

हम्मीररासो एक ऐतिहासिक काव्य है जिसमें महेश कवि ने महिमासाह का बादशाह अला-उद्दीन के साथ झगड़ा, महिमासाह का भागकर रणथम्बीर के महाराजा हम्मीर की शरण में आना, बादशाह अलाउद्दीन का हम्मीर को महिमासाह को छोड़ने के लिये बार २ समझाना एवं अन्त में अला-उद्दीन एवं हम्मीर का अयंकर युद्ध का वर्णन किया गया है । कवि की वर्णन शैली सुन्दर एवं सरल है ।

रासो कब और कहाँ लिखा गया था इसका कवि ने कोई परिचय नहीं दिया है । उसने केवल अपना नामोल्लेख किया है वह निम्न प्रकार है ।

मिले राघपति साही वीर ज्यौ नीर समाही ।
ज्यौ पारिस कौ परसि वजर कंचन होय जाई ॥
अलादीन हमीर से हुआ न होम्यौ होयसे ।
कवि मईस यम उचरै वै सभासई तसु पुरवसै ॥

अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों की सूची

क्रमांक प्र., सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
१. ४३८१	अनंतव्रतोद्यापनपूजा	भा० गुराचंद्र	सं०	घ	१६३०
२. ४३६२	अनंतचतुर्दशीपूजा	शांतिदास	सं०	ख	×
३. २८६५	अभिधान रत्नाकर	धर्मचंद्रगणि	सं०	झ	×
४. ४३६१	अभिषेक विधि	लक्ष्मीसेन	सं०	ज	×
५. ५६६	अमृतधर्मरसकाव्य	गुराचंद्र	सं०	अ	१६ वीं शताब्दी
६. ४४०१	अष्टाहिकापूजाकथा	सुरेन्द्रकीर्ति	सं०	ब	१८५१
७. २५३५	आराधनासारप्रबन्ध	प्रभाचंद्र	सं०	ट	×
८. ६१६	आराधनासारवृत्ति	पं० आशाधर	सं०	ख	१३ वीं शताब्दी
९. ४४३५	ऋषिमण्डलपूजा	ज्ञानभूषण	सं०	ख	×
१०. ४४८०	कंजिकाप्रतोद्यापनपूजा	ललितकीर्ति	सं०	झ	×
११. २५४३	कथाकोश	देवेन्द्रकीर्ति	सं०	घ	×
१२. ५४५६	कथासंग्रह	ललितकीर्ति	सं०	ब	×
१३. ४४४६	कर्मचूरप्रतोद्यापन	लक्ष्मीसेन	सं०	ख	×
१४. ३८२८	कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका	देवतिलक	सं०	ब	×
१५. ३८२७	कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका	पं० आशाधर	सं०	ब	१३ वीं "
१६. ४४६७	कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	प्रभाचंद्र	सं०	ब	१५ वीं "
१७. २७५८	कातन्त्रविभ्रमसूत्राचचूरि	चारिचरसिंह	सं०	ब	१६ वीं "
१८. ४४७३	कुण्डलगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	सं०	ब	×
१९. २०२३	कुमारसंभवटीका	कनकसागर	सं०	ब	×
२०. ४४८४	गजपंथामण्डलपूजनविधान	भ० सेमेश्वरी	सं०	ख	×
२१. २०२८	गजसिंहकुमारचरित्र	विनयचन्द्रसुरि	सं०	ङ	×
२२. ३८३६	गीतधीतराग	प्रभिनव चारुकीर्ति	सं०	ब	×
२३. ११७	गोम्मटसारकर्मकाण्डटीका	कनकनन्दि	सं०	क	×
२४. ११८	गोम्मटसारकर्मकाण्डटीका	ज्ञानभूषण	सं०	क	×
२५. ६१	गोम्मटसारटीका	सकलभूषण	सं०	क	×
२६. ५४३६	चंदनषष्ठीप्रतकथा	छत्रसेन	सं०	ब	×
२७. २०४८	चंद्रप्रभकाव्यपंजिका	गुरानंदि	सं०	अ	×

क्रमांक ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथमंडार	रचना काल
२८.	४५१२ चारित्रशुद्धिविधान	सुमतिब्रह्म	सं०	च	×
२९.	४६१४ ज्ञानपंचविंशतिकाप्रतोद्यापन	भ० सुरेन्द्रकीर्ति	सं०	च	×
३०.	४६२१ एमोकारपैतीसीप्रतविधान	कनककीर्ति	सं०	ड	×
३१.	२१३ तत्त्वयर्णन	शुभचंद्र	सं०	अ	×
३२.	५४४६ त्रेपनक्रियोद्यापन	देवेन्द्रकीर्ति	सं०	अ	×
३३.	४७०५ दशलक्षणव्रतपूजा	जिनचन्द्रसूरि	सं०	ड	×
३४.	४७०६ दशलक्षणव्रतपूजा	मल्लिभूषण	सं०	छ	×
३५.	४७०२ दशलक्षणव्रतपूजा	सुमतिब्रह्म	सं०	छ	×
३६.	४७२१ द्वादशप्रतोद्यापनपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	सं०	अ	१७७२
३७.	४७२४ द्वादशप्रतोद्यापनपूजा	पद्मनंद	सं०	अ	×
३८.	४७२५ " " "	जगत्कीर्ति	सं०	च	×
३९.	७७२ धर्मप्रश्नोत्तर	विमलकीर्ति	सं०	अ	×
४०.	२१५२ नागकुमारचरित्रटीका	प्रभाचन्द्र	सं०	ट	×
४१.	४८१ निजस्मृति	×	सं०	ट	×
४२.	४८१६ नेमिनाथपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	सं०	अ	×
४३.	४८२३ पंचकल्याणकपूजा	"	सं०	क	×
४४.	३६७१ परमात्मराजस्तोत्र	सकलकीर्ति	सं०	अ	×
४५.	५४२८ प्रशस्ति	दामोदर	सं०	अ	×
४६.	१६१८ पुराणसार	श्रीचंदमुनि	सं०	अ	१०७७
४७.	५४४० भावनाचौतीसी	भ० पद्मनंद	सं०	अ	×
४८.	४०५३ भूपालचतुर्विंशतिटीका	भासावर	सं०	अ	१३ वीं शताब्दी
४९.	४०५४ भूपालचतुर्विंशतिटीका	विजयचंद	सं०	अ	१३ वीं " "
५०.	५०५७ मांगीतुंगीगिरिमंडलपूजा	विश्वभूषण	सं०	छ	१७५६
५१.	५३८१ मुनिसुव्रतचंद्र	प्रभाचंद्र	सं० हि०	अ	×
५२.	६७६ मूलाचारटीका	वसुनंद	प्रा० सं०	अ	×
५३.	२३२३ यशोधरचरित्रटिप्पण	प्रभाचंद्र	सं०	अ	×
५४.	२६८३ रत्नत्रयविधि	भासावर	सं०	अ	×
५५.	२६३५ रूपभञ्जरीनाममाला	रूपचंद	सं०	अ	१६४४
५६.	२३५० वल्लभानकाव्य	मुनिपद्मनंद	सं०	अ	१३ वीं " "

क्रमांक प्र. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
४७.	३२६५ वाग्मद्वालंकारटीका	बादिराज	सं०	अ	१७२६
४८.	५४४७ वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनंदि	सं०	अ	×
४९.	५२२५ शरदुत्सवदीपिका	सिंहनंदि	सं०	अ	×
५०.	५८२६ शांतिनाथस्तोत्र	धुलाभद्रस्वामी	सं०	अ	×
५१.	४१०७ शांतिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	सं०	अ	×
५२.	५१६६ षण्मतिक्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	सं०	अ	×
५३.	५४६ षष्ठ्यधिकशतकटीका	राजहंसोपाध्याय	सं०	अ	×
५४.	१८२३ सप्तनयावधौथ	मुनिनेत्रसिंह	सं०	अ	×
५५.	५४६७ सरस्वतीस्तुति	आशाधर	सं०	अ	१३ वीं "
५६.	४६४६ सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचंद्र	सं०	इ	×
५७.	२७३१ सिंहासनद्वारिशिका	क्षेमकरमुनि	सं०	ल	×
५८.	३८१८ कल्याणक	समस्तभद्र	प्रा०	क	×
५९.	३६३१ धर्मचन्द्रप्रबन्ध	धर्मचन्द्र	प्रा०	अ	×
६०.	१००५ यत्याचार	प्रा० वसुनंदि	प्रा०	अ	×
६१.	१८३६ अजितनाथपुराण	विजयसिंह	अप०	अ	१५०५
६२.	६४५४ कल्याणकविधि	विनयचंद	अप०	अ	×
६३.	५४४ चूनडी	"	"	अ	×
६४.	२६८८ जिनपूजापुरंदरविधानकथा	अमरकोति	अप०	अ	×
६५.	५४३६ जिनरात्रिविधानकथा	नरमेन	अप०	अ	१७ वीं
६६.	२०६७ शोमिणाहचरित	लक्ष्मणदेव	अप०	अ	×
६७.	२०६८ शोमिणाहचरित	दामोदर	अप०	अ	१२८७
६८.	५६०२ त्रिशतजिनचउबीसी	महारासिंह	अप०	अ	×
६९.	५४३६ दशलक्षणकथा	गुणभद्र	अप०	अ	×
७०.	२६८८ दुधारसविधानकथा	विनयचंद	अप०	अ	×
७१.	४६८६ नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्ति	अप०	अ	×
७२.	२६८८ निर्भरपंचमीविधानकथा	विनयचंद	अप०	अ	×
७३.	२१७६ पासचरित	तेजपाल	अप०	ट	×
७४.	५४३६ रोहिणीविधान	गुणभद्र	अप०	अ	×
७५.	२६८६ रोहिणीचरित	देवनंदि	अप०	अ	१५ वीं

क्रमांक प्र. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथमंडार	रचना काल
८६.	२४३७ सम्भवजिण्णाहचरित	तेजपाल	अ०	च	×
८७.	५४५४ सम्यक्त्वकौमुदी	सहणपाल	अ०	अ	×
८८.	२६८८ सुखसंपत्तिविधानकथा	विमलकीर्ति	अ०	अ	×
८९.	५४३९ सुगन्धदशमीकथा	"	अ०	अ	×
९०.	५३९१ अंजनारास	धर्मभूषण	हि०	प०	अ
९१.	४३४७ अक्षयनिधिपूजा	मानभूषण	हि०	प०	इ
९२.	२५०८ अठारहनातेकीकथा	श्रीपालचंद	हि०	प०	अ
९३.	६००३ अनन्तकेछापय	धर्मचन्द्र	हि०	प०	भ
९४.	४३८१ अनन्तव्रतरास	अ० जिनदास	हि०	प०	अ
९५.	४२१५ अर्हन्कचौदालियागीत	विमलकीर्ति	हि०	प०	अ
९६.	५७६७ आदित्यवारकथा	रायमल्ल	हि०	प०	इ
९७.	५४२५ आदित्यवारकथा	वादिचन्द्र	हि०	प०	अ
९८.	५३९२ आदीश्वरकासमवसरन	×	हि०	प०	अ
९९.	५७३० आदित्यवारकथा	सुरेन्द्रकीर्ति	हि०	प०	च
१००.	५६१५ आदिनाथस्तवन	पल्ल	हि०	प०	छ
१०१.	५४८७ आराधनाप्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीर्ति	हि०	प०	अ
१०२.	३८६४ आरतीसंग्रह	अ० जिनदास	हि०	प०	अ
१०३.	३४०० उपदेशछत्तीसी	जिनहर्ष	हि०	प०	अ
१०४.	४४२८ अधिमंडलपूजा	आ० गुणनदि	हि०	प०	अ
१०५.	२५४० कठियारकानढरीचौपई	×	हि०	प०	अ
१०६.	६०५२ कवित्त	अगरदास	हि०	प०	ट
१०७.	६०६५ कवित्त	बनारसीदास	हि०	प०	ट
१०८.	५३९७ कर्मचूरव्रतवेलि	मुनिसकलचंद	हि०	प०	अ
१०९.	५६०८ कविवल्लभ	हरिवरगुदास	हि०	प०	अ
११०.	३८६४ कृष्णछंद	चन्द्रकीर्ति	हि०	प०	अ
१११.	५४८७ कृष्णरुक्मिणीवेलि	पृथ्वीराज	हि०	प०	अ
११२.	२५५७ कृष्णरुक्मिणीमंगल	पद्मभगत	हि०	प०	अ
११३.	५६१५ गीत	पल्ल	हि०	प०	छ
११४.	३८६४ गुरुछंद	शुभचंद	हि०	प०	अ

क्रमांक	प्र. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल	
११५.	५६३२	चतुर्दशीकथा	डालूराम	हि०	प०	ख	१७६५
११६.	५४१७	चतुर्विंशतिछप्पय	गुणकीर्ति	हि०	प०	अ	१७७७
११७.	४५२६	चतुर्विंशतितीर्थकरपूजा	नेमिचंदपाटनी	हि०	प०	क	१८८०
११८.	४५३५	चतुर्विंशतितीर्थकरपूजा	मुगनचंद	हि०	प०	च	१८२६
११९.	२५६२	चन्द्रकुमारकीवार्त्ता	प्रतापसिंह	हि०	प०	ज	१८४१
१२०.	२५६४	चन्दनमलयागिरीकथा	चत्तर	हि०	प०	झ	१७०१
१२१.	२५६३	चन्दनमलयागिरीकथा	भद्रसेन	हि०	प०	घ	×
१२२.	१८७६	चन्द्रप्रभपुराण	होरालाल	हि०	प०	क	१६१३
१२३.	१५७	चर्चासागर	चम्पालाल	हि०	ग०	अ	×
१२४.	१५४	चर्चासागर	प० शिवजीलाल	हि०	ग०	क	×
१२५.	२०५८	चारुदत्तचरित्र	कल्याणकीर्ति	हि०	प०	अ	१६६२
१२६.	५६१५	चितामणिजयमाल	ठक्कुरसी	हि०	प०	ख	१६ वीं शताब्दी
१२७.	५६१५	चेतनगीत	मुनिसिंहनंदि	हि०	प०	ख	१७ वीं शताब्दी
१२८.	५४०१	जिनचौबीसीभवान्तरास	विमलेन्द्रकीर्ति	हि०	प०	अ	×
१२९.	५४०२	जिनदत्तचौपई	रत्नकवि	हि०	प०	अ	१३५४
१३०.	५४१४	ज्योतिपसार	कृपाराम	हि०	प०	अ	१७६२
१३१.	६०६१	ज्ञानवावनी	मतिकोखर	हि०	प०	ट	१५७४
१३२.	५८२६	टंढाणागीत	दूधराज	हि०	प०	ख	१६ वीं शताब्दी
१३३.	३६६	तत्त्वार्थसूत्रटीका	कनककीर्ति	हि०	ग०	ड	१८ वीं "
१३४.	३६८	तत्त्वार्थसूत्रटीका	पांडेजयवन्त	हि०	ग०	ख	१८ वीं "
१३५.	३७४	तत्त्वार्थसूत्रटीका	राजमल्ल	हि०	ग०	अ	१७ वीं "
१३६.	३७८	तत्त्वार्थसूत्रभाषा	शिशिरचंद	हि०	प०	क	१६ वीं "
१३७.	४६२७	तीनचौबीसीपूजा	नेमीचंदपाटणी	हि०	प०	क	१८६४
१३८.	६००६	तीसचौबीसीचौपई	दयाराम	हि०	प०	अ	१७४६
१३९.	५८८१	तेईसबोलविवरण	×	हि०	प०	ख	१६ वीं शताब्दी
१४०.	१७३६	दर्शनसारभाषा	नथमल	हि०	प०	क	१६२०
१४१.	१७४०	दर्शनसारभाषा	शिवजीलाल	हि०	ग०	क	१६२३
१४२.	४२४५	देवकीकीढाल	सूर्यकरणासलीवाल	हि०	प०	अ	×
१४३.	४६८	द्रव्यसंग्रहभाषा	बाबा दुलीचंद	हि०	ग०	क	१६६६

क्रमिक सं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
१४४.	५८८१ द्रव्यसंग्रहभाषा	हेमराज	हि० ग०	छ	१७३१
१४५.	५४०२ नगरों की बसायतका विवरण	×	हि० ग०	अ	×
१४६.	२६०७ नागमंता	×	हि० प०	अ	१८६३
१४७.	४२४६ नागश्रीसज्जमात्र	विनयचंद	हि० प०	अ	×
१४८.	८११ निजामणि	ब० जिनदास	हि० प०	क	१५ वीं शताब्दी
१४९.	५४४६ नेमिजितंदव्याहली	लेतसी	हि० प०	अ	१७ वीं "
१५०.	२१५८ नेमीजीकाचरित्र	आणन्द	हि० प०	अ	१८०४
१५१.	५३६२ नेमिजीकोमंगल	विश्वभूषण	हि० प०	अ	१६६८
१५२.	३८६४ नेमिनाथछंद	शुभचंद	हि० प०	अ	१६ वीं "
१५३.	४२५४ नेमिराजमतिगीत	हीरानंद	हि० प०	अ	×
१५४.	२६१४ नेमिराजुलव्याहली	गोपीकृष्ण	हि० प०	अ	१८६३
१५५.	५४२६ नेमिराजुलविवाद	ब० जिनदास	हि० प०	अ	१७ वीं "
१५६.	५६१५ नेमीश्वरकाचौमासा	मुनिसिंहनंद	हि० प०	छ	१७ वीं "
१५७.	५८२६ नेमिश्वरकाहिंडोलना	मुनिरत्नकीर्ति	हि० प०	छ	×
१५८.	४८२६ नेमीश्वररास	मुनिरत्नकीर्ति	हि० प०	छ	×
१५९.	३६५० पंचकल्याणकपाठ	हरचंद	हि० प०	छ	१८२३
१६०.	२१७३ पांडवचरित्र	लालचंदन	हि० प०	ट	१७६८
१६१.	४२५७ पद	ऋषिशिवलाल	हि० प०	अ	×
१६२.	१४३६ परमात्मप्रकाशटीका	खानचंद	हि०	क	१८३६
१६३.	५८३० प्रधुखरास	कृष्णराय	हि० प०	छ	×
१६४.	५३६४ पार्श्वनाथचरित्र	विश्वभूषण	हि०	अ	१७ वीं "
१६५.	४२६० पार्श्वनाथचौपई	प० लाखो	हि० प०	ट	१७३४
१६६.	३८६४ पार्श्वछन्द	ब० लेखराज	हि० प०	अ	१६ वीं "
१६७.	३२७७ पिंगलछंदशास्त्र	माखनकवि	हि० प०	अ	१८६३
१६८.	२६२३ पुण्यासवकथाकोश	टेकचंद	हि० प०	क	१६२८
१६९.	५२५ बंधुदयसत्ताचौपई	श्रीलाल	हि० प०	ट	१८८१
१७०.	५८५६ बिहारीसतराईटीका	कृष्णराय	हि० प०	छ	×
१७१.	५६०८ बिहारीसतराईटीका	हरचरगुदास	हि० प०	अ	१८३४
१७२.	५४६७ मुवनकीर्तिगीत	बूचराज	हि० प०	अ	१६ वीं "

क्रमांक	प्रं. सु. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथसंस्कार	रचना काव
१७३.	२२५४	मंगलकलशमहासुनिचतुष्पदी	रंगवितमगणि	हि० प०	म	१७१४
१७४.	३४५६	मत्तमोदनपंचशती	छत्रपति	हि० प०	क	१६१६
१७५.	६०४६	मनोहरमञ्जरी	मनोहरमिश्र	हि० प०	ठ	×
१७६.	३५६४	महावीरछंद	शुभचंद	हि० प०	म	१६ वीं
१७७.	२६३५	मानतुं गमानर्वातचौपई	मोहनविजय	हि० प०	क	×
१७८.	३१५५	मानविनोद	मानसिंह	हि० प०	क	×
१७९.	३४६१	मित्रधिलास	वासी	हि० प०	क	१७५६
१८०.	१६४५	मुनिसुव्रतपुराण	इन्द्रजीत	हि० प०	क	१८५५
१८१.	२३१३	यशोधरचरित्र	गारवदास	हि० प०	—	१६५१
१८२.	२३१५	यशोधरचरित्र	पन्नालाल	हि० ग०	क	१६३२
१८३.	५११३	रत्नावलिब्रतविधान	ब० कृष्णदास	हि० प०	म	१६ वीं
१८४.	५५०१	रविब्रतकथा	जयकीर्ति	हि० प०	म	१७ वीं
१८५.	६०३८	रागमाला	श्याममिश्र	हि० प०	ट	१६०२
१८६.	३४६४	राजनीतिशास्त्र	जमुराम	हि० प०	भ	×
१८७.	५३६८	राजसभारंजन	गंगादास	हि० प०	म	×
१८८.	६०४५	रुक्मणिऋष्णजीकोरास	तिवरदास	हि० प०	ट	×
१८९.	२६८६	रैदव्रतकथा	ब० जिनदास	हि० प०	क	१५ वीं
१९०.	६०६७	रोहिणीविधिकथा	बंसीदास	हि० प०	ट	१६६५
१९१.	५६६६	लग्नचन्द्रिकाभाषा	स्योजीरामसोगाणी	हि० प०	ज	×
१९२.	६०८६	लब्धिविधानचौपई	भीषमकवि	हि० प०	ट	१६१७
१९३.	५६५१	लट्टरीनेमीश्वरकी	विश्वभूषण	हि० प०	ट	×
१९४.	६१०५	वसंतपूजा	मन्मथराज	हि० प०	ट	१८ वीं
१९५.	५५१६	वाजिदजी के अड्डिल	वाजिद	हि० प०	म	×
१९६.	२३५६	विक्रमचरित्र	मन्मथसोम	हि० प०	ज	१७२४
१९७.	३५६४	विजयकीर्तिछंद	शुभचंद	हि० प०	म	१६ वीं
१९८.	३२१३	विषहरनविधि	संतोषकवि	हि० प०	छ	१७४१
१९९.	२६७५	वैदरभीविवाह	पेमराज	हि० प०	म	×
२००.	३७०४	षट्श्लेश्यावेलि	साहलोद	हि० प०	भ	१७३०
२०१.	५४०२	शहरमारोठ की पत्नी		हि० ग०	म	×

क्रमिक प्र. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
२०२	५४१७ शीलरास	गुणकीर्ति	हि० प०	अ	१७१३
२०३	५६४१ शीलरास	ब्र० रायमनादेवसूरि	हि० प०	अ	१६ वीं
२०४	३६६६ शीलरास	विजयदेवसूरि	हि० प०	अ	१६ वीं
२०५	२७०१ श्रेणिकचौपई	हृ गावेद	हि० प०	अ	१८२६
२०६	२४३२ श्रेणिकचरित्र	विजयकीर्ति	हि० प०	अ	१८२०
२०७	५३६२ समोसरण	ब्र० गुलाल	हि० प०	अ	१६६८
२०८	५५२८ स्याभवत्तीसी	नंददास	हि० प०	अ	×
२०९	२४३८ सागरदत्तचरित्र	हीरकवि	हि० प०	अ	१७२४
२१०	१२१६ सामाथिकपाठभाषा	तिलोकचंद	हि० प०	अ	×
२११	३७०६ हम्मीररासो	महेकाकवि	हि० प०	ड	×
२१२	१६६४ हरिवंशपुराण	×	हि० ग०	अ	१६७१
२१३	२७४२ होलिका चौपई	ब्रंगरकवि	हि० प०	छ	१६२६



भट्टारक सकलकीर्ति कृत यशोधर चरित्र की सचित्र प्रति के दो सुन्दर चित्र



यह सचित्र प्रति जयपुर के दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है ।
 राजा यशोधर दुःस्वप्न की शांति के लिये अन्य जीवों की बलि न
 चढ़ा कर स्वयं की बलि देने को तैयार होता है ।
 रानी हाहाकार करती है ।

[दूसरा चित्र अगले पृष्ठ पर देखिये]

चित्र नं० २



जिन चैस्थालय एवं राजमहल का एक दृश्य
(ग्रंथ सूची क्र. सं. २२६५ वेष्टन मंगल्य ११४)

ॐ श्री महावीराय नमः ॐ

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रन्थसूची

विषय-सिद्धान्त एवं चर्चा

१. अथेदीपिका—जिनभट्टगणि । पत्र सं० ५७ से ६८ तक । आकार १०×४½ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-जैन सिद्धान्त । रचना काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । बेष्टन संख्या २ । प्राप्ति स्थान छ भण्डार ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टप्पा टीका सहित है ।

२. अथप्रकाशिका—सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० ३०३ । आ० ११½×८ इंच । भा० राजस्थानी (हुंकारी गद्य) । विषय-सिद्धान्त । १० काल सं० १६१४ । ले० काल × । पूर्ण । बे० सं० ३ । प्राप्ति स्थान छ भण्डार ।

विशेष—उमास्वामी कृत तत्त्वार्थ सूत्र की यह विशद व्याख्या है ।

३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल × । बे० सं० ४८ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२७ । ले० काल सं० १६३५ आसोज बुदी ६ । बे० सं० १८१६ । प्राप्ति स्थान छ भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर एवं आकर्षक है ।

५. अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन..... । पत्र सं० ४६ । आ० ६×६ इंच । भा० हिन्दी (गद्य) । विषय—आठ कर्मों का वर्णन । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । प्राप्ति स्थान छ भण्डार ।

विशेष—ज्ञानवरणादि आठ कर्मों का विस्तृत वर्णन है । साथ ही गुरुस्थानों का भी अच्छा विवेचन किया गया है । अन्त में प्रती एवं प्रतिभाओं का भी वर्णन दिया हुआ है ।

६. अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन..... । पत्र सं० ७ । आ० ८×५ इंच । भा० हिन्दी । विषय—आठ कर्मों का वर्णन । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । बे० सं० २५८ । प्राप्ति स्थान छ भण्डार ।

७. अर्हत्प्रवचन..... । पत्र सं० २ । आ० १२×५½ इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । बे० सं० १८८२ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—सूत्र मात्र हैं। सूत्र संख्या ८५ हैं। पांच अध्याय हैं।

८. अर्हत्प्रवचनव्याख्या..... पत्र सं० ११। आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच। भा० संकुन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६१। प्राप्ति स्थान ट भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम चतुर्दश सूत्र भी है।

९. आचारांगसूत्र..... पत्र सं० ५३। आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच। भा० प्राकृत। विषय—आगम। र० काल ×। ले० काल सं० १८२०। अपूर्ण। वे० सं० ६०६। प्राप्ति स्थान अ भण्डार।

विशेष—छठा पत्र नहीं है। हिन्दी में टक्का टीका दी हुई है।

१०. आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक..... पत्र सं० २। आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच। भा० प्राकृत। विषय—आगम। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० २८। प्राप्ति स्थान च भण्डार।

११. आश्रवत्रिभंगी—मेसिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ३१। आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इंच। भा० प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १८२२ वैशाख सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० १८२। प्राप्ति स्थान ज भण्डार।

१२. प्रति सं० ८। पत्र सं० १३। ले० काल ×। वे० सं० १८४३ प्राप्ति स्थान ट भण्डार।

१३. प्रति सं० ३। पत्र सं० २१। ले० काल ×। वे० सं० २६५। प्राप्ति स्थान अ भण्डार।

१४. आश्रवत्रिभंगी..... पत्र सं० ६। आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इंच। भा० हिन्दी। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० २०१५। प्राप्ति स्थान अ भण्डार।

१५. आश्रववर्णन..... पत्र सं० १४। आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$ इंच। भा० हिन्दी। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १९०। प्राप्ति स्थान झ भण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण शीर्ण है।

१६. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० १९६। प्राप्ति स्थान झ भण्डार।

१७. इक्कीसठाणाचर्चा—सिद्धसेन सूरि। पत्र सं० ४। आ० ११×४ $\frac{१}{२}$ इंच। भा० प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६५। प्राप्ति स्थान ट भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम एकविंशतिस्थान-प्रकरण भी है।

१८. उत्तराध्ययन..... पत्र सं० २५। आ० ६ $\frac{१}{२}$ ×५ इंच। भा० प्राकृत। विषय—आगम। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६८०। प्राप्तिस्थान अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है।

१६ उत्तराध्ययनभाषाटीका..... । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इंच । भा० हिन्दी ।
विषय-भागम । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२४४ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का प्रारम्भ निम्न प्रकार है ।

परम दयान दया करू, आमा पूरण काज ।
षष्ठवीसे जिणवर नमुं, चउवीसे पणधार ॥ १ ॥
धरम ग्यान दाता सुगुरु, अहनिसे ध्यान धरेस ।
वाणी वर देसी सरस, विघन हार विघनेस ॥ २ ॥
उत्तराध्ययन चउदसइ, मित्र छए अधिकार ।
अलप अकल पुरा खंड चणा, कहं बात मति अनुसार ॥ ३ ॥
स्तुर नाह, अर सांनसो, ते अधिकार अनुप ।
निष विकथा परिहरी, सुग ज्यो आलस मूढ ॥ ४ ॥

पागे माकेत नगरी का वर्णन है । कई डालें दी हुई हैं ।

२०. उदयसत्तार्जधप्रकृति वर्णन..... । पत्र सं० १ । आ० ११×५ इंच । भा० संस्कृत ।
विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८४० । प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।

२१ कर्ममन्थसत्तरी..... । पत्र सं० २८ । आ० ६×४ इंच । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त ।
२० काल × । ले० काल सं० १७८६ माह बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १२२ । प्राप्तिस्थान अ भण्डार ।

विशेष—कर्म सिद्धान्त पर विवेचन किया गया है ।

२२. कर्मप्रकृति—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० १२ । आ० १० इंच × ४ इंच । भा० प्राकृत । विषय-
सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १६८१ मंगसिर बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २६७ । प्राप्तिस्थान अ भण्डार ।

विशेष—पांडे डाबू के पठनार्थ नागपुर में प्रतिनिधि की गई थी । संस्कृत में संक्षिप्त टीका भी हुई है ।

प्रशस्ति—संवत् १६८१ वरषे मिति भागसिर वदि १० शुभ दिने भीमनागपुरे पूर्णोक्ता पांडे डाबू
पठनार्थ लिखित मुरजम मुनि सा० धर्मदासेन प्रदत्ता ।

२३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ८५ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है ।

२४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० १४० । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है ।

२५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १७६८ । अपूर्ण । वे० सं० १६६३ । अ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य वृन्दावन ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

२६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८०२ फाल्गुन बुदी ७ । वे० सं० १०५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसकी प्रतिलिपि विद्यानन्दि के शिष्य अक्षैराम मल्लकचन्द ने रुठमल के निवे के निवे की थी । प्रति के दोनों ओर तथा ऊपर नीचे संस्कृत में संक्षिप्त टीका है ।

२७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १६७१ आषाढ सुदी २ । वे० सं० २६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । भालपुरा में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई तथा सं० १६८७ में मुनि मन्दकीर्ति ने प्रति का संशोधन किया ।

२८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८२३ ज्येष्ठ बुदी १४ । वे० सं० १०५ । अ भण्डार ।

२९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८१६ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० ७१ । अ भण्डार ।

३०. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८१६ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संकेत दिये हुये हैं ।

३१. प्रति सं० १० । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८१६ । अ भण्डार ।

विशेष—१५६ गायत्री हैं ।

३२. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १७६३ वैशाख बुदी ११ । वे० सं० १६२ । अ भण्डार ।

विशेष—अम्बावती में पं० रुठा महारमा ने पं० जीवाराम के शिष्य मोहनलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३३. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८२३ । अ भण्डार ।

३४. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १६४४ कार्तिक बुदी १० । वे० सं० १२६ । अ भण्डार ।

३५. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० २१५ । अ भण्डार ।

विशेष—वृन्दावन में राय सूर्यसेन के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी ।

३६. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १६ । ले० काल X । वे० सं० १०५ । अ० भण्डार ।

३७. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ३ से १८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २८० । अ० भण्डार ।

३८. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १७ । ले० काल X । वे० सं० १०५ । अ० भण्डार ।

३९. प्रति सं० १८ । पत्र सं० १४ । ले० काल X । वे० सं० १३० । अ० भण्डार ।

४०. प्रति सं० १९ । पत्र सं० ५ से १७ । ले० काल सं० १७६० । अपूर्ण । वे० सं० २००० । ट० भण्डार ।

विशेष—बुन्दावती नगरी में पार्श्वनाथ चैत्यालय में श्रीमान् बुधमिह के विजय राज्य में आचार्य उदयभूषण के प्रशस्य पं० तुलसीदास के शिष्य त्रिलोकभूषण ने संशोधन करके प्रतिलिपि की । प्रारम्भ के तथा बीच के कुछ पत्र नहीं हैं । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४१. प्रति सं० २० । पत्र सं० १३ से ४३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १६८६ । ट० भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । गुजराती टीका सहित है ।

४२. कर्मप्रकृतिटीका—टीकाकार सुमतिकीर्ति । पत्र सं० २ से २२ । आ० १२×१३ इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल सं० १८२२ । वे० सं० १२५२ । अपूर्ण । अ० भण्डार ।

विशेष—टीकाकार ने यह टीका भ० आनभूषण के सहस्य से लिखी थी ।

४३. कर्मप्रकृति..... पत्र सं० १० । आ० ८½×४½ इंच । भा० हिन्दी । २० काल । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । अ० भण्डार ।

४४. कर्मप्रकृतिविधान—बनारसीदास । पत्र सं० १६ । आ० ८½×४½ इंच । भा० हिन्दी । २० काल । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३७ । अ० भण्डार ।

४५. कर्मविपाकटीका—टीकाकार सकलकीर्ति । पत्र सं० २४ । आ० १२×५ इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल सं० १७६८ आषाढ बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १५६ । अ० भण्डार ।

विशेष—कर्मविपाक के मूलकर्ता अहं नेमिचन्द्र हैं ।

४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल X । वे० सं० १२ । अ० भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४७. कर्मस्तवसूत्र—देवेन्द्रसूरि । पत्र सं० १२ । आ० ११×६ इंच । भा० प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । वे० सं० १०५ । अ० भण्डार ।

विशेष—गाथाओं पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४८. कल्पसिद्धान्तसंग्रह..... पत्र सं० ५२ । आ० १०×२४ इंच । भा० प्राकृत । विषय—
आगम । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६६ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री जिनसागर सूरि की आज्ञा से प्रतिलिपि हुई थी । गुजराती भाषा में टीका सहित है ।

अन्तिम भाग—मूलः—तेषां कालेषां तेषां समयसं.....तित्तरणं पडि बुझा ।

अर्थ—तिसह कालहं गर्भापहार कालह तिसह समयड गर्भापहार अकी पहिली अमरा भगवंत श्री महावीर विहु जानेकरी सहित ह जिहुता ते अणी डमजि जागड नेहरियो मध्य पण्यवताण्ड । उहा अकी लेह तिसलानी कुलह संक्रमाविस्यड । अनह जिगि बलासड संक्रमावड ने वेला न जाण्ड । अपहरणकाल अंतर्मुहूर्त संजाविगड अनह उपयोग काल पिणि अंतर्मुहूर्त प्रमाण । पर स्रजस्थनाउपयोग धिकड । संहरण काल मूढम जाणिबड बली श्री आचारांग माहि कहिउसड । संहरण काल पिणि जाणड । पर ए पाठ सगलह नहों । ते भणी आवीर्योन ही । तिसलानी कुलि आया पेछी जागड । जिणी रात्रिह अमरा भगवंत श्री महावीर देवासांदा बाह्यणी सुखनाय्या मूर्ती । काई मूर्ती, काई जागती । यह वाउदार स्फाटं जिस्या पूर्वह बराब्या तिस्या सउदह महास्वप्न विगला क्षत्रियाणी पड माह्राहभा खासी लीधा । इमउ स्वप्न देखि जागी । जे भणी कल्याण कारिया निरुपहइन । धन धान्य ना करसाहार । संगसीक । स श्री कजिमड घरि बाजह बीपड घर पहुता । हिवह विगला क्षत्रियाणी जिणह पुकारड सुपिना देखिस्यड ते प्रसांतड वाचिस्या । य श्री कल्प सिद्धान्तनी वाचना तण्ड अधिकारड । एवं भाग्यवंतं वान छड । शील पालड । तप तपड । भावना भावई एवंविध धर्म कर्तव्य करड ते श्री देवगुरु तणउ प्रसाद देवनह अधिकारह विधि चैत्यालय पूज्यमान श्री पार्वनाथ तण्ड प्रसावि गुप्ती परंपरायड सुविहित वक्रबुडामणि श्री उद्योतनसूरि श्री वदमान सूरि श्री । श्री जिनेश्वर सूरि । श्री अभयदेव सूरि युगप्रधान श्री जिनदत्तसूरि श्रीमज्जिन कुशलसूरि श्री इकवर पातिसाहि प्रतिबोधक युगप्रधान श्री मज्जिनसूरि तणाडे प्रभाकर श्री मज्जिनसिंह सूरि तण्ड प्रभाकर भट्टारक श्री जिनसागर सूरिनी आज्ञा प्रवर्तड । श्रीरस्तु ।

संस्कृत में श्लोक तथा प्राकृत में कई जगह गाथाएँ दी हैं ।

४८. कल्पसूत्र (भिक्षु अजमयरा)..... पत्र सं० ४१ । आ० १०×४ इंच । भा० प्राकृत ।
विषय—आगम । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ६०६ । पूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

४९. कल्पसूत्र—भट्टबाहु । पत्र सं० ११६ । आ० १०×४ इंच । भा० प्राकृत । विषय—आगम ।
२० काल × । ले० काल सं० १०६४ । अपूर्ण । वे० सं० ३६ । छ भण्डार ।

विशेष—२ रा तथा ३ रा पत्र नहीं है । गाथाओं के नीचे हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से ४०२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत तथा गुजराती छाया सहित है । कहीं २ टब्बा टीका भी दी हुई है । बीच के कई पत्र नहीं हैं ।

१. कल्पसूत्र—भट्टबाहु । पत्र सं० ६ । आ० ११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भा० प्राकृत । विषय—आगम । १० काल × । ले० काल सं० १२६० आषाढ सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १८४६ । ट भण्डार ।

२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ ने २७४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६४ । ट भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । शाखाओं के ऊपर ग्रंथ दिया हुआ है ।

२३. कल्पसूत्र टीका—समयसुन्दरोपध्याय । पत्र सं० २५ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आगम । १० काल × । ले० काल सं० १७२५ कार्तिक । पूर्ण । वे० सं० २८ । ख भण्डार ।

विशेष—ज्योतिषाचार्य ग्राम में ग्रंथ की रचना हुई थी । टीका का नाम कल्लता है । मारक ग्राम में पं० भाग्य विशाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२४. कल्पसूत्रवृत्ति..... । पत्र सं० १२६ । आ० ११×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भा० प्राकृत । विषय—आगम । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८१८ । ट भण्डार ।

२५. कल्पसूत्र..... । पत्र सं० १० से ४४ । आ० १० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २००२ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण भी दिया हुआ है ।

२६. क्षपणासारवृत्ति—माधवचन्द्र त्रैविशदेव । पत्र सं० ६७ । आ० १२×७ $\frac{1}{2}$ इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल शक सं० ११२५ वि० सं० १२६० । ले० काल सं० १८१६ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ११७ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ के मूलकर्ता नेमिचन्द्राचार्य हैं ।

२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४४ । ले० काल सं० १६५५ । वे० सं० १२० । क भण्डार ।

२८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १८४७ आषाढ सुदी २ । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के पठनार्थ जयपुर में प्रतिलिपि की गयी थी ।

२९. क्षपणासार—टीका..... । पत्र सं० ६१ । आ० १२ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११८ । क भण्डार ।

६०. क्षपणासारभाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० २७३ । आ० १३×८ इंच । भा० हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १८१८ माघ सुदी ५ । ले० काल १६४६ । पूर्ण । वे० सं० ११६ । क भण्डार ।

विशेष—क्षपणासार के मूलकर्ता आचार्य नेमिचन्द्र हैं । जैन सिद्धान्त का यह अपूर्व ग्रन्थ है । महा पं० टोडरमलजी की गोमटसार (जीव-काण्ड और कर्मकाण्ड) लब्धिसार और क्षपणासार की टीका का नाम सम्बन्धान चन्द्रिका है । इन तीनों की भाषा टीका एक ग्रन्थ में भी मिलता है । प्रति उत्तम है ।

६१. गुणस्थानचर्चा पत्र सं० ४५ । आ० १२×५ इंच । भा० प्राकृत । विषय—
सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०३ । ख भण्डार ।

६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ५०४ । ख भण्डार ।

६३. गुणस्थानकमारोहसूत्र—रत्नशेखर । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इंच । भा० संस्कृत ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३५ । ख भण्डार ।

६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १७३५ आसाज बुनो १४ । वे० सं० ३७६ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित ।

६५. गुणस्थानचर्चा पत्र सं० ३ । आ० १०×४ इंच । भा० हिन्दी । विषय—
सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १३६० । अपूर्ण । ख भण्डार ।

६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से २४ । वे० सं० १३७ । ड भण्डार ।

६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० से ५१ । अपूर्ण । ले० काल × । वे० सं० १३६ ड भण्डार ।

६८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० का० सं० १६६३ । वे० सं० ५३६ । च भण्डार ।

६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५ । ले० का × । वे० सं० २३६ ख भण्डार ।

७०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ३४६ । झ भण्डार ।

७१. गुणस्थानचर्चा—चन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ३६ । आ० ७×७ इंच । भा० हिन्दी । विषय—सिद्धान्त ।
२० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११६ ।

७२. गुणस्थानचर्चा एवं चौबीस ठाणा चर्चा पत्र सं० ८ । आ० १२×५ इंच । भा०
संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० का० × । ले० का० × । अपूर्ण । वे० सं० ५०३१ । ट भण्डार ।

७३. गुणस्थानप्रकरण पत्र सं० ६ । आ० ११×४ इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त
२० का × । ले० का० × । पूर्ण । वे० सं० १३८ । 'ड' भण्डार ।

७४. गुणस्थानभेद पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६३ । ख भण्डार ।

७५. गुणस्थानमार्गणा पत्र सं० ४ । आ० ८×१ इंच । भा० हिन्दी । विषय—सिद्धान्त
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । च भण्डार ।

७६. गुणस्थानमार्गणारचना पत्र सं० १८ । आ० ११×४ इंच । भा० संस्कृत ।
विषय—सिद्धान्त २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७७ । च भण्डार ।

७७. गुणस्थानवर्णन..... पत्र सं० २० आ० १०५५ इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।
१० काल × १ ले० काल × १ अपूर्ण । वे० सं० ७८ । ख भण्डार ।

विशेष—१४ गुणस्थानों का वर्णन है ।

७८. गुणभ्यानवर्णन..... पत्र सं० ११ से ३१ । आ० १२०५ इंच । भा० हिन्दी ।
विषय—सिद्धान्त । १० काल × १ ले० काल × १ अपूर्ण । वे० सं० १३६ । क भण्डार ।

७९. प्रति सं० १० पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १७६३ । वे० सं० ८६९ । ख भण्डार ।

८०. गोम्मटभार (जीवकारण) -आ० नैमिचन्द्र । पत्र सं० १३ । आ० १३५६ इंच । भा०-
प्रकृत । विषय—सिद्धान्त : २० काल × १ ले० काल सं० १११७ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ११८ ।
ख भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १११७ वर्ष आषाढ शुक्ल मध्याह्न श्रीमूलसंधे नद्याम्नाय भलात्कारवशे मरस्वतीमस्तु
श्री कुण्डवानार्थान्वय भट्टारक श्री पथनन्दि देवास्तन्यष्टे भट्टारक श्री सुभषट्टदेवास्तन्यष्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्त
शिष्य मुनि श्री पंडलाचार्य रत्नकीर्ति देवास्तशिष्य मुनि हेमचंद्र नामा तदाम्नाय सहलबालवर्षे सा० देल्हा भाष्य
देल्हो तत्पुत्र सा० भजानाचार्य अराभास्तपुत्रा सा० भावधो द्वितीय अमरचो तृतीय जगन्ना एते गण्यमिदं ज्ञेयवित्ता
सस्मै ज्ञानधाराय मुनि श्री हेमचंद्राय भक्त्या प्रदत्त ।

८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ११६४ । ख भण्डार ।

८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४६ । ले० काल सं० १७९९ । वे० सं० १११ । ख भण्डार ।

८३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ से ८८ । ले० काल सं० १६२४ । चैत्र सुदी ८ । अपूर्ण । वे०
सं० १२८ । क भण्डार ।

विशेष—हरिश्चन्द्र के पुत्र मुनिरथी ने प्रतिलिपि की थी ।

८४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३६ । क भण्डार ।

८५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । ख भण्डार ।

८६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३७१ । ले० काल सं० १७३८ आषाढ सुदी १ । वे० सं० १८१ । ख
भण्डार ।

विशेष—प्रति टीका सहित है । श्री श्रीराम ने अकबराबाद में प्रतिलिपि की थी ।

८७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १५६६ आषाढ सुदी ७ । वे० सं०
१३६ । क भण्डार ।

८८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १८६६ चैत्र शुदी ३ । वे० सं० ७६ । च भण्डार ।

८९. प्रति सं० १० । पत्र सं० १७२-१४१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८० । च भण्डार ।

९०. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८४ । च भण्डार ।

९१. गोम्मटसारटीका—सकलभूषण । पत्र सं० १४२४ । भा० १२११०७ इ० । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १५७३ कार्तिक शुदी १३ । ले० काल सं० १६८५ । पूर्ण । वे० सं० १८० । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्द्र ने पन्नालाल बोधरा में प्रतिलिपि कराई । प्रति २ वेण्टनों में बंधी है ।

९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३१ । ले० काल X । वे० सं० १३७ । क भण्डार ।

९३. गोम्मटसारटीका—धर्मचन्द्र । पत्र सं० ३३ । भा० १०८५६ इ० । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १३६ । क भण्डार ।

विशेष—पत्र १३१ पर आचार्य धर्मचन्द्र कृत टीका की प्रशस्ति का भाग है । नागपुर नगर (नागीर) में महमदशा के शासनकाल में गालहा प्रादि कांठवात गोत्र वाले आदकों ने भट्टारक धर्मचन्द्र की यह प्रति लिखकर प्रदानकी थी ।

९४. गोम्मटसारवृत्ति—केशववर्णी । पत्र सं० ५३२ । भा० १०६४४ इ० । भा० संस्कृत । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३८१ । क भण्डार ।

विशेष—मूल भाषा सहित जीवकाण्ड एवं कर्मकाण्ड की टीका है । प्रति प्रभयचन्द्र द्वारा संशोधित है । 'वं गिरधर की पोथी है' ऐसा लिखा है ।

९५. गोम्मटसारवृत्ति—..... । पत्र सं० ६ से ६१२ । भा० १०६४४ इ० । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२३८ । अ भण्डार ।

९६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७१४ । ले० काल X । वे० सं० ८६ । छ भण्डार ।

९७. गोम्मटसार (जीवकाण्ड) भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० २२१ से ३६४ । भा० १०७१३ इ० । भा० हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १०३ । अ भण्डार ।

विशेष—पंडित टोडरमलजी के स्वयं के शब्द का लिखा हुआ ग्रंथ है । जगह २ कटा हुआ है ।

टीका का नाम मध्यज्ञानचन्द्रिका है । प्रदर्शन—योग्य ।

९८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६७ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३७५ । अ भण्डार ।

१६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५६ । वे० सं० १६१० भाद्रपद सुदी १५ । वे० सं० १४१ । क भण्डार ।

१६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२६५ । अ भण्डार ।

१६८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७६ । वे० काल सं० १८८५ भाद्रपद सुदी १५ । वे० सं० १८१ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साहू तथा मन्नालाल कासलीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी

१६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३२८ । वे० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १४६ । क भण्डार ।

विशेष—१७४ से आगे ५४ पत्रों पर शुभस्थान आदि पर यंत्र रचना है ।

१७३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५३ । ले० काल X । वे० सं० १५० । क भण्डार ।

विशेष—केवल यंत्र रचना ही है ।

१७५. गोम्मटसार-भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० २१३ । आ० १५X१० इंच । भा० हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १८१८ भाद्रपद सुदी ५ । वे० काल सं० १६४२ भाद्रपद सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १५१ । क भण्डार ।

विशेष—लब्धिसार तथा क्षणसार की टीका है । मनीषलाल सुंदरलाल पांड्या ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करवायी ।

१७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १११० । वे० काल सं० १८५७ सावण सुदी ५ । वे० सं० ५३८ । ज भण्डार ।

१७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६७१ से ७६५ । वे० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । ज भण्डार ।

१७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८६८ । वे० काल सं० १८८७ वैशाख सुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० २२१८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति बड़े आकार एवं सुन्दर लिखाई की है तथा दर्शनीय है । कुछ पत्रों पर बीच में रत्नापूर्ण गोलाकार चित्र हैं । बीच के कुछ पत्र नहीं हैं ।

१७८. गोम्मटसारपीठिका-भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० ६२ । आ० १५X७ इंच । भा० हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । वे० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २३२ । क भण्डार ।

१०६. गोम्मटसारटीका (जीवकाण्ड)—..... पत्र सं० २६२ । आ० १२० पृ० ३३ । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल $\times$ । ले० काल $\times$ । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । अ मण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वप्रदीपिका है ।

११०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल $\times$ । अपूर्ण । वे० सं० १२१ । अ मण्डार ।

१११. गोम्मटसारसंज्ञा—पं० टोडरमल । पत्र सं० ८२ । आ० ११० पृ० ७ इति । भा० हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल $\times$ । ले० काल $\times$ । पूर्ण । वे० सं० २० । अ मण्डार ।

११२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ = सं० २०४ । ले० काल $\times$ । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । अ मण्डार ।

११३. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड)—लेखिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ११६ । आ० ११० पृ० ७ इति । भा० प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल $\times$ । ले० काल सं० १८८५ । जेठ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ८१ । अ मण्डार ।

११४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२३ । ले० काल $\times$ । अपूर्ण । वे० सं० ८२ । अ मण्डार ।

११५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल $\times$ । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । अ मण्डार ।

११७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८४४ । जेठ सुदी १४ । अपूर्ण । वे० सं० १८४० । अ मण्डार ।

विशेष—भट्टारक मुरलिकीर्ति के विद्वान् ध्यात सर्वसृष्टि के अध्ययनार्थ अष्टोमि नगर में प्रोत्साहित की गई ।

११७. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) टीका - कलकलदि । पत्र सं० १० । आ० ११० पृ० ७ इति । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल $\times$ । ले० काल $\times$ । पूर्ण । (मूर्तग अधिवार तक) । वे० सं० १२१ । अ मण्डार ।

११८. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) टीका - भट्टारक ज्ञानसुधाम । पत्र सं० १४ । आ० ११० पृ० ७ इति । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल $\times$ । ले० काल सं० १६५७ । माघ सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १३४ । अ मण्डार ।

विशेष—मुभनिकीर्ति की सहाय्य में टीका लिखी गयी थी ।

११९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८३ । ले० काल सं० १६७३ । कार्तिक सुदी ५ । वे० सं० १३६ । अ मण्डार ।

१२०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८३ । ले० काल $\times$ । अपूर्ण । वे० सं० ८४७ । अ मण्डार ।

१२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल X । वे० सं० १५ । छ भण्डार ।

१२२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १७५ । वे० सं० ४६० । छ भण्डार ।

१२३. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० ६६४ । आ० १३x८ इंच । भा० हिन्दी गद्य (दूँदारी) । विषय—सिद्धान्त । २० काल १६ वीं शताब्दी । ले० काल सं० १८४६ अश्वि सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १३० । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति उत्तम है ।

१२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४० । ले० काल X । वे० सं० १८८ । छ भण्डार ।

विशेष—मंदिष्ट सहित है ।

१२५. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा—हेमराज । पत्र सं० ५२ । आ० ६x५ इंच । भा० हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० २०१७ । ले० काल सं० १७८८ पौष सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १०५ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रश्न साह आनन्दरामजी खण्डेलवाल ने पूछ्या तिस ऊपर हेमराज ने गोम्मटसार की देख के अयोधम माफिक पत्री में जबाब लिखने रूप चर्चा की वासना लिखी है ।

१२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १७१७ आसोज सुदी ११ । वे० सं० १८६ ।

विशेष—स्वपठनार्थ रामपुर में कल्याण रहाड़िया ने प्रतिलिपि करवायी थी । प्रति जीर्ण है । हेमराज १८ वीं शताब्दी के प्रथमराज के हिन्दी गद्य के अच्छे विद्वान हुये हैं । इन्होंने १० से अधिक प्राकृत व भंस्कृत रचनाओं का हिन्दी गद्य में रूपांतर किया है ।

१२७. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) टीका । पत्र सं० १६ । आ० ११½x५ इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० X । वे० सं० ६६ । छ भण्डार ।

१२९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४८ । ले० काल X । वे० सं० ६१ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति प्रायः श्रीगुप्तसारमूलादटीकाच्च निःकार्यकमेगएकीवृत्त्य लिखिता । श्री नेमिचन्द्रभट्टास्ती
विरचितकर्मप्रकृतिग्रंथस्य टीका समाप्ताः ।

१३०. गौतमकुल्लक—गौतम स्वामी । पत्र सं० २ । आ० १०,८४६ इंच । भा० प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल $\times$ । ले० काल $\times$ । पूर्ण । वे० सं० १७६६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति गुजराती टीका सहित है २० पद्य है ।

१३१. गौतमकुल्लक..... । पत्र सं० १ । आ० १० $\times$ ४ इंच । भा० प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल $\times$ । ले० काल $\times$ । पूर्ण । वे० सं० १२४२ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१३२. चतुर्दशसूत्र..... । पत्र सं० १ । आ० १० $\times$ ४ इंच । भा० प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल $\times$ । ले० काल $\times$ । पूर्ण । वे० सं० २६१ । ख भण्डार ।

१३३. चतुर्दशसूत्र—विनयचन्द्र मुनि । पत्र सं० २६ । आ० १० $\times$ ४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रागम । १० काल $\times$ । ले० काल सं० १६८२ साँप बुद्धी १३ । पूर्ण । वे० सं० १८२ । छ भण्डार ।

१३४. चतुर्दशांगवाह्यविवरण । पत्र सं० ३ । आ० ११ $\times$ ६ इंच । भा० संस्कृत । विषय—प्रागम । १० काल $\times$ । ले० काल $\times$ । अपूर्ण । वे० सं० ५१४ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रत्येक अंग का पद प्रमाण दिया हुआ है ।

१३५. चर्चाशतक—द्यानतराव । पत्र सं० १०३ । आ० ११ $\times$ ८ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—सिद्धान्त । १० काल १८ वीं शताब्दी । ले० काल सं० १६२६ आषाढ बुद्धी ३ । पूर्ण । वे० सं० १४६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य टीका भी दी है ।

१३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६३७ फागुण सुदी १२ । वे० सं० १५० । क भण्डार ।

१३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल $\times$ । वे० सं० ४६ । अपूर्ण । ख भण्डार ।

विशेष—छाया टीका सहित ।

१३८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १६३१ मंगसिर सुदी २ । वे० सं० १७१ । छ भण्डार ।

१३९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८ । ले० काल $\times$ । वे० सं० १७२ । छ भण्डार ।

१४०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १६३४ कार्तिक सुदी ८ । वे० सं० १७३ । छ भण्डार ।

विशेष—नीले कागजों पर लिखी हुई है। हिन्दी गद्य में टीका भी दी हुई है।

१४१. प्रति सं० ७। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १९६८। वे० सं० २८३। झ मण्डार।

विशेष—निम्न रचनायें और हैं।

१. अक्षर वावनी — श्यामतराय — हिन्दी

२. गुरु विनती — भूधरदास — ”

३. बारह भावना — नवल — ”

४. समाधि मरण — ”

१४२. प्रति सं० ८। पत्र सं० ४३। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १५६३। ट मण्डार।

विशेष—गुटकाकार है।

१४३. चर्चावर्णन—। पत्र सं० ८१ से ११४। भा० १०^१/_२ X ६ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—सिद्धान्त।
२० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १७०। छ मण्डार।

१४४. चर्चासंग्रह.....। पत्र सं० ३६। भा० १०^१/_२ X ६ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—सिद्धान्त।
२० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १७६। छ मण्डार।

१४५. चर्चासंग्रह.....। पत्र सं० ३। भा० १२ X ५^१/_२ इञ्च। भाषा संस्कृत-हिन्दी। विषय सिद्धान्त।
२० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० २०५१। झ मण्डार।

१४६. प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल X। वे० सं० ८६। ज मण्डार।

विशेष—विभिन्न आचार्यों की संकलित चर्चाओं का वर्णन है।

१४७. चर्चासमाधान—भूधरदास। पत्र सं० १३०। भा० १० X ५ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—
सिद्धान्त। २० काल सं० १८०६ माघ सुदी ५। ले० काल सं० १८६७। पूर्ण। वे० सं० ३८६। झ मण्डार।

१४८. प्रति सं० २। पत्र सं० ११०। ले० काल सं० १९०८ आषाढ बुदी ६। वे० सं० ४४३। झ
मण्डार।

१४९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११७। ले० काल सं० १८२२। वे० सं० २६। झ मण्डार।

१५०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १९४१ वैशाख सुदी ५। वे० सं० ५०। छ मण्डार।

१५१. प्रति सं० ५। पत्र सं० ८०। ले० काल सं० १९६४ चैत सुवी १५। वे० सं० १७४। छ मण्डार।

१५२. प्रति सं० ६। पत्र सं० ३४ से १६६। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ५३। छ मण्डार।

१५३. प्रति सं० ७। पत्र सं० ७४। ले० काल सं० १८८३ पौष सुदी १३। वे० सं० १६७। छ भण्डार।

विशेष—अयनगर निवासी महात्मा चंदालाल ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

१५४. चर्चासार—पं० शिवजीलाल। पत्र सं० १३३। आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—सिद्धान्त। २० काल—X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० १४८। क भण्डार।

१५५. चर्चासार.....। पत्र सं० १६२। आ० ८×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—सिद्धान्त। २० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १४०। छ भण्डार।

१५६. चर्चासागर.....। पत्र सं० ३६। आ० १३×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—सिद्धान्त। २० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ७८६। अ भण्डार।

१५७. चर्चासागर—चंदालाल। पत्र सं० ३०४। आ० १३×६ $\frac{१}{२}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—सिद्धान्त। २० काल सं० १६१०। ले० काल सं० १६३१। पूर्ण। वे० सं० ४३६। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ में १४ पत्र विषय सूची के अलग दे रखे हैं।

१५८. प्रति सं० २। पत्र सं० ४१०। ले० का० सं० १६३८। वे० सं० १४७। क भण्डार।

१५९. चौदहगुणस्थानचर्चा—अख्यराज। पत्र सं० ४१। आ० ११×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च। भा० हिन्दी गद्य। (राजस्थानी) विषय—सिद्धान्त। २० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३६२। अ भण्डार।

१६०. प्रति सं० २। पत्र सं० १-४१। ले० का० X। वे० सं० ८६०। अ भण्डार।

१६१. चौदहमार्गणा.....। पत्र सं० १०। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० २०३६। अ भण्डार।

१६२. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। ले० काल X। वे० सं० १८५५। ट भण्डार।

१६३. चौबीसठाणाचर्चा—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ६। आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल X। ले० काल। सं० १८२० वैशाख सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० १५७। क भण्डार।

१६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १५६। क भण्डार।

१६५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८१७ पौष बुदी १२। वे० सं० १६०। क भण्डार।

विशेष—पं० ईश्वरदास के शिष्य रूपचन्द के पठनार्थ मरायणा ग्राम में ग्रन्थ की प्रतिलिपि की।

१६६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३१। ले० काल सं० १८४६ कार्तिक बुदि ५। वे० सं० ५१। ख भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। श्री मदनमन्द की शिष्या आर्या बाई शीलश्री ने प्रतिलिपि कराई।

१६७. प्रति सं० ५। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १७४० ज्येष्ठ बुदी १३। वे० सं० ५२। ख भण्डार।

विशेष—उपरोक्त गान्धर्वसिद्धांत के अष्टावस्तरणीय कर्म अध्यायों में प्रेम से प्रतिलिपि करवायी।

१६८. प्रति सं० ६। पत्र सं० १ से ४३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५३। ख भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है। १४३वीं गाथा से ग्रन्थ प्रारम्भ है। ३७५ गाथा तक है।

१६९. प्रति सं० ७। पत्र सं० ५३। ले० काल ×। वे० सं० ५४। ख भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। टीका का नाम 'अर्थसार टिप्पण' है। आनन्दराम के पठनार्थ लिखा गया।

१७०. प्रति सं० ८। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १८४६ चैत बुदी २। वे० सं० १२६। ख भण्डार।

१७१. प्रति सं० ९। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १३५। ख भण्डार।

१७२. प्रति सं० १०। पत्र सं० २२। ले० काल ×। वे० सं० १३५। ख भण्डार।

१७३. प्रति सं० ११। पत्र सं० २३। ले० काल ×। वे० सं० १४५। ख भण्डार।

विशेष—२ प्रतियों का मिश्रण है।

१७४. प्रति सं० १२। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० २६१। ख भण्डार।

१७५. प्रति सं० १३। पत्र सं० २ से २५। ले० काल सं० १८६५। कार्तिक बुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० १८१५। ख भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है। अन्तिम प्रशस्तिः—संवत् १८६५ वर्षे कार्तिक बुदि ५ बुद्धवासरे श्रीचन्द्रापुरी महास्थाने श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय चौबीस ठाणो ग्रन्थ संपूर्ण भवति।

१७६. प्रति सं० १४। पत्र सं० ३३। ले० काल सं० १८१४ चैत बुदि ६। वे० सं० १८१३। ख भण्डार।

प्रशस्ति—संवत्सरे वेद समुद्र सिद्धि चंद्रमिने १८४४ चैत्र कृष्ण सप्तम्यां सोमवासरे हनुवतां देशे अराह्यपुरे भट्टारक श्री गुरेन्द्रकीर्ति नेदं विद्वद् व्यास सर्व भुक्तद्वयाध्यापनार्थं लिपिकृतं स्वशयेना चन्द्र तारकं स्वीयतामिदं पुस्तकं।

१७७. प्रति सं० १५। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १८४० माघ बुदी १५। वे० सं० १८१७। ख भण्डार।

विशेष—नेरुवा नगर में भट्टारक गुरेन्द्रकीर्ति तथा व्यास विद्वान् तेजपाल ने प्रतिलिपि की।

१७८. प्रति सं० १६। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० १८८६। ख भण्डार।

विशेष—४ पत्र तक चर्चा में हैं इसमें आगे शिक्षा की बातें तथा फुलमर ज्योतिष हैं । चौबीस सीखें कुल के सिद्ध आदि का वर्णन है ।

१८६. चतुर्विंशति स्थानक-नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ४६ । आ० ११०५५ डब्लू । भा० प्राकृत । विषय-विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६२५ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका भी है ।

१८७. चतुर्विंशति गुणस्थान पीठिका..... । पत्र सं० १=१ । आ० १२०५५ डब्लू । भाषा संस्कृत । विषय सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२५ । अ भण्डार ।

१८८. चौबीस ठाणा चर्चा..... । पत्र सं० २ से २४ । आ० १२०५५ डब्लू । भा० संस्कृत । विषय—विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६६ । अ भण्डार ।

१८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ से ५१ । आ० ११६५५ डब्लू । भाषा संस्कृत । ले० काल सं० १=६१ । जेठ मुद्रा १० । वे० सं० १६६६ । अपूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—पं० रामचन्द्रसेन धारणानगरमध्ये लिखित ।

१९०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० १६६६ । अ भण्डार ।

१९१. चौबीस ठाणा चर्चा वृत्ति..... । पत्र सं० १२३ । आ० ११६५५ डब्लू । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२६ । अ भण्डार ।

१९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८४१ जेठ मुद्रा ३ । अपूर्ण । वे० सं० ३०० । अ भण्डार ।

१९३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० १५५ । क भण्डार ।

१९४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १८१० कानिक बुद्धि १० । दीर्घ-श्रीमं । वे० सं० १६६६ । क भण्डार ।

विशेष—पं० ईश्वरदाम के शिष्य तथा शोभायाम के गुरुभाई मधुचंद्र के पठनाय सिद्ध गिरधारी क द्वारा संश्लिष्ट कियायी गई । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१९५. चौबीस ठाणा चर्चा..... । पत्र सं० ११ । आ० ११५५५ डब्लू । भाषा हिन्दी । विषय—विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२० । अ भण्डार ।

विशेष—समाप्ति में ग्रन्थ का नाम 'चौबीस ठाणा' प्रकरण भी लिखा है ।

१९६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८२६ । वे० सं० १०४७ । अ भण्डार ।

१६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३६ । अ भण्डार ।

१६१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ३८२ । अ भण्डार ।

१६१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १५८ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में टीका दी हुई है ।

१६२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । क भण्डार ।

१६४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२ । क भण्डार ।

१६५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १६७६ । वे० सं० २३ । अ भण्डार ।

विशेष—वेनीराम की पुस्तक से प्रतिलिपि की गई ।

१६६. द्वियालीसठाष्टाचर्चा । पत्र सं० १० । आ० ६१×४६ इंच । भाषा संस्कृत ।

विषय—सिद्धान्त । २० काल—× । ले० काल सं० १८२६ आषाढ वृद्धी १ । पूर्ण । वे० सं० २८८ । अ भण्डार ।

१६७. जम्बूद्वीपकल्प । पत्र सं० ३२ । आ० १२१×३ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १८२८ चैत सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ११५ । अ भण्डार ।

१६८. जीवस्वरूप वर्णन । पत्र सं० १४ । आ० ६×४ इंच । भाषा प्राकृत । २० काल × ।

ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ६ पत्रों में तत्त्व वर्णन भी है । गोमटमार में से लिया गया है ।

१६९. जीवाचारविचार । पत्र सं० ५ । आ० ६×४६ इंच । भाषा प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । अ भण्डार ।

२००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८१८ मंगसिर वृद्धी १० । वे० सं० २०५ ।

क भण्डार ।

२०१. जीवसमासटिप्पण । पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३५ । अ भण्डार ।

२०२. जीवसमासभाषा । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० १६७१ । अ भण्डार ।

२०३. जीवाजीवविचार । पत्र सं० ६२ । आ० १२×५ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० २००४ । अ भण्डार ।

२०४. जैन मद्राचार मार्त्तण्ड नामक पत्र का प्रत्युत्तर—श्रीवा दुलीचन्द । पत्र सं० २५ । आ० १२×७^१/_२ इंच । भाषा हिन्दी । विषय—चर्चा समाधान । २० काल सं० १९४६ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २०८ । क भण्डार ।

२०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल X । वे० सं० २१७ । क भण्डार ।

२०६. ठाणामसूत्र..... । पत्र सं० ४ । आ० १०^१/_२×४^१/_२ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—आगम । २० काल X । ले० काल । अपूर्ण । वे० सं० १६२ । अ भण्डार ।

२०७. तत्त्वकौस्तुभ—पं० पन्नालाल सघी । पत्र सं० ७२७ । आ० १२×७^१/_२ इंच । भाषा हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल सं० १९८४ । पूर्ण । वे० सं० २७१ । क भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ तत्त्वार्थराजवार्त्तिक की हिन्दी गद्य टीका है । यह १० अध्यायों में विभक्त है । इस प्रति में ४ अध्याय तक हैं ।

२०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४६ । ले० काल सं० १९४५ । वे० सं० २७२ । क भण्डार ।

विशेष—१०वें अध्याय से १०वें अध्याय तक की हिन्दी टीका है । नवां अध्याय अपूर्ण है ।

२०९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२८ । २० काल सं० १९३४ । ले० काल X । वे० सं० २४० । क भण्डार ।
विशेष—राजवार्त्तिक के प्रथमाध्याय की हिन्दी टीका है ।

२१०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२८ से ७७६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २४१ । क भण्डार ।
विशेष—तीसरा तथा चौथा अध्याय है । तीसरे अध्याय के २० पत्र अलग और हैं । ४७ अलग पत्रों में सूचीपत्र है ।

२११. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०७ से ४०७ । ले० काल X । वे० सं० २४२ । क भण्डार ।

विशेष—५, ६, ७, ८, ९, १०वें अध्याय की भाषा टीका है ।

२१२. तत्त्वदीपिका—। पत्र सं० ६१ । आ० ११^१/_२×६^१/_२ इंच । भाषा हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २०१४ । अ भण्डार ।

२१३. तत्त्ववर्णन—शुभचन्द्र । पत्र सं० ४ । आ० १०^१/_२×४^१/_२ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७६ । अ भण्डार ।

विशेष—आचार्य तेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी ।

२१४. तत्त्वसार—देवसेन । पत्र सं० ६ । आ० ११×५^१/_२ इंच । भाषा प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल सं० १७१६ पीप बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २२५ ।

विशेष—पं० विहारीदाम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २६६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है । अन्तिम पत्र नहीं है ।

२१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल X । वे० सं० २८२२ । ट भण्डार ।

२१७. तत्त्वसारभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ४४ । आ० १२६ X ५ इञ्च । भाषा हिन्दी ।

विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १६३१ वैशाख सुदी ७ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २६७ । क भण्डार ।

विशेष—देवगन कृत तत्त्वसार की हिन्दी टीका है ।

२१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल X । वे० सं० २६८ । क भण्डार ।

२१९. तत्त्वार्थदर्पण..... । पत्र सं० ३६ । आ० १३६ X ५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।

२० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । च भण्डार ।

विशेष—कृत्य प्रथम अध्याय तक ही है ।

२२०. तत्त्वार्थबोध—पत्र सं० १८ । आ० १२६ X ५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २०

काल X । ले० काल X । वे० सं० १४७ । ज भण्डार ।

विशेष—पत्र २ में श्री देवगन कृत आलापनटीका की हुई है ।

२२१. तत्त्वार्थबोध—बुधजन । पत्र सं० १४५ । आ० ११ X ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

सिद्धान्त । २० काल सं० १८७६ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३६७ । अ भण्डार ।

२२२. तत्त्वार्थबोध । पत्र सं० ३६ । आ० १०६ X ५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—सिद्धान्त ।

२० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २६६ । च भण्डार ।

२२३. तत्त्वार्थदर्पण..... । पत्र सं० १० । आ० १३ X ५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।

२० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३५ । ग भण्डार ।

विशेष—प्रथम अध्याय तक पूर्ण, टीका सहित । ग्रन्थ गोमतीलालजी भौसा का भेंट किया हुआ है ।

२२४. तत्त्वार्थबोधिनीटीका— । पत्र सं० ४२ । आ० १३ X ५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।

२० काल X । ले० काल सं० १६५० प्रथम वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ३६ । ग भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ गोमतीलालजी भौसा का है । ऊनीक सं० २२५ ।

२२५. तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० १०६ । आ० १०६ X ५ इञ्च । भाषा संस्कृत ।

विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल सं० १६७२ आश्विन सुदी ५ । वे० सं० ७२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रभाचन्द्र भट्टारक प्रभाचन्द्र के शिष्य थे । अ० हरदेव के लिए ग्रन्थ बनाया था । संग्रही करने ने श्री मंगाराम से प्रतिलिपि करवायी थी ।

२२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १६३३ आषाढ़ सुदी १० । वे० सं० १३७ ।

अ भण्डार ।

२२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७२ । ले० काल ... । अपूर्ण । वै० सं० ३७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

२२८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ से ६१ । ले० काल X । अपूर्ण । वै० सं० १६३६ । ट भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पृष्णिका— इति तत्त्वार्थ रत्नप्रभाकरवत्यै प्रति श्री धर्मचन्द्र शिष्य श्री प्रभाकरदेव विरचिते ब्रह्मजैन भाषु हावादेव देव भावना मिमिते मोक्ष पदार्थे कथने वक्षसं सूत्र विचार प्रकरण समाप्ता ॥

२२९. तत्त्वार्थराजवार्तिक—भट्टाकलंकदेव । पत्र सं० ३३० । आ० १६X७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वै० सं० १७७ । अ भण्डार ।

विशेष—इस प्रति की प्रतिलिपि सं० ११७८ बर्लीन प्रति में जयपुर नगर में की गई थी ।

२३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२२८ । ले० काल सं० १६४१ भादवा सुदी ६ । वै० सं० २३७ ।

अ भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ २ पृष्ठों में है । प्रथम पृष्ठ में १ से ६०० तथा दूसरे में ६०१ से १००० तक पत्र हैं । अति उत्तम है । मूल के नीचे हिन्दी अर्थ भी दिशा है ।

२३१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल ... । वै० सं० २४ । अ भण्डार ।

विशेष—मूलमात्र ही है ।

२३२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०० । ले० काल सं० १६७४ पौष सुदी १३ । वै० सं० २३४ ।

अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में ल्होरीलाल भाष्या ने प्रतिलिपि की ।

२३३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । ले० काल X । अपूर्ण । वै० सं० ३५६ । अ भण्डार ।

२३४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १७४ से २१० । ले० काल X । अपूर्ण । वै० सं० १२७ । अ भण्डार ।

२३५. तत्त्वार्थराजवार्तिकभाषा । पत्र सं० १८२ । आ० १२X८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।

विषय—सिद्धान्त । २० काल ... । ले० काल X । अपूर्ण । वै० सं० २४५ । अ भण्डार ।

२३६. तत्त्वार्थवृत्ति—पं० योगदेव । पत्र सं० २७ । आ० ११६X७^१/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचनाकाल X । ले० काल सं० १६५८ चैत बुदी १३ । पूर्ण । वै० सं० २५२ । अ भण्डार ।

विशेष—वृत्ति का नाम मुखमोघ वृत्ति है । तत्त्वार्थ सूत्र पर यह उत्तम टीका है । पं० योगदेव कुम्भनगर के निवासी थे । यह नगर बनारा जिले में है ।

२३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४७ । ले० काल ... । वै० सं० २२२ । अ भण्डार ।

२३८. तत्त्वार्थसार—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५० । आ० १३X५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वै० सं० २३८ । अ भण्डार ।

विशेष—इस ग्रन्थ में ३१८ श्लोक हैं जो ३ अध्यायों में विभक्त हैं । उनमें ७ तन्त्रों का वर्णन किया गया है ।

२३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४४ । ले० काल X । वे० सं० २३६ । क भण्डार ।

२४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल X । वे० सं० २४२ । क भण्डार ।

२४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७ । ले० काल X । वे० सं० ६५ । ख भण्डार ।

२४२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४२ । ले० काल X । वे० सं० ९६ । ख भण्डार ।

विशेष—पुस्तक दीवान ब्रानचन्द की है ।

२४३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८ । ले० काल X । वे० सं० १३० । ख भण्डार ।

२४४. तत्त्वार्थसार दीपक—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ९१ । पृ० ११X५ डब्ब । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २८४ । ख भण्डार ।

विशेष—भ० सकलकीर्ति ने 'तत्त्वार्थसारदीपक' में जैन दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों का वर्णन किया है । रचना १२ अध्यायों में विभक्त है । यह तत्त्वार्थसूत्र की टीका नहीं है जैसा कि इसके नाम में प्रकट होता है ।

२४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १८२८ । वे० सं० २४० । क भण्डार ।

२४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १८६४ वासीन सुदी २ । वे० सं० २४१ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा हीरानन्द ने प्रतिनिधि की ।

२४७. तत्त्वार्थसारदीपकभाषा—पद्मलाल चौधरी । पत्र सं० २८६ । पृ० १२३X५ डब्ब । भाषा—हिन्दी भव । विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १६३७ ज्येष्ठ सुदी ७ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २६६ । विशेष—जिन २ पत्रों की पद्मलाल ने भाषा लिखी है सब की सूची दी हुई है ।

२४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८७ । ले० काल X । वे० सं० २४३ । क भण्डार ।

२४९. तत्त्वार्थ सूत्र—उमाम्बाति । पत्र सं० २९ । पृ० ७X३६ डब्ब । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल सं० १४५८ आश्विन सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २१६६ (क) ख भण्डार ।

विशेष—लाल पत्र है जिन पर ज्येष्ठ (रक्त) अक्षर है । प्रति प्रदर्शनी में रखने योग्य है । तत्त्वार्थ सूत्र समाप्ति पर भक्तमर मन्त्र प्रारम्भ होता है लेकिन यह अपूर्ण है ।

प्रवृत्ति—सं० १४५८ आश्विन सुदी ६ ।

२५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६६६ । वे० सं० २२०० ख भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों में है । पत्रों के किनारों पर सुन्दर बेलें हैं । प्रति दर्शनीय एवं प्रदर्शनी में रखने योग्य है । मर्याद प्रति है । सं० १६६६ में जोधरीलालजी मन्त्रालालजी धी वालों ने प्रतिलिपि में प्रति लिखा कर बढ़ाई ।

२५१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३७ । ले० काल X । वे० सं० २२०२ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति ताडपत्रिका एवं प्रदर्शनी योग्य है ।

२५२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल २ । वे० सं० १८५५ । अ भण्डार ।

२५३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८८८ । वे० सं० २४६ । अ भण्डार ।

२५४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८८६ । वे० सं० ३३० । अ भण्डार ।

२५५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३४८ । अ भण्डार ।

२५६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८३७ । वे० सं० ३६२ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

२५७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० सं० १०५५ । अ भण्डार ।

२५८. प्रति सं० १० । पत्र सं० ५५ । ले० काल X । वे० सं० १०३० । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टिप्पणी टीका सहित है । पं० अमीरुद्दीन ने अलवर में प्रतिलिपि की ।

२५९. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४ । ले० काल X । वे० सं० ६५ । अ भण्डार ।

२६०. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७७५ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र १७ से २० तक नहीं है ।

२६१. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ६ से ३३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १००८ । अ भण्डार ।

२६२. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ४७ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित ।

२६३. प्रति सं० १५ । पत्र सं० २० । ले० काल २ । वे० सं० ४८ । अ भण्डार ।

२६४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८०० चैत्र सुदी ३ । वे० सं० ८१६ ।

विशेष—गक्षिप्त हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

२६५. प्रति सं० १७ । पत्र सं० २८ । ले० काल २ । वे० सं० २०८८ । अ भण्डार ।

२६६. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ११ से २२ । ले० काल २ । अपूर्ण । वे० सं० १२३४ । अ भण्डार ।

२६७. प्रति सं० १९ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० १२४४ । अ भण्डार ।

२६८. प्रति सं० २० । पत्र सं० २८ । ले० काल २ । वे० सं० १२७५ । अ भण्डार ।

२६९. प्रति सं० २१ । पत्र सं० ८ । ले० काल २ । वे० सं० १३३१ । अ भण्डार ।

२७०. प्रति सं० २२ । पत्र सं० १ । ले० काल २ । वे० सं० २१४३ । अ भण्डार ।

२७१. प्रति सं० २३ । पत्र सं० १२ । ले० काल २ । वे० सं० २१५६ । अ भण्डार ।

२७२. प्रति सं० २४ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १६४६ कार्तिक सुदी ५ । वे० सं० २००६ ।

अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पणी सहित है । कूलचंद विद्यावसना ने प्रतिलिपि की ।

२७३. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६ । वे० सं० २००७ । अ भण्डार ।

२७४. प्रति सं० २६ । पत्र सं० ६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०४१ । अ भण्डार ।

विशेष—गंस्तुत टिप्पण सहित है ।

२७५. प्रति सं० २७ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८०४ ज्येष्ठ सुदी २ । वे० सं० २४६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों में है । शाहजहानाबाद वाले श्री बूलचन्द बाकलीवाल के पुत्र श्री ऋषभदाम दोलनराम ने जैसिंहपुरा में इसकी प्रतिलिपि कराई थी । प्रति प्रदर्शनी में रखने योग्य है ।

२७६. प्रति सं० २८ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १६३६ भाद्रवा सुदी ४ । वे० सं० २५८ । क भण्डार ।

२७७. प्रति सं० २९ । पत्र सं० १० । ले० काल X । वे० सं० २५९ । क भण्डार ।

२७८. प्रति सं० ३० । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १६४५ वैशाख सुदी ७ । वे० सं० २५० । क भण्डार ।

२७९. प्रति सं० ३१ । पत्र सं० २० । ले० काल X । वे० सं० २५७ । क भण्डार ।

२८०. प्रति सं० ३२ । पत्र सं० १० । ले० काल X । वे० सं० ३७ । ग भण्डार ।

विशेष—महुवा निवासी पं० नानगरामने प्रतिलिपि की थी ।

२८१. प्रति सं० ३३ । पत्र सं० १२ । ले० काल X । वे० सं० ३८ । ग भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी । पुस्तक बिष्मनलाल बाकलीवाल की है ।

२८२. प्रति सं० ३४ । पत्र सं० ६ । ले० काल X । वे० सं० ३९ । ग भण्डार ।

२८३. प्रति सं० ३५ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८६१ माघ सुदी ४ । वे० सं० ४० । ग भण्डार ।

२८४. प्रति सं० ३६ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० सं० ३३ । घ भण्डार ।

२८५. प्रति सं० ३७ । पत्र सं० ४२ । ले० काल X । वे० सं० ३४ घ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टिप्पण टीका सहित है ।

२८६. प्रति सं० ३८ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० ३५ । घ भण्डार ।

२८७. प्रति सं० ३९ । पत्र सं० ५८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २४६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२८८. प्रति सं० ४० । पत्र सं० १३ । ले० काल X । वे० सं० २४७ । क भण्डार ।

२८९. प्रति सं० ४१ । पत्र सं० ८ से २२ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २४८ । ड भण्डार ।

२९०. प्रति सं० ४२ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० सं० २४९ । क भण्डार ।

२९१. प्रति सं० ४३ । पत्र सं० २६ । ले० काल X । वे० सं० २५० । क भण्डार ।

विशेष—भक्तान्नर स्तोत्र भी है ।

२६२. प्रति सं० ४४ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८३६ । वे० सं० २५१ । छ भण्डार ।

२६३. प्रति सं० ४५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० २५२ । छ भण्डार ।

विशेष—सूत्रों के ऊपर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

२६४. प्रति सं० ४६ । पत्र सं० ५० । ले० काल × । वे० सं० २५३ । छ भण्डार ।

२६५. प्रति सं० ४७ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० २५४ । छ भण्डार ।

२६६. प्रति सं० ४८ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १६२१ कार्तिक सुदी ४ । वे० सं० २५५ । छ भण्डार ।

२६७. प्रति सं० ४९ । पत्र सं० ३७ । ले० काल × । वे० सं० २५६ । छ भण्डार ।

२६८. प्रति सं० ५० । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० २५७ । छ भण्डार ।

२६९. प्रति सं० ५१ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५८ । छ भण्डार ।

३००. प्रति सं० ५२ । पत्र सं० ६ से १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५९ । छ भण्डार ।

३०१. प्रति सं० ५३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६० । छ भण्डार ।

३०२. प्रति सं० ५४ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २६१ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

३०३. प्रति सं० ५५ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६२ । छ भण्डार ।

३०४. प्रति सं० ५६ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६३ । छ भण्डार ।

३०५. प्रति सं० ५७ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० २६४ । छ भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम अध्याय ही है । हिन्दी अर्थ सहित है ।

३०६. प्रति सं० ५८ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १२८ । च भण्डार ।

विशेष—संक्षिप्त हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

३०७. प्रति सं० ५९ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२९ । च भण्डार ।

३०८. प्रति सं० ६० । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८८२ फागुन सुदी १३ । अर्ध । वे० सं० १३० ।

च भण्डार ।

विशेष—मुरलीधर मगवाल जांबनेर वाले ने प्रतिलिपि की ।

३०९. प्रति सं० ६१ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १६५२ ज्येष्ठ सुदी १ । वे० सं० १३१ । च भण्डार ।

३१०. प्रति सं० ६२ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८७१ जेठ सुदी १२ । वे० सं० १३२ । च भण्डार ।

३११. प्रति सं० ६३ । पत्र सं० १९ । ले० काल सं० १६३९ । वे० सं० १३४ । च भण्डार ।

विशेष—झाबूलाल सेठी ने प्रतिलिपि करवायी ।

३१२. प्रति सं० ६४ । पत्र सं० १९ । ले० काल × । वे० सं० १३३ । च भण्डार ।

३१३. प्रति सं० ६५ । पत्र सं० २१ से २१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३५ । च भण्डार ।

३१४. प्रति सं० ६६ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । च भण्डार ।

३१५. प्रति सं० ६७ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३७ । च भण्डार ।

विशेष—टक्का टीका सहित । १ ला पत्र नहीं है ।

३१६. प्रति सं० ६८ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १६६३ । वे० सं० १३८ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है ।

३१७. प्रति सं० ६९ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १६६३ । वे० सं० १७० । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है ।

३१८. प्रति सं० ७० । पत्र सं० १० । मे० काल X । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रथम ४ पत्रों में सत्तार्व्य सूत्र के प्रथम, पंचम तथा दशम अधिकार हैं । इसमें छाने भनामर मूल्य है ।

३१९. प्रति सं० ७१ । पत्र सं० १७ । ले० काल X । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

३२०. प्रति सं० ७२ । पत्र सं० १४ । ले० काल X । वे० सं० ३८ । ज भण्डार ।

३२१. प्रति सं० ७३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६२२ फागुन सुदी १५ । वे० सं० ८८ । ज भण्डार ।

३२२. प्रति सं० ७४ । पत्र सं० ६ । ले० काल X । वे० सं० १४२ । झ भण्डार ।

३२३. प्रति सं० ७५ । पत्र सं० ३१ । ले० काल X । वे० सं० ३०५ । झ भण्डार ।

३२४. प्रति सं० ७६ । पत्र सं० २६ । ले० काल X । वे० सं० २७१ । अ भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल के गठनार्थ लिखा गया था ।

३३५. प्रति सं० ७७ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १६२६ चैत सुदी १४ । वे० सं० २७३ । अ भण्डार ।

विशेष—मण्डलाचार्य श्री चन्द्रकीर्ति के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी ।

३३६. प्रति सं० ७८ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० सं० ४४८ । अ भण्डार ।

३३७. प्रति सं० ७९ । पत्र सं० ३४ । ले० काल X । वे० सं० ३४ ।

विशेष—प्रति टक्का टीका सहित है ।

३३८. प्रति सं० ८० । पत्र सं० २७ । ले० काल X । वे० सं० १६१५ ट भण्डार ।

३३९. प्रति सं० ८१ । पत्र सं० १६ । ले० काल X । वे० सं० १६१६ । ट भण्डार ।

३४०. प्रति सं० ८२ । पत्र सं० २० । ले० काल X । वे० सं० १६३१ । ट भण्डार ।

विशेष—हीरालाल विद्यावक्या ने मोरूलाल पांड्या से प्रतिलिपि करवायी । पुस्तक निवृत्तमोचन छानवा छाना की है ।

३४१. प्रति सं० ८३ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १६३१ । वे० सं० १६४२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टक्का टीका सहित है । ईसरदा बाले ठाकुर प्रतापसिंहजी के जयपुर आगमन के समय तत्राई रामसिंह जी के शासनकाल में जीवणलाल काला ने जयपुर में हजारीलाल के गठनार्थ प्रतिलिपि की ।

३४२. प्रति सं० ८४ । पत्र सं० ३ से १८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०६१ ।

विशेष—चतुर्थ अध्याय में है। इसके आगे कलिकुण्डपूजा, गार्वनाथपूजा, क्षेत्रपालपूजा, क्षेत्रपालस्तोत्र तथा चिन्तामणिपूजा है।

३४३. तत्त्वार्थ सूत्र टीका श्रुतसागर। पत्र सं० ३५६। पृ० १२×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल सं० १७३३ प्र० आषाढ सुदी ७। वै० सं० १६०। पूर्ण। अ भण्डार।

विशेष—श्री श्रुतसागर सुरि १६ वीं शताब्दी के संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे। इन्होंने ३८ से भी अधिक ग्रंथों की रचना की जिसमें टीकाएँ तथा छोटी २ कथाएँ भी हैं। श्री श्रुतसागर के गुरु का नाम विद्यानंदि था जो भट्टारक पद्मनंदि के प्रशिष्य एवं देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे।

३४४. प्रति सं० २। पत्र सं० ३१५। ले० काल सं० १७४८ फागुन सुदी १४। अपूर्ण। वै० सं० २५५। क भण्डार।

विशेष—३१५ से आगे के पत्र नहीं हैं।

३४५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५३। ले० काल—×। वै० सं० २६६। क भण्डार।

३४६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३५३। ले० काल—×। वै० सं० ३३०। क भण्डार।

३४७. तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति—सिद्धसेन गण्डि। पत्र सं० २४८। पृ० १०½×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल—×। अपूर्ण। वै० सं० २५३। क भण्डार।

विशेष—तीन अध्याय तक ही है। आगे पत्र नहीं हैं। तत्त्वार्थ सूत्र की विस्तृत टीका है।

३४८. तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति.....। पत्र सं० २३। पृ० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल—×। ले० काल—सं० १६३३ फागुन सुदी ५। पूर्ण। वै० सं० ५८। अ भण्डार।

विशेष—मालपुरा में श्री कनककीर्ति ने अपने पठनार्थ मु० जैसा से प्रतिलिपि करवायी।

प्रशस्ति—संवत् १६३३ वर्ष फागुन मासे कृष्ण पक्ष पंचमी तिथी रविवार श्री मालपुरा नगरे। भ० श्री ५ श्री श्री श्री चंद्रकीर्ति विजय राज्ये ब्र० कमलकीर्ति लिखापित आत्माधे पठनीया तू मु० जैसा केन लिखितं।

३४९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३२०। ले० काल सं० १६५६ फागुन सुदी १५। तीन अध्याय तक पूर्ण। वै० सं० २५४। क भण्डार।

विशेष—बाला बरुण शर्मा ने प्रतिलिपि की थी। टीका विस्तृत है।

३५०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५ से ५६३। ले० काल—×। अपूर्ण। वै० सं० २५६। क भण्डार।

विशेष—टीका विस्तृत है।

३५१. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६३। ले० काल सं० १७८६। वै० सं० १०४५। अ भण्डार।

३५२. प्रति सं० ५। पत्र सं० २ से २२। ले० काल—×। अपूर्ण। वै० सं० ३२६। 'अ' भण्डार।

३५३. प्रति सं० ६। पत्र सं० १६। ले० काल—×। अपूर्ण। वै० सं० १७६३। 'ट' भण्डार।

३५४. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—पं० सदासुख कासलीवाल। पत्र सं० ३३३। पृ० १२½×५ इंच। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—सिद्धान्त। २० काल सं० १६१० फागुन सुदी १०। ले० काल—×। पूर्ण। वै० सं० २४५। क भण्डार।

विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र पर हिन्दी मध्य में सुन्दर टीका है ।

३५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५१ । ले० काल सं० १६४३ आश्विन सुदी १५ । वै० सं० २४९ ।
क भण्डार ।

३५६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १६४० मंगसिर बुदी १३ । वै० सं० २४७ ।
क भण्डार ।

३५७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६१५ आश्विन सुदी ६ । वै० सं० २४६ ।
ग्य भण्डार ।

३५८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०० । ले० काल X । अपूर्ण । वै० सं० ४२ ।

विशेष—पृष्ठ ६० तक प्रथम अध्याय की टीका है ।

३५९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २८३ । ले० काल सं० १६३५ भाद्र सुदी ८ । वै० सं० २३३ । क भण्डार ।

३६०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १६६६ । वै० सं० २७० । क भण्डार ।

३६१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०२ । ले० काल X । वै० सं० २७१ । क भण्डार ।

३६२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२८ । ले० काल सं० १६४० चैत्र बुदी ८ । वै० सं० २७२ । क भण्डार ।

विशेष—महोरीलालजी खिन्दूवा ने प्रतिलिपि करवाई ।

३६३. प्रति सं० १० । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १६३६ । वै० सं० ५७३ । च भण्डार ।

विशेष—मांगीलाल श्रीमाल ने यह ग्रन्थ लिखवाया ।

३६४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ४४ । ले० काल सं० १६५५ । वै० सं० १८५ । छ भण्डार ।

विशेष—आनन्दचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई ।

३६५. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७१ । ले० काल १६१५ आषाढ़ सुदी ६ वै० सं० ६१ । क भण्डार ।

विशेष—मोतीलाल मंगवाल ने पुस्तक बढाई ।

३६६. तत्त्वार्थ सूत्र टीका—पं० जयचन्द्र छात्रदा । पत्र सं० ११८ । आ० १३X७ इच्छ । भाषा हिन्दी
(नय) । २० काल सं० १८५६ । ले० काल X । पूर्ण । वै० सं० २५१ । क भण्डार ।

३६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६७ । ले० काल सं० १८४६ । वै० सं० ५७२ । च भण्डार ।

३६८. तत्त्वार्थ सूत्र टीका—पांडे जयवंत । पत्र सं० ६६ । आ० १३X६ इच्छ । भाषा—हिन्दी (नय) ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल सं० १८४६ । वै० सं० २४१ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है :—

केइक जीव अचोर तप करि सिद्ध छै केइक जीव उर्द्ध सिद्ध छै इत्यादि ।

इति श्री उमास्वामी विरचित सूत्र की बास्काबोधि टीका पांडे जयवंत कृत संपूर्ण सम्पत्ता । श्री सवाई के
बहने से वैष्णव रामप्रसाद ने प्रतिलिपि की ।

३६६. तत्त्वार्थसूत्र टीका—आ० कनककीर्ति । पत्र सं० १४५ । आ० १२^१/_२ × ५^१/_२ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धान्त । १० काल × १ ले० काल × १ अपूर्ण । वे० सं० २६६ । क भण्डार ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र की धृतसागरी टीका के आधार पर हिन्दी टीका लिखी गयी है । १४५ से आगे पत्र नहीं है ।

३७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०२ । ले० काल × । वे० सं० १३८ । क भण्डार ।

३७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६१ । ले० काल सं० १७८३ । चैत्र सुदी ६ । वे० सं० २७२ । ख भण्डार ।

विशेष—लालसोट निवासी ईश्वरलाल अजभरा ने प्रतिलिपि की थी ।

३७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६२ । ले० काल × । वे० सं० ४४६ । ख भण्डार ।

३७३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १६११ । वे० सं० १६३८ । क भण्डार ।

विशेष—बैद्य अमीचन्द काला ने ईसरदा में शिवनारायण जांशी से प्रतिलिपि करवायी ।

३७४. तत्त्वार्थसूत्र टीका—पं० राजमल्ल । पत्र सं० ५ से ४८ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६१ । । अ भण्डार ।

३७५. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—छोटीलाल जैसवाल । पत्र सं० २१ । आ० १३ × ५^१/_२ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । १० काल सं० १६३२ आसोज बुदी ८ । ले० काल सं० १६५२ आसोज सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २४४ । क भण्डार ।

विशेष—मधुराप्रसाद ने प्रतिलिपि की । छोटीलाल के पिता का नाम मोतीलाल था यह मलीगढ़ जिला के मंडू ग्राम के रहने वाले थे । टीका हिन्दी पद्य में है जो अत्यन्त सरल है ।

३७६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० २६७ । क भण्डार ।

३७७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २६८ । क भण्डार ।

३७८. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—शिवरचन्द्र । पत्र सं० २७ । आ० १०^१/_२ × ७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । १० काल सं० १८६८ । ले० काल सं० १६५३ । पूर्ण । वे० सं० २४८ । क भण्डार ।

३७९. तत्त्वार्थसूत्र भाषा..... । पत्र सं० ६४ । आ० १२ × ७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३६ ।

३८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ४६ । ले० काल सं० १८५० वैशाख बुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ६७ । ख भण्डार ।

३८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ६८ । ख भण्डार ।

विशेष—द्वितीय अध्याय तक है ।

३८२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३२ । ले० काल सं० १६४१ फागुण बुदी १४ । वे० सं० ६९ । ख भण्डार ।

३८३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० ४१ । ग भण्डार ।

३८४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४६८ से ८१३ । ले० काल सं० × । अपूर्ण । वे० सं० २६४ । क भण्डार ।

३८५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८७ । २० काल- $\times$ । ले० काल सं० १६१७ । वे० सं० ५७१ ।
अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टिप्पण सहित ।

३८६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५३ । ले० काल $\times$ । वे० सं० ५७४ । अ भण्डार ।

विशेष—सं० सदासुखजी की वचनिका के अनुसार भाषा की गई है ।

३८७. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३२ । ले० काल $\times$ । वे० सं० ५७५ । अ भण्डार ।

३८८. प्रति सं० १० । पत्र सं० २३ । ले० काल $\times$ । वे० सं० १८५ । अ भण्डार ।

३८९. तत्त्वार्थसूत्र भाषा..... । पत्र सं० ३३ । ग्रा० १० $\times$ ६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
सिद्धान्त । २० काल $\times$ । ले० काल $\times$ । अपूर्ण । वे० सं० ८८६ ।

विशेष—१५वां तथा ३३ से आगे पत्र नहीं है ।

३९०. तत्त्वार्थसूत्र भाषा..... । पत्र सं० ६० से १०८ । ग्रा० ११ $\times$ ४३ इञ्च । भाषा— $\times$ ।
हिन्दी । २० काल $\times$ । ले० काल सं० १७१६ । अपूर्ण । वे० सं० २०८१ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १७१६ मिति श्रावण सुदी १३ पातिसाह औरंगसाहि राज्य प्रवर्तमाने इदं तत्त्वार्थ शास्त्रं
सुजानात्मक अन्य जन बोधाय विदुषा जयवंता कृतं साह जगन.....पठनार्थं बालाबोध वचनिका कृता । किमर्थं सूत्राणां ।
मूलसूत्रं अतीव गंभीरतर प्रवर्तते तस्य अर्थ केनापि न प्रवबुध्यते । इदं वचनिका दीपमालिका कृता कश्चित् भव्य इमां
पठति ज्ञानो-द्योतं भविष्यति । लिखापितं साह बिहारीदास खाजानची सावडावासी ग्रामेर का कर्मलय निमित्त लिखाई
साह भोला, गोधा की सहाय से लिखी है राजश्री जैसिहपुरामध्ये लिखी जिहानाबाद ।

३९१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १८६० । वे० सं० ७० । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में टिप्पण रूप में अर्थ दिया है ।

३९२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । २० काल $\times$ । ले० काल सं० १९०२ आशोज सुदी १० । वे० सं०
१९८ । अ भण्डार ।

विशेष—टॉप्पा टीका सहित है । हीरालाल कासलीवाल कागी वाले ने विजयरामजी पांड्या के मन्दिर के
वास्ते प्रतिलिपि की थी ।

३९३. त्रिभंगीसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६६ । ग्रा० ६३ $\times$ ४३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—
सिद्धान्त । २० काल $\times$ । ले० काल सं० १८५० सावन सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ७४ । अ भण्डार ।

विशेष—लालचन्द टॉप्पा ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की ।

३९४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १९१६ । अपूर्ण । वे० सं० १४६ । अ भण्डार ।

विशेष—जीहरीलालजी गोधा ने प्रतिलिपि की ।

३९५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८७६ कार्तिक सुदी ४ । वे० सं० २४ । अ भण्डार ।

विशेष—भ० जैमकीर्ति के शिष्य गोवर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी ।

३६६. त्रिभंगीसार टीका—विवेकनन्दि । पत्र सं० ४८ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १८२४ । पूर्ण । वे० सं० २८० । क भण्डार ।

विशेष—पं० महाचन्द्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १११ । ले० काल × । वे० सं० २८१ । क भण्डार ।

३६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ से ६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६३ । छ भण्डार ।

३६९. दशवैकालिकसूत्र..... । पत्र सं० १८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२५१ । अ भण्डार ।

४००. दशवैकालिकसूत्र टीका..... । पत्र सं० १ से ४२ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आगम । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०९ । छ भण्डार ।

४०१. द्रव्यसंग्रह—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । २० काल × । ले० काल सं० १६३५ माघ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १८५ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १६३५ वर्षके माघ मासे शुक्लपक्षे १० तिथी ।

४०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ६२६ । अ भण्डार ।

४०३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८४१ आसोज बुदी १३ । वे० सं० १३१० । अ भण्डार ।

४०४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ से ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०२५ । अ भण्डार ।

विशेष—ठप्पा टीका सहित ।

४०५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २६२ । अ भण्डार ।

४०६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८२० । वे० सं० ३१२ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित ।

४०७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८१६ भाद्रवा सुदी ३ । वे० सं० ३१३ । क भण्डार ।

४०८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८१५ पीव सुदी १० । वे० सं० ३१४ । क भण्डार ।

४०९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८४४ श्रावण बुदि १ । वे० सं० ३१५ । क भण्डार ।

विशेष—संक्षिप्त संस्कृत टीका सहित ।

४१०. प्रति सं० १० । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८१७ ज्येष्ठ बुदी १२ । वे० सं० ३१५ । क भण्डार ।

४११. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ३१६ । क भण्डार ।

४१२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३११ । क भण्डार ।

विशेष—गाथाओं के नीचे संस्कृत में व्याख्या दी हुई है ।

४१३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १७८६ ज्येष्ठ बुदी ८ । वे० सं० ८६ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । टीक में पार्श्वनाथ चैत्यालय में पं० हंगरसी के शिष्य वैमराज के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई ।

४१४. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८११ । वे० सं० २६५ । ख भण्डार ।

४१५. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० सं० ४० । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

४१६. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ९ से ८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ४२ । च भण्डार ।

४१७. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ३ । ले० काल X । वे० सं० ४३ । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है ।

४१८. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ५ । ले० काल X । वे० सं० ३१२ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

४१९. प्रति सं० १९ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० ३१३ । छ भण्डार ।

४२०. प्रति सं० २० । पत्र सं० ९ । ले० काल X । वे० सं० ३१४ । छ भण्डार ।

४२१. प्रति सं० २१ । पत्र सं० ३५ । ले० काल X । वे० सं० ३१६ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत और हिन्दी अर्थ सहित है ।

४२२. प्रति सं० २२ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० १६७ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

४२३. प्रति सं० २३ । पत्र सं० ५ । ले० काल X । वे० सं० १६९ । च भण्डार ।

४२४. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६६ द्वि० अष्टादश सुदी २ । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में बालावबोध टीका सहित है । पं० चतुर्भुज ने नागपुर ग्राम में प्रतिलिपि की थी ।

४२५. प्रति सं० २५ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७८२ भाद्रपदा बुदी ६ । वे० सं० ११२ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है । ऋषभसेन खतरगच्छ ने प्रतिलिपि की थी ।

४२६. प्रति सं० २६ । पत्र सं० १३ । ले० काल X । वे० सं० १०६ । ज भण्डार ।

विशेष—टक्का टीका सहित है ।

४२७. प्रति सं० २७ । पत्र सं० ४ । ले० काल X । वे० सं० १२७ । ख भण्डार ।

४२८. प्रति सं० २८ । पत्र सं० १२ । ले० काल X । वे० सं० २०६ । ख भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

४२९. प्रति सं० २९ । पत्र सं० १० । ले० काल X । वे० सं० २६४ । ख भण्डार ।

४३०. प्रति सं० ३० । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० २७५ । ख भण्डार ।

४३१. प्रति सं० ३१ । पत्र सं० २१ । ले० काल X । वे० सं० ३७८ । ख भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

४३२. प्रति सं० ३२ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७८५ पौष सुदी ३ । वे० सं० ४६४ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति टप्पा टीका सहित है। सीलीर नगर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में मूलसंघ के अंवावती पट्ट के भट्टारक जगतकीर्ति तथा उनके पट्ट में भ० देवेन्द्रकीर्ति के ग्रामनाथ के शिष्य मनोहर ने प्रतिलिपि की थी।

४३३. प्रति सं० ३३। पत्र सं० १५। ले० काल ×। वे० सं० ४६५। अ भण्डार।

विशेष—३ पत्र तक द्रव्य संग्रह है जिसके प्रथम २ पत्रों में टीका भी है। इसके बाद 'सज्जनचित्तबल्लभ' मस्तिषेणाचार्य कृत दिया हुआ है।

४३४. प्रति सं० ३४। पत्र सं० ५। ले० काल सं० १६२२। वे० सं० १६४६। ट भण्डार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं।

४३५. प्रति सं० ३५। पत्र सं० २ से ६। ले० काल सं० १७८४। अपूर्ण। वे० सं० १८४५। ट भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४३६. द्रव्यसंग्रहवृत्ति—प्रभाचन्द्र। पत्र सं० ११। आ० ११३×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल सं० १८२२ मंगसिर बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १८५३। अ भण्डार।

विशेष—महाचन्द्र ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

४३७. प्रति सं० २। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १८५६ पौष सुदी ३। वे० सं० ३१७। क भण्डार।

४३८. प्रति सं० ३। पत्र सं० २ से ३२। ले० काल सं० १७३०। अपूर्ण। वे० सं० ३१७। छ भण्डार।

विशेष—आचार्य कनककीर्ति ने फागपुर में प्रतिलिपि की थी।

४३९. प्रति सं० ४। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १७१४ द्वि० आवण बुदी ११। वे० सं० १६८। अ भण्डार।

विशेष—यह प्रति जोधराज गोदीका के पदमार्थ रूपसी भांवसा जांक्नेर वालों ने सगानेर में लिखी।

४४०. द्रव्यसंग्रहवृत्ति—महादेव। पत्र सं० १०८। आ० ११३×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल सं० १६३५ आसोज बुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ६०।

विशेष—इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि राजाधिराज भगवंतदास विजयराज मानसिंह के शासनकाल में भावपुरा में श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में हुई थी।

प्रशस्ति—शुक्लादिपक्षे नवमदिने पुष्यनक्षत्रे सोमवासरे संवत् १६३५ वर्षे आसोज मदि १० शुभ दिने राजाधिराज भगवंतदास विजयराज मानसिंह राज्य प्रवर्तमाने माल्हपुर वास्तव्ये श्री चन्द्रप्रभनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघ नंशाग्रनाथे बल्लारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री धर्मचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जलितकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री चन्द्रकीर्ति देवास्तदाग्रण खंडेलवालान्वये गंगवालगावे सा. नानिम द्वि. पदारथा। सा. नानिम भार्या नाथकदे तत्पुत्र सा. खामा तद्भार्या डे। प्र. खमिसिरि। द्व० हरमदे तत्पुत्र कमा तद्भार्या करणदि। द्वि० सा. पदारथ तद् भार्या विदिमदे तत्पुत्र सा. गोइंद तद्भार्या मोरादे तत्पुत्रापंच प्र. वीका, द्वि. नराइण, तृ. उदर, चतुर्थ विरम पंच दसरथ। प्र. विका भार्या विक्रम दे एतेषां सा. कमा इदं सास्त्र लिखयाम्य आचार्य श्री सिधनंण वटापितं।

४४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १२४ । अ भण्डार ।

४४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १८१० कार्तिक बुदी १३ । वे० सं० ३२३ । क भण्डार ।

४४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८०० । वे० सं० ४४ । ख भण्डार ।

४४४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४६ । ले० काल सं० १७८४ अषाढ बुदी ११ । वे० सं० १११ । ख भण्डार ।

४४५. द्रव्यसंग्रहटीका..... । पत्र सं० ५८ । आ० १०×४६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । १० काल × । ले० काल सं० १७३१ माघ बुदी १३ । वे० सं० ५१० । अ भण्डार ।

विशेष—टीका के प्रारम्भ में लिखा है कि आ० नेमिचन्द्र ने मालवदेश की धारा नगरी में भोजदेव के शासनकाल में श्रीपाल मंडलेश्वर के आश्रम नाम नगर में सोमा नामक श्रावक के लिए द्रव्य-संग्रह की रचना की थी ।

४४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५८ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम बृहद् द्रव्य संग्रह टीका है ।

४४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १७७८ पीष बुदी ११ । वे० सं० २६५ । अ भण्डार ।

४४८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६७० भाद्रवा सुदी ५ । वे० सं० ८५ । ख भण्डार ।

विशेष—नागपुर निवासी खंडेलवाल जातीय सेठी गौत्र वाले सा ऊदा की भार्या ऊदलदे ने पत्न्य व्रतों-पात्र में प्रतिलिपि कराकर बढ़ाया ।

४४९. प्रति सं० ६६ । ले० का० सं० १६०० चैत्र बुदी १३ । वे० सं० ४५ । घ भण्डार ।

४५०. द्रव्यसंग्रह भाषा..... । पत्र सं० ११ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल सं० १७७१ सावण बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में निम्न प्रकार अर्थ विधा हुआ है ।

गाथा—द्रव्य-संग्रहमिरां मुखिणाहा दोस-संचयबुदा सुदपुण्या ।

सोधयंतु तणुसुतधरेण नेमिचंद्र मुखिणा भणियं जं ॥

अर्थ—ओ मुनि नाथ ! ओ पंडित कैसे हौ तुम्ह दोष संचय बुति दोषनि के जु संचय कहिये समूह तिनते जु रहित हौ । मया नेमिचंद्र मुनिना भणितं । यत् द्रव्य संग्रह इमं प्रत्यक्षी भूतां में जु हौ नेमिचंद्र मुनि तिन जु कह्यो यह द्रव्य संग्रह शास्त्र । ताहि सोधयंतु । सो धौ हूं कि कि सो हूं । तनु सुत धरेण तनु कहिये धोरो सो सूत्र कहिये । सिद्धान्त ताकी जु धारक ह्यो । अल्प शास्त्र करि संयुक्त हौ जु नेमिचंद्र मुनि तेन कह्यो जु द्रव्य संग्रह शास्त्र ताकी ओ पंडित सोधां ।

इति श्री नेमिचंद्राचार्य विरचितं द्रव्य संग्रह बालबोध संपूर्ण ।

संवत् १७७१ शके १८३६ प्र० आश्विन मासे कृष्णशुक्ल तृतीयदश्या १३ बुधवासरे लिप्यकृतं विद्याधरेण स्वात्मार्थे ।

४५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २६३ । अ भण्डार ।

४५७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से १६ । ले० काल सं० १८३५ ज्येष्ठ सुदी ८ । वे० सं० ७७४ । अ
भण्डार ।

विशेष—हिन्दी सामान्य है ।

४५८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १८१४ मंगिर बुदी ६ । वे० सं० ३६३ । अ भण्डार
विशेष—धर्मार्थी रामचन्द्र की टीका के आधार पर भाषा रचना की गई है ।

४५९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १५५७ आसोज सुदी ८ । वे० सं० ८८ । अ भण्डार

४६०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २० । ले० काल X । वे० सं० ४४ । ग भण्डार ।

४६१. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १७४३ भाद्रपद सुदी १३ । वे० सं० १११ । छ
भण्डार ।

प्रारम्भ—बालानामुपकाराय रामचन्द्रेण सभाषया । द्रव्यसंग्रहशास्त्रस्य व्याख्यानेषो वितन्यते ॥१॥

४६२. द्रव्यसंग्रह भाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र सं० १६ । आ० १३X५३ इत्य । भाषा—गुजराती ।
लिपि हिन्दी । विषय—छह द्रव्यों का वर्णन । २० काल X । ले० काल सं० १८०० भाद्र सुदी ११ । वे० सं० २१/२६२
छ भण्डार ।

४६३. द्रव्यसंग्रह भाषा—पद्मलाल चौधरी । पत्र सं० १६ । आ० ११३X७३ इत्य । भाषा—हिन्दी ।
विषय—छह द्रव्यों का वर्णन । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ४२ । छ भण्डार ।

४६४. द्रव्यसंग्रह भाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ३१ । आ० ११३X५३ इत्य । भाषा—हिन्दी
गद्य । विषय—छह द्रव्यों का वर्णन । २० काल सं० १८८३ सावन बुदी १४ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १०१२ ।
अ भण्डार ।

४६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८६३ भाद्रपद सुदी १४ । वे० सं० ३२१ । क
भण्डार ।

४६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल X । वे० सं० ३१८ । क भण्डार ।

४६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १८६३ । वे० सं० १८५८ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र ४२ के आगे द्रव्यसंग्रह पद्य में है लेकिन वह अपूर्ण है ।

४६८. द्रव्यसंग्रह भाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ५ । आ० १२X५ इत्य । भाषा हिन्दी (पद्य)
विषय—छह द्रव्यों का वर्णन । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३२२ । क भण्डार ।

४६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८३३ । वे० सं० ३१८ । छ भण्डार ।

४७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १८३३ । वे० सं० ३१६ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य में भी अर्थ दिया हुआ है ।

४७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८७६ कार्तिक बुदी १४ । वे० सं० ५२१ । च
भण्डार ।

विशेष—पं० सदाशिव कामलीवाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की है ।

४६६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४७ । ले० काल $\times$ । वे० सं० १६४ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य में भी अर्थ दिया गया है ।

४६७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३७ । ले० काल $\times$ । वे० सं० २४० । क भण्डार ।

४६८. द्रव्यसंग्रह भाषा—बाबा दुलीचन्द । पत्र सं० ३८ । आ० ११ $\times$ १ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—छद्म द्रव्यों का वर्णन । २० काल सं० १६६६ आगोज सुदी १० । ले० काल $\times$ । पूर्ण । वे० सं० ३२० । क भण्डार ।

विशेष—जयचन्द छाबड़ा की हिन्दी टीका के अनुसार बाबा दुलीचन्द ने इसकी दिल्ली में भाषा लिखी थी ।

४६९. द्रव्यस्वरूप वर्णन । पत्र सं० ६ से १६ तक । आ० १२ $\times$ ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—छद्म द्रव्यों का लक्षण वर्णन । २० काल $\times$ । ले० काल सं० १६०५ सावन सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० २१२३ । ट भण्डार ।

४७०. भवन्त । पत्र सं० २८ । आ० १३ $\times$ ८ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—जैनागम । २० काल $\times$ । ले० काल $\times$ । अपूर्ण । वे० सं० ३५० । क भण्डार ।

४७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ से १८ । ले० काल $\times$ । अपूर्ण । वे० सं० ३५१ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका भी दी हुई है ।

४७२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल $\times$ । वे० सं० ३५२ । क भण्डार ।

४७३. नन्दीसूत्र । पत्र सं० ८ । आ० १२ $\times$ ४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । २० काल $\times$ । ले० काल सं० १५६० । वे० सं० १८४८ । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—सं० १५६० वर्षे श्री खरतरगच्छे विजयराज्ये श्री जिनचन्द्र मुरि पं० नयममुद्रगणि नामा देव ? तस्मै शिष्ये श्री. गुणलाभ गणिभि मिलेति ।

४७४. नवतत्त्वसाध्या । पत्र सं० ३ । आ० ११ $\times$ ६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—८ तत्त्वों का वर्णन । २० काल $\times$ । ले० काल सं० १८१३ मंगसिर सुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—पं० महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

४७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वे० सं० १०५० । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ से ५ । ले० काल $\times$ । अपूर्ण । वे० सं० १७६ । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४७७. नवतत्त्व प्रकरण—लक्ष्मीवल्लभ । पत्र सं० १४ । आ० ६ $\frac{१}{२}$ $\times$ ४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—८ तत्त्वों का वर्णन । २० काल सं० १७४७ । ले० काल सं० १८०६ । वे० सं० । ट भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का सम्मिश्रण है । रायवचन्द शक्तावत ने शक्तिमिह के शासनकाल में प्रतिलिपि की ।

४७८. नवतत्त्ववर्णन.....। पत्र सं० ५। आ० ८३×४३ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—जीव अजीव आदि ९ तत्त्वों का वर्णन। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ६०१। च भण्डार।

विशेष—जीव अजीव, पृथ्वी पाप, तथा आश्वय तत्त्व का ही वर्णन है।

४७९. नवतत्त्व वचनिका—पद्मलाल चौधरी। पत्र सं० ५१। आ० १२×५ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—९ तत्त्वों का वर्णन। २० काल सं० १९३४ माघ बुदी ३१। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ३६४। क भण्डार।

४८०. नवतत्त्वविचार.....। पत्र सं० ६ में २४। आ० १×४ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—९ तत्त्वों का वर्णन। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० २५६। च भण्डार।

४८१. निजस्मृति—जयतिलक। पत्र सं० ५ में १३। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० २३१। ट भण्डार।

विशेष—ग्रन्थिम पुण्यक—

इत्यागमिकाचार्यश्रीजयतिलकरचितं निजस्मृत्यं धेध—स्वाभिल्लास्य प्रकरणमेतच्चतुर्थः। संपूर्णोऽयं ग्रन्थः। ग्रन्थामन्त्र ५३० प्रमाणं। केतरांतरां श्री तपोमन्त्रीय पंडित रत्नाकर पंडित श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री सीमाय—विजयगणि तल्लिख्य पु० सिधविजयेन। पं० धनलाल कृष्णभक्त की पुस्तक है।

४८२. नियमसार—आ० कुन्दकुन्द। पत्र सं० १००। आ० १०३×५३ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ५६। घ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४८३. नियमसार टीका—पद्मप्रभमलधारिदेव। पत्र सं० २२२। आ० १२३×७ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल सं० १८३८ माघ बुदी २। पूर्ण। वै० सं० ३८०। क भण्डार।

४८४. प्रति सं० २। पत्र सं० ८७। ले० काल सं० १८६६। वै० सं० ३७१। च भण्डार।

४८५. निरयायलीसूत्र.....। पत्र सं० १३ से ३६। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—आगम। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० १८६। घ भण्डार।

४८६. पञ्चपरिवर्तन.....। पत्र सं० ३। आ० ११×५३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १८३८। अ भण्डार।

विशेष—जीवों के द्रव्य क्षेत्र आदि पञ्चपरिवर्तनों का वर्णन है।

४८७. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल २। वै० सं० ४१३। क भण्डार।

४८८. पञ्चसंग्रह—आ० नेमिचन्द्र। पत्र सं० २६ से २८८। आ० १२×५३ इञ्च। भाषा—प्राकृत संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० ४००। क भण्डार।

४८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८१२ कार्तिक वृद्धो ८ । वे० सं० १२८ । अ. भण्डार ।

विशेष—उदयपुर नगर में रत्नरुचिराणि ने प्रतिलिपि की थी । कहीं कहीं हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

४८७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०७ । ले० काल × । वे० सं० ५०६ । अ. भण्डार ।

४८८. पञ्चसंग्रहवृत्ति—अभयचन्द्र । पत्र सं० १२० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विशेष—सिद्धांत । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८ । अ. भण्डार ।

विशेष—नवम अधिकार तक पूर्ण । २४-२५वां पत्र नवीन लिखा हुआ है ।

४८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०६ से २५० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०६ अ. भण्डार ।

विशेष—केवल जीव काण्ड है ।

४९०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४१२ से ६१५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११० । अ. भण्डार ।

विशेष—कर्मकाण्ड नवमां अधिकार तक । वृत्ति—रचना पार्श्वनाथ मन्दिर चित्रकूट में साधु तर्मा के सह-योग से की थी ।

४९१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५८६ से ७६३ तक । ले० काल सं० १७२३ फाल्गुन सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ७८१ । अ. भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती में पार्श्वनाथ मन्दिर में श्रीरंगशाह (श्रीरंगजेब) के शासनकाल में हाडा वंशोत्पन्न राजा भावसिंह के राज्यकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

४९२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४३० । ले० काल सं० १८६८ माघ वृद्धी २ । वे० सं० १२७ । अ. भण्डार ।

४९३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६२४ । ले० काल सं० १८५० वैशाख सुदी ३ । वे० सं० १३१ । अ. भण्डार ।

४९४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २ से २०८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४७ । अ. भण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र भी नहीं हैं ।

४९५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७४ से २१४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५ । अ. भण्डार ।

४९६. पंचसंग्रह टीका—अमिनगानि । पत्र सं० ११४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल सं० १०७३ (शक) । ले० काल सं० १८०७ । पूर्ण । वे० सं० २१४ । अ. भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ संस्कृत मूल और पत्र में लिखा हुआ है । ग्रन्थकार का परिचय निम्न प्रकार है ।

श्रीमाधुराणामनवद्युतीनां संघोऽभवद् वृत्त विमूषितानाम् ।

हारी भीमनामिद्वतमहारी सूत्रानुसारी शशिरश्मि शुभ्रः ॥ १ ॥

माधवसेनयणीयगनीयः शुद्धतमोज्ज्वल तत्र जनोयः ।
 भूयसि सत्यवतीय वशांकः श्रीमति सिधुपतावकर्मकः ॥ २ ॥
 शिष्यस्तस्य सहस्रमनोऽमितगतिमोक्षार्थिनामग्रणी ।
 रेतच्छास्त्रमशेषकर्मसमितिप्रख्यापनापाकृत ॥
 वीरस्यैव जिनेश्वरस्य गणभृद्मध्वीपकारोद्यतो ।
 दुर्गारस्मरदंतिदारणहृदि श्रीगीतमोऽनुत्तमः ॥ ३ ॥
 यदत्र सिद्धान्त विरोधिवद्व ग्राह्य निराकृत्यतदेतदार्यैः ।
 गृह्णन्ति लोका ह्युपकारियत्वा न निराकृत्य कलं पश्चिमं ॥ ४ ॥
 यमेश्वरं केवलमर्चनीयं यत्स्थिरं तिष्ठतिमुक्तपंक्तौ ।
 तावद्धरायामिदमयशास्त्रं स्वेयाच्छुभं कर्मनिरासकारि ॥
 प्रसिद्धाधिकेन्द्रना सहस्रं सकविद्विपः ।
 मसूतिकापुरे जातमिदं शास्त्रं मनोरमं ॥ ५ ॥
 उद्यमितगतिवृत्ता नैरासार तपामच्छे ।

५००. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१५ । ले० काल सं० १७६६ माघ बुदी १ । वे० सं० १८७ । अ भण्डार ।

५०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८० । ले० काल सं० १७२४ । वे० सं० २१६ । अ भण्डार ।

विशेष—जीर्ण प्रति है ।

५०२. पञ्चसंग्रह टीका—। पत्र सं० २५ । आ० १२×१३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६६ । क भण्डार ।

५०३. पञ्चास्तिकाय—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं० ५३ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १७०३ । पूर्ण । वे० सं० १०३ । अ भण्डार ।

५०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० ४०४ । अ भण्डार ।

५०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । वे० सं० ४०२ । क भण्डार ।

५०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० ४०३ । क भण्डार ।

५०७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० ३२ । क भण्डार ।

विशेष—द्वितीय स्कन्ध तक है । गाथाओं पर टीका भी दी है ।

५०८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १८७ । ज भण्डार ।

५०९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १७२४ भाषाह बुदी ५ । वे० सं० १६६ । ज भण्डार ।

विशेष—अष्टावली में प्रतिलिपि हुई श्री ।

५१०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २५ । ले० काल X । अपूर्णा । वै० सं० १६६ । क भण्डार ।

५११. पञ्चास्तिकाय टीका—अमृतचन्द्र सूरि । पत्र सं० १२४ । भा० १२३ X ७ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल सं० १६३८ आषाढ बुदी १४ । पूर्ण । वै० सं० ४०५ । क भण्डार ।

५१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १४८७ वैशाख सुदी १० । वै० सं० ४०२ । क भण्डार ।

५१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७६ । ले० काल X । वै० सं० २०२ । च भण्डार ।

५१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १६५६ । वै० सं० २०३ । च भण्डार ।

५१५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १५४१ कार्तिक बुदी १४ । वै० सं० । च भण्डार ।

प्रशस्ति—चन्द्रगुरी वास्तव्ये खण्डेलवालान्वये सा. फहरी भार्या धमला तयोः पुत्रधानु तस्य भार्या धनामदे नाथ्या पुत्र सा. होलु भार्या सुतखत तस्य दामाद सा. हंनराज तस्य भ्राता देवपति एवै पुस्तक पञ्चास्तिकायात्रिधं विद्वान् कुलभूषणस्य कर्मश्रयार्थं दत्तं ।

५१६. पञ्चास्तिकाय भाषा—पं० हीरानन्द । पत्र सं० ६३ । भा० ११८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पत्र । विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १७०० ज्येष्ठ सुदी ७ । ले० काल X । पूर्ण । वै० सं० ४०७ । क भण्डार ।

विशेष—जहानाबाद में बादशाह जहांगीर के समय में प्रतिलिपि हुई ।

५१७. पञ्चास्तिकाय भाषा—पांडे हेमराज । पत्र सं० १७५ । भा० १३ X ७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पत्र । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वै० सं० ४०६ । क भण्डार ।

५१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३५ । ले० काल सं० १६४७ । वै० सं० ४०८ । क भण्डार ।

५१९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४६ । ले० काल X । वै० सं० ४०३ । क भण्डार ।

५२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५० । ले० काल सं० १६५४ । वै० सं० ६२० । च भण्डार ।

५२१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४४ । ले० काल सं० १६३६ आषाढ सुदी ४ । वै० सं० ६२१ । च भण्डार ।

५२२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३६ । २० काल X । वै० सं० ६२२ च भण्डार ।

५२३. पञ्चास्तिकाय भाषा—बुधजन । पत्र सं० ६११ । भा० ११ X ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पत्र । विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १८६२ । ले० काल X । वै० सं० ७१ । क भण्डार ।

५२४. पुण्यतन्त्रचर्चा— । पत्र सं० ६ । भा० १० इ X ४ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १८८१ । ले० काल X । पूर्ण । वै० सं० २०४१ । क भण्डार ।

५२५. बंध उदय सत्ता चौपई—श्रीलाल । पत्र सं० ६ । भा० १० इ X ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पत्र । विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १८८१ । ले० काल X । वै० सं० १६०५ । पूर्ण । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ ।

विमल जिनेश्वरप्रणमु पाद, मुनिसुत्रत कूँ सीस नवाय ।

सतगुरु सारद हिरदै धर्म, बंध उदय सत्ता उचर्क ॥ १ ॥

अन्तिम—बंध उदै सत्ता बखारौ, ग्रन्थ त्रिभंगीसार तैं जाणि ।

मूढ़ असुद्ध सुधा रसु नारण, अल्प बुद्धि में वरुं बखारण ॥ १२ ॥

साहिब राम मुभकुं बुध दई, नगर पचेवर मांही लही ।

मुभ उत्तपत डगी कै साहि, श्रावक कुल संगवाल कहहि ॥ १३ ॥

काल पाय कै रंजित भयो, नैराचन्द के शिष्य म भयो ।

तमर पचेवर साहि गयो, आदिनाथ मुभ दर्शण दिखो ॥ १४ ॥

पापकर्म तैं विव्रत भयो, साब जा कर लहलह भयो ।

सीतल जिनकुं करि परिणाम, स्वपर कारण तैं कहैं बखारण ॥ १५ ॥

मंथत् अठरासैं का कछा, भवर भक्तासी अपर लाया ।

रहत सुगल अध सख होय, पुन्य बंध बुधि बहु होय ॥ १६ ॥

॥ इति श्री उदै बंध सत्ता समाप्ता ॥

इससे आगे चौबीस ठाण की चौपाई है—

प्रारम्भ—देव धर्म गुरु ग्रन्थ पब बंदौ मन वच काय ।

गुरुठाणनि परि ग्रन्थ की रचना कहूं अणाय ॥

अन्तिम—इह विधि जस गुरुस्थान की रचना बरणि सार ।

भूल चूक जो होय तां, बुधिजन नेहु मुधार ।

छठि भंगसिर कृष्ण की लावा नगर भकार ।

उगएहिसे अरु पांच के साल जाय श्रीबाल ॥

॥ इति सम्पूर्ण ॥

५०६. भगवतीसूत्र—पत्र सं० ५० । आ० ११×५^३/_४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । २० काल × ।

२० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२०७ । क भण्डार ।

५०७. भावत्रिभंगी—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५१ । आ० ११×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—

विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र दुवारा लिखा गया है ।

५०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १०११ सप्तगुटी ३ । वे० सं० ५६० । क भण्डार ।

विशेष—पं० रूपचन्द ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर में की थी ।

५०९. भावदीपिका भाषा—। पत्र सं० २३८ । आ० १२.०७^३/_४ । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धन्त ।

२० काल × । वे० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६७ । क भण्डार ।

५१०. मरणकरंडिका..... पत्र सं० ८ । आ० ६^३/_४×४^३/_४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धन्त ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८ ।

विषय—आचार्य शिवकोटि की आराधना पर प्रतिष्ठिति का टिप्पण है ।

५३१. मार्गणा व गुणस्थान वर्णन—। पत्र सं० ३-५५ । आ० १४०.५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वै० सं० १७४२ । ट भण्डार ।

५३२. मार्गणा समास—। पत्र सं० ३ से १८ । आ० ११५.५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वै० सं० २१४६ । ट भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका तथा हिन्दी अर्थ सहित है ।

५३३. रायवसेणी सूत्र—। पत्र सं० १५३ । आ० १०X४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—आगम । १० काल X । ले० काल सं० १७६७ आसोज मुठ्ठी १० । वै० सं० २०३२ । ट भण्डार ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टीका सहित है । समसागर के शिष्य लालसागर उनके शिष्य सकलसागर ने लवणतन्त्र टीका की । गाथाओं के ऊपर छाया की हुई है ।

५३४. लब्धिसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५७ । आ० १२X५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वै० सं० ३२१ । च भण्डार ।

विशेष—५७ से आगे पत्र नहीं है । संस्कृत टीका सहित है ।

५३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल X । अपूर्ण । वै० सं० ३२३ । च भण्डार ।

५३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८४६ । वै० सं० १६०० । ट भण्डार ।

५३७. लब्धिसार टीका—। पत्र सं० १५७ । आ० १३X८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल X । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वै० सं० ६३८ । क भण्डार ।

५३८. लब्धिसार भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० १८० । आ० १३X८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । १० काल X । ले० काल १६४६ । पूर्ण । वै० सं० ६३६ । क भण्डार ।

५३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६३ । ले० काल X । वै० सं० ७५ । ग भण्डार ।

५४०. लब्धिसार क्षपणासार भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० १०० । आ० १५X६ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । १० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वै० सं० ७६ । ग भण्डार ।

५४१. लब्धिसार क्षपणासार संहति—पं० टोडरमल । पत्र सं० ४६ । आ० १४X७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । १० काल सं० १८८६ नीत मुठ्ठी ७ । वै० सं० ७७ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साहू ने प्रतिलिपि की थी ।

५४२. विपाकेसूत्र—। पत्र सं० ३ से ३५ । आ० १२X४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—आगम । १० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वै० सं० २१३१ । ट भण्डार ।

५४३. विशेषसत्तात्रिभंगी—आ० नेमिचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० ११X४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वै० सं० २०६ । अ भण्डार ।

५४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । ले० सं० ३४६ । अ भण्डार

५४५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १८०२ आसोज बुदी १३ । अपूर्ण । ले० सं० ८५८ ।

अ भण्डार ।

विशेष—३० से ३४ तक पत्र नहीं हैं । जयपुर में प्रतिलिपि हुई ।

५४५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल × । अपूर्ण । ले० सं० ८५९ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल आश्रव त्रिभङ्गी ही है ।

५४७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७३ । ले० काल × । अपूर्ण । ले० सं० ७६० । अ भण्डार ।

विशेष—दो तीन प्रतियों का सम्मिश्रण है ।

५४८. पट्टलेख्य वर्णन — पत्र सं० १ । आ० १०४४ ई. आ० भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । ले० सं० १८६० । अ भण्डार ।

विशेष—षट् लेखाओं पर दोहे हैं ।

५४९. पञ्चदशशतक टीका—राजहंसोपाध्याय । पत्र सं० ३१ । आ० १०५४ ई. आ० भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १५७६ भादवा । ले० काल सं० १५७६ आगत बुदी ६ । पूर्ण । ले० सं० १३५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

धीमज्जडवढाभिखो गोत्रे गीत्रायतंसिके, सुधाधकशिरोरत्न देहाख्यो समभूत्पुरा ॥ १ ॥

राजजन—जलधिवन्दस्तत्तनूजो विसंद्रो, विबुधकुमुदचन्द्रः सर्वविद्यासमुद्रः ।

जयति प्रकृतिभद्रः प्राज्यराज्ये समुद्रः, खल हरिणा हरीन्द्रो रायचन्द्रो महीन्द्रः ॥ २ ॥

तदंगजन्माजिनजैनभक्तः परोपकारव्यसनीकथक्तः नदा सदाचारविचारविज्ञः भीहगरत्न मुकुर्भीकुलजः ॥ ३ ॥

श्रीमाल—भूपालकुलप्रदीप, ममेदिनी मल्लह पावनीय । नन्दादभञ्ज गुहमादधान, तत्सूत्रसूत्रगुणप्रधान ॥ ४ ॥

भार्यावद्युगैरार्या करभार्द्रपतिव्रता, कमलेव हरेस्तनय यास्वामागे विराजते ॥ ५ ॥

नत्पुष्पाभयचन्द्रोस्ति भयश्चन्द्र इवापरः निर्भयो निरालोकश्च निःशङ्कुरंगः कलानिधिः ।

नत्याभ्यर्थनया नया विरचिता श्रीराजहंसाभियोपाध्यायै जनपठिकस्य विमलावृत्तिः शिषूनां हिता ।

धर्मं तदं मुनिपुत्रं सहिते मावाच्यमाना बुधे । मामे भाद्रपदे सिकंदरपुरे नन्दाच्चिरं भूतले ॥ ७ ॥

स्वच्छे स्वस्वस्वच्छे श्रीमाज्जनदत्तमूर्तिमाने । जिनतिलकमुरिमुगुरो शिष्य श्रीहर्षतिलकोऽसूनु ॥ ८ ॥

तच्छिष्येन कृतैर्य पाठकमुख्येन राजहंसेन पञ्चदशशतप्रकरणटीका नन्दाच्चिरं मत्वा ॥ ९ ॥

इति पञ्चदशशतप्रकरणस्थ टीका कृता श्री राजहंसोपाध्यायैः ॥ समग्रहंसेन लि० ॥

सं० १५७६ समये अनङ्गना यदि ६ रविवासरे गेलक श्री मिखादीदामेन लेखि ।

५५०. श्लोकवार्त्तिक—आ० विद्यानन्दि । पत्र सं० १५८५ । आ० १२४७ ई. आ० संस्कृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल १८४४ भाद्रपद बुदी ७ । पूर्ण । ले० सं० ७०७ । क भण्डार ।

विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र की बृहद् टीका है। पन्नालाल चौधरी ने इसकी प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ नोन वेष्टनों में बंधा हुआ है। हिन्दी अर्थ सहित है।

५५१. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल ५। वे० सं० ७८। व्य भण्डार।

तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम अध्याय की उपर सूत्र की टीका है।

५५२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८०। ले० काल ५। अपूर्ण। वे० सं० १६५। व्य भण्डार।

५५३. संप्रहृणीसूत्र.....। पत्र सं० ३ से २८। आ० १०५४ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय—आत्म। २० काल ५। ले० काल ५। अपूर्ण। वे० सं० २०२। व्य भण्डार।

विशेष—पत्र सं० ६, ११, १६ से २०, २३ से २५ नहीं हैं। प्रति सचित्र है। चित्र सुन्दर एवं दर्शनीय है। ४, २१ और २८वें पत्र को छोड़कर सभी पत्रों पर चित्र हैं।

५५४. प्रति सं० ८। पत्र सं० १०। ले० काल ५। वे० सं० २३३। व्य भण्डार। ३११ गायकें हैं।

५५५. संप्रहृणी बालावबोध—शिवनिधानगणि। पत्र सं० ७ से ५३। आ० १०^१/_२ × ४^१/_२। भाषा—प्राकृत—हिन्दी। विषय—आत्म। २० काल ५। ले० काल ५। वे० सं० १००१। व्य भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

५५६. सत्ताद्वार.....। पत्र सं० ३ से ७ तक। आ० ८^३/_४ × ४^१/_२ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ५। ले० काल ५। अपूर्ण। वे० सं० ३६१। व्य भण्डार।

५५७. सत्तात्रिसंगी—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० २ से ४०। आ० १२ × ६ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ५। ले० काल ५। अपूर्ण। वे० सं० १८४२। व्य भण्डार।

५५८. सर्वार्थसिद्धि—पूज्यपाद। पत्र सं० ११८। आ० १२ × ६ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ५। ले० काल सं० १८७६। पूर्ण। वे० सं० ११२। व्य भण्डार।

५५९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३६८। ले० काल सं० १६४४। वे० सं० ७६८। क भण्डार।

५६०. प्रति सं० ३। पत्र सं०.....। ले० काल ५। अपूर्ण। वे० सं० ८०७। व्य भण्डार।

५६१. प्रति सं० ४। पत्र सं० १२२। ले० काल ५। वे० सं० ३७७। व्य भण्डार।

५६२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ७२। ले० काल ५। वे० सं० ३७८। व्य भण्डार।

विशेष—चतुर्थ अध्याय तक ही है।

५६३. प्रति सं० ६। पत्र सं० १-१३३, २००-२६३। ले० काल सं० १६२५ माघ मुदी ५। वे० सं० ३७९। व्य भण्डार।

निम्नकाल और दिये गये हैं—

सं० १६६३ माघ शुक्ला ७-६ कालाहिरा में श्रीनारायण ने प्रतिलिपि की थी। सं० १७१७ कार्तिक मुदी १३ ब्रह्म नाथ ने भेंट में दिया था।

५६४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८२ । ले० काल × । वै० सं० ३८० । च भण्डार ।

५६५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १५८ । ले० काल × । वै० सं० ८४ । छ भण्डार ।

५६६. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १८८३ ज्येष्ठ सुदी २ । वै० सं० ८५ । छ भण्डार ।

५६७. प्रति सं० १० । पत्र सं० २७४ । ले० काल सं० १७०४ बैशाख सुदी ६ । वै० सं० २१६ । अ

भण्डार ।

५६८. सर्वार्थसिद्धि भाषा—जयचन्द छात्रडा । पत्र सं० ६४३ । आ० १३×७^१/_२ इञ्च । भाषा हिन्दी
विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १८६१ चैत सुदी ५ । ले० काल सं० १६२६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वै० सं० ७६६
क भण्डार ।

५६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१८ । ले० काल × । वै० सं० ८०८ । छ भण्डार ।

५७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४६७ । ले० काल सं० १६१७ । वै० सं० ७०५ । च भण्डार ।

५७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७० । ले० काल सं० १८८३ कार्तिक सुदी २ । वै० सं० १६७ । ज

भण्डार ।

५७२. सिद्धान्तार्थसार—पं० रङ्गू । पत्र सं० ६६ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा अंग्रेजी । विषय—
सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १६५६ । पूर्ण । वै० सं० ७६६ । क भण्डार ।

विशेष—यह प्रति सं० १५६३ वाली प्रति से लिखी गई है ।

५७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८६४ । वै० सं० ८०० । अ भण्डार ।

विशेष—यह प्रति भी सं० १५६३ वाली प्रति से ही लिखी गई है ।

५७४. सिद्धान्तसार भाषा—। पत्र सं० ७५ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—सिद्धान्त ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ७१६ । च भण्डार ।

५७५. सिद्धान्तलेशसंग्रह—। पत्र सं० ६४ । आ० ६×४^१/_२ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—सिद्धान्त ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १४४८ । अ भण्डार ।

विशेष—वैदिक साहित्य है । दो प्रतियों का सम्मिश्रण है ।

५७६. सिद्धान्तसार दीपक—सकलकीर्ति । पत्र सं० २२२ । आ० १२×५^१/_२ इञ्च । भाषा संस्कृत ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६१ ।

५७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८४ । ले० काल सं० १८२६ पौष सुदी ७५ । वै० सं० १६८ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० बोलचन्द के शिष्य पं० किशनदास के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

५७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५५ । ले० काल सं० १७६२ । वै० सं० १३२ । अ भण्डार ।

५७९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २३६ । ले० काल सं० १८३२ । वै० सं० ८०२ । क भण्डार ।

विशेष—खन्तोषराम पाटनी ने प्रतिलिपि की थी ।

५८०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७८ । ले० काल सं० १८१३ । वैशाख सुदी ८ । वै० सं० १२६ । अ
भण्डार ।

विशेष—शाहजहानाबाद नगर में लाला श्रीलापति ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई थी ।

५८१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १७३ । ले० काल सं० १८२७ बैशाख वृद्धी १२ । वे० सं० २६२ । ज भण्डार ।

विशेष—कही कहीं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हैं ।

५८२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७८—१२४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५२ । छ भण्डार ।

५८३. सिद्धान्तसारदीपक..... । पत्र सं० ६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४ । ख भण्डार ।

विशेष—केवल ज्योतिर्लोक वर्णन वाला १४वां अधिकार है ।

५८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८४ । ले० काल × । वे० सं० २२५ । ख भण्डार ।

५८५. सिद्धान्तसार भाषा—नथमल विलास । पत्र सं० ८७ । आ० १३½×५ इञ्च । भाषा हिन्दी ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १८४५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२४ । घ भण्डार ।

५८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५० । ले० काल × । वे० सं० ८५० । छ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल 'छ' भण्डार की प्रति में है ।

५८७. सिद्धान्तसारसंग्रह—आ० नरेन्द्रदेव । पत्र सं० १४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा संस्कृत ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६५ । अ भण्डार ।

विशेष—तृतीय अधिकार तक पूर्ण तथा चतुर्थ अधिकार अपूर्ण है ।

५८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०० । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० १६४ । अ भण्डार ।

५८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १८३० मंगसिर वृद्धी ८ । वे० सं० १५० । ख भण्डार ।

विशेष—पं० रामचन्द्र ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

५९०. सूत्रकृतांग..... । पत्र सं० १६ से ५६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय—आगम ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३३ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १५ पत्र नहीं हैं । प्रति संस्कृत टीका सहित है । बहुत से पत्र टीकों ने या नियो हैं ;
जोत में मूल पाठों हैं तथा ऊपर नीचे टीका है । इति श्री सूत्रकृतांगदीपिका पौडपमाख्या ।

विषय-धर्म एवं आचार शास्त्र

५६१. अष्टाईसमूलगुणवर्णन..... पत्र सं० १ । आ० १० $\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
मुनिधर्म वर्णन । २० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३० । अ भण्डार ।

५६२. अनगरधर्मोत्त—पं० आशाधर । पत्र सं० ३७७ । आ० ११ $\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—मुनिधर्म वर्णन । २० काल सं० १२०० । ले० काल सं० १७७७ माघ सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० २३१ । अ
भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वायत्त टीका सहित है । बोंली नगर में श्रीमहाराजा कुशलसिंहजी के शासनकाल में साहजी
रामचन्द्रजी ने प्रतिलिपि करवायी थी । सं० १८२६ में पं० मुखराम के शिष्य पं० केजव ने ग्रन्थका संशोधन किया था ।
२२ से १६१ तक तथीन पत्र है ।

५६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२३ । ले० काल × । वे० सं० १८ । न भण्डार ।

५६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७७ । ले० काल सं० १६५३ कार्तिक सुदी ५ । वे० सं० १६ ।
न भण्डार ।

५६५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३७ । ले० काल × । वे० सं० ४६७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । पं० माधव ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थ का दूसरा नाम 'धर्मामृतसूक्ति
संग्रह' भी है ।

५६६. अनुभवप्रकाश—दीपचन्द्र कासलीवाल । पत्र सं० ४४० । आकार १२×५ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—
हिन्दी (राजस्थानी) गद्य । विषय—धर्म । २० काल सं० १७८१ पौष सुदी ५ । ले० काल सं० १८१४ । अपूर्ण । वे० सं०
१ । अ भण्डार ।

५६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ७४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१ । छ भण्डार ।

५६८. अनुभवानन्द..... पत्र सं० ५६ । आ० १३ $\frac{1}{2}$ ×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० सं० १३ । छ भण्डार ।

अमृतधर्मरसकाव्य—गुणचन्द्रदेव । पत्र सं० ३ से ६६ । आ० १० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ भाषा—संस्कृत । विषय—
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६८५ पौष सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० २३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के दो पत्र नहीं हैं । अस्मिन् पुष्पिकाः—इति श्री गुणचन्द्रदेवविरचितअमृतधर्मरसकाव्य
व्याख्यानं श्रावकव्रतनिरुपणं चतुर्विंशति प्रवरगु मं पूर्ण । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

पट्टे श्री कुंदकुंदाचार्ये तत्पट्टे श्री महेशकीर्ति तत्पट्टे विभुवनकीर्तिदेवभट्टारक तत्पट्टे श्री गद्यनंददेव
भट्टारक तत्पट्टे श्री जसकीर्तिदेव तत्पट्टे श्री जनिनकीर्तिदेव तत्पट्टे श्री गुरुरत्नकीर्ति तत्पट्टे श्री ५ गुणचन्द्रदेव भट्टारक

- विश्वविद्यालय महाग्रन्थ कर्मक्षेत्रार्थ । लोहस्तुत पंडितजी सावलदास पठनार्थ । अन्तिमीश्वरभाष्यप्रकाशन धर्मउपदेशकलार्थ ।
वाचस्पति चैव्याचार्य भाष्य भाष्ये कृष्णदासे पूज्यनक्षत्रे क्षत्रिय दिने १ शुक्रवारे सं० १६८५ वर्षे वैरागरग्रामे चौधरी चन्द्र-
सेनिमहोदये तन्मृत चतुर्भुज जगन्नि परसरामु खेमराज भ्राता पंच सहायिका । शुभं भवतु ।

६०८. आगमविलास—ज्ञानतराय । पत्र सं० ७३ । आ० १०३/८६३ इच्छ । भाषा—हिन्दी (पद्य)
विषय—धर्म । २० काल सं० १७८३ । ले० काल सं० १६२८ । पूर्ण । वे० सं० ४२ । क भण्डार ।

विशेष—रचना संवत् सम्वन्धी इत्य—“गुण वसु विल मितंश”

ग्रन्थ प्रशस्ति के अनुसार ज्ञानतराय क पुत्र ने उक्त ग्रन्थ की मूल प्रति को भाबू को बेचा तथा उसने जान
ने यह मूल प्रति जगन्तराय के हाथ में आयी । ग्रन्थ रचना ज्ञानतराय ने प्रारम्भ की थी किन्तु बीच ही में मरगवान
राजाने के कारण जगन्तराय ने संवत् १७८४ में मैनपुरी में ग्रन्थ को पूर्ण किया । आगम विलास से कवि की विविध
रचनाओं का संग्रह है ।

६०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १६५४ । वे० सं० ४३ । क भण्डार ।

६०८. आचारसार—वीरतन्दि । पत्र सं० ४६ । आ० १२/४५३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार-
शास्त्र । २० काल सं० १८६४ । ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । वे० सं० १२७ । अ भण्डार ।

६०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०१ । ले० काल ४ । वे० सं० ४४ । क भण्डार ।

६०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०६ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० सं० ४ । घ भण्डार ।

६०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३२ से ७२ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० सं० ४८५ । अ भण्डार ।

६०६. आचारसार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० २०३ । आ० ११/४८ इच्छ । भाषा—हिन्दी ।
विषय—आचारशास्त्र । २० काल सं० १८३८ धैर्याश्व बुदी ६ । ले० काल ४ । वे० सं० ४५ । क भण्डार ।

६०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६२ । ले० काल ४ । वे० सं० ४६ । क भण्डार ।

६०८. आराधनासार—देवसेन । पत्र सं० २० । आ० ११/४६३ । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २०
काल सं० १८वां जनवरी । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० सं० १७० । अ भण्डार ।

६०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६४ । ले० काल ४ । वे० सं० ६२० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है

६१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल ४ । वे० सं० ६३३ । अ भण्डार ।

६११. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल ४ । वे० सं० ६८४ । अ भण्डार ।

६१२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल ४ । वे० सं० ६१५१ । अ भण्डार ।

६१३. आराधनासार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १६ । आ० १०/४५ इच्छ । भाषा—हिन्दी ।
विषय—धर्म । २० काल सं० १८३१ चैत्र बुदी ६ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ६३ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति का अंतिम पत्र नहीं है ।

६१४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० ६८ । क भण्डार ।

६१५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५२ । ले० काल × । वे० सं० ६६ । क भण्डार ।

६१६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ७५ । क भण्डार ।

विशेष—गाथायें भी हैं ।

६१७. आराधनासार भाषा..... पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२१ । ट भण्डार ।

६१८. आराधनासार वचनिका—बाबा दुलीचन्द्र । पत्र सं० २२ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । २० काल २०वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८३ । छ भण्डार ।

६१९. आराधनासार वृत्ति—पं० आशाधर । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल १३वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १० । ख भण्डार ।

विशेष—मुनि नवचन्द्र के लिए पुस्तक रचना की थी । टीका का नाम आराधनासार दर्पण है ।

६२०. आहार के छियालीस दोष वर्णन—भैया भगवतीदास । पत्र सं० २ । आ० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आचारशास्त्र । २० काल सं० १७५० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०४ । झ भण्डार ।

६२१. उपदेशरत्नमाला—धर्मदासगणि । पत्र सं० २० । आ० १०×४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १७५५ कार्तिक सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ८२८ । अ भण्डार ।

६२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ३४८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

६२३. उपदेशरत्नमाला—सकलभूषण । पत्र सं० १२६ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल सं० १७२७ आश्विन सुदी ६ । ले० काल सं० १७६७ आश्विन सुदी १६ । पूर्ण । वे० सं० ११ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर नगर में श्री गोपीराम बिलाला ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

६२४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३६ । ले० काल × । वे० सं० २७ । अ भण्डार ।

६२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १७२० आश्विन सुदी ४ । वे० सं० २८० । अ भण्डार ।

६२६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६६ । ले० काल सं० १६८८ कार्तिक सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० ८५० । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० ६० से ६३ तथा १०८ नहीं है । प्रशस्ति में निम्नप्रकार लिखा है—“जेरपूर की समस्त आत्मगामी ज्ञान कव्यारण निमित्त द्रष्टु शास्त्र की श्री सार्वदाश निमित्त भण्डार में रखवाया ।”

६२७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५ से १२३ । ले० काल X । वे० सं० ११७५ । अ भण्डार ।
 ६२८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३८ । ले० काल X । वे० सं० ७७ । क भण्डार ।
 ६२९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२८ । ले० काल X । वे० सं० ८२ । छ भण्डार ।
 ६३०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३६ से ६१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । छ भण्डार ।
 ६३१. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६४ से १४५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १०६ । छ भण्डार ।
 ६३२. प्रति सं० १० । पत्र सं० ७२ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।
 ६३३. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १६७ । ले० काल सं० १७२७ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० सं० ३१ । अ भण्डार ।
 ६३४. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १८१ । ले० काल X । वे० सं० २७० । अ भण्डार ।
 ६३५. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १६५ । ले० काल सं० १७१८ फागुण सुदी १२ । वे० सं० ४५२ । अ भण्डार ।

६३६. उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला—भंडारी नैमिचन्द्र । पत्र सं० १६ । आ० १२५७ ई. भाषा—
 प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल X । ले० काल सं० १६४३ आषाढ़ सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७८ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी दी हुई है ।

६३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल X । वे० सं० ७६ । क भण्डार ।
 ६३८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८३४ । वे० सं० १२५ । घ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

६३९. उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा—भागवन्द । पत्र सं० २८ । आ० १२५८ ई. भाषा—
 हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १६१२ आषाढ़ बुदी २ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७५६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ को सं० १६६७ में कानूराम पाल्याका ने खरीदा था । यह ग्रन्थ पदकर्मोपदेशमाला का
 हिन्दी अनुवाद है ।

६४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १६९६ ज्येष्ठ सुदी १३ । वे० सं० ८० । क भण्डार ।
 ६४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४६ । ले० काल X । वे० सं० ८१ । क भण्डार ।
 ६४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १६४३ सावण बुदी ३ । वे० सं० ८२ । क भण्डार ।
 ६४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७६ । ले० काल X । वे० सं० ८३ । क भण्डार ।
 ६४४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल X । वे० सं० ८४ । क भण्डार ।
 ६४५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४५ । ले० काल X । वे० सं० ८७ । अपूर्ण । क भण्डार ।
 ६४६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५८ । ले० काल X । वे० सं० ८४ । छ भण्डार ।
 ६४७. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५६ । ले० काल X । वे० सं० ८५ । छ भण्डार ।

६४८. उपदेशरत्नमालाभाषा—बाबा दुलीचन्द्र । पत्र सं० २० । आ० १० ई. ७ ई. भाषा—हिन्दी ।
 विषय—धर्म । २० काल सं० १६६४ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ८५ । क भण्डार ।

६४६. उपदेश रत्नमाला भाषा—देवीसिंह व्यावहृ। पत्र सं० २०। आ० ११६/७६ इअ। भाषा—हिन्दी पत्र। २० काल सं० १७६६ भाद्रवा बुदी १। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ८६। क भण्डार।

विशेष—हरद्वर नगर में ग्रन्थ रचना की गई थी।

६४७. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। ले० काल X। वे० सं० ८८। क भण्डार।

६४८. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल X। वे० सं० ८८। क भण्डार।

६४९. उपसर्गार्थ विवरण—सुपाचार्य। पत्र सं० १। आ० १०३/४३ इअ। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म। २० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३६०। अ भण्डार।

६५०. उपासकाचार दोहा—आचार्य लक्ष्मीचन्द्र। पत्र सं० २७। आ० ११०/१ इअ। भाषा—अवध-श्रृंग। विषय—आवक धर्म वर्णन। २० काल X। ले० काल सं० १५५५ कार्तिक सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० २२३। अ भण्डार।

विशेष—ग्रंथ का नाम उपसर्गार्थ भी है। १० लक्ष्मण के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी। विस्तृत प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति संवत् १५५५ वर्षे कार्तिक सुदी १५ सोमे श्री मूलमन्त्रे सरस्वतीगन्धर्व कलाकारगणो भ० दिशान्दी पट्टे भ० मन्त्रिमुपगु लच्छिष्य पंडित लक्ष्मण पठनार्थ दूहा उपसर्गार्थ शास्त्रं समाप्तं। ग्रंथ सं० २३०। दोहा की संख्या २२४ है।

६५१. प्रति सं० २। पत्र सं० १४। ले० काल X। वे० सं० २४८। अ भण्डार।

६५२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल X। वे० सं० १३। अ भण्डार।

६५३. प्रति सं० ४। पत्र सं० १५। ले० काल X। वे० सं० २६४। अ भण्डार।

६५४. प्रति सं० ५। पत्र सं० ७७। ले० काल X। वे० सं० ६६५। क भण्डार।

६५५. उपासकाचार.....। पत्र सं० ६५। आ० १३३/४ इअ। भाषा—संस्कृत। विषय—आवक धर्म वर्णन। २० काल X। ले० काल X। पूर्ण (१५ परिच्छेद तक) वे० सं० ८२। अ भण्डार।

६५६. उपासकाध्ययन.....। पत्र सं० ११४-३४१। आ० ११३/५ इअ। भाषा—संस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। २० काल X। ले० काल। अपूर्ण। वे० सं० २०६। अ भण्डार।

६५७. ऋद्धिशतक—स्वरूपचन्द्र विलास। पत्र संख्या ६। आ० १०३/५। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। २० काल सं० १६०२ ज्येष्ठ सुदी १। ले० काल सं० १६०६ वैशाख सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० २०। अ भण्डार।

विशेष—हीरानन्द की प्रेरणा से लवाई जयपुर में इस ग्रन्थ की रचना की गई।

६५८. कुशीलखंडन—जयलाल। पत्र सं० २६। आ० १०५/७३। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। २० काल सं० १६३०। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ४११। अ भण्डार।

६६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल × । वे० सं० १२७ । क मण्डार ।

६६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० १७६ । छ मण्डार ।

६६४. केवलज्ञान का त्रयौरा..... । पत्र सं० १ । आ० १२३×५३ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६७ । ख मण्डार ।

६६५. क्रियाकलाप टीका—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० १२२ । आ० ११३×५३ । भाषा—संस्कृत । विषय—
आवक धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३ । अ मण्डार ।

६६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १६५६ चैत्र सुदी १ । वे० सं० ११५ । क मण्डार ।

६६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १७६५ भाद्रवा सुदी ४ । वे० सं० ७५ । ख मण्डार ।

विशेष—प्रति सवाई जयपुर में महाराजा जयसिंहजी के शासनकाल में चन्द्रप्रभ जैनाचार्य में लिखी गई थी ।

६६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०७ । ले० काल सं० १५७७ वैशाख सुदी ४ । वे० सं० १८८७ । छ
मण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति 'प्रशस्ति' में पृष्ठ ६७ पर प्रशस्ति छप चुकी है ।

६६९. क्रियाकलाप..... । पत्र सं० ७ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आवक धर्म
वर्णन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७७ । छ मण्डार ।

६७०. क्रियाकलाप टीका..... । पत्र सं० ६१ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आवक
धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १५३६ भाद्रवा सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ११६ । क मण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

राजाधिराज मांडीगढ़दुर्ग श्री मुलतानगजामुद्दीनराज्ये चन्देरीदेष्टेमहाजोरखानध्याप्रीयमाने वेसर भाग्ये
वास्तव्य कायस्थ पदमसी तत्पुत्र श्री रावी लिखितं ।

६७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ से ६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०७ । ज मण्डार ।

६७२. क्रियाकलापवृत्ति..... । पत्र सं० ६६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आवक
धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १३६६ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १८७७ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

एवं क्रिया कलाप वृत्ति समाप्ता । छ ॥ छ ॥ छ ॥ सा० पुना पुत्रेण छात्रकेन लिखितं श्लोकानामहादय-
नतानि ॥ पूरी प्रशस्ति 'प्रशस्ति संग्रह' में पृष्ठ ६७ पर प्रकाशित हो चुकी है ।

६७३. क्रियाकोष भाषा—किशनसिंह । पत्र सं० ८१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पत्र ।
विषय—आवक धर्म वर्णन । २० काल सं० १७८४ भाद्रवा सुदी १५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०२ । अ मण्डार ।

६७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १८३३ मंगसिर सुदी ६ । वे० सं० ४२६ । छ
मण्डार ।

६७५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४२। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ७५८। अ भण्डार।

६७६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५०। ले० काल सं० १८८५ आषाढ़ बुदी १०। वे० सं० ८। ग भण्डार
विशेष—इयोलालजी साहू ने प्रतिलिपि करवायी थी।

६७७. प्रति सं० ५। पत्र सं० १६ से ११५। ले० काल सं० १८८८। अपूर्ण। वे० सं० १३०। छ
भण्डार।

६७८. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६७। ले० काल X। वे० सं० १३१। छ भण्डार।

६७९. प्रति सं० ७। पत्र सं० १००। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ५३४। च भण्डार।

६८०. प्रति सं० ८। पत्र सं० १४२। ले० काल सं० १८५१ मंसिर बुदी १३। वे० सं० १६५। छ
भण्डार।

६८१. प्रति सं० ९। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १६५६ आषाढ़ सुदी ६। वे० सं० १६६। छ

भण्डार।

विशेष—प्रति किशनगढ़ के मन्दिर की है।

६८२. प्रति सं० १०। पत्र सं० ४ से ६। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ३०४। ज भण्डार।

६८३. प्रति सं० ११। पत्र सं० १ से १४। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २०८७। ट भण्डार।

विशेष—१४ से प्राप्ति नहीं हुई।

६८४. क्रियाकोश.....। पत्र सं० ५०। आ० १०^३/_४ X ५^३/_४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—श्रावक धर्म
वर्णन। २० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ६०६। अ भण्डार।

६८५. कुशुलक्षणा.....। पत्र सं० १। आ० ६ X ४^३/_४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। २०
काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० १७१६। अ भण्डार।

६८६. क्षमावत्तीसी—जिनचन्द्रसूरि। पत्र सं० ३। आ० ६^३/_४ X ४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—
धर्म। २० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० २१४१। अ भण्डार।

६८७. क्षेत्र समासप्रकरण.....। पत्र सं० ६। आ० १० X ४^३/_४। भाषा—प्राकृत। विषय—धर्म। २०
काल X। ले० काल सं० १७०७। पूर्ण। वे० सं० ८२६। अ भण्डार।

६८८. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल X। वे० सं० X। अ भण्डार।

६८९. क्षेत्रसमासटीका—टीकाकार हरिभद्रसूरि। पत्र सं० ७। आ० ११ X ४^३/_४। भाषा—संस्कृत।
विषय—धर्म। २० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ८३०। अ भण्डार।

६९०. गणसार.....। पत्र सं० ८। आ० ११^३/_४ X ५^३/_४। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। २० काल X। ले०
काल X। पूर्ण। वे० सं० ५३५। च भण्डार।

६९१. चउसरण प्रकरण.....। पत्र सं० ४। आ० ११ X ४^३/_४ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—धर्म। २०
काल X। पूर्ण। वे० सं० १८४६। अ भण्डार।

विशेष—

प्रारम्भ—सावज्जजीगभिरइ उक्तिण सुणवउ अपडिवत्ती ।

रवलि अस्सय निदण्णवण तिगिच्छ सुण धारणा चव ॥१॥

चारित्तस्स विसोही कीरई सामाईयण किलइहय ।

सावज्जे अरजोगाणं वज्जणा सेवणत्तणउ ॥२॥

वसणधारविसोही चउवीसा इच्छणा किज्जइय ।

अन्नवत्त अणुण कित्ताण हवेणं जिणवरिदाणं ॥३॥

अन्तिम—मदराभावाचढा तिच्चणु भावाउ कुणई तानेव ।

असुहाउ निरणु बंधउ कुणई निव्वाउ मंदाउ ॥ ६० ॥

ता एवं काथञ्चं धुहेहि निच्चं पि संकिलेसंमि ।

होई तिक्कालं सम्मं असंक्खि संमि सुणइफलं ॥ ६१ ॥

चउरंगो जिणधम्मो नकउ चउरंगसरण मवि नकर्म ।

चउरंगभवच्छेउ नकउ हादा हारिउ जम्मो ॥ ६२ ॥

इ अजीव पमीयमहारि वीरभद् तमेव अम्मयणं ।

भाण गुति संकम वंभं कारणं निव्वुइ सुहाणं ॥ ६३ ॥

इति चउसरण प्रकरणं संपूर्णं । लिखितं गणिवीर विजयेन मुनिहर्षविजय पठनार्थं ।

६६२. चारभावना..... पत्र सं० ६ । आ० १० १/२ × ६ १/२ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × ३० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ भी दिया हुआ है ।

६६३. चारित्रसार—श्रीमच्छामुंदराय । पत्र सं० ६६ । आ० १६ १/२ × ४ १/२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १५४५ बैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २४२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रसस्ति निम्न प्रकार है—

इति सकलागमसंयमसम्पन्न श्रीमज्जिमसैनभट्टारक श्रीपादपद्मप्रासादासारित चतुरस्रयोगपाराकार पारंगधर्मविजयश्रीमच्छामुण्डमहाराजविरचिते भावनासारसंग्रहे चरित्रसारे अनागरधर्मसमाप्तः ॥ ग्रन्थ संख्या १८५० ॥

सं० १५४५ वर्षे बैशाख वदी ५ श्रीमवासरे श्री मूलसंघे नंदाग्रनाथे बलात्कारगणे सरस्वतीमन्त्रे श्रीकुन्द-कुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्र देवाः तत् जिष्य आचार्य श्री गृत्तिरत्नकीर्तिः तदाग्राम्नाथे खण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे सह चान्वा भार्या मन्दोवरी तयोः पुत्राः साह डारवर भार्या गधर्मा साह अर्जुन भार्या दामोदरयोः पुत्र साह पूत (?) साह उदा भार्या कर्मा तयोः पुत्रः साह रामा साह योना भार्या हंसी तयोः पुत्री रणमल क्षेमराजसा, डकुर् भार्या स्नेह तयोः पुत्र हरराज । सा, जालप साह नंजा भार्या व्यर्जामरि पुत्रपौत्रादि प्रभूतीनां एतेषां मन्त्रे सा, अर्जुन इदं चारित्रसारं शास्त्रं लिखाम्य सत्पात्राय आर्यसारंगाय प्रदत्तं लिखितं ज्योतिर्गुणा ।

६६४. प्रति सं० २। पत्र सं० १४१। ले० काल सं० १६३५ आषाढ सुदी ४। वे० सं० १५१। क भण्डार।

विशेष—बा० दुलीचन्द ने लिखवाया।

६६५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७७। ले० काल सं० १५८५ मंगसिर सुदी २। वे० सं० १७७। क भण्डार।

६६६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५५। ले० काल ×। वे० सं० ३२। अ भण्डार।

विशेष—कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं।

६६७. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६३। ले० काल सं० १७८३ कार्तिक सुदी ८। वे० सं० १३५। अ भण्डार।

विशेष—हीरापुरी में प्रतिलिपि हुई।

६६८. चारित्रसार भाषा—महात्मा। पत्र सं० ३७। आ० १२×६। भाषा—हिन्दी(गद्य)। विषय—धर्म। र० काल सं० १८७१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २७। ग भण्डार।

६६९. प्रति सं० २। पत्र सं० १६८। ले० काल सं० १८७७ आश्विन सुदी ६। वे० सं० १७८। क भण्डार।

७००. प्रति सं० ३। पत्र सं० १३८। ले० काल सं० १८६० कार्तिक सुदी १३। वे० सं० १७६। क भण्डार।

७०१. चारित्रसार..... पत्र सं० २२ से ७६। आ० ११×५। भाषा—संस्कृत। विषय—आचारशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६४३ ज्येष्ठ सुदी १०। अपूर्ण। वे० सं० २१६४। ट भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १६४३ वर्षे शके १५०७ प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे वधाम्ना तिथी सोमवासरे वातिसाह थी सक-
न्यरराज्ये प्रवर्त्तते पोथी लिखितं माधो हरपुत्र जोसी गांदा लिखितं मालपुरा।

७०२. चौबीस दण्डकभाषा—दौलतराम। पत्र सं० ६। आ० ६३×४३। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल १८वीं शताब्दि। ले० काल सं० १८४७। पूर्ण। वे० सं० ४५७। अ भण्डार।

विशेष—लहरीराम ने रामपुरा में पं० तिहालचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

७०३. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० १८६६। अ भण्डार।

७०४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १८३७ फागुण सुदी ४। वे० सं० १५४। क भण्डार।

७०५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० १६०। क भण्डार।

७०६. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० १६१। क भण्डार।

७०७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० १६२। क भण्डार।

७०८. प्रति सं० ७। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८१८। वे० सं० ७३५। अ भण्डार।

७०६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ७३६ । अ भण्डार ।

७१०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—५७ पद्य हैं ।

७११. चौरासी आसादना..... पत्र सं० १ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३३ । अ भण्डार ।

विशेष—जैन मन्दिरों में वर्जनीय ८४ क्रियाओं के नाम हैं ।

७१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० ४४७ । अ भण्डार ।

७१३. चौरासी आसादना..... पत्र सं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टिप्पणी टीका सहित है ।

७१४. चौरासीलास उत्तर गुण..... पत्र सं० १ । आ० ११ इञ्च × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२३३ । अ भण्डार ।

विशेष—१८००० शीत के भेद भी दिये हुए हैं ।

७१५. चौसठ ऋद्धि वर्णन..... पत्र सं० ३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५१ । अ भण्डार ।

७१६. छहदाला—दौलतराम । पत्र सं० ६ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२२ । अ भण्डार ।

७१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १६५७ । वे० सं० १२२५ । अ भण्डार ।

७१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १८६१ बैशाख सुदी ३ । वे० सं० १७७ । क भण्डार ।
विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

७१९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त २२ परीषद्, पंचमंगलपाठ, महावीरस्तोत्र एवं भक्तहरणभित्ती आदि भी
दी हुई हैं ।

७२०. छहदाला—बुधजन । पत्र सं० ११ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल सं० १८५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७ । अ भण्डार ।

७२१. छेदपिण्ड—इन्द्रसिंह । पत्र सं० ३६ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धार्मिक
शास्त्र । २० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८२ । क भण्डार ।

७२२. जैनागारप्रक्रियाभाषा—बा० दुलीचन्द । पत्र सं० २४ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—धार्मिक धर्म वर्णन । २० काल सं० १६३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८ । क भण्डार ।

७२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १६६६ आसोज सुदी १० । वै० सं० २०६ । क भण्डार ।

७२४. ज्ञानानन्दश्रावकाचार—साधर्मी भाई रायमल्ल । पत्र सं० २३१ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । २० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २३३ । क भण्डार ।

७२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५६ । ले० काल × । वै० सं० २६६ । क भण्डार ।

७२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५० । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २२१ । क भण्डार ।

७२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३२ । ले० काल सं० १६३२ आश्विन सुदी १४ । वै० सं० २२२ । क भण्डार ।

७२८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०२ से २७४ । ले० काल × । वै० सं० ५६७ । च भण्डार ।

७२९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०० । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ५६८ । च भण्डार ।

७३०. ज्ञानचिन्तामणि—मनोहरदास । पत्र सं० १० । आ० ६ $\frac{3}{4}$ ×५ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १५५३ । अ भण्डार ।

विशेष—५ से ८ तक पत्र नहीं है ।

७३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८६४ आश्विन सुदी ६ । वै० सं० ३३ । ग भण्डार ।

७३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वै० सं० १८७ । च भण्डार ।

विशेष—१२८ छन्द है ।

७३३. तत्त्वज्ञानतरंगिणी—भट्टारक ज्ञानभूषण । पत्र सं० २७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल सं० १५६० । ले० काल सं० १६३५ आश्विन सुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० १८६ । अ भण्डार ।

७३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १७६६ चैत बुदी ८ । वै० सं० ३३३ । अ भण्डार ।

७३५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १६३४ ज्येष्ठ बुदी ११ । वै० सं० २६३ । क भण्डार ।

७३६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १८१४ । वै० सं० २६४ । क भण्डार ।

७३७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७० । ले० काल × । वै० सं० २४३ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

७३८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १७८० फागुण सुदी १५ । वै० सं० ५१३ । अ भण्डार ।

७३९. त्रिवर्णाचार—भ० सोमसेन । पत्र सं० १०७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार-धर्म । २० काल सं० १६६७ । ले० काल सं० १८५२ भाद्रपद सुदी १० । पूर्ण । वै० सं० २८८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २५ पत्र हमरी लिपि के हैं ।

७४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८१ । ले० काल सं० १८३८ कार्तिक सुदी १३ । वै० सं० ८१ । क भण्डार ।

विशेष—पंडित बल्लभराम और उनके शिष्य शम्भुनाथ ने प्रतिलिपि की थी ।

७४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४३ । ले० काल × । वे० सं० २८२ । अ भण्डार ।

७४२. त्रिवर्णाचार । पत्र सं० १८ । आ० १०३ × ४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८ । अ भण्डार ।

७४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० २८५ । अपूर्ण । अ भण्डार ।

७४४. त्रेपनक्रिया । पत्र सं० ३ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आवक की क्रियाओं का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४ । अ भण्डार ।

७४५. त्रेपनक्रियाकोश—दौलतराम । पत्र सं० ८२ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार । २० काल सं० १७६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८५ । अ भण्डार ।

७४६. दशद्वकपाठ । पत्र सं० २३ । आ० ८ × ३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य (आचार) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६० । अ भण्डार ।

७४७. दर्शनप्रतिमास्वरूप । पत्र सं० १६ । आ० ११ इञ्च × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६१ । अ भण्डार ।

विशेष—आवक की ग्यारह प्रतिमाओं में से प्रथम प्रतिमा का विस्तृत वर्णन है ।

७४८. दशभक्ति । पत्र सं० ५६ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × ।
२० काल सं० १६७३ आसोज बुदी ३ । वे० सं० १०६ । अ भण्डार ।

विशेष—दश प्रकार की भक्तियों का वर्णन है । भट्टारक पद्मनदि के आश्रित होने वाले साहूजी साहू ने चन्द्रकीर्ति के लिए मीरजाबाद में प्रतिलिपि कराई ।

७४९. दशलक्षणधर्मवर्णन—पं० सदाशुभ कासलीवाल । पत्र सं० ४१ । आ० १२ × ५ इञ्च ।
भाषा—हिन्दी मद्य । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६३० । पूर्ण । वे० सं० २६५ । अ भण्डार ।

विशेष—रत्नकराष्ट आवकाचार की गद्य टीका में से है ।

७५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० २६६ । अ भण्डार ।

७५१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० २६७ । अ भण्डार ।

७५२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० १८६ । अ भण्डार ।

७५३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १६६३ कार्तिक सुदी ६ । वे० सं० १=६ ।
अ भण्डार ।

विशेष—श्री गोविन्दराम जैन शास्त्र लेखक ने प्रतिलिपि की ।

७५४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १६४१ । वे० सं० १८६ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ७ पत्र बाइ में लिखे गये हैं ।

७७५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

७७६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

७७७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० १७०६ । ट भण्डार ।

७७८. दशतन्त्राधर्मवर्णन । पत्र सं० २८ । आ० १२६×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८७ । च भण्डार ।

७७९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १६१७ । ट भण्डार ।

विशेष—जबर्दस्ती से प्रतिनिधि की गी ।

७८०. दानपंचाशत—पद्यनदि । पत्र सं० ८ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल × । वे० सं० ३२५ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री पद्यनदि मुनिराश्रित मुनि पुण्यदान पंचाशत ललितवर्ण त्रयो प्रकरण ॥ इति दान पंचाशत समाप्त ॥

७८१. दानकुल..... । पत्र सं० ७ । आ० १०×४० इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल × ।

ले० काल सं० १७५६ । पूर्ण । वे० सं० ८३३ । अ भण्डार ।

विशेष—गुजराती भाषा में अर्थ दिया हुआ है । लिपि नागरी है । प्रारम्भ में ४ पत्र तक ललितवर्णनक भाष्य दिया है ।

७८२. दानशीलतपभावना—धर्मसी । पत्र सं० १ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५३ । ट भण्डार ।

७८३. दानशीलतपभावना..... । पत्र सं० ६ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६३३ । अ भण्डार ।

विशेष—४५ पत्र नहीं हैं । प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

७८४. दानशीलतपभावना..... । पत्र सं० १ । आ० ६३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२६२ । अ भण्डार ।

विशेष—मोती और कांकड़े का संवाद भी बहुत सुन्दर रूप में दिया गया है ।

७८५. दीपमालिकानिर्णय । पत्र सं० १२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । क भण्डार ।

विशेष—लिपिकार बाबूलाल व्यास ।

७८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०५ । क भण्डार ।

७८७. दोहापाहुड—रामसिंह । पत्र सं० २० । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—अवध । विषय—आचार

शास्त्र । २० काल १०वीं शताब्दि । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६२ । अ भण्डार ।

विशेष—कुल ३३३ दोहे हैं । ६ में १६ तक पत्र नहीं हैं ।

७६८. धर्मचाहना..... पत्र सं० ८ । आ० ८३/७ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × ।
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२८ । छ भण्डार ।

७६९. धर्मपंचविंशतिका—ब्रह्मजिनदास । पत्र सं० ३ । आ० ११३/४३ इ.स. । भाषा—हिन्दी ।
विषय—धर्म । २० काल १५वीं शताब्दी । ले० काल सं० १८२३ पोप बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ११० । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति की पृथिका निम्न प्रकार है—

इति त्रिविधसंद्धान्तकचक्रवर्त्योचाये श्रीनेमिचन्द्रस्य शिष्ये श्री जिनदास विरचिते धर्मपंचविंशतिका
नामशास्त्रं समाप्तम् । श्रीचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

७७०. धर्मप्रदीपभाषा—पन्नालाल संधी । पत्र सं० ६४ । आ० १२/७३ । भाषा—हिन्दी । २० काल
सं० १६३५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृतमूल तथा उसके नीचे भाषा दी हुई है ।

७७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १६६२ आसोज नुदी १४ । वे० सं० ३३७ । छ
भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम दशावतार नाटक है । पं० फतेहलाल ने हिन्दी गद्य में अर्थ लिखा है ।

७७२. धर्मप्रश्नोत्तर—विमलकीर्ति । पत्र सं० ५० । आ० १०३/४३ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल सं० १८१६ फागुन सुदी ५ । छ भण्डार ।

विशेष—१११६ प्रश्नों का उत्तर है । ग्रन्थ में ६ परिच्छेद हैं । परिच्छेदों में निम्न विषय के प्रश्नों के उत्तर
हैं— १. दशलाक्षणिक धर्म प्रश्नोत्तर । २. आचक्रधर्म प्रश्नोत्तर वर्णन । ३. रत्नत्रय प्रश्नोत्तर । ४. तत्त्व
पृच्छा वर्णन । ५. कर्म विपाक पृच्छा । ६. सज्जन चित्त बल्लभ पृच्छा ।

मङ्गलाचरण :— तीर्थेवान् श्रीमतो विश्वान् विश्वनाश्रान् जगद्गुरुन् ।

अनन्तमहिमास्त्वान् वन्दे विश्वहितकारकान् ॥ १ ॥

चौखण्ड के शिष्य राधमल ने जयपुर में शांतिनाथ बेल्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

७७३. धर्मप्रश्नोत्तर पत्र सं० २७ । आ० ८३/४ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × ।
ले० काल सं० १६३० । पूर्ण । वे० सं० ४०० । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम हितोपदेश भी दिया है ।

७७४. धर्मप्रश्नोत्तरी..... पत्र सं० ४ से ३४ । आ० ८३/६ इ.स. । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल सं० १६३३ । अपूर्ण । वे० सं० ५६८ । छ भण्डार ।

विशेष—पं० खेमराज ने प्रतिलिपि की ।

७७५. धर्मप्रश्नोत्तर आचक्राचारभाषा—चम्पाराम । पत्र सं० १७७ । आ० १२/८ इ.स. । भाषा—
हिन्दी । विषय—आचक्रों के आचार का वर्णन है । २० काल सं० १८६८ । ले० काल सं० १८१० । पूर्ण । वे० सं०
३३८ । छ भण्डार ।

७७६. धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार पत्र सं० १ नं० ३५ । आ० ११६×५६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३० । अ भण्डार ।

७७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० २३० । अ भण्डार ।

७७८. धर्मरत्नाकर—संग्रहकर्ता पं० मंगल । पत्र सं० १६१ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल सं० १९०० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४० । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १९६० वर्षे काष्ठारंघ्रे नवतट ग्रामे भट्टारक श्रीभूषण शिष्य पंडित मङ्गल कृत शास्त्र रत्नाकर नाम शास्त्र संपूर्ण । संग्रह ग्रन्थ है ।

७७९. धर्मरसायन—पद्मनंदि । पत्र सं० २३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४१ । क भण्डार ।

७८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १७६७ जेनाल बुद्धो ५ । वे० सं० ४३ । अ भण्डार ।

७८१. धर्मरसायन पत्र सं० ५ । आ० ११६×५६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९९५ । अ भण्डार ।

७८२. धर्मलक्षण पत्र सं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५५ । ट भण्डार ।

७८३. धर्मसंग्रहश्रावकाचार—पं० मेधावी । पत्र सं० ४८ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक धर्म वर्णन । २० का सं० १५८१ । ले० काल सं० १५४२ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १९६० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति बाद में संशोधित की हुई है । मंगलाचरण को काट कर दूसरा मंगलाचरण लिखा गया है । तथा पुष्पिका में शिष्य के स्थान में श्रुतिवांसिना शब्द जोड़ा गया है । लेखक प्रशस्ति निम्न है—

श्री विक्रमादित्यराज्यात् संवत् १५४२ वर्षे कार्तिक सुदी ५ गुरुदिने श्री वर्तमानचैत्यामयविराजमाने श्रीहिसार पैरोजापत्तने सुलतानश्रीबहलोलसाहिराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे न्यायनाथे सारस्वतगच्छे वलात्कारगणे भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवाः । तत्पट्टे कुवलयकनिकासनैकचन्द्र श्री शुभचन्द्रदेवाः । तत्पट्टे षट्कर्कचक्रवतिकृतसेवाः भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः तत्शिष्ये मंडलाचार्य मुनि श्री रत्नकीर्तिः तस्य शिष्यो विभम्बर भूतिर्भुनि श्री विमलकीर्ति पंडितश्रीमीहाख्यः तदाम्नाये खंडेखवालाव्यये भीसा गोत्रे परमश्रावकसाधु साधुनाभा तस्याद्या भार्या देवगुल्पादारविद मेवतत्परा साध्वी लाल्लिमंशिका तयो श्रावकाचारोत्पत्ती साधुभोजा—केशोभिधानी । साधुनाम्नो, द्वितीय भार्या छाहर्षा इति नाम्नी । तन्मंदनी निमित्तज्ञानविदारदसाधुसाधुलाभिषेयः यथ साधुभोजाभस्नीपातिव्रत्यादिगुणनिलयाभोलसिरि संज्ञा । तयोः प्रथमपुत्रः साधुधामीख्य । तद्भाषादेवगुरुवरणारविद्वजंचरीका साध्वी धनश्रीः । द्वितीय पुत्रः श्री गिर-नारिगिरौ श्री मेमीश्वर यात्राकारक संव्यपति रुह्मा नामा । तस्य गेहिनी शीलशालिनी जही इति संज्ञिका । तयोर्ज्येष्ठ-पुत्रश्चतुर्विधदानवितरणकल्पमुक्तः शान्तिदासः तस्य भामिनी अनेकगुणमालिनी साध्वी हिउंसिरि नाम-

धेयाः । द्वितीय पुत्रः पंचाणुव्रतप्रतिपालको नेमिदासः तस्मै भार्या विहितानेकधर्मकार्या गुरासिरि इति प्रसिद्धिः तत्पुत्री चिरंजीविनी संसार चंदराय चंदाभिधानी । अथ साधु केसाकस्य ज्येष्ठा जायादीलादिगुरुरन्तखानिः साध्वी कमलश्री द्वितीयधनेकव्रतनियमानुष्ठानकारिका परमश्राविकासाध्वी सुवरीनामा तत्तनूजः सम्यक्त्वालंकृतद्वादशव्रतपालकः । संघपति झगराह । तत्कमलाननाशीलविनयादिगुरुपात्रं साधु लाडी नाम धेयं । तयोः सुतो देवपूजादिपटुक्रिया कमलिनीविकाम-नेकमार्तण्डोपमो जिनदासः तन्महिलाधर्मकर्मठ कर्म धीरतिनाम । एतेषां मध्येसंघपति रुत्हाख्य भार्या जह्नी नाम्ना निजपुत्र शान्तिदासनेमिकासयो न्योपाजितवित्तेन इदं श्री धर्मसंग्रह पुस्तकपंचकं पंडितश्रीमीहाख्यस्योपदेशेन प्रथमतो लोके प्रवर्तनार्थं लिखापितं भव्यानां पठनाय । निजज्ञानावरणकर्मक्षयार्थं आचन्द्राकर्कादिनंदतान् ।

७८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वै० सं० ३४५ । क भण्डार ।

७८५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७० । ले० काल सं० १७८६ । वै० सं० ३४२ । क भण्डार ।

७८६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८८६ चैत सुदी १२ । वै० सं० १७२ । च भण्डार ।

७८७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८ से ५५ । ले० काल सं० १६४२ वैशाख सुदी ३ । वै० सं० १७३ । च भण्डार ।

७८८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १८५६ माघ सुदी ३ । वै० सं० १०८ । छ भंडार ।

विशेष—भक्तश्याम के शिष्य सूरदास ने प्रतिलिपि करवाई ।

७८९. धर्मसंग्रहश्रावकाचार..... । पत्र सं० ६६ । आ० ११३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक धर्म । २० काल × । ले० काल × । वै० सं० २०३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति दोमक ने छा ली है ।

७९०. धर्मसंग्रहश्रावकाचार..... । पत्र सं० २ से २७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—श्रावक धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ३४१ । क भण्डार ।

७९१. धर्मशास्त्रप्रदीप..... । पत्र सं० २३ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १४६६ । अ भण्डार ।

७९२. धर्मसरोवर—जोधराज गोदीका । पत्र सं० ३६ । आ० ११३×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्मविद्या । २० काल सं० १७२४ आषाढ़ सुदी ५५ । ले० काल सं० १६४७ । पूर्ण । वै० सं० ३३४ । क भंडार

विशेष—सागबड, धनुषबड तथा चक्रबड कविताओं के चित्र हैं । प्रति सं० २ के आधार में रचना संभव है

७९३. प्रति सं० २ । ले० काल सं० १७२७ कार्तिक सुदी ५ । वै० सं० ३४४ । क भण्डार ।

विशेष—प्रतिलिपि सांगानेर में हुई थी ।

७९४. धर्मसार—पं० शिरोमणिदास । पत्र सं० ३९ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १७३२ वैशाख सुदी ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १०४० । अ भण्डार ।

७९५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १८८५ कापूर सुदी ५ । वै० सं० ४६ । ग भंडार ।

विशेष—श्री शिवलालजी साहू ने सवाई माधोपुर में सोनपाल भोंसा से प्रतिलिपि करवाई ।

७६६. धर्माभूतसूक्तिसंग्रह—आशाधर । पत्र सं० ६५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचारएवं धर्म । २० काल सं० १२६६ । ले० काल सं० १७४७ आसीज बुदो २ । पूर्ण । वे० सं० २६५ ।

विशेष—संवत् १७४७ वर्षे आसीज सुदी २ बुधवासरे अयं द्वितीय सागरधर्म स्तंभः पद्यान्यत्रपदसंस्थ-
धिकानि चत्वारिणितानि ॥२७६॥ छ ॥

अंतमहुंतमज्जेषी रस मुच्छियं सिमापन्ता ॥

द्वृति असंख्य जीवानिदृश सव्वदरसी ॥ दुग्धा गाथा ॥

संगर कह मिथीमूगचशोगमसू कम्मासं ।

एव सर्व विदलं वज्जोपव्वापयन्नेण ॥ १ ॥

विदलं जी भी पछा मुहं च पत्तं च दोविधो विज्जा ।

अह्मावि अत्र पत्तो भुजिज्जं गोरसाईय ॥ २ ॥

इति विदल गाथा ॥ धो ॥

रचना का नाम 'धर्माभूत' है । यह दो भागों में विभक्त है । एक सागाधर्माभूत तथा दूसरा अनागार धर्माभूत ।

७६७. धर्मोपदेशपीयूषश्रावकाचार—सिंहनंदि । पत्र सं० ३६ । आ० १०^३×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १७८५ साध सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४८ । घ भण्डार ।

७६८. धर्मोपदेशश्रावकाचार—अमोचवर्ष । पत्र सं० ३३ । आ० १०^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १७८५ साध सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४८ । घ भण्डार ।

विशेष—कोटा में प्रतिलिपि की गई थी ।

७६९. धर्मोपदेशश्रावकाचार—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र सं० २६ । आ० १०×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २४५ । छ भण्डार । अन्तिम पत्र नहीं है ।

८००. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६६ ज्येष्ठ सुदी ३ । वे० सं० ८० । ज भण्डार ।

विशेष—भवानीचन्द ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

८०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० २३ । ज भण्डार ।

८०२. धर्मोपदेशश्रावकाचार..... पत्र सं० २६ । आ० ६^३×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

८०३. धर्मोपदेशसंग्रह—सेनाराम साह । पत्र सं० २१८ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १८५८ । ले० काल × । वे० सं० ३४३ ।

विशेष—ग्रन्थ रचना सं० १८५८ में हुई किन्तु कुछ अंश सं० १८६१ में पूर्ण हुआ ।

८०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६० । ले० काल × । वे० सं० ५६७ । ज भण्डार ।

८०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७६ । ले० काल × । वे० सं० १८६५ । ट भण्डार ।

८०६. नरकदुःखवर्णन—भूधरदास । पत्र सं० ३ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—नरक के दुखों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । अ भण्डार ।

विशेष—भूधर कृत पार्वतपुराण में से है ।

८०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ६६६ । अ भण्डार ।

८०८. नरकवर्णन— । पत्र सं० ८ । आ० १०^३/_४×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—नरकों का वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ६०० । च भण्डार ।

विशेष—सदामुख कासलीवाल ने प्रतिलिपि की ।

८०९. सवकारआवकाचार— । पत्र सं० १४ । आ० १०^३/_४×४^३/_४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आवकों का आचार वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १६१२ बैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ६५ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री पार्वनाथ चैत्यालय में खंडेलवाल गोत्र बाभी बाई तील्ह ने श्री आर्थिका विनय श्री का भेंट किया । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६१२ वर्षे बैशाख सुदी ११ दिने श्री पार्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंधे सरस्वती गच्छे वलात्कार-गणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे शिष्य मण्डलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तत्शिष्यमण्डलाचार्य श्री ललितकीर्तिदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सोनी गोत्रे बाई तील्ह इदं शास्त्रं नवकारे आवकाचारं ज्ञानादरणी कर्मक्षयं निमित्तं अजिका विनैसिरीए दत्तं ।

८१०. तष्टोदिष्ट— । पत्र सं० ३ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३३ । अ भण्डार ।

८११. निजामणि—ब्र० जिनदास । पत्र सं० २ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६८ । क भण्डार ।

८१२. तित्यकृत्यवर्णन— । पत्र सं० १२ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५८ । क भण्डार ।

८१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३५६ । क भण्डार ।

८१४. निर्मल्यदोषवर्णन—आ० दुलीचन्द । पत्र सं० ६ । आ० १०^३/_४×८^३/_४ भाषा—हिन्दी । विषय—आवक धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८१ । क भण्डार ।

८१५. निर्वाणप्रकरण— । पत्र सं० ६२ । आ० ६^३/_४×८^३/_४ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १८६६ बैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २३१ । ज भण्डार ।

विशेष—गुटका साइज में है । यह जैनेतर ग्रन्थ है तथा इसमें २६ सर्ग हैं ।

८१६. निर्वाणमोदकनिर्णय—नेमिदास । पत्र सं० ११ । आ० ११^३/_४×७^३/_४ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—महावीर-निर्वाण के समय का निर्णय । २० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० ६७ । ख भण्डार ।

८१७. पंचपरमेष्ठीगुण..... पत्र सं० ५ । आ० ७×५ ३/४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३२० । अ भण्डार ।

८१८. पंचपरमेष्ठीगुणवर्णन—बालूराम । पत्र सं० ७३ । आ० ४ ३/४ × ४ ३/४ । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं सर्व साधु पंच परमेष्ठियों के गुणों का वर्णन । २० काल सं० १८६५ कागुण जुनी १० । ले० काल सं० १८६६ ज्येष्ठ सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १७ । अ भण्डार ।

विशेष—६०वें पत्र से द्वादशानुप्रेक्षा भाषा है ।

८१९. पद्मनंदिपंचविंशतिक—पद्मनंदि । पत्र सं० ५ से ८३ । आ० १२ ३/४ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १५८६ चैत सुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० १९७१ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है किन्तु निम्न प्रकार है—

श्री धर्मचन्द्रास्तदाम्नाये वैद्य गोत्रे खंडेलवालान्वये रामसरिवास्तव्ये राव श्री जगमाल राज्यप्रवर्त्तमाने साह सोनपाल.....

८२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२९ । ले० काल सं० १५७० ज्येष्ठ सुदी प्रतिपदा । वे० सं० २४५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है—संवत् १५७० वर्षे ज्येष्ठ सुदी १ रवौ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्तिस्तच्छिष्य भ० भुवनकीर्तिस्तच्छिष्य भ० श्री ज्ञानभूषण तच्छिष्य ब्रह्म तेजसा पठनार्थ । देवुलि ग्रामे वास्तव्ये ध्या० शिवदासेन लिखिता । शुभं भवतु ।

विषय सूची पर "सं० १६८५ वर्षे" लिखा है ।

८२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ५२ । अ भण्डार ।

८२२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९० । ले० काल सं० १८७२ । वे० सं० ४२२ । क भण्डार ।

८२३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५१ । ले० काल × । वे० सं० ४२० । क भण्डार ।

८२४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५१ । ले० काल × । वे० सं० ४२१ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

८२५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १७४८ माघ सुदी ४ । वे० सं० १०२ । ख भण्डार ।

विशेष—भट्ट बल्लभ ने अवंती में प्रतिलिपि की थी । ब्रह्मचर्याष्टक तक पूर्ण ।

८२६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३९ । ले० काल सं० १५७८ माघ सुदी २ । वे० सं० १०३ । ख भण्डार ।

प्रशस्ति निम्नप्रकार है— संवत् १५७८ माघ सुदी २ बुधे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सकलकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री रत्नकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री यशःकीर्ति उपदेशान् हं ब्रह्म

जातीय बागड़देशे सागवाड़ शुभस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये हुंवर जातीय गांधी श्री पोपट भार्या धर्मविस्तारोःसुत गांधी रामा भार्या रामादे सुत हुंवर भार्या बाभिमदे जायलं एतन्मन्त्रार्थो कर्तुं शयार्थं लिखाम्य इयं पंचविंशतिका दत्ता ।

८२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८८ । ले० काल सं० १६३८ आषाढ़ सुदी ६ । वे० सं० ५४ । अ भण्डार
विशेष—बैराठ नगर में प्रतिलिपि की गई थी ।

८२८. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४१८ । क भण्डार ।

८२९. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ५१ से १४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४१९ । क भण्डार ।

८३०. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२० । क भण्डार ।

८३१. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ८१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२१ । क भण्डार ।

८३२. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १६८२ पौष बुदी १० । वे० सं० २६० । ज भण्डार
विशेष—कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हैं ।

८३३. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १६८ । ले० काल सं० १७३२ सावण सुदी ६ । वे० सं० ४६ । अ
भण्डार ।

विशेष—पंडित मनोहरदास ने प्रतिलिपि कराई ।

८३४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १३७ । ले० काल सं० १७३५ कार्तिक सुदी ११ । वे० सं० १०८ । अ
भण्डार ।

८३५. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ७८ । ले० काल × । वे० सं० २६४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति सामान्य संस्कृत टीका सहित है ।

८३६. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १५८५ वैशाख सुदी १ । वे० सं० २१२० । ट
भण्डार ।

विशेष—१५८५ वर्षे वैशाख सुदी १५ सोमवार श्री काष्ठासंघे मात्रार्णके (माधुरान्धे) पुष्करगरो भट्टारक
श्री हेमचन्द्रदेव । तत्...

८३७. पद्मनंदिपंचविंशतिटीका..... पत्र सं० २०० । अ० १३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६५० भाद्रवा बुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० ४२३ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ५१ पृष्ठ नहीं हैं ।

८३८. पद्मनंदिपञ्चीसीभाषा—जगतराय । पत्र सं० १८० । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी
पत्र । २० काल सं० १७२२ फागुण सुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१६ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ रचना श्रीरङ्गजेब के शासनकाल में आगरा में हुई थी ।

८३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७६ । २० काल सं० १७५८ । वे० सं० २६२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है ।

८४०. पद्मनंदिपक्षीसीभाषा—मन्नालाल खिन्दूका । पत्र सं० ६४१ । आ० १३×२१ इञ्च । भाषा—हिन्दी भय । विषय—धर्म । २० काल सं० १६१५ मंगसिर बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१६ । क भण्डार ।

विशेष—इस ग्रन्थ की वचनिका निलना ज्ञानचन्द्रजी के पुत्र जीहरीलालजी ने प्रारम्भ की थी । 'सिद्ध स्तुति' तक लिखने के पश्चात् ग्रन्थकार की मृत्यु होगई । पुनः मन्नालाल ने ग्रन्थ पूर्ण किया । रचनाकाल प्रति सं० ३ के आधार से लिखा गया है ।

८४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१७ । ले० काल × । वे० सं० ४१७ । क भण्डार ।

८४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५७ । ले० काल सं० १६४४ चैत बुदी ३ । वे० सं० ४१७ । क भण्डार ।

८४३. पद्मनंदिपक्षीसीभाषा..... । पत्र सं० ६७ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४१८ । क भण्डार ।

८४४. पद्मनंदिश्रावकाचार—पद्मनंदि । पत्र सं० ४ से ५३ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६१३ । अपूर्ण । वे० सं० ४२८ । क भण्डार ।

८४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० से ६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७० । ट भण्डार ।

८४६. परीषद्वर्णन..... । पत्र सं० ६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४१ । क भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र आदि का संग्रह भी है ।

८४७. पुरुषीसेण..... । पत्र सं० २ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२७० । पूर्ण । अ भण्डार ।

८४८. पुरुषार्थसिद्धयुपाय—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० १६ । आ० १३½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १७०७ मंगसिर सुदी ३ । वे० सं० ५३ । अ भण्डार ।

विशेष—आचार्य कनककीर्ति के शिष्य सदाराम ने फागुईपुर में प्रतिलिपि की थी ।

८४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ५५ । छ भण्डार ।

८५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १८३२ । वे० सं० १७८ । अ भण्डार ।

८५१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १६३४ । वे० सं० ४७१ । क भण्डार ।

विशेष—श्लोकों के ऊपर नीचे संस्कृत टीका भी है ।

८५२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ४७२ । क भण्डार ।

८५३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ६७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । ग्रन्थ का दूसरा नाम जिन प्रवचन रहस्य भी दिया हुआ है ।

८५४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८१७ भाद्रवा बुदी १३ । वे० सं० ६८ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रति टक्का टीका सहित है तथा जयपुर में लिखी गई थी ।

८५५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ३३१ । ज मण्डार ।

८५६. पुरुषार्थसिद्धयुपायभाषा—भा० टोडरमल । पत्र सं० ६७ । आ० ११६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १८२७ । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ४०५ । अ मण्डार ।

८५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १८५२ । वे० सं० ४७३ । छ मण्डार ।

८५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४८ । ले० काल सं० १८२७ मंगसिर सुदी २ । वे० सं० ११८ । अ मण्डार ।

८५९. पुरुषार्थसिद्धयुपायभाषा—भूधरदास । पत्र सं० ११६ । आ० ११६×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १८०१ भाद्रवा सुदी १० । ले० काल सं० १८५२ । पूर्ण । वे० सं० ४७३ । क मण्डार ।

८६०. पुरुषार्थसिद्धयुपाय वचनिका—भूधर मिश्र । पत्र सं० १३६ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १८७१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७२ । क मण्डार ।

८६१. पुरुषार्थानुशासन—श्री गोविन्द भट्ट । पत्र सं० ३८ से ६७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १८५३ भाद्रवा बुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ४५ । अ मण्डार ।
विशेष—प्रशस्ति विलुप्त दी हुई है । श्योजीराम भावसा ने प्रतिलिपि की थी ।

८६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७३ । ले० काल × । वे० सं० १७६ । अ मण्डार ।

८६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७१ । ले० काल × । वे० सं० ४७० । क मण्डार ।

८६४. प्रतिक्रमण..... । पत्र सं० १३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—किये हुये दोषों की आलोचना । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३१ । च मण्डार ।

८६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३२ । च मण्डार ।

८६६. प्रतिक्रमण पाठ..... । पत्र सं० ३६ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—किये हुये दोषों की आलोचना २० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० ३२ । ज मण्डार ।

८६७. प्रतिक्रमणसूत्र..... । पत्र सं० ६ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—किये हुये दोषों की आलोचना । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६८ । अ मण्डार ।

८६८. प्रतिक्रमण..... । पत्र सं० २ से १८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—किये हुये दोषों की आलोचना । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ । ट मण्डार ।

८६९. प्रतिक्रमणसूत्र—(वृत्ति सहित).... । पत्र सं० २२ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत संस्कृत । विषय—किये हुए दोषों की आलोचना । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । अ मण्डार ।

८७८. प्रतिमावस्थापक कुं उपदेश—अनूप । पत्र सं० ४७ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—धर्म । २० पान ५ । ले० काल सं० १८२५ । पूर्ण । वे० सं० ११२ । छ भण्डार ।

विशेष—गीरज्ञावाद में रचना की गयी थी ।

८७९. प्रत्याख्यान..... । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० पान ५ । ले० काल ५ । पूर्ण । वे० सं० १७७२ । ट भण्डार ।

८८०. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार । पत्र सं० २५ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० पान ५ । ले० काल ५ । अमूर्ण । वे० सं० १७१५ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी व्याख्या सहित है ।

८८१. प्रश्नोत्तरश्रावकाचारभाषा—बुलाकीदास । पत्र सं० १६८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी वग । विषय—आचार शास्त्र । २० पान सं० १७४७ बैशाख सुदी २ । ले० काल सं० १८५२ मंगसिर सुदी ६ । वे० सं० ७२ । ग भण्डार ।

विशेष—इमोलालजी के पुत्र छाकूलालजी साहू ने प्रतिलिपि करायी । इस ग्रन्थ का ३ भाग जहानाबाद तथा चौथाई ३ भाग पार्श्वीपत में लिखा गया था ।

‘तीन हिस्से था ग्रन्थ को भये जहानाबाद ।

चौथाई जलपथ विधे वीतराग परसाद ॥’

८८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १८५५ सावरा सुदी १ । वे० सं० ६३ । ग भण्डार ।

विशेष—इमोलालजी साहू ने सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि कराकर चौधरियों के मन्दिर ग्रन्थ चढ़ाया ।

८८५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५० । ले० काल सं० १८३४ चैत्र सुदी ५ । वे० सं० ५२१ । क भण्डार ।

विशेष—सं० १८२६ फागुण सुदी १३ को बलतराम गोथा ने प्रतिलिपि की थी और उसी प्रति में इस की नकल उतारी गई है । महात्मा सीताराम के पुत्र लालचन्द ने इसकी प्रतिलिपि की ।

८८६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१ । ले० काल ५ । वे० सं० ६४८ । अमूर्ण । छ भण्डार ।

८८७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १९६६ माघ सुदी १२ । वे० सं० १६१ । छ भण्डार ।

८८८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२० । ले० काल सं० १८८३ पौष सुदी १४ । वे० सं० १६ । भ भण्डार ।

८८९. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ३४५ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी वग । विषय—आचार शास्त्र । २० पान सं० १९३१ पौष सुदी १४ । ले० काल सं० १९३८ । पूर्ण । वे० सं० ५१५ । क भण्डार ।

८८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४०० । ले० काल सं० १९३६ । वे० सं० ५१५ । क भण्डार ।

८८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३१ ले ४६० । ले० काल X । अपूर्णा । वै० सं० ६४६ । च भण्डार ।

८८२. प्रश्नोत्तरआवकाचार । पत्र सं० ३३ । अ० ११३ X ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय
आचार शास्त्र । २० काल X । ले० काल सं० १८३२ । पूर्णा । वै० सं० ११६ । ख भण्डार ।

विशेष—आचार्य राजकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

८८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३०० । ले० काल X । अपूर्णा । वै० सं० ६४७ । च भण्डार ।

८८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३०० । ले० काल X । अपूर्णा । वै० सं० ५१८ । छ भण्डार ।

८८५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३०० । ले० काल X । अपूर्णा । वै० सं० ५१९ । छ भण्डार ।

८८६. प्रश्नोत्तरावकाचार—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० १३१ । अ० ११ X ४ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल X । ले० काल सं० १६६५ फागुण सुदी १० । पूर्णा । वै० सं० १४२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ संख्या २६०० ।

प्रशस्ति—संवत् १६६५ वर्षे फागुण सुदी १० सोमे त्रिराहदेगे पनवाड़नगर श्री चन्द्रप्रमर्चालय श्री
काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागरी भट्टारक श्री रामहेनान्वये भ० श्रीलक्ष्मीसेनदेवास्तत्पट्टे भ० श्री भीमसेनदेवास्तत्पट्टे भ०
श्री भीमकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री विजयसेनदेवास्तत्पट्टे श्रीमदुदयसेनदेवा भ० श्री त्रिभुवनकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री
रत्नमूषणदेवास्तत्पट्टाभरण भ० जयकीर्तिस्तच्छिष्योपाध्याय श्री वीरचन्द्र लिखितं ।

८८७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १६६६ पौष सुदी १ । वै० सं० १७४ । अ
भण्डार ।

८८८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १८८१ मंगसिर सुदी ११ । वै० सं० १६७ । अ
भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज सवाई जयसिंहजी के शासनकाल में जैतराम साह के पुत्र श्यामजीलाल की भायां
ने प्रतिलिपि कराई । ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर में अंबावती (घामेर) बाजार में स्थित आदिनाथ चैत्यालय के नांच
जती तनसागर के शिष्य मन्नालाल के यहां सवाईराम मोथा ने की थी । यह प्रति जैतरामजी के यहां में (१२वें दिन पर)
श्यामजीरामजी ने पाटोदी के मन्दिर में सं० १८६३ में भेंट की ।

८८९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १६०० । वै० सं० २१७ । अ भण्डार ।

८९०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१६ । ले० काल सं० १६७६ आसोज सुदी ५ । वै० सं० २११ । अ
भण्डार ।

विशेष—नाथू मोथा ने प्रतिलिपि कराई थी ।

प्रशस्ति—संवत् १६७६ वर्षे आसोज वदि शनिवासर रोहणी नक्षत्रे मोजाबादनभरे राज्यश्रीराजाभावसिंह
राज्यप्रवर्धमाने श्री मूलसंघे मंजाम्नाये बलात्कारगरी सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनंददेवास्तत्पट्टे
भट्टारकश्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीचन्द्रकीर्तिस्तत्पट्टे
भट्टारकश्रीदेवेन्द्रकीर्तिस्तदाम्नाये गोधा गोत्रे जाचक-जनसंदोहकल्पवृक्ष आवकाचारचरण-निरत-चित साह श्री धनराज

तद्भार्या सीततोय-तरङ्गिणी विनय-वागेश्वरी धनसिरि तयोः पुत्राः त्रयः प्रथमपुत्रधर्मधुराधरगु धीरसाह श्री कृष्ण तद्भार्या दानसीलगुणसूक्ष्माभूषितगात्रानाम्ना मूजरि तयोः पुत्र राजसभा शृंगारहारस्वप्रतारदिनकरमुकुलिकृतशत्रुमुखकुमुदा-
कर स्वजन्म.....निसाकरप्राज्ञादित कुशलधदानगुण अलसीकृतकल्पपादप श्री पंचपरमेष्ठिचिन्तन पवित्रितचिन्तन सकलगुणि-
जनविश्रामस्थान साह श्री नातुतन्मनोरमाः पंच प्रथमनारंगदे द्वितीया हरखमदे तृतीया मुजानदे चतुर्थी सलालदे पंचम
भार्या लाडी । हरखमदेजमितपुत्राः त्रयः स्वकुलनामप्रकाशनैकचन्द्राः प्रथम पुत्र साह आदावर्णा तद्भार्या अहंकारदेपुत्र
नाथु । दुनीभार्यालाडमदे पुत्र केसवदाम भार्या कपूरदे द्वितीय पुत्र चि० लूणकरण भार्या द्वे प्रथमललतादे पुत्र रामकर्ण
द्वितीय लाडमदे । तृतीय पुत्र चि० वलिकर्ण भार्या बालमदे । चतुर्थ पुत्र चि० पूर्णमल भार्या पुरवदे । साह धनराज द्विती
पुत्र साह श्री जोधा तद्भार्या जीणादेतयोः पुत्राश्चयः प्रथमपुत्रधार्मिक साह करमचन्द्र तद्भार्या सोहागदे तयो पुत्र चि०
दयालदास भार्या दाडमदे । द्वितीयपुत्र साह धर्मदास तद्भार्याद्वे । प्रथम भार्या धारादे द्वितीय भार्या लाडमदे तयो पुत्र साह
हृंगरसी तद्भार्या दाडिमदे तत्पुत्री द्वे । प्र० पु० लक्ष्मीदास द्वि० पुत्र चि० तुलसीदास । जोधा तृतीय पुत्र जिणचरसाकमल-
मधुर साह पदारथ तद्भार्या हमीरदे । साह धनराज तृतीय पुत्र दानगुणधेयांससकल जनानन्दकारकस्ववचनप्रतिपालन-
समर्थमर्वापकारकसाहश्रीरतनसी तद्भार्या द्वे प्रथम भार्या रतनादे द्वितीय भार्या नीलादे तयो पुत्राश्चत्वारः प्रथम पुत्र
सुपाल तद्भार्या मुष्यारदे तयोःपुत्र चि० भोजराज तद्भार्या भावलदे । श्रीरतनसी द्वितीय पुत्र साह गेगराज तद्भार्या गौरादे
तयोपुत्राः त्रयः प्रथम पुत्र चि० साहल द्वि० पुत्र चि० निधा तृतीयपुत्र चि० मलहदी । साह रतनसी तृतीय पुत्र साह
अरथा तद्भार्या भावलदे चतुर्थ पुत्र चि० परवत्त तद्भार्या पाटमदे । एतेषां मध्ये सिधवी श्री नातु भार्या प्रथम नारंगदे ।
भट्टारकश्रीचन्द्रकीर्ति शिष्य आ० श्री शुभचन्द्र इदं शास्त्रं ब्रतनिमित्तं घटापितं कर्मक्षयनिमित्तं । ज्ञानवान ज्ञानदाने....

८६१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४६ मे १६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८३ । अ भण्डार ।

८६२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १३० । ले० काल सं० १८६२ । अपूर्ण । वे० सं० १०१६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है । बीच के कुछ पत्र नहीं हैं । पं० केदारीसिंह के शिष्य लालचन्द ने महाराम
जंभुराम ने सबार्द्ध अजपुर में प्रतिलिपि करायी ।

८६३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १६५ । ले० काल सं० १८८२ । वे० सं० ५१६ । क भण्डार ।

८६४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८१ । ले० काल सं० १८५८ । वे० सं० ५२० । क भण्डार ।

८६५. प्रति सं० १० । पत्र सं० २२१ । ले० काल सं० १९७७ पीप मुदो । वे० सं० ५१७ । क
भण्डार ।

८६६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १८८८ । वे० सं० ११५ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० रूपचन्द ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

८६७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वे० सं० ६४ । ख भण्डार ।

८६८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २ मे २६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१७ । क भण्डार ।

८६९. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१७ । क भण्डार ।

९००. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १२६ । ले० काल × । वे० सं० ५२० । क भण्डार ।

६०१. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १८५ । ले० काल × । वे० सं० १०६ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम पत्र बाद में लिखा हुआ है ।

६०२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १८५६ माघ सुदी ३ । वे० सं० १०८ । छ मण्डार ।

६०३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १७७४ फागुण सुदी ८ । वे० सं० १०९ ।

विशेष—पांचोलाम में चातुर्मास श्रम के समय पं० सोभाप्रबिम्ब ने प्रतिलिपि की थी । सं० १८२५ ज्येष्ठ सुदी १४ को महाराजा पृथ्वीसिंह के शासनकाल में घासीराम छाबड़ा ने सांगनेर में सोधी के मन्दिर में चढ़ाई ।

६०४. प्रति सं० १९ । पत्र सं० १९० । ले० काल सं० १८२६ मंगसिर सुदी १४ । वे० सं० ३८ । छ मण्डार ।

६०५. प्रति सं० २० । पत्र सं० १३२ । ले० काल × । वे० सं० २२३ । छ मण्डार ।

६०६. प्रति सं० २१ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १७५९ मंगसिर सुदी ८ । वे० सं० ३०२ ।

विशेष—महाराजा धनराज ने प्रतिलिपि की थी ।

६०७. प्रति सं० २२ । पत्र सं० १६४ । ले० काल सं० १६७४ ज्येष्ठ सुदी २ । वे० सं० ३७५ । छ मण्डार ।

६०८. प्रति सं० २३ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १६८८ पौष सुदी ५ । वे० सं० ३४३ । छ मण्डार ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति तदाम्नाथे खंडलवालास्थे महाश्वी साह श्री बान्हा इव पुस्तकं लिखापितं ।

६०९. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १३१ । ले० काल × । वे० सं० १८७३ । छ मण्डार ।

६१०. प्रश्नोत्तरोद्धार — " " । पत्र संख्या ५० । आ०—१०३×१३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । २० काल—× । ले० काल—सं० १९०५ माघ सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० १९९ । छ मण्डार ।

विशेष—चूरु नगर में स्वामीजीराम कोठारी ने प्रतिलिपि कराई ।

६११. प्रशस्तिकाशिका—बालकृष्ण । पत्र संख्या १९ । आ० ९१×४१ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल—× । ले० काल—सं० १८४२ कार्तिक सुदी ८ । वे० सं० २७८ । छ मण्डार ।

विशेष—बल्लराम के शिष्य शंभु ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ—नत्वा गणपति देवं सर्वं विघ्नं विनाशनं ।

गुरुं च कर्णानाथं ब्रह्मानंदाभिधानकं ॥ १ ॥

प्रशस्तिकाशिका दिव्या बालकृष्णो न रच्यते ।

सर्वेषामुपकाराय लेखनाय त्रिपाठिना ॥ २ ॥

चतुर्णामपि वर्णानां क्रमनः कार्यकारिणा ।

लिख्यते सर्वविघ्नाधि प्रबोधाय प्रशस्तिका ॥ ३ ॥

यस्या लेखन मात्रेण विद्याकांतिसोपि च ।

प्रतिष्ठा लभ्यते शीघ्रमनायासेन धीमता ॥ ४ ॥

६१२. प्रातः क्रिया..... । पत्र सं० ४ । आ० १२×५^१/_२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—याचन ।
२० काल—X । ले० काल—X । पूर्ण । वे० सं० १६१६ । अ भण्डार ।

६१३. प्रायश्चित्त ग्रंथ । पत्र सं० ३ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—विद्ये हुए
दोषों की आलोचना । २० काल—X । ले० काल—X । अपूर्ण । वे० सं० ३५२ । अ भण्डार ।

६१४. प्रायश्चित्त विधि—अकलंक देव । पत्र सं० १० । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—विद्ये हुए दोषों की आलोचना । २० काल—X । ले० काल—X । पूर्ण । वे० सं० ३५२ । अ भण्डार ।

६१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल—X । वे० सं० ३५२ । अ भण्डार ।

विशेष—१० पत्र में आगे अन्य ग्रंथों के प्रायश्चित्त पाठों का संग्रह है ।

६१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १६३४ चौखुदी १ । वे० सं० ११७ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० पद्मलाल ने जीवनेर के मंदिर जयपुर प्रतिलिपि की थी ।

६१७. प्रति सं० ४ । ले० काल—X । वे० सं० ५२३ । अ भण्डार ।

६१८. प्रति सं० ५ । ले० काल—सं० १७४४ । वे० सं० २४४ । अ भण्डार ।

विशेष—आचार्य महेन्द्रकीर्ति ने मूवावती (अंबावती) में प्रतिलिपि की ।

६१९. प्रति सं० ५ । ले० काल—सं० १७६६ । वे० सं० ८ । अ भण्डार ।

विशेष—दगरु नगर में पं० हीरानंद के शिष्य पं० चोखनन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

६२०. प्रायश्चित्त विधि..... । पत्र सं० ५६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—विद्ये हुए
दोषों की आलोचना । २० काल—X । ले० काल सं० १८०५ । अपूर्ण । वे० सं०—१२८० । अ भण्डार ।

विशेष—२२ वां तथा २६ वां पत्र नहीं है ।

६२१. प्रायश्चित्त विधि..... । पत्र सं० ६ । आ० ८^३/_४×४^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—विद्ये
हुए दोषों का पश्चात्ताप । २० काल—X । ले० काल—X । पूर्ण । वे० सं० १२८१ । अ भण्डार ।

६२२. प्रायश्चित्त विधि—भ० एकसंधि । पत्र सं० ४ । आ० ६×४^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
विद्ये हुए दोषों की आलोचना । २० काल—X । ले० काल—X । पूर्ण । वे० सं० ११०७ । अ भण्डार ।

६२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल—X । वे० सं० २४५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठासार का दशम अध्याय है ।

६२४. प्रति सं० ३ । ले० काल सं० १७६६ । वे० सं० ३३ । अ भण्डार ।

६२५. प्रायश्चित्त शास्त्र—इन्द्रजिह्व । पत्र सं० १४ । आ० १०^३/_४×४^३/_४ इञ्च । भाषा—प्राकृत ।
विषय—विद्ये हुए दोषों का पश्चात्ताप । २० काल—X । ले० काल—X । पूर्ण । वे० सं० १६३ । अ भण्डार ।

६२६. प्रायश्चित्त शास्त्र..... । पत्र सं० ६ । आ० १०×४^३/_४ इञ्च । भाषा—गुजराती (लिपि

देवनागरी) विषय—किये हुए दोषों की आलोचना २० काल—X । ले० काल—X । अपूर्ण । वे० सं० १६६८ । ट मण्डार ।

६२७. प्रायश्चित्त समुच्चय टीका—नंदिगुरु । पत्र सं० ८ । आ० १२X६ । भाषा—संस्कृत । विषय—किये हुए दोषों की आलोचना । २० काल—X । ले० काल—सं० १६३४ चैत्र सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ११८ । ख मण्डार ।

६२८. प्रोषण दोष वर्णन... । पत्र सं० १ । आ० १०X५ इअ । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । २० काल—X । ले० काल—X । वे० सं० १४७ । पूर्ण । छ मण्डार ।

६२९. बाईस अभक्ष्य वर्णन—बाबा दुलीचन्द । पत्र सं० ३२ । आ० १०^१/_२X६^३/_४ इअ । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आवकों के न खाने योग्य पदार्थों का वर्णन । २० काल—सं० १६४१ बैशाख सुदी ५ । ले० काल—X । पूर्ण । वे० सं० ५३२ । क मण्डार ।

६३०. बाईस अभक्ष्य वर्णन ... X । पत्र सं० ६ । आ० १०X७ । भाषा—हिन्दी । विषय—आवकों के न खाने योग्य पदार्थों का वर्णन । २० काल X । ले० काल : पूर्ण । वे० सं० ५३३ । व्य मण्डार ।

विशेष—प्रति संशोधित है ।

६३१. बाईस परीपह वर्णन—भूधरदास । पत्र सं० ६ । आ० ६X४ इअ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—मुनियों द्वारा सहन किये जाने योग्य परीषहों का वर्णन । २० काल १८ वीं शताब्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६६७ । अ मण्डार ।

६३२. बाईस परीपह ... X । पत्र सं० ६ । आ० ६X४ भाषा—हिन्दी । विषय—मुनियों के सहने योग्य परीषहों का वर्णन । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६६७ । छ मण्डार ।

६३३. बालाधिवेध (रामोकार पाठ का अर्थ) ... X । पत्र सं० २ । आ० १०X४^१/_२ । भाषा—प्राकृत, हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २८६ । छ मण्डार ।

विशेष—मुनि माणिक्यचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

६३४. बुद्धि विलास—बखतराम साह । पत्र सं० ७५ । आ० ७X६ । भाषा—हिन्दी । विषय—आधार शास्त्र । २० काल सं० १८२७ मंगसिर सुदी २ । ले० काल सं० १८३२ । पूर्ण । वे० सं० १८८१ । ट मण्डार ।

६३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १८६३ । वे० सं० १६५५ । ट मण्डार ।

विशेष—बखतराम साह के पुत्र जीवशराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

६३६. ब्रह्मचर्यव्रत वर्णन ... X । पत्र सं० ४ । आ० ८X५ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल X । ले० काल X । वे० पूर्ण । वे० सं० २३१ । झ मण्डार ।

६३७. बोधसार ... X । पत्र सं० ३७ । आ० १२X५^१/_२ भाषा—हिन्दी विषय—धर्म । २० काल X । ले० काल सं० १६२८ । कात्ती सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १२५ । ख मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ बोसर्पथ की आम्नाय की मान्यतानुसार है ।

६३८. भगवद्गीता (कृष्णार्जुन संवाद).....X । पत्र सं० २२ से ४६ । आ० ६३X५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—वैदिक साहित्य । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण वे० सं० १५६७ । ट भण्डार ।

६३९. भगवती आराधना—शिवाचार्य । पत्र सं० ३२१ । आ० ११^१/_२X५^१/_२ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—मुनि धर्म वर्णन । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण वे सं० ५४९ । क भण्डार ।

६४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११२ । ले० काल X । वे० सं० ५५० । क भण्डार ।

विशेष—पत्र ६६ तक संस्कृत में याथाश्रयों के ऊपर पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं ।

६४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०३ । ले० काल X । वे० सं० २५६ च भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ एवं अन्तिम पत्र बाद में लिखकर लगाये गये हैं ।

६४२. प्रति सं० ४ । २६५ । ले० काल X । वे० सं० २६० च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

६४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११ ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ६३ । ज भण्डार ।

विशेष—कहीं २ संस्कृत में टीका भी दी है ।

६४४. भगवती आराधना टीका—अपराजितसूरि श्रीनंदिगण । पत्र सं० ४३४ । आ० १२X३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—मुनि धर्म वर्णन । २० काल X । ले० काल सं० १७६३ माघ बुदी ७ पूर्ण । वे० सं० २७६ । ज भण्डार ।

६४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१५ । ले० काल सं० १५६७ वैशाख सुदी ६ । वे० सं० ३३१ । ज भण्डार ।

६४६. भगवती आराधना भाषा—पं० सदासुखकासलीवाल । पत्र सं० ६०७ । आ० १२^१/_२X८^१/_२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १६०८ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५४८ । क भण्डार ।

६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३० । ले० काल सं० १६५५ माघ बुदी १३ । वे० सं० ५६० । क भण्डार ।

६४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७२२ । ले० काल सं० १६११ जेष्ठ सुदी ६ । वे सं० ६६५ । ज भण्डार ।

६४९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५७ से ५१६ । ले० काल सं० १६२८ वैशाख सुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० २५३ । ज भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ हीरालालजी खगडा का है । मिति १६४२ माघ सुदी १० को आचार्य जी के कर्मदहन व्रत के उद्यापन में चढ़ाई ।

६५०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३०५ । ज भण्डार ।

६५१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३२५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे सं० १६६७ । ट भण्डार ।

६५१. भावदीपक—जोधराज गोदीका । पत्र सं० १ से २७७ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५६ । च भण्डार ।

६५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल—सं० १८५७ पौष सुदी १५ । अपूर्ण । वे० सं० ६५६ । च भण्डार ।

६५३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७३ । २० काल × । ले० काल—सं० १६०४ कार्तिक सुदी १० । वे० सं० २५४ । ज भण्डार ।

६५४. भावनासारसंग्रह—धामुण्डराय । पत्र सं० ४१ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल—× । ले० काल—सं० १५१६ श्रावण बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १८४ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १५१६ वर्षे श्रावण बुदी अष्टमी सोमवासरे लिखित बाई धानी कर्मभयनिमित्त ।

६५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १५३१ फागुण बुदी ३३ । वे० सं० २११६ । ट भण्डार ।

६५६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७४ । ले० काल—× । अपूर्ण । वे० सं० २१३६ । ट भण्डार ।

विशेष—७४ से आगे के पत्र नहीं हैं ।

६५७. भावसंग्रह—देवसेन । पत्र सं० ४६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल—× । ले० काल—सं० १६०७ फागुण बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २३ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ कर्ता श्री देवसेन श्री विमलसेन के शिष्य थे । प्रशस्ति निम्नप्रकार है:—

संवत् १६०७ वर्षे फागुण वदि ७ दिने बुधवासरे विशाखानक्षत्रे श्री प्रादिनाथचैत्यालये तक्षकगढ महादुर्गे महाराज श्री रामचंद्रराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंडकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा..... ।

६५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४५ । ले० काल—सं० १६०४ भाद्रवा सुदी १५ । वे० सं० ३२६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है:—

संवत् १६०४ वर्षे भाद्रपद सुदी पूर्णिमातिथी भौमदिने शतभिषा नाम नक्षत्रे धृतनाम्नयोगे मुरित्राय मनेमसाहिराज्यप्रवर्तमाने सिर्गदराबादशुभस्थाने श्रीमत्काष्ठासंघे माधुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्रीमलयकीर्ति देवाः तत्पट्टे भट्टारक श्रीगुणभद्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्रीभक्तकीर्ति तस्य शिक्षणी वा० मोमा योग्य भावसंग्रहाम्य आत्त्रं प्रदर्त ।

६५९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल—× । वे० सं० ३२७ । अ भण्डार ।

६६०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४६ । ले० काल—सं० १८६४ पौष सुदी १ । वे० सं० ५५८ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६६१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ से ४५ । ले० काल-सं० १५६४ फागुण बुदी ५ । अपूर्ण ।
वे० सं० २१६३ । ट भण्डार ।

६६२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४० । ले० काल-सं० १५७१ अषाढ बुदी ११ । वे० सं० २१६६ ।
ट भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है—

संवत् १५७१ वर्षे अषाढ बदि ११ आदित्यवारि पेरोंजा साहे । श्री मूलसंधे पंडितजिणदासेन लिखापितं ।

६६३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६ । ले० काल- $\times$ । अपूर्ण । वे० सं० २१७६ । ट भण्डार ।

विशेष—६ से आगे पत्र नहीं है ।

६६४. भावसंग्रह—श्रुतमुनि । पत्र सं० ५६ । आ० १२ $\times$ ५३ इअ । भाषा—प्राकृत । विषय—
धर्म । २० काल- $\times$ । ले० काल-सं० १७२२ । अपूर्ण । वे० सं० ३१६ । अ भण्डार ।

विशेष—बीसवां पत्र नहीं है ।

६६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल- $\times$ । अपूर्ण । वे० सं० १२३ । ख भण्डार ।

६६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल-सं० १७८३ । वे० सं० ५६६ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

६६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल- $\times$ । वे० सं० १८४१ । ट भण्डार ।

विशेष—कहीं २ संस्कृत में अर्थ भी दिये हैं ।

६६८. भावसंग्रह—पं० बामदेव । पत्र सं० २७ । आ० १२ $\times$ ५३ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—
धर्म । २० काल- $\times$ । ले० काल-सं० १८२८ । पूर्ण । वे० सं० ३१७ । अ भण्डार ।

६६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल- $\times$ । अपूर्ण । वे० सं० १३४ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० बामदेव की पूर्ण प्रशस्ति दी हुई है । २ प्रतियों का मिश्रण है । अन्त के पृष्ठ पानी से भीगे
हुये हैं । प्रति प्राचीन है ।

६७०. भावसंग्रह..... । पत्र सं० १४ । आ० ११ $\times$ ५३ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।
२० काल- $\times$ । ले० काल- $\times$ । वे० सं० १३५ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । १४ से आगे पत्र नहीं है ।

६७१. मनोरथमाला..... । पत्र सं० १ । आ० ८ $\times$ ४ इअ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल- $\times$ । ले० काल- $\times$ । पूर्ण । वे० सं० ५७० । अ भण्डार ।

६७२. मरकतविलास—पन्नालाल । पत्र सं० ६१ । आ० १२ $\times$ ६३ इअ । भाषा—हिन्दी । विषय—
आवक धर्म वर्णन । २० काल- $\times$ । ले० काल- $\times$ । अपूर्ण । वे० सं० ६६२ । च भण्डार ।

६७३. मिथ्यावस्त्रहन्त—बलतराम । पत्र सं० ५८ । आ० १४ $\times$ ५३ इअ । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।
विषय—धर्म । २० काल-सं० १८२१ पीष सुदी ५ । ले० काल-सं० १८६२ । पूर्ण । वे० सं० ५७७ । क भण्डार ।

६७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७० । ले० काल- $\times$ । वे० सं० ६७ । ग भण्डार ।

६७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६१ । ले० काल-सं० १०२४ । वे० सं० ६६४ । च भण्डार ।

६७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३७ से १०५ । ले० काल- $\times$ । अपूर्ण । वे० सं० २०३६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३७ पत्र नहीं हैं । पत्र फटे हुये हैं ।

६७७. मित्यात्वखंडन..... । पत्र सं० १७ । आ० ११ $\times$ ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।

१० काल- $\times$ । ले० काल- $\times$ । अपूर्ण । वे० सं० १४६ । ख भण्डार ।

विशेष—१७ से आगे पत्र नहीं है ।

६७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल- $\times$ । अपूर्ण । वे० सं० ५६४ । छ भण्डार ।

६७९. मूलाचार टीका—आचार्य वसुनन्दि । पत्र सं० ३६८ । आ० १२ $\times$ ५ इञ्च । भाषा—

प्राकृत संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल- $\times$ । ले० काल-सं० १८२६ संगिर बुदी ११ । पूर्ण ।

वे० सं० २७५ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७३ । ले० काल- $\times$ । वे० सं० ५८० । क भण्डार ।

६८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५१ । ले० काल- $\times$ । अपूर्ण । वे० सं० ५६८ । छ भण्डार ।

विशेष—५१ से आगे पत्र नहीं है ।

६८२. मूलाचारप्रदीप—सकलकीर्ति । पत्र सं० १२६ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ $\times$ ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—आचारशास्त्र । २० काल- $\times$ । ले० काल-सं० १८२८ । पूर्ण । वे० सं० १६२ ।

विशेष—प्रतिलिपि जयपुर में हुई थी ।

६८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल- $\times$ । वे० सं० ८४६ । अ भण्डार ।

६८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८१ । ले० काल- $\times$ । वे० सं० २७७ । च भण्डार ।

६८५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५५ । ले० काल- $\times$ । वे० सं० ६८ । छ भण्डार ।

६८६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६३ । ले० काल-सं० १८३० पौष सुदी २ । वे० सं० ६३ ।

अ भण्डार ।

विशेष—पं० चोखचंद के शिष्य पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

६८७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८० । ले० काल-सं० १८५६ कार्तिक बुदी ३ । वे० सं० १०१ ।

अ भण्डार ।

विशेष—महात्मा सर्वमुख ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६८८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १३७ । ले० काल-सं० १८२६ चैत बुदी १२ । वे० सं० ४५५ ।

अ भण्डार ।

६८९. मूलाचारभाषा—ऋषभदास । पत्र सं० ३० से ६३ । आ० १० $\times$ ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—आचार शास्त्र । २० काल-सं० १८८८ । ले० काल-सं० १८६१ । पूर्ण । वे० सं० ६६१ । च भण्डार ।

६६०. मूलआचार भाषा.....। पत्र सं० ३० से ६३। आ० १०३×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—
आचार शास्त्र। २० काल—X। ले० काल—X। अपूर्ण। वे० सं० ५६७।

६६१. प्रति सं० २। पत्र सं० १ से १००, ३४६ से ३६०। आ० १०३×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी।
विषय—आचार शास्त्र। २० काल—X। ले० काल—X। अपूर्ण। वे० सं० १६६। क भण्डार।

६६२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १ से ८१, १०१ से ६००। ले० काल—X। अपूर्ण। वे० सं० ६००।

६६३. मौलपैड़ी—यनारसीदास। पत्र सं० १। आ० ११३×६३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—
धर्म। २० काल—X। ले० काल—X। पूर्ण। वे० सं० ७६५। अ भण्डार।

६६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल—X। वे० सं० ६०२। क भण्डार।

६६५. मोक्षमार्गप्रकाशक—पं० टोडरमल। पत्र सं० ३२१। आ० १२३×८ इञ्च। भाषा—हूंदारी
(राजस्थानी) गद्य। विषय—धर्म। २० काल—X। ले० काल—सं० १६५४ आवरण सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ५८३।
क भण्डार।

विशेष—हूंदारी शब्दों के स्थान पर शुद्ध हिन्दी के शब्द भी लिखे हुये हैं।

६६६. प्रति सं० २। पत्र सं० २८२। ले० काल—सं० १६५४। वे० सं० ५८४। क भण्डार।

६६७. प्रति सं० ३। पत्र सं० २१२। ले० काल—सं० १६४०। वे० सं० ५६५। क भण्डार।

६६८. प्रति सं० ४। पत्र सं० २१२। ले० काल—सं० १८८८ बैशाख सुदी ६। वे० सं० ६८।

ग भण्डार।

विशेष—छाबूलाल साह ने प्रतिलिपि कराई थी।

६६९. प्रति सं० ५। पत्र सं० २२८। ले० काल—X। वे० सं० ६०३। क भण्डार।

१०००. प्रति सं० ६। पत्र सं० २७६। ले० काल—X। वे० सं० ६५८। च भण्डार।

१००१. प्रति सं० ७। पत्र सं० १०१ से २१६। ले० काल—X। अपूर्ण। वे० सं० ६५९।

च भण्डार।

१००२. प्रति सं० ८। पत्र सं० १२३ से २२५। ले० काल—X। अपूर्ण। वे० सं० ६६०। च भण्डार।

१००३. प्रति सं० ९। पत्र सं० ३५१। ले० काल—X। वे० सं० ११६। झ भण्डार।

१००४. यतिदिनचर्या—देवसूरि। पत्र सं० २१। आ० १०३×४३ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—

आचार शास्त्र। २० काल—X। ले० काल—सं० १६६८ चैत सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १६२६। ट भण्डार।

विशेष—अन्तिम पृष्ठिका निम्न प्रकार है—

इति श्री मुनिहितजिरोमणिश्रीदेवसूरिविरचिता यतिदिनचर्या संपूर्णा।

प्रशस्तिः—संवत् १६६८ वर्ष चैत्रमासे शुक्लपक्षे तत्रमीभीमवासरे श्रीमत्तपास्वच्छाधिराज महाराज
श्री श्री ५ विजयसेन सूरिस्वराय लिखितं ज्योतिषी उधन श्री गुजाउलपुरे।

१००५. यत्याचार—आ० वसुनंदि। पत्र सं० ६। आ० १२३×५३ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—

भुनि धर्म वर्गान् । २० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० १२० । अ भण्डार ।

१००६. रत्नकरणद्वारावकाचार—आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं० ७ । आ० १०३×५३ इञ्च ।

भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-× । ले० काल-× । वे० सं० २००६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम परिच्छेद तक पूर्ण है । अर्थ का नाम उपासकाध्याय तथा उपासकाचार भी है ।

१००७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल-× । वे० सं० २६४ । अ भण्डार ।

विशेष—कहीं कहीं संस्कृत में टिप्पणियां दी हुई हैं । १६३ श्लोक हैं ।

१००८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल-× । वे० सं० ६१२ । क भण्डार ।

१००९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल-सं० १६३८ माह सुदी १० । वे० सं०

१५६ । ख भण्डार ।

विशेष—कहीं २ संस्कृत में टिप्पण दिया है ।

१०१०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७७ । ले० काल-× । वे० सं० ६३० । छ भण्डार ।

१०११. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६३१ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

१०१२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४८ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६३२ । छ भण्डार ।

१०१३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३८-५६ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६३२ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

१०१४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२ । ले० काल-× । वे० सं० ६३४ । छ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मचारी सूरजमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१०१५. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४० । ले० काल-× । वे० सं० ६३५ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में पन्नालाल संधी कुत टीका भी है । टीका सं० १६३१ में की गयी थी ।

१०१६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २६ । ले० काल-× । वे० सं० ६३७ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

१०१७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ४२ । ले० काल-सं० १६५० । वे० सं० ६३८ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

१०१८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १७ । ले० काल-× । वे० सं० ६३९ । छ भण्डार ।

१०१९. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ३८ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० २६१ । च भण्डार ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नहीं है । संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है ।

१०२०. प्रति सं० १५ । पत्र सं० २० । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० २६२ । च भण्डार ।

१०२१. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ११ । ले० काल-× । वे० सं० २६३ । च भण्डार ।

१०२२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ६ । ले० काल-× । वे० सं० २६४ । च भण्डार ।

१०२३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० १३ । ले० काल- $\times$ । वै० सं० २६५ । च भण्डार ।
 १०२४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ११ । ले० काल- $\times$ । वै० सं० ७४० । च भण्डार ।
 १०२५. प्रति सं० २० । पत्र सं० १३ । ले० काल- $\times$ । वै० सं० ७४२ । च भण्डार ।
 १०२६. प्रति सं० २१ । पत्र सं० १३ । ले० काल- $\times$ । वै० सं० ७४३ । च भण्डार ।
 १०२७. प्रति सं० २२ । पत्र सं० १० । ले० काल- $\times$ । वै० सं० ११० । छ भण्डार ।
 १०२८. प्रति सं० २३ । पत्र सं० १० । ले० काल- $\times$ । वै० सं० १४४ । ज भण्डार ।
 १०२९. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १६ । ले० काल- $\times$ । अपूर्ण । वै० सं० १२ । झ भण्डार ।
 १०३०. प्रति सं० २५ । पत्र सं० १२ । ले० काल-सं० १७२१ ज्येष्ठ सुदी ३ । वै० सं० १५८ ।

ञ भण्डार ।

१०३१. रत्नकरण्डश्रावकाचार टीका—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ४३ । आ० १०६ $\times$ ५३ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल- $\times$ । ले० काल-सं० १८६० श्रावण वृदी ७ । पूर्ण । वै० सं० ३१६ ।
 झ भण्डार ।

१०३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल- $\times$ । वै० सं० १०६५ । झ भण्डार ।
 १०३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१-५३ । ले० काल- $\times$ । अपूर्ण । वै० सं० ६८० । झ भण्डार ।
 १०३४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६-६२ । ले० काल- $\times$ । अपूर्ण । वै० सं० ३२६ । झ भण्डार ।
 विशेष—इसका नाम उपासकाव्ययन टीका भी है ।

१०३५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १६ । ले० काल- $\times$ । वै० सं० ६३६ । छ भण्डार ।
 १०३६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८ । ले० काल-सं० १७७६ फागुण सुदी ५ । वै० सं० १७४ ।

ज भण्डार ।

विशेष—मद्रासक सुरेन्द्रकीर्ति की आम्नाय में खंडेलवाल ज्ञातीय भीसा गोत्रोत्पल साहू छजमलजी के बंशज राहू चन्द्रभरण की भार्या लहीजी ने ग्रंथ की प्रतिलिपि कराकर आचार्य चन्द्रकीर्ति के शिष्य हर्षकीर्ति के लिए कर्मव्यय निमित्त भेंट की ।

१०३७. रत्नकरण्डश्रावकाचार—पं० सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० १०४२ । आ० १२६ $\times$ ८६ इअ । भाषा—हिन्दी (मग्न) । विषय—आचार शास्त्र । २० काल सं० १६२० चैत्र वृदी १४ । ले० काल सं० १६४१ । पूर्ण । वै० सं० ६१६ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ २ खण्डों में है । १ से ४५५ तथा ४५६ से १०४२ तक है । प्रति सुन्दर है ।

१०३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६६ । ले० काल- $\times$ । अपूर्ण । वै० सं० ६२० । क भण्डार ।
 १०३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६१ से १७६ । ले० काल- $\times$ । अपूर्ण । वै० सं० ६४२ । क भण्डार ।
 १०४०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१६ । ले० काल—आसोज वृदि ८ सं० १६२१ । वै० सं० ६६६ ।

ख भण्डार ।

१०४१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३६ । ले० काल- $\times$ । अपूर्ण । वै० सं० ६७० । च भण्डार ।
 विशेष—नेमीचंद कालख दाते ने लिखा और सदासुखजी डेडाकाने लिखाया—यह ग्रन्थ में लिखा हुआ है ।

१०४२. प्रति सं० ६। पत्र सं० ३४६। ले० काल—X। वे० सं० १८२। छ मण्डार।

विशेष—“इस प्रकार मूलग्रंथ के प्रसाद तै सदानुखदास डेडावा का अपने हस्त तै निम्न ग्रंथ समाप्त किया।”
अन्तिम पृष्ठ पर ऐसा लिखा है।

१०४३. प्रति सं० ७। पत्र सं० २२१। ले० काल—सं० १९६३ कार्तिक बुदी ५। वे० सं० १८८।
छ मण्डार।

१०४४. प्रति सं० ८। पत्र सं० ५३६। ले० काल—सं० १९५० वैशाख सुदी ६। वे० सं०
छ मण्डार।

विशेष—इस ग्रंथ की प्रतिलिपि स्वर्ध सदानुखजी के हाथ में लिखे हुए सं० १९१९ के ग्रंथ से सामोद
में प्रतिलिपि की गई है। महासुख सेठी ने इसकी प्रतिलिपि की थी।

१०४५. रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा—नथमल। पत्र सं० २९। आ० ११X५ इञ्च। भाषा—
हिन्दी पद्य। विषय—आचार शास्त्र। २० काल—सं० १९२० माघ सुदी ९। ले० काल—X। वे० सं० ६२२। पूर्ण।
क मण्डार।

१०४६. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल—X। वे० सं० ६२३। क मण्डार।

१०४७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १५। ले० काल—X। वे० सं० ६२१। क मण्डार।

१०४८. रत्नकरण्डश्रावकाचार—संघी पन्नालाल। पत्र सं० ४४। आ० १०^३/_४X७ इञ्च। भाषा—
हिन्दी गद्य। विषय—आचार शास्त्र। २० काल—सं० १९३१ पौष बुदी ७। ले० काल—सं० १९५३ मंगसिर सुदी १०।
पूर्ण। वे० सं० ६१४। क मण्डार।

१०४९. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४०। ले० काल—X। वे० सं० ६१४। क मण्डार।

१०५०. प्रति सं० ३। पत्र सं० २९। ले० काल—X। वे० सं० १८६। छ मण्डार।

१०५१. प्रति सं० ४। पत्र सं० २७। ले० काल—X। वे० सं० १८६। छ मण्डार।

१०५२. रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा—.....। पत्र सं० १०१। आ० १२X५ इञ्च। भाषा—हिन्दी
गद्य। विषय—आचार शास्त्र। २० काल—सं० १९५७। ले० काल—X। पूर्ण। वे० सं० ६१७। क मण्डार।

१०५३. प्रति सं० २। पत्र सं० ७०। ले० काल—सं० १९५३। वे० सं० ६१६। क मण्डार।

१०५४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५। ले० काल—X। वे० सं० ६१३। क मण्डार।

१०५५. प्रति सं० ४। पत्र सं० २८ मे २५९। ले० काल—X। अपूर्ण। वे० सं० ६४०। छ मण्डार।

१०५६. रत्नमाला—आचार्य शिवकोटि। पत्र सं० ४। आ० ११^१/_४X४^३/_४ इञ्च। भाषा—संस्कृत।
विषय—आचार शास्त्र। २० काल—X। ले० काल—X। पूर्ण। वे० सं० ७४। छ मण्डार।

विशेष—प्रारम्भ—

सर्वज्ञं सर्ववर्गीशं वीरं मारमदायहं।

प्रणमामि महामोहशान्तये मुक्तिप्राप्तये ॥१॥

सारं परमवसारेषु वंद्यं यद्धोदितेष्वपि ।

अनेकांतमयं वंदे तदर्हत् वचनं सदा ॥२॥

अन्तिम—यो नित्यं पठति श्रीमान् रत्नमालामिसंपरा ।

सशुद्धचरणो नृत्तं शिवकोटित्वमाप्नुयान् ॥

इति श्री समन्तभद्र स्वामी शिष्य शिवकोट्याचार्य विरचिता रत्नमाला समाप्ता ।

१०५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल—X । अपूर्ण । वे० सं० २११५ । ट भण्डार ।

१०५८. रयणसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं० १० । आ० १०३×५३ इञ्च । भाषा—प्राकृत ।

विषय—आचार शास्त्र । २० काल—X । ले० काल—सं १८८३ । पूर्ण । वे० सं० ६४६ । अ भण्डार ।

१०५९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल—X । वे० सं० १८१० । ट भण्डार ।

१०६०. रात्रि भोजन त्याग वर्णन..... । पत्र सं० १६ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—आचार शास्त्र । २० काल—X । ले० काल—X । पूर्ण । वे० सं० ४८० । ज भण्डार ।

१०६१. राधा जन्मोत्सव..... । पत्र सं० १ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

२० काल—X । ले० काल—X । पूर्ण । वे० सं० ११५१ । अ भण्डार ।

१०६२. रिक्तविभाग प्रकरण..... । पत्र सं० २६ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

आचार शास्त्र । २० काल—X । ले० काल—X । पूर्ण । वे० सं० ५७ । ज भण्डार ।

१०६३. लघुसामायिक पाठ..... । पत्र सं० २ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

२० काल—X । ले० काल—सं० १८१४ । पूर्ण । वे० सं० २०२१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्तिः—

१८१४ अगहन बुदी १५ सनै कुन्दी सग्र नेमनाथ चैत्यालै लिखितं श्री देवेन्द्रकृति आचारज मीरोज के पट्ट स्वयं हस्ते ।

१०६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल—X । वे० सं० १२४३ । अ भण्डार ।

१०६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ । ले० काल—X । वे० सं० १२२० । अ भण्डार ।

१०६६. लघुसामायिक..... । पत्र सं० ३ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । विषय—

धर्म । २० काल—X । ले० काल—X । पूर्ण । वे० सं० ६४० । क भण्डार ।

१०६७. लाटीसंहिता—राजमहल । पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार

शास्त्र । २० काल—सं० १६४१ । ले० काल—X । पूर्ण । वे० सं० ८८ ।

१०६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७३ । ले० काल—सं० १८६७ वैशाख बुदी..... रविवार

वे० सं० ६६५ । क भण्डार ।

१०६९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल—सं० १८६७ मंगसिर बुदी ३ । वे० सं० ६६६ ।

क भण्डार ।

विशेष—महर्षि अंभूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१०७०. वसुनाभि चक्रवर्ति की भावना—भूधरदास । पत्र सं० २ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म । २० काल—X । ले० काल—X पूर्ण । वे० सं० ६६७ । अ भण्डार ।

विशेष—पार्व्वपुराण में से है ।

१०७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल—सं० १८८८ पौष सुदी २ । वे० सं० ६७२ । अ भण्डार ।

१०७२. वनस्पतिसत्तरी—मुनिचन्द्र सूरि । पत्र सं० ५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल—X । ले० काल—X । पूर्ण । वे० सं० ८४१ । अ भण्डार ।

१०७३. वसुनंदिश्रावकाचार—आ० वसुनंदि । पत्र सं० ५६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—श्रावक धर्म । २० काल—X । ले० काल—सं० १८६२ पौष सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २०६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ का नाम उरासकाध्ययन भी है । जयपुर में श्री विरागदास बाकलोवाल ने प्रतिलिपि करायी । संस्कृत में भाषान्तर दिया हुआ है ।

१०७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से २३ । ले० काल—सं० १६११ पौष सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० ८४८ । अ भण्डार ।

विशेष—सारंगपुर नगर में पाण्डे दासू ने प्रतिलिपि की थी ।

१०७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६३ । ले० काल—सं० १८७७ भाद्रवा बुदी ११ । वे० सं० ६५२ । क भण्डार ।

विशेष—महर्षि अंभूनाथ ने सवाई जयपुरमें प्रतिलिपि की थी । गाथाओं के नीचे संस्कृत टीका भी दी है ।

१०७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४४ । ले० काल—X । वे० सं० ८७ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३३ पत्र प्राचीन प्रति के हैं तथा शेष फिर लिखे गये हैं ।

१०७७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५१ । ले० काल—X । वे० सं० ४५ । ख भण्डार ।

१०७८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २२ । ले० काल—सं० १५६८ भाद्रवा बुदी १२ । वे० सं० २६६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—संवत् १५६८ वर्षे भाद्रवा बुदी १२ शुक्र दिने पुष्यनक्षत्रेऽमृतसिद्धिनामउपयोगे श्रीपथस्थाने मूलसंघे सरस्वतीगण्ड्ये जलात्कारण्ये श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारके श्री प्रभाकरदेवा तस्य शिष्ये मंडलाचार्ये धर्मकीर्त्ति द्वितीय मंडलाचार्ये श्री धर्मचन्द्र एतेषां मध्ये मंडलाचार्ये श्री धर्मकीर्त्ति तन् शिष्ये मुनि वीरनंदिने इदं शास्त्रं लिखापितं । पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि करके सं० १८६७ में पार्व्वनाथ (सोनियों) के मंदिर में चढाया ।

१०७९. वसुनंदिश्रावकाचार भाषा—पद्मलाल । पत्र सं० २१८ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । २० काल—सं० १६३० कार्तिक बुदी ७ । ले० काल—सं० १६३८ माह बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ६५० । क भण्डार ।

१०८०. प्रति सं० २ । ले० काल सं० १६२० । वे० सं० ६५१ । क भण्डार ।

१०८१. वात्तसिंघ... पत्र सं० २५ से ६७ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

१०८२. विद्वज्जनबोधक... पत्र सं० २७ । आ० १२½×८½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७६ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । ४ अध्याय तक है ।

१०८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०४० । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है । पत्र क्रम से नहीं है और कितने ही बीच के पत्र नहीं हैं । दो प्रतियों का मिश्रण है ।

१०८४. विद्वज्जनबोधक भाषा—संघी पन्नालाल । पत्र सं० ८६० । आ० १४×७½ इञ्च । भाषा—
संस्कृत, हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १६२६ भाष सुदी ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७७ ।
छ भण्डार ।

१०८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४३ । ले० काल सं० १६४२ आसोज सुदी ४ । वे० सं० ६७७ ।
च भण्डार ।

विशेष—छाजूलाल साह के पुत्र नन्दलाल ने अपनी माताजी के अतीथावन के उपलक्ष में ग्रन्थ मन्दिर
दीवान अमरचन्दजी के सें चढ़ाया । यह ग्रन्थ के द्वितीयखण्ड के अन्त में लिखा है

१०८६. विद्वज्जनबोधकटीका... पत्र सं० ४४ । आ० ११½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६० । क भण्डार ।

विशेष—प्रथमखण्ड के पाँचवें उल्लास तक है ।

१०८७. विवेकविलास... पत्र सं० १८ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार
शास्त्र । २० काल सं० १७७० फागुण बुदी । ले० काल सं० १८८८ चैत बुदी ३ । वे० सं० ८२ । क भण्डार ।

१०८८. बृहत्प्रतिक्रमण... पत्र सं० १६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४८ । ट भण्डार ।

१०८९. प्रति सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २१५६ । ट भण्डार ।

१०९०. प्रति सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० २१७६ । ट भण्डार ।

१०९१. बृहत्प्रतिक्रमण... पत्र सं० १६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत, प्राकृत । विषय—
धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३ । अ भण्डार ।

१०९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० १५६ । अ भण्डार ।

१०६३. वृद्धप्रतिक्रमण । पत्र सं० ३१ । आ० १०६१×४६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२२ । ट भण्डार ।

१०६४. अर्द्ध के नाम..... । पत्र सं० १९ । आ० ९६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६ । व्य भण्डार ।

१०६५. व्रतनामावली..... । पत्र सं० १२ । आ० ८६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल सं० १६०४ । पूर्ण । वे० सं० २६५ । ख भण्डार ।

१०६६. व्रतसंख्या..... । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १६०४ । पूर्ण । वे० सं० २०५७ । अ भण्डार ।

विशेष—१५१ व्रतों एवं ४१ मंडल विधानों के नाम दिये हुये हैं ।

१०६७. व्रतसार..... । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल सं० १६०४ । पूर्ण । वे० सं० ६८१ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल २२ पद्य हैं ।

१०६८. व्रतोपवासनभावकाचार..... । पत्र सं० ११३ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३ । अ भण्डार ।

१०६९. व्रतोपवासवर्णन..... । पत्र सं० ५७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३८ । अ भण्डार ।

विशेष—५७ से आगे के पद्य नहीं हैं ।

११००. व्रतोपवासवर्णन । पत्र सं० ४ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४७८ । व्य भण्डार ।

११०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४७९ । व्य भण्डार ।

११०२. षट्पञ्चावश्यक (लघुसामायिक)—महाचन्द्र । पत्र सं० ३ । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६४० । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । ख भण्डार ।

११०३. षट्पञ्चावश्यकविधान- पन्नालाल । पत्र सं० १४ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । २० काल सं० १६३२ । ले० काल सं० १६३४ बैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ७४४ । क भण्डार ।

११०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १६३२ । वे० सं० ७४५ । क भण्डार ।

११०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ४७९ । क भण्डार ।

विशेष—विद्वज्जन बोधक के तृतीय व पञ्चम उल्लास का हिन्दी अनुवाद है ।

११०६. षट्कर्मोपदेशरत्नमाला (छक्कम्भोवस्त)—महाकवि अमरकीर्ति । पत्र सं० ३ से ७१ ।
आ० १०३×१३ इञ्च । भाषा—आध्रंश । विषय—आचार शास्त्र । २० काल सं० १२४७ । ले० काल सं० १६२२ चंद्र
मुदी १३ । वे० सं० ३५६ । अ भण्डार ।

विशेष—नागपुर नगरमें खण्डेलवालान्वय पाटनीगीचवाल श्रीमतीहरधमदे ने ग्रन्थकी प्रतिलिपि करवायी थी ।

११०७. षट्कर्मोपदेशरत्नमालाभाषा — पांडे लालचन्द । पत्र संख्या १२६ । आ० १२×६ इञ्च ।
भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । २० काल सं० १८१८ भाव मुदी ५ । ले० काल सं० १८४६ आके १७०५
भादवा मुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४२६ । अ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मचारी देवकरण ने महात्मा भूरा से जयपुर में प्रतिलिपि करवायी ।

११०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२८ । ले० काल सं० १८६६ भाव मुदी ६ । वे० सं० ६७ । अ भण्डार ।

विशेष—पुस्तक पं० मदासुख दिल्लीवालों की है ।

११०९. षट्संहननवर्णन—सकरन्द पद्मावति पुरवाल । पत्र सं० ८ । आ० १० $\frac{3}{4}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च ।
भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १७८६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१५ । क भण्डार ।

१११०. षड्भक्तिवर्णन..... । पत्र सं० २२ से २६ । आ० १२×५ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६६ । अ भण्डार ।

११११. षोडशकारणभावनावर्णनवृत्ति—पं० शिवजिदहण । पत्र सं० ४६ । आ० ११×५ इञ्च ।
भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २००४ । ख भण्डार ।

१११२. षोडशकारणभावना—पं० सदासुख । पत्र सं० ८० । आ० १२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी मय ।
विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ६६८ । अ भण्डार ।

विशेष—रत्नकरण्डश्रीवकाचार भाषा में से है ।

१११३. षोडशकारणभावना जयमाल—नथमल । पत्र सं० २८ । आ० ११ $\frac{1}{2}$ ×७ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—
हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १६२५ सावन मुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१६ । क भण्डार ।

१११४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ७४६ । क भण्डार ।

१११५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ७४६ । क भण्डार ।

१११६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७५० । क भण्डार ।

१११७. षोडशकारणभावना..... । पत्र सं० ६४ । आ० १३ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६६२ कार्तिक मुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ७५३ । क भण्डार ।

विशेष—रामप्रताप व्यास ने प्रतिलिपि की थी ।

१११८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० ७५४ । क भण्डार ।

१११६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ७५५ । क भण्डार ।

११२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ ।

विशेष—३० से आगे पत्र नहीं है ।

११२१. षोडशकारणभावना..... । पत्र सं० १७ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ × ७ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२१ (क) । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संकेत भी दिये हैं ।

११२२. शीलमववाङ्..... । पत्र सं० १ । आ० १० × ४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना—काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२६ । अ भण्डार ।

११२३. श्राद्धपद्धिकर्मणसूत्र..... । पत्र सं० ६ । आ० १० × ४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१ । ध भण्डार ।

विशेष—पं० जसवन्त के पौत्र तथा भानासिंह के पुत्र दीनानाथ के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । गुजराती टक्का टीका सहित है ।

११२४. श्रावकप्रतिक्रमणभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ५० । आ० ११ $\frac{१}{२}$ × ७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १६३० भाव बुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६८ । क भण्डार ।

विशेष—बाबा हुलीचन्दजी की प्रेरणा से भाषा की गयी थी ।

११२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल × । वे० सं० ६६७ । क भण्डार ।

११२६. श्रावकधर्मवर्णन..... । पत्र सं० १० । आ० १० $\frac{१}{२}$ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४६ । च भण्डार ।

११२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४७ । च भण्डार ।

११२८. श्रावकप्रतिक्रमण..... । पत्र सं० २५ । आ० १० $\frac{१}{२}$ × ५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६२३ आसोज बुदी ११ । वे० सं० १११ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टक्का टीका सहित है । हुवमीजीवरु ने अहिपुर में प्रतिलिपि की थी ।

११२९. श्रावकप्रतिक्रमण..... । पत्र सं० १५ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८९ । ख भण्डार ।

११३०. श्रावकप्रायश्चित्त—धीरसेन । पत्र सं० ७ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६३४ । पूर्ण । वे० सं० १६० ।

विशेष—पं० पन्नालाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

११३१. श्रावकाचार—अभित्तिगति । पत्र सं० ६७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६४ । क भण्डार ।

विशेष—कहीं कहीं संस्कृत में टीका भी है । ग्रन्थ का नाम उपसकाचार भी है ।

११३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४४ । च भण्डार ।

११३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८ । छ भण्डार ।

११३४. श्रावकाचार—उमास्वामी । पत्र सं० २३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८६ । अ भण्डार ।

११३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १६२६ भाद्रपद सुदी २ । वे० सं० २६० । अ
भण्डार ।

११३६. श्रावकाचार—गुणभूषणाचार्य । पत्र सं० २१ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६२ वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति :

संवत् १५६२ वर्षे वैशाख सुदी ४ श्री मूलसंवे जलात्कारगरी सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ०
श्री पद्मनन्दि देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तदाम्नाये
खंडेलवालान्वये सा० गोत्रे सं० परव्रत तस्य भार्या रोहतातपुत्र नेता तस्य भार्या नारंगदे । तत्पुत्र मतिदास तस्य भार्या
अमरी दुतीय पुत्र उर्वा तस्य भार्या वोरवी तत्पुत्र नथमल दुतीय खीवा सा० नरसिंह महादास एतेषामध्ये इदंशास्त्रं
लिखायत्तं कर्मक्षयनिमित्तं श्रावकाचार । अजिका पदमसिरिज्योम्य बाई नारिंग घटापितं ।

११३७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १५२६ भाद्रपद सुदी १ । वे० सं० ५०१ । च
भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १५२६ वर्षे भाद्रपद १ पक्षे श्री मूलसंवे भ० श्री जिनचन्द्र त्र० नरसिंह खंडेलवालान्वये
सं० कालम भार्या जैश्री पुत्र हाम्य लिखाबंदतु ।

११३८. श्रावकाचार—पद्मनन्दि । पत्र सं० २ से २६ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१०७ ।

विशेष—३६ से आगे भी पत्र नहीं है ।

११३९. श्रावकाचार—गुण्यपाद । पत्र सं० ६ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार
शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८५४ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १०२ । च भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम उपसकाचार तथा उपसकाध्ययन भी है ।

११४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८८० पीष सुदी १५ । वे० सं० ८३ । छ
भण्डार ।

११४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८८४ आषाढ़ सुदी २ । वे० सं० ४३ । च भण्डार ।

११४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८०४ । भाद्रपद सुदी ६ । वे० सं० १०२ ।

छ भण्डार ।

११४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २१५१ । ट भण्डार ।

११४४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २१५८ । ट भण्डार ।

११४५. श्रावकाचार—सकलकीर्ति । पत्र सं० ६६ । आ० ८१×६१ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८८ । अ भण्डार ।

११४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १८५५ । वे० सं० ६६३ । क भण्डार ।

११४७. श्रावकाचारभाषा—५० भागचन्द्र । पत्र सं० १८६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।

विषय—आचार शास्त्र । २० काल सं० १६२२ आषाढ़ सुदी ८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८ ।

विशेष—अभित्यक्ति श्रावकाचार की भाषा दीका है । अन्तिम पत्र पर महावीराष्टक है ।

११४८. श्रावकाचार..... । पत्र संख्या १ से २१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार

शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१८२ । ट भण्डार ।

विशेष—इससे आगे के पत्र नहीं हैं ।

११४९. श्रावकाचार..... । पत्र सं० ७ । आ० १०१/२×४१/२ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आचारशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०८ । छ भण्डार ।

विशेष—६० गायत्रि हैं ।

११५०. श्रावकाचारभाषा..... । पत्र सं० ५२ से १३१ । आ० ६१/२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

११५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६३ । क भण्डार ।

११५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १११ से १७४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७०६ । छ भण्डार ।

११५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १६६४ भाद्रपद सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ७१० ।

क भण्डार ।

विशेष—गुरुभूषण कृत श्रावकाचार की भाषा दीका है । संवत् १५२६ चैत सुदी ५ रविवार को यह ग्रन्थ जिहानाबाद जैसिहपुरा में लिखा गया था । उस प्रति से यह प्रतिलिपि की गयी थी ।

११५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८२ । च भण्डार ।

११५५. श्रुतज्ञानदर्शन ... । पत्र सं० ८ । आ० ११३×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०१ । क भण्डार ।

११५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ७०२ । क भण्डार ।

११५७. समश्लोकीगीता ... । पत्र सं० २ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७४० । ट भण्डार ।

११५८. समकितढाल—आसकरण । पत्र सं० १ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १८३५ । पूर्ण । वे० सं० २१२६ । अ भण्डार ।

११५९. समुद्धातुभेद ... । पत्र सं० ४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८८ । क भण्डार ।

११६०. सम्मेदशिखर महात्म्य—दीक्षित देवदत्त । पत्र सं० ८१ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । २० काल सं० १६४५ । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वे० सं० २८२ । अ भण्डार ।

११६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४७ । ले० काल × । वे० सं० ७६५ । क भण्डार ।

११६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७५ । च भण्डार ।

११६३. सम्मेदशिखरमहात्म्य—लालचन्द । पत्र सं० ६५ । आ० १६×५ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—धर्म । २० काल सं० १८४२ फागुण सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६० । क भण्डार ।

विशेष—भट्टारक श्री जगतकीर्ति के शिष्य लालचन्द ने रेवाड़ी में यह ग्रन्थ रचना की थी ।

११६४. सम्मेदशिखरमहात्म्य—मनसुखलाल । पत्र सं० १०६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६४१ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १०५६ । अ भण्डार ।

विशेष—रचना संवत् सम्बन्धी दोहा—

बान वेद शशिगये विक्रमार्क तुम जान ।

अश्वनि सित वषमी सुमुख ग्रन्थ समापत ठान ॥

लोहाचार्य विरचित ग्रन्थ की भाषा टीका है ।

११६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १८८४ चैत सुदी २ । वे० सं० ७८ । ग भण्डार ।

११६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८८७ चैत सुदी १५ । वे० सं० ७६६ । क भण्डार ।

विशेष—श्रीजीरामजी भावसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की ।

११६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४२ । ले० काल सं० १६११ वीष सुदी १५ । वे० सं० २२ । क भण्डार ।

११६८. सम्मेदशिखरविलास—केशरीसिंह । पत्र सं० ३ । आ० ११½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल २०वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६७ । क भण्डार ।

११६६. सम्मेलनशिखर विलास—देवाग्रहा । पत्र सं० ४ । आ० ११३×७२ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—धर्म । २० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६१ । ज भण्डार ।

११७०. संसारस्वरूप वर्णन । पत्र सं० ५ । आ० ११×४२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२६ । व्य भण्डार ।

११७१. सागरधर्मासूत—पं० आराधर । पत्र सं० १४६ । आ० १२६×७६ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—आनकों के आचार धर्म का वर्णन । २० काल सं० १२६६ । ले० काल सं० १७६८ भाद्रपद बुदी ५ । पूर्ण ।
वे० सं० २२८ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है । टीका का नाम भव्यकुमुदचन्द्रिका है । महाराजा गवाड़
जयसिंहजी के शासनकाल में आमेर में महात्मा मानजी ने प्रतिलिपि की थी ।

११७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०६ । ले० काल सं० १८=१ फागुण सुदी १ । वे० सं० ७७४ ।
क भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण किशनगढ़ वाले ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की ।

११७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० ७७४ । क भण्डार ।

११७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

११७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५७ । ले० काल × । वे० सं० ११८ । व्य भण्डार ।

विशेष—४ से ४० तक के पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं बाकी पत्र दुबारा लिखाकर ग्रन्थ पूरा किया
गया है ।

११७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १५६ । ले० काल सं० १८६१ भाद्रपद बुदी ५ । वे० सं० ७८ । व्य
भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है । सांगानेर में नोनदराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

११७७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६१ । ले० काल सं० १६२८ फागुण सुदी १० । वे० सं० १२६ । ज
भण्डार ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है । रचयिता एवं लेखक दोनों की प्रशस्ति है ।

११७८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १४० । ले० काल × । वे० सं० १ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं शुद्ध है ।

११७९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १५६५ फागुण सुदी २ । वे० सं० १८ । व्य
भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—खण्डलवालान्कये यजमेरागोत्रे पांडे डीडा लेन इदं धर्मासूतनामोपाध्यायनं आचार्य
नेमिचन्द्राय दत्तं । भ० प्रभाचन्द्र देवस्तन् शिष्य सं० धर्मचन्द्राम्नाथे ।

११८०. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८ क । अ भण्डार ।

११८१. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४१ । ले० काल × । वे० सं० ४४६ । अ भण्डार ।

विशेष—स्वोपज्ञ टीका सहित है ।

११८२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ४५० । अ भण्डार ।

विशेष—मूलभाषा प्रति प्राचीन है ।

११८३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १६६ । ले० काल सं० १५६४ फागुण सुदी १२ । वे० सं० ५०० ।

अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति— संवत् १९६४ वर्षे काल्युग सुदी १२ रविवार र पुनर्वसुनक्षत्रे श्रीमूलसंघे मन्दिरसंघे वलात्कारणो सरस्वतीगण्डे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनन्दि तत्पट्टे श्री शुभचन्द्रदेवातत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवातत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवतत्पट्टे श्री विष्णुमण्डलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्री विष्णुशिष्याचार्य श्री नेमिचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्री धर्ममृतनामाशावरभावकाचारटीका भव्यकुमुदचन्द्रिकात्मनी लिखायितात्मपठनार्थं ज्ञानावरणादिकर्मकार्यार्थं च ।

११८४. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५०९ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पणा सहित है ।

११८५. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६५ । अ भण्डार ।

११८६. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २ से ७२ । ले० काल सं० १५६४ भाद्रमा सुदी १ । अपूर्ण । वे०

संख्या २११० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । लेखक प्रशस्ति पूर्ण है ।

११८७. सातव्यसनस्थाध्याय..... पत्र सं० १ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।

१० काल × । ले० काल सं० १७८० । पूर्ण । वे० सं० १८७३ ।

विशेष—रूपमञ्जरी भी की हुई है जिसके आठ पत्र हैं ।

११८८. साम्यविनयार्थ..... पत्र सं० ६ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आचार

शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७४ ।

विशेष—श्रीमत्सयोगो श्री विजयवानसूरि विजयराज्ये ऋषि रूपा लिखित ।

११८९. साम्यविकपाठ—बहुमुनि । पत्र सं० १६ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—

धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१०९ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्त पुस्तिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीबहुमुनिविरचितं साम्यविकपाठं संपूर्णम् ।

११९०. साम्यविकपाठ..... पत्र सं० २५ । आ० ८३×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ । अ भण्डार ।

११६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६३ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी की हुई है ।

११६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ७७६ । क भण्डार ।

११६३. सामायिकपाठ । पत्र सं० ५० । आ० ११३×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

१० काल × । ले० काल सं० १६५६ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ७७६ । अ भण्डार ।

११६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १८६१ । वे० सं० ७७७ । अ भण्डार ।

विशेष—उदयचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

११६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०१७ । अ भण्डार ।

११६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० १०११ । अ भण्डार ।

११६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ७७८ । क भण्डार ।

११६८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८२० कार्तिक बुदी २ । वे० सं० ६५ । अ

भण्डार ।

विशेष—अण्णार्थ विजयकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

११६९. सामायिक पाठ । पत्र सं० २५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—धर्म । १० काल × । ले० काल सं० १७३३ । पूर्ण । वे० सं० ८१४ । क भण्डार ।

१२००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ सुदी ११ । वे० सं० ८१५ । क भण्डार ।

१२०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६० । अ भण्डार ।

विशेष—पत्रों को चूहों ने खालिया है ।

१२०२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६१ । अ भण्डार ।

१२०३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २ से १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८१३ । क भण्डार ।

१२०४. सामायिकपाठ (लघु) । पत्र सं० १ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८८ । अ भण्डार ।

१२०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० ३८६ । अ भण्डार ।

१२०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ७१३ क । अ भण्डार ।

१२०७. सामायिकपाठभाषा—सुध महाचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० ११×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०८ । अ भण्डार ।

विशेष—जोहरीलाल कृत भाषावचना पाठ भी है ।

१२०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १६५४ सावन बुदी ३ । वे० सं० १६४१ । क भण्डार ।

१२०६. सामायिकपाठभाषा—जयचन्द छावड़ा । पत्र सं० ८२ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ । पूर्ण । वे० सं० ७८० । अ मण्डार ।

१२१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६५६ । वे० सं० ७८१ । अ मण्डार ।

१२११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४९ । ले० काल × । वे० सं० ७८२ । अ मण्डार ।

१२१२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४९ । ले० काल × । वे० सं० ७८३ । अ मण्डार ।

१२१३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६७१ । वे० सं० ८१७ । अ मण्डार ।

विशेष—श्री केशरलाल गोदा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१२१४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८७४ फागुण सुदी ६ । वे० सं० १८३ । अ मण्डार ।

१२१५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १८११ आश्विन सुदी ८ । वे० सं० १८३ । अ मण्डार ।

१२१६. सामायिकपाठभाषा—भ० श्री तिलोकचन्द । पत्र सं० ६४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १८६२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१० । अ मण्डार ।

१२१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १८६१ भाद्रपद सुदी १३ । वे० सं० ७१३ । अ मण्डार ।

१२१८. सामायिकपाठ भाषा—..... । पत्र सं० ४५ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १२८ । अ मण्डार ।

विशेष—जयपुर में महाराजा जयसिंहजी के शासनकाल में जती नैमसागर नानन्द बाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१२१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १७४० वैशाख सुदी ७ । वे० सं० ७०६ । अ मण्डार ।

विशेष—महात्मा सावलदास बगद बाल ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत अथवा प्राकृत शब्दों का अर्थ दिया हुआ है ।

१२२०. सामायिकपाठ भाषा—..... । पत्र सं० २ से ३ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८१२ । अ मण्डार ।

१२२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ८१६ । अ मण्डार ।

१२२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४८६ । अ मण्डार ।

१२२३. सामायिकपाठभाषा—..... । पत्र सं० ६७ । आ० ६×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (बंदारी) । विषय—धर्म । रचनाकाल × । ले० काल सं० १७६३ मंगसिर सुदी ५ । वे० सं० ७११ । अ मण्डार ।

१२२४. सारसमुच्चय—कुलभट्ट । पत्र सं० १५ । आ० ११०४३ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।
२० काल ५ । ले० काल सं० १६०७ पौष सुदी ४ । वे० सं० ४५६ । अ भण्डार ।

विशेष—मंडलाचार्य धर्मचन्द के शिष्य ब्रह्मभाऊ बोहरा ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी ।

१२२५. सावयधम्म दोहा—मुनि रामसिंह । पत्र सं० ८ । आ० १०३५६ इअ । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—आचार शास्त्र । २० काल ५ । ले० काल ५ । वे० सं० १४९ । पूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति अति प्राचीन है ।

१२२६. सिद्धों का स्वरूप—..... । पत्र सं० ३८ । आ० ४५३ इअ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल ५ । ले० काल ५ । पूर्ण । वे० सं० ८५४ । क भण्डार ।

१२२७. सुदृष्टि तरंगिणीभाषा—टेकचन्द । पत्र सं० ४०५ । आ० १५५६३ इअ । भाषा—हिन्दी ।
विषय—धर्म । २० काल सं० १८३८ सावण सुदी ११ । ले० काल सं० १८६१ भाद्रपद सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७१७ ।
अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र कटा हुआ है ।

१२२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८० । ले० काल ५ । वे० सं० ६६४ । अ भण्डार ।

१२२९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६११ । ले० काल सं० १६४४ । वे० सं० ८११ । क भण्डार ।

१२३०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६१ । ले० काल सं० १८६३ । वे० सं० ६२ । ग भण्डार ।

विशेष—दयोलाल साहू ने प्रतिलिपि की थी ।

१२३१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०५ से १२३ । ले० काल ५ । अपूर्ण । वे० सं० १२७ । अ भण्डार ।

१२३२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १६६ । ले० काल ५ । वे० सं० १२८ । अ भण्डार ।

१२३३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५४५ । ले० काल सं० १८६८ आश्विन सुदी ६ । वे० सं० ८६८ । क
भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियों का मिश्रण है ।

१२३४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५०० । ले० काल सं० १६६० कार्तिक सुदी ५ । वे० सं० ८६६ ।
क भण्डार ।

१२३५. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६०० । ले० काल ५ । अपूर्ण । वे० सं० ७२२ । अ भण्डार ।

१२३६. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४३० । ले० काल सं० १६४६ चैत सुदी ८ । वे० सं० ११ । ज
भण्डार ।

१२३७. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ५३५ । ले० काल सं० १८३६ फागुण सुदी ४ । वे० सं० ८६ । अ
भण्डार ।

१२३८. सुदृष्टितरंगिणीभाषा—..... । पत्र सं० ५१ से ५७ । आ० १५३५७ इअ । भाषा—हिन्दी ।
विषय—धर्म । २० काल ५ । ले० काल ५ । अपूर्ण । वे० सं० ८६७ । क भण्डार ।

१२३६. सौतगिरपक्षीसी—भागीरथ । पत्र सं० ८ । आ० ५१×४१ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १८६१ ज्येष्ठ सुदी १४ । ले० काल २८ । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

१२४०. सोलहकारणभावनावर्णन—पं० सदासुख । पत्र सं० ४६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल २८ । ले० काल २८ । पूर्ण । वे० सं० ७२६ । छ भण्डार ।

१२४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५३ । ले० काल २८ । वे० सं० १८८ । छ भण्डार ।

१२४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १६२७ सावण बुदी ११ । वे० सं० १८८ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में गणेशलाल पांड्या ने काशी के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी ।

१२४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६१ ले ६६ । ले० काल सं० १६५८ माह सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० १८७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्राग्भ के ३० पत्र नहीं हैं । सुन्दरलाल पांड्या ने चाटसु में प्रतिलिपि की थी ।

१२४४. सोलहकारणभावना एवं दशलक्षण धर्म वर्णन—पं० सदासुख । पत्र सं० ११४ । साइज ११३×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल २८ । ले० काल सं० १६४१ मंगसिर सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० १४ । छ भण्डार ।

१२४५. स्थापनानिर्णय..... । पत्र सं० ६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल २८ । ले० काल २८ । पूर्ण । वे० सं० ६०० । छ भण्डार ।

विशेष—विद्वज्जनबोधक के प्रथम कांड का अष्टम उल्लास है । हिन्दी टीका सहित है ।

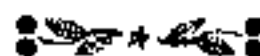
१२४६. स्वाध्यायपाठ..... । पत्र सं० २० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल २८ । ले० काल २८ । पूर्ण । वे० सं० ३३ । छ भण्डार ।

१२४७. स्वाध्यायपाठभाषा..... । पत्र सं० ७ । आ० ११३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल २८ । ले० काल २८ । पूर्ण । वे० सं० ६४२ । छ भण्डार ।

१२४८. सिद्धान्तधर्मोपदेशमाला..... । पत्र सं० १२ । आ० १६×३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल २८ । ले० काल २८ । पूर्ण । वे० सं० २२१ । छ भण्डार ।

१२४९. हुण्डावसर्पिणीकालदोष—माणिकचन्द्र । पत्र सं० ६ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल २८ । ले० काल सं० १६३७ । पूर्ण । वे० सं० ८५५ । छ भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।



विषय--अध्यात्म एवं योगशास्त्र

१२७०. अध्यात्मतरंगिणी—सोमदेव । पत्र सं० १० । आ० ११×१३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २० । क भण्डार ।

१२७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६३७ भाद्रवा बुदी ६ । वे० सं० ८१ क भण्डार ।

विशेष—ऊपर नीचे तथा पत्र के दोनों ओर संस्कृत में टीका लिखी हुई है ।

१२७२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६३८ आषाढ बुदी १० । वे० सं० ८२ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । किमुध फतेलाख ने प्रतिलिपि की थी ।

१२७३. अध्यात्मपत्र—जयचन्द झाबड़ा । पत्र सं० ७ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । २० काल १७वीं शताब्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १७ । क भण्डार ।

१२७४. अध्यात्मवत्सीसी—बनारसीदास । पत्र सं० २ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल १७वीं शताब्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १३६६ । क भण्डार ।

१२७५. अध्यात्म बारहखड़ी—कवि सूरत । पत्र सं० १५ । आ० ५½×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल १७वीं शताब्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६ । क भण्डार ।

१२७६. अष्टपाहुड़—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं० १० से २७ । आ० १०×१ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १०२३ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । १ से ६ तथा २४-२५वां पत्र नहीं है ।

१२७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६४३ । वे० सं० ७ । क भण्डार ।

१२७८. अष्टपाहुड़भाषा—जयचन्द झाबड़ा । पत्र सं० ४२० । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १८६७ भाद्रवा सुदी १३ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १३ । क भण्डार ।

विशेष—मूल पन्थकार आचार्य कुन्दकुन्द हैं ।

१२७९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ से २४६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १४ । क भण्डार ।

१२८०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२६ । ले० काल X । वे० सं० १५ । क भण्डार ।

१२८१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६७ । ले० काल X । वे० सं० १६ । क भण्डार ।

१२८२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३३४ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० १ । क भण्डार ।

१२८३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४५१ । ले० काल सं० १६४३ । वे० सं० २ । क भण्डार ।

१२६४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६५ । ले० काल X । वे० सं० ३ । घ भण्डार ।

१२६५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १६६ । ले० काल सं० १६३६ आसोज सुदी १५ । वे० सं० ३८ । ङ भण्डार ।

विशेष—८१ पत्र प्राचीन प्रति हैं । म० से १२३ स्व फिर लिखाये गये हैं तथा १२४ से १६३ म० के स्व किसी अन्य प्रति के हैं ।

१२६६. प्रति सं० ९ । पत्र सं० २४३ । ले० काल सं० १६५१ आषाढ़ बुदी १४ । वे० सं० ३९ । च भण्डार ।

१२६७. प्रति सं० १० । पत्र सं० १६७ । ले० काल X । वे० सं० ५०८ । च भण्डार ।

१२६८. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४५ । ले० काल सं० १८८० माघन बुदी १ । वे० सं० ३८ । ङ भण्डार ।

१२६९. आत्मध्यान—बनारसीदास । पत्र सं० १ । आ० ८६ X ४ ड० । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—आत्मचिन्तन । २० काल X । ले० काल X । वे० सं० १२७६ । अ भण्डार ।

१२७०. आत्मप्रबोध—कुमारकवि । पत्र सं० १३ । आ० १०३ X ४ ड० । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २५८ । अ भण्डार ।

१२७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल X । वे० सं० ३८० (क) अ भण्डार ।

१२७२. आत्मसंबोधनकाव्य..... । पत्र सं० २७ । आ० १० X ४ ड० । भाषा—अपभ्रंश । विषय—अध्यात्म । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १८५४ । अ भण्डार ।

१२७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ५२ । ङ भण्डार ।

१२७४. आत्मसंबोधनकाव्य—ज्ञानभूषण । पत्र सं० २ से २३ । आ० १० X ४ ड० । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १६८७ । अ भण्डार ।

१२७५. आत्मावलोकन—दीपचन्द्र कासलीवाल । पत्र सं० ६६ । आ० ११ ड० X ५ ड० । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल X । ले० काल सं० १७७४ फागुन बुदी । वे० सं० २१८ । अ भण्डार ।

विशेष—बुन्दावन में दयाराम लच्छीराम ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

१२७६. आत्मानुशासन—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ४२ । आ० १० X ५ ड० । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल X । ले० काल X । वे० सं० २२८२ । पूर्ण । जोर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—

..... वर्षे शके.....

श्रीनमिनाथचैप्यानये । श्रीमूलमंथे नेशाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्विष्य भट्टारकश्रीपद्मनन्ददेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द्रदेवा कृत् । लिखमंडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्राम्नाये । निखितं ज्योति (पी) श्री गैद्या तत्पुत्र महेस लिखितं ।

४

१२७७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १७६० भाद्रपद सुदी ८ । वे० सं० २६६ । अ
भण्डार ।

१२७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८६० सावण सुदी ४ । वे० सं० ३१५ । अ
भण्डार ।

१२७९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८६० । वे० सं० १२६८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एवं प्राचीन है ।

१२८०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १८६० । वे० सं० २७० । अ भण्डार ।

१२८१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६० । वे० सं० ७६२ । अ भण्डार ।

१२८२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८६० । वे० सं० ७६३ । अ भण्डार ।

१२८३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८६० । वे० सं० २०८६ । अ भण्डार ।

१२८४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १८६० । वे० सं० ४७ । क भण्डार ।

१२८५. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८८८ । वे० सं० ४६ । क भण्डार ।

१२८६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८८८ । वे० सं० १५ । क भण्डार ।

१२८७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८७२ चैत सुदी ८ । वे० सं० १३ । क
भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । पहिले संस्कृत का हिन्दी अर्थ तथा फिर उसका भावार्थ भी दिया हुआ है ।

१२८८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १७३० भाद्रपद सुदी १२ । वे० सं० ५४ । क
भण्डार ।

विशेष—शालाग्राम बाकलोवाल ने प्रतिलिपि की था ।

१२८९. प्रति सं० १४ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १३७० फागुन सुदी २ । वे० सं० २८ ।
क भण्डार ।

विशेष—रहितगपुर निवासी चौधरी मोहन ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१२९०. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १८६५ मंगसिर सुदी ५ । वे० सं० २२० । क
भण्डार ।

विशेष—मंडलाचार्य धर्मचन्द्र के शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी थी ।

१२९१. आत्मानुशासनदीक्षा—प्रभासचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५७ । अ० सं० ११४५ उच्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—अध्यात्म । २० काल X । ले० काल सं० १८८२ फागुन सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २७ । क भण्डार ।

१२९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०३ । ले० काल सं० १८०१ । वे० सं० ४८ । क भण्डार ।

१२९३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १८८५ मंगसिर सुदी १४ । वे० सं० ६३ । क
भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती नगर में प्रतिलिपि हुई ।

१२६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८३२ वैशाख सुदी ६ । वै० सं० ५० । अ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई ।

१२६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १६१६ आषाढ सुदी १ । वै० सं० ७१ ।

विशेष—साहू तिहुण अग्रवाल गर्ग गोत्रीय ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी ।

१२६६. आत्मानुशासनभाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० ८७ । आ० १४५७ इश्व । भाषा—हिन्दी (गद्य) विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८६० । पूर्ण । वै० सं० ३७१ । अ भण्डार ।

१२६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८६ । ले० काल सं० १९०८ । वै० सं० ३९६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है ।

१२६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४८ । ले० काल × । वै० सं० ३९८ । अ भण्डार ।

१२६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १९६३ । वै० सं० ४३४ । अ भण्डार ।

१३००. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २३६ । ले० काल सं० १९३० । वै० सं० १० । क भण्डार ।

विशेष—प्रभाचन्दाचार्य कृत संस्कृत टीका भी है ।

१३०१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३०५ । ले० काल सं० १९४० । वै० सं० ५१ । क भण्डार ।

१३०२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११८ । ले० काल सं० १८९६ कार्तिक सुदी ५ । वै० सं० ५ । घ भण्डार ।

१३०३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ५५ । क भण्डार ।

१३०४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८९ से १०२ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ५६ । क भण्डार ।

१३०५. प्रति सं० १० । पत्र सं० १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ५७ । क भण्डार ।

१३०६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १५१ । ले० काल सं० १९३३ ज्येष्ठ सुदी ८ । वै० सं० ५८ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संशोधित है ।

१३०७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ९७ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ५९ । क भण्डार ।

१३०८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ६१ से १६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६० । क भण्डार ।

१३०९. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ७१ से १८९ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ५१३ । च भण्डार ।

१३१०. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ९९ से १४३ । ले० काल सं० १९२४ कार्तिक सुदी ३ । अपूर्ण । वै० सं० ५१४ । च भण्डार ।

१३११. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ८० । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ५१५ । च भण्डार ।

१३१२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ९५ । ले० काल सं० १८५८ आषाढ सुदी ५ । वै० सं० २२२ । ज भण्डार ।

विशेष—रायचन्द्र साहबराव ने स्वयंठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१३१३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० १४ । ले० काल ५ । अपूर्ण । वे० सं० २१२४ । ट भण्डार ।

विशेष—१४ से आगे पत्र नहीं हैं ।

१३१४. आध्यात्मिकगाथा—भट लक्ष्मीचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।

विषय—अध्यात्म । १० काल ५ । ले० काल ५ । पूर्ण । वे० सं० १२४ । अ भण्डार ।

१३१५. कार्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामी कार्तिकेय । पत्र सं० २४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत ।

विषय—अध्यात्म । २० काल ५ । ले० काल सं० १६०४ । पूर्ण । वे० सं० २२१ । अ भण्डार ।

१३१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल ५ । वे० सं० २२८ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं । १८६ गाथाएँ हैं ।

१३१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल ५ । वे० सं० २१४ । अ भण्डार ।

विशेष—२८३ गाथाएँ हैं ।

१३१८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६० । ले० काल ५ । वे० सं० ८४४ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

१३१९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १८८८ । वे० सं० ८४५ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द हैं ।

१३२०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २० । ले० काल ५ । अपूर्ण । वे० सं० ३१ । ख भण्डार ।

१३२१. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३४ । ले० काल ५ । अपूर्ण । वे० सं० ११४ । क भण्डार ।

१३२२. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १६४३ सावण मुदी ४ । वे० सं० ११६ । क भण्डार ।

१३२३. प्रति सं० ९ । पत्र सं० २८ से ३५ । ले० काल सं० १८८६ । अपूर्ण । वे० सं० ११७ । क भण्डार ।

१३२४. प्रति सं० १० । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १८२५ पीप मुदी १० । वे० सं० ११९ । क भण्डार ।

विशेष—द्विती अर्थ भी है । मुनि रूपचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१३२५. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १२३६ । वे० सं० ४३७ । अ भण्डार ।

१३२६. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २३ । ले० काल ५ । अपूर्ण । वे० सं० ४३८ । अ भण्डार ।

१३२७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८६३ सावण मुदी ६ । वे० सं० ४३९ । अ भण्डार ।

१३२८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १९ । ले० काल सं० १८६० सावण मुदी ८ । वे० सं० ४४० । अ भण्डार ।

१३२६. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ४४२ । च. भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१३२७. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८८१ सावना कुदी १० । वे० सं० ८० । ज. भण्डार ।

१३२८. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ६३ । ले० काल २ । वे० सं० १०७ । ज. भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में लिपि दी. पुष्पा है ।

१३२९. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १२ । ले० काल २ । अपूर्ण । वे० सं० ६८ । क. भण्डार ।

१३३०. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ६ । ले० काल २ । वे० सं० ५२५ । क. भण्डार ।

१३३१. प्रति सं० १९ । पत्र सं० १०० । ले० काल २ । अपूर्ण । वे० सं० २०६१ । ट. भण्डार ।

विशेष—११ से ७४ तथा १०० में आगे के पत्र नहीं हैं ।

१३३२. प्रति सं० २० । पत्र सं० ३८ से ६४ । ले० काल २ । अपूर्ण । वे० सं० २०८८ । ट. भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१३३३. कार्तिकेयानुप्रेक्षाटीका..... । पत्र सं० ५४ । आ० १०३५ इ. । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल २ । ले० काल २ । अपूर्ण । वे० सं० ७३२ । अ. भण्डार ।

१३३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ से ११० । ले० काल २ । अपूर्ण । वे० सं० ११८ । क. भण्डार ।

१३३५. कार्तिकेयानुप्रेक्षाटीका—शुभचन्द्र । पत्र सं० २१० । आ० ११३५ इ. । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १६०० सावना कुदी १० । ले० काल सं० १८५४ । पूर्ण । वे० सं० ८४३ । क. भण्डार ।

१३३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल २ । वे० सं० ११५ । अपूर्ण । क. भण्डार ।

१३४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल २ । अपूर्ण । वे० सं० ४४१ । च. भण्डार ।

१३४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ से १७२ । ले० काल सं० १८३२ । अपूर्ण । वे० सं० ४८३ । च. भण्डार ।

१३४२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१७ । ले० काल सं० १८२२ आसोज सुदी १२ । वे० सं० ७६ । छ. भण्डार ।

विशेष—मराठी जयपुर में भाधोसिंह के शासनकाल में चन्द्रप्रभु चैत्यालय से पं० सोलनन्द के शिष्य रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१३४३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २४८ । ले० काल सं० १८६६ आषाढ सुदी ८ । वे० सं० ५०५ । ल. भण्डार ।

१३४४. कार्तिकेयानुप्रेक्षाभाषा—जयचन्द्र छाबड़ा । पत्र सं० २३७ । आ० ११५८ इ. । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १८६३ सावना कुदी २ । ले० काल सं० १०२६ । पूर्ण । वे० सं० ८४६ । क. भण्डार ।

१३४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८१ । ले० काल × । वे० सं० २४६ । ख भण्डार ।

१३४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७६ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० ६५ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१३४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२० । ङ भण्डार ।

१३४८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० १२१ । च भण्डार ।

१३४९. कुशलागुर्बन्धित्रिभुवनं । पत्र सं० ८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १६८३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्का टीका सहित है ।

इति कुशलागुर्बन्धित्रिभुवनं समप्तं । इति श्री चतुशरण ट्वार्थ ।

इनके प्रतिरिक्त राजमुन्दर तथा विजयदान सूरि विरचित ऋषभदेव स्तुतियां श्रीर हैं ।

१३५०. चक्रवर्त्तिकीषारहभावना । पत्र सं० ४ । आ० १०^१/_२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४० । ख भण्डार ।

१३५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ५४१ । ख भण्डार ।

१३५२. चतुर्विधध्यान । पत्र सं० २ । आ० १०×४^१/_२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५१ । भ भण्डार ।

१३५३. चिद्विलास—दीपचन्द कासलीवाल । पत्र सं० ४३ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १७७६ । पूर्ण । वे० सं० २१ । घ भण्डार ।

१३५४. जोगीरासो—जिनदास । पत्र सं० २ । आ० १०^१/_२×४^१/_२ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६१ । ख भण्डार ।

१३५५. ज्ञानदर्पण—साह दीपचन्द । पत्र सं० ४० । आ० १२^१/_२×४^१/_२ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० २२६ । क भण्डार ।

१३५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८६४ सावरा सुदी ११ । वे० सं० ३० । घ भण्डार ।

विशेष—महात्मा उस्मेद ने प्रतिलिपि की थी । प्रति दीवान प्रभरचन्दजी के मन्दिर में विराजमान की गई ।

१३५७. ज्ञानवाचनी—बनारसीदास । पत्र सं० १० । आ० ११×५^१/_२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३१ । ङ भण्डार ।

१३५८. ज्ञानसार—मुनि पद्मसिंह । पत्र सं० १२ । आ० १०^१/_२×५^१/_२ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १०८६ सावरा सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८ । च भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल वाली गाथा निम्न प्रकार है—

सिरि विक्कमहसब्बावे दशसयखासी जुं पमि वहमारोह

सावणसिय रावमीए अंवयणपरीम्मकयं मेयं ॥

१३५६. ज्ञानार्णव—शुभचन्द्राचार्य । पत्र सं० १०५ । आ० १२३×५२ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—योग । २० काल × । ले० काल सं० १६७६ चैत्र बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २७४ । अ भण्डार ।

विशेष—जैराट नगर में श्री चतुरदास ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी ।

१३६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०३ । ले० काल सं० १६५६ भाद्रवा सुदी १३ । वे० सं० ४२ । अ

भण्डार ।

१३६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०७ । ले० काल सं० १६४२ शीष सुदी ६ । वे० सं० २२० । क

भण्डार ।

१३६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१ । क भण्डार ।

१३६३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०८ । ले० काल × । वे० सं० २२२ । क भण्डार ।

१३६४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २६४ । ले० काल सं० १८३५ आषाढ सुदी ३ । वे० सं० २३४ । क

भण्डार ।

विशेष—अन्तिम अधिकार की टीका नहीं है ।

१३६५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १० से ८२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६२ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ६ पत्र नहीं हैं ।

१३६६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३१ । ले० काल × । वे० सं० ३२ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१३६७. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १७६ से २०१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२३ । ङ भण्डार ।

१३६८. प्रति सं० १० । पत्र सं० २६८ । ले० काल × । वे० सं० २२४ । अपूर्ण । ङ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है । हिन्दी टीका सहित है ।

१३६९. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १०६ । ले० काल × । वे० सं० २२५ । ञ भण्डार ।

१३७०. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२५ । ञ भण्डार ।

१३७१. प्रतिसं० १३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२६ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्राणायाम अधिकार तक है ।

१३७२. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १४२ । ले० काल सं० १८८६ । वे० सं० २२७ । ञ भण्डार ।

१३७३. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १४० । ले० काल सं० १६४८ आशीज बुदी ८ । वे० सं० १२४ ।

ञ भण्डार ।

विशेष—लक्ष्मीचन्द्र वैद्य ने प्रतिलिपि की थी ।

१३७४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १३५ । ले० काल X । वे० सं० ६५ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा संस्कृत में संकेत भी दिये हैं ।

१३७५. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८८८ माघ सुदी ५ । वे० सं० २८२ । छ मण्डार ।

विशेष—बारह भावना मात्र है ।

१३७६. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १५८१ कायूर सुदी १ । वे० सं० २५ । ज मण्डार ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८१ वर्षे कायूर सुदी १ बुधवार दिने । अथ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्द-कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे जितेन्द्रिय भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे सकलविद्यानिधानयमस्वाध्यायध्यानतत्परसकलभुक्तिजनमध्यलब्धप्रतिष्ठाभट्टारक श्रीप्रभावन्देवा । प्राचैर गण स्नानत् । कूरमवंशे महाराजाधिराजपृथ्वीराजराज्ये खण्डेलवालान्वये समस्तगोष्ठि पंचायत शास्त्र ज्ञानार्णव लिख्यपितं जैपनक्षिप-वर्तनिवर्तबाह्वर्षाध्यायु जेटाभितं कर्णक्षप्रतिपत्ति ।

१३७७. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ११५ । ले० काल X । वे० सं० ६० । झ मण्डार ।

१३७८. प्रति सं० २० । पत्र सं० १०४ । ले० काल X । वे० सं० १०० । झ मण्डार ।

१३७९. प्रति सं० २१ । पत्र सं० ३ से ७३ । ले० काल सं० १५०१ माघ सुदी ३ । अपूर्णा । वे० सं० १५३ । झ मण्डार ।

विशेष—ब्रह्मजिनदास ने श्री अमरकीर्ति के लिए प्रतिलिपि की थी ।

१३८०. प्रति सं० २२ । पत्र सं० १३४ । ले० काल सं० १७८८ । वे० सं० ३७० । झ मण्डार ।

१३८१. प्रति सं० २३ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १६४१ । वे० सं० १६६२ । ट मण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

१३८२. प्रति सं० २४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६०१ । अपूर्णा । वे० सं० १६६३ । ट मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत मद्य टीका सहित है ।

१३८३. ज्ञानार्णवगद्यटीका—श्रुतसागर । पत्र सं० १५ । सा० ११X५ इज्ज । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । १० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० ६१६ । झ मण्डार ।

१३८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल X । वे० सं० २२५ । क मण्डार ।

१३८५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८२३ माघ सुदी १० । वे० सं० २२६ । क मण्डार ।

१३८६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ से ६ । ले० काल X । अपूर्णा । वे० सं० ३१ । घ मण्डार ।

१३८७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७४६ । जीर्ण । वे० सं० २२८ । कृ भण्डार ।
विशेष—मौजमाबाद में आचार्य कमककीर्ति के शिष्य पं० मदाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१३८८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २ से १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२९ । कृ भण्डार ।

१३८९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १७८५ भादवा । वे० सं० २३० । कृ भण्डार ।
विशेष—पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१३९०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० २२१ । अ भण्डार ।

१३९१. ज्ञानार्णवटीका—पं० नय विलास । पत्र सं० २७९ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२७ । क भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति शुभचन्द्राचार्यविरचितयोगप्रदीपाधिकारे पं० नयविलानेन साह पाशा तत्पुत्र साह टोडर तत्कुलकमल-
दिवाकरसाहृष्टविदासस्य श्रवणार्थं पं० जिनदासो धर्मनाकारापिता मोक्षप्रकरण समाप्तं ।

१३९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१६ । ले० काल × । वे० सं० २२८ । कृ भण्डार ।

१३९३. ज्ञानार्णवटीकाभाषा—लघ्विनिमलनमिः । पत्र सं० १५८ । आ० ११×६^१/_२ इञ्च । भाषा—
हिन्दी (पद्य) । विषय—योग । २० काल सं० १७२८ आसोज सुदी १० । ले० काल सं० १७३० बैशाख सुदी ३ । पूर्ण ।
वे० सं० १९४ । कृ भण्डार ।

१३९४. ज्ञानार्णवभाषा—जयचन्द्र छाबड़ा । पत्र सं० ६९३ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी
(गद्य) विषय—योग । २० काल सं० १८६९ माघ सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२३ । कृ भण्डार ।

१३९५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२० । ले० काल × । वे० सं० २२४ । कृ भण्डार ।

१३९६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२१ । ले० काल सं० १८८३ सावन सुदी ७ । वे० सं० ३४ । न
भण्डार ।

विशेष—साह जिहानाबाद में संतूलाल की प्रेरणा से भाषा रचना की गई । काबूरामजी साह ने सोनपाल
आयसा से प्रतिलिपि कराके जीधरियों के मन्दिर में चढ़ाया ।

१३९७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४०८ । ले० काल × । वे० सं० ५६५ । अ भण्डार ।

१३९८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०३ से २१९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६६ । अ भण्डार ।

१३९९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३६१ । ले० काल सं० १९११ आसोज सुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० ५६६ ।

कृ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २९० पत्र नहीं हैं ।

१४००. तत्त्वबोध..... । पत्र सं० ३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २०
काल × । ले० काल सं० १८८१ । पूर्ण । वे० सं० ३१० । अ भण्डार ।

१४०१. त्रयोविंशतिका पत्र सं० १३ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४० । च भण्डार ।

१४०२. अष्टपादुडभाषा पत्र सं० २६ । आ० १०३×८३ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८३ । छ भण्डार ।

विशेष—अष्टपादुड का एक भाग है ।

१४०३. द्वादशभाषना दृष्टान्त पत्र सं० १ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—गुजराती । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १७०७ बैशाख बुदी १ । वे० सं० २२१७ । अ भण्डार ।

विशेष—जालोर में श्री हंसकुशल ने प्रतापकुशल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१४०४. द्वादशभावनाटीका पत्र सं० ६ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६५५ । ट भण्डार ।

विशेष—कुन्दकुन्दार्य कृत मूल गायकों भी दी है ।

१४०५. द्वादशानुप्रेक्षा पत्र सं० २० । आ० १०३×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८५ । ट भण्डार ।

१४०६. द्वादशानुप्रेक्षा—सकलकीर्ति । पत्र सं० ४ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४ । अ भण्डार ।

१४०७. द्वादशानुप्रेक्षा पत्र सं० १ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४ । अ भण्डार ।

१४०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । अ भण्डार ।

१४०९. द्वादशानुप्रेक्षा—कविद्वन्द्व । पत्र सं० ८३ । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।
विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १६०७ भाद्रवा बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६ । क भण्डार ।

१४१०. द्वादशानुप्रेक्षा—साह आलू । पत्र सं० ४ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६०४ । ट भण्डार ।

१४११. द्वादशानुप्रेक्षा पत्र सं० १३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२८ । अ भण्डार ।

१४१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ६३ । अ भण्डार ।

१४१३. पञ्चतत्त्वधारणा पत्र सं० ७ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२३२ । अ भण्डार ।

१४१४. पन्द्रहतिथी पत्र सं० ४ । आ० १०३×५६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३१ । छ भण्डार ।

विशेष—भूधरदास कृत एकीभावस्तोत्र भाषा भी है ।

१४१५. परमात्मपुराण—दीपचन्द्र । पत्र सं० २४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) ।
विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८६४ सातव नुदी ११ । पूर्ण । छ भण्डार ।

विशेष—महात्मा उमेद ने प्रतिलिपि की थी ।

१४१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से २२ । ले० काल सं० १८४३ आसोज नुदी २ । अपूर्ण । वे० सं०
६२६ । छ भण्डार ।

१४१७. परमात्मप्रकाश—योगीन्द्रदेव । पत्र सं० १२ से १४४ । आ० १०×५६ इञ्च । भाषा—
अपभ्रंश । विषय—अध्यात्म । २० काल १०वीं शताब्दी । ले० काल सं० १७६६ आसोज नुदी २ । अपूर्ण । वे० सं०
२०८३ । छ भण्डार ।

विशेष—सुशालचन्द्र चिमनराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १६३५ । वे० सं० ४४५ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी है ।

१४१९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७९ । ले० काल सं० १६०४ आसोज नुदी १३ । वे० सं० ५७ । छ
भण्डार । संस्कृत टीका सहित है ।

विशेष—ग्रन्थ सं० ४००० श्लोक । अन्तिम ६ पृष्ठों में बहुत बारीक लिपि है ।

१४२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३४ । छ भण्डार ।

१४२१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २ से १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३५ । छ भण्डार ।

१४२२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

१४२३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१० । छ भण्डार ।

१४२४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १८३० बैसाख नुदी ३ । वे० सं० ८२ । छ
भण्डार ।

विशेष—जयपुर में शुभचन्द्रजी के शिष्य बोलचन्द तथा उनके शिष्य पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की ।
संस्कृत में पर्यायवाची शब्द भी दिये हुए हैं ।

१४२५. परमात्मप्रकाशटीका—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६६ से २४५ । आ० १०३×४ इञ्च ।
भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३३ । छ भण्डार ।

१४२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३६ । ले० काल × । वे० सं० ४५३ । छ भण्डार ।

१४२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४१ । ले० काल सं० १७६७ पोष सुदी ५ । वे० सं० ४५४ । अ भण्डार ।

विशेष—मायाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४२८. परमात्मप्रकाशटीका—ब्रह्मदेव । पत्र सं० १६४ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६ । अ भण्डार ।

१४२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ से १४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है ४४ चित्र हैं ।

१४३०. परमात्मप्रकाशटीका । पत्र सं० १६३ । ग्रा० ११×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८५५ द्वि० आश्विन सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ४४७ । क भण्डार ।

१४३१. परमात्मप्रकाशटीका । पत्र सं० ६७ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८६० कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २०७ । च भण्डार ।

१४३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ से १०१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८ । च भण्डार ।

१४३३. परमात्मप्रकाशटीका । पत्र सं० १७० । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ मंगसिर सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४४६ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है । विजयराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४३४. परमात्मप्रकाशभाषा—दौलतराम । पत्र सं० ४४४ । ग्रा० ११×६ । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल सं० १८३८ । पूर्ण । वे० सं० ४८६ । क भण्डार ।

विशेष—मूल तथा ब्रह्मदेव कृत संस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१४३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३० से २४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३६ । क भण्डार ।

१४३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४७ । ले० काल सं० १८५० । वे० सं० ४३७ । क भण्डार ।

१४३७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० से १६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६३८ । च भण्डार ।

१४३८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२४ । ले० काल × । वे० सं० १८२ । छ भण्डार ।

१४३९. परमात्मप्रकाशबालाबोधिनीटीका—स्वानन्द । पत्र सं० २४१ । ग्रा० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र० काल सं० १८३६ । पूर्ण । वे० सं० ४४८ । क भण्डार ।

विशेष—वह टीका मुल्तान में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में लिखी गई थी इसका उल्लेख स्वयं टीकाकार ने किया है ।

१४४०. परमात्मप्रकाशभाषा—नथमल । पत्र सं० २१ । ग्रा० ११×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । र० काल सं० १८१६ चैत्र बुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४० । क भण्डार ।

१४४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८४८ । वे० सं० ४४१ । क भण्डार ।

१४४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० ४४२ । क भण्डार ।

१४४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ मे १५ । ले० काल सं० १६३७ । वे० सं० ४४३ । क भण्डार ।

१४४४. परमात्मप्रकाशभाषा—सूरजभान ओसवाल । पत्र सं० १५४ । आ० १२३/५ इअ । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १८४३ भाषादि बुदी ७ । ले० काल सं० १६५२ मंगसिर बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४४४ । क भण्डार ।

१४४५. परमात्मप्रकाशभाषा..... । पत्र सं० ६५ । आ० १३/५ इअ । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११६० । अ भण्डार ।

१४४६. परमात्मप्रकाशभाषा..... । पत्र सं० ५६ । आ० ११/५ इअ । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२७ । च भण्डार ।

१४४७. परमात्मप्रकाशभाषा..... । पत्र सं० ६३ से १०५ । आ० १०/४३ इअ । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३२ । क भण्डार ।

१४४८. प्रबचनसार—आचार्य कृन्दकुन्द । पत्र सं० ४७ । आ० १२/४३ इअ । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल प्रथम शताब्दी । ले० काल सं० १६४० माघ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ५०५ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१४४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० ५१० ।

१४५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८६६ भाद्रपद बुदी ५ । वे० सं० २३८ । च भण्डार ।

१४५१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१४५२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १८३७ वैशाख बुदी ६ । वे० सं० २४० । च भण्डार ।

विशेष—परागदास मोहा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

१४५३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० १४८ । ज भण्डार ।

१४५४. प्रबचनसारटीका—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६७ । आ० १५/५ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल १०वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वदीपिका है ।

१४५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११८ । ले० काल × । वे० सं० ८५२ । अ भण्डार ।

१४५६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ६० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८५ । अ भण्डार ।

१४५७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०१ । ले० काल × । वे० सं० ८१ । अ भण्डार ।

१४५८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०८ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० ५०७ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा देवकर्ण ने जयनगर में प्रतिलिपि की थी ।

१४७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३६ । ले० काल सं० १६३८ । वे० सं० ५०६ । क भण्डार ।

१४७७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८७ । ले० काल × । वे० सं० २६५ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्रार्थित है ।

१४७८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २०२ । ले० काल सं० १७४७ फागुण बुदी ११ । वे० सं० ५११ । क भण्डार ।

१४७९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १६६ । ले० काल सं० १६४० भाद्रपद बुदी ३ । वे० सं० ६१ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१४८०. प्रवचनसारटीका..... । पत्र सं० ४१ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१० । क भण्डार ।

विशेष—प्राकृत में मूल संस्कृत में लाया तथा हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

१४८१. प्रवचनसारटीका..... । पत्र सं० १२१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८२७ आषाढ बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ५०६ । क भण्डार ।

१४८२. प्रवचनसारप्राभृतवृत्ति..... । पत्र सं० ५१ ले १३१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १७६५ । अपूर्ण । वे० सं० ७८३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ५० पत्र नहीं हैं । महाराजा जयसिंह के शासनकाल में मेवठा में महात्मा हरिकृष्ण
ने प्रतिलिपि की थी ।

१४८३. प्रवचनसारभाषा—पांडे हेमराज । पत्र सं० ८३ से २०५ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—
हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १७०६ भाद्रपद बुदी ५ । ले० काल सं० १७२५ । अपूर्ण । वे० सं०
४३२ । अ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में ओमनाथ गूजरमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१४८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६७ । ले० काल सं० १६४३ । वे० सं० ५१३ । क भण्डार ।

१४८५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७३ । ले० काल × । वे० सं० ५१२ । क भण्डार ।

१४८६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १६२७ फागुण बुदी ११ । वे० सं० ६३ । घ
भण्डार ।

विशेष—पं० परमानन्द ने दिल्ली में प्रतिलिपि की थी ।

१४८७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७६ । ले० काल सं० १७४३ पौष बुदी २ । वे० सं० ५१३ । ड
भण्डार ।

१४८८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २४१ । ले० काल सं० १८६३ । वे० सं० ६४१ । च भण्डार ।

१४७२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८४ । ले० काल सं० १८८३ कार्तिक वृदी २ । वे० सं० १६३ । छ मण्डार ।

विशेष—लवाण निवासी अमरचन्द के पुत्र महात्मा गणेश ने प्रतिलिपि की थी ।

१४७३. प्रवचनसारभाषा—जोधराज गोदीका । पत्र सं० ३८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १७२६ । ले० काल सं० १७३० आषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ६४४ । च मण्डार ।

१४७४. प्रवचनसारभाषा—वृन्दावनदास । पत्र सं० ६१७ । आ० १२ $\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १६३३ ज्येष्ठ वृदी २ । पूर्ण । वे० सं० ५११ । क मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ के अन्त में वृन्दावनदास का परिचय दिया है ।

१४७५. प्रवचनसारभाषा..... पत्र सं० ८६ । आ० ११×६ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१२ । छ मण्डार ।

१४७६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४२ । च मण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

१४७७. प्रवचनसारभाषा..... पत्र सं० १२ । आ० ११×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२२ । ट मण्डार ।

१४७८. प्रवचनसारभाषा..... पत्र सं० १४५ से १८५ । आ० ११ $\frac{1}{2}$ ×७ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८६७ । अपूर्ण । वे० सं० ६४५ । च मण्डार ।

१४७९. प्रवचनसारभाषा..... पत्र सं० २३२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० ६४३ । च मण्डार ।

१४८०. प्राणायामशास्त्र..... पत्र सं० ३ । आ० ६ $\frac{1}{2}$ ×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योगशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५६ । अ मण्डार ।

१४८१. बारह भावना—रङ्गभू । पत्र सं० ५ । आ० ८ $\frac{1}{2}$ ×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४१ । छ मण्डार ।

विशेष—लिपिकार ने रङ्गभू कृत बारह भावना होना लिखा है ।

प्रारम्भ—ध्रुववस्त निश्चल सदा अभ्रुभाव परजाय ।

स्तरुं रूप जो देखिये पृथ्वी तरणो विभाव ॥

अन्तिम—अकथ कहानी ज्ञान की कहन सुनन की नाहि ।

आपनही में पाइये जब देखे घटमोहि ॥

इति श्री रङ्गभू कृत बारह भावना संपूर्ण ।

१४८२. बारहभावना..... पत्र सं० १५ । आ० ६१/२ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५२६ । छ भण्डार ।

१४८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० ६८ । छ भण्डार ।

१४८४. बारहभावना—भूधरदास । पत्र सं० १ । आ० ६१/२ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन ।
२० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२४७ । व्य भण्डार ।

विशेष—पार्श्वपुराण से उद्धृत है ।

१४८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० २५२ । व्य भण्डार ।

विशेष—इसका नाम सकृद्वृत्ति की बारह भावना है ।

१४८६. बारहभावना—नवलकवि । पत्र सं० २ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३० । छ भण्डार ।

१४८७. बोधप्राप्त—आचार्य कुंदकुंद । पत्र सं० ७ । आ० ११ × ४ १/२ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३५ ।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१४८८. भववैराग्यशतक..... पत्र सं० १५ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल सं० १८२४ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४५५ । व्य भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१४८९. भावनाद्वात्रिशिका..... पत्र सं० २६ । आ० १० × ४ १/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५७ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह और है । यतिभावनाष्टक, पद्मनन्दपञ्चविंशतिका और तत्त्वार्थसूत्र ।
प्रति स्वर्णाक्षरों में है ।

१४९०. भावनाद्वात्रिशिकाटीका..... पत्र सं० ४६ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६८ । छ भण्डार ।

१४९१. भावपाहुड—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं० ६ । आ० १४ × ५ १/२ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३० । ज भण्डार ।

विशेष—प्राकृत भाषाओं पर संस्कृत श्लोक भी हैं ।

१४९२. मृत्युमहोत्सव..... पत्र सं० १ । आ० ११ १/२ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४१ । व्य भण्डार ।

१४९३. मृत्युमहोत्सवभाषा—सदासुख । पत्र सं० २२ । आ० ६ ३/४ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
अध्यात्म । २० काल सं० १६१८ आषाढ सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८० । छ भण्डार ।

१४९४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० ६०४ । छ भण्डार ।

१४६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १८४ । छ मण्डार ।

१४६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १८४ । छ मण्डार ।

१४६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १६५ । छ मण्डार ।

१४६८. योगविदुप्रकरण—आ० हरिभद्रसूरि । पत्र सं० १८ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५२ । छ मण्डार ।

१४६९. योगभक्ति । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—योग । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१५ । छ मण्डार ।

१५००. योगशास्त्र—हेमचन्द्रसूरि । पत्र सं० २५ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

योग । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६३ । छ मण्डार ।

१५०१. योगशास्त्र । पत्र सं० ६४ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । २०

काल × । ले० काल सं० १७०५ आषाढ़ कुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ८२६ । छ मण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

१५०२. योगसार—योगीन्द्रदेव । पत्र सं० १२ । आ० ८×४ इंच । भाषा—अवध भाषा । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८०४ । अपूर्ण । वे० सं० ८२ । छ मण्डार ।

विशेष—सुन्दराम छाबड़ा ने प्रतिलिपि की थी ।

१५०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १६३४ । वे० सं० ६०६ । क मण्डार ।

विशेष—संस्कृत छापा सहित है ।

१५०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ६०७ । क मण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१५०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८१३ । वे० सं० ६१६ । छ मण्डार ।

१५०६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ३१० । छ मण्डार ।

१५०७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८८२ चैत्र सुदी ४ । वे० सं० २८२ । च

मण्डार ।

१५०८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८०४ आसोज कुदी ३ । वे० सं० ३३६ । च

मण्डार ।

१५०९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१६ । छ मण्डार ।

१५१०. योगसारभाषा—सुन्दराम । पत्र सं० ५७ । आ० १२३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

अध्यात्म । २० काल सं० १६०४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६११ । क मण्डार ।

विशेष—आगरा में ताजगञ्ज में भाषा टीका लिखी गई थी ।

१५११. योगसारभाषा—पञ्चालाल चौधरी । पत्र सं० ३३ । आ० १२×७ इंच । भाषा—हिन्दी

(गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १६३२ सावन सुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०६ । क मण्डार ।

१५१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ६१० । क भण्डार ।

१५१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० ६१७ । छ भण्डार ।

१५१४. योगसारभाषा—पं० बुधजन । पत्र सं० १० । आ० ११×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १८६५ सावण सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०८ । क भण्डार ।

१५१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ७४१ । च भण्डार ।

१५१६. योगसारभाषा..... पत्र सं० ६ । आ० २१×६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६१८ । छ भण्डार ।

१५१७. योगसारसंग्रह..... पत्र सं० १८ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । २० काल × । ले० काल सं० १७५० कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ७१ । ज भण्डार ।

१५१८. रूपस्थध्यानवर्णन..... पत्र सं० २ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५६ । छ भण्डार ।

‘धर्मनाथस्तुवे धर्ममयं सद्धर्मसिद्धये ।

धीमतां धर्मदातारं धर्मचक्रप्रवर्तकं ॥

१५१९. तिगपाहुड—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं० ११ । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८६५ । पूर्ण । वे० सं० १०३ । छ भण्डार ।

विशेष—शील पाहुड तथा गुरावली भी है ।

१५२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६ । झ भण्डार ।

१५२१. वैराग्यशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० ७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । च भण्डार ।

१५२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८८५ सावण सुदी ६ । वे० सं० ३३७ । च भण्डार ।

विशेष—बीच में कुछ पत्र कटे हुये हैं ।

१५२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० १४३ । ञ भण्डार ।

१५२४. षटपाहुड (प्राभृत)—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं० २ से २४ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७ । अ भण्डार ।

१५२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १८५४ मंगसिर सुदी १५ । वे० सं० १८८ । अ भण्डार ।

१५२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १८१७ माघ सुदी ६ । वे० सं० ७१४ । क भण्डार ।

विशेष—नरायणा (जयपुर) में पं० रूपचन्दजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१५२७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८१७ कार्तिक बुदी ७ । वे० सं० १६५ । ख

भण्डार ।

विशेष—संस्कृत पद्यों में भी अर्थ दिया है ।

१५२८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २८० । ख भण्डार ।

१५२९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० १६७ । ख भण्डार ।

१५३०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३१ से ५५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३७ । छ भण्डार ।

१५३१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३८ । छ भण्डार ।

१५३२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० २७ से ६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३९ । छ भण्डार ।

१५३३. प्रति सं० १० । पत्र सं० ५७ । ले० काल × । वे० सं० ७४० । छ भण्डार ।

१५३४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ३५७ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१५३५. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १५१६ चैत्र बुदी १३ । वे० सं० ३८० । अ

भण्डार ।

१५३६. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २९ । ले० काल × । वे० सं० १८४६ । ट भण्डार ।

१५३७. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १७१५ । वे० सं० १८४७ । ट भण्डार ।

विशेष—नयनपुर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में अ० सुखदेव के पठनार्थ मनोहरदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१५३८. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १ से ८३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८५ । ट भण्डार ।

विशेष—निम्न प्राभृत है— दर्शन, सूत्र, चारित्र । चारित्र प्राभृत की ४५ गाथा से आगे नहीं है । प्रति

प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

१५३९. पट्टपाहुडटीका..... । पत्र सं० ५१ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६ । अ भण्डार ।

१५४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० ७१३ । क भण्डार ।

१५४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८८० फागुण सुदी ८ । वे० सं० १६६ । ख

भण्डार ।

विशेष—पं० स्वरूपचन्द्र के पठनार्थ भावनगर में प्रतिलिपि हुई ।

१५४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १८२५ ज्येष्ठ सुदी १० । वे० सं० २५८ । अ

भण्डार ।

१५४३. घटपाहुडटीका—श्रुतसागर । पत्र सं० २६५ । मा० १०५×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१२ । क भण्डार ।

१५४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६६ । ले० काल सं० १८६३ माह बुदी ६ । वे० सं० ७४१ । क भण्डार ।

१५४५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५२ । ले० काल सं० १७६५ माह बुदी १० । वे० सं० ६२ । छ भण्डार ।

विशेष—नर्सिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१५४६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १११ । ले० काल सं० १७३६ द्वि० चैत्र सुदी १५ । वे० सं० ६ । अ विशेष—श्रीलालबन्द के पठनार्थ आमेर नगर में प्रतिलिपि की गई थी ।

१५४७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १७६७ भावण सुदी ७ । वे० सं० ६८ । अ भण्डार ।

विशेष—विजयराय तोडूकर को धर्मरत्नी विषय दृष्टि से पं० गोरधनदास के लिए ग्रन्थ की प्रतिलिपि करायी थी ।

१५४८. संबोधअक्षरभावनी—शानतराय । पत्र सं० ५ । मा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६० । च भण्डार ।

१५४९. संबोधपंचासिका—गौतमस्वामी । पत्र सं० ४ । मा० ८×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८४० बैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । च भण्डार ।

विशेष—बाणपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१५५०. समयसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं० २३ । मा० १०×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १५६४ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । वृत्त सं० २६३ सर्वे भवन्ति । वे० सं० १८१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रसस्ति—संवत् १५६४ वर्षे फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे १२ द्वादशीतिथौ रवौवासरै पुनर्वसुतल्लवे श्री मूलसंघे नंदिसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीयच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र-देवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभावन्ददेवास्तच्छिष्यमंडलाचार्यश्रीभर्तृचन्द्रदेवास्तत्मुख्यशिष्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रदेवास्तैरिमानि नाटकसमयसारवृत्तानि लिखापितानि स्वपठनार्थं ।

१५५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १८६ । अ भण्डार ।

१५५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० २७३ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायान्तर दिया हुआ है । दीवान तबतिभिराम के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी ।

१५५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६४२ । वे० सं० ७३४ । क भण्डार ।

१५५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० ७३५ । क भण्डार ।

विशेष—गाथाओं पर ही संस्कृत में ग्रन्थ है ।

१५५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७० । ले० काल × । वे० सं० १०८ । घ भण्डार ।

१५५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८७७ वैशाख सुदी ५ । वे० सं० ३६६ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१५५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६७ । च भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१५५८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५२ । ले० काल × । वे० सं० ३६७ क । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१५५९. प्रति सं० १० । पत्र सं० ३ से १३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६८ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१५६०. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ८५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६८ क । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१५६१. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३७० । च भण्डार ।

१५६२. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वे० सं० ३७१ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१५६३. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १५६३ पौष सुदी ६ । वे० सं० २१४० । ट भण्डार ।

१५६४. समयसारकलशा—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० १२२ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १७४३ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १७३ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १७४३ वर्षे आसोज मासे शुक्लपक्षे द्वितीया २ तिथौ गुरुवासरे श्रीमत्कामानगरे श्रीश्वेताम्बरशास्त्रायां श्रीमद्विजयगन्धे भट्टारक श्री १०८ श्री कल्याणसागरसूरिजी तत् शिष्य ऋषिराज श्री जयवंतजी तत् शिष्य ऋषि लक्ष्मणेन पठनाय लिपिचक्रे शुभं भवतु ।

१५६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८४ । ले० काल सं० १६६७ आषाढ सुदी ७ । वे० सं० १३३ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज जयसिंहजी के शासनकाल में आमेर में प्रतिलिपि हुई थी । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—
संवत् १६६७ वर्षे आषाढ बदि सप्तम्यां शुक्लवासरे महाराजाधिराज श्री जैसिंहजी प्रतापे अंनावतीमध्ये लिखाइतं संघी श्री मोहनदासजी पठनार्थ । लिखितं जोशी आलिराज ।

१५६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल X । वे० सं० १६२ । अ भण्डार ।

१५६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१ । ले० काल X । वे० सं० ११५ । अ भण्डार ।

१५६८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० १६४३ । वे० सं० ७३६ । क भण्डार ।

विशेष—सरल संस्कृत में टीका दी है तथा नीचे श्लोकों की टीका है ।

१५६९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२४ । ले० काल X । वे० सं० ७३७ । क भण्डार ।

१५७०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १८६७ भाद्रवा सुदी ११ । वे० सं० ७३८ । क

भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महात्मा देवकरण ने प्रतिलिपि की थी ।

१५७१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २३ । ले० काल X । वे० सं० ७३९ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१५७२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३५ । ले० काल X । वे० सं० ७४४ । अ भण्डार ।

विशेष—कलशों पर भी संस्कृत में टिप्पण दिया है ।

१५७३. प्रति सं० १० । पत्र सं० २४ । ले० काल X । वे० सं० ११० । घ भण्डार ।

१५७४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ७६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३७१ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है परन्तु पत्र ५६ से संस्कृत टीका नहीं है केवल श्लोक ही हैं ।

१५७५. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २ से ४७ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३७२ । च भण्डार ।

१५७६. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १७१६ कार्तिक सुदी २ । वे० सं० ६१ । छ

भण्डार ।

विशेष—उज्जैन में प्रतिलिपि हुई थी ।

१५७७. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ५३ । ले० काल X । वे० सं० ८७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

१५७८. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १६१४ पौष सुदी ८ । वे० सं० २०५ । ज

भण्डार ।

विशेष—बीच के ६ पत्र नवीन लिखे हुये हैं ।

१५७९. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ५६ । ले० काल X । वे० सं० १६१४ । ट भण्डार ।

१५८०. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८२२ । वे० सं० १६६२ । ट भण्डार ।

विशेष—ब्र० मेतसीदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१५८१. समयसारटीका (आत्मस्थिति)—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० १३५ । भा० १०३ X ४३ इंच

मापः—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । १० काल X । ले० काल सं० १८३३ भाद्र सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २ । अ भण्डार ।

१५८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १७०३ । वै० सं० १०४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति-संवत् १७०३ मार्गसिर कृष्णपञ्चमी तिथी बुद्धवार लिखितम् ।

१५८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०१ । ले० काल × । वै० सं० ३ । अ भण्डार ।

१५८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० से ४६ । ले० काल × । वै० सं० २००३ । अ भण्डार ।

१५८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १७०३ वैशाख बुदी १० । वै० सं० २२६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति :-सं० १७०३ वर्ष वैशाख कृष्णादशम्यां तिथी लिखितम् ।

१५८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३१६ । ले० काल सं० १६३८ । वै० सं० ७४० । क भण्डार ।

१५८७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १६५७ । वै० सं० ७४१ । क भण्डार ।

१५८८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १७०६ । वै० सं० ७४२ । क भण्डार ।

विशेष—भगवंत दुबे ने सिरोज ग्राम में प्रतिलिपि की थी ।

१५८९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वै० सं० ७४३ । क भण्डार ।

१५९०. प्रति सं० १० । पत्र सं० १६५ । ले० काल × । वै० सं० ७४५ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१५९१. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १७६ । ले० काल सं० १६४४ वैशाख सुदी ५ । वै० सं० १०६ । घ भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—अकबर बादशाह के शासनकाल में मालपुरा में लेखक सूरि श्वेताम्बर मुनि जैसा ने प्रतिलिपि की थी । नीचे निम्नलिखित पंक्तियां भी लिखी हैं—

‘पांढे खेतु सेठ तत्र पुत्र पांढे पारसु पोथी देहुरे ।

बाली सं० १६७३ तत्र पुत्रु वीसाखानन्द कवहर ।

बीच में कुछ पत्र लिखाये हुये हैं ।

१५९२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १६८ । ले० काल सं० १६९८ माघ सुदी १ । वै० सं० ७५ । ज भण्डार ।

विशेष—संगद्दी पद्मालाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । ११२ से १७० तक नीले पत्र हैं ।

१५९३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १७३० मंगसिर सुदी १५ । वै० सं० १०६ । क भण्डार ।

भण्डार ।

१५९४. समयसार वृत्ति..... पत्र सं० ४ । आ० ८३×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १०७ । घ भण्डार ।

१५९५. समयसारटीका..... पत्र सं० ८१ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ७६६ । क भण्डार ।

१५६६. समयसारनाटक—मत्तारसीदास । पत्र सं० ६७ । मा० ६६×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १६६३ भासीज सुदी १३ । ले० काल सं० १८३८ । पूर्ण । वे० सं० ४०६ । अ
भण्डार ।

१५६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७२ । ले० काल सं० १८६७ फागुण सुदी ६ । वे० सं० ४०६ । अ
भण्डार ।

विशेष—आगरे में प्रतिलिपि हुई थी ।

१५६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०६६ । अ भण्डार ।

१५६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८४ । अ भण्डार ।

१६००. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ से ११५ । ले० काल सं० १७८६ फागुण सुदी ४ । वे० सं० ११२८

अ भण्डार ।

१६०१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८४ । ले० काल सं० १८३० ज्येष्ठ सुदी १५ । वे० सं० ७४६ । क
भण्डार ।

विशेष—पद्यों के बीच में सदासुख कासलीवाल कृत हिन्दी गद्य टीका भी दी हुई है । टीका रचना सं०
१८१४ कार्तिक सुदी ७ है ।

१६०२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १११ । ले० काल सं० १८५६ । वे० सं० ७४७ । क भण्डार ।

१६०३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४ से ५६ । ले० काल × । वे० सं० २०८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र नहीं हैं ।

१६०४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८७ । ले० काल सं० १८८७ माघ सुदी ८ । वे० सं० ८४ । ग भण्डार ।

१६०५. प्रति सं० १० । पत्र सं० ३६६ । ले० काल सं० १८२० वैशाख सुदी १ । वे० सं० ८५ । ग

भण्डार ।

विशेष—प्रति गुटके के रूप में है । लिपि बहुत सुन्दर है । अक्षर मोटे हैं तथा एक पत्र में ५ लाइन और
प्रति लाइन में १८ अक्षर हैं । पद्यों के नीचे हिन्दी अर्थ भी है । विस्तृत सूचीपत्र २१ पत्रों में है । यह ग्रन्थ तनमुख
सैनी का है ।

१६०६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २८ से १११ । ले० काल सं० १७१४ । अपूर्ण । वे० सं० ७६७ । क
भण्डार ।

विशेष—रामगोपाल कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी ।

१६०७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १२२ । ले० काल सं० १८५१ चैत्र सुदी २ । वे० सं० ७६८ । क
भण्डार ।

विशेष—म्होरीलाल ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१६०८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८४३ मंगसिर सुदी १३ । वे० सं० ७६९ ।

क भण्डार ।

विशेष—लक्ष्मीनारायण ब्राह्मण ने जयनगर में प्रतिलिपि की थी ।

१६०६. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १६० । ले० काल सं० १६७७ प्रथम सावण सुदी १३ । वै० सं० ७७० । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य में भी टीका है ।

१६१०. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ७७१ । छ भण्डार ।

१६११. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २ से २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ३५७ । छ भण्डार ।

१६१२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १७६३ आषाढ़ सुदी १५ । वै० सं० ७७२ ।

छ भण्डार ।

१६१३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८३४ मंगसिर बुदी ६ । वै० सं० ६६२ । च

भण्डार ।

विशेष—पंडित नानगराम ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि कराई

१६१४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६६५ । च भण्डार ।

१६१५. प्रति सं० २० । पत्र सं० ४१ से १३९ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६६५ (क) । च

भण्डार ।

१६१६. प्रति सं० २१ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वै० सं० ६६५ (ख) । च भण्डार ।

१६१७. प्रति सं० २२ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वै० सं० ६६५ (ग) । च भण्डार ।

१६१८. प्रति सं० २३ । पत्र सं० ४० से ५० । ले० काल सं० १७०४ ज्येष्ठ सुदी २ । अपूर्ण । वै०

सं० ६२ (अ) । छ भण्डार ।

१६१९. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १८३ । ले० काल सं० १७८८ आषाढ़ बुदी २ । वै० सं० ३ । ज

भण्डार ।

विशेष—भिण्ड निवासी किसी कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२०. प्रति सं० २५ । पत्र सं० ४ से ८१ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १५२६ । ट भण्डार ।

१६२१. प्रति सं० २६ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १७०८ । ट भण्डार ।

१६२२. प्रति सं० २७ । पत्र सं० २३७ । ले० काल सं० १७४६ । वै० सं० १६०६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति राजभक्तकृत गद्य टीका सहित है ।

१६२३. प्रति सं० २८ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वै० सं० १८६० । ट भण्डार ।

१६२४. समयसारभाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ५१३ । आ० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १८६४ कार्तिक बुदी १० । ले० काल सं० १६४६ । पूर्ण । वै० सं० ७४८ ।

क भण्डार ।

१६२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६६ । ले० काल × । वै० सं० ७४६ । क भण्डार ।

१६२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१६ । ले० काल × । वै० सं० ७५० । क भण्डार ।

१६२७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३२५ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० ७५२ । क भण्डार ।

विशेष—सदाशिवजी के पुत्र श्यामल ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३१७ । ले० काल सं० १८७७ आषाढ़ सुदी १५ । वे० सं० १११ । घ भण्डार ।

विशेष—बेनीराम ने लखनऊ में नवाब ग़ज़ुद्दीन बहादुर के राज्य में प्रतिलिपि की ।

१६२९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३७५ । ले० काल सं० १९५२ । वे० सं० ७७३ । ङ भण्डार ।

१६३०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १०१ से ३१२ । ले० काल × । वे० सं० ६९३ । च भण्डार ।

१६३१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३०५ । ले० काल × । वे० सं० १४३ । ज भण्डार ।

१६३२. समयसारकलशाटीका पत्र सं० २०० से ३३२ । आ० ११५×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १७१५ ज्येष्ठ सुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० ६२ । झ भण्डार ।

विशेष—बंध मोक्ष सर्व विशुद्ध ज्ञान और समादाव चूलिका ये चार अधिकार पूर्ण हैं । दोष अधिकार नहीं हैं । पहिले नलगा दिये हैं फिर उनके नीचे हिन्दी में अर्थ है । समयसार टीका श्लोक सं० ५४६५ हैं ।

१६३३. समयसारकलशाभाषा पत्र सं० ६२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) ।
विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६९१ । च भण्डार ।

१६३४. समयसारवचनिका पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ६९४ । च भण्डार ।

१६३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० ६९४ (क) । च भण्डार ।

१६३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० ३९६ । च भण्डार ।

१६३७. समाधितन्त्र—पूज्यपाद । पत्र सं० ५१ । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योगशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५६ । क भण्डार ।

१६३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० ७५८ । क भण्डार ।

१६३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १९ । ले० काल सं० १९३० वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७५९ । क भण्डार ।

१६४०. समाधितन्त्र पत्र सं० १६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योगशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । ख भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१६४१. समाधितन्त्रभाषा पत्र सं० १३८ से १९२ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—योगशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६० । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । बीच के पत्र भी नहीं हैं ।

१६४२. समाधितन्त्रभाषा—माणकचन्द्र । पत्र सं० २६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—योगशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२२ । ख भण्डार ।

विशेष—गूल ग्रन्थ पूज्यपाद का है ।

१६४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १६४२ । वे० सं० ७५५ । क भण्डार ।

१६४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० ७५७ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ ऋषभदास निभोल्या द्वारा शुद्ध किया गया है ।

१६४५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ७६ । क भण्डार ।

१६४६. समाधितन्त्रभाषा—नाथूराम दोसी । पत्र सं० ४१५ । आ० १२३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—योग । २० काल सं० १६२३ चैत्र सुदी १२ । ले० काल सं० १६३८ । पूर्ण । वे० सं० ७६१ । क भण्डार ।

१६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१० । ले० काल × । वे० सं० ७६२ । क भण्डार ।

१६४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६८ । ले० काल सं० १६५३ द्वि० ज्येष्ठ सुदी १० । वे० सं० ७८० ।

क भण्डार ।

१६४९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७५ । ले० काल × । वे० सं० ६६७ । च भण्डार ।

१६५०. समाधितन्त्रभाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र सं० १८७ । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा—गुजराती

लिपि हिन्दी । विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३ । घ भण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र दुबारा लिखे गये हैं । सारंगपुर निवासी पं० उधरश ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४८ । ले० काल सं० १७४१ कार्तिक सुदी ६ । वे० सं० ११४ । घ

भण्डार ।

१६५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८१ । छ भण्डार ।

१६५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २०१ । ले० काल × । वे० सं० ७८२ । छ भण्डार ।

१६५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७४ । ले० काल सं० १७७१ । वे० सं० ६१८ । च भण्डार ।

विशेष—समीरपुर में पं० नानिगराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४२ । छ भण्डार ।

१६५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १७३४ पौष सुदी ११ । वे० सं० ४४ । ज

भण्डार ।

विशेष—पाण्डे उधोलाल काला ने केसरलाल जोशी से बहिन नाथी के पठनार्थ सीलोर में प्रतिलिपि करवायी थी । प्रति गुटका साइज है ।

१६५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २३८ । ले० काल सं० १७८६ आषाढ सुदी १३ । वे० सं० ५६ । झ

भण्डार ।

१६५८. समाधिमरण..... । पत्र सं० ४ । आ० ७३×६३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३२६ ।

१६५९. समाधिमरणभाषा—द्यानतराय । पत्र सं० ३ । आ० ८३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४२ । झ भण्डार ।

१६६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ७७६ । झ भण्डार ।

१६६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ७८३ । झ भण्डार ।

१६६२. समाधिमरणभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १०१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १६३३ । पूर्ण । वे० सं० ७६६ । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्द का सामान्य परिचय दिया हुआ है । टीका बाबा दुलीचन्द की प्रेरणा से की गई थी ।

१६६३. समाधिमरणभाषा—सूरचंद । पत्र सं० ७ । आ० ७ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

१६६४. समाधिमरणभाषा..... । पत्र सं० १३ । आ० १३ $\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८४ । क भण्डार ।

१६६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० १७३७ । ट भण्डार ।

१६६६. समाधिमरणस्वरूपभाषा..... । पत्र सं० २५ । आ० १० $\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८७८ मंगसिर बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४३१ । अ भण्डार ।

१६६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८८३ मंगसिर बुदी ११ । वे० सं० ८६ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने यह ग्रन्थ लिखवाकर चौधरियों के मन्दिर में बढाया ।

१६६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १८२७ । वे० सं० ६६६ । च भण्डार ।

१६६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६३४ भाद्रवा सुदी १ । वे० सं० ७०० । च भण्डार ।

१६७०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८८४ भाद्रवा बुदी ८ । वे० सं० २३६ । छ भण्डार ।

१६७१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८५३ पौष बुदी ६ । वे० सं० १७५ । ज भण्डार ।

विशेष—हरवंश लुहाड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

१६७२. समाधिशतक—पूज्यपाद । पत्र सं० १६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६४ । अ भण्डार ।

१६७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ७६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१६७४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १६२४ बैशाख बुदी ६ । वे० सं० ७७ । ज भण्डार ।

विशेष—संगही पन्नालाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१६७५. समाधिशतकटीका—प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५२ । आ० १२ $\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १६३५ भाद्रवा सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ७६३ । क भण्डार ।

१६७६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ७६५ । क भण्डार ।

१६७७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । वै० काल सं० १६५८ फागुण सुदी १३ । वै० सं० ३७३ । च विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१६७८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वै० सं० ३७४ । च भण्डार ।

१६७९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वै० सं० ७८५ । छ भण्डार ।

१६८०. समाविशतकटीका..... पत्र सं० १५ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३३५ । अ भण्डार ।

१६८१. संबोधपंचासिका—गौतमस्वामी । पत्र सं० १६ । आ० ६३×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७८६ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी है ।

१६८२. संबोधपंचासिका—रङ्गू । पत्र सं० ५ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । २० काल × । ले० काल सं० १७१६ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० २२६ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० बिहारीदासजी ने इसकी प्रतिलिपि करवायी थी । प्रशस्ति—

संवत् १७१६ वर्षे मित्ती पौस वदि ७ सुम दिने महाराजाधिराज श्री जैसिंहजी विजयराम्ये साह श्री हंसराज तत्पुत्र साह श्री गेगराज तत्पुत्र त्रयः प्रथम पुत्र साह राइमलजी । द्वितीय पुत्र साह श्री बलिकर्ण तृतीय पुत्र साह देवसो । जाति साबडा साह श्री रायमलजी का पुत्र पवित्र साह श्री बिहारीदासजी लिखायते ।

दोहडा—पूरव श्रावक को कहें, गुण इकदीस निवास ।

सो परतलि पेखिये, अंगि बिहारीदास ॥

लिखत महात्मा झुंगरसी पंडित पद्मसीजी का चेला खत्तर गच्छे वासी मौजे मौहारात् मुकाम दिल्ली मध्ये ।

१६८३. संबोधशतक—द्यानतराय । पत्र सं० ३४ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७८६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रथम २० पत्रों में चरचा शतक भी है । प्रति दोनों ओर से जली हुई है ।

१६८४. संबोधसत्तरी..... पत्र सं० २ से ७ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ८८ । अ भण्डार ।

१६८५. स्वरोदय..... पत्र सं० १६ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । २० काल × । ले० काल सं० १८१३ मंगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वै० सं० २४१ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है । देवप्रकीर्ति के शिष्य उदयराम ने टीका लिखी थी ।

१६८६. स्वानुभवदर्पण—नाथूराम । पत्र सं० २१ । आ० १३×८३ इञ्च । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १६५६ चैत्र सुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १८७ । छ भण्डार ।

१६८७. हठयोगदीपिका..... पत्र सं० २१ । आ० ११×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ४४४ । च भण्डार ।

विषय-न्याय एवं दर्शन

१६८८. अध्यात्मकमलमार्तण्ड—कवि राजमल्ल । पत्र सं० २ से १२ । आ० १०×४^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैन दर्शन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७५ । अ भण्डार ।

१६८९. अष्टराती—अकलंकदेव । पत्र सं० १७ । आ० १२×४^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैन दर्शन । २० काल × । ले० काल सं० १७६४ मंगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० २२२ । अ भण्डार ।

विशेष—देवागम स्तोत्र टीका है । पं० सुखराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६९०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १८७५ फागुन सुदी ३ । वे० सं० १५६ । ज भण्डार ।

१६९१. अष्टसहस्री—आचार्य विद्यानन्दि । पत्र सं० १६७ । आ० १०×४^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैनदर्शन । २० काल × । ले० काल सं० १७६१ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २४४ । अ भण्डार ।

विशेष—देवागम स्तोत्र टीका है । लिपि मुन्दर है । अन्तिम पत्र पीछे लिखा गया है । पं० चोखचन्द ने अपने पठनार्थ प्रतिलिपि कराई । प्रशस्ति—

श्री भूरामल संव मंडनमणिः, श्री कुन्दकुन्दान्वये श्रीदेशीगरामच्छपुस्तकविधा, श्री देवसंघाप्रणी संवत्सरे चंद्र रंघ मुनींदुमिते (१७६१) मार्गशीर्षमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ चोखचंद्रेण विदुषा शुभं पुस्तकमष्टसहस्र्यासप्तप्रमाणेन स्वकीयपठनार्थमायत्तीकृतं ।

पुस्तकमष्टसहस्र्या वै चोखचंद्रेण धीमता ।

ग्रहीतं शुद्धभावेन स्वकर्मक्षयहेतवे ॥१॥

१६९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४० । क भण्डार ।

१६९३. आत्मपरीक्षा—विद्यानन्दि । पत्र सं० २५७ । आ० १२×४^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैन न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १६३६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५८ । क भण्डार ।

विशेष—लिपिकार पन्नालाल चौधरी । भीमने से पत्र छिपक गये हैं ।

१६९४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ५६ । क भण्डार ।

विशेष—कारिका मात्र है ।

१६९५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३३ । अपूर्ण । च भण्डार ।

१६६६. आप्तमीमांसा—समन्तभट्टाचार्य । पत्र सं० ८४ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—जैन न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १६३५ आषाढ़ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ६० । क भण्डार ।

विशेष—इस ग्रन्थ का दूसरा नाम 'देवागमस्तोत्र सटीक अष्टशती' दिया हुआ है ।

१६६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०१ । ले० काल × । वे० सं० ६१ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१६६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० ६३ । क भण्डार ।

१६६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० ६२ । क भण्डार ।

१७००. आप्तमीमांसासंक्षेप—विद्यानान्द । पत्र सं० २२६ । आ० १६×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ भाद्रपद सुदी १५ । वे० सं० १४ ।

विशेष—इसका नाम अष्टशती भाष्य तथा अष्टसहस्री भी है । मालपुरा ग्राम में महाराजाधिराज राजसिंह जी के शासनकाल में चतुर्भुज ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी । प्रति काफी बड़ी साइज की है ।

१७०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२५ । ले० काल × । वे० सं० ८६६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति बड़ी साइज की तथा सुन्दर लिखी हुई है । प्रति प्रदर्शन योग्य है ।

१७०२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७२ । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । ले० काल सं० १७८४ आषाढ़ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ७३ । क भण्डार ।

१७०३. आप्तमीमांसाभाषा—जयचन्द छावड़ा । पत्र सं० ६२ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—न्याय । २० काल सं० १८६६ । ले० काल १८६० । पूर्ण । वे० सं० ३६५ । क भण्डार ।

१७०४. आलापपद्धति—देषसेन । पत्र सं० १० । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५० । क भण्डार ।

विशेष—१ पृष्ठ से ४ पृष्ठ तक प्राभूतसार ४ से ६ तक सप्तभंग ग्रन्थ भी हैं ।

प्राभूतसार—मोह तिमिर भालूड रिपज्जनन्दिपंच सात्त्विकदेवनेर्द कथितं ।

१७०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० २०१० फागुण सुदी ४ । वे० सं० २२७० । क भण्डार ।

विशेष—आरम्भ में प्राभूतसार तथा सप्तभंगी है । जयपुर में नाथूलाल वज ने प्रतिलिपि की थी ।

१७०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ७६ । क भण्डार ।

१७०७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६ । क भण्डार ।

१७०८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ३ । क भण्डार ।

१७०९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ४ । क भण्डार ।

विशेष—मूलग्रन्थ के प्राचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

★

१७१०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७ से १५ । ले० काल सं० १७८६ । अपूर्ण । वे० सं० ५१५ । त्र भण्डार ।

१७११. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १० ले० काल × । वे० सं० १८२१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१७१२. ईश्वरवाद । पत्र सं० ३ । आ० १०×४^१/_२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । पूर्ण । वे० सं० २ । छ भण्डार ।

विशेष—किसी न्याय के ग्रन्थ से उद्धृत है ।

१७१३. गर्भण्डारचक्र—देवमंदि । पत्र सं० ३ । आ० ११×४^१/_२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२७ । म् भण्डार ।

★

१७१४. ज्ञानदीपक । पत्र सं० २४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१ । ख भण्डार ।

विशेष—स्वाध्याय करने योग्य ग्रन्थ है ।

१७१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २३ । म् भण्डार ।

१७१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ से ६४ । ले० काल सं० १८५६ चैत बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० १५६२ । ट भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पवन निम्न प्रकार है ।

इसो ज्ञान दीपक श्रुत पढी सुखो चित्तधार ।

सब विद्या को मूल ये या विन सकल असार ॥

इति ज्ञानदीपक नामा न्यायश्रुत संपूर्ण ।

१७१७. ज्ञानदीपकवृत्ति । पत्र सं० ८ । आ० ६^१/_२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७६ । छ भण्डार ।

★

विशेष—प्रारम्भ—

नमामि पूर्णचिद्रूपं नित्योदितमनावृतं ।

सर्वाकाराभाषिभा शक्त्या लिङ्गितमीश्वरं ॥१॥

ज्ञानदीपकमादाय वृत्ति कृत्वास्तदासरैः ।

स्वरस्नेहन संशोध्यं ज्वालयेदुत्तराधरैः ॥२॥

१७१८. तर्कप्रकरण । पत्र सं० ४० । आ० १०×४^१/_२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३५८ । अ भण्डार ।

१७१९. तर्कदीपिका । पत्र सं० १५ । आ० १४×४^१/_२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १८३२ माह सुदी १३ । वे० सं० २२४ । ज भण्डार ।

१७२०. तर्कप्रमाण पत्र सं० ८ से ५० । आ० ११×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण एवं जीर्ण । वे० सं० १६४५ । अ भण्डार ।

१७२१. तर्कभाषा—केशव मिश्र । पत्र सं० ४४ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
न्याय । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ७१ । ख भण्डार ।

१७२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से २६ । ले० काल सं० १७४६ भाद्रवा बुदी १० । वे० सं० २७३ ।
ख भण्डार ।

१७२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । ले० काल सं० १६६६ ज्येष्ठ बुदी २ । वे०
सं० २२५ । ज भण्डार ।

१७२४. तर्कभाषाप्रकाशिका—बालचन्द्र । पत्र सं० ३५ । आ० १०×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५११ । अ भण्डार ।

१७२५. तर्करहस्यदीपिका—गुणरत्नसूरि । पत्र सं० १३५ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२६४ । अ भण्डार ।

विशेष—यह हरिभद्र के षड्दर्शन समुच्चय की टीका है ।

१७२६. तर्कसंग्रह—अन्नभट्ट । पत्र सं० ७ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०२ । अ भण्डार ।

१७२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८२४ भाद्रवा बुदी ५ । वे० सं० ४७ । ज
भण्डार ।

विशेष—रावल मूलराज के शासन में लक्ष्मीराम ने जैसलपुर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१७२८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८१२ माह बुदी ११ । वे० सं० ४८ । ज
भण्डार ।

विशेष—पोथी माणकचन्द सुहाड्या की है । 'लेखक विजराम पोष बुदी १३ संवत् १८१३' यह भी लिखा
हुआ है ।

१७२९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १७६३ चैत्र बुदी १५ । वे० सं० १७६५ । ट
भण्डार ।

विशेष—आमेर के नेमिताय चैत्यालय में भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य (छात्र) दोदराज ने स्वपठनार्थ
प्रतिलिपि की थी ।

१७३०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८४१ मंगसिर बुदी ४ । वे० सं० १७६८ । क
भण्डार ।

विशेष—चेला प्रतापसागर पठनार्थ ।

१७३१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८३६ । वे० सं० १७६९ । ट भण्डार ।

विशेष—सवाई माधोपुर में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति ने अपने हाथ से प्रतिलिपि की ।

नोट—उक्त ६ प्रतियों के प्रतिरिक्त तर्कसंग्रह की अ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ६१३, १८३६, २०४६) क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७४) च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३६) ज भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ४६, ४६, ३४०) ट भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १७६६, १८३२) और हैं ।

१७३२. तर्कसंग्रहटीका..... पत्र सं० ८ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४२ । अ भण्डार ।

१७३३. तार्किकशिरोमणि—रघुनाथ । पत्र सं० ८ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८० । अ भण्डार ।

१७३४. दर्शनसार—देवसेन । पत्र सं० ५ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—दर्शन ।
२० काल सं० ६६० भाद्र सुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ रचना धारानगर में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में हुई थी ।

१७३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८७१ भाद्र सुदी ५ । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—पं० बक्ष्तराम के शिष्य हरवंश न नैदिनाथ चैत्यालय (गोधी के मन्दिर) जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१७३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २८२ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टब्बा टीका सहित है ।

१७३७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ३ । ब भण्डार ।

१७३८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १८५० भाद्र सुदी ८ । वे० सं० ५ । ब भण्डार ।

विशेष—जयपुर में पं० सुखरामजी के शिष्य केसरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

१७३९. दर्शनसारभाषा—नथमल । पत्र सं० ८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—दर्शन । २० काल सं० १६२० प्र० आषाढ सुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६५ । क भण्डार ।

१७४०. दर्शनसारभाषा—पं० शिवजीलाल । पत्र सं० २८१ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—दर्शन । २० काल सं० १६२३ भाद्र सुदी १० । ले० काल सं० १६३६ । पूर्ण । वे० सं० २६४ । क भण्डार ।

१७४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२० । ले० काल × । वे० सं० २८६ । क भण्डार ।

१७४२. दर्शनसारभाषा..... पत्र सं० ७२ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—दर्शन ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८० । ख भण्डार ।

१७४३. द्विजवचनचपेटा । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ३८२ । ज भण्डार ।

१७४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १७६८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१७४५. नयचक्र—देवसेन । पत्र सं० ४५ । भा० १०३×७ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सात नयों का वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १६४३ पौष सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ३३५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम सुखबोधार्थ माला पद्धति भी है । उक्त प्रति के अतिरिक्त क भण्डार में तीन प्रतियाँ (वे० सं० ३५३, ३५४, ३५६) च छ भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १७७ व १०१) और हैं ।

१७४६. नयचक्रभाषा—हेमराज । पत्र सं० ५१ । भा० १२ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—सात नयों का वर्णन । २० काल सं० १७२६ फागुण सुदी १० । ले० काल सं० १६३८ । पूर्ण । वे० सं० ३५७ । क भण्डार ।

१७४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १७२६ । वे० सं० ३५८ । क भण्डार ।

विशेष—७७ पत्र से सत्त्वार्थ सूत्र टीका के अनुसार नय वर्णन हैं ।

नोट—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त छ, छ, ज, झ भण्डारों में एक एक प्रति (वे० सं० ३४५, १८७, ६२३, ८१) क्रमशः और हैं ।

१७४८. नयचक्रभाषा । पत्र सं० १०६ । भा० १० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । २० काल × । ले० काल सं० १६४८ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३५९ । क भण्डार ।

१७४९. नयचक्रभावप्रकाशिनीटीका—निहालचन्द अप्पवाल । पत्र सं० १३७ । भा० १२×७ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—न्याय । २० काल सं० १८६७ । ले० काल सं० १६४४ । पूर्ण । वे० सं० ३६० । क भण्डार ।

विशेष—यह टीका कानपुर कैट में की गई थी ।

१७५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०४ । ले० काल × । वे० सं० ३६१ । क भण्डार ।

१७५१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २२४ । ले० काल सं० १६३८ फागुण सुदी ६ । वे० सं० ३६२ । क भण्डार ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की गयी थी ।

१७५२. न्यायकुमुदचन्द्रोदय—भट्ट अकलंकदेव । पत्र सं० १५ । भा० १० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७ । अ भण्डार ।

विशेष—पृष्ठ १ से ६ तक न्यायकुमुदचन्द्रोदय ५ परिच्छेद तथा शेष पृष्ठों में भट्टाकलंकेशशांकांनुरमृति प्रवचन प्रवेश है ।

१७५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६४ पौष सुदी ७ । वे० सं० २७० । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई राम ने प्रतिलिपि की थी ।

१७५४. न्यायकुमुदचन्द्रिका—प्रभाचन्द्रदेव । पत्र सं० ५८८ । आ० १४ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—मट्टाकलंक कृत न्यायकुमुदचन्द्रोदय की टीका है ।

१७५५. न्यायदीपिका—धर्मभूषणयति । पत्र सं० ३ से ८ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२०७ । अ भण्डार ।

नोट—उक्त प्रति के अतिरिक्त क भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ३६७, ३६८) छ एवं च भण्डार में एक २ प्रति (वे० सं० ३४७, १८०, च भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० १८०, १८१) तथा ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५२) और है ।

१७५६. न्यायदीपिकाभाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० ७१ । आ० १४×७ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—
हिन्दी । विषय—दर्शन । २० काल सं० १६३० । ले० काल सं० १६३८ बैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३४६ । क
भण्डार ।

१७५७. न्यायदीपिकाभाषा—संघी पन्नालाल । पत्र सं० १६० । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×७ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—
हिन्दी । विषय—न्याय । २० काल सं० १६३५ । ले० काल सं० १६४१ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । क भण्डार ।

१७५८. न्यायमाला—परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री भारती तीर्थमुनि । पत्र सं० ८६ से १२७ ।
आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १६०० सावन बुदी ५ । अपूर्ण ।
वे० सं० २०६३ । अ भण्डार ।

१७५९. न्यायशास्त्र ... । पत्र सं० २ से ५२ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७६ । अ भण्डार ।

१७६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६४६ । अ भण्डार ।

विशेष—किसी न्याय ग्रन्थ से उद्धृत है ।

१७६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५ । ज भण्डार ।

१७६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६८ । ट भण्डार ।

१७६३. न्यायसार—साधवदेव (लक्ष्मणदेव का पुत्र) पत्र सं० २८ से ८७ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$
इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल सं० १७४६ । अपूर्ण । वे० सं० १३४३ । अ भण्डार ।

१७६४. न्यायसार ... । पत्र सं० २४ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१६ । अ भण्डार ।

विशेष—आगम परिच्छेद तर्कपूर्ण है ।

१७६५. न्यायसिद्धान्तमञ्जरी—जानकीनाथ । पत्र सं० १४ से ४६ । आ० ६ $\frac{१}{२}$ ×३ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १७७४ । अपूर्ण । वे० सं० १५७८ । अ भण्डार ।

१७६६. न्यायसिद्धांतमञ्जरी—भट्टाचार्य चूडामणि । पत्र सं० २८ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३ । ज भण्डार ।

विशेष—सटीक प्राचीन प्रति है ।

१७६७. न्यायसूत्र..... । पत्र सं० ४ । आ० १०×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०२६ । अ भण्डार ।

विशेष—हेम व्याकरण में से न्याय सम्बन्धी सूत्रों का संग्रह किया गया है । आशानन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१७६८. पट्टरीति—विष्णुभट्ट । पत्र सं० २ से ६ । आ० १०^३×३^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका— इति साधर्म्यं वैधर्म्यं संग्रहोऽयं निखानपि विष्णुभट्टः पट्टरीत्या बालव्युत्पत्तये कृतः । प्रति प्राचीन है ।

१७६९. पत्रपरीक्षा—विद्यानन्दि । पत्र सं० १५ । आ० १२^३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८६ । अ भण्डार ।

१७७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १६७७ आसोज बुदी ६ । वे० सं० १६४६ । ट भण्डार ।

विशेष—शेरपुरा में श्री जिन चैत्यालय में लिखलीचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१७७१. पत्रपरीक्षा—पात्र केशरी । पत्र सं० ३७ । आ० १२^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १६३४ आसोज सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ४५७ । क भण्डार ।

१७७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ४५८ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१७७३. परीक्षामुख—माणिक्यनन्दि । पत्र सं० ५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३६ । छ भण्डार ।

१७७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८६६ भाद्रमा सुदी १ । वे० सं० २१३ । च भण्डार ।

१७७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६७ से १२६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१४ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१७७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २८१ । छ भण्डार ।

१७७७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६०८ । वे० सं० १४५ । ज भण्डार ।

लेखन काल अष्टे व्योम क्षिति निर्धि भूमि ते भाद्रमासगे)

१७७८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १७३८ । ट भण्डार ।

१७७६. परीक्षामुखभाषा—जयचन्द छात्रदा । पत्र सं० ३०६ । मा० १२×७^१/_२ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—न्याय । २० काल सं० १८६३ आषाढ़ सुदी ४ । ले० काल सं० १९४० । पूर्ण । वे० सं० ४५१ । क भण्डार ।

१७८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० ४५० । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर अक्षरों में है । एक पत्र पर हाशिया पर सुन्दर बेलें हैं । अन्य पत्रों पर हाशिया में केवल रेखाएँ ही दी हुई हैं । लिपिकार ने अन्य अक्षरा छोड़ दिया प्रतीत होता है ।

१७८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १९३० मंगसिर सुदी २ । वे० सं० ५६ । च भण्डार ।

१७८२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२० । मा० १०^१/_२×५^१/_२ इञ्च । ले० काल सं० १८७८ आषाढ़ बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ५०५ । क भण्डार ।

१७८३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१८ । ले० काल × । वे० सं० ६३६ । च भण्डार ।

१७८४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १९५ । ले० काल सं० १९१६ कार्तिक बुदी १४ । वे० सं० ६४० । च भण्डार ।

१७८५. पूर्वमीमांसार्थप्रकरण-संग्रह—लोगाक्षिभास्कर । पत्र सं० ६ । मा० १२^१/_२×६^१/_२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६ । ज भण्डार ।

१७८६. प्रमाणनयतस्यालोकालंकारटीका—रत्नप्रभसूरि । पत्र सं० २८८ । मा० १२×४^१/_२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६६ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम 'रत्नाकरावतारिका' है । मूलकर्ता वादिदेव सूरि हैं ।

१७८७. प्रमाणनिर्णय..... पत्र सं० ६४ । मा० १२^१/_२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६७ । क भण्डार ।

१७८८. प्रमाणपरीक्षा—आ० विद्यानंदि । पत्र सं० ६६ । मा० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १९३४ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ४६८ । क भण्डार ।

१७८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० १७६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । इति प्रमाण परीक्षा समाप्ता । मितिराषाढमासस्यपक्षेज्यामलके तिथौ तृतीयाया प्रमाणालय परीक्षा लिखिता खलु ॥१॥

१७९०. प्रमाणपरीक्षाभाषा—भागचन्द । पत्र सं० २०२ । मा० १२^१/_२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—न्याय । २० काल सं० १९१३ । ले० काल सं० १९३८ । पूर्ण । वे० सं० ४६९ । क भण्डार ।

१७९१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१६ । ले० काल × । वे० सं० ५०० । क भण्डार ।

१७९२. प्रमाणप्रमेयकलिका—मरेन्द्रसेन । पत्र सं० ६७ । मा० १२×४^१/_२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १९३८ । पूर्ण । वे० सं० ५०१ । क भण्डार ।

१७६३. प्रमाणमीमांसा—विद्यानन्दि । पत्र सं० ४० । आ० ११३×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२ । क भण्डार ।

१७६४. प्रमाणमीमांसा..... पत्र सं० ६२ । आ० ११३×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १६५७ थावरा सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ५०२ । क भण्डार ।

१७६५. प्रमेयकमलमार्णिक—आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं० २७६ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७८ । अ भण्डार ।

विशेष—पृष्ठ १३४ तथा २७६ से आगे नहीं है ।

१७६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३८ । ले० काल सं० १६४२ ज्येष्ठ बुदी ५ । वे० सं० ५०३ । क भण्डार ।

१७६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५०४ । क भण्डार ।

१७६८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११८ । ले० काल × । वे० सं० १६१७ । ट भण्डार ।

विशेष—५ पत्रों तक संस्कृत टीका भी है । सर्वज्ञ सिद्धि में शदेहवादियों के खण्डन तक है ।

१७६९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ से ३४ । आ० १०×४३ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१४७ । ट भण्डार ।

१८००. प्रमेयरत्नमाला—अनन्तदीर्य । पत्र सं० १५६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १६३४ भाद्रपद सुदी ७ । वे० सं० ४५२ । क भण्डार ।

विशेष—परीक्षामुख की टीका है ।

१८०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२७ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० २३७ । ख भण्डार ।

१८०२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १७६७ माघ बुदी १० । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—तक्षकपुर में रत्नराशि ने प्रतिलिपि की थी ।

१८०३. बालबोधिनी—शंकर भगति । पत्र सं० १३ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६२ । अ भण्डार ।

१८०४. भावकीपिका—कृष्ण शर्मा । पत्र सं० ११ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६५ । ट भण्डार ।

विशेष—सिद्धांतमञ्जरी की व्याख्या की हुई है ।

१८०५. महाविद्याविटम्बन..... पत्र सं० १२ से १६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १५५३ फागुण सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० १६८६ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १५५३ वर्षे फागुण सुदी ११ सोमे अर्धे ह औपसन्नमध्ये एतत् पत्राणि लिखितानि सम्पूर्णानि ।

१८०६. युक्त्यनुशासन—आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं० ६ । आ० १२३×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०४ । क भण्डार ।

१८०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । ६०५ । क भण्डार ।

१८०८. युक्त्यनुशासनटीका—विद्यानन्दि । पत्र सं० १८८ । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १६३४ पौष सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६०१ । क भण्डार ।

विशेष—दादा हुलीचन्द्र ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१८०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० ६०२ । क भण्डार ।

१८१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४२ । ले० काल सं० १६४७ । वे० सं० ६०३ । क भण्डार ।

१८११. चोतरागस्तोत्र—आ० हेमचन्द्र । पत्र सं० ७ । आ० ११३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल सं० १५१२ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २५२ । अ भण्डार ।

विशेष—चित्रकूट दुर्य में प्रतिलिपि की गई थी । संवत् १५१२ वर्ष आसोज सुदी १२ दिने श्री चित्रकूट
दुर्गेऽभिषेकः ।

१८१२. वीरद्वित्रिशतिका—हेमचन्द्रसूरि । पत्र सं० ३३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
दर्शन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७७ । अ भण्डार ।

विशेष—३३ से आगे पत्र नहीं है ।

१८१३. षड्दर्शनवार्त्ता..... । पत्र सं० २८ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१ । ट भण्डार ।

१८१४. षड्दर्शनविचार..... । पत्र सं० १० । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
दर्शन । २० काल × । ले० काल सं० १७२४ माह बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ७४२ । क भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में जोधराज गोदीका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । श्लोकों का हिन्दी अर्थ भी दिया
हुआ है ।

१८१५. षड्दर्शनसमुच्चय—हरिभद्रसूरि । पत्र सं० ७ । आ० १२३×५ इञ्च । विषय—दर्शन । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०६ । क भण्डार ।

१८१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६८ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन शुद्ध एवं संस्कृत टीका सहित है ।

१८१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ७४३ । क भण्डार ।

१८१८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १५७० भाद्रवा सुदी २ । वे० सं० ३६६ । अ
भण्डार ।

१८१९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १८६४ । ट भण्डार ।

१८२०. षड्दर्शनसमुच्चयवृत्ति—गणेशतनसूरि । पत्र सं० १८५ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल सं० १६४७ द्वि० भाद्रवा सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ७११ । क भण्डार ।

१८२१. षड्दर्शनसमुच्चयटीका..... पत्र सं० ६० । आ० १२३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१० । क भण्डार ।

१८२२. संहिप्रवेदान्तशास्त्रप्रक्रिया..... पत्र सं० ४६ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल सं० १७२७ । वे० सं० ३६७ । व्य भण्डार ।

१८२३. सप्तनयावबोध—मुनि नेत्रसिंह । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन (सप्त नयों का वर्णन है) । २० काल × । ले० काल सं० १७४५ । पूर्ण । वे० सं० ३४६ । अ भण्डार ।

प्रारम्भ—

विनय-मुनि-नयस्याः सर्वभावा भुविस्था ।

जिनमतकृतिगम्या तेतेरेषां सुरम्याः ॥

उपकृतगुरुनाशस्तेष्वमाना सदा मे ।

विदधतु सुकृपांते ग्रन्थ श्रम्यमाणे ॥१॥

माददैवं प्रणम्यादौ सप्तनयावबोधकं

मं ध्रुत्वा येन मार्गेण गच्छन्ति सुधियो जनाः ॥१॥

इसके पश्चात् टीका प्रारम्भ होती है । नीयते प्राप्यते अर्थोऽनेनेति नयः एणिञ् प्रापणो इति वचनान् ।

अन्तिम—

तत्पुण्यं मुनि-धर्मकर्मनिधनं मोक्षं फलं निर्मलं ।

लब्धं येन जनेन निश्चयनयात् श्री नेत्रसिंहोदितः ॥

स्याद्वादमार्गाभिरिणो जनाः ये ओष्यन्ति शास्त्रं सप्तनयावबोधं ।

मोक्ष्यन्ति चैकांतमत्तं सुदोषं मोक्षं गमिष्यन्ति सुखेन भव्याः ॥

इति श्री सप्तनयावबोधं शास्त्रं मुनिनेत्रसिंहेन विरचितं शुभं चयं ॥

१८२४. सप्तपदार्थी..... पत्र सं० ३६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्ञेय मतानुसार सप्त पदार्थों का वर्णन है । ले० काल × । २० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८८ । व्य भण्डार ।

१८२५. सप्तपदार्थी—शिवादित्य । पत्र सं० × । आ० १०½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—दोषेयिक न्याय के अनुसार सप्त पदार्थों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६३ । ट भण्डार ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१८२६. सन्मतितर्क—मूलकर्ता सिद्धसेन दिवाकर । पत्र सं० ४८ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०३ । अ भण्डार ।

१८२७. सारसंग्रह—चरदराज । पत्र सं० २ से ७३ । आ० १०½×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८२१ । क भण्डार ।

१७२८. सिद्धान्तमुक्तावलिटीका—महादेवभट्ट । पत्र सं० ६८ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १७५६ । वे० सं० ११७२ । अ भण्डार ।

विशेष—जैनैतर ग्रन्थ है ।

१८२६. स्याद्वादचूलीका.....। पत्र सं० १५। आ० ११३×५ इंच। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-दर्शन। र० काल X। ले० काल सं० १६३० कार्तिक शुदी ५। वे० सं० २१६। अ. भण्डार।

विशेष-सागवाड़ा नगर में ब्रह्म तेजपाल के पठनार्थ लिखा गया था। समयसार के कुछ पाठों का ग्रंथ है।

१८३०. स्याद्वादसूत्री —मल्लिषेणसूरि। पत्र सं० ४। आ० १२३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ८३४। अ. भण्डार।

१८३१. प्रति सं० २। पत्र सं० ५४ से १०६। ले० काल सं० १५२१ माघ सुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० ३६६। अ. भण्डार।

१८३२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३। आ० १२×५३ इंच। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ८६१। अ. भण्डार।

विशेष-केवल कारिकाभाष्य है।

१८३३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३०। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १६०। अ. भण्डार।



विषय- पुराण साहित्य

१८३४. अजितपुराण—पंडिताचार्य अरुणमणि । पत्र सं० २७३ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । १० काल सं० १७१६ । ले० काल सं० १७८६ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २१८ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १७८६ वर्षे भिती ज्येष्ठ सुदी ६ । जहानाबादमध्ये लिखापितं मयार्य हर्षकीर्तिजी मयाराम स्वपठनार्थं ।

१८३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७ । अ भण्डार ।

विशेष—१६वें पर्व के ६४वें श्लोक तक है ।

१८३६. अजितनाथपुराण—विजयसिंह । पत्र सं० १२६ । आ० ६३×४ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—पुराण । १० काल सं० १५०५ कार्तिक सुदी १५ । ले० काल सं० १५८० चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २२८ । अ भण्डार ।

विशेष—सं० १५८० में इब्राहीम लोदी के शासनकाल में सिक्न्दराबाद में प्रतिलिपि हुई थी ।

१८३७. अनन्तनाथपुराण—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ८ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । १० काल × । ले० काल सं० १८८५ भाद्रवा सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ७४ । अ भण्डार ।

विशेष—उत्तरपुराण से लिया गया है ।

१८३८. आगामीत्रेसठशलाकापुरुषवर्णन..... । पत्र सं० ८ से २१ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८ । अ भण्डार ।

विशेष—एकसौ उनहत्तर पुरुष पुरुषों का भी वर्णन है ।

१८३९. आदिपुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र सं० ५२७ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । १० काल × । ले० काल सं० १८९४ । पूर्ण । वे० सं० ६२ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में पं० खुशालचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१८४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५०६ । ले० काल सं० १६६४ । वे० सं० १५४ । अ भण्डार ।

१८४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०४२ । अ भण्डार ।

१८४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४८१ । ले० काल सं० १६५० । वे० सं० ५६ । क भण्डार ।

१८४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४३७ । ले० काल × वे० सं० ५७ । क भण्डार ।

विशेष—देहली में सन्तलानजी की कोठी पर प्रतिलिपि हुई थी ।

१८४४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४७१ । ले० काल सं० १६१४ बैशाख सुदी १० । वे० सं० ६ । अ
भण्डार ।

विशेष—हाथरस नगर में टीकाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१८४५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४६१ । ले० काल सं० १८६४ चैत्र सुदी ५ । वे० सं० २५० । अ
भण्डार ।

विशेष—मेठ चम्पाराम ने ब्राह्मण श्यामलाल शर्मा से अपने पुत्र पौलवि के गणनार्थ प्रतिलिपि करायी ।
प्रशस्ति काफी बड़ी है । भरतखण्ड का नक्शा भी है जिस पर सं० १७८४ जेठ सुदी १० लिखा है । वहीं कहीं कठिन
शब्दों का संस्कृत में अर्थ भी दिया है ।

१८४६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१६ । ले० काल X । जीर्ण । वे० सं० १४६ । अ भण्डार ।

१८४७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १६०४ मंगसर सुदी ६ । वे० सं० २५२ । अ
भण्डार ।

१८४८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ४१० । ले० काल सं० १८०४ पीष सुदी ४ । वे० सं० ४५१ । अ
भण्डार ।

विशेष—नैणसालर ने प्रतिलिपि की थी

१८४९. प्रति सं० १० । पत्र सं० २०६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १८८८ । ट भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०४२) क भण्डार में एक प्रति
(वे० सं० १५५) ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६) च भण्डार में ३ अपूर्ण प्रतियाँ (वे० सं० ३०, ३१, ३२)
ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६८६) और है ।

१८५०. आदिपुराण टिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० २७ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८०१ । अ भण्डार ।

१८५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८७७ । अ भण्डार ।

१८५२. आदिपुराणटिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ५२ से ६२ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २६ । च भण्डार ।

विशेष—पुष्पदन्त कृत आदिपुराण का टिप्पण है ।

१८५३. आदिपुराण—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र सं० ३२५ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—पुराण । २० काल X । ले० काल सं० १६३० भाद्रवा सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ५३ । क भण्डार ।

१८५४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २ । ख भण्डार ।

विशेष—कीम में कई पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन है । साहब्यहराज ने पंचमी प्रतोषापनार्थ कर्मलय
निमित्त यह ग्रन्थ लिखाकर महात्मा लोमचन्द को भेंट किया ।

१८५५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ५४ । क भण्डार ।

१८५६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६५ । ले० काल सं० १७१६ । वे० सं० २६३ । अ मण्डार ।

विशेष—कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

१८५७. आदिपुराण—पं० दौलतराम । पत्र सं० ४०० । आ० १५×६३ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य ।

विषय—पुराण । २० काल सं० १८२४ । ले० काल सं० १८८३ भाव सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ५ । ग मण्डार ।

विशेष—सम्पूर्ण साह ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१८५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४६ । ले० काल × । वे० सं० १४६ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के तीन पत्र नवीन लिखे गये हैं ।

१८५९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५०६ । ले० काल सं० १८२४ आसोज सुदी ११ । वे० सं० १५२ ।

छ मण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त ग मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६) छ मण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ६७, ६८, ६९, ७०) च मण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५१८, ५१९) छ मण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५५) तथा झ मण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ८६, १४६) और हैं । ये सभी प्रतियां अपूर्ण हैं ।

१८६०. उत्तरपुराण—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ४२६ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३० । अ मण्डार ।

१८६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८३ । ले० काल सं० १९०६ आसोज सुदी १३ । वे० सं० ८ । च मण्डार ।

विशेष—बीच में २ पृष्ठ नये लिखाकर रखे गये हैं । काष्ठासंधी भाधुरान्धयी भट्टारक श्री उद्धरसेन की यहीं प्रशस्ति दी हुई है । जहांगीर बादशाह के शासनकाल में चौहानाराज्यान्तर्गत अलाउपुर (अलवर) के तिजारा नामक ग्राम में श्री आदिनाथ भट्टालय में श्री गौरा ने प्रतिलिपि की थी ।

१८६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४० । ले० काल सं० १६३५ भाद्रपद सुदी ५ । वे० सं० ५६० । छ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संकेतार्थ दिया है ।

१८६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३०६ । ले० काल सं० १८२७ । वे० सं० १ । छ मण्डार ।

विशेष—भवाई जयपुरमें महाराजा पृथ्वीसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई । सा० हेमराज ने संतोषराम के शिष्य बसंतराम को भेंट किया । कठिन शब्दों के संस्कृत में अर्थ भी दिये हैं ।

१८६४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५३ । ले० काल सं० १८८८ सावण सुदी १३ । वे० सं० ६ । छ मण्डार ।

विशेष—सांगानेर में नोनदराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

१८६५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८४ । ले० काल सं० १६१७ वैश्व सुदी १ । वे० सं० ८३ । अ मण्डार ।

विशेष—भट्टारक जयकीर्ति के शिष्य ब्रह्मकल्याणभट्टारक ने प्रतिलिपि की थी ।

१८६६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३६६ । ले० काल सं० १७०६ फागुण सुदी १० । वे० सं० ३२४ ।
अ मण्डार ।

विशेष—पाँडे गार्डन ने प्रतिलिपि की थी । कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

१८६७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३७२ । ले० काल सं० १७१८ भाद्रपद सुदी १२ । वे० सं० २७२ ।
अ मण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त अ, क और छ मण्डार में एक-एक प्रति (वे० सं० ६२४, ६७३, ७७) और हैं । सभी प्रतियाँ भूपूर्ण हैं ।

१८६८. उत्तरपुराणटिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ५७ । पृ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल सं० १०८० । ले० काल सं० १५७५ भाद्रपद सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ५४ । अ मण्डार ।

विशेष—गुप्तदत्त कृत उत्तरपुराण का टिप्पण है । लेखक प्रशस्ति—

श्री विक्रमादित्य संवत्सरे वर्षाणामशीत्यधिक सहस्रे महापुराणविषमपदविवरणसागरमेतसंज्ञातान् परि-
ज्ञाय मूलटिप्पणकांवावलोक्य कृतमिदं समुच्चयटिप्पणं । अज्ञपातभीतेन श्रीमद् बलात्कारभण्णश्रीसंघाचार्य सत्कवि
शिष्येण श्रीचन्द्रमुनिना निज दोर्ध्वाभिभूतरिपुराज्यविजयिनः श्रीभोजदेवस्य ॥ १०२ ॥

इति उत्तरपुराणटिप्पणकं प्रभाचन्द्राचार्यविरचितसंभाषितं ॥ अथ संवत्सरेस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्द
संवत् १५७५ वर्षे भाद्रपद सुदी ५ बुधदिने कुरुजांगलदेशे सुलितान सिकंदर पुत्र सुलितानब्राह्मपुराज्यप्रवर्तमाने श्री काष्ठा-
संघे मायुरान्वये पुष्करगणे भट्टारके श्रीगुणभद्रसूरिदेवाः तदाम्नाये जैसवालु चौ० जगसी पुत्रु चौ० टोडरमल्लु इदं
उत्तरपुराण टीका लिखारितं । शुभं भवतु । मागत्यं दधति लेखक पाठकयोः ।

१८६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० १४५ । अ मण्डार ।

विशेष—श्री जयसिंहदेवराज्ये श्रीमद्वारानिवासिना परापरभेदप्रणामोपाजितामलपुष्पनिराकृताश्लिष्यमल
कलंकेन श्रीमत् प्रभाचन्द्र पंडितेन महापुराण टिप्पणकं सतश्वधिक सहस्रत्रय प्रमाणं कृतमिति ।

१८७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० १८७६ । ट मण्डार ।

१८७१. उत्तरपुराणभाषा—खुशालचन्द । पत्र सं० ३१० । पृ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—पुराण । २० काल सं० १७८६ मंगसिर सुदी १० । ले० काल सं० १८२८ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं०
७४ । क मण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति में खुशालचन्द का ५३ पद्यों में विस्तृत परिचय दिया हुआ है । बस्तावरलाल ने जयपुर
में प्रतिलिपि की थी ।

१८७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२० । ले० काल सं० १८८३ वैशाख सुदी ३ । वे० सं० ७ । ग
मण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१८७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४१५ । ले० काल सं० १८६६ मंगसिर सुदी १ । वे० सं० ६ । घ भण्डार ।

१८७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३७४ । ले० काल सं० १८५८ कार्तिक बुदी १३ । वे० सं० १८ । छ भण्डार ।

१८७५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४०४ । ले० काल सं० १८६७ । वे० सं० १३७ । झ भण्डार ।

विशेष—च भण्डार में तीन अपूर्ण प्रतियाँ (वे० सं० ५२२, ५२३, ५२४) और हैं ।

१८७६. उत्तरपुराणभाषा—संधी पन्नालाल । पत्र सं० ७६३ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी मद्य । विषय—पुराण । २० काल सं० १६३० आपाद सुदी ३ । ले० काल सं० १६४५ मंगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ७५ । क भण्डार ।

१८७७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८० । ख भण्डार ।

विशेष—५३४वाँ पत्र नहीं है । कितने ही पत्र तयौन लिले हुये हैं ।

१८७८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४६६ । ले० काल × । वे० सं० ८१ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १६७ पत्र नीले रंग के हैं । यह संशोधित प्रति है । छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७६) घ भण्डार में दो प्रतियाँ (वे० सं० ५२१, ५२५) तथा झ भण्डार में एक प्रति और है ।

१८७९. चन्द्रप्रभपुराण—हीरालाल । पत्र सं० ३१२ आ० १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । २० काल सं० १६१३ भादेवा बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६ । क भण्डार ।

१८८०. जिनेन्द्रपुराण—भट्टारक जिनेन्द्रभूषण । पत्र सं० ६६० । आ० १६×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १८४२ फागुण बुदी ७ । वे० सं० ६४ । ज भण्डार ।

विशेष—जिनेन्द्रभूषण के प्रशिष्य ब्रह्महर्षिसागर के भाई थे । १६५ अधिकार हैं । पुराण के विभिन्न विषय हैं ।

१८८१. त्रिषष्टिस्मृति—महापंडित आशाधर । पत्र सं० २४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल सं० १२६२ । ले० काल सं० १८१५ शक सं० १६८० । पूर्ण । वे० सं० २३१ । अ भण्डार ।

विशेष—नलकण्ठपुर में श्री नेमिजिनचैत्यालय में ग्रन्थ की रचना की गई थी । लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

१८८२. त्रिषष्टिशलाकापुरुषवर्णन... पत्र सं० ३७ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६५ । ट भण्डार ।

विशेष—३७ से आगे पत्र नहीं हैं ।

१८८३. नेमिनाथपुराण—भागचन्द । पत्र सं० १६६ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी मद्य । विषय—पुराण । २० काल सं० १६०७ सावन बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । ड भण्डार ।

१८८४. नेमिनाथपुराण—अ० जिनदास । पत्र सं० २६२ । आ० १४×२३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । छ भण्डार ।

१८८५. नेमिपुराण (हरिवंशपुराण)—अज्ञा नेमिदत्त । पत्र सं० १६० । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १६४७ ज्येष्ठ सुदी ११ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० १४६ । अ
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १६४७ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ११ बुधवासरे श्री मूलसंघे नंदास्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दा-
चार्यान्वये भट्टारके श्रीपद्मनन्दि देवातत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा
द्वितीय शिष्य मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवा तत्शिष्य मंडलाचार्य श्रीभुवनकीर्तिदेवा तत्शिष्य मंडलाचार्य श्रीधर्मकीर्तिदेवा
द्वितीयशिष्य मंडलाचार्य श्रीविशालकीर्तिदेवा तत्शिष्य मंडलाचार्य श्रीलक्ष्मीचन्द्रदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीसहनकीर्तिदेवा
तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री श्री नेमचन्द्र तदास्नाये अंगरवालान्वये मुगिलगोत्रे साह जीणा तस्य भार्या ठाकुरही तयो पुत्राः
पंच । प्रथम पुत्र सा. खेता तस्य भार्या छाताही । सा. जीणा द्वितीय पुत्र सा. जेता तस्य भार्या वाधाही तयो पुत्राः त्रय
प्रथम पुत्र सा. देहदास तस्य भार्या नाताही तयोः पुत्रावयः प्रथमपुत्र चि० सिरवंत द्वितीयपुत्र चि० मांगा तृतीयपुत्र चि०
चतुरा । द्वितीयपुत्र साह पूना तस्य भार्यागुजरही तृतीयपुत्र सा. सीमा तस्य भार्या मानु । सा. जीणा तस्य तृतीयपुत्र सा.
सातु तस्य भार्या नान्धगही तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र सा. गोविंदा तस्य भार्या पदर्यही तयो पुत्र चि० धर्मदास द्वि० पुत्र
चि० मोहनदास । सा. जीणातरय चतुर्थपुत्र सा. मरू तस्य भार्या नीवाही तयोपुत्राः त्रय प्रथमपुत्र सा. उत्मा तस्य भार्या
धनराजही तयोपुत्र चि० दूरगदास द्वितीयपुत्र सा. महीदास तस्यभार्या उदाही तृतीयपुत्र सा. टेमा तस्य भार्या मोरवणही ।
सा. जीणा तस्य पंचमपुत्र सा. साधू तस्यभार्या होलाही तयोपुत्र चि० सोवलदास तस्यभार्या पूराही एतेषां मध्ये सा.
मल्लुतेनेदं शास्त्रे हरिवंशपुराणव्यं ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्तं मंडलाचार्य श्री श्री श्री लक्ष्मीचन्द्रतस्यशिष्या अजिका शक्ति
श्री योग्य घटापितं ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्तं ।

१८८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२७ । ले० काल सं० १६६३ आसोज सुदी ३ । वे० सं० ३८७ । छ
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति वाला पत्र बिलकुल फटा हुआ है ।

१८८७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५७ । ले० काल सं० १६४६ माघ सुदी १ । वे० सं० १८६ । छ
भण्डार ।

विशेष—यह प्रति अम्बावती (अमेर) में महाराजा मानसिंह के शासनकाल में नेमिनाथ चैत्यालय में
लिखी गई थी । प्रशस्ति अपूर्ण है ।

१८८८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८८ । ले० काल सं० १८३४ पीष सुदी १२ । वे० सं० ३१ । छ
भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३८) अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं०
१२) तथा अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३१३) और हैं ।

१८८६. पद्मपुराण—रविशेषाचार्य । पत्र सं० ८७६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १७०८ चैत्र सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ६३ । अ भण्डार ।

विशेष—टोडा ग्राम निवासी साहू खोबसी ने प्रतिलिपि कराकर पं० श्री हर्ष कल्याण को भेंट किया ।

१८८७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६५ । ले० काल सं० १८८२ आसोज सुदी ६ । वे० सं० ५२ । अ भण्डार ।

विशेष—जैतराम साहू ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि करवाई थी ।

१८८८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४४५ । ले० काल सं० १८८५ भाद्रपद सुदी १२ । वे० सं० ४२२ । अ भण्डार ।

१८८९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७६८ । ले० काल सं० १८९२ सावन सुदी १० । वे० सं० १८२ । अ भण्डार ।

विशेष—चौधरियों के चैत्यालय में पं० गोरधनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१८९०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८१ । ले० काल सं० १७९२ आसोज सुदी ८ । वे० सं० १८३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रमवाल जातीय किसी आसक ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४२६) तथा अ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ४२३, ४२५) और हैं ।

१८९१. पद्मपुराण (रामपुराण)—भट्टारक सोमसेन । पत्र सं० ५२० । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल धाक सं० १६५६ आषाढ सुदी १३ । ले० काल सं० १८६८ आषाढ सुदी १८ । पूर्ण । वे० सं० २४ । अ भण्डार ।

१८९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५३ । ले० काल सं० १८२५ ज्येष्ठ सुदी ३३ । वे० सं० ४२५ । क भण्डार ।

विशेष—योगी महेंद्रकीर्ति के प्रसाद से यह रचना की गई ऐसा स्वयं लेखक ने लिखा है । लेखक प्रवासी कटी हुई है ।

१८९३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०० । ले० काल सं० १८३६ वैशाख सुदी ११ । वे० सं० ८ । अ भण्डार ।

विशेष—आचार्य रत्नकीर्ति के शिष्य नेमिनाथ ने सांगानेर में प्रतिलिपि की थी ।

१८९४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २५७ । ले० काल सं० १७६४ आसोज सुदी १३ । वे० सं० २१२ । अ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में गोधों के मन्दिर में प्रतिलिपि हुई ।

१८६८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५७ । ले० काल सं० १७६४ आसोज सुदी १३ । वे० सं० ३१२ ।
व्य भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में गोर्धों के मन्दिर में महराम ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त छ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४२५, ४२६) च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०४) तथा छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६) और हैं ।

१८६९. पद्मपुराण—भ० धर्मकीर्ति । पत्र सं० २०७ । आ० १३×६^१/_२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
पुराण । २० काल सं० १८३५ कार्तिक सुदी १३ । वे० सं० ३ । छ भण्डार ।

विशेष—जीवनराम ने रामगढ़ नगर में प्रतिलिपि की थी ।

१९००. पद्मपुराण (उत्तरखण्ड) । पत्र सं० १७६ । आ० ६×४^१/_२ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२३ । छ भण्डार ।

विशेष—वैष्णव पद्मपुराण है । बीचके कुछ पत्र चूहोंने काट दिये हैं । अन्त में श्रीकृष्ण का वर्णन भी है ।

१९०१. पद्मपुराणभाषा—पं० दौलतराम । पत्र सं० ४६६ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।
२० काल सं० १८२३ माघ सुदी ६ । ले० काल सं० १९१८ । पूर्ण । वे० सं० २२०४ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजा रामसिंह के शासनकाल में पं० शिवदीनजी के समय में मोतीलाल गोदीका के पुत्र श्री
धर्मचन्द्र ने हीरालाल कासलीवाल से प्रतिलिपि कराकर पाटौदी के मन्दिर में चढ़ाया ।

१९०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४१ । ले० काल सं० १८८२ आसोज सुदी ६ । वे० सं० ५४ । ग
भण्डार ।

विशेष—जैतराम साहू ने सबार्दराम गोधा से प्रतिलिपि करवायी थी ।

१९०३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५१ । ले० काल सं० १८६७ । वे० सं० ४२७ । छ भण्डार ।

विशेष—इन प्रतियों के अतिरिक्त अ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ४१०, २२०३) क और ग भण्डार
में एक एक प्रति (वे० सं० ४२४, ५३) घ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५५, ५६) च और ज भण्डार में दो
तथा एक प्रति (वे० सं० ६२३, ६२४, व २५२) तथा झ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १६, ८८) और हैं ।

१९०४. पद्मपुराणभाषा—सुशालचन्द्र । पत्र सं० २०६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—पुराण । २० काल सं० १७८३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८७ । अ भण्डार ।

१९०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०६ से २६७ । ले० काल सं० १८४५ सावन सुदी ५५ । वे० सं०
७८२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल में हुई थी ।

इसी भण्डार में (वे० सं० ३४१) पर एक अपूर्ण प्रति और है ।

१६०६. पारहवपुराण—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र सं० १७३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल सं० १६०८ । ले० काल सं० १७२१ फागुण बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६२ । अ भण्डार ।
विशेष—ग्रन्थ की रचना श्री शाकयाटपुर में हुई थी । पत्र १३५ तथा १३७ बाव में सं० १८८६ में पुनः लिखे गये हैं ।

१६०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३०० । ले० काल सं० १८२६ । वे० सं० ४६५ । क भण्डार ।
विशेष—ग्रन्थ ब्रह्मश्रीपाल की प्रेरणा से लिखा गया था । महानन्द ने इसका संशोधन किया ।
१६०८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०२ । ले० काल सं० १६१३ चैत्र बुदी १० । वे० सं० ४४५ । क भण्डार ।

विशेष—एक प्रति ४ भण्डार में (वे० सं० २०६०) और है ।

१६०९. पारहवपुराण—भ० श्रीभूषण । पत्र सं० २४६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल सं० १६५० । ले० काल सं० १८०० मंगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २३७ । अ भण्डार ।
विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है । पत्र बढकरो हैं ।

१६१०. पारहवपुराण—यशःकीर्ति । पत्र सं० ३४० । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

१६११. पारहवपुराणभाषा—बुलाकीदास । पत्र सं० १४६ । आ० १३×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । २० काल सं० १७५४ । ले० काल सं० १८१२ । पूर्ण । वे० सं० ४६२ । अ भण्डार ।
विशेष—अन्तिम ५ पन्नों में बार्देस परीषद् वर्णन भाषा में है ।

अ भण्डार में इसकी एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १११८) और है ।

१६१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५२ । ले० काल सं० १८८६ । वे० सं० ५५ । ग भण्डार ।

विशेष—कानूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१६१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०० । ले० काल × । वे० सं० ४४६ । क भण्डार ।

१६१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४६ । ले० काल × । वे० सं० ४४७ । क भण्डार ।

१६१५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५७ । ले० काल सं० १८६० मंगसिर बुदी १० । वे० सं० ६२६ । क भण्डार ।

१६१६. पारहवपुराण—पञ्चालाल चौधरी । पत्र सं० २२२ । आ० १३×८½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । २० काल सं० १८२३ बैशाख बुदी २ । ले० काल सं० १८३७ पौष बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ४६३ । क भण्डार ।

१६१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२० । ले० काल सं० १८४६ कार्तिक सुदी १५ । वे० सं० ४६४ । क भण्डार ।

विशेष—रामरत्न पाराशर ने प्रतिलिपि की थी ।

क भण्डार में इसकी एक प्रति (वे० सं० ४४८) और है ।

१६१८. पुराणसार—श्रीचन्द्रमुनि । पत्र सं० १०० । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल सं० १०७७ । ले० काल सं० १६०६ आषाढ़ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २३६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रामेर (आम्नगढ़) के राजा भारामल के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

१६१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १५४३ फाल्गुण वृदी १० । वे० सं० ४७१ । क भण्डार ।

१६२०. पुराणसारसंग्रह—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० १५६ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × ; ले० काल सं० १८५६ मंगसिर वृदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ४६६ । क भण्डार ।

१६२१. बालपद्मपुराण—पं० पद्मलाल बाकलीवाल । पत्र सं० २०३ । आ० ८×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १६०६ चैत्र सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ११३८ । अ भण्डार ।

विशेष—लिपि बहुत सुन्दर है । कलकत्ते में रामप्रधीन (रामादीन) ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२२. भागवत द्वादशम् स्कंध टीका..... । पत्र सं० ३१ । आ० १४×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७८ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्रों के बीच में मूल तथा ऊपर नीचे टीका दी हुई है ।

१६२३. भागवतमहापुराण (सप्तमस्कंध)..... । पत्र सं० ६७ । आ० १४३×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०८८ । ट भण्डार ।

१६२४. प्रति सं० २ (षष्ठम स्कंध)..... । पत्र सं० ६२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०२६ । ट भण्डार ।

विशेष—बीच के कई पत्र नहीं हैं ।

१६२५. प्रति सं० ३ । (पञ्चम स्कंध)..... । पत्र सं० ८३ । ले० काल सं० १८३० चैत्र सुदी १२ । वे० सं० २०६० । ट भण्डार ।

विशेष—जीवे सरूपराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२६. प्रति सं० ४ (अष्टम स्कंध)..... । पत्र सं० ११ से ४७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६१ । ट भण्डार ।

१६२७. प्रति सं० ५ (तृतीय स्कंध)..... । पत्र सं० ६७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६२ । ट भण्डार ।

विशेष—६७ से आगे पत्र नहीं हैं ।

वे० सं० २०८८ से २०६२ तक ये सभी स्कंध श्रीधर स्वामी कृत संस्कृत टीका सहित हैं ।

१६२८. भागवतपुराण..... । पत्र सं० १४ से ६३ । आ० १०३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१०६ । ट भण्डार ।

विशेष—६०वां पत्र नहीं है ।

१६२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० २११३ । ट भण्डार ।

विशेष—द्वितीय स्कंध में तृतीय अध्याय तक की टीका पूर्ण है ।

१६३०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० से १०५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७२ । ट भण्डार ।

विशेष—तृतीय स्कंध है ।

१६३१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम स्कंध के द्वितीय अध्याय तक है ।

१६३२. मल्लिनाथपुराण—सकलकीर्ति । पत्र सं० ४२ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । २० काल × । ले० काल १८८८ । वे० सं० २०८ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८३६) और है ।

१६३३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १७२० माघ सुदी १४ । वे० सं० ५७१ । क भण्डार ।

१६३४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १६६३ मंगसिर सुदी ६ । वे० सं० ५७२ ।

विशेष—उदयचन्द लुहाड़िया ने प्रतिलिपि करके दीनाराम अमरचन्दजी के मन्दिर में रखी ।

१६३५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८१० फागुण सुदी ३ । वे० सं० १३६ । ख भण्डार ।

१६३६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १८८१ सावण सुदी ८ । वे० सं० १३६ । ख भण्डार ।

१६३७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १८६१ सावण सुदी ८ । वे० सं० ५८७ । क भण्डार ।

विशेष—जयपुर में शिवलाल मोघा ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

१६३८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० १२ । ख भण्डार ।

१६३९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३२ । ले० काल सं० १७८६ ज्येष्ठ सुदी ३ । वे० सं० २१० । अ भण्डार ।

१६४०. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ४० । ले० काल सं० १८६१ भाद्रपद सुदी ४ । वे० सं० १५२ । ख भण्डार ।

विशेष—शिवलाल साहू ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई थी ।

१६४१. मल्लिनाथपुराणभाषा—सेवाराम पाटनी । पत्र सं० ३६ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा—
हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८८ । अ भण्डार ।

१६४२. महापुराण (संक्षिप्त) पत्र सं० १७ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५८९ । क भण्डार ।

१६४३. महापुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र सं० ७०४ । आ० १४×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७ ।

विशेष—ललितकीर्ति वृत्त टीका सहित है ।

घ भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७८) और है ।

१६४४. महापुराण—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र सं० ५१४ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा—अग्रेभण । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०१ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र जीर्ण होगये हैं ।

१६४५. मार्कण्डेयपुराण..... । पत्र सं० ३२ । आ० ६×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १८२६ कार्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २७३ । छ भण्डार ।

विशेष—ज भण्डार में इसकी दो प्रतियाँ (वे० सं० २२३, २४६,) और हैं ।

१६४६. मुनिसुव्रतपुराण—ब्रह्मचारी कृष्णदास । पत्र सं० १०४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल सं० १६८१ कार्तिक सुदी १३ । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० ५७८ । क भण्डार ।

१६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२७ । ले० काल × । वे० सं० ७ । छ भण्डार ।

विशेष—काव का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

१६४८. मुनिसुव्रतपुराण—इन्द्रजीत । पत्र सं० ३२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । २० काल सं० १८४५ पौष बुदी २ । ले० काल सं० १८४७ आषाढ बुदी १२ । वे० सं० ४७५ । ज भण्डार ।

विशेष—रतनलाल ने वटेरपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१६४९. लिंगपुराण..... । पत्र सं० १३ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैनेतर पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४७ । ज भण्डार ।

१६५०. वर्द्धमानपुराण—सकलकीर्ति । पत्र सं० १५१ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १८७७ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६० । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महात्मा शंभुराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३० । ले० काल १८७१ । वे० सं० ६४६ । क भण्डार ।

१६५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८२ । ले० काल सं० १८६८ सावन सुदी ३ । वे० सं० ३२८ । घ भण्डार ।

१६५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११३ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ४ । छ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में पं० नोनदराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४३ । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० ५ । छ भण्डार ।

१६५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४१ । ले० काल सं० १७८५ कार्तिक वृदी ४ । वे० सं० १५ । अ
भण्डार ।

१६५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११६ । ले० काल X । वे० सं० ४६३ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री० शुभचन्द्रजी, चोखचन्द्रजी, रायचन्द्रजी की पुस्तक है । ऐसा लिखा है ।

१६५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १८३६ । वे० सं० १८६१ । ट भण्डार ।

विशेष—सवाई माधोपुर में भ० सुरेन्द्रकीर्ति ने आदिनाथ चैत्यालय में लिखवायी थी ।

१६५८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १६६८ भाद्रपद सुदी १२ । वे० सं० १८६३ ।

ट भण्डार ।

विशेष—आमड महादेश के सागपलन नगर में भ० सकलचन्द्र के उपदेश से हुबहुजातीय बजियारा गोक
वाले साहू भाका भार्या बाई नायके ने प्रतिलिलिपि करवायी थी ।

इस ग्रन्थ की घ और च भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १९६, १९७) अ भण्डार में २ प्रतियाँ
(वे० सं० ३२, ४६) और हैं ।

१६५९. वर्द्धमानपुराण—पं० केशरीसिंह । पत्र सं० ११८ । आ० ११X८ इअ । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—पुराण । २० काल सं० १८७३ फागुण सुदी १२ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६४७ ।

विशेष—बालचन्द्रजी छाबड़ा दीवान जयपुर के पौत्र ज्ञानचन्द्र के आग्रह पर इस पुराण की भाषा रचना
की गई ।

अ भण्डार में तीन अपूर्ण प्रतियाँ (वे० सं० ६७४, ६७५, ६७६) अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं०
१५६) और हैं ।

१६६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १७७३ । वे० सं० ६७० । क भण्डार ।

१६६१. वासुपूज्यपुराण..... पत्र सं० ६ । आ० १२३X८ इअ । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण ।
२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १५८ । क भण्डार ।

१६६२. विमलनाथपुराण—ब्रह्मकृष्णदास । पत्र सं० ७५ । आ० १२X५१ इअ । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल सं० १६७४ । ले० काल सं० १८३१ वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३१ । अ भण्डार ।

१६६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १८६७ चैत्र वृदी ८ । वे० सं० २६ । अ
भण्डार ।

१६६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १६६६ ज्येष्ठ वृदी ६ । वे० सं० १८ । क
भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थकार का नाम ब० कृष्णजिष्णु भी दिया है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६६६ वर्षे ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे श्री वेमलासा महानगरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्रीमत् काष्ठसंवे
नदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारके श्री रामसेनानन्दये एतदनुक्रमेण भ० श्री रत्नभूषण तत्पट्टे भ० श्री जयकीर्ति ब० श्री

मंगलाग्रज स्वविराचार्य श्री केदारसेन तत् शिष्यो गण्ध्याय श्री विष्वकीति तत्पुत्र भा० ब्र० श्री दीपजी ब्रह्म श्री राजसागर
मुक्तै लिखितं स्वज्ञानाधार्य कर्मक्षमार्थ । भ० श्री ५ विश्वसेन तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री ५ जयकीर्ति पं० दीरचन्द्र पं०
मयाचंद पुनः आत्म पठनार्थ ।

१६६४. शान्तिनाथपुराण—महाकवि अशग । पत्र सं० १४३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल शक संवत् ६१० । ले० काल सं० १५५३ भादवा बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । अ
भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—संवत् १५५३ वर्ष भादवा यदि बारीस रवी अर्ध ह श्री गंधारमन्थे लिखितं पुस्तकं लेखक
गणकया चिन्मजीयान् । श्री मूलसंघे श्री कुंदकुन्दाचार्यान्वये सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री पद्मनंददेवास्तत्पट्टे
भट्टारक श्री मुभवन्ददेवास्तत्पट्टे भट्टारक जिनचन्ददेवास्त्रिष्य मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवास्तज्जिष्य ब० लाला पठनार्थ
हुंवड ग्यासीय श्री० हापा भार्या संपूरित श्रुत श्रेष्ठ धना सं० धावर सं० सोमा श्रेष्ठ धना तस्य पुत्र कीरसाल भा० वनादे
नयो पुत्रः विद्याधर द्वितीयः पुत्र चर्मधर एतैः सर्वैः शान्तिपुराणं लखाप्य पात्राय दत्तं ।

ज्ञानवान ज्ञानदानेन निर्मयोऽभयदानतः ।

अनदानात् सुखी नित्यं निर्व्याधी भेषजाद्भवेत् ॥१॥

१६६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४४ । ले० काल सं० १८६१ । वे० सं० ६८७ । क भण्डार ।

विशेष—इस ग्रन्थ की ऊ, व्य और ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ७०४, १६, १६३५) और है ।

१६६७. शान्तिनाथपुराण—खुशालचन्द्र । पत्र सं० ५१ । आ० १२ $\frac{1}{2}$ ×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—उत्तरपुराण में से है ।

ट भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १८६१) और है ।

१६६८. हरिवंशपुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र सं० ३१४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल शक सं० ७०५ । ले० काल सं० १८३० माघ सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० २१६ । अ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियों का सम्मिश्रण है । जयपुर नगर में पं० हूंगरसी के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की
गई थी ।

इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ८६८) और है ।

१६६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२४ । ले० काल सं० १८३६ । वे० सं० ८५२ । क भण्डार ।

१६७०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २८७ । वे० काल सं० १८६० ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० सं० १३२ । ब
भण्डार ।

विशेष—गोदाचल नगर में ब्रह्मगंभीरसागर से प्रतिलिपि की थी ।

१६७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४२ से ५१७ । ले० काल सं० १६२५ कार्तिक सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ४४७ । च भण्डार ।

विशेष—श्री पूरणमल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४४६) और है ।

१६७२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २७४ से ३१३, ३४१ से ३४३ । ले० काल सं० १६६३ कार्तिक सुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ७६ । छ भण्डार ।

१६७३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २४३ । ले० काल सं० १६५३ चैथ सुदी २ । वे० सं० २६० । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजाविराज मानसिंह के शासनकाल में सांगानेर में आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

उक्त प्रतिओं के अनतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४४६) छ भण्डार में दो प्रतियाँ (वे० सं० ७६ में) और हैं ।

१६७४. हरिवंशपुराण—ब्रह्मजिनदास । पत्र सं० १२८ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वे० सं० २१३ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ जोधराज पाटोदी के बनाये हुये मन्दिर में प्रतिलिपि करवाकर विराजमान किया गया । प्राचीन अपूर्ण प्रति को पीछे पूर्ण किया गया ।

१६७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५७ । ले० काल सं० १६६१ आसोज सुदी ६ । वे० सं० १३१ । अ भण्डार ।

विशेष—वेदपल्ली शुभस्थाने पार्वताथ चैत्यालये काष्ठासंधे नंदीतटग्रन्थे विद्यागणो रामसेनान्वये..... आचार्य कल्याणकीर्तिना प्रतिलिपि कृत ।

१६७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४६ । ले० काल सं० १८०४ । वे० सं० १३३ । अ भण्डार ।

विशेष—देहली में प्रतिलिपि की गई थी । लिपिकार ने महम्मदशाह का शासनकाल होना लिखा है ।

१६७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६७ । ले० काल सं० १७३० । वे० सं० ४४८ । च भण्डार ।

१६७८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५२ । ले० काल सं० १७८३ कार्तिक सुदी ५ । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—साहू मल्लूकचन्दजी के पठनार्थ बौली ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी । अ० जिनदास म० सकलकीर्ति के विषय थे ।

१६७९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २६८ । ले० काल सं० १५३७ पौष सुदी ३ । वे० सं० ३३३ । च भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—सं० १५३७ वर्षे पौष सुदी २ सोमे श्री मूलसंधे बजात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री

कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० सकलकीर्तिदेवा भ० भुवन्कीर्तिदेवाः ५० श्री ज्ञानपूषणो ज्ञानमुनि जयनन्दि पठनार्थ । हूँब्र
जातीय.....।

१६८०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१३ । ले० काल सं० १६३७ माह बुदी १३ । वे० सं० ४६१ । अ
भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति विस्तृत है ।

उक्त प्रतियों के अतिरिक्त क, छ एवं झ भण्डारों में एक एक प्रति (वे० सं० ८५१, ८०६, ८७)
भी हैं ।

१६८१. हरिवंशपुराण—श्री भूषण । पत्र सं० ३४५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४६१ । अ भण्डार ।

१६८२. हरिवंशपुराण—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० २७१ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १६५७ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ८५० । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

१६८३. हरिवंशपुराण—धवल । पत्र सं० ५०२ से ५२३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६६ । अ भण्डार ।

१६८४. हरिवंशपुराण—यशःकीर्ति । पत्र सं० १६६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १५७३ । फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६८ ।

विशेष—तिजारा ग्राम में प्रतिलिपि की गई थी ।

यद्य संवत्सरेऽस्मिन् राज्ये संवत् १५७३ वर्षे फाल्गुणि शुदि ६ रविवासरे श्री तिजारा स्थाने । मलाव-
लक्षो राज्ये श्री काष्ट। अपूर्ण ।

१६८५. हरिवंशपुराण—सहाकवि स्वयंभू । पत्र सं० २० । आ० ६×४½ । भाषा—अपभ्रंश । विषय—
पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४५० । च भण्डार ।

१६८६. हरिवंशपुराणभाषा—दौलतराम । पत्र सं० १०० से २०० । आ० १०×८ इञ्च । भाषा—
हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । २० काल सं० १८२६ चैत्र सुदी १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८ । ग
भण्डार ।

१६८७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६६ । ले० काल सं० १६२६ भाद्रपद सुदी ७ । वे० सं० ६०६ (क)
छ भण्डार ।

१६८८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२५ । ले० काल सं० १६०८ । वे० सं० ७२८ । च भण्डार ।

१६८९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७०६ । ले० काल सं० १६०३ भाद्रपद सुदी ७ । वे० सं० २३७ । छ
भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त छ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० १३४, १५१) छ, तथा म
भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ६०६, १४४) भी हैं ।

१६६०. हरिवंशपुराणभाषा—खुशालचन्द्र । पत्र सं० २०७ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । २० काल सं० १७८० वैशाख सुदी ३ । ले० काल सं० १८६० पूर्ण । वै० सं० १७२ । अ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का सम्मिश्रण है ।

१६६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०२ । ले० काल सं० १८०५ पौष बुदी ८ । अपूर्ण । वै० सं० १५४ । अ भण्डार ।

विशेष—१ से १७२ तक पत्र नहीं हैं । जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१६६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३४ । ले० काल × । वै० सं० ४६६ । अ भण्डार ।

विशेष—भारम्भ के ४ पत्रों में मनोहरदास कृत नरक कुल वर्णन है पर अपूर्ण है ।

१६६३. हरिवंशपुराणभाषा..... । पत्र सं० १५० । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६०७ । अ भण्डार ।

विशेष—एक अपूर्ण प्रति । (वै० सं० ६०८) ओर है ।

१६६४. हरिवंशपुराणभाषा..... । पत्र सं० ३८१ । आ० ८३×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य (राजस्थानी) । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १६७१ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वै० सं० १०२२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम तथा अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

आदिभाग—अथ कथा सम्बन्ध लीखीयइ छई । तेरां कालेरां तेरां समएरां समरां भगवंत महावीरे रायगोहे समोसरीये तेहीज काल, तेही ज समय, ते भगवंत श्री वीर वर्द्धमानं राजग्रही नगरी आवी समोसरया । ते किसान छइ वीतराग चउतीस अतिसइ करी सहित, पइंतीस वचन बाणी करी सोभित, चउदइसह साध. छतीस सहस परवरया । अनेक भविक जीव प्रतिबोधता श्रीराजग्रही नगरी आवी समोसरया । तिवारइ वनभाली आवी राजा श्री सेणिक वनइ । वधांमणी दिधी । सामी आज श्री वर्द्धमान आवी समोसरया छइ । सेणिक ते बात सांभली नई बधांमणी आपी । राजा आपण महाहर्षवत थकउ । वांदिवांनी सामग्री करावण लागउ । ते कि सामां गलीसां.....कीधउ । पछि आनंद भेरि उछली जय जयकार बढ थउ । भवीक लोक सघलाइ आनंद परिधया । धन धन कहतां लोक सघलाइ वांदिवा चाल्या । पछइ राजा श्रेणिक सिचाणुक हस्ती सिणगारी उपरि छइठउ । माथइ सेत छत्र धराणउ । उभइ पास चामर ढालइ चइ । बंदी जण कइ वार करइ छइ । भंगिण जण बडिद बोलइ छइ । पांच स्रब्ब बाजिय बाजते । चतुरंगिनी सेना सजकरी । राय रांणा मंडलीक मुक्खवधनी सामंत चउरासिया..... ।

एक अन्य उदाहरण— पत्र १६८

तिणी सजोभ्या नउ हेमरथ राजा राज पाले छइ । तेह राजा नइ धारणी रमणी छइ । तेह नउ भाव धर्म उभरि धराउ छइ । तेहनी कुषि ते कुंमर पणइ खानी । तेह नउ नाम बुधुकीत जाणिवउ । ते पुणु कुमर जाणे सिस समान छइ । इम करता ते कुंमर जोबन भरिया । तिवारइ पिताइ तेह नई राज भार थाणउ । तिवारइ तेग जाना मुख भोगवता काल अतिक्रमइ छइ । बली जिण नउ धर्म धरा करइ छइ ।

पत्र संख्या ३७१

नगश्री जे नरक गई थी । तेह नी कथा सांभलउं । तिणी नरक माहि थी । ते जीवनीकलियउं । पछइ मरी रोइ सर्प थयउ । सयम्भू रमणि द्वीपा माहि । पछइ ते तिहां पाग करिवा लागउ । पछइ बली तिहां थकी मरख पाम्यो । बीजे नरक गई तिहा तिन सागर आयु भोगवी । छेदन भेदन तापन दुख भोगवी । बली तिहां थकी ते निकलियउ । ते जीव पछइ चंपा नगरी माहि चांडाल उइ धरि पुत्री जपनी तेहा निचकुल श्रवतार पाम्यउं । पछइ ते एक बार वन माहि तिहां उबर बीरणीवा लामी ।

अन्तिम पाठ—पत्र संख्या ३८०-८१

श्री नेमनाथ तिन विभवरण तारणहार तिणी सामी बिहार क्रम कीयउं । पछइ देस विदेश नगर पाटणना भवीक लोक प्रबोधीया । बलीबिरणी सामी समकित ज्ञान चारित्र तप संपनीयउ दान दीयउ । पछइ गिरनार प्राप्य । तिहा समोसरया । पछइ धरणा लोक संबोध्या । पछइ सहस बरस आउषउ भोगवीनइ दस धनुष प्रमाण देह जाणावी । ईणी परइ धरणा दीन गया । पछइ एक मासउ गरयउ । पछइ जगनाथ जोग धरी नइ । समो सरण त्याग कीयउं । तिवारइ ते वातिया कर्म थय करो चउदमइ गुणठाराइ रह्य । तिहा थका मोष सिद्धि थया । तिहा भाठ गुण सहित जाणावा । बली पांच सइ लक्षीस साध साधइ मुक्ति गया । तिणी सामी प्रचल ठाम लाधउ । तेहना सुखनीउपमा दीषी न जाई । ईसा सुखनासवी भागी थया । हिवइ रोक था सुगमार्थ लिखी छइ । जे काई विरुद्ध बात लिखाणी होई ते सोध तिरली कीज्यो । बली सामनी साखि । जे काई मइ आपणी बुध थकी । हरवंस कथा माहि अध कोउ छइ लीखीयउ होइ । ते मिछामि दुकड था ज्यो ।

संवत् १६७१ वर्षे आसीज मासे कृष्णपक्षे अष्टमी तिथी । लिखित मुनि कान्हजी पाठलीपुर मध्ये ।
विज.....शिष्यणी भार्या सहजा पठनार्थ ।



काव्य एवं चरित्र

१६६५. अकलङ्कचरित्र—नाथूराम । पत्र सं० १२ । भा० १२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
जैनाचार्य अकलङ्क की जीवन कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७६ । अ भण्डार ।

१६६६. अकलङ्कचरित्र..... । पत्र सं० १२ । भा० १२½×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—
चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २ । क भण्डार ।

१६६७. अमरुशतक..... । पत्र सं० ६ । भा० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६ । ज भण्डार ।

१६६८. लङ्कवसंदेशाख्यप्रबन्ध..... । पत्र सं० ८ । भा० ११½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १७७६ । पूर्ण । वे० सं० ३१६ । ज भण्डार ।

१६६९. ऋषभनाथचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ११६ । भा० १२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—प्रथम तीर्थङ्कर ऋषभनाथ का जीवन चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६१ पीप बुदी ५५ । पूर्ण । वे०
सं० २०४० । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम आदिपुराण तथा वृषभनाथ पुराण भी है ।

प्रशस्ति— १५६१ वर्षे पीप बुदी ५५ रबी । श्री मूलसंवे सरस्वतीगच्छे मलात्कारगणे श्रीकुन्दकुन्दाचार्या-
न्वये भ० श्री ६ प्रभाचन्द्रदेवाः भ० श्री ६ पद्मार्जुनदेवाः भ० श्री ६ सकलकीर्तिदेवाः भ० श्री ६ भुवनकीर्तिदेवाः भ०
श्री ६ प्रभाचन्द्रदेवाः भ० श्री ६ विजयकीर्तिदेवाः भ० श्री ६ शुभचन्द्रदेवाः भ० श्री ६ सुमतिकीर्तिदेवाः स्वविराचार्य
श्री ६ चंदकीर्तिदेवास्तत्पुत्रिष्य श्री ५ श्रीवंत ते पिप्य ब्रह्म श्री नाकरस्येदं पुस्तकं पठनार्थं ।

२०००. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०६ । ले० काल सं० १८८० । वे० सं० १५० । अ भण्डार ।

इस भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३५) भी है ।

२००१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६० । ले० काल शक सं० १६६७ । वे० सं० ५२ । क भण्डार ।
एक प्रति वे० सं० ६६६ की भी है ।

२००२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६४ । ले० काल सं० १७१७ फागुण बुदी १० । वे० सं० ६४ । क
भण्डार ।

२००३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८२ । ले० काल सं० १७८३ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० सं० ६५ । क
भण्डार ।

२००४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १८५५ प्र० आवरण सुदी ८ । वे० सं० ३० ।
छ मण्डार ।

विशेष—चिमनराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२००५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८१ । ले० काल सं० १७७४ ; वे० सं० २८७ । व्य मण्डार ।

इसके अतिरिक्त छ मण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७६) तथा ट मण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१८३) और हैं ।

२००६. अतुसंहार—कालिदास । पत्र सं० १३ । आ० १०×३३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य ।
२० काल × । ले० काल सं० १६२४ आसोज सुदी १० । वे० सं० ४७१ । व्य मण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—संवत् १६२४ वर्षे अश्विनि सुदि १० दिने श्री मलधारगच्छे भट्टारक श्री श्री श्री मानदेव
सूरि तत्त्वशिष्यभावदेवेन लिखिता स्वहस्तैः ।

२००७. करकण्डुचरित्र—मुनि कनकामर । पत्र सं० ६१ । आ० १०×५ इंच । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६५ फागुण बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १०२ । क मण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नहीं है ।

२००८. करकण्डुचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ८४ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १६११ । ले० काल सं० १६५६ मांगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २७७ । व्य मण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—संवत् १६५६ वर्षे मांगसिर सुदि ६ भांमे सोमंजा (सोजत) ग्रामे नेमनाथ चैत्यालय
श्रीमत्काष्ठासंघे भ० श्री विश्वसेन तत्त्वट्टे भ० श्री विद्याभूषण तत्त्वशिष्य भट्टारक श्री श्रीभूषण विजिरामेस्तत्त्वशिष्य भ०
नेमसागर स्वहस्तैः लिखितं ।

आचार्यवराचार्य श्री श्री चन्द्रकीर्तिजी तत्त्वशिष्य आचार्य श्री हर्षकीर्तिजी की पुस्तक ।

२००९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वे० सं० २८४ । व्य मण्डार ।

२०१०. कविप्रिया—केशवदेव । पत्र सं० २१ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—काव्य
(शृङ्गार) । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११३ । छ मण्डार ।

२०११. कादम्बरीटीका । पत्र सं० १५१ से १८३ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७७ । अ मण्डार ।

२०१२. काव्यप्रकाशसटीक । पत्र सं० ८३ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७८ । अ मण्डार ।

विशेष—टीकाकार का नाम नहीं दिया है ।

२०१३. किरातार्जुनीय—महाकवि भारवि । पत्र सं० ४६ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०२ । व्य मण्डार ।

२०१४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ से ६३ । ले० काल X । अनुरा । वे० सं० ३५ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२०१५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८७ । ले० काल सं० १५३० भाद्रवा बुदी ८ । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

२०१६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८४२ भाद्रवा बुदी । वे० सं० १२३ । छ भण्डार ।

विशेष—सांकेतिक टीका भी है ।

२०१७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १८१७ । वे० सं० १२४ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर नगर में माधोसिंहजी के राज्य में वं० गुमानीराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२०१८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८६ । ले० काल X । वे० सं० ६६ । च भण्डार ।

२०१९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२० । ले० काल X । वे० सं० ६४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति मल्लिनाथ कृत संस्कृत टीका सहित है ।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६३८) ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३५) च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७०) तथा छ भण्डार में तीन प्रतियाँ (वे० सं० ६४, २५१, २५२) और हैं ।

२०२०. कुमारसंभव—महाकवि कालिदास । पत्र सं० ४१ । आ० १२X५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । २० काल X । ले० काल सं० १७८३ मंगसिर सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ६३६ । अ भण्डार ।

विशेष—शुद्ध चिपक जाने से अक्षर खराब होगये हैं ।

२०२१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १७५७ । वे० सं० १८४५ । जीर्ण । अ भण्डार ।

२०२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । ले० काल X । वे० सं० १२५ । छ भण्डार । अष्टम सर्ग पर्यंत ।

इनके अतिरिक्त अ एवं क भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ११८०, ११३) च भण्डार में दो प्रतियाँ (वे० सं० ७१, ७२) अ भण्डार में दो प्रतियाँ (वे० सं० १३८, ३१०) तथा छ भण्डार में तीन प्रतियाँ (वे० सं० २०५२, ३२३, २१०४) और हैं ।

२०२३. कुमारसंभवटीका—कनकसागर । पत्र सं० २२ । आ० १०X४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २०३८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२०२४. क्षत्र-बुद्धामणि—बादीभसिंह । पत्र सं० ४२ । आ० ११X४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । २० काल सं० १६८७ सावण बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १३३ । छ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम जीवंबर चरित्र भी है ।

२०२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८६१ भाद्रवा बुदी ६ । वे० सं० ७३ । च भण्डार ।

विशेष—दीवान अमरचन्दजी ने मानूलील जैल के पास प्रतिलिपि की थी ।

च भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७४) और है ।

२०२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १६०५ माघ सुदी ५ । वे० सं० ३३२ । क भण्डार ।

२०२७. खण्डप्रशस्तिकाव्य..... । पत्र सं० ३ । आ० ८३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १८७१ प्रथम भाद्रपद बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १३१४ । अ भण्डार ।

विशेष—सवाईराम गोधा ने जयपुर में अंबावती बाजार के आदिनाथ चैत्यालय (मन्दिर पाटोदी) में प्रतिलिपि की थी ।

ग्रन्थ में कुल २१२ श्लोक हैं जिनमें रघुकुलमणि श्री रामचन्द्रजी की स्तुति की गई है । वैसे प्रारम्भ में रघुकुल की प्रशंसा फिर दशरथ राम व सीता आदि का वर्णन तथा रावण के मारने में राम के पराक्रम का वर्णन है ।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री खंडप्रशस्ति कव्यानि संपूर्ण ।

२०२८. राजसिंहकुमारचरित्र—विनयचन्द्र सूरि । पत्र सं० २३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३५ । क भण्डार ।

विशेष—२१ व २२वां पत्र नहीं है ।

२०२९. गीतगोविन्द—अयदेव । पत्र सं० २ । आ० ११३×७३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२२ । क भण्डार ।

विशेष—आलरावाटन में गौड़ ब्राह्मण पंडा भैरवलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२०३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८४४ । वे० सं० १८२६ । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १७४६) और है ।

२०३१. गौतमस्वामीचरित्र—मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र । पत्र सं० ५३ । आ० ९३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल सं० १७२६ ज्येष्ठ सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१ । अ भण्डार ।

२०३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८३९ कार्तिक सुदी १२ । वे० सं० १३२ । क भण्डार ।

२०३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० ५२ । छ भण्डार ।

२०३४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १९०६ कार्तिक सुदी १२ । वे० सं० २१ । अ भण्डार ।

२०३५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० २५४ । अ भण्डार ।

२०३६. गौतमस्वामीचरित्रभाषा—पद्मलाल चौधरी । पत्र सं० १०८ । आ० १३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १९४० मंगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १३३ । क भण्डार ।

विशेष—मूलग्रन्थकर्ता आचार्य धर्मचन्द्र हैं । रचना संवत् १४२६ दिया है जो ठीक प्रतीय नहीं होता ।

२०३७. घटकपूरकाव्य—घटकपूर । पत्र सं० ४ । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल X । ले० काल सं० १८१४ । पूर्ण । वे० सं० २३० । अ भण्डार ।

विशेष—चम्पापुर में आदिनाथ चैत्यालय में ग्रन्थ लिखा गया था ।

अ और अ भण्डार में इसकी एक एक प्रति (वे० सं० १५४८, ७५) और है ।

२०३८. चन्द्रनाचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ३६ । आ० १०×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल सं० १६२५ । ले० काल सं० १८३३ भाद्रवा बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १८३ । अ भण्डार ।

२०३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १८२५ भाद्र बुदी ३ । वे० सं० १७२ । क भण्डार ।

१०४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८६३ द्वि० श्रावण । वे० सं० १६७ । क भण्डार ।

२०४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४० । ले० काल सं० १८३७ भाद्र बुदी ७ । वे० सं० १४ । क भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में पं० सवाईराम गोधा के मन्दिर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२०४२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८६१ भाद्रवा सुदी ८ । वे० सं० १८ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७) और है ।

२०४३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८३२ मंगसिर बुदी १ । वे० सं० १० । अ भण्डार ।

२०४४. चन्द्रप्रभचरित्र—वीरभद्र । पत्र सं० १३० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल X । ले० काल सं० १५८६ पौष सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२०४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८६ । ले० काल सं० १६४१ मंगसिर बुदी १० । वे० सं० १७४ । क भण्डार ।

२०४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८७ । ले० काल सं० १५२४ भाद्रवा बुदी १० । वे० सं० १६ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री मत्खेडल वंशे विबुध । मुनि जनानन्दकन्दे प्रसिद्धे रूपानामैति साधुः । सकलकलिभलक्षालनैक प्रवीण मय-
व्यस्तस्यपुत्रे जिनवर वचनाराधको दानत्यास्तेनेदं चात्मकाभ्यं निजकरसिद्धितं चन्द्रनायस्य सार्थं । सं० १५२४ वर्षे भाद्रवा
बुदी ७ अन्य लिखितं कर्मक्षयानिमित्तं ।

२०४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५७ से ७४ । ले० काल सं० १७८५ । अपूर्ण । वे० सं० २१७७ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८५ वर्षे फागुण बुदी ७ रविवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे श्री कुन्दकृन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री सहस्रकीर्ति देवा तत्पट्टे श्री संजयंति इदं शास्त्रं ज्ञानावरणी कर्मक्षया निमित्तं लिखामित्वा ठीकुरदारस्थानो.....साधु लिखितं ।

इन प्रतियों के अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५६) च भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ६०, ८८) अ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० १०३, १०४, १०५) अ एवं ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १६४, २१६०) और है ।

२०४८. चन्द्रप्रभकाव्यपंजिका—टीकाकार गुणनन्दि । पत्र सं० ८६ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११ । अ भण्डार ।

विशेष—मूलकर्ता आचार्य वीरनदि । संस्कृत में संक्षिप्त टीका दी हुई है । १८ सर्गों में है ।

२०४९. चन्द्रप्रभचरित्रपञ्जिका । पत्र सं० २१ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६४ आसोज सुदी १३ । वे० सं० ३२५ । ज भण्डार ।

२०५०. चन्द्रप्रभचरित्र—यशःकीर्ति । पत्र सं० १०६ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—आठवें तीर्थङ्कर चन्द्रप्रभ का जीवन चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १६४१ शेष सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—यद्य संवत् १६४१ वर्षे पौष शुदि एकादशी बुधवासरे काष्ठासंघे सा..... (अपूर्ण)

२०५१. चन्द्रप्रभचरित्र—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र सं० ६५ । आ० ११×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १८०४ कार्तिक बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १ । अ भण्डार ।

विशेष—बसवा नगरे चन्द्रप्रभ चैत्यालय में आचार्यवर श्री मेरुकीर्ति के शिष्य पं० परशुरामजी के शिष्य नंदराम ने म्वरठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२०५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८३० कार्तिक सुदी १० । वे० सं० ७३ । क भण्डार ।

२०५३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १८६५ जेठ सुदी ८ । वे० सं० १६६ । क भण्डार ।

इस प्रति के अतिरिक्त ख एवं ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ४८, २१६१) और है ।

२०५४. चन्द्रप्रभचरित्र—कवि दामोदर (शिष्य धर्मचन्द्र) । पत्र सं० १४६ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल सं० १७२७ भाद्रपद सुदी ६ । ले० काल सं० १८८१ सावण बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १६ । अ भण्डार ।

विशेष—आदिभाग—

ॐ नमः । श्री परमात्मने नमः । श्री सरस्वत्यै नमः ।

श्रियं चंद्रप्रभो नित्यां चंद्रदक्षिण लोचनः ।

अथ कुमुदचंद्रोवचंद्रप्रभो जितः क्रियात् ॥१॥

कुशासनचचो चूडजगतारणहेतवे ।

तेन स्ववानयसूरोस्नेहमपेतः प्रकाशितः ॥२॥

युगादी येन तीर्थेशधर्मतीर्थः प्रवर्तितः ।

तमहं वृषभं वंदे वृषवं वृषनायकं ॥३॥

चक्री तीर्थकरः कामो मुक्तिप्रियो महाबली ।

शांतिनाथः सदा शान्तिं करोतु नः प्रशान्तिं कृत् ॥४॥

अन्तिम भाग—

भूभुनेश्वर (१७३१) वाशधरं क प्रमे वर्षेऽतीते

नक्षत्रमिदिवसेमासि भाद्रे सुयोगे ।

रम्ये ग्रामे विरचितमिदं श्रीमहाराष्ट्रतान्त्रि

नाभेयस्वप्रवरभवने सूरि शोभानिवासे ॥५॥

रम्यं चतुः सहस्राणि पंचवशयुतानि वै

अनुष्टुपैः समाख्यातं श्लोकैरिदं प्रमाणतः ॥६॥

इति श्री मंडलसूरिभूषण तत्पट्टगच्छेना श्रीधर्मचंद्रशिष्य कवि दामोदरविरचिते श्रीचन्द्रप्रभ चरिते निर्वाण गमन वर्णनं नाम सप्तविंशति नामः सर्गः ॥७॥

इति श्री चन्द्रप्रभचरितं समाप्तं । संवत् १८४१ श्रावण द्वितीय कृष्णपक्षे नवम्यां तिथौ सोमवासरे सवाई जयनगरे जोधराज पाटोदी कृत मंदिरे लिखितं पं० चोखचंद्रस्य शिष्य सुणारामजी तस्य शिष्य कल्याणदासस्य तत् शिष्य श्यामलचंद्रेण स्वहस्तेन पूर्णोक्तं ॥

२०४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६२ । ले० काल सं० १८६२ शीष बुदी १४ । वे० सं० १७५ । क भण्डार ।

२०४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८३४ मघाद सुदी २ । वे० सं० २५५ । क भण्डार ।

विशेष—पं० चोखचन्द्रजी शिष्य पं० रामचन्द्र ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

२०४७. चन्द्रप्रभचरित्रभाषा—जयचन्द्र दासका । पत्र सं० ५६ । भा० १३३×६ । भाषा—हिन्दी ।

विषय—चरित्र । २० काल १६वीं शताब्दी । ले० काल सं० १६४२ ज्येष्ठ सुदी १४ । वे० सं० १६५ । क भण्डार ।

विशेष—केवल दूसरे सर्ग में आये हुये नाम प्रकरण के श्लोकों की भाषा है ।

इसी भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० १६६, १६७, १६८) भी हैं ।

२०५८. चारुदत्तचरित्र—कल्याणकीर्ति । पत्र सं० १६ । भा० १० १/२ × ४ १/२ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—सेठ चारुदत्त का चरित्र वर्णन । २० काल सं० १६६२ । ले० कास सं० १७३३ कार्तिक बुदी ६ । अपूर्ण । वे०
सं० ८७४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६ से भागे के पत्र नहीं हैं । अन्तिम पत्र मौजूद है । बहादुरपुर ग्राम में पं० श्रीमान्द ने प्रति-
लिपि की थी ।

आदिभाग—ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री सारदर्श नमः ॥

आदिजिनमादिस्वतु अति श्री महावीर ।
श्री गौतम गणेश्वर नमुं वलि भारति गुरुगंभीर ॥१॥
श्री मूलसंभवहिमा घणो सरस्वतिगच्छ शृंगार ।
श्री सकलकीर्ति गुरु अनुकमि नमुश्रीफनंदि भवतार ॥२॥
तस गुरु भ्राता शुभमति श्री देवकीर्ति मुनिराय ।
चारुदत्त श्रेष्ठीतणो भवंध रक्तुं नमो पास ॥३॥

अन्तिम—.....महाराज सुखकार ॥

मुखकर सोभार्ग अति विचक्षण यदि वारण केशरी ।
महाराज श्री पद्मनंदिवरणाकज सेवि हरि ॥१०॥
एसहू रे गद्य नायक प्रणामि करि
देवकीरति रे मुनि निज गुरु मत्त धरी ।
अरिचित्त चरखे नमि कल्याणकीरति इम भणौ ।
चारुदत्तकुमार भवंध रक्ता रसिद्धि भाउउ करि ॥११॥
रामदेव मध्य रे भिलोक डूवसि
निज रचनायि रे हरिपुर निहसि
हसि अमर कुमारनितिहां धनपति विस बिलसए ।
मंझाह प्रतिमा जिह प्रति करि सुकृत संचए ॥१२॥
सुकृत संचि रे वत बहु भाचरि
दान महोद्वरे जिन पूजा करि
करि उद्व गान गंभव अत्त जिन प्राप्तादए ।
नामन सिद्धर सोभामरा भवज कनक कलश विवसए ॥१३॥
मंजप मध्य ससवसरसु सोभेह
श्री जिन बिहरे मनोहर कन मोहि ।

मोहि जिनमन अति उन्नत मानस्तंभविशालए ।

तिहां विजयभद्र विधात सुन्दर जिनसासन रक्षपालए ॥१४॥

तहां जोमासि रे रचनां करि

सोलबाणु पिरे आसो अनुसरि ।

अनुसरि आसो शुक्ल पंचमी श्रीगुरु चरणरुदय धरि ।

कल्याणकीरति कहि सज्जन भणो आवर करि ॥१५॥

दोहा—आदर अहो संघ जीतरिण विनय सहित सुखकार ।

। ते देखि चारुदत्त नो प्रबध रच्यो मनोहार ॥१॥

भणि सुणि आदर करि याचक निदिय दान ।

इंदो तणो पद ते लहि अमर दीपि बहुमान ॥२॥

इति श्री चारुदत्त प्रबध समाप्तः ॥

विशेष—संवत् १७३३ वर्षे कार्तिक वदि ६ गुरुवारे लिखितं बहादुरपुरग्रामे श्री चितामनी चैत्यालये भट्टा-
रक श्री ५ धर्मभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री ५ देविद्रकीर्ति तत्पिण्य पंडित अमीचंद स्वहस्तेन लिखितं ।

॥ श्री रस्तु ॥

२०५६. चारुदत्तचरित्र—भारामल्ल । पत्र सं० ५० । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
चरित्र । २० काल सं० १८१३ सावन बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७८ । अ भण्डार ।

२०६०. चारुदत्तचरित्र—उदयलाल । पत्र सं० १६ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १६२६ भाद्र सुदी १ । ले० काल × । वे० सं० १७१ । छ भण्डार ।

२०६१. जम्बूस्वामीचरित्र—अ० जिनदास । पत्र सं० १०७ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १६३३ । पूर्ण । वे० सं० १७१ । अ भण्डार ।

२०६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १७५६ फागुण बुदी ५ । वे० सं० २५५ । अ
भण्डार ।

२०६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११४ । ले० काल सं० १८२५ भाद्रवा सुदी १२ । वे० सं० १८४ । क
भण्डार ।

सब भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५५) और है ।

२०६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११२ । ले० काल × । वे० सं० २६ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । प्रथम २ तथा अन्तिम पत्र नये लिखे हुये हैं ।

२०६५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५५ । ले० काल × । वे० सं० १६६ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रथम तथा अन्तिम पत्र नये लिखे हुये हैं ।

२०६६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १८६४ पौष बुदी १४ । वे० सं० २०० । क
भण्डार ।

२ ६७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८७ । ले० काल सं० १८६३ चैत्र बुदी ४ । वे० सं० १०१ । च
भण्डार ।

विशेष—महात्मा शम्भूराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२०६८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८२५ । वे० सं० ३५ । छ भण्डार ।

२०६९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२३ । ले० काल × । वे० सं० ११२ । ज भण्डार ।

२०७०. जम्बूस्वामीचरित्र—पं० राजमल्ल । पत्र सं० १२६ । आ० १२३×५३ इअ । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १६३२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५ । क भण्डार ।

विशेष—१३ सर्गों में विभक्त है तथा इसकी रचना 'टोडर' नाम के साधु के लिए की गई थी ।

२०७१. जम्बूस्वामीचरित्र—विजयकीर्ति । पत्र सं० २० । आ० १३×८ इअ । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १८२७ फागुन बुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४० । ज भण्डार ।

२०७२. जम्बूस्वामीचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १८३ । आ० १४३×५३ इअ ।
भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल सं० १६३४ फागुण सुदी १४ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ४२७ ।
अ भण्डार ।

२०७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६६ । ले० काल × । वे० सं० १८६ । क भण्डार ।

२०७४. जम्बूस्वामीचरित्र—नाथूराम । पत्र सं० २८ । आ० १२३×८ इअ । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १६६ । छ भण्डार ।

२०७५. जितचरित्र..... । पत्र सं० ६ से २० । आ० १०×४ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११०५ । अ भण्डार ।

२०७६. जिनदत्तचरित्र—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ६५ । आ० ११×५ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६५ ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १४७ । अ भण्डार ।

२०७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल सं० १८१६ भाद्र सुदी ५ । वे० सं० १८६ । क
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

२०७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८६३ फागुण बुदी १ । वे० सं० २०३ । अ
भण्डार ।

२०७९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १६०४ आसोज सुदी २ । वे० सं० १०३ । च
भण्डार ।

२०८०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १८०७ मंगसिर सुदी १३ । वे० सं० १०४ । अ
भण्डार ।

विशेष—ग्रह प्रति प० चोखचन्द एवं रामचन्द की थी ऐसा उल्लेख है ।

छ भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७१) और है ।

२०८१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १९०४ कार्तिक बुदी १२ । वे० सं० ३६ । अ
भण्डार ।

विशेष—गोपीराम बसवा वाले ने फागो में प्रतिलिपि की थी ।

२०८२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १७८३ मंगसिर बुदी ८ । वे० सं० २४३ । अ
भण्डार ।

विशेष—मिलाय में प० गोहर्न ने प्रतिलिपि की थी ।

२०८३. जिनदत्तचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ७६ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी
गद्य । विषय—चरित्र । २० काल सं० १९३६ माघ सुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९० । क भण्डार ।

२०८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वे० सं० १९१ । क भण्डार ।

२०८५. जीवधरचरित्र—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र सं० १२१ । आ० ११×४^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १५६६ । ले० काल सं० १८४० फागुण सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २२ । अ
भण्डार ।

इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियाँ (वे० सं० ८७३, ८६६) और हैं ।

२०८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७२ । ले० काल सं० १८३१ भाद्रवा बुदी १३ । वे० सं० २०६ । क
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

२०८७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १८६८ फागुण बुदी ८ । वे० सं० ४१ । अ
भण्डार ।

विशेष—सवाई जयनगर में महाराजा जयचन्द्रसिंह के शासनकाल में नेमिनस्य जिन वैद्यालय (गोधों का
मन्दिर) में बख्तराम कृष्णराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२०८८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १८८० ज्येष्ठ बुदी ५ । वे० सं० ४२ । अ
भण्डार ।

२०८९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६१ । ले० काल सं० १८३३ वैशाख सुदी २ । वे० सं० २७ । अ
भण्डार ।

२०९०. जीवधरचरित्र—नथमल विलास । पत्र सं० ११४ । आ० १२^१/_२×६^३/_४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १८४० । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वे० सं० ४१७ । अ भण्डार ।

२०६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १६३७ बैत्र बुदी ६ । वे० सं० ५५६ । ख भण्डार ।

२०६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०१ मे १५१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १७४३ । ट भण्डार ।

२०६३. जीवंधरचरित्र—पद्मलाल चौधरी । पत्र सं० १७० । आ० १३X५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल सं० १६३५ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २०७ । क भण्डार ।

२०६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३५ । ले० काल X । वे० सं० २१४ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ६५ पत्र चूहों द्वारा खाये हुये हैं ।

२०६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३२ । ले० काल X । वे० सं० १६२ । छ भण्डार ।

२०६६. जीवंधरचरित्र..... पत्र सं० ४१ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ X८ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०२६ । अ भण्डार ।

२०६७. रोमिणाहचरित्र—कविरत्न अग्रुथ के पुत्र लक्ष्मणदेव । पत्र सं० ४४ । आ० ११X४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । २० काल X । ले० काल सं० १५३६ शका १४०१ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

२०६८. रोमिणाहचरित्र—दामोदर । पत्र सं० ४३ । आ० १२X५ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—काव्य । २० काल सं० १२८७ । ले० काल सं० १५८२ भाद्रवा सुदी ११ । वे० सं० १२५ । अ भण्डार ।

विशेष—चंदेरी में आचार्य जिनचन्द्र के शिष्य के निमित्त लिखा गया ।

२०६९. त्रैलोक्याकापुरुषचरित्र..... पत्र सं० ३६ से ६१ । आ० १० $\frac{३}{४}$ X४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—चरित्र । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०६० । अ भण्डार ।

३०००. दुर्घटकाव्य..... पत्र सं० ४ । आ० १२X५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल X । ले० काल X । वे० सं० १८५१ । ट भण्डार ।

३००१. द्वाभयकाव्य—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६ । आ० १०X४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १८३२ । ट भण्डार । (दो सर्ग हैं)

३००२. द्विसंधानकाव्य—धनञ्जय । पत्र सं० ६२ । आ० १० $\frac{३}{४}$ X५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८५३ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के पत्र टूट गये हैं । ६२ से आगे के पत्र नहीं हैं । इसका नाम राघव पाण्डवीय काव्य भी है ।

३००३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३३१ । क भण्डार ।

३००४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १५७७ भाद्रवा बुदी ११ । वे० सं० १५८ । क भण्डार ।

विशेष—गौर गोत्र वाले श्री लेऊ के पुत्र पदारथ ने प्रतिलिपि की थी ।

३००५. द्विसंधानकाव्यटीका—विनयचन्द्र । पत्र सं० २२ । आ० १२३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । (पंचम सर्ग तक) वे० सं० ३३० । क भण्डार ।

३००६. द्विसंधानकाव्यटीका—नेमिनन्द । पत्र सं० ३६१ । विषय—काव्य । भाषा—संस्कृत । २०
काल × । ले० काल सं० १६५२ कार्तिक सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३२६ । क भण्डार ।

विशेष—इसका नाम पद कौमुदी भी है ।

३००७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५८ । ले० काल सं० १८७५ माघ सुदी ८ । वे० सं० १५७ । क
भण्डार ।

३००८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७० । ले० काल सं० १५०६ कार्तिक सुदी २ । वे० सं० ११३ । व्य
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है । गोपावल (ग्वालियर) में महाराजा हुगरेन्द्र के शासनकाल में प्रतिलिपि
की गई थी ।

३००९. द्विसंधानकाव्यटीका..... । पत्र सं० २६४ । आ० १०३×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२८ । क भण्डार ।

३०१०. धन्यकुमारचरित्र—आ० गुरुभद्र । पत्र सं० ५३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३३ । क भण्डार ।

३०११. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ४५ । ले० काल सं० १५६७ आसोज सुदी १० । अपूर्ण । वे०
सं० ३२५ । क भण्डार ।

विशेष—दूढ़ गांव के निवासी खण्डेलवाल जातीय ने प्रतिलिपि की थी । उस समय दूढ़ (जयपुर) पर
घडसीराय का राज्य लिखा है ।

३०१२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १६५२ द्वि० ज्येष्ठ सुदी ११ । वे० सं० ४३ । व्य
भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति दी हुई है । अमेर में आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई । लेखक प्रशस्ति
अपूर्ण है ।

३०१३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १६०४ । वे० सं० १२८ । व्य भण्डार ।

३०१४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वे० सं० ३६१ । व्य भण्डार ।

३०१५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६०३ भाद्रपद सुदी ३ । वे० सं० ४५८ । व्य
भण्डार ।

विशेष—आयिका खीकायी ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करके मुनि श्री कमलकीर्ति को भेंट दिया था ।

३०१६. धन्यकुमारचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० १०७ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६३ । व्य भण्डार ।

विशेष—चतुर्थ अधिकार तक है

३०१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८५० भाषाढ़ बुदी १३ । वे० सं० २५७ । अ
भण्डार ।

विशेष—२६ से ३६ तक के एक अंग में लिखकर प्रति की पूर्ण किया गया है ।

३०१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८२५ भाषा सुदी १ । वे० सं० ३१४ । अ
भण्डार ।

३०१९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १७८० भावरा सुदी ४ । अपूर्णा । वे० सं०
११०४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६वां पत्र नहीं है । अ० मेघसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८१३ भाद्रवा बुदी ८ । वे० सं० ४४ । अ
भण्डार ।

विशेष—देवगिरि (दोसा) में पं० बल्लार के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई । कठिन शब्दों के हिन्दी में अर्थ
दिये हैं । कुल ७ अधिकार हैं ।

३०२१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३१ । ले० काल X । वे० सं० १७ । अ भण्डार ।

३०२२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १६६१ वैशाख सुदी ७ । वे० सं० २१८७ । ट
भण्डार ।

विशेष—संवत् १६६१ वर्ष वैशाख सुदी ७ पुष्यनक्षत्रे वृधिनाम जोमे गुरुवासर नंदाम्नाये बलात्काररामे
सरस्वती गच्छे.....।

३०२३. धन्यकुमारचरित्र—अ० नेमिदत्त । पत्र सं० २४ । अ० ११X४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३३२ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३०२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १६०१ पौष बुदी ३ । वे० सं० ३२७ । क
भण्डार ।

विशेष—फोखुलाल टोंग्या ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १७६० भावरा सुदी ५ । वे० सं० ८६ । अ
भण्डार ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति ने अपने शिष्य मनोहर के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

३०२६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८१६ फागुण बुदी ७ । वे० सं० ८७ । अ
भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३०२७. धन्यकुमारचरित्र—खुशालचंद । पत्र सं० ३० । अ० १४X७ इंच । भाषा—हिन्दी पत्र ।
विषय—चरित्र । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३७४ । अ भण्डार ।

३०२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल X । वे० सं० ४१२ । अ भण्डार ।

३०२९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल X । वे० सं० ३३४ । क भण्डार ।

३०३०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६ । ले० काल X । वे० सं० ३२६ । छ भण्डार ।

३०३१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४४ । ले० काल सं० १६६४ कार्तिक बुदी ६ । वे० सं० १६३ । ज भण्डार ।

भण्डार ।

३०३२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १८५२ । वे० सं० २४ । झ भण्डार ।

३०३३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६६ । ले० काल X । वे० सं० ४६५ । ब्य भण्डार ।

विशेष—संतोषराम छाबड़ा मौजभावादा वाले ने प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थ प्रशस्ति काफी विस्तृत है ।

इनके अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६४) तथा छ और झ भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १६८ व १२) और हैं ।

३०३४. धन्यकुमारचरित्र..... । पत्र सं० १८ । आ० १० X ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३२३ । छ भण्डार ।

३०३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३२४ । छ भण्डार ।

३०३६. धर्मशर्माभ्युदय—सहाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं० १५३ । आ० १०½ X ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६१ । अ भण्डार ।

३०३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८७ । ले० काल सं० १६३८ कार्तिक सुदी ८ । वे० सं० ३४८ । क भण्डार ।

विशेष—नीचे संस्कृत में संकेत दिये हुए हैं ।

३०३८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५ । ले० काल X । वे० सं० २०३ । ख भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ तथा क भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १४८१, ३४६) और है ।

३०३९. धर्मशर्माभ्युदयटीका—यशःकीर्ति । पत्र सं० ४ से ६६ । आ० १२ X ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८५६ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम 'संदेह भ्वांत दीपिका' है ।

३०४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३०४ । ले० काल सं० १६५१ भाषाढ बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ३४७ । क भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३४६) की और है ।

३०४१. नलोदयकाव्य—माणिक्यसूरि । पत्र सं० ३२ से ११७ । आ० १० X ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल । ले० काल सं० १४४५ प्र० फागुन बुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० ३४२ । ख भण्डार ।

पत्र सं० १ से ३१ ५५, ५६ तथा ६२ से ७२ नहीं हैं । दो पत्र बीच के और हैं जिन पर पत्र सं० नहीं है ।

विशेष—इसका नाम 'नलोदय महाकाव्य' तथा 'कुबेर पुराण' भी है । इसकी रचना सं० १४६४ के पूर्व हुई थी । जिन रत्नकोष में ग्रन्थकार का नाम माणिक्यसूरि तथा माणिक्यदेव दोनों दिया हुआ है ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १४४५ वर्षे प्रथम काल्पुन वदि न शुक्ले लिखितमिदं श्रीमदणहिलपत्तने ।

३०४२. नजोदयकाव्य—कालिदास । पत्र सं० ६ । आ० १२×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १८३६ । पूर्ण । वे० सं० ११४३ । अ भण्डार ।

३०४३. नवरत्नकाव्य—पत्र सं० २ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६२ । अ भण्डार ।

विशेष—विक्रमादित्य के नवरत्नों का परिचय दिया हुआ है ।

३०४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० ११४६ । अ भण्डार ।

३०४५. नागकुमारचरित्र—मल्लिषेण सूरि । पत्र सं० २२ । आ० १०×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६४ भादवा सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० २३४ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

संवत् १५६४ वर्षे भादवा सुदी १५ सोमदिने श्री मूलसर्वे नंद्याम्नाये बलात्कारणी सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदा-
चार्यान्वये भ० श्री पद्मसिद्धदेवा त० भ० श्री शुभचन्द्रदेवा त० भ० श्री जिनचन्द्रदेवा त० भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तदाम्नाये
लण्डेलवालान्वये साह जिणदास तद्व्याख्या जमणादे त० साह सांगा द्वि० सहसा नुर चुंडा सा० सांगा भार्या सुहवदे द्वि०
गृंगारदे तृ० सुरताणदे त० सा० आसा, धरणपाल आसा भार्या हुंकारदे, धरणपाल भार्या धारादे । द्वि० सुहागदे । सहसा
भार्या स्वस्वदे त० सा० पाला द्वि० महिपाल । पासा भार्या सुगुणादे द्वि० पाटमदे त० काल्ह महिपाल महिपदे ।
चुंडा भार्या चांदणदे तस्यपुत्र सा० दासा तद्व्याख्या दाडिमदे तस्यपुत्र नरसिंह एतेषां मध्ये आसा भार्या ग्रहंकारदे इदंशास्त्र-
नि०मंडलाचार्य श्री धर्मचंदाय ।

३०४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८२६ पौष सुदी ५ । वे० सं० ३६५ । अ भण्डार ।

३०४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १८०६ चैत्र बुदी ५ । वे० सं० ५० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ६ पत्र नवीन लिखे हुये हैं । १० से १६ तथा ३२वां पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं । प्रन्त में निम्न प्रकार लिखा है । पांडे रामचन्द्र के माथे पहराई पोथी । संवत् १८०६ चैत्र वदी ५ सनिवासरे दिल्ली ।

३०४८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १५८० । वे० सं० ३५३ । अ भण्डार ।

३०४९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६४१ भाद्र बुदी ७ । वे० सं० ४६६ । अ भण्डार ।

विशेष—तक्षकगढ में कल्याणराज के समर्थ में आ० भोपति ने प्रतिलिपि कराई थी ।

३०५०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८०७ । अ भण्डार ।

३०५१. नागकुमारचरित्र—पं० धर्मधर । पत्र सं० ५५ । आ० १०३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल सं० १५११ भाद्रपद सुदी १५ । ले० काल सं० १६१६ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २३० । अ भण्डार ।

३०५२. नागकुमारचरित्र—..... । पत्र सं० २२ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × १ ले० काल सं० १८६१ सादरा बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ८६ । ल भण्डार ।

३०५३. नागकुमारचरितटीका—टीकाकार प्रभाचन्द्र । पत्र सं० २ से २० । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × १ ले० काल × १ अपूर्ण । वे० सं० २१८८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

श्री जयसिधदेवराज्ये श्रीमद्वारातिवासिनो परापरमेष्ठिप्रमाणोपाजितमलपुष्पनिराकृताखिलकलकेन श्रीमत्प्रभा-
चन्द्रपंडितेन श्री मत्पंचमी टिप्पणकं कृतमिति ।

३०५४. नागकुमारचरित्र—उदयलाल । पत्र सं० ३६ । आ० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल × १ ले० काल × १ पूर्ण । वे० सं० ३५४ । क भण्डार ।

३०५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × १ वे० सं० ३५५ । क भण्डार ।

३०५६. नागकुमारचरित्रभाषा—..... । पत्र सं० ४५ । आ० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल × १ ले० काल × १ पूर्ण । वे० सं० ६७७ । अ भण्डार ।

३०५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल × १ वे० सं० १७३ । छ भण्डार ।

३०५८. नेमिजी का चरित्रआणन्द । पत्र सं० २ से ५ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल सं० १८०४ फागुण सुदी ५ । ले० काल सं० १८५१ । अपूर्ण । वे० सं० २२५७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम भाग—

नेम तस तात सघर मध्ये रे रह्या ज रुड भावो ।
चरत पाल्ये सात सारे सहस वरसना घाव ॥
सहस वरसना आवज पूरा जिएवर कछडी धोखडी ।
आठ कर्म कीधा चकचूरा पांच सछ तास सघात पूरा जी ।
मंघत १८ चिडोत्तर फागुण मास भंकारो ।
सुद पंचमी सनीसर रे कीधो चरित उदारो ॥
कीधो चरत उदार आणंदा इम जाणी छाडो ग्रहफंदा ।
वन २ समुद गिरानंदा अष जेम लह नेम जिएंदा ॥५२॥

इति श्री नेमजी को चरित्र समाप्त ।

सं० १८५१ केसाले श्री श्री भोजराज जी लिखत कल्याणजी राजगढ मध्ये ।

आगे नेमिजी के नव भल बिये हुये हैं ।

२१४६. नेमिनाथ के दशभव..... पत्र सं० ७। आ० ६×४½ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—चरित्र।
२० काल ×। ले० काल सं० १६१८। वे० सं० ३५४। झ भण्डार।

२१६०. नेमिदूतकाव्य—महाकवि विक्रम। पत्र सं० २२। आ० १३×५ इंच। भाषा—संस्कृत।
विषय—काव्य। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६१। क भण्डार।

विशेष—कालिदास कृत मेघदूत के श्लोकों के अन्तिम चरण की समस्यापूर्ति है।

२१६१. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ३७३। व्य भण्डार।

२१६२. नेमिनाथचरित्र—हेमचन्द्राचार्य। पत्र सं० २ से ७८। आ० १२×४½ इंच। भाषा—संस्कृत।
विषय—काव्य। २० काल ×। ले० काल सं० १५८१ पीप सुदी १। अपूर्ण। वे० सं० २१३२। ट भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है।

२१६३. नेमिनिर्वाण—महाकवि बाग्भट्ट। पत्र सं० १००। आ० १३×५ इंच। भाषा—संस्कृत।
विषय—नेमिनाथ का जीवन वर्णन। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६०। क भण्डार।

२१६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ५५। ले० काल सं० १८२३। वे० सं० ३८८। क भण्डार।

विशेष—एक अपूर्ण प्रति क भण्डार में (वे० सं० ३८६) और है।

२१६५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३८२। क भण्डार।

२१६६. नेमिनिर्वाणपंजिका..... पत्र सं० ६२। आ० ११½×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
काव्य। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६। व्य भण्डार।

विशेष—६२ से आगे पत्र नहीं हैं।

प्रारम्भ—अत्वा नेमिस्वरं शिते लब्धवान्तं चतुष्टयं।

कुर्वेहं नेमिनिर्वाणमहाकाव्यस्य पंजिका॥

२१६७. नैषधचरित्र—द्वर्षकवि। पत्र सं० २ से ३०। आ० १०½×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
काव्य। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६१। छ भण्डार।

विशेष—पंचम सर्ग तक है। प्रति सटीक एवं प्राचीन है।

२१६८. पद्मचरित्रसार..... पत्र सं० ५। आ० १०×४½ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—चरित्र। २०
काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४७। छ भण्डार।

विशेष—पद्मपुराण का संक्षिप्त भाग है।

२१६९. पर्युषणकल्प..... पत्र सं० १००। आ० ११½×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र।
२० काल ×। ले० काल सं० १६६६। अपूर्ण। वे० सं० १०५। ख भण्डार।

विशेष—६३ वा तथा ६५ से ६६ तक पत्र नहीं हैं। श्रुतस्कांध का ८वां अध्याय है।

प्रशस्ति—सं० १६६६ वर्षे भूलतारामध्ये सुधावक सोमूतत्त वधू हरसी तत् मृता मुखसग्री मेतुषु धडाकृते
वधू तेव एषा प्रति पं० श्री राजकीर्तिगरिनां विहरेऽस्ति स्वकृपाय।

२१७०. परिशिष्टपर्व..... पत्र सं० ५८ से ८० । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १६७३ । अपूर्णा । वे० सं० १६६० । अ भण्डार ।

विशेष—६१ व ६२वां पत्र नहीं है । बीरमपुर नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२१७१. पवनदूतकाव्य—वादिचन्द्रसूरि । पत्र सं० १३ । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १६५५ । पूर्णा । वे० सं० ४२५ । क भण्डार ।

विशेष—सं० १६५५ में राव के प्रसाद से भाई दुलीचन्द के अवसोकनार्थ ललितपुर नगर में प्रतिलिपि हुई ।

२१७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ४५६ । क भण्डार ।

२१७३. पाण्डवचरित्र—लालवर्द्धन । पत्र सं० ६७ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । २० काल सं० १७६८ । ले० काल सं० १८१७ । पूर्णा । वे० सं० १६२३ । ट भण्डार ।

२१७४. पार्श्वनाथचरित्र—वादिराजसूरि । पत्र सं० ६६ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पार्श्वनाथ का जीवन चरित्र । २० काल शक सं० ६४७ । ले० काल सं० १५७७ फाल्गुण बुदी ६ । पूर्णा । अन्वन्त जीर्ण । वे० सं० २२५८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र फटे हुये तथा गले हुये हैं । ग्रन्थ का दूसरा नाम पार्श्वपुराण भी है ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

मन्त्र १५७७ वर्षे फाल्गुन बुदी ६ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे मन्त्राभ्यामे भट्टारक श्री पद्मनंदि तत्पद्वे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पद्वे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पद्वे भट्टारकप्रभाचन्द्रदेवास्तदाभ्यामे साधु गोत्रे साह काधित तस्य भार्या कोवलदे तयोः पुत्रः चतुर्विधदान करुणवृक्षः साह वच्चा तस्य भार्या पदमा तयोः पुत्र पञ्चाङ्ग तस्य भार्या बातावदे तयोपुत्रः साह दूलह एते नित्यं प्रणमन्ति ।

२१७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १०७ । ख भण्डार ।

विशेष—२२ से आगे पत्र नहीं हैं ।

२१७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १५६५ फाल्गुण सुदी २ । वे० सं० २१८ । ख भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति वाला पत्र नहीं है ।

२१७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १८७१ चैत्र सुदी १४ । वे० सं० २१९ । ख भण्डार ।

२१७८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १६८५ आषाढ़ । वे० सं० १६ । छ भण्डार ।

२१७९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १७८५ । वे० सं० १०५ । छ भण्डार ।

विशेष—कृदावती में आदिनाथ बैद्यालय में गोखेन ने प्रतिलिपि की थी ।

२१८०. पार्श्वनाथचरित्र—भट्टारक सकलकीर्ति । पत्र सं० १२० । मा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पार्श्वनाथ का जीवन वर्णन । २० काल १५वीं शताब्दी । ले० काल सं० १८८८ प्रथम वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १३ । अ भण्डार ।

२१८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १८२३ कार्तिक सुदी १० । वे० सं० ४३६ । क भण्डार ।

२१८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६१ । ले० काल सं० १७६१ । वे० सं० ७० । घ भण्डार ।

२१८३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७५ से १३६ । ले० काल सं० १८०२ फागुण सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ४५६ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रति—

संवत् १८०२ वर्षे फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे एकादशी बुधे लिखित श्रीउदयपुरनगरमध्येमुधावक-पुण्यप्रभावक-श्रीदेवगुरुभक्तिकारक श्रीसम्यक्त्वमूलद्वादशव्रतधारक सा० श्री दौलतरामजी पठनार्थ ।

२१८४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५२ से २२६ । ले० काल सं० १८५४ संगसिर सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० २१६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति दीवान संगही ज्ञानचन्द की थी ।

२ ८५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १७८५ प्र० वैशाख सुदी ८ । वे० सं० २१७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति लेनकर्मा ने स्वपठनार्थ दुर्गादास से लिखवायी थी ।

२१८६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६१ । ले० काल सं० १८५२ श्रावण सुदी ६ । वे० सं० १५ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० श्यामीराम ने अपने शिष्य नानंदराम के पठनार्थ गंगाविष्णु से प्रतिलिपि कराई ।

२१८७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १२३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६ । झ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२१८८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६१ से १४४ । ले० काल सं० १७८७ । अपूर्ण । वे० सं० १६४५ । ट भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १०१३, ११७४, २३६) क तथा छ भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ४६६, ७०) तथा ङ भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ४५६, ४५६, ४५७, ४५८) ब तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० २०४, २१८४) और हैं ।

२१८९. पार्श्वनाथचरित्र—रङ्गू । पत्र सं० ८ से ७६ । मा० १०½×५ इंच । भाषा—मराठी । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१२७ । ट भण्डार ।

२१९०. पार्श्वनाथपुराण—भूधरदास । पत्र सं० ६२ । मा० १०½×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पार्श्वनाथ का जीवन वर्णन । २० काल सं० १७८६ आषाढ सुदी ५ । ले० काल सं० १८३३ । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । अ भण्डार ।

२१६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० ४४७ । अ भण्डार ।

विशेष—तीन प्रतियाँ और हैं ।

२१६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८६० माह बुदी ६ । वे० सं० ५७ । ग भण्डार ।

२१६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८६१ । वे० सं० ४५० । ङ भण्डार ।

२१६४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२८ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ४५१ । छ भण्डार ।

२१६५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १८८१ पीष सुदी १४ । वे० सं० ४५३ । ज भण्डार ।

२१६६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४६ से १३० । ले० काल सं० १६२१ सावन बुदी ६ । वे० सं० १७५ ।

झ भण्डार ।

२१६७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०० । ले० काल सं० १८२० । वे० सं० १०४ । ञ भण्डार ।

२१६८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १३० । ले० काल सं० १८५२ फागुण बुदी १४ । वे० सं० १० । ट भण्डार ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी । सं० १८५२ में लूणकरण गोधा ने प्रतिलिपि की ।

२१६९. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४६ से १५४ । ले० काल सं० १६०७ । अपूर्ण । वे० सं० १८४ । ड भण्डार ।

२२००. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८६६ आषाढ बुदी १२ । वे० सं० ५८ । ढ भण्डार ।

विशेष—फतेहलाल संधी बीवान ने सोनियों के मन्दिर में सं० १६४० भाद्रवा सुदी ४ को चढ़ाया ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में तीन प्रतियाँ (वे० सं० ४५५, ४०८, ४४७) ग तथा घ भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ५६, ७१) ङ भण्डार में तीन प्रतियाँ (वे० सं० ४४६, ४५२, ४५४) च भण्डार में ५ प्रतियाँ (वे० सं० ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४) छ भण्डार में एक तथा ज भण्डार में २ (वे० सं० १५६, १, २) तथा ट भण्डार में दो प्रतियाँ (वे० सं० १६१६, २०७४) और हैं ।

२२०१. प्रद्युम्नचरित्र—पं० महासेनाचार्य । पत्र सं० ५८ । आ० १०३×४३ दृष्ट । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३६ । च भण्डार ।

२२०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०१ । ले० काल × । वे० सं० ३४५ । ञ भण्डार ।

२२०३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११८ । ले० काल सं० १५६५ ज्येष्ठ बुदी ४ । वे० सं० ३४९ । ट भण्डार ।

विशेष—संवत् १५६५ वर्षे ज्येष्ठ बुदी चतुर्थदिने गुरुवासरे सिद्धयोगे मूलनक्षत्रे श्रीमूलसंघे नंदाम्नाये बलात्कारणो सरस्वतीमन्त्रे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मसंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजितचंद्र

देवास्तत्पुत्रं भ० श्री प्रभावन्ददेवास्तच्छिष्य मंडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदात्मनाये रामसरनगरे श्रीचंद्रप्रभचैत्यालये खंडेल-
वालान्वये कांटरावालगोत्रे सा० वीरमस्तद्रभार्या हरषख् । तत्पुत्र सा० वेला तद्भार्या वील्हा तत्पुत्री डो प्रथम साह दामा
द्वितीय साह पूना । सा० दामा तद्भार्या गोगी तथाः पुत्रः सा० बोदिथ तद्भार्या हीरी । सा० पूना तद्भार्या कीडल तथाः
पुत्रः सा० खरहथ एतेषां मध्ये जिनपूजापुरंदरेण सा० चेलाख्येन इदं श्री प्रद्युम्न शास्त्रलिखाय ज्ञानावरणीकर्म क्षयार्थं
निमित्तं सत्यावायमं श्री धर्म इन्द्राय प्रदत्तं ।

२२०४. प्रद्युम्नचरित्र—आचार्य सोमकीर्ति । पत्र सं० १९५ । भा० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १५३० । ले० काल सं० १७२१ । पूर्ण । वे० सं० १५५ । छ भण्डार ।

विशेष—रचना संवत् 'क' प्रति में से है । संवत् १७२१ वर्षे आसोज बदि ७ शुभ दिने लिखित माबर
(आमेर) मध्ये लिखापि आचार्य श्री महोचंद्रकीर्तिजी । लिखित जोसि श्रीधर ॥

२२०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५५ । ले० काल सं० १८८५ मंगसिर सुदी ५ । वे० सं० ११३ । छ
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

भट्टारक रत्नभूषण की आम्नाय में कासजीवाल गोवीय गोवटीपुरी निवासी श्री राजलालजी ने कर्मोदय से
ऐलिचपुर आकर हीरालालजी से प्रतिलिपि कराई ।

२२०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६१ । ग भण्डार ।

२२०७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२४ । ले० काल सं० १८०२ । वे० सं० ६१ । घ भण्डार ।

विशेष—हांसी (भांसी) वाले भैया श्री दमल्ल अग्रवाल आक ने ज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थ प्रतिलिपि
करवाई थी । पं० जयरामदास के शिष्य रामचन्द्र की समझ की गई ।

२२०८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११६ से १६५ । ले० काल सं० १८६६ सावन सुदी १२ । वे० सं०
१०७ । ङ भण्डार ।

विशेष—लिखित पंडित संगहीजी का मन्दिर का महाराजा श्री सवाई जयसिंहजी राजमध्य लिखी पंडित
गोवर्द्धनदासेन आत्मार्थ ।

२२०९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २२१ । ले० काल सं० १८३३ आक्ख बुदी ३ । वे० सं० १९ । छ
भण्डार ।

विशेष—पंडित सवाईराम ने सांगानेर में प्रतिलिपि की थी । ये भा० रत्नकीर्तिजी के शिष्य थे ।

२२१०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २०२ । ले० काल सं० १८१६ मार्गशीर्ष सुदी १० । वे० सं० २१ ।
झ भण्डार ।

विशेष—बखतराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२२११. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २७४ । ले० काल सं० १८०४ भाद्रपद बुदी ६ । वे० सं० ३७४ । अ
भण्डार ।

विशेष—अगरबन्दजी चौदवाड़ ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ४१६, ६४८, २०८६ तथा क भण्डार में एक प्रति
(वे० सं० ५०८) और है ।

२२१२. प्रद्युम्नचरित्र । पत्र सं० ५० । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३५ । अ भण्डार ।

२२१३. प्रद्युम्नचरित्र—सिंहकवि । पत्र सं० ४ से ८६ । आ० १०^१/_४×४^१/_४ इंच । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २००४ । अ भण्डार ।

२२१४. प्रद्युम्नचरित्रभाषा—मन्नालाल । पत्र सं० ५०१ । आ० १३×५ इंच । भाषा—हिन्दी (गद्य) ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १६१६ ज्येष्ठ बुदी ५ । ले० काल सं० १६३७ वैशाख बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४६४ ।
क भण्डार ।

२२१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२२ । ले० काल सं० १६३३ मंगसिर बुदी २ । वे० सं० ५०६ । क
भण्डार ।

२२१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७० । ले० काल × । वे० सं० ६३८ । अ भण्डार ।

विशेष—रचयिता का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

२२१७. प्रद्युम्नचरित्रभाषा..... पत्र सं० २७१ । आ० ११^३/_४×७^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—
चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वे० सं० ४२० । अ भण्डार ।

२२१८. भीतिकरचरित्र—अ० नेमिदत्त । पत्र सं० २१ । आ० १२×५^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १८२७ मंगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १२६ । अ भण्डार ।

२२१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० ५३० । क भण्डार ।

२२२०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६ । ख भण्डार ।

विशेष—२२ से ३१ पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन है । दो सौ नरह की लिपि है ।

२२२१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८१० वैशाख । वे० सं० १२१ । ख भण्डार ।

२२२२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६७६ प्र० आश्विन सुदी १० । वे० सं० १२२ ।

ख भण्डार ।

२२२३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८३१ आश्विन सुदी ७ । वे० सं० ६१ । अ
भण्डार ।

विशेष—अ० खोखलन्द के विषय पं० रामचन्द्रजी ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इसकी दो प्रतियां ख भण्डार में (वे० सं० १२०, २८६) और हैं ।

२२२४. प्रीतिकरचरित्र—जोधराज गोदीका । पत्र सं० १० । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल सं० १७२१ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६८२ । अ भण्डार ।

२२२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० सं० १५६ । छ भण्डार ।

२२२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ६३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २३६ । छ भण्डार ।

२२२७. भद्रबाहुचरित्र—रत्ननन्दि । पत्र सं० २२ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल X । ले० काल सं० १८२७ । पूर्ण । वे० सं० १२८ । अ भण्डार ।

२२२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३४ । ले० काल X । वे० सं० ५५१ । क भण्डार ।

२२२९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १६७४ पाँच सुदी ८ । वे० सं० १३० । छ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र किसी दूसरी प्रति का है ।

२२३०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १७८६ बैशाख बुदी ६ । वे० सं० ५५८ । अ भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण (कृष्णगढ़) किशनगढ़ वालों से सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२२३१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० ३७ । छ भण्डार ।

विशेष—बलतराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२२३२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १७९३ आसोज सुदी १० । वे० सं० ५१७ । अ भण्डार ।

विशेष—क्षेमकीर्ति ने बीली ग्राम में प्रतिलिपि की थी ।

२२३३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३ से १५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २१३३ । ट भण्डार ।

२२३४. भद्रबाहुचरित्र—तख्तकवि । पत्र सं० ४८ । आ० १२३/८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल X । ले० काल सं० १९४८ । पूर्ण । वे० सं० ५५६ । छ भण्डार ।

२२३५. भद्रबाहुचरित्र—चंपाराम । पत्र सं० ६८ । आ० १२३/८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल सं० आबण सुदी १५ । ले० काल X । वे० सं० १६५ । छ भण्डार ।

२२३६. भद्रबाहुचरित्र । पत्र सं० २७ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६८५ । अ भण्डार ।

२२३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १६५ । छ भण्डार ।

२२३८. भरतेशवैभव । पत्र सं० ५ । आ० ११×४३/४ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।

२२३६. भविष्यदत्तचरित्र—पं० श्रीधर । पत्र सं० १०८ । मा० ६३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का अन्तिम पत्र फटा हुआ है । संस्कृत में संक्षिप्त टिप्पण भी दिया हुआ है ।

२२४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १६१४ माघ बुदी ८ । वे० सं० ५५३ । क
भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि तक्षकगढ़ में हुई थी । लेखक प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नहीं है ।

२२४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १७२४ वैशाख बुदी ६ । वे० सं० १३१ । ख
भण्डार ।

विशेष—मेड़ता निवासी साहू श्री ईसर सोगरी के वंश में से सा० राहुचन्द्र की भार्या रइणादे ने प्रति-
लिपि करवाकर मंडलाचार्य श्रीभूषण के शिष्य रूचन्द को कर्मक्षयार्थ निमित्त दिया ।

२२४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७० । ले० काल सं० १६६२ जेठ सुदी ७ । वे० सं० ७५ । घ
भण्डार ।

विशेष—अजमेर गढ़ मध्ये लिखित अर्जुनभुत जोशी सूरदास ।

दूसरी ओर निम्न प्रशस्ति है ।

हरसार मध्ये राजा श्री सावलदास राज्ये खण्डेलवालान्वय साहू देव भार्या देवलदे ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि
करवायी थी ।

२२४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १८३७ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ५६५ ।
ङ भण्डार ।

विशेष—लेखक पं० गोवर्द्धनदास ।

२२४४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वे० सं० २६३ । च भण्डार ।

२२४५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५० । ले० काल × । वे० सं० ५१ । अपूर्ण । छ भण्डार ।

विशेष—कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ दिये गये हैं तथा अन्त के २५ पत्र नहीं लिखे गये हैं ।

२२४६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १६७७ आषाढ सुदी २ । वे० सं० ७७ । ज
भण्डार ।

विशेष—साधु लक्ष्मण के लिए रचना की गई थी ।

२२४७. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १६६७ आसोज सुदी ६ । वे० सं० १६४४ । ट
भण्डार ।

विशेष—अजमेर में महाराजा मानसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी । प्रशस्ति का अन्तिम पत्र
नहीं है ।

२२४८. भविष्यदत्तचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १०० । मा० ११३×७३ इंच ।
भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—चरित्र । २० काल सं० १६३७ । ले० काल सं० १६५० । पूर्ण । वे० सं० ५५४ । क
भण्डार ।

२२४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३५ । ले० काल X । वे० सं० ५५५ । क भण्डार ।

२२४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० ५५६ । क भण्डार ।

२२४१. भोज प्रबन्ध—पंडितप्रवर चम्पाल । पत्र सं० २६ । पृ० १२६ X ५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । १० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५७७ । क भण्डार ।

२२४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १७११ आसोज सुदी ६ । वे० सं० ४६ । अपूर्ण ।
क भण्डार ।

२२४३. भौमचरित्र—भ० रत्नचन्द्र । पत्र सं० ४३ । पृ० १० X ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । १० काल X । ले० काल सं० १८४६ कापूर सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । क भण्डार ।

२२४४. मंगलकलशमहामुनिचतुष्टयदी—रंगविनयगणि । पत्र सं० २ से २४ । पृ० १० X ४ इंच ।
भाषा—हिन्दी (राजस्थानी) विषय—चरित्र । १० काल सं० १७१४ आसोज सुदी ११ । ले० काल सं० १७१७ सप्तमी ।
वे० सं० ८४४ । क भण्डार ।

विशेष—चोतोड़ा ग्राम में श्री रंगविनयगणि के शिष्य दयामेरु मुनि के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

राग धन्यासिरी—

एह बा मुनिवर निसदिन गार्हपत्य, मन सुधि ध्यान लगाइ ।
पुण्य पुरुषरा गुण धुरतां कृतां पातक दूरि पुलाइ ॥१॥ ए० ॥
शांतिचरित्र धकी ए चउपई कीधी निज मति सारि ।
मंगलकलसमुनि सतरंगा कहा गुण आतम हितकारि ॥२॥ ए० ॥
गच्छ सरतर युग बर गुण भागलउ श्री जिनराज सुरिद ।
तसु पट्टधारी सुरि शिरोमणी श्री जिनरंग मुणिद ॥३॥ ए० ॥
तासु सीस मंगल मुनि रायनउ चरित कहैउ स सनेह ।
रंगविनय वाचक मनरंग सु जिन पूजां फल एह ॥४॥ ए० ॥
नगर अभयपुर अति रलिआमणउ जहां जिन गृहचउसाल ।
मोहन मूरति वीर जिणंदनी सेवक जन सु रसाल ॥५॥ ए० ॥
जिन अनइवलि सोयत घणी जूणा देवल ठाम ।
जिहां देवी हरि सिद्ध गेह गहइ पूरइ बंछित काम ॥६॥ ए० ॥
निरमल नीर भरपउ सोहई यणुं ऊंक महेश्वर नाम ।
याप विधातर जगि प्रवतरी कीधउ की मति काम ॥७॥ ए० ॥
जिहां किरा आवक सगुण शिरोमणी धरम मरम नउ जाण ।
श्री नारायणवास सराहियइ मानइ जिणवर आण ॥८॥ ए० ॥

प्राप्तु तणाद प्रापह ए चउपई कीधी मन उल्लास ।
 मथिवउ उछउ जे इहाँ भाजियउ मिछा दुक्कड़ तास ॥१०॥ ए० ॥
 शासण नायक बीर प्रसाद थी चउरी खडीय प्रमाण ।
 भसिअइ सुसिअइ जे नर भावसु धारयइ तासु कल्याण ॥११॥ ए० ॥
 ए संबंध सरस रस गुण भरयउ भाष्य मति अनुसारि ।
 धरमी जण गुण गावण मन रली रगविनय मुखकार ॥१२॥ ए० ॥
 एह वा मुनिवर निसि दिन गार्हपड सर्व गाथा हूहा ॥ ५३२ ॥

इति श्री मंगलकलसमहामुनिचउपही संपूर्तिमगमत लिखिता श्री संबत् १७१७ वर्षे श्री आसोज सुदी विजय दसमी वासरे श्री चांतोडा महायामे राजि श्री परतापसिंहजी विजयराज्ये वाचनाचार्य श्री रंगविनयगणि शिष्य पण्डित दयामेठ मुनि आत्मश्रेयसे शुभं भवतु । कल्पाणामस्तु लेखक पाठकयोः ॥

२२५५. महीपालचरित्र—चारित्रभूषण । पत्र सं० ४१ । आ० ११६×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
 विषय—चरित्र । १० काल सं० १७३१ आश्विन सुदी १२ (ख) । ले० काल सं० १८१८ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १६५ । छ भण्डार ।

विशेष—जौहरीलाल गोदीका ने प्रतिलिपि करवाई ।

२२५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वे० सं० ५६१ । छ भण्डार ।

२२५७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १६२८ फाल्गुण सुदी १२ । वे० सं० २७१ । च भण्डार ।

विशेष—रोहूराम वैद्य ने प्रतिलिपि की थी ।

२२५८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ । ले० काल × । वे० सं० ४६ । छ भण्डार ।

२२५९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० सं० १७० । छ भण्डार ।

२२६०. महीपालचरित्र—भ० रत्नमिद । पत्र सं० ३४ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
 विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल सं० १८३६ भाद्रपद सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५७४ । क भण्डार ।

२२६१. महीपालचरित्रभाषा—नयमल । पत्र सं० ६२ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।
 विषय—चरित्र । १० काल सं० १६१८ । ले० काल सं० १६३६ आश्विन सुदी ३ । वे० सं० ५७५ । क भण्डार ।

विशेष—मूलकर्ता चारित्र भूषण ।

२२६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १६३५ । वे० सं० ५६६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १५ नये पत्र लिखे हुये हैं ।

कवि परिचय—नयमल सदासुख कासलीवाल के शिष्य थे । इनके पितामह का नाम दुलोजन्द तथा पिता का नाम शिवचन्द था ।

२२६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १६२६ आश्विन सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ६६३ । अ भण्डार ।

२२६४. मेघदूत—कालिदास । पत्र सं० २१ । आ० १२×५ १/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०१ । अ भण्डार ।

२२६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है । पत्र जीर्ण है ।

२२६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

२२६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८५४ वैशाख सुदी २ । वे० सं० २००५ । ट भण्डार ।

२२६८. मेघदूतटीका—परमहंस परितोषकाचार्य । पत्र सं० ४८ । आ० १० ३/४ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल सं० १५७१ भाद्रपद सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । अ भण्डार ।

२२६९. यशस्तिलक चम्पू—सोमदेव सूरि । पत्र सं० २५४ । आ० १२ १/२ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत गद्य पद्य । विषय—राजा यशोधर का जीवन वर्णन । २० काल सं० ८८१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५१ । अ भण्डार ।

विशेष—कई प्रतियों का मिश्रण है तथा बीच के कुछ पत्र नहीं हैं ।

२२७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १६१७ । वे० सं० १८२ । अ भण्डार ।

२२७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १५४० फागुण सुदी १४ । वे० सं० ३५६ । अ भण्डार ।

विशेष—करमी गोदा ने प्रतिलिपि कटवाई थी । जिनदास करमी के पुत्र थे ।

२२७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ५६१ । क भण्डार ।

२२७३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५६ । ले० काल सं० १७५२ मंगसिर सुदी ६ । वे० सं० ३५१ । अ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है । प्रति प्राचीन है । कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुये हैं ।

अंदावती में नेमिनाथ चैत्यालय में भ० जगत्कीर्ति के शिष्य पं० दोदराज के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२२७४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०२ से ११२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८०८ । ट भण्डार ।

२२७५. यशस्तिलकचम्पू टीका—भुतसागर । पत्र सं० ४०० । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ भाद्रपद सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १५७ । अ भण्डार ।

विशेष—भुतकर्ता सोमदेव सूरि ।

२२७६. यशस्तिलकचम्पूटीका.....। पत्र सं० ६४६। आ० १२३×७ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। २० काल X। ले० काल सं० १८४१। पूर्ण। वे० सं० ५८८। क भण्डार।

२२७७. प्रति सं० २। पत्र सं० ६१०। ले० काल X। वे० सं० ५८९। क भण्डार।

२२७८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३८१। ले० काल X। वे० सं० ५९०। क भण्डार।

२२७९. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४०९ से ४५९। ले० काल सं० १९४८। अपूर्ण। वे० सं० ५८७। क भण्डार।

२२८०. यशोधरचरित—महाकवि पुष्पदन्त। पत्र सं० ८२। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—अपभ्रंश। विषय—चरित्र। २० काल X। ले० काल सं० १४०७ आसोज सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० २५। अ भण्डार।

विशेष—संवत्सरेस्मिन् १४०७ वर्षे अश्वत्थिमासे शुक्लपक्षे १० बुधवासरे तस्मिन् चन्द्रपुरीदुर्गेहोलीपुरविराजमाने महाराजाधिराजसमस्तराजावलीसेव्यमाण खिलजीवंश उद्योतक सुरिवाणमहमूदसाहिराज्ये तद्विजयराज्ये श्रीकाष्ठासंघे मायुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री देवसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री विमलसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री धर्मसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री भावसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सहजकीर्ति देवास्तत्पट्टे श्रीगुणकीर्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री यशःकीर्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक मलयकीर्ति देवास्तत्पट्टे महात्मा श्री हरिवेण देवास्तत्पट्टे अग्रोतकान्वय मीतलगोत्रे साधु श्रीकरमसी तद्भार्यामुनस्त्रा तपोः पुत्राश्चयः जेष्ठः सा मैणपाल द्वितीयः सा. पूना तृतीयः सा. भाभरण। साधु मैणपाल भार्ये द्वे बाऊ भूराही। सा. भाभरण पुत्र जगमल मोमा एतेषांमध्ये हर्दपुस्तकं ज्ञानावरणीकर्म क्षयार्थं बाइ वधो हर्द यशोधरचरित्रं लिखाप्य महात्मा हरिवेणदेवा, दत्तं पठनार्थं। लिखितं पं० विजयसिंहेन।

२२८१. प्रति सं० २। पत्र सं० १४५। ले० काल सं० १९३६। वे० सं० ५९८। क भण्डार।

विशेष—कहीं कहीं संस्कृत में टीका भी दी हुई है।

२२८२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६० से ६८। ले० काल सं० १९३० भादो.....। अपूर्ण। वे० सं० २८८। क भण्डार।

विशेष—प्रतिलिपि आमेर में राजा भारमल के शासनकाल में नेमीश्वर चैत्यालय में की गई थी। प्रशस्ति अपूर्ण है।

२२८३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६३। ले० काल सं० १८६७ आसोज सुदी २। वे० सं० २८६। क भण्डार।

२२८४. प्रति सं० ५। पत्र सं० ८९। ले० काल सं० १९७२ मंगसिर सुदी १०। वे० सं० २८७। क भण्डार।

२२८५. प्रति सं० ६। पत्र सं० ८९। ले० काल X। वे० सं० २१२६। क भण्डार।

२२८६. यशोधरचरित्र—भ० सकलकीर्ति। पत्र सं० ५१। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—राजा यशोधर का जीवन वर्णन। २० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० १३४। अ भण्डार।

२२८७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । से० काल X । वे० सं० ५६६ । क भण्डार ।

२२८८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ३७ । ले० काल सं० १७६५ कार्तिक सुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० २८४ । च भण्डार ।

२२८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६२ आसोज सुदी ६ । वे० सं० २८५ । च भण्डार ।

विशेष—पं० नोनिधराम ने स्वपठनार्थ प्रतिनिधि की थी ।

२२९०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८५५ आसोज सुदी ११ । वे० सं० २२ । छ भण्डार ।

२२९१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६५ फागुण सुदी १२ । वे० सं० २३ । च भण्डार ।

२२९२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३५ । से० काल X । वे० सं० २४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्रवीण है ।

२२९२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १७७५ वैश्व सुदी ६ । वे० सं० २५ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रसस्ति—संवत्सर १७७५ वर्षे मिली वैश्व सुदी ६ मंगलवार । भट्टारक-सिरोरत्न भट्टारक श्री श्री १०८ । श्री देवेन्द्रकीर्तिजी तत्त्व आशाविश्वामि आचार्य श्री केमकीर्ति । पं० ओलचन्द ने बसई ग्राम में प्रतिलिपि श्री श्री-मन्त में यह श्रीर लिखा है—

संवत् १३५२ धेली भाँसे प्रतिष्ठा कराई लाडला में तद्विस्तरी लहोबमाजरा उपजी ।

२२९४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २ से ३८ । ले० काल सं० १७८० आषाढ सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० २६ । ज भण्डार ।

२२९५. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५५ । ले० काल X । वे० सं० ११४ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति सचिव है । २७ चित्र है, मुगलकालीन प्रभाव है । पं० गोवर्द्धनजी के शिष्य पं० टोडरमल के लिए प्रतिलिपि करवाई श्री । प्रति दर्शनीय है ।

२२९६. प्रति सं० १० । पत्र सं० ५५ । से० काल सं० १७६२ जेठ सुदी १४ । अपूर्ण । वे० सं० ४६३ । ज भण्डार ।

विशेष—आचार्य शुभचन्द्र ने टोंक में प्रतिलिपि की थी ।

ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६०४) क भण्डार में दो प्रतियाँ (वे० सं० ५६६, ५६७) धीर है ।

२२९७. यशोधरचरित्र—कायस्थ वसुनाभ । पत्र सं० ७० । आ० ११X४६ पृष्ठ । भाषा—संस्कृत । शिष्य—चरित्र । २० काल X । ले० काल सं० १८३२ पौष सुदी १२ । वे० सं० ५६२ । क भण्डार ।

२२६८. प्रति सं० २ । प्रति सं० ६८ । ले० काल सं० १५६५ सावन सुदी १३ । वे० सं० १५२ । ख भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ श्रीमसिरी से आचार्य भुवनकीर्ति की शिष्या आयिका मुक्तिधी के लिए दयासुन्दर से लिखवाया तथा वैशाख सुदी १० सं० १७८५ को मंडलाचार्य श्री अनन्तकीर्तिजी के लिए नाथूरामजी ने समर्पित किया ।

२२६९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ । ले० काल X । वे० सं० ८४ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति नवीन है ।

२३००. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १६६७ । वे० सं० ६०६ । ङ भण्डार ।

विशेष—मानसिंह महाराजा के शासनकाल में आमेर में प्रतिलिपि हुई ।

२३०१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १८३३ पौष सुदी १३ । वे० सं० २१ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में पं० बलतराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

२३०२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० भाद्रपद सुदी १० । वे० सं० ६६ । ज भण्डार ।

विशेष—टोडरमलजी के पठनार्थ पांडे गोरधनदास ने प्रतिलिपि कराई थी । महामुनि गुरुकीर्ति के उपदेश से ग्रन्थकार ने ग्रन्थ की रचना की थी ।

२३०३. यशोधरचरित्र—बादिराजसूरि । पत्र सं० २ से १२ । मा० ११X५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल X । ले० काल सं० १८३६ । अपूर्ण । वे० सं० ८७२ । झ भण्डार ।

२३०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल १८२४ । वे० सं० ५६५ । क भण्डार ।

२३०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से १६ । ले० काल सं० १५१८ । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । घ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रणालि अपूर्ण है ।

२३०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल X । वे० सं० २१३८ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नवीन लिखा गया है ।

२३०७. यशोधरचरित्र—पूरणदेव । पत्र सं० ३ से २० । मा० १०X४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २८१ । च भण्डार ।

२३०८. यशोधरचरित्र—वासवसेन । पत्र सं० ७१ । मा० १२X४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल सं० १५६५ भाद्र सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । झ भण्डार ।

विशेष—प्रणालि—

संवत् १५६५ वर्षे माघमासे कृष्णपक्षे द्वादशीदिनेसे बृहस्पतिवासरे मूलनक्षत्रे राव भीमलदे राज्यप्रवर्तमाने रावत श्री जेतसी प्रतापे सांखीण नाम नगरे श्रीशान्तिनाथ जिराचैत्यालये श्रीमूलसंवेदनात्कारणसे सरस्वतीगङ्गे

नंदाम्नाये श्रीकुंदकुंदाचार्यनये भट्टारक श्रीपद्मनंदि देवामृतपट्टे भ० श्री गुणचन्द्रदेवास्तपट्टे भ० श्री जिगञ्जदेवास्तपट्टे भ० श्री प्रभावन्देवास्तदम्माये खंडेलवालान्वये दोजीगोधे सा. सिहगुण तद्भार्या तोली तयोपुत्रास्त्रयः प्रथम भा. ईसर द्वितीय टोहा तृतीय सा. ऊल्हा ईसरभार्या अजपिणी तयोः पुत्राः चत्वारः प्र० सा० लोहट द्वितीय सा भूरा तृतीय सा ऊधर चतुर्थ सा. देवा सा. लोहट भार्या ललितादे तयोः पुत्राः पंच प्रथम धर्मदास द्वितीय सा. धीरा तृतीय लूरा चतुर्थ होला पंचम राजा सा. भूरा भार्या भूरासिर तयोपुत्र नगराज साह ऊधर भार्या उधसिरी तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम लाला द्वितीय खरहथ— सा० देवा भार्या जोसिरि तयो पुत्र धनिउ जि० धर्मदास भार्या धर्मश्री चिरंजी धीरा भार्या रमायी सा. टोहा भार्या द्वे बृहद्भूला लखी सुहागदे तत्पुत्रदान पुण्य नीलवान सा. नाल्हा तद्भार्या नयरायी सा० ऊल्हा भार्या वाली तयोः पत्र सा. डालू तद्भार्या डलसिरि एतेषांमध्ये चतुर्विधदान वितरणाशक्तेन त्रिपंचाशतश्रावकसंख्या प्रतिपालना साधधानेन जिगपूजापुरंदरेण सद्गुरुरूपदेश निर्वाहनेन संघपति साह श्री टोहानामधेयेन इदं शास्त्रं लिखाप्य उत्तमपात्राय घटारितं ज्ञानावर्णो कर्मक्षयं निमित्तं ।

२३०६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ से ५४ । ले० काल X । अपूर्णा । वे० सं० २०७३ । अ भण्डार ।

२३१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १६६० वैशाख सुदी १३ । वे० सं० ५६३ । क भण्डार ।

विशेष—मिश्र केशव ने प्रतिलिपि की थी ।

२३११. यशोधरचरित्र..... । पत्र सं० १७ से ४५ । आ० ११X४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल X । ले० काल X । अपूर्णा । वे० सं० १६६१ । अ भण्डार ।

२३१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल X । वे० सं० ६१३ । क भण्डार ।

२३१३. यशोधरचरित्र—गारवदास । पत्र सं० ४३ । आ० ११X५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । २० काल सं० १५८१ भाद्रवा सुदी १२ । ले० काल सं० १६३० मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ५६६ ।

विशेष—कवि कफोतपुर का रहने वाला था ऐसा लिखा है ।

२३१४. यशोधरचरित्रभाषा—खुशालचंद । पत्र सं० ३७ । आ० १२X५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । २० काल सं० १७८१ कार्तिक सुदी ६ । ले० काल सं० १७६६ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १०४६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—

मिती आसोज मासे शुक्लपक्षे तिथि पडिवा वार सनिवासरे सं० १७६६ जिनवा । थे० कुशलोजी तत् शिष्येन लिपिकृतं पं० खुशालचंद श्री घुसधिलोलजी के देहुरे पूर्ण कर्तव्यं ।

दिवालो जिनराज की देखस दिवालो जाय ।

निसि दिवालो बलाइये कर्म दिवाली थाय ॥

श्री रस्तु । कल्याणमस्तु । महाराष्ट्रपुर मध्ये परिपूर्णा ।

२३१५. यशोधरचरित्र—पद्मलाल । पत्र सं० ११२ । पृ० १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १६३२ सावन बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०० । क भण्डार ।

विशेष—गुणवंत कृत यशोधर चरित्र का हिन्दी अनुवाद है ।

२३१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल × । वे० सं० ६१२ । क भण्डार ।

२३१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८२ । ले० काल × । वे० सं० ६५४ । क भण्डार ।

२३१८. यशोधरचरित्र..... पत्र सं० २ से ६३ । पृ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६११ । क भण्डार ।

२३१९. यशोधरचरित्र—श्रुतसागर । पत्र सं० ६१ । पृ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६४ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । क भण्डार ।

२३२०. यशोधरचरित्र—भट्टारक ज्ञानकीर्ति । पत्र सं० ६३ । पृ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १६५६ । ले० काल सं० १६६० आश्विन बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २६५ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १६६० वर्षे आश्विनमासे कृष्णपक्षे नवम्यां तिथौ सोमवासरे आदिनाथचैत्यालये मोजमाबाद
वास्तव्ये राजाधिराज महाराजाध्यायभाभसिधराज्यप्रवर्तते श्रीमूलसंघेवलात्कारगणे नंदाम्नायेसरस्वतीगच्छे श्रीकुंवकुंदाचार्या-
न्वये तस्तत्पट्टे भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवातत्पट्टे भट्टार श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे श्रीचन्द्र-
कीर्ति देवास्तदाम्नाये खंडेलवालये पान्वाड्यामीये साह हीरा तस्य भार्या हरणमदे । तयो पुत्राचत्वार । प्रथम पुत्र साह
नानू तस्यभार्या नीलावे पुत्र त्रयः प्रथमपुत्र साह नाडु तस्य भार्या नावकदे तस्यपुत्रा द्वौ प्रथम पुत्र चिरंजीव गीरधर ।
द्वितीयपुत्र साह बोहिथ तस्य भार्या बहुरंगदे तस्य पुत्रा त्रयः प्रथमपुत्र चिरंजी स्थिरपाल द्वितीय पुत्र जेसा । तृतीयपुत्र
टेहु । तृतीय पूरण तस्यभार्या कपूरदे । साह हीरा । द्वितीयपुत्र जोहण तस्यभार्या बाण्डणदे । तस्यपुत्रा द्वौ त्रयमपुत्र साह
गुजर तस्यभार्या गारवदे । द्वितीयपुत्र चिरंजी छाज । हीरा तृतीयपुत्र साह पचाइण । हीरा चतुर्थपुत्र साह नराइण तस्य
भार्या नैणादे तस्यपुत्र साह दुरंगा एतेषामन्ये बोहिथ सेनेदंशास्त्र यशोधरचरित्रकर्मक्षयनिमित्तं भट्टारक श्रीचन्द्रकीर्तितर्तवाध्य
शार्द लालचंद योग्य घटावितं ।

२३२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १५७७ । वे० सं० ६०६ । क भण्डार ।

विशेष—श्रुत मलिसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

२३२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६५१ मंगसिर बुदी २ । वे० सं० ६१० । क
भण्डार ।

विशेष—साह छीतरमल के पठनार्थ जोशी जगन्नाथ ने मोजमाबाद में प्रतिलिपि की थी ।

क भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ६०७, ६०८) और हैं ।

२३२३. यशोधरचरित्रटिप्पण—प्रभाचंद । पत्र सं० १२ । पृ० १०३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५८५ पीव बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । अ भण्डार ।

विशेष—पुष्पवंत कृत यशोधर चरित्र का संस्कृत टिप्पण है। बादशाह बाबर के शासनकाल में प्रतिलिपि की गई थी।

२३२४. रघुवंशमहाकाव्य—महाकवि कालिदास। पत्र सं० १४४। भा० १२^१/_२ × ५^१/_२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६५४। अ मण्डार।

विशेष—पत्र सं० ८२ से १०५ तक नहीं है। पंचम सर्ग तक कठिन शब्दों के अर्थ संस्कृत में दिये हुये हैं।

२३२५. प्रति सं० २। पत्र सं० ७०। ले० काल सं० १८२४ काती बुदी ३। वे० सं० ६४३। अ मण्डार।

विशेष—कड़ी ग्राम में पांड्या देवराज के पठनार्थ जैतसी ने प्रतिलिपि की थी।

२३२६. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२६। ले० काल सं० १८४४। वे० सं० २०६६। अ मण्डार।

२३२७. प्रति सं० ४। पत्र सं० १११। ले० काल सं० १६८० भाद्रवा सुदी ८। वे० सं० १५४। ख मण्डार।

२३२८. प्रति सं० ५। पत्र सं० १३२। ले० काल सं० १७८६ मंगसर सुदी ११। वे० सं० १५५। ख मण्डार।

विशेष—हाशिये पर चारों ओर शब्दार्थ दिये हुए हैं। प्रति सारोष्ठ में पं० अनन्तकीर्ति के शिष्य उदयराज ने स्वपठनार्थ लिखी थी।

२३२९. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६६ से १३४। ले० काल सं० १६६६ कार्तिक बुदी ६। अपूर्ण। वे० सं० २४२। ख मण्डार।

२३३०. प्रति सं० ७। पत्र सं० ७५। ले० काल सं० १८२८ पौष बुदी ४। वे० सं० २४४। ख मण्डार।

२३३१. प्रति सं० ८। पत्र सं० ६ से १७३। ले० काल सं० १७७३ मंगसर सुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० १९९५। छ मण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है तथा टीकाकार उदयहर्य हैं।

इनके अतिरिक्त अ मण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० १०२८, १२६४, १२६५, १८७४, २०६५) ख मण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५५ [क])। छ मण्डार में ७ प्रतियां (वे० सं० ६१६, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५)। अ मण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० २८६, २९०)। छ और छ मण्डार में एक एक प्रतियां (वे० सं० २८३, १९६६) और हैं।

२३३२. रघुवंशटीका—भक्तिनाथसूरि। पत्र सं० २३२। भा० १२ × ५^१/_२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। २० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० २३२। अ मण्डार।

२३३३. प्रति सं० २। पत्र सं० १८ से १४९। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६८। अ मण्डार।

२३३४. रघुवंशटीका—पं० सुमति विजयगणि । पत्र सं० ६० से १७६ आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६२७ ।

विशेष—टीकाकाल—

निविग्रहंरस शशि संवत्सरे फाल्गुनसितैकादश्यां त्रियो संपूर्णा श्रीरस्तु मंगल सदा कर्तुः टीकायाः । विक्रम-पुर में टीका की गयी थी ।

२३३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ से १४७ । ले० काल सं० १८४० चैत्र सुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० ६२८ । छ भण्डार ।

विशेष—शुभानीराम के शिष्य पं० लक्ष्मणराम ने शानीराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६२६) और है ।

२३३६. रघुवंशटीका—समयसुन्दर । पत्र सं० ६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल सं० १६६२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८७५ । अ भण्डार ।

विशेष—समयसुन्दर कृत रघुवंश की टीका द्वयार्थक है । एक अर्थ तो वही है जो काव्य का है तथा दूसरा अर्थ जैनदृष्टिकोण से है ।

२३३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से ३७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७२ । ट भण्डार ।

२३३८. रघुवंशटीका—गुणविनयगणि । पत्र सं० १३७ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ८६ । अ भण्डार ।

विशेष—स्मरतरंगच्छीय वाचनाचार्य प्रमोदमाणिक्यगणि के शिष्य संख्यवनमुख्य श्रीमत् जयसीमगणि के शिष्य गुणविनयगणि ने प्रतिलिपि की थी ।

२३३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८६५ । वे० सं० ६२६ । छ भण्डार ।

इनके प्रतिरिक्त अ भण्डार में दो प्रतियाँ (वे० सं० १३५०, १०८१) और हैं । केवल अ भण्डार की प्रति ही गुणविनयगणि की टीका है ।

२३४०. रामकृष्णकाव्य—दैवज्ञ पं० सूर्य । पत्र सं० ३० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०५ । अ भण्डार ।

२३४१. रामचन्द्रिका—केशवदास । पत्र सं० १७६ । आ० ६×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ श्रावण सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ६५५ । छ भण्डार ।

२३४२. वरांगचरित्र—भ० वर्द्धमानदेव । पत्र सं० ४६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—राजा वरांग का जीवन चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६४ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ३२१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—

सं० १५६४ वर्ष शाके १४५६ कार्तिकमासे शुक्लपक्षे दशमीदिवसे शनैश्चरवासरे घनिष्ठानक्षत्रे मंडयोमे आश्वि नाम महानगरे रात्रि श्री सूर्यशेखर राज्यप्रवर्तमाने कवर श्री पूरणमहप्रतापे श्री शान्तिनाथ जिनचैत्यालये श्रीमूल-

संघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिष्णुचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य भ० श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदाप्तायेखण्डेलवालान्वये शावदागोत्रे संघाधिपति सभ्द श्री रणमल्ल तद्भार्या रैणादे तयो पुत्रास्तत्रयः प्रथम सं. श्री खीवा तद्भार्ये द्वे प्रथमा सं० लैमलदे द्वितीयो सुहामदे तत्पुत्रास्तत्रयः प्रथम वि० सधारण द्वि० श्रीकरण तृतीय धर्मदास । द्वितीय सं० वेणा तद्भार्ये द्वे प्रथमा विमलादे द्वि० नौलादे । तृतीय सं. हंगरसी तद्भार्या दाक्षिणेदे एतेसां मध्ये सं. विमलादे इदं शास्त्रं लिखाप्य उत्तमपात्राय दत्तं ज्ञानावर्णी कर्मक्षय निमित्तम् ।

२३४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८६३ भाद्रवा सुदी १४ । वे० सं० ६६६ । क भण्डार ।

२३४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १८६४ मंगसिर सुदी ८ । वे० सं० ३३० । क भण्डार ।

२३४५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १८३६ फागुण सुदी १ । वे० सं० ४६ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर के नेमिनाथ चैत्यालय में संतोहराम के शिष्य वस्तराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० १८४७ बैशाख सुदी १ । वे० सं० ४७ । छ भण्डार ।

विशेष—सांगावती (सांगानेर) में गोधों के चैत्यालय में पं० सयाईराम के शिष्य नौनिधराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८३१ आषाढ सुदी ३ । वे० सं० ४६ । ज भण्डार ।

विशेष—जयपुर में चंद्रप्रभ चैत्यालय में पं० रामचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३० से ५६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०५७ । ट भण्डार ।

विशेष—८वें सर्ग से १३वें सर्ग तक है ।

२३४९. वरांगचरित्र—भर्तृहरि । पत्र सं० ३ से १० । शी० १२३ X ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १७१ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं ।

२३५०. वर्द्धमानकाव्य—मुनि श्री पद्मनंदि । पत्र सं० ५० । शी० १० X ४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल X । ले० काल सं० १५१८ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । ज भण्डार ।

इति श्री वर्द्धमान कथावतारे जिनरात्रिजतमहात्म्यप्रदर्शके मुनि श्री पद्मनंदि विरचिते सुखनामां दिने श्री वर्द्धमाननिर्वाणगमन नाम द्वितीय परिच्छेदः

२३५१. वर्तमानकथा—जयमित्रहल । पत्र सं० ७३ । आ० १३१×५३ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १६६५ बैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १५३ । अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत ।

सं० १६५५ वरखे बैशाख सुदी ३ शुक्रवारे मृगसीरनखित्रे मूलसंधे श्रीकुंवकुंदाचार्यान्वये तत्पट्टे भट्टारक श्री पुणभद्र तत्पट्टे भट्टारक श्रीमन्निभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्रीप्रभाचं व तत्पट्टे भट्टारक श्रीचंदकीर्तिः विरचित श्री नेमदत्त आचार्य अंवावतीगठ महादुर्गातः श्रीनेमिनाथ चैत्यालये कुल्लाहावस महाराजाधिराज महाराजा श्री मानस्यधराज्ये अज-मेरागीत्रे सा. धीरांतद्वार्याधारादे तत्पुत्र चत्वार प्रथम पुत्र..... (अपूर्ण)

२३५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल × । वे० सं० १६५३ । अ मण्डार ।

२३५३. वर्तमानचरित्र..... पत्र सं० १६८ से २१२ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६ । अ मण्डार ।

२३५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७४ । अ मण्डार ।

२३५५. वर्तमानचरित्र—केशरीसिंह । पत्र सं० १८५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पत्र । विषय—चरित्र । २० काल सं० १८६१ ले० काल सं० १८६४ सावन बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ६४८ । क मण्डार ।

विशेष—सदासुखजी गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

२३५६. विक्रमचरित्र—वाचनाचार्य अभयसोम । पत्र सं० ४ से ५ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—विक्रमादित्य का जीवन । २० काल सं० १७२४ । ले० काल सं० १७८१ आवण बुदी ४ । अपूर्ण । वे० सं० १३६ । अ मण्डार ।

विशेष—उदयपुर नगर में शिष्य रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

२३५७. विदग्धमुखमंथन—बौद्धाचार्य धर्मदास । पत्र सं० २० । आ० १०३/४×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १८५१ । पूर्ण । वे० सं० ६२७ । अ मण्डार ।

२३५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १०३३ । अ मण्डार ।

२३५९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८२२ । वे० सं० ६५७ । क मण्डार ।

विशेष—जयपुर में महाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

२३६०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १७२४ । वे० सं० ६५८ । क मण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी दी है ।

२३६१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ११३ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

प्रथम व अन्तिम पत्र पर गोल मोहर है जिस पर लिखा है 'श्री जिन सेवक साहू वादिराज जाति सोमगोपी गोमा सुत ।

२३६२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १६१५ चैत्र सुदी ७ । वे० सं० ११५ । छ
भण्डार ।

विशेष—गोधों के मन्दिर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२३६३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८८१ पौष बुदी ३ । वे० सं० २७८ । ज
भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

२३६४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १७५६ मंगसिर बुदी ८ । वे० सं० ३०१ । अ
भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२३६५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १७४३ कार्तिक बुदी २ । वे० सं० ५०७ । अ
भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । टीकाकार जिनकुशलसूरि के शिष्य क्षेमचन्द्र गरिण हैं ।

इनके प्रतिरिक्त छ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ११३, १४६) अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं०
५०७) और है ।

२३६६. विदग्धमुखमंडनटीका—चिन्मयराज । पत्र सं० ३३ । मा० १०६×४६ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । टीकाकाल सं० १५३५ । ले० काल सं० १६८३ आसोज सुदी १० । वे० सं० ११३ । छ भण्डार ।

२३६७. विहारकाव्य—कालिदास । पत्र सं० २ । मा० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० १८५३ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में खण्डप्रभ चैत्यालय में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के समय में लिखी गई थी ।

२३६८. शंखप्रशुम्नप्रबंध—समयसुन्दरगणि । पत्र सं० २ से २१ । मा० १०६×४६ इंच । भाषा—
हिन्दी । विषय—श्रीकृष्ण, शंखकुमार एवं प्रशुम्न का जीवन । २० काल × । ले० काल सं० १६५६ । सपूर्ण । वे०
सं० ७०१ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १६५६ वर्ष विजयदशम्यां श्रीस्तंभतीर्थे श्रीबृहत्तरतरंगच्छाधीश्वर श्री दिल्लीपति पातिसाह जलालद्दीन
मकबरसाहिबदत्तयुगप्रधानपदधारक श्री ६ जिनचन्द्रसूरि सूरश्वराणां (सूरेश्वराणां) साहित्यमक्षस्वहस्तस्थापिता
प्रचार्यश्रीजिनसिंहसूरिदुःरिकराणां (सूरेश्वराणां) शिष्य मुत्तय पंडित सकलचन्द्रगणि तच्छिष्य वा० समयसुन्दरगणिना
श्रीवैसलमेरु वास्तव्ये नानाविध शास्त्रविचाररसिक लो० निवरीज समर्थनया कृतः श्री शंखप्रशुम्नप्रबन्धे प्रथमः खंडः ।

२३६६. शान्तिनाथचरित्र—अजितप्रभसूरि । पत्र सं० १६६ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०२४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६६ से आगे के पत्र नहीं हैं ।

२३७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ से १०५ । ले० काल सं० १७१४ पीप बुदी १४ । अपूर्ण । वे० सं० १६२० । छ भण्डार ।

२३७१. शान्तिनाथचरित्र—भट्टारक सकलकीर्ति । पत्र सं० १६५ । आ० १३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १७८६ चैत्र सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । अ भण्डार ।

२३७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२८ । ले० काल × । वे० सं० ७०२ । छ भण्डार ।

विशेष—तीन प्रकार की लिपियां हैं ।

२३७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २२१ । ले० काल सं० १८६३ माह बुदी ६ । वे० सं० ७०३ । अ भण्डार ।

विशेष—लिखितं गुरजीरामलाल सवाई जयनगरमध्ये वासी नेवटा का हाल संघही भालावता के मन्दिर लिखी । लिखाप्यते चंपारामजी छावडा सवाई जयपुर मध्ये ।

२३७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८७ । ले० काल सं० १८६४ फागुण बुदी १२ । वे० सं० ३४१ । अ भण्डार ।

विशेष—यह प्रति स्योजीरामजी शिवान के मन्दिर की है ।

२३७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५६ । ले० काल सं० १७६६ कार्तिक सुदी ११ । वे० सं० १४ । छ भण्डार ।

विशेष—सं० १८०३ जेठ बुदी ६ के दिन उदयराम ने इस प्रति का संशोधन किया था ।

२३७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १७ से १२७ । ले० काल सं० १८८८ वैशाख सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ४६४ । अ भण्डार ।

विशेष—महात्मा पद्मलाल ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त छ, अ तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १३, ४८६, १६२६) और है ।

२३७७. शालिभद्रचौपई—मतिसागर । पत्र सं० । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल सं० १६७८ आसीज बुदी ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१५४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र आधा फटा हुआ है ।

२३७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ३६२ । अ भण्डार ।

२३७९. शालिभद्र चौपई..... । पत्र सं० ५ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३० ।

विशेष—रचना में ६० पद्य हैं तथा अशुद्ध लिखी हुई है । अन्तिम पाठ नहीं है ।

प्रारम्भ—

श्री सात्तण सायक सुमरिये बख्शमान जिनचंद ।

अलीइ विघन दुरोहरं आपै प्रमानंद ॥१॥

२३८०. शिशुपालवध—महाकवि भगध । पत्र सं० ४६ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६३ । अ भण्डार ।

२३८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ६३४ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० लक्ष्मीचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

२३८२. शिशुपालवध टीका—मल्लिनाथसूरि । पत्र सं० १४४ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३२ । अ भण्डार ।

विशेष—९ सर्ग हैं । प्रत्येक सर्ग की पत्र संख्या अलग अलग है ।

२३८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २७६ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम सर्ग तक है ।

२३८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ३३७ । अ भण्डार ।

२३८५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ से १४४ । ले० काल सं० १७६६ । अपूर्ण । वे० सं० १८४ । अ भण्डार ।

२३८६. अवरणभूषण—नरहरिभट्ट । पत्र सं० २५ । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४२ । अ भण्डार ।

विशेष—विदग्धमुखमंडन की व्याख्या है ।

प्रारम्भ—ओं नमो पार्श्वनाथाय ।

हेखंवव किमंव किम् तव कारता तस्य चांद्रीकला

कृत्यं किं शरजन्मनोक्त मन पार्श्वतारु रं स्यादिति तातः ।

कुम्परति गृह्यतामिति विहायाहर्तुमन्यां कला—

भाकाशे जयति प्रसारित कर स्तंबरमयामणी ॥१॥

यः साहित्यमुखेदुर्नरहरि रत्नलालनंदनः ।

कुक्षते सैशवरा भूषणव्यां विदग्धमुखमंडणव्याख्या ॥२॥

प्रकाराः संतु बहवो विदग्धमुखमंडने ।

तथापि मत्कृतं भावि मुख्यं भूषण—भूषणं ॥३॥

अन्तिम पुरिषः—इति श्री नरहरभट्टविरचिते अवरणभूषणे चतुर्थः परिच्छेदः संपूर्णः ।

२३८७. श्रीपालचरित्र—अ० नेमिदत्त । पत्र सं० ६८ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल सं० १५८५ । ले० काल सं० १६४३ । पूर्ण । वे० सं० २१० । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है । प्रशस्ति—

संवत् १६४३ वर्षे आषाढ सुदी ५ शनिवासरे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगन्धे श्रीकुन्द-
कुंदाचार्यगणे अष्टमस्तु श्रीनन्दसिन्धेमातामहो अष्टमस्तु श्री शुभचन्द्रदेवात्तपहो अ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पहो अ० प्रभाचन्द्र-
देवा मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवा तत्शिष्य म० भुवनकीर्तिदेवा तत्शिष्य म० धर्मकीर्तिदेवा द्वितीय शिष्यमंडलाचार्य
विशालकीर्तिदेवा तत्शिष्य मंडलाचार्य लक्ष्मीचंददेवा तदन्वये म० सहसकीर्तिदेवा तदन्वये मंडलाचार्य नेमचंद तदाम्नाय
संडलवालान्वये रैवासा वास्तव्ये दगडा गोत्रे सा० लीला त.....

२३८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० ६९६ । क भण्डार ।

२३८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८४५ ज्येष्ठ सुदी ३ । वे० सं० १९२ । ख भण्डार ।

विशेष—मालवदेश के पूर्णासा नगर में आदिनाथ चैत्यालय में ग्रन्थ रचना की गई थी । विजयराम ने तक्षकपुर (टोडारामसिंह) में अपने पुत्र चि० टेकचन्द के स्वाभ्यायार्थ इसकी तीन दिन में प्रतिलिपि की थी ।

यह प्रति पं० सुखलाल की है । हरिदुर्ग में यह ग्रन्थ मिला ऐसा उल्लेख है ।

२३९०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३९ । ले० काल सं० १८६५ आसोज सुदी ४ । वे० सं० १९३ । ख भण्डार ।

विशेष—केकड़ी में प्रतिलिपि हुई थी ।

२३९१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४२ से ७९ । ले० काल सं० १७६१ सावन सुदी ४ । वे० सं० । क भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती में राय बुधसिंह के शासनकाल में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

२३९२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८३१ फागुण बुदी १२ । वे० सं० ३८ । ख भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में श्वेताम्बर पंडित मुक्तिविजय ने प्रतिलिपि की थी ।

२३९३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १८२७ चैत्र सुदी १४ । वे० सं० ३२७ । अ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में पं० ऋषभदास ने कर्मक्षयार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२३९४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४४ । ले० काल सं० १८२६ भाद्र सुदी ८ । वे० सं० ६ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० रामचन्द्रजी के शिष्य सेवकाराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२३९५. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १६४४ भाद्रवा सुदी ५ । वे० सं० २१३६ । ट भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अष्ट भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० २३३, २५६) क, छ तथा अ भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ७२१, ३६ तथा ८५) और हैं ।

२३६६. श्रीपालचरित्र—अ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ५६ । मा० ११×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल शक सं० १६५३ । पूर्ण । वे० सं० १०१४ । अ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मचारी भाग्यकचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

२३६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२८ । ले० काल सं० १७६५ फागुन बुदी १२ । वे० सं० ४० । अ भण्डार ।

विशेष—तारानुपुर में मंडलाचार्य रत्नकीर्ति के प्रशिष्य विष्णुरूप ने प्रतिलिपि की थी ।

२३६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० १६२ । अ भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ चिरंजो लाल मोढ्या ने सं० १६६३ की भाँदवा बुदी ८ को बढ़ाया था ।

२३६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ (६० से ८८) ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० हरलाल ने धाम में प्रतिलिपि की थी ।

२४००. श्रीपालचरित्र..... । पत्र सं० १२ से ३४ । मा० ११ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६३ । अ भण्डार ।

२४०१. श्रीपालचरित्र..... । पत्र सं० १७ । मा० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६६ । अ भण्डार ।

२४०२. श्रीपालचरित्र—परिमल । पत्र सं० १४४ । मा० ११×८ इंच । भाषा—हिन्दी (पत्र) । विषय—चरित्र । २० काल सं० १६५१ । भाषाठ बुदी ८ । ले० काल सं० १६३३ । पूर्ण । वे० सं० ४०७ । अ भण्डार ।

२४०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६४ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० ४२१ । अ भण्डार ।

२४०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५२ से १४४ । ले० काल सं० १८५६ । वे० सं० ४०४ । अपूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—महात्मा जामीराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । दीवान शिवचन्दजी ने ग्रन्थ लिखाया था ।

२४०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८८६ पौष बुदी १० । वे० सं० ७६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ घागरे में भालमंज में लिखा था ।

२४०६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १८६७ बैशाख सुदी ३ । वे० सं० ७१७ । अ भण्डार ।

विशेष—महात्मा काजूराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२४०७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८५७ आसोज बुदी ७ । वे० सं० ७१६ । क

भण्डार ।

विशेष—अभयराम गोधा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२४०८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १८६२ माघ बुदी २ । वे० सं० ६८३ । च

भण्डार ।

२४०९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १७६० पौष सुदी २ । वे० सं० १७४ । छ

भण्डार ।

विशेष—गुटका साइज है । हिरण्मय में प्रतिलिपि हुई थी । अस्तिम ५ पत्रों में कर्मप्रकृति वर्णन है जिसका

लेखनकाल सं० १७६३ आसोज बुदी १३ है । सांगानेर में गुरुजी मद्रूराम ने कान्हूजीदास के पठनार्थ लिखा था ।

२४१०. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १८८२ सावन बुदी ५ । वे० सं० २२८ । म

भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १०७७, ४१८) च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०४) क भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ७१५, ७१८, ७२०) छ, म और द भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० २२५, २२६ और १६१३) और हैं ।

२४११. श्रीपालचरित्र..... । पत्र सं० २५ । मा० ११३ × ८ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र ।
२० काल × १ ले० काल सं० १८६१ । पूर्ण । वे० सं० १०३ । च भण्डार ।

विशेष—अमीचन्दजी सौगानी तबेला वालोंको बहूने लिखवाकर विजैरामजी पांड्या के मन्दिर में विराज-
मान किया ।

२४१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० ७०० । क भण्डार ।

२४१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १६२६ पौष सुदी ८ । वे० सं० ८० । ग
भण्डार ।

२४१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६१ । ले० काल सं० १६३० फागुन सुदी ६ । वे० सं० ८२ । ग
भण्डार ।

२४१५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १६३४ फागुन बुदी ११ । वे० सं० २५६ । ज
भण्डार ।

विशेष—मन्नालाल पापडीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४१६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ६७४ । अ भण्डार ।

२४१७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ४४० । अ भण्डार ।

२४१८. श्रीपालचरित्र.....। पत्र सं० २४। मा० ११३×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र।
२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६७५।

विशेष—२४ से आगे पत्र नहीं हैं। दो प्रतियों का मिश्रण है।

२४१९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३९। ले० काल ×। वे० सं० ८१। ग मण्डार।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी।

२४२०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६८४। च मण्डार।

२४२१. श्रेणिकचरित्र.....। पत्र सं० २७ से ४८। मा० १०×४२ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-
चरित्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७३२। छ मण्डार।

२४२२. श्रेणिकचरित्र—भ० सकलकीर्ति। पत्र सं० ४९। मा० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत।
विषय-चरित्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३५६। च मण्डार।

२४२३. प्रति सं० २। पत्र सं० १०७। ले० काल सं० १८३७ कार्तिक सुदी। अपूर्ण। वे० सं० २७।
छ मण्डार।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है।

२४२४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७०। ले० काल ×। वे० सं० २८। छ मण्डार।

विशेष—दो प्रतियों को मिलाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है।

२४२५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८१। ले० काल सं० १८१८। वे० सं० २९। छ मण्डार।

२४२६. श्रेणिकचरित्र—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं० ८४। मा० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
चरित्र। २० काल ×। ले० काल सं० १८०१ ज्येष्ठ बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० २४६। च मण्डार।

विशेष—टोंक में प्रतिलिपि हुई थी। इसका दूसरा नाम मविष्यत् पद्मनाभपुराण भी है।

२४२७. प्रति सं० २। पत्र सं० ११९। ले० काल सं० १७०८ चैत्र बुदी १४। वे० सं० १९४। छ
मण्डार।

२४२८. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४८। ले० काल सं० १९२९। वे० सं० १०५। घ मण्डार।

२४२९. प्रति सं० ४। पत्र सं० १३१। ले० काल सं० १८०१। वे० सं० ७३५। छ मण्डार।

विशेष—महात्मा फकीरदास ने लखनौती में प्रतिलिपि की थी।

२४३०. प्रति सं० ५। पत्र सं० १४६। ले० काल सं० १८६४ माघाढ सुदी १०। वे० सं० ३५२। च
मण्डार।

२४३१. प्रति सं० ६। पत्र सं० ७५। ले० काल सं० १८६१ आषाढ बुदी १। वे० सं० ३५२। च
मण्डार।

विशेष—जयपुर में उदयचंद लुहाड़िया ने प्रतिलिपि की थी।

२४३२. श्रेणिकचरित्र—भट्टारक विजयकीर्ति । पत्र सं० १२६ । मा० १०×४½ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १८२० फागुण बुदी ७ । ले० काल सं० १२०३ पौष सुदी ३ । पूर्ण । वै० सं० ४३७ ।
अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थकार परिचय—

विजयकीर्ति भट्टारक जान, इह भाषा कीधी परमाण ।
संवत मठारास बीस, फागुण बुदी सातै सु जगोस ॥
बुधवार इह पूरण भई, स्वाति नक्षत्र बृद्ध जोग सुखई ।
गोत पाटणी है मुनिराय, विजयकीर्ति भट्टारक घाय ॥
तसु पटधारी श्री मुनिजानि, बडजात्यातसु गोत पिछारि ।
त्रिलोकेन्द्रकीर्तिरिषिराज, नितप्रांत साधय आत्म काज ॥
विजयमुनि शिषि दुसिय सुजाण श्री बैराब देवा तसु प्राण ।
धर्मचन्द्र भट्टारक नाम, ठोत्मा गोत वरण्यो अभिराम ।
मलयलेख सिधासण मही, कारंजय पट सोभा लही ॥

२४३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० १८८३ ज्येष्ठ सुदी ५ । वै० सं० ८३ । ग
भण्डार ।

विशेष—महाराजा श्री अयसिंहजी के शासनकाल में जयपुर में सवाईराम गोधा ने आदिनाथ चैत्यालय में
प्रतिलिपि की थी । मीहनराम चौधरी पांढ्या ने ग्रन्थ लिखवाकर चौधरियों के चैत्यालय में बद्धाया ।

२४३४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वै० सं० १६३ । छ भण्डार ।

२४३५. श्रेणिकचरित्रभाषा..... । पत्र सं० ५१ । मा० ११×५½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ७३३ । छ भण्डार ।

२४३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ से ६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ७३४ । छ भण्डार ।

२४३७. संभवजिण्णाहचरित (संभवनाथ चरित्र) तेजपाल । पत्र सं० ६२ । मा० १०×५ इंच ।
भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । वै० सं० ३६५ । अ भण्डार ।

२४३८. सागरदत्तचरित्र—हीरकवि । पत्र सं० १८ से २० । मा० १०×४½ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १७२४ आसोज सुदी १० । ले० काल सं० १७२७ कार्तिक बुदी १ । अपूर्ण । वै० सं०
८३५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १७ पत्र नहीं हैं ।

ढाल पचतालोसभो गुरुवानी—

संवत् वेद युग जगदीश मुनि शशि वर्ष उदार ॥ सुगुण नर सांभलो ॥
 भेदपाद माहे लिख्यो विजय दशमि दिन सार ॥ ५ ॥ सुगुण०
 गड जालोरइ युग तस्युं लिखीउए अधिकार ।
 गहूँ सिधि योगइ गही नमोदसीं तिनसार ॥ ६ ॥ सु०
 भाद्रव भास महिमा धरी पूरण करयो विचार ।
 भविक नर सांभलो पचतालीस ढाले सही गाथा सातसईसार ॥ ७ ॥ सु०
 लूंकइ गच्छ लायक यती बीर सीह जे माल ।
 गुरुं भांभरण श्रुत केवली धिवर गुणो चोसाल ॥ ८ ॥ सु०
 समरथधिवर महा मुनी सुंदर सय उदार ।
 तल शिष भाव धरी भणइ सुगुण तरणइ आधार ॥ ९ ॥ सु०
 उछी अधिक्यों कह्यो कवि चातुरीय किलोल ।
 मिथ्या दुःकृत ते होज्यो जिन साखइ बजसाल ॥ १० ॥ सु०
 सजम जन नर नारि जे संभली सहइ उल्हास ।
 नरनारी धर्मातिमा पंडित म करो को हास ॥ ११ ॥ सु०
 दुरजन नइ न सुहावई नहीं भावइ कहे दाय ।
 माखी चंदन नाहरइ असुचितिहां बलि जाय ॥ १२ ॥ सु०
 प्यारों लागइ संतनइ पामर चित संतोष ।
 ढाल मली २ संभली चिते थो ढाल रोष ॥ १३ ॥ सु०
 श्री गच्छ नायक तेजसी जब लग प्रतपो भाण ।
 हीर मुनि मासीस खइ हो ज्यो कोडि कलमाण ॥ १४ ॥ सु०
 सरस ढाल सरसी कषर सरसो सह अधिकार ।
 हीर मुनि गुरु नाम धी आणंद हरथ उदार ॥ १५ ॥ सु०

इति श्री ढाल सागरदत्त चरित्र संपूर्ण । सर्व गाथा ७१७ संवत् १७२७ वर्षे कार्तिक सुदी १ दिने सोम-
 वासरे लिखित श्री धन्यजी ऋषि श्री केशवजी तत् पिप्प प्रवर पंडित पूज्य ऋषि श्री ५ मामजातदत्तेवसी निषिक्त
 मुनिसावल आत्मार्थे । जोधपुरमध्ये । शुभं भवतु ।

२४३६. सिरिपालचरित्र—पं० तरसेज । पत्र सं० ४७ । भा० ६१×४६ इंच । भाषा—अपभ्रंश ।
 विषय—राजा श्रीपाल का जीवन वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १६१५ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं०
 ४१० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रन्तिम पत्र जीर्ण है । तक्षकगढ नगर के आदिनाथ ब्रह्मालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

२४४०. सीताचरित्र—कवि रामचन्द्र (दत्तक) । पत्र सं० १०० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । २० काल सं० १७१३ मंगसिर सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०० ।

विशेष—रामचन्द्र कवि बालक के नाम से विख्यात थे ।

२४४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८० । ले० काल × । वे० सं० ६१ । ग भण्डार ।

२४४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६६ । ले० काल सं० १८८४ कार्तिक सुदी ६ । वे० सं० ७१६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति सजिन्द है ।

२४४३. सुकुमालचरित्र—श्रीधर । पत्र सं० ६५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—सुकुमाल मुनि का जीवन वर्णन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २८८ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४४४. सुकुमालचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ४४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १६७० कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ६४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६७० शके १५२७ प्रवर्तमाने महामांगल्यप्रदकार्तिकमासे शुक्लपक्षे षष्ठ्यां तिथौ सोमवासरे भागपुरमध्ये श्रीचंद्रप्रभुत्पालये श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनंददेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचंद्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचंद्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री प्रभाषदेवा मंडलाचार्य श्रीभुवनकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीधर्मकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीसहजकीर्तिदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीनेमचंद्रदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीयशकीर्तिः तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये मौलागोत्रे सा. सोनू तस्यभार्या सोनश्री तयो पुत्र सा. फलहू तस्यभार्या फूलमदे तयो पुत्रा पद । प्रथम पुत्र सा० नरसिंह तस्यभार्या नरसिंघदे । द्वितीयपुत्र सा. वरसिंह तस्यभार्या बहुरंगदे तयोः पुत्र सा. ठाकुर तस्यभार्या ठाकुरदे । तृतीयपुत्र सा. खेता तस्यभार्या खेतलदे तयोः पुत्री द्वौ प्रथमपुत्र सा. राममल तस्यभार्या रयणादे तयोः पुत्री द्वौ प्र० चि० कांकरा द्वितीय पुत्र चि० घनेश । द्वितीय पुत्र सा. पट्टा तस्यभार्या पाटमदे तयोः पुत्री द्वौ प्रथम पुत्र चि० नाथ द्वि० पुत्र चि० उदयसिंघ । चतुर्थ पुत्र सा. लूवा तस्यभार्या रूपलदे । पंचमपुत्र सा. तेजा तस्यभार्या तेजलदे । तयोः पुत्री द्वौ प्रथमपुत्र चि० बछू द्वितीयपुत्र सुलतान । षष्ठमपुत्र सा. भीवा तस्यभार्या द्वौ प्रथमा भीवलदे द्वितीय भीवलदे । तयोः पुत्रा—श्रीवारः प्रथम पुत्र सा. नानिग तस्यभार्या द्वौ प्रथमा नानिगदे द्वितीया नीलावे तयोः पुत्र चि० उदयसिंघ । सा. भीवा । द्वितीय पुत्र सा. हेमा तस्यभार्या हेमलदे । तृतीयपुत्र चि० कूठन चतुर्थ पुत्र चि० पूरण । इतेषां षड्ये सा. भीवा तस्यभार्या साध्वी भीवलदे तयेदं शास्त्रं सुकुमालचरित्राख्यं ज्ञानावरणी कर्मक्षयनिमित्तं लिखितं सत्पात्राय प्रदत्तं ।

२४४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १७८५ । वे० सं० १२५ । अ भण्डार ।

२४४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८६४ ज्येष्ठ सुदी १४ । वे० सं० ४१२ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२४४०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० ३२ । छ मण्डार ।

विशेष—कहीं कहीं संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं ।

२४४८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १८४६ ज्येष्ठ बुदी ५ । वे० सं० ३४ । छ मण्डार ।

विशेष—सांगानेर में सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२४४६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४४ । ले० काल सं० १८२६ पौष बुदी ५ । वे० सं० ८६ । अ मण्डार ।

विशेष—पं० रामचन्द्रजी के शिष्य सेवकराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त अ, क, छ, झ तथा व्य मण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ८६५, ३३, २, ३३४) और हैं ।

२४५०. सुकुमालचरित्रभाषा—पं० माधूलाल दोसी । पत्र सं० १४३ । भा० ११३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल सं० १६१८ स्वयं सुदी ७ । ले० काल सं० १६३७ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ८०७ । क मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में हिन्दी पद्य में है इसके बाद दचनिका में है ।

२४५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १६६० । वे० सं० ८६६ । क मण्डार ।

२४५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १६६४ । वे० सं० ८६४ । क मण्डार ।

२४५३. सुकुमालचरित्र—हरचंद गंगाधर । पत्र सं० १५३ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । २० काल सं० १६१८ । ले० काल सं० १६३६ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ७२० । अ मण्डार ।

२४५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७४ । ले० काल सं० १६३० । वे० सं० ७२१ । अ मण्डार ।

२४५५. सुकुमालचरित्र..... पत्र सं० ३६ । भा० ७×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १६३३ । पूर्ण । वे० सं० ८६२ । क मण्डार ।

विशेष—फतेहलाल भावसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । प्रथम २१ पत्रों में तत्त्वार्थसूत्र है ।

२४५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० से ७६ । ले० काल सं० १६६४ । वे० सं० ८६४ । क मण्डार ।

२४५७. सुकुमालचरित्र—कलिकावतभाषा । पत्र सं० ५३ । भा० ११३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल सं० १७०० आश्विन सुदी १० । ले० काल सं० १७१४ । पूर्ण । वे० सं० १६६ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रसस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १७१४ फाल्गुन सुदी १० मोजाबाद (मोजमाबाद) मध्ये श्री आदीश्वर चैत्यालये लिखितं पं०
वामोदरेण ।

२४५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८३० कार्तिक सुदी १३ । वे० सं० २३६ । अ
भण्डार ।

२४५९. सुदर्शनचरित्र—अ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ६० । आ० ११×४^१/_२ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १७१५ । अपूर्ण । वे० सं० ८ । अ भण्डार ।

विशेष—५६ से ५८ तक पत्र नहीं हैं ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १७७५ वर्षे भाष शुक्लैकादश्यांसीमे पुष्करभातीयेन मिश्रजयरामेशोर्द सुदर्शनचरित्रं लेखक पाठकयोः
शुभं भूयात् ।

२४६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४१५ । अ भण्डार ।

२४६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४१६ । अ भण्डार ।

२४६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५० । ले० काल × । वे० सं० ४९ । अ भण्डार ।

२४६३. सुदर्शनचरित्र—ब्रह्मा नैमिदत्त । पत्र सं० ६९ । आ० १३×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—
चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२ । अ भण्डार ।

२४६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० ४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है । पत्र ५६ से ५८ तक नवीन मिले हुए हैं ।

२४६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १६५२ फाल्गुन सुदी ११ । वे० सं० २२९ । अ
भण्डार ।

विशेष—साह मनोरथ ने मुकुन्ददास से प्रतिलिपि कराई थी ।

नीचे— सं० १६२८ में अषाढ सुदी ९ को पं० तुलसीदास के पठनार्थ ली गई ।

२४६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८३० चैत्र सुदी ६ । वे० सं० २२ । अ
भण्डार ।

विशेष—रामचन्द्र ने अपने शिष्य सेवकराम के पठनार्थ लिखाई ।

२४६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६७ । ले० काल × । वे० सं० ३३५ । अ भण्डार ।

२४६८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७१ । ले० काल सं० १९६० फाल्गुन सुदी २ । वे० सं० २१६८ । अ
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

२४६६. सुदर्शनचरित्र—सुमुक्तु विद्यानंदि । पत्र सं० २७ से ३६ । आ० १२३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८६३ । छ मण्डार ।

२४७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१८ । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० ४१३ । च मण्डार ।

२४७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४१४ । च मण्डार ।

२४७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १६६५ भादवा बुदी ११ । वे० सं० ४८ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

अथ संवत्सरेति श्रीपनूति (श्री नृपति) विक्रमादित्यराज्ये गताब्द संवत् १६६५ वर्षे भादी बुदि ११ शुद्ध-
वासरे कृष्ण मये अर्धलागुरदुर्ग सुबस्थाने अमरतिगजपतिन सतिराज्य मुद्राधिपतिश्रीमन्साहिसलेमराज्यप्रवर्तमाने श्रीमन्
काष्ठामंघे माधुरगम्धे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भट्टारक श्रीमलयकीर्तिदेवास्तत्पट्टे श्रीगुणभद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री
भानुकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री कुमारश्रेणिस्तदान्नाये इक्ष्वाकवंशे जैसवालान्वये ठाकुराणिगोत्रे पालं व मुमस्थाने
जिनचैत्यानये आचार्यगुणकीर्तिना पठनार्थं लिखितं ।

२४७३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १८६३ वैशाख बुदी ४ । वे० सं० ३ । छ मण्डार ।

विशेष—चित्रकूटगढ़ में राजाधिराज राणा श्री उदयसिंहजी के शासनकाल में पार्श्वनाथ चैत्यालय में भ०
जिनचन्द्रदेव प्रभाचन्द्रदेव आदि शिष्यों ने प्रतिलिपि की । प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२४७४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० सं० २१३६ । छ मण्डार ।

२४७५. सुदर्शनचरित्र..... । पत्र सं० ४ से ५६ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६८ । अ मण्डार ।

२४७६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ से ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८५ । अ मण्डार ।

विशेष—पत्र सं० १, २, ६ तथा ४० से आगे के पत्र नहीं हैं ।

२४७७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५६ । छ मण्डार ।

२४७८. सुदर्शनचरित्र..... । पत्र सं० ५४ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६० । छ मण्डार ।

२४७९. सुभौमचरित्र—भ० रतनचन्द्र । पत्र सं० ३७ । आ० ८३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—सुभौम चक्रवर्ति का जीवन चरित्र । १० काल सं० १६८३ भादवा बुदी ५ । ले० काल सं० १८५० । पूर्ण ।
वे० सं० ५५ । छ मण्डार ।

विशेष—विशुध तेजपाल की सहायता से हेमराज पाटनी के लिये ग्रन्थ रचा गया । पं० मवाईराम के शिष्य
नौनदराम के पठनार्थ गंगाविष्णु ने प्रतिलिपि की थी । हेमराज व भ० रतनचन्द्र का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

२४८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १८४० वैशाख सुदी १ । वै० सं० १५१ । अ
भण्डार ।

विशेष—हेमराज पाटनी के लिये टीजराज की सहायता से ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

२४८१. हनुमच्छरित्र—अ० अजित । पत्र सं० १२४ । आ० १०३ × ४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १६८२ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वै० सं० ३० । अ भण्डार ।

विशेष—मृगुकच्छपुरी में श्री नेमिजिनालय में ग्रन्थ रचना हुई ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६८२ वर्षे वैशाखमासे काहुलपक्षे एकादश्यां तिथौ काव्यवारे । निरूपितं पंडित श्री शावल दत्त
शास्त्रं लिखितं जोधा लेखक ग्राम वैराधरमध्ये । ग्रन्थाग्रन्थ २००० ।

२४८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १६४४ चैत्र सुदी ५ । वै० सं० १४६ । अ
भण्डार ।

२४८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८२६ । वै० सं० ८४८ । क भण्डार ।

२४८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १६२८ वैशाख सुदी ११ । वै० सं० ८४६ । क
भण्डार ।

२४८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८०७ ज्येष्ठ सुदी ४ । वै० सं० २४३ । ख
भण्डार ।

विशेष—तुलसीदास मोतीराम गंगवाल ने पंडित उदयराम के पठनार्थ कालाबेहरा (कृष्णग्रह) में प्रति-
लिपि करवायी थी ।

२४८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८२ । ले० काल सं० १८८२ । वै० सं० ६६ । ग भण्डार ।

२४८७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११२ । ले० काल सं० १५८४ । वै० सं० १३० । घ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति नहीं है ।

२४८८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ४४५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४८९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वै० सं० ५० । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४९०. प्रति सं० १० । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १६३३ कार्तिक सुदी ११ । वै० सं० १०८ क ।
व भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति काफी विस्तृत है ।

सद्वारक पयनंदि की आम्नाय में खंडेलवाल ज्ञानीय साह गोत्रोत्पन्न साधु श्री जोहीध के वंश में होने वाली
बाई सहलालदे ने सोलहकारण दत्तोद्यापन में प्रतिलिपि कराकर चढ़ाई ।

२४६१. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १६२६ मंगसिर सुदी ४ । वे० सं० ३४७ ।
अ भण्डार ।

विशेष—ब० डालू लोहशर्मा सेठी गोत्र वाले ने प्रतिलिपि कराई ।

२४६२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १६७४ । वे० सं० ५१२ । अ भण्डार ।

२४६३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २ से १०५ । ले० काल सं० १६८८ माघ सुदी १२ । अपूर्ण । वे०
सं० २१४१ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र १, ७३, व १०३ नहीं हैं लेखक प्रशस्ति बड़ी है ।

इनके सतिरिक्त आ घोर अ भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १७७ तथा ४७३) घोर है ।

२४६४. हनुमच्चरित्र—ब्रह्म रायमल्ल । पत्र सं० ३६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
चरित्र । २० काल सं० १६१६ वैशाख बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०१ । अ भण्डार ।

२४६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८२४ । वे० सं० २४२ । ख भण्डार ।

२४६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १८८३ सावन बुदी ६ । वे० सं० ६७ । ग
भण्डार ।

विशेष—साह कालूराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८८३ आसोज सुदी १० । वे० सं० ६०२ । ङ
भण्डार ।

विशेष—सं० १६५६ मंगसिर बुदी १ शनिवार की सुवालालजी बंकी बासों के घड़ों पर संघीजी के
मन्दिर में यह ग्रन्थ सेंट किया गया ।

२४६८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १७६१ कार्तिक सुदी ११ । वे० सं० ६०३ । ञ
भण्डार ।

विशेष—वनपुर ग्राम में घासीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२४६९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १६६ । छ भण्डार ।

२४७०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४१ । झ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

२४७१. हारावलि—महामहोपाध्याय पुरुषोत्तमदेव । पत्र सं० १३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८५३ । ञ भण्डार ।

२४७२. होलीरेणुकाचरित्र—पं० जिनदास । पत्र सं० ५६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १६०८ । ले० काल सं० १६०८ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल के समय की ही प्राचीन प्रति है अतः महत्वपूर्ण है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति श्रीमते शान्तिनाथाय । संवत् १६०८ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे दशमीतिथी शुक्रवासरे हस्तनक्षत्रे श्री रणस्तंभदुर्गस्य शास्त्रानगरे शेरपुरनाम्नि श्रीशान्तिनाथजिनचैत्यालये श्री आलमसाह माहिधालम श्रीसल्लेमसाहेराज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे नंद्याम्नाये सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मं० श्रीधर्मचंद्रदेवास्तदाम्नायेखंडेलवालान्वये सेठीगोत्रे सा० सोल्हू तद्धार्या कूला तत्पुत्रास्त्रयः प्र. सा. पचायरा द्वि. सा. डीडा तृतीय सा. करमा । सा. पचायरा भार्या बील्हा तत्पुत्र सा. दामोदर तद्भार्ये द्वे. प्र. खेमी द्वि० नौलादे तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा. नेमा द्वितीय सा. बोधू तृतीय सा० तेजा । सा. नेमा भार्या चतुरा । सा. बोधू भार्या सवीरा सा. डीडा भार्या गीरां तत्पुत्र सा. हेमा तद्धार्ये द्वे प्रथम थीरणि द्वितीय सुहागदे तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा. भोखु द्वितीय सा. चतुरा तृतीय सा. भोबालु । सा. करमा भार्या टरमी तत्पुत्री द्वौ प्र. सा. धर्मदास द्वि० सा. जसवंत । सा. धर्मदास भार्या सिंगारदे जसवंत भार्या जसमादे तत्पुत्र चिरंजीवी ईसरदास एतेषांमध्ये जिनपूजापुरंदरेण उसमगुणगणालंकृतगात्रेण सा. कर्मानामध्ये येनेदंशास्त्रलिखाप्य आचार्य श्री ललितकीर्तये वटापितं दशलक्षपत्रतोषणार्थं ।

२५०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल X । वे० सं० ३९ । अ भण्डार ।

२५०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १७२६ भात्र मुदी ७ । वे० सं० ४५१ । च भण्डार ।

विशेष—यह प्रति पं० राममल्ल के द्वारा वृन्दावती (वृन्दी) में स्वपठनार्थं चन्द्रप्रभु चैत्यालय में लिखी गई थी । कवि जिनदास रणस्थंभौरगढ़ के समीप नवलक्षपुर का रहने वाला था । उसने शेरपुर के शान्तिनाथ चैत्यालय में सं० १६०८ में उक्त ग्रन्थ की रचना की थी ।

२५०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ से ३५ । ले० काल X । ग्रपूसी । वे० सं० २१७१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।



कथा-साहित्य

२५०६. अकलंकदेवकथा.....। पत्र सं० ४। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा।
२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०५६। ट मण्डार।

२५०७. अक्षयनिधिमुष्टिकाविधानव्रतकथा.....। पत्र सं० ६। आ० २२×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत।
विषय-कथा। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८३४। ट मण्डार।

२५०८. अठारहनाते की कथा—ऋषि लालचन्द। पत्र सं० ४२। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-
हिन्दी। विषय-कथा। २० काल सं० १८०५ माह सुदी ५। ले० काल सं० १८८३ कार्तिक बुदी ८। वे० सं० १६८।
अ मण्डार।

विशेष—अन्तिम भाग—

संमत अठारह पचडोतर १८०५ जी हो माह सुदी पांचा गुरुवार।

भगवत मुहुरत सुभ जोग में जी हो अष्टादशे बुधवार ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७३॥

श्री जीतोड तलहटी राजियो, जी हो ऋषि जीनेश्वर स्याम।

श्री सीध दीलती बी बणी जी हो सीध की पूरी जे हाम ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७०॥

तलहटी श्री सींगराज तो, जी हो बहुलो छय परिवार।

बेटा बेटा पीतरा जी हो अनधन अधीक अपार ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७१॥

श्री कोठारी काम का धणी, जी हो छाजड सो नगरा सेठ।

था रावत मुरारण गोखर दीरता जी हो और बाण्या हेठ ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७२॥

श्री पुन्ध मग छगीडवो महा जी हो श्री विजयराज वांखारण।

पाट धरार मांतर जी हो गुण सागर गुण छारण ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७३॥

सोभागी सीर मेहरो जी हो साग सुरी कल्याण।

परवारा पूरो सही जी हो सकल वातां सु बीयारण ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७४॥

श्री बीजयेभलैं गीडवोभणी जी हो श्री भास सागर सुरी पाट।

श्री तीलक सुरंद बीर जीवज्यो जी हो सहस्रगुणों का धाटै ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७५॥

साध सकल में सोभतो जी हो ऋषि लालचन्द गुसीग।

अठारा नता चौथी कथी जी हो ढाल भणी इगतीस ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७६॥

ईती श्री धर्मउपदेस अठारा नाता चरीत्र संपूर्ण समाप्ता ॥

लिखतु चेली सुवकुवर जी आरज्या जी श्री १०८ श्री श्री श्री भागाजी तत् सखणी जी श्री श्री डमरजा श्री रामकुवर जी । श्री सेवकुवर जी श्री चंदनराजी श्री दुल्हडी भणतां गुणतां संपूर्ण ।

संवत् १८८३ वर्षे साके वर्षे मिती आसोज (काती) वदी ८ में दिन बार सोमरे । ग्राम संतामगडमध्ये संपूर्ण, चोमासो तीजो कीधो ठाणा ६॥ की धो छो जदी लखीइ छ जी । श्री श्री १०८ श्री श्री मासत्या जी क प्रसाद लखेइ छ सेवुलो ॥ श्री श्री मासत्या जी वाचवाने अरथ । आरभा जी वाचवान अरथ ठाणा ॥ ६ ॥

२५०६. अनन्तचतुर्दशी कथा—ब्रह्म ज्ञानसागर । पत्र सं० १२ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२३ । अ भण्डार ।

२५१०. अनन्तचतुर्दशीकथा—मुनीन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ५ । आ० १६×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३ । च भण्डार ।

२५११. अनन्तचतुर्दशीकथा..... । पत्र सं० ३ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५ । झ भण्डार ।

२५१२. अनन्तव्रतविधानकथा—मदनकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५८ । ट भण्डार ।

२५१३. अनन्तव्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत पद्यों के हिन्दी अर्थ भी दिये हुये हैं ।

इनके अतिरिक्त ग भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २) ङ भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ८, ९, १०, ११) झ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४) और हैं ।

२५१४. अनन्तव्रतकथा—भ० पद्मनन्दि । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १७८२ सावन बुदी १ । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

२५१५. अनन्तव्रतकथा..... । पत्र सं० ४ । आ० ७½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७ । छ भण्डार ।

२५१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१८० । ट भण्डार ।

२५१७. अनन्तव्रतकथा..... । पत्र सं० १० । आ० ६×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा (जैनतर) । २० काल × । ले० काल सं० १८३८ भादवा सुदी ७ । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

२५१८. अनन्तव्रतकथा—सुशालचन्द्र । पत्र सं० ५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८३७ आसोज बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ९९९ । अ भण्डार ।

२५१६. अंजनचोरकथा..... पत्र सं० ६ । आ० ८ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६१४ । ट भण्डार ।

२५२०. अषाढएकादशीमहात्म्य..... पत्र सं० २ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११४६ । अ भण्डार ।

विशेष—यह जैनैतर ग्रन्थ है ।

२५२१. अष्टांगसम्यग्दर्शनकथा—सकलकीर्ति । पत्र सं० २ से ३६ । आ० ७ $\frac{1}{2}$ ×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२१ । ट भण्डार ।

विशेष—कुछ बीच के पत्र नहीं हैं । आठों अङ्गों की अलग २ कथाएँ हैं ।

२५२२. अष्टांगोपाख्यान—पं० मेधावी । पत्र सं० २८ । आ० १२ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१८ । अ भण्डार ।

२५२३. अष्टाह्निकाकथा—भ० शुभचंद्र । पत्र सं० ८ । आ० १०×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०० । अ भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार में ३ प्रतियाँ (वे० सं० ४८५, १०७०, १०७२) ग भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३) छ भण्डार में ४ प्रतियाँ (वे० सं० ४१, ४२, ४३, ४४) च भण्डार में ६ प्रतियाँ (वे० सं० १५, १६, १७, १८, १९, २०) तथा छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४) और हैं ।

२५२४. अष्टाह्निकाकथा—नथमल । पत्र सं० १८ । आ० १० $\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—कथा । २० काल सं० १६२२ फागुण सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२५ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्रों के चारों ओर बेल बनी हुई है ।

इसके प्रतिरिक्त क भण्डार में ४ प्रतियाँ (वे० सं० २७, २८, २९, ७६३) ग भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ४) छ भण्डार में ४ प्रतियाँ (वे० सं० ४५, ४६, ४७, ४८) च भण्डार में ४ प्रतियाँ (वे० सं० ५०६, ५१०, ५११, ५१२) तथा छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७६) और हैं ।

इसका दूसरा नाम सिद्धचक्र व्रतकथा भी है ।

२५२५. अष्टाह्निकाकौमुदी..... पत्र सं० ५ । आ० १०×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७११ । ट भण्डार ।

२५२६. अष्टाह्निकाव्रतकथा..... पत्र सं० ४३ । आ० ६×६ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७२ । छ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४५) की और है ।

२५२७. अष्टाहिकाव्रतकथासंग्रह—गुणचन्द्रसूरि । पत्र सं० १४ । आ० १३½×६½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२ । छ भण्डार ।

२५२८. अशोकरोहिणीकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ६ । आ० १०½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । वे० सं० ३५ । छ भण्डार ।

२५२९. अशोकरोहिणीव्रतकथा..... । पत्र सं० १८ । आ० १०½×५ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६ । छ भण्डार ।

२५३०. अशोकरोहिणीव्रतकथा..... । पत्र सं० १० । आ० ८½×६ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । २० काल सं० १७८४ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० २८१ । छ भण्डार ।

२५३१. आकाशपंचमीव्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ६ । आ० ११½×६½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६०० भावण सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ५१ । छ भण्डार ।

२५३२. आकाशपंचमीकथा..... । पत्र सं० ६ से २१ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५० । छ भण्डार ।

२५३३. आराधनाकथाकोष..... । पत्र सं० ११८ से ३१७ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७३ । छ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७) तथा ट भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २१७४) और है तथा दोनों ही अपूर्ण हैं ।

२५३४. आराधनाकथाकोश..... । पत्र सं० १४४ । आ० १०½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २८६ । छ भण्डार ।

विशेष—८४वीं कथा तक पूर्ण है । ग्रन्थकर्ता का निम्न परिचय दिया है ।

श्री मूलसंघे वरभारतीये गच्छे बलात्कारगणेति रम्ये ।

श्रीकुंदकुंदाख्यमुनीन्द्रशेखो जातं प्रभाचन्द्रमहायतीन्द्रः ॥५॥

देवेंद्रचंद्रार्कसम्मर्चितेन तेन प्रभाचन्द्रमुनीश्वरेण ।

अनुब्रह्मार्थं रचितं सुवाक्यैः आराधनासारकथाप्रबन्धः ॥६॥

तेन क्रमेणैव मया स्वशक्त्या श्लोकैः प्रसिद्धैश्च निगद्यते सः ।

मार्गेण किं भानुकरप्रकाशे स्वलीलया गच्छति सर्वलोकः ॥७॥

प्रत्येक कथा के अन्त में परिचय दिया गया है ।

२५३५. आराधनासारप्रबंध—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० १५६ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६५ । ट भण्डार ।

विशेष—५६ से आगे तथा बीच में भी कई पत्र नहीं हैं ।

✦

२५३६. आरामशोभाकथा..... पत्र सं० ६ । आ० १०×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३६ । अ भण्डार ।

विशेष—जिन पूजाफल प्राप्ताएँ हैं ।

प्रारम्भ—

अथदा श्री महावीरस्वामी राजगृहेषु
समवासरदुद्याने भूयो गुण शिलाभिधे ॥१॥
सद्धर्ममूलसम्पत्त्वं नैर्मल्यकरणे सदा ।
यत्तद्धवमिति तीर्थेशा कृतिदेवादिपर्वदि ॥२॥
देवपूजादिश्रीराज्यसंपदं सुरसंपदं ।
निर्वाणकमलांचापि लभते नियतं जनः ॥३॥

अन्तिम पाठ—

मावद्देवी सुते राज्ये नाम्ना मलयसुन्दरे ।
क्षिपामि सफलं तावत्करिष्यामि निजं जनु ॥७१॥
सूरिं नत्वा गृहे गत्वा राज्यं क्षिप्त्वा निजांगजे ।
आरामशोभायुक्ते राजावतमुपाददे ॥७२॥
अधीत सर्वसिद्धार्तं संविग्नगुणसंयुतं ।
एवं संस्थापयामास मुनिराजो निजे पदे ॥७३॥
गीतार्थये तथारामशोभायै गुणभूमये ।
प्रवृत्तिनोपदं प्राक्षान् गुरुस्तद्गुणरंजितः ॥७४॥
संबोध्य भक्तिकान् सूरिः कृत्वा तैरनशनं तथा ।
विषयहादपि स्वर्गसंपदं प्रापतुर्वरं ॥७५॥
ततश्च्युत्वा क्रमादेतौ नरता सुदता वरान् ।
भयान् कतिपयान् प्राप्य शास्वतीं सिद्धिमेष्यत ॥७६॥
एवं भोस्तीर्थकृद्भक्तेः फलमाकर्षं सुंदरं ।
कार्यस्तत्करणोपशो युष्माभिः प्रमदात्सदा ॥७७॥
॥ इति जिनपूजा विषये आरामशोभाकथा संपूर्ण ॥

संस्कृत पद्य संख्या २८१ है ।

२५३७. उपांगललितव्रतकथा..... पत्र सं० १४ । आ० ८३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
कथा (जैनेतर) १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२३ । अ भण्डार ।

✦

२४३८. कृष्णसंबंधकथा—अभयचन्द्रगणि । पत्र सं० ४ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—प्राकृत ।

विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १६६२ ज्येष्ठ बुद्धी १ । पूर्ण । वे० सं० ८४० । अ भण्डार ।

विशेष—आरांदरायगुरुणा सीसेण अभयचंदगणिणाय माहुराचन्द्रपुत्राणं कहाकियं ग्यारघनरसए ॥१२॥

इति रिण संबंधे छ ॥१॥

श्री श्री पं० श्री श्री आरांदविजय मुनिभिलेखि । श्री किहरोरमध्ये संवत् १६६२ वर्षे जेठ वदि १ दिने ।

२४३९. औषधदानकथा—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० ६ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
। १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८१ । ट भण्डार ।

विशेष—२ भे ५ तक पत्र नहीं है ।

२४४०. कठियारकानडरीचौपई—मानसागर । पत्र सं० १४ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । १० काल सं० १७४७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १००३ । अ भण्डार ।

विशेष—आदि भाग ।

श्री गुरुभ्योनमः ढाल जंबूद्वीप मझार एहनी प्रथम—

मुनिवर आर्यमुहस्तिकिश इक अवसरह नयइ उजेणी आधियारे ।

चरण करण व्रतधार गुणमणि आगर बहु परिवारे परिवस्थाए ॥१॥

वन वाड़ी विश्राम लेइ तिहां रह्या दोइ मुनि नगर पठाविया ए ।

आनक मांगण काज मुनिवर मान्हता भद्रानइं चरि आविया ए ॥२॥

सेठानी कहे ताम शिष्य तुम्हे केहुतास्ये काजै आव्या इहां ए ।

आर्यमुहस्तिना सीस अम्हे छां आविका उद्याने गुरु छै तिहाए ॥३॥

अन्तिम—

सत्तरै सैताले समै म. तिहां कीधौ बीमास ॥ मं० ॥

सदगुरु ना परसाद थी म. पूगी मन की आस ॥ म० ॥

मानसागर सुख संपदा म. जति सागरगणि सीस ॥ मं० ॥

साधुतणा गुणगोवतां म. पूगी मनह जगीस ॥

दिग पट कथा कोस थी म. रचीयो ए अधिकार ।

अदि को उल्लो भाषीयो मं. भिछा दुफड़ कार ॥

नवमी ढाल सोहामणी मं० गौडी राम सुरंग ।

मानसागर कहै सांभलो दिन दिन यधतो रंग ॥ १० ॥

इति श्री सील विषय कठियार कानडरी चौपई संपूर्ण ।

२५४१. कथाकोश—हरिषेणार्च्य । पत्र सं० ४६१ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल सं० ६८६ । ले० काल सं० १५६७ पीष सुदी १४ । वे० सं० ८४ । च भण्डार ।

विशेष—संधी पदार्थ ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२५४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१८ । आ० १०×५३ इंच । ले० काल १८३३ भाद्रपद सुदी २२ । वे० सं० ६७१ । क भण्डार ।

२५४३. कथाकोश—धर्मचन्द्र । पत्र सं० ३६ से १०६ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १७६७ अषाढ सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० १६६७ । अ भण्डार ।

विशेष—१ से ३८, ५३ से ७० एवं ८७ से ८९ तक के पत्र नहीं हैं ।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १७६७ का आषाढमासे कुप्यपक्षे नवम्यां शनिवारे अजमेराख्ये नगरे पातिस्याहाजी महमदस्याहजी महाराजाधिराज राजराजेश्वरमहाराजा श्री उर्भेसिंहजी राज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसंघेसरस्वतीगच्छे वलात्कारमणे नंद्याम्नाये कुंदकुंदाचार्यान्वये मंडलाचार्य श्रीरत्नकीर्तिजी तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीविद्यानंदिजी तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीश्रीमहेन्द्रकीर्तिजी तत्पट्टे मंडलाचार्यजी श्री श्री श्री १०८ श्री अनंतकीर्तिजी तदाम्नाये ब्रह्मचारीजी किसनदासजी तत् शिष्य पंडित मनसारासेण व्रतकथाकोशाख्यं शास्त्रलिखापितं धर्मोपदेशदानार्थं ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं भंगलभूयाच्चतुर्विधसंघानां ।

२५४४. कथाकोश (आराधनाकथाकोश)—अ० नेमिदत्त । पत्र सं० ४६ से १६२ । आ० १२½×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८०२ कार्तिक सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० २२६६ । अ भण्डार ।

२५४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०३ । ले० काल सं० १६७५ सावन सुदी ११ । वे० सं० ६८ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है ।

इनके अतिरिक्त क भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४) च भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३४) छ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६४, ६५) और हैं ।

२५४६. कथाकोश..... पत्र सं० २५ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६ । च भण्डार ।

विशेष—च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५७, ५८) छ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २११७ २११८) और हैं ।

२५४७. कथाकोश..... पत्र सं० २ से ६८ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ । क भण्डार ।

२५४८. कथारत्नसागर—नारचन्द्र । पत्र सं० ५ । आ० १०^१/_२ × ४^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२५४ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के १० से २१ पत्र हैं ।

२५४९. कथासंग्रह—ब्रह्मज्ञानसागर । पत्र सं० २५ । आ० १२ × ६^१/_२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८५४ बैशाख बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३६८ । अ भण्डार ।

नाम कथा	पत्र	पत्र संख्या
[१] त्रैलोक्य तीज कथा	१ से ३	५२
[२] निसर्वाष्टमी कथा	४ से ७	६४
[३] जिन रात्रिगत कथा	७ से १२	६६
[४] अष्टाह्निका व्रत कथा	१२ से १५	५२
[५] रक्षबंधन कथा	१५ से १६	७६
[६] रोहिणी व्रत कथा	१६ से २३	६५
[७] आश्विनवार कथा	२३ से २५	३७

विशेष—१८५४ का बैशाखमासे कृष्णपक्षे तिथी २ शुक्लासरे । लिख्यंत महात्मा स्याभुराम सवाई जयपुर मध्ये । लिखायंत चिरंजीव साहजी हरचंदजी जाति भौसा पठनार्थ ।

२५५०. कथासंग्रह..... । पत्र सं० ३ से ६ । आ० १० × ४^३/_४ इञ्च । भाषा—प्राकृत हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२६३ । अपूर्ण । अ भण्डार ।

२५५१. कथासंग्रह..... । पत्र सं० ६४ । आ० १२ × ७^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६ । क भण्डार ।

विशेष—व्रत कथाएँ भी हैं । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १००) और है ।

२५५२. कथासंग्रह..... । पत्र सं० ७८ । आ० १०^१/_२ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४४ । अ भण्डार ।

२५५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० १५७८ । वे० सं० २३ । ख भण्डार ।

विशेष—३४ कथाओं का संग्रह है ।

२५५४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न कथाएँ ही हैं ।

१. पौडशकारणकथा—पद्मप्रभदेव ।

२. रत्नप्रयविधानकथा—रत्नकोत्ति ।

छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६७) और है ।

२५५५. कयवन्नाचौपई—जिनचंद्रसूरि । पत्र सं० १५ । आ० १०^३/_४ × ६^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी (राजस्थानी) । विषय—कथा । २० काल सं० १७२१ । ले० काल सं० १७६६ । पूर्ण । वे० सं० २४ । छ भण्डार । विशेष—चयनविजय ने कृष्णगढ़ में प्रतिलिपि की थी ।

२५५६. कर्मविपाक..... । पत्र सं० १६ । आ० १० × ४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८१६ मंगसिर बुदो १४ । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति श्री सूर्यारणसंवादरूपकर्मविपाक संपूर्ण ।

२५५७. कवलचन्द्रायणव्रतकथा..... । पत्र सं० ४ । आ० १२ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०५ । छ भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६) तथा व्य भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४६२) और है ।

२५५८. कृष्णरुक्मिणीमंगल—पदमभगत । पत्र सं० ७३ । आ० ११^३/_४ × ५^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८६० । वे० सं० ११६० । पूर्ण । छ भण्डार ।

विशेष—श्री गणेशाय नमः । श्री गुरुभ्यो नमः । अथ रुक्मिणी मंगल लिखते ।

यादि कीयो हरि पदमयोजी, दीयो विवाण सिनाय ।
कीरतकरि श्रीकृष्ण की जी, लीयो हजुरी बुलाय ॥
पावा लाग्यो पदमयोजी, जहां बड़ा रुक्मणी जादुराय ।
कया करी हरी भगत पै जी, पीतामर पहराय ॥
आग्यादि हरि भगत नै जी, पुरी दुवारिका माहि ।
रुक्मणि मंगल सुनो जी, ते अमरापुरि जाहि ॥
नरनारियो मंगल सुनो जी, हरिचरण चितलाय ।
बै नारी इंद्र की अपहरा जी, बै नर बैकुण्ठ जाय ॥
व्याह बेल भागीरथि जी गीता सहसर नाव ।
गावतो अमरापुरी जी पाव(ब)न होय सब नाव ॥
बोले राणी रुक्मणि जी, सुणज्यो भगति सुजाण ।
या किया रति केशो तरुणी जी, येसडीर करोजी बलाण ॥
बो मंगल परगट करो जी, सत को सचद विचारि ।
बीडा दीयो हरी भगत नै जी, कथीयो कृष्ण गुरारि ॥

गुरु गोविंद ने बिनवा जी, व अभिनासी जी देव ।
 तन मन तो आगे धरा जी, कराजी गुरों की जी सेव ॥
 गुरु गोविंद बताइया जी, हरी धारै ब्रह्मंड ।
 गुरु गोविंद के सरने आये, होजो कुल की लाज सब पेली ।
 कृष्ण कृपा तैं काम हमारी, भएता पदम यो तेजी ॥

पत्र ४० — राग सिंधु ।

ससिपाल राजा दोलियो जी सुणि जे राज कबार ।
 जो जाहु बुध आयसी, तो भीत बजाऊ सार ॥
 ये के सार धार कर बैरखा, बाण वहे अपार ।
 गोला नालि अनेक छूटै सारखा रो मार ॥
 डाहलतरि फोजै भली पर आय सुणिज्यो राज्य के बार ॥
 भूप बतलाइयाइ जी..... ।

अन्तिम—

माता करी ने प्रभुजी रो आरितो भोमि दान दत होय ।
 श्रवण सत गुर साबलो, दोष न लागै कोय ॥
 श्रीकृष्ण की व्याहली, सुणै सकल चितलाय ।
 हरि पुरवै सब कामना, भगति मुक्ति फलदाय ॥
 द्वारामति आनन्द हुवा, मुनिजन देत असीस ।
 जन पिय सामलिया, सीगासरि जगदीस ॥

रक्तमणि जी मंगल संपूर्ण ॥

संवत् १८७७ का साके १७३५ का भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां चित्राभीमनक्षत्रे द्वितीयचरणे तुलानग्नेयं
 समाप्तोऽयं ॥ शुभं ॥

२५५६. कौमुदीकथा—आचार्य धर्मकीर्ति । पत्र सं० ३ से ३४ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—
 संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६६३ । अपूर्ण । वे० सं० १३२ । क भण्डार ।

विशेष—ब्रह्म हूंगरसी ने लिखा । बीच के १६ से १८ तक के भी पत्र नहीं हैं ।

२५६०. ख्याल गोपीचंदका..... । पत्र सं० १६ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
 कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८५ । भ. भण्डार ।

विशेष—अंत में श्रीर भी रागितियों के पद दिये हुये हैं ।

२५६१. चतुर्दशीविधानकथा..... । पत्र सं० ११ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८७ । च भण्डार ।

२५६२. चंद्रकुंवर की चार्ता—प्रतापसिंह । पत्र सं० ६ । आ० ११×४^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८४१ भादवा । पूर्ण । वे० सं० १७१ । अ भण्डार ।

विशेष—६६ पद्य हैं । पंडित मन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

अन्तिम—

प्रतापसिंह घर मन बसी, कविजन सदा सुहाइ ।

जुग जुग जीवों चंद्रकुंवर, बात कही कविराय ॥ ६६ ॥

२५६३. चन्दनमलयागिरिकथा—भद्रसेन । पत्र सं० ६ । आ० ११×४^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । आदि अंत भाग निम्न प्रकार है ।

प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री विक्रमपुरे, प्रणमों श्री जगदीस ।

सन मन जीवन सुख करण, पूरत जगत जगीस ॥१॥

बरदाइक भुत देवता, मति विस्तारण भात ।

प्रणमों मन धरि भोद सों, हरै विघन संघात ॥२॥

मम उपकारी परमगुरु, गुण भक्षर दातार ।

बंदे ताके चरण जुग, भद्रसेन मुनि सार ॥३॥

कहां चन्दन कहां मलयागिरि, कहां सागर कहां नीर ।

कहिथे ताकी बारता, सुणो सबै वर वीर ॥४॥

अन्तिम—

कुमर पिता पाइन छुवै, भीर लिये पुर संग ।

आंसुन की धारा छुटी, मानो न्हावण गंग ॥ १८६॥

दुख जु मन में सुख भयो, भागो विरह विजोग ।

आनन्द सों च्यारों मिले, भयो अपूरव जोग ॥ १८७॥

गाथा—

कच्छवि चंदन राया, कच्छव मलयागिरिविले ।

कच्छ जोहि दुष्मवल होई, दिठता संजोगो ह्वइ एव ॥१८८॥

कुल १८८ पद्य हैं । ६ कलिका हैं ।

२५६४. चन्दनमलयागिरिकथा—चत्तर । पत्र सं० १० । आ० १०^३/_४×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । २० काल सं० १७०१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७२ । अ भण्डार ।

अन्तिम छाल—बाल एहवी साधनुमु ।

कठिन साहावरत राख ही वत राखीहि सोइ चतर सुजाण ॥

अनुकरमइ सुखे पामीवाजी, पान्यो अमर विमोण ॥ १ ॥ गुणवंता साधनुमु ॥

गुण दान सील तप भावना, व्या रे धरम प्रधान ॥
 सुधइ चित्त जे पालइ जी पासी सुख कल्याण ॥ २ ॥ गुण० ॥
 सतिमाना गुण गावता जो जावह पातिग दूर ॥
 भली भावना भावइ जी जाइ उपसरग दूर ॥ ३ ॥ गुण० ॥
 संमत सत्रालइ इकोत्तरइ जी कीओ प्रथम अभास ॥
 जे नर नारी सांभलो जी तस मन होइ उलास ॥ ४ ॥ गुण० ॥
 राखी नगर सो पावणो जी वसइ तहां सरावक लोक ॥
 देव गुण सोख पाया जी जावइ यथला लोक ॥ ५ ॥ गुण० ॥
 गुजरति गच्छ जाणीयइ जी श्री पूज्य जी जसराज ॥
 आचारइ करो सोभतो जी सं.....वीरज रूपराज ॥ ६ ॥ गुण० ॥
 तस गच्छ माहि सोभता जी सोभा धिवर सुजाण ॥
 मोहला जी ना जस घणा जी सीव्या बुद्धि निधान ॥ ७ ॥ गुण० ॥
 वीर वचन कहइ वीरज हो तस पाटे धरमदास ॥
 भाऊ धिवर वरवाणीयइ जी पंडित गुणहि निवास ॥ ८ ॥ गुण० ॥
 तस सेवक इभ वीनवइ जी चसर कहइ चितलाय ॥
 गुणभगता गुणता भावसूजी तस मन बंछित थाय ॥ ९ ॥ गुण० ॥

॥ इति श्रीचंदनमलयागिरिचरित्रसमाप्तं ॥

२५६५. चन्दनषष्टिकथा—४० श्रुतसागर । पत्र सं० ४ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।
 विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७० । क भण्डार ।

विशेष—४ भण्डार में एक प्रति वे० सं० १६६ की और है ।

२५६६. चन्दनषष्टिकथा—४० । पत्र सं० २४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८ । घ भण्डार ।

विशेष—अन्य कथायें भी हैं ।

२५६७. चन्दनषष्टिव्रतकथाभाषा—सुरालचंद काला । पत्र सं० ६ । आ० ११×४ इंच । विषय—
 कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६ । क भण्डार ।

२५६८. चंद्रहंसकी कथा—टीकम । पत्र सं० ७० । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।
 २० काल सं० १७०८ । ले० काल सं० १७३३ । पूर्ण । वे० सं० २० । घ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त सिन्दूरप्रकरण एकीभाव स्तोत्र आदि और हैं ।

२५६६. चारमित्रों की कथा—अजयराज । पत्र सं० ५ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल सं० १७२१ ज्येष्ठ सुदी १३ । ले० काल सं० १७३३ । पूर्ण । वे० सं० ५५३ । अ भण्डार ।

२५७०. चित्रसेनकथा..... । पत्र सं० १८ । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल सं० १८२१ वीष बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० २२ । अ भण्डार ।

विशेष—श्लोक संख्या ४६५ ।

२५७१. चौधाराधनाउद्योतककथा—जोधराज । पत्र सं० ६२ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×७ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—

हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६४६ मंगसिर सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० २२ । अ भण्डार ।

विशेष—सं० १८०१ की प्रति से लिखी गई है । जमनालाल साह ने प्रतिलिपि की थी ।

सं० १८०१ 'चाकसू' इतना और लिखा है । मूल्य—५) ६) ११) इस तरह कुल ५।६ लिखा है ।

२५७२. जयकुमारमुलौचनाकथा..... । पत्र सं० १६ । आ० ७×८ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६ । अ भण्डार ।

२५७३. जिनगुणसंपत्तिकथा..... । पत्र सं० ४ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल सं० १७८५ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ३११ । अ भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार में (वे० सं० १८८) की एक प्रति और है जिसकी जयपुर में मांगीलाल बज ने प्रतिलिपि की थी ।

२५७४. जीवजीतसंहार—जैतराम । पत्र सं० ५ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसमें कवि ने मोह और चेतन के संग्राम का कथा के रूप में वर्णन किया है ।

२५७५. ज्येष्ठजिनवरकथा..... । पत्र सं० ४ । आ० १३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में (वे० सं० ४८४) की एक प्रति और है ।

२५७६. ज्येष्ठजिनवरकथा—जसकीर्ति । पत्र सं० ११ से १४ । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—

हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १७३७ आसोज बुदी ४ । अपूर्ण । वे० सं० २०८० । अ भण्डार ।

विशेष—जसकीर्ति देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे ।

२५७७. दोलामारुवणी चौपई—कुशललाभगणि । पत्र सं० २८ । आ० ८×४ इंच । भाषा—

हिन्दी (राजस्थानी) । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३८ । अ भण्डार ।

२५७८. ढोलामारुणीकीबात... । पत्र सं० २ से ७७ । आ० ६×८ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६०० आषाढ सुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० १५६१ । ट मण्डार ।

विशेष—१, ४, ५ तथा ६ठा पत्र नहीं है ।

हिन्दी गद्य तथा दोहे हैं । कुल ६८८ दोहे हैं जिनमें ढोलामारु की बात तथा राजा नल की विपत्ति आदि का वर्णन है । अन्तिम भाग इस प्रकार है—

मारुजी पीहरनै कागद लिखि प्रोहित नै सीख दीनी । ई भाति नरवल को राज करै छै । मारुजी की कूँस कंवर लिछमण स्यंघ जी हुवा । मालवरा की कूँस कंवर वीरभारु जी हुवा । बाँस कंवर ढोला जी क हुवा । ढोला जी की मारुजी को श्री महादेव जी की किरपा सु अमर जोड़ी हुई । लिछमण स्यंघ जी कंवर सुं श्रीलादे कुछाहा की चाली । ढोला सुं राजा रामस्यंघ जी तार्ई पीछी एक सौदस हुई । राजाधिराज महाराजा श्री सवाई ईसरीसिंहजी तौड़ी पीछी एक सौ चार हुई ॥

इति श्री ढोलामारुजी का राजा नल का विषा का धारणा संपूरण । मितः साठ सुदी ८ बुधवार सं० १६०० का लिछमणराम चांदवाड की पोथी सु उतार लिखित.....रामगंज में.....

पत्र ७७ पर कुछ शृंगार रस के कवित्त तथा दोहे हैं । बुधराम तथा रामचरण के कवित्त एवं गिरधर की कुंडलियां भी हैं ।

२५७९. ढोलामारुणी की बात..... । पत्र सं० १ । आ० ८ $\frac{१}{२}$ ×६ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५६० । ट मण्डार ।

विशेष—५२ पद्य तक गद्य तथा पद्य मिश्रित हैं । बीच बीच में दोहे भी दिये गये हैं ।

२५८०. रामोकारमंत्रकथा..... । पत्र सं० ४२ से ७१ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३७ । छ मण्डार ।

विशेष—रामोकार मन्त्र के प्रभाव की कथाएँ हैं ।

२५८१. त्रिकालचौबीसीकथा (रोटतीजकथा)—पं० अश्वदेव । पत्र सं० २ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० सं० २६६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३०८) की ओर है ।

२५८२. त्रिकालचौबीसी (रोटतीज) कथा—गुणनन्दि । पत्र सं० २ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० ४८२ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३३७) ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २५४) छ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ६६२, ६६३, ६६४) और हैं ।

२५८३. त्रिलोकसारकथा..... पत्र सं० १२ । आ० १० ३/४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।
२० काल सं० १६२७ । ले० काल सं० १८५० ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३८७ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

सं० १८५० शके १७१५ मिति ज्येष्ठ शुक्ल ७ रविदिने लिखायितं पं० जी श्री भागचन्दजी माल कोटै पधारया ब्रह्मचारीजी शिवसागरजी चेलान लेवा । दक्षण्याकैर उं भाई कै राडि हुई सूबादार तकूजी भाग्यो राजा जी की फते हुई । लिखितं धुनजी मेघराज नगरमध्ये ।

२५८४. दत्तात्रय..... पत्र सं० ३६ । आ० १३ ३/४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २०
२० काल X । ले० काल सं० १६१५ । पूर्ण । वे० सं० ३४१ । ज भण्डार ।

२५८५. दर्शनकथा—भारामाह ! पत्र सं० २३ । आ० १२ X ७ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी पत्र । विषय—
कथा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६८१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४१४) क भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २६३) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३६) च भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ५८६) तथा ज भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० २६५, २६६, २६७) और हैं ।

२५८६. दर्शनकथाकोश..... पत्र सं० २२ से ६० । आ० १० ३/४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ६८ । छ भण्डार ।

२५८७. दशमूर्खोंकी कथा..... पत्र सं० ३६ । आ० १२ X ५ ३/४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।
२० काल X । ले० काल सं० १७४६ । पूर्ण । वे० सं० २६० । छ भण्डार ।

२५८८. दशलक्षकथा—लोकसेन । पत्र सं० १२ । आ० ६ ३/४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल X । ले० काल सं० १८६० । पूर्ण । वे० सं० ३५० । अ भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ३७, ३८) और हैं ।

२५८९. दशलक्षकथा..... पत्र सं० ५ । आ० ११ X ४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २०
काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३१३ । अ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३०२) की और है ।

२५९०. दशलक्षकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ३ । आ० ११ X ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३०७ । अ भण्डार ।

२५६१. दानकथा—भारामल्ल । पत्र सं० १८ । आ० ११३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६७६) क भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३०४) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३०४) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १८०) तथा ज भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २६८) और है ।

२५६२. दानशीलतपभावनाका चोढालया—समयसुन्दरगणि । पत्र सं० ३ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१७६) की और है । जिस पर केवल दान शील तप भावना ही दिया है ।

२५६३. देवराजवच्छराज चौपई—सोमदेवसूरि । पत्र सं० २३ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०७ । छ भण्डार ।

२५६४. देवलोकनकथा— । पत्र सं० २ से ५ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८५३ कार्तिक सुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० १६६१ । अ भण्डार ।

२५६५. द्वादशव्रतकथा—पं० अन्नदेव । पत्र सं० ७ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२५ । क भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ७३ एक ही वैष्टन) और हैं ।

२५६६. द्वादशव्रतकथासंग्रह—ब्रह्मचन्द्रसागर । पत्र सं० २२ । आ० १२×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । २० काल × । ले० काल सं० १८५४ वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न कथाएँ और हैं ।

मौन एकादशीकथा— ब० ज्ञानसागर भाषा— हिन्दी ।

धृतस्कंधव्रतकथा— " " "

कोकिलापंचमीकथा— ब० हर्षा " हिन्दी २० काल सं० १७३६

जिनगुणसंपत्तिकथा— ब० ज्ञानसागर भाषा— हिन्दी ।

रात्रिमीजनकथा— — " "

२५६७. द्वादशव्रतकथा— । पत्र सं० ७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०० । अ भण्डार ।

विशेष—पं० अन्नदेव की रचना के आधार पर इसकी रचना की गई है ।

अ भण्डार में ३ प्रतिपां (वे० सं० १७२, ४३६ तथा ४४०) और है ।

२५६८. धनदत्त सेठ की कथा..... पत्र सं० १४ । आ० १२३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल सं० १७२५ । ले० काल × । वे० सं० १७३६ । अ भण्डार ।

२५६९. धन्नाकथानक..... पत्र सं० १५ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७ । अ भण्डार ।

२६००. धन्नासालिभद्रचौपई..... पत्र सं० २४ । आ० ८×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । मुगलकालीन कला के ३८ सुन्दर चित्र हैं । ३४ से आगे के पत्र नहीं हैं । प्रति अधिक प्राचीन नहीं है ।

२६०१. धर्मबुद्धिचौपई—लालचन्द । पत्र सं० ३७ । आ० ११३×४३ इंच । विषय—कथा । भाषा—हिन्दी पत्र । र० काल सं० १७३६ । ले० काल सं० १८३० भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ६० । अ भण्डार ।

विशेष—खरतरगच्छपति जिनचन्द्रसूरि के शिष्य विजयराजराण ने यह काल कही है । (पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

२६०२. धर्मबुद्धिपापबुद्धिकथा..... पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८३५ । पूर्ण । वे० सं० ६१ । अ भण्डार ।

२६०३. धर्मबुद्धिमन्त्रीकथा—चन्द्रावन । पत्र सं० २४ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—हिन्दी पत्र । विषय—कथा । र० काल सं० १८०७ । ले० काल सं० १८२७ सावन बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । अ भण्डार ।

नंदीश्वरकथा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ८ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६२ ।

विशेष—सांगानेर में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

अ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७५५) सं० १७८२ की लिखी हुई और है ।

२६०४. नंदीश्वरविधानकथा—हरिचरण । पत्र सं० १३ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६३ । अ भण्डार ।

२६०६. नंदीश्वरविधानकथा..... पत्र सं० ३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७३ । अ भण्डार ।

२६०७. नागसंता..... पत्र सं० १० । आ० १२×५३ इंच । भाषा—हिन्दी (राजस्थानी) । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६३ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रादि अंत भाग निम्न प्रकार है ।

श्री नागभंता लिख्यते—

नगर हीरापुर पाटण भणीयह, माहि हर केशरदेव ।
 नमणि करइ कर नाम लेई नई, करइ तुम्हारी सेव ॥१॥
 करइ तुम्हारी सेवनई, बसिगराइ तेजावीया ।
 काल कंकोडनई तित्यगित्तियर, अवर वेग बोलावीया ॥२॥
 नाद वेद आणंद अधिका, करइ तुम्हारी सेव ।
 नगर हीरापुर पाटण भणीयह, माहि हर केशरदेव ॥३॥
 राउ देहरासर बइठउ, आणे निरमल नीर ।
 डंक भयउ भागीरथी, समुद्रइ पइलइ तीर ॥४॥
 नीर लेई डंक मोकल्यउ लागी अति घणवार ।
 आर्य सवारथ पडोउ लोभइ, समुद्रइ पडलेवार ॥५॥
 सहस्र अठ्यासी जिहां देवता, जाई तिएवनि पइठउ ।
 मंया तणउ प्रवाह जु आयउ, राउ देहरा सरवइ छउ ॥६॥
 राम मोकल्या छे वाडीयै, आणे सुर ही जाइ ।
 आणे सुरही पातरी, आणे सुरही भाइ ॥७॥
 आणे सुरही भाइ नइ, आणे सुगंधी पातरी ।
 आकतुल छीनइ पाषवी, करि कण कीर सुरातडी ॥८॥
 जाइ बेउल करणउ, केबडो राइ मज कुंव जु सारी ।
 पुष्प करंडक भरीनइ, आथो राइमो कल्याछइ बाडी ॥९॥

॥ तस—

एक कामिणि अवर बाली, बिछोही भरतार ।
 डंक तणइ शिर बरसही, ताल्हण अमी संचारि ॥
 ताल्हण अमीय संचारि, मुक प्रिय भरइ मचूटइ ।
 बाजि लहरि विष भंधालिउ, ताल्ह धवल नई ऊठइ
 रुदन करइ मुख चाह हउं सु सनेहा टाली ।
 बिछोही भरतार एक कामिणि अरु बाली ॥३॥
 डाकसुंढा कल आजही, बहु कांसी भसकार ।

चंद्र रोहिणी जिम मिलिउं, तिम धरा मिली भरतार नइ ॥

तित्त गिरांराउ तूठउ बोलइ, अमीयविष गयउ छंडी ।

अंक तराइ शिर वूठउ, उठिउ नाह हुई मन संती ॥

मू'ध मंगलक छाजइ,..... ।

बहु कांसी भमकार डाक छंडा कल वाजइ ॥

इति श्री नागमंता संपूर्णम् । ग्रन्थाग्रन्थ ३००७

पोथी आ० मेरुकीर्ति जी की ॥ कथा के रूप में है । प्रति अशुद्ध लिखी हुई है ।

२६०८. नागश्रीकथा—अष्टानेमिदत्त । पत्र सं० १६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १८२३ चैत्र सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३६७) तथा ज्ञ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १०८) की ओर है ।

ज्ञ भण्डार वाली प्रति की गरुडमलजी गोधा ने मालपुरा में प्रतिलिपि की थी ।

२६०९. नागश्रीकथा—विद्यानन्दसिंह । पत्र सं० २७५ । आ० ७३×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । १० काल सं० १७७३ सावण सुदी ६ । ले० काल सं० १७८५ पौष सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । क भण्डार ।

विशेष—जोधनेर में सोनपाल ने प्रतिलिपि की थी । ३६ पत्र से आगे अद्रबाहु चरित्र हिन्दी में है किन्तु अपूर्ण है ।

२६१०. निःशल्याष्टमीकथा..... । पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० २११७ । अ भण्डार ।

२६११. निशिभोजनकथा—अष्टानेमिदत्त । पत्र सं० ४० से ५५ । आ० ८½×६½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८७ । अ भण्डार ।

विशेष—ज्ञ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६८) की ओर है जिसकी कि सं० १८०१ में महाराजा ईश्वर सिंहजी के शासनकाल में जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२६१२. निशिभोजनकथा..... । पत्र सं० २१ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—हिन्दी पत्र । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८३ । क भण्डार ।

२६१३. नेमिव्याहलो..... । पत्र सं० ३ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२५५ । अ भण्डार ।

विशेष—भारद्वय—
नरसरीपुरी राजपुत्राहु समदतिनय रास बावो ।
तस नंदन श्री नेमजी हु सावल वरण सरीरी ॥
धन धन अदे छी जयो तेव राजसवरसण करता ।
दालदरनासै जीनसो सो सोरजी हु हुतो ॥
समदवजजी रो नंद अतेरो ले पावण जी ।
हुतो सावलो हु श्री रो नमे कल्याण सु पावणो जी ॥

प्रति अशुद्ध एवं जीरा है ।

२६१४. नेमिराजलव्याहलो—गोपीकृष्ण । पत्र सं० ६ । आठ १०४६ ईश्वरी । भाषा—हिंदी ।
विषय—कथा । २० काल सं० १६६६ प्र० सावण बुदी २० । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० सं० २२१० । अ भण्डार ।
प्रारम्भ—

श्री जिरा वरण कमल नमो नमो अणगार ।

राजल नेम तणो व्याहलो जी गावसी जो नरनारी ।

हादवती जगसी भसी सोरठ बेस-अमकोर-१२११-२१११-१२११-१२११

इन्द्रपुरी सी अपमा सुंदर बहु विस्तार ॥

चौडा नो जीजण तिहां लांवा वारा जाण ।

साठि तोठि अर बाहिरे लाहर अहसर अमार ॥२११-२१११-२१११-२१११

अन्तिम—

राजल नेम तणो व्याहलो जी गावसी जो नरनारी ।

अण गुण सुरासी भलो जी पावसी सुख अपार ॥

कलश—

प्रथम सावण चौथ सुक्ली वार मंगलवार ए ।

सर्वेत् घैठांते वरस तैरसाठि मांगे सुख सुमार ए ।

अथी सेम राजल कसन गोपी तांस चरते वखानइ ।

अमुताद सीखा सहि साहि भाखी कहो कथा अमार ॥२११-२१११-२१११-२१११

इति श्री नेम राजल विवाहसो संपूर्ण ।

इसके आगे नव भव छी डंक बी है बहु अपूर्ण है ।

२६१५. पंचाख्यान—विष्णुशर्मा । पत्र सं० १ । आठ १२६४ ईश्वरी । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल सं० १६६६ प्र० सावण बुदी २० । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० सं० २२१० । अ भण्डार ।

विशेष—केवल ६३वां पत्र है । अ भण्डार में १ अति (१० सं० ४०१) अपूर्ण और छी ।

२६१६. परसरामकथा..... पत्र सं० ६ । आ० १०^१/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१७ । अ भण्डार ।

२६१७. पल्लविधानकथा—खुशालचन्द्र । पत्र सं० २१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—कथा । २० काल सं० १७८७ फागुन सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २० । क भण्डार ।

२६१८. पल्लविधानत्रयोपाख्यानकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ११७ । आ० ११^१/_४×५ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५४ । क भण्डार ।

विशेष—द्व भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६) तथा ज भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ८३) जिसका
ले० काल सं० १६१७ शाके है और है ।

२६१९. पात्रदानकथा—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र सं० ५ । आ० ११×४^१/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७८ । अ भण्डार ।

विशेष—आमेर में पं० मनोहरलालजी पादनी ने लिखी थी ।

२६२०. पुण्याश्रवकथाकोश—मुमुक्षु रामचन्द्र । पत्र सं० २०० । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६८ । क भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४६७) तथा छ भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ६६, ७०)
और हैं किन्तु तीनों ही अपूर्ण हैं ।

२६२१. पुण्याश्रवकथाकोश—दौलतराम । पत्र सं० २४८ । आ० ११^१/_४×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी
गद्य । विषय—कथा । २० काल सं० १७७७ भाद्रपद सुदी ५ । ले० काल सं० १७८८ मंगसिर सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं०
३७० । अ भण्डार ।

विशेष—अहमदाबाद में श्री अमचतेन ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में ५ प्रतियाँ (वे० सं० ४३२,
४०६, ८६५, ८६६, ८६७) तथा क भण्डार में ६ प्रतियाँ (वे० सं० ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६८, ४६९) तथा
च भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६३५) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७७) ज भण्डार में १ प्रति (वे० सं०
१३) क भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २६८) तथा ट भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६४६) और है ।

२६२२. पुण्याश्रवकथाकोश..... पत्र सं० ६४ । आ० १६×७^१/_४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल सं० १८८४ ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ५८ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साहू ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि खुशालचन्द्र के पुत्र सोनपाल ने कराकर चौधरियों के मंदिर
में बटाई ।

इसके अतिरिक्त क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४६२) तथा ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं०
२६०) [अपूर्ण] और हैं ।

२६२३. पुण्याश्रवकथाकोश—टेकचन्द । पत्र सं० ३४१ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—कथा । २० काल सं० १६२८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६७ । क भण्डार ।

२६२४. पुण्याश्रवकथाकोश की सूची..... । पत्र सं० ४ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४६ । म् भण्डार ।

२६२५. पुष्पांजलीव्रतकथा—श्रुतकीर्ति । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६) और है ।

२६२६. पुष्पांजलीव्रतकथा—जिनदास । पत्र सं० ३१ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×८ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६७७ फागुण बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ४७४ । क भण्डार ।

विशेष—यह प्रति ब्रागञ्ज देव स्थित घाटसल नगर में श्री वासुपूज्य चैत्यालय में ब्रह्म ठाकरसी के शिष्य गंगादास ने लिखी थी ।

२६२७. पुष्पांजलीव्रतविधानकथा..... । पत्र सं० ६ से १० । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१ । च भण्डार ।

२६२८. पुष्पांजलीव्रतकथा—सुशालचन्द । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६४२ कार्तिक बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३०० । ख भण्डार ।

विशेष—ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६) की और है जिसे महात्मा जोशी पन्नालाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६२९. वैतालपञ्चीसी..... । पत्र सं० ५५ । आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५० । च भण्डार ।

२६३०. भक्तामरस्तोत्रकथा—नथमल । पत्र सं० ८६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

कथा । २० काल सं० १८२६ । ले० काल सं० १८५६ फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २५५ । छ भण्डार ।

विशेष—च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७३१) और है ।

२६३१. भक्तामरस्तोत्रकथा—विनोदीलाल । पत्र सं० १५७ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी

पद्य । विषय—कथा । २० काल सं० १७४७ सावन सुदी २ । ले० काल सं० १६४६ । अपूर्ण । वे० सं० २२०१ । अ भण्डार ।

विशेष—वीच का केवल एक पत्र कम है ।

इसके अतिरिक्त छ भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ५५३, ५५४) छ भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० १८१, २२८) तथा म् भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १२६) की और हैं ।

२६३२. भक्तामरस्तोत्रकथा—पद्मलाल चौधरी । पत्र सं० १२८ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल सं० १६३१ फागुण सुदी ४ । ले० काल सं० १६३८ । पूर्ण । वे० सं० ५६० । क भण्डार ।

२६३३. भोजप्रश्नध्व । पत्र सं० १२ से २५ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२५६ । अ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७६) की ओर है ।

२६३४. मधुकैटभचध (महिषासुरवध) । पत्र सं० २३ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३५३ । अ भण्डार ।

२६३५. मधुमालतीकथा—चतुर्भुजदास । पत्र सं० ४८ । आ० ६×६½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६२८ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ५८० । छ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० ६२८ । सरदारमल गोधा ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी । अन्त के ५ पत्रों में स्तुति दी हुई है । इसी भण्डार में १ प्रति [अपूर्ण] (वे० सं० ५८१) तथा १ प्रति (वे० सं० ५८२) की [पूर्ण] ओर हैं ।

२६३६. मृगापुत्रचउढाला । पत्र सं० १ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३७ । अ भण्डार ।

विशेष—मृगारानी के पुत्र का चौढाला है ।

२६३७. माधवानलकथा—आनन्द । पत्र सं० २ से १० । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८०६ । ट भण्डार ।

२६३८. मानतुंगमानवतिचौपई—मोहनविजय । पत्र सं० २६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । पद्य । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८५१ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५३ । छ भण्डार ।

विशेष—आदि अंतभाग भिन्न प्रकार है—

आदि—

शृषभ जिणंद पदांबुजै, मधुकर करी लीन ।
आमस पुण सोइसवर, अति आरद थी लीन ॥१॥
यान पान सम जिनकर, तारण भवनिधि तोय ।
प्राप तर्या तारे अवर, नेहने प्रणवति होइ ॥२॥
भावे प्रणमुं भारती, वरदाता सुविलास ।
बावन अखर की भरयो, अखय खजानो जास ॥३॥

शुक्र करया केई क्षति थका, एह बीजे हनी शक्ति ।

किम मूँकाई तेहना, पद नीको बिधे भक्ति ॥४॥

अन्तिम— पूर्ण काय मुनीचंद्र गुप्त वर्प, बुद्धि मास शुक्ल पक्ष है । (आगे पत्र फटा हुआ है) ४७ ढाल है ।

२६३६. मुक्तावलिचतकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । १० काल × । ले० काल सं० १८७३ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० ७४ । छ मण्डार ।

विशेष—यति दयाचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

२६४०. मुक्तावलिचतकथा—सोमप्रभ । पत्र सं० ११ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १८५५ सावन सुदी २ । वै० सं० ७४ । छ मण्डार ।

विशेष—जयपुर में नैमिनाथ चैत्यालय में काभूलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२६४१. मुक्तावलिचतकथा..... । पत्र सं० ६ से ११ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १५४१ फाल्गुन सुदी ५ । अपूर्ण । वै० सं० १९६८ । अ मण्डार ।

विशेष—संवत् १५४१ वर्षे फाल्गुन सुदी ५ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदाकुंदाचार्याभिव्ये
भट्टारिक श्रीपद्मनंददेवा तत्पुत्रे भट्टारिक श्रीशुभचंद्रदेवा तत्पुत्रे मुनि जिनचंद्रदेवा खंडेलवालान्वये भायसागरे संघवी
खेता भार्या होली तत्पुत्राः संघवी चाहड, असल, कालू, जालप, लखमरा तेषां मध्ये संघवी कालू भार्या कीलसिरी तत्पुत्रा
हेमराज रिषभदास तैने री साह हेमराज भार्या हिमसिरी एतं रिदं राह्मणीमुक्तावलीकथानकं लिखापतं ।

२६४२. मेघमालाव्रतकथा..... । पत्र सं० ११ । आ० १२×६½ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८१ । अ मण्डार ।

विशेष—अ मण्डार में एक प्रति (वै० सं० २७६) और है ।

२६४३. मेघमालाव्रतकथा..... । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३०६ । अ मण्डार ।

विशेष—छ मण्डार में एक प्रति (वै० सं० ७४) की और है ।

२६४४. मेघमालाव्रतकथा—खुशालचंद । पत्र सं० ५ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५८१ । क मण्डार ।

२६४५. सौमित्रतकथा—गुणभद्र । पत्र सं० ५ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४४१ । अ मण्डार ।

२६४६. सौनिव्रतकथा..... पत्र सं० १२ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८२ । घ भण्डार ।

२६४७. यमपालमार्तण्डीकथा..... पत्र सं० १२ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५१ । ख भण्डार ।

विशेष—इस कथा से पूर्व पत्र १ से ६ तक पद्मरथ राजा दृष्टांत कथा तथा पत्र १० से १६ तक पंच
नमस्कार कथा दी हुई है । कहीं २ हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है । कथाएँ कथाकोश में से ली गई हैं ।

२६४८. रत्नावन्धनकथा—नाथूराम । पत्र सं० १२ । आ० १२३×८ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६१ । अ भण्डार ।

२६४९. रत्नावन्धनकथा..... पत्र सं० १ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल स १८३५ सावन सुदी २ । वे० सं० ७३ । झ भण्डार ।

२६५०. रत्नत्रयगुणकथा—पं० शिवजीलाल । पत्र सं० १० । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७२ । अ भण्डार ।

विशेष—ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५७) और है ।

२६५१. रत्नत्रयविधानकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ४ । आ० ११३×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६०४ आश्विन बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ६५२ । क भण्डार ।

विशेष—झ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७३) और है ।

२६५२. रत्नावलिव्रतकथा—जोशी रामदास । पत्र सं० ४ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६६६ । पूर्ण । वे० सं० ६३४ । क भण्डार ।

२६५३. रविव्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० १८ । आ० ६३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६ । ज भण्डार ।

२६५४. रविव्रतकथा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १८ । आ० ६×३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
कथा । २० काल सं० १७८५ ज्येष्ठ सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४० । झ भण्डार ।

२६५५. रविव्रतकथा—भाऊकवि । पत्र सं० १० । आ० ६३×६३ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल सं० १७६५ । पूर्ण । वे० सं० ६६० । अ भण्डार ।

विशेष—झ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७४), ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४१), क भण्डार
में एक प्रति (वे० सं० ११३) तथा द भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७५०) और हैं ।

२६५६. राठौडरतनमहेशदशोत्तरी ... पत्र सं० ३ से ८ । आ० ६३/४ इंच । भाषा—हिन्दी [राजस्थानी] विषय—कथा । २० काल सं० १५१३ वैशाख शुक्ला ६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ६७७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

दाहा—

सावित्रीउमया श्रीया मागै साम्ही आई ।

सुंदर सोचनै, इंदिर लइ बघाइ ॥१॥

हूया धवलि मंगल हरष बधीया नेह नवल ।

सूर रतन सतीया सरीस, भिलीया जाइ महल ॥२॥

श्री सुरनर फुरउधरे, वैकुंठ कीधावास ।

राजा रथणायरतणी, जुग अविचल जस बास ॥३॥

पख बैशाखह तिथि नवमी पनरौतरै वरस्स ।

बार शुक्ल डीयाविहद, हींदू तुरक बहस्स ॥४॥

जोडि भगौ खिडीयाँ जगै, रासो रतन रसाल ।

सूरा पूरा संभलउ, भउ मोटा भूपाल ॥५॥

दिली राउ बाका उजेणी रासा का च्यार तुगर हिसी कपि बात कैसी ॥ इति श्री राठौडरतन महेश दशोत्तसरी वचनिका संपूर्ण ।

२६५७. रात्रिभोजनकथा—भारामल्ल । पत्र सं० ८ । आ० ११३/८ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ४१५ । अ भण्डार ।

२६५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल X । वे० सं० ६०६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम निशिभोजन कथा भी है ।

२६५९. रात्रिभोजनकथा—किशनसिंह । पत्र सं० २४ । आ० १३/५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । २० काल सं० १७७३ भाद्रपद सुदी ६ । ले० काल सं० १६२८ भाद्रपद बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ६३५ । क भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार में १ प्रति और है जिसका ले० काल सं० १८८३ है । कालूराम साह ने प्रतिलिपि कराई थी ।

२६६०. रात्रिभोजनकथा पत्र सं० ४ । आ० १०३/५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २६६ । अ भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६१) और है ।

२६६१. रात्रिभोजनचौपई..... पत्र सं० २ । आ० १०×४^३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३१ । अ भण्डार ।

२६६२. रूपसेनचरित्र..... पत्र सं० १७ । आ० १०×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६० । अ भण्डार ।

२६६३. रैदप्रतकथा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१२ । अ भण्डार ।

२६६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १८३५ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० ७४ । अ भण्डार ।

विशेष—लश्कर (जयपुर) के मन्दिर में केवारीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८५७) तथा अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६१) की शीर हैं ।

२६६५. रैदप्रतकथा..... पत्र सं० ४ । आ० ११×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३६ । अ भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३६५) की है जिसका ले० काल सं० १७८५ भासोज सुदी ४ है ।

२६६६. रोहिणीप्रतकथा—आचार्य भानुकीर्ति । पत्र सं० १ । आ० ११^३×५^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८८८ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० ६०८ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६७) अ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४) तथा अ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७२) शीर है ।

२६६७. रोहिणीप्रतकथा..... पत्र सं० २ । आ० ११×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६२ । अ भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६६७) तथा अ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६५) जिसका ले० काल सं० १६१७ वैशाख सुदी ३ शीर है ।

२६६८. लक्ष्मिविधानकथा—पं० अश्वदेव । पत्र सं० ६ । आ० ११×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६०७ भाद्रपद सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ३१७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति का संक्षिप्त निम्न प्रकार है—

संवत् १६०७ वर्षे भाद्रपद सुदी १४ सोमवासरे श्री आदिनाथचैत्यालये तत्कालगङ्गमहादुर्यो महाराज

श्रीरामचंद्राज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये.....मंडलाचार्य धर्मचन्द्राम्नाये
खण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे सा. पद्या तद्भार्या केलमदे..... सा. कालू इदं कथा..... मंडलाचार्य धर्मचन्द्राय
दत्त ।

२६६६. रोहिणीविधानकथा पत्र सं० ८ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । अ भण्डार ।

२६७०. लोकप्रत्याख्यानधर्मिलकथा..... पत्र सं० ७ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । ले० काल × । २० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५० । अ भण्डार ।

विशेष—श्लोक सं० २४३ है । प्रते प्राचीन है ।

२६७१. वारिषेणमुनिकथा—जोधराजगोदीका । पत्र सं० ५ । आ० ६×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ । पूर्ण । वे० सं० ६७४ । अ भण्डार ।

विशेष—बृहामल विलास ने प्रतिलिपि की गयी थी ।

२६७२. विक्रमचौवीलीचौपई—अभयचन्द्रमूरि । पत्र सं० १३ । आ० ६×४३ इंच । भाषा—

हिन्दी । विषय—कथा । २० काल सं० १७२४ भाषाक बुदो १० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६२१ । ट
भण्डार ।

विशेष—मत्तिसुन्दर के लिए ग्रन्थ की रचना की थी ।

२६७३. विष्णुकुमारमुनिकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१० । अ भण्डार ।

२६७४. विष्णुकुमारमुनिकथा..... पत्र सं० ५ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७५ । अ भण्डार ।

२६७५. वैदरभीविवाह—पेमराज । पत्र सं० ६ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२५४ । अ भण्डार ।

विशेष—आदि अन्तभाग निम्न प्रकार है—

दोहा—

जिण धरम माही दीपता करो धरम सुरंग ।

सो राधा राजा सरोइ डाल भवहु रंग ॥१॥

रंग बिखरत्य न भावसी किंवता करो विचार ।

पढता सवि मुख संपजे दुरस भान हानइ भाव ॥

सुख मामणे हो रंग महल में निस भार पोढी सेजजी ।

दोष अनता उफण्या काणेमदार चिछोराछ मेहजी ॥

अन्तिम—

कवजाय सुवाण्य है वेदरभी वस्त्रार ।

मुख प्रनता भोगिया बेले हुवा अणगर ॥

दान देई चारित लोयी होवा तो जय जयकार ।

पेमराज गुरु इम मणी, मुक्त गया तत्काल ॥

मणी गुरी जे सोभली वेदरभी तणी विवाह ।

भरण तासि वे सुखे सैपजे पैह्या मुक्त भभार ।

इति वेदरभी विवाह संपूर्ण ॥

अन्व जीर्ण है । इसमें काफी खालें लिखी हुई हैं ।

२६७६. व्रतकथाकोश—श्रुतसागर । पत्र सं० ७६ । आ० १२×१३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । १० काल × १० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८७८ । अ भण्डार ।

२६७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १६४७ कात्तिक सुदी ३ । वे० सं० ६७ । छ
भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १६४७ वर्षे कात्तिक सुदि ३ बुधवार इदं पुस्तकं लिखामस्तं श्रीमदुकाष्टासंघे नंदीतरगच्छे
विद्यागणे भट्टारक श्रीराममेनान्वये तदनुकृष्टे भट्टारक श्रीसोमकीर्ति तत्पुत्रे भ० यकाःकीर्ति तत्पुत्रे भ० श्रीउदयसेन तत्पु-
त्राधारणधीर भ० श्रीविभुवनकीर्ति तत्शिष्य ब्रह्मचारि श्री नरवत इदं पुस्तिका लिखापितं खंडेलवालजातीय कासलीवाल
गोत्रे साह केशव भार्या लाडी तत्पुत्र ६ बृहद पुत्र जीनो भार्या जसनादे । द्वि० पुत्र खेमसी तस्य भार्या खेमनादे तृ० पुत्र
इसर तस्य भार्या अहंकारदे, चतुर्थ पुत्र नानू तस्य भार्या नायकदे, पंचम पुत्र साह वाला तस्य भार्या बालमदे, षष्ठ पुत्र
नाला तस्य भार्या बलतादे, सेषामध्ये साह वालेन इदं पुस्तकं कथाकोशनामधेयं ब्रह्म श्री नरदीर्घ जानावरणीकर्मक्षयार्थं
लिखाप्य प्रदत्तं । लेखक लपसम श्वेतांबर ।

संवत् १७४१ वर्षे मोहा सुदि ५ सोमवासरे भट्टारक श्री ५ विश्वसेन तस्य शिष्य मंडलाचार्य श्री ३ जय-
कीर्ति पं० दोनूचंद पं० मयारुंद युक्ते ।

२६७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७३ से १२६ । ले० काल १५८६ कात्तिक सुदी २ । पूर्ण । वे० सं०
७४ । छ भण्डार ।

२६७९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८० । ले० काल सं० १७६५ फाल्गुनी सुदी ६ । वे० सं० ६३ । छ
भण्डार ।

इनके अतिरिक्त क भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६७५, ६७६) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६८८)
तथा छ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २०, ७३, २१००) और हैं ।

२६८०. व्रतकथाकोश—पं० दामोदर । पत्र सं० ६ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७३ । क भण्डार ।

२६८१. व्रतकथाकोश—सकलकीर्त्ति । पत्र सं० १६४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८७६ । अ भण्डार ।

विशेष—छ् भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७२) की और है जिसका ले० काल सं० १८६६ सावन बुदी ५ है । श्वेताम्बर पृथ्वीराज ने उदयपुर में जिसकी प्रतिलिपि की थी ।

२६८२. व्रतकथाकोश—देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० ८६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८७७ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के अनेक पत्र नहीं हैं । कुछ कथायें पं० दामोदर की भी हैं । क भण्डार में १ अपूर्ण प्रति (वे० सं० ६७४) और है ।

२६८३. व्रतकथाकोश..... । पत्र सं० ३ से १०० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत अपभ्रंश । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६०६ फागुण बुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ८७६ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के २२ से २५ तथा २५ से २६ तक के भी पत्र नहीं हैं । निम्न कथाओं का संग्रह है—

१. पुष्पांजलिविधान कथा । संस्कृत पत्र ३ से ५

२. श्रवणद्वाराकथा—चन्द्रभूषण के शिष्य पं० अभ्रदेव " " ५ से ८

अन्तिम—चन्द्रभूषणशिष्येण कथेयं पापहारिणी ।

संस्कृता पंडिताश्रेण कृता प्राकृत सूत्रतः ॥

३. रत्नत्रयविधानकथा—पं० रत्नकीर्त्ति		संस्कृत गद्य पत्र	८ से ११
४. षोडशकारणकथा—पं० अभ्रदेव		" पद्य "	११ से १४
५. जिनरात्रिविधानकथा..... ।		" " "	१४ से २६
२६३ पद्य है ।			
६. मेघमालाव्रतकथा..... ।		" गद्य "	२६ से ३१
७. दशलक्ष्मिकथा—लोकसेन ।		" " "	३१ से ३५
८. सुगंधदशमीव्रतकथा..... ।		" " "	३५ से ४०
९. त्रिकालचतुर्षीकथा—अभ्रदेव ।		" पद्य "	४० से ४३
१०. रत्नत्रयविधि—आशाधर		" गद्य "	४३ से ५१

प्रारम्भ— श्रीवर्द्धमानमानस्य गौतमादीश्वसद्गुरुम् ।

रत्नत्रयविधि वक्ष्ये यथाभ्यायविशुद्धये ॥१॥

अन्तिम प्रशस्ति— साधो मंडितवागवंशमुगरोः सज्जनचूडामरोः ।

मालाख्यस्यनुतः प्रतीतमहिमा श्रीनागदेवोऽभवत् ॥१॥

यः शुक्लादिपदेषु मालवपतेः ज्ञात्वातिरुक्तं शिवं ।

श्रीसल्लक्ष्मणमास्वमाश्रितवसः का प्रापयन्नः श्रियं ॥२॥

श्रीमत्केशवसेनार्यवर्थवाक्यादुपेयुषा ।

पाक्षिकश्चावकीभावं तेन मालवमंडले ॥

सल्लक्षणपुरे तिष्ठत् गृहस्थाचार्यकुंजरः ।

पंडिताशाधरो भक्त्या विज्ञप्तः सम्यगेकदा ॥३॥

प्रायेण राजकार्येष्वरुद्धस्माश्रितस्य मे ।

भाद्रं किंचिदनुष्ठेयं श्रतमादिश्यतामिति ॥४॥

ततस्तेन समीक्षो वै परमाणमविस्तरं ।

उपविष्टसतामिष्टस्तव्यायं विधित्तमः ॥५॥

तेनान्यैश्च यथाशक्तिर्भवभीतैरनुष्ठितः ।

ग्रंथो बुद्धाशाधारेण सद्धर्मार्थमथो कृतः ॥६॥

विक्रमार्कव्यशीत्यष्टादशाब्दशतात्यये ।

दशम्यापश्चिमे कृष्णे प्रथतां कथा ॥७॥

पत्नी श्रीनागदेवस्य नंदाद्धर्मैण नायिका ।

मासीद्वत्तत्रयविधिं चरतीनां पुरस्मरी ॥८॥

इत्याशाधरविरचिता रत्नत्रयविधिः समाप्तः ॥

११. पुरंदरविधानकथा.....।	संस्कृत पद्य	५१ से ५४
१२. रत्नाविधानकथा.....।	गद्य	५४ से ५६
१३. दशलक्षजयमाल—रङ्गभू ।	अपभ्रंश	५६ से ५८
१४. पल्यविधानकथा।	संस्कृत पद्य	५८ से ६३
१५. अनथमोत्रतकथा—पं० हरिचंद्र ।	अपभ्रंश	६३ से ६६

मगरवाल वरवंसि ज्येष्ठाङ्गं हरिचंद्रेण ।

भक्तिं जिरण्युत्तराण्येव पयडिउ पद्धडियाछंदेण ॥१६॥

१६. चंदनषष्ठीकथा—	”	”	६६ से ७१
१७. मुक्तावलोकनकथा	—	संस्कृत	७१ से ७५
१८. रोहिणीचरित्र—	देवनंदि	अपभ्रंश	७६ से ८१
१९. रोहिणीविधानकथा—	”	”	८१ से ८५

२०. अक्षयनिधिविधानकथा	—	संस्कृत	८५ से ८८
२१. मुकुटसप्तमीकथा—पं० अश्वदेव		"	८८ से ८९
२२. मौनव्रतविधान—रत्नकीर्ति		संस्कृत गद्य	९० से ९४
२३. रुक्मणिविधानकथा—सुब्रह्मण्य		संस्कृत पद्य	१०० [अपूर्ण]

संवत् १६०९ वर्षे फाल्गुण वदि १ सोमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणो सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदानार्या-
न्वये.....।

२६८४. व्रतकथाकोश..... पत्र सं० १५२। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। २०
काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५१ छ। भण्डार।

२६८५. व्रतकथाकोश—सुशालचंद। पत्र सं० ८९। आ० १२½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-
कथा। २० काल सं० १७८७ फाल्गुन बुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६७। अ. भण्डार।

विशेष—१८ कथाएँ हैं।

इसके अतिरिक्त छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६८९) तथा
छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७८) भीर है।

२६८६. व्रतकथाकोश..... पत्र सं० १०। आ० १०×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। २०
काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८३५। ट. भण्डार।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है—

नाम	कर्ता	विशेष
ज्येष्ठजिनवरव्रतकथा—	सुशालचंद	२० काल सं० १७८२
आदित्यवारकथा—	भाऊ कवि	×
लघुरविप्रतकथा—	ब० ज्ञानसागर	—
सप्तपेरमस्थानव्रतकथा—	सुशालचन्द	—
मुकुटसप्तमीकथा—	"	२० काल सं० १७८३
अक्षयनिधिव्रतकथा—	"	—
षोडशकारणव्रतकथा—	"	—
मेघमालाव्रतकथा—	"	—
चन्दनषष्ठीव्रतकथा—	"	—
लब्धिविधानकथा—	"	—
जिनपूजापुरंदरकथा—	"	—
दशरात्रकथा—	"	—

नाम	कर्ता	विशेष
पुष्पांजलित्रतकथा—	सुरालचन्द्र	—
आकाशपंचमीकथा—	"	२० काल सं० १७५५
मुक्तावलीत्रतकथा—	"	—

पृष्ठ २६ से ५० तक लीपक लगी हुई है ।

२६८७. अतकथासंग्रह.....। पत्र सं० ६ से ६० । आ० ११३/४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०३६ । ट भण्डार ।

विशेष—६० से आगे भी पत्र नहीं हैं ।

२६८८. अतकथासंग्रह.....। पत्र सं० १२३ । आ० १२X४ इञ्च । भाषा—संस्कृत अपभ्रंश । विषय—
कथा । २० काल X । ले० काल सं० १५१६ सावरा बुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ११० । व्य भण्डार ।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है ।

नाम	कर्ता	भाषा	विशेष
सुगन्धदशमीत्रतकथा.....।		अपभ्रंश	—
अनन्तव्रतकथा.....।		"	—
रोहिणीत्रतकथा—	X	"	—
निर्दोषसप्तमीकथा—	X	"	—
दुधारसविधानकथा—मुनिविनयचंद्र ।		"	—
सुखसंपत्तिविधानकथा—विमलकीर्ति ।		"	—
निर्भरपञ्चमीविधानकथा—विनयचंद्र ।		"	—
पुष्पांजलिविधानकथा—पं० हरिश्चन्द्र ।		"	—
श्रवणद्वादशीकथा—पं० अभ्रदेव ।		"	—
षोडशकारणविधानकथा—	"	"	—
श्रुतस्कंधविधानकथा—	"	"	—
रुक्मिणीविधानकथा—	छत्रसेन ।	"	—

प्रारम्भ— जिनं प्रणम्य नेमीशं संसारार्णवतारकं ।

रुक्मिणीचरितं वक्ष्ये भव्यानां बोधकारणं ॥

अन्तिम पुष्पिका— इति छत्रसेन विरचिता नरदेव कारापिता रुक्मिणी विधानकथा समाप्तं ।

पत्येविधानकथा—	×	—	संस्कृत	—
दशलक्षणविधानकथा—	लोकसेन	—	"	—
चन्दनषष्ठीविधानकथा—	×	—	अपभ्रंश	—
जिनरात्रिविधानकथा—	×	—	"	—
जिनपूजापुरंदरविधानकथा—	अमरकीर्ति	—	"	—
त्रिचतुर्विंशतिविधान—	×	—	संस्कृत	—
जिनमुखावलोकनकथा—	×	—	"	—
शीलविधानकथा—	×	—	"	—
अक्षयविधानकथा—	×	—	"	—
मुखसंपत्तिविधानकथा—	×	—	"	—

लेखक प्रशस्ति—संवत् १५१६ वर्षे ध्रावण बुदी १५ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ० धीपद्म-
नंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा । भट्टारक श्रीपद्मनंदि शिष्य मुनि मदनकीर्ति शिष्य ब्र०
नरसिंह निमित्त । खंडेलवालान्वये दोसीगोत्रे संघो राजा भार्या देउ सुपुत्र छीछा भार्या गणोपुत्र कालु पदमा धर्मा घातमः
कर्मक्षयार्थ इदं शास्त्रं लिखाप्य ज्ञान पात्रादत्त ।

२६८६. व्रतकथासंग्रह.....। पत्र सं० ८८ । आ० १२×७ १/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है ।

द्वादशव्रतकथा—	पं० अश्वदेव ।	संस्कृत	—
कवलचन्द्रायणव्रतकथा—		"	—
चन्दनषष्ठीव्रतकथा—	खुशालचन्द ।	हिन्दी	—
नंदीश्वरव्रतकथा—		संस्कृत	—
जिनगुणसंपत्तिकथा—		"	—
होली की कथा—	छीतर ठोलिया	हिन्दी	—
रैदव्रतकथा—	ब्र० जिनदास	"	—
रत्नावलिव्रतकथा—	गुणनंदि	"	—

२६६०. व्रतकथासंग्रह—ब्र० महतिसागर । पत्र सं० २७ । आ० १०×४ १/२ । भाषा—हिन्दी । विषय—
कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७७ । क भण्डार ।

२६६१. अतकथासंग्रह..... पत्र सं० ४ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७२ । क भण्डार ।

विशेष—रविव्रत कथा, अष्टाह्निकाव्रतकथा, षोडशकारणव्रतकथा, दशलक्षणाव्रतकथा इनका संग्रह है षोडश-कारणव्रतकथा गुजराती में है ।

२६६२. अतकथासंग्रह..... पत्र सं० २२ से १०४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७८ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २१ पत्र नहीं हैं ।

२६६३. षोडशकारणविधानकथा—पं० अश्रदेव । पत्र सं० २६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६६० भाद्रवा सुदी ५ । वे० सं० ७२२ । क भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त आकाश पंचमी, रुक्मिणीकथा एवं अनंतव्रतकथा के कर्ता का नाम पं० मदनकीर्ति है ।
ट भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०२६) और है ।

२६६४. शिवरात्रिउद्यापनविधिकथा—शंकरभट्ट । पत्र सं० २२ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा (जेनेतर) । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४७२ । अ भण्डार ।

विशेष—३२ में आगे पत्र नहीं हैं । स्कंधपुराण में से है ।

२६६५. शोलकथा—भारामल्ल । पत्र सं० २० । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६६६, १११६) क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६२) घ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १००), छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७०८), झ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८०), ज भण्डार में एक प्रति (ले० सं० १६६७) और हैं ।

२६६६. शीलोपदेशमाला—मेरुसुन्दरगणि । पत्र सं० १३१ । आ० ६×४ इंच । भाषा—गुजराती लिपि हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६७ । झ भण्डार ।

विशेष—४३वीं कथा (धनश्री तक प्रति पूर्ण है) ।

२६६७. शुकसप्तति पत्र सं० ६४ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२६६८. आश्वत्थद्व्यादशीवपाख्यान..... पत्र सं० ३ । आ० १०½×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा (जेनेतर) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८८० । अ भण्डार ।

२६६६. श्रावणद्वादशीकथा.....। पत्र सं० ६८ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत गद्य । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७११ । छ भण्डार ।

२७००. श्रीपालकथा.....। पत्र सं० २७ । आ० ११×७१ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २०
काल × । ले० काल सं० १६२६ वैशाख बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ७१३ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७१४) और है ।

२७०१. श्रेणिकचौपई—दूंगा ईदु । पत्र सं० १४ । आ० ६१×४१ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
कथा । २० काल सं० १८२६ । पूर्ण । वे० सं० ७६४ । अ भण्डार ।

विशेष—कवि मालपुरा के रहने वाले थे ।

अथ श्रेणिक चौपई लीखते—

आदिनाथ बंदी जगदीस । जाहि चरित थे होई जगीस ॥
दूजा बंदी मुर निरगंश । भूला भव्य दीखावण पंथ ॥१॥
तीजा साधु सबै का पाइ । चौथा सरस्वती करी सहाय ।
जहि सेया थे सब बुधि होय । करी चौपई मन सुधि जोई ॥२॥
माता हमने करी सहाई । अखर हीरा सवारो आई ।
श्रेणिक चरित बात मै लही । जैसी जाणी चौपई कही ॥३॥
राखी सही चेलना जाणि । धर्म जैन सबै मनि आनि ।
राजा धर्म चलावै बोध । जैन धर्म को काटै खोध ॥४॥

पत्र ७ पर—बोहा—

जो भूठी मुख थे कहै, अणुदोस्या दे दोस ।
जे नर जासी नरक में, मत कोइ आणी रोस ॥१५१॥
चौपई—
कहै जती इक साह सुजाण । वामण एक पख्यो अति आण ।
जइ की पुत्र नहीं को आय । तवै न्यौल इक पाल्यो जाय ॥१५२॥
बेटो करि राख्यो निरताइ । दुर्वैठ पाव एक पै आइ ।
वांभणी सही जाइयो पूत । पली थावै जाणि अउत ॥१५३॥
एक दिवस वांभण बिचारि । पाणी नैवा चाली नारि ।
पालण बालक भेलहौ तहां । न्यौल बचन ए भाखै जहां ॥१५४॥

अन्तिम—

भेद भलो जाणो इक सार । जे सुणिसी ते उतरै पार ।
हीन पद भक्षर जो होय । जको सवारो भुणियर लोय ॥२८६॥
मैं म्हारी बुधि सारु कही । भुणियर लोग सवारो सही ।
जे ता तणो कहै निरताय । सुणता सगला पातिग जाइ ॥२८७॥
लिखिवा चाल्यौ सुख नित लही, जै साधा का गुण यो कही ।
यामै भोलो कोइ नही, हूँ वैद चौपड़ कही ॥२८८॥
बास भलो मालपुरो जाणि । टोक मही सो कियो बखार ।
जठै बसै माहाजन लोग । पान फूल का कीजै भोग ॥२८९॥
पौरि छतीसौ लीला करे । दुख थे पेट न कोइ भरै ।
राइस्यं व जी राजा बखारि । चौर चवाहन राखै भारि ॥२९०॥
जीव दया को अधिक सुभाव । सबै भलाई साथै डाय ।
पतिसाहा बंदि दीन्ही छोडि । बुरी कही भवि सुख बहोडि ॥२९१॥
धनि हिंदवाणो राज बखारि । जह मैं सीसोद्यो सो जाणि ।
जीव दया को सदा वीचार । रेंति तण्यौ राखै आधार ॥२९२॥
कीरति कहौ कहा लगि जाणि । जीव दया सहु पालै भारि ।
इह विधि सगला करे जगीस । राजा जीज्यौ सो भरु बीस ॥२९३॥
एता बरस मैं भोलो नही । बेटा पोता फल ज्यो सही ।
दुखिया का दुख टालै आय । परमेस्वर जी करे सहाय ॥२९४॥
इ पुन्य तण्यौ कोइ नहीं पार । वैदि खलास करै ते सार ।
बाकी बुरी कहै नर कोइ । जन्म आपणो चालै खोइ ॥२९५॥
संवत् सोलह सै प्रमाण । उपर सही इतासौ जाण ।
निन्याणवै कह्या निरदोष । जीव सबै पावै पोष ॥२९६॥
भाद्रव सुदी तेरस सनिवार । कडा तीन सै षट अधिकाय ।
इ सुणता सुख पासी देह । आप समाही करै सनेह ॥२९७॥

इति श्री श्रेणिक चौपड़ संपूरण मीली कार्तिक सुदि १३ सनीसरवार वरुण सं० १८२६ काडी ग्रामे लीखत
बखतसागर बांछे जहलै निम्सकार नमोस्तं बांच ज्यो जी ।

२७०२. सप्तपरमस्थानकथा—आचार्य चन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ११ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६८६ आसोज बुदी १३ । पूर्ण । बे० सं० ३५० । ज
भण्डार ।

२७०३. सप्तव्यसनकथा—आचार्य सोमकीर्ति । पत्र सं० ४१ । आ० १० ३/४ × ४ ३/४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल सं० १५२६ माघ सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२७०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १७७२ आषाढ सुदी १३ । वे० सं० १००२ । अ मण्डार ।

प्रवृत्ति—सं० १७७२ वर्षे आदणमासे कुलपक्षे त्रयोदश्यां तिथौ अर्कवासरे विजैरामेण लिपिचक्र अकल्लरपुर समीपेषु केरवाग्रामे ।

२७०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८६४ भाद्रपद सुदी ६ । वे० सं० ३६३ । अ मण्डार ।

विशेष—नेवटा निवासी महारमा हीरा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । दीवाण संगही अमरचंदजी खिन्दूका ने प्रतिलिपि दीवाण स्योजीराम के मंदिर के लिए करवाई ।

२७०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १७७६ माघ सुदी १ । वे० सं० ६६ । अ मण्डार ।

विशेष—पं० नरसिंह ने आवक गोविन्ददास के पठनार्थ हिण्डौन में प्रतिलिपि की थी ।

२७०७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १६४७ आश्विन सुदी ६ । वे० सं० १११ । अ मण्डार ।

२७०८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १७५६ कार्तिक सुदी ६ । वे० सं० १३६ । अ मण्डार ।

विशेष—पं० कपूरचंद के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

इनके अतिरिक्त अ मण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६) छ मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७५) और हैं ।

२७०९. सप्तव्यसनकथा—भारामल्ल । पत्र सं० ८६ । आ० ११ ३/४ × ५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । २० काल सं० १८१४ आश्विन सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ६८८ । अ मण्डार ।

विशेष—पत्र चिपके हुये हैं । अंत में कवि का परिचय भी दिया हुआ है ।

२७१०. सप्तव्यसनकथा भाषा—। पत्र सं० १०६ । आ० १२ × ८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६३ । अ मण्डार ।

विशेष—सोमकीर्ति कृत सप्तव्यसनकथा का हिन्दी अनुवाद है ।

अ मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६८६) और है ।

२७११. सम्मेदशिखरमहात्म्य—लालचन्द । पत्र सं० २६ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल सं० १८४२ । ले० काल सं० १८८७ आषाढ वृदी । वे० सं० ८८ । ग भण्डार ।

विशेष—लालचन्द भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य थे । रेवाड़ी (पञ्जाब) के रहने वाले थे और वहीं लेखक ने इसे पूर्ण किया ।

२७१२. सम्यक्त्त्वकौमुदीकथा—गुणाकरसूरि । पत्र सं० ४८ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल सं० १५०४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । च भण्डार ।

२७१३. सम्यक्त्त्वकौमुदीकथा—खेता । पत्र सं० ७६ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८३३ माघ सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १३६ । अ भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६१) तथा ब भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०) भी है ।

२७१४. सम्यक्त्त्वकौमुदीकथा..... । पत्र सं० १३ से ३३ । आ० १२×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६२५ भाद्र सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० १६१० । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १६२५ वर्षे शके १४६० प्रवर्तमाने दक्षिणायने मार्गशीर्ष शुक्लपक्षे षष्ठ्यां शनी श्रीकुंभलमेरुदुर्गे रा० श्री उदयसिंहराज्ये श्री खरतराज्ये श्री गुणलाल महोपाध्याये स्ववाचनार्थं लिखायिता सौवाच्यमाना चिरं तंदनात् ।

२७१५. सम्यक्त्त्वकौमुदीकथा..... । पत्र सं० ८६ । आ० १०३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६०० चैत सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ४१ । ब भण्डार ।

विशेष—संवत् १६०० में खेटक स्थान में शाह आलम के राज्य में प्रतिलिपि हुई । द० धर्मदास अग्रवाल गोयल गोश्रीय मङ्गलराणापुर निवासी के वंश में उत्पन्न होने वाले साधु श्रीदास के पुत्र आदि ने प्रतिलिपि कराई । लेखक प्रशस्ति ७ पृष्ठ लम्बी है ।

२७१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ से ६० । ले० काल सं० १६२८ बैशाख सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं०

६४ । अ भण्डार ।

श्री हूंगर ने इस ग्रंथ को अ० रायमल को भेंट किया था ।

अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीनृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६२८ वर्षे पौषमासे कृष्णपक्षपंचमीदिने भट्टारक श्रीभानुकीर्तितदाम्नाये अगरवालात्मन्ये मित्तलगोत्रे साह दासू तस्य भार्या भीली तयोपुत्र सा. गोपी सा. दीपा । सा. गोपी तस्य भार्या वीवो तयो पुत्र सा. भावन साह उवा सा. भावन भार्या बूरदा दाही तस्य पुत्र तिपरदास । साह उवा तस्य भार्या मेवनही तस्यपुत्र हूंगरसी सास्त्र सम्यक्त कौमदी ग्रंथ ब्रह्मचार रायमल्लद्वयात् पठनार्थं ज्ञानावर्णी कर्मक्षयहेतु । शुभं भवतु । लिखितं जीवतमज गोपालदास । श्रीचन्द्रप्रभु चैत्यालये अहिपुरमघ्ये ।

२७१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १७१६ पौष बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ७६६ ।
क भण्डार ।

२७१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १८३१ माघ सुदी ५ । वे० सं० ७५४ । क
भण्डार ।

विशेष—भास्कराज साहू ने जगपुर नगर में प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २०६६, ८६४) घ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११२), ङ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८००), छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८७), झ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६१), व भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०), तथा ट भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २१२६, २१३०) [दोनों अपूर्ण] और हैं ।

२७१६. सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—विनोदीलाल । पत्र सं० १६० । आ० ११×५ इंच । भाषा—
हिन्दी पद्य । विषय—कथा । २० काल सं० १७४६ । ले० काल सं० १८६० सावन बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ८७ । ग
भण्डार ।

२७२०. सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—जगतराय । पत्र सं० १५१ । आ० ११×५ इंच । भाषा—
हिन्दी पद्य । विषय—कथा । २० काल सं० १७७२ माघ सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५३ । क
भण्डार ।

२७२१. सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—जोधराज गोदीका । पत्र सं० ४७ । आ० १०½×७½ इंच ।
भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल सं० १७२४ फागुण बुदी १३ । ले० काल सं० १८२५ आसोज बुदी ७ । पूर्ण ।
वे० सं० ४३५ । अ भण्डार ।

विशेष—नैनसागर ने श्री गुलाबचंदजी गोदीका के वाचनार्थ सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी । सं०
१८६८ में पोथी की निछरावलि दिवारी पं० खुशमालजी, पं० ईसरदासजी गोदीका सून हस्ते महात्मा फत्ताह्व आई सं०
१) दिया ।

२७२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८६३ भाघ बुदी २ । वे० सं० २११ । ख
भण्डार ।

२७२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० ७६८ । ङ भण्डार ।

२७२४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० ७०३ । च भण्डार ।

२७२५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १८३५ चैत्र बुदी १३ । वे० सं० १० । झ
भण्डार ।

इनके अतिरिक्त ञ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७०४) ट भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५४३)
और हैं ।

२७२६. सम्यक्स्वकौमुदीभाषा.....। पत्र सं० १७४ । आ० १०३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०२ । छ भण्डार ।

२७२७. संयोगपंचमीकथा—धर्मचन्द्र । पत्र सं० ३ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल सं० १५०० । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । छ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८०१) और है ।

२७२८. शालिभद्रधनानीचौपई—जिनसिंहसूरि । पत्र सं० ४६ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । २० काल सं० १६७८ आसोज बुदी ६ । ले० काल सं० १८०० चैत्र सुदी १४ । अपूर्ण । वे० सं०
८४२ । छ भण्डार ।

विशेष—किशनगढ़ में प्रतिलिपि की गई थी ।

२७२९. सिद्धचक्रकथा.....। पत्र सं० २ से ११ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४३ । छ भण्डार ।

२७३०. सिंहासनवन्दीसी.....। पत्र सं० ११ से ६१ । आ० ७×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५६७ । छ भण्डार ।

विशेष—५वें अध्याय से १२वें अध्याय तक है ।

२७३१. सिंहासनद्वार्त्रिशिका—क्षेमंकरमुनि । पत्र सं० २७ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—राजा विक्रमादित्य की कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

श्रीविक्रमादित्यनरेश्वरस्य चरित्रमेतत् कविभिर्निबद्धं ।

पुरा महाराष्ट्रपरिष्ठाभाषा मयं महाश्चर्यकरंनराणां ॥

क्षेमंकरेण मुनिना वरपद्यगद्यबंधेनमुक्तिकृतसंस्कृतबधुरेण ।

विश्वोपकार बिलसत् गुणकीर्तिनायकके चिरादमरपंडितहर्षहेतु ॥

२७३२. सिंहासनद्वार्त्रिशिका.....। पत्र सं० ६३ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल सं० १७६८ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ४११ । च भण्डार ।

विशेष—लिपि विकृत है ।

२७३३. सुकुमालमुनिकथा.....। पत्र सं० २७ । आ० ११३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८७१ माह बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १०५२ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में सदासुखजी गोधा के पुत्र सवाईराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

२७३४. सुगन्धदशमीकथा..... । पत्र सं० ६ । आ० ११३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०६ । क भण्डार ।

विशेष—उक्त कथा के अतिरिक्त एक और कथा है जो अपूर्ण है ।

२७३५. सुगन्धदशमीव्रतकथा—हेमराज । पत्र सं० ५ । आ० ८३×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६८५ आवरण मुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ६६५ । अ भण्डार ।

विशेष—भिण्ड नगर में रामसहाय ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ—अथ सुगन्धदशमी व्रतकथा लिख्यते—

चौपई—

वर्द्धमान बंदो सुखदाई, गुर गोतम बंदो चितलाय ।
सुगन्धदशमीव्रत मुनि कथा, वर्द्धमान परकाशी यथा ॥१॥
पूर्वदेश राजरह गोन ऐनिक नाम नई अगिराम ।
नाम चेलना गृहपटरानी, चंद्रोहिणी रूप समान ।
गुर सिंहासन बैठी कदा, वनमाली फल ल्यामी तदा ॥२॥

अन्तिम—

सहर गहे लोज तिम वास, जैनधर्म को करै प्रकास ॥
सब आवक व्रत संयम धरै, दान पूजा सो पातिक हरै ।
हेमराज कवियन यों कही, निस्वभूषन परकासी सही ।
सो नर स्वर्ग अमरपति होय, मन धन काय मुनै जो कोय ॥३॥

इति कथा संपूरणम्

दीहा—

आवण शुक्ला पंचमी, चंद्रवार शुभ जान ।
श्रीजिन भुवन सहावनी, तिहां लिखा धरि ध्यान ॥
संवत् विक्रम भूष को, इक नव आठ सुजान ।
ताके ऊपर पांच ललि, लीजै चतुर सुजान ॥
देश भदावर के विषै, भिण्ड नगर शुभ ठाम ।
ताही मैं हम रहत हैं, रामसाय है नाम ॥

२७३६. सुदयवच्छसावलिगाकी चौपई—मुनि केशव । पत्र सं० २७ । आ० ९×४३ इंच । भाषा—

हिन्दी । विषय-कथा । २० काल सं० १६६७ । ले० काल सं० १८३७ । वे० सं० १६४१ । ट भण्डार ।

विशेष—कटक में लिखा गया ।

२७३७. सुदर्शनसेठकीढाल (कथा) । पत्र सं० ६ । आ० ९३×४३ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विषय-कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६१ । अ भण्डार ।

२७३८. सोमशर्मावारिषेणकथा.....। पत्र सं० ७। आ० १०×३३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५२३। अ भण्डार।

२७३९. सौभाग्यपंचमीकथा—सुन्दरविजयगणि। पत्र सं० ६। आ० १०×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र० काल सं० १६६६। ले० काल सं० १८११। पूर्ण। वे० सं० २६६। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी में अर्थ भी दिया हुआ है।

२७४०. हरिवंशवर्णन.....। पत्र सं० २०। आ० १०^३/_४×४^३/_४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८३६। अ भण्डार।

२७४१. होलिकाकथा.....। पत्र सं० २। आ० १०^३/_४×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६२१। पूर्ण। वे० सं० २६३। अ भण्डार।

२७४२. होलिकाचौपई—झूगरकवि। पत्र सं० ४। आ० ६×४ इंच। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—कथा। र० काल सं० १६२६ चैत्र बुदी २। ले० काल सं० १७१८। अपूर्ण। वे० सं० १५७। छ भण्डार।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र है वह भी एक ओर से फटा हुआ है। अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

सोलहसइ सुगतीसइ सार चैत्रहि वदि दुतिया बुधिवार।

नयर सिकंदरावाद.....गुणकरि आगाध, याचक मंडण श्री लेमा साध ॥८४॥

तासु सीस झूगर मति रली, भण्यु चरित्र गुण सांभली।

जे नर नारी सुगत्यइ सदा तिह घरि बहली हुई संपदा ॥८५॥

इति श्री होलिका चौपई। मुनि हरचंद लिखित। संवत् १७१८ वर्ष.....आगरामध्ये लिपिकृत ॥ रचना में कुल ८५ पद्य हैं। चौथे पत्र में केवल ८ पद्य हैं वे भी पूरे नहीं हैं।

२७४३. होलीकीकथा—छीतर ठोलिया। पत्र सं० २। आ० ११^३/_४×५^३/_४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल सं० १६६० फागुण सुदी १५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४५८। अ भण्डार।

२७४४. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १७५०। वे० सं० ८५६। क भण्डार।

विशेष—लेखक भोजमानाद [जयपुर] का निवासी था हसी गांव में उसने ग्रंथ रचना की थी।

२७४५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १८८३। वे० सं० २६। ग भण्डार।

विशेष—कालूराम साह ने ग्रंथ लिखवाकर चौधरियों के मन्दिर में चढ़ाया।

२७४६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १८३० फागुण बुदी १२। वे० सं० १६४२। ट भण्डार।

विशेष—पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२७४७. होलीकथा—जिनपुस्तकालयों में पत्र सं० १०११ अथवा १०१२२३ ई.व. भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा × । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में इसके अतिरिक्त ३ प्रतियां वे० सं० ७४ में ही प्रौर हैं ।

२७४८. होलीपर्वकथा..... पत्र सं० ३ । पृ० १०×४३ ई.व. भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४६ । अ मण्डार ।

२७४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १८०४ माघ सुदी ३ । वे० सं० २८२ । स्व
मण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त छ मण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६१०, ६११) प्रौर हैं ।



व्याकरण-साहित्य

२७५०. अनिटकारिका..... पत्र सं० १ । आ० १०३×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३५ । अ भण्डार ।

२७५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० २१४६ । ट भण्डार ।

२७५२. अनिटकारिकावचुरि..... पत्र सं० ३ । आ० १३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५० । अ भण्डार ।

२७५३. अव्ययप्रकरण..... पत्र सं० ६ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०१८ । अ भण्डार ।

२७५४. अव्ययार्थ..... पत्र सं० ८ । आ० ८×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १०
काल × । ले० काल सं० १८४८ । पूर्ण । वे० सं० १२२ । म भण्डार ।

२७५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०२१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति दीमक ने खा रखी है ।

२७५६. उणादिसूत्रसंग्रह—संग्रहकर्ता—उज्ज्वलदत्त । पत्र सं० ३८ । आ० १०×५ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०२७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

२७५७. उपाधिव्याकरण..... पत्र सं० ७ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७२ । अ भण्डार ।

२७५८. कातन्त्रविभ्रमसूत्रावचुरि—चारित्रसिंह । पत्र सं० १३ । आ० १०३×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल सं० १६६६ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २४७ । अ
भण्डार ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

नत्वा जिनेन्द्रं स्वगुहं च भक्त्या तत्सत्प्रसादात्सुसिद्धिशक्त्या ।

सत्संप्रदायादवबुधिशिमेतां लिखामि सारस्वतसूत्रयुक्त्या ॥१॥

प्रायः प्रयोगादुर्ज्ञेयाः किलकांतत्र विभ्रमो ।

येषु मो मुह्यते श्रेष्ठः शाब्दिकोऽपि यथा जडः ॥२॥

कातंत्रसूत्रविसरः खलु सारां :

यत्नाति प्रसिद्ध इह चाति खरोगरीयान् ॥

स्वस्थेतरस्ये च सुबोधविवर्द्धनार्थो ।

ऽस्तित्वं ममात्र सफलो लिखन प्रयासः ॥

अन्तिम पाठ—

वाणाश्विषडिदुमिते संवति धवलवक्त्रपुरवरे समहे ।

श्रीस्वरतरंगाणुष्करसुदिवापुष्टप्रकाराणां ॥१॥

श्रीजिनसाणिक्याभिधसूरीणां सकलसार्धभौमानां ।

पट्टे करे विजयिषु श्रीमज्जितचंद्रसूरिराजेषु ॥२॥

मीति

वाचकमतिभद्रमणोः शिष्यस्तदुपास्त्यवासपरमार्थः ।

चारित्रसिंहसामुख्यदधदधचूर्णमिह सुगमां ॥३॥

यत्निलितं भतिमाद्यावनृतं प्रयनोत्तरेत्र किंचिदपि ।

तत्सम्यक् प्राप्तवरे; शोध्यं स्वपरोरकाय ॥४॥

इति कातंत्रविभ्रमावचूरिः संपूर्णा लिखनतः ।

आचार्य श्रीरत्नभूषणस्तच्छिष्य पंडित केशवः सेनेयं लिपि कृता आत्मपठनार्थं । शुभं भवतु । संवत् १६६६ वर्षे कार्तिक सुदी ५ तिथौ ।

२७५६. कातंत्रटीका..... पत्र सं० ३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२७६०. कातंत्ररूपमालाटीका—दौर्गसिंह । पत्र सं० ३६४ । आ० १२३×४३ इंच । भाषा—

संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ । पूर्ण । वे० सं० १११ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम कलाप व्याकरण भी है ।

२७६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११२ । क भण्डार ।

२७६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७ । च भण्डार ।

२७६३. कातंत्ररूपमालावृत्ति..... पत्र सं० १४ से ८६ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १५२४ कार्तिक सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० २१४४ । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १५२४ वर्षे कार्तिक सुदी ५ दिने श्री टोंकपत्तने सुरप्रणमलप्रदीनराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनंददेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे शिष्य ब्रह्मतीक्ष्ण निमित्त । खंडेलवालांन्वये पाटणीगोत्रे सं० वन्ना भार्या धनश्री पुत्र सं. दिवराजा, दोदा, मूलाप्रभृतयः एतेषांमध्ये सा, दोदा इदं पुस्तकं ज्ञानावरणीकर्मक्षयतिमितं लिखाप्य ज्ञानपात्राय दत्तं ।

२७६४. कातन्त्रव्याकरण—शिववर्मा । पत्र सं० ३५ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

२७६५. कारकप्रक्रिया..... । पत्र सं० ३ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५५ । अ भण्डार ।

२७६६. कारकविवेचन..... । पत्र सं० ४ । आ० ११×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०७ । ज भण्डार ।

२७६७. कारकसमासप्रकरण..... । पत्र सं० ५ । आ० ११×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३३ । अ भण्डार ।

२७६८. कृदन्तपाठ..... । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६६ । अ भण्डार ।

विशेष—तृतीय पत्र नहीं है । सारस्वत प्रक्रिया में से है ।

२७६९. गणपाठ—वादिराज जगन्नाथ । पत्र सं० ३४ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७८० । ट भण्डार ।

२७७०. चंद्रोन्मीलन..... । पत्र सं० ३० । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १८३५ फागुन सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६१ । ज भण्डार ।

विशेष—सेवाराम ब्रह्मण ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२७७१. जैनेन्द्रव्याकरण—देवनन्दि । पत्र सं० १२६ । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १७१० फागुन सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३१ ।

विशेष—ग्रंथ का नाम पंचाध्यायी भी है । देवनन्दि का दूसरा नाम पूज्यपाद भी है । पंचवस्तु तक । सीलपुर नगर में श्री भगवान जोशी ने पं० श्री हर्ष तथा श्रीकल्याण के लिये प्रतिलिपि की थी ।

संवत् १७२० आसोज सुदी १० को पुनः श्रीकल्याण व हर्ष की साह श्री लूणा मधेरवाल द्वारा भेंट की गयी थी ।

२७७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १६६३ फागुन सुदी ६ । वे० सं० २१२ । क भण्डार ।

२७७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६४ से २१४ । ले० काल सं० १६६४ माह बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० २१३ । क भण्डार ।

२७७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १६६६ कार्तिक सुदी ३ । वे० सं० २१० । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संक्षिप्त संकेतार्थ दिये हुये हैं । पन्नालाल भोंसा ने प्रतिलिपि की थी ।

२७७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १६०८ । वे० सं० ३२८ । ज भण्डार ।

२७७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२५ । ले० काल सं० १८८० वंशाक्ष सुदी १४ । वे० सं० २०० । अ भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२१) अ भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ३२३, २८८) और हैं । (वे० सं० ३२३) वाले ग्रन्थ में सोमदेवसूरि कृत शब्दार्णव चन्द्रिका नाम की टीका भी है ।

२७७७ जैनेन्द्रमहावृत्ति—अभयनन्दि । पत्र सं० १०४ से २३२ । आ० १२३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०४२ । अ भण्डार ।

२७७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६० । ले० काल सं० १६४६ भाद्रपद सुदी १० । वे० सं० २११ । क भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल चौधरी ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

२७७९. तद्धितप्रक्रिया । पत्र सं० १६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७० । अ भण्डार ।

२७८०. धातुपाठ—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० १३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १७६७ श्रावण सुदी ५ । वे० सं० २६२ । छ भण्डार ।

२७८१. धातुपाठ । पत्र सं० ५१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६० । अ भण्डार ।

विशेष—धातुओं के पाठ हैं ।

२७८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १५६४ फागुन सुदी १२ । वे० सं० ६२ । छ भण्डार ।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३०३) तथा छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६०) और हैं ।

२७८३. धातुरूपावलि.....। पत्र सं० २२ । आ० १२×५१ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६ । अ भण्डार ।

विशेष—शब्द एवं धातुओं के रूप हैं ।

२७८४. धातुप्रत्यय.....। पत्र सं० ३ । आ० १०×४१ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२८ । ट भण्डार ।

विशेष—हेमशब्दानुशासन की शब्द साधनिका दी है ।

२७८५. पंचसंधि.....। पत्र सं० २ से ७ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल सं० १७३२ । अपूर्ण । वे० सं० १२६२ । अ भण्डार ।

२७८६. पंचिकरणावार्त्तिक—सुरेश्वराचार्य । पत्र सं० २ से ४ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४४ । ट भण्डार ।

२७८७. परिभाषासूत्र.....। पत्र सं० ५ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल सं० १५३० । पूर्ण । वे० सं० १६५४ । ट भण्डार ।

विशेष—अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति परिभाषा सूत्र सम्पूर्ण ॥

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १५३० वर्षे श्रीखरतरंगच्छेत्रीजयसागरमहोपाध्यायशिष्यश्रीरत्नचन्द्रोपाध्यायशिष्यभक्तिलाभपरिणाम
लिखिता वाचिता च ।

२७८८. परिभाषेन्दुशेखर—नागोजीभट्ट । पत्र सं० ६७ । आ० ६×३३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८ । ज भण्डार ।

२७८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० १०० । ज भण्डार ।

२७९०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११२ । ले० काल × । वे० सं० १०२ । ज भण्डार ।

विशेष—दो लिपिकर्त्ताओं ने प्रतिलिपि की थी । प्रति सटीक है । टीका का नाम भैरवी टीका है ।

२७९१. प्रक्रियाकौमुदी.....। पत्र सं० १४३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५० । अ भण्डार ।

विशेष—१४३ से आगे पत्र नहीं हैं ।

२७९२. पाणिनीयव्याकरण—पाणिनि । पत्र सं० ३६ । आ० ८३×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा पत्र के एक ओर ही लिखा गया है ।

२७६३. प्राकृतरूपमाला—श्रीरामभट्ट सुत वरदराज । पत्र सं० ४७ । आ० ६३×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १७२४ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५२२ । क भण्डार ।

विशेष—आचार्य कवककीर्ति ने द्रव्यपुर (मालपुरा) में प्रतिलिपि की थी ।

२७६४. प्राकृतरूपमाला..... । पत्र सं० ३१ रे ४६ । भाषा—प्राकृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २४६ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

२७६५. प्राकृतव्याकरण—खंडकवि । पत्र सं० ६ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्राकृत प्रकाश भी है । संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, पेशाविकी, मागधी तथा सीरसेनी आदि भाषाओं पर प्रकाश डाला गया है ।

२७६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० ५२३ । क भण्डार ।

२७६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८२३ । वे० सं० ५२४ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५२२) और है ।

२७६८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४० । ले० काल सं० १८४४ मंगसिर सुदी १५ । वे० सं० १०८ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर के गोधों के मन्दिर नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

२७६९. प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका—सौभाग्यगणि । पत्र सं० २२४ । आ० १२३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १८६६ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ५२७ । क भण्डार ।

२८००. भाष्यप्रदीप—कैटघट । पत्र सं० ३१ । आ० १२३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१ । ज भण्डार ।

२८०१. रूपमाला..... । पत्र सं० ४ से ५० । आ० ८३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३०६ । च भण्डार ।

विशेष—धातुओं के रूप दिये हैं ।

इसके अतिरिक्त इसी भण्डार में २ प्रतिमाँ (वे० सं० ३०७, ३०८) और हैं ।

२८०२. लघुन्यासवृत्ति..... । पत्र सं० १२७ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७७६ । ट भण्डार ।

२८०३. लघुरूपसर्गवृत्ति..... पत्र सं० ४ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४८ । ट भण्डार ।

२८०४. लघुशब्देन्दुशेखर..... पत्र सं० २१५ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १० पत्र सटीक हैं ।

२८०५. लघुसारस्वत—अनुभूति स्वरूपाचार्य । पत्र सं० २३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ३११, ३१२, ३१३, ३१४) और हैं ।

२८०६. प्रति सं० २ ।..... पत्र सं० २० । आ० ११३×५३ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं०
३११ । च भण्डार ।

२८०७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८६२ भाद्रपद शुक्ला ८ । वे० सं० ३१३ । च
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ३१३, ३१४) और हैं ।

२८०८. लघुसिद्धान्तकौमुदी—वरदराज । पत्र सं० १०४ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७ । ख भण्डार ।

२८०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १७८६ ज्येष्ठ बुदी ५ । वे० सं० १७३ । ज
भण्डार ।

विशेष—आठ अध्याय तक है ।

च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३१५, ३१६) और हैं ।

२८१०. लघुसिद्धान्तकौस्तुभ..... पत्र सं० ५१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०१२ । ट भण्डार ।

विशेष—पाणिनी व्याकरण की टीका है ।

२८११. वैयाकरणभूषण—कौह्नभट्ट । पत्र सं० ३३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १७७४ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ६८३ । क भण्डार ।

२८१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १६०५ कार्तिक बुदी २ । वे० सं० २८१ । क
भण्डार ।

२८१३. वैयाकरणभूषण..... पत्र सं० ७ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १८६६ पौष सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ६८२ । क भण्डार ।

२८१४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी ४ । वे० सं० ३३५ । च भण्डार ।

विशेष—माणिक्यचन्द्र के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

२८१५. व्याकरण..... । पत्र सं० ४६ । आ० १०^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

२८१६. व्याकरणटीका..... । पत्र सं० ७ । आ० १०×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३८ । छ भण्डार ।

२८१७. व्याकरणभाषाटीका..... । पत्र सं० १८ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।
विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६८ । छ भण्डार ।

२८१८. शब्दशोभा—कवि नीलकण्ठ । पत्र सं० ४३ । आ० १०^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । २० काल सं० १६६३ । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ७०० । छ भण्डार ।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

२८१९. शब्दरूपावली..... । पत्र सं० ८६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

२८२०. शब्दरूपिणी—आचार्य वररुचि । पत्र सं० २७ । आ० १०^३×३^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१२ । छ भण्डार ।

२८२१. शब्दानुशासन—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ३१ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४८८ । छ भण्डार ।

२८२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । आ० १०^३×४^३ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं०
१६८६ । छ भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० ६८१, ६८२, ६८३, ६८३, (क) ६८४, ५२६) तथा छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६८६) और हैं ।

२८२३. शब्दानुशासनवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ७६ । आ० १२×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२६३ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्राकृत व्याकरण भी है ।

२८२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी ३ । वे० सं० ५२५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रामेर निवासी विरागदास महुआ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

२८२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी १ । वे० सं० २४३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३३६) भी है ।

२८२६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १५२७ चैत्र बुदी ८ । वे० सं० १६५० । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १५२७ वर्ष चैत्र वदि ८ भीमे गोपाचलदुर्गे महाराजाधिराज श्री श्रीसिंहदेवराज-प्रवर्तमानसमये श्री कालिदास पुत्र श्री हरि ब्रह्म ।

२८२७. शाकटायन व्याकरण—शाकटायन । २ मे २० । आ० १५×५ १/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४० । च भण्डार ।

२८२८. शिशुबोध—काशीनाथ । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ १/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १७३६ माघ सुदी २ । वे० सं० २८७ । छ भण्डार ।

प्रारम्भ—भूदेवदेवगोपाल, तत्त्वागोपालभीस्वर ।

क्रियते काशीनाथेन, शिशुबोधविशेषतः ॥

२८२९. संज्ञाप्रक्रिया..... । पत्र सं० ४ । आ० १० ३/४×४ ३/४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८५ । छ भण्डार ।

२८३०. सम्बन्धविवक्षा..... । पत्र सं० २४ । आ० ९ १/४×४ ३/४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० २२७ । ज भण्डार ।

२८३१. संस्कृतमञ्जरी..... । पत्र सं० ४ । आ० ११×५ १/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० सं० ११६७ । अ भण्डार ।

२८३२. सारस्वतीधातुपाठ..... । पत्र सं० ५ । आ० १० ३/४×४ १/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

२८३३. सारस्वतपंचसंधि..... । पत्र सं० १३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १८५५ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

२८३४. सारस्वतप्रक्रिया—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्र सं० १२१ से १४५ । आ० ८ ३/४×४ ३/४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १८४६ । अपूर्ण । वे० सं० १३६५ । अ भण्डार ।

२८३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १७८१ । वे० सं० ६०१ । अ भण्डार ।

२८३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८१ । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० ६२१ । अ भण्डार ।

२८३७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८६१ । वे० सं० ६५१ । अ भण्डार ।

विशेष—चीखन्द के शिष्य कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी ।

२८३८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६० से १२४ । ले० काल सं० १८३८ । अपूर्ण । वे० सं० ६८५ । अ

भण्डार ।

बगई (बस्ती) नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२८३९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १७५६ । वे० सं० १२४६ । अ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रसागरगणि ने प्रतिलिपि की थी ।

२८४०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १७०१ । वे० सं० ६७० । अ भण्डार ।

२८४१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३२ से ७२ । ले० काल सं० १८५२ । अपूर्ण । वे० सं० ६३७ । अ

भण्डार ।

२८४२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० २३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १०५५ । अ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रकीर्ति कृत संस्कृत टीका सहित है ।

२८४३. प्रति सं० १० । पत्र सं० १६४ । ले० काल सं० १८२१ । वे० सं० ७६० । क भण्डार ।

विशेष—विमनराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२८४४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४६ । ले० काल सं० १८३७ । वे० सं० ७६१ । क भण्डार ।

२८४५. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८४६ माघ सुदी १४ । वे० सं० २६८ । ख

भण्डार ।

विशेष—पं० जगरूपदास ने दुल्लोचन्द के पठनार्थ नगर हरिदुर्ग में प्रतिलिपि की थी । केवल विमर्ग संधि तक है ।

२८४६. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८६४ आश्विन सुदी ५ । वे० सं० २६६ । ख

भण्डार ।

२८४७. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १७०० । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—दुर्गाराम शर्मा के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२८४८. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १६१७ । वे० सं० ४८ । भ भण्डार ।

विशेष—गणेशलाल पांड्या के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । दो प्रतियों का सम्मिश्रण है ।

२८४९. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८७६ । वे० सं० १२५ । भ भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार में १७ प्रतियाँ (वे० सं० ६०७, ६५२, ८०६, ६०३, १००६,

१०३४, १३१३, ६५३, १२८६, १२७२, १२३२, १२५०, १२५०, १८८०, १२६१, १२६८, १२८४, १३०१, १३०२) ख भण्डार में ७ प्रतियाँ (वे० सं० २१५, २१५ [अ], २१६, २१७, २१८, २१९, २६८) घ भण्डार में ३ प्रतियाँ (वे० सं० ११६, १२०, १२१) ङ भण्डार में १५ प्रतियाँ (वे० सं० ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३१, ८३२, ८३३, ८३४, ८३५) च भण्डार में ५ प्रतियाँ (वे० सं० ३६६, ४००, ४०१, ४०२, ४०३) छ भण्डार में ६ प्रतियाँ (वे० सं० १३६, १३७, १४०, २४७, २५४, ६७) झ भण्डार में ३ प्रतियाँ (वे० सं० १२१, १४०, २२२) ञ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २०) तथा ट भण्डार में ५ प्रतियाँ (वे० सं० १६८८, १६९०, २१००, २०७२, २१०५) और हैं ।

उक्त प्रतियों में बहुत सी अपूर्ण प्रतियाँ भी हैं ।

२८५०. सारस्वतप्रक्रियाटीका—महीभट्टी । पत्र सं० ६७ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ८२४ । ङ भण्डार ।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

२८५१. संज्ञाप्रक्रिया..... । पत्र सं० ६ । आ० १०½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०० । न भण्डार ।

२८५२. सिद्धहेमतन्त्रवृत्ति—जिनप्रभसूरि । पत्र सं० ३ । आ० ११×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल । ले० काल सं० १७२४ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० । ज भण्डार ।

विशेष—संवत् १४६४ की प्रति से प्रतिलिपि की गई थी ।

२८५३. सिद्धान्तकौमुदी—भट्टोजी दीक्षित । पत्र सं० ८ । आ० ११×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४ । ज भण्डार ।

२८५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४० । ले० काल × । वे० सं० ६६ । ज भण्डार ।

विशेष—पूरा है ।

२८५५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७६ । ले० काल × । वे० सं० १०१ । ज भण्डार ।

विशेष—उत्तरार्द्ध पूर्ण है ।

इसके प्रतिरिक्त ज भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ६५, ६६) तथा ट भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० १६३४, १६६६) और हैं ।

२८५६. सिद्धान्तकौमुदी..... । पत्र सं० ४३ । आ० १२½×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४७ । ङ भण्डार ।

विशेष—अतिरिक्त छ, च तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ८४८, ४०७, २७२) और है ।

२८५७. सिद्धान्तकौमुदीटीका - पत्र सं० ६५ । आ० ११३/४ × ६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—
व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५ । ज भण्डार ।

विशेष—पत्रों के कुछ अंश पानी से गल गये हैं ।

२८५८. सिद्धान्तचन्द्रिका—रामचंद्राभम । पत्र सं० ४४ । आ० ११/४ × ५/३ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११५१ । अ भण्डार ।

२८५९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १८५७ । वे० सं० ११५२ । अ भण्डार ।

विशेष—कृष्णगढ में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

२८६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८४७ । वे० सं० ११५३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १० प्रतियां (वे० सं० ११३१, ११५४, ११५५, ११५६, ११५७, ११५८, ११५९, ११६०, ११६१, ११६२) और हैं ।

२८६१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६४ । आ० ११/४ × ५/३ इंच । ले० काल सं० १७८४ अष्टादश बुदी १४ ।
वे० सं० ७८२ । क भण्डार ।

२८६२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० ११०२ । वे० सं० २२३ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २२२ तथा ४०८) और हैं ।

२८६३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २९ । ले० काल सं० १७५२ चैत्र बुदी ९ । वे० सं० ६० । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति और है ।

२८६४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३९ । ले० काल सं० १८६४ श्रावण बुदी ६ । वे० सं० ३५२ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रथम वृत्ति तक है । संस्कृत में कहीं शब्दार्थ भी हैं । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३५३) और है ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ९ प्रतियां (वे० सं० १२८५, ११५४, ११५५, ११५६, ११५७, ११५८, ११५९, ११६०) ख भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २२२, ४०८) ख तथा ज भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ६०, ३५३) और हैं । अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ११७७, १२६६, १२६७) अपूर्ण । च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४०९, ४१०) ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११९) तथा ज भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ३४५, ३४८, ३४९) और हैं ।

ये सभी प्रतियां अपूर्ण हैं ।

२८६५. सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका—लोकेशकर । पत्र सं० १७ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०१ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वदीपिका है ।

२८६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ से ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२८६७. सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति—सदानन्दगणि । पत्र सं० १७३ । आ० ११×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ८६ । छ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम सुबोधिनीवृत्ति भी है ।

२८६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७८ । ले० काल सं० १८५६ ज्येष्ठ बुदी ७ । वे० सं० ३५१ । ज
भण्डार ।

विशेष—पं० महानन्द ने चन्द्रप्रभ बेल्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

२८६९. सारस्वतदीपिका—चन्द्रकीर्तिसूरि । पत्र सं० १६० । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—व्याकरण । २० काल सं० १६५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६५ । अ भण्डार ।

२८७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ से ११६ । ले० काल सं० १६५७ । वे० सं० २६४ । छ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रकीर्ति के शिष्य हर्षकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

२८७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७२ । ले० काल सं० १८२८ । वे० सं० २८३ । छ भण्डार ।

विशेष—मुनि चन्द्रभरण खेतसी ने प्रतिलिपि की थी । पत्र जीर्ण है ।

२८७२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १६६१ । वे० सं० १६४३ । ट भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ च और ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १०५५, ३६८ तथा २०६४)
भी है ।

२८७३. सारस्वतदशाध्यायी..... । पत्र सं० १० । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । २० काल सं० १७६८ वैशाख बुदी ११ । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रातः संस्कृत टीका सहित है । कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी ।

२८७४. सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका..... । पत्र सं० १६ । आ० १०×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४६ । क भण्डार ।

२८७५. सिद्धान्तविन्दु—श्रीमधुसूदन सरस्वती । पत्र सं० २८ । आ० १०३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १७४२ आसोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८१७ । अ भण्डार ।

विशेष—इति श्रीमत्परमहंस परब्राजकाचार्य श्रीविश्वेश्वर सरस्वती भगवत्पाद शिष्य श्रीमधुसूदन सरस्वती विरचितः सिद्धान्तविन्दुस्तमासः ॥ संवत् १७४२ वर्षे आश्विनमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां बुधवासरे भगवन्नाम्निनगरे मिश्र श्री श्यामलस्य पुत्रेण भगवन्नाम्ना सिद्धान्तविन्दुरलेखि । शुभमस्तु ॥

२८७६. सिद्धान्तमंजूषिका—नागेशभट्ट । पत्र सं० ६३ । आ० १२३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३४ । ज भण्डार ।

२८७७. सिद्धान्तमुक्तावली—पंचानन भट्टाचार्य । पत्र सं० ७० । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १८३३ भाद्रमा बुदी ३ । वे० सं० ३०८ । ज भण्डार ।

२८७८. सिद्धान्तमुक्तावली । पत्र सं० ७० । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १७०५ चैत सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २८६ । ज भण्डार ।

२८७९. हेमनीबृहद्वृत्ति । पत्र सं० ५४ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४६ । अ भण्डार ।

२८८०. हेमव्याकरणवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० २४ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४४ । ट भण्डार ।

२८८१. हेमीव्याकरण—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ८३ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५८ ।

विशेष—बीच में अधिकांश पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन है ।



कोश

२८८२. अनेकार्थध्वनिमंजरी—महीपण कवि । पत्र सं० ११ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १४ । छ भण्डार ।

२८८३. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी..... । पत्र सं० १४ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६१५ । ट भण्डार ।

विशेष—तृतीय अधिकार तक पूर्ण है ।

२८८४. अनेकार्थमञ्जरी—नन्ददास । पत्र सं० २१ । आ० ८३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१८ । झ भण्डार ।

२८८५. अनेकार्थशत—भट्टारक हर्षकीर्ति । पत्र सं० २३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल सं० १६६७ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १५ । छ भण्डार ।

२८८६. अनेकार्थसंग्रह—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ४ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल सं० १६६६ अषाढ बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३८ । क भण्डार ।

२८८७. अनेकार्थसंग्रह..... । पत्र सं० ४१ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४ । च भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम महीपकोश भी है ।

२८८८. अभिधानकोष—पुरुषोत्तमदेव । पत्र सं० ३४ । आ० ११३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७१ । झ भण्डार ।

२८८९. अभिधानचिन्तामणिनाममाला—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०५ । झ भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथमकाण्ड है ।

२८९०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३५ । ले० काल सं० १७३० अषाढ सुदी १० । वे० सं० ३६ । छ भण्डार ।

विशेष—स्वोपन्न संस्कृत टीका सहित है । महाराणा राजसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

२८६१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १८०२ ज्येष्ठ सुदी १०। वै० सं० ३७। क
भण्डार।

विशेष—स्वोपलब्धि है।

२८६२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७ से १३४। ले० काल सं० १७८० आसोज सुदी ११। अपूर्ण। वै०
सं० ५। च भण्डार।

२८६३. प्रति सं० ५। पत्र सं० ११२। ले० काल सं० १६२६ आषाढ सुदी २। वै० सं० ८५। ज
भण्डार।

२८६४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ५८। ले० काल सं० १८१३ वैशाख सुदी १३। वै० सं० १११। ज
भण्डार।

विशेष—पं० श्रीमराज ने प्रतिलिपि की थी।

२८६५. अभिधानरत्नाकर—धर्मचन्द्रगणि। पत्र सं० २६। आ० १०×४३ इंच। भाषा—संस्कृत।
विषय—कोश। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० ८२७। अ भण्डार।

२८६६. अभिधानसार—पं० शिवजीलाल। पत्र सं० २३। आ० १२×२३ इंच। भाषा—संस्कृत।
विषय—कोश। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ८। ख भण्डार।

विशेष—देव काण्ड तक है।

२८६७. अमरकोश—अमरसिंह। पत्र सं० २६। आ० १२×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कोश।
२० काल ×। ले० काल सं० १८०० ज्येष्ठ सुदी १४। पूर्ण। वै० सं० २०७५। अ भण्डार।

विशेष—इसका नाम लिंगानुशासन भी है।

२८६८. प्रति सं० २। पत्र सं० ३८। ले० काल सं० १८३५। वै० सं० १६११। अ भण्डार।

२८६९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५४। ले० काल सं० १८११। वै० सं० ६२२। अ भण्डार।

२६००. प्रति सं० ४। पत्र सं० १८ से ६१। ले० काल सं० १८८२ आसोज सुदी १। अपूर्ण। वै०
सं० ६२१। अ भण्डार।

२६०१. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १८६४। वै० सं० २४। क भण्डार।

२६०२. प्रति सं० ६। पत्र सं० १३ से ६१। ले० काल सं० १८२४। वै० सं० १२। अपूर्ण। ख
भण्डार।

२६०३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६८ आश्विन सुदी ६ । वे० सं० २४ । क
भण्डार ।

विशेष—प्रथमकाण्ड तक है । अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

२६०४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १८८३ आश्विन सुदी ३ । वे० सं० २७ । क
भण्डार ।

विशेष—जयपुर में दीवाणा अमरचन्दजी के मन्दिर में माखीराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

२६०५. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १८१८ कार्तिक सुदी ८ । वे० सं० १३६ । क
भण्डार ।

विशेष—कृषि हेमराज के पठनार्थ कृषि भारमल्ल ने जयदुर्ग में प्रतिलिपि की थी । सं० १८२२ आषाढ
सुदी २ में ३) क० देकर पं० रेवतीसिंह के शिष्य रूपचन्द ने श्वेताम्बर जती से ली ।

२६०६. प्रति सं० १० । पत्र सं० ६१ से १३१ । ले० काल सं० १८३० आषाढ बुदी ११ । अपूर्ण ।
वे० सं० २६५ । क भण्डार ।

विशेष—माखीराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६०७. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १८८१ वैशाख सुदी १५ । वे० सं० ३४४ । ज
भण्डार ।

विशेष—कहों २ टीका भी दी हुई है ।

२६०८. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १७६६ मंगसिर सुदी ५ । वे० सं० ७ । क
भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार में २१ प्रतियां (वे० सं० ६३८, ८०४, ७६१, ६२३, ११६६,
११६९, ८०६, ६१७, १२८६, १२८७, १२८८, १२६०, १६५६, १६६०, १३४२, १८३६, १५५८, १५५६, १५६०,
१८५१, २१०५) क भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० २१, २२, २३, २५, २६) ख भण्डार में ५ प्रतियां (वे०
सं० ६, १०, ११, २६६, २६६) क भण्डार में ११ प्रतियां (वे० सं० १६, १७, १८, १६, २०, २१, २२, २३,
२४, २५, २६) च भण्डार में ७ प्रतियां (वे० सं० ८, ६, १०, ११, १२, १३, १४) छ भण्डार में ४ प्रतियां
(वे० सं० १३६, १३६, १४१, २४ [क]) ज भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ५६, ३५०, ३५२, ६२) झ भण्डार
१ प्रति (वे० सं० ६५), तथा ट भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १८००, १८८५, २१०१ तथा २०७६)
भी हैं ।

२६०६. अमरकोषटीका—भानुजीदीक्षित । पत्र सं० ११४ आ० १०×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६ । च भण्डार ।

विशेष—बबेल वंशोद्भव श्री महीधर श्री कीर्तिसिंहदेव की आज्ञा से टीका लिखी गई ।

२६१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ७ । च भण्डार ।

२६११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वै० सं० १८८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथमखण्ड तक है ।

२६१२. एकाक्षरकोश—क्षपणक । पत्र सं० ४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६२ । क भण्डार ।

२६१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८८६ कार्तिक सुदी ५ । वै० सं० ५१ । च

भण्डार ।

२६१४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १६०३ चैत बुदी ६ । वै० सं० १५५ । ज

भण्डार ।

विशेष—पं० सदासुखजी ने अपने शिष्य के प्रतिबोधार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२६१५. एकाक्षरीकोश—वररुचि । पत्र सं० २ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २०७१ । अ भण्डार ।

२६१६. एकाक्षरीकोश..... । पत्र सं० १० । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १३०० । अ भण्डार ।

२६१७. एकाक्षरनाममाला..... । पत्र सं० ४ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश ।

२० काल × । ले० काल सं० १६०३ चैत बुदी ६ । पूर्ण । वै० सं० ११५ । ज भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में महाराजा रामसिंह के शासनकाल में भ० देवेन्द्रकीर्ति के समय में पं० सदासुखजी के शिष्य फतेलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२६१८. त्रिकाण्डशेषसूची (अमरकोश)—अमरसिंह । पत्र सं० ३४ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच ।

भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १४१ । ज भण्डार ।

विशेष—अमरकोश के काण्डों में आने वाले शब्दों की श्लोक संख्या दी हुई है । प्रत्येक श्लोक का प्रारम्भिक अंश भी दिया हुआ है ।

इसके अतिरिक्त इसी भण्डार में ३ प्रतियाँ (वै० सं० १४२, १४३, १४५) और हैं ।

★ २६१६. त्रिकाण्डशेषाभिधान—श्री पुरुषोत्तमदेव । पत्र सं० ४३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २८० । क भण्डार ।

२६२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वै० सं० १४४ । घ भण्डार ।

२६२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १६०३ आसोज सुदी ६ । वै० सं० १८६ ।

विशेष—जयपुर के महाराजा रामसिंह के शासनकाल में पं० सदाबुखजी के शिष्य फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२६२२. लङ्गाला—सर्वज्ञ । पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६४७ । अ भण्डार ।

★ २६२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८३७ फागुन सुदी १ । वै० सं० २८२ । अ भण्डार ।

विशेष—पाटोदी के मन्दिर में खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां (वै० सं० १४, १०७३, १०८६) और हैं ।

२६२४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १३०६ कार्तिक सुदी ८ । वै० सं० ६३ । ख भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ३२२) और है ।

२६२५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६४३ ज्येष्ठ सुदी ११ । वै० सं० २४६ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० भारामल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० २६६) तथा ज भण्डार में (वै० सं० २७६) की एक प्रति और है ।

२६२६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८१६ । वै० सं० १८५ । अ भण्डार ।

२६२७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८०१ फागुन सुदी ६ । वै० सं० ५२२ । अ भण्डार ।

२६२८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १७ से ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १६०८ । ट भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां (वै० सं० १०७३, १४, १०८६) क, छ तथा ज भण्डार में १-१ प्रति (वै० सं० ३२२, २६६, २७६) और हैं ।

२६२६. नाममाला..... पत्र सं० १२ । आ० १०×५^१/_२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२८ । ट मण्डार ।

२६३०. नाममाला—बनारसीदास । पत्र सं० १४ । आ० ८×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४ । ख मण्डार ।

२६३१. बीजलक्ष्मीकोश..... पत्र सं० २३ । आ० ६^१/_२×४^१/_२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १००४ । अ मण्डार ।

विशेष—विमलहंसगण ने प्रतिलिपि की थी ।

२६३२. मानमञ्जरी—नन्ददास । पत्र सं० २२ । आ० ८×६ इंच । भाषा—हिन्दी विषय—कोश । २० काल × । ले० काल सं० १८५३ फागुण सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ५६३ । क मण्डार ।

विशेष—चन्द्रभानु बज ने प्रतिलिपि की थी ।

२६३३. मेदिनीकोश..... पत्र सं० ६४ । आ० १०^१/_२×४^१/_२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८२ । क मण्डार ।

२६३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वे० सं० २७८ । च मण्डार ।

२६३५. रूपमञ्जरीनाममाला—गोपालदास सुत रूपचन्द्र । पत्र सं० ८ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल सं० १६४४ । ले० काल सं० १७८० चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १८७६ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में नाममाला की तरह श्लोक हैं ।

२६३६. लघुनाममाला—हर्षकीर्तिसूरि । पत्र सं० २३ । आ० ६×६^१/_२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल सं० १८२८ ज्येष्ठ बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ११२ । ज मण्डार ।

विशेष—सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२६३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ४६८ । व्य मण्डार ।

२६३८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ से १६, ३७ से ४५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५८४ । ट मण्डार ।

२६३९. लिंगानुशासन..... पत्र सं० ५ । आ० १०×४^१/_२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६ । ख मण्डार ।

विशेष—५ से आगे पत्र नहीं हैं ।

२६४०. लिंगानुशासन—हेमचन्द्र । पत्र सं० १० । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । ज भण्डार ।

विशेष—कहीं २ शब्दार्थ तथा टीका भी संस्कृत में दी हुई है ।

२६४१. विश्वप्रकाश—वैद्यराज महेश्वर । पत्र सं० १०१ । आ० ११×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कोश । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६६३ । क भण्डार ।

२६४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ३३२ । क भण्डार ।

२६४३. विश्वलोचन—धरसेन । पत्र सं० १८ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
कोश । २० काल × । ले० काल सं० १५६६ । पूर्ण । वे० सं० २७५ । च भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम मुक्तावली भी है ।

२६४४. विश्वलोचनकोशकीशब्दानुक्रमणिका..... । पत्र सं० २६ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८८७ । अ भण्डार ।

२६४५. शतक..... । पत्र सं० ६ । आ० ११×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । क भण्डार ।

२६४६. शब्दप्रभेद व धातुप्रभेद—सकल वैद्य चूडामणि श्री महेश्वर । पत्र सं० १६ । आ०
१०×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७७ । ख भण्डार ।

२६४७. शब्दरत्न..... । पत्र सं० १६६ । आ० ११×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४६ । ज भण्डार ।

२६४८. शारदीयानाममाला..... । पत्र सं० २४ से ४७ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८३ । अ भण्डार ।

२६४९. शिलोच्छ्रकोश—कवि सारस्वत । पत्र सं० १७ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । (तृतीयखंड तक) वे० सं० ३४३ । च भण्डार ।

विशेष—रचना समरकोश के आधार पर की गई है जैसा कि कवि के निम्न पद्यों से प्रकट है ।

कवेरमहसिहस्य कृतिरेषाति निर्मला ।

श्रीचन्द्रतारकं भूयान्नामलिगानुशासनम् ।

पद्यानिबोधयत्यर्कः शास्त्राणि कुर्वते कविः

तत्सौरभनभस्वतः संतस्तन्वन्तितद्गुणाः ॥

कृन्नेष्वमरसिंहेन, नामलिङ्गेषु शालिषु ।
एष काङ्गस्यवप्रेषु शिलोच्छ्रियते मया ॥

२६५०. सवोथसाधनी—भट्टवररुचि । पत्र सं० २ से २४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कोश । २० काल × । ले० काल सं० १५६७ मंगसिर बुदी ७ । अपूर्ण । वै० सं० २१२ । त्र भण्डार ।
विशेष—हिसार पिरोज्जकोट में रुद्रपल्लीयगच्छ के देवसुंदर के पट्ट में श्रीजिनदेवसूरि ने प्रतिलिपि की थी ।



ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान

२६५१. अरिहंत केवली पाशा..... । पत्र सं० १४ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-ज्योतिष । २० काल सं० १७०७ सावन सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ रचना सहिजानन्दपुर में हुई थी ।

२६५२. अरिष्ट कर्ता..... । पत्र सं० ३ । आ० ११×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष
० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५६ । ख भण्डार ।

विशेष—६० श्लोक हैं ।

२६५३. अरिष्टाध्याय..... । पत्र सं० ११ । आ० ८×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल सं० १८६६ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १३ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० जीवशराम ने शिष्य पद्मलाल के लिये प्रतिलिपि की । ६ पत्र से आगे भारतीस्तोत्र दिया हुआ है ।

२६५४. अक्षजद केवली..... । पत्र सं० १० । आ० ८×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन
शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६ । ज भण्डार ।

२६५५. उद्यमद फल..... । पत्र सं० १ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । ख भण्डार ।

२६५६. करण कौतूहल..... । पत्र सं० ११ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५ । ज भण्डार ।

२६५७. करलक्षण..... । पत्र सं० ११ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं । मारिकवचन्द्र ने वृन्दावन में प्रतिलिपि की ।

२६५८. कर्पूरचक्र— । पत्र सं० १ । आ० १४ $\frac{३}{४}$ ×११ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल सं० १८६३ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २१६४ । अ भण्डार ।

विशेष—चक्र भवन्ती नगरी से प्रारम्भ होता है, इसके चारों ओर देश चक्र है तथा उनका फल है । पं०
लुशाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल सं० १८४० । वे० सं० २१६६ अ भण्डार ।

विशेष—मिश्र धरणीधर ने नागपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६६०. कर्मराशि फल (कर्म विपाक).....। पत्र सं० ३१ । आ० ८३/४ इंच । भाषा—संस्कृत

विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण × । वे० सं० १६५१ । अ भण्डार ।

२६६१. कर्म विपाक फल.....। पत्र सं० ३ । आ० १०×४ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष

र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३ । अ भण्डार ।

विशेष—राशियों के अनुसार कर्मों का फल दिया हुआ है ।

२६६२. कालज्ञान—। पत्र सं० १ । आ० ६×४ १/२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१८ । अ भण्डार ।

२६६३. कालज्ञान.....। पत्र सं० २ । आ० १० १/२×४ १/२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११८६ । अ भण्डार ।

२६६४. कौतुक लीलावती.....। पत्र सं० ५ । आ० १० १/२×४ १/२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८६२ । वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० २६१ । ख भण्डार ।

२६६५. क्षेत्र व्यवहार.....। पत्र सं० २० । आ० ८ १/२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६७ । ट भण्डार ।

२६६६. गर्गमनोरमा.....। पत्र सं० ७ । आ० ७ १/२×५ १/२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

र० काल × । ले० काल सं० १८८८ । पूर्ण । वे० सं० २१२ । क भण्डार ।

२६६७. गर्गसंहिता—गर्गश्रुति । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ १/२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष

र० काल × । ले० काल सं० १८८६ । अपूर्ण । वे० सं० ११६७ । अ भण्डार ।

२६६८. ग्रह दशा वर्णन.....। पत्र सं० १८ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

र० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० १७२७ । ट भण्डार ।

विशेष—ग्रहों की दशा तथा उपदशाओं के अन्तर एवं फल दिये हुए हैं ।

२६६९. ग्रह फल.....। पत्र सं० ६ । आ० १० १/२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०२२ । ट भण्डार ।

२६७०. ग्रहलावण—गणेश दैवज्ञ । पत्र सं० ४ । आ० १० १/२×५ १/२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४४ । ख भण्डार ।

२६७८. चन्द्रनाडीसूर्यनाडीकवच.....। पत्र सं० ५-२३। आ० १०×४^३ इंच। भाषा-संस्कृत।
२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६८। छ भण्डार।

विशेष—इसके आगे पंचव्रत प्रमाण लक्षण भी हैं।

२६७९. चमत्कारचिन्तामणि.....। पत्र सं० २-६। आ० १०×४^३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल सं० ×। १८१८ फागुण बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ६३२। अ भण्डार।

२६८०. चमत्कारचिन्तामणि.....। पत्र सं० २६। आ० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७३०। ट भण्डार।

२६८१. छायापुरुषलक्षण.....। पत्र सं० २। आ० ११×४^३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
सामुद्रिक शास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४४। छ भण्डार।

विशेष—नीनिधराम ने प्रतिलिपि की थी।

२६८२. जन्मपत्रीग्रहविचार.....। पत्र सं० १। आ० १२×४^३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२१३। अ भण्डार।

२६८३. जन्मपत्रीविचार.....। पत्र सं० ३। आ० १२×४^३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६१०। अ भण्डार।

२६८४. जन्मप्रदीप—रोमकाचार्य। पत्र सं० २-२०। आ० १२×४^३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल सं० १८३१। अपूर्ण। वे० सं० १०४८। अ भण्डार।

विशेष—शंकरभट्ट ने प्रतिलिपि की थी।

२६८५. जन्मफल.....। पत्र सं० १। आ० ११^३×४^३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०२४। अ भण्डार।

२६८६. जातककर्मपद्धति.....श्रीपति। पत्र सं० १८। आ० ११×४^३ इंच। भाषा-संस्कृत।
विषय-ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल सं० १६३८ वैशाख सुदी १। पूर्ण। वे० सं० ६००। अ भण्डार।

२६८७. जातकपद्धति—केशव। पत्र सं० १०। आ० ११×४^३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१७। ज भण्डार।

२६८८. जातकपद्धति.....। पत्र सं० २६। आ० ८×६^३। भाषा-संस्कृत। २० काल ×। ले०
काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७४६। ट भण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है।

२६८६. जातकाभरण—द्वैषद्वन्द्वद्विराज । पत्र सं० ४३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १७३६ भाद्रपद सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८६७ । अ भण्डार ।

विशेष—नागपुर में पं० सुलकुशलगणि ने प्रतिलिपि की थी ।

२६६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०० । ले० काल सं० १८४० कार्तिक सुदी ६ । वे० सं० १५७ ।
अ भण्डार ।

विशेष—भट्ट गंगाधर ने नागपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६६१. जातकालंकार..... पत्र सं० १ से ११ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४५ । ट भण्डार ।

२६६२. ज्योतिषरत्नमाला..... पत्र सं० ६ से २४ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८३ । अ भण्डार ।

२६६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० १५४ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२६६४. ज्योतिषप्रणिमाला..... केशव । पत्र सं० ५ से २७ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२०५ । अ भण्डार ।

२६६५. ज्योतिषफलग्रंथ..... पत्र सं० ६ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४ । ज भण्डार ।

२६६६. ज्योतिषसारभाषा—कृपाराम । पत्र सं० ३ से १३ । आ० ६३×६ इंच । भाषा—हिन्दी
(पद्य) । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८४१ कार्तिक सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० १५१३ ।
भण्डार ।

विशेष—फतेराम वैद्य ने सोनिधराम बज की पुस्तक से लिखा ।

आदि भाग—(पत्र ३ पर)

अथ केंदरिया त्रिकोण घर को भेद—

केंदरियो चौथो भवन सप्तम दसमो जान ।

पंचम अरु नौमो भवन येह त्रिकोण बखान ॥६॥

तीजो षसठम ग्यारमो घर दसमो घर सेलि ।

इन को उपर्य कहत है सबै ग्रंथ में देखि ॥७॥

अन्तिम—

वरष लग्यो जा अंस में सोई दिन चित धारि ।

वा दिन उतनी षढी जु पल बीते लग्न विचारि ॥४०॥

लग्न लिखे तैं गिरह जो जा घर बैठो आय ।

ता घर के फल सुफल को कीजे मित बनाय ॥४१॥

इति श्री कवि कृपाराम कृत भाषा ज्योतिषसार संपूर्ण ।

२६६७. ज्योतिषसारलघुचन्द्रिका—काशीनाथ । पत्र सं० ६३ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । १० काल × । ले० काल सं० १८६३ पीष सुदी २ । पूर्ण । वै० सं० ६३ । अ भण्डार ।

२६६८. ज्योतिषसारसूत्रटिप्पण—नारचन्द्र । पत्र सं० १६ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २८२ । अ भण्डार ।

विशेष—मूलग्रन्थकर्ता सागरचन्द्र हैं ।

२६६९. ज्योतिषशास्त्र..... । पत्र सं० ११ । आ० ५×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २०१ । अ भण्डार ।

३०००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वै० सं० ५२१ । अ भण्डार ।

३००१. ज्योतिषशास्त्र..... । पत्र सं० ५ । आ० १०×५^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १६८४ । अ भण्डार ।

३००२. ज्योतिषशास्त्र..... । पत्र सं० ५८ । आ० ६×६^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष । १० काल × । ले० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ सुदी १५ । पूर्ण । वै० सं० १११५ । अ भण्डार ।

विशेष—ज्योतिष विषय का संग्रह ग्रन्थ है ।

प्रारम्भ में कुछ व्यक्तियों के जन्म टिप्पण दिये गये हैं इनकी संख्या २२ है । इनमें मुख्यरूप से निम्न नाम तथा उनके जन्म समय उल्लेखनीय हैं—

महाराजा बिक्रानसिंह के पुत्र महाराजा जयसिंह	जन्म सं० १७४५ मंगसिर
महाराजा बिक्रानसिंह के द्वितीय पुत्र विजयसिंह	जन्म सं० १७४७ चैत्र सुदी ६
महाराजा सवाई जयसिंह की राणी गौडि के पुत्र	सं० १७६६
रामचन्द्र (जन्म नाम भांभूराम)	सं० १७१५ फागुण सुदी २
दोलतरामजी (जन्म नाम बेहराज)	सं० १७४६ भाषाठ बुदी १४

३००३. ताजिकसमुच्चय..... पत्र सं० १५। आ० ११×४१ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल सं० १८५६। पूर्ण। वे० सं० २५५। अ भण्डार।

विशेष—बड़ा नरामने में श्री पार्वताश चैत्यालय में जीवशराम ने प्रतिलिपि की थी।

३००४. तात्कालिकचन्द्रशुभाशुभफल..... पत्र सं० ३। आ० १०^१/_२×४^१/_२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२२। अ भण्डार।

३००५. त्रिपुरबंधमुहूर्त..... पत्र सं० १। आ० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११८८। अ भण्डार।

३००६. त्रैलोक्यप्रकाश..... पत्र सं० १६। आ० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११२। अ भण्डार।

विशेष—१ से ६ तक दूसरी प्रति के पत्र हैं। २ से १४ तक वाली प्रति प्राचीन है। दो प्रतियों का सम्मिश्रण है।

३००७. दशोठनसुहृत्..... पत्र सं० ३। आ० ७^३/_४×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७२५। अ भण्डार।

३००८. नक्षत्रविचार..... पत्र सं० ११। आ० ८×५^१/_२ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल सं० १८६५। पूर्ण। वे० सं० २७६। अ भण्डार।

विशेष—छींक आदि विचार भी दिये हुये हैं।

निम्नलिखित रचनायें और हैं—

सज्जनप्रकाश दोहा—

कवि ठाकुर हिन्दी [१० कविस]

मित्रविषय के दोहे—

हिन्दी [४४ दोहें हैं]

रक्तगुञ्जाकल्प—

हिन्दी [ले० काल सं० १९५७]

विशेष—माल चिरमी का सेवन बताया गया है जिसके साथ लेने से क्या असर होता है इसका वर्णन ३६ दोहों में किया गया है।

३००९. नक्षत्रबैवर्षीडाहान..... पत्र सं० ६। आ० १०^१/_२×४^१/_२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६४। अ भण्डार।

३०१०. नक्षत्रसप्त..... पत्र सं० ३ से २४। आ० ६×३^१/_२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल सं० १८०१ मंगसिर सूची ८। अपूर्ण। वे० सं० १७३६। अ भण्डार।

३०११. नरपतिजयचर्या—नरपति । पत्र सं० १४८ । आ० १२३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल सं० १५२३ चैत्र सुदी १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४६ । अ भण्डार ।

विशेष—४ से १० तक पत्र नहीं हैं ।

३०१२. नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र—नारचन्द्र । पत्र सं० २६ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८१० मंगसिर बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १७२ । अ भण्डार ।

३०१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ३४५ । अ भण्डार ।

३०१४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १८६५ कापुण सुदी ३ । वे० सं० ६५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रत्येक पंक्ति के नीचे अर्थ लिखा हुआ है ।

३०१५. निमित्तज्ञान (भद्रबाहु संहिता)—भद्रबाहु । पत्र सं० ७७ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७ । अ भण्डार ।

३०१६. निषेकाध्यायवृत्ति..... । पत्र सं० १८ । आ० ८×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४८ । ट भण्डार ।

विशेष—१८ से आगे पत्र नहीं हैं ।

३०१७. नीलकण्ठताजिक—नीलकण्ठ । पत्र सं० १४ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०५८ । अ भण्डार ।

३०१८. पञ्चांगप्रबोध..... । पत्र सं० १० । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७३५ । ट भण्डार ।

३०१९. पंचांग—चण्डू । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न वर्षों के पंचांग हैं ।

संवत् १८२६, ५२, ५४, ५५, ५६, ५८, ६१, ६२, ६५, ७१, ७२, ७३, ७४, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८३, ८७, ८८ ।

३०२०. पंचांग..... । पत्र सं० १३ । आ० ७३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १६२७ । पूर्ण । वे० सं० २४७ । अ भण्डार ।

३०२१. पंचांगसाधन—गणेश (केशवपुत्र) । पत्र सं० ५२ । आ० ६×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८८२ । वे० सं० १७३१ । ट भण्डार ।

३०२२. पल्यविचार..... पत्र सं० ६ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—शकुन शास्त्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५ । अ भण्डार ।

३०२३. पल्यविचार..... पत्र सं० २ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—शकुनशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६२ । अ भण्डार ।

३०२४. पाराशरी..... पत्र सं० ३ । आ० १३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३२ । अ भण्डार ।

३०२५. पाराशरीसज्जनरंजनीटीका..... पत्र सं० २३ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८३६ असोज सुदी २ । पूर्ण वे० सं० ६३३ । अ भण्डार ।

३०२६. पाशाकेवली—गर्गसुनि । पत्र सं० ७ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त

शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८७१ । पूर्ण । वे० सं० ६२५ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम शकुनावली भी है ।

३०२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७३८ । जीर्ण । वे० सं० ६७६ । अ भण्डार ।

विशेष—श्रुति मनोहर ने प्रतिलिपि की थी । श्रीचन्द्रसूरि रचित नेमिनाथ स्तवन भी दिया हुआ है ।

३०२८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ६२३ । अ भण्डार ।

३०२९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८१७ पौष सुदी १ । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

विशेष—निवासपुरी (सांगानेर) में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में सवाईराम के शिष्य नानगराम ने प्रतिलिपि

की थी ।

३०३०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

३०३१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८६६ वैशाख बुदा १२ । वे० सं० ११४ । छ भण्डार ।

विशेष—दयाचन्द गर्ग ने प्रतिलिपि की थी ।

३०३२. पाशाकेवली—ज्ञानभास्कर । पत्र सं० ५ । आ० ६×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२० । अ भण्डार ।

३०३३. पाशाकेवली..... पत्र सं० ११ । आ० ६×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्तशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४६ । अ भण्डार ।

३०३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७७५ फागुण बुदी १० । वे० सं० २०१६ । अ भण्डार ।

विशेष—पांडे दयाराम सोनी ने अमेर में मल्लिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियाँ (वे० सं० १०७१, १०८८, ७६८) ख भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १०८) छ भण्डार में ३ प्रतियाँ (वे० सं० ११६, ११४, ११४) ट भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १८२४) और हैं ।

३०३५. पाशाकेवली..... पत्र सं० ५ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी विषय—निमित्तशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण । वे० सं० २६५ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० रतनचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३०३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २५७ । ज भण्डार ।

३०३७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ११६ । व्य भण्डार ।

३०३८. पाशाकेवली..... पत्र सं० १ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—निमित्त शास्त्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५६ । अ भण्डार ।

३०३९. पाशाकेवली..... पत्र सं० १३ । आ० ८३×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—निमित्त शास्त्र ।
२० काल × । ले० काल सं० १८५० । अपूर्ण । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

विशेष—विश्वनलाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । प्रथम पत्र नहीं है ।

३०४०. पुरश्चरणाविधि..... पत्र सं० ४ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । पत्र भोग गये हैं जिससे कई जगह पड़ा नहीं जा सकता ।

३०४१. प्रश्नचूडामणि..... पत्र सं० १३ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६६ । अ भण्डार ।

३०४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८०८ आसोज सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।

विशेष—तीसरा पत्र नहीं है विजैराम अजमेरा चाटसू वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३०४३. प्रश्नविद्या..... पत्र सं० २ से ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३३ । छ भण्डार ।

३०४४. प्रश्नविनोद..... पत्र सं० १६ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।
२० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८४ । छ भण्डार ।

३०४५. प्रश्नमनोरमा—गर्ग । पत्र सं० ३ । आ० १३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल सं० १६२८ भाद्रवा सुदी ७ । वे० सं० १७४१ । ट भण्डार ।

३०४६. प्रश्नमाला..... पत्र सं० १० । आ० ६×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६५ । अ भण्डार ।

३०४७. प्रश्नसुगनावलिरमल..... । पत्र सं० ४ । आ० ६३×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६ । अ भण्डार ।

३०४८. प्रश्नावलि..... । पत्र सं० ७ । आ० ६×३३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८१७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

३०४९. प्रश्नसार..... । पत्र सं० १९ । आ० १२३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १९२९ काष्ठण बुदी १४ । वे० सं० ३३६ । ज भण्डार ।

३०५०. प्रश्नसार—हयग्रीव । पत्र सं० १२ । आ० ११×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १९२९ । वे० सं० ३३३ । ज भण्डार ।

विशेष—पत्रों पर कोष्ठक बने हैं जिन पर अधर लिखे हुये हैं उनके अनुसार शुभाशुभ फल निकलता है ।

३०५१. प्रश्नोत्तरमाणिक्यमाला—संग्रहकर्त्ता अ० ज्ञानसागर । पत्र सं० २७ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८६० । पूर्ण । वे० सं० २६१ । अ भण्डार ।

३०५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १८६१ चैत्र बुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० ११० ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति प्रश्नोत्तर माणिक्यमाला महाग्रन्थे भट्टारक श्री चरणारविंद मधुकरोपमा अ० ज्ञानसागर संग्रहीते श्री जिनमाश्रित प्रथमोभिकारः ॥ प्रथम पत्र नहीं है ।

३०५३. प्रश्नोत्तरमाला..... । पत्र सं० २ से २२ । आ० ७३×४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८६४ । अपूर्ण । वे० सं० २०६८ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री बलदेव बालाहेडी वाले ने बाबा बालमुकुन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३०५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८१७ आसोज सुदी ५ । वे० सं० ११४ । अ भण्डार ।

३०५५. भवानीवाक्य..... । पत्र सं० ५ । आ० ६×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२८२ । अ भण्डार ।

विशेष—सं० १६०५ से १६६६ तक के प्रतिवर्ष का भविष्य फल दिया हुआ है ।

३०५६. भङ्गली.....। पत्र सं० ११। आ० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४०। छ भण्डार।

विशेष—मेघ गर्जना, बरसना तथा बिजली आदि चमकने से वर्षा फल देखने सम्बन्धी विचार दिये हुये हैं।

३०५७. भाष्यती—पद्मनाभ। पत्र सं० ६। आ० ११×३३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६४। च भण्डार।

३०५८. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० २६५। च भण्डार।

३०५९. भुवनदीपिका.....। पत्र सं० २२। आ० ७½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। १० काल ×। ले० काल सं० १६१५। पूर्ण। वे० सं० २४१। ज भण्डार।

३०६०. भुवनदीपक—पद्मप्रभसूरि। पत्र सं० ५८। आ० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६५। अ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

३०६१. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८५६ फागुण सुदी १०। वे० सं० ६१२। अ भण्डार।

विशेष—खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

३०६२. प्रति सं० ३। पत्र सं० २०। ले० काल ×। वे० सं० २६६। च भण्डार।

विशेष—पत्र १७ से आगे कोई अन्य ग्रन्थ है जो अपूर्ण है।

३०६३. भृगुसंहिता.....। पत्र सं० २०। आ० ११×७ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६४। छ भण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

३०६४. मुहूर्त्तचिन्तामणि.....। पत्र सं० १६। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। १० काल ×। ले० काल सं० १८८६। अपूर्ण। वे० सं० १४७। ख भण्डार।

३०६५. मुहूर्त्तमुक्तावली.....। पत्र सं० ६। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। १० काल ×। ले० काल सं० १८१६ कार्तिक बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० १३६४। अ भण्डार।

३०६६. मुहूर्त्तमुक्तावली—परमहंस परिब्राजकाचार्य। पत्र सं० ६। आ० ६½×६½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०१२। अ भण्डार।

विशेष—सब कार्यों के मुहूर्त्त का विवरण है।

३०६७. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८७१ वैशाख सुदी १। वे० सं० १४८। ख भण्डार।

३०६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १७८२ मार्गशीर्ष बुदी ३ । ज भण्डार ।

विशेष—सयाणा नगर में मुनि चोखचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६९. मुहूर्त्तमुक्तावलि..... पत्र सं० १५ से २६ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—हिन्दी, संस्कृत ।

विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४६ । ख भण्डार ।

३०७०. मुहूर्त्तमुक्तावली..... पत्र सं० ९ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल सं० १८१६ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १३६४ । अ भण्डार ।

३०७१. मुहूर्त्तदीपक—महादेव । पत्र सं० ८ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल सं० १७६७ वैशाख बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६१४ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० झुंगरसी के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

३०७२. मुहूर्त्तसंग्रह..... पत्र सं० २२ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५० । ख भण्डार ।

३०७३. मेघमाला..... पत्र सं० २ से १८ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८६६ । अ भण्डार ।

विशेष—वर्षा आने के लक्षणों एवं कारणों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है । श्लोक सं० ३४६ हैं ।

३०७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ६१५ । अ भण्डार ।

३०७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४७ । अ भण्डार ।

३०७६. योगफल..... पत्र सं० १६ । आ० ६३×३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २८३ । च भण्डार ।

३०७७. रत्नदीपक—गणपति । पत्र सं० २३ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल सं० १८२८ । पूर्ण । वे० सं० १६० । ख भण्डार ।

३०७८. रत्नदीपक..... पत्र सं० ५ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २०

काल × । ले० काल सं० १८१० । पूर्ण । वे० सं० ६११ । अ भण्डार ।

विशेष—जन्मपत्री विचार भी है ।

३०७९. रमलशास्त्र—पं० चिंतामणि । पत्र सं० १५ । आ० ८×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५४ । छ भण्डार ।

३०८०. रमलशास्त्र..... पत्र सं० १६ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—निमित्त शास्त्र

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३२ । अ भण्डार ।

३८१. रमलज्ञान..... पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-निमित्तशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

विशेष—आदिनाथ चैत्यालय में आचार्य रतनकीर्ति के प्रशिष्य सवाईराम के शिष्य नोनदराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ४४ । ले० काल सं० १८७८ । आपाठ बुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० १५६४ । ट भण्डार ।

३८३. राजादिफल..... पत्र सं० ४ । आ० ६ $\frac{1}{2}$ ×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८२१ । पूर्ण । वे० सं० १६२ । ख भण्डार ।

३८४. राहुफल..... पत्र सं० ८ । आ० ६ $\frac{1}{2}$ ×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८०३ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ६६६ । च भण्डार ।

३८५. रुद्रज्ञान..... पत्र सं० १ । आ० ६ $\frac{1}{2}$ ×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १७५७ चैत्र । पूर्ण । वे० सं० २११६ । झ भण्डार ।

विशेष—देधनाग्राम में लालसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

३८६. लग्नचन्द्रिकाभाषा..... पत्र सं० ८ । आ० ८×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४८ । ञ भण्डार ।

३८७. लग्नशास्त्र—वर्द्धमानसूरि । पत्र सं० ३ । आ० १०×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६ । ज भण्डार ।

३८८. लघुजातक—भट्टोत्पल । पत्र सं० १७ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १६३ । ब भण्डार ।

३८९. वर्षबोध..... पत्र सं० ५० । आ० १० $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८२३ । झ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है । वर्षफल निकालने की विधि दी हुई है ।

३९०. विवाहशोधन..... पत्र सं० २ । आ० ११×१ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६२ । झ भण्डार ।

३९१. वृहज्जातक—भट्टोत्पल । पत्र सं० ४ । आ० १० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८०२ । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक महेन्द्रकीर्ति के शिष्य भारमल्ल ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६२. षट्पंचासिका—बराहमिह । पत्र सं० ६ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ । पूर्ण । वे० सं० ७३६ । छ मण्डार ।

३०६३. षट्पंचासिकावृत्ति—भट्टोत्पल । पत्र सं० २२ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १७८८ । अपूर्ण । वे० सं० ६४४ । अ मण्डार ।

विशेष—हेमराज मिश्र ने तथा साहू पूरणमज ने प्रतिलिपि की थी । इसमें १, २, ८, ११ पत्र नहीं हैं ।

३०६४. शकुनविचार..... । पत्र सं० ५ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—शकुन शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८ । छ मण्डार ।

३०६५. शकुनावली..... । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८ । अ मण्डार ।

विशेष—५२ अक्षरों का यंत्र दिया हुआ है ।

३०६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० १०२० । अ मण्डार ।

विशेष—पं० सदासुखराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६७. शकुनावली—गर्ग । पत्र सं० २ से ५ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५४ । अ मण्डार ।

विशेष—दसका नाम पाशाकेवली भी है ।

३०६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ११६ । अ मण्डार ।

विशेष—अभरचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८१३ मंगसिर सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० २७९ । अ मण्डार ।

३१००. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ से ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६८ । ट मण्डार ।

३१०१. शकुनावली—अबजद । पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—शकुन शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६२ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २५८ । ज मण्डार ।

३१०२. शकुनावली .. . । पत्र सं० १३ । आ० ८३×४ इंच । भाषा—पुरानी हिन्दी । विषय—शकुन शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११४ । छ मण्डार ।

३१०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १७८१ सावन बुदी १४ । वे० सं० ११४ । छ मण्डार ।

विशेष—रामचन्द्र ने उदयपुर में राणा भंग्रामसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की थी । २० तमलावार चक्र हैं जिनमें २० नाम दिये हुये हैं । पत्र ५ में आगे प्रश्नों का फल दिया हुआ है ।

३१०१. इति सं० ३ । पत्र सं० १४ । ले० काल ५ । वे० सं० ३४० । ख भण्डार

३१०४. शकुनावली । पत्र सं० ५ से ८ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष । २० काल ५ । ले० काल सं० १८६० । अपूर्ण । वे० सं० १२५८ । ख भण्डार ।

३१०६. शकुनावली । पत्र सं० २ । आ० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—शकुनशास्त्र । २० काल ५ । ले० काल सं० १८०८ आगोज सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १६६६ । ख भण्डार ।

विशेष—पातिगाह के नाम पर रमलशास्त्र है ।

३१०७. शनिश्चरदृष्टिविचार । पत्र सं० १ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल ५ । ले० काल ५ । पूर्ण । वे० सं० १८४६ । ख भण्डार

विशेष—द्वादश राशिचक्र में से शनिश्चर दृष्टि विचार है ।

३१०८. शीघ्रबोध—काशीनाथ । पत्र सं० ११ से ३७ । आ० ८१×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल ५ । ले० काल ५ । अपूर्ण । वे० सं० १६४३ । ख भण्डार ।

३१०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८३० । वे० सं० १८६ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० मणिकचन्द्र ने घोड़ीग्राम में प्रतिलिपि की थी ।

३११०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८४८ आगोज सुदी ६ । वे० सं० १३८ । ख भण्डार ।

विशेष—संयतिराम खिन्दूका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३१११. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७१ । ले० काल सं० १८६८ आषाढ सुदी १४ । वे० सं० २५५ । ख भण्डार ।

विशेष—आ० रत्नकीर्ति के शिष्य पं० सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त ख भण्डार में ४ प्रतियाँ (वे० सं० ६०४, १०५६, १५५१, २२००) ख भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १८३) छ, भू तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १३८, १६२ तथा २११६) और हैं ।

३११२. शुभाशुभयोग । पत्र सं० ७ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल ५ । ले० काल सं० १८७५ पीष सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १८८ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० हीरालाल ने जीबनेर में प्रतिलिपि की थी ।

३११३. संक्रांतिफल । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल ५ । ले० काल ५ । पूर्ण । वे० सं० २०१ । ख भण्डार ।

३११४. संक्रांतिकल.....। पत्र सं० १६। आ० ६३×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

१० काल ×। ले० काल सं० १६०१ भाद्रपद बुदी ११। वे० सं० २१३। ज भण्डार

३११५. संक्रांतिकल.....। पत्र सं० २। आ० ६×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

१० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६४६। अ भण्डार

३११६. समरसार—रामदाजपेय। पत्र सं० १८। आ० १३×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—

ज्योतिष। १० काल ×। ले० काल सं० १७१३। पूर्ण। वे० सं० १७३२। ट भण्डार

विशेष—योगिनोपुर (विल्ली) में प्रतिलिपि हुई। स्वर शास्त्र से लिया हुआ है।

३११७. संवत्सरी विचार.....। पत्र सं० ८। आ० ६×६३ इंच। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—

ज्योतिष। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८६। झ भण्डार

विशेष—सं० १६५० से सं० २००० तक का वर्षफल है।

३११८. सामुद्रिकलक्षण.....। पत्र सं० १८। आ० ६×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—निमित्त

शास्त्र। स्त्री पुरुषों के अंगों के शुभाशुभ लक्षण आदि दिये हैं। १० काल ×। ले० काल सं० १५६४ पौष सुदी १२।

पूर्ण। वे० सं० २८१। व्य भण्डार

३११९. सामुद्रिकविचार.....। पत्र सं० १४। आ० ८३×४३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—निमित्त।

शास्त्र। १० काल ×। ले० काल सं० १७६१ पौष बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ६८। ज भण्डार।

३१२०. सामुद्रिकशास्त्र—श्रीनिधिसमुद्र। पत्र सं० ११। आ० १२×४३ इंच। भाषा—संस्कृत।

विषय—निमित्त। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११६। छ भण्डार।

विशेष—अंत में हिन्दी में १३ शृङ्गार रस के दोहे हैं तथा स्त्री पुरुषों के अंगों के लक्षण दिये हैं।

३१२१. सामुद्रिकशास्त्र.....। पत्र सं० ६। आ० १४×४ इंच। भाषा—प्राकृत। विषय—निमित्त।

१० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७८४। अ भण्डार।

विशेष—पृष्ठ ८ तक संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं।

३१२२. सामुद्रिकशास्त्र.....। पत्र सं० ४१। आ० ८३×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—निमित्त।

१० काल ×। ले० काल सं० १८२७ ज्येष्ठ सुदी १०। अपूर्ण। वे० सं० ११०६। अ भण्डार।

विशेष—स्वामी चेतनदास ने गुमानीराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। २, ३, ४ पत्र नहीं हैं।

३१२३. प्रति सं० २। पत्र सं० २३। ले० काल सं० १७६० फागुन बुदी ११। अपूर्ण। वे० सं०

१४५। छ भण्डार।

विशेष—बीच के कई पत्र नहीं हैं।

३१२४. सामुद्रिकशास्त्र पत्र सं० ८ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त ।
२० काल × । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वे० सं० ८६२ । अ भण्डार ।

३१२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११४७ । अ भण्डार ।

३१२६. सामुद्रिकशास्त्र पत्र सं० १४ । आ० ८×६ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—निमित्त ।
२० काल × । ले० काल सं० १६०८ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० २७७ । क भण्डार ।

३१२७. सारावली पत्र सं० ४ से १३४ । आ० १२×४½ इंच । भाषा—मराठी । विषय—
ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १७१६ भाद्रपद बुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० ३६३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ३६४, ३६५, ३६६, ३६७) और हैं ।

३१२८. सारावली पत्र सं० १ । आ० ११×३½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२५ । अ भण्डार ।

३१२९. सूर्यगमनविधि पत्र सं० ५ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५६ । अ भण्डार ।

विशेष—जैन ग्रन्थानुसार सूर्यचन्द्रगमन विधि दी हुई है । केवल गणित भाग दिया है ।

३१३०. सोमउत्पत्ति पत्र सं० २ । आ० ८½×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २०
काल × । ले० काल सं० १८०३ । पूर्ण । वे० सं० १३८६ । अ भण्डार ।

३१३१. स्वप्नविचार पत्र सं० १ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—निमित्तशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल सं० १८१० । पूर्ण । वे० सं० ६०६ । अ भण्डार ।

३१३२. स्वप्नाध्याय पत्र सं० ४ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त
शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४७ । अ भण्डार ।

३१३३. स्वप्नावली—देवनन्दि । पत्र सं० ३ । आ० १२×७½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त
शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६५८ भाद्रपद बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८३६ । क भण्डार ।

३१३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ८३७ । क भण्डार ।

३१३५. स्वप्नावलि पत्र सं० २ । आ० १०×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्तशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३५ । क भण्डार ।

३१३६. होराज्ञान पत्र सं० १३ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । २० काल × । ले०
काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०४५ । अ भण्डार ।

विषय-आयुर्वेद

३१३७. अजीर्णरसमञ्जरी। पत्र सं० ५। आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल सं० १७८८। पूर्ण। वे० सं० १०५१। छ मण्डार।

३१३८. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १३६। छ मण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

३१३९. अजीर्णमञ्जरी—काशीराज। पत्र सं० ५। आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८६। छ मण्डार।

३१४०. अमृतसागर। पत्र सं० ४०। आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३४०। छ मण्डार।

३१४१. अमृतसागर—महाराजा सवाई प्रतापसिंह। पत्र सं० ११७ से १६४। आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×१२ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २९। छ मण्डार।

विशेष—संस्कृत ग्रन्थ के आधार पर है।

३१४२. प्रति सं० २। पत्र सं० ५३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३२। छ मण्डार।

विशेष—संस्कृत मूल भी दिया है।

छ मण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ३०, ३१) अपूर्ण ओर हैं।

३१४३. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४ से १५०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०३६। छ मण्डार।

३१४४. अर्थप्रकाश—लंकानाथ। पत्र सं० ४७। आ० १० $\frac{१}{२}$ ×८ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल सं० १९८४ सावण बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ८८। छ मण्डार।

विशेष—आयुर्वेद विषयक ग्रन्थ है। प्रत्येक विषय को सतक में विभक्त किया गया है।

३१४५. आत्रेयवैद्यक—आत्रेयऋषि। पत्र सं० ४२। आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल सं० १८७७ भाद्रपद बुदी १४। वे० सं० २३०। छ मण्डार।

३१४६. आयुर्वेदिक तुस्खों का संग्रह। पत्र सं० १६। आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३०। छ मण्डार।

३१४७. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० ६३। छ मण्डार।

३१४८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३३ से ६२। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २१=१। ट भण्डार।

विशेष—६२ से आगे के गे पत्र नहीं हैं।

३१४९. आयुर्वेदिक नुस्खे.....। पत्र सं० ४ से २०। आ० ८X५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—

आयुर्वेद। २० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ६५। क भण्डार।

विशेष—आयुर्वेद सम्बन्धी कई नुस्खे दिये हैं।

३१५०. प्रति सं० २। पत्र सं० ४१। ले० काल X। वे० सं० २५६। ख भण्डार।

विशेष—एक पत्र में एक ही नुस्खा है।

इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० २६०, २६६, २६६) और हैं।

३१५१. आयुर्वेदिकग्रंथ.....। पत्र सं० १६। आ० १० $\frac{३}{४}$ X५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद।

२० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २०७६। ट भण्डार।

३१५२. प्रति सं० २। पत्र सं० १८ से ३०। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २०६६। ट भण्डार।

३१५३. आयुर्वेदमहोदधि—सुखदेव। पत्र सं० २४। आ० ६ $\frac{३}{४}$ X४ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—

आयुर्वेद। २० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३५५। ख भण्डार।

३१५४. कक्षपुट—सिद्धनागार्जुन। पत्र सं० ४२। आ० १४X५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—

आयुर्वेद एवं मन्त्रशास्त्र। २० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० १३। घ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का कुछ भाग फटा हुआ है।

३१५५. कल्पस्थान (कल्पव्याख्या).....। पत्र सं० २१। आ० ११ $\frac{३}{४}$ X५ इंच। भाषा—संस्कृत।

विषय—आयुर्वेद। २० काल X। ले० काल सं० १७०२। पूर्ण। वे० सं० १८६७। ट भण्डार।

विशेष—सुश्रुतसंहिता का एक भाग है। अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति सुश्रुतीयामां संहितायां कल्पस्थानं समाप्तं ॥

३१५६. कालज्ञान.....। पत्र सं० ३ से १६। आ० १०X४ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय—

आयुर्वेद। २० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २०७८। अ भण्डार।

३१५७. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल X। वे० सं० ३२। ख भण्डार।

विशेष—केवल अष्टम समुद्देश है।

३१५८. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १८४१ मंगसिर सुदी ७। वे० सं० ३३। ख

भण्डार।

विशेष—भिरुद् ग्राम में खेमचन्द के लिए प्रतिलिपि की गई थी। कुछ पन्नों की टीका भी दी हुई है।

३१५६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

३१५७. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ३० । ले० काल X । वे० सं० ११७४ । ट भण्डार ।

३१६१. चिकित्सांजनम्—उपाध्यायविद्यापति । पत्र सं० २० । मा० ६X८ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—आयुर्वेद । २० काल X । ले० काल सं० १११५ । पूर्ण । वे० सं० ३५२ । अ भण्डार ।

३१६२. चिकित्सासार..... । पत्र सं० ११ । मा० १३X६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १८० । अ भण्डार ।

३१६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५-३१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०७६ । ट भण्डार ।

३१६४. चूर्णाधिकार..... । पत्र सं० १२ । मा० १३X६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १८१६ । ट भण्डार ।

३१६५. ज्वरलक्षण..... । पत्र सं० ४ । मा० ११X४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । २०

काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १८६२ । ट भण्डार ।

३१६६. ज्वरचिकित्सा..... । पत्र सं० ५ । मा० १० $\frac{१}{२}$ X४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १२३७ । अ भण्डार ।

३१६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ ले ३१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०६४ । ट भण्डार ।

३१६८. ज्वरतिमिरभास्कर—चामुंडराय । पत्र सं० ६४ । मा० १०X६ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—आयुर्वेद । २० काल X । ले० काल सं० १८०६ माह सुदी १३ । वे० सं० १३०७ । अ भण्डार ।

विशेष—माधोपुर में किशनलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३१६९. त्रिशती—शाङ्गधर । पत्र सं० ३२ । मा० १० $\frac{१}{२}$ X५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल X । ले० काल X । वे० सं० ६३१ । अ भण्डार ।

३१७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १११६ । वे० सं० २५३ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० ३३३ है ।

३१७१. नहनसीपाराविधि..... । पत्र सं० ३ । मा० ११X५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १३०६ । अ भण्डार ।

३१७२. नाडीपरीक्षा..... । पत्र सं० ६ । मा० ११X५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २३० । छ भण्डार ।

३१७३. तिघंटु.....। पत्र सं० २ से ८८। पत्र सं० ११×५। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०७७। अ भण्डार।

३१७४. प्रति सं० २। पत्र सं० २१ से ८६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०८४। अ भण्डार।

३१७५. पंचप्ररूपणा.....। पत्र सं० ११। आ० १०×४^३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल सं० १५५७। अपूर्ण। वे० सं० २०८०। ट भण्डार।

विशेष—केवल ११वां पत्र ही है। ग्रन्थ में कुल १५८ श्लोक हैं।

प्रशस्ति—सं० १५५७ वर्ष ज्येष्ठ कृदी ८। देवगिरिनगरे राजा सूर्यमल्ल प्रवर्त्तमाने ब्र० ग्राहू लिखितं कर्म-क्षयनिमित्तं। ब्र० जालप जोषु पठनार्थं दत्तं।

३१७६. पथ्यापथ्यविचार.....। पत्र सं० ३ से ४४। आ० १२×५^३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६७६। ट भण्डार।

विशेष—श्लोकों के ऊपर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है। विषरोग पथ्यापथ्य अधिकार तक है। १६ से आगे के पत्रों में बीमक लग गई है।

३१७७. पाराविधि.....। पत्र सं० १। आ० ६^३×४^३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६६। ख भण्डार।

३१७८. भावप्रकाश—मानमिश्र। पत्र सं० २७५। आ० १०^३×४^३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल सं० १८६१ बैशाख सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ७३। ज भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति श्रीमानमिश्रलटकनलमयश्रीमानमिश्रभावविरचितो भावप्रकाशः संपूर्णः।

प्रशस्ति—संवत् १८८१ मिति बैशाख शुक्ला ६ शुक्ले लिखितमुद्रिणा फतेचन्द्रेण सवाई जयनगरमध्ये।

३१७९. भावप्रकाश.....। पत्र सं० १६। आ० १०^३×४^३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०२२। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री जगु पंडित तनयदास पंडितकृते त्रिसप्तिकायां रसायन वा जारण समाप्तः।

३१८०. भावसंग्रह.....। पत्र सं० १०। आ० १०^३×६^३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०५६। ट भण्डार।

३१८१. मदनविनोद—मदनपाल । पत्र सं० १५ से ६२ । आ० ८३×३३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १७६५ ज्येष्ठ सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० १७६८ । जीर्ण । अ
भण्डार ।

विशेष—पत्र १५ पर निम्न पुष्पिका है—

इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे अपादिवर्गः ।

पत्र १८ पर— यो राजां मुखतिलकः कटारमल्लस्तेन श्रीमदननूपेण निर्मितेन ग्रन्थेऽस्मिन् मदनविनोदे वटादि पंचमवर्गः ।
लेखक प्रशस्ति—

ज्येष्ठ शुक्ला १२ गुरो तद्दिने लि.....श्यामजी विश्वकेन परोपकारार्थं । संवत् १७६५ विश्वेश्वर सन्निधौ....

मदनपालविरचिते मदनविनोदे निघण्टे प्रशस्ति वर्गश्चतुर्दशः ॥

३१८२. मंत्र व औषधि का नुस्खा..... पत्र सं० १ । आ० १०×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६८ । ख भण्डार ।

विशेष—तिल्ली काठने का मन्त्र भी है ।

३१८३. साधननिदान—साधव । पत्र सं० १२४ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६५ । अ भण्डार ।

३१८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २००१ । ट भण्डार ।

विशेष—पं० ज्ञानमेरु कृत हिन्दी टीका सहित है ।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री पं० ज्ञानमेरु विनिर्मितो बालबोधसमासोक्षरार्थो मधुकोष परमार्थः ।

पं० धनलाल ऋषभचन्द्र रामचन्द्र की पुस्तक है ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ८०८, १३४५, १३४७) ख भण्डार में दो प्रतियां
(वे० सं० १४३, १६५) तथा ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७४) और है ।

३१८५. मानविनोद—मानसिंह । पत्र सं० ६७ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४४ । ख भण्डार ।

प्रति हिन्दी टीका सहित है । ६७ से आगे पत्र नहीं हैं ।

३१८६. मुष्टिज्ञान—ज्योतिषाचार्य देवचन्द्र । पत्र सं० २ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—आयुर्वेद ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६१ । अ भण्डार ।

✱

३१८७. योगचिन्तामणि—मनूसिंह । पत्र सं० १२ से ४८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१०२ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र १ से ११ तथा ४८ में आगे नहीं हैं ।

द्वितीय अधिकार की गुणिका निम्न प्रकार है—

इति श्री वा. रत्नराजगणि अंतेवासि मनूसिंहकृते योगचिन्तामणि बालावदांघ्रे चूर्णाधिकारो द्वितीयः ।

३१८८. योगचिन्तामणि..... । पत्र सं० ४ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८०३ । ट भण्डार ।

३१८९. योगचिन्तामणि..... । पत्र सं० १२ से १०५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १८५४ ज्येष्ठ बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० २०८३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । जयनगर में फतेहचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

३१९०. योगचिन्तामणि..... । पत्र सं० २०० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३४६ । अ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतिषों का मिश्रण है ।

३१९१. योगचिन्तामणिबीजक..... । पत्र सं० ५ । आ० १३½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । अ भण्डार ।

३१९२. योगचिन्तामणि—उपाध्याय हर्षकीर्ति । पत्र सं० १५८ । आ० १०½×५½ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०४ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में संक्षिप्त अर्थ दिया हुआ है ।

✱

३१९३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२८ । ले० काल × । वे० सं० २२०६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३१९४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४१ । ले० काल सं० १७८१ । वे० सं० १६७८ । अ भण्डार ।

३१९५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५६ । ले० काल सं० १८३४ आषाढ बुदी २ । वे० सं० ८८ । अ
भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । सांगानेर में मोर्घों के चैत्यालय में पं० ईश्वरदास के चेलों की पुस्तक
से प्रतिलिपि की थी ।

३१९६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १७७९ वैशाख मुदी २ । वे० सं० ६६ । अ
भण्डार ।

विशेष—मालपुरा में जीवराज वैद्य ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३१६७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०३ । ले० काल सं० १७६६ ज्येष्ठ शुदी ४ । अपूर्ण । वे० सं० ६६ ।

ज भण्डार ।

विशेष—प्रति सटीक है । प्रथम दो पत्र नहीं हैं ।

३१६८. योगशत—वररुचि । पत्र सं० २२ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल × । ले० काल सं० १६१० आश्विन सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २००२ । ट भण्डार ।

विशेष—आयुर्वेद का संग्रह ग्रंथ है तथा उसकी टीका है । चंपावती (चाटसू) में पं० जिवचन्द्र ने व्यास कुत्रीलाल से लिखवाया था ।

३१६९. योगशतटीका..... । पत्र सं० २१ । आ० ११½×३½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७६ । अ भण्डार ।

३२००. योगशतक..... । पत्र सं० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल × । ले० काल सं० १६०६ । पूर्ण । वे० सं० ७२ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० विनय समुद्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । प्रति टीका सहित है ।

३२०१. योगशतक..... । पत्र सं० ७८ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५३ । ख भण्डार ।

३२०२. रसमञ्जरी—शालिनाथ । पत्र सं० २२ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८५६ । ट भण्डार ।

३२०३. रसमञ्जरी—शाङ्गधर । पत्र सं० २६ । आ० १०½×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १६४१ सावन बुदी ३३ । पूर्ण । वे० सं० १६१ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० पन्नालाल जोबदेर निवासी ने जयपुर में चिन्तामणिजी के मन्दिर में शिष्य जयचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३२०४. रसप्रकरण..... । पत्र सं० ४ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३५ । जीर्ण । ट भण्डार ।

३२०५. रसप्रकरण..... । पत्र सं० १२ । आ० ६×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३६६ । अ भण्डार ।

३२०६. रामविनोद—रामचन्द्र । पत्र सं० २१६ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—आयुर्वेद । २० काल सं० १६२० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३४४ । अ भण्डार ।

विशेष—शाङ्गधर कृत वैद्यकसार ग्रन्थ का हिन्दी पद्यानुवाद है ।

३२०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६२ । ले० काल सं० १८५१ बैशाख सुदी ११ । वे० सं० १६३ । छ भण्डार ।

विशेष—जीवरत्नलालजी के पठनार्थ भैरवजी के ग्राम में प्रतिनिधि हुई थी ।

३२०८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८३ । ले० काल × । वे० सं० २३० । छ भण्डार ।

३२०९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८८२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिमां अपूर्ण (वे० सं० १६६६, २०१८, २०६२) और हैं ।

३२१०. रासायनिकशास्त्र पत्र सं० ५२ । आ० ५६×६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । च भण्डार ।

३२११. लक्ष्मणोत्सव—अमरसिंहात्मज श्री लक्ष्मण । पत्र सं० २ से ८६ । आ० ११६×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८४ । अ भण्डार ।

३२१२. लक्ष्मणपञ्चनिर्णय..... पत्र सं० १२ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल सं० १८२२ पौष सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १६६ । छ भण्डार ।

विशेष—पं० जीवमलालजी पन्नालालजी के पठनार्थ लिखा गया था ।

३२१३. विषहरनविधि—संतोष कवि । पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । १० काल सं० १७४१ । ले० काल सं० १८६६ माघ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १४४ । छ भण्डार ।

सित रिष वैद अर खंडले जेष्ठ सुकल रुदाम ।

चंद्रापुरी संवत् गिनौ चंद्रापुरी मुकाम ॥२७॥

संघत यह संतोष कृत तादिन कविता कीत ।

सशि भनि गिर विव विजय तादिन हम लिख लीन ॥२८॥

३२१४. वैद्यकसार..... पत्र सं० ५ से ५४ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३४ । च भण्डार ।

३२१५. वैद्यजीवन—लोलिम्बराज । पत्र सं० २१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५७ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री विलास तक है ।

३२१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ से ३२ । ले० काल सं० १८३८ । वे० सं० १५७१ । अ भण्डार ।

३२१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८७२ फागुण । वे० सं० १७६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० १८०, १८१) और हैं ।

३२१८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८१ । छ भण्डार ।

३२१९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० २३० । छ भण्डार ।

३२२०. वैद्यजीवनमन्थ..... । पत्र सं० ३ से १८ । आ० १०^६/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३३ । च भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र भी नहीं है ।

३२२१. वैद्यजीवनटीका—रुद्रभट्ट । पत्र सं० २५ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० २०१६, २०१७) और हैं ।

३२२२. वैद्यमनोत्सव—नयनसुख । पत्र सं० ३२ । आ० ११×५^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । २० काल सं० १६४६ आषाढ सुदी २ । ले० काल सं० १८५३ ज्येष्ठ सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १८७६ । अ भण्डार ।

३२२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८०६ । वे० सं० २०७६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११६५) और है ।

३२२४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८० । छ भण्डार ।

३२२५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८६३ । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

३२२६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६६ सावरा सुदी १४ । वे० सं० २००४ । ट भण्डार ।

विशेष—पाटण में मुनिमुन्नत चैत्यालय में भट्टारक सुखेन्द्रकीर्ति के शिष्य पं० चम्पाराम ने स्वयं प्रतिलिपि की थी ।

३२२७. वैद्यवृक्षभ..... । पत्र सं० १६ । आ० १०^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १६०१ । पूर्ण । वे० सं० १८७१ ।

विशेष—सेवाराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

३२२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २६७ । ख भण्डार ।

३२२६. वैद्यकसारोद्धार—संग्रहकर्ता श्री हर्षकीर्तिसूरि । पत्र सं० १६७ । भा० १०×४ इञ्च ।
भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १७४६ आम्बोज बुदी = । पूर्ण । वे० सं० १८२ । स्व
भण्डार ।

विशेष—भानुमती नगर में श्रीगजकुशलगरि के विषय भणिमुन्दरकुशल ने प्रतिलिपि की थी । प्रति हिन्दी अनुवाद सहित है ।

३२३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १७७३ भाव । बे० सं० १४६ । न
भण्डार ।

विशेष—प्रति का जीर्णोद्धार हुआ है ।

३२३१. वैद्यामृत—माणिक्य भट्ट । पत्र सं० २० । आ० ६×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । १० काल × । ने० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वे० सं० ३५४ । ब० भण्डार ।

विशेष—मारिक्वयभट्ट अहमदाबाद के रहने वाले थे ।

३२३२. वैद्यखिलोद्.....। पत्र सं० १८३। आ० १०३×८३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३०६। श्रु. भण्डार।

३२३३. वैद्यविनोद—भट्टशंकर । पत्र सं० २०७ । आ० ८३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । ३० सं० २७३ । ख भण्डार ।

विशेष—पत्र १५० तक हिन्दी संकेत भी दिये गये हैं :

३२३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २३१ । छ भण्डार ।

३२३५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११२ । जे० काल सं० १८७७ । क्र० सं० १७३३ । ट. भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

संवत् १७५६ बीजाख मुदी ५ । वार चंद्रवासरे वर्षे शाके १६२३ पातिमाहजी नौरंगजीवजी महाराजाजी श्री जयसिंहराज्य हाकिम फौजदार खानअब्दुल्लाखोजी के नायबरूपलमखां स्याहीजी श्री स्याह्यालमजी की तरफ मियां साहबजी अब्दुलफतेजी का राज्य थीमस्तु कल्याणक । सं० १६७७ शाके १७४२ प्रवर्तमाने कार्तिक १२ गुरुवारलिखित मिश्रलालजी कस्थ पुत्र रामनारायणो पठनार्थ ।

३२३६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ से ४८ । ले० काल X । अपूर्णा । वै० सं० २०७० । ट भण्डार ।

३२३७. शाङ्गधरसंहिता—शाङ्गधर । पत्र सं० ५८ । पृ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८५ । अ. भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (नं० सं० ८०३, ११४२, १५७७) और हैं ।

३२३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७० । ले० काल × । वे० सं० १८५ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिमां (वे० सं० २७०, २७१) और हैं ।

३२३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४-४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८२ । ट भण्डार ।

३२४०. शाङ्गधरसंहिताटीका—नाडमल्ल । पत्र सं० ४१३ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १८१२ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० १३१५ । आ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम शाङ्गधरदीपिका है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

वास्तव्यान्वयप्रकाश वैद्य श्रीभावसिंहात्मजेनाढमल्लेन धिरचितायाम् शाङ्गधरदीपिकामुत्तरखण्डे नेत्रप्रसादन
कर्मविधि द्वाविंशोऽध्यायः । प्रति सुन्दर है ।

३२४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०५ । ले० काल × । वे० सं० ७० । ज भण्डार ।

विशेष—प्रथमखण्ड तक है जिसके ७ अध्याय हैं ।

३२४२. शालिहोत्र (अश्वचिकित्सा)—नकुल पंडित । पत्र सं० ९ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—
संस्कृत हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १७५६ । पूर्ण । वे० सं० १२३६ । आ भण्डार ।

विशेष—कालाडहरा में महात्मा कुशलसिंह के आत्मज हरिकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी ।

३२४३. शालिहोत्र (अश्वचिकित्सा)..... । पत्र सं० १८ । आ० ७^३/_४×४^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १७१८ आषाढ सुदी ९ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० १२८३ । आ
भण्डार ।

३२४४. सन्तानविधि..... । पत्र सं० ३० । आ० ११×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०७ । ट भण्डार ।

विशेष—सन्तान उत्पन्न होने के सम्बन्ध में कई नुस्खे हैं ।

३२४५. सन्निपातनिदान..... । पत्र सं० ८ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३० । छ भण्डार ।

३२४६. सन्निपातनिदानचिकित्सा—वाइडदास । पत्र सं० १४ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १८३१ पौष सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २३० । छ
भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

✱

३२४७. सशिपातकलिका.....। पत्र सं० ५। आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल सं० १८७३। पूर्ण। वे० सं० २८३। अ भण्डार।

विशेष—मीरनपुर में पं० जीवलदास ने प्रतिलिपि की थी।

३२४८. सप्तविधि.....। पत्र सं० ७। आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४१७। अ भण्डार।

३२४९. सर्वेश्वरसमुच्चयदर्पण.....। पत्र सं० ४२। आ० ६×३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल सं० १८८१। पूर्ण। वे० सं० २२६। अ भण्डार।

✱

३२५०. सारसंग्रह.....। पत्र सं० २७ से २५७। आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल सं० १७४७ कार्तिक। अपूर्ण। वे० सं० ११५६। अ भण्डार।

विशेष—हरिमोविंद ने प्रतिलिपि की थी।

३२५१. सालोत्तररास.....। पत्र सं० ७३। आ० ६×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल सं० १८४३ आसोज बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ७१४। अ भण्डार।

३२५२. सिद्धियोग.....। पत्र सं० ७ से ४६। आ० १०×४ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३५७। अ भण्डार।

३२५३. हरडैकल्प.....। पत्र सं० ४। आ० ५ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८१६। अ भण्डार।

विशेष—मालकांगडी प्रयोग भी है। (अपूर्ण)



विषय-छंद एवं अलङ्कार

३२५४. अमरचंद्रिका..... पत्र सं० ७५ । आ० ११×४^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—छंद
अलङ्कार । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३ । ज भण्डार ।
विशेष—चतुर्थ अधिकार तक है ।
३२५५. अलङ्काररत्नाकर—दलपतराय बंशीधर । पत्र सं० ५१ । आ० ८^३/_४×५^३/_४ इंच । भाषा—
हिन्दी । विषय—अलङ्कार । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४ । क भण्डार ।
३२५६. अलङ्कारवृत्ति—जिनबख्श सूरि । पत्र सं० २७ । आ० १२×८ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—रस अलङ्कार । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४ । क भण्डार ।
३२५७. अलङ्कारटीका..... पत्र सं० १४ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अलङ्कार ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८१ । ट भण्डार ।
३२५८. अलङ्कारशास्त्र..... पत्र सं० ७ से ११२ । आ० ११^३/_४×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
अलङ्कार । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २००१ । अ भण्डार ।
विशेष—प्रति जीर्ण शीर्ण है । बीच के पत्र भी नहीं हैं ।
३२५९. कविकर्पटी..... पत्र सं० ६ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—रस अलङ्कार ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८५० । ट भण्डार ।
विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।
३२६०. कुवलयानन्द..... पत्र सं० २० । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अलङ्कार ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७८१ । ट भण्डार ।
३२६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० १७८२ । ट भण्डार ।
३२६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०२५ । ट भण्डार ।
३२६३. कुवलयानन्द—अप्यय दीक्षित । पत्र सं० ६० । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
अलङ्कार । २० काल × । ले० काल सं० १७४३ । पूर्ण । वे० सं० ६५३ । अ भण्डार ।
विशेष—सं० १८०३ माह बुदी ५ को नैरासागर ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

३२६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० १२६ । ऋ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महात्मा पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८० । ले० काल सं० १६०४ वैशाख सुदी १० । वे० सं० ३१४ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० सदासुख के शिष्य फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८०६ । वे० सं० ३०६ । ज भण्डार ।

३२६७. कुवलयानन्दकारिका..... । पत्र सं० ६ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

अलङ्कार : १० काल × । ले० काल सं० १८१६ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २८६ । छ भण्डार ।

विशेष—पं० कृष्णदास ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । १७२ कारिकायें हैं ।

३२६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ३०६ । ज भण्डार ।

विशेष—हरदास भट्ट की किताब है रामनारायण मिश्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६९. चन्द्रावलोक..... । पत्र सं० ११ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अलङ्कार ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२४ । अ भण्डार ।

३२७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अलङ्कारशास्त्र ।

१० काल × । ले० काल सं० १६०६ कार्तिक बुदी ६ । वे० सं० ६१ । च भण्डार ।

विशेष—रूपचन्द साह ने प्रतिलिपि की थी ।

३२७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६२ । च भण्डार ।

३२७२. छंदानुशासनवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ८ । आ० १२×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—छंदशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२८ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

उवाचाय श्रीहेमचन्द्रविरचिते व्यावर्णनां नाम अष्टमाध्याय समाप्तः । समाप्तोऽयं ग्रन्थः । श्री भूषणकीर्ति
शिष्य प्रमुख श्री ज्ञानसूषण योन्त्यस्य ग्रन्थः लिख्यते । मु० विनयमेरुणा ।

३२७३. छंदोशतक—द्वर्षकीर्ति (चंद्रकीर्ति के शिष्य) । पत्र सं० ७ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच ।

भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—छंदशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८१ । अ भण्डार ।

३२७४. छंदकोश—रत्नशेखर सुरि । पत्र सं० ३१ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

छंदशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६५ । ऋ भण्डार ।

३२७५. छंदकोश.....। पत्र सं० २ से २५ । आ० १०×४१ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंद शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६७ । चं भण्डार ।

३२७६. नवितोष्यछंद.....। पत्र सं० ७ । आ० ६×४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—छंद शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । वै० सं० ४५७ । व्य भण्डार ।

३२७७. पिंगलछंदशास्त्र—माखनकवि । पत्र सं० ४६ । आ० १३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—छंदशास्त्र । २० काल सं० १८६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६४४ । अ भण्डार ।

विशेष—४६ से आगे पत्र नहीं है ।

आदिभाग— श्री गणेशायनमः अथ पिंगल । सर्वथा ।

बंगल श्री गुंस्देव गणेश कृपान गुपाल गिरा सरसानी ।
बंदन के पद पंकज पावम माखन छंद विलास बखानी ॥
कोविद वृंद वृंदनि की कल्पद्रुम का मधु का काम निधानी ।
सारद ईंदु मयूष निसीतल सुन्दर सेस सुधारस बानी ॥१॥

दीर्घा—

पिंगल सागर छंदमणि वरेण वरेण बहुरङ्ग ।
रस उपमा उपमैय तैं सुंदर अरथ तरंग ॥२॥
तातैं रच्यो विचारि की नर बांनी नरहैत ।
उदाहरण बहु रसन के करण सुमति समेत । ३॥
दिमल चरण भूषन कलित, बानी ललित रसाल ।
सदा सुकवि गोपाल कौं, श्री गोपाल कृपाल ॥४॥
तिन सुत माखन नाम है, उक्ति युक्ति त हीन ।
एक समै गोपान कवि, सासन हरियह दीन ॥५॥
पिंगल नाम विचारि मन, नारी बांनीहि प्रकास ।
यथा सुमति सौं कीजिये, माखन छंद विलास ॥६॥

दीहरागीत—

यह सुकवि श्री गोपाल को मुझ भई सासन है जद ।
पद जुगल बंदन सुनिये उर सुमति बाढी है तव ।
अति निम्न पिंगल सिंधु में मनभीन ह्वे करि संचिरयो ।
अधि काठि छंद विलास माखन कविन सौं बिनती करयो ॥

दोहा—

हे कवि जन सरवज्ञ हो मति दोषन कछु देह ।
भूष्यो भ्रम तै हौं वहां जहां सोधिं किन लेहु ॥८॥
संवत् वसुं रस लोक पर नखतह सा तिथि मास ।
सित वाण श्रुति दिन रच्यौ माखन छंद विनास ॥९॥

पिंगल छंद में दोहा, चौबोला, छप्पय, भ्रमर दोहा, सोरठा आदि कितने ही प्रकार के छंदों का प्रयोग किया गया है । जिस छंद का लक्षण लिखा गया है उसको उसी छंद में वर्णन किया गया है । अन्तिम पत्र भी नहीं है ।

३२७८. पिंगलशास्त्र—नागराज । पत्र सं० १० । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२७ । अ भण्डार ।

३२७९. पिंगलशास्त्र..... । पत्र सं० ३ से २० । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५९ । अ भण्डार ।

३२८०. पिंगलशास्त्र..... । पत्र सं० ४ । आ० १०^१×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९६२ । अ भण्डार ।

३२८१. पिंगलछंदशास्त्र (छन्द रत्नावली)—हरिरामदास । पत्र सं० ७ । आ० १३×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—छंद शास्त्र । २० काल सं० १७९५ । ले० काल सं० १८२९ । पूर्ण । वे० सं० १८६९ । अ भण्डार ।

विशेष— संवत्सर नव मुनि अजीनभ नवमी गुरु भाति ।
दिग्बाला दृढ कूप तहि ग्रन्थ जन्म-फल ज्यानि ॥

इति श्री हरिरामदास निरञ्जनी कुल छंद रत्नावली संपूर्ण ।

३२८२. पिंगलप्रदीप—भट्ट लक्ष्मीनाथ । पत्र सं० ६८ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—रस भण्डार । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१३ । अ भण्डार ।

३२८३. प्राकृतछंदकोष—रत्नशेखर । पत्र सं० ५ । आ० १३×५^३ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११९ । अ भण्डार ।

३२८४. प्राकृतछंदकोष—अरुह । पत्र सं० १३ । आ० ८×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १९३..... पौष बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५२१ । अ भण्डार ।

३२८५. प्राकृतछंदकोश..... । पत्र सं० ३ । आ० १०×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १७९२ आवण सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १८६२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एवं फटी हुई है ।

३२८६. प्राकृतविशालङ्कार..... पत्र सं० २ । आ० ११×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४८ । अ भण्डार ।

३२८७. भाषाभूषण—जसवंतसिंह राठौड़ । पत्र सं० १६ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—अलङ्कार । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० ५७१ । क भण्डार ।

३२८८. रघुनाथ विलास—रघुनाथ । पत्र सं० ३१ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—रसालङ्कार । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६५ । च भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम रसतरङ्गिणी भी है ।

३२८९. रत्नमंजूषा..... पत्र सं० ६ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६१६ । अ भण्डार ।

३२९०. रत्नमंजूषिका..... पत्र सं० २७ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति रत्नमंजूषिकायां छंदो विविक्त्यां भाष्यतोऽष्टमोऽध्यायः ।

मङ्गलावरण—ॐ पंचपरमेष्ठिभ्यो नमो नमः ।

३२९१. वाग्भट्टालङ्कार—वाग्भट्ट । पत्र सं० १६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अलङ्कार । २० काल × । ले० काल सं० १६४६ कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति— सं० १६४६ वर्षे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे तृतीया तिथौ शुक्रवासरं लिखतं पांडे लूणा माहुरोठमध्ये स्वान्वयः पठतार्थ ।

३२९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६६४ फागुण सुदी ७ । वे० सं० ६५३ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है । कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं ।

३२९३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६५६ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० १७२ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है जो कि चारों ओर हासिये पर लिखी हुई है ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११६), क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६७२), छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३८), ज भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ६०, १४३), झ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१७), ब भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४६) और है ।

३२६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७०० कार्तिक बुदी ३ । वे० सं० ४५ । अ
भण्डार ।

विशेष—ऋषि हंसा ने सादड़ी में प्रतिलिपि कराई थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४६) भी है ।

३२६५. वाग्भट्टालङ्कारटीका—वादिराज : पत्र सं० ४० । आ० ६३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—अलङ्कार । २० काल सं० १७२६ कार्तिक बुदी ३९ (दीपावली) । ले० काल सं० १८११ आश्विन सुदी ६ । पूर्ण
वे० सं० १५२ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम कविचन्द्रिका है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत्सरे निधिद्वगद्वयशांकयुक्ते (१७२६) दीपोत्सवास्तद्विवर्णे समुरी सचित्रे ।

सग्नेऽलि ताम्नि च समीपगिरः प्रसादात् सद्वादिराजरचिताकविचन्द्रकेयं ॥

श्रीराजसिहनुपतिजयसिंह एव श्रीटोडाक्षकास्पनगरी अषहित्य तुल्या ।

श्रीवादिराजविवुधोऽपर वाग्भटोर्य श्रीमूषधृतिरिह नन्दतु चार्कचन्द्रः ॥

श्रीमद्भूमिपुत्रात्मजस्य बलिनः श्रीराजसिंहस्य मे मेवायामवकाशमाप्य विहिता टीका शिशूनां हिता ।

हीनाधिकवचोयदत्र लिखितं तद्वैबुधैः क्षम्यतां गार्हस्थ्यवनिनाथ मेवनाधियासकः स्वपुतामाभूयात् ॥

इति श्री वाग्भट्टालङ्कारटीकायां गोमराजत्रेष्ठिसुतवादिराजविरचितायां कविचन्द्रिकायां पंचमः परिच्छेदः
समाप्तः । सं० १८११ आश्विन सुदी ६ गुरुवासरं लिखितं महात्मौक्यनगरका हेमराज सवाई जयपुरमध्ये । सुभं भूयात् ॥

३२६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १८११ आश्विन सुदी ६ । वे० सं० २५६ । अ
भण्डार ।

३२६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १८६० । वे० सं० ६५४ । क भण्डार ।

३२६८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १७३१ । वे० सं० ६५५ । क भण्डार ।

विशेष—तक्षकगढ में महाराजा मानसिंह के शासनकाल में सज्जेलवालान्वये सौगासी गौत्र काले
सम्राट गयानुद्दीन ने सम्मानित साहू महिणा साहू गोमा सुत वादिराज को भार्या लौहडी ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि
करवायी थी ।

३२६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ६५६ । क भण्डार ।

३३००. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५३ । ले० काल ५ । वे० सं० ६७३ । क भण्डार ।

३३०१. वाग्भट्टालङ्कार टीका पत्र सं० १३ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
अलङ्कार । २० काल ५ । ले० काल ५ । पूर्ण (पंचम परिच्छेद तक) वे० सं० २० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३३०२. घृत्तरत्नाकर—भट्ट केदार । पत्र सं० ११ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५२ । अ भण्डार ।

३३०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १६८४ । वे० सं० ६८४ । क भण्डार ।

विशेष—इनके प्रतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६५०) स्व भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७५) अ भण्डार में दो प्रतियाँ (वे० सं० १७७, ३०६) और हैं ।

३३०४. घृत्तरत्नाकर—कालिदास । पत्र सं० ६ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७६ । स्व भण्डार ।

३३०५. घृत्तरत्नाकर..... । पत्र सं० ७ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८५ । ज भण्डार ।

३३०६. घृत्तरत्नाकरटीका—सुल्हण कवि । पत्र सं० ४० । आ० ११×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६८ । क भण्डार ।

विशेष—सुकवि हृदय नामक टीका है ।

३३०७. घृत्तरत्नाकरछंदटीका—समयसुन्दरगणि । पत्र सं० १ । आ० १०^१/_२×५^१/_२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२१६ । अ भण्डार ।

३३०८. अतबोध—कालिदास । पत्र सं० ६ । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रष्टुगण विचार तक है ।

३३०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८४६ फागुण सुदी ६ । वे० सं० ६२० । अ भण्डार ।

विशेष—पं० डालूराभ के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

३३१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ६२६ । अ भण्डार ।

विशेष—जीवराज कृत टिप्पणी सहित है ।

३३११. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८६५ आषाढ सुदी ६ । वे० सं० ७२५ । क भण्डार ।

३३१२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८०४ ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० सं० ७२७ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० रामचंद्र ने झिल्ली नगर में प्रतिलिपि की थी ।

३३१३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७५६ चैत्र सुदी १ । वै० सं० १७८८ । अ
भण्डार ।

विशेष—पं० सुखानन्द के शिष्य नैनमुख ने प्रतिलिपि की थी । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३३१४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वै० सं० १८११ । ट भण्डार ।

विशेष—आचार्य विमलकीर्ति ने प्रतिलिपि कराई थी ।

इसके प्रतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियाँ (वै० सं० ६४८, ६०७, ११६१) क, छ, च और ज भण्डार
में एक एक प्रति (वै० सं० ७०४, ७२६, ३४८, २८७) व्य भण्डार में २ प्रतियाँ (वै० सं० १५६, १८७)
श्रीर हैं ।

३३१५. श्रुतबोध—वररुचि । पत्र सं० ४ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल सं० १८५६ । वै० सं० २८३ । छ भण्डार ।

३३१६. श्रुतबोधटीका—मनोहरश्याम । पत्र सं० ८ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ मासोज सुदी १२ । पूर्ण । वै० सं० ६४७ । क भण्डार ।

३३१७. श्रुतबोधटीका..... । पत्र सं० ३ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल सं० १८२८ मंगसर बुदी ३ । पूर्ण । वै० सं० ६४५ । अ भण्डार ।

३३१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वै० सं० ७०३ । क भण्डार ।

३३१९. श्रुतबोधवृत्ति—हर्षकीर्ति । पत्र सं० ७ । आ० १०३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १७१६ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वै० सं० १६१ । ख भण्डार ।

विशेष—श्री ५ सुन्दरदास के प्रसाद से मुनिसुख ने प्रतिलिपि की थी ।

३३२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से १६ । ले० काल सं० १६०१ माघ सुदी ६ । अपूर्ण । वै० सं०
२३३ । छ भण्डार ।



विषय-संगीत एवं नाटक



३३२१. अकलङ्कनाटक—श्री मकखनलाल । पत्र सं० २३ । मा० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १ । क भण्डार ।

३३२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १६१३ कार्तिक सुदी ६ । वे० सं० १७२ । छ

भण्डार ।

३३२३. अभिज्ञान शाकुन्तल—कालिदास । पत्र सं० ७ । मा० १०½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११७० । अ भण्डार ।

३३२४. कर्पूरमञ्जरी—राजशेखर । पत्र सं० १२ । मा० १२½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

नाटक । २० काल × । ले० काल > . पूर्ण । वे० सं० १८१३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । मुनि ज्ञानकोटि ने प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थ के दोनों ओर ८ पत्र तक संस्कृत में व्याख्या दी हुई है ।

३३२५. ज्ञानसूर्योदयनाटक—वादिचन्द्रसूरि । पत्र सं० ६३ । मा० १०½×४½ इञ्च । भाषा—

संस्कृत । विषय—नाटक । २० काल सं० १६४८ माघ सुदी ८ । ले० काल सं० १६६८ । पूर्ण । वे० सं० १८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रामेर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३३२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८८७ माह सुदी ५ । वे० सं० २३१ । क

भण्डार ।

३३२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १८६४ आशीज सुदी ६ । वे० सं० २३२ । क

भण्डार ।

विशेष—कृष्णगढ निवासी महात्मा राधाकृष्ण ने जयनगर में प्रतिलिपि की थी तथा इसे संधी अमरचन्द वीवान के मन्दिर में विराजमान की ।

३३२८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६३५ सावण सुदी ५ । वे० सं० २३० । क

भण्डार ।

३३२९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १७६० । वे० सं० १३४ । अ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक जगत्कीर्ति के शिष्य श्री ज्ञानकीर्ति ने प्रतिलिपि करके पं० दोदराज को भेंट स्वरूप दी थी । इसके अतिरिक्त इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० १४७, ३३७) और हैं ।

३३३०. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—पारसदास निगोत्या । पत्र सं० ४१ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल सं० १६१७ वैशाख बुदी ६ । ले० काल सं० १६१७ पौष ११ । पूर्ण । वे० सं० २१६ । छ भण्डार ।

३३३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ५६३ । च भण्डार ।

३३३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४८ से ११५ । ले० काल सं० १६३६ । अपूर्ण । वे० सं० ३४४ । झ भण्डार ।

३३३३. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भागचन्द । पत्र सं० ४१ । आ० १३×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल सं० १६३४ । पूर्ण । वे० सं० ५६२ । च भण्डार ।

३३३४. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भगवतीदास । पत्र सं० ४० । आ० ११३×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल सं० १८७७ भाद्रवा बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २२० । छ भण्डार ।

३३३५. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—बख्तावरलाल । पत्र सं० ८७ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल सं० १८५४ ज्येष्ठ सुदी २ । ले० काल सं० १६२८ वैशाख बुदी ८ । वे० सं० ५६४ । पूर्ण । च भण्डार ।

विशेष—जोहरीलाल खिन्दूका ने प्रतिलिपि की थी ।

३३३६. धर्मदशावतारनाटक । पत्र सं० ६६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । २० काल सं० १६३३ । ले० काल × । वे० सं० ११० । ज भण्डार ।

विशेष—पं० फतेहलालजी की प्रेरणा से जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी । इसका दूसरा नाम धर्मप्रदीप भी है ।

३३३७. नलदमयंती नाटक । पत्र सं० ३ से २४ । आ० ११×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६८ । ट भण्डार ।

३३३८. प्रबोधचन्द्रिका—चैजल भूपति । पत्र सं० २६ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल सं० १६०७ भाद्रवा बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ८१४ । झ भण्डार ।

३३३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० २१६ । झ भण्डार ।

३३४०. भविष्यदत्त तिलकासुन्दरी नाटक—न्यासतसिंह । पत्र सं० ४४ । आ० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७ । छ भण्डार ।

३३४१. मदनपराजय—जिनदेवसूरि । पत्र सं० ३६ । आ० १०३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८८५ । झ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० २ से ७, २७, २८ नहीं हैं तथा ३६ से आगे के पत्र भी नहीं हैं ।

३३४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १८२६ । वे० सं० ५६७ । क भण्डार ।

३३४३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४१ । ले० काल X । वे० सं० ५७८ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २५ पत्र नवीन लिखे गये हैं ।

३३४४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४६ । ले० काल X । वे० सं० १०० । छ भण्डार ।

३३४५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६१६ । वे० सं० ६४ । झ भण्डार ।

३३४६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८३६ माह सुदी ६ । वे० सं० ४८ । झ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयनगर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में पं० चोखचन्द के सेवक पं० रामचन्द ने सवाईराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३३४७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४० । ले० काल X । वे० सं० २०१ ।

विशेष—अग्रवाल ज्ञातीय मित्तल गोत्र वाले ने प्रतिलिपि कराई थी ।

३३४८. मदनपराजय..... । पत्र सं० ३ से २५ । आ० १०X४१ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—नाटक । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १६६५ । झ भण्डार ।

३३४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १६६५ । झ भण्डार ।

३३५०. मदनपराजय—पं० स्वरूपचन्द । पत्र सं० ६२ । आ० ११३X८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल सं० १६१८ मंगसिर सुदी ७ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५७९ । छ भण्डार ।

३३५१. रागमाला..... । पत्र सं० ६ । आ० ८३X५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सङ्गीत । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १३७६ । झ भण्डार ।

३३५२. राग रागनियों के नाम..... । पत्र सं० ८ । आ० ८३X६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सङ्गीत । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३०७ । झ भण्डार ।



विषय-लोक-विज्ञान

३३५३. अढाईद्वीप वर्णन.....। पत्र सं० १० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान-जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड, पुष्कराक्ष द्वीप का वर्णन है । २० काल X । ले० काल सं० १८१५ । पूर्ण । वे० सं० ३ । छ भण्डार ।

३३५४. ग्रहोंकी ऊंचाई एवं आयुवर्णन.....। पत्र सं० १ । आ० ८ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-नक्षत्रों का वर्णन है । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २११० । अ भण्डार ।

३३५५. चन्द्रप्रज्ञप्ति.....। पत्र सं० ६२ । आ० १० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-चन्द्रमा सम्बन्धी वर्णन है । २० काल X । ले० काल सं० २३५४ सावन मुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १९७३ ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इति श्री चन्द्रपञ्चात्तसी (चन्द्रप्रज्ञप्ति) संपूर्णा । लिखतं परिष करमचंद ।

३३५६. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति—नेमिचन्द्रचार्य । पत्र सं० ६० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-जम्बूद्वीप सम्बन्धी वर्णन । २० काल X । ले० काल सं० १८६६ फाल्गुन मुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १०० । च भण्डार ।

विशेष—मधुपुरी नगरी में प्रतिलिपि की गयी थी ।

३३५७. तीनलोककथन.....। पत्र सं० ६६ । आ० १० $\frac{1}{2}$ ×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान-तीनलोक वर्णन । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३५० । अ भण्डार ।

३३५८. तीनलोकवर्णन.....। पत्र सं० १५४ । आ० १२ $\frac{1}{2}$ ×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-लोक विज्ञान-तीन लोक का वर्णन है । २० काल X । ले० काल सं० १८६१ सावन मुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १० । अ भण्डार ।

विशेष—गोपाल व्यास उग्रियावास वाले ने प्रतिलिपि की थी । प्रारम्भ में नेमिनाथ के दश भव का वर्णन है । प्रारम्भ में लिखा है— हूँदार देश में सवाई जयपुर नगर स्थित आचार्य शिरोमणि श्री यशोदानन्द स्वामी के शिष्य पं० सदामुख के शिष्य श्री पं० फतेहलाल की यह पुस्तक है । भादवा मुदी १० सं० १९११ ।

३३५९. तीनलोकचार्ट.....। पत्र सं० १ । आ० ५×९ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोकविज्ञान । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १३५ । अ भण्डार ।

विशेष—त्रिलोकसार के आधार पर बनाया गया है। तीनलोक की जानकारी के लिए बड़ा उपयोगी है।

३३६०. त्रिलोकचित्र.....। आ० २०×३० इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—लोकविज्ञान। २० काल ×। ले० काल सं० १५७५। पूर्ण। वे० सं० ५३६। ज भण्डार।

विशेष—कण्ठे पर तीनलोक का चित्र है।

३३६१. त्रिलोकदीपक—यामदेव। पत्र सं० ७२। आ० १६×७२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—लोकविज्ञान। २० काल ×। ले० काल सं० १८५२ आषाढ सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ५। ज भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ सचित्र है। जम्बूद्वीप तथा विदेह क्षेत्र का चित्र सुन्दर है तथा उस पर जैल बूटे भी हैं।

३३६२. त्रिलोकसार—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ८१। आ० १३×५ इंच। भाषा—प्राकृत। विषय—लोकविज्ञान। २० काल ×। ले० काल सं० १८९६ मंगल बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ४६। अ भण्डार।

विशेष—पहिले पत्र पर ६ चित्र हैं। पहिले नेमिनाथ की मूर्ति का चित्र है जिसके बाईं ओर बलभद्र तथा दाईं ओर श्रीकृष्ण हाथ जोड़े खड़े हैं। तीसरा चित्र नेमिचन्द्राचार्य का है वे लकड़ी के सिंहासन पर बैठे हैं सामने लकड़ी के स्टैंड पर ग्रन्थ है आगे पिन्दी और कमण्डलु हैं। उनके आगे दो चित्र और हैं जिसमें एक चामुण्डराय का तथा दूसरा और किसी श्रोता का चित्र है। दोनों हाथ जोड़े गोड़ी गाले बैठे हैं। चित्र बहुत सुन्दर हैं। इसके अतिरिक्त और भी लोक-विज्ञान सम्बन्धी चित्र हैं।

३३६३. प्रति सं० २। पत्र सं० ४५। ले० काल सं० १८६६ प्र० बैशाख सुदी ११। वे० सं० २८८। क भण्डार।

३३६४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६२। ले० काल सं० १८२६ श्रावण बुदी ५। वे० सं० २८३। क भण्डार।

३३६५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७२। ले० काल ×। वे० सं० २८६। क भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है।

३३६६. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६८। ले० काल ×। वे० सं० २९०। क भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है। कई पृष्ठों पर हाशिया में सुन्दर चित्राम हैं।

३३६७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १७३३ माह सुदी ५। वे० सं० २८३। क भण्डार।

विशेष—महाराजा रामसिंह के शासनकाल में वसन्ता में रामचन्द्र काला ने प्रतिलिपि करवायी थी।

३३६८. प्रति सं० ७। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १५५३। वे० सं० १६४४। ट भण्डार।

विशेष—कालज्ञान एवं ऋषिमंजल पूजा भी है।

इनके प्रतिरिक्त अ भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० २६२, २६३,) च भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० १४७, १४८) तथा अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४) और है ।

३३६६. त्रिलोकसारदर्पणकथा—सखसेन । पत्र सं० ३२ से २२८ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—लोक विज्ञान । र० काल सं० १७१३ चैत सुदी ५ । ले० काल सं० १७५३ ज्येष्ठ सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ३६० । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है । प्रारम्भ के ३१ पत्र नहीं हैं ।

३३७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३६ । ले० काल सं० १७३६ द्वि० चैत्र बुदी ४ । वे० सं० १८२ । अ भण्डार ।

विशेष—साह लोहट ने आत्म बठनार्थ प्रतिलिपि करवायी थी ।

३३७१. त्रिलोकसारभाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० २८६ । आ० १४×७ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—लोक विज्ञान । र० काल सं० १८४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । अ भण्डार ।

३३७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७३ । अ भण्डार ।

३३७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१८ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० ४३ । ग भण्डार ।

विशेष—जैतराम साह के पुत्र कालूराम साह ने सोनवाल भौसा से प्रतिलिपि कराकर चौधरियों के मन्दिर में चढ़ाया ।

३३७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२५ । ले० काल × । वे० सं० ३६ । घ भण्डार ।

३३७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३६४ । ले० काल सं० १९६६ । वे० सं० २८४ । ङ भण्डार ।

विशेष—सेठ जवाहरलाल सुगनचन्द सोनी अजमेर वालों ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

३३७६. त्रिलोकसारभाषा..... । पत्र सं० ४५२ । आ० १२३/८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल सं० १९४७ । पूर्ण । वे० सं० २९२ । क भण्डार ।

३३७७. त्रिलोकसारभाषा..... । पत्र सं० १०८ । आ० ११३/७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २९१ । क भण्डार ।

विशेष—भवतलोक वर्णन तक पूर्ण है ।

३३७८. त्रिलोकसारभाषा..... । पत्र सं० १५० । आ० १२×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५८३ । च भण्डार ।

३३७९. त्रिलोकसारभाषा (वचनिका)..... । पत्र सं० ३१० । आ० १०३/७ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल सं० १८९५ । वे० सं० ८५ । अ भण्डार ।

३३८०. त्रिलोकसारवृत्ति—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव । पत्र सं० २४० । आ० १३×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल सं० १६४५ । पूर्ण । वे० सं० २८२ । क भण्डार ।

३३८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४२ । ले० काल × । वे० सं० ६६ । छ भण्डार ।

३३८२. त्रिलोकसारवृत्ति..... । पत्र सं० १० । आ० १०×११ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८ । ज भण्डार ।

३३८३. त्रिलोकसारवृत्ति..... । पत्र सं० ३७ । आ० १२ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७ । ज भण्डार ।

३३८४. त्रिलोकसारवृत्ति..... । पत्र सं० २५ । आ० १०×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३३ । ट भण्डार ।

३३८५. त्रिलोकसारवृत्ति..... । पत्र सं० ६३ । आ० १३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३८ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३३८६. त्रिलोकसारसंहिता—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६३ । आ० १३ $\frac{1}{2}$ ×८ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८४ । क भण्डार ।

३३८७. त्रिलोकस्वरूपव्याख्या—उदयलाल गंगवालाल । पत्र सं० ५० । आ० १३×७ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—लोक विज्ञान । २० काल सं० १६४४ । ले० काल सं० १६०४ । पूर्ण । वे० सं० ६ । ज भण्डार ।

विशेष—मुं० धनलाल भौरीलाल एवं चिमनलालजी की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना हुई थी ।

३३८८. त्रिलोकवर्णन..... । पत्र सं० ३६ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल सं० १८१० कालिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७७ । ख भण्डार ।

विशेष—गाथायें नहीं हैं केवल वर्णनमात्र है । लोक के चित्र भी हैं । जम्बूद्वीप वर्णन तक पूर्ण है भगवानदास के पठनार्थ जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३३८९. त्रिलोकवर्णन..... । पत्र सं० १५ से ३७ । आ० १० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × अपूर्ण । वे० सं० ७६ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । १ से १४, १८, २१ २३ से २६, २८ से ३४ तक पत्र नहीं है । पत्र सं० १५, ३६, तथा ३७ पर चित्र नहीं हैं । इसके प्रतिरिक्त तीन पत्र सचित्र और हैं जिनमें से एक में नरक का, दूसरे में चंद्र, सूर्यवक्त्र कुण्डलद्वीप और तीसरे में भौरा, मछली, मनुष्यज्वरा के चित्र हैं । चित्र सुन्दर एवं वर्णनीय हैं ।

३३६०. त्रिलोकवर्णन..... । एक ही लम्बे पत्र पर । ले० काल X । वे० सं० ७५ । ख भण्डार ।

विशेष—सिद्धशिला से स्वर्ग के विमल पटल तक ६३ पटलों का सवित्र वर्णन है । चित्र १४ फुट ८ इंच लम्बे तथा ४३ इंच चौड़े पत्र पर दिये हैं । कहीं कहीं पीछे कपड़ा भी चिपका हुआ है । मध्यलोक का चित्र १X१ फुट है । चित्र सभी बिन्दुओं से बने हैं । नरक वर्णन नहीं है ।

३३६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से १० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ५२७ । ख भण्डार ।

३३६२. त्रिलोकवर्णन..... । पत्र सं० ५ । आ० १७X११ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६ । ज भण्डार ।

३३६३. त्रैलोक्यसारटीका—सहस्रकीर्ति । पत्र सं० ७६ । आ० १२X५ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २८६ । छ भण्डार ।

३३६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल X । वे० सं० २८७ । छ भण्डार ।

३३६५. भूगोलनिर्माण..... । पत्र सं० ३ । आ० १०X४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल सं० १५७१ । पूर्ण । वे० सं० ८६८ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० हर्षागम गणि वाचनार्थ लिखित कोरटा नगरे सं० १५७१ वर्ष । जेनेतर भूगोल है जिसमें सतयुग, द्वार एवं त्रेता में होने वाले अवतारों का तथा जम्बूद्वीप का वर्णन है ।

३३६६. संघपण्टपत्र..... । पत्र सं० ६ से ४१ । आ० ६३X४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०३ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में ठण्वा टीका दी हुई है । १ से ५, १४, १५ । २० से २२, २६ । २८ से ३०, ३२, ३५, ३६ तथा ४१ से आगे ख नहीं हैं ।

३३६७. सिद्धांत त्रिलोकदीपक—वामदेव । पत्र सं० ६४ । आ० १३X५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३११ । ख भण्डार ।



विषय- सुभाषित एवं नीतिशास्त्र

३३६८. अकलमन्दवासी.....। पल सं० २०। आ० १२×८३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित।

२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११। क भण्डार।

३३६९. प्रति सं० २। पत्र सं० २०। ले० काल ×। वे० सं० १२। क भण्डार।

३४००. उपदेशछत्तीसी—जिनहर्ष। पत्र सं० ५। आ० १०×४३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। २० काल ×। ले० काल सं० १८३६। पूर्ण। वे० सं० ४२८। अ भण्डार।

विलेख—

प्रारम्भ—श्री सर्वज्ञेय्यो नमः। अथ श्री जिनहर्षेण वीर चित्तायामुपदेश छत्तीसी कामहमेव लख्यते स्यात्।

जिनस्तुति—

सकल रूप यामे प्रभुता अत्रूप भूप,
धूप छाया माहे है न जगवीश छुं।
पुण्य हि न पाप हे नसित हे न ताप हे,
जाप के प्रताप कटे करम अतिसयुं॥
ज्ञान की अंगज पुंज सूर्य वृक्ष के निकुंज,
अतिसय अतिस फुति वचन ये तिसयु।
अैसे जिनराज जिनहर्ष प्रणमि उपदेश,
की छतिसी कहौ सबइ एसतीसयु॥१॥

अधिरत्न कथन—

अरे जिड़ काबिजीउ ताहु परी अमार सीते,
तो अतीगति करी जो रसी उठानि है।
तु तो नहीं चेतता हे जाणे हे रहेगो वृद्ध,
मेरी र कर रह्यो उद्यमि रति मानी है॥
ज्ञान की नीजीर खोल देख न कवहे,
तेरी मोह बारु मे भयो बकाणौ अज्ञानी है।
कहे जिनहर्ष हरु तन लगैगी बार,
कागद की बुझी कौसू रहे जी हा पारो॥२॥

अन्तिम— धर्म परीक्षा कथन सवैया—

धरम धरम कहै मरम न कोउ लहे,
भरम में भूलि रहै कुल रुढ कीजीये ।
कुल रुढ छोरि कै भरम फंद तोरि कै,
गुमति गति फोरि कै सुज्ञान दृष्टि दीजीये ॥
दया रूप सोइ धर्म धर्म तै कटै है मर्म,
भेद जिन धरम पीयूष रस पीजीये ।
करि कै परीक्ष्या जिनहरष धरम कीजीये,
कसि कै कसोटी जैसे कंघरा क लीजीये ॥३५॥

अथ ग्रंथ समाप्त कथन सवैया इकतीसा

बई उपदेश की छतीसी परिपूर्णा चतुर नर
है जे याकी मव्य रस पीजीये ।
मेरी है प्रलपमति तो भी मैं कीए कवित,
कविताहूँ सी ही जिन ग्रंथ मान लीजीये ॥
सरस है है बखाय जोऊ प्रवसर जाए,
दोइ तीन याकै भैया सवैया कह्यो ।
कहै जिनहरष संवत्त गुण सिसि भक्ष कीनी,
जु गुण कै सावास भोक्कु दीजीयो ॥३६॥
इति श्री उपदेश छतीसी संपूर्णा ।

संवत् १८३६

गवडि पुछेरे गवडि आ, कवण भले री देश ।
संपत हुए तो घर भलो, नहींतर भलो विदेश ॥
सूरबलि तो सूहांमणी, कर मोहि गंग प्रवाह ।
मांडल सरो प्रगणे पांणी प्रथम प्रवाह ॥२॥

३४०१. उपदेश शतक—द्यानतराय । पत्र सं० १४ । आ० १२३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२६ । च भण्डार ।

३४०२. कपूरप्रकरण..... । पत्र सं० २४ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६३ ।

विशेष—१७६ पद्य हैं । अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

श्री वज्रसेनस्य गुरोस्त्रिषष्टि
सार प्रबंधस्फुट सदगुणस्य ।
शिष्येण चक्रे हरिणोय मिष्टा
सूतावली नेमिचरित्र कर्ता ॥१७६॥

इति कर्पूराभिध सुभाषित कोशः समाप्तः ॥

३४०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १६४७ ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० सं० १०३ । क
भण्डार ।

३४०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १७७६ श्रावण ४ । वे० सं० २७६ । ज
भण्डार ।

विशेष—भूधरदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३४०५. कामन्दकीय नीतिसार भाषा..... । पत्र सं० २ से १७ । आ० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी
गद्य । विषय—नीति । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २८० । अ भण्डार ।

३४०६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ से ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०५ । अ भण्डार ।

३४०७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ से ६८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८ । अ भण्डार ।

३४०८. चाणक्यनीति—चाणक्य । पत्र सं० ११ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
नीतिशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६६ मंगसिर बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ८११ । अ भण्डार ।

इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ६३०, ६६१, ११००, १६५४, १६४५) और हैं ।

३४०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८४६ पीर बुदी ६ । वे० सं० ७० । ग
भण्डार ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७१) और है ।

३४१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७५ । अ भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३७, ६५७) और हैं ।

३४११. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ से १३ । ले० काल सं० १८८५ मंगसिर बुदी ५५ । अपूर्ण । वे०
सं० ६३ । अ भण्डार ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६४) और है ।

३४१२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८७४ ज्येष्ठ बुदी ११ । वे० सं० २४६ । अ
भण्डार ।

इसी भण्डार में ३ प्रतियाँ (वे० सं० १३८, २४८, २५०) और हैं ।

३४१३. चाणक्यनीतिसार—मूलकर्त्ता—चाणक्य । संग्रहकर्त्ता—मथुरेश भट्टाचार्य । पत्र सं० ७ ।
आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नीतिशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१० ।
अ भण्डार ।

३४१४. चाणक्यनीतिभाषा..... । पत्र सं० २० । आ० १०×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नीति
शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१६ । छ भण्डार ।

विशेष—६ अध्याय तक पूर्ण है । ७वें अध्याय के २ पद्य हैं । दोहा और कुण्डलियों का अधिक प्रयोग
हुआ है ।

३४१५. छंदशतक—वृन्दावनदास । पत्र सं० २६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
सुभाषित । २० काल सं० १८६० माघ सुदी २ । ले० काल सं० १६४० मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १७८ । क
भण्डार ।

३४१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १६३७ फागुण सुदी ६ । वे० सं० १८१ । क
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० १७६, १८०) और हैं ।

३४१७. जैनशतक—भूधरदास । पत्र सं० १७ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित ।
२० काल सं० १७८१ पौष सुदी १२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १००५ । अ भण्डार ।

३४१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १६७७ फागुन सुदी ५ । वे० सं० २१८ । क
भण्डार ।

३४१९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० २१७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति नोले कागजों पर है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१६) और है ।

३४२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० ५३० । च भण्डार ।

३४२१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १८८६ । वे० सं० १५८ । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २८४) और है जिसमें कर्म छत्तीसी पाठ भी है ।

३४२२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १८८१ । वे० सं० १६४० । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६५१) और है ।

३४२३. ढालागण..... । पत्र सं० ८ । आ० १२×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३५ । फ भण्डार ।

३४२४. तत्त्वधर्माभूत..... पत्र सं० ३३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।

२० काल × । ले० काल सं० १६३६ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४६ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

संवत् १६३६ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे दशम्यांतिथी बुधवासरे चित्रातक्षत्रे परिषयोगे अत्रा दिवसे । आदीश्वर चैत्यालये । चंपावतिनामनगरे श्रीभूलसंधे सरस्वतीशब्दे बलात्कारगणे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टा० पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री धर्म (चं) द देवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री ललितकीर्ति देवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री चन्द्रकीर्ति देवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री लक्ष्मी-गोत्र साह हरजाज भार्या पुत्र द्विय प्रथम समतु द्वितिक पुत्र मेवराज । साह समतु भार्या समतादे तत्र पुत्र लक्ष्मी-साह मेघराज तत्र भार्या त्रिय राधा भार्या लालादे द्वितिक..... अपूर्ण ।

३४२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१४५ । ट भण्डार ।

विशेष—३० से आगे पत्र नहीं हैं ।

प्रारम्भ—

शुद्धात्मरूपमाप्नुतं प्रणिपत्य गुरो गुप्तं ।

तत्त्वधर्माभूतं नाम वक्ष्ये संक्षेपतः ॥

धर्मे श्रुते पापमुपैति नार्ज धर्मे श्रुते पुण्यमुपैति वृद्धिः ।

स्वर्गापवर्गं प्रवरोह सौख्यं, धर्मे श्रुते रेव न चात्यतोस्ति ॥२॥

३४२६. दशबोल..... पत्र सं० २ । आ० १०×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६४७ । ट भण्डार ।

३४२७. दृष्टान्तशतक..... पत्र सं० १७ । आ० ६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८५६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ दिया है । पत्र १५ से आगे ६३ कुटुम्बर श्लोकों का संग्रह और है ।

३४२८. चान्तविलास—चान्तराय । पत्र सं० २ से १३ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४४ । क भण्डार ।

३४२९. धर्मविलास—चान्तराय । पत्र सं० २३४ । आ० ११ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १६५८ फागुण बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ३४२ । क भण्डार ।

३४३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३६ । ले० काल सं० १८८१ आसोज बुदी २ । वे० सं० ४५ । ग भण्डार ।

विशेष—जैतरामजी साह के पुत्र शिवलालजी ने नेमिनाथ चैत्यालय (चौधरियों का मन्दिर) के लिए चिम्मनलाल तेरापंथी से दोसा में प्रतिलिपि करवायी थी ।

३४३१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६१ । ले० काल सं० १६१६ । वे० सं० ३३६ । ङ भण्डार ।

विशेष—तीन प्रकार की लिपि है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३४०) और है ।

३४३२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६४ । ले० काल × । वे० सं० ५१ । झ भण्डार ।

३४३३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १५८४ । वे० सं० १५६३ । ट भण्डार ।

३४३४. नवरत्न (कवित्त)..... । पत्र सं० २ । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—गुभाषित ।

र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३८८ । अ भण्डार ।

३४३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १७८ । च भण्डार ।

३४३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १६३४ । वे० सं० १७६ । च भण्डार ।

विशेष—पंचरत्न और है । श्री विरथीचंद पाटोदी ने प्रतिलिपि की थी ।

३४३७. नीतिसार..... । पत्र सं० ६ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नीतिशास्त्र ।

र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

३४३८. नीतिसार—इन्द्रनन्दि । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नीति

शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६ । झ भण्डार ।

विशेष—पत्र ६ से भद्रबाहु कृत क्रियासार दिया हुआ है । अन्तिम एवं पत्र पर दर्शनसार है किन्तु अपूर्ण है ।

३४३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६३७ । भादवा बुदी ४ । वे० सं० ३८६ । ङ भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ३८६, ४००) और हैं ।

३४४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ८ । ले० काल सं० १८२२ । भादवा बुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ३८१ । ङ भण्डार ।

३४४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३२६ । ज भण्डार ।

३४४२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७८४ । वे० सं० १७६ । झ भण्डार ।

विशेष—अलायनगर में पार्श्वनाथ तैलालय में गोवर्द्धनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३४४३. नीतिशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० ६ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

गुभाषित । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । ङ भण्डार ।

३४४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १४२ । च भण्डार ।

३४४५. नीतिवाक्यामृत—सोमदेव सूरि । पत्र सं० ५५ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—नीतिशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८४ । क भण्डार ।

३४४६. नीतिविनोद..... । पत्र सं० ४ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नीतिशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल सं० १९१८ । वे० सं० ३३५ । झ भण्डार ।

विशेष—मन्नालाल पांड्या ने संग्रह करवाया था ।

३४४७. नीलसूक्त । पत्र सं० ११ । आ० ९^३/_४×४^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२८ । ज भण्डार ।

३४४८. नौशेरवां बादशाह की दस ताज । पत्र सं० ५ । आ० ४^३/_४×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
उपदेश । २० काल × । ले० काल सं० १९४६ बैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ४० । झ भण्डार ।

विशेष—गणेशलाल पांड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

३४४९. पञ्चतन्त्र—पं० विष्णु शर्मा । पत्र सं० ६४ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
नीति । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८१८ । अ भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६३७) और है ।

३४५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वे० सं० १०१ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३४५१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ से १९८ । ले० काल सं० १८३२ चैत्र सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं०
१९४ । च भण्डार ।

विशेष—पूर्णचन्द्र सूरि द्वारा संशोधित, पुरोहित भागीरथ पल्लीवाल ब्राह्मण ने सवाई जयनगर (जयपुर)
में पृथ्वीसिंहजी के शासनकाल में प्रतिलिपि की थी । इस प्रति का जीर्णोद्धार सं० १८५५ फागुण बुदी ३ में हुआ था ।

३४५२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८७ । ले० काल सं० १८८७ पौष बुदी ४ । वे० सं० ६११ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है । प्रारम्भ में संगही दीवान अमरचंदजी के आग्रह से नयनसुख व्यास के
शिष्य भागिबयचन्द्र ने पञ्चतन्त्र की हिन्दी टीका लिखी ।

३४५३. पञ्चतन्त्रभाषा..... । पत्र सं० २२ से १४३ । आ० ६×७ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—नीति । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५७८ । ट भण्डार ।

विशेष—विष्णु शर्मा के संस्कृत पञ्चतन्त्र का हिन्दी अनुवाद है ।

३४५४. पांचवोल..... । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इंच । भाषा—गुजराती । विषय—उपदेश । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९६९ । ट भण्डार ।

३४५५. पैसठबोल । पत्र सं० १ आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—उपदेश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७६ । अ भण्डार ।

विशेष—अथ बोल ६५

[१] अरज लोभी [२] निरदई मनस होसी [३] विसवासघाती मंत्री [४] पुत्र सुजा अरना लोभा [५] नीचा पेवा भारी बंधव [६] असंतोष प्रजा [७] विद्यावंत दलद्री [८] पाखण्डी शास्त्र बांच [९] जती क्रोधी होइ [१०] प्रजाहीण नगअही [११] वेद रोगी होसी [१२] हीण जाति कला होसी [१३] सुधारक छल छद्र होसी [१४] सुभट कायर होसी [१५] खिसा काया कलेस घणु करसी दुष्ट बलवंत सुच सो [१६] जीवनवंतजरा [१७] अकाल मृत्यु होसी [१८] पुद्दा जीव घणा [१९] अंगहीण मनुख होसी [२०] अलग मेष [२१] उरल सात बीसी ही ? [२२] वचन चूक मनुष होसी [२३] विसवासघाती छत्री होसी [२४] संथा [२५] [२६] [२७] [२८] [२९] अणकीघा न कीधी कहसी [३०] आपको कीधी दोष पैला का लगावसी [३१] असुद्ध साथ भणसी [३२] कुटल दया पालसी [३३] भेष धाराद्वैरागी होसी [३४] अहंकार द्वेष मुख घणा [३५] मुरजावा लोप गऊ आह्वण [३६] माता पिता मुत्तदेव मान नहीं [३७] दुरजन मु सनेह होसी [३८] सजन उपरा विरोध होसी [३९] पैला की निद्या धरणी करेसी [४०] कुलवंता नार लहोसी [४१] बेसां भगतण लज्जा करसी [४२] अफल वर्षा होसी [४३] बाण्या की जात कुटिल होसी [४४] कवारी चपल होसी [४५] उत्तम धरकी स्त्री नीच मु होसी [४६] नीच धरका रूपवंत होसी [४७] मुंहमांग्या भेष नहीं होसी [४८] धरती में मेह थोड़ी होसी [४९] मनष्यां में नेह थोड़ी होसी [५०] बिना देख्यां चुगली करसी [५१] जाको सरणों लेसी तासू ही द्वेष करी खोटी करसी [५२] गज हीण बजा होसासी [५३] न्याइ कहाँ हान क लेसी [५४] अवंबंसा राजा ही [५५] रोग सोग बणा होसी [५६] रतबा प्राप्त होसी [५७] नीच जात अद्वान होसी [५८] राजजोग बणा होसी [५९] अस्त्री कलेस गरावण [६०] अस्त्री सील हीण बणी होसी [६१] सीलवंती बिरली होसी [६२] विष विकार घनी रगत होसी [६३] संसार चलावाता ते दुखी जाण जोसी ।

॥ इति श्री पञ्चाध्याय बोल संपूरण ॥

३४५६. प्रबोधसार—यशःकीर्ति । पत्र सं० २३ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७५ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में मूल अपभ्रंश का उद्धा है ।

३४५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६५७ । वे० सं० ४६५ । अ भण्डार ।

३४५८. प्रश्नोत्तर रत्नमाला—तुलसीदास । पत्र सं० २ । आ० ६६×३३ इंच । भाषा—गुजराती ।

विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७० । ट भण्डार ।

३४५९. प्रश्नोत्तररत्नमालिका—अमोघवर्ष । पत्र सं० २ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७ । अ भण्डार ।

३४६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १६७१ मंगसिर सुदी ५ । वे० सं० ५१६ । क

भण्डार ।

३४६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

३४६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १७६२ । ट भण्डार ।

३४६३. प्रस्तावित श्लोक..... । पत्र सं० ३६ । आ० ११×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१४ । क भण्डार ।

विवेक—हिन्दी अर्थ सहित है । विभिन्न ग्रन्थों में से उत्तम पद्यों का संग्रह है ।

३४६४. बारहखड़ी.....सूरत । पत्र सं० ७ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५६ । म भण्डार ।

३४६५. बारहखड़ी । पत्र सं० २० । आ० ५×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५६ । म भण्डार ।

३४६६. बारहखड़ी—पार्श्वदास । पत्र सं० ५ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित ।

२० काल सं० १८६१ पौष वृषी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४० ।

३४६७. बुधजनविलास—बुधजन । पत्र सं० ६४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

संग्रह । २० काल सं० १८६१ कार्तिक सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८७ । म भण्डार ।

३४६८. बुधजन सतसई—बुधजन । पत्र सं० ४४ । आ० ८×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

सुभाषित । २० काल सं० १८७६ ज्येष्ठ बुदी ८ । ले० काल सं० १६८० माघ बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ४४४ । अ

भण्डार ।

विवेक—७०० दोहों का संग्रह है ।

३४६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ७६४ । अ भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ६५४, ६८४) और हैं ।

३४७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५३४ । छ भण्डार ।

३४७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ७२६ । च भण्डार ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४६) और है ।

३४७२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १६५४ आषाढ सुदी १० । वे० सं० १६४० । ट भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६३२) और है ।

३४७३. बुधजन सतसई—बुधजन । पत्र सं० ३०३ । ले० काल × । वे० सं० ५३५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ५३६) और है । हिन्दी अर्थ सहित है ।

३४७४. ब्रह्मविलास—भैया भगवतीदास । पत्र सं० २१३ । आ० १३×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—सुभाषित । २० काल सं० १७५५ वैशाख सुदी ३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । क भण्डार ।

विशेष—कवि की ६७ रचनाओं का संग्रह है ।

३४७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३२ । ले० काल × । वे० सं० ५३६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है । चौकोर लाइनें सुनहरी रंग की हैं । प्रति छुटके के रूप में है तथा प्रदर्शनों में रखने योग्य है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५३८) और है ।

३४७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२० । ले० काल × । वे० सं० ५३८ । क भण्डार ।

३४७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३७ । ले० काल सं० १८५७ । वे० सं० १२७ । ख भण्डार ।

विशेष—माधोराजपुरा में महात्मा जयदेव जोबनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी । मित्ती माह मुदी ६ सं० १८८६ में गोविन्दराम साहबड़ा (छाबड़ा) की मार्फत पञ्चार के मन्दिर के वास्ते दिलाया । कुछ पत्र चूड़े काट गये हैं ।

३४७८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १११ । ले० काल सं० १८८३ चैत्र सुदी ६ । वे० सं० ६५१ । च भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ हुकमचन्दजी बज ने दीवान अमरचन्दजी के मन्दिर में चढ़ाया था ।

३४७९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २०३ । ले० काल × । वे० सं० ७३ । ज भण्डार ।

३४८०. ब्रह्मचर्याष्टक..... । पत्र सं० ५६ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १७४८ । पूर्ण । वे० सं० १२६ । ख भण्डार ।

३४८१. भर्तृहरिशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० २० । आ० ८३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३३८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम शतकत्रय अथवा त्रिशतक भी है ।

इसी भण्डार में न प्रतियों (वे० सं० ६५५, ३८१, ६२८, ६४६, ७६३, १०७४, ११३६, ११७३) और हैं ।

३४८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ से १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६१ । छ भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ५६२, ५६३) अपूर्ण और हैं ।

३४८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० २६३ । च भण्डार ।

३४८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १८७५ चैत सुदी ७ । वे० सं० १३८ । छ भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २८८) और है ।

३४८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १६२८ । वे० सं० २८४ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । मुखचन्द ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

३४८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० सं० १६२ । ज भण्डार ।

३४८७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८ से २६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११७५ । ट भण्डार ।

३४८८. भावशतक—श्री नागराज । पत्र सं० १४ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १८३८ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ५७० । छ भण्डार ।

३४८९. मनमोदनपंचशतीभाषा—छत्रपति जैसवाल । पत्र सं० ८६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । २० काल सं० १६१६ । ले० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वे० सं० ५६६ । क भण्डार ।

विशेष—सभी सामान्य विषयों पर छंदों का संग्रह है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६६) और है ।

३४९०. मान बावनी—मानकवि । पत्र सं० २ । आ० ६½×३½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१६ । छ भण्डार ।

३४९१. मित्रविलास—घासी । पत्र सं० ३४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । २० काल सं० १७६६ फागुण सुदी ४ । ले० काल सं० १६५२ चैत्र बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५७६ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक ने यह ग्रन्थ अपने मित्र भारामल तथा पिता बहालसिंह की सहायता से लिखा था ।

३४९२. रत्नकोष..... । पत्र सं० ८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १७२२ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १०३८ । ज भण्डार ।

विशेष—बिस्वसेन के शिष्य बलभद्र ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०२१) तथा अ० भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३४५ क) और है ।

३४६३. रत्नकोष..... पत्र सं० १४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × १ ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२४ । क भण्डार ।

विशेष—१०० प्रकार की विविध बातों का विवरण है जैसे ४ पुरुषार्थ, ६३ राजवंश, ७ अंगराज्य, राजाओं के गुण, ४ प्रकार की राज्य विद्या ६३ राज्यपद्धति, ६३ प्रकार के राजदिनोद तथा ७२ प्रकार की कला आदि ।

३४६४. राजनीतिशास्त्रभाषा—जसुराम । पत्र सं० १८ । आ० ५½×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—राजनीति । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८ । क भण्डार ।

विशेष—श्री गणेशायनमः अथ राजनीति जसुराम कृत लीखतं ।

बीहा—

मछर अगस अपार गति कितहु पार न पाय ।
सो मोकु दीजे सकती जे जे जे जगराय ॥

छापाम—

वरनी उज्ज्वल वरन सरन जग असरन सरनी ।
कर करनी करन तरन सब तारन तरनी ॥
शिर पर धरनी छत्र भरन सुख संपत भरनी ।
भरनी अमृत भरन हरन दुख दारिद हरनी ॥
धरनी त्रिसुल छपर धरन भव भय हरनी ।
सकल भय जग बंध आदि वरनी जसु जे जग धरनी ॥ मात जे० ।

बीहा—

जे जग धरनी मात जे दीजे बुधि अपार ।
करी प्रणाम प्रसन्न कर राजनीति वीसतार ॥३॥

अन्तिम—

लोक सीरकार राजी ओर सब राजी रहै ।
चाकरी के कीये दिन लालच न चाइये ॥
किन हुं की भली बुरी कहिये न काहु भागै ।
सटका दे लछन कछु न आप साई है ॥
राय के उजीर नमु राख राख लेत रंग ।
येक टेक हुं की बात उमरनीवाहिये ॥
रीक सीक सिरकुं चढाय लीजे जसुराम ।
येक परापत कु येने गुन चाहिये ॥४॥

३४६५. राजनीति शास्त्र—देवीदास । पत्र सं० १७ । आ० ८३×६ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—राजनीति । २० काल × । ले० काल सं० १६७३ । पूर्ण । वे० सं० ३४३ । झ भण्डार ।

३४६६. लघुचाणिक्य राजनीति—चाणिक्य । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—राजनीति । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । ज भण्डार ।

३४६७. वृन्दसतसई—कवि वृन्द । पत्र सं० ४ । आ० १३३×६ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
सुभाषित । २० काल सं० १७६१ । ले० काल सं० १८३४ । पूर्ण । वे० सं० ७७६ । अ भण्डार ।

३४६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । वे० सं० ६८५ । छ भण्डार ।

३४६९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १८६७ । वे० सं० १६६ । छ भण्डार ।

३५००. बृहद् चाणिक्यनीतिशास्त्र भाषा—मिश्ररामराय । पत्र सं० ३८ । आ० ८३×६ इंच ।
भाषा—हिन्दी । विषय—नीतिशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५१ । च भण्डार ।

विशेष—माणिक्यचंद्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३५०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५५२ । च भण्डार ।

३५०२. षष्टिशतक टिप्पण—भक्तिलाल । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १५७२ । पूर्ण । वे० सं० ३५८ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इति षष्टिशतकं समाप्तं । श्री भक्तिसामोपाध्याय शिष्य पं० चारु चन्द्रोत्पलिवि ।

इसमें कुल १६१ गायार्थ हैं । अंत की गायार्थ में ग्रन्थकर्ता का नाम दिया है । १६०वीं गायार्थ की संस्कृत
टीका निम्न प्रकार है—

एवं मुगमा । श्री नेमिचन्द्र भांडारिक पूर्व गुरु विरहे धर्मस्य जातानामूत । श्री जिनवल्लभमूरि गुरानश्रुत्वा
तत्कृते पिंड विमुक्त्यादि परिचयेन धर्मतत्त्वज्ञो ततस्तेन सर्वधर्म मूल सम्यक्त्व शुद्धि दृढताहेतुभूता ॥ १६० ॥ संख्या गायार्थ
विरचयां चक्रे इति सम्बन्ध ।

व्याख्यान्वय पूर्वोऽवचूणि रेषालुभक्तिलाभकृता ।

सूचार्थ ज्ञान फला विज्ञेया षष्टि शतकस्य ॥१॥

प्रशस्ति— सं० १५७२ वर्षे श्री विक्रमनगरे श्री जय सागरोगाध्याय शिष्य श्री रत्नचन्द्रोपाध्याय शिष्य श्री भक्तिसामो
पाध्याय कृता स्वशिष्या वा, चारित्रसार पं० चारु चंद्रादिभिर्वाच्यमाना चिरं नंदताम् । श्री कल्याणं भवतु श्री श्रमण
संघस्य ।

३५०३. शुभसीख..... पत्र सं० २ । आ० ८३×४ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

३५०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १४६ । छ मण्डार ।

विशेष—१३६ सोखों का वर्णन है ।

३५०५. सज्जनचित्तवल्लभ—मल्लिषेण । पत्र सं० ३ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० सं० १०५७ । अ मण्डार ।

३५०६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० ७३१ । क मण्डार ।

३५०७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८५४ पोष बुद्धी ३ । वे० सं० ७२८ । क मण्डार ।

३५०८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २६३ । छ मण्डार ।

३५०९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १७४६ आसोज सुदी ६ । वे० सं० ३०४ । अ मण्डार ।

विशेष—भट्टारक जगत्कीर्ति के शिष्य दोदराज ने प्रतिलिपि की थी ।

३५१०. सज्जनचित्तवल्लभ—शुभचन्द्र । पत्र सं० ४ । आ० ११×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९६ । अ मण्डार ।

३५११. सज्जनचित्तवल्लभ । पत्र सं० ४ । आ० १०^३/_४×४^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७५६ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । ख मण्डार ।

३५१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १५३ । ज मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३५१३. सज्जनचित्तवल्लभ—हर्गूलाल । पत्र सं० ६६ । आ० १२^३/_४×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल सं० १६०६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२७ । क मण्डार ।

विशेष—हर्गूलाल खतौली के रहने वाले थे । इनके पिता का नाम प्रीतमदास था । बाद में सहारनपुर चले गये थे वहाँ मित्रों की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना की थी ।

इसी मण्डार में दो प्रतियाँ (वे० सं० ७२६, ७३०) और हैं ।

३५१४. सज्जनचित्तवल्लभ—मिहरचंद्र । पत्र सं० ३१ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल सं० १६२१ कार्तिक सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२६ । क मण्डार ।

३५१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ७२५ । क मण्डार ।

विशेष—हिन्दी पद्य में भी अनुवाद दिया है ।

३५१६. सद्भाषितावलि—सकलकीर्ति । पत्र सं० ३४ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५७ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में १ प्रति (वे० सं० १८६८) और है ।

३५१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८१० मंगसिर सुदी ७ । वे० सं० ४७२ । अ मण्डार ।

विशेष—घासीराम यति ने मन्दिर में यह ग्रन्थ चढ़ाया था ।

३५१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० १६४६ । ट मण्डार ।

३५१९. सद्भाषितावलीभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १३६ । आ० ११×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १६४६ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ७३२ । क मण्डार ।

विशेष—पृष्ठों पर पत्रों की सूची लिखी हुई है ।

३५२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० ७३३ । क मण्डार ।

३५२१. सद्भाषितावलीभाषा..... । पत्र सं० २५ । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी पत्र । विषय—सुभाषित । २० काल सं० १६११ सावन सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ५६ । अ मण्डार ।

३५२२. सन्देहसमुच्चय—धर्मकलशसूरि । पत्र सं० १८ । आ० १०×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७१ । छ मण्डार ।

३५२३. सभासार नाटक—रघुराम । पत्र सं० १५ से ४३ । आ० ५ $\frac{१}{४}$ ×८ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १८८१ । अपूर्ण । वे० सं० २०७ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में पंचमेश एवं तन्दीश्वरछोप पूजा है ।

३५२४. सभातरंग..... । पत्र सं० ३८ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १८७४ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १०० । छ मण्डार ।

विशेष—गोधों के नेमिनाथ चैत्यालय सांगानेर में हरिश्चन्द्रास के शिष्य कृष्णचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३५२५. सभाशृङ्गार..... । पत्र सं० ४६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १७३१ कार्तिक सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १८७७ ।

विशेष—प्रारम्भ—

सकलगण गजेन्द्र श्री श्री श्री साधु विजयगणेशस्यो नमः । अथा सभाशृङ्गार ग्रन्थ लिख्यते । श्री ऋषभ

देवाय नमः । श्री रस्तु ॥

नाभि नंदनु सकलमहीमंडनु पंचशत धनुष मानु तो..... तोरी सुवर्ण समानु हर मवल श्यामल कुंतलावली
विभूषित स्कंधु केवलज्ञान लक्ष्मी सनाथु भव्य लोकाह्विमुक्ति[क्ति]मार्गनी देखाउई । साथ संसार शंभूप (अंधूप)
प्राणिजग पञ्जा दई हथ । युगवा धर्म धर्म निवार ना समर्थ । जगवंत श्री आदिनाथ श्री संघतणी मनोरथ पुरी ॥१॥
वीतराम बांण मंथार समुत्तारिणी । महामोह विध्वंसनी । दिनकरानुकारिणी । क्रोधाग्नि दावानलीपद्माग्निनीमुक्तिमार्ग
प्रकाशिनी । सर्व जन निस्त सम्मोहकारिणी । आगमोदगारिणी वीतराम बांणी ॥२॥

विशेष अतीसय निधान सकलगुणप्रधान मोहांधकारविधेदन भानु त्रिभुवन सकलसंदेह छेदक । अखेय अभेद
प्राणिगण हृदय भेदक अनंतानंत विज्ञान इच्छिई अपनु' केवलज्ञान ॥३॥

अन्तिम पाठ—

अक्षस्त्री गुणा— १. कुलीना २. शीलवती ३. विवेकी ४. दानसीला ५. कीर्तवती ६. विज्ञानवती ७.
गुणग्राहणी ८. उपकारिणी ९. कृतज्ञा १०. धर्मवती ११. सोत्साहा १२. संभवमंत्रा १३. क्लेशसही १४. अनुप्तापीनी
१५. सुपात्र सखीर १६. जितेन्द्रिया १७. संभूषा १८. अल्पाहारा १९. अल्डोता २०. अल्पमिद्रा २१. मितभाषिणी
२२. चितज्ञा २३. जीतरोधा २४. अलोभा २५. दितप्रवती २६. सरूपा २७. सीभाग्यवती २८. सूचिवेषा २९.
श्रुवाश्रूपा ३०. प्रसन्नमुखी ३१. सुप्रमाणशरीर ३२. सुलपणवती ३३. स्नेहवती । इतियोद्गुणा ।

इति सभाशृङ्गार संपूर्ण ॥

ग्रन्थाग्रन्थ संख्या १००० संवत् १७३१ वर्षमास कार्तिक सुदी १४ वार सोमवारे लिखत रूपविजयेन ॥

स्त्री पुरुषों के विभिन्न लक्षण, कलाओं के लक्षण एवं सुभाषित के रूप में विविध बातें दी हुई हैं ।

३४२६ सभाशृङ्गार..... पत्र सं० २८ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।

१० काल × । ने० काल सं० १७३२ । पूर्ण । वै० सं० ७६४ । छ भण्डार ।

३४२७. संबोधसत्ताणु—वीरचंद । पत्र सं० ११ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
सुभाषित । १० काल × । ने० काल × । पूर्ण । वै० सं० १७५६ । अ भण्डार ।

प्रारम्भ—

परम पुरुष पद मन धरी, समरी सार मोकार ।

परमारथ पणि पवरणधु, संबोधसत्ताणु बीसार ॥१॥

आदि अनादि ते आत्मा, अडवळु ऐहभनिवार ।

धर्म विहुरा जीवरा, वापडु पंढरी ये संसार ॥२॥

अन्तिम—

सूरी श्री विद्यानंदी जयो श्रीमल्लिभूषण मुनिचंद ।

तसपरि माहि मांनिलो, गुरु श्री लक्ष्मीचंद ॥ ६६ ॥

तेह कुले कमल दीवसपती जयन्ती जनी वीरचंद ।

सुगता भगता ए भावना पीमीये परमानन्द ॥६७॥

इति श्री वीरचंद विरचिते संवोधसत्तासुदुभा संपूर्ण ।

३५२८. सिन्दूरप्रकरण—सोमप्रभाचार्य । पत्र सं० ६ । आ० ६०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २१७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । श्रेमसागर के शिष्य कीर्तिसागर ने खसा में प्रतिलिपि की थी ।

३५२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से २७ । ले० काल सं० १६०३ । अपूर्ण । वे० सं० २००६ । ट भण्डार ।

विशेष—हर्षकीर्ति सूरि कृत संस्कृत व्याख्या सहित है ।

अन्तिम— इति सिन्दूर प्रकरणस्य व्याख्यायां हर्षकीर्तिभिः सूरिभिर्विहितत्वात् ।

३५३०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ से ३४ । ले० काल सं० १८७० श्रावण सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० २०१६ । ट भण्डार ।

विशेष—हर्षकीर्ति सूरि कृत संस्कृत व्याख्या सहित है ।

३५३१. सिन्दूरप्रकरणभाषा—बनारसीदास । पत्र सं० २६ । आ० १०½×४½ । भाषा हिन्दी ।

विषय—सुभाषित । २० काल सं० १६६१ । ले० काल सं० १८५२ । पूर्ण । वे० सं० ८५६ ।

विशेष—सदासुख भावसा ने प्रतिलिपि की थी ।

३५३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० ७१८ । च भण्डार ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७१७) और है ।

३५३३. सिन्दूरप्रकरणभाषा—सुन्दरदास । पत्र सं० २०७ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—सुभाषित । २० काल सं० १६२६ । ले० काल सं० १६३६ । पूर्ण । वे० सं० ७६७ । क भण्डार ।

३५३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ३० । ले० काल सं० १६३७ सावन सुदी ६ । वे० सं० ८२३ ।

क भण्डार ।

विशेष—भाषाकार बधावर के रहने वाले थे । बाद में ये मालवदेश के इन्दावतिपुर में रहने लगे थे ।

इसी भण्डार में ३ प्रतियाँ (वे० सं० ७६८, ८२४, ८५७) और हैं ।

३५३५. सुगुरुशतक—जिनदास गोधा । पत्र सं० ४ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—सुभाषित । २० काल सं० १८५२ चैत्र सुदी ८ । ले० काल सं० १६३७ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८१० । क भण्डार ।

२

३५३६. सुभाषितमुक्तावली..... पत्र सं० २६। आ० ६×४^१/_२ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२६७। अ भण्डार।

३५३७ सुभाषितरत्नमन्दोह—आ० अमितिगति। पत्र सं० ५४। आ० १०×३^३/_४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित। २० काल सं० १०५०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८६६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६) और है।

३५३८. प्रति सं० २। पत्र सं० ५४। ले० काल सं० १८२६ भाद्रवा सुदी १। वे० सं० ८२१। क भण्डार।

विशेष—संग्रामपुर में महाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

३५३९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८ से ४६। ले० काल सं० १८६२ आसोज बुदी १४। अपूर्ण। वे० सं० ८७६। क भण्डार।

३५४०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७८। ले० काल सं० १९१० कार्तिक बुदी १३। वे० सं० ४२०। च भण्डार।

विशेष—हाथीराम खिन्दूका के पुत्र मोतीलाल ने स्वपठनार्थ पांड्या नाथूलाल से पार्वनाथ मंदिर में प्रतिलिपि करवाई थी।

३५४१. सुभाषितरत्नसन्दोहभाषा—पद्मालाल चौधरी। पत्र सं० १८८। आ० १२^३/_४×७ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—सुभाषित। २० काल सं० १९३३। ले० काल ×। वे० सं० ८१८। क भण्डार।

विशेष—पहले भीलीलाल ने १८ अधिकार की रचना की फिर पद्मालाल ने भाषा की।

इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ८१९, ८२०, ८१६, ८१६) और हैं।

३५४२. सुभाषितार्णव—शुभचन्द्र। पत्र सं० ३८। आ० १२×५^३/_४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित। २० काल ×। ले० काल सं० १७८७ माह सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० २१। अ भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र फटा हुआ है। श्रेयकीर्ति के शिष्य मोहन ने प्रतिलिपि की थी।

अ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १९७६) और है।

३५४३. प्रति सं० २। पत्र सं० १४। ले० काल ×। वे० सं० २३१। अ भण्डार।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २३०, २६८) और हैं।

३५४४. सुभाषितसंग्रह..... पत्र सं० ३१। आ० ८×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित। २० काल ×। ले० काल सं० १८४३ वैशाख बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० २१०२। अ भण्डार।

विशेष—नैसुवा नगर में भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य विद्वान रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में १ प्रति पूर्ण (वे० सं० २२५६) तथा २ प्रतियां अपूर्ण (वे० सं० १६६६, १६८०) धोर हैं ।

३५४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल X । वे० सं० ८८२ । छ भण्डार ।

३५४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल X । वे० सं० १४४ । छ भण्डार ।

३५४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १६३ । छ भण्डार ।

३५४८. सुभाषितसंग्रह पत्र सं० ४ । आ० १०X४ इंच । भाषा—संस्कृत प्राकृत । विषय—सुभाषित । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ८६२ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में टण्वा टोंका दी हुई है । यातं कर्नेचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३५४९. सुभाषितसंग्रह पत्र सं० ११ । आ० ७X५ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २११४ । छ भण्डार ।

३५५०. सुभाषितावली—सफलकीर्ति । पत्र सं० ५२ । आ० १२X५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल X । ले० काल सं० १७४८ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १८५ । छ भण्डार ।

विशेष—लिखितमिदं श्रीरूपमी खीवली आत्मज जाति सनातन वराहटा मध्ये । लिखितं पद्माब्ध मयाचंद । सं० १७४८ वर्षे मार्गशीर्ष शुक्ला ६ रविवारे ।

३५५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८०२ पौष सुदी १ । वे० सं० २२४ । छ भण्डार ।

विशेष—मालपुरा ग्राम में पं० नोनिध ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३५५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १६०२ पौष सुदी १ । वे० सं० २२७ । छ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६०२ समये पौष बुदा २ शुक्लवासरे श्रीमूलसंवे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंददेवाः तत्पुत्रे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवाः तत्पुत्रे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः तदाम्नाये मंडलाचार्य श्री सिंहनंददेवाः तत्पुत्रे मंडलाचार्य श्रीधर्मकीर्तिदेवाः तत्शिष्यणी पंचारण्यतुधारिणी वीर्ययोगिसिरि तत्शिष्यनि वीर उदहंसिरि पठनार्थ अग्रोत्तकान्वये मित्तलगोत्रे साधु श्रीधाने भार्या रयवा तयो पुत्राः त्रयाः प्रथमपुत्र साधु श्री रहमल भार्या पदारथ । द्वितीय पुत्र चाहमल भार्या मजैसिरि तयोः पुत्र परात । तृतीयपुत्र [तपवपु क्रियाप्रतिपालकात् ऐकादश प्रतिमा भारकान जिनशासन समुद्धरणधीरान् साधु श्री कोटना भार्या साध्वी परिमल तयो हवं ग्रन्थं लिखापितं कर्मक्षय निमित्तं । लिखितंकायस्थगोदान्वयश्रीकेशव तत्पुत्र गनेस ॥

३५५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६४७ माघ सुदी । वे० सं० २३५ । अ
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

भट्टारक श्रीसकलकीर्तिविरचिते सुभाषितरत्नावलीग्रन्थसमाप्तः । श्रीमन्मूर्धन्यमागरसूरिविजयराम्ये संवत्
१६४७ वर्ष माघमासे शुक्लपक्षे गुरुवासरे लीपीकृतं श्रीमुनि शुभमस्तु । लेखक पाठक्यो ।

संवत्सरे पृथ्वीमुनीयतीन्द्रमिते (१७७७) माघशितदशम्यां मालपुरेमध्ये श्रीभादिनाथचैत्यालये शुद्धी-
कृतोऽयं सुभाषितरत्नावलीग्रन्थ पांडे श्रीतुलसीदासस्य शिष्येण त्रिलोकचंद्रेण ।

अ भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० २८१, ७८७, ७८८, १८६४) और है ।

३५५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ८१३ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ८१४) और है ।

३५५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १८४६ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० २३३ । ख भण्डार

विशेष—पं० भाणकचन्द्र की प्रेरणा से पं० स्वरूपचन्द्र ने पं० कपूरचन्द्र से जवनपुर (जोबनेर) में
प्रतिलिपि कराई ।

३५५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १६०१ चैत्र सुदी १३ । वे० सं० ८७४ । क
भण्डार ।

विशेष—श्री पाल्हा बाकलीवाल ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ८७३, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८) और हैं ।

३५५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १७६५ आसोज सुदी ८ । वे० सं० २६५ । ख
भण्डार ।

३५५८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १६०४ माघ सुदी ४ । वे० सं० ११४ । ज
भण्डार ।

३५५९. प्रति सं० १० । पत्र सं० ३ से ३० । ले० काल सं० १६३५ वैशाख सुदी १५ । अपूर्ण । वे०
सं० २१३४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम २ पत्र नहीं हैं । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

३५६०. सुभाषितरत्नावली..... । पत्र सं० २१ । भा० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १८१८ । पूर्ण । वे० सं० ४१७ । च भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ दीवान संगही ज्ञानचन्दजी का है ।

च भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ४१८, ४१९) अ भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियाँ (वे० सं० १२५, १२०१) तथा ट भण्डार १ (वे० सं० १०८१) अपूर्ण प्रति भी है ।

३५६१. सुभाषितावलीभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १०६ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१२ । क भण्डार ।

३५६२. सुभाषितावलीभाषा—दूलीचन्द । पत्र सं० १३१ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल सं० १६३१ ज्येष्ठ सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८८० । क भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८८१) भी है ।

३५६३. सुभाषितावलीभाषा—..... । पत्र सं० ४५ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—हिन्दी पत्र । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १८६३ प्र० आषाढ सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ११ । क भण्डार । विशेष—५०५ दोहे हैं ।

३५६४. सूक्तिमुक्तावली—सोमप्रभाचार्य । पत्र सं० १७ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम सुभाषितावली भी है ।

३५६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १६८४ । वे० सं० ११७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६८४ वर्षे श्रीकाष्ठासंवे नवीतदगच्छे विद्यागणे भ० श्रीरामसेनान्वये तत्पट्टे भ० श्री विश्वभूषणे तत्पट्टे भ० श्री यशःकीर्ति ब्रह्म श्रीमेघराज तत्शिष्यब्रह्म श्री करमसी स्वयमेव हस्तेन लिखितं पठनार्थं ।

अ भण्डार में ११ प्रतियाँ (वे० सं० १६५, ३३४, ३४८, ६३०, ७६१, ३७६, २०१०, २०४७, १३४८, २०३३, ११६३) और हैं ।

३५६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६३४ सावन सुदी ८ । वे० सं० ८२२ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८२४) भी है ।

३५६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७७१ आसोज सुदी २ । वे० सं० २३४ । ख भण्डार । विशेष—ब्रह्मचारी खेतसी पठनार्थ आलपुरा में प्रतिलिपि हुई थी ।

३५६८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । वे० सं० २२६ । ख भण्डार ।

विशेष—दीवान आदतराम खिलका के पुत्र कुंवर बलतराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । प्रवर मोटे एवं सुन्दर हैं ।

इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियाँ (वे० सं० २३२, २६८) भी हैं ।

३५६६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २ मे २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । घ भण्डार ।
विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।
इस भण्डार में ३ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ८८३, ८८४, ८८५) भी हैं ।
३५७०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १६०१ प्र० श्रावण बुदी ५५ । वे० सं० ४२१ ।
च भण्डार ।
इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४२२, ४२३) भी हैं ।
३५७१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १७४६ भाद्रपद बुदी ६ । वे० सं० १०३ । छ
भण्डार ।
विशेष—रैतवाल में ऋषभनाथ चैत्यालय में आचार्य ज्ञानकीर्ति के शिष्य सेवल ने प्रतिलिपि की थी ।
इसी भण्डार में (वे० सं० १०३) में ही ४ प्रतियां भी हैं ।
३५७२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८६२ पौष सुदी २ । वे० सं० १८३ । ज
भण्डार ।
विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है ।
इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३६) भी है ।
३५७३. प्रति सं० १० । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७६७ आश्विन सुदी ८ । वे० सं० ८० । ब
भण्डार ।
विशेष—आचार्य क्षेमकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।
इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १६५, २८६, ३७७) तथा ट भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० १६६४, १६३१) भी हैं ।
३५७४. सूक्तावली..... । पत्र सं० ९ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।
१० काल × । ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । वे० सं० ३४७ । अ भण्डार ।
३५७५. स्फुटश्लोकसंग्रह । पत्र सं० १० मे २० । आ० ९×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
सुभाषित । १० काल × । ले० काल सं० १८८३ । अपूर्ण । वे० सं० २५७ । ख भण्डार ।
३५७६. स्वरोदय—रनजीतदास (चरनदास) । पत्र सं० २ । आ० १३३×६ इंच । भाषा—हिन्दी ।
सुभाषित । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१५ । अ भण्डार ।
३५७७. हितोपदेश—विष्णुशर्मा । पत्र सं० ३६ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
नीति । १० काल × । ले० काल सं० १८७३ सावन सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ८५४ । क भण्डार ।
विशेष—माणिक्यचन्द ने कुमार ज्ञानचंद्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३५५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल X । वे० सं० २४९ । अ मण्डार ।

३५७६. द्वितीयदेशभाषा ... । पत्र सं० २६ । आ० ८X५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित ।

२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २१११ । अ मण्डार ।

३५८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल X । वे० सं० १८१२ । ट मण्डार ।



विषय-मन्त्र-शास्त्र



३५८१. इन्द्रजाल.....। पत्र सं० २ से ४२। आ० ८३/४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-तन्त्र। २० काल X। ले० काल सं० १७७८ बैशाख सुदी ६। अपूर्ण। वे० सं० २०१०। ट भण्डार।

विशेष—पत्र १६ पर पुष्पिका—

इति श्री राजाधिराज गोख माधवंश केसरीसिंह समाहितेन मनि मंडन मिश्र विरचिते पुरंदरमाया नाम ग्रन्थ वह्नित स्वामिका का माया।

पत्र ४२ पर—इति इन्द्रजाल समाप्तं।

कई मुसलें तथा वशीकरण आदि भी हैं। कई कौतूहल की सी बातें हैं। मंत्र संस्कृत में है मजमेर में प्रतिलिपि हुई थी।

३५८२. कर्मदहनत्रयमन्त्र.....। पत्र सं० १०। आ० १० ३/४ X ५ ३/४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मंत्र शास्त्र। २० काल X। ले० काल सं० १६३४ भाद्रपद सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १०४। ड भण्डार।

३५८३. क्षेत्रपालस्तोत्र.....। पत्र सं० ४। आ० ८ ३/४ X ६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। २० काल X। ले० काल सं० १६०६ मंगसिर सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ११३७। ख भण्डार।

विशेष—सरस्वती तथा चौसठ योगिनीस्तोत्र भी दिया हुआ है।

३५८४. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल X। वे० सं० ३८। ख भण्डार।

३५८५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६६६। वे० सं० २८२। झ भण्डार।

विशेष—चक्रेश्वरी स्तोत्र भी है।

३५८६. घंटाकर्णकल्प.....। पत्र सं० ५। आ० १२ ३/४ X ६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। २० काल X। ले० काल सं० १६२२। अपूर्ण। वे० सं० ४५। ख भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र पर पुरुषाकार खड्गासन चित्र है। ५ पंथ तथा एक घंटा चित्र भी है। जिसमें तीन घण्टे दिये हुये हैं।

३५८७. घंटाकर्णमन्त्र.....। पत्र सं० ५। आ० १२ ३/४ X ६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्र। २० काल X। ले० काल सं० १६२५। पूर्ण। वे० सं० ३०३। ख भण्डार।

३५८८. घंटाकर्णवृद्धिकल्प.....। पत्र सं० ६। आ० १०३×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-मन्त्रशास्त्र। २० काल ×। ले० काल सं० १६१३ बैशाख सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १५। घ भण्डार।

३५८९. चतुर्विंशतियज्ञविधान.....। पत्र सं० ३। आ० ११३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०६६। अ भण्डार।

३५९०. चिन्तामणिस्तोत्र.....। पत्र सं० २। आ० ८३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८७। म भण्डार।

विशेष—चक्रेश्वरी स्तोत्र भी दिया हुआ है।

३५९१. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। वे० सं० २४५। अ भण्डार।

३५९२. चिन्तामणियन्त्र.....। पत्र सं० ३। आ० १०×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-यन्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६७। ख भण्डार।

३५९३. चौसठयोगिनीस्तोत्र.....। पत्र सं० १। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६२२। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतिमां (वे० सं० ११८७, ११८६, २०६४) और हैं।

३५९४. प्रति सं० २। पत्र सं० १। ले० काल सं० १८८३। वे० सं० ३६७। अ भण्डार।

३५९५. जैनगायत्रीमन्त्रविधान.....। पत्र सं० २। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६०। ख भण्डार।

३५९६. एमोकारकल्प.....। पत्र सं० ४। आ० ८३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। २० काल ×। ले० काल सं० १६४६। पूर्ण। वे० सं० २८८। म भण्डार।

३५९७. एमोकारकल्प.....। पत्र सं० ६। आ० ११३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। २० काल ×। ले० काल सं० १६०८। पूर्ण। वे० सं० ३५५। अ भण्डार।

३५९८. प्रति सं० २। पत्र सं० २०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २७४। ख भण्डार।

३५९९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६६५। वे० सं० २३२। छ भण्डार।

विशेष—हिन्दी में मन्त्रसाधन की विधि एवं फल दिया हुआ है।

३६००. एमोकारपैतीसी.....। पत्र सं० ४। आ० १२×५ इंच। भाषा-प्राकृत व पुरानी हिन्दी। विषय-मन्त्रशास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३५। छ भण्डार।

३६०१. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० १२५। च भण्डार।

३६०२. लमरकारमन्त्र कल्पविधिसहित—सिंहनन्दि । पत्र सं० ४५ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १२२१ । पूर्ण । वे० सं० १६० । अ भण्डार ।

३६०३. सबकारकल्प । पत्र सं० ६ । आ० ६×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—मक्षरों की स्याहो मिट जाने से पढ़ने में नहीं आता है ।

३६०४. पंचदश (१५) यन्त्र की विधि । पत्र सं० २ । आ० ११×५^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १२७६ कागुण सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० २४ । ज भण्डार ।

३६०५. पद्मावतीकल्प । पत्र सं० २ से १० । आ० ८×४^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६८२ । अपूर्ण । वे० सं० १३३६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति— संवत् १६८२ आसाढेर्गलपुरे श्री मूलसंघसूरि देवेन्द्रकीर्तिस्तंदेवातिभिराचार्य श्री हर्षकीर्तिभिरिदमलेखि । चिरं नंदतु पुस्तकम् ।

३६०६. वाजकोश । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३५ । अ भण्डार ।

विशेष—संग्रह ग्रन्थ है । दूसरा नाम मन्त्रिका निर्घट भी है ।

३६०७. भुवनेश्वरीस्तोत्र (सिद्ध महामन्त्र)—पृथ्वीधराचार्य । पत्र सं० ६ । आ० ६^३/_४×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । च भण्डार ।

३६०८. भूवल । पत्र सं० ८ । आ० ११^३/_४×५^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६८ । च भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्रथम पत्र में 'अथातः संग्रहस्यामि भूवलानि समासतः' आये हुये भूवल के आधार पर ही लिखा गया है ।

३६०९. भैरवपद्मावतीकल्प—मल्लिषेण सूरि । पत्र सं० २४ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५० । अ भण्डार ।

विशेष—३७ यंत्र एवं विधि सहित हैं ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३२२, १२७६) श्रीर है ।

३६१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४६ । ले० काल सं० १७६३ वैशाख सुदी १३ । वे० सं० ५६५ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है ।

इसी भण्डार में १ अपूर्ण सचित्र प्रति (वे० सं० ५६३) और है ।

३६११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल X । वे० सं० ५७५ । छ भण्डार ।

३६१२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १८६८ चैत बुदी । वे० सं० २६६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति संस्कृत टीका सहित (वे० सं० २७०) और है ।

३६१३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १३ । ले० काल X । वे० सं० १६३६ । ट भण्डार ।

विशेष—बीजाक्षरों में ३६ यंत्रों के चित्र हैं । यन्त्रविधि तथा मंत्रों सहित है । संस्कृत टीका भी है ।

पत्र ७ पर बीजाक्षरों में दोनों ओर दो त्रिकोण यन्त्र तथा विधि दी हुई है । एक त्रिकोण में आभूषण पहिने खड़े हुये नग्न स्त्री का चित्र है जिसमें जगह २ अक्षर लिखे हैं । दूसरी ओर भी ऐसा ही नग्न चित्र है । यन्त्रविधि है । ३ से ६ व ८ से ४६ तक पत्र नहीं हैं । १-२ पत्र पर यंत्र मंत्र सूची दी है ।

३६१४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४७ से ५७ । ले० काल सं० १८१७ ज्येष्ठ शुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० १६३७ । ट भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में पं० चोखन्द के शिष्य सुखराम ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति अपूर्ण (वे० सं० १६३६) और है ।

३६१५. भैरवपद्मावतीकल्प । पत्र सं० ४० । आ० ६X४ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—मन्त्र शास्त्र । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५७४ । छ भण्डार ।

३६१६. मन्त्रशास्त्र । पत्र सं० ८ । आ० ८X५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—मन्त्रशास्त्र । १० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५३१ । व्य भण्डार ।

विशेष—निम्न मंत्रों का संग्रह है ।

१. लौकी नाहरसिंह की २. कामरा विधि ३. यंत्र ४. हनुमान मंत्र ५. टिड्डी का मन्त्र ६. पत्नीता भूत व चुबेल का ७. यंत्र देवदत्त का ८. हनुमान का यन्त्र ९. सर्पाकार यन्त्र तथा मन्त्र १०. सर्वकाम सिद्धि यन्त्र (चारों कोनों पर औरङ्गजेब का नाम दिया हुआ है) ११. भूत डाकिनी का यन्त्र ।

३६१७. मन्त्रशास्त्र । पत्र सं० १७ से २७ । आ० ६३X५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्र शास्त्र । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ५८४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ५८५, ५८६) और हैं ।

३६१८. मन्त्रमहोद्धि—पं० सहीधर । पत्र सं० १२० । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८३८ माघ सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ६१६ । अ भण्डार ।

३६१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ५८३ । छ भण्डार ।

विशेष—अत्रपूर्णा नाम का मन्त्र है ।

३६२० मन्त्रसंग्रह पत्र सं० फुटकर । आ० । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्र । २० काल
× । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६८ । क भण्डार ।

विशेष—करीब ११५ यन्त्रों के चित्र हैं । प्रतिष्ठा आदि विधानों में काम आने वाले चित्र हैं ।

३६२१. महाविद्या (मन्त्रों का संग्रह) पत्र सं० २० । आ० ११३×५ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७९ । घ भण्डार ।

विशेष—रचना जैन कवि कृत है ।

३६२२. यज्ञिकोक्त्य पत्र सं० १ । आ० १२×२ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—मन्त्र
शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०५ । छ भण्डार ।

३६२३ यंत्र मंत्रविधिफल पत्र सं० १५ । आ० ६३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—मन्त्र
शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६६ । ट भण्डार ।

विशेष—६२ यंत्र मन्त्र सहित दिये हुये हैं । कुछ यन्त्रों के खाली चित्र दिये हुये हैं । मन्त्र बीजाक्षरों
में हैं ।

३६२४. वर्द्धमानविद्याकल्प—सिंहतिलक । पत्र सं० ६ से २६ । आ० १०३×४ इंच । भाषा—संस्कृत
हिन्दी । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १४९५ । अपूर्ण । वे० सं० १९९७ । ट भण्डार ।

विशेष—१ से ५, ७, १०, १५, १६, १९ से २१ पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन एवं जोर्ण है ।

द्वे पृष्ठ पर— श्री विबुधचन्द्रगणभृच्छिष्यः श्रीसिंहतिलकसूरि रिभासाह्लाददेवतोऽवलविशदमनालिखत
वान्कल्पं ॥६६॥ इति श्रीसिंहतिलक सूरिकृते वर्द्धमानविद्याकल्पः ॥

हिन्दी गद्य उदाहरण— पत्र ८ पंक्ति ५—

जाइ पुष्प सहस्र १२ जायः । गुगल गड बीस सहस्र ॥१२॥ होम कीजइ विद्यालाभ हुई ।

पत्र ८ पंक्ति ९— ओं कुरु कुरु कामाख्यादेवी कामद आवीज २ । जग मन मोहनी सूती बइठी उठी
जसमण हाथ जोडिकरि साम्ही आबइ । माहरी भक्ति गुरु की शक्ति बाधदेवी कामाख्या माहरी शक्ति आकषि ।

पृष्ठ २४— अन्तिम पुढीका— इति वर्द्धमानविद्याकल्पस्तृतीयाधिकारः ॥ ग्रन्थाग्रन्थ १७५ अक्षर १६
सं० १४९५ वर्षे सगररूपशालायां अणिहत्तपाटकरपर्याये श्रीभक्तमहानगरेऽलेखि ।

पत्र २५— गुटिकाओं के समस्कार हैं । दो स्तोत्र हैं । पत्र २६ पर नालिकेर कल्प दिया है ।

३६२५. विजययन्त्रविधान.....। पत्र सं० ७ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्र शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ५६८, ५६९) तथा च भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३३१) और है ।

३६२६. विद्यानुशासन.....। पत्र सं० ३७० । आ० ११×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । २० काल × । वे० काल सं० १६०६ प्र० भादवा बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ६५६ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ सम्बन्धित यन्त्र भी है । यह ग्रन्थ छोटोटीलालजी ठोलिया के पठनार्थ पं० मांतीवालजी के द्वारा हीरालाल कासलीवाल से प्रतिलिपि कराई । पारिश्रमिक २४।-) लगा ।

३६२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८५ । ले० काल सं० १६३३ मंगसिर बुदी ५ । वे० सं० ६५ । घ भण्डार ।

विशेष—गङ्गाबक्स ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी ।

३६२८. यन्त्रसंग्रह.....। पत्र सं० ७ । आ० १३½×६½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४५ । अ भण्डार ।

विशेष—लगभग ३५ यन्त्रों का संग्रह है ।

३६२९. षट्कर्मकथन.....। पत्र सं० ३ । आ० १०½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१०३ । ट भण्डार ।

विशेष—मन्त्रशास्त्र का ग्रन्थ है ।

३६३०. सरस्वतीकल्प.....। पत्र सं० २ । आ० ११½×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७० । क भण्डार ।



विषय-कामशास्त्र

३६३१. कोकशास्त्र पत्र सं० ६ । आ० १०३×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कोक । २० काल × । ले० काल सं० १८०३ । पूर्ण । वे० सं० १९५६ । ट मण्डार ।

विशेष—निम्न विषयों का वर्णन है ।

द्रावणविधि, स्तम्भनविधि, बाजीकरण, स्थूलीकरण, गर्भाधान, गर्भस्तम्भन, सुखप्रसव, पुष्पाधिनिवारण, योनिमंस्कारविधि आदि ।

३६३२. कोकसार पत्र सं० ७ । आ० ६×६३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । क मण्डार ।

३६३३. कोकसार—आनन्द । पत्र सं० ५ । आ० १३३×६३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८१६ । अ मण्डार ।

३६३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६ । ख मण्डार ।

३६३५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० २६४ । झ मण्डार ।

३६३६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १७३६ प्र० चैत्र सुदी ५ । वे० सं० १५५२ । ट मण्डार ।

विशेष—प्रति जोड़ी है । जट्ट व्यास ने नरामण में प्रतिलिपि की थी ।

३६३७. कामसूत्र—कविदाल । पत्र सं० ३२ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-कामशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५ । ख मण्डार ।

विशेष—इसमें कामसूत्र की गाथाएँ दी हुई हैं । इसका दूसरा नाम सत्तसप्तसप्त भी है ।



विषय— शिल्पशास्त्र



३६३८. बिम्बनिर्माणविधि.....। पत्र सं० ६। आ० ११३×७३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—शिल्पशास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३३। क भण्डार।

३६३९. बिम्बनिर्माणविधि.....। पत्र सं० ६। आ० ११×७३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—शिल्पशास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३४। क भण्डार।

३६४०. बिम्बनिर्माणविधि.....। पत्र सं० ३६। आ० ८३×६३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—शिल्पकला [प्रतिष्ठा] २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४७। च भण्डार।

विशेष—कापी साइज है। पं० कस्तूरचन्द जी साहू द्वारा लिखित हिन्दी अर्थ सहित है। प्रारम्भ में ३ पत्रों की भूमिका है। पत्र १ से २५ तक प्रतिष्ठा पाठ के श्लोकों का हिन्दी अनुवाद किया गया है। श्लोक ६१ हैं। पत्र २६ से ३६ तक बिम्ब निर्माणविधि भाषा दी गई है। इसी के साथ ३ प्रतिमाओं के चित्र भी दिये गये हैं। (वे० सं० २४९) च भण्डार। कलशारोपण विधि भी है। (वे० सं० २४८) च भण्डार।

३६४१. वास्तुविन्यास.....। पत्र सं० ३। आ० ६३×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—शिल्पकला। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४५। छ भण्डार।



विषय- लक्षणा एवं समीक्षा

३६४२. आगमपरीक्षा.....। पत्र सं० ३। आ० ७×३३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-समीक्षा। २० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० १६४५। ट भण्डार।

३६४३. छंदशिरोमणि—शोभनाथ। पत्र सं० ३१। आ० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-लक्षण। २० काल सं० १८२५ ज्येष्ठ सुदी ****। ले० काल सं० १८२६ फागुण सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० १६३६। ट भण्डार।

३६४४. छंदकीय कवित्त—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति। पत्र सं० ६। आ० १२×९३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-लक्षण ग्रन्थ। २० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० १८१४। ट भण्डार।

अन्तिम पृष्ठीका— इति श्री छंदकीयकवित्ते कामधेन्वाख्ये भट्टारकश्रीसुरेन्द्रकीर्तिविरचिते समस्तप्रकरणे समाप्त। प्रारम्भ में कमलदंश कवित्त में चित्र दिये हैं।

३६४५. धर्मपरीक्षाभाषा—दशरथ निगोत्तया। पत्र सं० १६१। आ० १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी गद्य। विषय-समीक्षा। २० काल सं० १७१८। ले० काल सं० १७५७। पूर्ण। वे० सं० ३६१। अ भण्डार।

विशेष—संस्कृत में मूल के साथ हिन्दी गद्य टीका है। टीकाकार का परिचय—

साहु श्री हेमराज मुत मात हमीरदे जाणि।

कुल निगोत श्रावक धर्म दशरथ सज बखारि ॥

संवत् सतरासै सही प्रष्टादश अधिकाय।

फागुण तम एकादशी पूरण भई सुभाय ॥

धर्म परीक्षा वचनिका सुंदरदास सहाय।

साधर्मि जन समझि नै दशरथ कृति चितलाय ॥

टीका— विषया के बसि पढ़्या किरण जीव पाप।

करे छे सह्यो न जाई ली थे दुखी होइ मरे ॥

लेखक प्रशस्ति— संवत् १७५७ वर्षे पौष शुक्ला १२ भृगुवारि दिवसा नगर्गा (दीसा) जिन चेत्यालये लि० भट्टारक-श्रीनरेन्द्रकीर्ति तत्पुत्रिय पं० (गिरधर) कटा हुआ।

३६४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४०५ । ले० काल सं० १७१६ मंगसिर सुदी ६ । वे० सं० ३३० । छ

भण्डार ।

विशेष—इति श्री अमितिगतिरुक्ता धर्मपरीक्षा मूल तिहकी बालबोधनामटीका तज्ञ धर्मार्थी दशरथेन कृताः

समाप्ताः ।

३६४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३५ । ले० काल सं० १८६६ भाद्रवा सुदी ११ । वे० सं० ३३१ । छ

भण्डार ।

३६४८. धर्मपरीक्षा—अमितिगति । पत्र सं० ८५ । मा० १२×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—

समीक्षा । र० काल सं० १०७० । ले० काल सं० १८८४ । पूर्ण । वे० सं० २१२ । अ भण्डार ।

३६४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १८८६ चैत्र सुदी १५ । वे० सं० ३३२ । अ

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ७८४, ६४५) और हैं ।

३६५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १६३६ भाद्रवा सुदी ७ । वे० सं० ३३५ । क

भण्डार ।

३६५१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १७८७ माघ सुदी १० । वे० सं० ३२६ । छ

भण्डार ।

३६५२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० १७१ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३६५३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३३ । ले० काल सं० १६५३ वैशाख सुदी २ । वे० सं० ५६ । छ

भण्डार ।

विशेष—अलाउद्दीन के शासनकाल में लिखा गया है । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६०, ६१) और हैं ।

३६५४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० ११५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३४४, ४७४) और हैं ।

३६५५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १५६३ भाद्रवा सुदी १३ । वे० सं० २१५७ ।

ट भण्डार ।

विशेष—राभपुर में श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में जमू से लिखवाकर ब्र० श्री धर्मदास को दिया । अन्तिम

पत्र फटा हुआ है ।

३६५६. धर्मपरीक्षाभाषा—मनोहरदास सोनी । पत्र सं० १०२ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—समीक्षा । २० काल १७०० । ले० काल सं० १८०१ फागुण सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ७७३ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में १ प्रति अपूर्ण (वे० सं० ११६६) और है ।

३६५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १११ । ले० काल सं० १९५४ । वे० सं० ३३६ । क मण्डार ।

३६५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११४ । ले० काल सं० १८२९ आषाढ सुदी ६ । वे० सं० ५६५ । च मण्डार ।

विशेष—हंसराज ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । पत्र चिपके हुये हैं ।

इसी मण्डार में १ प्रति (वे० सं० ५६६) और है ।

३६५९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११३ । ले० काल सं० १८३० । वे० सं० ३४५ । झ मण्डार ।

विशेष—केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार में १ प्रति (वे० सं० १३६) और है ।

३६६०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०३ । ले० काल सं० १८२५ । वे० सं० ५२ । ब मण्डार ।

विशेष—वसंतराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३१४) और है ।

३६६१. धर्मपरीक्षाभाषा—पञ्चालाल चौधरी । पत्र सं० ३८६ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—समीक्षा । २० काल सं० १९३२ । ले० काल सं० १९४२ । पूर्ण । वे० सं० ३३८ । क मण्डार ।

३६६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२२ । ले० काल सं० १९३८ । वे० सं० ३३७ । क मण्डार ।

३६६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५० । ले० काल सं० १९३६ । वे० सं० ३३४ । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ३३३, ३३५) और हैं ।

३६६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६२ । ले० काल × । वे० सं० १७०७ । ट मण्डार ।

३६६५. धर्मपरीक्षाभाषा—ब० जिनदास । पत्र सं० १८ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—समीक्षा । २० काल × । ले० काल सं० १६०२ फागुण सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ६७३ । अ मण्डार ।

विशेष—१६ व १७वां पत्र नहीं है । अन्तिम १८वें पृष्ठ पर जीराबलि स्तोत्र है ।

आदिभाग—

धर्म जिहोसर २ नमूँ ते सार,
तीर्थकर जे पनरमु बांछित फल बहू दान दातार,
सारवा स्वामिणि बली तबुँ बुधिसार,

शुभ देउमाता श्रीगणेश स्वामी नमस्कृत्यो सकलकीर्ति भवतार,
मुनि भवनकीर्ति पाय प्रणमनि कहिसुं रासहुं सार ॥१॥

ब्रह्मा—

धरम परीक्षा कहं निरुमली भवीयण सुगु तहोसार ।

ब्रह्म जिणदास कहि निरमलु जिम जांगु विचार ॥२॥

कनक रतन माणिक आवि परीक्षा करी लोजिसार ।

तिन धरम परीकोइ सत्य धोजि नवसार ॥३॥

अन्तिम प्रशस्ति—

ब्रह्मा—

श्री सकलकीर्तिगुरुप्रणामीनि मुनिभवनकीर्तिभवतार ।

ब्रह्म जिणदास भणिरु अबु रासकीउ सविचार ॥६०॥

धरमपरीक्षारासनिरमलु धरमतगुं निधान ।

पढि गुरिजे जे सांभलि तेहनि उगजि मति ज्ञान ॥६१॥

इति धर्मपरीक्षा रास समाप्तः

संवत् १६०२ वर्षे फागुण सुदी ११ दिने सूरतस्थाने श्री शीतलनाथ चैद्यालगे आचार्य श्री विनयकीर्तिः
(हित मेघराजकेत लिखितं स्वयमिदं ।

३६६६. धर्मपरीक्षाभाषा.....। पत्र सं० ६ से ५० । आ० ११×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
समीक्षा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३२ । क भण्डार ।

३६६७. मूर्खके लक्षण.....। पत्र सं० २ । आ० ११×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७६ । क भण्डार ।

३६६८. रत्नपरीक्षा—रामकवि । पत्र सं० १७ । आ० ११×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लक्षण
ग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११८ । क भण्डार ।

विशेष—इन्द्रपुरी में प्रतिलिपि हुई थी ।

प्रारम्भ—

गुरु गणपति सरस्वति शमरि याते वध है बुद्धि ।

सरसबुद्धि खंदह रत्नो रतन परीक्षा सुधि ॥१॥

रतन वीपिका ग्रन्थ में रतन परिख्या जान ।

सगुरु देव परताप ते भाषा वरनो आनि ॥२॥

अन्तिम—

रत्न परीख्या रंगसु कीन्दी राम कविद ।

इन्द्रपुरी में आनि कै झिखी जु भामासांढ ॥६१॥

३६६६. रसमञ्जरीटीका—टीकाकार गोपालभट्ट । पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५३ । ट भण्डार ।

विशेष—१२ से आगे पत्र नहीं है ।

३६७०. रसमञ्जरी—भानुदत्तमिश्र । पत्र सं० १७ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल सं० १८२७ पौष सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ६४१ । अ भण्डार ।

३६७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १६६५ आसोज सुदी १३ । वे० सं० २३६ । ज भण्डार ।

३६७२. वक्ताश्रोतालक्षण..... । पत्र सं० ६ । आ० १२½×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४२ । क भण्डार ।

३६७३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ६४३ । क भण्डार ।

३६७४. वक्ताश्रोतालक्षण..... । पत्र सं० ४ । आ० १२×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४४ । क भण्डार ।

३६७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६४५ । क भण्डार ।

३६७६. शृङ्गारतिलक—रुद्रभट्ट । पत्र सं० २४ । आ० १२½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६३६ । अ भण्डार ।

३६७७. शृङ्गारतिलक—कालिदास । पत्र सं० २ । आ० १३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल सं० १८३७ । पूर्ण । वे० सं० ११४१ । अ भण्डार ।

इति श्री कालिदास कृतौ शृङ्गारतिलक संपूर्णम्

प्रशस्ति— संवत्सरे सप्तत्रिंशत्स्वेंदु मिते असाढसुदी १३ त्रयोदश्यां पंडितजी श्री हीरानन्दजी तस्त्रिंश पंडितजी श्री चोक्षचन्दजी तस्त्रिंश पंडित विनयवत्ताजिमदासेन लिपीकृतं । भूरामजी या आका ॥

३६७८. स्त्रीलक्षण..... । पत्र सं० ४ । आ० ११½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११८१ । अ भण्डार ।



विषय- फागु रासा एवं वैलि साहित्य

३६७६. अञ्जनारास—शांतिकुशल । पत्र सं० १२ से २७ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल सं० १६६७ माह सुदी २ । ले० काल सं० १६७६ । अपूर्ण । वे० सं० २ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

रास रच्यु सती अञ्जना मइ जूनी चउपई जोई रे ।
अधिकुं उछउं जे कह्य मुझ मिय्या दोऊ होई रे ॥
संबन् सोलइ सतइ सठि माहा सुदि नी बीज बखारु रे ।
सोवन गिरिरास मांभीउ जइ सोलइ पुरु जगु रे ॥
तप गछ नायक गुण निलउ विजय तेन सूरी सरगाजइ रे ।
आचारिण रतिना पछो गिल देव भूरी पग लजइ रे ॥
सात पचाइणि दापलु जस महिमा कीरति भरिउस ।
सात प्रेमलदे उरि धरया देव कइ पाठरो प्रवतरिउ रे ॥
विनयकुशल पंडित बह परगारी गुणवरिउ रे ।
चरण कमल सेवा लही शांतिकुशल इम रास करिउ रे ॥
अविचलकीरति अञ्जना जा रवि सस हीउइ आकाश रे ।
पदे गुरौइ जे सांभलइ रहि लखिमी तस घर पासइ रे ॥

३६८०. आदीश्वरफाग—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ४० । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

फागु (भगवान आदिनाथ का वर्णन है) । २० काल × । ले० काल सं० १५६२ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ७१ । छ भण्डार ।

विशेष—श्री मूलसंवे भट्टारिक श्री ज्ञानभूषण शुद्धिका बाई कल्याणमती कर्मक्षयार्थ लिखित ।

३६८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ से ५ । ले० काल × । वे० सं० ७२ । छ भण्डार ।

३६८२. कर्मप्रकृतिविधानरास—बनारसीदास । पत्र सं० १८ । आ० १५×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—रासा । २० काल सं० १७०० । ले० काल सं० १७८४ । पूर्ण । वे० सं० १६२७ । छ भण्डार ।

३६८३. चन्दनबालारास..... पत्र सं० २। आ० ६३×४३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—सती चन्दनबाला की कथा है। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१६५। अ भण्डार।

३६८४. चन्द्रलेहारास—मतिकुशल। पत्र सं० २६। आ० १०×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—रासा (चन्द्रलेखा की कथा है) २० काल सं० १७२८ आयोज बुदी १०। ले० काल सं० १८२६ आयोज बुदी। पूर्ण। वे० सं० २१७१। अ भण्डार।

विशेष—अकबराबाद में प्रतिलिपि की गयी थी। दशा जीर्ण शीर्ण तथा लिपि विकृत एवं मशुद्ध है। प्रारम्भिक २ पन्ना पत्र फटा हुआ होने के कारण नहीं लिखे गये हैं।

सामाइक सुधा करो, त्रिकरण सुख त्तिकाल ।
सशु मिश्र समतागणि, तिमनुटै जग जाल ॥३॥
मरुदेवि भरथादि मुनि, करी समाइक सार ।
केवल कमला तिरा वरी, पाम्यो भवनो पार ॥४॥
सामाइक मन सुख करी, पामी द्वांम पकत ।
तिथ ऊपरिन्दु सांभलो, चंद्रलेहा चरित ॥५॥
वचन कला तेह बनियै, सरसंध रसाल ।
तीरो जाणु सक्त पड़सौ, सोभलतां खुस्याल ॥६॥
संबत् सिद्धि कर मुनिससी जी वद भानू दसम विचार ।
श्री पभीपास मैं प्रेम सुं, एह रच्यौ अधिकार ॥१२॥
खरतर गणपति मुक्तकलंजी, श्री जिन सूरिद ।
बडवसी जिम साखा खमनीजी, जो धू रजनीस दिणंद ॥१३॥
सुगुरा श्री सुगुराकीरति गणोजी, वाचक पदवी धरंत ।
अंतयवासी खिर गयो जी, मतिवल्लभ महंत ॥१४॥
प्रथमत मुसी अति प्रेम स्युंजी, मतिकुशल कहै एम ।
सामाइक मन सुख करी जी, जीव बए भई लेहा जेम ॥१५॥
रसनवल्लभ गुरु सानिधम, ए कीयो प्रथम अम्थास ।
खसय चौबोस गाहा अछै जी, उगुसतीस ढाल उल्हास ॥१६॥
भरौ सुखी सुखी भावस्युं जी, गरुआतरा गुण जेह ।
मन सुध जिनधर्म तैं करें जी, श्री भुवन पति हूवै तेह ॥१७॥
सर्व गाथा ६२४ । इति चन्द्रलेहारास संपूर्ण ॥

अन्तिम—

३६८५. जलगालरास—ज्ञानभूषण । पत्र सं० २ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी गुजराती ।

विषय—रासा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७ । ट भण्डार ।

विशेष—जल स्नान की विधि का वर्णन रास के रूप में किया गया है ।

३६८६. धन्नाशालिभद्ररास—जिनराजसूरि । पत्र सं० २६ । आ० ७३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—रासा । २० काल सं० १६७२ आसोज सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४८ । अ भण्डार ।

विशेष—मुनि इन्द्रविजयगण ने गिरपुर नगर में प्रतिलिपि की थी ।

३६८७. धर्मरासा । पत्र सं० २ से २० । आ० ११×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६४८ । ट भण्डार ।

विशेष—पहिला, छठा तथा २० से आगे के पत्र नहीं हैं ।

३६८८. नवकाररास । पत्र सं० २ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सामोकार मन्त्र

महात्म्य वर्णन है । २० काल × । ले० काल सं० १८३१ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ११०२ । अ भण्डार ।

३६८९. नेमिनाथरास—विजयदेवसूरि । पत्र सं० ४ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

रासा (भगवान नेमिनाथ का वर्णन है) । २० काल × । ले० काल सं० १८२६ पौष सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १०२६ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में साहिबरास ने प्रतिलिपि की थी ।

३६९०. नेमिनाथरास—ऋषि रामचन्द्र । पत्र सं० ३ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—रासा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४० । अ भण्डार ।

विशेष—आदिभाग—

दूहा— अरिहंत सिध ने आपरीया उग्रनाथा अणवार ।

पांचेपद तेहुनमू, अठोत्तर सो बार ॥१॥

मोखगाभी दोनु हुवा, राजमती रह नेम ।

बिनेकतर लीया मणौ, साभल जे घर प्रेम ॥२॥

दाल जिणैसुर मुनिराया..... ।

सुखकारी सोरठ देसे राज कीसन रेस मन मोहीलाल ।

दीपसी नगरी दुवारकाए ॥१॥

समुद बिजे तिहांभूष सेवा देजी राणी करेक ।

महाराणी मानी जतीए ॥२॥

जागु जन(म)मीया अरिहन्त देव इह सोसट सारे ।

ज्यारी देव में बाल ब्रह्मचारी बाबा समोए ॥३॥

प्रतिम—

सिल ऊपर पंच दालियो दीठो दोय सुत्रा में निचोड़रे ।

तिरा अनुसार साफक है, रिधि रामचं.जी कीती जोख रे ॥१३॥

इति लिखतु श्री श्री उभाजारी तत् सौषगो छोटाजारी बेलीह सतु लीखतु पाली मदे । पाली में प्रतिलिपि हुई थी ।

३६६१. नेमीश्वरफाग—अष्टारायमल्ल । पत्र सं० ८ से ७० । आ० ६×४३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—फागु । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८३ । कृ भण्डार ।

३६६२. पंचेन्द्रियरास..... । पत्र सं० ३ । आ० ६×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—रासा (पाँचों इन्द्रियों के विषय का वर्णन है) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३५६ । अ भण्डार ।

३६६३. पत्यविधानरास—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ५ । आ० ८३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—रासा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४३ । कृ भण्डार ।

विशेष—पत्यविधानसूत का वर्णन है ।

३६६४. बंकचूलरास—जयकीर्ति । पत्र सं० ४ से १७ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—रासा (कथा) । २० काल सं० १६८५ । ले० काल सं० १६६३ फागुण बुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० २०६२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र नहीं हैं । ग्रन्थ प्रशस्ति—

कथा सुणी बंकचूलनी श्रेणिक धरी उत्तास ।

बीरनि वादी भावसुं पुहुत राजबह वास ॥१॥

संवत सोल पच्चासीई गूर्जर देस मभार ।

कल्याणपुरी सोभती इन्द्रपुरी अवतार ॥२॥

नरसिंघपुरा वाणिक वसि दया धर्म सुखकंद ।

बेत्यालि श्री वृषभवि भावि भवीयण बुंद ॥३॥

फागुसंघ विद्याभरणे श्री सोमकीर्ति मही सोम ।

विजयसेन विजयाकर यशकीर्ति यशस्तोम ॥४॥

उदयसेन महीमोदय त्रिभुवनकीर्ति विख्यात ।

रत्नभूषण गच्छपती हवा भुवनरमण जेहजात ॥५॥

तस पट्टि सूरिबरभलु जयकीर्ति जयकार ।
 जे भविष्य भवि सांभली ते पासी मवजार ॥६॥
 रूपकुमर रलीया मरु बंकलूल बीजु नाम ।
 तेह रास रच्यु रुवहु जयकीर्ति मुखवाम ॥७॥
 नीम भाव निर्मल हुई छुल्लचने निद्धार ।
 सांभलतां पंगद मलि ये भसि नरतिनार ॥८॥
 यादुसायर नन महीचंद सूर जिनभास ।
 जयकीर्ति कहिता रहु बंकलूलनु रास ॥९॥
 इति बंकलूलरास समाप्तः ।

संवत् १६६३ वर्षे फागुण बुधो १३ पिपलाइ ग्रामे लक्षतं भट्टारक श्री जयकीर्ति उपाध्याय श्री वीरचंद
 ब्रह्म श्री जसवंत चाइ कपूरा या बीच रास ब्रह्म श्री जसवंत लक्षतं ।

३६६५. भविष्यदत्तरास—ब्रह्मरायसह । पत्र सं० ३६ । आ० १२×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय—
 रासा-भविष्यदत्त की कथा है । २० काल सं० १६३३ कार्तिक सुदी १४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८६ । अ
 भण्डार ।

३६६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १७८४ । वे० सं० १६३० । ट भण्डार ।

विशेष—ग्रामेर में श्री मल्लिनाथ चैत्यालय में श्री भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य दयाराम सोनी ने प्रतिलिपि
 की थी ।

३६६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० १६६६ । छ भण्डार ।

विशेष—पं० छाजूराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त ख भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १३२) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १६१) तथा
 भू भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १३५) और है ।

३६६८. रुक्मिणीविवाहबेलि (कृष्णरुक्मिणीबेलि)—पृथ्वीराज राठौड़ । पत्र सं० ५१ से
 १२१ । आ० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-बेलि । २० काल सं० १६३८ । ले० काल सं० १७१६ चैत्र बुदी ५ ।
 अपूर्ण । वे० सं० १६४ । ख भण्डार ।

विशेष—देवगिरी में महात्मा जगन्नाथ ने प्रतिलिपि की थी । ६३० पद्य हैं । हिन्दी गद्य में टीका भी दी
 हुई है । ११२ पृष्ठ से आगे अन्य पाठ हैं ।

३६६६. शीकरासा—विजयदेव सूरि । पत्र सं० ४ से ७ । आ० १० १/२ × ४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—रामा । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ फागुण सुदी १३ । वे० सं० १६६६ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६३७ वर्षे फागुण सुदी १३ गुरुवार श्रीसरलरगन्धे आचार्य श्री राजरत्नमूरि शिष्य वं० नंदिरंग लिखित । उसवसेसंध कालेचा. गोत्रे सा हीरा पृथ्वी रत्न सु आभिका नाली पठनार्थ लिखित दाहमध्ये ।

अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

श्रीपूज्येणसचंद तंगेइ सुपंसीयः

सोस धरी निज निरमल भाइ ।

नयर आलउरहि जागवु;

तेमि नमउ मित बेकर जोडि ॥

बीनतो एह जि बीनवउ,

इक खिए अम्ह मम बीन विछोडि ।

सील संघातइ जी प्रीतबी;

उत्तराभ्ययन बाबीसमु जोड ॥

बली अने राय थकी अरथ आजा बिना जे कहसु होइ ।

विफल ही यो मुझ पातक सोइ, जिम जिन भाष्यउ ते सही ॥

दुरित नइ दुखल सहइ कूरि, बेगि मनोरथ माहुरा पूरि ।

आणमुमंयम माणियो, इम बीनवइ श्री विजयदेव सूरि ॥

॥ इति शील रासउ समाप्तः ॥

३७००. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ७ । ले० काल सं० १७०५ आसीन सुदी १४ । वे० सं० २०६१ ।

अ भण्डार ।

विशेष—आर्सेर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३७०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २५७ । अ भण्डार ।

३७०२. श्रीपालरास—जिनदर्यगणि । पत्र सं० १० । आ० १० × ४ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी । विशेष—

रासा (श्रीपाल रासा की कथा है) । २० काल सं० १७४२ चैत्र बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३० ।

अ भण्डार ।

विशेष—आदि एवं अन्त भाग निम्न प्रकार है—

श्रीजिनाय नमः ॥ बाल सिचनी ॥

चउबीसे प्रणमुं जिणाय, जास पसायइ नवनिधि पाय ।
सुयदेवा धरि रिदय मभारि, कहिस्तुं नवपवनउ अधिकार ॥
मंत्र जंत्र छह भवर अनेक, पिणि नवकार समउ नही एक ।
सिद्धचक्र नवपद सुपसायइ, सुख पाय्या श्रीपाल नरनायइ ॥
भाबिल तप नव पद संजोग, गलित सरीर थयो नीरोग ।
तास चरित्र कहुं हित आणी, सुगिज्यो नरनारी मुक्त वाणी ॥

अन्तिम—

श्रीपाल चरित्र निहालनइ, सिद्धचक्र नवपद धारि ।
भ्याईयइ तउ सुख पाईयइ, जगमा जस बिस्तार ॥८५॥
श्री गछखरतर पति प्रगट श्री जिनचन्द्र सरोस ।
गणि शांति हरष वाचक तणो, कहइ जिनहरष मुसीस ॥८६॥
नतै ब्यापीनै भये, यदि जीव लेखि जाणै ।
ए रास पाटण मां रच्यो, मुणता सदा कल्याण ॥८७॥
इति श्रीपाल रास संपूर्ण । पत्र सं० २८७ है ।

३७०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १७७२ भादवा सुदी १३ । वे० सं० ७२२ । क
भण्डार ।

३७०४. षट्श्लेषावेति—साह लोहट । पत्र सं० २२ । मा० ८३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
सिद्धांत । २० काल सं० १७३० भासोज सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८० । म. भण्डार ।

३७०५. सुकुमालस्वामीरास—ब्रह्म जिनदास । पत्र सं० ३४ । मा० १०३×४३ इंच । भाषा—
हिन्दी गुजराती । विषय—रास (सुकुमाल मुनि का वर्णन) । ले० काल सं० १६३५ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । अ
भण्डार ।

३७०६. सुदर्शनरास—ब्रह्म रायमल्ल । पत्र सं० १३ । मा० १२×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
रास (सेठ सुदर्शन का वर्णन है) । २० काल सं० १६२६ । ले० काल सं० १७५६ । पूर्ण । वे० सं० १०४६ । अ
भण्डार ।

विशेष—साह लालचन्द कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३७०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १७६२ सावण सुदी १० । वे० सं० १०६ । पूर्ण
म. भण्डार ।

३७०८. सुभौमचक्रवर्तिरास—ब्रह्मजिनदास । पत्र सं० १३ । पा० १०३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६२ । ज्य अण्डार ।

३७०९. हमीररासो—महेश कवि । पत्र सं० ८८ । पा० ६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—रासः
(ऐतिहासिक) । २० काल × । ले० काल सं० १८८३ आसोज सुदी ३ । अपूर्ण । वै० सं० ६०४ । क अण्डार ।



विषय- गणित-शास्त्र

—

३७१०. गणितनाममाला—हरदत्त । पत्र सं० १४ । आ० २३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
गणितशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४० । ख भण्डार ।

३७११. गणितशास्त्र..... । पत्र सं० ६१ । आ० ६×३३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—गणित । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६ । च भण्डार ।

३७१२. गणितसार—हेमराज । पत्र सं० ५ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—गणित ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२२१ । अ भण्डार ।

विशेष—हाशिये पर सुन्दर बेलबूटे हैं । पत्र जीर्ण हैं तथा बीच में एक पत्र नहीं है ।

३७१३. पट्टी पहाड़ों की पुस्तक । पत्र सं० ४७ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
गणित । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के पत्रों में खेतों की डोरी आदि डालकर नापने की विधि दी है । पुनः पत्र १ से ३ तक
'सीधो वर्ग समान्नायः' । आदि की पाँचों संधियों (पाटियों) का वर्णन है । पत्र ४ में १० तक चाणक्य नीति के
श्लोक हैं । पत्र १० से ३१ तक पहाड़े हैं । किसी २ जगह पंक्तियों पर सुभाषित पद्य हैं । ३१ से ३६ तक सोल नार के
गुरु दिये हुये हैं । निम्न पाठ और हैं ।

१. हरिनाममाला—शङ्कराचार्य । संस्कृत में पत्र ३७ तक ।

२. गोकुलगांवकी लीला— हिन्दी पत्र ४५ तक ।

विशेष—कृष्ण ऊधव का वर्णन है ।

३. सप्तश्लोकीगीता— पत्र ४६ तक ।

४. स्नेहलीला— पत्र ४७ (अपूर्ण)

३७१४. राजप्रमाण..... । पत्र सं० २ । आ० ८३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय गणितशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४२७ । अ भण्डार ।

३७१५. लीलावतीभाषा—मोहनमिश्र । पत्र सं० ८ । आ० ११×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
गणितशास्त्र । २० काल सं० १७१४ । ले० काल सं० १८३८ फागुण बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६४० । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति पूर्ण है

३७१६. लीलावतीभाषा—व्यास मथुरादास । पत्र सं० ३ । आ० ६×४३ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—गणितशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४१ । क भण्डार ।

३७१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५५ । ले० काल × । वे० सं० १४४ । घ भण्डार ।

३७१८. लीलावतीभाषा..... । पत्र सं० १३ । आ० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—गणित ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७१ । च भण्डार ।

३७१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६४२ । ट भण्डार ।

३७२०. लीलावती—भास्कराचार्य । पत्र सं० १७६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—गणित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित सुन्दर एवं नवीन है ।

३७२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८६२ भादवा बुदी २ । वे० सं० १७० । ख
भण्डार ।

विशेष—महाराजा जगतसिंह के शासनकाल में माणवबन्द के पुत्र मनोरथराम सेठी ने हिण्डीन में प्रति-
लिपि की थी ।

३७२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५४ । ले० काल × । वे० सं० ३२३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियाँ (वे० सं० ३२४ से ३२७ तक) और हैं ।

३७२३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १७६५ । वे० सं० २१६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियाँ (वे० सं० २२०, २२१) और हैं ।

३७२४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६३ । ट भण्डार ।



विषय— इतिहास



३७२५. आचार्यों का व्यौरा.....। पत्र सं० ६। आ० १२३×५३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। र० काल ×। ले० काल सं० १७१६। पूर्ण। वे० सं० २६७। ख भण्डार।

विशेष—मुखानन्द सौगरी ने प्रतिलिपि की थी। इसी वेष्टन में १ प्रति श्रीर है।

३७२६. खंडेलवालोल्लसितवर्णन.....। पत्र सं० ८। आ० ७×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५। झ भण्डार।

विशेष—८४ गोत्रों के नाम भी दिये हुये हैं।

३७२७. दुर्वाधरलाल.....। पत्र सं० ५। आ० ६×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३०। ख भण्डार।

३७२८. चौरासीजातिखंड.....। पत्र सं० १। आ० १०×५३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६०३। ट भण्डार।

३७२९. चौरासीजाति की जयमाल—विमोदीलाल। पत्र सं० २। आ० ११×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। र० काल ×। ले० काल सं० १८७३ पौष बुदी ९। पूर्ण। वे० सं० २४१। ख भण्डार।

३७३०. छठा आरा का विस्तार.....। पत्र सं० २। आ० १०१×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१८६। अ भण्डार।

३७३१. जयपुर का प्राचीन ऐतिहासिक वर्णन.....। पत्र सं० १२७। आ० ९×६ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६८९। ट भण्डार।

विशेष—रामगढ़ सवाईमाधोपुर आदि बसाने का पूर्ण विवरण है।

३७३२. जैनवद्वी मूढवद्वी की यात्रा—भ० सुरेन्द्रकीर्ति। पत्र सं० ४। आ० १०३×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३००। ख भण्डार।

३७३३. तीर्थङ्करपरिचय.....। पत्र सं० ४। आ० १२×५३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६४०। अ भण्डार।

३७३४. तीर्थङ्करों का अन्तराल.....। पत्र सं० १। आ० ११×४३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। र० काल ×। ले० काल सं० १७२४ आसोज सुदी १२। पूर्ण। वे० सं० २१४२। अ भण्डार।

३७३५. दादूपद्यावली पृथ सं० १ । आ० १०×३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६४ । अ भण्डार ।

दादूजी दयाल पाट मरीच मसकीन ठाट ।

जुगलबाई निराट निरागी बिराज ही ॥

बखनीस कर पाक जसी चावी प्राग दाक ।

बडो हू गोपाल ताक पुख्कारे राजही ॥

सांगानेर रजपसु देवल दयाल दास ।

घडसी कडाला बसे धरम कीया जही ॥

ईड वेड जनदास तेजानन्द जोधपुर ।

मोहन सु भजनीक आसोरनि वाज ही ॥

गुनर में माधोदास विदाध में हरिसिंह ।

चतरदास सिध्दावट कीयो तनकाज ही ॥

विहाणी पिरागदास डोडवाने है प्रसिद्ध ।

सुन्दरदास जू सरसू फतेहपुर छाजही ॥

बावो बनवारी हरदास दोऊ रतीय में ।

साधु एक मांडोडी में तीकै नित्य छाजही ॥

सुंदर प्रहलाद दास पाटडैसु छीड़ माहि ।

पूरब चतरभुज रामपुर छाजही ॥ १ ॥

निराणदास माडात्म्यी सडांग माहि ।

इकलौद रणतभंवर डाढ चरणदास जानियो ॥

हाडीसी गेभाइ जामे माखूजी मगन भये ।

जगाजी भडौच मध्य प्रचाधारी मानियो ॥

लालदास नावक सां पोरान पटणदास ।

काफली मेवाड माहि टीलोजी प्रमानियो ॥

साधु परमावंद इरोखली में रहे जाय ।

जमल चुहाण भलो खालड हरगानियो ॥

जमल जोगो कुछाहो बनमाली जोकन्योस ।

सांभर भजन सो दितान तानियो ॥

मोहन दफतरीसु मारोठ चितार्ह भलै ।
 रुचनाथ मेडतैसु भावकर आनियो ॥
 कालेडहरे चत्रदास टीकोदास नांगल मै ।
 भोटवाडै भांभूमाम्भू लघु गोपाल धानियो ॥
 आंदावती जगनाथ राहोरी जनगोपाल ।
 बाराहदरी संतदास चावळ्यलु भानियो ॥
 आंधी में गरीयदास भानगढ साधन कै ।
 मोहन मेवाडा जोग साधन सौ रहे है ॥
 टहटडे मै नागर निजाम हू भजन कियो ।
 दास जग जीवन थौसा हर लहे हैं ॥
 मोहन दरियायीसो सम नागरचाल मध्य ।
 बोकडास संत जूहि गोसगिर भये हैं ॥
 चैनराम काणौता में मोदेर कपलमुनि ।
 स्थामदास भालाणौसू षोड कै में ठये हैं ॥
 सौंक्था लाखी नरहर अलूदै भजन कर ।
 महाजन खंडेलवाल दादू गुर गहे हैं ॥
 पूरणदास ताराचन्द म्हाजन मुम्हेर वाली ।
 आंधी में भजन कर काम क्रोध दहे हैं ॥
 रामदास राणीबाई कांजल्या प्रगट भई ।
 म्हाजन डिगाइसू जाति बोल सहे हैं ॥
 बावन ही थांभा अरु बावन ही म्हंत ग्राम ।
 दादूपंथी चत्रदास सुने जैसे कहे हैं ॥ ३ ॥
 जे नमो गुर दादू परमात्म आदू सब संतन के हितकारी ।
 मैं आयो सरनि तुम्हारी ॥ टेक ॥
 जे निरालंब निरवाना हम संत तै जाना ।
 संतनि को सरना दीजै, अब मोहि अपनू कर लीजै ॥१॥
 सबकें अंतरायामी, अब करो कृपा मोरे स्वामी
 अवगति अबनासी देवा, दे खरन कबल की सेवा ॥२॥
 जे दादू दीन दयाला काहो जग जंजाला ।
 सतचित्त आनंद में बासा, गावै वखतावरदासा ॥३॥

सोरठ—

राग रामगरी—

अैसे दीव क्यूँ पाइये, मन चंचल भाई ।
 आख मीन मूनी भया मँछी गढ काई ॥टेक॥
 छाप तिलक बनाय करि नाचै अछ गावै ।
 आपरा तो समझे नहीं, औरा समझावै ॥१॥
 भभति करै पाखंड की, करणी का काचा ।
 कहै कवीर हरि क्यूँ मिलै, हिरदै ली सगवा ॥२॥
 ॥ इति ॥

३७३६. देहली के बादशाहों का ड्यौरा.....। पत्र सं० १६ । आ० ५३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
 विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६ । झ मण्डार ।

३७३७. पञ्चाधिकार.....। पत्र सं० ५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास ।
 २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६४७ । ट मण्डार ।

विशेष—जिनसेन कृत घवल टीका तक का प्रारम्भ से आचार्यों का ऐतिहासिक वर्णन है ।

३७३८. पट्टावली.....। पत्र सं० १२ । आ० ८×६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २०
 काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३० । झ मण्डार ।

विशेष—दिगम्बर पट्टावलि का नाम दिया हुआ है । १८७६ के संवत् की पट्टावलि है । अन्त में खंडेलवाल
 वंशोत्पत्ति भी दी हुई है ।

३७३९. पट्टावलि.....। पत्र सं० ४ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २०
 काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३३ । छ मण्डार ।

विशेष—सं० ८४० तक होने वाले भट्टारकों का नामोल्लेख है ।

३७४०. पट्टावलि.....। पत्र सं० २ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २०
 काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रथम चौरासी जातियों के नाम हैं । पीछे संवत् १७६६ में नागौर के गच्छ से अजमेर का गच्छ
 निकला उसके भट्टारकों के नाम दिये हुये हैं । सं० १५७२ में नागौर से अजमेर का गच्छ निकला । उसके सं० १८५२
 तक होने वाले भट्टारकों के नाम दिये हुये हैं ।

३७४१. प्रतिष्ठाकुंकुमपत्रिका.....। पत्र सं० १ । आ० २५×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
 इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४५ । छ मण्डार ।

विशेष—सं० १६२७ फागुन मास का कुंकुमपत्र रिपलोन की प्रतिष्ठा का है । पत्र कार्तिक वृद्धी १३ का लिखा है । इसके साथ सं० १६३६ की कुंकुमपत्रिका छपी हुई शिखर सम्भेद की ओर है ।

३७४२. प्रतिष्ठानामावलि..... पत्र सं० २० । आ० ६×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४३ । छ मण्डार ।

३७४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १४३ । छ मण्डार ।

३७४४. बलात्कारगणगुर्वावलि..... पत्र सं० ३ । आ० १११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०६ । अ मण्डार ।

३७४८. भट्टारक पट्टावलि । पत्र सं० १ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८३७ । अ मण्डार ।

विशेष—सं० १७७० तक की भट्टारक पट्टावलि श्री हुई है ।

३७४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ११८ । अ मण्डार ।

विशेष—संवत् १८८० तक होने वाले भट्टारकों के नाम दिये हैं ।

३७५०. यात्रावर्णन..... पत्र सं० २ से २६ । आ० ६×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१४ । अ मण्डार ।

३७५१. रथयात्राप्रभाव—अमोलकचंद । पत्र सं० ३ । आ० १०१×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३०८ । अ मण्डार ।

विशेष—जयपुर की रथयात्रा का वर्णन है ।

११३ पद्य हैं— अन्तिम—

एकोनविंशतिशतेदश सहायर्षे मासस्मयश्चमी विनेसित फाल्गुनस्य श्रीमज्जिमेन्द्र वर मुखरथस्ययात्रा मेलायतं
जयपुर प्रकटे जयूत्र ॥११२॥

रथयात्राप्रभावोऽयं कथितो दृष्टपूर्वकः

नाम्ना मौलिकमन्त्रेण साहाय्योपे या संमुखा ॥११३॥

॥ इति रथयात्रा प्रभाव समाप्ता ॥ शुभं भूयात् ॥

३७५२. राजप्रशस्ति..... पत्र सं० ५ । आ० ६×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६५ । अ मण्डार ।

विशेष—दो प्रशस्ति (अपूर्ण) हैं मज्जिका यात्रक वनिता के विशेषण दिये हुए हैं ।

३७५३. विज्ञप्तिपत्र—हंसराज । पत्र सं० १ । आ० ८×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास ।
१० काल × । ले० काल सं० १८०७ फागुन सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ५३ । अ भण्डार ।

विशेष—भोपाल निवासी हंसराज ने जयपुर के जैन पंचों के नाम अपना विज्ञप्तिपत्र व प्रतिज्ञा-पत्र लिखा है । प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री सवाई जयपुर का सकल पंच साधर्मो बड़ी पंचायत तथा छोटी पंचायत का तथा दीवानजी साहिब का मन्दिर सम्बन्धी पंचायत का पत्र आदि समस्त साधर्मो भाइयन को भोपाल का वासी हंसराज की या विज्ञप्ति है सो नीका अवधारन कीज्यो । इसमें जयपुर के जैनों का श्रद्धा वर्णन है । अमरचन्दजी दीवान का भी नामोल्लेख है । इसमें प्रतिज्ञा पत्र (आखड़ी पत्र) भी है जिसमें हंसराज के त्यागमय जीवन पर प्रकाश पड़ता है । यह एक जन्म-पत्र की तरह गोल सिमटा हुआ लम्बा पत्र है । सं० १८०० फागुन सुदी १३ गुरुवार को प्रतिज्ञा ली गई उसी का पत्र है ।

३७५४. शिलालेखसंग्रह..... । पत्र सं० ८ । आ० ११×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास ।
१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६१ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न लेखों का संग्रह है ।

१. बालुक्य वंशोत्पत्ति पुलकेशी का शिलालेख ।
२. भद्रबाहु प्रशस्ति
३. मल्लिवेण प्रशस्ति

३७५५. आवक उत्पत्तिवर्णन..... । पत्र सं० १ । आ० ११×२५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
इतिहास । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६०८ । अ भण्डार ।

विशेष—चौरासी गोत्र, वंश तथा कुलदेवियों का वर्णन है ।

३७५६. आवकों की चौरासी जातियां .. . । पत्र सं० १ । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । १०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३१ । अ भण्डार ।

३७५७. आवकों की ७२ जातियां .. . । पत्र सं० २ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।
विषय—इतिहास । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२६ । अ भण्डार ।

विशेष—जातियों के नाम निम्न प्रकार हैं ।

१. गोलाराडे २. गोलसिन्हाडे ३. गोलभूरे ४. लवेचु ५. जैसवाल ६. सडेलवाल ७. वधेलवाल ८.
अगरवाल, ९. सहलवाल, १०. अमरवापीरवाड, ११. बोलवापीरवाड, १२. दुसरवापीरवाड, १३. जांगडापीरवाड,
१४. परवार, १५. वरहीया, १६. भैसरपीरवाड, १७. सोरटीपीरवाड, १८. पंखावतीपीरभा, १९. खंध, २०. घुसर

२१. बाहरसेन, २२. महोद, २३. अग्रपग क्षत्री २४. सहाण, २५. अजोध्यापुरी, २६. गोरवाड, २७. विठ्ठलस्या, २८. कठनेरा, २९. नाम, ३०. गुजरपल्लीवाल, ३१. बीकडा, ३२. गागरवाडा, ३३. बोरवाड, ३४. खडेरवाल, ३५. हर सुला, ३६. नेगडा, ३७. सहरीया, ३८. मेवाडा, ३९. खराडा, ४०. चीतोडा, ४१. तरसंगपुरा, ४२. नागदा, ४३. बाव, ४४. हूमड, ४५. रामकवाडा, ४६. बदनोर, ४७. रामगुहावन, ४८. वीरमथावक, ४९. हलधरथावक, ५०. सादरथावक, ५१. हूमर, ५२. लत्रर, ५३. बवल, ५४. बलगारी, ५५. कर्मथावक, ५६. वरिक्कर्मथावक ५७. वेसर ५८. सुदेवज, ५९. बलशीगुल, ६०. कोमडी, ६१. गंगरका, ६२. गुनपुर, ६३. तुलाथावक, ६४. कचंगथावक, ६५. हेवगाथावक, ६६. भोगाथावक ६७. सोमनथावक, ६८. दाउदाथावक, ६९. नंगवलीथावक, ७०. परीसंगा, ७१. वगोरिया, ७२. काकलीवाल,

नोट—हूमड जाति को दो बार गिनाने से १ संख्या बढ गई है।

३७५८. श्रुतस्कंध—ब्र० हेमचन्द्र । पत्र सं० ७ । आ० १११×४३ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१ । अ भण्डार ।

३७५९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ७२९ । अ भण्डार ।

३७६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० २१६१ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र ७ से आगे श्रुतावतार अधर कृत भी है, पर पत्रों पर अक्षर मिट गये हैं ।

३७६१. श्रुतावतार—पं० श्रीधर । पत्र सं० ५ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६ । अ भण्डार ।

३७६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८९१ पीप सुदी १ । वे० सं० २०१ । अ भण्डार ।

विशेष—चम्पालाल ठोंग्या ने प्रतिलिपि की थी ।

३७६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ७०२ । छ भण्डार ।

३७६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५१ । च भण्डार ।

३७६५. संघपञ्चीसी—द्यानतराय । पत्र सं० ६ । आ० ८×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल सं० १८८८ । पूर्ण । वे० सं० २१३ । अ भण्डार ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड भाषा मैया भगवतीदास कृत भी है ।

३७६६. संवत्सरवर्णन..... । पत्र सं० १ से ३७ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६५ । छ भण्डार ।

३७६७. रघूनाथ का चौमाला वर्णन..... पत्र सं० २ । मा० १०×४ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विषय-इतिहास । २० काल × । ले० काष्ठ × । पूर्ण । वे० सं० २११८ । अ भण्डार ।

ईंठर आवा आवली रे ए देसी

सावण मास सुहावणो रे लाल जो पीउ होवे पास ।

अरज कहं घरे आवजो रे लाल हूं छूँ ताहरी दास ।

अतुर नर आवो हम चर छा रे सुगण नर तू छ प्राण आधार ॥१॥

भादवड़े पीउ बेगली रे लाल हूं कीम कहं सणगारे ।

अरज कहं घर आवजो रे लाल मोरा छँछत सार ॥२॥

मांजः भासनी भाइरु रे लाल कुलतणी कीछाइ तेज ।

रंग रा मत कीजिय रे लाल आखी हीयड़े तेज ॥३॥

कातीक महीने कामीनि रे लाल जो पीउ होवे पास ।

संदेसा सयण भण रे लाल असगयो केम ॥४॥

नजर निहालो बाल हो रे लाल आवो मींसर मास ।

लोक कहावत कहा करो जी पीउड़ा परम निवास ॥५॥

पौस बालम बेगली रे लाल आवजो मुज दोस ।

परीत पनोतर पालीये रे लाल आखी मन भे रोस ॥६॥

सीयाले अती धरु दोहलो रे लाल ते माहे बल माह ।

पोताने घर आवज्यो रे लाल ढीलन कीजे नाह ॥७॥

लाल गुलाल अधीरमुं रे लाल खेलण लाग्य लोभ ।

तुज विण मुज नेइहा एकली रे लाल फागुण जाये फोक ॥८॥

सुंदर पान सुहावणो रे लाल कुल तरणो मही मास ।

बीवारया घरे आवज्यो रे लाल तो करसु गेह गाट ॥९॥

बीसारयो न बीसरे रे लाला जे तुम बोल्या बोल ।

बेसाखे तुम नेम छुं रे लाल तो बजड ढील ॥१०॥

केहला दीसे कामो रे लाल काइ करावो बेठ ।

ढीठ वणो हवे काहा करो लाल आखी लागी जेठ ॥११॥

असाढी धरमुमछोरे लाल बीच बीच जबुके बीजली रे लाल ।

तुज बीना मुज नैहारे लाल धरम आवे खीज ॥१२॥

रे रे सखी उतावली रे लाल सजी सोला सरागार ।

वेर बली पंथी मुदररु रे लाल पे छोडी नार ॥१३॥

चार घडी नी अब छकी रे लाल आवो मास अरसाठ ।

कामरा मालो कंत जी रे लाल सखी न आव्यो घाज ॥१४॥

ते उठी उलट धरी रे लाल बालम जोवे भास ।

शूलभद्र मुस आवेस थी रे लाल ऐह बळ्यो चोमास ॥१५॥

३७६८. हमीर चौपई.....। पत्र सं० १३ से ३७ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१६ । ट भण्डार ।

विवेक—रचना में नामोल्लेख कहीं नहीं है । हमीर व भलाउद्दीन के युद्ध का रोचक वर्णन दिया हुआ है ।



विषय-स्तोत्र साहित्य

३७६६. अकलंकाष्टक..... पत्र सं० ५। आ० ११३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५०। ज भण्डार।

३७७०. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। वे० सं० २५। व्य भण्डार।

३७७१. अकलंकाष्टकभाषा—सदासुख कासलीवाल। पत्र सं० २२। आ० ११३×५ इंच। भाषा-
हिन्दी। विषय-स्तोत्र। २० काल सं० १६१५ श्रावण सुदी २। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६) और हैं।

३७७२. प्रति सं० २। पत्र सं० २८। ले० काल ×। वे० सं० ३। छ भण्डार।

३७७३. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १६१५ श्रावण सुदी २। वे० सं० १८७। च
भण्डार।

३७७४. अजितशांतिस्तवन..... पत्र सं० ७। आ० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।
२० काल ×। ले० काल सं० १६६१ आसोज सुदी १। पूर्ण। वे० सं० ३५७। व्य भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ में भक्तामर स्तोत्र भी है।

३७७५. अजितशांतिस्तवन—चन्द्रिषेण। पत्र सं० १५। आ० ८३×४ इंच। भाषा-प्राकृत।
विषय-स्तवन। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८४२। अ भण्डार।

३७७६. अनाघीश्वरिस्वाध्याय..... पत्र सं० १। आ० ६३×४ इंच। भाषा-हिन्दी गुजराती।
विषय-स्तवन। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६०८। ट भण्डार।

३७७७. अनादिनिधनस्तोत्र। पत्र सं० २। आ० १०×४ १/२ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६१। व्य भण्डार।

३७७८. अरहन्तस्तवन..... पत्र सं० ६ से २४। आ० १०×४ १/२ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
स्तवन। २० काल ×। ले० काल सं० १६५२ कार्तिक सुदी १०। अपूर्ण। वे० सं० १६८४। अ भण्डार।

३७७९. अवन्तिपार्श्वजिनस्तवन—हर्षसूरि। पत्र सं० २। आ० १०×४ १/२ इंच। भाषा-हिन्दी।
विषय-स्तवन। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५६। व्य भण्डार।

विशेष—७८ पद्य हैं।

३७८०. आत्मनिर्दास्तवन—रत्नाकर । पत्र सं० २ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७ । छ मण्डार ।

विशेष—२५ श्लोक हैं । ग्रन्थ आरम्भ करने से पूर्व पं० विजयहंस गणि को नमस्कार किया गया है । पं०
जय विजयगणि ने प्रतिलिपि की थी ।

३७८१. आरुपन—..... । पत्र सं० २ । आ० ८×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल
× । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६ । क मण्डार ।

३७८२. इष्टोपदेश—पूज्यपाद । पत्र सं० ५ । आ० ११३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५ । अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संक्षिप्त टीका भी हुई है ।

३७८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ७१ । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७२) और है ।

३७८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ७ । घ मण्डार ।

विशेष—देवीदास की हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३७८५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० ६० । ङ मण्डार ।

विशेष—संची पन्नालाल दुनीवाले कृत हिन्दी अर्थ सहित है । सं० १६३५ में भाषा की थी ।

३७८६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६७३ पीछ बुदी ७ । वे० सं० ४०८ । व्य
मण्डार ।

विशेष—केशीदास ने जगरू में प्रतिलिपि की थी ।

३७८७. इष्टोपदेशटीका—आशाधर । पत्र सं० ३६ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७० । क मण्डार ।

३७८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ६१ । ङ मण्डार ।

३७८९. इष्टोपदेशभाषा—..... । पत्र सं० २५ । आ० १२×७३ इंच । भाषा—हिन्दी मद्य । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२ । ङ मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ को लिखाने व कागज में खाना व्यय हुये हैं ।

३७९०. उपदेशसञ्ज्ञाय—ऋषि रामचन्द्र । पत्र सं० १ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६० । अ मण्डार ।

३७६१. उपदेशसंज्ञाय—रंगविजय । पत्र सं० ४ । आ० १०×४^१/_२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८३ । अ भण्डार ।

विशेष—रंगविजय श्री रत्नहर्ष के शिष्य थे ।

३७६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१६१ । अ भण्डार ।

विशेष—इस पत्र नहीं है ।

३७६३. उपदेशसंज्ञाय—देवादित । पत्र सं० १ । आ० १०×४^१/_२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६२ । अ भण्डार ।

३७६४. उपसर्गहरस्तोत्र—पूर्णचन्द्राचार्य । पत्र सं० १४ । आ० ३^१/_२×४^१/_२ इंच । भाषा—संस्कृत प्राकृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १५५३ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ४१ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री बृहद्गच्छीय भट्टारक गुरुदेवसूरि के शिष्य गुरानिधाम ने इसकी प्रतिलिपि की थी । प्रति यन्त्र सहित है । निम्नलिखित स्तोत्र हैं ।

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा	पत्र	विशेष
१. अजितशांतिस्तवन—	×	प्राकृत संस्कृत	१ से ६	३६ गाथा
विशेष—आचार्य गोविन्दकृत संस्कृत श्रुति सहित है ।				

२. भयहरस्तोत्र—	×	संस्कृत	६ से १०	

विशेष—स्तोत्र अक्षरार्थ मन्त्र गभित सहित है । इस स्तोत्र की प्रतिलिपि सं० १५५३ आसोज सुदी १२ को भेदपाट देश में राणा रायमल्ल के शासनकाल में कोठारिया नगर में श्री गुरुदेवसूरि के उपदेश से उनके शिष्य ने की थी ।

३. भयहरस्तोत्र—	×	"	११ से १४	

विशेष—इसमें पार्वत्यक्ष मन्त्र गभित अष्टादश प्रकार के यन्त्र की कल्पना मानतुंगाचार्य कृत दी हुई है ।

३७६५. ऋषभदेवस्तुति—जिनसेन । पत्र सं० ७ । आ० १०^१/_२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।

३७६६. ऋषभदेवस्तुति—पद्मानन्द । पत्र सं० ११ । आ० १२×६^१/_२ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४६ । अ भण्डार ।

विशेष—दोनों पृष्ठ से दर्शनस्तोत्र दिया हुआ है । दोनों ही स्तोत्रों के संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

३७६७. ऋषभस्तुति..... पत्र सं० ५ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५१ । अ भण्डार ।

३७६८. अधिमंडलस्तोत्र—गौतमस्वामी । पत्र सं० ३ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४ । अ भण्डार ।

३७६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८५६ । वे० सं० १३२७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतिमां (वे० सं० ३३८, १४२६, १६००) और हैं ।

३८००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ६१ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ तथा मन्त्र साधन विधि भी दी हुई है ।

३८०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २१ ।

विशेष—कृष्णलाल के पठनार्थ प्रति लिखी गई थी । ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६१) और है ।

३८०२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६०) और है ।

३८०३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १७६८ । वे० सं० १४ । अ भण्डार ।

३८०४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७६ से १०१ । ले० काल × । वे० सं० १८३६ । ट भण्डार ।

३८०५. अधिमंडलस्तोत्र..... पत्र सं० ५ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०४ । अ भण्डार ।

३८०६. एकाक्षरीस्तोत्र—(तकाराक्षर)..... पत्र सं० १ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ ज्येष्ठ सुदी । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । प्रदर्शन योग्य है ।

३८०७. एकीभावस्तोत्र—बादिराज । पत्र सं० ११ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८८३ माघ कृष्ण ६ । पूर्ण । वे० सं० २५४ । अ भण्डार ।

विशेष—अमोलकचन्द्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३८) और है ।

३८०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६६ । ख भण्डार ।

३८०९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ६३ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२.

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४) और है ।

३८१०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ५३ । च भण्डार ।

विवेक—महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ५२) और है ।

३८११. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० १२ । ज भण्डार ।

३८१२. एकीभावस्तोत्रभाषा—भूधरदास । पत्र सं० ३ । आ० १० $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०३६ । अ भण्डार ।

विवेक—बारह भक्तता तथा शान्तिनाथ स्तोत्र और है ।

३८१३. एकीभावस्तोत्रभाषा—पद्मलाल । पत्र सं० २२ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ × ५ इंच । भाषा—हिन्दी पत्र । विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६४) और है ।

३८१४. एकीभावस्तोत्रभाषा..... । पत्र सं० १० । आ० ७ × ४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १६१२ । पूर्ण । वे० सं० ३५३ । झ भण्डार ।

३८१५. ओंकारवचनिका..... । पत्र सं० ३ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ × ५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५ । क भण्डार ।

३८१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १६३६ छासोज बुदी ५ । वे० सं० ६६ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६७) और है ।

३८१७. कल्पसूत्रमहिमा..... । पत्र सं० ४ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—महात्म्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

३८१८. कल्याणक—समन्तभद्र । पत्र सं० ५ । आ० १० $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६ । छ भण्डार ।

विवेक—

पराविधि चउवीसवि तिथियर,

सुरणर विसहर थुव चलणा ।

पुणु भणमि पंच कल्याण दिगा,

भविषहु एणुणह इक्कमणा ॥

अन्तिम—

करि कल्याणपुञ्ज जिणसाहसो,

अगु दिगु चित्त अविचलं ।

कहिय समुच्च एण ते कविणा

लिज्जइ इमणुव भव फलं ॥

इति श्री समन्तभद्र कृतं कल्याणक समाप्ता ॥

३८१६. कल्याणमन्दिरस्तोत्र—कुसुदचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय—पार्श्वनाथ स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ३८४, १२३६, १२६२) और हैं ।

३८८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० २६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां और हैं (वे० सं० ३०, २६४, २८१) ।

३८२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८१७ माघ सुदी १ । वे० सं० ६२ । च भण्डार ।

३८२२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १६४९ माह सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० २५६ । छ भण्डार ।

विशेष—५वां पत्र नहीं है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३४) और है ।

३८२३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७१४ माह बुदी ३ । वे० सं० ७ । झ भण्डार ।

विशेष—साह जोधराज गोदीकाने आनंदराम से सांगानेर में प्रतिलिपि करवायी थी । यह पुस्तक जोधराज गोदीका की है ।

३८२४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १७६६ । वे० सं० ७० । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति हर्षकीर्ति कृत संस्कृत टीका सहित है । हर्षकीर्ति नागपुरीय तपागच्छ प्रधान चन्द्रकीर्ति के शिष्य थे ।

३८२५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७४६ । वे० सं० १६६८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति कल्याणमञ्जरी नाम विनयसागर कृत संस्कृत टीका सहित है । अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति सकलकुमनकुमदखंडखंडचंडरश्मिश्रीकुसुदचन्द्रसूरिविरचित श्रीकल्याणमन्दिरस्तोत्रस्य कल्याणमञ्जरी टीका संपूर्ण । दयाराम ऋषि ने स्वात्मज्ञान हेतु प्रतिलिपि की थी ।

३८२६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० २०६५ । ठ भण्डार ।

विशेष—छोटेलाल ठोलिया मारोठ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३८२७. कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका—पं० आशाधर । पत्र सं० ४ । आ० १०×४^१/_२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३१ । अ भण्डार ।

३८२८. कल्याणमंदिरस्तोत्रवृत्ति—देवतिलक । पत्र सं० १५ । आ० ६^३/_४×४^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १० । अ भण्डार ।

विशेष—टीकाकार परिचय—

आडकेशराणाञ्चिचन्द्रसदृशा विद्वज्जनाह्लादयन्,
प्रवीण्याधनसारपाठकवरा राजन्ति भास्वांतरं ।
तन्विद्युष्यः कुमुदापिदेवतिलकः सद्बुद्धिबुद्धिप्रदां,
श्रेयोमन्दिरसंस्तवस्य मुदितो वृत्तिः कदादद्भुतं ॥१॥
कल्याणमंदिरस्तोत्रवृत्तिः सोभायमञ्जरी ।
वाच्यमानाज्जलैर्नंदास्त्रंदावर्कं मुखा ॥२॥

इति श्रेयोमंदिरस्तोत्रस्य वृत्तिसमाप्ता ॥

३८२९. कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका—पत्र सं० ४ से ११ । आ० १०×४^१/_२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११० । क भण्डार ।

३८३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३३ । अ भण्डार ।

विशेष—रूपचन्द चौधरी कनेसुं सुन्दरदास अजमेरी मोल लीनी । ऐसा अन्तिम पत्र पर लिखा है ।

३८३१. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा—मन्नालाल । पत्र सं० ४७ । आ० १२^३/_४×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०७ । क भण्डार ।

३८३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० १०८ । क भण्डार ।

३८३३. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा—ऋषि रामचन्द्र । पत्र सं० ५ । आ० १०×४^१/_२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७१ । ट भण्डार ।

३८३४. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा—वनारसीदास । पत्र सं० ८ । आ० ६×३^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४० । अ भण्डार ।

३८३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १११ । क भण्डार ।

३८३६. फेबलज्ञानीसञ्ज्ञाय—विमलचन्द्र । पत्र सं० २ । आ० १०×४^१/_२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८८ । अ भण्डार ।

३८३७. क्षेत्रपालनामावली..... पत्र सं० ३ । मा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४४ । क भण्डार ।

३८३८. गीतप्रबन्ध..... पत्र सं० २ । मा० १०½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२४ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में वसन्तराग में एक भजन है ।

३८३९. गीत वीतराग—पंडिताचार्य अभिनवचारुकीर्ति । पत्र सं० २६ । मा० १०½×५ इंच ।
भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८८६ ज्येष्ठ बुदी ५५ । पूर्ण । वे० सं० २०२ । अ
भण्डार ।

विशेष—जयपुर नगर में श्री चुन्नीमाल ने प्रतिलिपि की थी ।

गीत वीतराग संस्कृत भाषा की रचना है जिसमें २४ प्रबंधों में भिन्न भिन्न राग रागिनियों में भगवान्
प्रादिनाथ का पौराणिक आख्यान वर्णित है । ग्रन्थकार की पंडिताचार्य उपाधि से ऐसा प्रकट होता है कि वे अपने समय
के विशिष्ट विद्वान् थे । ग्रन्थ का निर्माण कब हुआ यह रचना से ज्ञात नहीं होता किन्तु वह समय निश्चय ही संवत्
१८८६ से पूर्व है क्योंकि ज्येष्ठ बुदी अमावस्या सं० १८८६ को जयपुरस्थ लश्कर के मन्दिर के पास रहने वाले श्री
चुन्नीमालजी साह ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की है प्रति सुंदर अक्षरों में लिखी हुई है तथा शुद्ध है । ग्रन्थकार ने ग्रंथ
को निम्न रागों तथा तालों में संस्कृत गीतों में रूपा है—

राग रागिनी— मालव, गुर्जरगौरी, वसंत, रामकली, काह्लरा कर्णाटक, देशासिराग, देशवैराडी, शृंगारी, मालवगौड़,
गुर्जराग, भैरवी, विराडी, विभास, कानरो ।

ताल— रूपक, एकताल, प्रतिमण्ड, परिमण्ड, तितालो, अठताल ।

गीतों में स्थायी, अन्तरा, संचारी तथा आभोग ये चारों ही वरण हैं इस सबसे ज्ञात होता है कि ग्रन्थकार
संस्कृत भाषा के विद्वान् होने के साथ ही साथ अनेक नवीतन भी थे ।

३८४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल सं० १९३४ ज्येष्ठ सुदी ८ । वे० सं० १२५ । क
भण्डार ।

विशेष—संघपति अमरचन्द्र के सेवक माणिक्यचन्द्र ने सुरंगपसन की यात्रा के अवसर पर आनन्ददास के
वचनानुसार सं० १८८४ वाली प्रति से प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२६) और है ।

३८४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ४२ । ख भण्डार ।

३८४२. गुरुस्तवन..... पत्र सं० १५ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५३ । छ भण्डार ।

३८४३. गुरुसहस्रनाम ... पत्र सं० ११ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १७४६ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० २६८ । छ भण्डार ।

३८४४. गोम्मटसारस्तोत्र पत्र सं० १ । आ० ७×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७३ । छ भण्डार ।

३८४५. घघरनिसाणी—जिनहर्ष । पत्र सं० २ । आ० १०×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

विशेष—पार्श्वनाथ की स्तुति है ।

आदि—

सुख संपति मुर नायक परतपि पास जिरांदा है ।

जाकी छवि कांति अनोपम उपमा दीपत जात दिरांदा है ।

अन्तिम—

भिद्धा दावा सातहार हासा दे सेवक बिलंबदा है ।

घघर नीसाणी पास बखानी गुराणी जिनहरष कहंदा है ।

इति श्री घघर निसाणी संपूर्ण ॥

३८४६. चक्रेश्वरीस्तोत्र..... पत्र सं० १ । आ० १०½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६१ । छ भण्डार ।

३८४७. चतुर्विंशतिजिनस्तुति—जिनलाभसूरि । पत्र सं० ६ । आ० ८×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८५ । छ भण्डार ।

३८४८. चतुर्विंशतितीर्थङ्कर जयमाल..... पत्र सं० १ । आ० १०½×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४८ । छ भण्डार ।

३८४९. चतुर्विंशतिस्तवन..... पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रथम ४ पत्रों में वसुधास्तोत्र है । ५० विजयगणि ने पट्टनमध्ये स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३८५०. चतुर्विंशतिस्तवन..... पत्र सं० ४ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—१२वें तीर्थङ्कर तक की स्तुति है । प्रत्येक तीर्थङ्कर के स्तवन में ४ पद्य हैं ।

प्रथम पद्य निम्न प्रकार है—

मध्याभोजविबोधनैकतरणो विस्तारिकर्मावली
रम्भासामजनभिनन्दनमहानष्टा पदाभासुरैः ।
भक्त्या वन्दितपादपद्मविदुषां संपादयाभोजिता ।
रम्भासाम जनभिनन्दनमहानष्टा पदाभासुरैः ॥१॥

३८५१. चतुर्विंशति तीर्थङ्करस्तोत्र—कमलविजयगणि । पत्र सं० १५ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४६ । क मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३८५२. चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति—माघनन्दि । पत्र सं० ३ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१८ । क मण्डार ।

३८५३. चतुर्विंशति तीर्थङ्करस्तुति..... । पत्र सं० १ । आ० १०३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६१ । क मण्डार ।

३८५४. चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति..... । पत्र सं० ३ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० २३७ । क मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३८५५. चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र..... । पत्र सं० ६ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८२ । ट मण्डार ।

विशेष—स्तोत्र कट्टर बीसपन्थी आस्ताय का है । सभी देवी देवताओं का वर्णन स्तोत्र में है ।

३८५६. चतुष्पदीस्तोत्र..... । पत्र सं० ११ । आ० ८३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५७५ । अ मण्डार ।

३८५७. चामुण्डस्तोत्र—पृथ्वीधराचार्य । पत्र सं० २ । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३८१ । अ मण्डार ।

३८५८. चिन्तामणिपार्श्वनाथ जयमालस्तवन..... । पत्र सं० ४ । आ० ८×३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । २० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३४ । अ मण्डार ।

३८५९. चिन्तामणिपार्श्वनाथ स्तोत्रमंत्रसहित..... । पत्र सं० १० । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६० । अ मण्डार ।

३८६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८३० आसोज सुदी २ । वे० सं० १८१ । छ
भण्डार ।

३८६१. चित्रबंधस्तोत्र..... । पत्र सं० ३ । आ० १२×३३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४८ । छ भण्डार ।

विशेष—पत्र चिपके हुये हैं ।

३८६२. चैत्यबंदना..... । पत्र सं० ३ । आ० १२×३३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१०३ । छ भण्डार ।

३८६३. चौबीसस्तवन..... । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २०
काल × । ले० काल सं० १६७७ फागुन बुदो ७ । पूर्ण । वे० सं० २१२२ । छ भण्डार ।

विशेष—बहशीराम ने भरतपुर में रणधीरसिंह के राज्य में प्रतिलिपि की थी ।

३८६४. छंदसंग्रह..... । पत्र सं० ६ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५२ । छ भण्डार ।

विशेष—निम्न छंद हैं—

नाम छंद	नाम कर्ता	पत्र	विशेष
महावीर छंद	शुभचन्द्र	१ पर	×
विजयकीर्ति छंद	”	२ ”	×
गुरु छंद	”	३ ”	×
पार्श्व छंद	ब० लेखराज	३ ”	×
गुरु नामावलि छंद	×	४ ”	×
भारती संग्रह	ब० जिनदास	४ ”	×
चन्द्रकीर्ति छंद	—	४ ”	×
कृपण छंद	चन्द्रकीर्ति	५ ”	×
नेमिनाथ छंद	शुभचन्द्र	६ ”	×

३८६५. जगन्नाथाष्टक—राङ्गराचार्य । पत्र सं० २ । आ० ७×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
(जेनेतर साहित्य) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३३ । छ भण्डार ।

३८६६. जिनवरस्तोत्र.....। पत्र सं० ३। आ० ११^३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।

२० काल ×। ले० काल सं० १८८६। पूर्ण। वे० सं० १०२। च भण्डार।

विशेष—भोगीलाल ने प्रतिलिपि की थी।

३८६७. जिनगुणमाला.....। पत्र सं० १६। आ० ८×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। २०

काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४१। झ भण्डार।

३८६८. जिनधैर्यवन्दना.....। पत्र सं० २। आ० १०×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तवन।

२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०३५। झ भण्डार।

३८६९. जिनदर्शनाष्टक.....। पत्र सं० १। आ० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। २०

काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०२६। ट भण्डार।

३८७०. जिनपंजरस्तोत्र.....। पत्र सं० २। आ० ६^३×५^३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।

२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१५४। ट भण्डार।

३८७१. जिनपंजरस्तोत्र—कथञ्चनार्थ। पत्र सं० ३। आ० ८^३×४^३ इंच। भाषा-संस्कृत।

विषय-स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६। ख भण्डार।

विशेष—पं० मन्नालाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

३८७२. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। वे० सं० ३०। ग भण्डार।

३८७३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० २०५। छ भण्डार।

३८७४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० २६५। झ भण्डार।

३८७५. जिनवरदर्शन—पद्मनदि। पत्र सं० २। आ० १०^३×५ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय—

स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल सं० १८६४। पूर्ण। वे० सं० २०८। छ भण्डार।

३८७६. जिनवाणीस्तवन—जगताराम। पत्र सं० २। आ० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय—

स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७३३। च भण्डार।

३८७७. जिनशतकटीका—शंभुसाधु। पत्र सं० २६। आ० १०^३×४^३ इंच। भाषा-संस्कृत।

विषय-स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६१। क भण्डार।

विशेष—अन्तिम— इति शंभु साधुविरचित जिनशतक पंजिकायां वाग्भट्टानां नाम चतुर्थपरिच्छेद समाप्त।

३८७८. प्रति सं० २। पत्र सं० ३४। ले० काल ×। वे० सं० ४६८। ख भण्डार।

३८७६. जिनशतकटीका—नरसिंहभट्ट । पत्र सं० ३३ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६४ चैत्र सुदी १४ । वे० सं० २६ । व्य भण्डार ।

विशेष—ठाकर ब्रह्मदास ने प्रतिनिधि की थी ।

३८८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १६५६ पीष बुदी १० । वे० सं० २०० । क
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियाँ (वे० सं० २०१, २०२, २०३, २०४) और हैं ।

३८८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १६१५ भाद्रवा बुदी १३ । वे० सं० १०० । ख
भण्डार ।

३८८२. जिनशतकालङ्कार—समंतभट्ट । पत्र सं० १४ । आ० १३×७३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३० । ज भण्डार ।

३८८३. जिनशतकालङ्कार—समंतभट्ट । पत्र सं० ६ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८३६ । ट भण्डार ।

विशेष—गुजराती भाषा सहित है ।

३८८४. जिनस्तुति—शोभनमुनि । पत्र सं० ६ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १८७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

३८८५. जिनसहस्रनामस्तोत्र—आशाधर । पत्र सं० १७ । आ० ६×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०७६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियाँ (वे० सं० ५२६, ११२६, १०७६) और हैं ।

३८८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ५७ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७) और है ।

३८८७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८३३ कार्तिक बुदी ४ । वे० सं० ११४ । च
भण्डार ।

विशेष—पत्र ६ में आगे हिन्दी में तीर्थङ्करों की स्तुति और है ।

इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ११६, ११७) और हैं ।

३८८८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३३) और है ।

३८८६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६३ आसोज बुदी ४ । वे० सं० २८ । ज
भण्डार ।

विशेष—इसके प्रतिरिक्त लघु सामयिक, लघु स्वयंभूस्तोत्र, लघुसहस्रनाम एवं चैत्यबंदना भी है । अंकुरा-
रोपण मंडल का चित्र भी है ।

३८८७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १६५३ । वे० सं० ४७ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत सोल १६५३ त्रेफनावर्ण श्रीमूलसंघे भ० श्री विद्यानन्दि तत्पट्टे भ० श्री मल्लिभूषणतत्पट्टे
भ० श्री लक्ष्मीचंद तत्पट्टे भ० श्रीवीरचंद तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्र तत्पट्टे भ० वादिचंद
तेषामध्ये श्री प्रभाचन्द्र चेली बाइ तेजमती उपदेवनाथ बाइ अजोतमती नारायणाग्रामे इदं सहस्रनाम स्तोत्रं निजकर्म
क्षयार्थं लिखितं ।

इसी भण्डार से एक प्रति (वे० सं० १८६) और है ।

३८८१. जिनसहस्रनामस्तोत्र—जिनसेनाचार्य । पत्र सं० २८ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × ८ ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ५३२, ५४३, १०६४, १०६८) और हैं ।

३८८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ३१ । ग भण्डार ।

३८८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल × । वे० सं० ११७ क । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ११६, ११८) और हैं ।

३८८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६०३ आसोज सुदी १३ । वे० सं० १६५ । ज
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२५) और है ।

३८८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वे० सं० २६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६७) और है ।

३८८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० ३२० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३१६) और है ।

३८८७. जिनसहस्रनामस्तोत्र—सिद्धसेन दिवाकर । पत्र सं० ४ । आ० १२३×७ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८ । अ भण्डार ।

३८८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १७२६ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ८ ।
अ भण्डार ।

विशेष—पहले गद्य है तथा अन्त में ५२ श्लोक दिये हैं ।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीसिद्धसेनदिवाकरभट्टाकवीश्वरविरचितं श्रीसहस्रनामस्तोत्रसंपूर्णं । दुबे ज्ञानचन्द मे जीधराज गोदीका ने आत्मपठनार्थं प्रतिलिपि कराई थी ।

३८६६. जिनसहस्रनामस्तोत्र..... । पत्र सं० २६ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८११ । छ भण्डार ।

३६००. जिनसहस्रनामस्तोत्र..... । पत्र सं० ४ । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त निम्नपाठ और हैं— घंटाकरण मंत्र, जिनपंजरस्तोत्र पत्रों के दोनों किनारों पर सुन्दर बेलभूटे हैं । प्रति दर्शनीय है ।

३६०१. जिनसहस्रनामटीका..... । पत्र सं० १२१ । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६३ । क भण्डार ।

विशेष—यह पुस्तक ईश्वरदास ठोलिया की थी ।

३६०२. जिनसहस्रनामटीका—श्रुतसागर । पत्र सं० १८० । आ० १२×७ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १६५८ आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १६२ । क भण्डार ।

३६०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ से १६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८१० । छ भण्डार ।

३६०४. जिनसहस्रनामटीका—अमरकीर्ति । पत्र सं० ८१ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८८४ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १६१ । अ भण्डार ।

३६०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १७२५ । वे० सं० २६ । घ भण्डार ।

विशेष—बंघ गोपालपुरा में प्रतिलिपि हुई थी ।

३६०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० २०६ । छ भण्डार ।

३६०७. जिनसहस्रनामटीका..... । पत्र सं० ७ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८२२ आषाढ । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । ब भण्डार ।

३६०८. जिनसहस्रनामस्तोत्रभाषा—नाथूराम । पत्र सं० १६ । आ० ७×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल सं० १६५६ । ले० काल सं० १६८४ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २१० । छ भण्डार ।

३६०९. जिनोपकारस्मरण..... । पत्र सं० १३ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७ । क भण्डार ।

३६१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २१२ । छ भण्डार ।

३६११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १०६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ७ प्रतियां (वे० सं० १०७ से ११३ तक) और हैं ।

३६१२. रामोकारादिपाठ..... । पत्र सं० ३०४ । आ० १२×७ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८८२ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २३३ । छ भण्डार ।

विशेष—११८८ बार रामोकार मन्त्र लिखा हुआ है । अन्त में ध्यानतराय कृत समाधि मरण पाठ तथा २१८ बार श्रीमद्वृषभादि वर्द्धमानोत्तेभ्योनमः । यह पाठ लिखा हुआ है ।

३६१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २३४ । छ भण्डार ।

३६१४. रामोकारस्तवन..... । पत्र सं० १ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६३ । अ भण्डार ।

३६१५. तकाराक्षरीस्तोत्र..... । पत्र सं० २ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०३ । अ भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र की संस्कृत में व्याख्या भी दी हुई है । ताता ताती ततेतां ततति ततता ताति तातीत तता इत्यादि ।

३६१६. तीसचौबीसीस्तवन । पत्र सं० ११ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७५८ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २७६ । छ भण्डार ।

३६१७. दलालीनी सज्जाय..... । पत्र सं० १ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २१३७ । अ भण्डार ।

३६१८. देवतास्तुति—पद्मनंदि । पत्र सं० ३ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६७ । छ भण्डार ।

३६१९. देवागमस्तोत्र—आचार्य समस्तभद्र । पत्र सं० ४ । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७६५ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०८) और है ।

३६२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८६६ बैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १६६ । अ भण्डार ।

विशेष—अभयचंद साहू ने सवाई जयपुर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १६४, १६५) और हैं ।

३६२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८७१ ज्येष्ठ सुदी १३ । वे० सं० १३४ । छ
भण्डार ।

३६२२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६२३ वैशाख सुदी ३ । वे० सं० ७६ । ज
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७७) और है ।

३६२३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७२५ फागुन सुदी १० । वे० सं० ६ । झ
भण्डार ।

विशेष—गंजे दीनाजी ने संग्रहालय में प्रतिलिपि की थी । साह जोधराज गोदीका के नाम पर स्याही पीत
दी गई हैं ।

३६२४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० १८१ । झ भण्डार ।

३६२५. देवागमस्तोत्रटीका—आचार्य वसुनंदि । पत्र सं० २५ । प्रा० १३X५ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—स्तोत्र (वर्णन) । २० काल X । ले० काल सं० १५५६ भाद्रपद सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १२३ ।
झ भण्डार ।

विशेष—प्रवृत्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५५६ भाद्रपद सुदी २ श्री मूलसंघे संन्यासनाथे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये
भट्टारक श्री पद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभवन्द देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे मुनि श्रीरत्नकीर्ति-
देवास्तत्पट्टे मुनि हेमचंद्र देवास्तदास्नाथे श्रीपद्मावास्तव्ये खण्डेलवालान्वये बीजुबागोत्रे सा. मदन भार्या हरिसिंघो पुत्र
सा. परिसराम भार्या मघी एतैसास्त्रमिदं लेखयित्वा ज्ञानपात्राय मुनि हेमचन्द्राय भक्त्याविधिना प्रदत्तं ।

३६२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६४४ भाद्रपद सुदी १२ । वे० सं० १६० । ज
भण्डार ।

विशेष—कुछ पत्र पानी में धोड़े भल गये हैं । यह पुस्तक पे० फतेहलालजी की है ऐसा लिखा हुआ है ।

३६२७. देवागमस्तोत्रभाषा—जयचंद व्यासदा । पत्र सं० १३४ । प्रा० १२X७ इंच । भाषा—
हिन्दी । विषय—न्याय । २० काल सं० १८६६ चैत्र सुदी १४ । ले० काल सं० १६३८ माह सुदी १० । पूर्ण । वे० सं०
३०६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३१०) और है ।

३६२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ ले ८ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० ३०६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०८) और है ।

३६२६. देवागमस्तोत्रभाषा..... पत्र सं० ४ । आ० ११×७३ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । (द्वितीय परिच्छेद तक) वे० सं० ३०७ । क भण्डार ।

विशेष—न्याय प्रकरण दिया हुआ है ।

३६३०. देवाग्रभस्तोत्रवृत्ति—विजयसैनसूरि के शिष्य अणुभा । पत्र सं० ६ । आ० ११×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८६४ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १९६ । भ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३६३१. धर्मचन्द्रप्रबन्ध—धर्मचन्द्र । पत्र सं० १ । आ० ११×४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७२ । अ भण्डार ।

विशेष—पूरी प्रति निम्न प्रकार है—

कीतरागायनमः । साटा छंद—

सव्वगो रुददं तिप्राल विसऊ सव्वत्थ वत्थुगदो ।
विस्सचवस्युवरो स आ अविस्सऊ जो ईस भाऊ समो ।
सम्मदंसण्णाणसच्चरियदोईसो मुणीणां गमो पत्ताणां
त चउड्डु सविमलो सिद्धो बसं कुज्जओ ॥१॥

विज्जुमाला छंद—

देवणां सेवा कामोणां बाणीए अंबावाऊणं ।
गुरुणंदो साराहीत्ताणां विज्जुमाला सोहीआणं ॥२॥

भुजंगप्रयात छंद—

वरे मूलसंघे बलात्कारण्णो सरस्सत्तिगच्छे पभंदोपयण्णो ।
वरो तस्स सिस्सो धम्मंदु जीओ बुहो चारुचारित भूभंगजीओ ॥३॥

आर्याछंद—

सअल कलपव्वीणो लीणो परमागमस्स सत्थम्मि ।
भव्वि अजण उट्ठारो धम्मचदो जओ मुण्णिदो ॥४॥

कामावतारछंद—

मिच्छाक अक्खेण आईसरेण आइट्टिसुण्णाण पव्वज्जभिगाण । ॥१॥
सिस्साण माणेण सत्थाण दाणेण धम्मोपएसेण बूहाणरंजेण ॥२॥
मिच्छ.....तप्पस्ससूरेण दुम्मत्त केडेण मुअव्वपूरेण ॥३॥
भव्वण भव्वेण जोआण लोएण भाणग्गि भूहेण कम्महे हूएण ॥४॥
जित्थोइ मादेण कामावआरेण इंदीकट्टरेण मोक्खवक्कत्तेण ॥५॥

जलाचंदेजारा भव्वाज्जगोभारा भत्ताजईआरा कत्तासुहभारा ॥६॥
धम्मदुक्कंदेरा सद्धम्मचंदेरा एम्मोत्थुकारेरा भत्तिव्वभारेरा ॥
त्थुउ अरिट्ठेरा रोमीवि तित्थेरा दासेरा बूहेरा संकुज्जभत्तेरा ॥७॥

द्वात्रिंशत्यथ कमलबंधः ॥

आर्याछंद—

कोहो लोहोवत्तो भत्तो अजईरा साससो सीराओ ।
मा अमोहवि सीराओ मारत्थो कंकणो छेसी ॥६॥

भुजंगप्रयात्तछंद—

सुचित्तो वितित्तो विभामो जईसो सुसीलो सुलीलो सुसोहो विईसो ।
सुभम्मो सुम्मो सुक्कम्मो सुसीसो विराओ विमामो विचिट्ठो विमोसो ॥१०॥

आर्याछंद—

सम्मद्दंसणणारां सच्चारित्तं तहे वसु राणो ।
चरइ चरावइ धम्मो चंदो अविपुण्ण विक्खाओ ॥११॥

मौक्तिकदामछंद—

तिलंग हिमाचल मालव अंग वरव्वर केरल कण्णाड बंग ।
तिलात्त कलिंग कुरंगडहाल कराडअ गुज्जर डंड तमाल ॥१२॥
सुपोट अन्नंति किरात्त अकीर सुत्तुक्क तुक्क बराड सुवीर ।
सस्त्यल दक्खण पूरवदेस सुणागवचाल सुकुंभ लसेस ॥१३॥
चऊड गऊड सुक्कणलाट, सुवेट सुभोट सुदव्विड राट ।
सुदेस विदेसहं आचइ राअ, विवेक विचक्खण पूजइ पाअ ॥१४॥
सुचक्कल पीणपओहरि एारि, रणज्जरा रोउर पाइ विधारि ।
सुविभम अंति अहाउ विभाउ, सुगावइ गीउ अणोहरसाउ ॥१५॥
सुउज्जल मुत्ति अहीर पवाल, सुपूरउ रिम्मल रंमिहि बाल ।
चउक्क विउप्परि धम्मविचंदे बधाअउ अवलहि वारु सुभंद ॥१६॥

आर्याछंद—

जइ जणुदित्तिवर सहिओ, सम्मदिट्ठि साअ आइ परि आरिउ ।
जिराधम्मभवणखंभो विस अंख अंकरो जओ जअइ ॥१७॥

स्त्रिंशत्सु—

जत पतिव्र विवाह उद्धारकं सिरस सत्वाण दाणाभरो माणकं ।

धम्मणी राणधारा रा भव्वाणकं चारुसस्स एउ द्वारसिप्पादकं ॥१८॥

वद्धहा अगली भावणाभावण, दसाधम्मा वरा सम्पदा पालए ।

चारु चारित्तहि भूसिणी विभग्हो, धम्मचंदो जघो जित्त इदिग्हो ॥१९॥

पञ्चदश—

सुरणर खगचरखचर चारु चच्चि अकम जिएवर ।

चरण कमलहि अधरण सरण गोयम जइ जइवर ।

पोसि अवित्तर धम्म सोसि अवकमपबलतर ।

उद्धारी कयसमि वग्गभव्व चातक जलधर ।

वम्मह सप्प दप्प हरणवर समत्थ तारण तरण ।

जय धम्मधुरंधर धम्मचंद सयलराघ मंगलकरण ॥२०॥

इति धर्मचन्द्रप्रबंध समाप्तः ॥

३६३२. नित्यपाठसंग्रह.....। पत्र सं० ७। आ० ८३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-

स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८२०। अ भण्डार।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

बड़ा दर्शन—	संस्कृत	—
छोटा दर्शन—	हिन्दी	बुधजन
भूतकाल चौबीसी—	"	×
पंचमंगलपाठ—	"	रूपचंद (२ मंगल है)
अभिषेक विधि—	संस्कृत	×

३६३३. निर्वाणकाण्डगाथा.....। पत्र सं० ५। आ० ११×५ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तवन।

२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६५। अ भण्डार।

विशेष—महावीर निर्वाण कल्याणक पूजा भी है।

३६३४. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ३७२। अ भण्डार।

३६३५. प्रति सं० ३। पत्र सं० २। ले० काल सं० १८८४। वे० सं० १८७। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८८) और है।

३६३६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार ३ प्रतियां (वे० सं० १३६, २५६ २५६/२) और हैं ।

३६३७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४०३ । व्य मण्डार ।

३६३८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १८६३ । ट मण्डार ।

३६३९. निर्वाणकाण्डटीका..... । पत्र सं० २४ । आ० १०×५ इंच । भाषा—प्राकृत संस्कृत । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६ । ख मण्डार ।

३६४०. निर्वाणकाण्डभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र सं० ३ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल सं० १७४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७५ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ३७३, ३७४) और हैं ।

३६४१. निर्वाणभक्ति..... । पत्र सं० २४ । आ० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८२ । क मण्डार ।

३६४२. निर्वाणभक्ति..... । पत्र सं० ६ । आ० ६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७५ । ट मण्डार ।

विशेष—१६ पद्य तक है ।

३६४३. निर्वाणसप्तशतीस्तोत्र..... । पत्र सं० ६ । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल सं० १६२३ आसोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० । ज मण्डार ।

३६४४. निर्वाणस्तोत्र..... । पत्र सं० ३ से ५ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७५ । ट मण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका दी हुई है ।

३६४५. नेमिनरेन्द्रस्तोत्र—जरत्नाथ । पत्र सं० ८ । आ० ६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १७०४ भाद्रवा बुद. २ । पूर्ण । वे० सं० २३२ । अ मण्डार ।

विशेष—पं० दामोदर ने शेरपुर में प्रतिलिपि की थी ।

३६४६. नेमिनाथस्तोत्र—पं० शाली । पत्र सं० १ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । वे० सं० ३४० । अ मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । द्वयक्षरी स्तोत्र है । प्रदर्शन योग्य है ।

३६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १८३० । ट मण्डार ।

३६४८. नेमिस्तवन—ऋषि शिव । पत्र सं० २ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० सं० १२०८ । अ भण्डार ।

विशेष—तीस तोषंछुर स्तवन भी है ।

३६४९. नेमिस्तवन—जितसागरगणी । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१५ । अ भण्डार ।

विशेष—दूसरा नेमिस्तवन और है ।

३६५०. पञ्च कल्याणकपाठ—हरचंद । पत्र सं० १ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३८ । अ भण्डार ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न है—

प्रारम्भ—

कल्याण नायक नमो, कल कुरुह कुलकंद ।

कर्मध दुर कल्याण कर, बुधि कुल कमल दिनंद ॥१॥

मंगल नायक वैदिकै, मंगल पंच प्रकार ।

वर मंगल मुक्त दीजिये, मंगल वरनन सार ॥२॥

अन्तिम—धन छंद—

यह मंगल माला सब जनविधि है,

सिख साला मल में धरनी ।

बाला ब्रध तहन सब जग की,

मुख समूह की है भरनी ॥

मन वच तन अधान करै गुन,

तिनके चहुंगति दुख हरनी ॥

ताते भविजन पढि कढि जगते,

पंचम गति वामा वरनी ॥११६॥

दोहा—

व्योम अंगुल न मापिये, गनिये मन्त्राधार ।

उडपन मित भू पैख्यो, त्यो गुन वरने सार ॥११७॥

तीनि तीनि बसु चंद्र, संवत्सर के अंक ।

जेष्ठ शुक्ल सप्तम दिवस, पूरन पढी निसंक ॥११८॥

॥ इति पंचकल्याणक संपूर्ण ॥

३६५१. पञ्चनमस्कारस्तोत्र—आचार्य विद्यानंदि । पत्र सं० ४ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ फागुण । पूर्ण । वे० सं० ३५ । अ मण्डार ।

३६५२. पञ्चमंगलपाठ—रूपचंद । पत्र सं० ६ । आ० १२३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८४८ कार्तिक शुद्ध २ । पूर्ण । वे० सं० ५०२ ।

विशेष—ग्रन्थ में तीस चौबीसी के नाम भी दिये हुये हैं । पं० खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ६५७, ७७१, ८६०) और हैं ।

३६५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६३७ । वे० सं० ४१४ । क मण्डार ।

३६५४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ३६४ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति और है ।

३६५५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८८६ आसोज सुदी १५ । वे० सं० ६१८ । च मण्डार ।

विशेष—पत्र ४ चौथा नहीं है । इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३६) और है ।

३६५६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १४५ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३६) और है ।

३६५७. पंचस्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० ५३ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१८ । अ मण्डार ।

विशेष—पाचों ही स्तोत्र टीका सहित हैं ।

स्तोत्र	टीकाकार	भाषा
१. एकीभाव	नागचन्द्र सूरि	संस्कृत
२. कल्याणमन्दिर	हर्षकीर्ति	"
३. विषाणहार	नागचन्द्रसूरि	"
४. मृगालचतुर्विंशति	आणाधर	"
५. सिद्धिप्रियस्तोत्र	—	"

३६५८. पंचस्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० २४ । आ० ६×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४०० । अ मण्डार ।

३६५९. पंचस्तोत्रटीका..... । पत्र सं० ५० । आ० १२×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २००९ । ट मण्डार ।

विशेष—भक्तामर, विष्णुपहार, एकीभाव, कल्याणमंदिर, भूपालत्रतुविंशति इन पांच स्तोत्रों की टीका है।

३६६०. पद्मावत्यष्टकवृत्ति—पार्श्वदेव । पत्र सं० १५ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६७ । पूर्ण । वे० सं० १४४ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम—ग्रन्थायां पार्श्वदेवविरचितायां पद्मावत्यष्टकवृत्तौ यत् किमप्यबोधयति तत्सर्वं सर्वाभिः श्रुतव्यं देवताभिरपि । वर्षाणां द्वादशभिः शतैर्गतेऽनुत्तरैरियं वृत्ति वैशाले सूर्यदिने समाप्ता शुक्लपंचम्यां अस्याक्षरगणनातः पंचशतानि जातानिद्वविंशदक्षराणि वामदनुष्यल्लंघिताः प्रायः ।

इति पद्मावत्यष्टकवृत्तिसमाप्ता ।

३६६१. पद्मावतीस्तोत्र..... । पत्र सं० १५ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३२ । अ भण्डार ।

विशेष—पद्मावती पूजा तथा शान्तिनाथस्तोत्र, एकीभावस्तोत्र और विष्णुपहारस्तोत्र भी हैं ।

३६६२. पद्मावती की ढाल..... । पत्र सं० २ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८० । अ भण्डार ।

३६६३. पद्मावतीदण्डक..... । पत्र सं० १ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५१ । अ भण्डार ।

३६६४. पद्मावतीसहस्रनाम..... । पत्र सं० १२ । आ० १०×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १६०२ । पूर्ण । वे० सं० ६६५ । अ भण्डार ।

विशेष—शान्तिनाथाष्टक एवं पद्मावती कवच (मंत्र) भी दिये हुये हैं ।

३६६५. पद्मावतीस्तोत्र..... । पत्र सं० ६ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १०३२, १८६८) और हैं ।

३६६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६३३ । वे० सं० २६४ । अ भण्डार ।

३६६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २०६ । अ भण्डार ।

३६६८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ४२६ । अ भण्डार ।

३६६९. परमज्योतिस्तोत्र—बनारसीदास । पत्र सं० १ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२११ । अ भण्डार ।

३६७०. परमात्सराजस्तवन—पद्मार्जुन । पत्र सं० २ । आ० ६×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२३ । अ भण्डार ।

३६७१. परमात्मराजस्तोत्र—भ० सकलकीर्ति : पत्र सं० ३ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—स्तोत्र । २० काल × । ख० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६५ । अ मण्डार ।

अथ परमात्मराज स्तोत्र लिख्यते

यन्नामसंस्तवकलात् महतां महत्कथापटो, विमुक्तय दहाशु भवन्ति पूर्णाः ।
सर्वार्थसिद्धजनकाः स्वनिदेकमूर्ति, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥१॥
यद्विज्ञानवज्रहृन्नामहसां प्रयांति, कर्म्मद्रयोति विषमाः सतचूर्णतां च ।
अंतातिगावरगुणाः प्रकटाभवेयुर्भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥२॥
यस्यावबोधकलनात्त्रिजगत्प्रदीपं, श्रीकेवलोदयमनंतमुल्लासिमाशु ।
संतः श्रवन्ति परमं भुवनार्थं संद्यं, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥३॥
यद्वर्त्तेनमृन्मयो मूलमोगलीना, ध्याने निजात्मन इह त्रिजगत्प्रदायिनि ।
पश्यन्ति केवलदृशा स्वकराश्रितान्वा, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥४॥
यद्विज्ञानाधिकरणं तद्विज्ञानाच्च, प्रत्यक्ष्यन्ति कर्म्मरिपवोभवकोटिं जाताः ।
अभ्यन्तरेऽत्रविनिधाः सकलाऽर्थयः स्फुर्भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥५॥
सन्नाममावजपनात् स्मरणाच्च यस्य, दुःकर्म्मदुर्मलचयाद्विमला भवन्ति ।
दक्षा जिनेन्द्रगणभृत्सुपर्दं लभन्ते, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥६॥
यं स्वान्तरेतु विमलं विमलाधिपृष्ठय, शुक्लेन तत्त्वमसमं परमार्थरूपं ।
ग्रहस्पदं त्रिजगतां शरणं श्रवन्ते, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥७॥
यद्विज्ञानशुक्लापविनाखिलकर्म्मशैलान्, हत्वा समग्र्यशिवदाः स्तव्यदंढनाच्चीः ।
सिद्धासदष्टगुणभूषणभाजनाः स्फुर्भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥८॥
यस्याप्तये मृगगिनी विधिनाचरन्ति, व्याचारवन्ति यमिनो वरपञ्चभेदान् ।
व्याचारसारजनितान् परमार्थबुद्ध्या, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥९॥
यं ज्ञातुमात्मसुविदो यातपाठकाश्च, सदीगपूर्वजलधैर्लघु यांति पारं ।
अन्यापश्यन्तिशिवदं परतत्त्वधीजं, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥१०॥
ये साधयन्ति वरयोगवलेन नित्यमध्यात्ममार्गानिरतावनपर्वतादी ।
श्रीसाधवः शिवगतेः करमं तिरस्थं, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥११॥
रागदोषमलिनोऽपि निर्मलो, देहवानपि च देह वञ्जितः ।
कर्म्मदानपि कुकर्म्मदूरगो, निश्चयेन भुवि यः स नन्दतु ॥१२॥

जन्ममृत्युकलितो भवान्तके, एक रूप इह योध्यनेकधा ।

व्यक्त एव यमिनां न रागिणां, यश्चिदात्मक इहास्तुनिर्मलः ॥१३॥

यत्तत्त्वं ध्यानगम्यं परपदकर तीर्थनाथादिसेव्यं ।

कर्मघ्नं ज्ञानदेहं भवभयमथनं ज्येष्ठमानंदमूलं ॥

प्रतापीतं गुणाप्तं रहितविधिगणं सिद्धसादृश्यरूपं ।

तद्वंदे स्वात्मतत्त्वं शिवसुखगतये स्तोमि युक्त्वाभजेहं ॥१४॥

पठति नित्यं परमात्मराजमहास्तवं ये विबुधाः कितं मे ।

तेषां चिदात्माविरलोगद्वरो ध्यामी गुणी स्यात्परमात्करः ॥१५॥

इत्थं यो वारवारं गुणगणारचनैर्बदितः संस्तुतोऽस्मिन्

सारे ग्रन्थे चिदात्मा समगुणजलधिः सोस्तुमे व्यक्तरूपः ।

ज्येष्ठः स्वध्यानदातास्त्रिविधिवपुषां हानये त्रितनुद्वयं

मन्मत्येवोपकर्ता प्रकटनिजगुणो धैर्यशाली च शुद्धः ॥१६॥

इति श्री सकलकीर्तिभट्टारकविरचितं परमात्मराजस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

३६७२. परमानंदपंचविंशति..... । पत्र सं० १ । आ० ६५४ ई० । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३३ । अ भण्डार ।

३६६३. परमानंदस्तोत्र..... । पत्र सं० ३ । आ० ७६५ ई० । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३० । अ भण्डार ।

३६७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० २६८ । अ भण्डार ।

३६७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २१२ । अ भण्डार ।

विशेष—फूलचन्द विन्दायका ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २११) और है ।

३६७६. परमानंदस्तोत्र..... । पत्र सं० ३ । आ० ११५७ ई० । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल सं० १६६७ फागुण बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ४३८ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी ग्रंथ भी दिवा हुआ है ।

३६७७. परमार्थस्तोत्र..... । पत्र सं० ४ । आ० ११६५ ई० । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०४ । अ भण्डार ।

विशेष—सूर्य की स्तुति की गयी है । प्रथम पत्र में कुछ जिवने में रह गया है ।

३६७८. पाठसंग्रह पत्र सं० ३६ । आ० ४३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६२८ । अ भण्डार ।

निम्न पाठ हैं— जैन गायत्री उर्फ वज्राक्षर, शान्तिस्तोत्र, एकीभावस्तोत्र, रामोकारवलय, न्हावण

३६७९. पाठसंग्रह पत्र सं० १० । आ० १२×७ १/२ इंच । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६८ । अ भण्डार ।

३६८०. पाठसंग्रह—संग्रहकर्त्ता-जैतराम आफना । पत्र सं० ७० । आ० ११ १/२×७ १/२ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६१ । क भण्डार ।

३६८१. पात्रकेशरीस्तोत्र पत्र सं० १७ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—५० श्लोक हैं । प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

३६८२. पार्थिवेश्वरचिन्तामणि पत्र सं० ७ । आ० ७ १/२×१३ १/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६० भाद्रवा सुदी ८ । वे० सं० २३४ । ज भण्डार ।

विशेष—मृन्दावन ने प्रतिलिपि की थी ।

३६८३. पार्थिवेश्वर पत्र सं० ३ । आ० ७ १/२×४ १/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १५४४ । पूर्ण । अ भण्डार ।

३६८४. पार्श्वनाथ पद्मावतीस्तोत्र पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

३६८५. पार्श्वनाथ लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मप्रभदेव । पत्र सं० १ । आ० ६×४ १/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६४ । स्व भण्डार ।

३६८६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६२ । अ भण्डार ।

३६८७. पार्श्वनाथ एवं वर्द्धमानस्तवन पत्र सं० १ । आ० १०×४ १/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८ । छ भण्डार ।

३६८८. पार्श्वनाथस्तोत्र पत्र सं० ३ । आ० १० १/२×१ १/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४३ । अ भण्डार ।

विशेष—लघु सामायिक भी है ।

३६८६. पार्श्वनाथस्तोत्र.....। पत्र सं० १२। आ० १०×४ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५३। अ भण्डार।

विशेष—मन्त्र सहित स्तोत्र है। अक्षर सुन्दर एवं मोटे हैं।

३६८७. पार्श्वनाथस्तोत्र.....। पत्र सं० १। आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७६६। अ भण्डार।

३६८८. पार्श्वनाथस्तोत्र.....। पत्र सं० १। आ० १० $\frac{३}{४}$ ×९ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६३। अ भण्डार।

३६८९. पार्श्वनाथस्तोत्रटीका.....। पत्र सं० २। आ० ११×५ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३४२। अ भण्डार।

३६९०. पार्श्वनाथस्तोत्रटीका.....। पत्र सं० २। आ० १०×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६८७। अ भण्डार।

३६९१. पार्श्वनाथस्तोत्रभाषा—द्यानतराय। पत्र सं० १। आ० १०×५ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—हिन्दी।
विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०५५। अ भण्डार।

३६९२. पार्श्वनाथाष्टक.....। पत्र सं० ४। आ० १२×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५७। अ भण्डार।

विशेष—प्रति मन्त्र सहित है।

३६९६. पार्श्वमहिम्नस्तोत्र—महामुनि राजसिंह। पत्र सं० ४। आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×६ इंच। भाषा—संस्कृत।
विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल सं० १६८७। पूर्ण। वे० सं० ७७०। अ भण्डार।

३६९७. प्रश्नोत्तरस्तोत्र.....। पत्र सं० ७। आ० ८×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २०
काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८६। अ भण्डार।

३६९८. प्रातःस्मरणमन्त्र.....। पत्र सं० १। आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४८६। अ भण्डार।

३६९९. भक्तामरपञ्चिका.....। पत्र सं० ८। आ० १३×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।
२० काल ×। ले० काल सं० १७८१। पूर्ण। वे० सं० ३२८। अ भण्डार।

विशेष—श्री हीरानन्द ने द्रव्यपुर में प्रतिलिपि की थी।

४०००. भक्तसरस्तोत्र—भानुतुंगाचार्य । पत्र सं० ८ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२०३ । अ भण्डार ।

४००१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७२० । वे० सं० २६ । अ भण्डार ।

४००२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १७५५ । वे० सं० १०१५ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

४००३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० २२०१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति ताड़पत्रीय है । आ० ५×२ इंच है । इसके प्रतिरिक्त २ पत्र पुट्टों की जगह है । २×१३ इंच चौड़े पत्र पर रामोकार मन्त्र भी है । प्रति प्रदर्शन योग्य है ।

४००४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १७५५ । वे० सं० १०१५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ६ प्रतियाँ (वे० सं० ४४१, ६५६, ६७३, ८६०, ८२०, ८५६, ११३५, ११८६, १३६६) और हैं ।

४००५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८६७ पोष सुदी ८ । वे० सं० २५१ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं । मूल प्रति मधुरादास ने निमलपुर में लिखी तथा उदैराम ने टिप्पण किया । इसी भण्डार में तीन प्रतियाँ (वे० सं० १२८, २८८, १८५६) और हैं ।

४००६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ७४ । घ भण्डार ।

४००७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ६ में ११ । ले० काल सं० १८७८ ज्येष्ठ बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० ५४६ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १२ प्रतियाँ (वे० सं० ५३६ से ५४५ तथा ५४७ से ५५०, ५५२) और हैं ।

४००८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ७३८ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । इसी भण्डार में ७ प्रतियाँ (वे० सं० २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, ७३८, ७३९) और हैं ।

४००९. प्रति सं० १० । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १८२२ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ६ प्रतियाँ (वे० सं० १३४ (४) १३६, २२६) और हैं ।

४०१०. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १७० । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार एक प्रति (वे० सं० २१५) और है ।

४०११. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ५ । ले० काल X । वे० सं० १७५ । ज भण्डार ।

४०१२. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८७७ पौष सुदी १ । वे० सं० २६३ । अ
विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० २६६, ३३६, ५२५) भी हैं ।

४०१३. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ३ से ३६ । ले० काल सं० १६३२ । अपूर्ण । वे० सं० २०१३ । ट
भण्डार ।

विशेष—इस प्रति में ५२ श्लोक हैं । पत्र १, २, ४, ६, ७, ९, १६ यह पत्र नहीं हैं । प्रति हिन्दी व्या-
ख्या सहित है । इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १६३४, १७०४, १९६६, २०१४) भी हैं ।

४०१४. भक्तभरस्तोत्रवृत्ति—ब्र० रायमल । पत्र सं० ३० । आ० ११३ X ६ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १६६६ । ले० काल सं० १७६१ । पूर्ण । वे० सं० १०७६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की टीका श्रीवापुर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में की गयी । प्रति बन्धा सहित है ।

४०१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १७२४ आसोज बुदी ६ । वे० सं० २८७ । अ
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४३) भी है ।

४०१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० । ले० काल सं० १६११ । वे० सं० ५४४ । क भण्डार ।

४०१७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४६ । ले० काल X । वे० सं० ६५ । ग भण्डार ।

विशेष—फतेखन्द गंगवाल ने मन्नालाल कासलीवाल से प्रतिलिपि कराई ।

४०१८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १७५४ पौष बुदी ८ । वे० सं० ५५७ । क
भण्डार ।

४०१९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १८३२ पौष सुदी २ । वे० सं० ६६ । छ
भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में पं० सवाईराय ने नेमिनाथ चैत्यालय में ईसरदास की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी ।

४०२०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८७३ चैत्र बुदी ११ । वे० सं० १५ । ज
भण्डार ।

विशेष—हरिनारायण ब्राह्मण ने पं० कालूराम के पठनार्थ आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

४०२१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६८८ फागुन बुदी ८ । वे० सं० २८ । अ
भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति— संवत् १६८८ वर्षे काष्ठेण बुद्धी न शुक्रवार तद्विषय अनुराध व्यतिपात नाम जोगे महा-
राजविराज श्री महाराजाराव छत्रसालजी बुंदीराज्ये इदं पुस्तकं लिखाइतं । सहि श्री स्योपा तत्पुत्र सहलाल तत् पुत्र
साह श्री धणराज भाई मनराज गोत्रे पटवोड जाती बत्रेवाल इदं पुस्तकं पुनिरुप दीयते । लिखतं जोसी मराइण ।

४०२२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १७६१ काष्ठेण । वे० सं० २०३ । अ भण्डार ।

४०२३. भक्तामरस्तोत्रटीका—इर्षकीर्तिसूरि । पत्र सं० १० । मा० १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७६ । अ भण्डार ।

४०२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० १६२५ । अ भण्डार ।

विशेष—इस टीका का नाम भक्तामर प्रदीपिका दिया हुआ है ।

४०२५. भक्तामरस्तोत्रटीका..... । पत्र सं० १२ । मा० १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६१ । अ भण्डार ।

४०२६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १८४४ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र चिपके हुये हैं ।

४०२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८७२ पौष बुद्धी १ । वे० सं० २१०६ । अ
भण्डार ।

विशेष—समलाल ने श्रीतलनाथ के चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति (वे०
सं० ११६८) भी है ।

४०२८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० १६६ । अ भण्डार ।

४०२९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४६ ।

विशेष—२६वें काव्य तक है ।

४०३०. भक्तामरस्तोत्रटीका..... । पत्र सं० ११ । मा० १२ $\frac{१}{२}$ ×८ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।
विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १६१८ चैत बुद्धी ८ । पूर्ण । वे० सं० १६१२ । अ भण्डार ।

विशेष—अक्षर मोटे हैं । संस्कृत तथा हिन्दी में दोफा दी हुई है । संगही समलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

अ भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०८२) भी है ।

४०३१. भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्र सहित..... । पत्र सं० २७ । मा० १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८४३ वैशाख बुद्धी ११ । पूर्ण । वे० सं० २८५ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री नयनसागर ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । अन्तिम २ पृष्ठ पर उपसर्ग हर स्तोत्र दिया हुआ है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५१) और है ।

४०३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८१३ वैशाख सुदी ७ । वे० सं० १२६ । अ भण्डार ।

विशेष—गोविंदगढ़ में पुरुषोत्तमसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

४०३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ६७ । अ भण्डार ।

विशेष—मन्त्रों के चित्र भी हैं ।

४०३४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८२१ वैशाख सुदी ११ । वे० सं० ८१ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० सदाराम के शिष्य गुलाब ने प्रतिलिपि की थी ।

४०३५. भक्तामरस्तोत्रभाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ६४ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी मद्य । विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १८७० कार्तिक सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ५४१ ।

विशेष—क भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ५४२, ५४३) और हैं ।

४०३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १८६० । वे० सं० ५५६ । क भण्डार ।

४०३७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १८३० । वे० सं० ६५४ । अ भण्डार ।

४०३८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १८०४ वैशाख सुदी ११ । वे० सं० १७८ । छ भण्डार ।

४०३९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २७३ । क भण्डार ।

४०४०. भक्तामरस्तोत्रभाषा—हेमराज । पत्र सं० ८ । आ० ८३×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११२५ । अ भण्डार ।

४०४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८८४ माघ सुदी २ । वे० सं० ६४ । ग भण्डार ।

विशेष—दीवान अमरचन्द के मन्दिर में प्रतिलिपि की गयी थी ।

४०४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ से १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५५१ । क भण्डार ।

४०४३. भक्तामरस्तोत्रभाषा—गंगाराम । पत्र सं० २ से २७ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६७ । अपूर्ण । वे० सं० २००७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । पहिले मूल फिर गंगाराम कृत सवैया, हेमचन्द्र कृत पद्य, वहीं २ भाषा तथा इसमें आगे ऋद्धि मन्त्र सहित है ।

अन्त में लिखा है— साहजी जानजी रामजी उनके २ पुत्र शोलालजी, लघु आता चैनमुखजी ने ऋषि भामचन्द्रजी जता को यह पुस्तक पुष्पार्थ दिया सं० १८७२ का साल में ककोड में रहे छै ।

४०४४. भक्तारस्तोत्रभाषा..... । पत्र सं० ६ से १० । आ० १०×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र : २० काल × । ले० काल सं० १७८७ । संपूर्ण । वे० सं० १२६४ । अ भण्डार ।

४०४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८२८ मंगसिर बुदी ६ । वे० सं० २३६ । छ भण्डार ।

विशेष—भूधरदास के पुत्र के लिये संभूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

४०४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ६५३ । च भण्डार ।

४०४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० १५७ । झ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में पल्लाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४०४८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८०१ चैत्र बुदी १३ । वे० सं० २६० । व भण्डार ।

४०४९. भक्तारस्तोत्रभाषा । पत्र सं० ३ । आ० १०½×७½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५२ । च भण्डार ।

४०५०. भूपालचतुर्विंशतिकास्तोत्र—भूपाल कवि । पत्र सं० ८ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८४३ । पूर्ण । वे० सं० ४१ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी उच्चा टीका सहित है । अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३२३) और है ।

४०५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० २६८ । ख भण्डार ।

४०५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ५७२ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७३) है ।

४०५३. भूपालचतुर्विंशतिटीका—आशाधर । पत्र सं० १४ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १७७८ सादवा बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री विनयचन्द्र के पठनार्थ पं० आशाधर ने टीका लिखी थी । पं० हीराचन्द्र के शिष्य चोखचन्द्र के पठनार्थ मौजमाबाद में प्रतिलिपि कराई गई ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है— संवत्सरे वसुमुनिसप्तैन्दु (१७७८) मिते भाद्रपद कृष्णा द्वादशी तिसी भोजमाबावनगरे श्रीमूलसंघे तंयाभ्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकोत्तम श्री श्री १०८ देवेन्द्रकीर्तिजी कस्य शासनकारी बुधजी श्रीहीरानन्दजीकस्य शिष्येन विनयमता जीवचन्द्रेणस्वशयेन स्वपठनार्थं लिखितेयं भूपाल चतुर्विंशतिका टीका विनयचन्द्रस्यार्थमित्याशापरविरचिताभूपालचतुर्विंशते जितेन्द्रस्तुतिटीका परिसंभासा ।

अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४०) और है ।

४०५३. प्रति सं० ३० पत्र सं० १६ । वि० काल सं० १८१२ मंगसिर सुदी १० । वे० सं० २३१ । क भण्डार ।

विशेष— प्रशस्ति—सं० १५३२ वर्षे मार्ग सुदी १० गुरुवासरे श्रीघाटमपुरशुभस्थाने श्रीचन्द्रप्रभुचेत्यालय निस्थिते श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये.....।

४०५४. भूपालचतुर्विंशतिकास्तोत्रटीका—विनयचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२० ।

विशेष—श्री विनयचन्द्र नरेन्द्र द्वारा भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र रचा गया था ऐसा टीका की पुष्पिका में लिखा हुआ है । इसका उल्लेख २७वें पद्य में निम्न प्रकार है ।

यः विनयचन्द्रनामायतीवरो जनि समभूत । ललितचंद्रान् । उपशमद्वयोपक्षेपतेयमुपशमः साक्षान्भूतिमान् सः कथंभूतः सच्चकोरचन्द्रः संतः पंडितः एव चकोराः तेषां प्रमोदने द्वितीयश्चन्द्रः यस्यशुचि चरितं चरित्रनोः शुचि च तच्चरितं च तच्चरणा शीलं शुचि चरित चरिण्युः तस्य वाचो वाग्यः जगत्लोकाधिपवन्ति कथंभूतावाचः अमृतंगर्भा अमृतंगर्भे वासां तास्तथोक्ताः शास्त्रसंदर्भगर्भाः कावसाणां संदर्भाः विस्ताराः शास्त्रसंदर्भास्तेगर्भे वासां तास्तासां ॥२७॥ इति विनयचन्द्रनरेन्द्र विरचितं भूपाल स्तोत्र समाप्तं ।

प्रारम्भ में टीकाकार का मंगलाचरण नहीं है । मूल स्तोत्र की टीका प्रारम्भ करदी गई है ।

४०५६. भूपालचौबीसीभाषा—पद्मलाल चौधरी । पत्र सं० २४ । आ० १२½×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १६३० चैत्र सुदी ४ । ले० काल सं० १६३० । पूर्ण । वे० सं० ५६१ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६२) और है ।

४०५७. मृत्युमहोत्सव..... । पत्र सं० १ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६३ । क भण्डार ।

४०५८. महर्षिस्तवन..... । पत्र सं० ३१ से ७४ । आ० ५×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५८८ । क भण्डार ।

४०५६. महर्षिस्तवन्.....। पत्र सं० २। आ० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०६३। अ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ में पूजा भी दी हुई है।

४०६०. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल सं० १८३१ चैत्र बुदी १४। वे० सं० ६११। अ भण्डार।

विशेष—संस्कृत में टीका भी दी हुई है।

४०६१. महामहिम्नस्तोत्र.....। पत्र सं० ५। आ० ८×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल सं० १६०६ फागुन बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ३११। ज भण्डार।

४०६२. प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० ३१५। ज भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४०६३. महामहर्षिस्तवन्टीका.....। पत्र सं० २। आ० ११३×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४८। छ भण्डार।

४०६४. महालक्ष्मीस्तोत्र.....। पत्र सं० १०। आ० ८३×६३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६५। छ भण्डार।

४०६५. महालक्ष्मीस्तोत्र.....। पत्र सं० ६ से ८। आ० ६×३३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—वैदिक साहित्य स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७८२।

४०६६. महावीराष्टक—भागवन्द। पत्र सं० ४। आ० ११३×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७३। क भण्डार।

विशेष—इसी प्रति में जिनोपदेशोपकारस्मर स्तोत्र एवं प्रादिनाथ स्तोत्र भी हैं।

४०६७. महिम्नस्तोत्र.....। पत्र सं० ७। आ० ६×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६। क भण्डार।

४०६८. यमकाष्टकस्तोत्र—भ० अमरकीर्ति। पत्र सं० १। आ० १२×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल सं० १८२२ पौष बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ५८६। क भण्डार।

४०६९. युगादिदेवमहिम्नस्तोत्र.....। पत्र सं० २ से १४। आ० ११×७ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०६४। ट भण्डार।

विशेष—प्रथम तीन पत्रों में पार्श्वनाथ स्तोत्र रघुनाथदास कृत अपूर्ण हैं। इससे आगे महिम्नस्तोत्र हैं।

४०७०. राधिकानाममाला..... पत्र सं० १ । आ० १० ३/४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६१ । ट भण्डार ।

४०७१. रामचन्द्रस्तवन..... पत्र सं० ११ । आ० १० × ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३ । छ भण्डार ।

विशेष—अष्टितम— श्रीसनत्कुमारसंहितायां नारदोक्तं श्रीरामचन्द्रस्तवराज संपूरणम् ॥ १०० पद्य हैं ।

४०७२. रामवतीसी—जगन्कवि । पत्र सं० ६ । आ० ६ ३/४ × ६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल सं० १७३५ प्रथम चैत्र बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० १५१० । ट भण्डार ।

विशेष—कवि पौहकरना (पुष्करना) जाति के थे । नरायणा में जट्ट व्यास ने प्रतिलिपि की थी ।

४०७३. रामस्तवन..... पत्र सं० ११ । आ० १० ३/४ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २११२ । ट भण्डार ।

विशेष—११ में आगे पत्र नहीं हैं । पत्र नीचे की ओर से फटे हुए हैं ।

४०७४. रामस्तोत्र..... पत्र सं० १ । आ० १० × ४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल सं० १७२५ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ६५८ । छ भण्डार ।

विशेष—जोधराज मोदीका ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

४०७५. लघुशान्तिस्तोत्र । पत्र सं० १ । आ० १० × ४ ३/४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४६ । अ भण्डार ।

४०७६. लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मप्रभदेव । पत्र सं० २ । आ० १३ × ६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०३६) भी है ।

४०७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १४८ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४४) भी है ।

४०७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १८२४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है ।

४०७९. लक्ष्मीस्तोत्र..... पत्र सं० ४ । आ० ६ × ३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४२१ । अ भण्डार ।

विशेष—ट भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०६७) भी है ।

४०८०. लघुस्तोत्र पत्र सं० २ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । अ भण्डार ।

४०८१. वज्रपंजरस्तोत्र पत्र सं० १ । आ० ८३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । वे० सं० ६६८ । क भण्डार ।

४०८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र में होम का मन्त्र है ।

४०८३. वद्धमानद्वारिषिका—सिद्धसेन दिवाकर । पत्र सं० १२ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६७ । ट भण्डार ।

४०८४. वद्धमानस्तोत्र—आचार्य गुणभद्र । पत्र सं० १२ । आ० ४३×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल सं० १२३३ फागुण बुध ४ । पूर्ण । वे० सं० १४ । अ भण्डार ।

विशेष—गुणभद्राचार्य कृष्ण उत्तरपुराण की राजा भेरिक की स्तुति है तथा ३३ श्लोक हैं । संग्रहकर्ता श्री फतेहलाल शर्मा हैं ।

४०८५. वद्धमानस्तोत्र पत्र सं० ५ । आ० ७३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३२८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ३ से आगे निर्वाणकाण्ड गाथा भी है ।

४०८६. वसुधारापाठ पत्र सं० १६ । आ० ८×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । क भण्डार ।

४०८७. वसुधारास्तोत्र पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७६ । क भण्डार ।

४०८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७१ । क भण्डार ।

४०८९. विद्यमानवीसतीर्थकरस्तवन—मुनि दीप । पत्र सं० १ । आ० ११×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६३३ ।

४०९०. विषादहारस्तोत्र—धनंजय । पत्र सं० ४ । आ० १२३×६ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल सं० १८१२ फागुण बुध ४ । पूर्ण । वे० सं० ६६६ ।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है । इसकी प्रतिलिपि पं० मोहनदासजी ने अपने शिष्य शुभानीरामजी के पठनार्थ लेमकरगुजी की पुस्तक से बसई (बस्ती) नगर में शान्तिनाथ नैत्यालय में की थी ।

४०६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६७९ । छ भण्डार ।

४०६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १५२ । ज भण्डार ।

विशेष—सिद्धिप्रियस्तोत्र भी है ।

४०६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १६११ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४०६४. विषापहारस्तोत्रटीका—नागचन्द्रसूर । पत्र सं० १४ । आ० १०×४१ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५ । अ भण्डार ।

४०६५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८ से १६ । ले० काल सं० १७७८ भादवा सुदी ६ । वे० सं० ८८९ । अ भण्डार ।

विशेष—मीरसाबाद नगर में पं० चोलचन्द ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

४०६६. विषापहारस्तोत्रभाषा—पन्नालाल । पत्र सं० ३१ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १६३० फागुण सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६४ । क भण्डार ।

विशेष—सी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६५) और है ।

४०६७. विषापहारस्तोत्रभाषा—अचलकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० ६३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८५ । उ भण्डार ।

४०६८. बीतरागस्तोत्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ९ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५७ । छ भण्डार ।

४०६९. वीरछत्तीसी..... । पत्र सं० २ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५० । अ भण्डार ।

४१००. वीरस्तवन..... । पत्र सं० १ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० १२४८ । अ भण्डार ।

४१०१. वैराग्यगीत—महमत । पत्र सं० १ । आ० ८×३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२६ । अ भण्डार ।

विशेष—‘भूत्यो भमरा रे काई भमै’ ११ अंतरे हैं ।

४१०२. षट्पाठ—बुधजन । पत्र सं० १ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल सं० १८५० । पूर्ण । वे० सं० ५३५ । अ भण्डार ।

४१०३. षट्पाठ.....। पत्र सं० ६। आ० ४×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×।
ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४७। अ भण्डार।

४१०४. शान्तिधोषणास्तुति.....। पत्र सं० २। आ० १०×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल सं० १५६६। पूर्ण। वे० सं० ६३४। अ भण्डार।

४१०५. शान्तिनाथस्तवन—ऋषि लालचन्द्र। पत्र सं० १। आ० १०×४ इंच। भाषा—हिन्दी।
विषय—स्तवन। २० काल सं० १६५६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२३५। अ भण्डार।

विशेष—शान्तिनाथ का एक स्तवन और है।

४१०६. शान्तिनाथस्तवन.....। पत्र सं० १। आ० १०½×४½ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तवन।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६५६। अ भण्डार।

विशेष—शान्तिनाथ तीर्थङ्कर के पूर्वभव की कथा भी है।

शान्तिमपद्य—
कुन्दकुन्दाचार्य विनती, शान्तिनाथ गुण हिय में धरे।
रोग सोग संताप दूरे जाय, दर्शन दीठा नवनिधि ठाया ॥

इति शान्तिनाथस्तोत्रं संपूर्ण।

४१०७. शान्तिनाथस्तोत्र—मुनिभद्र। पत्र सं० १। आ० ६½×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०७०। अ भण्डार।

विशेष—अथ शान्तिनाथस्तोत्र लिख्यते—

काव्य—
नाना विचित्रं भवदुःखराशि, नाना प्रकारं मोहाम्निपाशं।
पापानि दोषानि हरन्ति देवा, इह जन्मशरणं तव शान्तिनार्थं ॥१॥
संसारमध्ये मिथ्यात्वचिन्ता, मिथ्यात्वमध्ये कर्माणिबन्धं।
ते बन्ध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनार्थं ॥२॥
कामं च क्रोधं मायाविलोभं, चतुःकषायं इह जोष बन्धं।
ते बन्ध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनार्थं ॥३॥
नोद्धावयहीने कठिनस्थचित्ते, परजीविनिदा भभसा च वाक्का।
ते बन्ध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनार्थं ॥४॥
चारित्र्यहीने नरजन्ममध्ये, सम्यक्त्वरत्नं परिपालनीयं।
ते बन्ध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनार्थं ॥५॥

जातस्य तरणं युक्तस्य वचनं, हो शान्तिजीवं बहुजन्मदुःखं ।

ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनार्थं ॥६॥

परद्रव्यचोरी परदारसेवा, शकादिकक्षा अजनुत्यबंधं ।

ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनार्थं ॥७॥

पुत्राणि भिक्षाणि कालप्रदं, हृदयदण्डे बहुजीवबंधा ।

ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनार्थं ॥८॥

जयति पठति नित्यं श्री शान्तिनाथादिशान्ति

स्तवनमधुरवाणी पापतापोपहारी ।

कृतमुनिभद्रं सर्वकार्येषु नित्यं

..... ॥६॥

इति श्रीशान्तिनाथस्तोत्र संपूर्णं । शुभम् ॥

४१०८. शान्तिनाथस्तोत्र..... पत्र सं० २ । आ० ६५४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७१६ । अ भण्डार ।

४१०९. शान्तिपाठ..... पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । अ भण्डार ।

४११०. शान्तिविधान..... पत्र सं० ७ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३१ । अ भण्डार ।

४१११. श्रीपतिस्तोत्र—चैतमुखजी । पत्र सं० ६ । आ० ८×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१२ । अ भण्डार ।

४११२. श्रीस्तोत्र..... पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल सं० १६०४ चैत बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १८०४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४११३. सप्तनयविचारस्तवन..... पत्र सं० ८ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३५ ।

विशेष—३७ पद्य हैं ।

४११४. समवशरणस्तोत्र..... पत्र सं० ८ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल सं० १७६८ फागुन सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० २६६ । छ मण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

प्रारम्भ—

वृषभाद्यानभिवंक्षात् वंदित्वा वीरपश्चिमजिनेन्द्रात् ।

भक्त्या नतोत्तमायः स्तोष्ये तत्समवशरणारणि ॥२॥

४११५. समवशरणस्तोत्र—विष्णुसेन मुनि । पत्र सं० २ से ६ । आ० ११½×५ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७ । अ मण्डार ।

४११६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ७७८ । अ मण्डार ।

४११७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७८५ माघ बुदी ५ । वे० सं० ३०५ । अ
मण्डार ।

विशेष—पं० देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य पं० मनोहर ने प्रतिलिपि की थी ।

४११८. संभवजिनस्तोत्र—मुनि गुणानंद । पत्र सं० २ । आ० ८½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६० । छ मण्डार ।

४११९. समुदायस्तोत्र..... पत्र सं० ५३ । आ० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल सं० १८८७ । पूर्ण । वे० सं० ११५ । घ मण्डार ।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है ।

४१२०. समवशरणस्तोत्र—विश्वसेन । पत्र सं० ११ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३४ । छ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत श्लोकों पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४१२१. सर्वतोभद्रमंत्र..... पत्र सं० २ । आ० ६×३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल सं० १८६७ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० १४२२ । अ मण्डार ।

४१२२. सरस्वतीस्तवन—लघुकवि । पत्र सं० ३ से ५ । आ० ११½×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२५७ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं ।

अं तमपुष्पिका— इति मारत्यालघुकवि कृत लघुस्तवनं सम्पूर्णातामागतम् ।

४१२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ११५५ । अ मण्डार ।

४१२४. सरस्वतीस्तोत्र—बृहस्पति । पत्र सं० १ । आ० ८३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र (जैनतर) । २० काल × । ले० काल सं० १८५१ । पूर्ण । वे० सं० १५५० । अ भण्डार ।

४१२५. सरस्वतीस्तोत्र—श्रुतसागर । पत्र सं० २६ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवस । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७७४ । ट भण्डार ।

विशेष—वाच क पत्र नहीं है ।

४१२६. सरस्वतीस्तोत्र..... । पत्र सं० ३ । आ० ८×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०६ । छ भण्डार ।

४१२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ४३६ । ज भण्डार ।

विशेष—रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी । भारतीस्तोत्र भी नाम है ।

४१२८. सरस्वतीस्तोत्रमाला (शारदा-स्तवन)..... । पत्र सं० २ । आ० ९×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२६ । अ भण्डार ।

४१२९. सङ्ख्यनाम (लघु)—आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं० ४ । आ० ११३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १७१४ आश्विन सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ६ । म भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त भद्रबाहु विरचित ज्ञानाङ्कुश पाठ भी है । ४३ श्लोक हैं । आनन्दराम ने स्वयं जोधराज गोदीका के पठनार्थ प्रतिलिपि कां थी । 'पोथी जोधराज गोदीका की पढ़िबा की छै' पत्र ४ मु० सांगानेर ।

४१३०. सारचतुर्विंशति । पत्र सं० ११२ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६० पीष सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २८८ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रथम ६५ पृष्ठों में सकलकीर्ति कृत श्रावकाचार है ।

४१३१. सायंसन्ध्यापाठ..... । पत्र सं० ७ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८२४ । पूर्ण । वे० सं० २७८ । ख भण्डार ।

४१३२. सिद्धबन्धना..... । पत्र सं० ८ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८८६ फाल्गुन सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ६० । ग भण्डार ।

विशेष—श्रीमार्णिकचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

४१३३. सिद्धस्तवन..... । पत्र सं० ८ । आ० ८३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६५२ । ट भण्डार ।

४१३४. सिद्धिप्रियस्तोत्र—दैवमंदि । पत्र सं० ८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल सं० १८८६ भाद्रपद बुदी ६ । पूर्णा । वै० सं० २००८ । अ मण्डार ।

४१३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वै० सं० ८०६ । क मण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका भी दी हुई है ।

४१३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० २६२ । ख मण्डार ।

विशेष—हासिये में कठिन शब्दों के अर्थ दिये हैं । प्रति सुन्दर तथा प्राचीन है । अक्षर काफी मोटे हैं ।

मुनि विशालकीर्ति ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार में २ प्रतियाँ (वै० सं० २६३, २६८) और हैं ।

४१३७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वै० सं० ८५३ । छ मण्डार ।

४१३८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८६२ आसोज बुदी २ । अपूर्णा । वै० सं० ४०६ । च मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । जयपुर में अभयचन्द साह ने प्रतिलिपि की थी ।

४१३९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वै० सं० १०२ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

इसी मण्डार में २ प्रतियाँ (वै० सं० ३८, १०३) और हैं ।

४१४०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८६८ । वै० सं० १०६ । ज मण्डार ।

४१४१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० १६८ । ख मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अमरसी ने प्रतिलिपि की थी । इसी मण्डार में एक प्रति (वै० सं० २४७) और है ।

४१४२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वै० सं० १८२५ । ट मण्डार ।

४१४३. सिद्धिप्रियस्तोत्रटीका..... । पत्र सं० ५ । आ० १३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १७५६ आसोज बुदी २ । पूर्णा । वै० सं० ३६ । च मण्डार ।

विशेष—त्रिलोकदास ने अपने हाथ में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

४१४४. सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा—पद्मलाल चौधरी । पत्र सं० ३६ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १९३० । ले० काल × । पूर्णा । वै० सं० ८०५ । क मण्डार ।

४१४५. सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा—नथमल । पत्र सं० ८ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वै० सं० ८४७ । क मण्डार ।

४१४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ८५१ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८५२) और है ।

४१४७. सिद्धिप्रियस्तोत्र..... । पत्र सं० १३ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०४ । क मण्डार ।

४१४८. सुगुरुस्तोत्र..... । पत्र सं० १ । आ० १०३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५८ । अ मण्डार ।

४१४९. वसुधारास्तोत्र..... । पत्र सं० १० । आ० ९३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४९ । ज मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ में लिखा है— अथ घंटाकर्णकल्प लिख्यते ।

४१५०. सौंदर्यलहरीस्तोत्र—भट्टारक जगद्भूषण । पत्र सं० १० । आ० १२×५½ इंच । भाषा—

संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८४४ । पूर्ण । वे० सं० १८२७ । ट मण्डार ।

विशेष—वृन्दावती कर्वट में पार्श्वनाथ चैत्यालय में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति ग्रामेर वालों ने सर्वमुख के पठनाथ प्रतिलिपि की थी ।

४१५१. सौंदर्यलहरीस्तोत्र..... । पत्र सं० ७४ । आ० ९३×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८३७ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० २७४ । ज मण्डार ।

४१५२. स्तुति..... । पत्र सं० १ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । २० काल × ।

ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६७ । अ मण्डार ।

विशेष—भगवान महावीर की स्तुति है । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

प्रारम्भ—

प्राता प्राता महाप्राता भर्ता भर्ता जगत्प्रभु

वीरो वीरो महावीरोस्त्वं देवासि नमोस्तुति ॥१॥

४१५३. स्तुतिसंग्रह..... । पत्र सं० २ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२४० । अ मण्डार ।

४१५४. स्तुतिसंग्रह..... । पत्र सं० २ से १७ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१०६ । ट मण्डार ।

विशेष—पञ्चपरमेष्ठीस्तवन, बीसतीर्थक्षुरस्तवन आदि हैं ।

४१५५. स्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० ६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५३ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र है ।

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा
१. शान्तिकरस्तोत्र	सुन्दरसूर्य	प्राकृत
२. भयहरस्तोत्र	×	"
३. लघुशान्तिस्तोत्र	×	संस्कृत
४. बृहदशान्तिस्तोत्र	×	"
५. अजितशान्तिस्तोत्र	×	"

२रा पत्र नहीं है । सभी इवेताम्बर स्तोत्र है ।

४१५६. स्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० १० । आ० १२×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३०४ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र है ।

१. पद्मावतीस्तोत्र —	×
२. कलिकुण्डपूजा तथा स्तोत्र —	×
३. चिन्तामणि पार्श्वनाथपूजा एवं स्तोत्र —	लक्ष्मीसेन
४. पार्श्वनाथपूजा —	×
५. लक्ष्मीस्तोत्र —	पद्मप्रभदेव

४१५७. स्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० २३ । आ० ८३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३८५ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह हैं— १. एकीभाव, २. विषावहार, ३. स्वयंभूस्तोत्र ।

४१५८. स्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० ४६ । आ० ८३×५ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल सं० १७७६ कार्तिक शुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १३१२ । अ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतिभों का मिश्रण है । निम्न संग्रह हैं—

१. निर्वाणकाण्डभाषा—	×	हिन्दी
२. श्रीपालस्तुति	×	संस्कृत
३. पद्मावतीस्तवन मंत्र सहित	×	"

४. लकीभावस्तोत्र, ५. ज्वालामालिनी, ६. जिनपञ्जरस्तोत्र, ७. लक्ष्मीस्तोत्र,
८. पार्श्वनाथस्तोत्र

९. वीतरामस्तोत्र—

पद्यनंदि

संस्कृत

१०. वर्द्धमानस्तोत्र

×

"

अपूर्ण

११. चौसठ्योगिनीस्तोत्र, १२. शनिस्तोत्र, १३. गारदाष्टक, १४. त्रिकालचौबीसीनाम

१५. पद, १६. विनयी (ब्रह्मजिनदास), १७. माता के सोलहस्वप्न, १८. परमानन्दस्तवन ।

मुखानन्द के शिष्य नैनमुख ने प्रतिलिपि की थी ।

४१५६. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० २६ । आ० ८×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६० । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

१. जिनद्वन्द्वस्तुति, २. अधिमंथस्तोत्र (गौतम गरुडधर), ३. लघुशांतिकमन्त्र,
४. उपसर्गहस्तोत्र, ५. निरञ्जनस्तोत्र ।

४१६०. स्तोत्रपाठसंग्रह..... पत्र सं० २२१ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत, प्राकृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २४० । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० १७, १८, १९ नहीं हैं । नित्य नैमित्तिक स्तोत्र पाठों का संग्रह है ।

४१६१. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० २७६ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७ । अ भण्डार ।

विशेष—२४८, २४९वां पत्र नहीं है । साधारण पूजापाठ तथा स्तुति संग्रह है ।

४१६२. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० १५३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०६७ । अ भण्डार ।

४१६३. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० १८ । आ० ७५×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५३ । अ भण्डार ।

४१६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० ३५४ । अ भण्डार ।

४१६५. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० ११ । आ० ८३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६० । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह हैं—

भगवतीस्तोत्र, परमानन्दस्तोत्र, पार्वनाथस्तोत्र, घण्टाकर्णमन्त्र आदि स्तोत्रों का संग्रह है।

४१६६. स्तोत्रसंग्रह। पत्र सं० ८२। भा० ११३×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २०

काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८३२। क भण्डार।

विशेष—अन्तिम स्तोत्र अपूर्ण है। कुछ स्तोत्रों की संस्कृत टीका भी साथ में दी गई है।

४१६७ प्रति सं० २। पत्र सं० २५७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८३३। क भण्डार।

४१६८. स्तोत्रपाठसंग्रह। पत्र सं० ५७। भा० १३×६ इंच। भाषा—संस्कृत, हिन्दी। विषय—

स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८३१। क भण्डार।

विशेष—पाठों का संग्रह है।

४१६९. स्तोत्रसंग्रह। पत्र सं० ८१। भा० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत, प्राकृत। विषय—स्तोत्र।

२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८२६। क भण्डार।

विशेष—निम्न संग्रह है।

नामस्तोत्र

कर्त्ता

भाषा

प्रतिक्रमण

×

प्राकृत, संस्कृत

सामायिक पाठ

×

संस्कृत

श्रुतभक्ति

×

प्राकृत

तत्त्वार्थसूत्र

उमास्वाति

संस्कृत

सिद्धभक्ति तथा अन्य भक्ति संग्रह

—

प्राकृत

स्वयंभूस्तोत्र

समन्तभद्र

संस्कृत

देवागमस्तोत्र

”

संस्कृत

जिनसहस्रनाम

जिनसेनाचार्य

”

भक्तामरस्तोत्र

मानतुंगानाचार्य

”

कल्याणमन्दिरस्तोत्र

कुमुदचन्द्र

”

एकीभावस्तोत्र

वादिराज

”

सिद्धिप्रियस्तोत्र

देवनन्दि

”

विषाणहारस्तोत्र

धनञ्जय

”

भूपालचतुर्विंशतिका

भूपालकवि

”

महिम्नस्तवन

जयकीर्ति

”

समवशरण स्तोत्र

विष्णुसेन

”

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा
महर्षि तवन	×	संस्कृत
ज्ञानाकुण्डस्तोत्र	×	"
चित्रबन्धस्तोत्र	×	"
लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभ देव	"
मेभित्तय एकाक्षरस्तोत्र	शं. शशि	"
लघु सामायिक	×	"
सुविज्ञातिस्तवन	×	"
यमकाष्टक	भ० अमरसीति	"
यमकवध	×	"
शार्ङ्गनाथस्तोत्र	×	"
वर्द्धमानस्तोत्र	×	"
जितोपकारस्मरणस्तोत्र	×	"
महोवीराष्टक	भागवत	"
लघुसामायिक	×	"

४१७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२८ । ले० काल × । वे० सं० ८२८ । क भण्डार ।

विशेष—अधिकांश उक्त पाठों का ही संग्रह है ।

४१७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११८ । ले० काल × । वे० सं० ८२९ । क भण्डार ।

विशेष—उक्त पाठों के अतिरिक्त निम्नपाठ भी हैं ।

वीरनाथस्तवन	×	संस्कृत
श्रीपार्वतीजिनेश्वरस्तोत्र	×	"

४१७२ स्तोत्रसंग्रह । पत्र सं० ११७ । आ० १२३×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८२७ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा
प्रतिक्रमण	×	संस्कृत
सामायिक	×	"
भक्तिपाठसंग्रह	×	"

नाम स्तोत्र	कृती	भाषा
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत
स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्र	"

४१७३. स्तोत्रसंग्रह... पत्र सं० १० । आ० १११×७५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३० । क भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

नेमिनाथस्तोत्र सटीक	×	संस्कृत
इचक्षरस्तवन	×	"
स्वयंभूस्तोत्र	×	"
चन्द्रप्रभस्तोत्र	×	"

४१७४. स्तोत्रसंग्रह... पत्र सं० ८ । आ० १२३×१५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३६ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत
विषाणहारस्तोत्र	भनञ्जय	"
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवसेदि	"

४१७५. स्तोत्रसंग्रह... पत्र सं० २२ । आ० १२३×५५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३८ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

एकी भाष	वाहिराज	संस्कृत
सरस्वतीस्तोत्र मन्त्र सहित	×	"
ऋषिमण्डलस्तोत्र	×	"
भक्तानन्दस्तोत्र ऋद्धिभक्त सहित	×	"
हनुमानस्तोत्र	×	"
ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	"
नक्षत्रेश्वरीस्तोत्र	×	"

४१७६. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० १४। आ० ७×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २०
काल ×। ले० काल सं० १८४४ माह सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० २३७। छ मण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है।

ज्वालामालिनी, मुनीश्वरों की जयमाल, शृषिमंडलस्तोत्र एवं नमस्कारस्तोत्र।

४१७७. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० २४। आ० ६×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २०
काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३६। छ मण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है।

पद्मावतीस्तोत्र	×	संस्कृत	१ से १० पत्र
चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	"	११ से २० पत्र
स्वर्णकर्षणविधान	महीधर	"	२४

४१७८. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ८१। आ० ७३×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। २०
काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६२। छ मण्डार।

४१७९. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० २७। आ० १०½×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २०
काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६८। छ मण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं।

भक्तामर, एकीभाव, विद्यापहार, एवं भूपालचतुर्विधतिका।

४१८०. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ३ से ५६। आ० ६×६ इंच। भाषा—हिन्दी, संस्कृत। विषय—
स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८६७। छ मण्डार।

४१८१. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० २३ से १४१। आ० ८×५ इंच। भाषा—संस्कृत, हिन्दी। विषय—
स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८६६। छ मण्डार।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा	
पंचमंगल	रूपचंद	हिन्दी	अपूर्ण
कलशविधि	×	संस्कृत	
देवसिद्धपूजा	×	"	
शान्तिपाठ	×	"	
जिनेन्द्रभक्तिस्तोत्र	×	हिन्दी	

१

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	वनारसीदास	हिन्दी
जैनशतक	भूधरदास	"
निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"
एकीभावस्तोत्रभाषा	सुधरदास	"
तेरहकाठिया	वनारसीदास	"
चैत्यवन्दना	×	"
भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	"
पंचकल्याणपूजा	×	"

•

४१८२. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ५१। आ० ११×७३ इंच। भाषा—संस्कृत-हिन्दी। विषय—
स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ५१५। ॐ भण्डार।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है।

निर्वाणकाण्डभाषा	भैया भगवतीदास	हिन्दी	अपूर्ण
सामायिकपाठ	पं० महाचन्द्र	"	पूर्ण
सामायिकपाठ	×	"	अपूर्ण
पंचपरमेष्ठीपुराण	×	"	पूर्ण
लघुसामायिक	×	संस्कृत	"
बारहभावना	नवलकवि	हिन्दी	"
ब्रह्मसंग्रहभाषा	×	"	अपूर्ण
निर्वाणकाण्डगाथा	×	प्राकृत	पूर्ण
चतुर्विंशतिस्तोत्रभाषा	सुधरदास	हिन्दी	"
चौबीसदंडक	दौलतराम	"	"
परमानन्दस्तोत्र	×	"	अपूर्ण
भक्तामरस्तोत्र	मानसुंग	संस्कृत	पूर्ण
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	वनारसीदास	हिन्दी	"
स्वयंभूस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	"	"
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	"	अपूर्ण
मालोचनापाठ	×	"	"
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत	"

५

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	
विषाखहारस्तोत्रभाषा	X	हिन्दी	पूर्ण
संक्षोभर्पचासिका	X	"	"

४१८३. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० ५१ । आ० १०५×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ८६४ । छ भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है ।

नवग्रहस्तोत्र, योगिनीस्तोत्र, पद्मावतीस्तोत्र, तीर्थङ्करस्तोत्र, सामाधिकपाठ आदि हैं ।

४१८४. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० २५ । आ० १०५×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ८६३ । छ भण्डार ।

विशेष—भक्तानन्द आदि स्तोत्रों का संग्रह है ।

४१८५. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० २६ । आ० ८३×६ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८६२ । छ भण्डार ।

४१८६. स्तोत्र—आचार्य जसवंत । पत्र सं० १ । आ० ८५×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ८६१ । छ भण्डार ।

४१८७. स्तोत्रपूजासंग्रह..... पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र पूजा । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८६० । छ भण्डार ।

४१८८. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० १३ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८५९ । छ भण्डार ।

४१८९. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० ७ से ४७ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८५८ । छ भण्डार ।

४१९०. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० ९ से १६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ४२६ । च भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

एकीभावस्तोत्र

वादिराज

संस्कृत

कल्याणमन्दिरस्तोत्र

कुमुदचन्द्र

११

प्रति प्राचीन है । संस्कृत टीका सहित हैं ।

स्तोत्र साहित्य]

४१६१. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० २ से ४८ । आ० ८४४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३० । च भण्डार ।

४१६२. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० १४ । आ० ८३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल सं० १८५७ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४३१ । च भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

१. सिद्धिप्रियस्तोत्र	शिवनंदि	संस्कृत
२. कल्याणमन्दिर	कुमुदबन्दाचार्य	"
३. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	"

४१६३. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० ७ से १७ । आ० ११×८३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३२ । च भण्डार ।

४१६४. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० २४ । आ० १२×७३ इंच । भाषा—हिन्दी, प्राकृत, संस्कृत ।
विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६३ । ट भण्डार ।

४१६५. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० ५ से ३५ । आ० ६×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल सं० १८७५ । अपूर्ण । वे० सं० १८७२ । ट भण्डार ।

४१६६. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० १५ से ३४ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३३ । च भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

पारमार्थिक बडा	×	संस्कृत	अपूर्ण
सामायिक लघु	×	"	पूर्ण
सहस्रनाम लघु	×	"	"
सहस्रनाम बडा	×	"	"
अष्टमिहंलस्तोत्र	×	"	"
निर्वाणकाण्डगाथा	×	"	"
नवकारमन्त्र	×	"	"
बृहद्मन्त्र	×	अपभ्रंश	"
शीतरामस्तोत्र	शिवनंदि	संस्कृत	"
विनयपञ्चस्तोत्र	×	"	"

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	
पद्मावतीचक्रेश्वरीस्तोत्र	×	"	"
वज्रपंजरस्तोत्र	×	"	"
हनुमानस्तोत्र	×	हिन्दी	"
ब्रह्मादर्शन	×	संस्कृत	"
भाराधना	×	प्राकृत	"

४१६७. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० ४ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८ । छ्द भण्डार ।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र हैं :

एकीभाव, भूपालचीवीसी, विषयपहार, मेदिनीत भूधरवृत्त हिन्दी में है ।

४१६८. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० ७ । आ० ४३×३३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३४ । छ्द भण्डार ।

निम्नलिखित स्तोत्र हैं ।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
पार्श्वनाथस्तोत्र	×	संस्कृत
तीर्थावलीस्तोत्र	×	"

विशेष—ज्योतिषी देवों में स्थित जिनचैत्यों की मूर्ति है ।

चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	संस्कृत	
जिनपञ्जरस्तोत्र	कमलप्रभ	"	अपूर्ण

श्री रुद्रपल्लीयवरेण गच्छः देवप्रभाचार्यपदाब्जहंसः ।

वादीन्द्रचूडामणिरेश जैनो जियादसौ कमलप्रभास्यः ॥

४१६९. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० १४ । आ० ४३×३३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १३४ । छ्द भण्डार ।

लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभवंत	संस्कृत
त्रैमिस्तोत्र	×	"
पद्मावतीस्तोत्र	×	"

४२००. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० १३ । आ० १३×७३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१ । अ मण्डार ।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र हैं ।

एकीभाव, सिद्धिप्रिय, कल्याणमन्दिर, भक्ताभर तथा परमानन्दस्तोत्र ।

४२०१. स्तोत्रपूजासंग्रह.....। पत्र सं० १५२ । आ० ६३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४१ । अ मण्डार ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है । प्रति गुटका साइज एवं सुन्दर है ।

४२०२. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ३२ । आ० ४३×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १६०२ । पूर्ण । वे० सं० २६४ । म मण्डार ।

विशेष—पद्मावती, ज्वालामालिनी, जिनपञ्जर आदि स्तोत्रों का संग्रह है ।

४२०३. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ११ से २२७ । आ० ६६×५ इंच । भाषा—संस्कृत, प्राकृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७१ । म मण्डार ।

विशेष—गुटका के रूप में है तथा प्राचीन है ।

४२०४. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० १४ । आ० ६×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७७ । अ मण्डार ।

विशेष—भक्ताभर, कल्याणमन्दिर स्तोत्र आदि हैं ।

४२०५. स्तोत्रत्रय.....। पत्र सं० २१ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२४ । अ मण्डार ।

विशेष—कल्याणमन्दिर, भक्ताभर एवं एकीभाव स्तोत्र हैं ।

४२०६. स्वयंभूरस्तोत्र—समन्तभद्राचार्य । पत्र सं० ५१ । आ० १२३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४० । क मण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । इसका दूसरा नाम जिनचतुर्विंशति स्तोत्र भी है ।

४२०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १७५६ ज्येष्ठ बुध १३ । वे० सं० ४३५ । अ मण्डार ।

विशेष—कामराज ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ४३४, ४३६) थीं हैं ।

४२०८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल X । वे० सं० २६ । ज मण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

४२०९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १५४ । ज मण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संकेतार्थ दिये गये हैं ।

४२१०. स्वयंभूस्तोत्रटीका—प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र सं० ४३ । मा० ११X६ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र : २० काल X । ले० काल सं० १८६१ मंसिर सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ८४१ । क मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम क्रियाकलाप टीका भी दिया हुआ है ।

इसी मण्डार में दो प्रतिमां (वे० सं० ८३२, ८३६) और हैं ।

४२११. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १६१५ पौष कुंवी २३ । वे० सं० ८४ । ज मण्डार ।

विशेष—तनुसुखलाल पांड्या रौद्री मंत्रसू के मर्पित अष्टाल पाठों से प्रतिरूपित कराई ।

४२१२. स्वयंभूस्तोत्रटीका..... । पत्र सं० ३२ । मा० १०X४ ३/४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र : २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८८४ । ज मण्डार ।



पद भजन गीत आदि

४२१३. अनाथानोचोढारया—स्वैम । पत्र सं० २ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—मीत ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २१२१ । अ० भण्डार ।

विशेष—राज्य श्रेष्ठिक ने भगवान महावीर स्वामी से अपने आपको प्रसाध कहा था उसी पर चार डालों में प्रार्थना की गयी है ।

४२१४. अनाथोमुनि सज्जाय..... । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—मीत ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २१७३ । अ० भण्डार ।

४२१५. अहंनकचौढाभिचागीत—विमल विनय (विनयरंग)..... । पत्र सं० ३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—मीत ।
१० काल × । ले० काल १९८१ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वै० सं० ८४९ । अ० भण्डार ।

विशेष—आदि अन्त मीत निम्न है—

आरम्भ—

वर्द्धमान जउवीसमउ जिमवंदी जगदीस ।
अरहंनक मुनिवर चरीम मरिण सुधरीय जमीस ॥१॥

शोपई—

हु जरीसधरी भनमाहे, कहिसि संबंध उछाहे ।
अरहंनकि जिमवत लीधउ, जिम ते तारी वसि कीधउ ॥२॥
निज मात.....एह उपदेशइ, बलिबल भादरीय विसेसइ ।
पहुतउ ते देव विमानि, सुणिजयो भविण तिम कानि ॥३॥

सोहा—

नगरा नमरी जासीबइ, अलकापुरि अवतार ।
वसइ तिही विवहारीमउ सुबत नाम सुविचार ॥४॥

शोपई—

सुविचार सुभास चरणी..... ।
तसु नंदन रूप निधान, अरहंनक नाम प्रथाम ॥५॥

अन्तिम—

अथार सरण चित कोतवइ जी, परिहरि अथारि कषाय ।
बोध तजइ अत उचरइ जी, सत्य रहित निरमाय ॥६॥

मसनपाल खादम श्ली जी सादिम सेवे निहार ।
 इगि माव ए सवि परिहरी जी, मन समरइ नवकार ॥५६॥
 सिला संधारउ आदरया जी, सुर किरण लान ताप ।
 सहइ परीसह साहसी जी, छेदइ भवना पाप ॥५७॥
 समतारस माहि भीलतउ जी, मनेघरतउ सुभ ध्यान ।
 काल करी तिणी पामीयउ जी, सुंदर देव दिमात ॥५८॥
 सुरग तरण सुख भोगवी जी, परमाखंड उलास ।
 तिहां थी बचि बलि पामेस्यइ जी, अमुकमि सिवपुर वास ॥५९॥
 अरहंनक जिमते घरइ जी, अंत समय सुभकार ।
 जनम सफल करि ते सही जी, पामइ परम कल्याण ॥६०॥
 श्री खरतर गच्छ दीपता जी, श्री जिनचंद मुण्ड ।
 जयवंता जग जाणीमइ जी, दरसण परमाखंड ॥६१॥
 श्री गुण सेखर गुण निलउ जी, वाचक श्री नमरंग ।
 तासु सीस भावइ भणइ जी, विमलविनय मतिरंग ॥६२॥
 ए संबंध सुहायउ जी, जे गावइ नर नारि ।
 ते पामइ सुख संपदा जी, दिन दिन जय जयकार ॥६३॥

इति अरहंनक चउदावियागीतसु सभासम् ॥

संवत् १६८१ वर्षे धासु सुदी १४ दिने बुधवारे पंडित श्री हर्षसिंहगणिसिध्यहर्षकीसिगणिसिध्येश
 पयरंगसुभना लेखि । श्री मुखबखनगरे ।

४२१६. आदिजिनवरस्तुति—कमलकीर्ति । पत्र सं० ५ । मा० १०३×५ इंच । भाषा—गुजराती ।
 विषय—गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७४ । छ भण्डार ।

विशेष—दो गीत हैं दोनों ही के कर्ता कमलकीर्ति हैं ।

४२१७. आदिनाथगीत—मुनिहेमसिद्ध । पत्र सं० १ । मा० १३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
 गीत । २० काल सं० १६१६ । ले० काल × । वे० सं० २३३ । छ भण्डार ।

विशेष—भाषा पर गुजराती का प्रभाव है ।

४२१८. आदिनाथ सङ्काय..... पत्र सं० १ । मा० १३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत ।
 २० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० सं० २१६८ । छ भण्डार ।

४२१६. आदीश्वरविठ्जति..... । पत्र सं० १ । आ० ६३×४३ इअ । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत ।
२० काल सं० १५६२ । ले० काल सं० १७४१ वैशाख सुदी ३ । अपूर्णा । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३१ पद्य नहीं हैं । कुल ४५ पद्य रचना में हैं ।

अन्तिम पद्य—

पनखासहि जिननूर अविचल पद पायो ।

बीनतही कुलट पूर्णीयां आमुमस वहि दशम दिहाहै मनि धैराने हम भणीया ॥४५॥

४२२०. कृष्णबालावेलास—श्री किशनलाल । पत्र सं० १५ । आ० ८×५३ इअ । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पद । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० १२८ । क भण्डार ।

४२२१. गुरुस्तवन—भूधरदास । पत्र सं० ३ । आ० ८३×६३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० १४५ । क भण्डार ।

४२२२. चतुर्विंशति तीर्थहरस्तवन—हेमविमलसूरि शिष्य आणंद । पत्र सं० २ । आ० ८३×४३ इअ । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । २० काल सं० १५६२ । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० १८८३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४२२३. चम्पाशतक—चम्पाबाई । पत्र सं० २४ । आ० १२×८३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० २२३ । छ भण्डार ।

विशेष—एक प्रति और है । चम्पाबाई ने ६६ वर्ष की उम्र में कल्याणस्थान में रचना की थी जिसके प्रभाव में रोग दूर होगया था । यह प्यारेलाल मनीगढ (उ० प्र०) की छोटी बहिन थी ।

४२२४. चेलना सञ्जाय—समयसुन्दर । पत्र सं० १ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
गीत । २० काल × । ले० काल सं० १८६२ माह सुदी ४ । पूर्णा । वे० सं० २१७५ । अ भण्डार ।

४२२५. चैत्यपरिपाटी..... । पत्र सं० १ । आ० ११३×४३ इअ । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । २०
काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० १२५५ । अ भण्डार ।

४२२६. चैत्यद्वंद्वना..... । पत्र सं० ३ । आ० ६×८३ इअ । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल
× । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २६५ । क भण्डार ।

४२२७. चौबीसी जिनस्तुति—खेमचंद । पत्र सं० ६ । आ० १०×४३ इअ । भाषा—हिन्दी । विषय—
गीत । २० काल × । ले० काल × । ले० काल सं० १७६४ चैत्र सुदी १ । पूर्णा । वे० सं० १८४ । क भण्डार ।

४२२८. चौबीसतीर्थहरतीर्थपरिचय..... । पत्र सं० १ । आ० १०×४३ इअ । भाषा—हिन्दी । विषय—
स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० २१२० । अ भण्डार ।

४२२६. चौबीसतीर्थद्वारस्तुति—ब्रह्मादेव । पत्र सं० १७ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४१ । अ मण्डार ।

विशेष—रतनचन्द पांडव्या ने प्रतिलिपि की थी ।

४२२७. चौबीसीस्तुति..... पत्र सं० १५ । आ० ८×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल सं० १६०० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३६ । छ मण्डार ।

४२२८. चौबीसतीर्थद्वारवर्णन..... पत्र सं० ११ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८३ । ट मण्डार ।

४२२९. चौबीसतीर्थद्वारस्तवन—छाणकरण कासलीवाल । पत्र सं० ८ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५७ । च मण्डार ।

४२३०. अलखी—रामकृष्ण । पत्र सं० ५ । आ० १०३×६१ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८ । छ मण्डार ।

४२३१. जम्बूकुमार सज्जाय..... पत्र सं० १ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३६ । अ मण्डार ।

४२३२. जयपुर के मंदिरों की बंदना—स्वरूपचंद । पत्र सं० १० । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल सं० १६१० । ले० काल सं० १६४७ । पूर्ण । वे० सं० २७८ । छ मण्डार ।

४२३३. जगभक्ति—हर्षकीर्ति । पत्र सं० १ । आ० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४३ । अ मण्डार ।

४२३४. जिनपक्षीसी व अन्य संग्रह..... पत्र सं० ४ । आ० ८३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०४ । छ मण्डार ।

४२३५. ज्ञानपञ्चमीस्तवन—समयसुन्दर । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल सं० १७८५ । आवण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १८८५ । अ मण्डार ।

४२३६. झलझी श्रीमन्दिरजीकी..... पत्र सं० ४ । आ० ७३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९३१ । छ मण्डार ।

४२४०. झंझरियानुचोडाल्या..... पत्र सं० २ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१५९ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

सीता सा मनि संकर डाल—

रमती चरणी सीस ममात्री, प्रणमी सतगुरु पाया रे ।

भांभरिया ऋषि ना दुरा नाता, उलटै आज सबाधा रे ॥

भविष्य बंदी मुनि भांभरिया, संसार समुद्र जे तरियो रे ।

सबल साह्या परिला मन मुधे, सीत रमण करि भरियो रे ॥२॥

पड़ठपुर मकरधुज राजा, मदनसेन तस राखी रे ।

तस सुत मदन भरम बालुबो, किरत जास कहारणी रे ॥

सीजी काल अपूर्ण है । भांभरिया मुनि का वर्णन है ।

४२४१. रामोकारपक्षीसी—ऋषि ठाकुरसी । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तोत्र । १० काल सं० १८२८ अष्टादश बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७८ । अ भण्डार ।

४२४२. तमाखू की जयमाल—आणंदमुनि । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—गीत । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७० । अ भण्डार ।

४२४३. दर्शनपाठ—धुधजन । पत्र सं० ७ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८० । अ भण्डार ।

४२४४. दर्शनपाठस्तुति— । पत्र सं० ८ । आ० ८×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । १०

१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२७ । अ भण्डार ।

४२४५. देवकी की डाल—लूणकरण कासलीवाल । पत्र सं० ४ । आ० १०×४ इंच । भाषा—

हिन्दी । विषय—गीत । १० काल × । ले० काल सं० १८८५ बैशाख बुदी १४ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २२४६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ दोहा—

रठ नेमा नामे हुवा लखण सरन संजीग ।

आठ सहस लखण धरो गोमकार गद्य जोग ॥१॥

सहत अठारा साध जी मजाया चालीस हजार ।

मोठार मुनिवर विचरज्या रत लार ॥२॥

.....

बंसुदेव राजा डाकरा देवाकीण मंगजात ॥३॥

मन्दन छ देव का तणा सा राखा कै उणहार ।

बाणी मुण भी नेम का लावज संजसा ॥४॥

साधनों सुध आदरो देल मछली नाम ।

बेलेरयावण स्वामी जी करावो जीव जीव ॥५॥

मध्यभाग—

देव छी तरणाइ नंदरा बांदवारे उभी श्री नेम जिरोसवार ।

नन्यरा साधा न देख नर कारवालागा इम अरदीतार ॥

साध्या साम्हो देवकी देखी नर उभा रहा छ नजर नीहाल रे ।

कसतो...टाख कात्र धाताणीर छुटी छे हुद तणीए धार रे ॥२॥

तनमन बाग सोहाबडो उलस्यो र फल में फुली छे जेहना कायरे ।

बलाया भाहा तो भाव रही रे देख तो लोचन तीरपत न यायरे ॥३॥

दीवकी तो साधान छ दिशा करी र पाछा भाइ छ माहीलो माहारे ।

सोच फिकर देवकीरे ज्योर मोहतणी ए खातरे ॥४॥

सासो तो भाज्यो श्री नेमजीरे एतो छहु धारा बालरे ।

भांस्या भांही भासुं पढ़ैरे जारुं मो त्वारे टुटा भालरे ॥५॥

अन्तिम—

मरजी तांव छोडो सगला नगर मझारो,

मुहुमांमा दीजे घरारे मणि भाणक भंडार ।

मरिण भाणक बहु पोषा देवकी भगवा दंडा काइ न राखी ॥

दूखकरा ए दाल ज भापा तीज बोख इसही ए साखी ए ॥६॥

इति श्री देवकी की दाल स० ॥०॥ स्वामी ॥

दसकत चूनीलाल छावडा चैतराम ठाकरका बेटा छोटाका छे बांच पढ़े ज्यांसू जया जोग बाबक्यो : भित्ती

देशाल बुदो १४ सं० १८८५ ।

देवकी की दाल—रतनचन्दकृत और है । प्रति गल गई है । कई अंश नष्ट होगये हैं । पढ़ने में नहीं आता है ।

अन्तिम—

गुण गाया जी मारवाड मभार कर जोंडि रतनचंद भणै ॥१०॥

४२४६. द्वीपायनदाल—गुणसागरसूरि । पत्र सं० १ । भा० १०३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी गुजराती । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६४ । क भण्डार ।

४२४७. नेमिनाथ के नवमङ्गल—विनोदीलाल । पत्र सं० १ । भा० १६३×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तुति । २० काल सं० १७७४ । ले० काल सं० १८५२ मंगसिर दुदी २ । वे० सं० ५४ । क भण्डार ।

विशेष—चौमू में प्रतिलिपि हुई थी । जन्मपत्री की तरह गोल सिमटा हुआ है ।

४२४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० २१४३ । अ भण्डार ।

विशेष—लिख्य। मंगल फौजी दौलतरामजी की मुकाम पुन्या के मध्ये तोपखाना ।

१० पत्र से आगे नेमिराजुलपच्चीसी विमोदीलाल कृत भी है ।

४२४९. नागश्री सज्जाय—विनयचंद । पत्र सं० १ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

स्तवन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२४८ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल ३२ पत्र है ।

अन्तिम—

आपण बोधो आप भोगवै कोण गुरु कुण चेला ।

संजम लेइ गई स्वर्ग पांचमें अछुही नाहो न बेरारे ॥१५॥ भा०॥

महा विदेह मुकते जासी मोटी गर्भ वसेरा रे ।

विनयचंद जिनधर्म अराधो सब दुख जान परेरारे ॥१६॥

इति नागश्री सज्जाय मुखाग्रो लिखिते ।

४२५०. निर्वाणकाण्डभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र सं० ८ । आ० ८×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तुति । २० काल सं० १७४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७ । अ भण्डार ।

४२५१. नेमिगीत—पासचन्द । पत्र सं० १ । आ० १२३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४७ । अ भण्डार ।

४२५२. नेमिराजमतीकी घोड़ी..... । पत्र सं० १ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७७ । अ भण्डार ।

४२५३. नेमिराजमती गीत—छीतरमल । पत्र सं० १ । आ० ६½×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३५ । अ भण्डार ।

४२५४. नेमिराजमतीगीत—हीरानन्द । पत्र सं० १ । आ० ८½×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७४ । अ भण्डार ।

सूरतर ना पीर दोहिलोरे, पाम्यो नर भवसार ।

आलस जन्म महारिड भोरे, कांइ कर्यारै मन मांहि विचार ॥१॥

मति राखो रे रमणी ने रंग क सेवोरे जीण बाणी ।

तुम रमख्यो रे संजम न संगक चेतो रे चित प्राणी ॥२॥

अरिहंत देव अराधाइघोजी, रे गुर गरुवा श्री साथ ।

धर्म केवलानो भाखीउ, ए समकित वे रतन जिम लाइऊ ॥३॥

पहिलो समकित सेवीय रे, जे छे धर्मनो मूल ।
 संजम सकित बाहिरो, जिण भाख्यो रे तुस खंडण तुलिक ॥४॥
 तहस करीन सरबहो रे, जै भाखो जलनाथ ।
 पांचेइ भाखव परिहरो, जिम मिलीइ रे सिवपुरनो साधक ॥५॥
 जीव सहूजी जीवेवा बांछिरे, मरण न बांछे कोइ ।
 अपस राखा लैखवा, तस थावर रे हण जो मत कोइ ॥६॥
 चोरी लीजे पर तरणी रे, तिण तो लागै पाप ।
 धन कंचण किम ओरीय, जिण बांधइ रे भव भवना संताप क ॥७॥
 अजस अकीरत ए भव रे, पेरे भव दुख अनेक ।
 कुड कहता पामीइ, काइ आणी रे मन माहि विवेक ॥८॥
 महिला संग धुइ हर, नव लख सम जुत ।
 कुण सुख कारण ए तला, किम काजे रे हिस्सा सतिवत ॥९॥
 पुत्र कलत्र वर हाट भरि, ममता काजे फोक ।
 जु परिगह डग माहि छै ते छाडरे गया बहुला लोक ॥१०॥
 मात पिता बंधव सुतरे, पुत्र कलत्र परवार ।
 सवार्थया सहू कौ सगा, कोइ पर भव रे नहीं राखणहार ॥११॥
 अंजुल जल नीपरै रे, खिया रे तुटइ माउ ।
 जाइ ते बेला नहीं रे बाहुडि जरा बालरे यौवन ने धाड ॥१२॥
 व्याधि जरा जब लग नहीं रे, तब लम धर्म संभाल ।
 धारा हर घण बरसते, कोइ समरथि रे बाधैगोपाल क ॥१३॥
 अलप दीवस को पाहुणा रे, सङ्ग कोइण संसार ।
 एक दिन उठो जाइवउ, कथरा जाणइ रे किरण हो अवतारक ॥१४॥
 क्रोध मान माया तजो रे, लोभ मेवरद्धो लीगारे ।
 समतारस भवपुरीय बली दीहिलो रे नर अवतारक ॥१५॥
 भारंभ छाडा अन्तमा रे पीउ संजम रसपुरि ।
 सिद्ध बधू से सहू को बरो, इम बोलै सखज देवसुरक ॥१७॥

बाल बृमचरही जिए वाइससमो ॥

समदविजइजी रा नंद हो, वैरानी माहरो मन लागो हो नेम जिगांद सू
जाइव कुल केरा अंद हो ॥ बाल० ॥१॥

देव घणा छइ हो पुभ जीदोवता (देवता)

सेतो न जछइ चेत हो, कैइक रे चेत म्हामत हो ॥ बाल० ॥२॥

कैइक दोस करइ नर नारनइ मांमइ तेलसिंदूर हर हो ।

वाके इक बन बासै बासै बास, कक बनवासो करइ ।

(कक) ककड नहुन अरुण हो ॥३॥

तु नर मोह्यो रे नर मामा तणे, तु जग दीनदयाल हो ।

नोजोषनवती ए सुंदरी तजीउ राजुल नार हो ॥४॥

राजल के नारिणो उडरी पहुतीउ मुकति मभर ।

हीरानंद सँवैग साहिबा, जी वी नव म्हारी दीनतेडा अवधारि हो ॥५॥

॥ इति नेमि गीत ॥

४२५५. नेमिराजुलसउभाय..... पत्र सं० १ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।

र० काल सं० १८५१ चैत्र । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८४ । अ भण्डार ।

४२५६. पञ्चपरमेष्ठीस्तवन—जिनवल्लभ सूरि । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तवन । र० काल × । ले० काल सं० १८३६ । पूर्ण । वे० सं० ३८८ । अ भण्डार ।

४२५७. पद—ऋषि शिवलाल । पत्र सं० १ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।

र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२८ । अ भण्डार ।

विशेष—पूरा पद निम्न है—

या जग म का तेरा अंशे ॥या०॥

जैसे पंछी वीरछ वसेरा, बीछरै होय सकेरा ॥१॥

कोडी २ कर धन जोड्या, ले घरती में गाढा ।

अंत समै चलणु की बेला, ज्याँ गाढा राहो छाडारि ॥२॥

ऊँचा २ महल बराण्ये, जीव कह इहा रैया ।

चल गया हंस पडी रही काया, लेय कलेवर दरा ॥३॥

मात पिता सु पतनी रे थारी, तीण बन जोवन लाया ।

उड गया हंस काया का मंडण, काडो प्रेत पराया ॥४॥

करी कमाइ इरा भो आया, उलटी पूछी खोइ ।
 मेरी २ करकैं जनम गमाया, चलता संक न होइ ॥५॥
 पाप की पोछ जणी सिर लोनी, हे मूरख भोरा ।
 हलकी पोछ करी तु चाहै, तो होय कुटुम्बसुं न्यारा ॥६॥
 मात पिता सुत सभजन मेरा, मेरा धन परिवारो ।
 मेरा २ पडा पुकारै चलता, नहीं कछु लारो ॥७॥
 जो तेरा तेरे संग न चलता, भेद न जाका पाया ।
 मोह बस पदारथ वीराणी, हीरा जनम गमाया ॥८॥
 आह्या देखत केतै चल गए जगमें, आखर आधुही चलणा ।
 श्रीसर बीता बहु पछतावे, माखी जु हाथ मसलणा ॥९॥
 आज कर धरम काल कर, याही न नीयत धारे ।
 काल अचारे घाटी पड़डी, जय कया कारज सारे ॥१०॥
 ए जोगवाइ पाइ दुहेली, फेर न मारु वारो ।
 हीमत होय तो डील न कीजै, कूद पडो निरधारो ॥११॥
 सीह मुखे जीम मीरमलो आयो, फेर नइ छूटण हारो ।
 इण दीसवंते मरण मुखे जीव, पाप करी निरधारो ॥१२॥
 सुगर सुदेव धरम कु सेवो, लेवो जीम का सरता ।
 दीष सीकलाल कहे भो प्राणी, आत्म कारज करणा ॥१३॥

॥इति॥

४२५८. पदसंग्रह.....। पत्र सं० ५६ । पृ० १२×५ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—भजन । २०
 काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२७ । क भण्डार ।

४२५९. पदसंग्रह.....। पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १२७३ । अ भण्डार ।

विशेष—श्रिभुवन साहब सावला.....।

इसी भण्डार में २ पदसंग्रह (वे० सं० १११७, २१३०) और हैं ।

४२६०. पदसंग्रह.....। पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ४०५ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ११ पदसंग्रह (वे० सं० ४०४, ४०६ से ४१५) तक और हैं ।

४२६१. पदसंग्रह.....। पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ६२५ । च भण्डार ।

४२६२. पदसंग्रह.....। पत्र सं० १२। ले० काल X। वे० सं० ३३। अ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में २७ पदसंग्रह (वे० सं० ३४, ३५, १४८, २३७, ३०६, ३१०, २६६, ३००, ३०१ से ६ तक, ३११ से ३२४) और हैं।

नोट—वे० सं० ३१८ में जयपुर की राजवंशावलि भी है।

४२६३. पदसंग्रह.....। पत्र सं० १४। ले० काल X। वे० सं० १७५६। ट मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में ३ पदसंग्रह (वे० सं० १७५२, १७५३, १७५८) और हैं।

नोट—द्यानतराय, हीराचन्द, भूधरदास, बीलतराम आदि कवियों के पद हैं।

४२६४. पदसंग्रह.....। पत्र सं० ३। आ० १०X४^३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पद। २० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० १४७। छ मण्डार।

विशेष—केवल ४ पद हैं—

१. मोहि तारी सारि भव सिधु ते।

२. राबुल कहै तुमैं वेग सिधावे।

३. सिद्धचक्र नंदी ते, तयकारी।

४. चरम जिसेसर जिहो साहिबा

चरम धरम उपगार बालेसर ॥

४२६५. पदसंग्रह.....। पत्र सं० १२ से २५। आ० १२X७ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पद। २० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २००८। ट मण्डार।

विशेष—भागचन्द, मयनमुख, द्यानत, जयतराम, जादूराम, जोधा, बुधजन, साहिबराम, जगराम, लाल खतराम, भूभूराम, खेमराज, नवल, भूधर, चैनविजय, जीवरामदास, विश्वभूषण, मनीहर आदि कवियों के पद हैं।

४२६६. पदसंग्रह—उत्तमचन्द। पत्र सं० १८। आ० ६X६^३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पद। २० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १५२८। ट मण्डार।

विशेष—उत्तम के छोटे २ पदोंका संग्रह है। पदों के प्रारम्भ में रागरागनियों के नाम भी दिये हैं।

४२६७. पदसंग्रह—म० कपूरचन्द। पत्र सं० १। आ० ११^३X५^३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। २० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० २०४३। अ मण्डार।

४२६८. पद—केशरगुलाब। पत्र सं० १। आ० ७X४^३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—गीत। २० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० २२४१। अ मण्डार।

विशेष—प्रारम्भ—

श्रीधर नन्दन मयनानन्दन सांघादेव हमारो जी ।

दिलजानी जिनवर प्यारा वो

दिल दे बीब बसत है निसदिन, कबहू न होवत न्यारा वो ॥

४२६१. पदसंग्रह—चैनसुख । पत्र सं० २ । आ० २४×३३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल × । ले० कागज × । पूर्ण । वे० सं० १७५७ । ट भण्डार ।

४२७०. पदसंग्रह—जयचन्द छावड़ा । पत्र सं० ५२ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल सं० १८७४ आषाढ सुदी १० । ले० काल सं० १८७४ आषाढ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४३७ । क भण्डार ।

विशेष—अन्तिम २ पत्रों में विषय सूची दे रखी है । लगभग २०० पदों का संग्रह है ।

४२७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८७४ । वे० सं० ४३८ । क भण्डार ।

४२७२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ से ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६० । ट भण्डार ।

४२७३. पदसंग्रह—देवाम्रद्धा । पत्र सं० ४४ । आ० १५×६३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद भजन । २० काल × । ले० काल सं० १८६३ । पूर्ण । वे० सं० १७५१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति छुटकाकार है । विभिन्न राग रागिनियों में पद दिये हुये हैं । प्रथम पत्र पर लिखा है— श्री देवसागरजी सं० १८६३ का बैशाख सुदी १२ । मुकाम बसवै नैराचंद ।

४२७४. पदसंग्रह—दौलतराम । पत्र सं० २० । आ० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२६ । क भण्डार ।

४२७५. पदसंग्रह—बुधजन । पत्र सं० २९ से ६२ । आ० ११३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद भजन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६७ । अ भण्डार ।

४२७६. पदसंग्रह—भागचन्द । पत्र सं० २५ । आ० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद व भजन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३१ । क भण्डार ।

४२७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ४३२ । क भण्डार ।

विशेष—बोड़े पदों का संग्रह है ।

४२७८. पद—मलूकचन्द । पत्र सं० १ । आ० ६×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

पंच सखी मिल मोहियो जीवा,

काहा नखीनी तु धाम हो जीवा ।

समझो स्तुत राज ॥

४२७६. पदसंग्रह—मंगलचंद । पत्र सं० १० । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद व भजन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३४ । क भण्डार ।

४२८०. पदसंग्रह—माणिकचंद । पत्र सं० ५४ । आ० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद व भजन । २० काल × । ले० काल सं० १६५५ मंगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४३० । क भण्डार ।

४२८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वे० सं० ४३८ । क भण्डार ।

४२८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७५४ । ट भण्डार ।

४२८३. पदसंग्रह—सेवक । पत्र सं० १ । आ० ८३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५० । ट भण्डार ।

विशेष—केवल २ पद हैं ।

४२८४. पदसंग्रह—हीराचन्द । पत्र सं० १० । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद व भजन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३३ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ४३५, ४३६) और हैं ।

४२८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० ४१६ । क भण्डार ।

४२८६. पद व स्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० ८८ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३६ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है ।

नाम	कर्ता	भाषा	पत्र
पञ्चमङ्गल	रूपनन्द	हिन्दी	८
सुगुह्यतक	जिनदास	"	१०
जिनयशमङ्गल	सेवगराम	"	४
जिनगुणपञ्चीसी	"	"	—
गुरुओं की स्तुति	भूधरदास	"	—

नाम	कर्ता	भाषा	पत्र
एकीभावस्तोत्र	भूदरदास	हिन्दी	१४
वज्रनाभि चक्रवर्ति की भावना	"	"	"
पदसंग्रह	माणिकचन्द	"	४
तेरहपंचपञ्चीसी	"	"	११
हुंदावसर्पिणीकालदोष	"	"	"
चौदीस दंडक	दीनतरास	"	१२
दशबोलपञ्चीसी	दानतराय	"	१७

४२८७. पार्श्वजिनगीत—छाजू (समयसुन्दर के शिष्य) । पत्र सं० १ । आ० १०×५ इंच ।

भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५८ । अ भण्डार ।

४२८८. पार्श्वनाथ की निशानी—जिनहर्ष । पत्र सं० ३ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तवस । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४७ । अ भण्डार ।

विवरण—१२ ५६ छे०

प्रारम्भ—
सुख संपत्ति-दायक सुरनर नाथक परतिष्ठ पास जिगंदा है ।
जाकी छवि कांति अनोपम ओपम दिपति जाग दिगंदा है ॥

अन्तिम—
तिहां निवादावास तिहां रे वासा दे सेवक दिलवंदा है ।
घघर निसाणी पास बखारी गुण जिनहर्ष गावंदा है ॥

प्रारम्भ के पत्र पर क्रोध, भान, माया, लोभ की सज्जाय दी हैं ।

४२८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८२२ । वे० सं० २१३३ । अ भण्डार ।

४२९०. पार्श्वनाथचौपई—पं० लाखो । पत्र सं० १७ । आ० १२½×५½ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तवन । २० काल सं० १७३४ कार्तिक सुदी । ले० काल सं० १७९३ ज्येष्ठ बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १९१८ ।

अ भण्डार ।

विवरण—ग्रन्थ प्रशस्ति—

संवत् सतरासै चौतीस, कार्तिक शुक्ल पक्ष शुभ दीस ।

नोरंग तप दिल्ली मुलिस्तान, सबै नृपति वही पिरि आग ॥२६६॥

नागर चाल देस सुभ ठाम, नगर बगुहटो उत्तम धाम ।

सब आवक पूजा जिनधर्म, करै भक्ति पावै बहु शर्म ॥२६७॥

कर्मक्षय कारण शुभहेतु, पार्ष्वनाथ चौपई सचेत ।

पांडित लाखी लाख सभाव, सेवो धर्म लखो मुभवान ॥२८८॥

आचार्य श्री महेन्द्रकीर्ति पार्ष्वनाथ चौपई संसूतः ।

भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य पांडे दयाराम सोनीने भट्टारक महेन्द्रकीर्ति के शासन में दिल्ली के जयसिंहपुरा के देऊर में प्रतिनिधि की थी ।

४२६१. पार्ष्वनाथ जीरोद्धन्दसत्तरी.....। पत्र सं० २ । आ० ६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । पद्य । विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल सं० १७८१ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० १८६१ । अ भण्डार ।

४२६२. पार्ष्वनाथस्तवन.....। पत्र सं० १ । आ० १०×४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८ । छ भण्डार ।

विशेष—डमी वेष्टन में एक पार्ष्वनाथ स्तवन ओर है ।

४२६३. पार्ष्वनाथस्तोत्र.....। पत्र सं० २ । आ० ८३/४×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६६ । अ भण्डार ।

४२६४. बन्दनाजखड़ी—विहारीदास । पत्र सं० ४ । आ० ८×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । २० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१३ । च भण्डार ।

४२६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६२ । अ भण्डार ।

४२६६. बन्दनाजखड़ी—बुधजन । पत्र सं० ४ । आ० १०×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । ज भण्डार ।

४२६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ५२४ । छ भण्डार ।

४२६८. बारहखड़ी एवं पद.....। पत्र सं० २२ । आ० ५३/४×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्फुट । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५ । झ भण्डार ।

४२६९. बाहुबली सज्जाय—विमलकीर्ति । पत्र सं० १ । आ० ६३/४×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२४५ ।

विशेष—श्यामसुन्दर कृत पाटनपुर सज्जाय ओर है ।

४३००. भक्तिपाठ—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १७६ । आ० १२×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४५ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न भक्तियां हैं ।

स्वाध्यायपाठ, सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति, चारित्र्यभक्ति, पाचार्यभक्ति, योगभक्ति, वीरभक्ति, निर्वाणभक्ति और भैरीदेवरभक्ति ।

४३०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०८ । ले० काल X । वे० सं० ५४७ । क भण्डार ।

४३०२. भक्तिपाठ पत्र सं० ६० । आ० ११३ X ७३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५४६ । क भण्डार ।

४३०३. भजनसंग्रह—नयन कवि । पत्र सं० ४१ । आ० ६ X ४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २४० । छ भण्डार ।

४३०४. मरुदेवी की सज्जाय—श्रुति लालचन्द । पत्र सं० १ । आ० ८३ X ४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल सं० १८०० कार्तिक सुदी ४ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २१८७ । अ भण्डार ।

४३०५. महावीरजी का चौदाल्या—श्रुति लालचन्द । पत्र सं० ४ । आ० ६३ X ४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २१८७ । अ भण्डार ।

४३०६. मुनिसुवतविनती—देवाग्रहा । पत्र सं० १ । आ० १०३ X ४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १८६७ । अ भण्डार ।

४३०७. राजारानी सज्जाय पत्र सं० १ । आ० ६३ X ४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २१६६ । अ भण्डार ।

४३०८. रांडपुरास्तवने पत्र सं० १ । आ० ६ X ५ इंच । भाषा हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १८६३ । अ भण्डार ।

विशेष—रांडपुरा ग्राम में रचित आदिनाथ की स्तुति है ।

४३०९. विजयकुमार सज्जाय—श्रुति लालचन्द । पत्र सं० ६ । आ० १० X ४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल सं० १८६१ । ले० काल सं० १८७२ । पूर्ण । वे० सं० २१६१ । अ भण्डार ।

विशेष—कोटा के रामपुरा में ग्रन्थ रचना हुई । पत्र ४ में आगे स्तुतिमय सज्जाय हिन्दी में और है । जिसका २० काल सं० १८६४ कार्तिक सुदी १५ है ।

४३१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल X । वे० सं० २१८६ । अ भण्डार ।

४३११. विनतीसंग्रह पत्र सं० २ । आ० १२ X ५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल X । ले० काल सं० १८५१ । पूर्ण । वे० सं० २०१३ । अ भण्डार ।

विशेष—महात्मा जम्भूराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

४३१२. विन्दोसंघ—ब्रह्मदेव । पत्र सं० ३८ । आ० ७१×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३१ । अ भण्डार ।

विशेष—सासू बहू का भण्डा भी है ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६६३, १०४३) भी हैं ।

४३१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० १७३ । ख भण्डार ।

४३१४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ६७८ । ख भण्डार ।

४३१५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८४८ । वे० सं० १६३२ । ट भण्डार ।

४३१६. वीरभक्ति तथा निर्वाणभक्ति— । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

स्तवन । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६७ । क भण्डार ।

४३१७. शीतलनाथस्तवन—ऋषि लालचन्द । पत्र सं० १ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तवन । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रतिम—

पूज्य श्री श्री दोलतराय जी बहुगुण अगवाणी ।

रिषलाल जी करि जीहि वीनधै कर सिर चरणींणी ॥

सहर माधोपुर मंवरु पंचावन कासीय सुदी आणी ।

श्री सीतल जिन गुण भाया मति उलास पाणी ॥ सीतल० ॥१२॥

॥ इति शीतलनाथ स्तवन संपूर्ण ॥

४३१८. श्रेयांसस्तवन—विजयमानसूरि । पत्र सं० १ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तवन । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४१ । अ भण्डार ।

४३१९. सतियोंकी सज्जाय—ऋषि लज्जमलजी । पत्र सं० २ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी

गुजराती । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २२४५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रतिम भाग निम्न है—

इतीदक सतियारां गुण कहा थे सुख सांभलो ।

उत्तम पराणी लज्जमल जी कहइ.....॥३४॥

जिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवन भी दिया है ।

४३२०. सज्जाय (चौदह धोल)—ऋषि रायचन्द । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—

हिन्दी । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८१ । अ भण्डार ।

४३२१. सर्वार्थसिद्धिसञ्ज्ञाय..... पत्र सं० १ । आ० १०×४^३/_४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—पद्मेश्वर स्तुति भी है ।

४३२२. सरस्वतीअष्टक..... पत्र सं० २ । आ० ६×७^३/_४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११ । क भण्डार ।

४३२३. साधुवन्दना—साणिकचन्द । पत्र सं० १ । आ० १०^३/_४×४^३/_४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५४ । ट भण्डार ।

विशेष—श्वेतान्तर आभाय की साधुवन्दना है । कुल २७ पद्य हैं ।

४३२४. साधुवन्दना—पुण्यसागर । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—पुरानी हिन्दी । विषय—
स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३८ । अ भण्डार ।

४३२५. सारचौबीसीभाषा—पारसदास निगोत्या । पत्र सं० ४७० । आ० १२^३/_४×७ इञ्च । भाषा—
हिन्दी । विषय—स्तुति । २० काल सं० १६१८ कार्तिक सुदी २ । ले० काल सं० १६३६ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं०
७८५ । क भण्डार ।

४३२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५०५ । ले० काल सं० १६४८ वैशाख सुदी २ । वे० सं० ७८६ । क
भण्डार ।

४३२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५७१ । ले० काल × । वे० सं० ८१६ । क भण्डार ।

४३२८. सीतादाल..... पत्र सं० १ । आ० ६^३/_४×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६७ । अ भण्डार ।

विशेष—फलेहमल कृत चेतन दाल भी है ।

४३२९. सोलहसतीसञ्ज्ञाय..... पत्र सं० १ । आ० १०×४^३/_४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१८ । अ भण्डार ।

४३३०. स्थूलभट्टसञ्ज्ञाय..... पत्र सं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८२ । अ भण्डार ।



पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य

४३३१. अंकुरोपणविधि—इन्द्रसंदि । पत्र सं० १५ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रतिष्ठादि का विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७० । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र १४-१५ पर येन है ।

४३३२. अंकुरोपणविधि—पं० आशाधर । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रतिष्ठादि का विधान । २० काल १३वीं शताब्दि । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठापाठ में से लिया गया है ।

४३३३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । २२ पत्र नहीं है । संस्कृत में कठिन शब्दों का अर्थ दिया हुआ है ।

४३३४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ३१६ । अ भण्डार ।

४३३५. अंकुरोपणविधि..... । पत्र सं० २ से २७ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रतिष्ठादि का विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है ।

४३३६. अकृत्रिमजिनचैत्यालय जयमाल..... । पत्र सं० २६ । आ० १२×७½ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० सं० १ । च भण्डार ।

४३३७. अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—जितदास । पत्र सं० २६ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १७६४ । पूर्ण । वे० सं० १८५६ । ट भण्डार ।

४३३८. अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—लालजीत । पत्र सं० २१४ । आ० १४×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १८७० । ले० काल सं० १८७२ । पूर्ण । वे० सं० ५०१ । च भण्डार ।

विशेष—गोपाबलदुर्ग (ग्वालियर) में प्रतिलिपि हुई थी ।

४३३९. अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—चैनसुख । पत्र सं० ४८ । आ० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १६३० फाल्गुन सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०५ । अ भण्डार ।

४३४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल × । वे० सं० ४१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६) भी है ।

४३४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७० । ले० काल सं० १६३३ । वे० सं० ५०३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५०२) भी है ।

४३४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० २०८ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० २०८ में ही) भी हैं ।

४३४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० १६६ । झ भण्डार ।

विशेष—ग्राणाद सुदी ५ सं० १६६७ को यह ग्रन्थ रघुनाथ आदवाड़ ने जटाया ।

४३४४. अकृत्रिमधैर्यालयपूजा—मनरङ्गलाल । पत्र सं० ३० । आ० ११×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । १० काल सं० १६३० माघ सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०४ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थकार परिचय—

नाम 'मनरंग' धर्मरक्षि सौ मो प्रति राखै प्रीति ।

खोईसी महाराज को पाठ रख्यो जिन रीति ॥

प्रेरकता अतिलास की रख्यो पाठ सुमनीत ।

ग्राम नग्न एकोहमा नाम भगवती सत ॥

रचना संवत् संबंधीपत्र—

त्रिंशति एक शत शतक वे त्रिंशतसंमत जानि ।

माघ शुक्ल त्रयोदशी पूर्ण पाठ महान ॥

४३४५. अक्षयनिधिपूजा..... । पत्र सं० ३ । आ० १२×५ १/२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० ४० । क भण्डार ।

४३४६. अक्षयनिधिपूजा..... । पत्र सं० १ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १०

काल × । ले० काल ६ । पूर्ण । वे० सं० ३८३ । व्य भण्डार ।

विशेष—जयमाल हिन्दी में है ।

४३४७. अक्षयनिधिपूजा—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ५ । आ० ११ ३/४×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १७८३ सावन सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ४ । क भण्डार ।

विशेष—श्री देव स्वैताम्बर जैन ने प्रतिलिपि की थी ।

४३४८. अक्षयनिधिविधान..... । पत्र सं० ४ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६७२) भी है ।

४३४६. अढाई (साढ़ाई) द्वीपपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ६१ । आ० ११×५३ इंच ।

भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० का० × । अपूर्ण । वै० सं० ५५० । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वै० सं० १०४४) और है ।

४३४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५१ । ले० काल सं० १८२४ ज्येष्ठ सुदी १२ । वै० सं० ७८७ । क

मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वै० सं० ७८८) और है ।

४३४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १८६२ माघ सुदी ३ । वै० सं० ८४० । क

मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ अपूर्ण प्रतियाँ (वै० सं० ५, ४१) और हैं ।

४३४९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८८४ भाद्रपद सुदी १ । वै० सं० १३१ । क

मण्डार ।

४३५०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १८६० । वै० सं० ४२ । ज मण्डार ।

४३५१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८३ । ले० काल × । वै० सं० १२६ । म मण्डार ।

विशेष—विजयराम पांड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

४३५२. अढाईद्वीपपूजा—विश्वभूषण । पत्र सं० ११३ । आ० १०३×७३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १६०२ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वै० सं० २ । च मण्डार ।

४३५३. अढाईद्वीपपूजा..... । पत्र सं० १२३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल सं० १८६२ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वै० सं० ५०५ । अ मण्डार ।

विशेष—अंबावती निवासी पिरागदास बाकलीवाल महुआ बाले ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार में एक प्रति (वै० सं० ५३४) और है ।

४३५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२१ । ले० काल सं० १८८० । वै० सं० २१४ । ख मण्डार ।

विशेष—महात्मा जोशी जीवण ने जोबनेर में प्रतिलिपि की थी ।

४३५५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १८७० कार्तिक सुदी ४ । वै० सं० १२३ । च

मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति [वै० सं० १२२] और है ।

४३५६. अढाईद्वीपपूजा—डालूराम । पत्र सं० १६३ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी पत्र ।

विषय—पूजा । १० काल सं० चैत सुदी ६ । ले० काल सं० १६३६ वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वै० सं० ८ । क मण्डार ।

विशेष—अमरचन्द्र दीवान के कहने से डालूराम अग्रवाल ने माधोराजपुरा में पूजा रचना की ।

४३६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १६५७ । वे० सं० ५०६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिष्ठा [वे० सं० ५०४, ५०५] और हैं ।

४३६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४४ । ले० काल × । वे० सं० २०१ । छ भण्डार ।

४३६२. अनन्तचतुर्दशीपूजा—शांतिदास । पत्र सं० १६ । आ० ८३×७ इंच । भाषा संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४ । ख भण्डार ।

विशेष—स्तोत्रापन विधि सहित है । यह पुस्तक गणेशजी गंगवाल ने बेगस्यों के मन्दिर में चढ़ाई थी ।

४३६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ३८६ । ज भण्डार ।

विशेष—पूजा विधि एवं जयमाल हिन्दी गद्य में है ।

इसी भण्डार में एक प्रति सं० १८२० की [वे० सं० ३६०] और है ।

४३६४. अनन्तचतुर्दशीपूजा..... । पत्र सं० १३ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८८ । अ भण्डार ।

विशेष—आदिनाथ से अनन्तनाथ तक पूजा है ।

४३६५. अनन्तचतुर्दशीपूजा—श्री भूषण । पत्र सं० १८ । आ० १० इंच × ७ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४ । ज भण्डार ।

४३६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १८२७ । वे० सं० ४२१ । क भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में ९० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

४३६७. अनन्तचतुर्दशीपूजा..... । पत्र सं० २० । आ० १० इंच × ५ इंच । भाषा—संस्कृत, हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५ । ख भण्डार ।

४३६८. अनन्तजिनपूजा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १ । आ० १० इंच × ५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० २०४२ । ट भण्डार ।

४३६९. अनन्तनाथपूजा—श्री भूषण । पत्र सं० २ । आ० ७ इंच × ४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५५ । अ भण्डार ।

४३७०. अनन्तनाथपूजा । पत्र सं० १ । आ० ८ इंच × ४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८२१ । अ भण्डार ।

४३७१. अनन्तनाथपूजा—सेवक । पत्र सं० ३ । आ० ८ इंच × ६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नीचे से कटा हुआ है ।

४३७२. अनन्तनाथपूजा पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी पत्र । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४ । अ भण्डार ।

४३७३. अनन्तव्रतपूजा पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिमां (वे० सं० ५२०, ६६५) और हैं ।

४३७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४३७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० २३० । ज भण्डार ।

४३७६. अनन्तव्रतपूजा पत्र सं० २ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३५२ । अ भण्डार ।

विशेष—जैनेतर पूजा ग्रन्थ है ।

४३७७. अनन्तव्रतपूजा—भ० विजयकीर्ति । पत्र सं० २ । आ० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४१ । छ भण्डार ।

४३७८. अनन्तव्रतपूजा—साह सैताराम । पत्र सं० ३ । आ० ८×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६६ । अ भण्डार ।

४३७९. अनन्तव्रतपूजाविधि पत्र सं० १८ । आ० १० ३/४×४ ३/४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८५८ भाद्रपद सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १ । ग भण्डार ।

४३८०. अनन्तपूजाव्रतमहात्म्य पत्र सं० ६ । आ० १०×४ ३/४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण । वे० सं० १३६३ । अ भण्डार ।

४३८१. अनन्तव्रतोद्यापनपूजा—आ० गुणचन्द्र । पत्र सं० १८ । आ० १२×५ ३/४ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १६३० । ले० काल सं० १८४५ मासोज सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४६७ । अ
भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

इत्याचार्याश्रीगुणचन्द्रविरचिता श्रीअनन्तनाथव्रतपूजा परिपूर्णा समाप्ता ॥

संवत् १८४५ का—अश्विनीमासे शुक्लपक्षे तिथौ च चौथि लिखितं पिरागदास मोहा का जाति भाकलीवाल
प्रतापसिंहराज्ये सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारक विराजमाने सति पं० कल्याणदासतत्सेवक आशाकारी पंडित खुशालचन्द्रेण इदं
अनन्तव्रतोद्यापनलिखापितं ॥१॥

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५३६) और है ।

४३८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६२८ आसोज बुदी १५ । वे० सं० ७ । ख भण्डार ।

४३८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० १२ । ख भण्डार ।

४३८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

४३८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० २०७ । व्य भण्डार ।

४३८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० ४३२ । व्य भण्डार ।

विशेष—२ चित्र मण्डल के हैं । श्री शाकम्भगपुर नृहदवंश के हर्ष नामक दुर्गा वरिणक ने ग्रन्थ रचना कराई थी ।

४३८७. अभिषेकपाठ..... । पत्र सं० ४ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—भगवान के अभिषेक के समय का पाठ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६१ । अ भण्डार ।

४३८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ५७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५२ । ख भण्डार ।

विशेष—विधि विधान सहित है ।

४३८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ७३२ । च भण्डार ।

४३९०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १६२२ । छ भण्डार ।

४३९१. अभिषेकविधि—लक्ष्मीसेन । पत्र सं० १५ । आ० ११×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—भगवान के अभिषेक के समय का पाठ एवं विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३१) और है जिसे भाऊराम साह ने जीवनराम सेठी के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । चित्तमणि पार्श्वनाथ स्तोत्र सोमसेन कृत भी है ।

४३९२. अभिषेकविधि..... । पत्र सं० ८ । आ० ११×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—भगवान के अभिषेक की विधि एवं पाठ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८ । अ भण्डार ।

४३९३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ११६ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७०) और है ।

४३९४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २११४ । छ भण्डार ।

४३९५. अभिषेकविधि । पत्र सं० १ । आ० ८½×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—भगवान के अभिषेक की विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३३२ । अ भण्डार ।

४३६६. अग्निष्टाध्याय पत्र सं० ६ । भा० ११×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—सत्त्वध्याना विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७ । अ भण्डार ।

विशेष—२० ई कुल गायार्थें हैं— ग्रन्थका नाम रिदुड है । जिसका संस्कृत रूपान्तर अग्निष्टाध्याय है । यदि ग्रन्थ की गायार्थें निम्न प्रकार हैं—

परमंत मुरागुरमउ लिखशावरकिरणकंतविश्वरियं ।
कीरजिगुपायकुयत्तं एभिज्जु भणेमि रिदुडइ ॥१॥
संसारम्मि अमंतो जीवो बहुभेष भिण्ण जोणिसु ।
पुरकेण कहंभि पावइ मुहमगु अत्तं ए संदेहो ॥२॥

ग्रन्थ—

पुत्तु विज्जवेज्जहणूणं वारउ एव बीस सामिग्यं ।
सुगीव सुमंतैणं रइय भणिगं मुणि ठीरे वरि देहि ॥२०१॥
सूई भूमीलं फलए समरे हाहि विराम परिहासो ।
कहिजइ भूमीए समवरे हातयं वच्चा ॥२०२॥
अट्टाट्टारह छिणो जे लदीह लच्छरेहाउं ।
पढमोहिरे अंकं गविजए याहि सों तच्छ ॥२०३॥

इति अग्निष्टाध्यायशास्त्रं समाप्तम् । ब्रह्मवस्ता लेखितं ॥श्री॥ नमः ॥

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २४१) और है ।

४३६७. अष्टाहिकाजयमाल पत्र सं० ४ । भा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अष्टाहिका पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०३१ ।

विशेष—जयमाला प्राकृत में है ।

४३६८. अष्टाहिकाजयमाल पत्र सं० ४ । भा० १३×४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—अष्टाहिका पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३१) और है ।

४३६९. अष्टाहिकापूजा पत्र सं० ४ । भा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अष्टाहिका पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६०) और है ।

४४००. अष्टाहिकापूजा पत्र सं० ३१ । भा० १०½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अष्टाहिका पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १५३३ । पूर्ण । वे० सं० ३३ । क भण्डार ।

विशेष—संवत् १५३३ में इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि कराई जाकर भट्टारक श्री रत्नकीर्ति की भेंट की गई थी । जयमाला प्राकृत में है ।

४४०१. अष्टालिकापूजाकथा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—अष्टालिका पर्व की पूजा तथा कथा । २० काल सं० १८५१ । ले० काल सं० १८६८ भाषाढ सुदी १० । वे० सं० ५६६ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० खुशालचन्द्र ने जोधराज पाटोदी के बनवाये हुए मन्दिर में अपने हाथ से प्रतिलिपि की थी ।

भट्टारकोऽमृज्जगदादिकीर्ति श्रीमूलसर्वे करणारदायाः ।

गन्धर्वे तत्पट्टपुराजिराजि देवेन्द्रकीर्ति सम्भूततश्च ॥१३७॥

तत्पट्टपूर्वावलभानुकक्षः श्रीकुन्दकुन्दान्वलब्धमुख्यः ।

महेन्द्रकीर्तिः प्रबभूवपट्टे क्षेमेन्द्रकीर्तिः गुरुरस्यमेऽमृत ॥१३८॥

योऽमृतक्षेमेन्द्रकीर्तिः भुवि सगुणभरश्चारुचारित्रधारी ।

श्रीमद्भट्टारकेन्द्रो विलसद्वगमो भव्यसंघे प्रबन्धः ।

तस्य श्रीकारशिष्यागमजलधिपट्टः श्रीसुरेन्द्रकीर्ति ।

रेनां पुण्यांचकार प्रलघुमतिविदो बोधतापार्जशब्दैः ॥१३९॥

मिति अष्टादशमासे शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ संवत् १८७८ का सवाई जयपुर के श्रीऋषभदेवचैत्यालये निवास पं० कल्याणदासस्य शिष्य खुशालचन्द्रेण स्वहस्तेन लिपीकृतं जोधराज पाटोदी कृत चैत्यालये ॥ शुभं भूयात् ॥

इसके अतिरिक्त यह भी लिखा है—

मिति माहसुदी ३ सं० १८८८ मुनिराज दोय आया । बडा वृषभसेनजी लघु बाहुबलि भालपुरासुं प्रकाशमें आया । सांगलैर मुं भट्टारकजी की नसियां में दिन वहां च्यार चक्रां जयपुर में दिन सवा पहर पाछै मंदिरां दर्शन संगही का पाटोदी उगहर (वगैरह) मंदिर १० कीया पाछै मोहनवाड़ी नंदलालजी की कीर्तिस्तंभ की नसियां संगही विरधोचंदजी भापकी हवेली में रात्रि १ रह्या भोजनकरि साहीवाड रात्रिवास कीयो समेदगिरि यात्रापधारया पराकृत बोले श्री ऋषभदेवजी सहाय ।

इसी भण्डार में एक प्रति सं० १८८८ की (वे० सं० ५४२) और है ।

४४०२. अष्टालिकापूजा—द्यानतराय । पत्र सं० ३ । आ० ८×६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०३ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्रों का कुछ भाग जल मया है ।

४४०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६३१ । वै० सं० ३२ । क भण्डार ।

४४०४. अष्टाह्निकापूजा..... पत्र सं० ४४ । आ० ११×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अष्टाह्निका पर्व की पूजा । र० काल सं० १८७६ कार्तिक बुदी ६ । ले० काल सं० १६३० । पूर्ण । वै० सं० १० । क भण्डार ।

४४०५. अष्टाह्निकाव्रतोद्यापनपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ३ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अष्टाह्निका व्रत विधान एवं पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४२३ । व्य भण्डार ।

४४०६. अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन..... पत्र सं० २२ । आ० ११×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—अष्टाह्निका व्रत एवं पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १८६ । क भण्डार ।

४४०७. आचार्य शान्तिसारारपूजा—भगवानदास । पत्र सं० ४ । आ० ११३×६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल सं० १६८४ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २२२ । छ भण्डार ।

४४०८. आठकोटिमुनिपूजा—विश्वभूषण । पत्र सं० ४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ११६ । छ भण्डार ।

४४०९. आदित्यव्रतपूजा—केशवसेन । पत्र सं० ८ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—रविव्रतपूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५०० । अ भण्डार ।

४४१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १७८३ आषाढ सुदी ६ । वै० सं० ६२ । क भण्डार ।

४४११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६०५ आसोज सुदी २ । वै० सं० १८० । क भण्डार ।

४४१२. आदित्यव्रतपूजा..... पत्र सं० ३५ से ४७ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—रविव्रत पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७६१ । अपूर्ण । वै० सं० २०६८ । ट भण्डार ।

४४१३. आदित्यवारपूजा..... पत्र सं० १४ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—रवि व्रतपूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ५२० । ख भण्डार ।

४४१४. आदित्यवारव्रतपूजा..... पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—रवि व्रतपूजा । र० काल × । ले० काल × । वै० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४४१५. आदिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ४ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५४८ । अ भण्डार ।

४४१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वै० सं० ५१६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ५१७) और है ।

४४१७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० २३२। ज भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ में तीन चौबीसी के नाम तथा लघु दर्शन पाठ भी हैं।

४४१८. आदिनाथपूजा.....। पत्र सं० ४। आ० १२३×५३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा।

२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४५। अ भण्डार।

४४१९. आदिनाथपूजाष्टक.....। पत्र सं० १। आ० १०३×७३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा।

२० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १२२३। अ भण्डार।

विशेष—नेमिनाथ पूजाष्टक भी है।

४४२०. आदीश्वरपूजाष्टक.....। पत्र सं० २। आ० १०३×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—आदि-

नाथ तीर्थङ्कर की पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२२६। अ भण्डार।

विशेष—महावीर पूजाष्टक भी है जो संस्कृत में है।

४४२१. आराधनाविधान.....। पत्र सं० १७। आ० १०×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—

विषय—विधान। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१५। अ भण्डार।

विशेष—त्रिकाल चौबीसी, शोकाकारण आदि विधान दिये हुये हैं।

४४२२. इन्द्रध्वजपूजा—अ० विश्वभूषण। पत्र सं० ६८। आ० १२×५३ इंच। भाषा—संस्कृत।

विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १८५६ बैशाख सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ४६१। अ भण्डार।

विशेष—‘विशालकीर्त्यात्मज अ० विश्वभूषण विरचितायां’ ऐसा लिखा है।

४४२३. प्रति सं० २। पत्र सं० ६२। ले० काल सं० १८५० द्वि० बैशाख सुदी ३। वे० सं० ४८७।

अ भण्डार।

विशेष—कुछ पत्र चिपके हुये हैं। ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर में महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल में हुई थी।

४४२४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६६। ले० काल ×। वे० सं० ८८। अ भण्डार।

४४२५. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०६। ले० काल ×। वे० सं० १३०। अ भण्डार।

विशेष—अ भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ३५, ४३०) भी हैं।

४४२६. इन्द्रध्वजमंडलपूजा.....। पत्र सं० ६७। आ० ११३×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—

मेलों एवं उत्सवों आदि के विधान में की जाने वाली पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १६३६ काश्या सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १६। अ भण्डार।

विशेष—पं० पन्नालाल जोबनेर वाले ने दमोजीलालजी के मन्दिर में प्रतिलिपि की। मण्डल की सूची भी दी हुई है।

४४२०. उमङ्गलपुष्पविधि..... । पत्र सं० १ । आ० १०×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—उपवास विधि । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२२५ । पूर्ण । अ भण्डार ।

४४२१. ऋषिमंडलपूजा—आचार्य गुरुनन्दि । पत्र सं० ११ से ३० । आ० १०½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विभिन्न प्रकार के मुनियों की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६१५ बैशाख बुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र १ से १० तक अन्त पूजायें हैं । प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं ।

संवत् १६१५ वर्षे बैशाख बदि ५ शुद्धासरे श्री मूलसंघे तन्नाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे गुरुनन्दि-
मुनीन्द्रेण रचिताभक्तिभावतः । सतमाधिकाशीतिश्लोकानां ग्रन्थ संक्षेपः ।।अन्धाग्रन्थ ३८०।।

इसी भण्डार भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७२) और है ।

४४२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—अष्टाह्निका जयमाल एवं निर्वाणकाण्ड और हैं । ग्रन्थ के दोनों ओर सुन्दर बेल बूटे हैं । श्री
पादिनाथ व महावीर स्वामी के चित्र उनके वर्णानुसार हैं ।

४४३०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ के दोनों ओर स्वर्ण के बेल बूटे हैं । प्रति दर्शनीय है ।

४४३१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७७५ । वे० सं० १३७ (क) छ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णक्षिरो में है प्रति सुन्दर एवं दर्शनीय है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३८) और है ।

४४३२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ६५ । छ भण्डार ।

४४३३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ७६ । छ भण्डार ।

४४३४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० २१० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४३३) और है जो कि मूलसंघ के आचार्य नेमिचन्द्र के
पठमार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

४४३५. ऋषिमंडलपूजा—मुनि ज्ञानभूषण । पत्र सं० १७ । आ० १०½×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । छ भण्डार ।

४४३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १२७ । छ भण्डार ।

४४३७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २५६ ।

विशेष—प्रथम पत्र पर सकलीकरण विधान दिया हुआ है ।

४४३८. ऋषिमंडलपूजा..... पत्र सं० १८ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल १७६८ चैत्र बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ४८ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा मानजी ने आमेर में प्रतिलिपि की थी ।

४४३९. ऋषिमंडलपूजा..... पत्र सं० ८ । आ० ६ $\frac{१}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल सं० १८०० कार्तिक बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४९ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति संज्ञ एवं जाम्ब सहित है ।

४४४०. ऋषिमंडलपूजा—दौलत आसेरी । पत्र सं० ६ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १९३७ । पूर्ण । वे० सं० २६० । क भण्डार ।

४४४१. कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा..... पत्र सं० ७ । आ० ११×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा एवं विधि । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५ । च भण्डार ।

विशेष—कांजीबारस का व्रत भाखापुरी १२ को किया जाता है ।

४४४२. कंजिकाव्रतोद्यापन..... पत्र सं० ६ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४ । च भण्डार ।

विशेष—जयमाल अपभ्रंश में है ।

४४४३. कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा..... पत्र सं० १२ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।

विषय—पूजा एवं विधि । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७ । क भण्डार ।

विशेष—पूजा संस्कृत में है तथा विधि हिन्दी में है ।

४४४४. कर्मचूरव्रतोद्यापन..... पत्र सं० ८ । आ० ११×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल सं० १९०४ भाद्रवा सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५९ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६०) और है ।

४४४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल

× । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०४ । क भण्डार ।

४४४६. कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा—लक्ष्मीसेन । पत्र सं० १० । आ० १०×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४४४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ४१३ । छ भण्डार ।

४४४८. कर्मदहनपूजा—म० शुभचंद्र । पत्र सं० ३० । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कर्मों के नष्ट करने के लिए पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १७६४ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० १६ । ज्य भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वै० सं० ३०) और है ।

४४४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६७२ आसोज । वै० सं० २१३ । व्य भण्डार ।

४४५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १६३५ मंगसिर बुदी १० । वै० सं० २२५ । व्य भण्डार ।

विशेष—आ० नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखा गया था ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० २६७) और है ।

४४५१. कर्मदहनपूजा—..... । पत्र सं० ११ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कर्मों के नष्ट करने की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८३६ मंगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वै० सं० ५२५ । व्य भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार एक प्रति (वै० सं० ५१३) और है जिसका ले० काल सं० १८२४ भाद्रवा सुदी १३ है ।

४४५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८८८ माघ शुक्ला ८ । वै० सं० १० । घ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

४४५३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १७०८ आश्वय सुदी २ । वै० सं० १०१ । ङ भण्डार ।

विशेष—माइदास ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वै० सं० १००, १०१) और हैं ।

४४५४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वै० सं० ६३ । च भण्डार ।

४४५५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वै० सं० १२५ । छ भण्डार ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड भाषा भी दिया हुआ है । इसी भण्डार में और इसी वेष्टन में १ प्रति और है ।

४४५६. कर्मदहनपूजा—टेकचन्द्र । पत्र सं० २२ । आ० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कर्मों को नष्ट करने के लिये पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७०६ । झ भण्डार ।

४४५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वै० सं० ११ । घ भण्डार ।

४४५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६८ फागुण बुदी ३ । वै० सं० ५३२ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वै० सं० ५३१, ५३३) और हैं ।

४४५६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६१ । वे० सं० १०३ । छ भण्डार ।

४४६०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १६५८ । वे० सं० २२१ । छ भण्डार ।

विशेष—अजमेर वालों के चौबारे जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३६) और है ।

४४६१. कलशविधान—मोहन । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कलश एवं अभिवेक आदि की विधि । २० का० सं० १६१७ । ले० काल सं० १६२२ । पूर्ण । वे० सं० २७ । छ भण्डार ।

विशेष—भैरवसिंह के शासनकाल में शिवकर (सीकर) नगर में मटेब नामक जिन मन्दिर के स्थापित करने के लिए यह विधान रचा गया ।

अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

लिखित पं० पन्नालाल अजमेर नगर में भट्टारकजी महाराज श्री १०८ श्री रत्नभूषणजी के पाठ भट्टारकजी महाराज श्री १०८ श्री ललितकीर्त्तिजी महाराज पाठ विराज्या बैवाख सुदी ३ नै त्यांकी दिक्षा में आया जोबनेरमुं पं० होरालालजी पन्नालाल जयनंद उत्तरचा दोलतरामजी लोढा प्रोसवाल की होली में पंडितराज नोगावां का उत्तरचा एक जायगां ११ ताई रह्या ।

४४६२. कलशविधान..... । पत्र सं० ६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कलश एवं अभिवेक आदि की विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६ । अ भण्डार ।

४४६३. कलशविधि—विश्वभूषण । पत्र सं० १० । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४८ । अ भण्डार ।

४४६४. कलशारोपणविधि—आशाधर । पत्र सं० ५ । आ० १२×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्दिर के शिखर पर कलश चढ़ाने का विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ का अंग है ।

४४६५. कलशारोपणविधि..... । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्दिर के शिखर पर कलश चढ़ाने का विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२२) और है ।

४४६६. कलशार्चिक—आशाधर । पत्र सं० ६ । आ० १०^१/_२ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
अभिषेक विधि । २० काल × । ले० काल सं० १८३८ भाद्रवा बुदी १० । पूर्णि । वै० सं० १०६ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० रामभूराम ने विमलनाथ स्वामी के चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

४४६७. कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा—भ० प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ३४ । आ० १०^१/_२ × ५ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६२६ चैत्र सुदी १३ । पूर्णि । वै० सं० ४८१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १९२६ वर्षे चैत्र सुदी १३ बुधे श्रीमूलसंघे नंदाभ्याये बलात्कारणो सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्य-
ज्ये भ० पद्मनंददेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा तच्छिष्य
श्रीमंडलाचार्यधर्मचन्द्रदेवा तच्छिष्य मंडलाचार्यश्रीललितकीर्तिदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये मंडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्र तत्-
शिष्याणि बाई लाली इदं शास्त्रं लिखापि मुनि हेमचन्द्रायदत्त ।

४४६८. कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा..... । पत्र सं० ७ । आ० १०^१/_२ × ४^१/_२ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्णि । वै० सं० ४१६ । अ भण्डार ।

४४६९. कलिकुण्डपूजा..... । पत्र सं० ३ । आ० १०^१/_२ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्णि । वै० सं० ११८३ । अ भण्डार ।

४४७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० १०५ । अ भण्डार ।

४४७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वै० सं० २५६ । अ भण्डार । और भी पूजायें हैं ।

४४७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वै० सं० २२४ । अ भण्डार ।

४४७३. कुण्डलगिरिपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र सं० ६ । आ० ११ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कुण्डलगिरि क्षेत्र की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्णि । वै० सं० ५०३ । अ भण्डार ।

विशेष—रुचिकरगिरि, मामुपोत्तरगिरि तथा पुष्कराक्ष की पूजायें और हैं ।

४४७४. क्षेत्रपालपूजा—श्री विश्वसेन । पत्र सं० २ से २८ । आ० १०^१/_२ × ४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८७४ भाद्रवा बुदी ६ । अपूर्णि । वै० सं० १३३ । (क) अ भण्डार ।

४४७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९० । ले० काल सं० १६३० ज्येष्ठ सुदी ४ । वै० सं० १२४ । अ
भण्डार ।

विशेष—गणेशलाल पांड्या चौधरी चाटसू दाने के लिए पं० मनसुखजी ने गोधों के मन्दिर में प्रतिलिपि
की थी ।

४४७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६१६ बेगास बुदी १३ । वै० सं० ११८ । ज भण्डार ।

४४७७. क्षेत्रपालपूजा..... पत्र सं० ६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—जन मान्यतानुसार भैरव की पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६० फागुन बुदी ७ । पूर्ण । वै० सं० ७६ । अ भण्डार ।

विशेष—कंवरजी श्री बंपालालजी टोंग्या खंडेलवाल ने पं० श्यामलाल ब्राह्मण से प्रतिलिपि करवाई थी ।

४४७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८६१ चैत्र सुदी ६ । वै० सं० ४८६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० ८२२, १२२८) भी हैं ।

४४७९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वै० सं० १२४ । छ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियां भी हैं ।

४४८०. कंजिकाप्रतोद्यापनपूजा—मुनि ललितकीर्ति । पत्र सं० ५ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५११ । अ भण्डार ।

४४८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० ११० । क भण्डार ।

४४८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६२८ । वै० सं० ३०२ । ख भण्डार ।

४४८३. कंजिकाप्रतोद्यापन..... पत्र सं० १७ से २१ । आ० १०३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६८ । क भण्डार ।

४४८४. राजपथामंडलपूजा—भ० क्षेमेन्द्रकीर्ति (नागौर पट्ट) । पत्र सं० ८ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६४० । पूर्ण । वै० सं० ३६ । ख भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति—

भूलसंवे बलात्कारे गच्छे सारस्वते भवन् ।

कुन्दकुन्दान्वये जातः श्रुतसागरपारगः ॥१६॥

नागीरिपट्टे पि अनंतकीर्तिः तत्पट्टधारी शुभ हर्षकीर्तिः ।

तत्पट्टविद्यादिसुसूषणाख्यः तत्पट्टहेमादिसुकीर्तिमाख्यः ॥२०॥

हेमकीर्तिभुनेः पट्टे क्षेमेन्द्रादिमणाः प्रभुः ।

तस्याज्ञया विरचितं राजपथमुपूजनं ॥२१॥

विष्णुषा शिवजिद्रक्तः नामधेयेन मोहनः ।

प्रेम्णा यात्राप्रसिद्धयर्थं चैकाहिरचितं चिरं ॥२२॥

जीयादिदं पूजनं च विश्वभूषणवध्रुवं ।

तस्यानुसारतो ज्ञेयं न च बुद्धिकृतं त्विदं ॥२३॥

इति नागोरपट्टविराजमान श्रीभट्टारकक्षेमेन्द्रकीर्तिविरचितं गजपंथसंज्ञलपूजनविधानं समाप्तम् ॥

४४८५. गणधरचरणारविन्दपूजा..... पत्र सं० ३ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

४४८६. गणधरजयमाला..... पत्र सं० १ । आ० ८×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११०० । क भण्डार ।

४४८७. गणधरबलयपूजा..... पत्र सं० ७ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४२ । क भण्डार ।

४४८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ७ । ले० काल × । वे० सं० १३४ । क भण्डार ।

४४८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिष्ठा (वे० सं० ११९, १२२) और हैं ।

४४९०. गणधरबलयपूजा..... पत्र सं० २२ । आ० ११×४ इंच । भाषा-विषय-पूजा । २० काल

× । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२१ । क भण्डार ।

४४९१. गिरिनारक्षेत्रपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र सं० ११ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल सं० १७५६ । ले० काल सं० १९०४ भाव बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ९१२ । क भण्डार ।

४४९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० ११९ । क भण्डार ।

विशेष—एक प्रति और है ।

४४९३. गिरिनारक्षेत्रपूजा..... पत्र सं० ४ । आ० ८×६ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २०

काल × । ले० काल सं० १९६० । पूर्ण । वे० सं० १४० । क भण्डार ।

४४९४. चतुर्दशीव्रतपूजा..... पत्र सं० १३ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५३ । क भण्डार ।

४४९५. चतुर्विंशतिजयमाला—यति साधनंदि । पत्र सं० २ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २९८ । क भण्डार ।

४४६६. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा.....। पत्र सं० ५१। आ० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० १३८। ज भण्डार।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नहीं है।

४४६७. प्रति सं० २। पत्र सं० ४६। ले० काल सं० १६०२ वैशाख बुदी १०। वै० सं० १३६। ज भण्डार।

४४६८. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा.....। पत्र सं० ४६। आ० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १। अ भण्डार।

विशेष—दलजी बज मुशरफ ने चढाई थी।

४४६९. प्रति सं० २। पत्र सं० ४१। ले० काल सं० १६०६। वै० सं० ३३१। अ भण्डार।

४५००. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा.....। पत्र सं० ४४। आ० १० ३/४ × ५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ५६७। अ भण्डार।

विशेष—कहीं २ जयमाला हिन्दी में भी है।

४५०१. प्रति सं० २। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १६०१। वै० सं० १५६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वै० सं० १५५) और है।

४५०२. प्रति सं० ३। पत्र सं० २८। ले० काल ×। वै० सं० ८६। अ भण्डार।

४५०३. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—सेवाराम साह। पत्र सं० ४३। आ० १२×७ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। र० काल सं० १८२४ मंगसिर बुदी ६। ले० काल सं० १८५४ आसोज सुदी १५। पूर्ण। वै० सं० ७१५। अ भण्डार।

विशेष—भास्कराम ने प्रतिलिपि की थी। कवि ने अपने पिता बखतराम के बनाये हुए मिथ्यात्वखंडन और बुद्धिविलास का उल्लेख किया है।

इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ७१४) और है।

४५०४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६०। ले० काल सं० १६०२ आषाढ सुदी ८। वै० सं० ७१४। अ भण्डार।

४५०५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५२। ले० काल सं० १६४० फागुण बुदी १३। वै० सं० ४६। अ भण्डार।

४५०६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६। ले० काल सं० १८८३। वै० सं० २३। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वै० सं० २१, २२) और हैं।

४५०७. चतुर्विंशतिपूजा..... पत्र सं० २० । आ० १२×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १२० । छ भण्डार ।

४५०८. चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा—वृन्दावन । पत्र सं० १६ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल सं० १८१६ कार्तिक बुदी ३ । ले० काल सं० १६१५ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० ७१६ ।
भ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिमां (वै० सं० ७२०, ६२७) और हैं ।

४५०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वै० सं० १४५ । क भण्डार ।

४५१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६५ । ले० काल × । वै० सं० ४७ । ख भण्डार ।

४५११. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १६५६ कार्तिक सुदी १० । वै० सं० २६ । ग
भण्डार ।

४५१२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५५ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २५ । घ भण्डार ।

विशेष—शीच के कुछ पत्र नहीं हैं ।

४५१३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७० । ले० काल सं० १६२७ सावन सुदी ३ । वै० सं० १६० । ङ
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिमां (वै० सं० १६१, १६२, १६३, १६४) और हैं ।

४५१४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १०५ । ले० काल × । वै० सं० ५४४ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतिमां (वै० सं० ५४२, ५४३, ५४५) और हैं ।

४५१५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वै० सं० २०२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिमां (वै० सं० २०४ में ३ प्रतिमां, २०५) और हैं ।

४५१६. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १६४२ चैत्र सुदी १५ । वै० सं० २६१ । ज
भण्डार ।

४५१७. प्रति सं० १० । पत्र सं० ८१ । ले० काल × । वै० सं० १८६ । झ भण्डार ।

विशेष—सर्धसुखजी गोधा ने सं० १६०० भाद्रवा सुदी ५ को मढ़ाया था ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० १४५) और है ।

४५१८. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ११५ । ले० काल सं० १६४६ सावन सुदी २ । वै० सं० ४४५ । ञ
भण्डार ।

४५१९. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १४७ । ले० काल सं० १६३७ । वै० सं० १७०६ । ट भण्डार ।

विशेष—छोटेलाल भांवसा ने स्वपठनार्थ श्रीलाल से प्रतिलिपि कराई थी ।

४५२०. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ६० । आ० ११×५१ इंच । भाषा-हिन्दी ।
पद्य । विषय-पूजा । २० काल सं० १८५४ । ले० काल X । पूर्ण । वै० सं० ५८६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० २१५८, २०८५) और हैं ।

४५२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५० । ले० काल सं० १८७१ आसोज सुदी ६ । वै० सं० २४ । ग
भण्डार ।

विशेष—सदापुख कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० २५) और है ।

४५२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १६६६ । वै० सं० १७ । घ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० १६, २४) और हैं ।

४५२३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५७ । ले० काल X । वै० सं० १५७ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वै० सं० १५८, १५९, ७८७) और हैं ।

४५२४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १६२६ । वै० सं० ५४६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वै० सं० ५४६, ५४७, ५४८) और हैं ।

४५२५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८६१ । वै० सं० २१६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वै० सं० २१७, २१८, २२०/३) और हैं ।

४५२६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६६ । ले० काल X । वै० सं० २०७ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० २०८) और है ।

४५२७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८६१ आषाढ सुदी ४ । वै० सं० १८ । झ
भण्डार ।

विशेष—जैतराम रावका ने प्रतिलिपि कराई एवं नाथूराम रावका ने विजैराम पांड्या के मन्दिर में चढ़ाई
की । इसी भण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० ५८, १८१) और हैं ।

४५२८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १८५२ आषाढ सुदी १५ । वै० सं० ६४ । ञ
भण्डार ।

विशेष—महात्मा जयदेव ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० ३१५, ३२१) और हैं ।

४५२९. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—नेमीचन्द्र पाटनी । पत्र सं० ६० । आ० १११×५१ इंच । भाषा-
हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल सं० १८८० भाद्रपद सुदी १० । ले० काल सं० १६१८ आसोज सुदी १२ । वै० सं०
१४४ । क भण्डार ।

विशेष—अन्त में कवि का संक्षिप्त परिचय दिया हुआ है तथा बतलाया गया है कि कवि दीवान अमरचंद जी के मन्दिर में कुछ समय तक ठहरकर नागपुर चले गये तथा वहां से अमरावती गये ।

४५३०. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—मनरंगलाल । पत्र सं० ५१ । आ० ११×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२१ । अ भण्डार ।

४५३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० १४३ । क भण्डार ।

विशेष—पूजा के अन्त में कवि का परिचय भी है ।

४५३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वे० सं० २०३ । छ भण्डार ।

४५३३. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—वसुन्धरावलाल । पत्र सं० ५४ । आ० ११½×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १८५४ मंगसिर बुदी ६ । ले० काल सं० १६०१ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ५५० । च भण्डार ।

विशेष—तनसुखराय ने प्रतिलिपि की थी ।

४५३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से ६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५ । छ भण्डार ।

४५३५. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—सुगनचन्द । पत्र सं० ६७ । आ० ११½×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६२६ चैत्र बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५५५ । च भण्डार ।

४५३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १६२८ वैशाख सुदी ५ । वे० सं० ५५६ । च भण्डार ।

४५३७. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा..... । पत्र सं० ७७ । आ० ११×५½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६१६ चैत्र सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६२६ । अ भण्डार ।

४५३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५४ । क भण्डार ।

४५३९. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० १० । आ० ६×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८ । अ भण्डार ।

४५४०. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा—चोखचन्द । पत्र सं० ८ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१६ । छ भण्डार ।

विशेष—‘चतुर्थ पूजा की जयमाल’ यह नाम दिया हुआ है । जयमाल हिन्दी में है ।

४५४१. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा—भ० देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० ८½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चन्द्रप्रभ की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७१ । क भण्डार ।

४५४२. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा.....। पत्र सं० २१। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
तीर्थङ्कर चन्द्रप्रभ की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १८०५। ट भण्डार।

विशेष—निम्न पूजायें श्रीर हैं— पञ्चमी व्रतोद्यापन, नवग्रहपूजाविधान।

४५४३. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा.....। पत्र सं० २। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० २१६२। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० २१६३) श्रीर है।

४५४४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० २०६३। ट भण्डार।

४५४५. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा.....। पत्र सं० ६। आ० ११३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० ६५७। अ भण्डार।

विशेष—इरा पत्र नहीं है।

४५४६. चन्द्रप्रभजिनपूजा—रामचन्द्र। पत्र सं० ७। आ० १०३×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-
पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८७६ आसोज बुदी ४। पूर्ण। वै० सं० ४२७। अ भण्डार।

विशेष—सदासुख बाबूलोकाल महुआ वाले ने प्रतिलिपि की थी।

४५४७. चन्द्रप्रभजिनपूजा—देवेन्द्रकीर्ति। पत्र सं० ५। आ० ११×४ इंच। भाषा-संस्कृत।
विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १७६२। पूर्ण। वै० सं० ५७६। अ भण्डार।

४५४८. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल सं० १८६३। वै० सं० ४३०। अ भण्डार।

विशेष—आमेरमें सं० १८७२ में रामचन्द्र की लिखी हुई प्रति से प्रतिलिपि की गई थी।

४५४९. चमत्कारअतिशयक्षेत्रपूजा.....। पत्र सं० ५। आ० ७×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-
पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६२७ बैशाख बुदी १३। पूर्ण। वै० सं० ६०२। अ भण्डार।

४५५०. चारित्रशुद्धिविधान—श्री भूषण। पत्र सं० १७०। आ० १२३×३ इंच। भाषा-संस्कृत।
विषय-मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें। र० काल ×। ले० काल सं० १८८८ पौष सुदी ८। पूर्ण।
वै० सं० ४४५। अ भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम बारहसौ चौतीसाव्रत पूजा विधान भी है।

४५५१. प्रति सं० २। पत्र सं० ८६। ले० काल ×। वै० सं० १५२। क भण्डार।

विशेष—सेखक प्रशस्ति कटी हुई है।

४४५२. चारित्रशुद्धिविधान—सुमतिब्रह्म । पत्र सं० ५४ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—मृति दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ वैशाख सुदी १५ ।
पूर्णा । वे० सं० १२३ । ख भण्डार ।

४४५३. चारित्रशुद्धिविधान—शुभचन्द्र । पत्र सं० ६६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
मृति दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें । २० काल × । ले० काल सं० १७१४ फाल्गुण सुदी ४ । पूर्णा ।
वे० सं० २०४ । ज भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

संवत् १७१४ वर्षे फाल्गुणमासे शुक्लपक्षे चतुर्थ तिथी शुक्रवासर । चण्डसोलास्थाने मुंडलदेशे श्रीधर्मनाथ
चैत्यालये श्रीमूलसत्रे सरस्वतीमन्त्रे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री ५ रत्नचन्द्राः तत्पुत्रे भ० हर्षचन्द्राः
तदाम्नाये ब्रह्म श्री ठाकरसी तत्शिष्य ब्रह्म श्री गणदास तत्शिष्य ब्रह्म श्री महीदासेन स्वज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थ उद्यापन
चारत्तं चौत्रोक्तं स्वहस्तेन लिखितं ।

४४५४. चिन्तामणिपूजा (बृहत्)—विद्याभूषण सूरि । पत्र सं० ११ । आ० ६३×४३ इंच ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ५५१ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ३, ८, १० नहीं हैं ।

४४५५. चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा (बृहद्)—शुभचन्द्र । पत्र सं० १० । आ० ११३×५ इंच ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ५७४ । अ भण्डार ।

४४५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८२ । ले० काल सं० १६६१ पौष सुदी ११ । वे० सं० ४१७ । अ
भण्डार ।

४४५७. चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा । पत्र सं० ३ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११८४ । अ भण्डार ।

४४५८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० २८ । ग भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायें भी हैं । चिन्तामणिस्तोत्र, कलिकुण्डस्तोत्र, कलिकुण्डपूजा एवं पद्मावतीपूजा ।

४४५९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ६६ । च भण्डार ।

४४६०. चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा । पत्र सं० ११ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ५८३ । च भण्डार ।

४५६१. चिन्तामणिपार्वनाथपूजा.....। पत्र सं० ५। आ० ११३×५३ इंच। भाषा—संस्कृत।

विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२१४। अ भण्डार।

विशेष—यज्ञविधि एवं स्तोत्र भी दिया है।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८४०) और है।

४५६२. चौदहपूजा.....। पत्र सं० १६। आ० १०×७ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २०

काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६६। अ भण्डार।

विशेष—ऋषभनाथ से लेकर अनंतनाथ तक पूजायें हैं।

४५६३. चौसठशुद्धिपूजा—स्वरूपचन्द्र। पत्र सं० ३५। आ० ११३×५ इंच। भाषा—हिन्दी।

विषय—६४ प्रकार की शुद्धि धारण करने वाले मुनियोंकी पूजा। २० काल सं० १६१० सावन सुदी ७। ने० काल सं०

१६५१। पूर्ण। वे० सं० ६६४। अ भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम बृहद्गुर्विलि पूजा भी है।

इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ७१६, ७१७, ७१८, ७३७) और हैं।

४५६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६१०। वे० सं० ६७७। क भण्डार।

४५६५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३२। ले० काल सं० १६५२। वे० सं० २६। ग भण्डार।

४५६६. प्रति सं० ४। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १६२६ फागुण सुदी १२। वे० सं० ७६। घ

भण्डार।

४५६७. प्रति सं० ५। पत्र सं० २५। ले० काल ×। वे० सं० १६३। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६४) और है।

४५६८. प्रति सं० ६। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० ७३४। च भण्डार।

४५६९. प्रति सं० ७। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १६२२। वे० सं० २१६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १४३, २१६/३) और हैं।

४५७०. प्रति सं० ८। पत्र सं० ४५। ले० काल ×। वे० सं० २०६। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० २६२/२ २६५) और हैं।

४५७१. प्रति सं० ९। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। वे० सं० ५३४। व्य भण्डार।

४५७२. प्रति सं० १०। पत्र सं० ४३। ले० काल ×। वे० सं० १६१३। ट भण्डार।

४५७३. छोटिनिवारणविधि.....। पत्र सं० ३। आ० ११×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—

विधान। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८७८। अ भण्डार।

४५७४. जम्बूद्वीपपूजा—पांडे जिनदास । पत्र सं० १६ । आ० १० १/२ × ६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल १७वीं शताब्दी । ले० काल सं० १८२२ मंसिर बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १८३ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति अकृत्रिम जिनालय तथा भूत, भविष्यत्, वर्तमान जिनपूजा सहित है । पं० चोखचन्द ने माहचन्द्र से प्रतिलिपि करवाई थी ।

४५७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १८८४ ज्येष्ठ सुदी १४ । वे० सं० ६८ । ख भण्डार ।

विशेष—भवानीचन्द भावासा भिलाय वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४५७६. जम्बूस्वामीपूजा । पत्र सं० १० । आ० ८ × ५ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—अन्तिम केवली जम्बूस्वामी की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १९४८ । पूर्ण । वे० सं० ६०१ । अ भण्डार ।

४५७७. जयमाल—रायचन्द । पत्र सं० १ । आ० ८ १/२ × ४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १८५५ फागुण सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३२ । अ भण्डार ।

विशेष—भोजराज जी ने किशनगढ़ में प्रतिलिपि की थी ।

४५७८. जलहरतेलाविधान । पत्र सं० ४ । आ० ११ १/२ × ७ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ३२३ । ज भण्डार ।

विशेष—जलहर तेले (व्रत) की विधि है । इसका दूसरा नाम भरतेला व्रत भी है ।

४५७९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १९२८ । वे० सं० ३०२ । ख भण्डार ।

४५८०. जलयात्रापूजाविधान । पत्र सं० २ । आ० ११ × ६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २९३ । ज भण्डार ।

विशेष—भगवान के अभिषेक के लिए जल लाने का विधान ।

४५८१. जलयात्राविधान—महा पं० आशाधर । पत्र सं० ४ । आ० ११ १/२ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—जन्माभिषेक के लिए जल लाने का विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६६ । अ भण्डार ।

४५८२. जलयात्रा (तीर्थोदकादानविधान) । पत्र सं० २ । आ० ११ × ५ १/२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—जलयात्रा के वस्त्र भी दिये हैं ।

४५८३. जिनगुणसंपत्तिपूजा—भ० राजचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० ११ १/२ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२ । छ भण्डार ।

४४८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६८३ । वे० सं० १७१ । अ भण्डार ।

विशेष—श्रीपति जोशी ने प्रतिलिपि की थी ।

४४८५. जिनगुणसंपत्तिपूजा..... पत्र सं० ११ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१६७ । अ भण्डार ।

विशेष—५वां पत्र नहीं है ।

४४८६. प्रति सं० १ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६२१ । वे० सं० २६३ । ख भण्डार ।

४४८७. जिनगुणसंपत्तिपूजा..... पत्र सं० ५ । आ० ७½×६½ इंच । भाषा—संस्कृत प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१५ । अ भण्डार ।

४४८८. जिनपुरन्दरव्रतपूजा..... पत्र सं० १४ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०६ । छ भण्डार ।

४४८९. जिनपूजाफत्रप्राप्तिकथा पत्र सं० ५ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८३ । अ भण्डार ।

विशेष—पूजा के साथ २ कथा भी है ।

४४९०. जिनयज्ञकल्प (प्रतिष्ठासार)—महा पं० आशाधर । पत्र सं० १०२ । आ० १०½×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मूर्ति, वेदी प्रतिष्ठादि विधानों की विधि । २० काल सं० १२८५ आसोज बुदी ८ । ले० काल सं० १४६५ माघ बुदी ८ (शक सं० १३६०) पूर्ण । वे० सं० २८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १४६५ शके १३६० वर्षे माघ वदि ८ शुक्लपक्षे..... (अपूर्ण)

४४९१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १६३३ । वे० सं० ४५६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—संवत् १६३३ वर्षे.....

४४९२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८८५ भाद्रवा बुदी १३ । वे० सं० २७ । ध भण्डार ।

विशेष—मथुरा में श्रीरङ्गजेब के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई ।

लेखक प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघेषु सरस्वतीयो गच्छे बलात्कारणो प्रसिद्धे ।

सिंहासनी श्रीमलयस्य खेटे सुदक्षिणाशा विषये विलीने ।

श्रीकुंदकुंदाखिलयोगनाथ पट्टानुगानेकमुनीन्द्रवर्णाः ।

दुर्वादिवायुन्मथनैकसज्ज विद्याभुनंदीश्वरसूरिमुख्यः ॥

तदन्वये योऽमरकीर्तिनाम्ना भट्टारको वादिगजेभशत्रुः ।

तस्यानुशिष्यशुभचन्द्रसूरि श्रीमालके नर्मदयोपगमां ॥

पुर्वा शुभायां पट्टपशत्रुवत्मां सुवर्णकारणाप्रत नीचकार ॥

४५६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १६५६ भाद्रवा सुदी १२ । वे० सं० २२३ ।

झ भण्डार ।

विशेष—बंगाल में अकबरां नगर में राजा सवाई मानसिंह के शासनकाल में भाषार्थ कुंदकुन्द के बला-त्कारगण सरस्वतीगच्छ में भट्टारक पद्मनंदि के शिष्य भ० शुभचन्द्र भ० जिनचन्द्र भ० चन्द्रकीर्ति की आम्नाय में खंडेल-वाल बंशोत्पन्न पाटनीगोत्र वाले साहू श्री पट्टिराज, बलू, फरना, कपूरा, नाथू आदि में से कपूरा ने षोडशकारण वलोद्या-वन में १०० क्षौ अथर्वत को गहू प्रति दे० की थी ।

४५६४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११६ । ले० काल X । वे० सं० ४२ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

नद्यात् खंडिल्लवशोत्थः केल्हणोन्यासवित्तरः ।

लेखितोयेन पाठार्थमस्य प्रणमं पुस्तकं ॥२०॥

४५६५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६६२ भाद्रवा सुदी २ । वे० सं० ४२५ । ज

भण्डार ।

विशेष—संवत् १६६२ वर्षे भाद्रपद वदि २ भौमे अर्धेह राजपुरनगरवास्तव्यं आन्यासरनागरजाली पंचोली त्याताभाट्टसुत नरसिंहेन लिखितं ।

इ भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०७) च भण्डार में २ अपूर्ण प्रतिमां (वे० सं० १२०, १०५) तथा झ भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०७) और है ।

४५६६. जिनयज्ञविधान..... पत्र सं० १ । आ० १०X४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान ।

२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १७८३ । ट भण्डार ।

४५६७. जिनस्नपन (अभिषेक पाठ)..... पत्र सं० १४ । आ० ६३X४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल सं० १८११ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० १७७८ । ट भण्डार ।

४५६८. जिनसंहिता..... पत्र सं० ४६ । आ० १३X८३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा प्रति-

ष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७७ । छ भण्डार ।

४५६६. जिनसंहिता—भद्रबाहु । पत्र सं० १३० । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६ । क भण्डार ।

४६००. जिनसंहिता—भ० एकसंधि । पत्र सं० ८४ । आ० १३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १६७ । क भण्डार ।

विशेष—५७, ५८, ८१, ८२ तथा ८३ पत्र खाली हैं ।

४६०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १८५३ । वे० सं० १६८ । क भण्डार ।

४६०२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १११ । ले० काल × । वे० सं० ५६ । ख भण्डार ।

४६०३. जिनसंहिता— । पत्र सं० १०६ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान । २० काल × । ले० काल सं० १८५६ भाद्रवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १६५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम पूजासार भी है । यह एक संग्रह ग्रन्थ है जिसका विषय बीरसेन, जिनसेन पूज्यपाद तथा गुरुभद्रादि आचार्यों के ग्रन्थों से संग्रह किया गया है । ६६ पृष्ठों के अतिरिक्त १० पत्रों में ग्रन्थ से सम्बन्धित ४३ मंत्र दे रखे हैं ।

४६०४. जिनसहस्रनामपूजा—धर्मभूषण । पत्र सं० १२६ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६०६ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ४३८ । अ भण्डार ।

विशेष—लिछमणलाल से पं० सुखलालजी के पठनार्थ हीरालालजी रेणवाल तथा पसेवर वालों ने किला खण्डार में प्रतिलिपि करवाई थी ।

मन्तिम प्रशस्ति— या पुस्तक लिखाई किला खण्डारि के कोटडिराज्ये श्रीमामसिंहजी तन् कंवर फतेसिंहजी बुलाया रेणवाल लूँ बैदगी निमित्त श्रीसहस्रनाम को मंडलजी मंडावो उत्सव करावो । श्री श्रवभदेवजी का मन्दिर में भाल लियो दरीगा चत्रभुजजी बासी बगरू का मोत पाटसी रु० १५) साहजी गणेशलालजी साह ज्याकी सहाय सूं हुवो ।

४६०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८७ । ले० काल × । वे० सं० १६४ । क भण्डार ।

४६०६. जिनसहस्रनामपूजा—स्वरूपचन्दविलास । पत्र सं० ६५ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १६१६ आसोज सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८७१३ । क भण्डार ।

४६०७. जिनसहस्रनामपूजा—चैनसुख लुहाडिया । पत्र सं० २६ । आ० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६३६ माह सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ७७२ । क भण्डार ।

४६०८. जिनसहस्रनामपूजा..... पत्र सं० १८ । आ० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२४ । अ मण्डार ।

४६०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ७२४ । अ मण्डार ।

४६१०. त्रिनामिषे निर्णय ... पत्र सं० १० । आ० १२×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—अभिषेक
विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११ । अ मण्डार ।

विशेष—विद्वज्जनबोधक के प्रथमकाण्ड में सातवें उल्लास की हिन्दी भाषा है ।

४६११. जैनप्रतिष्ठापाठ पत्र सं० २ से ३५ । आ० ११३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६ । अ मण्डार ।

४६१२. जेनाववाहपद्धति ... पत्र सं० ३४ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विवाह
विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५ । क मण्डार ।

विशेष—आचार्य जिनसेन स्वामी के मतानुसार संग्रह किया गया है । प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

४६१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० १७ । ज मण्डार ।

४६१४. ज्ञानपंचविंशतिकाव्रतोद्यापन—म० सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १६ । आ० १०३×५ इंच ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १८४७ चैत्र बुदी ६ । ले० काल सं० १८६३ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण ।
वे० सं० १२२ । अ मण्डार ।

विशेष—जयपुर में चन्द्रप्रभु चैद्यालय में रचना की गई थी । सोनजी पांडव्या ने प्रतिलिपि की थी ।

४६१५. ज्येष्ठजिनवरपूजा ... पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०४ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७२३) भी है ।

४६१६. ज्येष्ठजिनवरपूजा पत्र सं० १२ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१६ । क मण्डार ।

४६१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६२१ । वे० सं० २६३ । अ मण्डार ।

४६१८. ज्येष्ठजिनवरव्रतपूजा पत्र सं० १ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८६० आषाढ बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २२१२ । अ मण्डार ।

विशेष—विद्वान् सुशाल ने जोधराज के बनवाये हुए पाटोदी के मन्दिर में प्रतिलिपि की । सरडो सुरेन्द्र-
कीर्तिजी को रच्यो ।

४६१६. रामोकारपैसीसपूजा—अक्षयराम । पत्र सं० ३ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—रामोकार मन्त्र पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६६ । अ मण्डार ।

विशेष—महाराजा जयसिंह के शासनकाल में ग्रन्थ रचना की गई थी ।

इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७८) और है ।

४६२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १७६५ प्र० आसोज बुदी १ । वे० सं० ३६४ । अ मण्डार ।

४६२१. रामोकारपैसीसीव्रतविधान—आ० श्री कनककीर्ति । पत्र सं० ५ । आ० १२×५ इंच ।

भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा एवं विधान । २० काल × । ले० काल सं० १८२५ । पूर्ण । वे० सं० २३६ । क मण्डार ।

विशेष—हंगरसी कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४६२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४ । अ मण्डार ।

४६२३. तत्त्वार्थसूत्रदशाध्यायपूजा—दयाचन्द्र । पत्र सं० १ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६० । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति वे० सं० २६१ । और है ।

४६२४. तत्त्वार्थसूत्रदशाध्यायपूजा..... । पत्र सं० २ । आ० १११×५ । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । क मण्डार ।

विशेष—केवल १०वें अध्याय की पूजा है ।

४६२५. तीनचौबीसीपूजा..... । पत्र सं० ३८ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—भूत, भविष्यत् तथा वर्तमान काल के चौबीसों तीर्थङ्करों की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७४ । क मण्डार ।

४६२६. तीनचौबीसीसमुच्चयपूजा..... । पत्र सं० ५ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८०६ । ट मण्डार ।

४६२७. तीनचौबीसीपूजा—नेमीचन्द्र पाटवी । पत्र सं० ६७ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १८६४ कार्तिक बुदी १४ । ले० काल सं० १६२८ माघ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २७५ । क मण्डार ।

४६२८. तीनचौबीसीपूजा..... । पत्र सं० ५७ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १८८२ । ले० काल सं० १८८२ । पूर्ण । वे० सं० २७३ । क मण्डार ।

४६२६. तीसचौबीसीसमुच्चयपूजा पत्र सं० २० । आ० ११३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२५ । छ भण्डार ।

४६३०. त्रिलोकपूजा—नेमीचन्द्र । पत्र सं० ४१० । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल सं० १८२८ । ले० काल सं० १६७३ । पूर्ण । वे० सं० २७७ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ लिखाने में ३७॥—) लगे थे ।

इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ५७६, ५७७) भी हैं ।

४६३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५० । ले० काल × । वे० सं० २४१ । छ भण्डार ।

४६३२. तीनलोकपूजा—नेमीचन्द्र । पत्र सं० ८५१ । आ० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६६३ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २२०३ । छ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम त्रिलोकसार पूजा एवं त्रिलोकपूजा भी है ।

४६३३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०८८ । ले० काल × । वे० सं० २७० । क भण्डार ।

४६३४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६८७ । ले० काल सं० १६६३ ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० सं० २२६ । छ
भण्डार ।

विशेष—दो वेष्टनों में है ।

४६३५. तीसचौबीसीनाम पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५७८ । छ भण्डार ।

४६३६. तीसचौबीसीपूजा—वृन्दावन । पत्र सं० ११६ । आ० १०३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८० । छ भण्डार ।

विशेष—प्रतिलिपि बनारस में गङ्गातट पर हुई थी ।

४६३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२२ । ले० काल सं० १६०१ आषाढ सुदी २ । वे० सं० ५७ । छ
भण्डार ।

४६३८. तीसचौबीसीसमुच्चयपूजा पत्र सं० ६ । आ० ८×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल सं० १८०८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७८ । छ भण्डार ।

विशेष—अठारहवीं अन्तर्गत ५ भरत ५ ऐरावत १० क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी पूजा है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७६) भी है ।

४६३९. तेरहवीं पूजा—शुभचन्द्र । पत्र सं० १५४ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६२१ सावन सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ७३ । ख भण्डार ।

४६४०. तेरहद्वीपपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र सं० १०२ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—जैन मान्यतानुसार १३ द्वीपों की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८८७ भाद्रपद सुदी २ । वे० सं० १२७ ।
अ भण्डार ।

विशेष—विजैरामजी पांड्या ने बसवेश्वर द्वारा से लिखवाई थी ।

४६४१. तेरहद्वीपपूजा..... । पत्र सं० २४ । आ० ११½×६½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—जैन
मान्यतानुसार १३ द्वीपों की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ । पूर्ण । वे० सं० ४३ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ५०) और है ।

४६४२. तेरहद्वीपपूजा..... । पत्र सं० २०८ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल सं० १६२४ । पूर्ण । वे० सं० ५३५ । अ भण्डार ।

४६४३. तेरहद्वीपपूजा—लालजीत । पत्र सं० २३२ । आ० १२½×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल सं० १८७७ कार्तिक सुदी १२ । ले० काल सं० १६६२ भाद्रपद सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २७७ । क
भण्डार ।

विशेष—गोविन्दराम ने प्रतिलिपि की थी ।

४६४४. तेरहद्वीपपूजा..... । पत्र सं० १७६ । आ० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५८१ । अ भण्डार ।

४६४५. तेरहद्वीपपूजा..... । पत्र सं० २६४ । आ० ११×७½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल सं० १६४६ कार्तिक सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३४३ । ज भण्डार ।

४६४६. तेरहद्वीपपूजाविधान..... । पत्र सं० ८६ । आ० ११×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०६१ । अ भण्डार ।

४६४७. त्रिकालचौबीसीपूजा—त्रिभुवनचन्द्र । पत्र सं० १३ । आ० ११½×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—तीनों काल में होने वाले तीर्थंकरों की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७५ । अ
भण्डार ।

विशेष—शिवलाल ने नेवटा में प्रतिलिपि की थी ।

४६४८. त्रिकालचौबीसीपूजा..... । पत्र सं० ६ । आ० १०×६½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७८ । क भण्डार ।

४६४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १७०४ पौष सुदी ६ । वे० सं० २७६ । क
भण्डार ।

विशेष—बसवा में भाचार्य पूर्णचन्द्र ने अपने चार शिष्यों के साथ में प्रतिलिपि की थी ।

४६५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६६१ भाद्रवा सुदी ३ । वे० सं० २२२ । छ
भण्डार ।

विशेष—श्रीमती चतुरमती अजिका की पुस्तक है ।

४६५१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १७४७ फाल्गुन बुदी १३ । वे० सं० ४११ । अ
भण्डार ।

विशेष—विद्याविनोद ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७५) भी है ।

४६५२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २१६२ । ट भण्डार ।

४६५३. त्रिकालपूजा..... । पत्र सं० १६ । आ० ११×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३० । अ भण्डार ।

विशेष—भूत, भविष्य, वर्तमान के त्रैलोक्य शलाका पुरुषों की पूजा है ।

४६५४. त्रिलोकक्षेत्रपूजा..... । पत्र सं० ५१ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल सं० १८४२ । ले० काल सं० १८८६ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ५८२ । च भण्डार ।

४६५५. त्रिलोकस्थजिनालयपूजा..... । पत्र सं० ६ । आ० ११×७^३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२८ । ज भण्डार ।

४६५६. त्रिलोकसारपूजा—अभयनन्दि । पत्र सं० ३६ । आ० १३^३×७ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० सं० ५४४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६वें पत्र से नवीन पत्र जोड़े गये हैं ।

४६५७. त्रिलोकसारपूजा..... । पत्र सं० २६० । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल सं० १६३० भाद्रवा सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ४८६ । अ भण्डार ।

४६५८. त्रेपनक्रियापूजा..... । पत्र सं० ६ । आ० १२×५^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वे० सं० ५१६ । अ भण्डार ।

४६५९. त्रेपनक्रियाव्रतपूजा..... । पत्र सं० ५ । आ० ११^३×५^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल सं० १६०४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८७ । क भण्डार ।

विशेष—ग्राह्यार्य पूर्णचन्द्र ने सांगानेर में प्रतिलिपि की थी ।

४६६०. त्रैलोक्यसारपूजा—सुमतिसागर । पत्र सं० १७२ । आ० ११^३×५^३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८२६ भाद्रवा बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३२ । छ भण्डार ।

४६६१. त्रैलोक्यसारमहापूजा..... पत्र सं० १४५ । मा० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वे० सं० ७६ । ख भण्डार ।

४६६२. दशलक्षजयमाल—पं० रङ्गधू । मा० १०×५ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—धर्म के दश भेदों की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६८ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायान्तर दिया हुआ है ।

४६६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७६५ । वे० सं० ३०१ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०२) और है ।

४६६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० २६७ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६६) और है ।

४६६५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८०१ । वे० सं० ८३ । ख भण्डार ।

विशेष—जोड़ी लुशालीराम के टोंक में प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ८२, ८३/१) और हैं ।

४६६६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० २६४ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संकेत दिये हुये हैं । इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २६२) और है ।

४६६७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १२६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५०) और है ।

४६६८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७८२ फागुण सुदी १२ । वे० सं० १२६ । ख भण्डार ।

४६६९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० ७३ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० १६८, २०२) और हैं ।

४६७०. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७४६ । वे० सं० १७० । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० २६८, २८५) और हैं ।

४६७१. प्रति सं० १० । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १७८६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियाँ (वे० सं० १७८७, १७८८, १७८४) और हैं ।

४६७२. दशलक्षजयमाल—पं० भाय्य शर्मा । पत्र सं० ८ । मा० १२×५ इंच । भाषा—प्राकृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८११ भाद्रपद सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० २६८ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका दी हुई है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४८१) और है ।

४६७३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३। ले० काल सं० १७३४ पौष सुदी १२। वे० सं० ३०२। क भण्डार।

विशेष—धमरावती जिले में समरपुर नामक नगर में आचार्य पूर्णचन्द्र के शिष्य मिरवर के पुत्र लक्ष्मण ने स्वयं के पढ़ने के लिए प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०१) और है।

४६७४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १६१२। वे० सं० १८१। ल भण्डार।

विशेष—जयपुर के जोबनेर के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी।

४६७५. प्रति सं० ४। पत्र सं० १२। ले० काल सं० १८६२ भाद्रवा सुदी ८। वे० सं० १५१। च भण्डार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं।

४६७६. प्रति सं० ५। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० १२९। छ भण्डार।

४६७७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० २०५। व्य भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४८१) और है।

४६७८. प्रति सं० ७। पत्र सं० १८। ले० काल ×। वे० सं० १७८४। ट भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियाँ (वे० सं० १७८६, १७८०, १७८२, १७८४) और हैं।

४६७९. दशलक्षणजयमाला..... पत्र सं० ८। आ० १०×५ इंच। भाषा—प्राकृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १७८४ भाद्रवा सुदी ४। पूर्णा। वे० सं० २६३। क भण्डार।

४६८०. प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० २०६। झ भण्डार।

४६८१. प्रति सं० ३। पत्र सं० १५। ले० काल ×। वे० सं० ७२६। झ भण्डार।

४६८२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६०। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० २६७, २६८) और हैं।

४६८३. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८६६ भाद्रवा सुदी ३। वे० सं० १५३। च भण्डार।

विशेष—महात्मा बीरमल नेवदा वाले ने प्रतिलिपि की थी। संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं।

इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० १५२, १५४) और हैं।

४६८४. दशलक्षणजयमाला..... पत्र सं० ५। आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—प्राकृत, संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्णा। वे० सं० २११५। झ भण्डार।

४६८५. दशलक्ष्णजयमाला.....। पत्र सं० ६। आ० १०३×४३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा।
 २० काल ×। ले० काल सं० १७३६ आसोज बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ८४। ख अण्डार।

विशेष—नागौर में प्रतिलिपि हुई थी।

४६८६. दशलक्ष्णजयमाला.....। पत्र सं० ७। आ० ११×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा।
 २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७४५। च अण्डार।

४६८७. दशलक्ष्णपूजा—अभ्रदेश। पत्र सं० ६। आ० १३×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
 पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०८२। अ अण्डार।

४६८८. दशलक्ष्णपूजा—अभयनन्दि। पत्र सं० १५। आ० १२×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
 पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६६। क अण्डार।

४६८९. दशलक्ष्णपूजा.....। पत्र सं० २। आ० ११×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।
 २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६७। अ अण्डार।

विशेष—इसी अण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२०४) और है।

४६९०. प्रति सं० ३। पत्र सं० १८। ले० काल सं० १७४७ काशुण बुदी ४। वे० सं० ३०३। क
 अण्डार।

विशेष—सांगानेर में विद्याविनोद ने पं० गिरधर के वाचनार्थ प्रतिलिपि की थी।

इसी अण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६८) और है।

४६९१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० १७८५। क अण्डार।

विशेष—इसी अण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७९१) और है।

४६९२. दशलक्ष्णपूजा.....। पत्र सं० ३७। आ० ११×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।
 २० काल ×। ले० काल सं० १८६३। पूर्ण। वे० सं० १५५। च अण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४६९३. दशलक्ष्णपूजा—आनतराय। पत्र सं० १०। आ० ८३×६३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—
 पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७२५। अ अण्डार।

विशेष—पत्र सं० ७ तक रत्नत्रयपूजा दी हुई है।

४६९४. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी २। वे० सं० ३००। क
 अण्डार।

४६९५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ३००। ज अण्डार।

४६६६. दशलक्षपूजा.....। पत्र सं० ३५। आ० १२३×७३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा।
२० काल ×। ले० काल सं० १६५४। पूर्ण। वे० सं० ५८८। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५८९) और है।

४६६७. प्रति सं० २। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १६३७। वे० सं० ३१७। च भण्डार।

४६६८. दशलक्षपूजा.....। पत्र सं० ३। आ० ११×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। २०
काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६२०। ट भण्डार।

विशेष—स्थापना दानतराय कृत पूजा की है अष्टक तथा जयमाला किसी अन्य कवि की है।

४६६९. दशलक्षमंडलपूजा.....। पत्र सं० ६३। आ० ११३×५३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—
पूजा। २० काल सं० १८८० चैत्र सुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३०३। क भण्डार।

४७००. प्रति सं० २। पत्र सं० ५२। ले० काल ×। वे० सं० ३०१। क भण्डार।

४७०१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३४। ले० काल सं० १६३७ भाद्रवा सुदी १०। वे० सं० ३००। क
भण्डार।

४७०२. दशलक्षपूजा—सुमतिसागर। पत्र सं० २२। आ० १०३×५ इंच। भाषा—संस्कृत।
विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १८६६ भाद्रवा सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० ७६६। अ भण्डार।

४७०३. प्रति सं० २। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १८२६। वे० सं० ४६८। अ भण्डार।

४७०४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १८७६ आसोज सुदी ५। वे० सं० १४६। च
भण्डार।

विशेष—सदामुख बाकलीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

४७०५. दशलक्षपूजा—जिनचन्द्र सूरि। पत्र सं० १६ - २५। आ० १०३×५ इंच।
भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६१। क भण्डार।

४७०६. दशलक्षपूजा—मल्लिभूषण। पत्र सं० १४। आ० १२३×६ इंच। भाषा—संस्कृत।
विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२६। क भण्डार।

४७०७. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० ७५। क भण्डार।

४७०८. दशलक्षपूजा—मल्लिभूषण.....। पत्र सं० ४३। आ० १०×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ७०। क भण्डार।

विशेष—मण्डलविधि भी दी हुई है।

४७०६. दशलक्षणविधानपूजा..... पत्र सं० ३० । आ० १२३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २०७ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां इसी वेष्टन में और हैं ।

४७१०. देवपूजा—इन्द्रनन्दि योगीन्द्र । पत्र सं० ५ । आ० १०^३/_४×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६० । च भण्डार ।

४७११. देवपूजा..... पत्र सं० ११ । आ० १३^३/_४×४^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १८५३ । अ भण्डार ।

४७१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ से १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ४६ । घ भण्डार ।

४७१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वै० सं० ३०५ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ३०६) और है ।

४७१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वै० सं० १६१ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० १६२, १६३) और हैं ।

४७१५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८८३ पौष बुदी ङ । वै० सं० १३३ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० १६६, १७८) और हैं ।

४७१६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६५० आषाढ बुदी १२ । वै० सं० २१४२ । ट भण्डार ।

विशेष—छोतरमल ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी ।

४७१७. देवपूजाटीका..... पत्र सं० ८ । आ० १२×५^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । वै० सं० ११६ । छ भण्डार ।

४७१८. देवपूजाभाषा—जयचन्द छत्रवट्टा । पत्र सं० १७ । आ० १२×५^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८४३ कार्तिक सुदी ङ । पूर्ण । वै० सं० ५१९ । अ भण्डार ।

४७१९. देवसिद्धपूजा..... पत्र सं० १५ । आ० १२×५^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १५६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन में एक प्रति और है ।

४७२०. द्वादशव्रतपूजा—पं० अन्नदेव । पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५८४ । अ भण्डार ।

४७२१. द्वादशव्रतोद्यापनपूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १६ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल सं० १७७२ माघ सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३३ । अ भण्डार ।

४७२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ३२० । क भण्डार ।

४७२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४७२४. द्वादशव्रतोद्यापनपूजा—पद्मनन्दि । पत्र सं० ६ । आ० ७३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६३ । अ भण्डार ।

४७२५. द्वादशव्रतोद्यापनपूजा—भ० जगतकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० १०३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६ । ज भण्डार ।

४७२६. द्वादशव्रतोद्यापन..... पत्र सं० ५ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १८०४ । पूर्ण । वे० सं० १३५ । ज भण्डार ।

विशेष—गोधनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

४७२७. द्वादशांगपूजा—डालूराम । पत्र सं० १६ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १० काल सं० १८७६ ज्येष्ठ सुदी ६ । ले० काल सं० १६३० आषाढ सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ३२४ । क भण्डार ।

विशेष—पद्मलाल चौधरी ने प्रतिलिपि की थी ।

४७२८. द्वादशांगपूजा..... पत्र सं० ८ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १८८६ माघ सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ५६२ ।

विशेष—इसी वेष्टन में २ प्रतिष्ठा और है ।

४७२९. द्वादशांगपूजा पत्र सं० ६ । आ० १२×७३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३२७) और है ।

४७३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४४४ । अ भण्डार ।

४७३१. धर्मचक्रपूजा—यशोनन्दि । पत्र सं० १६ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१८ । अ भण्डार ।

४७३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६४२ कार्तिक सुदी १० । वे० सं० ८६ । ख भण्डार ।

विशेष—पद्मलाल जोषनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४७३३. धर्मचक्रपूजा—साधु रणमल्ल । पत्र सं० ८ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८८१ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ५२८ । अ मण्डार ।

विशेष—पं० खुणालचन्द ने जोधराज पाटीदी के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी ।

४७३४. धर्मचक्रपूजा..... । पत्र सं० १० । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०६ । अ मण्डार ।

४७३५. ध्वजारोपण..... । पत्र सं० ११ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजाविधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२ । छ मण्डार ।

४७३६. ध्वजारोपणमंत्र..... । पत्र सं० ४ । आ० १११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२३ । अ मण्डार ।

४७३७. ध्वजारोपणविधि—पं० आशाधर । पत्र सं० २७ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्दिर में ध्वजा लगाने का विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । ख मण्डार ।

४७३८. ध्वजारोपणविधि..... । पत्र सं० १३ । आ० १०१×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विषय—मन्दिर में ध्वजा लगाने का विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४३४, ४८८) भी हैं ।

४७३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६१६ । वे० सं० ३१८ । ज मण्डार ।

४७४०. ध्वजारोहणविधि । पत्र सं० ८ । आ० १०१×७३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६२७ । पूर्ण । वे० सं० २७३ । छ मण्डार ।

४७४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ - ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८२२ । ट मण्डार ।

४७४२. नन्दीश्वरजयमाल..... । पत्र सं० २ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७६ । ट मण्डार ।

४७४३. नन्दीश्वरजयमाल..... । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७० । ट मण्डार ।

४७४४. नन्दीश्वरद्वीपपूजा—रत्ननन्दि । पत्र सं० १० । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६० । च मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४७४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८६१ आषाढ बुदी ३ । वे० सं० १६१ । च भण्डार ।

विशेष—पत्र चूहों ने खा रखे हैं ।

४७४६. नन्दीश्वरद्वीपपूजा..... । पत्र सं० ४ । आ० ८×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०० । अ भण्डार ।

विशेष—जयमाल प्राकृत में है । इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७६७) भी है ।

४७४७. नन्दीश्वरद्वीपपूजा—मङ्गल । पत्र सं० ३१ । आ० १२×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८०७ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ५६६ । च भण्डार ।

४७४८. नन्दीश्वरपंक्तिपूजा..... । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १७४६ भाद्रवा बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५२६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५५७) भी है ।

४७४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ३६३ । क भण्डार ।

४७५०. नन्दीश्वरपंक्तिपूजा..... । पत्र सं० ३ । आ० १०½×५½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८८३ । अ भण्डार ।

४७५१. नन्दीश्वरपूजा..... । पत्र सं० ६ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४०० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियाँ (वे० सं० ४०६, २१२, २७४ ले० काल सं० १८२४) भी हैं ।

४७५२. नन्दीश्वरपूजा..... । पत्र सं० ४ । आ० ८½×६ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११५२ । अ भण्डार ।

४७५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३४८ । क भण्डार ।

४७५४. नन्दीश्वरपूजा..... । पत्र सं० ४ । आ० ६×७ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । अ भण्डार ।

विशेष—लक्ष्मीचन्द ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

४७५५. नन्दीश्वरपूजा..... । पत्र सं० ३१ । आ० ६½×५½ इंच । भाषा—संस्कृत, प्राकृत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । अ भण्डार ।

४७५६. नन्दीश्वरपूजा..... । पत्र सं० ३० । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६६१ । पूर्ण । वे० सं० ३४६ । क भण्डार ।

४७५७. नन्दीश्वरभक्तिभाषा—पद्मलाल । पत्र सं० २६ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×७ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । र० काल सं० १६२१ । ले० काल सं० १६४६ । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । क भण्डार ।

४७५८. नन्दीश्वरविधान—जिनेश्वरदास । पत्र सं० १११ । आ० १३×८ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । र० काल सं० १६६० । ले० काल सं० १६६२ । पूर्ण । वे० सं० ३५० । क भण्डार ।
विशेष—लिखाई एवं कागज में केवल १५) र० खर्च हुये थे ।

४७५९. नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा—नन्दिषेण । पत्र सं० २० । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६२ । च भण्डार ।

४७६०. नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा—अनन्तकीर्ति । पत्र सं० १३ । आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८५७ आशुद बुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० २०१७ । ट भण्डार ।
विशेष—दूसरा पत्र नहीं है । उक्तकतुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

४७६१. नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा..... । पत्र सं० ५ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४७६२. नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा..... । पत्र सं० ३० । आ० ८×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८८६ भाद्रमा सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ३५१ । क भण्डार ।

विशेष—स्योजीराम भावसा ने प्रतिलिपि की थी ।

४७६३. नन्दीश्वरपूजाविधान—टेकचन्द । पत्र सं० ४६ । आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८८५ सावन सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १७८ । झ भण्डार ।

विशेष—फतेहलाल पापड़ीवाल ने जयपुर वाले रामलाल पहाड़िया से प्रतिलिपि कराई थी ।

४७६४. नन्दुसप्तमीव्रतोद्यापनपूजा..... । पत्र सं० १० । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६४७ । पूर्ण । वे० सं० ५६२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०३) और है ।

४७६५. नवग्रहपूजाविधान—भद्रबाहु । पत्र सं० ८ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२ । अ भण्डार ।

४७६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २३ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र पर नवग्रहका चित्र है तथा किस ग्रह की शांति के लिए किस तीर्थस्नान की पूजा करनी चाहिए, यह लिखा है ।

४७६७. नवग्रहपूजा.....। पत्र सं० ७। आ० ११३×६३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ४७५, ४८०, ५७१, १२७१, २११२) और हैं।

४७६८. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६२८ ज्येष्ठ बुदी ३। वे० सं० १२७। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १२७) और हैं।

४७६९. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२। ले० काल सं० १६८८ कार्तिक बुदी ७। वे० सं० १२०३ ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १८५, १८३, २८०) और हैं।

४७७०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० २०१५। ट भण्डार।

४७७१. नवग्रहपूजा.....। पत्र सं० २६। आ० ६×६३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १११६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७१३) और है।

४७७२. प्रति सं० २। पत्र सं० १७। ले० काल ×। वे० सं० २२१। छ भण्डार।

४७७३. नित्यकृत्यवर्णन.....। पत्र सं० १०। आ० १०३×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—नित्य करने योग्य पूजा पाठ है। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११६६। अ भण्डार।

विशेष—बरा पृष्ठ नहीं है।

४७७४. नित्यनित्या.....। पत्र सं० ६८। आ० ८२×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—नित्य करने योग्य पूजा पाठ। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६६। क भण्डार।

विशेष—प्रति संक्षिप्त हिन्दी अर्थ सहित है। ५४, ६७, तथा ६८ से आगे के पत्र नहीं हैं।

४७७५. नित्यनियमपूजा.....। पत्र सं० २६। आ० ६×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३७५। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३७०, ३७१) और हैं।

४७७६. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० ३६७। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ३६० से ३६३) और हैं।

४७७७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १८६३। वे० सं० ५२६। अ भण्डार।

४७७८. नित्यनियमपूजा.....। पत्र सं० १५। आ० १०×७ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७१२। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ७०८, १११४) और हैं।

४७७९. प्रति सं० २। पत्र सं० २१। ले० काल सं० १६४० कार्तिक सुदी १२। वे० सं० ३६८। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३६९) और है।

४७८०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १६५४। वे० सं० २२२। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १२१/२, २२२/२) और हैं।

४७८१. नित्यनियमपूजा—पं० सदासुख कासलीवाल। पत्र सं० ४६। आ० ८३×६३ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-पूजा। र० काल सं० १६२१ माघ सुदी २। ले० काल सं० १६२३। पूर्ण। वे० सं० ४०१। अ भण्डार।

४७८२. प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १६२८ सावन सुदी १०। वे० सं० ३७७। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३७६) और है।

४७८३. प्रति सं० ३। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १६२१ माघ सुदी २। वे० सं० ३७१। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३७०) और है।

४७८४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३५। ले० काल सं० १६५५ ज्येष्ठ सुदी ७। वे० सं० २१४। छ भण्डार।

विशेष—पत्र फटे हुये एवं जीर्ण है।

४७८५. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४४। ले० काल ×। वे० सं० १३०। ग भण्डार।

विशेष—इसका पृष्ठा बहुत सुन्दर एवं प्रदर्शनी में रखने योग्य है।

४७८६. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४२। ले० काल सं० १६३३। वे० सं० १८६६। ग भण्डार।

४७८७. नित्यनियमपूजाभाषा.....। पत्र सं० १६। आ० ८३×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६६५ भाद्रपद सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ७०७। अ भण्डार।

विशेष—ईश्वरलाल चांदवाह ने प्रतिलिपि की थी।

४७८८. प्रति सं० २। पत्र सं० २८। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४७। ग भण्डार।

विशेष—जयपुर में बुधवार की सहेली (संगीत सहेली) सं० १६५६ में स्थापित हुई थी। उसकी स्थापना के समय का बनाया हुआ भजन है।

४७८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १६६६ भाद्रवा बुदी १३ । वे० सं० ४८ । ग भण्डार ।

४७८०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १६६७ । वे० सं० २६२ । म भण्डार ।

४७८१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १६५६ । वे० सं० १२१ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० मोतीलालजी सेठी ने प्रति यशोदानन्दजी के मन्दिर में पढ़ाई ।

४७८२. नित्यनैमित्तिकपूजापाठसंग्रह..... । पत्र सं० ५८ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१ । छ भण्डार ।

४७८३. नित्यपूजासंग्रह..... । पत्र सं० ८ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत, अवध्रंश । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७७ । ट भण्डार ।

४७८४. नित्यपूजासंग्रह..... । पत्र सं० ५ । आ० ६½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५ । च भण्डार ।

४७८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १६१६ वैशाख बुदी ११ । वे० सं० ११७ । ज भण्डार ।

४७८६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० १८६८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति श्रुतसागरी टीका सहित है । इसी भण्डार में २ प्रतिमां (वे० सं० १६६५, २०६३) और हैं ।

४७८७. नित्यपूजासंग्रह..... । पत्र सं० २-३० । आ० ७½×२½ इंच । भाषा—संस्कृत, प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६५६ चैत्र सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० १८२ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिमां (वे० सं० १८३, १८४) और हैं ।

४७८८. नित्यपूजासंग्रह..... । पत्र सं० ३६ । आ० १०½×७ इंच । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६५७ । अपूर्ण । वे० सं० ७११ । छ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० २७, २८ तथा ३५ नहीं हैं कुछ पत्र भीग गये हैं । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३२२) और है ।

४७८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ६०२ । च भण्डार ।

४८००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १७४ । ज भण्डार ।

४८०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २-३२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२६ । ट भण्डार ।

विशेष—नित्य व नैमित्तिक पाठों का भी संग्रह है ।

४८०२. नित्यपूजा..... पत्र सं० १५ । आ० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७८ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियाँ (वे० सं० ३७२, ३७३, ३७४, ३७६) और हैं ।

४८०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ३६४, ३६५) और हैं ।

४८०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ६०३ । ख भण्डार ।

४८०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ से १८ । ले० काल × । अमूर्ण । वे० सं० १६५८ । ट भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमन्निजमवचन प्रकाशक..... संग्रहीतविद्वज्जबोधके सृतीयकाण्डे पूजनवर्णनो नाम अष्टोत्तास समाप्त ।

४८०६. निर्वाणकल्याणकपूजा..... पत्र सं० २ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२८ । ख भण्डार ।

४८०७. निर्वाणकाण्डपूजा..... पत्र सं० ५ । आ० ८½×७ इंच । भाषा—संस्कृत, प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६६८ सावण सुवी ४ । पूर्ण । वे० सं० ११११ । अ भण्डार ।

विशेष—इसकी प्रतिलिपि कोकिलचन्द्र पंसारी ने ईश्वरलाल चांदवाड़ से कराई थी ।

४८०८. निर्वाणक्षेत्रमंडलपूजा—स्वरूपचन्द्र । पत्र सं० १९ । आ० १३×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १६१६ कार्तिक सुवी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६ । ग भण्डार ।

४८०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १६२७ । वे० सं० ३७६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ३७७, ३७८) और हैं ।

४८१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १६३५ पौष सुवी ३ । वे० सं० ६०४ । च भण्डार ।

विशेष—जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी । इन्दुराज जोहरा ने पुस्तक लिखाकर मेवराज लुहा-किया के मन्दिर में चढ़ायी । इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ६०५, ६०७) और हैं ।

४८११. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६४३ । वे० सं० २११ । छ भण्डार ।

विशेष—सुन्दरलाल पांडे चौधरी चाकसू बाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४८१२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० २५५ । ज भण्डार ।

४८१३. निर्वाणक्षेत्रपूजा..... पत्र सं० ११ । आ० ११×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।
२० काल सं० १८७१ । ले० काल सं० १६६६ । पूर्ण । वे० सं० १३०५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ७१०, ८२३, ८२४, १०६८, १०६९) और हैं ।

४८१४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८७१ भादवा बुदी ७ । वे० सं० २६६ । ज
भण्डार । [गुटका साइज]

४८१५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८८४ मंगसिर बुदी २ । वे० सं० १८७ । क
भण्डार ।

४८१६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०६ । च भण्डार ।

विशेष—दूसरा पत्र नहीं है ।

४८१७. निर्वाणपूजा..... पत्र सं० १ । आ० १२×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७१८ । अ भण्डार ।

४८१८. निर्वाणपूजापाठ—मनरंगलाल । पत्र सं० ३३ । आ० १०^१/_४×४^३/_४ इंच । भाषा-हिन्दी ।
विषय-पूजा । २० काल सं० १८४२ भादवा बुदी २ । ले० काल सं० १८८८ चैत्र बुदी ३ । वे० सं० ८२ । क
भण्डार ।

४८१९. नेमिनाथपूजा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ५ । आ० ६×३^३/_४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६५ । अ भण्डार ।

४८२०. नेमिनाथपूजा..... पत्र सं० १ । आ० ७×५^३/_४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३१४ । अ भण्डार ।

४८२१. नेमिनाथपूजाछक—शंभूराम । पत्र सं० १ । आ० ११^३/_४×५^३/_४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४२ । अ भण्डार ।

४८२२. नेमिनाथपूजाछक..... पत्र सं० १ । आ० ६^३/_४×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२४ । अ भण्डार ।

४८२३. पञ्चकल्याणकपूजा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १६ । आ० ११^३/_४×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७९ । क भण्डार ।

४८२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८७६ । वे० सं० १०३७ । अ भण्डार ।

४८२५. पञ्चकल्याणकपूजा—शिवजीलाल । पत्र सं० १२६ । आ० ८×४ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५६ । अ भण्डार ।

४८२६. पञ्चकल्याणकपूजा—अरुणमणि । पत्र सं० ३६ । आ० १२×८ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल सं० १६२३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५० । ख भण्डार ।

४८२७. पञ्चकल्याणकपूजा—गुणकीर्ति । पत्र सं० २२ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल १६११ । पूर्ण । वे० सं० ५४ । ख भण्डार ।

४८२८. पञ्चकल्याणकपूजा—वादीभस्मिह । पत्र सं० १८ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८६ । अ भण्डार ।

४८२९. पञ्चकल्याणकपूजा—सुयशकीर्ति । पत्र सं० ७-२६ । आ० ११२×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५८५ । अ भण्डार ।

४८३०. पञ्चकल्याणकपूजा—सुभासागर । पत्र सं० १६ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४०६ । क भण्डार ।

४८३१. पञ्चकल्याणकपूजा..... । पत्र सं० १६ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६०८ भाद्रवा सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १००७ । अ भण्डार ।

४८३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० ३०१ । ख भण्डार ।

४८३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३८४ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३८५) भी है ।

४८३४ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १६३६ आसोज सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० १२५

ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० १३७, १८०) भी हैं ।

४८३५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० १६३ । च भण्डार ।

४८३६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८२१ । वे० सं० २३६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५५) भी है ।

४८३७. पञ्चकल्याणकपूजा—छोटेलाल मिश्र । पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल सं० १६१० भाद्रवा सुदी १३ । ले० काल सं० १६५२ । पूर्ण । वे० सं० ७३० । अ भण्डार ।

विशेष—छोटेलाल बनारस के रहने वाले थे । इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ६७१, ६७२)

भी हैं ।

४८३८. पञ्चकल्याणकपूजा—रूपचन्द्र । पत्र सं० १०४ । आ० १२×५ । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८६२ । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । च भण्डार ।

४८३६. पञ्चकल्याणकपूजा—टेकचन्दा । पत्र सं० २२ । आ० १०३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल सं० १८८७ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६६२ । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिमां (वै० सं० १०८०, ११२०) और हैं ।

४८४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६५४ साह बुदी १ । वै० सं० ५० । ग
भण्डार ।

४८४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६५४ साह बुदी ११ । वै० सं० ६७ । घ
भण्डार ।

विशेष—किशनलाल पापड़ीवाल ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ६७)
और है ।

४८४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १६६१ ज्येष्ठ सुदी १ । वै० सं० ६१२ । च
भण्डार ।

४८४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वै० सं० २१५ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन में एक प्रति और है ।

४८४४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वै० सं० २६८ । झ भण्डार ।

४८४५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वै० सं० १२० । ञ भण्डार ।

४८४६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १६२८ । वै० सं० ५३६ । ट भण्डार ।

४८४७. पञ्चकल्याणकपूजा—पन्नालाल । पत्र सं० ७ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल सं० १६२२ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३८८ । ठ भण्डार ।

विशेष—वीले काम में पर है ।

४८४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × वै० सं० २१५ । ड भण्डार ।

विशेष—संघीजी के मन्दिर की पुस्तक है ।

४८४९. पञ्चकल्याणकपूजा—भैरवदास । पत्र सं० ३१ । आ० ११३×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल सं० १६१० भादवा सुदी १३ । ले० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वै० सं० ६१५ । च भण्डार ।

४८५०. पञ्चकल्याणकपूजा—..... पत्र सं० २५ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६६ । ख भण्डार ।

४८५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६३६ । वै० सं० १०० । झ भण्डार ।

४८५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वै० सं० ३८६ । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वै० सं० ३८७) और है ।

४८५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ६१३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६१४) और है ।

४८५४. पञ्चकुमारपूजा..... पत्र सं० ७ । आ० ८३×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२ । क भण्डार ।

४८५५. पञ्चक्षेत्रपालपूजा—गङ्गादास । पत्र सं० १४ । आ० १०×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६४ । अ भण्डार ।

४८५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६२१ । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

४८५७. पञ्चगुरुकल्याणपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० २५ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १६३५ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ४२० । ज भण्डार ।

विशेष—आचार्य नेलिचन्द्र के शिष्य पांडे ब्रूंगर के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

४८५८. पञ्चपरमेष्ठीउद्यापन..... पत्र सं० ६१ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल सं० १८६२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१० । क भण्डार ।

४८५९. पञ्चपरमेष्ठीसमुच्चयपूजा..... पत्र सं० ४ । आ० ८३×६३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५३ । ट भण्डार ।

४८६०. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० २४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७७ । अ भण्डार ।

४८६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १६६ । च भण्डार ।

४८६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० १४० । च भण्डार ।

४८६३. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—यशोनन्दि । पत्र सं० ३२ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १७६१ कार्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ५३८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि शाहजहानाबाद में जयसिंहपुरा में पं० मनोहरदास के पठनार्थ हुई थी ।

४८६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १८५६ । वे० सं० ४११ । क भण्डार ।

विशेष—चूरु ग्राम में जानकीदास ने प्रतिलिपि की थी ।

४८६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८७३ मंगसिर बुदी १ । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

४८६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८३१ । वे० सं० १६७ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६५) और है ।

१.

४८६७. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३२। ले० काल X। वे० सं० १६३। ज भण्डार।

४८६८ पञ्चपरमेष्ठीपूजा.....। पत्र सं० १५। भा० १२X५। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। १० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ४१२। क भण्डार।

४८६९. प्रति सं० २। पत्र सं० १७। ले० काल सं० १८६२ भाषा-बुद्धि ८। वे० सं० ३६२। क भण्डार।

४८७०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल X। वे० सं० १७६७। ट भण्डार।

४८७१. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—टेकचन्द। पत्र सं० १५। भा० १२X५। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। १० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० १२०। छ भण्डार।

४८७२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—डालूराम। पत्र सं० ३५। भा० १०३X५। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। १० काल सं० १८६२ मंगतिर बुद्धि ६। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ६७०। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०८९) भी है।

४८७३. प्रति सं० २। पत्र सं० ४६। ले० काल सं० १८६२ ज्येष्ठ सुदी ६। वे० सं० ५१। ग भण्डार।

४८७४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३४। ले० काल सं० १९८७। वे० सं० ३८९। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३९०) भी है।

४८७५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४५। ले० काल X। वे० सं० ६१६। च भण्डार।

४८७६. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५६। ले० काल सं० १९२६। वे० सं० ५१। अ भण्डार।

विशेष—धनपाल सोनी ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी।

४८७७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ३५। ले० काल सं० १९१३। वे० सं० १८७९। ट भण्डार।

विशेष—ईसरदा में प्रतिलिपि हुई थी।

४८७८. पञ्चपरमेष्ठीपूजा.....। पत्र सं० ३६। भा० १३X५। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। १० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३९१। क भण्डार।

४८७९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३०। ले० काल X। वे० सं० ६१७। च भण्डार।

४८८०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३०। ले० काल X। वे० सं० ३२१। ज भण्डार।

४८८१. प्रति सं० ४। पत्र सं० २०। ले० काल X। वे० सं० ३१९। अ भण्डार।

४८८२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १९८१। वे० सं० १७१०। ट भण्डार।

विशेष—दानतराय कुल रत्नत्रय पूजा भी है।

४८८३. पञ्चबाल्यतिपूजा..... पत्र सं० ६ । आ० ६×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

४८८४. पञ्चमङ्गलपूजा..... पत्र सं० २१ । आ० ८×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४ । छ भण्डार ।

४८८५. पञ्चमासचतुर्दशीप्रतोद्यापनपूजा—भ० सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १८२८ भाद्रपद सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४ । अ भण्डार ।

४८८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ३६७ । छ भण्डार ।

४८८७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८८३ भाद्रपद सुदी ७ । वे० सं० १६८ । अ भण्डार ।

विशेष—महात्मा शम्भुनाथ ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६६) भी है ।

४८८८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४८८९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८६२ भाद्रपद सुदी ५ । वे० सं० १७० । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर नगर में श्री विमलनाथ चैत्यालय में गुरु हीरानन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

४८९०. पञ्चमीव्रतपूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ५ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१० । अ भण्डार ।

४८९१. पञ्चमीव्रतोद्यापन—श्री हर्षकीर्ति । पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८८८ आसोज सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३६८ । छ भण्डार ।

विशेष—शम्भुराम ने प्रतिलिपि की थी ।

४८९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६१५ आसोज सुदी ५ । वे० सं० २०० । अ भण्डार ।

४८९३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६१२ कार्तिक सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४८९४. पञ्चमीव्रतोद्यापनपूजा..... पत्र सं० १० । आ० ८३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५३ । छ भण्डार ।

विशेष—गाजी नारायण शर्मा ने प्रतिलिपि की थी ।

४८६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १६०५ आसोज बुदी १२ । वै० सं० ६४ । ऋ भण्डार ।

४८६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वै० सं० ३८८ । अ भण्डार ।

४८६७. पञ्चमेरूपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० ३३ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७३२ । अ भण्डार ।

४८६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८८३ । वै० सं० ६१६ । च भण्डार ।

४८६९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६७६ । वै० सं० २१३ । छ भण्डार ।

विशेष—पञ्चमेर वालों के चौबारे जयपुर में लिखा गया । कीमत ४ ।।।)

४८७०. पञ्चमेरूपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६६१ कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वै० सं० ५४७ । अ भण्डार ।

४८७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वै० सं० ३६५ । क भण्डार ।

४८७२. पञ्चमेरूपूजा—भूधरदास । पत्र सं० ८ । आ० ८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६५६ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्त में संस्कृत पूजा भी है जो अपूर्ण है । इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ५६८) और है ।

४८७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वै० सं० १४६ । छ भण्डार ।

विशेष—बीस विरहमान जयमाल तथा स्तव विधि भी दी हुई है ।

४८७४. पञ्चमेरूपूजा—डालूराम । पत्र सं० ४४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल सं० १६३० । पूर्ण । वै० सं० ४१५ । क भण्डार ।

४८७५. पञ्चमेरूपूजा—सुखानन्द । पत्र सं० २२ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३६६ । क भण्डार ।

४८७६. पञ्चमेरूपूजा..... । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६६६ । अ भण्डार ।

४८७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ४८७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वै० सं० ४७६) और है ।

४८७८. पञ्चमेरुउद्यापनपूजा—भ० रत्नचन्द । पत्र सं० ६ । आ० १० इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८६३ प्र० सावन सुदी ७ । पूर्ण । वै० सं० २०१ । च भण्डार ।

४८७९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वै० सं० ७४ । च भण्डार ।

४६१०. पद्मावतीपूजा..... पत्र सं० ५ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल सं० १५६६ । पूर्ण । वे० सं० ११८५ । अ मण्डार ।

विशेष—पद्मावती स्तोत्र भी है ।

४६११. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १२७ । अ मण्डार ।

विशेष—पद्मावतीस्तोत्र, पद्मावतीकवच, पद्मावतीपटल, एवं पद्मावतीसहस्रनाम भी है । ग्रन्थ में २ मन्त्र भी दिये हुये हैं । अष्टगंध लिखने की विधि भी दी हुई है । इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०५) भीर है ।

४६१२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८० । अ मण्डार ।

४६१३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १४४ । छ मण्डार ।

४६१४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २०० । ज मण्डार ।

४६१५. पद्मावतीमंडलपूजा..... पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७६ । अ मण्डार ।

विशेष—शांतिमंडल पूजा भी है ।

४६१६. पद्मावतिशान्तिक..... पत्र सं० १७ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६३ । ख मण्डार ।

विशेष—प्रति मण्डल सहित है ।

४६१७. पद्मावतीसहस्रनाम व पूजा..... पत्र सं० १४ । आ० १०×७ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३० । छ मण्डार ।

४६१८. पर्यविधानपूजा—ललितकीर्ति । पत्र सं० ७ । आ० ११×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११ । अ मण्डार ।

विशेष—खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

४६१९. पर्यविधानपूजा—रत्ननन्दि । पत्र सं० १४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६५ । अ मण्डार ।

विशेष—नरसिंहदास ने प्रतिलिपि की थी ।

४६२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २१५ । अ मण्डार ।

४६२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७६० बैशाख बुदी ६ । वे० सं० ३६२ । अ

मण्डार ।

विशेष—वासी नगर (बुंदी प्रान्त) में प्राचार्य श्री ज्ञानकीर्ति के उपदेश से प्रतिलिपि हुई थी ।

४६२२. पल्यविधानपूजा—अनन्तकीर्ति । पत्र सं० ६ । मा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५३ । छ मण्डार ।

४६२३. पल्यविधानपूजा..... । मा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × ।
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७५ । अ मण्डार ।

४६२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ३ । ले० काल सं० १८२१ । अपूर्ण । वे० सं० १०५४ । अ
मण्डार ।

विशेष—पं० नैतसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

४६२५. पल्यत्रतोषापन—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ६ । मा० १० इंच × ४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५५ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ५८२, ६०७) और हैं ।

४६२६. पल्योपभोषवासविधि..... । पत्र सं० ४ । मा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा एवं उपवास विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८४ । अ मण्डार ।

४६२७. पार्श्वजिनपूजा—साह जोहट । पत्र सं० २ । मा० १० इंच × ५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६० । अ मण्डार ।

४६२८. पार्श्वनाथपूजा..... । पत्र सं० ४ । मा० ७×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३२ । अ मण्डार ।

४६२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४६१ । छ मण्डार ।

४६३०. पुण्याहवाचन..... । पत्र सं० ५ । मा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—शान्ति
विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ३ प्रतियाँ (वे० सं० ५५६, ११६१, १८०६) और हैं ।

४६३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ मण्डार ।

४६३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६०६ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० सं० २७ । अ
मण्डार ।

विशेष—पं० देवीलालजी ने स्वपठनार्थ किशन से प्रतिलिपि कराई थी ।

४६३३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६६४ चैत्र सुदी १० । वे० सं० २००९ । छ
मण्डार ।

४६३४. पुरंदरत्रतोद्यापन..... पत्र सं० ६ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल सं० १६११ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वै० सं० ७२ । छ मण्डार ।

४६३५. पुष्पाञ्जलित्रयपूजा—भ० रतनचन्द्र । पत्र सं० ५ । आ० १०३×७३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल सं० १६८१ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २२३ । च मण्डार ।

विशेष—यह रचना सागवाड़पुर में श्रावर्कों की प्रेरणा से भट्टारक रतनचन्द्र ने सं० १६८१ में लिखी थी ।

४६३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १६२४ आसोज सुदी १० । वै० सं० ११७ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति इसी वेष्टन में ओर है ।

४६३७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वै० सं० ३८७ । अ मण्डार ।

४६३८. पुष्पाञ्जलित्रयपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५५३ । अ मण्डार ।

४६३९. पुष्पाञ्जलित्रयपूजा..... पत्र सं० ८ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत प्राकृत । २०
काल × । ले० काल सं० १८६३ द्वि० श्रावण सुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० २२२ । च मण्डार ।

४६४०. पुष्पाञ्जलित्रतोद्यापन—प० गंगादास । पत्र सं० ८ । आ० ८×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वै० सं० ४८० । अ मण्डार ।

विशेष—गंगादास भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे । इसी मण्डार में एक प्रति (वै० सं० ३३६) ओर है ।

४६४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८८२ आसोज सुदी १४ । वै० सं० ७८ । अ मण्डार ।

४६४२. पूजाक्रिया..... पत्र सं० २ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा करने की
विधि का विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १२३ । छ मण्डार ।

४६४३. पूजापाठसंग्रह..... पत्र सं० २ से ४० । आ० ११×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २०५५ । ट मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वै० सं० २०७८) ओर है ।

४६४४. पूजापाठसंग्रह..... पत्र सं० ३८ । आ० ७×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १३१६ । अ मण्डार ।

विशेष—पूजा पाठ के ग्रन्थ प्रायः एक से हैं । अधिकांश ग्रन्थों में वे ही पूजाएँ मिलती हैं, फिर भी जिनका विशेष रूप से उल्लेख करना आवश्यक है उन्हें यहाँ दिया जा रहा है ।

४६४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १६३७ । वे० सं० ५६० । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है ।

१. पुष्पदन्त जितपूजा	—	संस्कृत
२. चतुर्विंशतिसमुच्चयपूजा	"	
३. चन्द्रप्रभपूजा	"	
४. शान्तिनाथपूजा	"	
५. मुनिसुव्रतनाथपूजा	"	
६. दर्शनस्तोत्र-पद्मनन्दि	प्राकृत	ले० काल सं० १६३७
७. ऋषभदेवस्तोत्र	"	"

४६४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १८६६ द्वि० चैत्र सुदी ५ । वे० सं० ४५३ । अ

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिर्या (वे० सं० ७२६, ७३३, १३७०, २०६७) और हैं ।

४६४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२० । ले० काल सं० १८२७ चैत्र सुदी ४ । वे० सं० ४८१ । क

भण्डार ।

विशेष—पूजाओं एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

४६४८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८५ । ले० काल X । वे० सं० ४८० । क भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायें हैं ।

पल्यविधानव्रतोद्यापनपूजा	रत्ननन्दि	संस्कृत
बृहद्विंशकारणपूजा	—	"
ज्येष्ठजिनवरचद्यापनपूजा	—	"
त्रिकालचौबीसीपूजा	—	प्राकृत
चन्दनषष्ठिव्रतपूजा	विजयकीर्त्ति	संस्कृत
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	यशोनन्दि	"
जम्बूद्वीपपूजा	पं० जिनदास	"
अक्षयनिधिपूजा	—	"
कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा	—	"

४६४६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १ से ११६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ४६७ । क भण्डार ।

विशेष—मुख्य पूजायें निम्न प्रकार हैं—

जिनसहस्रनाम	—	संस्कृत
षोडशकारणपूजा	श्रुतसागर	"
जिनपुरासंपत्तिपूजा	भ० रत्नचन्द्र	"
सप्तकारणविशतिकापूजा	—	"
सारस्वतर्मत्रपूजा	—	"
धर्मचक्रपूजा	—	"
सिद्धचक्रपूजा	प्रभावन्द	"

इसी भण्डार में २ प्रतिष्ठा (वे० सं० ४७६, ४७६) और हैं ।

४६४७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २७ से ५७ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २२६ । च भण्डार ।

विशेष—सामान्य पूजा एवं पाठों का संग्रह है ।

४६४८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०४ । ले० काल X । वे० सं० १०४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३६) और है ।

४६४९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १८८४ आसोज सुदी ४ । वे० सं० ४३६ । ज भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—नित्य वैमिस्तिक पूजा पाठ संग्रह है ।

४६५०. पूजापाठसंग्रह..... पत्र सं० २२ । आ० १२X८ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । १० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७२८ । अ भण्डार ।

विशेष—भक्तामर, तत्त्वार्थसूच आदि पाठों का संग्रह है । सामान्य पूजा पाठोंकी इसी भण्डार में ३ प्रतिष्ठा (वे० सं० ८८२, ९९४, १०००) और हैं ।

४६५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १६५३ आषाढ सुदी १४ । वे० सं० ४६८ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ६ प्रतिष्ठा (वे० सं० ४७४, ४७५, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२) और हैं ।

४६५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५ से ६१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १६५४ । ट भण्डार ।

४६५६. पूजापाठसंग्रह..... पत्र सं० ४० । आ० १२×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३५ । अ मण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है ।

आदिनाथपूजा	मनहरदेव	हिन्दी
सम्मेदस्त्रिस्वरपूजा	—	"
त्रिचमानवीसतीर्थस्त्रियों की पूजा	—	२० काल सं० १६४३
अनुभव विलास	—	ले० " १६४६
[पदसंग्रह]		हिन्दी

४६५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ७५६ । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ५ प्रतिमाँ (वे० सं० ४७७, ४७८, ४६६, ७६१/२) और हैं ।

४६५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० २४१ । क मण्डार ।

विशेष—निम्न पूजा पाठ हैं—

श्रीबीसदण्डक	—	दीनतराम
विनती गुरुओं की	—	भूधरदास
बीस तीर्थस्त्रिय जयमाल	—	—
सोलहकारणपूजा	—	चानतराम

४६५९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १८६० काष्ठसुखी २ । वे० सं० २२० । ज मण्डार ।

४६६०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ से २२२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७० । क मण्डार ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है ।

४६६१. पूजापाठसंग्रह—स्वरूपचन्द । पत्र सं० । आ० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४६ । क मण्डार ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

जयपुर नगर सम्बन्धी चैत्यालियों की वंदना	स्वरूपचन्द	हिन्दी
ऋद्धि सिद्धि शतक	"	"
महावीरस्तोत्र	"	"
जिनपञ्चरस्तोत्र	"	"
त्रिलोकसार चौपई	"	"
अमृतकारजिनेश्वरपूजा	"	"
सुगंधीदशमीपूजा	"	"

४६६२. पूजाप्रकरण—उमास्वामी । पत्र सं० २ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२ । छ मण्डार ।

विशेष—पूजक आदि के लक्षण दिये हुये हैं । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमदुमास्वामीविरचितं प्रकरणं ॥

४६६३. पूजामहात्म्यविधि..... । पत्र सं० ३ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४ । च मण्डार ।

४६६४. पूजावर्णविधि..... । पत्र सं० ६ । आ० ८ $\frac{१}{२}$ ×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजाविधि । २० काल × । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वे० सं० १४८७ । अ मण्डार ।

४६६५. पूजापाठ..... । पत्र सं० १४ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८३६ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १०६ । ख मण्डार ।

विशेष—माणकचन्द ने प्रतिलिपि की थी । अन्तिम पत्र बाद का लिखा हुआ है ।

४६६६. पूजाविधि । पत्र सं० १ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७८६ । अ मण्डार ।

४६६७. पूजाविधि..... । पत्र सं० ४ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७ । व्य मण्डार ।

४६६८. पूजाष्टक—आशानन्द । पत्र सं० १ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२११ । अ मण्डार ।

४६६९. पूजाष्टक—लोहट । पत्र सं० १ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२०६ । अ मण्डार ।

४६७०. पूजाष्टक—अभयचन्द्र । पत्र सं० १ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१० । अ मण्डार ।

४६७१. पूजाष्टक..... । पत्र सं० १ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१३ । अ मण्डार ।

४६७२. पूजाष्टक..... । पत्र सं० ११ । आ० ८ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८७८ । ट मण्डार ।

४६७३. पूजाष्टक—विश्वभूषण । पत्र सं० १ । आ० १०३×५ इ'क । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१२ । अ भण्डार ।

४६७४. पूजासंग्रह..... । पत्र सं० ३३१ । आ० ११×५ इ'क । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०
काल × । ले० काल सं० १८६३ । पूर्ण । वे० सं० ४६० से ४७४ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र सं०	वे० सं०
१. कांजीव्रतोद्यापनमंडलपूजा	×	संस्कृत	१०	४७४
२. श्रुतज्ञानव्रतोद्योतनपूजा	×	हिन्दी	२०	४७३
३. रोहिणीव्रतपूजा	मंडलाचार्य केशवसेन	संस्कृत	१२	४७२
४. दशलक्षगुप्ततोद्यापनपूजा	×	"	२७	४७१
५. लब्धिविधानपूजा	×	"	१२	४७०
६. ध्वजारोपणपूजा	×	"	११	४६६
७. रोहिणीव्रतोद्यापन	×	"	१३	४६८
८. अनन्तरतोद्यापनपूजा	आ० गुराचन्द्र	"	३०	४६७
९. रत्नत्रयव्रतोद्यापन	×	"	१६	४६६
१०. श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	×	"	१२	४६५
११. शत्रुञ्जयगिरिपूजा	अ० विश्वभूषण	"	२०	४६४
१२. गिरिनारक्षेत्रपूजा	×	"	२२	४६३
१३. त्रिलोकसारपूजा	×	"	८	४६२
१४. पार्श्वनाथपूजा (नवग्रहपूजाविधान सहित)		"	१८	४६१
१५. त्रिलोकसारपूजा	×	"	१०	४६०

इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ११२६, २२१६) और हैं जिनमें सामान्य पूजाएँ हैं ।

४६७५ प्रति सं० २ । पत्र सं० १४३ । ले० काल सं० १६५८ । वे० सं० ४७५ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह हैं—

नाम	कर्त्ता	भाषा
त्रिपञ्चाशद्व्रतोद्यापन	—	संस्कृत

नाम	कर्त्ता	भाषा
पद्मपरमेश्वरीपूजा	—	संस्कृत
पद्मकल्याणपूजा	—	"
चौसठ शिवकुमारका कांजी की पूजा	ललितकीर्ति	"
गराधरवल्लभपूजा	—	"
सुमंभदशमीकथा	श्रुतसागर	"
चन्दनषष्ठिकथा	"	"
षोडशकारणविधानकथा	मदनकीर्ति	"
नन्दीश्वरविधानकथा	हरिवेण	"
मेषमालाव्रतकथा	श्रुतसागर	"

४६७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८० । ले० काल सं० १६५६ । वे० सं० ४८३ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
सुखसंपत्तिव्रतोद्यापनपूजा	×	संस्कृत
नन्दीश्वरपंक्तिपूजा	×	"
सिद्धचक्रपूजा	प्रभावन्द	"
प्रतिमासांतचतुर्दशी व्रतोद्यापनपूजा	×	"

विशेष—लराचन्द [जयसिंह के मन्त्री] ने प्रतिलिपि की थी ।

लघुकल्याण	×	संस्कृत
सकलीकरणाविधान	×	"

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४७७, ४७८) और हैं जिनमें सामान्य पूजाएँ हैं ।

४६७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १११ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है— सिद्धचक्रपूजा, कलिकुण्डमन्त्रपूजा, भानन्द स्तवन एवं गराधरवल्लभ जयमाल । प्रति प्राचीन तथा मन्त्र विधि सहित है ।

४६७८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ४६४ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४६०, ४६४) और हैं ।

४६७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल X । वे० सं० २२५ । अ भण्डार ।

विशेष—मानुषोत्तर पूजा एवं इक्ष्वाकुत्तर पूजा का संग्रह है ।

४६८०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५५ से ७३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२३ । छ भण्डार ।

४६८१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३८ से ३१५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २५३ । झ भण्डार ।

४६८२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १८०० ग्रायाड सुदी १ । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—विभिन्न पूजाग्रंथों का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
धर्मचक्रपूजा	धनोन्नति	संस्कृत	१-१९
नन्दीश्वरपूजा	—	"	१९-२४
सकलीकरणविधि	—	"	२४-२५
लघुस्वयंभूपाठ	समन्तभद्र	"	२५-२६
अनन्तव्रतपूजा	श्रीभूषण	"	२६-३३
भक्तामरलोचनपूजा	केशवसेन	"	३३-३६

अपार्य विश्वकीर्ति की सहायता से रचना की गई थी ।

पञ्चमीव्रतपूजा	केशवसेन	"	३६-४५

इसी भण्डार में २ प्रतिष्ठा (वे० सं० ४६६, ४७०) और हैं जिनमें नैमित्तिक पूजाएँ हैं ।

४६८३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १८३८ । ट भण्डार ।

४६८४. पूजासंग्रह..... । पत्र सं० ३४ । भा० १०३ X ५ इञ्च । संस्कृत, प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २२१५ । अ भण्डार ।

विशेष—देवपूजा, अकृत्रिमचैत्यालयपूजा, सिद्धपूजा, पुर्वावलीपूजा, बीसतीर्थक्षुरपूजा, क्षेत्रपालपूजा, षोडश कारणपूजा, क्षीरव्रतनिधिपूजा, सरस्वतीपूजा (ज्ञानभूषण) एवं शान्तिपाठ आदि हैं ।

४६८५. पूजासंग्रह..... । पत्र सं० २ से ४५ । भा० ७३ X ५ इञ्च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २२७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २२८) और है ।

४६८६. पूजासंग्रह..... । पत्र सं० ४६७ । भा० १२ X ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी । विषय—संग्रह । २० काल X । ले० काल सं० १८२६ । पूर्ण । वे० सं० ५४० । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठ है—

नाम	कर्त्ता	भाषा	र० काल	ले० काल	पत्र
१. भक्तामरपूजा	—	संस्कृत			
२. सिद्धकूटपूजा	विश्वभूषण	"		सं० १८८६ ज्येष्ठ सुदी ११	
३. वीसतीर्थशृङ्गारपूजा	—	"		×	अपूर्ण
४. नित्यनियमपूजा	—	संस्कृत हिन्दी			
५. अनन्तपूजा	—	संस्कृत			
६. षष्पतिक्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	"	×	सं० १८८६	पूर्णा
७. ज्येष्ठजिनवरपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	"			
८. नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्ति	अपभ्रंश			
९. पुष्पाञ्जलिप्रतपूजा	गङ्गादास	संस्कृत [मंडल चित्र सहित]			
१०. रत्नत्रयपूजा	—	"			
११. प्रतिमासान्त चतुर्दशीपूजा	अक्षयराम	"	२० काल १८००	ले० काल १८२७	
१२. रत्नत्रयजयमाल	शुभभदास बुधदास	"		" "	१८२६
१३. बारहसतों का व्योरा	—	हिन्दी			
१४. पंचमेरुपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	संस्कृत		ले० काल १८२०	
१५. पञ्चकल्याणकपूजा	सुधासागर	"			
१६. पुष्पाञ्जलिप्रतपूजा	गङ्गादास	"		ले० काल १८६२	
१७. पंचाधिकार	—	"			
१८. पुरन्दरपूजा	—	"			
१९. अष्टाह्निकाग्रतपूजा	—	"			
२०. परमसहस्रानकपूजा	सुधासागर	"			
२१. परमविधानपूजा	रत्ननन्दि	"			
२२. रोहिणीग्रतपूजा मंडल चित्र सहित	केशवसेन	"			
२३. जिनधुरासंपत्तिपूजा	—	"			
२४. सौख्यदायकप्रतोद्यापन	अक्षयराम	"			

२५.	कर्मचरव्रतोद्यापन	लक्ष्मीसेन	संस्कृत	
२६.	सीलहकारण व्रतोद्यापन	केशवसेन	"	
२७.	द्विपञ्चकलयाणकपूजा	—	"	ले० काल सं० १८३१
२८.	गन्धकुटीपूजा	—	"	
२९.	कर्मदहनपूजा	—	"	ले० काल सं० १८२८
३०.	कर्मदहनपूजा	—	"	
३१.	दशलक्षरापूजा	—	"	
३२.	षोडशकारराजयमाल	रङ्गू	अपभ्रंश	अपूर्ण
३३.	दशलक्षराजयमाल	भावशर्मा	प्राकृत	
३४.	त्रिकालखीबीसीपूजा	—	संस्कृत	ले० काल १८५०
३५.	लब्धिविधानपूजा	अभ्रदेव	"	
३६.	अंकुरारोपणविधि	आशाधर	"	
३७.	शुभोकार्पणपूजा	कनककीर्ति	"	
३८.	मीनव्रतोद्यापन	—	"	
३९.	शांतिवक्तृपूजा	—	"	
४०.	सप्तपरमस्थानकपूजा	—	"	
४१.	सुखसंपत्तिपूजा	—	"	
४२.	क्षेत्रपालपूजा	—	"	
४३.	षोडशकारणपूजा	सुमतिसागर	"	ले० काल १८३०
४४.	चन्दनचण्डीव्रतकथा	श्रुतसागर	"	
४५.	शुभोकार्पणपूजा	अक्षयराम	"	ले० काल १८२७
४६.	पञ्चमीउद्यापन	—	संस्कृत हिन्दी	
४७.	त्रिपञ्चाशतक्रिया	—	"	
४८.	कङ्किकाव्रतोद्यापन	—	"	
४९.	मैधमालाव्रतोद्यापन	—	"	
५०.	पञ्चमीव्रतपूजा	—	"	ले० काल १८२७

५१. नवग्रहपूजा	—	संस्कृत हिन्दी	
५२. रत्नत्रयपूजा	—	"	से० काल १८१७
५३. दसलक्षराज्यमाल	रङ्गधु	अपभ्रंश	

टब्बा टीका सहित है।

४१८७. पूजासंग्रह... पत्र सं० १११। मा० ११३×५३ इंच। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११०। छ मण्डार।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

मनन्तव्रतपूजा	×	हिन्दी	२० काल सं० १८६८
सम्पेवशिखरपूजा	×	"	
निर्वाणक्षेत्रपूजा	×	"	२० काल सं० १८१७
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	×	"	२० काल सं० १८६७
गिरनारक्षेत्रपूजा	×	"	
वास्तुपूजाविधि	×	संस्कृत	
नांदीसंग्रहपूजा	×	"	
शुद्धिविधान	देवेन्द्रकीर्ति	"	

४१८८. प्रति सं० २। पत्र सं० ४०। ले० काल ×। वे० सं० १४५। छ मण्डार।

४१८९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८५। ले० काल ×। वे० सं० ३६। छ मण्डार।

विशेष—निम्न संग्रह है—

पञ्चकल्याणकर्ममाल	रूपचन्द्र	हिन्दी	पत्र १-३
पञ्चकल्याणकपूजा	×	संस्कृत	" ४-१२
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	टेकचन्द्र	हिन्दी	" १३-२१
पञ्चपरमेष्ठीपूजाविधि	यशोमन्दि	संस्कृत	" २७-४६
कर्मदहनपूजा	टेकचन्द्र	हिन्दी	" १-११
नन्दीश्वरव्रतविधान	"	"	" १२-२६

४१९०. प्रति सं० ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८६०। छ मण्डार।

४६६१. पूजा एवं कथा संग्रह—सुरालचन्द्र । पत्र सं० ५० । मा० ८×४^१/_२ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८७३ पीप बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ५६१ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं तथा कथाओं का संग्रह है ।

चन्दनषष्ठीपूजा, वशलक्षणापूजा, षोडशकारणपूजा, रत्नत्रयपूजा, अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा व पूजा । तप
लक्षणकथा, मेरुपंक्ति तप की कथा, सुगन्धदक्षामौवतकथा ।

४६६२. पूजासंग्रह—हीराचन्द्र । पत्र सं० ५१ । मा० ६^३/_४×५^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८२ । क भण्डार ।

४६६३. पूजासंग्रह..... । पत्र सं० ६ । मा० ८^३/_४×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२७ । अ भण्डार ।

विशेष—पंचमेरु पूजा एवं रत्नत्रय पूजा का संग्रह है ।

इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ७३४, ६७१, १३१६, १३७७) भी हैं जिनमें सामान्य पूजाएँ हैं ।

४६६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ६० । ग भण्डार ।

४६६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वे० सं० ४७६ । क भण्डार ।

४६६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६५५ मंगसिर बुदी २ । वे० सं० ७३ । घ
भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

वैष्णवपूजा, सिद्धपूजा एवं शान्तिपाठ, पंचमेरु, नन्दीश्वर, सोलहकारण एवं दशलक्षणा पूजा ध्यानतराय कृत ।
अनन्तव्रतपूजा, रत्नत्रयपूजा, सिद्धपूजा एवं शास्त्रपूजा ।

४६६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४८६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ४८७, ४८८, ४८९, ४९५, ४९३) भी हैं जो सभी
अपूर्ण हैं ।

४६६८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८५ । ले० काल × । वे० सं० ६३७ । अ भण्डार ।

४६६९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २२२ । अ भण्डार ।

५०००. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३४ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । ज भण्डार ।

विशेष—पंचकल्याणकपूजा, पंचपरमेष्ठीपूजा एवं नित्य पूजाएँ हैं ।

५००१. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६३५ । ट भण्डार ।

५००२. पूजासंग्रह—रामचन्द्र । पत्र सं० २० । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६५ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रादिनाथ से चन्द्रशेखर तक की पूजाये हैं ।

५००३. पूजासार । पत्र सं० ८६ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा एवं
विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५४ । छ भण्डार ।

५००४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वे० सं० २२६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३०) और है ।

५००५. प्रतिमासान्तचतुर्दशीप्रतोद्यापनपूजा—अकृष्णराम । पत्र सं० १४ । आ० १०×५३ इंच ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६०० भाद्रपद सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ५८७ । अ
भण्डार ।

विशेष—दीवान ताराचन्द ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

५००६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८०० भाद्रपद सुदी १० । वे० सं० ५८४ । क
भण्डार ।

५००७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८०० चैत्र सुदी ५ । वे० सं० २८५ । क
भण्डार ।

५००८. प्रतिमासान्तचतुर्दशीप्रतोद्यापनपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० १२ । आ० १२३×५ इंच ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८०० चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ३८६ । अ
भण्डार ।

विशेष—श्री जयसिंह महाराज के दीवान ताराचन्द श्रावक ने रचना कराई थी ।

५००९. प्रतिमासान्तचतुर्दशीप्रतोद्यापनपूजा । पत्र सं० १३ । आ० १०×७३ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८०० । पूर्ण । वे० सं० ५०० । छ भण्डार ।

५०१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८७६ आसोज सुदी ६ । वे० सं० २३३ । च
भण्डार ।

विशेष—सदासुख आकलीवाल मोहा का ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । दीवान प्रमरचन्दजी संगही ने
प्रतिलिपि करवाई थी ।

५०११. प्रतिष्ठादर्श—भ० श्री राजकीर्ति । पत्र सं० २१ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—प्रतिष्ठा (विधान) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०१ छ भण्डार ।

५०१२. प्रतिष्ठाशीपक—पंडिताचार्य नरेन्द्रसेन । पत्र सं० १४ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ चैत्र सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ५०२ । क भण्डार ।

विशेष—भट्टारक राजकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

५०१३. प्रतिष्ठापाठ—जगन्नाथः बलुनवि (आपर नाम आपरसेन) । पत्र सं० १३६ । आ० ११३×८३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६४६ कार्तिक सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ४८५ । क भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम प्रतिष्ठासार भी है ।

५०१४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १६४६ । वे० सं० ४८७ । क भण्डार ।

विशेष—३६ पत्रों पर प्रतिष्ठा सम्बन्धी चित्र दिये हुये हैं ।

५०१५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५५ । ले० काल सं० १६४६ । वे० सं० ४८६ । क भण्डार ।

विशेष—बालावस्त्र व्यास ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । अन्त में एक अतिरिक्त पत्र पर मङ्कल्यापनार्थ मूर्ति का रेखाचित्र दिया हुआ है । उसमें मङ्कल लिखे हुये हैं ।

५०१६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७१ । ज भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमत्कुंदकुंदाचार्य पट्टोदयभूषणदिवामणि श्रीवसुविद्याचार्येण जयसेनापरनामकेन विरचितः । प्रतिष्ठा-सारः पूर्णमगमतः ।

५०१७. प्रतिष्ठापाठ—आशाधर । पत्र सं० ११६ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल सं० १२८५ आसोज सुदी १५ । ले० काल सं० १८८४ भाद्रपद सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १२ । ज भण्डार ।

५०१८. प्रतिष्ठापाठ— । पत्र सं० १ । आ० ३३ गज लंबा १० इंच चौड़ा । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल सं० १५१६ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४० । व भण्डार ।

विशेष—यह पाठ कपड़े पर लिखा हुआ है । कपड़े पर लिखी हुई ऐसी प्राचीन चीजें कम ही मिलती हैं । यह कपड़े की १० इंच चौड़ी पट्टी पर सिमटता हुआ है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

॥६०॥ सद्धिः ॥ श्री नमो वीतरागाय ॥ संवत् १५१६ वर्षे ज्येष्ठ सुदी १३ तेरसि सोमवासरे अश्विनि नक्षत्रे श्रीहृत्पापये श्रीसर्वज्ञचैतपालये श्रीमूलसंघे श्रीकुंबकुंदाचार्यान्वये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्रीरत्नकीर्ति देवाः तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवाः तत्पट्टे श्रीयद्यनन्ददेवाः तत्पट्टे श्रीशुभचन्द्रदेवाः ॥ तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः ॥

५०१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १८६१ चैत्र बुदी ४ । अपूर्णा । वे० सं० ५०४ ।

क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में प्रथम ६ पत्र में प्रतिष्ठा में काम आने वाले सामग्री का विवरण दिया हुआ है ।

५०२०. प्रतिष्ठापाठभाषा—बाबा दुलीचंद । पत्र सं० २६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८६ । क भण्डार ।

विशेष—मूलकर्ता आचार्य वसुभिन्दु हैं । इनका दूसरा नाम जयसेन भी दिया हुआ है । दक्षिण में कुंकुण नामके देव सहृदयाचल के समीप रत्नगिरि पर लालाह नामक राजाका बनवाया हुआ विशाल चैत्यालय है । उसकी प्रतिष्ठा होने के निमित्त ग्रन्थ रचा गया ऐसा लिखा है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४६०) और है ।

५०२१. प्रतिष्ठाविधि..... । पत्र सं० १७६ से १९६ । आ० ११×४½ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५०३ । क भण्डार ।

५०२२. प्रतिष्ठासार—पं० शिवजीलाल । पत्र सं० ६६ । आ० १२×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६५१ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ४६१ । क भण्डार ।

५०२३. प्रतिष्ठासार..... । पत्र सं० ८५ । आ० १२½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ भाषाठ सुदी १० । वे० सं० २८६ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी । पत्रों के नीचे के भाग पानी से गले हुये हैं ।

५०२४. प्रतिष्ठासारसंग्रह—आ० वसुनन्दि । पत्र सं० २१ । आ० १३×९ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१ । अ भण्डार ।

५०२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १६६० । वे० सं० ४५६ । अ भण्डार ।

५०२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १६७७ । वे० सं० ४६२ । क भण्डार ।

५०२७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १७३६ वैशाख बुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ६८ । अ भण्डार ।

विशेष—तीसरे परिच्छेद से है ।

५०२८. प्रतिष्ठासारोद्धार..... । पत्र सं० ७६ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३४ । अ भण्डार ।

५०२९. प्रतिष्ठासूक्तिसंग्रह..... । पत्र सं० २१ । आ० १३×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६५१ । पूर्ण । वे० सं० ४६३ । क भण्डार ।

५०३०. प्राणप्रतिष्ठा..... पत्र सं० ३ । आ० ६३×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७ । ज भण्डार ।

५०३१. बाल्यकालवर्णन..... पत्र सं० ४ से २३ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६७ । ख भण्डार ।

विशेष—बालक के गर्भमें प्राण के प्रथम भास से लेकर दशवें वर्ष तक के हर प्रकार के सांस्कृतिक विधान का वर्णन है ।

५०३२. बीसतीर्थङ्करपूजा—थानजी अजमेरा । पत्र सं० ५८ । आ० १२३×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—विदेह क्षेत्र के विद्यमान बीस तीर्थङ्करों की पूजा । २० काल सं० १६३४ आसोज सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण
वे० सं० २०६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में इसी बेटन में एक प्रति और है ।

५०३३. बीसतीर्थङ्करपूजा..... पत्र सं० ५३ । आ० १३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल सं० १६४५ पौष सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३२२ । ज भण्डार ।

५०३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७१ । झ भण्डार ।

५०३५. भक्तामरपूजा—श्री ज्ञानभूषण । पत्र सं० १० । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३६ । ञ भण्डार ।

५०३६. भक्तामरपूजाउद्घाटन—श्री भूषण । पत्र सं० १३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५२ । च भण्डार ।

विशेष—१०, ११, १२वां पत्र नहीं है ।

५०३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८५८ प्र० ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० १२२ । छ
भण्डार ।

विशेष—लेमिनाथ चैत्यालय में हरबंसलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५०३८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८६३ आश्विन सुदी ५ । वे० सं० १२० । ज
भण्डार ।

५०३९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १९११ आसोज बुदी १२ । वे० सं० ५० ।
झ भण्डार ।

विशेष—जयमाला हिन्दी में है ।

५०४०. भक्तामरवतोद्घाटनपूजा—विश्वकीर्ति । पत्र सं० ७ । आ० १०३×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल सं० १६९६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । ञ भण्डार ।

विशेष—

निधि निधि रस चंद्रोसंख्य संवत्सरेहि

विशदमसिमासे सप्तमी मंदवारे ।

मलवरवरदुर्गे चन्द्रनाथस्य चैत्ये

विरचितमिति भक्त्या वैश्वामतसेन ॥

५०४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल X । वे० सं० ५३८ । झ मण्डार ।

५०४२. भक्तामरस्तोत्रपूजा..... । पत्र सं० ८ । आ० ११X५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा ।

२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । झ मण्डार ।

५०४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल X । वे० सं० २५१ । च मण्डार ।

५०४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल X । वे० सं० ४४४ । क मण्डार ।

५०४५. भाद्रपदपूजासंग्रह—शान्तराय । पत्र सं० २६ से ३६ । आ० १२३X७३ इंच । भाषा—
हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २२२ । छ मण्डार ।५०४६. भाद्रपदपूजासंग्रह..... । पत्र सं० २४ से ३६ । आ० १२३X७३ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २२२ । छ मण्डार ।५०४७. भावजिमपूजा..... । पत्र सं० १ । आ० ११६X५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २००७ । ट मण्डार ।५०४८. भावनापद्मीसीतस्तोत्रापन..... । पत्र सं० ३ । आ० १२३X६ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३०२ । ख मण्डार ।५०४९. मंडलों के चित्र..... । पत्र सं० १४ । आ० ११X५ इंच । भाषा हिन्दी । विषय—पूजा
सम्बन्धी मण्डलों का चित्र । ले० काल X । वे० सं० १३८ । छ मण्डार ।

विशेष—चित्र सं० ५२ है । निम्नलिखित मण्डलों के चित्र हैं—

१. भुतस्कांध (कोष्ठ २)

२. त्रेपनक्रिया (कोष्ठ ५३)

३. बृहदसिद्धचक्र (" ६६)

४. जिनगुणसंगति (" १०६)

५. सिद्धकूट (" १०६)

६. चितामणिपार्श्वनाथ (" ५६)

७. ऋषिमंडल (" ५६)

८. सप्तऋषिमंडल (" ७)

९. सोलहकारण (" २५६)

१०. चौकीसीमहाराज (" १२०)

११. शांतिचक्र (" २४)

१२. भक्तामरस्तोत्र (" ४८)

१३. बारहमास की चौदस (कोष्ठ १६६)	३२. अंकुरारोपण (कोष्ठ)
१४. पांचमाह की चौदस (" २५)	३३. गणधरवल्लभ (" ४८)
१५. अरातका मंडल (" १६६)	३४. नवग्रह (" ६)
१६. मेघमालाव्रत (" १५०)	३५. सुगन्धदशमी (" ६०)
१७. रोहिणीव्रत (कोष्ठ ६१)	३६. सारसुतयंत्रमंडल (" २८)
१८. लब्धिविधान (" ८१)	३७. शास्त्रजी का मंडल (" १२)
१९. रत्नत्रय (" २६)	३८. प्रक्षयनिधिमंडल (" १५०)
२०. पञ्चकल्याणक (" १२०)	३९. अठारह का मंडल (" ५२)
२१. पञ्चपरमेष्ठी (" १६३)	४०. अंकुरारोपण (" —)
२२. रविवारव्रत (" ८१)	४१. कलिकुंडपादार्चना (" ८)
२३. मुक्तावली (" ८१)	४२. विमानशुद्धिशांतिक (" १०८)
२४. कर्मदहन (" १४८)	४३. वासठकुमार (" ५२)
२५. कांजीवारस (" ६४)	४४. धर्मचक्र (" १५७)
२६. कर्मचूर (" ६४)	४५. लघुशान्तिक (" —)
२७. ज्येष्ठजिनवर (" ४६)	४६. विमानशुद्धिशांतिक (" ८१)
२८. बारहमाह की पञ्चमी (" ६५)	४७. छिनई सेवपाल व
२९. चारमाह की पञ्चमी (" २५)	चौबीस तीर्थचक्र (" २४)
३०. फलफांदल [पञ्चमेष्ट] (" २५)	४८. भुतज्ञान (" १५८)
३१. पांचवासों का मंडल (" २५)	४९. वल्लभारा (" १००)

५०५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल X । वे० सं० १३८ क । छ भण्डार ।

५०५१. मंडपविधि..... पत्र सं० ४ । पा० ६X४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान ।

२० काल X । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० सं० १२४० । अ भण्डार ।

५०५२. मंडपविधि..... पत्र सं० १ । पा० ११ $\frac{३}{४}$ X५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—विधि

विधान । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १८८ । अ भण्डार ।

५०५३. मध्यलोकपूजा..... पत्र सं० ५६ । पा० ११ $\frac{३}{४}$ X४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२५ । छ भण्डार ।

५०५४. महावीरनिर्वाणपूजा... । पत्र सं० ३ । आ० ११×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८२१ । पूर्ण । वे० सं० ११० । अ भण्डार ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड गाथा प्राकृत में और है ।

५०५५. महावीरनिर्वाणकल्याणपूजा..... । पत्र सं० १ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२०० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२१६) और है ।

५०५६. महावीरपूजा—वृन्दावन । पत्र सं० ६ । आ० ८×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

५०५७. मांगीतुङ्गीगिरिमण्डलपूजा—विश्वभूषण । पत्र सं० १३ । आ० १३×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल सं० १७५६ । ले० काल सं० ११४० बैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १४२ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १८ पद्यों में विश्वभूषण कृत शतनाम स्तोत्र है ।

अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्रीभूलसंघे दिनकृद्धिभाति श्रीकुन्दकुन्दास्वमुनीद्रवम्भः ।

महद्वलात्कारगणाविगच्छे लब्धप्रतिष्ठा किलपञ्चनाम ॥१॥

जातोऽसौ किलघर्मकीर्तिरमल वादीभ सादूर्लवत

साहित्यागमलवर्कपाठनपटुचारित्रभारोद्भू ।

तत्पटु मुनिशीलभूषणगरिणीलोचनवेष्टितः ।

तत्पटु मुनि ज्ञानभूषणमहान सौख्यकला केवली

धीमज्जगद्भूषणवैवभूषणैपायिकाचारविचारदक्षः ।

कवीन्द्रचन्द्रोदित कालिदासःपटु तदीये रभवत्प्रसापी ॥२॥

तत्पटु प्रकटी जात विश्वभूषण योगिनः ।

सैनैव रचितो यज्ञ भव्यात्मासुख हेतवै ॥३॥

बटवर्द्धि रिविश्वन्द्रनामदे साधमासके

एकावषयामगमत्पूर्वमेवात्मलिकपुरे ॥४॥

५०५८ प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० १६७६ । छ भण्डार ।

विशेष—मांगी तुङ्गी की कमलाकांठ मण्डल रचना भी है । पत्रों का कुछ हिस्सा चुहौने काट रखा है ।

५०५६. मुकुटसप्तमीव्रतोद्यापन। पत्र सं० २। आ० १२३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। १० काल ×। ले० काल सं० १६२८। पूर्ण। वे० सं० ३०२। ख भण्डार।

५०६०. मुक्तावलीव्रतपूजा। पत्र सं० २। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७४। च भण्डार।

५०६१. मुक्तावलीव्रतोद्यापनपूजा। पत्र सं० १६। आ० ११३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। १० काल ×। ले० काल सं० १८६६। पूर्ण। वे० सं० २७६। च भण्डार।

विशेष—महात्मा जोशी पन्नालाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

५०६२. मुक्तावलीव्रतविधान। पत्र सं० २४। आ० ८३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा एवं विधान। १० काल ×। ले० काल सं० १६२५। पूर्ण। वे० सं० २४८। ख भण्डार।

५०६३. मुक्तावलीपूजा—वर्णी सुखसागर। पत्र सं० ३। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६५। क भण्डार।

५०६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ५६६। क भण्डार।

५०६५. मेघमालाविधि। पत्र सं० ६। आ० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्रतविधान। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६६। अ भण्डार।

५०६६. मेघमालाव्रतोद्यापनपूजा। पत्र सं० ३। आ० १० १/२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्रत पूजा। १० काल ×। ले० काल सं० १८६२। पूर्ण। वे० सं० ५८०। अ भण्डार।

५०६७. रत्नत्रयउद्यापनपूजा। पत्र सं० २६। आ० ११ १/२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। १० काल ×। ले० काल सं० १६२६। पूर्ण। वे० सं० ११६। ख भण्डार।

विशेष—१ अपूर्ण प्रति भीर है।

५०६८. प्रति सं० २। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। वे० सं० ६६। भ भण्डार।

५०६९. रत्नत्रयजयमाल। पत्र सं० ४। आ० १० १/२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६७। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी में धर्म दिया हुआ है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७१) भीर है।

५०७०. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १६१२ भाद्रवा सुदी १। पूर्ण। वे० सं० १५८। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५६) भीर है।

५०७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल ५० । वे० सं० ६४३ । ऋ भण्डार ।

५०७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८६२ भाद्रवा सुदी १२ । वे० सं० २६७ । च भण्डार ।

५०७३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल ५० । वे० सं० २०० । ऋ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०१) भी है ।

५०७४. रत्नत्रयजयमाला..... । पत्र सं० ६ । आ० १०×७ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—पूजा ।
२० काल ५० । ले० काल सं० १८३३ । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । पत्र ५ में अनन्तवतकथा श्रुतसागर कृत तथा अनन्त नाथ पूजा दी हुई हैं ।

५०७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८१६ सावन सुदी १३ । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां इसी वेष्टन में भी हैं ।

५०७६. रत्नत्रयजयमाला..... । पत्र सं० ६ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल ५० । ले० काल सं० १८२७ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ६८२ । ऋ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७४१) भी है ।

५०७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल ५० । वे० सं० ७४४ । च भण्डार ।

५०७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल ५० । वे० सं० २०३ । ऋ भण्डार ।

५०७९. रत्नत्रयजयमालाभाषा—नथमल । पत्र सं० ५ । आ० १२×७½ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल सं० १६२२ फागुन सुदी ८ । ले० काल ५० । पूर्ण । वे० सं० ६६३ । ऋ भण्डार ।

५०८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १६३७ । वे० सं० ६३१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ६२६, ६३०, ६२७, ६२८, ६२५) भी हैं ।

५०८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल ५० । वे० सं० ८५ । घ भण्डार ।

५०८२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६२८ कार्तिक सुदी १० । वे० सं० ६४४ । ऋ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६४४, ६४६) भी हैं ।

५०८३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल ५० । वे० सं० १६० । छ भण्डार ।

५०८४. रत्नत्रयजयमाल पत्र सं० ३ । आ० १३३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । वे० सं० ६३६ । क भण्डार ।

५०८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ६६७ । च भण्डार ।

५०८६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १६०७ द्वि० आसीज बुदी १ । वे० सं० १८५ ।
क भण्डार ।

५०८७. रत्नत्रयपूजा—पं० आशाधर । पत्र सं० ४ । आ० ८३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १११० । अ भण्डार ।

५०८८. रत्नत्रयपूजा—केशवसेन । पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६६ । च भण्डार ।

५०८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ४७६ । अ भण्डार ।

५०९०. रत्नत्रयपूजा—पद्मानन्दि । पत्र सं० १३ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०० । च भण्डार ।

५०९१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८६३ मंगसिर बुदी ६ । वे० सं० ३०५ । च
भण्डार ।

५०९२. रत्नत्रयपूजा पत्र सं० १५ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७८ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ५८३, ६६६, १२०५, २१५६) और हैं ।

५०९३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६८१ । वे० सं० ३०१ । ख भण्डार ।

५०९४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ८६ । घ भण्डार ।

५०९५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६१६ । सं० वे० ६४७ । क भण्डार ।

विशेष—छोटलाल अजमेरा ने विजयलाल कासलीवाल से प्रतिलिपि करवायी थी ।

५०९६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८५८ पौष सुदी ३ । वे० सं० ३०१ । च
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ३०२, ३०३, ३०४) और हैं ।

५०९७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ६० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४८२, ५२६) और हैं ।

५०९८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७५ । ट भण्डार ।

५०९९. रत्नत्रयपूजा—दानतराथ । पत्र सं० २ से ५ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ चैत्र सुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० ६३३ । क भण्डार ।

५१००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३०१ । ज मण्डार ।

५१०१. रत्नत्रयपूजा—ऋषभदास । पत्र सं० १७ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—हिन्दी (पुरानी)
विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १८४६ पौष बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४६६ । अ मण्डार ।

५१०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । आ० १२½×५½ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८४ ।
अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत प्राकृत तथा अपभ्रंश तीनों ही भाषा के शब्द हैं ।

अन्तिस—

सिंहि रिसिकित्ति मुहसीसै,
रिसह दास बुहवास भगीसै ।
इय तेरह पयार चारित्तउ,
संखेवे मानिय उपवित्तउ ॥

५१०३. रत्नत्रयपूजा..... पत्र सं० ५ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४२ । अ मण्डार ।

५१०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वे० सं० ६२२ । क मण्डार ।

५१०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १६६४ पौष बुदी २ । वे० सं० ६४९ । क
मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६४८) भी है ।

५१०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १०६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६) भी है ।

५१०७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १६७८ । वे० सं० २१० । अ मण्डार ।

५१०८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ३१८ । अ मण्डार ।

५१०९. रत्नत्रयमंडलविधान..... पत्र सं० ३५ । आ० १०×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
१० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५७ । अ मण्डार ।

५११०. रत्नत्रयविधानपूजा—पं० रत्नकीर्ति । पत्र सं० ८ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा एवं विधि विधान । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५१ । क मण्डार ।

५१११. रत्नत्रयविधान..... पत्र सं० १२ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा
एवं विधि विधान । १० काल × । ले० काल सं० १८८२ फाल्गुन सुदी ३ । वे० सं० १६६ । ज मण्डार ।

५११२. रत्नत्रयविधानपूजा—टेकचन्द्र । पत्र सं० ३६ । आ० १३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल सं० १६७७ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । ग भण्डार ।

५११३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ । ले० काल X । वे० सं० १६७ । क भण्डार ।

५११४. रत्नत्रयप्रतोद्यापन..... । पत्र सं० ६ । आ० ७×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ६५० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६५३) और है ।

५११५. रत्नावलीप्रतविधान—म० कृष्णदास । पत्र सं० ७ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—विधि विधान एवं पूजा । २० काल X । ले० काल सं० १६८५ चैत्र शुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३८३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ— श्री वृषभदेवसत्यः श्रीसरस्वत्यै नमः ॥

जय जय नाभि नरेन्द्रसुत सुरगण सेवित पाद ।
तत्त्व सिंधु सागर ललित योजन एक निनाद ॥
सारद गुरु चरणो नमो नमु निरञ्जन हंस ।
रत्नावलि तप विधि कहूँ तिम वाधि सुख वंस ॥२॥

चुपई—

जंझूटोप भरत उबार, चढ़ बड़ी धरणीधर सार ।
तेह मध्य एक आर्य सुखंद, पञ्चम्लेखधर्माति अखंड ॥
चंद्रपुरी नमरी उहाम, स्वर्गलोक सम दीसिधाम ।
उच्चैस्तर जिनवर प्रासाद, भल्लर कोल पदहृषत नाद ॥

अन्तिम—

अनुक्रमि सुतमि देईराज, दिक्षा लेई करि आतम काज ।
शुक्ति काम नृप हजं प्रमाण, ए ब्रह्म पूरमल्लह वाण ॥१८॥

दूहा—

रत्नावलि विधि आबहं, भावि सूर नरनारि ।
तिम मन वंछित कल लहु, आपु भव विस्तारि ॥१६॥
मनह मनोरथ संपजि होई, नारी वेद विच्छेद ।
पाप पछु सबि कुभाभि, रत्नावलि बहु मेद ।
जे कसिसुणसि सुविधि, त्रिभुवन होइ तस दास ।
हर्ष सुत मकुल कमल रवि, कहि ब्रह्म कृष्ण उभास ॥

इति श्री रत्नावली प्रत विधान निष्पण श्री पास भवतिर सम्बन्ध समाप्त ॥

सं० १६८५ वर्षे चैत्र सुदी २ सोमे व्र० कृष्णदास पुरनमलजी तत्तिथ्य व्र० वर्द्धमान लिखितं ॥

५११६. रविप्रतोद्यापनपूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ६ । मा० १२×५ १/२ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५०१ । अ मण्डार ।

५११७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८०८ । वे० सं० १०२० । अ मण्डार ।

५११८. रेवानदीपूजा—विश्वभूषण । पत्र सं० ६ । मा० १२ १/२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १७३६ । ले० काल सं० १२४० । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । ख मण्डार ।

विशेष—अन्तिम—

सरत्समेष्टेऽत्रितत्त्वचन्द्रे फागुन्यमासे किल कुप्यापक्षे ।

नवरंगग्रामे परिपूर्णताभ्युः मय्या जनानां प्रवदातु सिद्धिः ॥

इति श्री रेवानदी पूजा समाप्ता ।

इसका दूसरा नाम आहूड कोटि पूजा भी है ।

५११९. रैदधत—गंगाराम । पत्र सं० ४ । मा० १३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ४३६ । अ मण्डार ।

५१२०. रोहिणीव्रतमंडलविधान—केशवसेन । पत्र सं० १४ । मा० १२ १/२×४ १/२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा विधान । २० काल × । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० सं० ७३८ । अ मण्डार ।

विशेष—जयमाला हिन्दी में है । इसी मण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ७३६, १०६४) भी हैं ।

५१२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८६२ । पौष सुदी १३ । वे० सं० १३४ । ज मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २०२, २६२) भी हैं ।

५१२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८७६ । वे० सं० ६१ । अ मण्डार ।

५१२३. रोहिणीव्रतोद्यापन..... पत्र सं० ५ । मा० ११×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५५८ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७४०) भी है ।

५१२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८२२ । वे० सं० २६२ । ख मण्डार ।

५१२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ६६६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६५) भी है ।

५१२६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३२४ । ज मण्डार ।

५

५१२७. लघुअभिषेकविधान..... । पत्र सं० ३ । आ० १२३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—भगवान् के अभिषेक की पूजा व विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६६६ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १७७ । ज भण्डार ।

५१२८. लघुकल्याण..... । पत्र सं० ८ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अभिषेक विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३७ । क भण्डार ।

५१२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १८२९ । ट भण्डार ।

५१३०. लघुअनन्तव्रतपूजा..... । पत्र सं० ३ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८३९ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १८५७ । ट भण्डार ।

५

५१३१. लघुशांतिकपूजाविधान..... । पत्र सं० १५ । आ० १०३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १९०६ माघ बूदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ७३ । अ भण्डार ।

५१३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८६० । अपूर्ण । वे० सं० ८८३ । अ भण्डार ।

५१३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १९७१ । वे० सं० ६९० । क भण्डार ।

विशेष—राजलाल भौसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

५१३४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८८६ । वे० सं० ११९ । छ भण्डार ।

५१३५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० १४२ । ज भण्डार ।

५१३६. लघुश्रेयविधि—अभयनन्दि । पत्र सं० ९ । आ० १०३×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल सं० १९०६ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १५८ । ज भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम श्रेयोविधान भी है ।

५१३७. लघुस्तपनटीका—पं० भावशर्मा । पत्र सं० २२ । आ० १२×१५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अभिषेक विधि । २० काल सं० १५६० । ले० काल सं० १८१५ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २३२ । अ भण्डार ।

५१३८. लघुस्तपन..... । पत्र सं० ५ । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अभिषेक विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३ । ग भण्डार ।

५१३९. लब्धिविधानपूजा—हर्षकीर्ति । पत्र सं० २ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२०९ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १९४९) भी है ।

५१४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल X । वे० सं० १६४ । क भण्डार ।

५१४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल । वे० सं० ७७ । क भण्डार ।

५१४२. लब्धिविधानपूजा..... । पत्र सं० ६ । आ० ११X५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।

२० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ४७६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ४६४, २०२०) और हैं ।

५१४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल X । वे० सं० १६८ । ख भण्डार ।

५१४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल X । वे० सं० ८७ । ख भण्डार ।

५१४५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६२० । वे० सं० ६६३ । क भण्डार ।

५१४६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल X । वे० सं० ३१८ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ३१६, ३२०) और हैं ।

५१४७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० ११७ । ख भण्डार ।

५१४८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २ से ८ । ले० काल सं० १६०० भाववा सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं०

३१७ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६७) और है ।

५१४९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६१२ । वे० सं० २१४ । भ भण्डार ।

५१५०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८८७ माह सुदी १ । वे० सं० ५३ । ख

भण्डार ।

विशेष—मंडल का चित्र भी दिया हुआ है ।

५१५१. लब्धिविधानग्रतोद्यापनपूजा..... । पत्र सं० ६ । आ० ११X५ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल X । ले० काल सं० भाववा सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७४ । ग भण्डार ।

विशेष—मन्नालाल कासलीवाल ने प्रतिलिपि करके बीधरियों के मन्दिर में चढ़ाई ।

५१५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल X । वे० सं० १७६ । क भण्डार ।

५१५३. लब्धिविधानपूजा—ज्ञानचन्द्र । पत्र सं० २१ । आ० ११X८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय

पूजा । २० काल सं० १६५३ । ले० काल सं० १६६२ । पूर्ण । वे० सं० ७४४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ७४३, ७४४/१) और हैं ।

५१५४. लब्धिविधानपूजा..... । पत्र सं० ३५ । आ० १२X५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय

२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६७० । ख भण्डार ।

५१५०. लक्ष्मिविधानउद्यापनपूजा पत्र सं० ८ । मा० ११५×५३ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६१७ । पूर्ण । वे० सं० ६६२ । ऋ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक मूर्त्ति प्रति (वे० सं० ६६१) भी है ।

५१५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० २२७ । ज भण्डार ।

५१५७. वास्तुपूजा पत्र सं० ५ । मा० ११३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-गृह प्रवेश
पूजा एवं विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२४ । अ भण्डार ।

५१५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १६३१ वैशाख सुदी ८ । वे० सं० ११६ । छ
भण्डार ।

विशेष—उद्धवलाल पांड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

५१५९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६१६ वैशाख सुदी ८ । वे० सं० २० । ज
भण्डार ।

५१६०. विद्यमानवीसतीर्थस्मरपूजा—नरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० २ । मा० १०×४३ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८१० । पूर्ण । वे० सं० ६७२ । अ भण्डार ।

५१६१. विद्यमानवीसतीर्थस्मरपूजा—जौहरीलाल बिलासा । पत्र सं० ४२ । मा० १२×७३ इंच ।
भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल सं० १६४६ सावन सुदी १४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३६ । अ
भण्डार ।

५१६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ६७५ । छ भण्डार ।

५१६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १६५३ द्वि० ज्येष्ठ सुदी २ । वे० सं० ६७८ । ज
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६७६) भी है ।

५१६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वे० सं० २०६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में इसी वेष्टन में एक प्रति भी है ।

५१६५. विमानशुद्धि—चन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ६ । मा० ११३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—
विधान एवं पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७ । अ भण्डार ।

विशेष—कुछ पृष्ठ पानी में भीग गये हैं ।

५१६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—सीधी के मन्दिर में लक्ष्मीचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

५१६७ विमानशुद्धिपूजा..... पत्र सं० १२ । आ० १२३×७ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६२० । पूर्ण । वे० सं० ७४६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६२) और है ।

५१६८ प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १६८ । अ भण्डार ।

विशेष—शान्तिपाठ भी दिया है ।

५१६९ विवाहपद्धति—सोमसेन । पत्र सं० २५ । आ० १२×७ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-जैन विवाह विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६२ । क भण्डार ।

५१७० विवाहविधि..... पत्र सं० ८ । आ० ६×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-जैन विवाह विधि । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११३६ । अ भण्डार ।

५१७१ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १७४ । ख भण्डार ।

५१७२ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १४४ । छ भण्डार ।

५१७३ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ बुदी १२ । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

५१७४ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ३४६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २४६) और है ।

५१७५ बिष्णुकुमार मुनिपूजा—बाबूलाल । पत्र सं० ८ । आ० ११×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४५ । अ भण्डार ।

५१७६ विहार प्रकरण..... पत्र सं० ७ । आ० ८×३३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७३ । अ भण्डार ।

५१७७ व्रतनिर्णय—मोहन । पत्र सं० ३४ । आ० १३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । २० काल सं० १६३२ । ले० काल सं० १६४३ । पूर्ण । वे० सं० १८३ । ख भण्डार ।

विशेष—अजयपुर्य में रहने वाले विद्वान् ने इस ग्रन्थ की रचना की थी । अजमेर में प्रतिलिपि हुई ।

५१७८ व्रतनाम..... पत्र सं० १० । आ० १३×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-व्रतों के नाम । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८३७ । ट भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त २ पत्रों पर ध्वजा, माला तथा छत्र आदि के चित्र हैं । कुल ६ चित्र हैं ।

५१७९ व्रतपूजासंग्रह..... पत्र सं० ३६८ । आ० १२३/४×५३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२८ । छ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है ।

नाम पूजा	कर्त्ता	भाषा	विशेष
बारहसौ चौतीसव्रतपूजा	श्रीभूषण	संस्कृत	से० काल सं० १८००
विशेष—देबगिरि में पार्ष्वनाथ चैत्यालय में लिखी गई ।			षोडश बुदी ४
जम्बूद्वीपपूजा	जिनदास	"	से० काल १८०० षोडश बुदी ६
रत्नत्रयपूजा	—	"	" " " षोडश बुदी ६
वीसतीर्थङ्करपूजा	—	हिन्दी	
श्रुतपूजा	ज्ञानभूषण	संस्कृत	
गुरुपूजा	जिनदास	"	
सिद्धपूजा	पद्मनन्दि	"	
षोडशकारण	—	"	
दशलक्षणपूजा जयमाल	रङ्गधू	अपभ्रंश	
लघुस्वयंभूस्तोत्र	—	संस्कृत	
नन्दीश्वर उद्यापन	—	"	से० काल सं० १८००
समवसरणपूजा	रत्नशेखर	"	
ऋषिर्मंडलपूजाविधान	गुणनन्दि	"	
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	"	
तीसचौबीसीपूजा	शुभचन्द	संस्कृत	
धर्मषष्ठीपूजा	—	"	
जितगुणसंपत्तिपूजा	केशवसेन	"	२० काल १६६१
रत्नत्रयपूजा जयमाल	शृङ्गभदास	अपभ्रंश	
नवकार पैंतीसीपूजा	—	संस्कृत	
कर्मदहनपूजा	शुभचन्द	"	
रविवारपूजा	—	"	
पञ्चकल्याणकपूजा	सुधासागर	"	

५१८०. अतविधान.....। पत्र सं० ४। आ० ११५४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-विधि विधान। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७१। अ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ४२४, १६२, २०३७) भी हैं।

५१८१. प्रति सं० २। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। वे० सं० ६८०। क मण्डार।

५१८२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० ६७१। क मण्डार।

५१८३. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० १७८। छ मण्डार।

विशेष—चौबीस तीर्थक्षुरों के पंचकल्याणक की तिथियां भी दी हुई हैं।

५१८४. अतविधानरासो—दौलतरामसंघी। पत्र सं० ३२। आ० ११×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-विधान। २० काल सं० १७६७ आसोज सुदी १०। ले० काल सं० १८३२ प्र० भाद्रवा सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ११६। छ मण्डार।

५१८५. अतविवरण.....। पत्र सं० ४। आ० १०३×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-व्रत विधि। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८८१। अ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२४६) भी है।

५१८६. प्रति सं० २। पत्र सं० ६ से १२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८२३। ट मण्डार।

५१८७. अतविवरण.....। पत्र सं० ११। आ० १०×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्रत विधि। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८३१। ट मण्डार।

५१८८. अतसार—आ० शिवकोटि। पत्र सं० ६। आ० ११×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्रत विधान। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६४। ट मण्डार।

५१८९. अतोद्यापनसंग्रह.....। पत्र सं० ४५१। आ० ११×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्रतपूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १८६७। अपूर्ण। वे० सं० ४५२। अ मण्डार।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
परममंडलविधान	शुभचन्द्र	संस्कृत
अक्षयदशमीविधान	—	"
मौनव्रतोद्यापन	—	"
मौनव्रतोद्यापन	—	"

पंचमेरुजयमाला	भूषरदास	हिन्दी
शुद्धिमंडलपूजा	गुरानन्द	संस्कृत
पद्मावतीस्तोत्रपूजा	—	११
पञ्चमेरुपूजा	—	११
मनन्तव्रतपूजा	—	११
मुक्तावलिपूजा	—	११
शास्त्रपूजा	—	११
षोडशकारण व्रतोद्यापन	केशवसेन	११
मेघमालाव्रतोद्यापन	—	११
चतुर्विंशतिव्रतोद्यापन	—	११
पद्मलक्षणपूजा	—	११
पुष्पाञ्जलिब्रतपूजा [बृहद्]	—	११
पञ्चमीव्रतोद्यापन	कवि हर्षकल्याण	११
रत्न प्रमद्व्रतोद्यापन [बृहद्]	केशवसेन	११
रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	११
मनन्तव्रतोद्यापन	गुराचन्द्रसूरि	११
द्वादशमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	११
पञ्चमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	११
अष्टालिकाव्रतोद्यापन	—	११
अक्षयनिधिपूजा	—	११
सौख्यव्रतोद्यापन	—	११
ज्ञानपञ्चविंशतिव्रतोद्यापन	—	११
रामोकारपैतोसीपूजा	—	११
रत्नावलिब्रतोद्यापन	—	११
जिनगुरासंपत्तिपूजा	—	११
सप्तपरमस्थानव्रतोद्यापन	—	११

त्रेपनक्रियाव्रतोद्यापन	—	संस्कृत
आदित्यव्रतोद्यापन	—	"
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	"
कर्मचूरव्रतोद्यापन	—	"
भक्तामरस्तोत्रपूजा	श्री भूषण	"
जिनसहस्रनामस्तवन	प्राशाधर	"
द्वादशव्रतमंडलोद्यापन	—	"
लब्धिविधानपूजा	—	"

५१६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३६ । ले० काल X । वै० सं० १८४ । स्व भण्डार ।

निम्न पूजाओं का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
लब्धिविधानोद्यापन	—	संस्कृत
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	हिन्दी
भक्तामरव्रतोद्यापन	केशवसेन	संस्कृत
दशलक्षणव्रतोद्यापन	सुमतिसागर	"
रत्नशयनव्रतोद्यापन	—	"
अनन्तव्रतोद्यापन	गुणचंदसूरि	"
पुष्पाञ्जलिव्रतोद्यापन	—	"
शुक्लपञ्चमीव्रतपूजा	—	"
पञ्चमासचतुर्दशीपूजा	भ० सुरेन्द्रकीर्ति	"
प्रतिभासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	"
कर्मदहनपूजा	—	"
आदित्यवारव्रतोद्यापन	—	"

५१६१. बृहत्प्रतिविधान । पत्र सं० १ । आ० ६X४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान ।

२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वै० सं० १८८७ । अ भण्डार ।

५१६२. वृहद्गुरावलीशांतिमंडलपूजा (चौसठ ऋद्धिपूजा)—स्वरूपचंद्र । पत्र सं० ५६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १० काल सं० १६१० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७० । क मण्डार ।

५१६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० ६४ । घ मण्डार ।

५१६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ६८० । ख मण्डार ।

५१६५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८६ । क मण्डार ।

५१६६. घणवतिक्षेत्रपूजा—विश्वसेन । पत्र सं० १७ । आ० १०^१/_२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१ । अ मण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रकाशित निम्न प्रकार है ।

भीमच्छ्रीकाष्ठासंधे यतिपतितिलके रामसेनस्यध्वजे ।

गच्छे नंदोत्तटाक्षये यगदितिह मुखे तु छकर्मामुनीन्द्र ॥

स्यन्तीसौविन्दमेनोविमलतरमतिर्येनयज्ञं चकार्षीत् ।

सोममुग्रामवासे भविजनकलिते क्षेत्रपालानां शिवाय ॥

चौबीस तीर्थक्षुरों के चौबीस क्षेत्रपालों की पूजा है ।

५१६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । ख मण्डार ।

५१६८. षोडशकारणजयमाला । पत्र सं० १८ । आ० ११^३/_४×५^३/_४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८६४ भादवा सुदी १३ । वे० सं० ३२६ । अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । इसी मण्डार में ५ प्रतिमां (वे० सं० ६६७, २६६, ३०४, १०६३, २०४४) और हैं ।

५१६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १७६० आसोज सुदी १४ । वे० सं० ३०३ । अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत में भी अर्थ दिया हुआ है ।

५२००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ७२० । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७२१) और है ।

५२०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १६८ । क मण्डार ।

५२०२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६०२ मंगसिर सुदी १० । वे० सं० ३६० । च मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३५६) और है ।

५२०३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल X । वे० सं० २०८ । अ मण्डार ।

५२०४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८०२ मगसिर बुवी ११ । वे० सं० २०८ । अ मण्डार ।

५२०५. षोडशकारणजयमाल—रङ्गधू । पत्र सं० २१ । आ० ११X५ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७४७ । अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८८६) भी है ।

५२०६. षोडशकारणजयमाल..... । पत्र सं० १३ । आ० १३X५ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १६६ । अ मण्डार ।

५२०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल X । वे० सं० १२६ । अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण दिया हुआ है । इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२६) भी है ।

५२०८. षोडशकारणउद्यापन । पत्र सं० १५ । आ० १२X५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल सं० १७६३ भाषा बुवी १३ । पूर्ण । वे० सं० २४१ । अ मण्डार ।

विशेष—गोर्षों के मन्दिर में पं० सदा राम के वाचनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

५२०९. षोडशकारणजयमाल..... । पत्र सं० १० । आ० ११X५ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ६४२ । अ मण्डार ।

५२१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल X । वे० सं० ७१७ । अ मण्डार ।

५२११. षोडशकारणजयमाल..... । पत्र सं० ५२ । आ० १२X५ इंच । भाषा—हिन्दी गल । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल सं० १६६५ भाषा बुवी ५ । पूर्ण । वे० सं० ६६६ । अ मण्डार ।

५२१२. षोडशकारणतथा दशलक्षण जयमाल—रङ्गधू । पत्र सं० ३३ । आ० १०X७ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ११६ । अ मण्डार ।

५२१३. षोडशकारणपूजा—केशवसेन । पत्र सं० १३ । आ० १२X५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १६६४ भाषा बुवी ७ । ले० काल सं० १८२३ भाषा बुवी १ । पूर्ण । वे० सं० ५१२ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५०८) भी है ।

५२१४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१ । ले० काल X । वे० सं० ३०० । अ मण्डार ।

५२१५. षोडशकारणपूजा..... । पत्र सं० २ । आ० ११X५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६६८ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६२५) भी है ।

५२१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल X । प्रपूर्ण । वे० सं० ७५१ । क भण्डार ।

५२१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ से २२ । ले० काल X । प्रपूर्ण । वे० सं० ४२४ । च भण्डार ।

विशेष—भाचार्य पूर्णचन्द्र में मौजम.बाद में प्रतिलिपि की थी । प्रति प्राचीन है ।

५२१८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८६३ सावरण बुदी ११ । वे० सं० ४२५ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४२६) भी है ।

५२१९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १३ । ले० काल X । वे० सं० ७२ । क भण्डार ।

५२२०. षोडशकारणपूजा (वृहद्) पत्र सं० २६ । मा० ११३ X ५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७१८ । क भण्डार ।

५२२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से २२ । ले० काल X । प्रपूर्ण । वे० सं० ४२६ । ज भण्डार ।

५२२२. षोडशकारण अतोद्यापनपूजा—राजकीर्ति । पत्र सं० ३७ । मा० १२ X ५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल X । ले० काल सं० १७६६ भासोज सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ५०७ । ज भण्डार ।

५२२३. षोडशकारणअतोद्यापनपूजा—सुसतिभाग्य । पत्र सं० २१ । मा० १२ X ५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५१४ । ज भण्डार ।

५२२४. शत्रुञ्जलगिरिपूजा—भट्टारक विश्वभूषण । पत्र सं० ६ । मा० ११३ X ५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १०६७ । ज भण्डार ।

५२२५. शरदुत्सवदीपिका (मंजुषा विधान पूजा)—सिंहनन्दि । पत्र सं० ७ । मा० ६ X ४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ— श्रीवीरं शिरसा नखा वीरनंदिमहागुरुं ।

सिंहनन्दिरहं वक्ष्ये शरदुत्सवदीपिका ॥१॥

अथात्र भारते क्षेत्रे जंबूद्वीपमनोहरे ।

रम्यत्रेमेति विख्याता मिथिलानामतः पुरी ॥२॥

अन्तिमपाठ—

एवं महप्रभावं च दृष्ट्वा लब्धास्तथा जनाः ।

कतुं प्रभावदीपं च ततोऽत्रैव प्रवर्त्तते ॥२३॥

तदाप्रभुत्वोरम्येवं प्रसिद्धं जगतीक्षते ।

दृष्ट्वा दृष्ट्वा पृहीतं च वैष्णवादिकर्षवर्कैः ॥२४॥

जातो नागपुरे मुनिर्वरतरः श्रीमूलसंघोषरः ।

सूर्यः श्रीवरपूज्यपाद भमलः श्रीवीरनंदाह्वयः ॥

तच्छिष्यो वर सिधनंदिमुनिपस्तेनेयमाविष्कृता ।

लोकोद्बोधनहेतवे मुनिवरः कुर्वतु भो सज्जनाः ॥२५॥

इति श्री शरदुत्तवकपद समाप्ताः ॥१॥

इसके पश्चात् पूजा बी हुई है ।

५२२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० ३०१ । ख मण्डार ।

५२२७. शांतिकविधान (प्रतिष्ठापाठ का एक भाग) । पत्र सं० ३२ । आ० १२३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६३२ फागुन सुदी १० । वे० सं० ५३७ । ख मण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठा में काम आने वाली सामग्री का वर्णन दिया हुआ है । प्रतिष्ठा के लिये गुटका महत्वपूर्ण है ।

मंडलाचार्य श्रीचन्द्रकीर्ति के उपदेश से इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी । १४वें पत्र में कथ्य दिये हुये हैं जिनकी संख्या ६८ है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

ॐ नमो बीतरागायनमः । परिमेषिने नमः । श्री गुरुवेनमः ॥ सं० १६३२ वर्षे फागुन सुदी १० गुरी श्री मूलसंघे भ० श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्रदेवा तत् मंडलाचार्य ललितकीर्तिदेवा तच्छिष्यमंडलाचार्य श्रीचन्द्रकीर्ति उपदेशात् ।

इसी मण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५६२, ५४४) और हैं ।

५२२८. शांतिकविधान (बृहद्) । पत्र सं० ७४ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६२९ भाद्रपद सुदी ३३ । पूर्ण । वे० सं० १७७ । ख मण्डार ।

विशेष—पं० पद्मलालजी ने शिष्य जयचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

५२२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३८ । ख मण्डार ।

५२३०. शांतिकविधि—अर्हद्देव । पत्र सं० ५१ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—संस्कृत । विषय विधि विधान । २० काल × । ले० काल सं० १८६८ भाद्रपद सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ६८६ । क मण्डार ।

५२३१. शान्तिविधि । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८५ । क मण्डार ।

६

५२३२. शान्तिपाठ (वृद्धदू)..... पत्र सं० ४० । आ० १०×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १६५ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५२३३. शान्तिचक्रपूजा..... पत्र सं० ४ । आ० १०३×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १७६७ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १३६ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७६) और है ।

५२३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२२) और है ।

७

५२३५. शान्तिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०५ । क भण्डार ।

५२३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६८२ । ख भण्डार ।

५२३७. शान्तिगण्डलपूजा..... पत्र सं० ३ । आ० १०३×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०६ । क भण्डार ।

५२३८. शान्तिपाठ..... पत्र सं० १ । आ० १०३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा के अन्त में पढ़ा जाने वाला पाठ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२७ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियाँ (वे० सं० १२३८, १३१८, १३२४) और हैं ।

५२३९. शान्तिरत्नसूची..... पत्र सं० ३ । आ० ८३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६४ । ट भण्डार ।

८

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ से उद्धृत है ।

५२४०. शान्तिहोमविधान—आशाधर । पत्र सं० ५ । आ० ११३×९३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४७ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठापाठ से संग्रहीत है ।

५२४१. शास्त्रगुरुजयमाला..... पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० ३४२ । ख भण्डार ।

५२४२. शास्त्रजयमाला—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ३ । आ० १३३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८८ । क भण्डार ।

५२४३. शास्त्रप्रवचन प्रारम्भ करने की विधि..... । पत्र सं० १ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १८८४ । अ भण्डार ।

५२४४. शासनदेवतार्चनविधान..... । पत्र सं० २१ से २५ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७०७ । क भण्डार ।

५२४५. शिखरबिलासपूजा..... । पत्र सं० ७३ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६८६ । क भण्डार ।

५२४६. शीतलनाथपूजा—धर्मभूषण । पत्र सं० ६ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६२१ । पूर्ण । वै० सं० २६३ । ख भण्डार ।

५२४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६३१ प्र० आषाढ बुदी १४ । वै० सं० १२५ । ख भण्डार ।

५२४८. शुक्लपञ्चमीव्रतपूजा..... । पत्र सं० ७ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १८..... । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३४४ । च भण्डार ।

विशेष—रचना सं० निम्न प्रकार है— प्रव्दे रंघ्र यमलं वसु चन्द्र ।

५२४९. शुक्लपञ्चमीव्रतोद्यापनपूजा..... । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५१७ । अ भण्डार ।

५२५०. श्रुतज्ञानपूजा..... । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ आषाढ सुदी १२ । पूर्ण । वै० सं० ७२३ । क भण्डार ।

५२५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० ६८७ । च भण्डार ।

५२५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वै० सं० ११७ । ख भण्डार ।

५२५३. श्रुतज्ञानव्रतपूजा..... । पत्र सं० १० । आ० ११×८३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६६ । ज भण्डार ।

५२५४. श्रुतज्ञानव्रतोद्यापनपूजा..... । पत्र सं० ११ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७२४ । क भण्डार ।

५२५५. श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन..... । पत्र सं० ८ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६२२ । पूर्ण । वै० सं० ३०० । ख भण्डार ।

५२५६. श्रुतपूजा..... । पत्र सं० ४ । आ० १०३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण । वै० सं० १०७८ । अ भण्डार ।

५२५७. श्रुतस्कंधपूजा—श्रुतसागर । पत्र सं० २ से १३ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०५ । क मण्डार ।

५२५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३५६ । ख मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३५०) और है ।

५२५९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १८४ । ज मण्डार ।

५२६०. श्रुतस्कंधपूजा (ज्ञानपञ्चविंशतिपूजा)—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ५ । आ० १२×५ इंच ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १८४७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२२ । ख मण्डार ।

विशेष—इस रचना को श्री सुरेन्द्रकीर्तिजी ने ५३ वर्ष की अवस्था में किया था ।

५२६१. श्रुतस्कंधपूजा..... पत्र सं० ५ । आ० ८३×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०२ । ख मण्डार ।

५२६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २६२ । ख मण्डार ।

५२६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १८८ । ज मण्डार ।

५२६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ४६० । ख मण्डार ।

५२६५. श्रुतस्कंधपूजाकथा पत्र सं० २८ । आ० १२३×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा तथा कथा । २० काल × । ले० काल बीर सं० २४३४ । पूर्ण । वे० सं० ७२८ । क मण्डार ।

विशेष—चावली (घागरा) निवासी श्री लालाराम ने लिखा फिर बीर सं० २४५७ को दलालालजी
गोधा ने तुकीगञ्ज हन्दीर में लिखवाया । जीहरोलाल किरौजपुर जि० गुड़गावा ।

बनारसीदास कृत सरस्वती स्तोत्र भी है ।

५२६६. सकलीकरणविधि..... पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५ । ख मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ३ प्रतियाँ (वे० सं० ८०, ५७१, ६६१) और हैं ।

५२६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ७२३ । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७२४) और है ।

५२६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ३६८ । ख मण्डार ।

विशेष—आचार्य हर्षकीर्ति के वाचकों के लिए प्रतिलिपि हुई थी ।

५२६६. सकलीकरण.....। पत्र सं० २१। आ० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—विधि विधान। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७१। अ मण्डार।

५२७०. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ७५७। क मण्डार।

५२७१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० १२२। छ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११६) और है।

५२७२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १६४। ज मण्डार।

५२७३. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ४२४। व्य मण्डार।

विशेष—होसिया पर संस्कृत लिपि लिखा हुआ है। इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४४३) और है।

५२७४. संथाराविधि.....। पत्र सं० १। आ० १०×४ इंच। भाषा—प्राकृत, संस्कृत। विषय—विधान। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२१६। अ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२५१) और है।

५२७५. सप्तपदी.....। पत्र सं० २ से १६। आ० ७ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—विधान। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६६६। अ मण्डार।

५२७६. सप्तपरमस्थानपूजा.....। पत्र सं० ३। आ० १० इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६६। अ मण्डार।

५२७७. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० ७६२। क मण्डार।

५२७८. सप्तर्षिपूजा—जिणदास। पत्र सं० ७। आ० ८×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२२। छ मण्डार।

५२७९. सप्तर्षिपूजा—लक्ष्मीसेन। पत्र सं० ६। आ० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२७। छ मण्डार।

५२८०. प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १८२० कार्तिक सुदी २। वे० सं० ४०१। व्य मण्डार।

५२८१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० २१६०। द मण्डार।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति द्वारा रचित चावलपुर के महावीर की संस्कृत पूजा भी है।

५२८२. सप्तर्षिपूजा—विश्वभूषण। पत्र सं० १६। आ० १० इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १६१७। पूर्ण। वे० सं० ३०१। छ मण्डार।

५२८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६३० ज्येष्ठ सुदी ८ । वे० सं० १२७ । छ
मण्डार ।

५२८४. सप्तर्षिपूजा..... पत्र सं० १३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६१ । अ मण्डार ।

५२८५. समवशरणपूजा—ललितकीर्ति । पत्र सं० ४७ । आ० १० इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८७७ मंगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ४५१ । अ मण्डार ।

विशेष—कुस्मालजी ने जयपुर नगर में महात्मा शंभुराम से प्रतिलिपि करवायी थी ।

५२८६. समवशरणपूजा (बृहद्)—रूपचन्द्र । पत्र सं० ६४ । आ० १३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल सं० १५६२ । ले० काल सं० १८७६ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४५५ । अ मण्डार ।

विशेष—रजनाकाल निम्न प्रचार है— श्रुतीतेह्यनन्दभद्रासकृत परिमिते कृष्णपक्षे मासे ॥

५२८७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी १५ । वे० सं० २०६ । छ
मण्डार ।

विशेष—पं० पन्नालालजी जोबनेर वालों ने प्रतिलिपि की थी ।

५२८८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५१ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० १३३ । छ मण्डार ।

५२८९. समवशरणपूजा—सोमकीर्ति । पत्र सं० २८ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८०७ बैशाख सुदी १ । वे० सं० ३८४ । अ मण्डार ।

विशेष—अन्तिम श्लोक—

व्याजस्तुत्यार्चा गुणवीतरागः ज्ञानार्कसाम्राज्यविकासमानः ।

श्रीसोमकीर्तिविकासमानः रत्नेष्वरत्नाकरचार्ककीर्तिः ॥

जयपुर में सदानन्द सौगाणी के पठनार्थ छाजूराम पाठनी की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४०५) और है ।

५२९०. समवशरणपूजा..... पत्र सं० ७ । आ० ११×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७७४ । छ मण्डार ।

५२९१. सम्मेदशिखरपूजा—गङ्गादास । पत्र सं० १० । आ० ११ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८८६ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २०११ । अ मण्डार ।

विशेष—गङ्गादास धर्मचन्द्र भट्टारक के शिष्य थे । इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५०६) और है ।

५२९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १६२१ मंगसिर बुदी ११ । वे० सं० २१० । छ
मण्डार ।

५२६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८६३ वैशाख सुदी ३ । वै० सं० ४३६ । छ
भण्डार ।

५२६४. सम्मैदशिखरपूजा—पं० जवाहरलाल । पत्र सं० १२ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७४८ । अ भण्डार ।

५२६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । र० काल सं० १८६१ । ले० काल सं० १६१२ । वै० सं० ११६ ।
छ भण्डार ।

५२६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १६५२ आसोज सुदी १० । वै० सं० २४० । छ
भण्डार ।

५२६७. सम्मैदशिखरपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ८ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६५५ आवण सुदी ६ । पूर्ण । वै० सं० ३६३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ११२३) और है ।

५२६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १६५८ माघ सुदी १४ । वै० सं० ७०१ । च
भण्डार ।

५२६९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वै० सं० ७६३ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ७६४) और है ।

५३००. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वै० सं० २२२ । छ भण्डार ।

५३०१. सम्मैदशिखरपूजा—भागचन्द्र । पत्र सं० १० । आ० १३३×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । र० काल सं० १६२६ । ले० काल सं० १६३० । पूर्ण । वै० सं० ७६७ । क भण्डार ।

विशेष—पूजा के पश्चात् पद भी दिये हुये हैं ।

५३०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वै० सं० १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—सिद्धेश्वरों की स्तुति भी है ।

५३०३. सम्मैदशिखरपूजा—भ० सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० २१ । आ० ११×५ इंच । भाषा हिन्दी ।
विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६१२ । पूर्ण । वै० सं० ५६१ । अ भण्डार ।

विशेष—१०वें पत्र से आगे पञ्चमेरु पूजा दी हुई है ।

५३०४. सम्मैदशिखरपूजा..... । पत्र सं० ३ । आ० ११×४^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १२३१ । अ भण्डार ।

५३०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । आ० १०×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × ।
ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७६१ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ७६२) और है ।

५३०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० २६१ । अ भण्डार ।

५३०७. सर्वतोभद्रपूजा । पत्र सं० ५ । आ० ६×३½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६३ । अ भण्डार ।

५३०८. सरस्वतीपूजा—पद्मनन्दि । पत्र सं० १ । आ० ६×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३३४ । अ भण्डार ।

५३०९. सरस्वतीपूजा—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ६ । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल १६३० । पूर्ण । वे० सं० १३६७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिष्ठा (वे० सं० ६८६, १३११, ११०८, १०१०) और हैं ।

५३१०. सरस्वतीपूजा । पत्र सं० ३ । आ० ११×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८०२) और है ।

५३११. सरस्वतीपूजा—संधी पद्मलाल । पत्र सं० १७ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल सं० १६२१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में इसी वेष्टन में १ प्रति और है ।

५३१२. सरस्वतीपूजा—नेमीचन्द्र बख्शी । पत्र सं० ८ से १७ । आ० ११×५ इंच । भाषा—
हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १६२५ ज्येष्ठ सुदी ५ । ले० काल सं० १६३७ । पूर्ण । वे० सं० ७७१ । अ
भण्डार ।

५३१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ८०४ । अ भण्डार ।

५३१४. सरस्वतीपूजा—पं० बुधजनजी । पत्र सं० ५ । आ० ६×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १००६ । अ भण्डार ।

५३१५. सरस्वतीपूजा । पत्र सं० २१ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०६ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजा माधोसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी थी ।

५३१६. सहस्रकूटप्रिनालयपूजा । पत्र सं० १११ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६२६ । पूर्ण । वे० सं० २१३ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० पद्मलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५३१७. सहस्रगुणितपूजा—भ० धर्मकीर्ति । पत्र सं० ६६ । आ० १२३×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १७६६ आषाढ सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ५३६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५५२) और है ।

५३१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८२ । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० २४६ । ख भण्डार ।

५३१९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२२ । ले० काल सं० १६६० । वे० सं० ८०६ । छ भण्डार ।

५३२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

५३२१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६४ । ले० काल × । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—आचार्य हर्षकीर्ति ने जिहानाबाद में प्रतिलिपि कराई थी ।

५३२२. सहस्रगुणितपूजा..... पत्र सं० १३ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

५३२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४ । अ भण्डार ।

५३२४. सहस्रनामपूजा—धर्मभूषण । पत्र सं० ६६ । आ० १०^३/_४×५^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८३ । च भण्डार ।

५३२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ से ६६ । ले० काल सं० १८८४ ज्येष्ठ बुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं०

३८५ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियाँ (वे० सं० ३८४, ३८६) और हैं ।

५३२६. सहस्रनामपूजा..... पत्र सं० १३६ से १५८ । आ० १२×५^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८२ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३८७) और है ।

५३२७. सहस्रनामपूजा—चैनसुख । पत्र सं० २२ । आ० १२^३/_४×८^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२१ । छ भण्डार ।

५३२८. सहस्रनामपूजा..... पत्र सं० १८ । आ० ११×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०७ । च भण्डार ।

५३२९. सारस्वतयन्त्रपूजा..... पत्र सं० ४ । आ० १०^३/_४×४^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७७ । अ भण्डार ।

५३३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

५३३१. सिद्धक्षेत्रपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० २ । आ० ६३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६१० । ट भण्डार ।

५३३२. सिद्धक्षेत्रपूजा (बृहद्) — सुखचन्द्र । पत्र सं० ५३ । आ० ११३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल सं० १६१६ कार्तिक बुदी १३ । ले० काल सं० १६४१ फागुण सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ८६ । ग भण्डार ।

विशेष—घन्त में मण्डल विधि भी दी हुई है । रामलालजी बज से प्रतिलिपि की थी । इसे सुगनचन्द गंगवाण ने चौधरियों के मन्दिर में चढ़ाया ।

५३३३. सिद्धक्षेत्रपूजा..... पत्र सं० १३ । आ० १३×८३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६४४ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । छ भण्डार ।

५३३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० २६४ । ज भण्डार ।

५३३५. सिद्धक्षेत्रमहात्म्यपूजा..... पत्र सं० १२६ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६४० माघ सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २२० । ख भण्डार ।

विशेष—अतिशयक्षेत्र पूजा भी है ।

५३३६. सिद्धचक्रपूजा (बृहद्)—भ० भानुकीर्ति । पत्र सं० १४३ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० १७८ । ख भण्डार ।

५३३७. सिद्धचक्रपूजा (बृहद्)—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ४१ । आ० १२×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६७२ । पूर्ण । वे० सं० ७५० । ग भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७५१) और है ।

५३३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० ८४५ । छ भण्डार ।

५३३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

विशेष—सं० १६६६ फागुण सुदी २ को पुष्पचन्द अजमेरा ने संशोधित की । ऐसा अन्तिम पत्र पर लिखा है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१२) और ।

५३४०. सिद्धचक्रपूजा—श्रुतसागर । पत्र सं० ३० से ६० । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४४ । छ भण्डार ।

५३४१. सिद्धचक्रपूजा—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६२ । क भण्डार ।

५३४२. सिद्धचक्रपूजा (धृहद्) पत्र सं० ३४ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६८७ । छ भण्डार ।

५३४३. सिद्धचक्रपूजा पत्र सं० ३ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५२६ । अ भण्डार ।

५३४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वै० सं० ४०५ । च भण्डार ।

५३४५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८६० श्रावण सुदी १४ । वै० सं० २१ ।
ज भण्डार ।

५३४६. सिद्धचक्रपूजा (धृहद्)—संतलाल । पत्र सं० १०८ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६८१ । पूर्ण । वै० सं० ७४६ । अ भण्डार ।

विशेष—ईश्वरलाल चांदवाड़ ने प्रतिलिपि की थी ।

५३४७. सिद्धचक्रपूजा पत्र सं० ११३ । आ० १२×७३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८४६ । छ भण्डार ।

५३४८. सिद्धपूजा—रत्नभूषण । पत्र सं० २ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल सं० १७६० । पूर्ण । वै० सं० २०६० । अ भण्डार ।

विशेष—औरङ्गजेब के शासनकाल में संग्रामपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५३४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । आ० ८३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × ।
ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७६६ । छ भण्डार ।

५३५०. सिद्धपूजा—महा पं० आशाधर । पत्र सं० २ । आ० ११३×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वै० सं० ७६४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ७६५) और है ।

५३५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १८२३ मंगसिर सुदी ८ । वै० सं० २३३ । छ
भण्डार ।

विशेष—पूजा के प्रारम्भ में स्थापना नहीं है किन्तु प्रारम्भ में ही जल बढाने का मन्त्र है ।

५३५२. सिद्धपूजा पत्र सं० ४ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६३० । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० १६२४) और है ।

५३५३. सिद्धपूजा..... पत्र सं० ४४ । आ० ६×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६५६ । पूर्ण । वै० सं० ७१५ । च भण्डार ।

५३५४. सीमंघरस्वामीपूजा..... पत्र सं० ७ । आ० ८×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८२८ । छ भण्डार ।

५३५५. सुखसंपत्तिव्रतोद्यापन—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ७ । आ० ८×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १८६६ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १०४१ । अ भण्डार ।

५३५६. सुखसंपत्तिव्रतपूजा—अखयराम । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १८०० । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८०८ । क भण्डार ।

५३५७. सुगन्धदशमीव्रतोद्यापन..... पत्र सं० १३ । आ० ८×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १११२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ७ प्रतिमां (वै० सं० १११३, ११२४, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६) मौद हैं ।

५३५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६२८ । वै० सं० ३०२ । ख भण्डार ।

५३५९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वै० सं० ८६६ । छ भण्डार ।

५३६०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १६५६ आसोज बुदी ७ । वै० सं० २०३४ । ट भण्डार ।

५३६१. सुपार्षन्नाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ५ । आ० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७२३ । च भण्डार ।

५३६२. सूतकनिर्णय..... पत्र सं० २१ । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५ । झ भण्डार ।

विशेष—सूतक के अतिरिक्त जाप्य, इष्ट अनिष्ट विचार, माला फेरने की विधि आदि भी हैं ।

५३६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वै० सं० २०६ । झ भण्डार ।

५३६४. सूतकवर्णन..... पत्र सं० १ । आ० १० इंच × ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५४० । अ भण्डार ।

५३६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल सं० १८४५ । वै० सं० १२१४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० २०३२) भी है ।

५३६६. सोनागिरपूजा—आशा । पत्र सं० ८ । आ० ५ इंच × ४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६३८ फागुन बुदी ७ । पूर्ण । वै० सं० ३५६ । छ भण्डार ।

विशेष—पं० गंगाधर सोनागिरि वासी ने प्रतिलिपि की थी ।

५३६७. सोनागिरपूजा..... पत्र सं० ८ । आ० ८३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८८५ । छ मण्डार ।

५३६८. सोलहकारणपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० २ । आ० ८×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३२६ । अ मण्डार ।

५३६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १६३७ । वे० सं० २५ । क मण्डार ।

५३७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ६३ । ग मण्डार ।

५३७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३०२ । ज मण्डार ।

विषय—इसके अतिरिक्त पञ्चमेष्ट भाषा तथा सोलहकारण संस्कृत पूजायें भी हैं ।

इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६४) भी है ।

५३७२. सोलहकारणपूजा..... पत्र सं० १४ । आ० ८×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७९२ । क मण्डार ।

५३७३. सोलहकारणमंडलविधान—टेकचन्द । पत्र सं० ४८ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८८७ । क मण्डार ।

५३७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० ७२४ । ख मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७२५) भी है ।

५३७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० सं० २०६ । छ मण्डार ।

५३७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० सं० २६४ । ज मण्डार ।

५३७७. सौख्यव्रतोद्यापनपूजा—अक्षयराम । पत्र सं० १२ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय पूजा । २० काल सं० १८२० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८६ । अ मण्डार ।

५३७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६५ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० ४२७ । ख मण्डार ।

५३७९. स्नपनविधान पत्र सं० ८ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—विधान ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२२ । अ मण्डार ।

५३८०. स्नपनविधि (बृहद्वृ) पत्र सं० २२ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५७० । अ मण्डार ।

विशेष—अन्तिम २ पृष्ठों में त्रिलोकसार पूजा है जो कि संपूर्ण है ।

गुटका-संग्रह

(शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पाठों की, जयपुर)

५३८१. गुटका सं० १ । पत्र सं० २८४ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—संग्रह ।

ले० काल सं० १८१८ ज्येष्ठ सुदी ६ । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
१. भट्टाभिषेक	×	संस्कृत	पूर्ण
२. रत्नत्रयपूजा	×	"	"
३. पञ्चमेरूपूजा	×	"	"
४. अनन्तचतुर्दशीपूजा	×	"	"
५. षोडशकारणपूजा	सुमत्तिसागर	संस्कृत	"
६. दशलक्षणाख्यापनपाठ	×	"	"
७. सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	ब्रह्मजयसागर	"	"
८. मुनिसुव्रतछन्द	भ० प्रभाकर	संस्कृत हिन्दी	"

श्री

१२०-१२४

मुनिसुव्रत छन्द लिख्यते—

पुष्पापुष्पनिरूपकं गुणनिधिं गुह्यव्रतं सुव्रतं

स्याद्वादाभृततपितप्रखिलजर्णं दुःखाग्निद्वाराधरं ।

क्रोधारण्यधनेजयं धनकरं प्रध्वस्तकर्मारिणं

वंदे तद्गुणसिद्धये हरिमुतं सोभारमजं सौख्यदं ॥१॥

जलधिसमगभीरं प्राप्तजन्माब्धितोरः

प्रबलमदनवीरः पञ्चधामुक्तवीरः

हृत्विषयविकारः समतत्त्वप्रसारः

स जयति गुणधारः सुव्रतो विघ्नहारः ॥२॥

मार्थ—

त्रिभुवनजनहितकर्ता भर्ता सुपवित्रमुक्तिवरलक्ष्म्याः ।

कन्दर्पदर्पहर्त्रा सुकृतबेधो वसति गुणधर्ता ॥१॥

यो वज्रमौलिसंगतमुकुटमहारत्नरत्नखनिकरं ।

प्रतिपालितवरधरणां केवलबोधे संदितसुमर्ग ॥२॥

तं मुनिसुव्रतनार्थं नत्वा कथयामि तस्य श्रुत्वोत्तं ।

शृण्वन्तु सकलभक्त्याः जिनधर्मपराः मौनसंयुक्ताः ॥३॥

अतिशय—

प्रथम कल्याण कहूं मनमोहन, मगध सुदेश बसे प्रति सोहन ।

राजगेह नयारि वर सुन्दर, सुमित्र भूप तिहां जियो पुरंदर ॥१॥

चन्द्रमुखीमृगनयनी बाला, तस राणी सोमा सुविशाला ।

पछिमरपणी अलिकूलबाला, स्वप्न सोल देखें गुणमाला ॥२॥

इन्द्रादि सैं अति सु विचक्षणा, छपन कुमारि सेवें शुभलक्षणा ।

रत्नवृष्टि करें धनद मनोहर, एम छमास गया सुभ सुखकर ॥३॥

भुरिचर्म भूपनि भुवि मंगल, प्राणत स्वर्ग हवो आलम्बन ।

आवरणवदि बीजें गुणधारी, जमनी गर्भ रह्यो सुखकाशी ॥४॥

भुवङ्गप्रपात—

धरति मनरो परं गर्भभारं न रेखात्रयं भगमापन्नसारं ।

तथा आगता इन्द्रचन्द्रानरेन्द्राभुशकाणभाया न युक्ता सुमद्रा ॥१॥

पुरं त्रिःपरित्याखिलदेवसंधा गृहं प्राप्त सोमित्र कान्ते गता या ।

स्थित गर्भकासे क्षिप्तं त्रिरुक्लंकं प्रणम्यादराते गताहिस्वनाकं ॥२॥

कुम्भयो हि सेवा प्रकुर्वन्ति मातुः कियत्योज्ज्वलदीपसुहृत्पुत्रवाकं ।

करं पञ्चगुणं दद्यान्नास्तु पूर्णं प्रकीर्णं सितवस्त्रकं कुम्भं सुपूर्णं ॥३॥

सुरधैवभमसीर्भवंसरपवित्रं तस्यदरत्नवृद्धिः शुभं पुण्यपार्थ ।

जितः गर्भकासा विनिर्मुक्तदेहं परं स्तोमि सोमात्मजं सौख्ययेहं ॥४॥

अतिशय—

श्रीजिनवर अवतरणो महि त्रिभुवन चिह्न हवां सुगता महि ।

घंटा सिंह संज पदहारण सुरमति सहसा करें जय जभरव ॥१॥

वीराला नदी वसमी शिरु जम्भो, सुरनरवृंद वेगें तब आयी ।

ऐरावत आकट पुरंदर, सचीसहित सोहें गुणमंदिर ॥२॥

मोतीरेणुछन्द—

तब ऐरावण सजकरी, चन्द्रयो शतमुख आरांभ भरी ।
 जस कोटी सत्तावीस छे भ्रमरी, करें गीत नृत्य बलीदें भमरी ॥३॥
 गज कानें सोहें सोवर्ण चमरी, घण्टा टङ्कुर यदि सहू भरी ।
 भाखण्डलअंकुशत्रेसैधरी, उल्लवभंगल गया जिन नयरी ॥
 राजसर्प मलया इन्द्रसहू, बाजें वाजिन सुरंग बहु ।
 शक्र कक्षु जिनवर लावें सही, इन्द्राणी तब धर मक्के गई ॥
 जिन बालक दीठो निज नयनों, इन्द्राणी बोलें वर वयनों ।
 माया मेसि सुतहि एक कीर्षी, जिनवर युगतें जइ इन्द्र दीयो ॥

इसी प्रकार तप, ज्ञान और मोक्ष कल्याण का वर्णन है । सबसे अधिक जन्म कल्याण का वर्णन है जिसका रचना के आधे से अधिक भाग में वर्णन किया गया है इसमें उक्त छन्दों के अतिरिक्त लीलावती छन्द, हनुमंतछन्द, दूहा, केशव छन्दों का और प्रयोग हुआ है । अन्त का पाठ इस प्रकार है—

कलस—

श्रीस धनुष जस देह जहे जिन कक्षप लांछन ।
 श्रीस सहस्र कर बर्ष प्राप्ति संजजन मन रञ्जन ॥
 हरवंशी गुणबीमल, भक्त कारिद्र विहङ्गन ।
 मनवांछितदाताएँ, नयनवालोडसु मङ्गन ॥
 श्री मूलसंघ संघद तिलक, ज्ञानभूषण सट्टीभरंण ।
 श्रीप्रभाचन्द्र सुरिवर कहें, मुनिमुन्यतमंगलकरंण ॥

इति मुनिसुव्रत श्रुत सम्पूर्णोऽयम् ॥

पत्र १२० पर निम्न प्रशस्ति दी हुई है—

संवत् १८१८ वर्षे शाके १६८४ प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठ सुदी ६ सोमवासरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीयच्छे बलात्कार-
 गणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दि तत्पट्टे भ० श्रीदेवेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीविद्यानन्दि तत्पट्टे भट्टारक श्री
 मल्लिभूषण तत्पट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्र भ० तत्पट्टे श्रीवीरचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्र तत्पट्टे
 भ० श्रीवादीचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीमहीचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीमेरुचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीजैनचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीविद्यानन्द तन्निष्पन्न
 ब्रह्मनेमसागर पठनार्थ । पुष्पाथ पुस्तक लिखायितं श्रीसूर्यपुरे श्रीआदिनाथ चेत्यालये ।

विषय	कर्ता	भाषा	विशेष
९. मातापद्मावतीछन्द	महीचन्द्र भट्टारक	संस्कृत हिन्दी	१२५-२८
१०. पार्श्वनाथपूजा	×	संस्कृत	
११. कर्मदहनपूजा	वादिचन्द्र	"	
१२. अनन्तवतरास	ब्रह्मजिनदास	हिन्दी	
१३. अष्टक [पूजा]	नेमिदत्त	संस्कृत	पं० राघव की प्रेरणा मे
१३. अष्टक	×	हिन्दी	भक्ति पूर्वक दी गई
१५. अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ अष्टक	×	संस्कृत	
१६. नित्यपूजा	×	"	

विशेष—पत्र न० १६८ पर निम्न लेख लिखा हुआ है—

भट्टारक श्री १०८ श्री विद्यानन्दजी सं० १८२१ तां वर्ष साके १९२६ प्रवर्त्तमाने कार्तिकमासे कृष्णपक्षे प्रतिपदादिवसे रात्रि पहर पाछलीइं देवसोक धया छेजी । !

५३८२. गुटका सं० २। पत्र सं० ६३। आ० ८३×५३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। १० काल सं० १८२०। ले० काल सं० १८३५। पूर्ण। दशा—सामान्य।

विशेष—इस गुटके में बख्तराम साह कृत मिथ्यात्व खण्डन नाटक है। यह प्रति स्वयं लेखक द्वारा लिखी हुई है। अन्तिम पृष्ठिका निम्न प्रकार है—

इति श्री मिथ्यातखण्डन नाटक सम्पूर्ण। लिखत बख्तराम साह। सं० १८३५।

५३८३ गुटका सं० ३। पत्र सं० ७५। आ० ४×४ इंच। भाषा—संस्कृत-हिन्दी। विषय—×। ले० काल सं० १६०४। पूर्ण। दशा—सामान्य।

विशेष—फतेहराम गोदीका ने लिखा था।

१. रसायनविधि	×	हिन्दी	१-३
२. परमज्योति	बनारसीदास	"	५-१२
३. रत्नत्रयपाठविधि	×	संस्कृत	१३-४३
४. अन्तरायवर्णन	×	हिन्दी	४३-४४
५. मंगलाष्टक	×	संस्कृत	४५-४६
६. पूजा	पद्मनन्दि	"	५०-५४

७. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	५५-५६
८. पूजा व जयमाल	×	"	५६-७५

५३८४. गुटका सं० ४ । पत्र सं० २५ । आ० ३×२ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष— इस गुटके में ज्वालाभातिनीस्तोत्र, अष्टादशसहस्रशीलभेद, षट्प्लेश्यावर्णन, जैमसंख्यानम् आदि पाठों का संग्रह है ।

५३८५. गुटका सं० ५ । पत्र सं० २३ । आ० ८×६ इंच । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष— भर्तृहरिशतक (नीतिशतक) हिन्दी अर्थ सहित है ।

५३८६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २८ । आ० ८×६ । भाषा-हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष— पूजा एवं शांतिपाठ का संग्रह है ।

५३८७. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ११६ । आ० ६×७ इंच । ले० काल १८५८ आसोज बुदी ४ शनिवार । पूर्ण ।

१. नाटकसमयसार	बनारसीदास	हिन्दी	१-६७
२. पद- होजी म्हारो कंष			
चतुर दिलजानी हो	विश्वभूषण	"	६७
३. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	"	६८-११६

५३८८. गुटका सं० ८ । पत्र सं० २१२ । आ० ६×६ इञ्च । ले० काल सं० १७६८ । दशा-सामान्य ।

विशेष— दं० धनराज ने लिखवाया था ।

५३८९. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ३५ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विशेष— जिनदास, नवल आदि के पदों का संग्रह है ।

५३९०. गुटका सं० १० । पत्र सं० १५३ । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल सं० १९५४ आश्विन सुदी १३ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. पद- जिनवारीमाता दर्शन की बलिहारी	×	हिन्दी	१
२. बारहभावना	दोलतराम	"	
३. आलोचनापाठ	जोहरीलाल	"	
४. दशलक्षणपूजा	भूधरदास	"	

५. पञ्चमेरु एवं मंटीश्वरपूजा	द्यानतराय	हिन्दी	२-३५
६. तीन चौबीसी के नाम व दर्शनपाठ	×	संस्कृत हिन्दी	
७. परमानन्दस्तोत्र	बनारसीदास	"	१
८. लक्ष्मीस्तोत्र	द्यानतराय	"	६
९. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	५-६
१०. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	"	
११. देवशास्त्रगुरुपूजा	×	हिन्दी	
१२. चौबीस तीर्थङ्करों की पूजा	×	"	१५३ तक

५३६१. गुटका सं० ११ । पत्र सं० २२२ । आ० १० १/४ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १७४६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. रामायण महाभारत कथा [४६ प्रश्नों का उत्तर है]	×	हिन्दी गद्य	३-१४
२. कर्मचूरव्रतबेलि	मुनि सकलकीर्ति	"	१५-१८

अथ बेलि लिख्यते—

दीहा—

कर्मचूर व्रत जे कर, जीमवाणी तंतसार ।

तरनारि भव भंजन धरे, उत्तर चौरासी सु पार ॥

कीधी कुरी कुरा भारंभ्यो सकलकीर्ति नाम,

कर्म सेइय कीधो गुरा कोसंबी बसि गाम ॥

नमणी गुरु निरगंथ नै, सारद दसगुरा पुरे ।

कहो बरत बेलि उदयु करमसेरा कर्मचुरे ॥

जानावरण दर्शन साता वेदनी मोह मंदराई ।

अन्है जीतनै चेति होसी, कहानु कर वखरा सुहाई ॥

नाम कर्म पांजमौग कुछुगे प्रायु भेदो ।

गोत्र नीच गति पोहो चाहै, अन्तराई भय भेदो ॥

चितामणि सुचित अविलागी, कर्मसेरा गुरागई ॥१॥

दीहा -

एक कर्म को

नरनारी करि उधरै, चरण गुणसंस्थान संजोई ॥१॥

अनि ॥पाठ— कवित्त—

सकलकीर्ति मुनि आप गुनत मिटै संताप चौरासी मरि जाई फिर अजर अमर पद पाइये ॥

जूनी पोथी भई अक्षर दीसै नहीं फेर उतारी बंध छंद कवित्त बेली बनाई क गाईये ॥

चंप नेरी चाटसू केते भट्टारक भये साथी पार अड़सठि जेहि कर्मचूर बरत कहो है वणाई व्याइये ॥

संवत् १७४६ सोमवार ७ करकोष्ठ कर्मचूर ब्रत बैठगौ अमर पद चुरी सोर सीधार्ताम जाइये ॥

टि—पाठ एक दम अशुद्ध है । लीपि भी विकृत है ।

२. ऋषिमण्डलमन्त्र

×

संस्कृत

ले० काल १७३६

१७-१९

४. चित्तामणि पार्वनाथस्तोत्र

×

”

संपूर्ण २०

५. अंजना की रास

धर्मभूषण

हिन्दी

२१-३४

प्रारम्भ—

पहिली रे अर्हंत पाय नमैं ।

हरै भव दुख संजन त्वं भगवंत कर्म कायातना का पसी ।

पाप ना प्रभव असि सौ अंत ती रास भयो इति अंजना

तै ती संयम साधि न गई स्वर लोक सौ सती न सरोमणि बंदीये ॥१॥

वसं विधाधर उपनी माय, नामै तीन वर्तधि संपजे ।

भाव करंता हो भवदुख जाय, सती न सरोमणि बंदये ॥२॥

आहूी नै सुंदरी बंदये, राजा हो रसभ तरौ भर द्वैध ।

बाल परौ तप बन गई काम ना भोगन बंछीय जे हती ॥ सती न ३ ॥

मेघ सेनापति नै घरनारि अंजना सो मदालसा ।

त्यारे न कोनै सीयाल लगार तो..... ॥ सती न ४ ॥

पंचसै किसन कुमारिका, ईनि बाल कुंवारी लागो रे पावै ।

जाइव जय जानी करि, द्वारिका देहन सुनि तप जाय ।

हरी तनी अंजना बंदीय जिने राग छोडी मन में धरचो वैराग तो ॥ सती न ५ ॥

अन्तिमपाठ—

बंस विद्याधरे उग्रनि मात, नामे नवनिधि पावसो ।
 भाव करंता हो भव दुख जायता, साती न सरोमणि बंदीये ॥ ५८ ॥
 हम गावै धर्मभूषण रास, रत्नमाल भुंधो रचि रास ।
 सर्व पंचमिलि मंगल थयो, कहै तो रास ऊपजै रस विलास ॥
 ढाल भवन केरी हम भरो, कंठ बिना राग किम होई ।
 बुधि बिना ज्ञान नविसोई, गुरु बिना मारग कोम पानी सो ।
 दीपक बिना मंदर अधकार, देवभक्ति भाव बिना सब द्वार तो ॥ ५९ ॥
 रस बिना स्वाद न ऊपजै, तिम तिम मति बधै देव गुरु पसाव ।
 खिमा विन सील करै कुल हारि, निर्मल भाव राखो सदा ।
 केतन कलक आनि कुल जाय, कुमति बिनास निर्मल भावसू ।
 ते समझो सबही नरनारि, अहंत बिना दुर्लभ सरावक अवतार ।
 बुद्धि समता भावसूँ स्योपुरवास, एह कथी सब मंगल करी ॥
 इति श्री अंजनारास सती सुंदरी हनुमंत प्रसादात् संपूरण ॥

स्वस्ति श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीजगत्कीर्ति तत्पट्टे भ०
 श्रीदेवेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीमहेन्द्रकीर्ति तस्य भ० श्रीक्षेमेन्द्रकीर्ति तस्योपदेश गुणकीर्तिना इत्यादि तन्मध्ये पंडित
 कुस्यालि लिखामि बोरान्न नगरे सुधाने श्रीमहावीरचैत्यालये अमुक भावके सर्व बखैरवाल ज्ञात बुधिति समपात रहा
 श्रीश्रृंगभनाथ यात्रा निमित्त मवन उपदेश मासोत्तममासे शुभे शुक्लपक्षे आसोज वदी ३ दीतवार संवत् १८२० शालिवाहने
 १६७६ शुभमस्तु ।

६. नवरात्रिधि	×	संस्कृत	ले० काल १८२० आसोज वदी ३
७. छिप्रालीसगुण	×	हिन्दी	
८.	×	॥ पृष्ठ ३६वें पर चौबीसवें तीर्थङ्करोंके चित्र	
९. चौबीस तीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी	३६-५०

विशेष—पत्र ४०वें पर भी एक चित्र है सं० १८२० में पं० खुशालचन्द ने बैराठ में प्रतिलिपि की थी ।

१०. भविष्यदत्तपञ्चमीकथा	ग्र० रायमल्ल	हिन्दी	४१-८१

रघुनाथकाल सं० १६३३ पृष्ठ ५० पर रेखाचित्र ले० काल सं० १८२१ बोरान्न (बीराज) में खुशालचन्द
 ने प्रतिलिपि की थी । पत्र ८२ पर तीर्थङ्करों के ३ चित्र हैं ।

११. हनुमंतकथा	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	१०९-११०
१२. बीस विरहसप्तपूजा	हर्षकीर्ति	"	११०
१३. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	१११
१४. सरस्वतीजयमाल	ज्ञानभूषण	संस्कृत	११२
१५. अभिषेकपाठ	×	"	११२
१६. रविव्रतकथा	भाउ	हिन्दी	११२-१२१
१७. चिन्तामणिलग्न	×	संस्कृत	ने० काल १८२१ १२२
१८. प्रद्युम्नकुमाररासो	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	१२३-१५१
			२० काल १६२८ ने० काल १८११
१९. श्रुतपूजा	×	संस्कृत	१५२
२०. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१५३-१५६
२१. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	१५७-१६६
२२. पूजासंग्रह	×	"	१६७-१७२
२३. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	१८३
२४. पाशाकेवली	×	हिन्दी	१८४-२१७
२५. पञ्चव्याणकपाठ	रूपचन्द्र	"	२१७-२२२

विशेष—कई जगह पत्रों के दोनों ओर सुन्दर बेलें हैं ।

५२६२. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १०६ । भा० १०३×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. यज्ञ की सामग्री का व्यौरा	×	हिन्दी	१

विशेष—(अथ जागी की मौजे सिमरिया में प्र० देवाराज ने ताकी सामा आई संख्या १७६७ माह बुदी पूर्णिमा पुरानी पोथी में से उतारी । पोथी जीरण होगई तब उतरी । सब चीजों का निरख भी दिया हुआ है ।

२. यज्ञमहिमा	×	हिन्दी	२

विशेष—मौजे सिमरिया में माह बुदी १५ सं० १७६७ में यज्ञ किया उसका परिचय है । सिमरिया में चौहान वंश के राजा श्रीराव थे । मायाराम दीवान के पुत्र देवाराज थे । यज्ञाचार्य मोरेना के पं० टेकचन्द्र थे । यह यज्ञ सात दिन तक चला था ।

३. कर्मविपाक

×

संस्कृत

३-११

विशेष—ब्रह्मा नारद संवाद में से लिया गया है । तीन अध्याय हैं ।

४. आदीश्वर का समवसरण

×

हिन्दी १६६७ कार्तिक सुदी

१२-१४

आदीश्वर का समोसरण—आदिभाग—

गुर मनपति मन ध्याऊँ, चित्त चरन सरन ल्याऊ ।
 मति मांगि लैऊ प्रेसी, मुनि मांनि लैहि जैसी ॥१॥
 आदीश्वर गुण गाऊँ, बर साध सगु (र) पाऊँ ।
 चारित्र जिनेस लोया, भरष को राखु डीया ॥२॥
 तजि राज होइ भिखारी, जिन मीन बरत धारी ।
 सब आपनी कमाई, भई उदय अंतराई ॥३॥
 मुनि भीख काज जावइ, नहि भानु हाथ आवइ ।
 सेइ कन्वा लरुपा, कोई रतन अति अनूपा ॥४॥

अन्तिमभाग—

शिष्य सहस्र गुन गावइ, फल बोधि बीजु पावइ ।
 वर जोड़िइ मुख भासइ, प्रभु चरन सरन राखइ ॥५॥

दोहरा—

समोसरण जिनरायी कौ, गावहि जे नरनारि ।
 मनबद्धित फल भोगवई, तिरि पहुचहि भवपार ॥६॥
 सोलसह सड़सठि वरष, कार्तिक सुदी बलिराज ।
 सालकोट सुभ आनवर, जयउ सिध जिनराज ॥७॥

इति श्री आदीश्वरजी कां समोसरण समाप्त ॥

५. द्वितीय समोसरण

ब्रह्मगुलाल

हिन्दी

१४-१६

आदिभाग—

प्रथम सुमिरि जिनराज अनंत, सुख निधान मंगल सिव संत
 जिनवाणी सुमिरत सनु बढै, जयी गुनठांन छिपक छिनु चढै ॥१॥
 गुरसरद सेवहु ब्रह्म गुलाल, देवसाहस गुर मंगल माल ।
 इमहि दुमारि बरन्थी सुखसार, समवसरन जैसे बिसतार ॥२॥
 शीठ बुधि मन भायो करै, सूरिख पद आन पायो डरै ।
 सुनहु भव्य मेरे परवान, समोसरन की करौ बखान ॥३॥

सुभ आसन दिख जोग ध्यान, वद्धमान भयो केवल ज्ञान ।
समोसरण रचना अति बनी, परम धरम महिमा अति तणी ॥४॥

अन्तिमभाग—

चल्पी नगर फिरि अरने राइ, चरण-सरण जिन अति सुख पाइ ।
समोसरणय पूरण मयी, सुनत पडित पातिग गलि गयी ॥६५॥

दोहरा—

सौरह सैं अठसठि समै, माघ दसैं सित पक्ष ।
धुलालब्रह्म अनि गीत गति, जसोमंदि पद सिख ॥६६॥
सूरदेस हथि कंतपुर, राजा वक्रम साहि ।
धुलालब्रह्म जिन धर्मु जय, उपमा दीजे काहि ॥६७॥

इति समोसरन ब्रह्मधुलाल कृत संपूर्ण ॥

६. नेमिजी को मंगल

जगतभूषण के शिष्य

हिन्दी

१६-१७

विश्वभूषण

रचना सं० १६६८ थावरण मुदी ८

अंतिमभाग—

प्रथम जपौ परमेष्ठि ती गुर हीयी धरी ।
सस्वती करहुं प्रणाम कविस जिन उचरी ॥
सोरठि देस प्रसिद्ध द्वारिका अति बनी ।
रची इन्द्र नै आइ सुरनि मनि बहुकनी ॥
बहु कनीय मंदिर चैत्य खीयी, देखि सुरनर हरषीयी ।
समुद विजै वर भूप राजा, सक सोभा निरखीयी ॥
प्रिया जा सिब देवि जानौ, रूप अमरी ऊडता ।
राति सुंदरि सैन सूती, देखि सुपनै षोडशा ॥१॥

अन्तिम भाग—

देवतु सौलह सैं घटानूबा जाणीयी ।
सावन भास प्रसिद्ध अष्टमी मानियो ॥
गाऊं सिक्ंदराबाद पार्श्वजिन देहुरे ।
आवग क्रीया सुजान धर्म सौ नेहुरे ॥
धर धर्म सौ नेहु अति ही देही सबको दान जू ।
स्यादवाद दानी ताहि मानै करै पंडित मान जू ॥

जगतभूषण भट्टारक जै विश्वभूषण मुनिवर ।

नर नारी मंगलचार गावै पढत पातिग निस्तरे ॥

इति नैमिनाथ जू को मंगल समाप्ता ॥

७. पार्श्वनाथचरित्र

विश्वभूषण

हिन्दी

१७-१८

आदिभाग रागुनट—

पारस जिनदेव को मुनहु चरित्रु मनु लाई ॥ टेक ॥

मनउ सारदा माइ, भजी गनधर चितुलाई ।

पारस कथा संबंध, कही भाषा सुखदाई ॥

जंबू दखिन भरथ मै, नगर पीदना मांभ ।

राजा श्री अरिविंद जू, भुगतै सुख अवाक ॥ पारस जिन० ॥

विप्र तहां एकु वसै, पुत्र द्वी राज सुचारा ।

कमटु बढी विपरीत, विसन सेवै छु अपारा ॥

लघु भैया भरभूति सौ, वसुधरि दई ता नाम ।

रति कीडा मेज्या रच्यौ, हो कमठ भाव के धाम ॥ पारस जिन० ॥

कोपु कीयो मरभूति, कही मंत्री सो राच्यो ।

सीख दई नहीं गह्यो काम रस अंतर साच्यो ॥

कमठ विषै रस कारने, अमर भूति बांधी जाई ।

सो मरि वन हाथी भयो, हथिनि भई त्रिय ग्राह ॥ पारस जिन० ॥

अन्तिमपाठ—

अवधि हेत करि बात सही देवनि तव जानी ।

पदमावति धरणेन्द्र छत्र मस्तिग पर तानी ॥

सब उपसर्गु निवारिकै, पार्श्वनाथ जिनद ।

सकल करम पर जारिकै, भये मुक्ति त्रियचंद ॥ पारस जिन० ॥

मूलसंघ पट्ट विश्वभूषण मुनि राई ।

उत्तर देखि पुराण रचि, या वई सुभाई ॥

वसै महाजन लोग जू, दान चतुर्विधि का देत ।

पार्श्वकथा निहचै सुनौ, हो मोछि प्राप्ति फल लेत ॥

पारस जिनदेव को, मुनहु चरितु मन लाइ ॥ २५ ॥

इति श्री पार्श्वनाथजी की चरित्रु संपूर्ण ॥

८. वीरलिंगस्तोत्र	अमोलराम	हिन्दी	१६-२०
९. सम्पन्नानी धमाल	"	"	२०-२१
१०. स्थूलभद्रशीलरासी	×	"	२१-२२
११. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	२२-२३
१२. "	द्यानतराय	"	२३
१३. "	×	संस्कृत	२३
१४. पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	"	२४
१५. "	पद्मनन्दि	"	२४
१६. हनुमतकथा	ब० रायमहल	हिन्दी	२० काल १६१६ २५-७५ ले० काल १८३४ ज्येष्ठ सुदी ३
१७. सीताचरित्र	×	हिन्दी	अपूर्णा ७७-१०६

५३६३. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ३७ । आ० ७३×१० इञ्च । ले० काल सं० १८६२ आसोज बुदी ७ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—निम्न पूजा पाठों का संग्रह है—

१. कल्याणन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	पूर्ण
२. लक्ष्मीस्तोत्र (पार्श्वनाथस्तोत्र)	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	"
३. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	"	"
४. सक्तामरस्तोत्र	आ० मानतुंग	"	"
५. देवपूजा	×	हिन्दी संस्कृत	"
६. सिद्धपूजा	×	"	"
७. दशलक्षणपूजा जयमाल	×	संस्कृत	"
८. षोडशकारणपूजा	×	"	"
९. पार्श्वनाथपूजा	×	हिन्दी	"
१०. शांतिपाठ	×	संस्कृत	"
११. सहस्रनामस्तोत्र	पं० आशाधर	"	"
१२. पञ्चमेरूपूजा	भूधरयति	हिन्दी	"

१३. अष्टाह्निकापूजा	×	संस्कृत	"
१४. अभिषेकविधि	×	"	"
१५. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी	"
१६. पञ्चमङ्गल	रूपचन्द	"	"
१७. अनन्तपूजा	×	संस्कृत	"

विशेष—यह पुस्तक सुखलालजी मज के पुत्र मनसुख के पढ़ने के लिए लिखी गई थी ।

५३६४. गुटका नं० १४ । पत्र सं० १३ । आ० ४×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । पूर्ण । दशा-सामाय ।

विशेष—शारदाष्टक (हिन्दी) तथा ८४ आसादनों के नाम हैं ।

५३६५. गुटका नं० १५ । पत्र सं० ४३ । आ० ५×३ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । ले० काल १८६० । पूर्ण

विशेष—पाठ अशुद्ध है—

१. कहज्योजी नेमजीसूँ जाय म्हेतो थांही संग चालां	×	हिन्दी	१
२. हो मुनिवर कब मिलि है उपगारी	भागचन्द	"	१-२
३. ध्यावांला हो प्रभु भावसोंजी	×	"	२-८
४. प्रभु थांकोजी मूरत मनड़ी मोहियो	ब्रह्मकपूर	"	८-९
५. गरज गरज गहे नवरसै देखी भाई	×	"	९
६. मान लीज्यो म्हारी अरज रिषभ जिनजी	×	"	१०
७. तुम सी रमा विचारी तजि	×	"	११
८. कहज्योजी नेमिजीसूँ जाय म्हे तो	×	"	१२
९. मुझे तारोजी भाई साइधा	×	"	१३
१०. संबोधर्पचासिकाभाषा	बुधजन	"	१३-२०
११. कहज्योजी नेमिजीसूँ जाय म्हेतो थांकोही संगचालां	राजचन्द	"	२१-२३
१२. मान लीज्यो म्हारी आज रिषभ जिनजो	×	"	२३
१३. तजिके गये पीया हमकै तुमसी रमा विचारी	×	"	२३-२४
१४. म्हे ध्यावालां हो प्रभु भावभूँ	×	"	२४
१५. साधु दिगंबर नमन उर पद संवर मूषणधारी	×	"	२५

१६. महे निशिदिन ध्यावाला	बुधजन	"	२६
१७. दर्शनपाठ	×	"	२६-२७
१८. कवित्त	×	"	२८-२९
१९. वारहभावना	नवल	"	३३-३५
२०. विनती	×	"	३६-३७
२१. वारहभावना	दलजी	"	३८-३९

५३६६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० २२६ । आ० ५३×५ इञ्च । ले० काल १७५१ कार्तिक सुदी १ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—दो गुटकाओं को मिला दिया गया है ।

विषयसूची—

१. वृहदकल्पारण	×	हिन्दी	३-१२
२. गुणवलिप्रत की शिंयथा	×	"	१२
३. भांडा देने का मन्त्र	×	"	१२-१६
४. राजा प्रजाको वशमें करने का मन्त्र	×	"	१७-१८
५. मुनीश्वरों की जयमाला	ब्रह्म जिनदास	"	२३-२४
६. दश प्रकार के ब्राह्मण	×	संस्कृत	२५-२६
७. सूतकवर्णन (यशस्तिलक से)	सोमदेव	"	३०-३१
८. गृहप्रवेशविचार	×	"	३२
९. भक्तिनामवर्णन	×	हिन्दी संस्कृत	३३-३५
१०. दीपावतारमन्त्र	×	"	३६
११. काले विष्णुके डङ्कु उतारने का मंत्र	×	हिन्दी	३८

नोज—यहां से फिर सख्या प्रारम्भ होती है ।

१२. स्वाध्याय	×	संस्कृत	१-३
१३. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	"	१ ३
१४. प्रतिकर्मणपाठ	×	"	१६-३७
१५. भक्तिपाठ (सात)	×	"	३७-७२

१६. बृहत्सूक्त्यंभूस्तोत्र	समन्तभद्राचार्य	"	७३-८६
१७. बलत्कारमण शुर्वावलि	×	"	८६-८३
१८. श्रावकप्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	८४-१०७
१९. श्रुतस्कंध	ब्रह्म हेमचन्द्र	प्राकृत	१०७-११८
२०. श्रुतावतार	श्रीधर	संस्कृत गद्य	११८-१२३
२१. आलोचना	×	प्राकृत	१२३-१३२
२२. लघु प्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	१३२-१४६
२३. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	"	१४६-१५५
२४. वंदेतान की जयमाला	×	संस्कृत	१५५-१५६
२५. प्राराधनासार	देवसेन	प्राकृत	१५६-१६७
२६. संबोधपंचासिका	×	"	१६८-१७२
२७. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	संस्कृत	१७२-१७६
२८. भूरालचीबीसी	भूपालकवि	"	१७७-१८०
२९. एकीभावस्तोत्र	कादिराज	"	१८०-१८४
३०. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१८५-१८६
३१. दवालक्षराजयमाल	पं० रङ्धू	अपभ्रंश	१८६-१८५
३२. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	१८६-२०३
३३. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	२०३-२०४
३४. मन्त्रादिसंग्रह	×	"	२०५-२२६

प्रवृत्ति—संवत् १७५१ वर्षे छात्रे १६१६ प्रवर्तमाने कार्तिकमासे शुक्लपक्षे प्रतिपदा १ तिथी मङ्गलवारे
 प्राचार्य श्री चावकीर्ति पं० गंगाराम पठनार्थ वाचनार्थ ।

५३६७. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ४०७ । भा० ७५५ इति ।

१. अशनसमितिस्वरूप	×	प्राकृत	संस्कृत व्याख्या सहित १-३
२. भग्नहरस्तोत्रमन्त्र	×	संस्कृत	४
३. बंधस्थिति	×	"	मूलाचार से उद्धृत ५-६
४. स्वरविचार	×	"	७

५. संहति	×	संस्कृत	६-११
६. मन्त्र	×	"	१४
७. उपवास के दशभेद	×	"	१५
८. फुटकर ज्योतिष पद्य	×	"	१५
९. अढाई का व्योरा	×	"	१८
१०. फुटकर पाठ	×	"	१८-२०
११. पाठसंग्रह	×	संस्कृत प्राकृत	२१-२४

गोमट्टसार, समयसार, द्रव्यसंग्रह आदि से संगृहीत पाठ हैं।

१२. प्रश्नोत्तररत्नमाला	अमोघवर्ष	संस्कृत	२४-२५
१३. सज्जनचित्तवल्लभ	मल्लिषेणाचार्य	"	२६-२८
१४. गुणस्थानव्याख्या	×	"	२९-३१

प्रवचनसार तथा टीका आदि से संगृहीत

१५. छातीसुख की औषधि का नुसखा	×	हिन्दी	३२
१६. जयमाल (मालारोहण)	×	अपभ्रंश	३२-३५
१७. उपवासविधान	×	हिन्दी	३५-३६
१८. पाठसंग्रह	×	प्राकृत	३६-३७
१९. अन्ययोगव्यवच्छेदकद्वात्रिंशिका	हेमचन्द्राचार्य	संस्कृत	मन्त्र आदि भी हैं ३८-४०
२०. गर्भ कल्याणक क्रिया में भक्तियों	×	हिन्दी	४१
२१. जिनसहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	४२-४६
२२. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	"	४६-५२
२३. अतिभावनाष्टक	आ० कुंदकुंद	"	५२
२४. भावनाद्वात्रिंशतिका	आ० अमितगति	"	५३-५४
२५. आराधनासार	देवसेन	प्राकृत	५५-५८
२६. संबोधपंचासिका	×	अपभ्रंश	५९-६०
२७. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	६१-६७
२८. प्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	६७-८८
२९. भक्तिस्तोत्र (आचार्यभक्ति तक)	×	संस्कृत	८९-१०७

३०. स्वयंभूस्तोत्र	आ० समन्तभद्र	संस्कृत	१०८-११८
३१. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	११८
३२. दर्शनस्तोत्र	सकलचन्द्र	"	११६
३३. सुप्रभातस्तवन	×	"	११६-१२१
३४. दर्शनस्तोत्र	×	प्राकृत	१२१
३५. बलात्कार गुरावली	×	संस्कृत	१२२-२४
३६. परमानन्दस्तोत्र	पूज्यनाद	"	१२४-२५
३७. नाममाला	धनञ्जय	"	१२५-१३७
३८. वीतरामस्तोत्र	पद्मनन्दि	"	१३८
३९. कल्याणस्तोत्र	"	"	१३९
४०. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	१३९-१४१
४१. समयसारगाथा	आ० कुन्दकुन्द	"	१४१
४२. अर्हद्भूतिविधान	×	"	१४१-१४३
४३. स्वस्त्ययनविधान	×	"	१४४-१५६
४४. रत्नत्रयपूजा	×	"	१५६-१६२
४५. जितहनपन	×	"	१६२-१६८
४६. कलिकुण्डपूजा	×	"	१६८-१७१
४७. षोडशकारणपूजा	×	"	१७२-१७३
४८. दशलक्षणपूजा	×	"	१७३-१७५
४९. सिद्धस्तुति	×	"	१७५-१७६
५०. सिद्धपूजा	×	"	१७६-१८०
५१. शुभमालिका	श्रीधर	"	१८२-१८२
५२. सारसमुच्चय	कुलभद्र	"	१८२-२०६
५३. जातिवर्णन	×	" ५८ पद्य ७७ जाति	२०७-२०८
५४. कुटकरवर्णन	×	"	२०९
५५. षोडशकारणपूजा	×	"	२१०

१६. श्रीवधियों के नुसखे	×	हिन्दी	२११
१७. संग्रहसूक्ति	×	संस्कृत	२१२
१८. दीक्षापटल	×	"	२१३
१९. पार्वतीपूजा (मन्त्र सहित)	×	"	२१४
२०. दीक्षा पटल	×	"	२१८
२१. सरस्वतीस्तोत्र	×	"	२२३
२२. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	२२३-१२४
२३. सुभाषितसंग्रह	×	"	२२५-२२८
२४. तत्त्वसार	देवसेन	प्राकृत	२३१-२३५
२५. योगसार	योगचन्द्र	संस्कृत	२३१-२३५
२६. द्रव्यसंग्रह	नेमिचन्द्राचार्य	प्राकृत	२३६-२३७
२७. श्रीवक्त्रप्रतिकर्मण	×	संस्कृत	२३७-२४५
२८. भावनापद्धति	पद्मनन्दि	"	२४६-२४७
२९. रत्नत्रयपूजा	"	"	२४८-२४९
३०. कल्याणमाला	पं० भाषाधर	"	२४९-२६०
३१. एकीभाषस्तोत्र	वादिराज	"	२६०-२६३
३२. समयसारवृत्ति	अमृतचन्द्र सूरि	"	२६४-२८५
३३. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	मपञ्जल	२८६-३०३
३४. कल्याणमन्त्रिस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	३०४-३०६
३५. परमेष्ठियों के गुण व अतिशय	×	प्राकृत	३०७
३६. स्तोत्र	पद्मनन्दि	संस्कृत	३०८-३०९
३७. प्रमाणप्रमेयकलिका	नरेन्द्रसूरि	"	३१०-३२१
३८. देवागमस्तोत्र	भा० समन्तभद्र	"	३२२-३२७
३९. मकलङ्काष्टक	भट्टाकलङ्क	"	३२८-३२९
४०. सुभाषित	×	"	३३०-३३१
४१. जितगुणस्तवन	×	"	३३१-३३२

८२. कल्याण	×	"	३३२-३३४
८३. संभवनाथपद्धती	×	अपभ्रंश	३३४-३३७
८४. स्तोत्र	सहस्रचन्द्रदेव	प्राकृत	३३५-३३६
८५. स्त्रीशृङ्गारवर्णन	×	संस्कृत	३३६-३४१
८६. चतुर्विंशतिस्तोत्र	माधनन्दि	"	३४२-३४३
८७. पञ्चनमस्कारस्तोत्र	रमास्वामि	"	३४४
८८. मृत्युमहोत्सव	×	"	३४५
८९. अनन्तगंठीवर्णन (मन्त्र सहित)	×	"	३४६-३४८
९०. आयुर्वेद के नुसखे	×	"	३४९
९१. पाठसंग्रह	×	"	३५०-३५४
९२. आयुर्वेद नुसखा संग्रह एवं मंत्रादि संग्रह	×	संस्कृत हिन्दी योगशत वैद्यक से संगृहीत	३५७-३८७
९३. अन्य पाठ	×	"	३८८-४०७

इनके अतिरिक्त निम्नपाठ इस गुटके में और हैं ।

१. कल्याण बड़ा २. मुनिश्वरोंकी जयमाला (अज्ञा जिनदास) ३. दशप्रकार विप्र (मत्स्यपुराणेषु कथिते)
४. सूतकविधि (यकास्तिलक चम्पू से) ५. शृङ्खिलक्षणा ६. दोषावतारमन्त्र

५३६८. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ५५ । आ० ७५५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८०४

थावण बुदी १२ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. जिनराज महिमास्तोत्र	×	हिन्दी	१-३
२. सतसई	विहारीलाल	"	ले० काल १७७४ फागुण बुदी १ १-४८
३. रसकौतुक रास सभा रञ्जन	गङ्गादास	"	" १८०४ सावण बुदी १२ ४९-५५

दीहा—

अथ रस कौतुक लिख्यते—

गंगाधर सेवहू सदा, गाहक रसिक प्रवीण ।

राज सभा रंजन कहत, मन हुलास रस लीन ॥१॥

दंपति रति नैराश तन, विधा सुधन सुगेह ।

जो दिन जाय अनंद सौ, जीतव को फल ऐह ॥२॥

सुंदर पिय मन भावली, भाग भरी सकुमारि ।
सोइ नारि सतेवरी, जाकी कोठि ज्वारि ॥३॥
हित सौ राज सुता, विससि तन न निहारि ।
ज्यां हाथां रै बरह ए, पायां मैड कारन भारि ॥४॥
तरसे हूं परसे नहीं, तौदा रहत उदास ।
जे सर सूकै भादवै, की सी उन्हाले आस ॥५॥

अन्तिमभाग—

समये रति पोसति नहीं, नाहुरि मिलै त्रिनु नेह ।
आसरि चुक्यो मेहरा, काई बरसि करैह ॥६॥
मुदरी लै छलस्यो कछै, भी हों फिर ना पैद ।
काम सरै दुख बीसरे, बेरी हुबो वैद ॥७॥
मानवती निस दिन हरै, बालत खरीबदास ।
नदी किनारे रुखड़ी, जब तब होइ विनास ॥८॥
सिव सुखदामक प्राणपति, जरी आन कौ भोग ।
नासे देसी रुखड़ी, ना परदेसी लोग ॥९॥
गंता प्रेम समुद्र है, गाहक चतुर सुजात ।
राज सभा इहै, मन हित प्रीति निदान ॥१०॥

इति श्री गंगाराम कृत रस कौतुक राजसभा रत्न समस्या प्रबंध प्रभाव । श्री मिली सावरण वदि १२
बुधवार संवत् १८०४ सवाई जयपुरमध्ये लिखी दीवान ताराचन्दजी को पोथी लिखत मारिकचन्द बज बाबै जीहने
जिसा माफिक बंध्य ।

५३६६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ३६ । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १६३० आषाढ सुदी १५ ।
पूर्ण ।

विशेष—रसालकुंवर की औपई—नखरू कवि कृत है ।

५४००. गुटका सं० २० । पत्र सं० ६८ । भा० ६×३ इञ्च । ले० काल सं० १६६५ ज्येष्ठ बुदी १२ ।
पूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—महीधर विरचित मन्त्र महौदधि है ।

५४ १. गुटका सं० २१ । पत्र सं० ३१६ । आ० ६×५ इञ्च । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. सामायिकपाठ	×	संस्कृत प्राकृत	१-२४
२. सिद्ध भक्ति आदि संग्रह	×	प्राकृत	२५-७०
३. समन्तभद्रस्तुति	समन्तभद्र	संस्कृत	७२
४. सामायिकपाठ	×	प्राकृत	७३-८१
५. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	संस्कृत	८२-८६
६. गार्श्वनाथ का स्तोत्र	×	"	८७-१००
७. चतुर्विंशतिजिनाष्टक	शुभचन्द्र	"	१०१-१४६
८. पञ्चस्तोत्र	×	"	१४७-१७०
९. जिनवरस्तोत्र	×	"	१७०-२००
१०. मुनीश्वरों की जयमाला	×	"	२०१-२५०
११. सकलीकरणाविधान	×	"	२५१-३००
१२. जिनचौबीसभवत्तररास	विमलेश्वरीकीर्ति	हिन्दी पद्य पद्य सं० ४८	३०१-८

आदिभाग—

जिनवर चुबौसइ जरि भानू पाय नमी कहं भवहं विचार ।

भावइ सुगुण ये संत ॥१॥

यज्ञकुल राजा पाँण भणीइ, भाग भूमि आई पण सुणीइ ।

श्रीधर ईशानि देव ॥२॥

सुचिराज सातमइ भवि जाणु, अच्युतेन्द्र सोलम बखारु ।

वज्रनाभि चन्द्रेण ॥३॥

तव करि सर्वारथ सिद्धि पासी, भव अग्यारम वृषमह स्वामी ।

सुमितहं भ्या जगनाह ॥४॥

विमलबाहना राजा धरि जायुं, पंचामुत्तरि अहमिन्द्र सुभाणु ।

इशं भवजिन परमपद पास्युं ॥५॥

विमल बाहन राजा धरि जायुं, पंचामुत्तरि अहमिन्द्र बखारु ।

अजित अमर पद पास्युं ॥६॥

विमल बाहुन राजा धरि सुखीइ, प्रथमसीवि ग्रहमिद सुभसीइ ।

शंभव जिन अवतार ॥७॥

अन्तिमभाग—

अदिनाथ अग्यान भवान्तर, चन्द्रप्रभ भव सात सोहेकर ।

शान्तिनाथ भवपार ॥४५॥

नमिनाथ भवदशा सम्हे जाणु, पार्श्वनाथ भव सज्ज हन्ताणु ।

महावीर भव तेजीसइ ॥४६॥

अजितनाथ जिन आदि कही जइ, अठार जिनेश्वर हिइ धरीजई ।

त्रिणि त्रिणि भव सही जाणु ॥४७॥

जिन चुबीस भवन्तर सारो, अराता सुगता पृण्य अवारो ।

श्री विमलेश्वरीति इम बोलइ ॥४८॥

इति जिन चुबीस भवान्तर रास समाप्ता ॥

१३. मालीरासो	जिनदास	हिन्दी पद्य	३०८-३१०
१४. नन्दीश्वरगुह्याञ्जलि	×	संस्कृत	३११-३३
१५. पद-जीवारे जिणवर नाम भजे	×	हिन्दी	३१४-१५
१६. पद-जीवा प्रभु न सुमरओ रे	×	"	३१६

५४०२. गुटका सं० २२ । पद्य सं० १५४ । आ० ६×१५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-भजन । ले०

काल सं० १८५६ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. नेमि गुण गाऊ बांझित पाऊं	महीचन्द्र सूरि	हिन्दी	१
बाय नगर में सं० १८८२ में पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।			
२. पार्श्वनाथजी की निशाणी	हर्ष	हिन्दी	१-६
३. रे जीव जिनधर्म	समथ सुन्दर	"	६
४. सुख कारण सुमरी	×	"	७
५. कर जोर रे जीवा जिनजी	पं० फतेहचन्द	"	८
६. चरण चरण अब आइयो	"	"	८
७. हलत फिरयो अनादिओ रे जीवा	"	"	९

		हिन्दी	२० काल म० १८४०	६
८. जादम जात्र बरणाय	फतेहचन्द			१०
९. दर्शन दुहेलो जी	"	"		११
१०. उपसेन घर बारणी जी	"	"		१२
११. बारीजी जिनंदजी वारी	"	"		१३
१२. जामन मरण का	"	"		१३
१३. तुम जाय मनावो	"	"		१४
१४. अन्न लूने नेमि जिनंदा	"	"		१४
१५. राज ऋषभ चरण नित बंदिये	"	"		१५
१६. कर्म भरमाये	"	"		१६
१७. प्रधुजी थांके सरणी आया	"	"		१७
१८. पार उतारो जिनजी	"	"		१७
१९. थांकी सांवरी मूरति छवि प्यारी	"	"		१८
२०. तुम जाय मनावो	"	"	अपूर्णा	१८
२१. जिन चरणो चितलायो	"	"		१९
२२. प्हारो मन लाभोजी	"	"		१९
२३. चञ्चल जीव जरे	नेमीचन्द	"		२०
२४. मो मनरा प्यारा	सुखदेव	"		२१
२५. आठ भवारो बाहलो	खेमचन्द	"		२२
२६. समदक्षिज्यजीरो जादुराय	"	"		२३
२७. नाभिजी के नन्दन	मनसाराम	"		२३
२८. त्रिभुवन शुद्ध स्वामी	भूधरदास	"		२४
२९. नाभिराय मोरां देवी	विजयकीर्ति	"		२६
३०. वारि २ हो वोमांजी	जीवराम	"		२६
३१. श्री ऋषभेश्वर प्रणमू पाय	सदासागर	"		२७
३२. परम महा उत्कृष्ट आदि मुरि	अजैराम	"		२७
३३. वै गुरु मेरे उर बसो	भूधरदास	"		२८
३४. करो निज मुखदाई जिनधर्म	त्रिलोककीर्ति	"		३०

३५. श्रीजिनराय की प्रतिमा खंदौ जाय	त्रिलोककीर्ति	हिन्दी	३१
३६. होजी थांकी सांखली सूरत	पं० फतेहचन्द	"	३२
३७. कबही मिलसीं हों मुनिवर	×	"	३३
३८. नेमीसुर गुरु सरस्वती	सूरजमल	"	३३
३९. श्री जिन तुमसै वीनऊं	अजयराज	"	३५
४०. समदविजयजीरो नंदको	मुनि/हीराचन्द	"	३५
४१. शंभुजारो वासी प्यारो	मथविमल	"	३६
४२. मन्दिर आखालां	×	"	३६
४३. ध्यान धरयाजी मुनिवर	जिनदास	"	३७
४४. ज्यारे सोभै राजि	निर्मल	"	३८
४५. केसर हे केसर भीनो प्हारा राज	×	"	३९
४६. समकित थारी सहलहीजी	पुरुषोत्तम	"	४०
४७. अवगति मुक्ति नहीं छै रे	रामचन्द्र	"	४१
४८. बधावा	"	"	४२
४९. श्रीमंदरजी सुखज्यो मोरी वीनती	गुणचन्द्र	"	४३
५०. करकसारी वीनती	भगोसाह	"	४४-४५

सूखा नगर में सं० १८२६ में रचना हुई थी ।

५१. उपदेशबावनी	×	हिन्दी	४५-६१
५२. जैनवदी देशकी पत्नी	मजलसराय	"	सं० १८२१ ६२-६६
५३. ८५ प्रकार के मूखों के भेद	×	"	६७-६९
५४. रागमाला	×	"	३६ रागनियों के नाम हैं ७०
५५. प्रात भयो सुमरदेव	जगतरामगोदीका	"	राग भैरव ७०
५६. चलि २ हो भक्ति दर्शन काज	"	"	७१
५७. देवो जिनराज देव सेव	"	"	७२
५८. महावीर जिन मुक्ति पधारे	"	"	७२
५९. हमरैतो प्रभु सुरति	"	"	७३

६०. श्रीरामजी को ध्यान धरो	जगतराम गोदीका	हिन्दी	७३
६१. प्रातः प्रथम ही जणो	"	"	७४
६२. जागे श्री नेमिकुमार	"	"	राग रामकली ७४
६३. प्रभु के दर्शन को मैं आगो	"	"	७५
६४. गुरुही भ्रम रोग मिटावै	"	"	७५
६५. झूठ कंदरी नेमि पड़ावै	"	"	७५
६६. निरा तू जगत् कर्म उद्धिरे	"	"	७६
६७. उतो मेरे प्राण को पियारो	"	"	७६
६८. राखोजी जिनराज सरन	"	"	७६
६९. जिनजी से मेरी लगन लगी	"	"	७६
७०. मुनि ही अरज तेरे पांय परो	"	"	७७
७१. मेरी कौन गति होसी	"	"	७७
७२. देखारी नेम कैसी रिद्धि पाई	"	"	७८
७३. साजि बधाई राजा नाभि के	"	"	७८
७४. बीतराम नाम सुमरि	मुनि विजयकीर्ति	"	७९
७५. या चेतन सब बुद्धि गई	बनारसीदास	"	७९
७६. इस नगरी में किस बिध रहना	बनारसीदास	"	७९
७७. मैं पाये तुम त्रिभुवन राय	हरीसिंह	"	८०
७८. ऋषभभजित संभ्रत हरणा	भ० विजयकीर्ति	"	८०
७९. उठो तेरो मुख देखूँ	ब्रह्मटोडर	"	८०
८०. देखोरी सादीश्वरस्वामी कैसा ध्यान लगाया है	खुशालचंद	"	८१
८१. जै जै जै जै जिनराज	सालचन्द	"	८१
८२. प्रभुजी तिहारो कृपा	हरीसिंह	"	८१
८३. धमकि २ धुम सांगड दि दा ना	रामभगत	"	८२
८४. विषय त्याग शुभ कारज लागो	नवल	"	८२
८५. छवि जिन देखी देवकी	फतेहचन्द	"	८२

५६. देखि प्रभु हरस कौण	फतेहचन्द	हिन्दी	५३
५७. प्रभु नेमका भजन करि	बलतराम	"	५३
५८. प्राजि उदै चर संपदा	खेमचन्द	"	५४
५९. भज भी शेषभ जितंद	श्रीमाचन्द	"	५४
६०. मेरे तो योही चाव है	×	"	५४
६१. मुनिसुवत जिनराज की	भानुकीर्ति	"	५४
६२. मोरे प्रभु सूं प्रीति लगी	दीपचन्द	"	५४
६३. शीतल गंगादिक जल	विजयकीर्ति	"	५४
६४. तुम आतम गुण जानि	बनारसीदास	"	५४
६५. सब स्वारथ के मीत है	×	"	५५
६६. तुम जिन अटके रे मन	श्रीभूषण	"	५५
६७. कहा रे अशानी जीवकू	×	"	५६
६८. जिन नाम सुसर मन बावरे	बानतराय	"	५६
६९. सहस राम रस पीजिये	रामदास	"	५६
१००. सुनि मेरी मनसा मालगणी	×	"	५६
१०१. वो साधु संसार में	×	"	५७
१०२. जिनमुद्रा जिन सारसी	×	"	५७
१०३. इराविधि देव अदेव की मुद्रा लखि लीजै	×	"	५७
१०४. विद्यमान जिनसारसी प्रतिमा जिनवरकी	लालचंद	"	५८
१०५. काया बाडी काठकी सींचत सूके आप मुनिपद्मतिलक		"	५८
१०६. ऐसे क्यों प्रभु पाइये	×	"	५९
१०७. ऐसे यों प्रभु पाइये	×	"	५९
१०८. ऐसे यों प्रभु पाइये मुनि पंडित प्राणी	×	"	६०
१०९. मेढो बिधा हमारी	नयनमुख	"	६०
११०. प्रभुजी जो तुम तारक नाम धरायो	हरखचन्द	"	६०
१११. रे मन विषयां भूलियो	भानुकीर्ति	"	६१

११२. सुमरन ही में त्यारे	द्यानतराय	हिन्दी	६१
११३. अब ले जैनधर्म को सरणों	×	"	६१
११४. बैठे वज्रदन्त भूपाल	द्यानतराय	"	६१
११५. इह सुंदर मूरत पार्श्व की	×	"	६२
११६. उठि संवारै कीजिये दरसना	×	"	६२
११७. कौन कुवाण परी रे मना तेरी	×	"	६२
११८. राम भरष सौ कहे मुभाय	द्यानतराय	"	६३
११९. कहे भरतजी सुणि हो राम	"	"	६३
१२०. मूरति कैसे राजें	जगतराम	"	६३
१२१. देखो सखि कौन है नम कुमार	विजयकीर्ति	"	६३
१२२. जिनबरजीसुं प्रीति करी री	"	"	६४
१२३. ओर ही आये प्रभु दर्शन को	हरखचन्द	"	६४
१२४. जिनेसुरयेक तन्ये करण तुम लेव	जगतराम	"	६४
१२५. ज्यों बने त्यों तारि भोक्कु	गुलाबकृष्ण	"	६४
१२६. हमारी बारि श्री नेमिकुमार	×	"	६४
१२७. आछे रङ्ग राजे भली भई	×	"	६५
१२८. एरी अलो प्रभुको दर्श करी	जगतराम	"	६५
१२९. नैना मेरे दर्शन है सुभाय	×	"	६५
१३०. लागी साझी प्रीति तू साके	×	"	६५
१३१. तैं तो मेरी सुधि हूं न लई	×	"	६५
१३२. मानों मैं तो शिव सिधि लाई	×	"	६६
१३३. जानीये तो जानी तेरे मनकी कहानी	विजयकीर्ति	"	६६
१३४. नयन लगे मेरे नयन लगे	×	"	६६
१३५. मुझपै महरि करो महाराज	विजयकीर्ति	"	६६
१३६. चेतन चेत निज घट मांहि	"	"	६७
१३७. पिव बिन पल छिन बरस बिहात	"	"	६७

१३३. भजित जिन सरण तुम्हारी	मानुकीति	हिन्दी	६७
१३६. तेरी मूरति रूप कनी	रूपचन्द	"	६७
१४०. अषिर नरभञ्ज जागिरे	विजयकीर्ति	"	६८
१४१. हम हैं श्रीमहावीर	"	"	६८
१४२. भलैभल आसकली मुझ याज	"	"	६८
१४३. कहाँ लो दाम तेरी पूज करे	"	"	६८
१४४. आज ऋषभ घरि जाई	"	"	६९
१४५. प्रात भयो बलि जाऊँ	"	"	६९
१४६. जागो जगोजी जागो	"	"	६९
१४७. प्रात समै उठि जिन नाम लीजै	हर्षचन्द	"	६९
१४८. ऐसे जिनवर मे मेरे मन बिललायो	अनन्तकीर्ति	"	१००
१४९. आयो सरण तुम्हारी	×	"	"
१५०. सरण तिहारी आयो प्रभु मैं	अखयराम	"	"
१५१. बीस तीर्थङ्कर प्रात संभारो	विजयकीर्ति	"	१०१
१५२. कहिये दीनदयाल प्रभु तुम	द्यानतराय	"	"
१५३. म्हारे प्रकटे देव निरखन	बनारसीदास	"	"
१५४. हं सरणगत तोरी रे	×	"	"
१५५. प्रभु मेरे देखत आनन्द भये	जगताराम	"	१०२
१५६. जीवढा तू जागिनै प्यारा समकित महलमें	हरीसिंह	"	"
१५७. घोर घटाकरि आयोरो जलधर	जयकीर्ति	"	"
१५८. कौन दिवासुं आयो रे वनचर	×	"	"
१५९. सुमति जिनंद गुणमाला	गुणचन्द	"	१०३
१६०. जिन बादल चढ़ि आयो हो जगमें	"	"	"
१६१. प्रभु हम चरणन सरन करी	ऋषभहरी	"	"
१६२. दिन २ देही होत पुरानी	जनमल	"	"
१६३. सुगुह मेरे बरसत जान भरी	हरखचन्द	"	१०४

१६४. क्या सोचत अलि भारी रे मन	द्यानतराय	हिन्दी	१०४
१६५. समकित उत्तम भाई जगतमें	"	"	"
१६६. रे मेरे बटजान घनागम छाया	"	"	१०५
१६७. ज्ञान सरोवर सोइ हो भविजन	"	"	"
१६८. हो परमगुरु बरसत ज्ञानभरी	"	"	"
१६९. उत ११. ११ जिन दर्शन को नेम	देवसेन	"	"
१७०. मेरे अब गुरु है प्रभु ते बकसां	हर्षकीर्ति	"	१०६
१७१. बलिहारी खुदा के बन्दे	जानि मोहमद	"	"
१७२. मैं तो तेरी आज महिमा जानी	भूधरदास	"	"
१७३. देखोरी आज नेमीसुर मुनि	×	"	"
१७४. कहाँरी कहूँ कहूँ कहत न यावे	द्यानतराय	"	१०७
१७५. रे मन करि सदा संतोष	बनारसीदास	"	"
१७६. मेरी २ करतां जनम गयो रे	रूपचन्द	"	"
१७७. देह धुडानी रे मै जानी	विजयकीर्ति	"	"
१७८. साधो लोखयो सुसति अकेली	बनारसीदास	"	१०८
१७९. तनिक जिथा जाग	विजयकीर्ति	"	"
१८०. तन धन जोबन मान जगत में	×	"	"
१८१. देखो बन में ठाडो वीर	भूधरदास	"	१०९
१८२. चेतन नेकु न तोहि संभार	बनारसीदास	"	"
१८३. लगि रह्योरे अरे	बखतराम	"	"
१८४. लगि रह्यो जीव परभाव में	×	"	"
१८५. हम लागे आतमराम सों	द्यानतराय	"	११०
१८६. निरन्तर व्याऊँ नेमि जिनंद	विजयकीर्ति	"	"
१८७. कित गयोरे पंथो बोल तां	भूधरदास	"	"
१८८. हम बैठे आनी मीन से	बनारसीदास	"	"
१८९. बुविधा कब जैह्यो	×	"	१११

१६०. जगत में सो देवन को देव	बनारसीदास	हिन्दी	१११
१६१. मन लागो श्री नवकारसू	गुरुचन्द्र	"	"
१६२. चेतन अब खोजिये	"	"	राय सारङ्ग ११२
१६३. आये जिनवर मनके भावतें	राजसिंह	"	"
१६४. करो नाभि कंकरजी की आरती	लालचन्द	"	"
१६५. री भाँको वेद रटत अह्या रटत	नन्ददास	"	११३
१६६. तैं सरभव पाय कहा किमो	रूपचन्द	"	"
१६७. अंखियां जिन दर्शन की प्यासी	×	"	"
१६८. बलि जइये नेमि जिनंदकी	भाउ	"	"
१६९. सब स्वारथ के विरोग लोग	विजयकीर्ति	"	११४
२००. मुक्तागिरी बंदन जइये री	देवेन्द्रभूषण	"	"

सं० १८२१ में विजयकीर्ति ने मुक्तागिरी की बंदन की थी ।

२०१. उमाहो लाग रह्यो दरशन को	जगताराम	हिन्दी	११४
२०२. नाभि के नंद नरसु राज बंदी	निसन्ददास	"	"
२०३. लाग्यो आतमराम सों नेह	आनतराय	"	"
२०४. धनि मेरी आजकी घरी	×	"	११५
२०५. मेरो मन बस कीमो जिनराज	चन्द	"	"
२०६. धनि वो पीव धनि वा प्यारी	अहाबयाल	"	"
२०७. आज मैं नीक दर्शन पायो	कर्मचन्द	"	"
२०८. देखो भाई माया लागत प्यारी	×	"	११६
२०९. कलिकुम में ऐमे ही दिन जाये	हर्षकीर्ति	"	"
२१०. श्रीनेमि चले राजुल तजिके	×	"	"
२११. नेमि कंवर वर बींद विराजे	×	"	११७
२१२. तेइ बड़भागी तेइ बड़भागी	सुंदरभूषण	"	"
२१३. अरे मन के के बर समझायो	×	"	"
२१४. कब मिलिहो नेम प्यारे	विहारीदास	"	"

श्रवण	सकलकीर्ति	हिन्दी	११८
२१५. नेमिजिनंद बर्नन की			
२१६. अब छाक्यो दाव बन्यो है भजले श्रीभगवान	×	"	"
२१७. रे मन जायगो कित ठौर	×	"	"
२१८. निश्चय होएहार सो होय	×	"	"
२१९. समझ नर जीवन थोरो	रूपचन्द	"	"
२२०. लग गई लगन हमारी	जगताराम	"	११९
२२१. अरे तो को कैसे र कह समझावें	चैन विजय	"	"
२२२. माधुरी जैनबासी	जगताराम	"	"
२२३. हम प्राये हैं जिनराज तोरे बन्दन की	द्यानतराय	"	"
२२४. मन अटक्यो र अटक्यो	धर्मराल	"	"
२२५. जैन धर्म नहीं कीना बैरन देही पापी	ब्रह्मजिनदास	"	१२०
२२६. इन नैनों का यही सुभाव	"	"	"
२२७. नैना सफल भयो जिन दरसन पायो	रामदास	"	"
२२८. सब परि करम है परधान	रूपचन्द	"	"
२२९. सब परि बल चेत ज्ञान	हर्षकीर्ति	"	"
२३०. रे मन जायगो कित ठौर	जगताराम	"	१२१
२३१. मुनि मन नेमजी के वैन	द्यानतराय	"	"
२३२. तनक ताहि है री ताहि आपनो वरस	जगताराम	"	"
२३३. चलत प्राण क्यों रोयेरी काया	×	"	"
२३४. बाजत रंग मृदग रसाला	जयकीर्ति	"	"
२३५. अब तुम जागो चेतनराया	गुरुचन्द	"	१२२
२३६. कैसा ध्यान धरया है	जगताराम	"	"
२३७. करि र अ तम हित करि लें	द्यानतराय	"	"
२३८. साहिब खेलत है चौगान	नरपाल	"	"
२३९. देव मोरा हो ऋषभजी	समयमुन्दर	"	१२३
२४०. बंदी चेरी हो पिया मैं	द्यानतराय	"	"

२४१. मैं बंदा तेरा हो स्वामी	द्यानतराय	हिन्दी	१२३
२४२. जै जै हो स्वामी जिनराय	रुक्मचन्द्र	"	"
२४३. तुम जान बिभो फूली धसंत	द्यानतराय	"	१२४
२४४. नैननि ऐसी बानि परि गई	जगताराम	"	"
२४५. लागि लौ नाभिर्नदन खो	भूधरदास	"	"
२४६. हम आत्म को पहिचाना है	द्यानतराय	"	"
२४७. कौन सधानवन कीन्होरे जीव	जगताराम	"	"
२४८. निपट ही कठिन हेरी	विजयकीर्ति	"	"
२४९. हो जो प्रभु दीनदयाल मैं बंदा तेरा	अक्षयराम	"	१२५
२५०. जिनवाणी दरयाक मन मेरा ताहि में सूने	शुक्लचन्द्र	"	"
२५१. मनहु महागज राज प्रभु	"	"	"
२५२. इन्द्रिय ऊपर असवार चेतन	"	"	"
२५३. आरसी देखत मोहि आरसी लागी	समयसुन्दर	"	१२६
२५४. कांके गढ़ फौज चढ़ी है	×	"	"
२५५. दरवाजे बेड़ा खोलि खोलि	अमृतचन्द्र	"	"
२५६. चेति रे हित चेति चेति	द्यानतराय	"	"
२५७. चितामणि स्वामी सोचा साहब मेरा	बनारसीदास	"	"
२५८. सुनि माया ठगिनी तैं सब ठिगी खाया	भूधरदास	"	१२७
२५९. बलि परसैं श्री शिखरसमेद गिरिरी	×	"	"
२६०. जिन मुण गावो री	×	"	"
२६१. वीतराग तेरी मोहिनी मूरत	विजयकीर्ति	"	"
२६२. प्रभु सुमरन की या विरियां	"	"	१२८
२६३. किये प्राराधना तेरी	नवल	"	"
२६४. घड़ी धन आजकी ये ही	नवल	"	"
२६५. मैया अपराध क्या किया	विजयकीर्ति	"	१२९
२६६. तजिके गये पीव हमको तकसीर क्या विचारी, नवल	"	"	"

२६७. मेया री गिरि जानेदे मोहि नेमजीसुं काम है, श्रीराम	"	१२६
२६८. नेम व्याहृत्कूं आया नेम सेहरा बंधाया विनोदीलाल	"	१२७
२६९. धन्य तुम धन्य तुम रतित पावन X	"	१२८
२७०. चेतन नादी भूलिये नवल	"	"
२७१. तयारी आं महावीर मोक्कूं दीन जानिके सवाईराम	"	"
२७२. मेरी मन बस कोन्हीं महावीर (चांदनधुरके) हर्षकीति	"	"
२७३. राखी सीता चलहु गेह छानतराय	"	"
२७४. कहूं सीताजी मुनि रामचन्द्र "	"	१२९
२७५. नाई छंडा हो जिनराज नाम हर्षकीति	"	"
२७६. देवपुर गांछवान बंदे X	"	"
२७७. नेभि जिनंद गिरनेरयां जीवराम	"	१३०
२७८. कय परदेसी को पतियारी हर्षकीति हिन्दी	"	१३१
२७९. चेतन मान ली सादी तियां छानतराय	"	"
२८०. सांझरी मुरत मेरे मन कसी है माई नवल	"	"
२८१. शायो रे बुढापां बेरी भूधरदास	"	"
२८२. साहिबो यो जीवनझां म्हारी जिनहर्ष	"	१३४
२८३. पच महासतधारा किशनसिंह	"	"
२८४. तेरी बलिहारी हूँ जिनराज X	"	"
२८५. देहवा दुनिया बिब बे कोई अजब तमाशा, भूधरदास	"	१३५
२८६. अटके नेगा नही कहैदा नवल	"	"
२८७. खला जिनदिये एरो सखी छानतराय	"	"
२८८. जगननन्दन नय मायक जादी-पति X	"	"
२८९. आदिन गदिय मानु नेमजी प्यारी अखियां राजाराम	"	१३६
२९०. हांजां इक ध्यान सतजी का धरना हेमराज	"	"
२९१. भला हो मांके सांइ हो X	"	"
२९२. तू अहू भूलो, तू बहू भूलां अमानो रे दाखी बनारसीदास	"	"

२६३. होजा हो सुधातम एह निज पद भुलि रह्या	×	हिन्दी	१३६
२६४. मुनि कनक कीर्ति की जकड़ी	मोतीराम	"	१३७

रचना काल सं० १८५३ लेखन काल संवत् १८५६ नागौर में पं० रामचन्द्र ने लिपि की ।

२६५. छोक विचार	×	हिन्दी	ले० काल १८५७	१३७
२६६. सांवरिया अरज सुनो मुक्त दीन की हो	पं० लक्ष्मचंद	हिन्दी		१३८
२६७. चांदखेडी में प्रभुजी राजिया	"	"		"
२६८. ज्यों जानत प्रभु जोग धरयो है	चन्द्रभान	"		"
२६९. आदिनाथ की दिनली	मुनि कनक कीर्ति	"	२० काल १८५६	१३९-४०
३००. पार्श्वनाथ की आरती	"	"		१४०
३०१. नगरों की बसावत का संवत्वार विवरण	"	"		१४१

संवत् ११११ नागौर मंडारणो आखा तीज रै दिन ।

- " ६०६ दिली बसाई अमंगपाल तुंवर चौसाख सुदी १२ भौम ।
- " १६१२ अरवर पातसाह आगरो बसायो ।
- " ७३१ राजा भोज उंजणी बसाई ।
- " १४०७ अहमदाबाद अहमद पातसाह बसाई ।
- " १५१५ राजा जीधे जोधपुर बसायो जेठ सुदी ११ ।
- " १५४५ बीकानेर राव बीकै बसाई ।
- " १५०० उदयपुर राणै उदयसिंह बसाई ।
- " १४४५ राव हमीर न रावत फलोधी बसाई ।
- " १०७७ राजा भोज रै बेटे बीर नारायण सेवणो बसायो ।
- " १५९६ रावल बीदै महेको बसायो ।
- " १२१२ भाटी जैसे जैसलमेर बसायो सां (वन) बुदी १२ रवौ ।
- " ११०० पवार नाहरराव मंडोवर बसायो ।
- " १६११ राव मालदे माल कीट करायो ।
- " १५१८ राव जोधावत मेड़तो बसायो ।
- " १७८३ राजा जैसिंह जैपुर बसायो कछावे ।

संवत् १३०० जालौर सोनडारै बसाई ।

- ” १७१४ औरंगसाह पातसाह औरंगाबाद बसायो ।
 ” १३३७ पातसाह अलावद्दीन लोदी वीरमदे काम आयो ।
 ” ६०२ अणहल गुवाल पाटण बसाई बैसाख सुदी ३ ।
 ” २०२ (१२०२) ? राव अजेपाल पवार अजमेर बसाई ।
 ” ११४८ सिधराव जैसिह देहो पाटणा में ।
 ” १४५२ देवडो सिरौही बसाई ।
 ” १६१६ पातसाह अकबर मुलतान लीयो ।
 ” १५६६ रावजी तैतवो नगर बसायो ।
 ” ११८१ कलोधी पारसनाथजी ।
 ” १६२६ पातसाह अकबर अहमदाबाद लोधी ।
 ” १५६६ राव मालदे बीकानेर लोधी मास २ रही राव जैतमी ग्राम आयो ।
 ” १६६६ राव किसनसिंह किशनगढ़ बसायो ।
 ” १६१६ मालपुरी बसायो ।
 ” १४५५ रैणपुरो देहूरो आपता ।
 ” ६०२ बीतोड चित्रंगद मोडीये बसाई ।
 ” १२४५ विमल मंत्रीस्वर हवो विमल बसाई ।
 ” १६०६ पातसिंह अकबर बीतोड लोधी जे० सुदी १२ ।
 ” १६३६ पातसाह अकबर राजा उदैसिंहजी नुं म्हारजा रो खिताब दीयो ।
 ” १६३४ पातसाह अकबर कच्छोचिदा लीयो ।

३०२. श्वेताम्बर मत के चौरासी बोल

हिन्दी

१४३-४६

३०३. जैन मत का संकल्प

×

संस्कृत

अपूर्णा

३०४. गहर मारोठ की पत्री

×

हिन्दी पद्य

१५१

सं० १८५८ असाढ़ वदी १४

सर्वजजनं प्रणमामि हितं, सुभधान पलाञ्छा थी लिखितं ।

सुमुनी महीचन्द्रजि को विदयं, नवर्तद हृकम खुरणं सदयं ॥१॥

किरपा कृपि मोहन जीवण्यं, अपरंपुर मारोठ यानक्यं ।
 सरवोपम लायक थान छजै, गुरु देख सु आत्म भक्ति यजै ॥२॥
 तोर्थकूर ईस भक्ति धरै, जिन पूब पुरंदर जेम करै ।
 चतुसंध सुभार धुरंधर्यं, जिन चेति सैत्यालय कारक्यं ॥३॥
 व्रत द्वादस पालस सुद्ध खरा, सतरै पुनि नेम धरै सुधरा ।
 बहु दान चतुर्विध देय सदा, गुरु नास्त्र सुदेव पुजै सुखदा ॥४॥
 धर्म प्रश्न जु श्रेणिक भूप जिमा, सप्तश्रेयांस दानपति जु तिसा ।
 निज नंस जु व्योम दिवाकर्यं, गुण सौख्य कलानिधि बोधमयं ॥५॥
 सु इत्यादिक वीर्यम योगि बहु, लिखियो जु कहाँ लग वीर्य सहुं ।
 दयुड़ा गोठि जु थावग पंच लसै, सुद्धि वृद्धि समृद्धि आनन्द वसै ॥६॥
 तिहु योगि लिखै धर्म बुद्धि सदा, लहियो सुख संपति भोग सुदा ।

***** ॥७॥

इह यानक आनन्द देव जपे, उत चाहत खेम जिनेन्द्र कृपे ।
 अपरंच जु कागद ग्राह इतै, समाचार वाच्या परसन तिले ॥८॥
 सह वात जु लाय धर्मकरं, धर्म देव गुरु पति भक्ति भरं ।
 मर्याद सुधारक लायक हो, कल्पद्रुम काम सुदायक हो ॥९॥
 यशवंत विनेवंत दातृ गहो, गुणशील दयाधम पालक हो ।
 इत है व्यवहार सदा तुम को, उपरांति तुमै नहि औरन को ॥१०॥
 लिखियो लघु को विधमान यहू, सुख पत्र जु बाहुबतां लिखि हू ।
 वसू^८ वारा^९ वसू^८ पुनि चन्द्र^१ कियं, वदि मास असाठ चतुर्दशियं ॥११॥
 इह शोटक छंद सुचाल मही, लिखवी पतरी हित रीति वही ।

***** ॥१२॥

तुम भेजि हूं एक संकर नै, समाचार कह्या मुख तै सुइनै ।
 इनके समाचार इतै मुख तै, करज्यो परवान सवै सुखतै ॥१३॥

१) इति पत्रिक सहर म्हारोठ की पंथायती नुं ॥

५४०३. गुटका सं० २३ । पत्र सं० १८२ । आ० ८×५३ इंच । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—विभिन्न रचनाओं में से विविध पाठों का संग्रह है ।

५४०४. गुटका सं० २४ । पत्र सं० ८१ । आ० ७×६ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय- पूजा ।

पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. चतुर्विंशति तीर्थङ्कराष्टक	चन्द्रकीर्ति	संस्कृत	१-६५
२. जिनचैत्यालय जयमाल	रत्नभूषण	हिन्दी	६६-६८
३. समस्त श्रुत की जयमाल	चन्द्रकीर्ति	"	७०-७३
४. आदिनाथाष्टक	×	"	७३-७५
५. मणिरत्नाकर जयमाल	×	"	७५-७७
६. आदीश्वर भारती	×	"	८१

५४०५. गुटका सं० २५ । पत्र सं० १५७ । आ० ६×५ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०

१७५५ आसोज सुदी १३ ।

१. दशमक्षरणपूजा	×	संस्कृत	१-५
२. लघुस्वयंभू स्तोत्र	×	"	१६-१८
३. शास्त्रपूजा	×	"	१९-२४
४. षोडशकारणपूजा	×	"	२४-२७
५. जिनसहस्रनाम (लघु)	×	"	२७-३२
६. सोलकारणरास	मुनि सकलकीर्ति	हिन्दी	३३-३८
७. देवपूजा	×	संस्कृत	५०-६६
८. सिद्धपूजा	×	"	६७-७३
९. पञ्चमेष्टपूजा	×	"	७४-७५
१०. अष्टाङ्गकामरुति	×	"	७६-८९
११. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	"	९०-१०५
१२. रत्नत्रयपूजा	पंडिताचार्य नरेन्द्रसेन	"	११६-१३७
१३. क्षमावणीपूजा	ब्रह्मसेन	"	१३८-१४५
१४. सोलहतिथिवर्णन	×	हिन्दी	१४६

११. बौद्धविद्यमान तीर्थङ्करपूजा	×	संस्कृत	१५१-१५४
१६. शास्त्रजयमाला	×	प्राकृत	१५५-१६१

५४०६. गुटका सं० ०६ । पत्र सं० १४३ । पृ० ५५४ इत्य । ले० काल सं० १६८८ ज्येष्ठ बुदी २ ।

पूर्ण । दश-जीर्ण ।

१. विषाणहारस्तोत्र	धनञ्जय	संस्कृत	१-५
२. भूपालस्तोत्र	भूपाल	"	५-६
३. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	६-१३
४. सामयिक पाठ	×	"	१३-२२
५. भक्तिगाठ (सिद्ध भक्ति आदि)	×	"	२३-७०
६. स्वयंभूस्तोत्र	समस्त-द्राव्य	"	७१-८७
७. वन्देस्तान की जयमाला	×	"	८८-८९
८. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	८९-१०७
९. श्रावकप्रतिक्रमण	×	"	१०८-१३३
१०. गुर्वावलि	×	"	१३४-१३६
११. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्राचार्य	"	१३४-१३६
१२. एकीभावस्तोत्र	वाग्दराज	"	१३६-१४३

संवत् १६८८ वर्षे ज्येष्ठ बुदी द्वितीया रवौदिने अर्धह श्री बनौधेन्द्रगे श्रीचन्द्रप्रभचैत्यालये श्रीमूलसंवे सरस्वतीगच्छे ब्रह्मास्कारमणो कुंवरकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीविद्यानन्दि पट्टे भ० श्रीमस्तिभूषणपट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्रपट्टे भ० श्रीप्रभयचन्द्रपट्टे भ० श्रीप्रभयनन्दिपट्टे भ० श्रीरत्नकीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीकुमुदचन्द्रास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभयचन्द्रा ब्रह्म श्रीप्रभयसागर सहायेनर्द क्रियाकलापपुस्तकं लिखितं श्रीमदधनीधेन्द्रगच्छः हुंवरजातीयः लघुशाखायां समुत्पन्नस्य परित्त-रविदासस्य भार्या बर्हि कीकी तयोः संभवा सुता अतादृशाम्ने प्रदत्तं पठनार्थं च ।

५४०७. गुटका सं० २७ । पत्र सं० १५७ । पृ० ६५५ इत्य । ले० काल सं० १६८७ । पूर्ण । दश-सामान्य ।

विशेष—पं० तेजपाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१. शास्त्र पूजा	×	संस्कृत	१-२
२. स्फुट हिन्दी पद्य	×	हिन्दी	३-७

३. मंगल पाठ	×	संस्कृत	८-९
४. नामावली	×	"	९-११
५. तीन चौबीसी नाम	×	हिन्दी	१२-१३
६. दर्शनपाठ	×	संस्कृत	१३-१४
७. शैरवनामस्तोत्र	×	"	१४-१५
८. पञ्चमेरूपूजा	सुधरदास	हिन्दी	१५-२०
९. अष्टाह्निकापूजा	×	संस्कृत	२१-२५
१०. षोडशकारणपूजा	×	"	२५-२७
११. दशलक्षणपूजा	×	"	२७-२९
१२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा	×	"	२९-३०
१३. अनन्तव्रतपूजा	×	हिन्दी	३१-३३
१४. जिनसहस्रनाम	भासाधर	संस्कृत	३४-४६
१५. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	४७-५३
१६. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	५२-५५
१७. पद्मावतीस्तोत्र	×	"	५६-६०
१८. पद्मावतीसहस्रनाम	×	"	६१-७१
१९. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	७२-८७
२०. सम्मेद शिखर निर्वाण काण्ड	×	हिन्दी	८८-९१
२१. ऋषिमण्डलस्तोत्र	×	संस्कृत	९२-९७
२२. तत्त्वार्थसूत्र (१-५ अध्याय)	उमास्वामि	"	९९-१००
२३. भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	हिन्दी	१००-१६
२४. कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा	बनारसीदास	"	१०७-१११
२५. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	११२-१३
२६. स्वरोदयविचार	×	"	११४-११७
२७. बाईसपरिणह	×	"	१२०-१२५
२८. सामायिकपाठ लघु	×	"	१२५-२६

२६. श्रावक की करणी	हर्षकीर्ति	हिन्दी	१२६-२८
३०. क्षेत्रपालपूजा	×	"	१२८-३२
३१. चित्तमर्शोपाध्वनाथपूजा स्तोत्र	×	संस्कृत	१३२-३६
३२. कलिकुण्डपाध्वनाथ पूजा	×	हिन्दी	१३६-३९
३३. पद्मावतीपूजा	×	संस्कृत	१४०-४२
३४. सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	१४३-४६
३५. ज्योतिष चर्चा	×	"	१४७-१५७

५४०८. गुटका सं० २८ । पत्र सं० २० । आ० ८३×७ इञ्च । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठों का संग्रह है ।

५४०९ गुटका सं० २९ । पत्र सं० २१ । आ० ६३×४ इञ्च । ले० काल सं० १८४६ मंगसिर सुदी १० । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—सामान्य शुद्ध । इसमें संस्कृत का सामायिक पाठ है ।

५४१०. गुटका सं० ३० । पत्र सं० ८ । आ० ७×४ इञ्च । पूर्ण ।

विशेष—इसमें भक्तामर स्तोत्र है ।

५४११. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० १३ । आ० ६३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी, संस्कृत ।

विशेष—इसमें नित्य नियम पूजा है ।

५४१२. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० १०२ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८९६ फागुण बुदी ३ । पूर्ण एवं शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—इसमें पं० जयचन्दजी कृत सामायिक पाठ (भाषा) है । तनसुख सोनी ने बलवर में साहू बुलीचन्द की कचहरी में प्रतिलिपि की थी । अन्तिम तीन पत्रों में लघु सामायिक पाठ भी है ।

५४१३. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० २४० । आ० ५×६ इञ्च । विषय—भजन संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—जैन कवियों के भजनों का संग्रह है ।

५४१४. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० ४१ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । ले० काल सं० १९०८ पूर्ण । सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

१. ज्योतिषसार

कृपाराम

हिन्दी

१-३०

२० काल सं० १७६२ कार्तिक सुदी १० ।

आदिभाग- दाहा—

सकल जगत सुर असुर नर, परसत गणपति पाय ।
 सो गणपति बुधि दीजिये, जन्म अपनों चितलाय ॥
 अरु परसों चरनन कमल, युगल राधिका स्याम ।
 धरत ध्यान जिन चरन को, सुर न (र) मुनि आठों जाम ॥
 हरि राधा राधा हरि, जुगल एकता प्राण ।
 जगत आरसी में नमों, दूजो प्रतिबिम्ब जान ॥
 सोभति ओढे मत्त पर, एकहि जुगल किसोर ।
 मत्तो लस घन मांझ ससि, दामिनी चाह ओर ॥
 परसे प्रति जय चित्त कै, चरन राधिका स्याम ।
 नमस्कार कर जोरि कै, आषत्त किरपाराम ॥
 साहिजहापुर सहर में, कायथ राजाराम ।
 तुलाराम तिहि बंस में, ता सुत किरपाराम ॥६॥
 लघु जातक को ग्रन्थ यह, सुनो पंडितन पास ।
 ताके सबै दलोक कै, दोहा करे प्रकास ॥७॥
 ओ ग्रन्थ जे सुनी, लयो जु अरथ निकारि ।
 ताको बहुविधि हेत सौं, कह्यो ग्रन्थ विस्तार ॥८॥
 संवत् सत्तरह सैं बरस, और बाणवै जानि ।
 कार्तिक सुदी दशमी गुरु, रच्यो ग्रन्थ पहचानि ॥९॥
 सब ज्योतिष को सार यह, लियो जु अरथ निकारि ।
 नाम आधो या ग्रन्थ को, तातें ज्योतिष सार ॥१०॥
 ज्योतिष सार जु ग्रन्थ कौं, कल्प अछ भनु लेखि ।
 ताकी नव साख ससत, जुदो जुदो फल देखि ॥११॥

धत्तिम—

प्रथम वरस फल लिखते—

संवत् मही हीन करि, जनम वर (५) ली मित ।
 रहै सेष सो गत वरष, आवरदा मैं वित्त ॥६०॥
 भये वरष गत अङ्क भरु, लिख घर बाहू इस ।
 प्रथम येक मन्दर है, ईह वही इकतीस ॥६१॥
 श्रतीस पहलै धूरवा, अंक को दिन अपने मन जानि ।
 दूजें घर फल तीसरो, चौथे अ अखिर ज ठान ॥६२॥
 भये वरष गत अंक को, गुन धरवावो चित्त ।
 गुराकार के अंक मैं, भाग सात हरि मित ॥६३॥
 भाग हरे ते सान की, लब्ध अंक सो जानि ।
 जो मिलै य पल मैं बहुरि, फल ते घटी बखानि ॥६४॥
 घटिका मै ते दिवस मै, मिलि जै हे जो अंक ।
 तामें भाग जु सप्त को, हरि के मित न सं ॥६५॥
 भाग रहै जो सेष सो, बचै अंक पहिचानि ।
 तिन मैं फल घटीका दसा, जन्म मिलावो आनि ॥६६॥
 जन्मकाल के अत रवि, जितने बीते जानि ।
 उतनै बातें अंत रवि, वरस लिख्यो पहिचानि ॥६७॥
 वरस लग्यो जा अंत मैं, सोइ देत चित्त धारि ।
 नादिन इतनी घड़ी जु, पल बीते लगुन वीचारि ॥६८॥
 लगन लिखै ते गोरह जो, जा घर बैठो जाइ ।
 ता घर के फल सुफल को, दीजे मित बनाइ ॥६९॥
 इति श्री किरपाराम कृत ज्योतिषसार संपूर्णम्

१. पाषाकंठली

×

हिन्दी

६१-६६

२. शुभमुहूर्त

×

२१

६६-४१

५४१५. गुटका सं० ३५ । पत्र सं० १८ । आ० ६३×५३ इञ्च । भाषा-× । विषय-संग्रह । ले० काल सं० १८८६ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी ।

१. नेमिनाथजी के दश भन	×	हिन्दी पद्य	१-५
२. निर्वर्ण काण्ड भाषा	भगवतीदास	,, २० काल १७४१, ५ ७	
३. दर्शन पाठ	×	नंस्कृत	८
४. पार्वनाथ पूजा	×	हिन्दी	९-१०
५. दर्शन पाठ	×	,,	११
६. राजलपञ्चमीसी	लालचन्द विनोदीलाल	,,	१२-१८

५४१६. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० १०६ । आ० ८१×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल १७८२ माह बुदी ८ । पूर्ण । अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष—गुटका जीर्ण है । लिपि विकृत एवं बिलकुल अशुद्ध है ।

१. डोला मारुणी की बात	×	हिन्दी प्राचीन पद्य सं० ४१५, १-२४	
२. बदरीनाथजी के छन्द	×	,,	२८-३०
		ले० काल १७८२ माह बुदी ८	
३. दान लीला	×	हिन्दी	३०-३१
४. प्रह्लाद चरित्र	×	,,	३१-३४
५. मोहम्मद राजा की कथा	×	,,	३५-४२

११५ पद्य । पौराणिक कथा के आधार पर ।

६. भगतवत्सावलि	×	हिन्दी	४२-४४
		सं० १७८२ माह बुदी १३ ।	
७. अमर गीत	×	,, १२१ पद्य, ४४-५३	
८. घुलीला	×	,,	५३-५५
९. गज मोक्ष कथा	×	,,	५५-५६
१०. घुलीला	×	,, पद्य सं० २४ ५६-६०	

११. बारहखड़ी	×	हिन्दी	६०-६२
१२. विरहमञ्जरी	×	"	६२-६८
१३. हरि बोसा चित्रावली	×	" पद्य सं० २६	६८-७०
१४. जगन्नाथ नारायण स्तवन	×	"	७०-७४
१५. रामस्तोत्र कवच	×	संस्कृत	७५-७७
१६. हरिरस	×	हिन्दी	७८-८५

विशेष—गुटका साजहानाबाद जयसिंहपुरा में लिखा गया था । लेखक रामजी मीरु था ।

५४१७. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० २४० । मा० ७३×५३ इञ्च ।

१. नमस्कार मंत्र सटीक	×	हिन्दी	३
२. मातङ्गावनी	मानकवि	"	५३ पद्य हैं ४-२६
३. जीवीस तीर्थङ्कर स्तुति	×	"	३२
४. आयुर्वेद के नुसखे	×	"	३५
५. स्तुति	कमककीर्ति	"	३७

लिपि सं० १७६६ ज्येष्ठ सुदी २ रविवार

६. नन्दोश्वरद्वीप पूजा	×	संस्कृत	४१

कुशला सौगण्डी ने सं० १७७० में सा० फतेहचन्द गोदीका के श्रोत्र्ये से लिखी ।

७. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	६ अध्याय तक ६१
८. नेमीश्वररास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	२० सं० १६१५ १७२
९. जोगीरासो	जिनदास	"	लिपि सं० १७१० १७६
१०. पद	×	"	"
११. आदित्यवार कथा	भाऊ कवि	"	२०४
१२. दानशीलताभावना	×	"	२०५-२३६
१३. चतुर्विंशति छप्पम	गुराकीर्ति	"	२० सं० १७७७ असाढ़ वदी १४

आदि भाग—

आदि अंत जिन देव, सेव सुर नर तुभ करता ।

जय जय ज्ञान पवित्र, नामु लेतहि सब हरता ॥

सरमुति तनइ पसाइ, ज्ञान मनवांछित पूरइ ।
 सारद लागी पाइ, जेमि दुख दालिद भरइ ॥
 गुरु निरग्रन्थ प्रणाम्य कर, जिन चउवीसो मन धरउ ।
 गुनकीर्ति इम उच्चरइ, सुभ वसाइ र देला तरउ ॥१॥

नाभिराय कुलचन्द, नंद मरुदेवि जानउ ।
 काइ भनुष भत पश्य वृषभ लाञ्छन तु लक्षणउ ॥
 हेम वर्ष कहि कामु, आयु लक्ष्य तु चौरासी ।
 पूरव गनती एह, जन्म अयोध्या वासी ॥
 भरथहि राहु तु सौपि कर, अष्टापद सीधउ लदा ।
 गुनकीर्ति इम उच्चरइ, सुभवित लोक बन्दहु सदा ॥१॥

अन्तिम भाग—

श्रीमूलसंघ विख्यातगच्छ सरमुतिय बखानउ ।
 तिहि महि जिन चउवीस, ऐह सिखा मन जानउ ॥
 परम छइ प्रसादु, उत्तंग मूलचन्द्र प्रभुजानी ।
 साहिजिहां पतिसाहि, राहु दिलीपति आनी ॥
 सतरहसइरु सतोत्तरा, वदि असाहु चउदसि करना ।
 गुनकीर्ति इम उच्चरइ, सु सकल संघ जिनवर सरना ॥

॥ इति श्री चतुर्विंशततीर्थंकर छपैया सम्पूर्ण ॥

१३. सीलराग

गुणकीर्ति

हिन्दी

रचना सं० १७१३

२४०

५४१८. गुटका सं० ३८—पत्रगणना—२२६ । —आ० १०×७। दशा—जीर्ण ।

विशेष—३४ श्लोक तक आयुर्वेद के अच्छे नुसखे हैं ।

१. प्रभावती कल्प

×

हिन्दी

कई रोगों का एक नुसखा है ।

२. नाड़ी परीक्षा

×

संस्कृत

करीब ७२ रोगों की चिकित्सा का विस्तृत वर्णन है ।

३. शील सुदर्शन रासो

×

हिन्दी

३७-४२

४. पृष्ठ संख्या ५२ तक निम्न अवतारों के सामान्य रंगीन चित्र हैं जो प्रदर्शनी के योग्य हैं :

(१) रामावतार (२) कृष्णावतार (३) परशुरामावतार (४) मच्छावतार (५) कच्छावतार (६) कराहावतार (७) नृसिंहावतार (८) कल्किप्रवतार (९) बुद्धावतार (१०) हयग्रीवावतार तथा (११) पार्श्वनाथ चैत्यस्वयं (पार्श्वनाथ की मूर्ति सहित)

५. काकुभाषली

×

संस्कृत

५६

६. पाञ्चाकेवली (शंख परीक्षा)

×

हिन्दी

६६

जन्म कुण्डली विचार

७. पृष्ठ ६८ पर भगे हुए व्यक्ति के वारिस आने का पथ है ।

८. भक्तामरस्तोत्र

मानतुंग

संस्कृत

७३

९. वैद्यमनोत्सव (भाषा)

नयन सुख

हिन्दी

७४-८१

१०. राम विनाय (आयुर्वेद)

×

"

८२-८८

११. सामुद्रिक शास्त्र (भाषा)

×

"

८९-११२

स्त्रिपी कर्ता—मुखराम ब्राह्मण पचीसी

१२. शोधवोध

काशीनाथ

संस्कृत

१३. पूजा संग्रह

×

"

११४

१४. योगीरास

जिनदास

हिन्दी

११७

१५. तत्त्वार्थसूत्र

उमा स्वामि :

संस्कृत

१०७

१६. कल्याणमन्दिर (भाषा)

बनारसोदास

हिन्दी

११०

१७. रविवारव्रत कथा

×

"

१२१

१८. व्रतों का व्योरा

×

"

"

ग्रन्थ में ६४ योगिनी आदि के वंश हैं ।

५४१६ गुटका सं० ३६—पत्र सं० ६४ । आ० ६×६ इंच । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५४२० गुटका सं० ४०—पत्र सं० १०३ । आ० ८॥×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० सं० १८८० पूर्ण । सामान्य गुड ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह तथा पृष्ठ ८० से नरक स्वर्ग एवं पृथ्वी आदि का परिचय दिया हुआ है ।

५४२१ गुटका सं० ४१—पत्र संख्या—२५७ । आ०—८×६॥ इञ्च । लेखन काल—संवत् १८७५ माह बुदी ७ । पूर्ण । दशा उत्तम ।

१. समयसारनाटक	बनारसीदास	हिन्दी रच० सं० १६६३ आसं.सु. १३ १-५१	
२. माणिक्यमाला	संग्रह कर्ता	हिन्दी संस्कृत प्राकृत सुभाषित ५२-१११	
ग्रंथप्रश्नोत्तरी	ब्रह्म ज्ञानसागर		
३. देवागमस्तोत्र	आचार्य समन्तभद्र	संस्कृत	निपि संवत् १८६६

कृपारामसौगण्डी ने करौली राजा के पठनार्थ हाडौती गांव में प्रति लिपि की । पृष्ठ-१११से ११५ ।

४. अनादिनिधनस्तोत्र	×	”	निपि सं० १८६६ ११५-११६
५. परमानंदस्तोत्र	×	संस्कृत	११६-११७
६. सामायिकपाठ	अमितगति	”	११७-११८
७. पंडितमर्या	×	”	११८
८. चौबीसतीर्थद्वारभक्ति	×	”	११८-२०

लेखन सं० १६७० वैशाख सुदी ३

९. तेरह काठिया	बनारसीदास	हिन्दी	१२०
१०. दर्शनपाठ	×	संस्कृत	१२३
११. पंचमंगल	रूपचंद	हिन्दी	१२३-१२८
१२. कल्याणमंदिर भाषा	बनारसीदास	”	१२८-३०
१३. विषापहारस्तोत्र भाषा	अचलकीर्ति	”	१२०-३२

रचना काल १७१५ ।

१४. भक्ताभर स्तोत्र भाषा	हेमराज	हिन्दी	१२२-३५
१५. वज्रनाभि चक्रवर्तिकी भावना	भूधरदास	”	१२५-३६

१६. निर्वाण काण्ड भाषा	भगवती दास	"	१३-३७
१७. श्रीपाल स्तुति	×	हिन्दी	१३७-३८
१८. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	संस्कृत	१३८-४५
१९. सामायिक बड़ा	×	"	१४५-५२
२०. लघु सामायिक	×	"	१५२-५३
२१. एकीभावस्तोत्र भाषा	जगजीवन	हिन्दी	१५३-५४
२२. बार्डस परिषद्	भूधरदास	"	१५४-५७
२३. जिनदर्शन	"	"	१५७-५८
२४. संबोधपंचासिका	द्यानतराय	"	१५८-६०
२५. बीसतीर्थंकर की जकड़ी	×	"	१६०-६१
२६. नेमिनाथ मंगल	लाल	हिन्दी	१६१-१६७

र० सं० १७४४ सावरण सु० ६

२७. दाव बावनी	द्यानतराय	"	१६७-७१
२८. चेतनकर्म चरित्र	भैरव भगवतीदास	"	१७१-१८३

र० १७३६ जेठ वदी ७

२९. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	१८४-८९
३०. भक्तामरस्तोत्र	मानसु'ग	"	१८९-९२
३१. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द	संस्कृत	१९२-९४
३२. विष्णुपहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१९४-९६
३३. सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	१९६-९८
३४. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१९८-२००
३५. श्रीपालश्रीबीसी	श्रीपाल कवि	"	२००-२०२
३६. देवपूजा	×	"	२०२-२०५
३७. विरहमान पूजा	×	"	२०५-२०६
३८. सिद्धपूजा	×	"	२०६-२०७

४९. सोलहकारशुभपूजा	×	"	२०७-२०८
४०. दशलक्षशुभपूजा	×	"	२०८-२०९
४१. रत्नत्रयपूजा	×	"	२०९-१४
४२. कलिकुण्डलपूजा	×	"	२१४-२२५
४३. वित्तमणि पार्श्वनाथपूजा	×	"	२२५-२६
४४. शोतिनाथस्तोत्र	×	"	२२६
४५. पार्श्वनाथपूजा	×	"	अपूर्णा २२६-२७
४६. चौबीस तीर्थङ्कर स्तवन	देवनन्दि	"	२२८-३७
४७. नवग्रहगणित पार्श्वनाथ स्तवन	×	"	२३७-४०
४८. कलिकुण्डपार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	२४०-४१
लेखन काल १८६३ भाष सुदी ५			
४९. परमानन्दस्तोत्र	×	"	२४१-४३
५०. लघुजिनसहस्रनाम	×	"	२४३-४६
लेखन काल १८७० वैशाख सुदी ५			
५१. सूक्तिमुक्तावलिस्तोत्र	×	"	२४६-५१
५२. जिनेन्द्रस्तोत्र	×	"	२५२-५४
५३. बहत्तरकला पुरुष	×	हिन्दी गद्य	२५७
५४. चौसठ कला स्त्री	×	"	"

५४२०. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० ३२६ । आ० ७×४ इञ्च । पूर्ण ।

विशेष—इसमें गूधरदासजी का चर्चा समाधान है ।

५४२३. गुटका सं० ४३ — पत्र सं० ५८ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । ले० काल १७८७ कार्तिक शुक्ल १३ । पूर्ण एवं शुद्ध ।

विशेष—व बेरवालान्वये साह्य श्री जगन्नाथ के पठनार्थ भट्टारक श्री देवचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी । प्रति संस्कृत टीका सहित है । सामायिक पाठ आदि का संग्रह है ।

५४२४. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ८३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । पूर्ण । दशा जीर्ण ।

विशेष—चर्चाओं का संग्रह है ।

५४२५ गुटका सं० ४५ । पत्र सं० १४० । आ० ६३×५ इञ्च । पूर्ण ।

१. देवशास्त्रगृह पूजा	×	संस्कृत	१-७
२. कमलाष्टक	×	"	८-१०
३. गुरुस्तुति	×	"	१०-११
४. सिद्धपूजा	×	"	१२-१५
५. कलिकुण्डस्तवन पूजा	×	"	१६-१६
६. षोडशकारणपूजा	×	"	१६-२२
७. दशलक्षणपूजा	×	"	२२-३२
८. नन्दीश्वरपूजा	×	"	३२-३६
९. पंचमेरूपूजा	भट्टारक महीचन्द्र	"	३६-४५
१०. अमन्तचतुर्दशीपूजा	" सेतुचन्द्र	"	४५-४७
११. ऋषिमंडलपूजा	गोतमस्वामी	"	५७-६५
१२. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	६६-७४
१३. महामिषेक पाठ	×	"	७४-८६
१४. रत्नत्रयपूजाविधान	×	"	८७-१२१
१५. ज्येष्ठजिनवरपूजा	×	हिन्दी	१२२-२५
१६. क्षीरपाल की आरती	×	"	१२६-२७
१७. गणधरमलयमंत्र	×	संस्कृत	१२८
१८. आदित्यवारकथा	वासीचन्द्र	हिन्दी	१२६-३१
१९. गीत	विद्याभूषण	"	१३१-३३
२०. लघु सामायिक	×	संस्कृत	१३४
२१. वसवतीर्चन	भ० महीचन्द्र	"	१३४-१४०

५४२६. गुटका सं० ४६—पत्र सं० ४६ । आ० ७३×५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण एवं अशुद्ध ।

विशेष — वसंतराज कल सकुन शास्त्र है ।

५४२७. गुटका सं० ४७ । पत्र सं० ३४० । आ० ८×४ इञ्च पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१. सूर्यके दस नाम	×	संस्कृत	१
२. बन्दो मोक्ष स्तोत्र	×	"	१-२
३. निर्वाणविधि	×	"	२-३
४. मार्कण्डेयपुराण	×	"	४-५६
५. कालीसहस्रनाम	×	"	५८-१३२
६. नृसिंहपूजा	×	"	१३३-३५
७. देवीसूक्त	×	"	१३६-६५
८. मंत्र-संहिता	×	संस्कृत	१६६-२३३
९. ज्वालामालिनी स्तोत्र	×	"	२३३-३६
१०. हरगौरी सन्वाद	×	"	२३६-७३
११. नारायण कवच एवं अष्टक	×	"	२७३-७६
१२. चामुण्डोपनिषद्	×	"	२७६-२८१
१३. पीठ पूजा	×	"	२८२-८७
१४. योगिनी कवच	×	"	२८८-३१०
१५. आनंदलहरी स्तोत्र	शंकराचार्य	"	३११-२४

५४२८ गुटका सं० ४८ । पत्र सं०—२२२ । आ०—६।।×५।। इञ्च पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१. जिनयज्ञकल्प	पं० आशाधर	संस्कृत	१-१४१
२. प्रशस्ति	ब्रह्म दामोदर	"	१४१-४५

दोहा—

ॐ नमः सरस्वत्यै । अथ प्रशस्ति ।

श्रीमंतं सन्मतिदेवं, निःकर्माणम् जगद्गुरुम् ।

भक्त्या प्रणम्य वक्ष्येऽहं प्रशस्तिं तां गुणोत्तमम् ॥ १ ॥

स्याद्वादिनी ब्राह्मी ब्रह्मतत्त्व-प्रकाशिनी ।

सद्गिरारवितां चापि वरंदा सत्त्वशंकरी ॥ २ ॥

गणिनो गीतमादींश्च संसारार्णवतारकात् ।

जन्म-प्रणीत-सञ्छास्त्रकैरवामलचंद्रकान् ॥ ३ ॥

भूलसंघे वक्राकारणले सारस्वते सति ।
 गच्छे विश्वपदधाने वंचे वृंदारकादितिः ॥ ४ ॥
 नंदिसंघोभवनप्र नंदितःपरमायकः ।
 कुंदकुंदार्मसंज्ञोऽसौ वृत्तरत्नाकरो महात् ॥ ५ ॥
 तत्पट्टकमती जातः सर्वसिद्धान्तपारगः ।
 हमीर-भूपसेव्योयं धर्मचंद्रो यतीश्वरः ॥ ६ ॥
 तत्पट्टे विश्वतत्त्वज्ञो नानाग्रंथविशारदः ।
 रत्नत्रयकृताभ्यासो रत्नकीर्तिरभून्मुनिः ॥ ७ ॥
 शकस्वामिसभामध्ये प्राप्तमानसतोत्सवः ।
 प्रभाचंद्रो जगद्गो पारवादिभयंकरः ॥ ८ ॥
 कवित्वे वापि चवतृत्वे मेधावी शान्तमुद्रकः ।
 पद्मनंदी जिताक्षोभूतत्पट्टे यतिनायकः ॥ ९ ॥
 तच्छिष्योजनिभग्यौषपूजितां ह्रिविशुद्धधीः ।
 श्रुतचंद्रो महासाधुः साधुलोककृतार्थकः ॥ १० ॥
 प्रामाणिकः प्रमारोऽभूदरगमाध्यात्मविश्वधीः ।
 लक्षणो लक्षणार्थज्ञो भूपालवृंदसेवितः ॥ ११ ॥
 प्रहृत्प्रणीततत्त्वार्थजादः पति निशापतिः ।
 हतपंचेषुरस्तारिजिनचंद्रो विचक्षणः ॥ १२ ॥
 जम्बूद्वीपमांकिते जम्बूद्वीपे द्वीपप्रधानको ।
 तथास्ति भारतं क्षेत्रं सर्वभोगफलप्रदं ॥ १३ ॥
 मध्यदेशो भवत्तत्र सर्वदेशोत्तमोत्तमः ।
 धनधान्यसमाकीर्णशार्मर्देवहृत्तिसमैः ॥ १४ ॥
 नानावृक्षकुलैर्भाति सर्वसत्त्वसुखंकरः ।
 मनोगतमहाभोगः दाता दातृसमन्वितः ।
 तोडाख्योभूतमहादुर्गो दुर्गमुख्यः श्रिया
 तच्छास्त्रानगरं योषि दिव्यभूतिविष्णु

स्वच्छपानीयसंपूरणैः कापिकृपादिभिर्महत् ॥
 श्रीमन्नहंटाभामहद्व्यापारभूषित ॥ १७ ॥
 अर्हत्तृचैत्यालये रेजे जगदानंदकारकैः ॥
 विचित्रमठभंदोहे वरिणज्जनमुर्धंदिरो ॥ १८ ॥
 भजग्याधिपतिस्त्वय प्रजापालो लसद्गुणः ॥
 कान्त्याचंद्रो विभात्येष तेजसापन्नबांधवः ॥ १९ ॥
 शिष्यस्य पालको जातो दुष्टनिग्रहकारकः ॥
 पंचांगमंत्रविच्छूरो विद्याशास्त्रविशारदः ॥ २० ॥
 शीरोदार्यगुणोपेतो राजनीतिविदांबरः ॥
 रामसिंहो विभुर्धीमान् भूत्यवेन्द्रो महायक्षीः ॥ २१ ॥
 आसीद्द्वारिकवरस्तत्र जैनधर्मपरायणः ॥
 पाशदानादरः श्रेष्ठो हरिचन्द्रोगुणाश्रणीः ॥ २२ ॥
 आशकाचारसंपन्ना दत्ताहारादिदानकाः ॥
 शीलभूमिरभूत्तस्य गूजरिप्रियवादिनी ॥ २३ ॥
 पुत्रस्तयोरभूत्साधुव्यक्तार्हत्सुभक्तिकः ॥
 परोपकरणम्भांतो जिनाचनक्रियोद्यतः ॥ २४ ॥
 श्रीवकाचारतत्त्वज्ञो युक्कारुण्यवारिधः ॥
 देल्हा साधु व्रताचारो राजदत्तप्रतिष्ठकः ॥ २५ ॥
 तस्य नार्या महासाध्वी शीलनीरतरंगिणी ॥
 प्रियंवदा हितावारावाली सौजन्यधारिणी ॥ २६ ॥
 तयोः क्रमेण संजाती पुत्री लावण्यसन्दुरी ॥
 अगण्यपुण्यसंस्थानी रामलक्ष्मणाकाविद ॥ २७ ॥
 जिनयज्ञोत्तमवानन्दकारिणी व्रतधारिणी ॥
 अर्हत्तीर्थमहामात्रासंपर्कप्रविधायिनी ॥ २८ ॥
 रामसिंहमहाभूषप्रधानपुत्स्वी शुभी ॥
 समुद्रतजिनागारो धर्मानाथमहोत्तमी ॥ २९ ॥

तथ्यादरोभवद्धीरो नायकौ खचन्द्रमाः ।
 लोकप्रशस्यमत्कीर्ति धर्मसिंहो हि धर्मभृत् ॥ ३० ॥
 तत्कामिनी महज्जीलधारिणी शिवकारिणी ।
 चन्द्रस्य वसती ज्योत्स्ना पापध्वान्तापहारिणी ॥ ३१ ॥
 कुनद्वयविशुद्धासीत् संघभक्तिसुखसहा ।
 धर्मानन्दितचेतस्का धर्मधीर्भर्तु भाक्तिकाः ॥ ३२ ॥
 पुत्रावाप्नान्तयोः स्वीवरूपनिजितमन्मथौ ।
 संधराधूरासदृशात्रौ योषिन्मानसवत्सभौ ॥ ३३ ॥
 अर्हद्देवसुसिद्धान्तपुरुभक्तिसमुद्यतौ ।
 विदुज्जनप्रियौ सौम्यौ मोल्हाद्वयपदार्थकौ ॥ ३४ ॥
 सुधारडिण्डीरसमानकीर्तिः कुटुम्बनिर्वाहकरो यशस्वी ।
 प्रतापवान्धर्मधरो हि धीमान् खण्डेलवालान्वयकंजभानुः ॥ ३५ ॥
 भूपेन्द्रकार्यार्थकरो दयाढ्यो पूढ्यो पूर्णेन्दुसंकासमुखोवरिष्ठः ।
 श्रेष्ठी विवेकाहितमानसोऽसी सुधीर्नन्दतुभूतलेऽस्मिन् ॥ ३६ ॥
 हस्तद्वये यस्य जिनार्चनं वैजैनं वरावामुखपंकजे च ।
 हृद्यक्षरं बाह्यस्मक्षयं वा करोतु राज्यं पुरुषोत्तमोऽयं ॥ ३७ ॥
 तत्प्राणवल्लभाजाला जैनव्रतविधात्रिनी ।
 सती मतल्लिका श्रेष्ठी दानोत्कण्ठा यशस्विनी ॥ ३८ ॥
 शत्रुविधस्य संघस्य भक्त्युल्लासि मनोरथा ।
 नैनश्रोः सुधावात्कव्योकोशाभोजसन्मुखी ॥ ३९ ॥
 हर्षमदे सहस्रात् द्वितीया तस्य वल्लभा ।
 दानमानोत्सवानन्दवर्द्धिताशेषचेतसः ॥ ४० ॥
 श्रीरामसिंहेन नृपेण मान्यश्चतुर्विधश्रीवरसंघभक्तः ।
 प्रद्योतिताशेषपुराणलोको नाथू विवेकी चिरमेवजीमात् ॥ ४१ ॥
 ग्राह्यरक्षास्त्रीषधर्जवरक्षा दानेषु सर्वार्थकरेषु साधुः ।
 बल्पद्रुमोयाचककामधेनुर्नाथुसुसाधुर्जमतात्वरिण्या ॥ ४२ ॥

सर्वेषु शास्त्रेषु परंप्रशस्यं श्रीशाल्वदानं हस्तशास्त्रभावं ।
 स्वर्गापवर्गकविभूतिपात्रं समस्तशास्त्रार्थविधानदक्षं ॥४३॥
 दानेषु सारं शुचिशास्त्रदानं यथा त्रिलोक्यां जिनपुंगवोऽयं ।
 धृष्टीति धृष्ट्या परमंगलार्थं व्यलीलिखान्ताधुत्तमां प्रतिष्ठां ॥४४॥
 लेखत्वा शुभाधानं प्रतिष्ठासारमुत्तमं ।
 ब्रह्मदामोदरायापि दत्तवान् ज्ञानहेतवे ॥४५॥
 ग्रन्थाभ्रवाणसूपांके राज्येतीतेति सुन्दरे ।
 विक्रमादित्यसूयस्य भूमिपालशिरोमणेः ॥४६॥
 ज्येष्ठे मासे सिते पक्षे सोमवारे हि सौम्यके ।
 प्रतिष्ठासार एवासी समाप्तिभगमत्परां ॥४७॥
 ग्रहैस्क्रमांभोजनक्षावरांगी सदभूषणाकुवकुटसर्पगात्र ।
 पद्मावतो शासनदेवता सा नाथु सुसाधु चिरमेव पातात् ॥४८॥
 व्युत्क्रांतितः चरं धेन प्रमाणपुरुषावरो ।
 श्रीमत्संदिग्धवंगोत्थ नाथु साधुः सनन्दतु ॥४९॥

॥ इति प्रणस्त्यावली ॥

३. कर्णपिशाचिनीमंत्र	×	संस्कृत	१४३
४. गङ्गारागांतिकविधि	×	"	१४६
५. नवग्रहस्थापनाविधि	×	"	"
६. पूजाकी सामग्री की सूची	×	हिन्दी	१५२-५५
७. समाधिमरणा	×	संस्कृत	१६०-६४
८. कलशविधि	×	"	१७३-८५
९. भैरवाष्टक	×	"	१८६
१०. भक्तानामरस्तोत्र मंत्रसहित	×	"	१८८-२१४
११. यमोकारपंचासिका पूजा	×	"	२१८

५४२६ गुटका सं० ४६—पत्र सं०—५८ । आ०—५४४ इति । लेखन काल सं०—१८२४ पूर्ण ।

दशा-सामान्य ।

१. संयोगवत्तीसी	मानकवि	हिन्दी	१-२५
२. फुटकर रचनाएँ	×	"	२६-५८

५४३० गुटका सं० ५० । पत्र सं० ७४ । भा० ८×५ इञ्च । ले० काल १८६४ मंगसर सुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष—गंगाराम वैद्य ने सिरोंज में ब्रह्मजी संतसागर के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१. राजुल पञ्चीसी	बिनोदीलाल लालचंद	हिन्दी	१-५
२. चेतनचरित्र	भैयाभगवतीदास	"	६-२६
३. नेमीश्वरराजुलविवाद	ब्रह्मज्ञानसागर	"	२७-३१

नेमीश्वर राजुल को भगवद् लिख्यते ।

आदि भाग—राजुल उवाच—

भोग अनोपम छोड़ी करी तुम योग लियो सो कहा मन ठाणों ।
सेज विशिष तु लाई अनोपम सुंदर नारि को संग न जानू ॥
सूक्त तनु सुख छोड़ि प्रतप्त काहा दुख देखत ही अनजानू ।
राजुल पूछत नेमि कुंवर कूं योग विचार काहा मन आनू ॥ १ ॥

नेमीश्वर उवाच

सुन रि मति मुठ न जान जानत हों भवे भोग तन जोर घटें हैं ।
पाप बड़े खटकर्म घके परमारथ को सब पेट फटे हैं ॥
इंद्रिय को सुख किंचित्काल ही आखिर दुख ही दुख रटे हैं ।
नेमि कुंवर कहे सुनि राजुल योग बिना नहि कर्म कटे हैं ॥ २ ॥

मध्य भाग—राजुलोवाच—

करि निरधार तजि घरवार भये व्रतधाम लोक गोसाई ।
धूप अनूप बनावन धार तुवाट सहो ७ काई के तोई ॥
भूख पिपास अनेक परिसह पावन हो कतु सिद्धन आई ।
राजुल नार कहे सुविचार जु नेमि कुंवार सुनु मन लाई ॥ १७ ॥

नेमीश्वरोवाच

काहे को बहूत करो तुम स्थापनप येक सुनो उपदेश हमारी ।
भोगहि भोग किये भव ब्रह्मत काज न येक सरे जु तुम्हारी ॥

मानव जन्म बड़ी जगमान के काज बिना मतु रूप में डारो ।

नेमी कहे सुन राजुल तू सब मोह तजि ने काज सवारो ॥ १८ ॥

अन्तिम भाग—राजुलोवाच—

थावक धर्म किया सुभ शेषन साध कि संगत बैग सुनाइ ।

भोग तजि मन मुध करि जिन नेम तरणी जब संगत पाइ ॥

भेद अनेक करी हड़ता जिन माण की सब बात सुनाई ।

लोच करी मन आव धरी करी राजुल नार भई तब वाई ॥ २१ ॥

कलश—

आदि रचन्हा विवेक सकल मुक्ती समभायो ।

नेमिनाथ हठ चित्त बबहु राजुल कु समाभायो ॥

राजमति प्रबोध के सुध भाव संयम लीयो ।

ब्रह्म ज्ञानसागर कहे बाद नेमि राजुल कीयो ॥ ३२ ॥

॥ इति नेमीश्वर राजुल विवाद संपूर्णम् ॥

४. अष्टाह्निकाव्रत कथा	विनयकीर्ति	हिन्दी	३२-३३
५. पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	३५
६. शक्तिनाथस्तोत्र	मुनिगुणभद्र	"	"
७. वर्धमानस्तोत्र	×	"	३६
८. चितामणिपार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	३७
९. निर्वाणकाण्ड भाषा	भगवतीदास	हिन्दी	३८
१०. भावनास्तोत्र	द्यानतराय	"	३९
११. गुरुविनती	भूधरदास	"	४०
१२. ज्ञानपञ्चीसी	बनारसीदास	"	४१-४२
१३. प्रभाती अजलाभंवर ग्रन्थ	×	"	४२
१४. मो गरीब कूँ साहब तारोजी	मुलाबकिशन	"	"
१५. अब तेरी मुख देखूँ	टोडर	"	४४
१६. प्रात हुवो मुझर देव	भूधरदास	"	४३

१७. ऋषभजिनन्दजुहार केशरियो	भानुकीर्ति	हिन्दी	४५
१८. करु' अराधना तेरी	नवल	"	"
१९. भूल अमारा केई भले	×	"	४६
२०. श्रीपालदर्शन	×	"	४७
२१. भक्तामर वाणा	×	"	४८-४९
२२. सांवरिया तेरे बार बार बारि जाऊं	जगताराम	"	५२
२३. तेरे दरवार स्वामी इन्द्र दो खड़े हैं	×	"	५३
२४. जिनजी धांकी सूरत मनदी मीहो	ब्रह्मकपूर	"	"
२५. पार्वनाथ तीव्र	धानतराय	"	५५
२६. त्रिभुवन गुरु स्वामी	जिनदास	"	२० सं० १७५५, ५४
२७. अहो जगद्गुरु देव	भूधरदास	"	५६
२८. चिंतामणि स्वामी सांवा साहब मेरा	बनारसीदास	"	५६-५७
२९. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुद्र	"	५७-६०
३०. कलिभुग की बिनती	ब्रह्मदेव	"	६१-६३
३१. शीलव्रत के भेद	×	"	६३-६४
३२. पदसंग्रह	मंगाराम श्रेष्ठ	"	६५-६८

५४५१. गुटका सं० ५१। पत्र सं० १०६। आ० ८५६ इंच। विषय-संग्रह। ले० काल १७६६
कागज सुदी ४ मंगलवार। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—सवाई जयपुर में लिपि की गई थी।

१. भावनासारसंग्रह	चामुण्डराम	संस्कृत	१-६०
२. भक्तामरस्तोत्र हिन्दी टीका सहित	×	"	सं० १८०० ६१-१०६

५४३२. गुटका सं० ५१ क। पत्र सं० १४२। आ० ८५६ इंच। ले० काल १७६३ माघ सुदी २।
पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—किशनसिंह कृत जियाकोश भाषा है।

५४३३ गुटका सं० ५२। पत्र सं० १६४३८+६६। आ० ८५७ इंच।

विशेष—तीन अपूर्ण गुटकों का मिश्रण है ।

१. पञ्चकम्मणसूल	×	प्राकृत
२. पञ्चव्याण	×	"
३. वन्दे तू सूत्र	×	"
४. धंभणपार्श्वनास्तवन (बृहत्)	मुनिप्रभवदेव	पुरानी हिन्दी
५. अजितशान्तिस्तवन	×	"
६. "	×	"
७. भयहरस्तोत्र	×	"
८. सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र	जिनदत्तसूरि	"
९. शुक्पारसंज्ञ एवं सप्तस्मरण	"	"
१०. भक्तामरस्तोत्र	आचार्यमानतुंग	संस्कृत
११. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुतुबचन्द्र	"
१२. शान्तिस्तवन	देवसूरि	"
१३. सप्तर्षिजिनस्तवन	×	प्राकृत

लिपि संवत् १७५० आसोज सुदी ४ को सौभाग्य हर्ष ने प्रतिलिपि की थी ।

१४. जीवविचार	श्रीमानदेवसूरि	प्राकृत
१५. नवतत्त्वविचार	×	"
१६. अजितशान्तिस्तवन	भेरुनन्दन	पुरानी हिन्दी
१७. सीमंभरस्वामीस्तवन	×	"
१८. शीतलनाथस्तवन	समयसुन्दर गरिण	राजस्थानी
१९. धंभणपार्श्वनाथस्तवन लघु	×	"
२०. "	×	"
२१. आदिनाथस्तवन	समयसुन्दर	"
२२. चतुर्विंशति जिनस्तवन	जयसागर	हिन्दी
२३. चौबीसजिन मात पिता नामस्तवन	आनन्दसूरि	" रचना० सं० १५६२
२४. फलवर्षी पार्श्वनाथस्तवन	समयसुन्दरगरिण	राजस्थानी

२५. पार्श्वनाथस्तवन	समयमुन्दरगणि	राजस्थानी
२६. " "	" "	" "
२७. गौडीपार्श्वनाथस्तवन	" "	" "
२८. " "	जोधराज	" "
२९. चित्तामणिपार्श्वनाथस्तवन	नालचंद	" "
३०. तीर्थमालास्तवन	तेजराम	हिन्दी
३१. " "	समयमुन्दर	" "
३२. बीसविरहमानजफड़ी	" "	" "
३३. नेमिराजमतीरास	रत्नमुक्ति	" "
३४. गौतमस्वामीरास	×	" "
३५. बुद्धिरास	शालिभद्र द्वारा संकलित	" "
३६. शीलरास	विजयदेवसूरि	" "

जोधराज ने सीक्की की मार्या के पठनार्थ लिखा ।

३७. साधुचंदना	भानंद सूरि	" "
३८. दानतपशीलसंवाद	समयमुन्दर	राजस्थानी
३९. आषाढभूतिचौडालिया	कनकसोम	हिन्दी

२० काल १६३८ । लिपि काल सं० १७५० कार्तिक बुदी ५ ।

४०. आद्रकुमार धमाल	" "	" "

रचना संवत् १६४४ । अमरसर में रचना हुई थी ।

४१. मेघकुमार चौडालिया	" "	हिन्दी
४२. अमाव्यतीसी	समयमुन्दर	" "

लिपि संवत् १७५० कार्तिक सुदी १३ । अवरंगाबाद ।

४३. कर्मवृत्तीसी	राजसमुद्र	हिन्दी
४४. बारहभाजना	जबसोमगणि	" "
४५. पद्मावतीरानीआराधना	समयमुन्दर	" "
४६. शत्रुघ्नयरास	" "	" "

४७. नेमिजिनस्तवन	जोधराज मुनि	हिन्दी	
४८. मधीपाश्वनाथस्तवन	"	"	
४९. पञ्चकल्याणकस्तुति	×	प्राकृत	
५०. पंचमोस्तुति	×	संस्कृत	
५१. संगीतबन्धनाश्वजिनस्तुति	×	हिन्दी	
५२. जिनस्तुति	×	"	लिपि सं० १७५०
५३. नवकारमहिमास्तवन	जिनवल्लभसूरि	"	
५४. नवकारसज्जाय	पद्मराजगणेश	"	
५५. "	गुणप्रभसूरि	"	
५६. गौतमस्वामिसज्जाय	समयगुन्दर	"	
५७. "	×	"	
५८. जिनदत्तसूरिगीत	सुन्दरगणेश	"	
५९. जिनकुशलसूरि चौ ई	जयसागर उपाध्याय	"	
			२० संवत् १४८१
६०. जिनकुशलसूरिस्तवन	×	"	
६१. नेमिराजुलवारहमासा	आनन्दसूरि	"	२० सं० १६८९
६२. नेमिराजुल गीत	भुवनकोति	"	
६३. "	जिनहर्षसूरि	"	
६४. "	×	"	
६५. शूलिभद्र गीत	×	"	
६६. नेमिराजसि सज्जाय	समयसुन्दर	"	
६७. सज्जाय	"	"	
६८. अरहनासज्जाय	"	"	
६९. मेघकुमारसज्जाय	"	"	
७०. अनाथीमूर्तिसज्जाय	"	"	
७१. सीताजीरी सज्जाय	×	हिन्दी	

७२. चेलना री सज्जाय	×	हिन्दी
७३. जीवकाया "	भुवनकोति	"
७४. " "	राजसमुद्र	"
७५. आत्मशिक्षा "	"	"
७६. " "	पद्मकुमार	"
७७. " "	सालभ	"
७८. " "	प्रसन्नचन्द्र	"
७९. स्वार्थबोली	मुनिश्रीसार	"
८०. शत्रुजयभास	राजसमुद्र	"
८१. सोलह सतियों के नाम	"	"
८२. बलदेव महामुनि सज्जाय	समयसुन्दर	"
८३. श्रेणिकराजासज्जाय	"	हिन्दी
८४. बाहुबलि "	"	"
८५. शालिभद्र महामुनि "	×	"
८६. बंभरावाड़ी स्तवन	कमलकलश	"
८७. शत्रुघ्नस्तवन	राजसमुद्र	"
८८. राणापुर का स्तवन	समयसुन्दर	"
८९. गौतमपृच्छा	"	"
९०. नेमिराजमति का चौमासिया	×	"
९१. स्थूलिभद्र सज्जाय	×	"
९२. कर्मक्षतीसी	समयसुन्दर	"
९३. पुण्यक्षतीसी	"	"
९४. गौड़ीपार्श्वनाथस्तवन	"	"
९५. पञ्चमतिस्तवन	समयसुन्दर	"
९६. नन्दवेणमहामुनिसज्जाय	×	"
९७. शीलवत्तीसी	×	"

६८. मोनएकावली स्तवन

समयसुन्दर

हिन्दी

रचना सं० १६८१ । जैसलमेर में रची गई । लिपि सं० १७५१ ।

५४३४. गुटका सं० ५३ । पत्र [सं० २६६ । मा० ८३×४३ इञ्च । लेखनकाल १७७५ । पूर्ण ।

दशा-सामान्य ।

१. राजाचन्द्रगुप्त की जीपई	ब्रह्मरायनलाल	हिन्दी
२. निर्वर्णिकाब्ध भाषा	भैया भगवतीदास	"

षट्—

३. प्रभुजी जो तुम तारक नाम धरायो	हर्षचन्द्र	"
४. आज नामि के द्वार भीर	हरिसिंह	"
५. तुम सेवामें जाय सो ही सफल बरी	दलाराम	"
६. चरन कमल उठि प्राप्त देख मैं	"	"
७. सोही सन्त शिरोमणि जिनवर गुन गावे	"	"
८. मंगल आरती कीजै भोर	"	"
९. आरती कीजै श्री नेमकंवरकी	"	"
१०. बंदों दिगम्बर गुरु चरन जग तरन	भूधरदास	"
तारन जान	"	"
११. त्रिभुवन स्वामीजी करुणा निधि नामीजी	"	"
१२. बाजा बजिया गहरा जहं जन्म्या हो	"	"
अष्टम कुमार		
१३. नेम कंवरजी ये सजि आया	साईदास	"
१४. भट्टारक महेन्द्रकीर्तिजी की जकड़ी	महेन्द्रकीर्ति	"
१५. ग्रही जगत्पुत्र जगपति परमानंद निधान	भूधरदास	"
१६. देखा दुनिया के बीच वे कोई	"	"
अजब तमाशा		
१७. विनती—बंदों भी अरहंतदेव सारद	"	"
नित्य मुमरण हिरदै धरू		

राजमती बीनवै नेमजी अजी	विश्वभूषण	हिन्दी
तुम क्यों चढ़ा गिरनारि (विनती)		
१६. नेमोश्वररास	ब्रह्म राममल्ल	" २० कात् सं० १६१५ लिपिकार दयाराम सोनी
२०. चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्नों का फल	×	"
२१. निर्वाणकाण्ड	×	प्राकृत
२२. चौबीस तीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी
२३. पांच परवीयत की कथा	बेणीदास	" लेखन संवत् १७७५
२४. पद	बनारसीदास	"
२५. मुनिश्वरों की जयमाल	×	"
२६. आरती	चानतराय	"
२७. नेमिश्वर का गीत	नेमिचन्द्र	"
२८. विनति- (बंदहु श्री जिनराय मनवस काब करोजी)	कनककीर्ति	"
२९. जिन भक्ति पद	हर्षकीर्ति	"
३०. प्राणी रो गीत (प्राणीड़ा रेतू काई सोवै रैन चित्त)	×	"
३१. जकड़ी (रिषभ जिनेश्वर बंदस्यो)	देवेन्द्रकीर्ति	"
३२. जीव संबोधन गीत (होजीव नव मास रह्यो गर्भ वासा)	×	"
३३. लुहरि (नेमि मगीना नाथ थां परि बारी म्हारालाल)	×	"
३४. मोरङो (म्हारो रे मन मोरङा तूतो उडि गिरनारि जाइ रे)	×	"
३५. बटोइ (तू तोजिन भजि बिलम न लाय बटोई मारग भूलौ रे)	×	हिन्दी
३६. पंचम गति की बेलि	हर्षकीर्ति	" २० सं० १६५३

३७. करम हिण्डोलगा	×	हिन्दी	★
३८. पद-(ज्ञान सरोवर मांदि भूलै रे हंसा)	सुरेन्द्रकीर्ति	"	
३९. पद-(बीबीसों तीर्थकर करो भवि वंदन)	नेमिचंद	"	
४०. करमा की गति न्यारी हो	ब्रह्मनाथ	"	
४१. भारती (करीं नाभि कंवरजी की भारती)	लालचंद	"	
४२. भारती	ब्रह्मतराय	"	
४३. पद-(जीवड़ा पूजो ओ पारस जिनेन्द्र रे)	"	"	१
४४. गीत (डोरी थे लगाकी हो नेमजी का नाम ल्यो)	पांडे नाथुराम	"	
४५. लुहरि-(पो संसार अनादि को सोही बाम बण्यो री लो)	नेमिचंद	"	
४६. लुहरि-(नेमि कुंवर व्याहन चढ्यो राजुल करै इ सिंगार)	"	"	
४७. जोगोरासो	पांडे जिनदास	"	
४८. कलियुग की कथा	केशव	"	४४ पद्य । ले० सं० १७७६
४९. राजुलपञ्चीसी	लालचंद विनोदोसाल	"	"
५०. अष्टाङ्गिका व्रत कथा	"	हिन्दी	★
५१. मुनिस्वरों की जयमाल	ब्रह्मजिनदास	"	
५२. कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	"	
५३. तीर्थङ्कर जकड़ी	हर्षकीर्ति	"	
५४. जगत में सो देवन को देव	बनारसीदास	"	
५५. हम बैठे अपने मोन से	"	"	
५६. कहा अज्ञानी जीवको गुरु ज्ञान बतावे	"	"	

* ५७. रंग बनाने की विधि	×	हिन्दी	
५८. स्फुट दोहे	"	"	
५९. गुणवैलि (चन्दन वाला गीत)	"	"	
६०. श्रीपालस्तवन	"	"	
६१. तीन मियां की लकड़ी	धनराज	"	
६२. सुखखड़ी	"	"	
६३. कक्का वीनती (बारहखड़ी)	"	"	
६४. अठारह नाते कीकथा	लोहट	"	
* ६५. अठारह नाता का व्यौरा	×	"	
६६. भादित्यवार कथा	×	"	१५४ पृष्ठ
६७. धर्मरासो	×	"	
६८. पद-देखो भाई आज रिषभ घर आवे	×	"	
६९. क्षेत्रपालगीत	सुभचन्द्र	"	
७०. गुरुओं की स्तुति	—	संस्कृत	
७१. तुभावित पद्य	×	हिन्दी	
७२. पार्श्वनाथपूजा	×	"	
७३. पद-उठो तेरो मुख देखूं नाभिजी के नन्द टोडर		"	
७४. जगत में सो देवन को देव	बनारसीदास	"	
* ७५. दुविधा कब जइ या मन की	×	"	
७६. इह चेतन की सब सुधि गई	बनारसीदास	"	
७७. नेमीसुरजी को जनम हुयो	×	"	
७८. चौबीस तीर्थङ्करों के चिह्न	×	"	
७९. दोहासंग्रह	नानिगनाम	"	
८०. धार्मिक चर्चा	×	"	
८१. दूरि गयो जग चेली	धनश्याम	"	
८२. देखो माइ आज रिषभ घर आवे	×	"	

८३. चरणकमल को ध्यान मेरे	×	हिन्दी
८४. जिनजी थांकीजी मूरत मनडो मोहियो	×	"
८५. नारी मुकति पंथ बट नारी नारी	"	"
८६. समझि नर जीवन थोरो	रूपचन्द	"
८७. नेमजी ये काई हठ मारधो महाराज	हर्षकीर्ति	"
८८. देखरी कहूं नेमि कुमार	"	"
८९. प्रभु तेरी मूरत रूप बनी	रूपचन्द	"
९०. जितामणी स्वामी सांवा साहब मेरा	"	"
९१. सुखवड़ी कब आनेगी	हर्षकीर्ति	"
९२. बेसन तू तिहें काल अकेला	"	"
९३. पंच मंगल	रूपचन्द	"
९४. प्रभुजी थांका दरसन सूं सुख पावां	ब्रह्म कपूरचन्द	"
९५. लघु मंगल	रूपचन्द	"
९६. सम्मेद शिखर चली रैं जीवड़ा	×	"
९७. हम आये हैं जिनराज तुम्हारे बन्दन को	बानतराय	"
९८. जानपञ्चीसी	बनारसीदास	"
९९. तू भ्रम भूलि न रे प्रानी सजानी	×	"
१००. हजिये दयाल प्रभु हजिये दयाल	×	"
१०१. मेरा मन की बात कासु कहिये	सबलसिंह	"
१०२. मूरत तेरी सुन्दर सोहो	×	"
१०३. प्यारे हो लाल प्रभु का दरस की बलिहारी	×	"
१०४. प्रभुजी त्यारियां प्रभु आप जाणिलै त्यारियां	×	"
१०५. ज्यों जासौ ज्यों त्यारोजी दयानिधि	कुशलचन्द	"
१०६. मोहि लगता श्री जिन प्यारा	हठमलदास	"
१०७. सुमरन ही में त्यारे प्रभुजी तुम		
सुमरन ही में त्यारे	बानतराय	"

१०८. पार्वतीनाथ के दर्शन

कुन्दावन

हिन्दी

र० सं० १७६८

१०९. प्रभुजी में तुम चरणनारण गह्यो

बालबन्द

”

५४३५. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ८८ । अ० ८४६ इअ । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—इस गुटके में पृष्ठ ६४ तक पण्डिताचार्य धर्मदेव विरचित महाशान्तिक पूजा विधान है । ६५ में ८१ तक अन्य प्रतिष्ठा सम्बन्धी पूजाएँ एवं विधान हैं । पत्र ८२ पर अपभ्रंश में चौबीस तीर्थङ्कर स्तुति है । पत्र ८५ पर राजस्थानी भाषा में 'रे मन रमि रहू चरणजिनन्द' नामक एक बड़ा ही सुन्दर पद है जो नीचे उद्धृत किया जाता है ।

रे मन रमिरहु चरण जिनन्द । रे मन रमिरहु चरणजिनन्द ॥ढाला॥

जह पठावहि तिहुवरण इदं ॥ रे मन० ॥

यहु संसार बत्तार मुखे धिगु फय जिय धम्मु दयालं ।

परमय तच्छु मुणहि परमेष्ठिहि सुमरीह अणु गुणालं ॥ रे मन० ॥ १ ॥

जीउ अजीउ दुविहु पुणु आसव बन्धु मुणहि चउभेयं ।

संवर निजम भोखु वियाणहि पुण्णपाप सुविरोयं ॥ रे मन० ॥ १ ॥

जीउ दुभेउ मुक्त संसारी मुक्त सिद्ध सुवियाणे ।

बसु गुण जुल कलङ्क विवजिद भासिये केवलणाले ॥ रे मन० ॥ ३ ॥

जे संसारि भमहि जिय संबुल लख जोसि चउरासी ।

थावर वियलिदिय सयलिदिय, ते पुणल सहवासी ॥ रे मन० ॥ ४ ॥

पंच अजीव पदयसु तहि पुणलु, धम्मु अधम्मु आगतसं ।

कालु अकाउ पंच कामासौ, ऐच्छह दव पयास ॥ रे मन० ॥ ५ ॥

आसउ दुविहु दग्गभावहं, पुणु पंच पयार जिणुत्तं ।

मिच्छा विरय पमाय कसायहं जोगह जीव प्रमुत्तं ॥ रे मन० ॥ ६ ॥

चारि पयार बन्धु पयडिय हिदि तह अणुभाव पयूसं ।

जोगा पयडि पयूसठिदायणु भाव कसाय विसेसं ॥ रे मन० ॥ ७ ॥

सुह परिणामे होइ सुहासउ, असुहि असुह वियाणे ।

सुह परिणामु करहु हो भवियहु, जिय सुहु होय नियाणे ॥ रे मन० ॥ ८ ॥

संवर करहि जीव जग सुन्दर आसव दार निरोह ।

अरुह सिध समु आगु वियाणहु, सोहं सोहं सोहं ॥ रे मन० ॥ ६ ॥

शिजर जरह विरागहु काराणु, जिय जिणवयण संभाले ।

बारहु विह तव दसविह संजमु, पंच महावय पाले ॥ रे मन० ॥ १० ॥

अडविहि कम्मविमुक्कु परमपउ, परमपयकुत्थि वासो ।

शिबलु मुखुत्थि रज्जनु तहिपुरि, ईच्छिउ ईच्छइ वासो ॥ रे मन० ॥ ११ ॥

जाणि असरणा कहु क्या करणा, पंखितु मनहु विचारइ ।

जिसावर सासण तवु पयासणु, सो हिय बुइ थिर धारइ ॥ रे मन० ॥ १२ ॥

५४६६ गुटका सं० ५५ । पत्र सं० २४० । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी संस्कृत । से० काल

१० १६८८ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

५४३७. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० १५० । आ० ६½×४½ इञ्च । पूर्ण एवं जीर्ण । अधिकांश पाठ

अशुद्ध हैं । लिपि विकृत है ।

विशेष—इसमें निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. कर्मनोकर्म वर्णन	×	प्राकृत	३-५
२. ग्याह अग एवं चीवह पूर्वों का विवरण	×	हिन्दी	६-१२
३. श्वेताम्बरों के ८४ वाद	×	"	१२-१३
४. संहतन नाम	×	"	१३
५. सधोत्तत्ति कथन	×	"	१४

ॐ नमः श्री पार्श्वनाथ काले बुद्धकीर्तिना एकान्त मिथ्यात्वबोद्ध स्थापितं ॥ १ ॥

संवत् १३६ वर्षे भद्रबाहुशिष्येण जिनचन्द्रेण संशयमिथ्यात्वं श्वेतपटमत् स्थापितं ॥ २ ॥

श्री शीतलतीर्थङ्करकाले शीरकदम्बाचार्यपुत्रेण पर्वतेन विपरीतमतं मिथ्यात्वं स्थापितं ॥ ३ ॥

सर्वतीर्थङ्कराणां काले विनयमिथ्यात्वं ॥ ४ ॥

श्रीपार्श्वनाथमणि शिष्येण मस्कारिपूर्णज्ञानमिथ्यात्वं श्री महावीर काले स्थापितं ॥ ५ ॥

संवत् ५२६ वर्षे श्री पूज्यपादशिष्येण प्राभृतकवेदिना वज्रनंदिना पङ्कचणकभक्षकेण द्राविडसंघः स्थापितः ।

संवत् २०५ वर्षे श्वेतपटात् श्रीकलशात् आयलाक संघोत्तत्तिजीता । ७ ॥

चतुः संघोत्पत्ति कथ्यते । श्रीभद्रबाहुशिष्येण श्रीमूलसंघमंडितेन मर्हद्वलिपुसिगुप्ताचार्यविशालाचार्येति नामत्रय चारकेण श्रीगुप्ताचार्येण नन्दिसंघः, सिंहसंघः, मेनसंघः, देवसंघः इति चत्वारः संघाः स्थापिताः । तेभ्यो यथाक्रमं बलात्कारगणानामो गणाः सरस्वतीरादयो गद्याश्च जातानि तेषां प्राक्पञ्चादिषु कर्मसु कोपि भेदोक्तिः ॥ ८ ॥

संवत् २५३ वर्षे दिनदमेनस्य शिष्येण सन्यासभंगयुक्तेन कुमारसेनेन दाहसंघ स्थापितः ॥ ९ ॥

संवत् ६५३ वर्षे सम्यक्तप्रकृत्यदयेन रामसेनेन निःपिच्छत्वं स्थापितः ॥ १० ॥

संवत् १८०० वर्षे अतीते वीरचन्द्रमुनेः सकाशात् भिक्षुसंघोत्पत्ति भविष्यति ॥

एभ्योनान्येषामुत्पत्तिः पंचमकालावसाने सर्वेषामेषां ॥

गृहस्थानां शिष्याणां दिनाष्टो भविष्यत्येकं जिनमतं क्रियत्कालं स्थाप्यतीतिज्ञेयमिति दर्शनसारे उक्तं ॥

६. गुणस्थान चर्चा	×	प्राकृत	१५-२०
७. जिनान्तर	वीरचंद्र	हिन्दी	२१-२३
८. सामुद्रिक शास्त्र भाषा	×	"	२४-२७
९. स्वर्गनरक वर्णन	×	"	३२-३७
१०. यति आहार का ४६ दोष	×	"	३७
११. लोक वर्णन	×	"	३८-४३
१२. चतुर्विंश ठाणा चर्चा	×	"	४४-८६
१३. अम्यस्फुट पाठ संग्रह	×	"	९०-१५०

१४३८ गुडका सं० १७—पत्र सं० ४-१२१ । भा० ६५६ इति । अपूर्ण । दश-जीर्ण ।

१. त्रिकालदेववंदना	×	संस्कृत	५-१२
२. सिद्धभक्ति	×	"	१२-१४
३. तंदीश्वरादिभक्ति	×	प्राकृत	१४-१६
४. चौतीस प्रतिशय भक्ति	×	संस्कृत	१६-१९
५. श्रुतज्ञान भक्ति	×	"	१९-२१
६. दर्शन भक्ति	×	"	२१-२२
७. शान भक्ति	×	"	२२
८. चरित्र भक्ति	×	संस्कृत	२२-२४
९. ग्रनागार भक्ति	×	"	२४-२६

१०. योग भक्ति	×	"	२६-२८
११. निर्वाणिकाण्ड	×	प्राकृत	२८-३०
१२. बृहत्सर्वभू स्तोत्र	समन्तभद्राचार्य	संस्कृत	३०-४१
१३. गुरावली (लघु आचार्य भक्ति)	×	"	४१-४४
१४. चतुर्विंशति तीर्थकर स्तुति	×	"	४४-४६
१५. स्तोत्र संग्रह	×	"	४६-५०
१६. भावना बतौसी	×	"	५१-५२
१७. माराधनासार	देवसेन	प्राकृत	५२-६०
१८. संबोधपञ्चासिका	×	"	६१-६८
१९. द्रव्यसंग्रह	नेमिचन्द्र	"	६८-७१
२०. भक्ततामरस्तोत्र	भक्तितुंगाचार्य	संस्कृत	७१-७५
२१. डाढसी गाथा	×	"	७५-८३
२२. परमानन्द स्तोत्र	×	"	८३-८४
२३. मारास्तमिति संधि	हरिश्चन्द्र	प्राकृत	८५-८६
२४. धूमकीरास	विनयचन्द्र	"	८७-८८
२५. समाधिमरणा	×	अप्रमंश	८८-८९
२६. निर्भरपंचमी विधान	प्रतिविनयचन्द्र	"	८९-९०
२७. सुषमदोहा	×	"	९०-९१
२८. द्वावशानुप्रेक्षा	×	"	९१-९२
२९. "	जल्हण	"	९२-९४
३०. योगि चर्चा	महात्मा ज्ञानचंद	"	९४-९६

५४३६. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० १३-५१ । आ० ६५६ । अपूर्ण ।

विशेष—गुटका प्राचीन है ।

१. जिनरात्रिविधानकथा नरसेन अप्रमंश अपूर्ण १३-२०

अन्तिम भाग—

कतिपय किण्व चउहसि रत्तिहि, गउ सम्मद जिणु पंचम छत्तिहि ।

इय सम्बन्धु कहिउ सयलामलो, जिनरत्ति हि फलु भवियह मंगलो ।

अवरुवि जीणरत्ति करेसइ, सो भरद्वयहुउ लहेसइ ।
 सारउ सुउ महियलि भुंजेसइ, रइ समारण कुल उत्तिरमेसइ ॥
 पुणु सोहम्म सगी जाएसइ, सह कीलेसइ शिर सुकुभालिहि ।
 मणुवसुखु भुंजिवि जाएसइ, सिवपुरि वासु सोवि पोवेसइ ।
 इय जिणरत्ति विहाणु पयोसिउ, जहजिणसासणि गणहरि भोसिउ ।
 जे हीणाहिउ काइमि वुत्तउ, तं बुहारण महु खसहु रिस्तउ ।
 एहु सत्थु जो लिहइ लिहावइ, पढइ पढावइ कहइ कहावइ ।
 जो नर नारि एहमणि भावइ, पुण्णइ अहिउ पुण्ण फलु पावइ ।

धत्ता—

सिरि एरसेणह सामिउ, सिवपुरि गामिउ, बड्ढमाण तिस्थंकर ।
 जइ मागिउ देइ करण करेइ देउ सुबोहि जाहु परमेसर ॥ २७ ॥
 इय सिरि बड्ढमाणकहापूराणे सिधादिभवभावपण्णणे जिणराइविहारणफलसंपत्ती ॥
 सिरि एरसेण विरदए सुभवासप्पण्णणामित्ते पढम परिच्छेह सम्मत्ती ।

॥ इति जिणरात्रि विधान कथा समाप्त ॥

२. रोहिणिविधान

मुणिपुराभद्र

अपञ्च

२१-२५

प्रारम्भिक भाग—

वासवनुमपायहो हरिपथिसायहो तिज्जिय कायहो पयवुल्लु ।
 सिवमणसहायहो केवलकायहो रिसहो पणविवि कयकमलु
 परमेद्धि पंच पणविवि महंत, भवजलहि पोय विहडिय कयंत ।
 सारभ सारस ससि जोल्लु जेम, रिणम्मल वणिज्ज केणकेम ।
 जिहि गोयमए विणिव वरस्स, सेणिय रायस्स जसोत्तरस्स ।
 तिह रोहिणी वय कह कहमि भव्व, जह सत्तिणि वारिय पावण्ण ।
 इय जंबूदीव हो भरइ खेत्ति, कुरु जंगल ए सिवि गए जरोत्ति ।
 हथिणाउरु पुरजण पवररिद्धु जणु वसइ जित्थु सह सय समिद्धु ।
 तहि वीयसोउ गयसोउ भूउ, विज्जु पहरइ रइ हियय भूउ ।
 तहां रांदणु कुलणुन्दरा मसोउ, जंमिल्लवि गउ मइ पूरि सोउ ।

बह अंग विसइ जरा कुरुह विसए चंपाडरि पयउ कुणाइ विसए ।
 मट्टइ शाभिरणी उणाइवंतु, सिरिमइ पियलंकिउ रिउ कमन्तु ।
 सुय अट्ट तासु अरि जणिय तासु, रोहिणी कम्पणाणं कामपासु ।
 कत्तिय अट्टाहिं व सोयवास, मयपुर बहि जिण वसु पुज्जवास ।
 जिणु अंचिवि मुणि वंदिवि असेस, सिरि वासुपुज्ज पयलविसेस ।
 मह मज्झिमसि सण्णहो सिबह देइ गोहिणी जातणया अंकलइ ।
 अबलोइवि सुव जुज्जण समेय, परिणयण चित हयमणि अमेय ।
 एणियमति मंतु निण्हिवि अमेउ, रिणय बुद्धि वियारिवि विहियसेउ ।

धत्ता—

ता पुरवउ बहिरि कि परिउ साहि, रिबद्ध मंच चउ पासहि ।
 कणायमयसु खंचिय रयण करंचिय, मडिय मंडव पासहि ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

निसुणह जिणवणि सावहणु विवसइणं करतसु आवमानु ।
 यग्घा घायतो जह सरणुणत्थि, मय सावहो जीवहो सहणसत्थि ।
 अणु हवइ मुहामुह एककुजोउ, तणु भिणु लेइ मरणाउ भीउ ।
 संसार सहकणु पुरकर समुदु, अंगुजि घाउ विहलु कुमुदु ।
 असवइ कम्पु जो एहि विच्च, तहो विलथं संकर होइ कच्च ।
 समं भायि सहियइ कम्पुआउ, परिभमिउ लोहु जीविउ सपाउ ।
 दुल्लहु जिण भम्पु समुत्ति मग्गु, एवि संगहियउ कम्मेण लगाउ ।
 इउ सुणिवि सरिवि जिण सिक्ख दिक्ख, हुउ गणाहए राउ असोउ भिक्ख ।
 संगहिय उपाध्यायउ अममलणाणु, केवळु गउ मोक्खहु मुहु विहाणु ।
 रहि तराउ चरिक्कि पवणसंगि अच्चु, एच्छि दिवि धी लिणु भग्गी ।
 धीयउ विसग्गि संपत्त अज्ज, चउधरी दिक्खिय सुवहु सज्ज ।
 हुव केवमोक्ख गयहणि विकम्म, अणु हवहि एणरंशर मुत्ति सम्म ।
 चउधरिय लक्खणसी धरि सुलच्छि, रां पणसिरि नाम इन्दी बलच्छि ।
 रोहवउ विहिउ ताइएउ, रोहिणि कहविरइय तासु हेउ ।

धत्ता—

सिरि गुराभद्गुरीसरेण विहिय कहा बुधो भरेण ।

सिरि मलयकिसि पयल जुयलणाविवि, सानयलओ यह सरगुछविवि ।

रांदउ सिरि जिणसंस, रांदउ तहभूमि बालुणि विम्भं ।

रांदउ लक्खणु लक्खं, दितुं सया कण्णसह वजइ भिक्खं ।

॥ इति श्री रोहिणी विधानं समाप्तं ॥

३. जिनरात्रिविधान कथा	×	अपभ्रंश	२६-२८
४. दशलक्षणाकथा	मुनि गुराभद्र	"	३०-३३
५. चंदनपष्ठीव्रतकथा	आचार्य छत्रसेन	संस्कृत	३३-३६

नरदेव के उपदेश से आचार्य छत्रसेन ने कथा की रचना की थी ।

आरम्भ—

जिनं प्रणम्य चंद्राभं कर्मोषध्वान्तभास्करं ।

विधान चंदनषष्ठीं भव्यानां कथमिहां ॥ १ ॥

द्वीपे जम्बूद्वीपं केम्बिनु क्षेत्रे भरतनामनि ।

काशी देशोऽस्ति विख्यातो वर्ज्जितो बहुधाबुधैः ॥ २ ॥

अन्तम—

आचार्यछत्रसेनेन नरदेवोपदेशतः ।

कृत्वा चंदनषष्ठीं कृत्वा भोजफलप्रदा ॥ ७७ ॥

यो भव्यः कुस्ते विधानममलं स्वर्गापवर्गप्रदा ।

योग्यं कार्यते करोति भविनं व्याख्याय संक्षेपनं ॥

दूतासौ नरदेवयोर्व्वरमुखं सच्छत्रसेनाव्रता ।

मास्थंतो जिननायकेन महते प्राप्तेति जैनं श्रियां ॥ ७८ ॥

॥ इति चंदनषष्ठी समाप्तं ॥

६. मुक्तावली कथा	×	संस्कृत	३६-३८

आरम्भ—

आदि देवं प्रणम्योक्तं मुक्तात्मानं विमुक्तिदं ।

अथ संक्षेपतो वक्ष्ये कथा मुक्तावलिविधिः ॥ १ ॥

७. सुगंधदशमी कथा

रामकीर्ति के शिष्य

अपभ्रंश

३८-४१

विमल कीर्ति

आदि भाग

परावैष्णव सम्मद जिरोसरहो जा पृव्वसूरि आगम भणिया ।
शिमुरिज्जहु भवियहु इक्कमना, कहकहमि सुगंधदशमी हितशणिया ॥

अन्तिम पाठ

दसमिहि सुगंध बिहाणुकरेविणु तइय कण्ठ उप्पण्ण मरेविणु ।
चउदह आहरयेहि पसाहिम सागी सुहइ भुंजइ अविरोहिम ॥
गुहवी मण्डणु पुरु सुह दुल्लहु, राज पयाउ दमाजण वल्लहु ।
मानस सुंदरि गति उप्पणी मयणावलि नामि संपुणी ॥
द्विणि दिणि कुमरि विमावहु भसी भव्वलोच मारास मोहंती ।
सामवण्ण मण्णवि सुरहि तणु जिणवरु सामिउ पज्जइ अणु दिणु ॥
एणु गउदिह मिदि ए णोउह तइ व छल्ल का वण्ण ए सकइ ।
धम्मवंत पेखि शरणहि पोमाइयइ धम्म असगहि ।
राय सापरिणाविम जामहि, पुत्त कलत्तहि वदिमतामहि ॥
रामकित्ति गुरुविणउ करेविणु दिणु विमल कीर्ति महिपलि पदेविणु ।
पच्छइ पुणु तव परणु करेविणु सइ अणुक्रमेण सोमक्खुलहेसइ ॥

धत्ता

जो करइ करावइ एहविहि वक्खाणिम विभवियहु दावेइ ।
सो जिणणाह भासियहु सभु मोक्खु फव पावइ ॥ ८ ॥

इति सुगंधदशमीकथा समाप्ता

८. पुष्पाञ्जलि कथा

X

अपभ्रंश

४१-४२

आरम्भ

जज जय अरुह जिरोसर ह्यवम्मीसर मुत्तिसिरीवरगणधररा ।
अयसय गणभासुर सहयमहीसर कुत्ति गिराधर समकररा ॥ ६ ॥

अन्तिम धत्ता

बलवत्तरिगणि रयणकित्ति मुणि सिस्स वूहिवां दिज्जइ ।
भावकित्ति कुत्त अनंतकित्तिधुरु पुष्फुंजलि विहि किज्जइ ॥ ११ ॥

पुष्पाञ्जलि कथा समाप्ता

६. भर्तृविधान कथा

×

अपभ्रंश

४६-५१

५४४० गुटका सं० ५६—पत्र संख्या—१८३ । मा०-७॥×६ । वशा सामान्यजीर्ण ।

१. नित्यवन्दना सामायिक

×

संस्कृत प्राकृत

१-१२

२. नैमित्तिकप्रयोग

×

संस्कृत

१५

३. श्रुतिभक्ति

×

"

१५

४. चारित्रभक्ति

×

"

१६

५. आचार्यभक्ति

×

"

२१

६. निर्वाणभक्ति

×

"

२३

७. योगभक्ति

×

"

"

८. नंदीश्वरभक्ति

×

"

२६

९. स्वयंभूस्तोत्र

आचार्य समस्तभद्र

"

४३

१०. गुर्ववलि

×

"

४५

११. स्वाध्यायपाठ

×

प्राकृत संस्कृत

५७

१२. तत्त्वार्थसूत्र

उमास्वामि

संस्कृत

६७

१३. सुप्रभाताष्टक

यतिनेमिचंद्र

"

पद्य सं० ८

१४. सुप्रभातिवस्तुति

भुवनभूषण

"

२५

१५. स्वप्नावलि

मुनि देवनादि

"

२१

१६. सिद्धिप्रिय स्तोत्र

"

"

२५

१७. भूपालस्तवन

भूपाल कवि

"

२५

१८. एकीभावस्तोत्र

बादिराज

"

२६

१९. विद्यापहार स्तोत्र

धनञ्जय

"

४०

२०. पार्वनाथस्तवन

देवचंद्र सूरि

"

४४

२१. कल्याण मंदिर स्तोत्र

कुमुदचन्द्रसूरि

संस्कृत

२२. भावना बत्तीसी

×

"

२३. कहराष्टक

पद्मनंदी

"

२४. बीतराग गथा

×

प्राकृत

२५. मंगलाष्टक

X

संस्कृत

२६. भावना चौतीसी

भ० पद्मनंदि

॥

६२-६५

आरम्भ

शुद्धप्रकाशमहिमास्तसमस्तमोहं, निद्रातिरेकमसमावगमस्वभावं ।

मानंदकंदमुदयास्तदलानभिर्जं स्वार्मभुवं भवतु धाम सतां शिवाय ॥ १ ॥

श्रीगौतमप्रभृतयोषि विभोर्महिम्नः प्रायः क्षमालयनयः स्तवनं विधातुं ।

यथं विचार्य जहतस्तद्मुग्नलोके सौख्याप्तये जिन भविष्यति मे किमन्यत् ॥ २ ॥

श्रान्तिम

श्रीभद्रभेन्दुप्रभुवाक्यरश्मि विकाशितैः कुमदः प्रमोदात् ।

श्रीभावनापद्धतिः सात्मशुद्धयै श्रीपद्मनंदी स्वयं चकार ॥ ३४ ॥

इति श्री भट्टारक पद्मनंदिदेव विरचितं चतुस्त्रिंशद् भावना समाप्तमिति ।

२७. भक्तामरस्तोत्र

आचार्य मानतुंग

संस्कृत

२८. वीतरागस्तोत्र

भ० पद्मनंदि

॥

६६

आरम्भ

स्वात्मावबोधविशदं परमं पवित्रं ज्ञानैकमूर्तिमणवद्यसुरैकपार्श्व ।

आस्वादितक्षयसुखाब्जलसत्परार्गं, पश्यन्ति पुण्यसहिता भुवि वीतरागं ॥ १ ॥

उद्धतपस्तपराजोजितपापपंकं चैतन्यविन्दमचलं विमलं विशंकं ।

देवैन्द्रवृन्दसहितं करुणालतांगं पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ २ ॥

जाग्रद्विशुद्धिमहिमावधिसस्तशोकं धर्मोन्नेत्राविधिवेधितभक्ष्यलोकं ।

आचारबन्धुरमति जनतासुरांगं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ३ ॥

कदर्प सत्पर्व मदनासनवैनतेयं, या पाप हारिजगदुत्तमनामधेयं ।

तंसारसिंधु रांमथन मदरामं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ४ ॥

शिर्व्याणुकमुकमलारसिंधो विदंभं, बद्धिणु सद्व्रतचर्यामृतपूर्णकुंभं ।

बलाद्धिमोहतकृष्णकनकचञ्चलं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ५ ॥

आलंदकंद सररीकृतधर्मपंथं, ध्याग्निदग्धनिखिलोद्धतकर्मकथं ।

व्यस्ताजवाजि गणघात विधाय जोगं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ६ ॥

स्वच्छोच्छलब्धविशिष्टजितमेवत.वं, स्याद्वाद्वादितमयाकृतसद्विषादं ।

निःसीमसंजमसुधारसततङ्गायं पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ७ ॥

सम्पत्प्रमरणकुमुदाकरपूर्णचन्द्रं मांगल्यकारणमनंतगुणं वितन्दं ।

इष्टप्रदाणविधिपोषितभूमिभागं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ८ ॥

श्रीपद्मनन्दिरचितं किलवीतरागस्तोत्रं,

पवित्रमणवद्यमनादितादौ ।

यः कोमलेन वचसा विन्दमाविधीते,

स्वर्गापिर्वर्गकमलातमलं वृणीतं ॥ ९ ॥

॥ इति भट्टारक श्रीरघुनन्दिविरचिते वीतरागस्तोत्रं समाप्तेति ॥

२६. आराधनासार	देवसेन	अपभ्रंश	१० सं० १०८६
३०. हनुमतनुप्रेक्षा	महाकवि स्वयंभू	” स्वयंभू रामायण का एक अंश	११६
३१. कालावलीपद्धती	×	”	११६
३२. ज्ञानपिण्ड की विंशति पद्धटिका	×	”	१३१
३३. ज्ञानाकुश	×	संस्कृत	१३२
३४. इष्टोपदेश	पूज्यपाद	”	१३६
३५. सूक्तिमुक्तावलि	आचार्य सोमदेव	”	१४६
३६. भावकासार	महापंडित आशाधर	” ७ वें अध्याय से आगे अपूर्ण	१८३

५४४१. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ५६ । आ० ८×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. रत्नत्रयपूजा	×	प्राकृत	२२-२७
२. पंचमेख की पूजा	×	”	२७-३१
३. लघुसामागिक	×	संस्कृत	३२-३३
४. भारती	×	”	३४-३५
५. निर्व्याणकाण्ड	×	प्राकृत	३६-३७

५४४२. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ५६ । आ० ८½×६ इञ्च । अपूर्ण ।

विशेष—देवा ब्रह्मकृत हिन्दी पद संग्रह है ।

५४४३. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १२८ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८२८
अपूर्ण ।

विशेष—प्रति जीर्णशीर्ण अवस्था में है । मधुमालती की कथा है ।

५४४४. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १२९ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा-सामान्य

१. तीर्थोदकविधान	×	संस्कृत	१-११
२. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	१२-२२
३. देवशास्त्रगुरुपूजा	"	"	२२-३६
४. जिनयज्ञकल्प	"	"	३७-१२५

५४४५. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ४० । आ० ७×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

५४४६ गुटका सं० ६५—पत्र संख्या-८६-४११ । आ०-८×६। । लेखनकाल—१९६१ । अपूर्ण ।
दशा-जीर्ण ।

१. सहस्रनाम	पं० आशाधर	संस्कृत	अपूर्ण । ८६-८७
२. रत्नत्रयपूजा	पद्मनंदि	अपभ्रंश	" ८७-८३
३. नंदीश्वरपंक्तिपूजा	"	संस्कृत	" ८३-८७
४. बड़ीसिद्धपूजा (कर्मदहन पूजा)	सोमदत्त	"	८८-१०६
५. सारस्वतमंत्र पूजा	×	"	१०७
६. बृहत्कलिकुण्डपूजा	×	"	१०७-१११
७. गंगाधरवल्लभपूजा	×	"	१११-११५
८. नंदीश्वरजयमाल	×	प्राकृत	११६
९. बृहत्सोदशकारणपूजा	×	संस्कृत	११६-१२८
१०. ऋषिमंडलपूजा	ज्ञान भूषण	"	१२८-३६
११. जातिचक्रपूजा	×	"	१३७-३८
१२. पञ्चमेखपूजा (पुष्पाञ्जलि)	×	अपभ्रंश	१३८-४१
१३. पणकरहा जयमाल	×	"	१४२
१४. बारह धनुषेक्षा	×	"	१४३-४७

१२. मुक्तेश्वरों का जयमाल	×	अपभ्रंश	१४७
१६. रामोकार पावड़ी जयमाल	×	"	१४६
१७. चौबीस जिनंद जयमाल	×	"	१५०-१५२
१८. दशलक्षणा जयमाल	रङ्गू	"	१५३-१५५
१९. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत	१५५-१५७
२०. कल्याणमंदिरस्तोत्र	बुमुदचंद्र	"	१५७-१५८
२१. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१५८-१६०
२२. अकलंकष्टक	स्वामी अकलंक	"	१६०
२३. भूपालचतुर्विंशति	भूपाल	"	१६१-६२
२४. स्वयंभूस्तोत्र (द्विष्टोपदेश	पूज्यपाद	"	१६२-६४
२५. लक्ष्मीमहास्तोत्र	पद्मनदि	"	१६४
२६. लघुसहस्रनाम	×	"	१६५
२७. सामायिकपाठ	×	प्राकृत संस्कृत	ले० सं० १६७५, १६५-७०
२८. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनादि	संस्कृत	१७१
२९. भावनाद्वाविंशिका	×	"	१७१-७२
३०. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१७२-७४
३१. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	१७४-७५
३२. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्र	अपभ्रंश	१७६-८८
३३. सुप्पयदोहा	×	×	ले० सं० १६६१ वैशाख सुदी ५ । १८८-९०
३४. परमानंदस्तोत्र	×	संस्कृत	१८१
३५. यतिभावनाष्टक	×	"	"
३६. कनकाष्टक	पद्मनदि	"	१८२
३७. तत्त्वसार	देवसेन	प्राकृत	१८४
३८. दुर्लभाप्रेक्षा	×	"	"
३९. वैराग्यगीत (उदरगीत)	छीहल	हिन्दी	१८५
४०. मुनिसुव्रतनाथस्तुति	×	अपभ्रंश	अपूर्णा १८५

४१. सिद्धचक्रपूजा	×	संस्कृत	१६६-१७	*
४२. जिनशासनभक्ति	×	प्राकृत अपूर्ण	१६६-२००	
४३. धर्मदुहेला जैनी का (श्रेयनक्रिया)	×	हिन्दी	२०२-३७	

विशेष—लिपि सन् १६६६ । आ० शुभचन्द्र ने गुटके की प्रतिलिपि करायी तथा श्री माधवसिंहजी के शासनकाल में गढ़कोटा ग्राममें हरजी जोशी ने प्रतिलिपि की ।

४४. नेमिजिमंद व्याहली	लेतसी	हिन्दी	२३७-४२	
४५. मराठारवलधर्ममण्डल (कोठे)	×	"	२४२	
४६. कर्मदहन का मण्डल	×	"	२४३	
४७. दशलक्षरात्रतोद्यापनपूजा	गुमलिसागर	हिन्दी	२४३-६४	*
४८. पञ्चमीव्रतोद्यापनपूजा	केशवसेन	"	२६४-७४	
४९. रोहिणीव्रत पूजा	×	"	२७५	
५०. श्रेयनक्रियोद्यापन	देवेन्द्रकीर्ति	संस्कृत	२७५-८६	
५१. जिनगुणसद्यापन	×	हिन्दी अपूर्ण	२८६-६४	
५२. पंचेन्द्रियवैलि	झीहल	हिन्दी अपूर्ण	३०७	
५३. नेमीसुर कविस (नेमीसुर राजमतीवैलि)	कवि ठक्कुरसी (कविदेव्ह का पुत्र)	"	३०७-०६	
५४. विज्जुल्लर की जयमाल	×	"	३०६-११	
५५. हरावंतकुमार जयमाल	×	अपभ्रंश	३११-१४	
५६. निर्वाणकाण्डमाथा	×	प्राकृत	३१४	*
५७. कुपराध्वन्द	ठक्कुरसी	हिन्दी	३१४-१७	
५८. मानलधुआवनी	मनासाह	"	३१८-२१	
५९. मान की बड़ी बातनी	"	"	३२२-२८	
६०. नेमीधवर को रास	भाउकवि	"	३२६-३३	
६१. "	ब्रह्मरायमल्ल	" २० सं० १६१५, ३३३-४१		
६२. नेमिनाथरास	रत्नकीर्ति	"	३४१-३४३	
६३. श्रीपालरासो	ब्रह्मरायमल्ल	" २. सं. १६३०	३४३-५५	

६४. सुदर्शनरासो

ब्रह्म रायमल्ल

हिन्दी र सं. १६२६ ३५६-६६

संवत् १६६१ में महाराजाधिराज साध्वीसिंहजी के शासन काल में मालपुरा में श्रीलाला भांवसा ने आत्म पठनार्थ लिखवाया ।

६५. जोगीरासा

जिनदास

हिन्दी

३६७-६८

६६. सोलहकारणरास

भ० सकलकीर्ति

"

३६८-६९

६७. प्रद्युम्नकुमाररास

सहायमल्ल

"

३६९-८३

एकदा संवत् १९२८ ई. गत. हजारीद में रचना की गई थी ।

६८. सकलीकरणविधि

×

संस्कृत

३८३-८५

६९. बीसविरहमाणपूजा

×

"

३८५-८७

७०. पंकल्याणकपूजा

×

"

अपूर्ण ३८८-४११

५४४७. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ३७ । आ० ७×५ इंच । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. भक्तभरस्तोत्र मंत्र सहित

मानलुंगार्थ

संस्कृत

१-२६

२. पद्मावतीसहस्रनाम

×

"

२६-२७

५४४८. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ७० । आ० ८×६ इंच । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

१. नवकारमंत्र आदि

×

प्राकृत

१

२. तत्त्वार्थसूत्र

उमास्वामि

संस्कृत

८-२१

हिन्दी शर्ब सहित । अपूर्ण

३. जम्बूस्वामी चरित्र

×

हिन्दी

अपूर्ण

४. चन्द्रहंसकथा

टीकमचन्द

"

र. सं. १७०८ । अपूर्ण

५. श्रीपालजी की स्तुति

"

"

पूर्ण

६. स्तुति

"

"

अपूर्ण

५४४९. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ८८-११२ । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । ले० काल सं० १७८० चैत्र वदी १३ ।

विशेष—प्रारम्भ में वैद्य मनोत्सव एवं बाद में आयुर्वेदिक नुसखे हैं ।

५४५०. गुटका सं० ६९ । पत्र सं० ११८ । आ० ९×६ इंच । हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—बनारसीदास त समयसार नाटक है ।

५४५१. गुटका सं० ७० । पत्र सं० ६४ । आ० ८१×६ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-सिद्धान्त

अपूर्ण एवं अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष—इस गुटके में उमास्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र की (हिन्दी) टीका दी हुई है । टीका सुन्दर एवं विस्तृत है तथा पाण्डे रूपचन्द्रजी कृत है ।

५४५२. गुटका सं० ७१ । पत्र सं० ३५-२२२ । आ० ८१×६ इंच । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. स्वरोदय	×	हिन्दी	३५-४१
२. सूर्यकवच	×	संस्कृत	४२
३. राजनीतिशास्त्र	चाराक्षय	"	४३-५७
४. देवसिद्धपूजा	×	"	५८-६३
५. दशतक्षरापूजा	×	"	६४-६५
६. रत्नत्रयपूजा	×	"	६५-७३
७. सोलहकारपूजा	×	"	७३-७५
८. पार्श्वनाथपूजा	×	"	७५-७६
९. कलिकृष्णपूजा	×	"	७६-७८
१०. क्षेत्रपालपूजा	×	"	७८-८२
११. नृवन्दविधि	×	"	८२-८५
१२. लक्ष्मीस्तोत्र	×	"	८५
१३. तत्त्वार्थसूत्र तीन अध्याय तक	उमास्वामि	"	८५-८७
१४. शांतिपाठ	×	"	८८
१५. रामविनोद भाषा	रामविनोद	हिन्दी	८९-२२२

५४५३. गुटका सं० ७२ । पत्र सं० २०४ । आ० ६१×६ इंच । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. नाटक समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	१-१११
		रचना संवत् १६९३ लिपि सं० १७७९ ।	
२. बनारसीविलास	"	हिन्दी	अपूर्ण
३. स्त्रीमुक्तिखण्डन	×	" अपूर्ण पत्र सं०	३९-७०

५४५५. गुटका सं० ७३ । पत्र सं० १५२ । भा० ७×६ इंच । अपूर्ण । इशा-जीर्ण शीर्ण ।

१. रागु आसावरी

रूपचन्द

अपभ्रंश

१

प्रारम्भ—

विसडणभेरा कुरुजंगले तहि यरु वाउ जीउ राजे ।

धराकराणायर पूरियउ करायणहु धराउ जीउ राजे ॥ १ ॥

विशेष—गीत अपूर्ण है तथा अस्पष्ट है ।

२. पडढी (कोमुदीमध्यात्)

सहरापाल

अपभ्रंश

२-७

प्रारम्भ—

हाहउं धम्मभुउ हिउउ मंसारि असारइ ।

कोइए सुराउ, गुणविठ्ठु संख बिणु वारइ ॥ छ ॥

अन्तिम वृत्ता—

पुणुमंति कहइ सिवाय सुणि, साहणमेयहु किज्जइ ।

परिहरि विगेहु सिरि सत्तियत्त संघि सुमइं साहिज्जइ ॥ ६ ॥

॥ इति सहरापालकृते कोमुदीमध्यात् पडढी छन्द लिखितं ॥

३. कल्याणकविधि

मुनि विनयचन्द

अपभ्रंश

७-१३

प्रारम्भ—

सिद्धि सुहंकरसिद्धियहु

पराविधि तिजइ पयासरा केवलसिद्धिहि कारणधुणामिहउं ।

सयलवि जिण कल्लाण निहयमल सिद्धि सुहंकरसिद्धियहु ॥ १ ॥

अन्तिम—

एयभत्तु एककु जि कल्लाणउ विहरिणव्वियडि अहवइ गराणउ ।

अहवासय सहसवरणविहि, विणयचंदि सुणि कहिउ समत्थहु ॥

सिद्धि सुहंकर सिद्धियहु ॥ २५ ॥

॥ इति विनयचन्द कृतं कल्याणकविधिः समाप्ता ॥

४. चूनडी (विणयं वंक्षिणि पंच गुरु)

यति विनयचन्द

अपभ्रंश

१३-१७

१. अणुवमिति संधि	हरिश्चन्द्र अग्रवाल	अपभ्रंश	१७-२४
६. सम्माधि	×	"	२४-२७
७. मसुवसंधि	×	"	२७-३१
८. शाणपिड	×	"	३१-४५
विशेष—२० कडवक हैं ।			
९. श्रावकाचार दोहा	रामसेन	"	४५-५९
१०. दशलाक्षणीकरास	×	"	५९-६०
११. श्रुतपञ्चमीकथा	स्वयंभू	"	६१-६७
(हरिवंश मध्यात् विदुर वेशम्य कथानके)			
१२. पदड़ी	यशःकीर्ति	"	६७-७०
(यशःकीर्ति विरचित चंद्रप्रभचरित्रमध्यात्)			
१३. रिदुरोमिवरिड (६७-६८ संधि)	स्वयंभू	" (धनलाभित)	७७-८६
१४. वीरचरित्र (अनुप्रेक्षा भाग)	रङ्गभू	"	८६-८९
१५. चतुर्गति की पदड़ी	×	"	८९-९१
१६. सम्पत्तवकौमुदी (भाग १)	सहस्रपाल	"	९१-९४
१७. भावना उगातीसी	×	"	९४-९६
१८. गीतमधृच्छा	×	प्राकृत	१००-०२
१९. आदिपुराण (कुल भाग)	पृथ्वीदन्त	अपभ्रंश	१०२-३१
२०. यशोधरचरित्र (कुल भाग)	"	"	१३२-४६

५४५५ गुटका सं० ७४ । पत्र सं० २३ से १२३ । मा० ६५६ इ.श. । अपूर्ण ।

१. कुटकर पद्य	×	हिन्दी	२३-३१
२. पञ्चमङ्गल	रूपचन्द	"	३२-४३
३. करुणाष्टक	×	"	४४
४. पार्श्वनाथजयमाल	लौहट	"	४५
५. विनती	भूषणदास	"	४७
६. ते गुरु मेरे उर बसो	"	" ले० काल सं० १७६६	४८

७. जकड़ी	वानतराय	हिन्दी	५१
८. मगन रहो रे तू प्रभु के भजन में	वृन्दावन	"	५२
९. हम आये हैं जिनराज तोरे वंदन की	वानतराय	"	ले० काल सं० १७६६ "
१०. राजुलपक्षीसी	विनोदीनाल लालचन्द	"	५३-६०

विशेष—ले० काल सं० १७६६ । दयाचन्द लुहाड़िया ने प्रतिलिपि की थी । पं० फकीरचन्द कासलीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

११. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी	६१-६३
१२. श्रीपालजी की स्तुति	"	"	६३-६४
१३. मनां रे प्रभु चरणा त बुलाय	हरीसिंह	"	६४
१४. हमारी करुणा लो जिनराज	पद्मनन्दि	"	६४
१५. पानीका पतासा जैसा तनका तमाशा है [कवित्त] केशवदास		"	६६-६८
१६. कवित्त	जयकिशन सुंदरदास आदि	"	६६-७२
१७. मुरावेलि	×	हिन्दी	७५
१८. पद—भारा देश में हां लाल गढ़ बड़ो गिरनार	×	"	७७
१९. कक्का	मुलाबचन्द	"	७८-८२

१० काल सं० १७६० ले० काल सं० १८००

२०. पंचबधावा	×	हिन्दी	८४
२१. मोक्षपेड़ी	×	"	८६
२२. भजन संग्रह	×	"	८२
२३. दानकीवीनती	जसीदास	संस्कृत	८३

निहालचन्द भजमेरा ने प्रतिलिपि की संवत् १८१४ ।

२४. शकुनावली	×	हिन्दी	लिपिकाल १७६७ ८६-१०५
२५. फुटकर पद एवं कवित्त	×	"	१२३

५४५६ गुटका सं० ७५—पत्र संख्या—११६ । आ०—४३×४३ इंच । ले० काल सं० १८४८ । दशा सामान्य । अपूर्ण ।

१. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी	
२. कल्याणमंदिरभाषा	बनारसीदास	"	

३. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	
४. श्रीपालजी की स्तुति	×	हिन्दी	
५. साधुवन्दना	वनारसीदास	"	
६. बीसतीर्थङ्करों की जकड़ी	हर्षकीर्ति	"	
७. बारहभावना	×	"	
८. दर्शनाष्टक	×	हिन्दी	सब दर्शनों का वर्णन है ।
९. पद-चरण केवल को ध्यान	हरीसिंह	"	"
१०. भक्तामरस्तोत्रभाषा	×	"	"

५४५७ गुटका सं० ७६ । पत्र संख्या—१८० । आ०—५॥५४॥ लेखन सं० १७८३ । जीर्ण ।

१. तत्त्वार्थगूत्र	उमास्वामि	संस्कृत
२. नित्यपूजा व आश्रपद पूजा	×	"
३. नंदीश्वरपूजा	×	"

पंडित नगराज ने हिरणीदा में प्रतिलिपि की ।

४. श्रीसीमंघरजी की जकड़ी	×	हिन्दी	प्रतिलिपि गुट्टा में की गई ।
५. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत	
६. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	
७. जिनजपिजिन जपि जीवरा	×	हिन्दी	
८. चितामणिजी की जयमाल	मनरथ	"	जोधनेरमें नगराजने प्रतिलिपि की थी ।
९. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	संस्कृत	
१०. भक्तामरस्तोत्र	आचार्यमानदुर्ग	"	

५४५६ गुटका सं० ७७ । पत्र सं० १२५ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । ले० सं० काल १८१६

साह सुदी १२ ।

१. देवसिद्धपूजा	×	संस्कृत	१-३५
२. नंदीश्वरपूजा	×	"	३३-४४
३. सोलहकारण पूजा	×	"	४४-५०
४. दशलक्षणपूजा	×	"	५०-५५

५. रत्नत्रयपूजा	×	हिन्दी	५६-६१
६. पार्श्वनाथपूजा	×	"	६२-६७
७. शांतिपाठ	×	"	६८-६९
८. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	७०-११४

४४५६. गुटका सं० ७८ । पत्र संख्या १६० । आ० ६×४ इंच । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

विशेष—दो गुटकों का सम्मिश्रण है ।

१. ऋषिमण्डल स्तवन	×	संस्कृत	२०-२७
२. चतुर्विंशति तीर्थङ्कर पूजा	×	"	२८-३१
३. चितामणिस्तोत्र	×	"	३६
४. लक्ष्मीस्तोत्र	×	"	३७-३८
५. पार्श्वनाथस्तवन	×	हिन्दी	३९-४०
६. कर्मदहन पूजा	भ० शुभचन्द्र	संस्कृत	१-४३
७. चितामणि पार्श्वनाथ स्तवन	×	"	४३-४८
८. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	४८-५३
९. पद्मावतीस्तोत्र	×	"	५४-६१
१०. चितामणि पार्श्वनाथ पूजा	भ० शुभचन्द्र	"	६१-८६
११. गणधरवल्लभ पूजा	×	"	८६-११४
१२. अष्टाह्निक कथा	यशःकीर्ति	"	१०४-११२
१३. अनन्तव्रत कथा	ललितकीर्ति	"	११२-११८
१४. सुगन्धदशमी कथा	"	"	११८-१२७
१५. षोडशकारण कथा	"	"	१२७-१३६
१६. रत्नत्रय कथा	"	"	१३६-१४१
१७. जिनचरित्र कथा	"	"	१४१-१४७
१८. आकाशचर्म कथा	"	"	१४७-१५३
१९. रोहिणीव्रत कथा	"	"	अपूर्ण १५४-१५७

२०. ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	संस्कृत	१५८-१६१
२१. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	१६२-६३
२२. शीतक होम विधि	×	"	१७४-७६
२३. चौबीसी विनती	भ० रत्नचन्द्र	हिन्दी	१८६-८८

५४६०. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० ३३ । आ० ७×४३ इंच । अपूर्ण ।

१. रातनीतिशास्त्र	चाणक्य	संस्कृत	१-२८
२. एकीश्लोक रामायण	×	"	२९
३. एकीश्लोक भामव्य	×	"	"
४. गरुडोद्गादशनाम	×	"	३०-३१
५. नवग्रहस्तोत्र	वेदव्यास	"	३२-३३

५४६१. गुटका सं० ८० । पत्र सं० १८-४४ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत तथा हिन्दी ।

अपूर्ण ।

विशेष—पञ्चमंगल, बाईस परिषद्, देवापूजा एवं तत्त्वार्थसूत्र का संग्रह है ।

५४६२ गुटका सं० ८१ । पत्र सं० २-२६ । आ० ५३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । अपूर्ण । दशा—

सामान्य ।

विशेष—नित्य पूजा एवं पाठों का संग्रह है ।

५४६३ गुटका सं० ८३ । पत्र सं० ३० । आ० ६×४ इंच । भाषा संस्कृत । ले० काल सं० १८८३ ।

विशेष—पद्मावती स्तोत्र एवं जिनसहस्रनाम (पं० श्रीशाधर) का संग्रह है ।

५४६४ गुटका सं० ८४ । पत्र सं० १८-४१ । आ० ७×४३ इंच ।

१. स्वस्थयनविधि	×	संस्कृत	१८-२०
२. सिद्धपूजा	×	"	२१-२३
३. पांडशकारणपूजा	×	"	२४-२५
४. दशलक्षणपूजा	×	"	२६-२७
५. रत्नत्रयपूजा	×	"	२८-३७
६. गुरुपूजाष्टक	×	"	३८-३९

७. चित्तामणिपूजा	×	संस्कृत	३६-४१
८. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	४२-४९

५४६५. गुटका सं० ८५ । पत्र सं० २२ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—पत्र ३-४ नहीं है । जिनसेनाचार्य कृत जिन सहस्रनाम स्तोत्र है ।

५४६६. गुटका सं० ८६ । पत्र सं० ५ से २५ । आ० ६×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—१८ में ८७ सत्रों का संग्रह है किन्तु किस ग्रंथ के हैं यह अज्ञात है ।

५४६७. गुटका सं० ८७ । पत्र सं० ३३ । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१. जैनरक्षास्तोत्र	×	संस्कृत	१-३
२. जिनपिंजरस्तोत्र	×	"	४-५
३. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	६
४. चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	"	७
५. पद्मावतीस्तोत्र	×	"	७-१५
६. ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	"	१५-१८
७. ऋषि मंडलस्तोत्र	गौतम गणधर	"	१८-२४
८. सरस्वतीस्तुति	आशाधर	"	२४-२६
९. शीतलाष्टक	×	"	२७-३२
१०. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	३२-३३

५४६८. गुटका सं० ८८ । पत्र सं० २१ । आ० ७×५ इंच । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—गर्गचार्य विरचित पाशा केवली है ।

५४६९. गुटका सं० ८९ । पत्र सं० ११४ । आ० ६×५ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—प्रारंभ में पूजाओं का संग्रह है तथा अन्त में अचलकीर्ति कृत मंत्र नवकाररास है ।

५४७० गुटका सं० ९० । पत्र सं० ५० से १२० । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—भक्ति पाठ तथा चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति (आचार्य समन्तभद्रकृत) है ।

५४७१ गुटका सं० ९१ । पत्र सं० ७ से २२ । आ० ६×६ इंच । विषय—स्तोत्र । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

१. संबोध पंचासिकाभाषा	द्यानतराय	हिन्दी	७-८
२. भक्तामरभाषा	हेमराज	"	६-१४
३. कल्याण मंदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	"	१५-२२

५४७२. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १३०-२०३ । आ० ८×८ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले०

काल १८३३ । अपूर्ण । दशा सामान्य ।

१. भविष्यदलरास	रायमल्ल	हिन्दी	१३०-८५
२. जिनपञ्जरस्तात्र	×	संस्कृत	१८५ ८७
३. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	१८८
४. स्तवन (अरिहन्त संत का)	×	हिन्दी	१८६-६३
५. जेतनचरित्र	×	"	१८३-२०३

५४७३. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० २५-१०८ । आ० ५×३ इंच । अपूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ के २४ पत्र नहीं हैं ।

१. पार्श्वनाथपूजा	×	हिन्दी	२५
२. भक्तामरस्तोत्र	भाततुंगाचार्य	संस्कृत	५४
३. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	६२
४. सासू बहू का भगडा	ब्रह्मदेव	हिन्दी	६५
५. पिया चले गिरवार कूँ	×	"	६७
६. नाभि नरेन्द्र के नंदन कूँ जय बंदन	×	"	६८
७. सीताजी की बिनती	×	"	७१
८. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	७२-८४
९. पद- अरज करो द्वा जिनराजजी राग सारंग	×	हिन्दी	अपूर्ण ६६
१०. " की परि करोजी गुमान ये कै दिनका महमान, बुधजन		"	६७
११. " लगनि मोरी लगी ऐसी	×	"	६८
१२. " शुभ गति पावन माही चित धारोजी	नवल	"	६९
१३. " जाऊंगी संगि नैम कंवार	×	"	१००
१४. " टुक नजर महर की करना	भूधरदास	"	१०२

१५. खेलत है होरी मिलि साजन की टोरी (राग काफी)	हरिश्चन्द्र	हिन्दी	१०२
१६. देखो करमा सून फुन्द रही अजरी	किशनदास	"	१०३
१७. सखी नेमीजीसून मोहे मिलावोरी (रागहोरी) बानतराय		"	"
१८. दुरमति दूरि खड़ी रहो री	देवीदास	"	१०५
१९. अरज सुनो म्हारो अन्तरजामी	खेमचन्द	"	१०६
२०. जिनजी की छवि सुन्दर या मेरे मन भाई	×	"	अपूर्ण १०८

५४७४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ३-४७ । आ० ५×५ इंच । ले० काल सं० १८२१ । अपूर्ण ।

विशेष—पत्र संख्या २६ तक केशवदास कृत वैद्य मनोत्सव है । आधुर्वेद के नुसखे हैं । तेजरी, इकांतरा आदि के मंत्र हैं । सं० १८२१ में श्री हरलाल ने पावटा में प्रतिलिपि की थी ।

५४७५. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० १-५७ । आ० ५×५ इंच । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. आविपुराण	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	१-११८
२. चर्चासमाधान	भूधरदास	हिन्दी	११६-१३७
३. सूर्यस्तोत्र	×	संस्कृत	१३८
४. सामायिकपाठ	×	"	१३८-१४४
५. मुनीश्वरों की जयमाल	×	"	१४५-१४६
६. शक्तिनाथस्तोत्र	×	"	१४७-१४८
७. जिनपंजरस्तोत्र	कमलमलसूरि	"	१४९-१५१
८. भैरवाष्टक	×	"	१५१-१५६
९. अकलंककाष्टक	अकलंक	"	१५६-१५८
१०. पूजापाठ	×	"	१६०-१६७

५४७६. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० १६० । आ० ३×३ इंच । ले० काल सं० १८५७ फागुण सुदी ८ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. विधापहार स्तोत्र	धनञ्जय	संस्कृत	१-५
२. ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	"	

३. चित्तमणिपार्श्वनाथस्तोत्र	×	संस्कृत	
४. लक्ष्मीस्तोत्र	×	"	
५. चैत्यवन्दना	×	"	
६. ज्ञानपञ्चीसी	बनारसीदास	हिन्दी	२०-२४
७. श्रीपालस्तुति	×	"	२५-२८
८. विषाणहारस्तोत्रभाषा	अचलकीर्ति	"	२९-३१
९. चौबीसतीर्थद्वारस्तवन	×	"	३३-३७
१०. पंचसंगल	रूपचंद	"	३८-४७
११. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	४८-५९
१२. पद-मेरी रे लगानो जिनजी का नामसू	×	हिन्दी	६०
१३. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	"	६१-७०
१४. नेमीश्वर की स्तुति	भूधरदास	हिन्दी	७१-७२
१५. जकड़ी	रूपचंद	"	७३-७५
१६. "	भूधरदास	"	७६-८३
१७. पद- लीयो जाय तो लीजे रे भानो जिनजी को नाम सध भलो	×	"	८४-८५
१८. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	८५-८९
१९. घण्टाकर्णमंत्र	×	"	९०-९६
२०. तीर्थद्वारादि परिषय	×	"	९७-१६२
२१. वर्धनपाठ	×	संस्कृत	१६३-६५
२२. पारसनाथजी की निमाणी	×	हिन्दी	१६६-७७
२३. स्तुति	कनककीर्ति	"	१८०-८२
२४ पद-(बंनू श्रीजिनराय मनवच काय करानी)	×	"	

१४७७. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ७५ । आ० ३५३ इ३ । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा सामान्य ।

विशेष-गुटकाजीर्ण शीर्ण हो चुका है । अक्षर मिट चुके हैं ।

१ तत्त्वार्थसूत्र उमास्वामि संस्कृत

२. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	"	
३. एकीभावस्तोत्र	वाहिराज	"	
४. कल्याणमंदिरस्तोत्र	कुमुदचंद्र	"	
५. पार्व्वपाथस्तोत्र	X	"	
६. वर्धमानस्तोत्र	X	"	
७. स्तोत्र संग्रह	X	"	५६-७५

५४७८. गुटका सं० ६८ पत्र सं० १३-११५ । आ० २३×२३ इंच । भाषा-संस्कृत । अपूर्ण ।
दशा सामान्य ।

विशेष-नित्य पूजा एवं षोडशकारणादि भाद्रपद पूजाओं का संग्रह है ।

५४७९. गुटका सं० ६९ । पत्र सं० ४-१०५ । आ० ४×३ इंच ।

१. कनकावतीसी	X	हिन्दी	४-१३
२. त्रिकालचौबीसी	X	"	१४-१७
३. भक्तिपाठ	कनककीर्ति	"	१७-२०
४. तीसचौबीसी	X	"	२१-२३
५. पहेलियां	मारू	"	२४-६३
६. तीनचौबीसीरास	X	"	६४-६६
७. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	६७-७३
८. श्रीपाल बीनती	X	"	७४-७८
९. भजन	X	"	७९-८०
१०. नवकार बड़ी बीनती	ब्रह्मदेव	"	सं० १८४५ ८१-८२
११. राजुल पञ्चीसी	विनोदीलाल	"	८३-१०१
१२. नेमीश्वर का ग्याहला	लालचन्द	"	अपूर्ण १०१-१०५

५४८०. गुटका सं० १०० । पत्र सं० २-८० । आ० १०×६ इंच । अपूर्ण । दशा सामान्य ।

१. जिनपञ्चीसी	नवलराम	हिन्दी	२
२. आदिनाथपूजा	रामचंद्र	"	२-३
३. सिद्धपूजा	X	संस्कृत	४-५

४. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	संस्कृत	५-६	
५. जिनपूजाविधान (देवपूजा)	×	हिन्दी	७-१२	
६. छहदाला	द्यानतराय	"	१६-१८	
७. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	१३-१५	
८. तत्त्वार्थसूत्र	रमास्वामि	"	१५-२१	
९. सोलहकारणपूजा	×	"	२२-२४	
१०. दशलक्षणपूजा	×	"	२५-३२	
११. रत्नत्रयपूजा	×	"	३३-३६	
१२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा	×	हिन्दी	३७	
१३. नंदीश्वरद्वीपपूजा	×	संस्कृत	३७-३९	
१४. शास्त्रपूजा	×	"	४०	
१५. सरस्वतीपूजा	×	हिन्दी	४१	
१६. तीर्थङ्करपरिचय	×	"	४२	
१७. नरक-स्वर्ग के यंत्र गृह्वी आदि का वर्णन	✕	"	४३-५०	
१८. जैनशतक	भूधरदास	"	५१-५९	
१९. एकीभावस्तोत्रभाषा	"	"	६०-६१	
२०. द्वादशानुप्रेक्षा	×	"	६१-६३	
२१. दर्शनस्तुति	×	"	६३-६४	
२२. साधुवंदना	बनारसीदास	"	६४-६५	
२३. पंचमङ्गल	रूपचन्द	हिन्दी	६५-६६	
२४. जौगीरासो	जिनदास	"	६६-७०	
२५. चर्चामें	×	"	७०-८०	

५४८१. गुटका सं० १०१। पत्र सं० २-२१। आ० ८३×८३ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-चर्चा।

अपूर्ण। दशा-सामान्य। चौबीस ठाण का पाठ है।

५४८२. गुटका सं० १०२। पत्र सं० २-२३। आ० ५×४ इंच। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण। दशा-सामान्य। निम्न कवियों के पदों का संग्रह है।

क्र.	श्लोक	अर्थ	हिन्दी	पं.
१.	मूल क्यों गया जी म्हाते	×	हिन्दी	२
२.	जिन छवि पर जाऊँ मैं वारी	राम	"	२
३.	अंखिया लगी तीरे	×	"	२
४.	दृगनि सुख पायो जिनवर देखि	×	"	२
५.	लगन मोहे लगी देखन की	बुधजन	"	३
६.	जिनजी का ध्यान में मन लगि रह्यो	×	"	३
७.	प्रभु मिल्या दीवानी विछोवा कैसे किया सद्गो	×	"	४
८.	नहीं ऐसी जनम बारम्बार	नवलराम	"	४
९.	मानन्द मङ्गल आज हमारे	×	"	४
१०.	जिनराज भजो सोही जीतयो	नवलराम	"	५
११.	सुम पंथ लगे ज्यो होम भला	"	"	५
१२.	छाँडदे मनकी हो कुटिलता	"	"	५
१३.	सबन में दया है भर्म को मूल	"	"	६
१४.	दुख काहू नहीं दीजे रे भाई	×	"	६
१५.	मारण लाय्यो	नवलराम	"	६
१६.	जिभ चरणों चित लगाय मन	"	"	७
१७.	हे मां जा मिलिये भी नेमकवार	"	"	७
१८.	म्हारो लाय्यो प्रभु सँ नेह	"	"	८
१९.	या ही संग नेह लाय्यो है	"	"	८
२०.	यां पर वारी हो जिनराय	"	"	८
२१.	मो मन यां ही संग लाय्यो	"	"	८
२२.	धनि घड़ी ये भई देखे प्रभु नैना	"	"	८
२३.	कीर री पीर मोरी कासों कहिये	"	"	१०
२४.	जिनराय ध्यावो भवि भव से	"	"	१०
२५.	समी जाय जादो प्रति को समझावो	"	"	११
२६.	प्रभुजी म्हारी विनती अवधारो हो राज	"	"	११

६५४]

२७. ई' विष खेलिये हो चतुर नर	नवलराम	हिन्दी	१२
२८. प्रभु गुन गावो भविक जन	"	"	१२
२९. यो मन म्हारो जिनजी सूँ लायो	"	"	१३
३०. प्रभु चूक तकसीर मेरी माफ करो वै	"	"	१३
३१. दरसन करत प्रथ सब नसे	"	"	१३
३२. रे मन लोभिया रे	"	"	१४
३३. अस्त नृप वैरागे चित भीनो	"	"	१४
३४. देव दीन को दयाल जानि करण करण आयो	"	"	"
३५. गावो हे श्री जिन विकल्प छारि	"	"	"
३६. प्रभुजी म्हारो अरज सुनो कितलाय	"	"	१६
३७. ये शिक्षा कित लाई	"	"	१६-१७
३८. मैं पूजा फल बात सुनौ	"	"	१८
३९. जिन सुमरन की बार	"	"	"
४०. सामायिक स्तुति बंदन करि के	"	"	१९
४१. जिनन्दजी की रख रख नैन लाय	संतदास	"	"
४२. चेतो क्यों न जानी जिया	"	"	२०
४३. एक अरज सुनो साहब मोरी	छानतराय	"	"
४४. मो से अपना कर दवार रखि दीन तेरा	बुधजन	"	२०
४५. अपना रंग में रंग दमोजी साहब	×	"	"
४६. मेरा मन मधुकर अटक्यो	×	"	२१
४७. भैया तुम चोरी त्यागोजी	पारसदास	"	"
४८. वही २ पल २ छिन २	दौलतराम	"	"
४९. घट घट नटवर	×	"	२२
५०. मारग अपनी जोय सुझानी डोरे	×	"	"
५१. सुनि जीया रे चिरकाल रे सोयो	×	"	"
५२. जग इसिया रे भाई	मूधरदास	"	"

गुटका-संग्रह]

५३. आई सोही सुगुह बखानिरे	नवलराम	हिन्दी	२३
५४. हो मन जिनजी न क्यों नहीं रटे	"	"	"
५५. की परि इतनी मगहरी करी	"	"	अपूर्व

५४८३. गुटका सं० १०३ । पत्र सं० ३-२० । भा० ६×५ इञ्च । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५४८४. गुटका सं० १०४ । पत्र सं० ३०-१४४ । भा० ६×५ इञ्च । ने० काल सं० १७२८ कार्तिक

सुदी १५ । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

१. रत्नत्रयपूजा	×	प्राकृत	३०-३२
२. नन्दीश्वरद्वीप पूजा	×	"	३३-४७
३. स्नपनविधि	×	संस्कृत	४८-६०
४. क्षेत्रपालपूजा	×	"	६०-६४
५. क्षेत्रपालाष्टक	×	"	६४-६५
६. वन्देतान की जयमाला	×	"	६५-६६
७. पार्व्वनाथ पूजा	×	"	७०
८. पार्व्वनाथ जयमाल	×	"	७०-७३
९. पूजा धमाल	×	संस्कृत	७४
१०. चित्तमणि की जयमाल	सह्यायमल्ल	हिन्दी	७५
११. कलिकुण्डस्तवन	×	प्राकृत	७६-७८
१२. विद्यमान बीस तीर्थङ्कर पूजा	नरेन्द्रकीर्ति	संस्कृत	८२
१३. पद्मावतीपूजा	"	"	८३
१४. रत्नावली व्रतों की तिथियों के नाम	"	हिन्दी	८५-८७
१५. ढाल भंगल की	"	"	८८-८९
१६. जिनसहस्रनाम	भाषाधर	संस्कृत	८९-१०२
१७. जिनयज्ञादिविधान	×	"	१०२-१२१
१८. व्रतों की तिथियों का व्योरा	×	हिन्दी	१२१-१२६

५४८५. गुटका सं० १०५ । पत्र सं० ११७ । भा० ६×६ इञ्च ।

१. षट्शतवर्णांश्च बारह मासा	जनराज	हिन्दी	अपूर्ण	२४-४३
२. कवित्त संग्रह	×	"	"	४३-६१
	निम्नलिखित कवियों के नायक नायिका संबंधी कवित्त हैं।			
३. उपदेश पञ्चीसो	×	हिन्दी	अपूर्ण	६२-६३
४. कवित्त	मुखलाल	"	"	६६-६७

५४८६. गुटका सं० १०६ । पत्र सं० २४ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र है।

५४८७. गुटका सं० १०७ । पत्र सं० २०-६४ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७४८

वैशाख सुदी १४ । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. कृष्णरुक्मिणीबेलि हिन्दी गद्य टीका सहित । पृथ्वीराज हिन्दी २०-५४

लेखन काल सं० १७४८ वैशाख सुदी १४ । २० काल म० १६३७ । अपूर्ण ।

अन्तिम पाठ—

रमतां जगदीश्वरतरो रहसी रसमिथ्यावचन न तां सम है ।

सरस्वति रुक्मिणी तरिण सहचरि कहि या मुपैति यज झहे ॥ १० ॥

टीका—रहसि एकान्तई रुक्मणी साधई श्रीकृष्णजो तइ रमता क्रीडातां जे रस ते दृष्टि दीवा सरीस कही । पर ते वचन माहीं कूड नैमत मानउ साध मानिज्यौ । रुक्मणी सरस्वतीनी सहचरी । सरस्वती तरिण गुप्त बात कही मुक्तनई आपराउं जाणी ॥ जाणी सर्वदात कही तेहना मुख थकी सुणी तिमही ज कही ॥ १० ॥

रूप लक्षण गुण तरास वामोणि जहिवा समर्थक कुरा ।

जाणिया जिका सातिसामैं जणिया गोविंद राणि तरां गुण ॥ ११ ॥

टीका—रुक्मणि नउ रूप लक्षण गुण कहिवा भणि समर्थ कुरा समर्थ तर छई अपितु की नहि परमई । माहिर मतिइ अनुसार जिसा ज्याप्या तिस्या बन्ध माहि पूंथ्या कही । तरिण कारण हू ताहरउ बालक छू मों परि कृपा करिज्यौ ॥ ११ ॥

असु शिव नयन रस शशि वस्त्रर विजयदसमि रवि रिष वरणीत ।

किसन रुक्मणी नेलि कल्पतरु कीधी कमल ज कल्याण उत ॥ १२ ॥

टीका—अचल पर्वत सत्त्व रघु तम गुण ३ अग ६ शशिसुन्दरमा १ संवत् १६३७ धर अचल गुण रवि ससि संधि तात वीयउ जस ॥ करि श्री भरतार अवरो दिन रात कंठ करि श्रीफल भगति अपार बिषई श्री लक्ष्मी नउ भत्तर रुक्मणी कृष्णनउ श्री रुक्मणी जस करी भावना कीधी ए बेली अहो भगतो अवरो सांभलिउ रात दिन गलइ करउ श्री लक्ष्मी रूप फल पामइ ।

वेद बीज जल वयरा सुकवि जउ मंडीस धर ।
 पत्र दूहा गुण पुहपवास भोगी लिखमी वर ॥
 पसरी दीप प्रदीप अधिक गहरी या डवर ।
 मनमुजेरांति अंब फल पामिइ अंबर ॥
 विस्तार कोध छवि जुगी विमल धरणी किसन कहराहार धन ।
 अमृत बेलि पीयल अतइ रोपी कलियास तनुज ॥ ३१३ ॥

अर्थ—मूल वेद पाठ तीको बीज जल पाणी लिको कविमरा तिये वयरो करि जडमांडीस दड़ परिणइ ॥
 दूहा ते पत्र दूहा गुण ते फूल सुगन्ध वास भोगी भमर श्रीकृष्णजी बेलिइ मांकहइ करी विस्तरी जगत्र नइ विषै दीप प्रदीप ।
 ष दीवा थी अधिक अत्यन्त विस्तरी जिके मन सुधी एह नउ की जाणइ तीको इसा फल पामिइ । अंबर कहितां स्वर्ग
 नां मुख पांमे । विस्तार करी जगत्र नइ विषइ विमल कहिता निर्मल श्रीकिसनजी बेलि मा धरणी नइ कहस हार धन्य
 तिको पिरा अमृत रूपरागे बेलि पृथ्वी नइ लिखइ अविचल पृथ्वी नई ॥ विराज श्री कल्याण तम बेटा पृथ्वीराजइ कह्या ।
 इति पृथ्वीराज कृत कृषरा एकमणी बेलि संपूर्ण । सुरिण जग विमल वाचणार्थ । संवत् १७४८ वर्ष बैशाख
 मासे कीषत् पक्ष तिथि १४ अशुवासरे लिखतं उणिमरा नग्रे ॥ श्री ॥ रस्तु ॥ इति संगल ॥

२. कोकमंजरी	×	हिन्दी	५४
३. बिरहमंजरी	नंददास	"	५५-६१
४. नावनी	हेमराज	"	४६ पद्य है ६१-६७
५. नेमिराजमति बारहमासा	×	"	६७
६. पूज्याधलि	×	"	६६-८७
७. नाटक समयसार	बनारसीदास	"	८८-११४

५४८८. गुटका सं० १०७ क । पत्र सं० २३५ । आ० ५४४ इअ । विषय—पूजा एवं स्तोत्र ।

१. देवपूजाष्टक	×	संस्कृत	१-४
२. सरस्वती स्तुति	ज्ञानभूषण	"	४-६
३. श्रुताष्टक	×	"	६-७
४. गुरुस्तवन	शांतिदास	"	८
५. गुरुष्टक	आदिराज	"	९

६. सरस्वती जयमाल	ब्रह्मजिनदास	हिन्दी	१०-१२
७. गुरुजयमाला	"	"	१३-१५
८. लघुस्नपनविधि	×	संस्कृत	१६-२३
९. सिद्धचक्रपूजा	×	"	२४-३०
१०. कलिकुण्डपाईवर्नाथपूजा	यशोविजय	"	३१-३५
११. षोडशकारणपूजा	×	"	३५-३८
१२. दशलक्षणापूजा	×	"	३८-४२
१३. नन्दीश्वरपूजा	×	"	४३-४५
१४. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	४६-५६
१५. अर्हद्भक्तिविधान	×	"	५६-६२
१६. सम्यक्दर्शनपूजा	×	"	६२-६४
१७. सरस्वतीस्तुति	आशाधर	संस्कृत	६४-६६
१८. शानपूजा	×	"	६७-७१
१९. महर्षिस्तवन	×	"	७१-७३
२०. स्वस्त्ययनविधान	×	"	७३-७८
२१. चारित्रपूजा	×	"	७८-८१
२२. रत्नत्रयजयमाल तथा विधि	×	प्राकृत संस्कृत	८१-८१
२३. बृहदस्नपन विधि	×	संस्कृत	८१-११६
२४. ऋषिमण्डल स्तवनपूजा	×	"	११६-२६
२५. अष्टाल्लिकापूजा	×	"	१२६-५१
२६. विरदावली	×	"	१५२-६०
२७. दर्शनस्तुति	×	"	१६१-६२
२८. आराधना प्रतिबोधसार	त्रिमलेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	१६३-६६

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

श्री जिज्ञावरवासि रावेवि गुरु निर्गन्ध प्रणमेवी ।

कद्वं आराधना सुविचार संक्षेपे सारी धीर ॥ १ ॥

હો કાપક વયણ સવધારિ, હવિ ચાલ્યો તુમ ભવપારિ ।
 હો સુખદ કહું તુમ્મ મેજ, ધરી સમક્તિ પાલન એહુ ॥ ૨ ॥
 હવિ જિતવરદેવ આરાહિ, તૂં સિધ સમરિ મન માંહિ ।
 સુણિ જીવ દયા ધુરિ મર્મ, હવિ છાંડિ અનુણ કર્મ ॥ ૩ ॥
 મિથ્યાત કુ સંકા ટાલો, મણગુરુ વચનિ પાલો ।
 હવિ જ્ઞાન ધરે મન ધીર, લ્યો સંજમ દોહોલો વીર ॥ ૪ ॥
 ઉપગ્રાચિત કરિ વ્રત સુધિ, મન વચન કાય નિરોધિ ।
 તૂં કોવ માન માયા છાંડિ, પ્રાપુણ સૂં સિલિ માંડિ ॥ ૫ ॥
 હવિ કામો કમાવો સાર, જિમ પામો સુખ મળાર ।
 તું મંત્ર સમરે નવકાર, ધોણ તન કરે મવનાર ॥ ૬ ॥
 હવિ સવે પરિસહ જિરિ, અમંતર ધ્યાન દીપિ ।
 વેરાચ ધરે મન માહિ, મન માંકડ ગાડુ સાહિ ॥ ૭ ॥
 સુણિ દેહ મોચ સાર, મવલધો વયણ માં હાર ।
 હવિ મોજન પાંણિ છાંડિ, મન લેઈ મુગતિ માંડિ ॥ ૮ ॥
 હવિ છુણકણ પુટિ પાયુ, મનાસિ છાંડો કાય ।
 ઇંદ્રીય વસ કરિ ધીર, કુટંબ મોહ મેલહે વીર ॥ ૯ ॥
 હવિ મન મન માંડુ વાંધે, તૂં મરણ સમાધિ સાધિ ।
 જે સાધો મરણ સુનેહ, જ્ઞેયા સ્વર્ગ મુગતિય મરોમ ॥ ૧૦ ॥

×

×

×

અન્તિમ ભાગ

હવિ હંદિ જાણિ વિચાર, તણુ કહિહિ કિહિ સુ અપાર ।
 સિધા મણસણ દોલ્યા જાણ, સન્યાસ છાંડો પ્રાણ ॥ ૧૧ ॥
 સન્યાસ તણાં ફલ જોઈ, સ્વર્ગ મુદ્ધિ ફલિ મુલુ હોઈ ।
 વનિ આવક કોલ તૂં પામોઈ, જહી નિર્ઝાણ મુગતી ગામોઈ ॥ ૧૨ ॥
 જે મણિ સુણિન નરનારી, તે જાઈ મવવિ પારિ ।
 શ્રી વિમલેન્દ્રકીર્તિ કહો વિચાર, આરાધના પ્રતિવોધસાર ॥ ૧૩ ॥

इति श्री आराधना प्रतिबोध समाप्त

१६. पंचमेरूपूजा (बृहत्)	देवेन्द्रकीर्ति	संस्कृत	१७०-१८०
३०. अनन्तपूजा	ब्रह्मशान्तिदास	हिन्दी	१८०-१९९
३१. गणधरचलयपूजा	शुभचन्द्र	संस्कृत	१९९-२११
३२. पञ्चकल्याणकोद्यापन पूजा	भ. ज्ञानभूषण	"	अपूर्ण २११-३५

५४८६. गुटका सं० १८८ । पत्र नं० १२० । आ० ५×५ दक्ष । भाषा-हिन्दी । पूर्ण : दशा-जीर्ण ।

१. जिनसहस्रनामभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	१-२१
२. लघुसहस्रनाम	×	संस्कृत	२२-२७
३. स्तवन	×	अवधेश	अपूर्ण २८
४. पद	मनराम	हिन्दी	२९

सं० काल १७३५ यासोज बुद्धि ६

चेतन इह घर नाही तेरो ।

घटपटादि नैनन गोबर जो, नाटक धुदगल केरी ॥ १ ॥

तात मात कामनि सुत बंधु, करम बंध को धेरी ।

करि है गौन आननति कीं जब, कोई नहीं आवत नेरी ॥ १ ॥

अमल अमल संसार गहन वन, कीथी आनि बसेरी ।

मिथ्या मोह उधै तैं समझो, इह सदन है मेरी ॥ २ ॥

सदगुरु वचन जोइ घट दीपक, मिटै अनादि अवेरी ।

असंख्यात परदेस भ्यान मथ, ज्यौ जानऊं नज डेरी ॥ ३ ॥

नाना विकल्प त्यागि आपकी, आप आप महि हेरी ।

जौ मनराम अचेतन परसौ, सहज होइ निवेरी ।

५. पद-मो प्रिय विद्वानंद परबीन	मनराम	हिन्दी	३०
६. चेतन समझि देखि घरमाहि	"	"	अपूर्ण ३१
७. कै परमेश्वरी की प्ररचा निधि	"	"	३२
८. जयति आदिनाथ जिनदेव ध्यान पाऊं	×	"	३३
९. सम्यक्त्व पणविवि सिरिपास हो	"	"	३४-३५

१०. पंचमयति वेलि	हर्षकीर्ति	हिन्दी	सं० १६८३ श्रावण अपूर्णि
११. पंच सधावा	×	"	"
१२. मेघकुमारगीत	पूनों	हिन्दी	४०-४२
१३. भक्तामरस्तोत्र	हेमराज	"	४६
१४. पद-अब मोहो कछुन उपाय	रूपचंद	"	४७
१५. पंचपरमेष्टीस्तवन	×	प्राकृत	४७-४८
१६. शान्तिपाठ	×	संस्कृत	५०-५२
१७. स्तवन	भासाधर	"	५२
१८. वारह भावना	कविभालु	हिन्दी	
१९. पंचमंगल	रूपचंद	"	
२०. जकड़ी	"	"	
२१. "	"	"	
२२. "	"	"	
२३. "	दरिगह	"	

सुनि सुनि जियरा रे तू त्रिभुवन का राउ रे ।

तू तजि परंपरवारै चेतसि सहज सुभाव रे ॥

चेतसि सहज सुभाव रे जियरा परस्परि मिलि क्या राच रहे ।

अप्पा पर जाप्या पर अप्पाणा चउगइ दुख्य अणाइ सहे ॥

अवसो गुण कीजै कर्म हं खोजै सुगह न एक उपाव रे ।

दंसरा राणा चरणमय रे जिउ तू त्रिभुवन का राउ रे ॥ १ ॥

करमनि वसि पडिया रे प्रणया मूढ़ विभाव रे ।

मिथ्या मद नडिया रे मोह्या मोहि अणाइ रे ॥

मोह्या मोह अणाइ रे जिय रे मिथ्यामद नित्त मांनि रह्या ।

पड पडिहार खडग मदिरावत जानावरणी आदि कह्या ॥

हडि चित्त कुलाल भड्यारौण अष्टाउदोघे चताई रे ।

रे जीवड़े करमनि वसि पडिया प्रणया मूढ़ विभाव रे ॥ २ ॥

तू मति सोवहि न चीता रे बैरिन मै काहा वास रे ।
 भवभव दुखदाय करै तिनका करै विसास रे ॥
 तिनका करहि विसास रे जिवडे तू मूढ़ा नहि निमषु डरे ।
 जम्मरा मररा जरा दुखदायक तिनस्यो तू नित नेह करे ॥
 आपे भ्याता आपे दिष्टा कहि समझाऊँ कास रे ।
 रे जीउ तू मति सोवहि न चीता बैरिन मै काहावास रे ॥
 ते जगसाहि जागे रे रहे अन्तरत्यवलाइ रे ।
 केवल विगत भयारे, प्रगटी जोति सुभाइ रे ॥
 प्रगटी जोति सुभाइ रे जीवडे मिय्या रँणि विहरणी ।
 स्वरभेद कारण जिन्ह मिलिया ते जग हूषा वाली ॥
 सुगुरु सुधर्म पंच परमेष्ठी तिनकै लागी पाय रे ।
 कहै दरिगढ़ जिन त्रिभुवन सेवै रहे अंतर त्यवलाइ रे ॥ ४ ॥

२४. बल्लारामन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	ले० काल १७३५ आसोज सुदी ६
२५. निर्वाणकाण्ड गाथा	×	प्राकृत	
२६. पूजा संग्रह	×	हिन्दी	

५४६०. गुटका सं० १०६ । पत्र सं० १५२ । आ० ६×४ इञ्च । ले० काल १८३६ सावण सुदी ६ ।
 अपूर्ण । दशा-जीर्णशीर्ण ।

विशेष-लिपि विकृत एवं अशुद्ध है ।

१. रुनिश्वरदेव की कथा	×	हिन्दी	११४
२. कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	"	१५-२४
३. नेमिनाथ का बारहमासा	×	" अपूर्ण	२५-२६
४. जकड़ी	नेमिचन्द	"	२७
५. सवेया (मुख होत शरीरको दाहिने भागि जाइ) ×		"	२८
६. कवित्त (श्री जिनराज के ध्यान को उछाह मोहे लागे)		"	२९
७. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	३०-३३

★ ८. स्तुति (आयम प्रभु को जब भयो)	×	हिन्दी	३४-३६
९. बारहमासा	×	"	३७-३८
१०. पद व भजन	×	"	४०-४७
११. पार्श्वमाथपूजा	हर्षकीर्ति	"	४८-४९
१२. ग्राम नीलू का भगड़ा	×	"	५०-५१
१३. पद-काँइ समुद विजयसुत सार	×	"	५२-५७
१४. गुरुओं की स्तुति	भूधरदास	"	५८-५९
१५. दर्शनपाठ	×	संस्कृत	६०-६३
★ १६. विनती (त्रिभुवन गुरु स्वामीजी)	भूधरदास	हिन्दी	६४-६६
१७. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	६७-६८
१८. पद-मेरा मन बस कीना जिनराज	×	हिन्दी	७०
१९. मेरा मन बस कीनो महावीरा	हर्षकीर्ति	"	७१
२०. पद-(नैना सफल भयो प्रभु दरसरा पाय)	रामदास	"	७२
२१. चलो जिनन्द संदस्या	×	"	७२-७३
२२. पद-प्रभुजी तुम में चरण शरण गहो	×	"	७४
२३. ग्रामेर के राजाओं के नाम	×	"	७५
२४. " "	×	"	७६
२५. विनती-बोल २ भूलो रे भाई	नेमिचन्द्र	"	७८-७९
२६. पद-चेतन सानि ले बाल	×	"	७९
★ २७. मेरा मन बस कीनो जिनराज	×	"	८०
२८. विनती-बंदू श्री अरहन्तदेव	हरिसिंह	"	८१-८२
२९. पद-सेवक हूं महाराज तुम्हारे	दुर्गाचन्द्र	"	८२-८४
३०. मन धरी वे होत उछावा	×	"	८४-८६
३१. धरम का बोल बजाये सूरजी	×	"	८७
३२. अब मोहि तारोजी जगद्गुरु	मनसाराज	"	८८
३३. लागो दौर लागो दौर प्रभुजी का ध्यानमें मन । पूरणदेव		"	८८
३४. आसरा जिनराज तेरा	×	"	८८

३५. कु जाणे ज्यों तारोजी	×	हिन्दी	८६
३६. तुम्हारे दर्श देखत ही	जोधराज	"	६०
३७. सुनि २ रे जीब मेरा	मनसारास	"	६०-६१
३८. भरमत २ संसार चतुर्गति दुख सहा	×	"	६१-६३
३९. श्रीनेमकुमार हमको क्यों न उतारो पार	×	"	६५
४०. आरती	×	"	६६-६७
४१. पद—विनती कराछो प्रभु मानो जी	किशनगुलाब	"	६८
४२. ये जी प्रभु तुम ही उतारोगे पार	"	"	६९
४३. प्रभुजी मोह्या छै तन मन मारा	×	"	६९
४४. बंदू श्रीजिनराज	कनककीर्ति	"	१००-१०१
४५. बाजा बजध्या प्यारा २	×	"	१०२
४६. सफल घड़ी ही प्रभुजी	खुशालचन्द	"	१०३
४७. पद	देवसिंह	"	१०४-१०५
४८. चरखा चलता नाही रे	भूधरदास	"	१०६
४९. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत	१०७-१७
५०. चौबीस तीर्थकर स्तुति	"	हिन्दी	११६-२१
५१. मेघकुमारवार्ता	"	"	१२१-२४
५२. शनिदशर की कथा	"	"	१२५-४१
५३. कर्मपुड की विनती	"	"	१४२-४३
५४. पद—भरज करुं छूं वीतराग	"	"	१४६-४७
५५. स्फुट पाठ	"	"	१४८-५३

५४६१. गुटका सं० ११० । पत्र सं० १४३ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी संस्कृत ।

१. निरुपपन्न	×	संस्कृत	१-२६
२. मोक्षशास्त्र	उमास्वामि	"	२६-४६
३. भक्तामरस्तोत्र	आ० मानतुंग	"	५०-५८
४. पंचमंगल	रूपचन्द	"	५८-६८

५. कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	६८-७५
६. पूजासंग्रह	×	"	७५-१०२
७. विनतीसंग्रह	देवाग्रह	"	१०२-१४३

५४६२. गुटका सं० १११ । पत्र सं० २८ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । पूर्ण । दया—मानान्य

१. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	१-६
२. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	११
३. चरचा	×	प्राकृतहिन्दी	११-२६

विशेष—“पुस्तक भक्तामरजी की पं० लिखमीचन्द रैनवाल हाता की छै । मिति चैत सुदी ६ संवत् १९५४ का में मिली मार्कट राज श्री राठीद्वी की सू' पंवांनू ।” यह पुस्तक के ऊपर उल्लेख है ;

५४६३. गुटका सं० ११२ । पत्र सं० १५ । आ० ६×६ इंच । भाषा—संस्कृत । अर्ध ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५४६४. गुटका सं० ११३ । पत्र सं० १६-२२ । आ० ६३×५ इंच । अर्ध । दया—मानान्य ।

अथ डोकरी अर राजा भोज की वार्ता लिख्यते । पत्र सं० १८-२० ।

डोकरी ने राजा भोज कहा डोकरी हे राम राम । बीरा राम राम । डोकरी यो मारण कर्ता जाय छै । बीरा ई मारण परथी आई अर परथी गई ॥ १ ॥ डोकरी मेहे बटाऊ हे बटाऊ । ना बीरा थे बटाऊ नाही । बटाऊ तो संसार मांही दोय और ही छै ॥ एक तो चांद अर एक सूरज ॥ २ ॥ डोकरी मेहे राजा हे राजा ॥ ना बीरा थे तो राजा नाही । राजा तो संसार में दोय और ही । एक तो अन्न अर एक पाणी ॥ ३ ॥ डोकरी मेहे चोर हे चोर । ना बीरा थे चोर ना । चोर तो संसार में दोय और ही छै । एक नेत्र चोर और एक मन चोर छै ॥ ४ ॥ डोकरी मेहे तो हलवा हे हलवा । ना बीरा थे तो हलवा नाही ॥ हलवा तो संसार में दोय और ही छै । कोई पराये घर बसत मांगिवा जाइ उका घर में छै परि नट जाय सो हलवा ॥ ५ ॥ डोकरी नू माहा के माता हे माता । ना बीरा माता तो दोय और ही छै । एक तो उदर मांही सू' काढ़े सो माता । दूसरी घाय माता ॥ ६ ॥ डोकरी मेहे ते हारचा हे हारचा । ना बीरा थे क्या ने हारचो । हारचो तो संसार में तांन और ही छै । एक तो मारण चालतो हारचो । दूसरो बेटी जाई सो हारचो तांसरो जैकी भोडी अस्त्री होइ सो हारचो ॥ ७ ॥ डोकरी मेहे बापडा हे बापडा । ना बीरा थे बापडा नाही । बापडा तो व्यारा और छै । एक तो गऊ को जायो बापडो । दूसरी छवाली को जायो बापडो । तीसरो जै की माता जनमता ही मर गई सो बापडो । चौथा बामण बाप्या की बेटी विधवा हो जाय सो बापडो ॥ ८ ॥ डोकरी आपा मिला हे

मिला । बीरा मिलवा बाला तो संसार में व्यापि और ही छे । जैको बाप विरथा होसी सो बां मिलसी । अर जे को वेदा परदेश सून आओ होसी सो बां मिलसी । दूसरो सांवरण भादवा की मेह बरस सी सो समन्दर सून । तीसरो भाएज की भात पैराबा जासी सो बी मिलसी । चौथा स्त्री पुरुष मिलसी । डोकरी जाप्या हे जप्या । भरिया कहे न उजलेउ भलभी जावा । गुटका आदी पारण लोकाउ जगता ॥ १० ॥

॥ इति डोकरी राजा भोज की वार्ता सम्पूर्णा ॥

५४६५. गुटका सं० ११४ । पत्र सं० ६-७२ । आ० ६३×५३ इंच ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजा संग्रह है ।

५४६६. गुटका सं० ११५ । पत्र सं० १६८ । आ० ६×५ इंच । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण । दशा—सामान्य

विशेष—पूजा संग्रह, जिनयज्ञकल्प (आशाधर) एवं स्वयंभूस्तोत्र का संग्रह है ।

५४६७. गुटका सं० ११६ । पत्र सं० १६६ । आ० ६×५ इंच । भाषा—संस्कृत । पूर्ण । दशा—जीर्ण ।

विशेष—गुटके में निम्न पाठ उल्लेखनीय हैं ।

४. भुवनकीर्ति गीत

बृत्तराज

हिन्दी

१२-१४

आजि बढाउ गुणहु सहेली महु मनु बिधसइ जि सहलीए ।

पाहि अनन्त नित कोटिहि सारिहि गुह गुरु मुहु गुरु वेदहि सुकरि रलीए ॥

करि रली बन्दहु सखी मुहु गुरु लबधि गोदम सम सरै ।

जमु देखि दरभरा दलहि भवदुख होइ नित नवनिधि घरे ॥

कूर चन्दन अवर केसरि आणु भावन भाव ए ।

श्रीभुवनकीर्ति चरण परामोह सखी आज बढाव हो ॥ १ ॥

तेरह बिधि चारित प्रणिपात दिनकर दिनकर जिम तपि सोहइ ए ।

सर्वांगि भासिउ धर्म सुगाव वाणी हो वाणी भवु मन मोहइ ए ।

मोहन्ति वाणी सदा भवि सुनु ग्रन्थ आगम भारए ।

षट् द्रव्य अरु पञ्चास्तिकाया सततत्न पयासए ॥

बाबीस परिग्रह सहइ अंगिहं गछव मति नित गुणनिधो ।

श्रीभुवनकीर्ति चरण परामि मु चारितु तनु तेरह विधे ॥ २ ॥

मूल गुणहं अठाइसइ धारइए मोहए मोहु महाभटु ताडियो ए ।

रतिपाति तितु बंति ह महिइउ पुणु कोवडुए कोवडुकरि तिहि रालीयो ए ॥

रालियो जिमि कं सैं करिहि वनउ करि हम बोलइ ।
 गुरु लियाल मेरह जिउअ जेगमु पवरण भइ किम डोलए ।
 जो पंच विषय बिरनु चित्तिहि कियउ खिउ कम्मह तरु ।
 श्री भुवनकीर्ति चरण प्रणमइ धरइ अठाइस मूलेगुणा ॥ ३ ॥
 दस लाक्षण धर्म निजु धारि कु संजमु संजमु भसगु बनिए ।
 सत्रु मित्रु जो सम किरि देखई गुरनिरगंधु महा मुनीए ॥
 निरमंधु गुरु मद अद्दु परिइरि सवय जिय प्रतिपालए ।
 मिथ्यात तम निहँए दिन म जैराधर्म उजालए ॥
 तेरअवतहं अखल चित्रहं कियउ सकयो जम ।
 श्री भुवनकीर्ति चरण प्रणमउ धरइ दशलक्षिण धर्म ॥ ४ ॥
 गुर तरु संच कलिउ चितामसि दुहिए दुहि ।
 महो धरि धरि ए पंच सवद वाजहि उद्धरंगि हिए ॥
 भावहि ए कामणि मधुर सरे अति मधुर सरि गावति कामणि ।
 जिएहं मन्दिर अवही अष्ट प्रकार हि करहि पूजा कुसमनाल चढ़ावहि ॥
 बूचराज भणि श्री रत्नकीर्ति पाटिउ दयोसह गुरो ।
 श्री भुवनकीर्ति भासीरवादहि संधु कलियो गुरतरो ॥

॥ इति आचार्य श्री भुवनकीर्ति गीत ॥

५. नाडी परीक्षा	×	संस्कृत	१५-१८
६. आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	१६-१०६
७. पार्श्वनाथस्तवन	समयराज	"	१०७

सुन्दर सोहसा गुरा निलउ, जग जीवण जिण चन्दोजी ।
 मन मोहन महिमा निलउ, सदा २ चिरनंदो जी ॥ १ ॥
 जेसलमेरु बुहारिए पाम्यउ परमानन्दोजी ।
 पास जिरोमुर जग धणी फलिमो गुरतरु कन्दोजी ॥ २ ॥ जे० ॥
 मणि माणिक मोती जखउ कचणरूप रसालो जी ।
 सिखर सेहर सोहतउ पूनिम ससिदल भालोजी ॥ ३ ॥ जे० ॥

निरमल तिलक सोहमगुड जिन मुख कमल रिसालोजी ।
 वानों कुण्डल दीपतां भिक भिग भाक ममालोजी ॥ ४ ॥ जे० ॥
 कंठि मनोहर कंठिलउ उरि वारि नव सिर हारोजी ।
 बहिर खवहि भला करता भव भव कारोजी ॥ ५ ॥ जे० ॥
 मरकत सलिल तनु दीपती मोहन सूरति सारोजी ।
 सुख सोहग संवद मिलइ जिएवर नाम अपारोजी ॥ ६ ॥ जे० ॥
 इन परि पास जियोसरु भेटयउ कुल सिरगारोजी ।
 जिलाचन्द्र सूरि पसाउ लइ समयराज गुलकारोजी ॥ ७ ॥ जे० ॥

॥ इति श्री पार्श्वनाथस्तवन समाप्तोऽयं ॥

५४६८. गुटका सं० ११७ । पत्र सं० ३५० । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण ।

दशा सामान्य ।

विशेष— विविध पाठों का संग्रह है । चर्चाएं पूजाएं एवं प्रतिष्ठादि विषयों में संबंधित पाठ हैं ।

५४६९. गुटका सं० ११८ । पत्र सं० १२६ । आ० ६×४ इंच ।

१. शिक्षा चतुष्क	नवलराम	हिन्दी	५
२. श्री जिनवर पद बन्दि के जी	वल्लभराम	"	५-७
३. अरहंत चरनचित्त लाज	रामविश्व	"	६-१०
४. चेतन हो तेरे परम निधान	जिनदास	"	११-१२
५. चैत्यवंदना	सर्वलचन्द्र	संस्कृत	१२-१३
६. कल्याणक	पद्मनंदि	"	२१
७. पद—आजि दिवसि धान लेखे लेखवा	रामचन्द्र	हिन्दी	३७
८. पद—प्रातःभयो सुमरि देव	जगराम	"	५३
९. पद—सुफलघड़ीजी प्रभु	सुशालचन्द्र	"	७५
१०. निर्वाणभूमि मंगल	विश्वभूषण	"	८६-९०

संवत् १७२६ में भुसावर में पं० केसरीसिंह ने लिखा ।

११. पञ्चमगतिवेलि

हर्षकीर्ति	हिन्दी	११५-१८

रचना सं० १६८३ प्रति लिपि सं० १८३०

५५००. गुटका सं० ११६ । पत्र सं० २५१ । आ० ६३×६ इञ्च । ले० काल सं० १८३० असाढ़ सुदी ८ । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—पुराने घाट जयपुर में कृष्णभ देव चैत्यालय में रतना पुजारी ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । इसमें कवि बालक भूत सीता चरित्र हैं जिसमें २५२ पद्य हैं । इस गुटके का प्रथम तथा मध्य के अन्य कई पत्र नहीं हैं ।

५५०१. गुटका सं० १२० । पत्र सं० १३३ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय संग्रह । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. रविचतुश्रया

जयकीर्ति

हिन्दी २-३ ले० काल सं० १७६३ पौष सु० ८

प्रारम्भ—

सकल जिनेश्वर मन धरी सरसति चित ध्वाज ।

सद्गुरु चरण कमल नमि रविचतु गुरु गज ॥ १ ॥

व.णारसी पुरी सोभती मतिसागर तह साह ।

सात पुत्र सुहामणा दीठे टाले दाह ॥ २ ॥

मुनिवादि सेठे लीयो रविचतु सार ।

सांभालि कहूँ बहासा कीया व्रत नंदो अपार ॥ ३ ॥

नेह थी धन कण सहृगयो दुरजीयो थयो सेठ ।

सात पुत्र चाल्या परदेश अजोध्या पुरसेठ ॥ ४ ॥

अन्तिम—

जे नरनारी भाष सहित रविनी व्रत कर सी ।

त्रिभुवन ना फल ने लही शिव रमनी वरसी ॥ २० ॥

नदी तट गच्छ विद्यामणी मूरी रायरत्न मुभूषन ।

जयकीर्ति कही पाय नमी काष्ठासंघ गति दूषण ॥ २१ ॥

इति रविचतु कथा संपूर्ण । इन्दौर मध्ये लिपि कृत ।

ले० काल सं० १७६३ पौष सुदी ८ पं० दयाराम ने लिपी की थी ।

२. धर्मसार चौपई

पं० शिरोमणि

हिन्दी

३-७३

२० काल १७३२ । ले० काल १७६४ अवन्तिका पुरी में श्रीदयाराम ने प्रतिलिपि की ।

३. विषाणहार स्तोत्रभाषा	अचलकीर्ति	हिन्दी	८५-८८
४. दससूत्र अष्टक	×	संस्कृत	८९-९०

दयाराम ने सूरत में प्रतिलिपि की थी । सं० १७६४ । पूजा है ।

५. विषाणिलालाकाछन्द	श्रीपाल	संस्कृत	९१-९३
६. गद—येई येई येई नृत्यति अमरी	कुमुदचन्द्र	हिन्दी	९७
७. गद—प्रात समै सुमरो जिनदेव	श्रीपाल	"	९७
८. पार्श्वेविनती	ब्रह्मनाथ	"	९८-९९
९. कवित्त	ब्रह्मगुलाल	"	१२५

गिरनार की यात्रा के समय सूरत में लिपि किया गया ।

५५०२. गुटका सं० १२१ । पत्र सं० ३३ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विशेष-विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

५५०३. गुटका सं० १२२ । पत्र सं० १३० । आ० ५३×४३ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत ।

विशेष-तीन खोबीसी नाम, दर्शनस्तोत्र (संस्कृत) कल्याणमंदिरस्तोत्र भाषा (बनारसीदास) भक्तामर स्तोत्र (मानतुंगाचार्य) लक्ष्मीस्तोत्र (संस्कृत) निर्वणिकाण्ड, पंचमंगल, देवपूजा, सिद्धपूजा, सोलहकारण पूजा, पच्चीसो (नवल), पार्श्वनाथस्तोत्र, सूरत की बारहलंडी, बाईस परीपह, जैनशतक (भूधरदास) सामायिक टीका (हिन्दी) आदि पाठों का संग्रह है ।

५५०४. गुटका सं० १२३ । पत्र सं० २९ । आ० ६×६ इञ्च भाषा-संस्कृत हिन्दी । दशा-जीर्णशर्णी ।

१. भक्तामरस्तोत्र ऋद्धि मंत्र सहित	×	संस्कृत	२-१८
२. फल्यविधि	×	"	१८-२२
३. जैनपच्चीसी	नवलराम	हिन्दी	२२-२९

५५०५. गुटका सं० १२४ । पत्र सं० ६६ । आ० ७×६ इञ्च ।

विशेष-पूजाओं एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५५०६. गुटका सं० १२५ । पत्र सं० ५६ । आ० १२×४ इञ्च । पूर्ण । सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

१. कर्म प्रकृति चर्चा	×	हिन्दी	
२. जीवीसठाणा चर्चा	×	"	

३. चतुर्दशमार्गणा चर्चा	×	हिन्दी
४. द्वीप समुद्रों के नाम	×	"
५. देशों (भारत) के नाम	×	हिन्दी

१. अंगदेश । २. बंगदेश । ३. कर्लिंगदेश । ४. तिलगदेश । ५. राष्ट्रदेश । ६. लाट्टदेश ।
 ७. कर्णाटदेश । ८. मेदवाट्टदेश । ९. वैराट्टदेश । १०. गौसदेश । ११. चौरुदेश । १२. द्राक्षिणदेश । १३. महाराष्ट्र-
 देश । १४. सौराष्ट्रदेश । १५. कासमोरदेश । १६. क्षीरदेश । १७. महाक्षीरदेश । १८. मण्डदेश । १९. सूरसेनुदेश ।
 २०. कावेरदेश । २१. कम्बोजदेश । २२. कमलदेश । २३. उत्करदेश । २४. करहाट्टदेश । २५. कुरुदेश ।
 २६. क्काणदेश । २७. कच्छदेश । २८. कौसिकदेश । २९. सकदेश । ३०. मयानकदेश । ३१. कोसिकदेश । ३२.
 ३३. कारुतदेश । ३४. कानूतदेश । ३५. कच्छदेश । ३६. महाकच्छदेश । ३७. भोटदेश । ३८. महाभोटदेश ।
 ३९. कीटिकदेश । ४०. केकिकदेश । ४१. कोल्लगिरिदेश । ४२. कामरुतदेश । ४३. कुण्कुणदेश । ४४. कुंसलदेश ।
 ४५. कलकूटदेश । ४६. करकंटदेश । ४७. केरलदेश । ४८. खसदेश । ४९. खर्परदेश । ५०. खेटदेश । ५१. बिल्लर-
 देश । ५२. वेदिदेश । ५३. जालंधरदेश । ५४. टंकण टक्क । ५५. मोडियारदेश । ५६. नहालदेश । ५७. तुङ्गदेश ।
 ५८. लायकदेश । ५९. कौसलदेश । ६०. दशार्णदेश । ६१. दण्डकदेश । ६२. देशसभदेश । ६३. नेपालदेश । ६४. नर्तक-
 देश । ६५. पञ्चालदेश । ६६. पल्लवदेश । ६७. पूंढदेश । ६८. पाण्ड्यदेश । ६९. प्रत्यग्रदेश । ७०. अंबुददेश । ७१. वसु-
 देश । ७२. गंभीरदेश । ७३. महिष्मकदेश । ७४. महोदयदेश । ७५. मुरण्डदेश । ७६. मुरलदेश । ७७. मरुस्थलदेश ।
 ७८. मुद्गरदेश । ७९. मंगनदेश । ८०. मल्लवर्तदेश । ८१. पवनदेश । ८२. आरामदेश । ८३. राट्टकदेश । ८४.
 ब्रह्मोत्तरदेश । ८५. ब्रह्मावर्तदेश । ८६. ब्रह्माण्डदेश । ८७. बाहकदेश । विषेहदेश । ८८. वनवासदेश । ८९. वनायुक्त-
 देश । ९०. वाल्हाकदेश । ९१. वल्लवदेश । ९२. अवन्तिदेश । ९३. वहिहदेश । ९४. सिंहलदेश । ९५. सुह्यदेश ।
 ९६. सुपरदेश । ९७. सुहृददेश । ९८. अस्मकदेश । १००. हृणदेश । १०१. हूर्मकदेश । १०२. हूर्मजदेश ।
 १०३. हंसदेश । १०४. हूहकदेश । १०५. हेरकदेश । १०६. वीरादेश । १०७. महावीरादेश । १०८. भट्टीयदेश ।
 १०९. गोप्यदेश । ११०. गांडाकदेश । १११. गुजरातदेश । ११२. पारसकुलदेश । ११३. शवालक्षदेश ।
 ११४. कोलवदेश । ११५. शाकंभरिदेश । ११६. कनउजदेश । ११७. आदनदेश । ११८. उखीविसदेश । ११९. नीला-
 वरदेश । १२०. गंगापारदेश । १२१. संजारादेश । १२२. कनकगिरिदेश । १२३. नवसारिदेश । १२४. भोभिरिदेश ।

६. क्रियावाकियों के ३६३ भेद	×	हिन्दी

❧नोट— यह नाम गुटके में खाली छोड़ा हुआ है ।

७. स्फुट कवित्त एवं पद्य संग्रह	×	हिन्दी संस्कृत
८. द्वादशानुमेक्षा	×	संस्कृत
९. सुक्तावलि	×	ले० काल १८३६ आबराहम बुद्धा १०
१०. स्फुट पद्य एवं मंत्र आदि	×	हिन्दी

५५०७. गुटका सं० १२६। पत्र सं० ४५। आ० १०। ४५ इञ्च। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-चर्चा
विशेष—चर्चाओं का संग्रह है।

५५०८. गुटका सं० १२७। पत्र सं० ३३। आ० ७५ इञ्च।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

५५०९. गुटका सं० १२७ क। पत्र सं० ५५। आ० ७५ इञ्च।

१. श्रीघरबीज	×	संस्कृत	१-१६
२. लघुवाचणी	×	"	१७-३९
विशेष—वेणुवधर्म। ले० काल सं० १८०७			
३. ज्योतिर्व्यटसमाला	श्रीपति	संस्कृत	४०-५१
४. मारणी	×	हिन्दी	५१-५५

ग्रहों को देखकर वर्षा होने का योग

५५१०. गुटका सं० १२८। पत्र सं० ३-६०। आ० ७५ इञ्च। भाषा-संस्कृत।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

५५११. गुटका सं० १२९। पत्र सं० ८-२४। आ० ७५ इञ्च। भाषा-संस्कृत।

विशेष—क्षेत्रपालस्तोत्र, लक्ष्मीस्तोत्र (सं०) एवं पञ्चमङ्गलपाठ हैं।

५५१२. गुटका सं० १३०। पत्र सं० ६८। आ० ६५ इञ्च। ले० काल १७५२ आबराहम बुद्धा १०।

१. चतुर्दशतीर्थस्नानपूजा	×	संस्कृत	१-५४
२. चौबीसदण्डक	दीनतराम	हिन्दी	५५-६७
३. पीठप्रबालन	×	संस्कृत	६८

५५१३. गुटका सं० १३१। पत्र सं० १४। आ० ७५ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह।

५५१४. गुटका सं० १३२। पत्र सं० १४-४१। आ० ६५ इञ्च। भाषा-हिन्दी।

१. पञ्चासिका	त्रिभुवनचन्द	हिन्दी	ले० काल १८२६	१५-२२
२. स्तुति	×	"		२३-२३
३. दोहाशतक	रूपचन्द	"		२४-३८
४. स्फुटदोहे	×	"		३४-४१

५५१५. गुटका सं० १३३। पत्र सं० १२१। आ० ५३×४ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी।

विशेष—छहडाला (ज्ञानतराय), पंचमङ्गल (रूपचन्द), पूजायें एवं तत्त्वार्थसूत्र, भक्तामरस्तोत्र आदि।
भा संग्रह है।

५५१६. गुटका सं० १३४। पत्र सं० ४१। आ० ५३×४ इंच। भाषा-संस्कृत।

विशेष—शांतिनाथस्तोत्र, स्कन्दपुराण, भगवद्गीता के कुछ स्थल। ले० काल सं० १८६१ माघ सुदी ११।

५५१७. गुटका सं० १३५। पत्र सं० १३-१३४। आ० ३३×४ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—पंचमङ्गल, तत्त्वार्थसूत्र, आदि सामान्य पाठों का संग्रह है।

५५१८. गुटका सं० १३६। पत्र सं० ४-१०८। आ० ८३×२ इंच। भाषा-संस्कृत।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र, अष्टक आदि हैं।

५५१९. गुटका सं० १३७। पत्र सं० १६। आ० ६×४३। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण।

१. मोरचिच्छधारी (कृष्ण) के कवित्त धर्मदास, कपोत, विचित्र देव। हिन्दी ३ कवित्त हैं।

२. वाजिदजी के अष्टित्त वाजिद " ३ कवित्त हैं।

वाजिद के कवित्तों के ६ अंग हैं। जिनमें ६० पद्य हैं। इनमें से विरह के अंग के ३ छन्द नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं।

वाजिद विपत्ति वेहद कहो कहां तुझ सों। सर कमान की भीत करी पीव भुझ सों।

पहले प्रपनी ओर तीर को तान ही, परि हां पीछे डारत दूरि जगत सब जानई ॥२॥

त्रिन बालम वेहाल रहौ क्यों जीव रे। जरद हरब सी भई बिना तोहि पीवरे।

सधिर मांस के सास है क चाम है। परि हां जब जीव लागी पीव और क्यों देखना ॥२५॥

कहिये धुनिये राम और न बित रे। हरि ठाकुर को ध्यान स धरिये नित रे।

जीव बिलम्ब्यां पीव दुहाई राम की। परि हां सुख संपति वाजिद कहो क्यों काम की ॥२६॥

५५२०. गुटका सं० १३८। पत्र सं० ६। आ० ७×४३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। पूर्ण
एव शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष—मुक्तावली व्रतकथा भाषा।

५५२१. गुटका सं० १४० । पत्र सं० ८ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । ले० काल सं० १६३५ असाढ सुदी १५ । पूर्ण एवं शुद्ध दशा—सामान्य ।

विशेष—सोनागिरि पूजा है ।

५५२२. गुटका सं० १४१ । पत्र सं० ३७ । आ० ३×३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

विशेष—विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र है ।

५५२३. गुटका सं० १४२ । पत्र सं० २० । आ० ५×४ इंच । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १६१८ असाढ सुदी १४ ।

विशेष—गुटके में निम्न २ पाठ उल्लेखनीय हैं ।

१. छहकाला	द्यानतराय	हिन्दी	१-६
२. लहकाला	विद्यान	"	१०-१२

५५२४. गुटका सं० १४३ । पत्र सं० १७४ । आ० ५.१×४ इंच । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल १८६७ । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५५२५. गुटका सं० १४४ । पत्र सं० ६१ । आ० ८×६ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५५२६. गुटका सं० १४५ । पत्र सं० ११ । आ० ६×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पक्षीशास्त्र । ले० काल १८७४ ज्येष्ठ सुदी १४ ।

प्रारम्भ के पद्य—

नमस्कृत्य महादेवं गुरुं शास्त्रविशारदं ।

भविष्यदर्थबोधाय वक्षते पञ्चरत्नैः ॥१॥

अनेन शास्त्रसारेण लोके कालत्रयं मति ।

फलफलं निगुज्यन्ते सर्वकार्येषु निश्चितं ॥२॥

५५२७. गुटका सं० १४६ । पत्र सं० २५ । आ० ७×५ इंच । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण । दशा—सामान्य

विशेष—आदिनाथ पूजा (सेवकराम) भजन एवं नेमिनाथ की भावना (सेवकराम) का संग्रह है ।

पट्टी पहाड़े भी लिखे गये हैं । अधिकांश पत्र खाली हैं ।

५५२८. गुटका सं० १४७। पत्र सं० ३-५७। आ० ६×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-न्योतिष।
दशा-जीर्ण शीर्ष।

विशेष—खोघबोध है।

५५२९. गुटका सं० १४८। पत्र सं० ५५। आ० ७×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र संग्रह है।

५५३०. गुटका सं० १४९। पत्र सं० ८६। आ० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८४६
कार्तिक सुदी ६। पूर्ण। दशा-जीर्ण।

१. बिहारीसतसई बिहारीलाल हिन्दी १-३५

२. कुन्द सतसई कुन्दलाल " ३६-८०

७०८ पद्य हैं। ले० काल सं० १८४६ चैत सुदी १०।

३. कावैत देवीदास हिन्दी ३६-८०

५५३१. गुटका सं० १५०। पत्र सं० १३५। आ० ६३×४ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल
सं० १८४५। दशा-जीर्ण शीर्ष।

विशेष—लिपि विकृत है। कक्का बत्तीसी, राग चोतरण का दूहा, फूल भीतरणी का दूहा, भाँड़ पाठ है।
अधिकांश पत्र खाली हैं।

५५३२. गुटका सं० १५१। पत्र सं० १८। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—पदों तथा विनयियों का संग्रह है तथा जैन पञ्जीसी (नवलराम) बारह भावना (दीनतराम)
निर्वाणकाण्ड है।

५५३३. गुटका सं० १५२। पत्र सं० १०७। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। दशा-जीर्ण
शीर्ष।

विशेष—विभिन्न ग्रन्थों में से छोटे २ पाठों का संग्रह है। पत्र १०७ पर भट्टारक पट्टावलि उल्लेखनीय है।

५५३४. गुटका सं० १५३। पत्र सं० ६०। आ० ८×५ इंच। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-संग्रह
अपूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, तत्त्वार्थ सूत्र, पूजाएं एवं पञ्चमंगल पाठ है।

५५३५. गुटका सं० १५४। पत्र सं० ८६। आ० ६×४ इंच। ले० काल १८७६।

१. भागवत × संस्कृत १-८

२. मंत्र आदि संग्रह × " ६-१२

३. चतुरलोकी गीता	×	"	२३-२४
४. भागवत महिमा	×	हिन्दी	२५-५१
		तीर्थों के नाम एवं देवाधिदेव स्तोत्र है ।	
५. महाभारत विष्णु सहस्रनाम	×	संस्कृत	५२-५६

५५३६. गुटका सं० १५५ । पत्र सं० ६८ । ६×६ इंच । भाषा-संस्कृत । पूर्ण ।

१. योगेन्द्र पूजा	×	संस्कृत	१-३
२. पार्वनाथ जयमाल	×	"	४-१३
३. सिद्धपूजा	×	"	१-२
४. पार्वनाथाष्टक	×	"	३-६
५. षोडशकारणपूजा	ग्राचार्य केशव	"	१-३४
६. सोलहकारण जयमाल	×	अपभ्रंश	३६-५०
७. द्वात्रिंशत्कारण जयमाल	×	"	५१-६३
८. द्वादशव्रतपूजा जयमाल	×	संस्कृत	६४-८०
९. रामोकार पैतोसी	×	"	८१-८५

५५३७. गुटका सं० १५६ । पत्र सं० १७ । आ० ५×३ इंच । ले० कात्र १७७६ ज्येष्ठ सुदी २ ।

भाषा-हिन्दी । पत्र सं० ७६ ।

विशेष—यावद वंशावलि वर्णन है ।

५५३८. गुटका सं० १५७ । पत्र सं० ३२ । आ० ६×५ इंच । ले० काल १८३२ ।

विशेष—भक्ताभरस्तोत्र, अक्षर बावनी, (चानतराय) एवं पंचमंगल के पाठ हैं । पं० सवाईराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में सं० १८३२ में प्रति लिपि की ।

५५३९. गुटका सं० १५७ (क) पत्र सं० १४१ । आ० ६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विभिन्न कवियों के पद्यों का संग्रह है ।

५५४०. गुटका सं० १५८ । पत्र सं० ६८ । आ० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८१० । दशा-जीर्ण ।

विशेष—सामान्य चर्चाओं पर पाठ है ।

५५४१. गुटका सं० १५९ । पत्र सं० ३५० । आ० ७×४ । ले० काल-५१ । दशा-जीर्ण । विभिन्न कवियों के पद्यों का संग्रह है ।

★

५५४२. गुटका सं० १६० । पत्र सं० ६५ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष-सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५५४३. गुटका सं० १६१ । पत्र सं० २६ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल १७३७ पूर्ण । सामान्य पाठ हैं ।

५५४४. गुटका सं० १६२ । पत्र सं० ११ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । अपूर्ण । पूजाग्रों का संग्रह है ।

५५४५. गुटका सं० १६३ । पत्र सं० २१ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।

विशेष-भक्तिकामर स्तोत्र एवं दर्शन पाठ आदि हैं ।

★

५५४६. गुटका सं० १६४ । पत्र सं० १०० । आ० ४×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल १६२४ पूर्ण ।

विशेष-पद्मपुराण में से गीता महात्म्य लिया हुआ है । प्रारम्भ के ७ पत्रों में संस्कृत में भगवत् गीता माला दी हुई है ।

५५४७. गुटका सं० १६५ । पत्र सं० २० । आ० ६३/४×५३/४ इञ्च । विषय-आयुर्वेद । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

विशेष-आयुर्वेद के नुसखे हैं ।

५५४८. गुटका सं० १६६ । पत्र सं० ६८ । आ० ४×२३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	१-४०
२. कर्मप्रकृतिविधान	बनारसीदास	"	४१-६८

५५४९. गुटका सं० १६७ । पत्र सं० १४८-२४७ । आ० २×२ इञ्च । अपूर्ण ।

५५५०. गुटका सं० १६८ । पत्र सं० ४० । आ० ६×६ इञ्च । पूर्ण ।

५५५१. गुटका सं० १६९ । पत्र सं० २२ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल १७८० आवण सुदी २ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. धर्मरासी	×	हिन्दी	१-१८

अथ धर्म रासी लिख्यते—

पहली वंदों जिएवर राइ, तिहि वंछा दुख दालिद्र जाइ ।

रोग कपेस न संचरे, पाप करम सब जाइ पुलाई ॥

निश्चै मुक्ति पद संचरे, ताको जिन धर्म होई सहाई ॥ १ ॥

★

धर्म दुहेलो जैन को, छह दरसन जे द्वी परधान ।
 आनन जन भुण्जिजे वे कान, भवपत्राव चित संमलो ॥
 पडा वित्त सुख होई निधान, धर्म दुहेलो जैन को ॥ २ ॥
 दूजा बरौ सारद माई, भूलां भाखर आणो हाइ ॥
 कुमति कलेस न डगजे, महा सुमति वंदौ अधिकाइ ॥
 जिराधर्म रासो बर्राउ, तिहि पढत मन होइ उच्चाह ॥
 धर्म दुहेलो जैन को ॥ ४ ॥

मन्त्रिम—

ऊभौ जीमण जीवै सही, आगम बात जिरोमुर कही ।
 कर ३०५ आहार लै, ५ बट्ठाईस भूलधुरा जागि ॥
 धन जली जे पालही, ते मनुक्रम पहुंचे निरवारि ।
 धर्म दुहेलो जैन को ॥ १५२ ॥

सूढ देव गुरुशास्त्र बखारि, अङ्ग षट् प्रनायतन जागि ।
 माठ दोष शङ्का आवि दे, आठ मद सौ तजे पचोस ॥
 ते निश्चै सम्यक्त फलै, ऐसी विधि भासै जगदीश ।
 धर्म दुहेलो जैन को ॥ १५३ ॥

इति श्री धर्मरासो समाप्ता ॥१॥ सं० १७६० सावण सुदी २ सांगानापर मध्ये ।

५५५२. गुटका सं० १७० । पत्र सं० ५ । आ० ६×६ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा ।

विशेष—सिद्धपूजा है ।

५५५३. गुटका सं० १७१ । पत्र सं० ६ । आ० ६×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

विशेष—सम्मोदशिखर पूजा है ।

५५५४ गुटका सं० १७२ । पत्र सं० १५-१० । आ० ३×३ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले०
 काल सं० १७६५ । सावण सुदी १० ।

विशेष—पूजा, षड् एवं चिन्तियों का संग्रह है ।

५५५५. गुटका सं० १७३ । पत्र सं० १०५ । आ० ६×४ इंच । भाषा—जैनी ।

विशेष—आयुर्वेद के नुराखे, मन्त्र, तन्त्रादि सामग्री है । कोई उल्लेखनीय रचना नहीं है ।

५५५६. गुटका सं० १७४। पत्र सं० ४-६३। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-शृङ्गार रस। ले० काल सं० १७४७ जेठ बुदी १।

विशेष—इन्द्रजील विरचित रसिकप्रिया का संग्रह है।

५५५७. गुटका सं० १७५। पत्र सं० २४। आ० ६×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा।

विशेष—पूजा संग्रह है।

५५५८. गुटका सं० १७६। पत्र सं० ८। आ० ५×३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। ले० काल सं० १८०२। पूर्ण।

विशेष—पद्मावतीस्तोत्र (ज्वालागालिनी) है।

५५५९. गुटका सं० १७७। पत्र सं० २१। आ० ५'×३' इंच। भाषा-हिन्दी। मूर्ण।

विशेष—पद एवं विनती संग्रह है।

५५६०. गुटका सं० १७८। पत्र सं० १७। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—प्रारम्भ में बादशाह जहांगीर के तख्त पर बैठने का समय लिखा है। सं० १६८४ मंगसिर बुदी १२। तारातम्बोल की जो यात्रा की गई थी वह उसीके आदेश के अनुसार धरतीकी खबर मगाने के लिए की गई थी।

५५६१. गुटका सं० १७९। पत्र सं० १४। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पद संग्रह। मूर्ण।

विशेष—हिन्दी पद संग्रह है।

५५६२. गुटका सं० १८०। पत्र सं० २१। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—निर्दोषसप्तमीकथा (ब्रह्मरावमल्ल), आदित्यवारकथा के पाठ का मुख्यतः संग्रह है।

५५६३. गुटका सं० १८१। पत्र सं० २१-४६।

१. चन्द्रवरदाई की वार्ता	×	हिन्दी	२३-२६
		पत्र सं० ११६। ले० काल सं० १७१६	
२. सुगुहसील	×	हिन्दी	२८-३०
३. कविकावलीसी	ब्रह्मगुलाल	"	२० काल सं० १७६५ ३०-३४
४. अन्यपाठ	×	"	३४-४६

विशेष—अधिकांश पत्र खाली हैं।

५५६४. गुटका सं० १८२। पत्र सं० १६। आ० ६×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। मूर्ण।

विशेष—नित्य नियम पूजा है।

५५६५. गुटका सं० १८३। पत्र सं० २०। आ० १०×६ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। अपूर्ण।
दशा-जीर्ण शीर्ष।

विशेष—प्रथम ५ पत्रों पर पृच्छायें हैं। तथा पत्र १०-२० तक शकुनशास्त्र है। हिन्दी गद्य में है।

५५६६. गुटका सं० १८४। पत्र सं० २४। आ० ६३×६ इंच। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—धृन्व विनोद सतसई के प्रथम पद्य से २५० पद्य तक है।

५५६७. गुटका सं० १८५। पत्र सं० ७-८८। आ० १०×५.३ इंच। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८२३ वैशाख सुदी ८।

विशेष—बीकानेर में प्रतिलिपि की गई थी।

१. समयसारनाटक	बनारसीदास	हिन्दी	७-७६
२. अनायीसाध चौदालिया	विमल बिनयगणि	"	७३ पद्य हैं ७६-७८
३. अभ्ययन गीत	×	हिन्दी	७८-८३
दस अध्याय में अलग अलग गीत हैं। अन्त में चूलिका गीत है।			
४. स्फुट पद	×	हिन्दी	८४-८८

५५६८. गुटका सं० १८६। पत्र सं० ५२। आ० ६×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पद संग्रह।

विशेष—१४२ पदों का संग्रह है मुख्यतः चातनराय के पद हैं।

५५६९. गुटका सं० १८७। पत्र सं० ७७। पूर्ण।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१. चौरासी गीत	×	हिन्दी	१-२
२. कछवाहा वंश के राजाओं के नाम	×	"	२-४
३. देहली राजाओं की वंशावली	×	"	५-१६
४. देहली के बावशाहों के परमनों के नाम	×	"	१७-१८
५. सीख सत्तरी	×	"	१९-२०
६. ३६ कारखानों के नाम	×	"	२१
७. चौबीस ठाणा चर्चा	×	"	२२-४४

५५७०. गुटका सं० १८८। पत्र सं० ११-७३। आ० ६×४.३ इंच। भाषा-हिन्दी संस्कृत।

विशेष—गुटके में भक्तामरस्तोत्र कलाणमन्दिरस्तोत्र हैं।

१. पार्श्वनाथस्तवन एवं अन्य स्तवन

वतिसागर के शिष्य जगन्नाथ हिन्दी

२० सं० १८००

आगे पत्र जुड़े हुए हैं एवं विकृत लिपि में लिखे हुये हैं ।

५५७१. गुटका सं० १८६ । पत्र सं० ६-७८ । आ० ५३×४ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-इतिहास ।

विशेष—अकबर बादशाह एवं वीरबल आदि की वार्ताएँ हैं । बीच बीच के एवं आदि अन्त भाग नहीं हैं ।

५५७२. गुटका सं० १६० । पत्र सं० १७ । आ० ४×३ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—रूपचन्द्र कृत पञ्चमंगल पाठ है ।

५५७३. गुटका सं० १६१ । पत्र सं० २८ । आ० ८३×६ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—सुन्दरदास कृत सर्वेधे एवं अन्य पद्य है । अपूर्ण है ।

५५७४. गुटका सं० १६२ । पत्र सं० ४५ । आ० ८३×६ इंच । भाषा-प्राकृत संस्कृत । ले० काल

१८०० ।

१. कवित्त

×

हिन्दी

१-४

२. भयहरस्तोत्र

×

प्राकृत

५-६

हिन्दी गद्य टीका सहित है ।

३. शान्तिकरस्तोत्र

विद्यासिद्धि

”

७-८

४. नमिऊणस्तोत्र

×

”

८-१२

५. अजितशान्तिस्तवन

नन्दिपेश

”

१३-२२

६. भक्तामरस्तोत्र

मानतुंगाचार्य

संस्कृत

२३-३०

७. कलामारमंदिरस्तोत्र

×

संस्कृत ३१-३६ हिन्दी-गद्य टीकासहित है ।

८. शान्तिपाठ

×

प्राकृत ४०-४५

”

१८६७ ।

५५७५. गुटका सं० १६३ । पत्र सं० १७-३२ । आ० ८३×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । ले० काल

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र एवं भक्तामरस्तोत्र है ।

५५७६. गुटका सं० १६४ । पत्र सं० १३ । आ० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र ।

अपूर्ण । दशा-प्रामाण्य । कोकसार है ।

५५७७. गुटका सं० १६५ । पत्र सं० ७ । आ० ६×६ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—भट्टारक महीचन्द्रकृत त्रिलोकस्तोत्र है । ४६ पद्य हैं ।

५५७८. गुटका सं० १६६ । पत्र सं० २२ आ० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष-नाटकसमयसार है ।

५५७९. गुटका सं० १६७ । पत्र सं० ३० । आ० ८×६ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८६४ श्रावण
बुदी १४ । बुधजन के पत्नी का संग्रह है ।

५५८०. गुटका सं० १६८ । पत्र सं० ३६ । आ० ८ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$ इंच । अपूर्ण । पूजा पाठ संग्रह है ।

५५८१. गुटका सं० १६९ । पत्र सं० २-५६ । आ० ८×५ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी अपूर्ण ।

दशा-जीर्ण ।

विशेष-पूजा पाठ संग्रह है ।

५५८२. गुटका सं० २०० । पत्र सं० २४ । आ० ६ $\frac{1}{2}$ ×८ इंच । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. जिनदत्त चौधरी	रत्नकवि	प्राचीन हिन्दी
रचना संवत् १३५४ भाद्रपद सुदी ५ । ले० काल संवत् १७५२ । पालव निवासी महानन्द ने प्रतिलिपि की थी ।		
२. आदीश्वर रेखता	सहस्रशक्ति	प्राचीन हिन्दी अपूर्ण

र० काल सं० १६६७ । रचना स्थान-सभलकोट । ले० काल-सं० १७५३ मंगसिर बुदी ७ । महानन्द ने प्रतिलिपि की थी । १२ पत्र से ४५ वे तक ६१ तक के पत्र हैं ।

३. पंचवधावी	×	राजस्थानी शेरगढ़ की	"
४. कवित्त	बृंदावनदास	हिन्दी	
५. पद-रेमन रेमन जिनारदन कन्दु न शिवार	लक्ष्मीसागर	"	राममल्हार
६. तूही तू ही मेरे साहिब	"	"	रासकाफी
७. तूती तूही २ तूती बोल	"	"	×
८. कवित्त	ब्रह्म गुलाल एवं बृंदावन	"	पृष्ठ १६

ले० काल सं० १७५० फागुन बुदी १४ । फकीरचन्द जैसवाल ने प्रतिलिपि की थी । कंलास का वासी

गोल तैला ।

९. जेष्ठ पूर्णिमा कथा	×	हिन्दी	पूर्ण
१०. कवित्त	ब्रह्म गुलाल	"	
११. "	×	"	

१२. समुय विजय सुत सावरे रंग भीने हो

×

"

ले० काल १७७२ मोतीहटका देहरा दिल्ली में प्रतिलिपि की थी ।

१३. पञ्चकल्याणकपूजा मष्टक

×

संस्कृत ले० काल सं० १७५२ ज्येष्ठ शु० १० ।

१४. षट्स कथा

×

संस्कृत ले० काल सं० १७५२ ।

५५८३. गुटका सं० २०१ । पत्र सं० ३६ । आ० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । पूर्ण ।

विशेष—आदित्यवारकथा (भाऊ) सुशालचंद कृत शनिश्चरदेव कथा एवं लालचन्द कृत राजुल पञ्चीसी के पाठ और हैं ।

५५८४. गुटका सं० २०२ । पत्र सं० २८ । आ० ६×५ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७५० ।

विशेष पूजा पाठ संग्रह के अतिरिक्त शिवचन्द मुनि कृत हिण्डोलना, ब्रह्मचन्द कृत दवारास पाठ भी है ।

५५८५. गुटका सं० २०३ । पत्र सं० २०-३६, १८५ से २०३ । आ० ६×५ इंच । भाषा संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण । दशा-सामान्य । मुख्यतः निम्न पाठ है ।

१. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	२०-२६
२. ऋषिमण्डलस्तवन	×	"	३०-३६
३. जलयात्राविधि	ब्रह्मजिनदास	"	१६२-१६६
४. गुरुओं की जयमाला	"	हिन्दी	१६६-१६७
५. रामोकार छन्द	ब्रह्मलाल सागर	"	१६७-२२०

५५८६. गुटका सं० २०४ । पत्र सं० १४० । आ० ६×४ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७६१ चैत्र सुदी ६ । अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—उज्जैन में प्रतिलिपि हुई थी । मुख्यतः समयसार नाटक (बनारसीदास) पार्श्वनाथस्तवन (ब्रह्मनाथ) का संग्रह है ।

५५८७. गुटका सं० २०५ । नित्य नियम पूजा संग्रह । पत्र सं० ६७ । आ० ८×५ इंच । पूर्ण एवं शुद्ध । दशा-सामान्य ।

५५८८. गुटका सं० २०६ । पत्र सं० ४७ । आ० ८×७ । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । दशा सामान्य । पत्र सं० २ नहीं है ।

१. सुंदर भृंगार-

महाकविराय

हिन्दी

पत्र सं० ८३१

महाराजा पृथ्वीसिंहजी के शासनकाल में आमेर निवासी मालीराम बाला ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२. श्यामवत्तीसी

नन्ददास

११

बीकानेर निवासी महात्मा फकीरा ने प्रतिलिपि की । मालीराम कालाने सं० १८३२ में प्रतिलिपि कराई थी ।

अन्तिम भाग—

बोहा—कृष्ण ध्यान चरासु घठ अवनहि सुत प्रवांन ।

कहत स्याम कलमल कल्ल रहत न रंच समान ॥ ३६ ॥

छन्द मत्तगयन्द—

स्यो सनतादिक नारदस्मैद् ब्रह्म सेस महेस जु पार न पायो ।

सो मुख व्यास विरंचि बखानत तिगम कुं सोचि अगम बतायो ॥

संभ भाऊ नहि भाग जसोमति नन्दलला बृज आनि कहायो ।

सो कवि या कवि कहाव्य करी जु कल्याण जु स्याम भलै गुनगायी ॥ ३७ ॥

इति श्री नन्ददास कृत स्याम वत्तीसी संपूर्ण ॥ लिखतं महात्मा फकीरा वासी बीकानेर का । लिखावतु मालीराम काला संवत् १८३२ मिति भादवा सुदी १४ ।

५५८६. गुटका सं० २०७ । पत्र सं० २०० । आ० ७×५ इंच । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १६८६ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ, पद एवं भजनों का संग्रह है ।

५५६०. गुटका सं० २०८ । पत्र सं० १७ । आ० ६३ ६ ३/४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—चाणक्य नीतिसार तथा नाथूराम कृत जातकसार है ।

५५६१. गुटका सं० २०९ । पत्र सं० १६-२४ । आ० ६×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—सूरदास, परमानन्द आदि कवियों के पदों का संग्रह है । विषय—कृष्ण भक्ति है ।

५५६२. गुटका सं० २१० । पत्र सं० २८ । आ० ६३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—चतुर्दश गुरुस्थान वर्णन है ।

५५६३. गुटका सं० २११ । पत्र सं० ४६-८७ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । ले० काल १८१० ।

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत श्रीपालरास का संग्रह है ।

५५६४. गुटका सं० २१२ । पत्र सं० ६-१३० । आ० ६×६ इंच ।

विशेष—स्तोत्र, पूजा एवं पद संग्रह है ।

★

५५६५. गुटका सं० २१३। पत्र सं० ११७। आ० ६×५ इंच। भाषा—हिन्दी। ने० काल १८४७।

विशेष—बीच के २० पत्र नहीं है; सम्बोधनचरिका (दामतराय) बृजलाल की बारह भावना, वैराग्य पञ्चीसी (भगवतीदास) आलोचनागठ, पञ्चावलीस्तोत्र (समयसुन्दर) राजुल पञ्चीसी (विनोदीलाल) आदित्य-वार कथा (भाऊ) भक्तामरस्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है।

५५६६. गुटका सं० २१४। पत्र सं० ८४। आ० ६×६ इंच।

विशेष—सुन्दर शृंगार का संग्रह है।

५५६७. गुटका सं० २१५। पत्र सं० १३२। आ० ६×६ इंच। भाषा—हिन्दी।

१. कलियुग की विनती	देवायहू	हिन्दी	५-७
★ २. सीताजी की विनती	×	"	७-८
३. हंस की डाल तथा विनती डाल	×	"	६-१२
४. जिनवरजी की विनती	देवापाण्डे	"	१२
५. होली कथा	छीतरडोलिया	"	२० सं० १६६० १३-१८
६. विनतियां, जानपञ्चीसी, बारह भावना			
राजुल पञ्चीसी आदि	×	"	१६-४०
७. पांच परची कथा	ब्रह्मवैष्णु (भ. जयकीर्ति के शिष्य)	"	७६ पद्य हैं ४१-४०
८. चतुर्विंशति विनती	चन्द्रकवि	"	४५-६७
९. ब्रधावा एवं विनती	×	"	६७-६९
१०. नव मंगल	विनोदीलाल	"	६९-७७
★ ११. ककका बतीसी	×	"	७७-८१
१२. बड़ा ककका	गुलाबराय	"	८०-८१
१३. विनतियां	×	"	८१-१३२

५५६८. गुटका सं० २१६। पत्र सं० १६४। आ० ११×६ इंच। भाषा—हिन्दी संस्कृत।

विशेष—गुटके के उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार है।

१. जिनवरव्रत जयमाला	ब्रह्मलाल	हिन्दी	१-२
			भट्टारक पट्टावली दी गई है।
२. आराधना प्रतिबोधसार	सकलकीर्ति	हिन्दी	१३-१५

३. मुक्तावलि गीत	सकलकीर्ति	हिन्दी	१५
४. चौबीस गणधरस्तवन	गुणकीर्ति	"	२०
५. अष्टाह्निकागीत	म० शुभचन्द्र	"	२१
६. मिच्छा दुक्कड	ब्रह्मजिनदास	"	२२
७. क्षेत्रपालपूजा	मण्डिभद्र	संस्कृत	३७-३८
८. जितसत्त्वहनाम	आलाधर	"	१०६-११६
९. भट्टारक विजयकीर्ति अष्टक	×	"	१५०

५५६६. गुटका सं० २१७ । पत्र सं० १७१ । आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है ।

५६०७. गुटका सं० २१८ । पत्र सं० १६६ । आ० ६×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—१४ पूजाओं का संग्रह है ।

५६०१. गुटका सं० २१९ । पत्र सं० १८४ । आ० ६×८ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—खड्गसेन भूत विनायकदर्शनकथा है । ले० काल १७५३ ज्येष्ठ बुदी ७ बुधवार ।

५६०२. गुटका सं० २२० । पत्र सं० ८० । आ० ७ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-अपभ्रंश संस्कृत ।

१. विशवजिण्चऊवीसी महारसिंह अपभ्रंश १-७०

२. नाममाला धनञ्जय संस्कृत ७०-८०

विशेष—गुटके के अधिकांश पत्र जीर्ण तथा फटे हुए हैं एवं गुटका अपूर्ण है ।

५६०३. गुटका सं० २२१ । पत्र सं० ५१-१६० । आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—जोधराज गोदीका की सम्मन्वित कीमुदी (अपूर्ण), प्रीत्यंकरचरित्र, एवं नयचक्र की हिन्दी गद्य टीका अपूर्ण है ।

५६०४. गुटका सं० २२२ । पत्र सं० ११६ । आ० ५×६ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६०५. गुटका सं० २२३ । पत्र सं० ५२ । आ० ७×४ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—यन्त्र, पृच्छाएं एवं उनके उत्तर दिये हुए हैं ।

५६०६. गुटका सं० २२४ । पत्र सं० १४० । आ० ७×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-संस्कृत प्राकृत । दशा-जर्ण शोर्ण एवं अपूर्ण ।

विशेष—भुरावली (अपूर्ण), भक्तिगाथा, स्वयंभूस्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र एवं सामायिक पाठ आदि हैं ।

५६०८. शुटका सं० २०५ । पत्र सं० ११-१७७ । आ० १०×४३ इंच । भाषा-हिन्दी ।

१. बिहारो सतसई सटीक—टीकाकार हरिचरणदास । टीकाकाल सं० १८३४ । पत्र सं० ११ से १३१ । ले० काल सं० १८५२ माघ कृष्ण ७ रविवार ।

विशेष—पुस्तक में ७१४ पद्य हैं एवं = पद्य टीकाकार के परिचय के हैं ।

अन्तिम भाग— पुरुषोत्तमदास के दोहे हैं—

जद्यपि है सोभा सहज मुक्त न तऊ मुखेण ।

पये और कुटीर के लरमें होत विशेष ॥७१॥

इस पर ७१५ संख्या है । वे सप्तसती से अधिक जो दोहे हैं वे दिये गये हैं । टीका सभी की दी हुई है । केवल ७१४ की जो कि पुरुषोत्तमदास का है, टीका नहीं है । ७१४ दोहों के आगे निम्न प्रशस्ति दी है ।

दोहा—

सालग्रामी सरञ्चु जहु मिली मंगसो आय ।

अन्तराल में देख तो हरि कवि को सरसाय ॥१॥

लिखे ब्रह्म भूषण बहुत अनवर के अनुसार ।

कहुं और कहुं और हू निकलेंगे लङ्कार ॥२॥

सेखी जगल-कस्तोर के प्राननाथ जी नांव ।

सप्तसती तिनसों पड़ी बसि सिंगार बट ठांव ॥३॥

जमुना तट शृङ्गार बट तुलसी विपिन सुदेस ।

सेवत संत महंत जहि देखत हरत कलेस ॥४॥

पुरीक्षित श्रीनन्द के मुनि सडिल्य महान ।

हम हैं ताके गौत में मोहन सो जजमान ॥५॥

मोहन महा उदार तजि और जाचिये काहि ।

सम्पत्ति सुदामा को दई इन्द्र लही नहीं जाहि ॥६॥

गहि अंक सुमनु तात तैं विधि को बस लखाय ।

राधा नाम कहै सुनै आनन कान बढाय ॥७॥

संवेत् अठारहसौ बिते ता परि तीसरु चारि ।

जमाठै पूरो किमो कृष्ण चरन मन धारि ॥८॥

इति हरचरणदास कृत विहारी रचित समशती टीका हरिप्रकाशाख्या सम्पूर्णा । संवत् १८५२ माघ कृष्ण ७ रविवसरे शुभमस्तु ।

२. कविवल्लभ—ग्रन्थकार हरिचरणदास । पत्र सं० १३१-१७७ । भाषा—हिन्दी पद्य ,

विशेष—३६७ तक पद्य हैं । प्रागे के पद्य नहीं हैं ।

प्रारम्भ— मोहन चरन पयोग में, है तुलसी को वास ।
ताहि मुसरि हरि मल सब, करन निष्क को नाम ॥१॥

कवित्त— आनन्द को कन्द वृषभान जाकी मुखचन्द,
लीला ही ते मोहन के मानस को चोर है ।
दूजी तैसो रचिबै को चाहत विरंचि निति,
समि को बनावै अजो मन कीन मोरै है ।
फेरत है सान भासमान पै चढाय फेरि,
पानि पै चढाय वे को वारिधि में धोरै है ।
राधिका के आनन के जोट न दिलोके विधि,
ढक ढक तोरै पुनि ढक ढक जोरै है ॥

ग्रन्थ दोष लक्षण दोहा—

रस आनन्द सख्य कौं दुषं ते हैं दोष ।
आत्मा कौं ज्यो अंधता और वधिरता रोष ॥३॥

अन्तिम भाग—

दोहा—

साका सतरह सौ पुत्री संवत् पैतीस जन्म ।
अठारह सौ जेठ बुदि ने ससि रवि दिन प्राप्त ॥२८४॥

इति श्री हरिचरणजी, विरचित कविवल्लभो ग्रन्थ सम्पूर्णा । सं० १८५२ माघ कृष्ण १४ रविवसरे ।

५६०६. गुटका सं० २२६ । पत्र सं० १०० । आ० ६३×६ इंच । भाषा—हिन्दी । ले० काल १८२५

जेठ बुद्ध १५ । पूर्ण ।

१. सप्तभंगीवाणी

भगवतीदास

हिन्दी

१

२. समयसारनाटक

बनारसीदास

"

१-१००

५६१८. गुटका सं० २२७ । पत्र सं० २६ । आ० ६×५३ । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । ले०

काल सं० १८४७ अषाढ बुद्धी ६ ।

विशेष—रससागर नाम का आयुर्वेदिक ग्रंथ है। हिन्दी पद्य में है। पोथी लिखी षडित हंगरसी की सो देखि लिखी—द्वि० असाठ बुदी ६ बार सोमवार सं० १८४७ लिखी सवाईराम गोधा।

५६११. गुटका सं० २२८। पत्र सं० ४६ से ६२। आ० ६×७ इ०। भाषा—प्राकृत हिन्दी। ले० काल १९५४। द्रव्य संग्रह की भाषा टीका है।

५६१२. गुटका सं० २२६। पत्र सं० १८। आ० ६×७ इ०। भाषा हिन्दी।

१. पंचपाल पैंतीसो	×	हिन्दी	१-६
२. अंकयनाचार्यपूजा	×	"	७-१२
३. त्रिष्णुकुमारपूजा	×	"	१३-१८

५६१३. गुटका सं० २३०। पत्र सं० ४२। आ० ७×६ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत।

विशेष—नित्य नियम पूजा संग्रह है।

५६१४. गुटका सं० २३१। पत्र सं० २५-४७। आ० ६×६ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—आयुर्वेद।

विशेष—नयनमुखदास कृत वैद्यमनोत्सव है।

५६१५. गुटका सं० २३२। पत्र सं० १४-१५७। आ० ७×५ इ०। भाषा—हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—मैया भगवतीदास कृत अनित्य पन्चीसी, बारह भावना, शत अष्टोत्तरी, जैनशतक, (भूधरदास) दान बावनो (द्यानतराम) चेतनकर्मचरित्र (भगवतीदास) कर्मछत्तीसी, ज्ञानपन्चीसी, भक्तामरस्तोत्र, कल्याण मंदिर भाषा, दानवर्णन, परिषह वर्णन का संग्रह है।

५६१६. गुटका सं० २३३। पत्र संख्या ४२। आ० १०×४ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

५६१७. गुटका सं० २३४। पत्र सं० २०३। आ० १०×७ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। पूजा पाठ, बनारसी विलास, चौबीस ठाणा चर्चा एवं समयसार नाटक है।

५६१८. गुटका सं० २३५। पत्र सं० १६८। आ० १०×६ इ०। भाषा—हिन्दी।

१. तत्त्वार्थसूत्र (हिन्दी टीका सहित)	हिन्दी संस्कृत	३-६०
	६३ पत्र तक सीमक ने ला रखा है।	
२. चौबीसठाणाचर्चा	×	हिन्दी ६१-१६८

५६१९. गुटका सं० २३६। पत्र सं० १४०। आ० ६×७ इ०। भाषा हिन्दी।

विशेष—पूजा, स्तोत्र आदि सामान्य पाठों का संग्रह है।

५६२०. गुटका सं० २३८ । पत्र सं० २५० । आ० ६×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७४८ आसोज बुदी १३ ।

१. कुण्डलिया	मगरदास एवं अन्य कविगण	हिन्दी	लिपिकार विजयराम	१-३३
२. पद	मुकुन्ददास	"	"	३३-३४
			ले० काल १७७५ आनण सुदी ५	
३. त्रिलोकदर्पणकथा	सद्गुणसेन	हिन्दी		३४-२५०

५६२१. गुटका सं० २३६ । पत्र सं० १६८ । आ० १३३×२ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

१. आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी		१-१४
२. कथाकोष	×	"		१४-८४
३. त्रिलोक वर्णन	×	"		८४-१६८

५६२२. गुटका सं० २४० । पत्र सं० ४८ । आ० १२३×८ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

विशेष—पहिले भक्तामर स्तोत्र टीका सहित तथा अन्त में अन्य गीत सहित दिया हुआ है ।

५६२३. गुटका सं० २४१ । पत्र सं० ५-१७७ । आ० ४×३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८२७

वैशाख बुदी अमावस्या ।

विशेष—लिखित महारमा लक्ष्मीराम । ज्ञानदीपक नामक ग्रन्थ का ग्रन्थ है ।

५६२४. गुटका सं० २४२ । पत्र सं० १-२००, ४०० ५६५, ६०५ से ७६४ । आ० ४×३ इ० ।

भाषा-हिन्दी गद्य ।

विशेष—भावदीपक नामक ग्रन्थ है ।

५६२५. गुटका सं० २४३ । पत्र सं० २४० । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६२६. गुटका सं० २४४ । पत्र सं० २२ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत ।

१. त्रैलोक्य मोहन कवच	रायमल	संस्कृत	ले० काल १७६१	४
२. दशरामस्तोत्र	शंकराचार्य	"		५-७
३. दशश्लोकीशं भूस्तोत्र	×	"		७-८
४. हरिहरनामावलिस्तोत्र	×	"		८-१०
५. दशस्वराभि फल	×	"		१०-१२

६. बृहस्पति विचार	×	से० काल १७६२	१२-१४
७. मन्त्रादीय	×	"	१५-२२

५६२७. गुटका सं० २४५ । पत्र सं० २-४६ । आ० ७×५ इ० ।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है ।

५६२८. गुटका सं० २४६ । पत्र सं० ११३ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—मन्दराम कृत मानमञ्जरी है । प्रति नवीन है ।

५६२९. गुटका सं० २४७ । पत्र सं० ६-७७ । आ० ७×४ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।

विशेष—पूजापाठ संग्रह है ।

५६३०. गुटका सं० २४८ । पत्र सं० १२ । आ० ८३×७ इ० । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—तीर्थङ्करो के पंचकल्याण आदि का वर्णन है ।

५६३१. गुटका सं० २४९ । पत्र सं० ८ । आ० ८३×७ इ० । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—पद संग्रह है ।

५६३२. गुटका सं० २५० । पत्र सं० १५ । आ० ८३×७ इ० । भाषा—संस्कृत ।

विशेष—बृहत्सव्यभूस्तोत्र है ।

५६३३. गुटका सं० २५१ । पत्र सं० २० । आ० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत ।

विशेष—समन्तभद्र कृत रत्नकरण्ड आत्रकाचार है ।

५६३४. गुटका सं० २५२ । पत्र सं० ३ । आ० ८३×६ इ० । भाषा—संस्कृत । से० काल १६३३ ।

विशेष—मकलङ्काष्टक स्तोत्र है ।

५६३५. गुटका सं० २५३ । पत्र सं० ८ । आ० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत । से० काल सं० १६३३ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र है ।

५६३६. गुटका सं० २५४ । पत्र सं० १० । आ० ८×५ इ० । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—बिम्ब निर्वीण विधि है ।

५६३७. गुटका सं० २५५ । पत्र सं० १६ । आ० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।

विशेष—बुधजन कृत १४ छत्तीसी पंचमंगल एवं पूजा आदि हैं ।

५६३८. गुटका सं० २५६ । पत्र सं० ६ । आ० ८३×७ इ० । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—वर्धोबन्द कृत रामचन्द्र चरित्र है ।

५६३६. गुटका सं० २५७। पत्र सं० ८। आ० ८×५ इ०। भाषा—हिन्दी। दशा—जीर्णशीर्ष।

विशेष—सन्तराम कृत कवित्त संग्रह है।

५६४०. गुटका सं० २५८। पत्र सं० ९। आ० ५×४ इ०। भाषा—संस्कृत। अपूर्ण।

विशेष—ऋषिमण्डलस्तोत्र है।

५६४१. गुटका सं० २५९। पत्र सं० ९। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल १८३०।

विशेष—हिन्दी पद एवं नाथ कृत लहुरी है।

५६४२. गुटका सं० २६०। पत्र सं० ४। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी।

विशेष—नवल कृत शीहा स्तुति एवं दर्शन पाठ हैं।

५६४३. गुटका सं० २६१। पत्र सं० ३। आ० ७×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल १८६१।

विशेष—सोनागिरि पञ्चीसी है।

५६४४. गुटका सं० २६२। पत्र सं० १०। आ० ६×४ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—ज्ञानोपदेश के पद्य हैं।

५६४५. गुटका सं० २६३। पत्र सं० १६। आ० ६३×४ इ०। भाषा—संस्कृत।

विशेष—शंकराचार्य विरचित मराराधसूदनस्तोत्र है।

५६४६. गुटका सं० २६४। पत्र सं० ६। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी।

विशेष—सप्तल्लोकी गीता है।

५६४७. गुटका सं० २६५। पत्र सं० ४। आ० ५३×४ इ०। भाषा—संस्कृत।

विशेष—वराहपुराण में से सूर्यस्तोत्र है।

५६४८. गुटका सं० २६६। पत्र सं० १०। आ० ६×४ इ०। भाषा—संस्कृत। ले० काल १८८७ पौष

सुदी ६।

विशेष—पत्र १-७ तक महागणपति कवच है।

५६४९. गुटका सं० २६७। पत्र सं० ७। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी।

विशेष—भूधरदास कृत एकीभाव स्तोत्र भाषा है।

५६५०. गुटका सं० २६८। पत्र सं० ३५। आ० ५३×४ इ०। भाषा—संस्कृत। ले० काल १८८५

पौष सुदी २।

विशेष—महात्मा सन्तराम ने प्रतिलिपि की थी। पद्मावती पूजा, चतुषष्ठी स्तोत्र एवं जिनसहस्रनाम (भाषाधर) है।

५६५१. गुटका सं० २६६। पत्र सं० २७। आ० ७३×५३ इ०। भाषा-संस्कृत। पूर्ण।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है।

५६५२. गुटका सं० २७०। पत्र सं० ८। आ० ६३×४ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल सं० १६३२। पूर्ण।

विशेष—तीन चौबीसी व दर्शन पाठ है।

५६५३. गुटका सं० २७१। पत्र सं० ३१। आ० ६×५ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-संग्रह। पूर्ण।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, ऋद्धिमूलमन्त्र सहित, जिनपञ्जरस्तोत्र हैं।

५६५४. गुटका सं० २७२। पत्र सं० ६। आ० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-संग्रह। पूर्ण।

विशेष—ग्रनस्तव्रतपूजा है।

५६५५. गुटका सं० २७३। पत्र सं० ४। आ० ७×५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा।

विशेष—स्वरूपचन्द्र कृत चमत्कारजी की पूजा है। चमत्कार शेष संवत् १८८६ में भाद्रवा सुदी २ को प्रकट हुआ था। सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

५६५६. गुटका सं० २७४। पत्र सं० १६। आ० १०×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। पूर्ण।

विशेष—इसमें रामचन्द्र कृत शिखर विलास है। पत्र ८ से आगे खाली पड़ा है।

५६५७. गुटका सं० २७५। पत्र सं० ६३। आ० ५३×५ इ०। पूर्ण।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है तीन चौबीसी नाम, जिनपञ्चीसी (नवल); दर्शनपाठ, नित्यपूजा भक्तामरस्तोत्र, पञ्चमङ्गल, कल्याणमन्दिर, नित्यपाठ, संबोधपञ्चासिका (ज्ञानतराय)।

५६५८. गुटका सं० २७६। पत्र सं० १०। आ० ६३×५ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल सं० १८४३। अपूर्ण।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, बड़ा कवका (हिन्दी) आदि पाठ हैं।

५६५९. गुटका सं० २७७। पत्र सं० २-२३। आ० ५३×४ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। अपूर्ण।

विशेष—हरखचन्द के पदों का संग्रह है।

५६६०. गुटका सं० २७८। पत्र सं० १-८०। आ० ६×४ इ०। अपूर्ण।

विशेष—बीच के कई पत्र नहीं हैं। श्रीमन्मन्त्रदेव कृत परमात्मप्रकाश है।

५६६१. गुटका सं० २७९। पत्र सं० ६-३४। आ० ६×४ इ०। अपूर्ण।

विशेष—नित्यपूजा संग्रह है।

५६६२. गुटका सं० २८० । पत्र सं० २-४१ । आ० ५३×४ इ० । भाषा—हिन्दी गद्य । अपूर्ण ।

विशेष—कषायों का वर्णन है ।

५६६३. गुटका सं० २८१ । पत्र सं० ६२ । आ० ६×६ इ० । भाषा—X । पूर्ण ।

विशेष—बारहखड़ी, पूजासंग्रह, दशलक्षण, सोलहकारण, पञ्चमेष्टपूजा, रत्नत्रयपूजा, तत्त्वार्थसूत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

५६६४. गुटका सं० २८२ । पत्र सं० १६-८४ । आ० ६३×४३ इ० ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है— जैनपञ्चीसी, पद (भूधरदास) भक्तामरभाषा, परमज्योतिभाषा विद्यापहारभाषा (अचलकोत्ति), निर्वाणकाण्ड, एकीभाव, अकृत्रिमवेद्यालय जयमाल (भगवतीदाम), सहस्रनाम, साधुवन्दना, विनती (भूधरदास), नित्यपूजा ।

५६६५. गुटका सं० २८३ । पत्र सं० ३३ । आ० ७३×५ इ० । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—अध्यात्म ।

अपूर्ण ।

विशेष—३३ से आगे के पत्र खाली हैं । बनारसीदास कृत समयसार है ।

५६६६. गुटका सं० २८४ । पत्र सं० २-३५ । आ० ८×६३ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—वचनितक (धनतराय), श्रुतबोध (कालिदास) ये दो रचनाएँ हैं ।

५६६७. गुटका सं० २८५ । पत्र सं० ३-४६ । आ० ८×६३ इ० । भाषा—संस्कृत प्राकृत । अपूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा, स्वाध्यायपाठ, चौबीसठाणाचर्चा ये रचनाएँ हैं ।

५६६८. गुटका सं० २८६ । पत्र सं० ३१ । आ० ८×६ इ० । पूर्ण ।

विशेष—द्रव्यसंग्रह संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित ।

५६६९. गुटका सं० २८७ । पत्र सं० ३२ । आ० ७३×५३ इ० । भाषा—संस्कृत । पूर्ण ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र, नित्यपूजा है ।

५६७०. गुटका सं० २८८ । पत्र सं० २-४२ । आ० ६×४ इ० । विषय—संग्रह । अपूर्ण ।

विशेष—ग्रह फल आदि दिया हुआ है ।

५६७१. गुटका सं० २८९ । पत्र सं० २० । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—शृङ्गार । पूर्ण ।

विशेष—रसिकराय कृत स्नेहलीला में से उद्धृत गोपी संवाद दिया है ।

प्रारम्भ—

‘ एक समय ब्रजवास की सुरति भई हरिराई ।

नि ॥ जब अपनी जानि के ऊधो लियो बुलाइ ॥

श्रीकिरसन बचन ऐस कहे ऊधव तुम सुनि ले ।

नन्द जसोदा भगदि दे ब्रज जाइ सुख दे ॥ १ ॥

ब्रज वासी बल्लभ सदा मेरे जीउनि प्रान ।

तानै तीमष न बीसरूँ मोहे नन्दराय की आन ॥

अन्तिम—

यह लीला ब्रजवास की गोपी किरसन सनेह ।

जन मोहन जो गाव ही ते नर पाउ देह ॥ १२२ ॥

जो गाव सीष सुर गमन तुम बचन सहेत ।

रसिक राय पूरन कीया मन बांछित फल देत ॥ १२३ ॥

नोट—आगे नाग लीला का पाठ भी दिवा हुआ है ।

५६७२. गुटका सं० २६० । पत्र सं० ५२ । भा० ६×५ ६० । अधूरी ।

विशेष—मुख्य निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. सोलहकारणकथा	रत्नपाल	संस्कृत	८-१३
२. दशलक्षणीकथा	मुनि ललितकीर्ति	"	१३-१७
३. रत्नत्रयक्षतकथा	"	"	१७-१८
४. पुष्पाञ्जलिप्रतकथा	"	"	१८-२३
५. अक्षयदशमीकथा	"	"	२३-२६
६. अनन्तचतुर्दशीप्रतकथा	"	"	२७
७. वैद्यमनोरस	नयनसुख	हिन्दी पद्य पूर्ण	३१-५२

विशेष—लाखेरो ग्राम में दीवान श्री बुधसिंहजी के राज्य में मुमि मेघविमल ने प्रतिलिपि की थी ।

गुटका काफी जोड़ी है । पत्र चूहों के खाये हुए है । लेखनकाल स्पष्ट नहीं है ।

५६७३. गुटका सं० २६१ । पत्र सं० ११७ । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—संग्रह ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है । संस्कृत में समयसार कल्याणपूजा भी है ।

५६७४. गुटका सं० २६२ । पत्र सं० ४८ ।

१. ज्योतिषशास्त्र	×	संस्कृत	१६-३६
२. फुटकर दोहे	×	हिन्दी	३१ दोहा है ३६-३७

३. पञ्चकोष

गोवर्धन

संस्कृत

३७-४८

ले० काल सं० १७६३ संत हरिवंशदास ने लवारा में प्रतिलिपि की थी।

५६७५ गुटका सं० २६३। संग्रह कर्ता पाण्डे टोडरमलजी। पत्र सं० ७६। आ० ५×६ इञ्च। ले० काल सं० १७३३। अपूर्ण। दशा-जीर्ण।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे एवं मंत्रों का संग्रह है।

५६७६ गुटका सं० २६४। पत्र सं० ७७। आ० ६×४ इञ्च। ले० काल १७८८ वीज सुदी ६। पूर्ण। सामान्य गुच्छ। दशा-जीर्ण।

विशेष—पं० गोवर्धन ने प्रतिलिपि की थी। पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है।

५६७७ गुटका सं० २६५। पत्र सं० ३१-६२। आ० ४×५। इञ्च भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल शक सं० १६२५ सावन बुदी ५।

विशेष—गुण्याहवाचन एवं भक्तामरस्तोत्र भाषा है।

५६७८ गुटका सं० २६६। पत्र सं० ३-४१। आ० ३×३१ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। अपूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र एवं तत्त्वार्थ सूत्र है।

५६७९ गुटका सं० २६७। पत्र सं० २५। आ० ६×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखे हैं।

५६८० गुटका सं० २६८। पत्र सं० ६२। आ० ६३×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। पूर्ण।

विशेष—प्रारम्भ के ३१ पत्र खाली हैं। ३१ से आगे फिर पत्र १ २ से प्रारम्भ है। पत्र १० तक शृङ्गार के कवित्त हैं।

१. बारह मासा—पत्र १०-२१ तक। चूहर कवि का है। १२ पद हैं। वर्णन सुन्दर है। कविता में पत्र लिखकर बताया गया है। १७ पद्य है।

२. बारह मासा—गोविन्द का—पत्र २६-३१ तक।

५६८१ गुटका सं० २६९। पत्र सं० ४१। आ० ७×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-शृङ्गार।

विशेष—कोकसार है।

५६८२ गुटका सं० ३००। पत्र सं० १२। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-मन्त्रशास्त्र।

विशेष—मन्त्रशास्त्र, आयुर्वेद के नुसखे। पत्र ७ से आगे खाली है।

५६८३. गुटका सं० ३०१ । पत्र सं० १८ । आ० ४१×३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—संग्रह ।
ले० काल १९१८ । पूर्ण ।

विशेष—लावणी मांगीतुंगी की— हर्षकीर्ति ने सं० १९०० ज्येष्ठ मुदी ५ की धात्रा को थी ।

५६८४. गुटका सं० ३०२ । पत्र सं० ४२ । आ० ४×३३ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—संग्रह । पूर्ण ।
विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६८५. गुटका सं० ३०३ । पत्र सं० १०५ । आ० ४३×४३ इ० । पूर्ण ।

विशेष—३० मन्त्र दिये हुये हैं । कई हिन्दी तथा उर्दू में लिखे हैं । आगे मन्त्र तथा मन्त्रविधि दी हुई है । उनका फल दिया हुआ है । जन्मात्रो सं० १८१७ की जगताराम के पीथ भास्करचन्द के पुत्र की आमुर्वेद के मुखने दिये हुये हैं ।

५६८६. गुटका सं० ३०३ क । पत्र सं० १५ । आ० ८×५३ इ० । भाषा—हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ में विश्वामित्र धिरचित रामकवच है । पत्र ३ से तुलसीदास कृत कवित्तबंध रामचरित्र है । इसमें छप्पय छन्दों का प्रयोग हुआ है । १-२० पद्य तक संख्या ठीक हैं । इससे आगे ३५६ संख्या से प्रारम्भ कर ३८२ तक संख्या खली है । इसके आगे २ पत्र खाली हैं ।

५६८७. गुटका सं० ३०४ । पत्र सं० १६ । आ० ७३×५ इ० । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—४ से ६ तक पत्र नहीं हैं । अजयराज, रामदास, बनारसीदास, जगताराम एवं विजयकीर्ति के पदों का संग्रह है ।

५६८८. गुटका सं० ३०५ । पत्र सं० १० । आ० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । पूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा है ।

५६८९. गुटका सं० ३०६ । पत्र सं० ६ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा पाठ ।
पूर्ण । विशेष—शांतिपाठ है ।

५६९०. गुटका सं० ३०७ । पत्र सं० १४ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—नन्ददास की नाममञ्जरी है ।

५६९१. गुटका सं० ३०८ । पत्र सं० १० । आ० ५×४३ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । पूर्ण ।
विशेष—भक्तामरकद्विमन्त्र सहित है ।

क भण्डार [शास्त्रभण्डार बाबा दुलीचन्द जयपुर]

५६६२. गुटका सं० १ । पत्र सं० २७१ । आ० १३×७ $\frac{१}{२}$ इञ्च । वे० सं० ८५७ । पूर्ण ।

१. भाषाभूषण	धीरजसिंह राठौड़	हिन्दी	१-८
२. ग्रन्थोत्तर सनाथ विधि	×	"	ले० काल सं० १७५६ १३

औरंगजेब के समय में पं० अभयमुन्दर ने ब्रह्मपुरी में प्रतिलिपि की थी ।

३. जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी	१४
४. समयसार नाटक	बनारसीदास	"	११७

बादशाह शाहजहाँ के शासन काल में सं० १७०८ में लाहौर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५. बनारसी विभास	×	"	१२६

विशेष—बादशाह शाहजहाँ के शासनकाल सं० १७११ में जिहानाबाद में प्रतिलिपि हुई थी ।

५६६३. गुटका सं० २ । पत्र सं० २२५ । आ० ८×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । अपूर्ण । वे० सं० ८५८ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजा पाठ संग्रह है ।

५६६४. गुटका सं० ३ । पत्र सं० २४ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इ० । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । वे० सं० ८५९ ।

१. शान्तिकनाम	×	हिन्दी	१
२. महाभिषेक सामग्री	×	"	१-८
३. प्रतिष्ठा में काम आने वाले ६६ यंत्रों के चित्र	×	"	६-२४

५६६५. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ६३ । आ० ५ $\frac{३}{४}$ ×८ $\frac{१}{२}$ इ० । पूर्ण । वे० सं० ८६० ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५६६६. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ५६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण । वे० सं०

८६१ ।

विशेष—सुभाषित पाठों का संग्रह है ।

५६६७. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ३३४ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं०

८६२ ।

विशेष—विभिन्न स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७६८. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ४१६ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×५ इ० । ले० काल सं० १८०५ अषाढ सुदी ५

पूर्णि । वे० सं० ८६३ ।

१. पूजा पाठ संग्रह	×	संस्कृत हिन्दी
२. प्रतिष्ठा पाठ	×	"
३. जीवीस तीर्थङ्कर पूजा	रामचन्द्र	हिन्दी ले० काल १८७५ भादवा सुदी १०

५६६६. गुटका सं० ८ । पत्र सं० ३१७ । आ० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७६२ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ८६४ ।

विशेष—पूजा एवं प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठों का संग्रह है । पृष्ठ २०७ पत्र भक्तामरस्तोत्र की पूजा विशेषतः उल्लेखनीय है ।

५७००. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १४ । आ० ४×४ इ० । भाषा—हिन्दी । पूर्ण । वे० सं० ८६५ ।

विशेष—जगताराम, गुमानीराम, हरीसिंह, जोधराज, लाल, रामचन्द्र आदि कवियों के भजन एवं पदों का संग्रह है ।

स्व भण्डार [शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर जोधनेर जयपुर]

५७०१. गुटका सं० १ । पत्र सं० २१२ । आ० ६×४ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. होडाचक्र	×	संस्कृत	अपूर्ण	८
२. नाममाला	अनक्षय	"	"	६-३२
३. धृतपूजा	×	"		३३-३६
४. पञ्चकल्याणकपूजा	×	"	ले० काल १७८३	३६-६५
५. मुक्तावलीपूजा	×	"		६५-६६
६. दशशततीक्षापन	×	"		६६-८६
७. त्रिकालचतुर्दशीपूजा	×	"	ले० काल सं० १७८३	८६-१०२
८. नवकारपैलीसी	×	"		
९. आदित्यवारकथा	×	"		
१०. प्रोषधोपवास व्रतोद्यापन	×	"		१०३-२१२
११. नन्दीश्वरपूजा	×	"		
१२. पञ्चकल्याणकपाठ	×	"		
१३. पञ्चमेष्टपूजा	×	"		

५७०२. गुटका सं० २ । पत्र सं० १६६ । आ० १×६३ इ० । ले० काल × । दशा-जीर्ण जीर्ण ।

१. त्रिलोकवर्णन	×	संस्कृत हिन्दी	१-१०
२. कालचक्रवर्णन	×	हिन्दी	११-१४
३. विचारमाथा	×	प्राकृत	१५-१६
४. चौबीसतीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी	१६-३१
५. चउबीसठारणाचर्चा	×	"	३२-७८
६. आश्रव त्रिभङ्गी	×	प्राकृत	७९-११२
७. भावसंग्रह (भावत्रिभङ्गी)	×	"	११३-१३३
८. शेषनक्रिया श्रावकाचार टिप्पणा	×	संस्कृत	१३४-१५४
९. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	१५४-१६८

५७०३. गुटका सं० ३ । पत्र सं० २१५ । आ० ६×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजापाठ तथा मन्त्रसंग्रह है । इसके अतिरिक्त निम्नपाठ संग्रह है ।

१. शत्रुघ्नयतीर्थदास	समयसुन्दर	हिन्दी	३३
२. बारहभावना	जितचन्द्रसूरि	" २० काल १६१६	३३-४०
३. दशवैकालिकगीत	जैतसिंह	"	४१-४६
४. शालिभद्र चौपई	जितसिंहसूरि	" २० काल १६०८	४६-६४
५. चतुर्विंशति जिनराजस्तुति	"	"	६४-१०६
६. बीसतीर्थङ्करजिनस्तुति	"	"	१०६-११७
७. महावीरस्तवन	जितचन्द्र	"	११७-११६
८. आदीश्वरस्तवन	"	"	१२०
९. पार्श्वजिनस्तवन	"	"	१२०-१२१
१०. विनती, पाठ व स्तुति	"	"	१२२-१४१

५७०४. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ७१ । आ० ५३×३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १६०४ ।

पूर्ण ।

विशेष—नित्यपाठ व पूजाओं का संग्रह है । लस्कर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५७०५. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ४८ । आ० ५×४ इ० । ले० काल सं० १६०१ । पूर्ण ।

विशेष—कर्मप्रकृति वर्णन (हिन्दी), कल्याणमन्दिरस्तोत्र, सिद्धिप्रियस्तोत्र (संस्कृत) एवं विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

५७०६ गुटका सं० ६ । पत्र सं० ८० । आ० ८½×६½ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—गुटके में निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है ।

१. चौरासीबोल	कौरपाल	हिन्दी	अपूर्ण	४-१६
२. आदिपुराणविमती	गङ्गादास	"		१७-४३

विशेष—गुटके में नरसीपुरा (भरसिधपुरा) जाति वाले वार्षिक पर्वत के पृथ गङ्गादास ने विमती रचना की थी ।

३. पद—जिण जदि जिण जवि जिवड़ा	हर्षकीर्ति	हिन्दी		४४-४५
४. अष्टकपूजा	विश्वभूषण	"	पूर्ण	५१
५. समकितविश्वोद्धर्म	ब० जिनदास	"	"	५८

५७०७. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ५० । आ० ५½×४½ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—४८ मन्त्रों का मन्त्र सहित संग्रह है । ग्रन्थ में कुछ आयुर्वेदिक नुसखे भी दिये हैं ।

५७०८. गुटका सं० ८ । पत्र सं० × । आ० ५×२½ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—स्फुट कवित्त, उद्यवासों का व्यौरा, सुभाषित (हिन्दी व संस्कृत) स्वर्ग नरक आदि का वर्णन है ।

५७०९. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ५१ । आ० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—संग्रह । ले० काल सं० १७८३ । पूर्ण ।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखे, पाजा केवली, नाम माला आदि हैं ।

५७१०. गुटका सं० १० । पत्र सं० ८५ । आ० ६×३½ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पद संग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—लिपि स्पष्ट नहीं है तथा अशुद्ध भी है ।

५७११. गुटका सं० ११ । पत्र सं० १२-६२ । आ० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी पाठों का संग्रह है ।

५७१२. गुटका सं० १२। पत्र सं० २२३। आ० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले० काल सं० १६०५ वैशाख बुदी १४। पूर्ण।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है।

५७१३. गुटका सं० १३। पत्र सं० १६३। आ० ५×५ इ०। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—सामान्य स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह है।

५७१४. गुटका सं० १४। पत्र सं० ४२। आ० ८३×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण।

१. त्रिलोकवर्णन	×	हिन्दी	पूर्ण	१-१८
२. खंडेला की चरवा	×	"	"	१६-२६
३. त्रैलोक्य जलका पुरुषवर्णन	×	"	"	२६-४२

५७१५. गुटका सं० १५। पत्र सं० ७६। आ० ६×५ इ०। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

५७१६. गुटका सं० १६। पत्र सं० १२०। आ० ६×५ इ०। ले० काल सं० १७६३ वैशाख बुदी ३। पूर्ण।

१. समयचाराधक	बनारसीदास	हिन्दी	१०-१०६
२. पार्श्वनाथजीकी निसाणी	×	"	११०-११४
३. शान्तिनाथस्तवन	गुरासागर	"	११५-११६
४. पुरुषदेवकीविनती	×	"	११७-१२०

५७१७. गुटका सं० १७। पत्र सं० ११५। आ० ६×५ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है।

५७१८. गुटका सं० १८। पत्र सं० १२४। आ० ५३/४×५ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है।

५७१९. गुटका सं० १९। पत्र सं० २१३। आ० ५×५ इ०। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—नित्य पाठ व मंत्र आदि का संग्रह है तथा आयुर्वेद के सुसंक्षेप भी दिये हुये हैं।

५७२०. गुटका सं० २०। पत्र सं० १३२। आ० ७×६ इ०। ले० काल सं० १८२२। अपूर्ण।

विशेष—नित्यपूजापाठ, पार्श्वनाथ स्तोत्र (पद्मप्रभदेव) जिनस्तुति (रुक्मन्द, हिन्दी) पद (शुभ मन्द एवं कनककीर्ति) खंडेलावालों की उत्पत्ति तथा सामुद्रिक शास्त्र आदि पाठों का संग्रह है।

५७२१. गुटका सं० २१ । पत्र सं० ५-६२ । आ० ५६×५६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—समयसार गाथा, सामयिकपाठ वृत्ति सहित, तत्त्वार्थसूत्र एवं भक्तामरस्तोत्र के पाठ हैं ।

५७२२. गुटका सं० २२ । पत्र सं० २१६ । आ० ६×६ इ० । ले० काल सं०-१८६७ बीन सुदी १४ ।

पूर्ण ।

विशेष—५० मंत्रों एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७२३. गुटका सं० २३ । पत्र सं० ६७-२०६ । आ० ६×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. पद—(वह पानी मुलतान गये)	×	हिन्दी	पूर्ण	६७
२. (पद—कौन खस्तामेरीमै न जानी तजि के बले गिरनारि)	×	"	"	"
३. पद—(प्रभू तेरे दरसन की बालेहारी)	×	"	"	"
४. आदित्यवारकथा	×	"	"	६६-१२५
५. पद—(चलो पिय पूजन श्री वीर जिनंद)	×	"	"	१७८-१७९
६. जोगीरासो	जिनदास	"	"	१८०-१८२
७. पञ्चवेन्द्रिय बैलि	ठक्कुरसी	"	"	१८२-१८५
८. जैनविद्दीदेश की पत्रिका	सजलसराय	"	"	१८५-१८७

ग भण्डार [शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर]

५७२४. गुटका सं० १ । आ० ८×५ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०० ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. पद— सांवरिया पारसनाथ मोहे तो काकर राखो	खुशालचन्द	हिन्दी
२. " मुझे है चान दरसन का दिखा दोगे तो क्या होगा	×	"
३. दर्शनपाठ	×	संस्कृत
४. तीन चौबीसीनाम	×	हिन्दी
५. कल्याणमन्दिरभाषा	भनारसीदास	"
६. भक्तामरस्तोत्र	मानसुङ्गाचार्य	संस्कृत
७. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"

८. देवपूजा	×	हिन्दी संस्कृत
९. अकृत्रिम जिन चैत्यालय जयमाल	×	हिन्दी
१०. सिद्ध पूजा	×	संस्कृत
११. सोलहकारणपूजा	×	"
१२. दशलक्षरूपूजा	×	"
१३. शान्तिपाठ	×	"
१४. पार्श्वनाथपूजा	×	"
१५. पंचमेरूपूजा	भूधरदास	हिन्दी
१६. नन्दीश्वरपूजा	×	संस्कृत
१७. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	अपूर्ण "
१८. रत्नत्रयपूजा	×	"
१९. अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल	×	हिन्दी
२०. निर्वाणकाण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	"
२१. गुरुओं की विनती	×	"
२२. जिनपञ्चोत्ती	नवलराम	"
२३. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	पूर्ण संस्कृत
२४. पञ्चकल्याणमंगल	रूपचन्द्र	हिन्दी
२५. पद— जिन देख्या विन रह्यो न जाय	किशनसिंह	"
२६. " कीजो हो भयन सो प्यार	चमनतराय	"
२७. " प्रभू यह घरज सुगो मेरी	नन्द कवि	"
२८. " मयो सुख चरन देखत ही	"	"
२९. " प्रभू मेरी सुनो विनती	"	"
३०. " परघो संसार की धारा जिनको वार नहीं पारा	"	"
३१. " कला दीदर प्रभू तेरा भया कर्मन समुह हेरा	"	"
३२. स्तुति	सुधजन	"
३३. नेमिनाथ के दश भव	×	"
३४. पद— जैन मत परखो रे भाई	×	"

५७२५. गुटका सं० २ । पत्र सं० ८३-४०३ । आ० ४३×३ इ० । अपूर्ण । वे० सं० १०१ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. कल्याणमन्दिर भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण ८३-८३
२. देवसिद्धपूजा	×	"	८३-११५
३. सोलहकारणपूजा	×	अपभ्रंश	११५-१२२
४. दशलक्षणपूजा	×	अपभ्रंश संस्कृत	१२२-१२६
५. रत्नत्रयपूजा	×	संस्कृत	१२८-१६७
६. नन्दीश्वरपूजा	×	प्राकृत	१६८-१८१
७. शान्तिपाठ	×	संस्कृत	१८१-१८६
८. पञ्चमंगल	रूपचन्द्र	हिन्दी	१८७-२१२
९. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	अपूर्ण २१३-२२४
१०. सहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचार्य	"	२२५-२६८
११. सत्तामरस्तोत्र मंत्र एक हिन्दी	पद्यार्थ सहित	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत हिन्दी २६९-४०३

५७२६. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ८६ । आ० १०×६ इ० । विषय—संग्रह । वे० काल सं० १८७६
आवरण सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० १०५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. चौबीसतीर्थकरपूजा	द्यानतराय	हिन्दी
२. प्रष्टालिकापूजा	"	"
३. षोडशकारणपूजा	"	"
४. दशलक्षणपूजा	"	"
५. रत्नत्रयपूजा	"	"
६. पंचमेकपूजा	"	"
७. सिद्धक्षेत्रगृह	"	"
८. दर्शनपाठ	×	"
९. पद - भरज हमारे मुन	×	"

१०. भक्तामरस्तोत्रोत्पत्तिकथा	×	"
११. भक्तामरस्तोत्रश्रद्धामंत्रसहित	×	संस्कृत हिन्दी

नथमल कृत हिन्दी ग्रंथ सहित ।

५५२७. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ५५ । आ० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९५४ । पूर्ण । वे० सं० १०३ ।

विशेष—जैन कवियों के हिन्दी पदों का संग्रह है । इनमें दीक्षतराम, ज्ञानतराम, जोधराज, नवल, बुधजन भेष्या गायत्रीदास के नाम उल्लेखनीय हैं ।

घ भण्डार [दि० जैन नया मन्दिर वैराटियों का जयपुर]

५७०८. गुटका सं० १ । पत्र सं० ३०० । आ० ६३×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४० ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

१. भक्तामरस्तोत्र	मानगुंगाचार्य	संस्कृत	१-६
२. भण्डारगुणमन्त्र	×	"	६
३. बनारसीविभास	बनारसीदास	हिन्दी	७-१६६
४. कविस	"	"	१६७
५. परमार्थदीप्ता	रूपचन्द्र	"	१६८-१७४
६. नाममात्रभाषा	बनारसीदास	"	१७५-१९०
७. दशकध्वनाममाला	मन्दकात्रि	"	१९०-१९७
८. जिनदिगलक्षदकोश	×	"	१९७-२०६
९. जिनसतसई	×	"	अपूर्णा २०७-२११
१०. विनालभाषा	रूपदीप	"	२११-२२१
११. देवपूजा	×	"	२२२-२६२
१२. जैनचतक	मूधरदास	"	२६२-२८३
१३. भक्तामरभाषा (पद्य)	×	"	२८४-३००

विशेष—श्री टेकमचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

५७२६. गुटका सं० २ । पत्र सं० २३३ । आ० ६×६ इ० । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १४१

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	१-१०६
विशेष—संस्कृत गद्य में टीका दी हुई है ।			
२. धर्माधर्मस्वरूप	X	हिन्दी	११०-१७०
३. ढाढसीगाथा	ढाढसीमुनि	प्राकृत	१७१-१८२
४. पंचलब्धिविचार	X	"	१८३-१८४
५. अठावीस मूलगुणरास	ब० जिनदास	हिन्दी	१८४-१८६
६. दानकथा	"	"	१८७-२१५
७. बारह अनुप्रेक्षा	X	"	२१५-२१७
८. हंसतिलकरास	ब० अजित	हिन्दी	२१७-२१३
९. चिद्रूपभास	X	"	२२०-२१७
१०. आदिनाथकल्याणकथा	ब्रह्म ज्ञानसागर	"	२२८-२३३

५७२७. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ६८ । आ० ५.३×४ इ० । ले० काल सं० १८२१ पूर्ण । वे० सं० १४२

१. जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	१-३५
२. आदित्यवार कथा भाषा टीका सहित	मू० क० सकलकीर्ति	हिन्दी	३६-६०

भाषाकार-सुरेन्द्रकीर्ति २० काल १७४१

३. पञ्चपरमेश्वरगुणस्तव	X	"	६१-६८

५७२८. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ७० । आ० ७.३×६ इ० । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १७४३

१. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	५-२५
२. भक्ताभरभाषा	हेमराज	हिन्दी	२६-३२
३. जिनस्तवन	श्रीलतराम	"	३२-३३
४. छद्मदाला	"	"	३४-५६
५. भक्ताभरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	६०-६७
६. रविधारकथा	बेवेन्द्रभूषण	हिन्दी	६८-७०

५७३२. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ३६ । आ० ८३×७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण ।
वे० सं० १४४ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५७३३. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ६-३६ । आ० ६३×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण ।
वे० सं० १४७ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५७३४. गुटका सं० ७ । पत्र सं० २-३३ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा ।
ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १४८ ।

५७३५. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १७-४८ । आ० ६३×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X ।
अपूर्ण । वे० सं० १४९ ।

विशेष—बनारसीविलास तथा कुछ पद्यों का संग्रह है ।

५७३६. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ३२ । आ० ६×४३ इ० । ले० काल० सं० १८०१ फागुण ।
पूर्ण । वे० सं० १४५ ।

विशेष—हिन्दी पद्यों का संग्रह है ।

५७३७. गुटका सं० १० । पत्र सं० ४० । आ० ६×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा पाठ संग्रह ।
ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १५० ।

५७३८. गुटका सं० ११ । पत्र सं० २५ । आ० ७×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा पाठ संग्रह ।
ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १५१ ।

५७३९. गुटका सं० १२ । पत्र सं० ३४-८६ । आ० ८३×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा
पाठ संग्रह । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १४६ ।

विशेष—स्फुट पाठों का संग्रह है ।

५७४०. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ४८ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा पाठ संग्रह ।
ले० काल X अपूर्ण । वे० सं० १५२ ।

ड० भण्डार [शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर संधीजी]

५७४१. गुटका सं० १ । पत्र सं० १०७ । आ० ८३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल X ।
अपूर्ण ।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७४२. गुटका सं० २ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८७६ वैशाख शुक्ला १० । अपूर्ण ।

विशेष—वि० रामसुखजी हंगरसोजी के पुत्र के पठनार्थ पुजारी राधाकृष्ण ने मंडा नगर में प्रतिलिपि की थी । पूजाओं का संग्रह है ।

५७४३. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ६६ । आ० ६½×६ इ० । भाषा-प्राकृत संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—भक्तिपाठ, संबोधपञ्चासिका तथा गुभाषितावली आदि उल्लेखनीय पाठ हैं ।

५७४४. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ४-२६ । आ० ७×८ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८९८ । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७४५. गुटका सं० ५ । पत्र सं० २८ । आ० ८×६½ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १९०७ । पूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५७४६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २७६ । आ० ६×४½ इ० । ले० काल सं० १९६.... माह बुदी ११ । अपूर्ण ।

विशेष—भट्टारक चन्द्रकीर्ति के शिष्य आचार्य लालचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । पूजा स्तोत्रों के अतिरिक्त निम्न पाठ उल्लेखनीय है :—

१. आराधनासार	देवसेन	प्राकृत
२. संबोधपञ्चासिका	×	"
३. श्रुतस्वन्ध	हेमचन्द्र	संस्कृत

५७४७. गुटका सं० ७ । पत्र सं० १०४ । आ० ६½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—आदित्यवार कथा के साथ अन्य कथाएँ भी हैं ।

५७४८. गुटका सं० ८ । पत्र सं० ३४ । आ० ४½×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५७४९. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ७८ । आ० ७½×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा एवं स्तोत्र संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण ।

५७५०. गुटका सं० १० । पत्र सं० १० । आ० ७६×६ इ० । ले० काल X । अपूर्ण ।

विशेष—आनन्दघन एवं सुन्दरदास के पदों का संग्रह है ।

५७५१. गुटका सं० ११ । पत्र सं० २० । आ० ६३×४३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण ।

विशेष—भूधरदास आदि कवियों की स्तुतियों का संग्रह है ।

५७५२. गुटका सं० १२ । पत्र सं० ५० । आ० ६×४३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण ।

विशेष—पञ्चभङ्गल रूपचन्द कुत, वधावा एवं विनतियों का संग्रह है ।

५७५३. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ६० । आ० ८×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण ।

१. धर्मविलास राजनराय हिन्दी

२. जैनशतक भूधरदास ”

५७५४. गुटका सं० १४ । पत्र सं० १५ से १३४ । आ० ६×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण ।
विशेष—चर्चा संग्रह है ।

५७५५. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ४० । आ० ७३×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण ।
विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५७५६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ११४ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल X । अपूर्ण ।

विशेष—पूजापाठ एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७५७. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण ।

विशेष—गङ्गा, विहारी आदि कवियों के पद्यों का संग्रह है ।

५७५८. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ५२ । आ० ६×६ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल X । अपूर्ण ।
जीर्ण । विशेष—तत्त्वार्थसूत्र एवं पूजायें हैं ।

५७५९. गुटका सं० १९ । पत्र सं० १७३ । आ० ६×७ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण ।

१. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण
२. जन्मस्वामी चौनई	श० रायमल्ल	”	पूर्ण
३. धर्मपरीक्षाभाषा	X	”	अपूर्ण
४. समाधिमरणभाषा	X	”	”

५७६०. गुटका सं० २० । पत्र सं० ५३ । आ० ८३×६३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्ण ।

विशेष—शुभानोरामजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१. वसंतराजशकुनावली × संस्कृत हिन्दी २० काल सं० १८२५
साधन सुदी ५ ।

२. नाममाला धनञ्जय संस्कृत ×

५७६१. गुटका सं० २१ । पत्र सं० ८-७४ । आ० ८×१३ इ० । ले० काल सं० १८२० अषाढ सुदी

६ । अपूर्ण ।

१. ढोलामारुखी की वार्ता × हिन्दी

२. शनिश्चरकथा × ”

३. चन्दकुंवर की वार्ता × ”

५७६२. गुटका सं० २२ । पत्र सं० १२७ । आ० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है ।

५७६३. गुटका सं० २३ । पत्र सं० ३६ । आ० ६३×५३ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७६४. गुटका सं० २४ । पत्र सं० १२८ । आ० ७×१३ इ० । ले० काल सं० १७७४ । अपूर्ण । जीर्ण

१. यशोधरकथा खुशालचन्द काला हिन्दी २० काल १७७५

२. पद्म व स्तुति × ” ”

विशेष—खुशालचन्दजी ने स्वयं प्रतिलिपि की थी ।

५७६५. गुटका सं० २५ । पत्र सं० ७७ । आ० ६×४ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५७६६. गुटका सं० २६ । पत्र सं० ३६ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण

१. पद्मावतीसहस्रनाम × संस्कृत

२. द्रव्यसंग्रह × प्राकृत

५७६७. गुटका सं० २७ । पत्र सं० ३३८ । आ० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. पूजासंग्रह × संस्कृत

	ब्रह्मरायणस	हिन्दी
२. प्रद्युम्नरास		
३. सुदर्शनरास	"	"
४. श्रीपालरास	"	"
५. आदित्यवारकथा	"	"

५७६८. गुटका सं० २८ । पत्र सं० २७६ । आ० ७×४ ३/४ इ० । ले० काल X । पूर्ण ।

विशेष—गुटके में निम्न पाठ उल्लेखनीय है ।

	धनंजय	संस्कृत
१. नाममाला		
२. अकलंककृतक	अकलंकदेव	"
३. त्रिलोकतिलकस्तोत्र	भट्टारक महीचन्द्र	"
४. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"
५. योगीरासो	जिनदास	हिन्दी

५७६९. गुटका सं० २९ । पत्र सं० २५० । आ० ७×४ ३/४ इ० । ले० काल सं० १८७४ वैशाख कृष्ण

२ । पूर्ण ।

	X	हिन्दी	
१. निरुपनियमपूजासंग्रह			
२. चौबीस तीर्थंकर पूजा	रामचन्द्र	"	
३. कर्मदहनपूजा	देवचन्द्र	"	
४. पंचपरमेष्ठिपूजा	X	"	२० काल सं० १८६२ ले० का० सं० १८७२

स्थौजीराम भावसां ने प्रतिलिपि की थी ।

	X	हिन्दी
५. पंचकल्याणकपूजा		
६. द्रव्यसंग्रह भाषा	दानतराय	"

५७७०. गुटका सं० ३० । पत्र सं० १०० । आ० ६×५ इ० । ले० काल X । अपूर्ण ।

	X	संस्कृत
१. पूजापाठसंग्रह		
२. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी
३. लघुचाणक्यराजनीति	चाणक्य	"
४. वृद्ध " "	"	"

५ नाममाला

धनञ्जय

संस्कृत

५७७१. गुटका सं० ३९ । पत्र सं० ६०-११० । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५७७२. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ६२ । आ० ५½×५½ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१. कवकावलीसी	×	हिन्दी
२. पूजापाठ	×	संस्कृत हिन्दी
३. विक्रमादित्य राजा की कथा	×	"
४. शनिश्चरदेव की कथा	×	"

५७७३. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ८४ । आ० ६×४½ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१. पाशाकेवली (अब्जद)	×	हिन्दी
२. जानो गदेशवत्तीसी	हरिदास	"
३. स्यामवत्तीसी	×	"
४. पाशाकेवली	×	"

५७७४. गुटका सं० ३४ । आ० ५×५ इ० । पत्र सं० ८४ । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७७५. गुटका सं० ३५ । पत्र सं० ६६ । आ० ६×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९४० । पूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है । बचुलाल छाबडा ने प्रतिलिपि की थी ।

५७७६ गुटका सं० ३६ । पत्र सं० १५ से ७६ न आ० ७×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं एवं पद संग्रह है ।

५७७७. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० ७३ । आ० ६×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. जैनशतक	भूषरदास	हिन्दी
२. संबोधपंचासिका	चान्तराथ	"
३. पद-संग्रह	"	"

५७७८. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० २६० । आ० ५३×३३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजाओं तथा स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७७९. गुटका सं० ३९ । पत्र सं० ११८ । आ० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८६१ । पूर्ण ।

विशेष—नातू गोधा ने गाजी के खाना में प्रतिलिपि की थी ।

१. गुलालपञ्चमी	ब्रह्मगुलाल	हिन्दी	
२. चंद्रहंसकथा	हर्षकवि	"	र का सं. १७०८ ले. का. सं. १८११
३. मोहबिवेकमुद्र	बनारसीदास	"	
४. आत्मसंबोधन	चानतराम	"	
५. पूजासंग्रह	×	"	
६. भक्तामरस्तोत्र (मंत्र सहित)	×	संस्कृत	ले० का० सं० १८११
७. आदित्यवार कथा	×	हिन्दी	ले० का० सं० १८६१

५७८०. गुटका सं० ४० । पत्र सं० ८२ । आ० ५३×४ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१. नखशिखवर्णन	×	हिन्दी	
२. आयुर्वेदिकनुसखे	×	"	

५७८१. गुटका सं० ४१ । पत्र सं० २०० । आ० ७३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—ज्योतिष संबंधी साहित्य है ।

५७८२. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० १५८ । आ० ८×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—मनोहरलाल कृत ज्ञानचिंतामणि है ।

५७८३. गुटका सं० ४३ । पत्र सं० ८० । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा व पद । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—शनिश्चर एवं आदित्यवार कथायें तथा पदों का संग्रह है ।

५७८४. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ६० । आ० ६×५ इ० । ले० काल सं० १९५६ । कापुन बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्रसंग्रह है ।

५७८५. गुटका सं० ४५ । पत्र सं० ६० । भा० ६×५३ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१. नित्यपूजा	×	हिन्दी संस्कृत
२. पञ्चमङ्गल	रूपचन्द्र	"
३. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत

५७८६. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० २४५ । भा० ४×३ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं तथा स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७८७. गुटका सं० ४७ । पत्र सं० १७१ । भा० ६×४ इ० । ले० काल सं० १८३१ भादवा बुध ७ । पूर्ण ।

१. भर्तृहरिशतक	भर्तृहरि	संस्कृत
२. वैद्यजीवन	लोलिम्मराज	"
३. सप्तशती	गोवर्द्धनाचार्य	ले० काल सं० १७३१ "

विशेष—जयपुर में गुमानसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

५७८८. गुटका सं० ४८ । पत्र सं० १७२ । भा० ६×४ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१. वारहसुखी	सूरत	हिन्दी
२. कवकाबत्तीसी	×	"
३. वारहसुखी	रामचन्द्र	"
४. पद व विनती	×	"

विशेष—अधिकतर त्रिभुवनचन्द्र के पद हैं ।

५७८९. गुटका सं० ४९ । पत्र सं० २८ । भा० ८३×६ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १९५१ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७९०. गुटका सं० ५० । पत्र सं० १५५ । भा० १०३×७ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१. शान्तिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	संस्कृत
२. स्वयम्भूस्तोत्रभाषा	दानतराय	"

३. एकोभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	हिन्दी
४. सबोधपञ्चालिकाभाषा	चान्तराय	"
५. निर्वीणकाण्डगाथा	X	प्राकृत
६. जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी
७. निडपूजा	आशाधर	संस्कृत
८. लघुषागायिक भाषा	महाचन्द्र	"
९. सरस्वतीपूजा	मुनिपद्मनन्दि	"

५७६१. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० १४ । आ० ६३×४३ इ० । ले० काल सं० १६१७ चैत्र सुदी १०

अपूर्ण ।

विशेष—चिमनलाल भावसा ने प्रतिलिपि की थी ।

१. विषाग्हारस्तोत्रभाषा	X	हिन्दी
२. रथयात्रावर्णन	X	"
३. सांवलाजी के मन्दिर की रथयात्रा का वर्णन	X	"

विशेष—यह रथयात्रा सं० १६२० फागुण बुदी ८ मंगलवार को हुई थी ।

५७६२. गुटका सं० ५२ । पत्र सं० १३२ आ० ६×५३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०

१८१८ । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा स्तोत्र व पद संग्रह है ।

५७६३. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० ७० । आ० १०×७ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल X ।

पूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५७६४. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ५० । आ० ८×५३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १७४४

आसोज सुदी १० । अपूर्ण । जीर्ण शीर्ण ।

विशेष—नेमिनाथ रासो (ब्रह्मरायमञ्ज) एवं ग्रन्थ सामान्य पाठ हैं ।

५७६५. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० ७-१२८ । आ० ९×५३ इ० । ले० काल X । अपूर्ण ।

विशेष—गुटके में मुख्यतः समयसार नाटक (बनारसीदास) तथा धर्मपरीक्षा भाषा (मनोहरलाल)

कृत है ।

५७६६. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० ७६ । आ० ६×४३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८१५ वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—कंवर बख्तराम के पठनार्थ पं० आशाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१. नीतिशास्त्र	चाणक्य	संस्कृत
२. नवरत्नकवित्त	×	हिन्दी
३. कवित्त	×	"

५७६७. गुटका सं० ५७ । पत्र सं० २१७ । आ० ६३×५३ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५७६८. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० ११२ । आ० ६३×६ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५७६९. गुटका सं० ५९ । पत्र सं० ६० । आ० ५×४ इ० । भाषा—प्राकृत-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—लघु प्रतिक्रमण तथा पूजाओं का संग्रह है ।

५८००. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ३४४ । आ० ९×६३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत श्रीपालरास एवं हनुमतरास तथा अन्य पाठ भी हैं ।

५८०१. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ७२ । आ० ६×४३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है । पुष्टों के दोनों ओर गणेशजी एवं हनुमानजी के कलापूर्ण चित्र हैं ।

५८०२. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १२१ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

५८०३. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० ७-४९ । आ० ६३×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्ण ।

५८०४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० २० । आ० ७×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

५८०५. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ९० । आ० ३३×३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पदों का संग्रह है ।

५८०६. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ८ । आ० ८×४३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—प्रवचनसार भाषा है ।

च भण्डार [दि० जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर]

५८०७. गुटका सं० १ । पत्र सं० १६२ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १७५२ पौष । पूर्ण । वे० सं० ७४७ ।

विशेष—प्रारम्भ में आगुर्वेद के सुसखे है तथा फिर सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

५८०८. गुटका सं० २ । संग्रहकर्ता पं० फतेहचन्द नागौर । पत्र सं० २४८ । आ० ४×३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४८ ।

विशेष—ताराचन्द्रजी के पुत्र सेवारामजी पाटणी के पठनार्थ लिखा गया था—

१. नित्यनियम के दोहे	×	हिन्दी	ले० काल सं० १८५७	✱
२. पूजन व नित्य पाठ संग्रह	×	” संस्कृत	ले० काल सं० १८५६	
३. शुभशीख	×	हिन्दी	१०८ शिक्षायें हैं ।	
४. ज्ञानपदवी	मनोहरदास	”		
५. चैत्यवंदना	×	संस्कृत		
६. चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	×	हिन्दी		
७. आदित्यवार की कथा	×	”		
८. नवकार मंत्र खर्चा	×	”		
९. कर्म प्रकृति का व्यौरा	×	”		
१०. लघुसामायिक	×	”		
११. पाशाकेवली	×	”	ले० काल सं० १८६६	✱
१२. जैन ब्रह्मदेश की पत्नी	×	”	”	

५८०९. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ५७ । आ० ६×४३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४९ ।

५८१०. गुटका सं० ४ । पत्र सं० २०६ । आ० ५×५३ इ० । भाषा हिन्दी । विषय-पद भजन । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५० ।

५८११. गुटका सं० ५ । पत्र सं० १२५ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५१ ।

★

विशेष-सामान्य पूजा पाठ संग्रह है :

५८१२. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १५१ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५२ ।

विशेष-प्रारम्भ में आयुर्वेदिक तुलसे भो है ।

५८१३. गुटका सं० ७ । आ० ६×६३ इ० भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजापाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५३ ।

५८१४. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १३७ । आ० ७२×५३ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७५४ ।

★

५८१५. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ७२ । आ० ७२×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण वे० सं० ७५५ ।

५८१६. गुटका सं० १० । पत्र सं० ३५७ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७५६ ।

५८१७. गुटका सं० ११ । पत्र सं० १२८ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण वे० सं० ७५७ ।

५८१८. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १४९-७१२ । आ० ६×४ इ० । भाषा संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७५८ ।

विशेष-निम्नपाठों का संग्रह है—

१. दर्शनपञ्चीसी	×	हिन्दी
★ २. पञ्चास्तिकायभाषा	×	"
३. मोक्षपैडी	बनारसीदास	"
४. पंचमेरुजयमाल	×	"
५. साधुवन्दना	बनारसीदास	"
६. जखडी	भूधरदास	"
७. गुरामञ्जरी	×	"
८. लघुमंगल	रूपचन्द्र	"
९. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"

★

१०. अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	भैया भगवतीदास	"	२० सं० १७४५
११. बार्देस परिषद्	भूधरदास	"	
१२. निर्वणुकाण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	"	२० सं० १७३६
१३. बारह भाषा	"	"	
१४. एकीभावस्तोत्र	भूधरदास	"	
१५. मंगल	विनोदीलाल	"	२० सं० १७४४
१६. पञ्चमंगल	रूपचन्द	"	
१७. भक्तामरस्तोत्र भाषा	नथमल	"	
१८. स्वर्गमुख वर्णन	×	"	
१९. कुदेवस्वरूप वर्णन	×	"	
२०. समयसारनाटक भाषा	बनारसीदास	"	ले० सं० १८६१
२१. दशलक्षणापूजा	×	"	
२२. एकीभावस्तोत्र	कादिराज	संस्कृत	
२३. स्वयंभूस्तोत्र	समंतभद्राचार्य	"	
२४. जितसहस्रनाम	आशाधर	"	
२५. देवाग्रमस्तोत्र	समंतभद्राचार्य	"	
२६. चतुर्विंशतितोर्धङ्कुर स्तुति	चन्द	हिन्दी	
२७. चौबीसठण्ठा	नेमिबन्ध्याचार्य	प्राकृत	
२८. कर्मप्रकृति भाषा	×	हिन्दी	

५८१६. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ५३ । आ० ६२×४३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल ×
पूर्ण । वे० सं० ७५६ ।

विशेष—पूजा पाठ के अतिरिक्त लघु चरणव्य राजनीति भी है ।

५८२० गुटका सं० १४ । पत्र सं० × । आ० १०×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण
वे० सं० ७६० ।

विशेष—पञ्चास्तिकाय भाषा टीका सहित है ।

५८२१. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ३-१५४ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय—
पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६१ ।

५८२२. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १२७ । मा० ६१/४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७६२ ।

५८२३. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ७-२३० । मा० ८१/४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७६३ मासिज बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ७६३ ।

विशेष—यह गुटका बसवा निवासी पं० दौलतरामजी ने स्वयं के पढ़ने के लिए पारमराम ब्राह्मण से लिखवाया था ।

१. नाटकसमयसार	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण १-८१
२. बनारसीविज्ञान	"	"	८२-१०३
४. तीर्थक्षुरों के ६२ स्थान	X	"	१६४-२२०
४. खंडेलवालों की उत्पत्ति और उनके ८४ गोत्र X		"	२२५-२३०

५८२४ गुटका सं० १८ । पत्र सं० ५-३१५ । मा० ६३/६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७६४ ।

५८२५. गुटका सं० १९ । पत्र सं० ४७ । मा० ८१/४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-स्तोत्र ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७६५ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्रों का संग्रह है ।

५८२६. गुटका सं० २० । पत्र सं० १६५ । मा० ८४/५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७६६ ।

५८२७. गुटका सं० २१ । पत्र सं० १२८ । मा० ६४/३ इ० । भाषा- X । विषय-पूजा पाठ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७६७ ।

विशेष—गुटका पानी में भीगा हुआ है ।

५८२८. गुटका सं० २२ । पत्र सं० ४६ । मा० ७४/५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७६८ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

छ भण्डार [दि० जैन मन्दिर गोधों का जयपुर]

५८२६. गुटका सं० १। पत्र सं० १७०। आ० ५×५ इ०। भाषा हिन्दी संस्कृत। ले० काल X।
अपूर्ण। वे० सं० २३२।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है। बीच के अधिकांश पत्र गले एवं फटे हुए हैं। मुख्य पाठों का संग्रह निम्न प्रकार है।

१. नेमीश्वररास	मुनिरतनकीर्ति	हिन्दी	६५ पत्र है।
२. नेमीश्वर की भेलि	ऊनकुरसो	"	८८-९५
३. पंचेन्द्रियत्रेलि	"	"	९६-१०१
४. चौबीसतीर्थकररास	X	"	१०१-१०३
५. विवेकजकांडी	जिनदास	"	१२६-१३३
६. मेघकुमारगीत	पूनी	"	१४८-१५१
७. टंडाणागीत	कविवृचा	"	१५१-१५३
८. चारहस्रनुप्रेक्षा	अकधु	"	१५३-१६०
ले० काल सं० १६६२ जेष्ठ सुदी १२			
९. शान्तिनाथस्तोत्र	गुणभद्रस्वामी	संस्कृत	१६०-१६३
१०. नेमीश्वर का हिंडोलना	मुनिरतनकीर्ति	हिन्दी	१६३-१६४

५८३०. गुटका सं० २। पत्र सं० २२। आ० ६×६ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—संग्रह। ले०
काल X। पूर्ण। वे० सं० २३२।

१. नेमिनाथमंगल	लालचन्द	हिन्दी	२० काल १७४४ १-११
२. राखुलपञ्चीसी	X	"	१२-२२

५८३१. गुटका सं० ३। पत्र सं० ४-५४। आ० ८×६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल X। अपूर्ण।
वे० सं० २३३।

१. प्रद्युम्नरास	कृष्णराय	हिन्दी	४-२७
२. आदिनाथविनती	कनककीर्ति	"	३२
३. बीस तीर्थकरों की जयमाल	हर्षकीर्ति	"	३२-२६

४. चन्द्रगुप्त के सोहसस्वप्न

X

हिन्दी

५२-५४

इनके प्रतिरिक्त विनती संग्रह है किन्तु पूर्णतः अशुद्ध है।

५८३२. गुटका सं० ४। पत्र सं० ७४। आ० ६३X६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल X।

अपूर्ण। वे० सं० २३४।

विशेष-प्रागुर्वेदिक नुसखों का संग्रह है।

५८३३. गुटका सं० ५। पत्र सं० ३०-७५। आ० ७X६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं०

१७६१ माह सुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० २३४।

१. आदित्यवार कथा

भाऊ

हिन्दी

अपूर्ण

३०-३२

२. सप्तव्यसनकवित्त

X

"

३. पार्श्वनाथस्तुति

बनारसीदास

"

४. अठारहनाते का चौढाला

लोहट

"

५८३४. गुटका सं० ६। पत्र सं० २-४२। आ० ६३X६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। ले०

काल X। अपूर्ण। वे० सं० २३४।

विशेष-शनिश्चरजी की कथा है।

५८३५. गुटका सं० ७। पत्र सं० १२-६५। आ० १०३X५३ इ०। ले० काल X। अपूर्ण। वे०

सं० २३५।

१. बाणक्यनीति

बाणक्य

संस्कृत

अपूर्ण

१३

२. साखी

कबीर

हिन्दी

१३-१६

३. अदिमन्त्र

X

संस्कृत

१६-२१

४. प्रतिष्ठाविधान की सामग्री एवं व्रतों का चित्र सहित वर्णन

हिन्दी

६५

५८३६. गुटका सं० ८। पत्र सं० २-५६। आ० ६X५ इ०। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २६७।

१. बलभद्रगीत

X

हिन्दी

अपूर्ण

२-६

२. जोगीरासा

पंडे जिनदास

"

७-११

३. कक्काबत्तीसी

X

"

११-१४

४. "

मनराम

"

१४-१८

५. पद-साखी छोडो कुमति अकेली

बिनोदीलाल

"

१८

६. " रे जीव जगत सुननों जान

छीहल

"

२०

७. " भरत मूप घरही में बरागी	कनककीर्ति	"	२०-२१
८. लुहरो- हो सुन जीव अरज हमारी या	सभाचन्द	"	२१-२२
९. परमारख छुहरो	X	"	२२-२३
१०. पद- भवि जीववदि से चन्द्रस्वामी	रूपचन्द	"	२७
११. " जीव सिव देशद से पधारो	सुन्दर	"	२८
१२. " जीव मेरे जिएवर नाम मजो	X	"	२९
१३. " योगी या सु प्रावणे इण देश	X	"	२९
१४. " घरहंत गुण नायो भावो मन भावो	अजधराज	"	२९-३१
१५. " गिर देखत वालिद्र भाज्या	X	"	३१
१६. परमानन्दस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	३२-३५
१७. पद- छट पटादि नैननि गोचर जो	मनराम	हिन्दी	३६
नाटिक पुद्गल कैरो			
१८. " जिय तैं नरभव योही खोयो	मनराम	"	३२
१९. " अंखियां आज पवित्र भई	"	"	
२०. " वनी बन्यो है आजि हेली नेमौसुर			
जिन देखीयो	अमतराम		४०
२१. " नमो नमो जै श्री अरिहंत	"	"	४१
२२. " माधुरी जिनबानी सुन हे माधुरी	"	"	४२-४४
२३. सिव देवी माता को आठवों	सुनि शुभचन्द्र	"	४४-४६
२४. पद-	"	"	४६-४८
२५. "	"	"	४८-४९
२६. " हलदी चहीडी तेल बहोख्यो छपन			
कुमारि का	"	"	४९-५१
२७. " जे जदि साहसि त्यायो नीली घोड़ीया		"	५१-५३
२८. अन्य पद		"	५३-५६

५८३७. गुटका सं० ६। पत्र सं० ६-१२६। आ० ६X४३ ६०। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २६८।

५८३८. गुटका सं० १० । पत्र सं० ४ । आ० ८३×६ इ० । विषय-संग्रह । ले० काल X । वे० सं० २६६ ।

१. जिनपञ्चीसी	नवल	हिन्दी	१-२
२. संबोधपंचामिका	द्यानतराय	"	२-४

५८३९. गुटका सं० ११ । पत्र सं० १०-६० । आ० ५२×४२ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल X । वे० सं० ३०० ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५८४०. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ११५ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल X । वे० सं० ३०१ ।

५८४१. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १३० । आ० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३०२ ।

५८४२. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ६-१७ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० सं० X । अपूर्ण । वे० सं० ३०३ ।

५८४३. गुटका सं० १४ । पत्र सं० २०१ । आ० ११×५ इ० । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३०४ ।
विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है ।

५८४४. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ७७ । आ० १०×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । ले० काल सं० १६०३ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३०५ ।

विशेष—इलनाक मह सनीन पुस्तक को हिन्दी भाषा में लिखा गया है । मूल पुस्तक फारसी भाषा में है । छोटी २ कहानियां हैं ।

५८४५. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १२६ । आ० ६×४ इ० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३०६ ।
विशेष—रामचन्द्र (कवि बालक) कृत सीता चरित्र है ।

५८४६. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ३-२६ । आ० ४×२ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ४०७ ।

१. देवपूजा	संस्कृत	अपूर्ण
२. षुलभद्रजी का रासो	हिन्दी	१०-२१
३. नेमिनाथ राखुल का बारहमासा	"	२१-६६

५८४७ गुटका सं० १८ । पत्र सं० १६० । आ० ८३×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३०८

विशेष—पत्र सं० १ ले ३८ तक सामान्य पाठों का संग्रह है ।

१. सुन्दर गृहकार	कविराजसुन्दर	हिन्दी	३७४ पद्य है	३६-८०
२. विहारोत्तमसई टीका सहित	×	"	अपूर्ण	८१-८५
			७४ पद्यों की ही टीका है ।	
३. बखत विलास	×	"		८६-१०३
४. बृहत्संटाकर्णकल्प	कवि भोगीलाल	"		१०४-६६०

विशेष—प्रारम्भ के ८ पत्र नहीं हैं आगे के पत्र भी नहीं हैं ।

इति श्री कछवाह कुलभवननरकासी राठराजा बल्लावरसिंह आनन्द कृते कवि भोगीलाल विरचिते बखत विलास विभाव वर्णनो नाम तृतीय विलासः ।

पत्र ८-५६ नायक नायिका वर्णन ।

इति श्री कछवाहा कुलभूषननरकासी राठराजा बल्लार सिंह आनन्द कृते भोगीलाल कवि विरचिते बखतविलासनायकवर्णन नामाष्टको विलासः ।

५८४८. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ५४ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०९ ।

विशेष—खुशालचन्द कृत धन्यकुमार चरित है पत्र जीर्ण है किन्तु नवीन है ।

५८४९. गुटका सं० २० । पत्र सं० २१ । आ० ९×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१० ।

१. ऋषिमंडलपूजा	सदासुख	हिन्दी	१-१०
२. अकम्पनाचार्यादि मुनियों की पूजा	×	"	१६
३. प्रतिष्ठानामावलि	×	"	२१

५८५०. गुटका सं० २० (क) । पत्र सं० १०२ । आ० ९×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३११ ।

५८५१. गुटका सं० २१ । पत्र सं० २८ । आ० ८३×६ इ० । ले० काल सं० १९३७ आबण बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३१२ ।

विशेष—मंडलाचार्य केशवसेन दृष्टसेन विरचित रोहिणी व्रत पूजा है ।

५८५२. गुटका सं० २२ । पत्र सं० १६ । आ० ११×३ इ० । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३१४ ।

वज्रदन्तचक्रवर्ति का वारहमासा	X	हिन्दी	६
२. सीताजी का वारहमासा	X	"	६-१२
३. मुनिराज का वारहमासा	X	"	१३-१६

५८५३. गुटका सं० २३ । पत्र सं० २३ । आ० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी धरा । विषय-कथा । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३१५ ।

विशेष—गुटके में मण्डालिकावतकथा दी हुई है ।

५८५४. गुटका सं० २४ । पत्र सं० १५ । आ० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी विषय-पूजा । ले० काल सं० १६८३ पीष बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ३१६ ।

विशेष—गुटके में ऋषिमंडलपूजा, अनन्तव्रतपूजा, चौबीसतीर्थकर पूजादि पाठों का संग्रह है ।

५८५५. गुटका सं० २५ । पत्र सं० ३५ । आ० ८५×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३१७ ।

विशेष—अनन्तव्रतपूजा तथा श्रुतज्ञानपूजा है ।

५८५६. गुटका सं० २६ । पत्र सं० ५६ । आ० ७×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल सं० १६२१ माघ बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ३१८ ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थकर पूजा है ।

५८५७. गुटका सं० २७ । पत्र सं० ५३ । आ० ६×५ इ० । ले० काल सं० १६५४ । पूर्ण । वे० सं० ३१९ ।

विशेष—गुटके में निम्न रचनायें उल्लेखनीय हैं ।

१. धर्मचाह	X	हिन्दी	२
२. वंदनाजखड़ी	बिहारीदास	"	३-४
३. सम्मोदशिखरपूजा	गंगादास	संस्कृत	५-२०

५८५८ गुटका सं० २८ । पत्र सं० १६ । आ० ८×६ इ० । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३२० ।

विशेष—सत्त्वार्थसूत्र उमास्वामि कृत है ।

५८५९. गुटका सं० २९ । पत्र सं० १७६ । आ० ६×६ इ० । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३२१ ।

विशेष—बिहारीदास कृत सतसई है । दोहा सं० ७०७ है । हिन्दी गद्य पद्य दोनों में ही अर्थ है टीका-काल सं० १७८५ । टीकाकार कवि कृष्णदास हैं । आदि अन्तभाग निम्न है:—

प्रारम्भः—

अथ विहारी सतसई टीका कवित्त बंध लिख्यतेः—

मेरी भव बाधा हरी, राधा नागरी सोइ ।

जातन की भाँई परै, स्याम हरित दुति होइ ॥

टीका—यह मंगलाचरण है तहां श्री राधा जू की स्तुति ग्रंथ कर्ता कवि करतु है । तहां राधा और डटे यातें जा तन की भाँई परै स्याम हरित दुति होइ या पद तें श्री वृषभान सुता की प्रतीति हुई—

कवित्त—

जाकीप्रभा अवलोकत ही तिहु लोक की सुन्दरता महि वारि ।

कृष्ण कहै सरसो रहै नैननि की नामु म्हा सुद मंगल कारि ॥

जातन की भलकै भलकै हरित शुति स्याम की होत निहारी ।

श्री वृषभान कुंभारि कृपा कैं सुराधा हरी भव बाधा हमारी ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

माधुर विप्रु ककोर कुल लख्यो कृष्ण कवि नाउ ।

सेवकु हौं सब कविनु की बसतु मधुपुरी गाँव ॥ २४ ॥

राजा मल्ल कवि कृष्ण पर दरघो कृपा के द्वार ।

भाँति भाँति विपदा हरी दीनी दरबि अवार ॥ २५ ॥

एक दिना कवि सी मुरति कही कही कों जात ।

दोहा दोहा प्रति करो कवित्त बुद्धि अवदात ॥ २६ ॥

पहले हूँ मेरे यह हिय मैं हुँतो विचार ।

करो नाइका भेंव की ग्रंथ बुद्धि अनुसार ॥ २७ ॥

जे कीनै पूरव कविनु सरस ग्रंथ सुखदाइ ।

तिनहि छाँडि मेरे कवित्त को पढ़ि है मनुलाइ ॥ २८ ॥

जानिय हैं अपने हियें कियो न ग्रंथ प्रकास ।

नृप की आइस पाइके हिय में भये हुलास ॥ २९ ॥

करे सात सै बोहरा सु कवि विहारीदास ।

सब कोऊं तिनको पढ़ै सुने सुने सचिलाल ॥ ३० ॥

बड़ी भरोसों जानि मैं गहरी आसरो आइ ।

यातैं इन दोहानु संग दीनै कवित्त लगाइ ॥ ३१ ॥

उक्ति जुक्ति दोहानु की अक्षर जोरि नवीन ।

करे सातसौ कवित में सीखै सकल जनीन ॥ ३२ ॥

मैं अल ही दोह्यो करी कवि कुल सरल सुभाइ ।

भूल चूक कछु होइ सो लीजौ समझि वनाइ ॥ ३३ ॥

सत्रह सतसे आगरे असौ बरस रविवार ।

कातिक बदि चोधि भये कवित सकल रससार ॥ ३४ ॥

इति श्री विहारीसतसई के दोहा टीका सहित संपूर्ण ।

सतसे ग्रंथ लिख्यो श्री राधा श्री राजा साहिबजी श्रीराजामल्लजी की । लेखक खेमराज श्री वास्तव वासी
मीजे अंजनगीई के प्रगने पछोर के । मिती माह सुदी ७ बुधवार संवत् १७६० मुकाम प्रवेस जयपुर ।

५८६०. गुटका सं० ३० । पत्र सं० १६८ । आ० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० ३५२ ।

१. तत्त्वार्थसूत्रभाषा कनककोटि हिन्दी ग० अपूर्ण

२. शालिभद्रचोपई जिनसिंह सूरि के शिष्य भतिसागर ” प० २० काल १६७८ ”

ले० काल सं० १७४३ भादवा सुदी ४ । प्रजनेर प्रतिलिपि हुई थी ।

३. स्फुट पाठ × ”

५८६१. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ६० । आ० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा । ले०
काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३२३ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५८६२. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० १७४ । आ० ८×६ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा पाठ । ले०
काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है । तथा ८८ हिन्दी पद मैन (सुखमयनानन्द) के हैं ।

५८६३. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ७५ । आ० ८×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।
वे० सं० ३२५ ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चतुर्विंशतिजिनपूजा है ।

५८६४. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० ८६ । आ० ८×६ इ० । विषय—पूजा । ले० काल सं० १८६१
भादवा सुदी ११ । वे० सं० ३२६ ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर पूजा (रामचन्द्र) एवं स्तोत्र संग्रह है । हिण्डौन के जती रामचन्द्र ने प्रतिलिपि
की थी ।

५८६५. गुटका सं० ३५। पत्र सं० १७। आ० ६×७ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।
वे० सं० ३२७।

विशेष—पावागिरि सोनागिरि पूजा है।

५८६६. गुटका सं० ३६। पत्र सं० ७। आ० ८×५ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय पूजा पाठ एवं ज्योतिषपाठ। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३२८।

१. बृहत्सोडशकारण पूजा	×	संस्कृत
२. चाणक्यनीति शास्त्र	चाणक्य	"
३. शालिहोत्र	×	संस्कृत
		अपूर्ण

५८६७. गुटका सं० ३७। पत्र सं० ३०। आ० ७×६ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण।
वे० सं० ३२९।

५८६८. गुटका सं० ३८। पत्र सं० २०। आ० ५×४ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण।
वे० सं० ३३०।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है। इसी में प्रकाशित पुस्तकों की बन्धी हुई हैं।

५८६९. गुटका सं० ३९। पत्र सं० ४४। आ० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण।
वे० सं० ३३१।

विशेष—देवसिद्धपूजा आदि दी हुई हैं।

५८७०. गुटका सं० ४०। पत्र सं० ८०। आ० ४×५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय आयुर्वेद। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३३२।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखे दिये हुये हैं पदार्थों के गुणों का वर्णन भी है।

५८७१. गुटका सं० ४१। पत्र सं० ७१। आ० ७×५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३३।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

५८७२. गुटका सं० ४२। पत्र सं० ८६। आ० ७×५ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १८४६। अपूर्ण। वे० सं० ३३४।

विशेष—विदेह क्षेत्र के बीस तीर्थंकरों की पूजा एवं अठारह दीप पूजा का संग्रह है। दोनों ही अपूर्ण हैं।
जौहरी काला ने प्रतिलिपि की थी।

५८७३. गुटका सं० ४३ । पत्र सं० २८ । आ० ८३×७ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३५ ।

५८७४. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ५८ । आ० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ ।

विशेष—हिन्दी पद एवं पूजा संग्रह है ।

५८७५. गुटका सं० ४५ । पत्र सं० १०८ । आ० ८३×३३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३७ ।

विशेष—देवपूजा, सिद्धपूजा, तत्त्वार्थसूत्र, कल्याणमन्दिरस्तोत्र, स्वयंभूस्तोत्र, दशलक्षणा, सोलहकारण आदि का संग्रह है ।

५८७६. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० ५५ । आ० ८×५ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३८ ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र, हवनविधि, सिद्धपूजा, पार्व्वपूजा, सोलहकारण दशलक्षणा पूजाएं हैं ।

५८७७. गुटका सं० ४७ । पत्र सं० ६६ । आ० ७×५ इ० । भाषा हिन्दी । विषय—कथा । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३९ ।

१. जेष्ठजिनवरकथा	खुशालचन्द	हिन्दी	१-६
			२० काल सं० १७८२ जेठ सुदी ६
२. आदित्यव्रतकथा	"	हिन्दी	६९-१६
३. सप्तपरमस्थान	"	"	१६-२६
४. मुकुटसप्तसीधतकथा	"	"	२६-३०
५. दशलक्षणव्रतकथा	"	"	३०-३४
६. पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	"	"	३४-४०
७. रक्षाविधानकथा	"	संस्कृत	४१-४५
८. उमेश्वरस्तोत्र	"	"	४६-६६

५८७८. गुटका सं० ४८ । पत्र सं० १२८ । आ० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—अभ्यात्म । २० काल सं० १६६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४० ।

विशेष—बनारसीदास कृत समयसार नाटक है ।

५८७६. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० ४६ । आ० ५५५ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३४१ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१. जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी	१-१३
२. ऋषिमण्डलस्तोत्र	गौतमश्यामी	संस्कृत	१४-२०
३. शान्तमन्त्रोत्पत्ति	नन्दगाम	”	ले० काल १८८८ ३४-४२

५८८०. गुटका सं० ५० । पत्र सं० २५४ । आ० ५५५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा पाठ ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३४२

५८८१. गुटका सं० ५१ । पत्र सं० १६३ । आ० ७१५ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १८८२ । पूर्ण । वे० सं० ३४३ ।

विशेष—गुटके के निम्न पाठ मुख्यतः उल्लेखनीय हैं ।

१. नवग्रहगणितपार्वस्तोत्र	X	प्र.कृत	१-२
२. जीवविचार	आ० नेमिचन्द्र	”	३-८
३. नवतत्त्वप्रकरण	X	”	९-१४
४. चौबीसदण्डकविचार	X	हिन्दी	१५-२८
५. तेईस बील विवरण	X	”	२९-३५

विशेष—

दाता की कसौटी दुरभिलाष परे जान जाइ ।

सूर की कसौटी दोई धनी छुरे रन में ॥

मिश्र की कसौटी मामलो प्रगट होय ।

हीरा की कसौटी है जीहरी के धन में ॥

कुल की कसौटी आदर सनमान जानि ।

सोने की कसौटी सराफन के जतन में ॥

कहे जिननाम जैसी बरत तैसी कामति सी ।

साधु की कसौटी है दुष्टन के बीच में ॥

१. चिन्ती

समयसुन्दर

हिन्दी

१०३-१०३

२. द्रव्यसंग्रहभाषा

हेमराज

”

११७-१४१

२० काल सं० १७३१ माघ सुदी १० । ले० काल सं० १८७६ फाल्गुन सुदी ६ ।

३. गोविंदाष्टक

शङ्कराचार्य

हिन्दी

१४४-१४५

४. पार्ष्वनाथस्तोत्र

X

” ले० काल १८८१

१४६-१४७

५. कृपणपञ्चीसी

विनोदीलाल

”

”

”

१८८२

१४७-१४८

६. तेरापन्थ बीसपन्थ भेद—

X

”

१४५-१६३

१८८२. गुटका सं० ५२ । पत्र सं० ३५ । आ० ७३×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८८६ कार्तिक सुदी १३ । वे० सं० ३४४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है । प० सदामुखी के प्रतिलिपि की थी ।

१८८३. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० ८० । आ० ६३×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३४५ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

१८८४. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ४४ । आ० ६३×६ इ० । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण । वे० सं० ३४६

विशेष—भूधरदास कृत चर्चा समाधान तथा चन्द्रसागर पूजा एवं कान्तिपाठ है ।

१८८५. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० २० । आ० ६३×६ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३४७ ।

१८८६. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० ६८ । आ० ६३×५ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—पूजा पाठ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३४८ ।

१८८७. गुटका सं० ५७ । पत्र सं० १७ । आ० ६३×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३४९ ।

विशेष—रत्नत्रय व्रतविधि एवं कथा दी हुई हैं ।

१८८८. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० १०४ । आ० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३५० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

१८८९. गुटका सं० ५९ । पत्र सं० १२९ । आ० ६३×५ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३५१ ।

विशेष—हृन्निविद्वय नामक ग्रंथ है ।

५८६०. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ११३ । आ० ४×३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

पूर्ण । वे० सं० ३५२ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र एवं बनारसी विनास के कुछ पद एवं पाठ हैं ।

५८६१. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० २२३ । आ० ४×३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

पूर्ण । वे० सं० ३५३ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५८६२. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० २०५ । आ० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

पूर्ण । वे० सं० ३५४ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह है—

५८६३. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० २६३ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी ले० काल × । अपूर्ण ।

वे० सं० ३५५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. हनुमतरास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	२४-६७
		ले० काल सं० १८६० फागुण बुदी ७ ।	
२. शालिभद्रसज्जमाय	×	हिन्दी	६८-६९
३. जलालगाहाणी की वार्ता	×	"	१०१-१४०
		ले० काल १८५६ माह बुदी ३	

विशेष—कोठ्यारी प्रतापसिंह पठनार्थ लिखी हलसूरिमध्ये ।

४. तंत्रसार	×	"	पत्र सं० ४८ १४८-१५२
५. चन्दकुंवर की वार्ता	×	"	१५२-१६४
६. धर्मरनिसांगी	जिनहर्ष	"	१६५-१६६
७. सुदयवृक्षशालिगा री वार्ता	×	"	अपूर्ण १७०-२६३

५८६४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ९७ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । पूर्ण । ले० काल

× । वे० सं० ३५६ ।

विशेष—नवमङ्गल विनोदीलाल कृत एवं पद स्तुति एवं पूजा संग्रह है ।

५८६५. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ६३ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५७ ।

विशेष—सिद्धवक्रपूजा एवं पद्मावती स्तोत्र है ।

५८६६. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ४५ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५८ ।

५८६७. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ४६ । आ० ५ इ० ४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५९ ।

विशेष—भक्तभरस्तोत्र, पंचमंगल, देवपूजा आदि का संग्रह है ।

५८६८. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ६४ । आ० ४×३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-स्तोत्र संग्रह । ले० काल × । वे० सं० ३६० ।

५८६९. गुटका सं० ६९ । पत्र सं० १५१ । आ० ७ ४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६१ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. सप्तरभेदपूजा	साधुकीर्ति	हिन्दी	१-१४
२. महावीरस्तवनपूजा	समयसुन्दर	"	१४-१६
३. धर्मरक्षा भाषा	विशालकीर्ति	" ले० काल १८६४	३०-१५१

विशेष—नागपुर में पं० चतुर्भुज ने प्रतिलिपि की थी ।

५८७०. गुटका सं० ७० । पत्र सं० ५६ । आ० ५ इ० ५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८०२ । पूर्ण । वे० सं० ३६२ ।

१. महावण्डक	×	हिन्दी	३-५३
ले० काल सं० १८०२ पोष बुदी १३ ।			

विशेष—उदयविमल ने प्रतिलिपि की थी । शिवपुरी में प्रतिलिपि की गई थी ।

२. बोल	×	"	५४-५६

५८७१. गुटका सं० ७१ । पत्र सं० १२३ । आ० ६ इ० ४ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-स्तोत्रसंग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६३ ।

५६०२. गुटका सं० ७२ । पत्र सं० १५७ । आ० ४×३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।
पूर्ण । वे० सं० ३६४ ।

विशेष—पूजा पाठ व स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

५६०३. गुटका सं० ७३ । पत्र सं० १५८ । आ० ४×३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।
पूर्ण । वे० सं० ३६५ ।

१. पूजा पाठ संग्रह	×	संस्कृत हिन्दी	१-४४
२. आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	४५-६६

५६०४. गुटका सं० ७४ । पत्र सं० १५९ । आ० ५३×५३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण
वे० सं० ३६६ ।

विशेष—प्रारम्भ में पूजा पाठ तथा नुसखे दिये हुये हैं तथा अन्त के १७ पत्रों में संवत् १०३३ से भारत
के राजाओं का परिचय दिया हुआ है ।

५६०५. गुटका सं० ७५ । पत्र सं० १६० । आ० ५३×५३ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० ३६७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६०६. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० १६१-१७७ । आ० ७×३ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले०
काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६८ ।

विशेष—प्रारम्भ में कुछ मंत्र हैं तथा फिर आयुर्वेदिक नुसखे दिये हुये हैं ।

५६०७. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० १७८ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण
वे० सं० ३६९ ।

१. ज्ञानवित्तामणि	मनोहरदास	हिन्दी	१२६ पत्र हैं	१-१६
२. वज्रनमिचक्रवर्ती की भावना	भूधरदास	"		१६-२३
३. सम्पेदगिरिपूजा	×	"	अपूर्ण	२२-२७

५६०८. गुटका सं० ७८ । पत्र सं० १७९ । आ० ६×३ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण
वे० सं० ३७० ।

विशेष—नाममाला तथा लविसार आदि में से पाठ है ।

५६०६. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० ३० । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८१० पूर्ण । वे० सं० ३७१ ।

विशेष—जहारायमल्ल कृत प्रद्युम्नरास है ।

५६१०. गुटका सं० ८० । पत्र सं० ५४-१३६ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७२ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. धृतस्कन्ध	हेमचन्द्र	प्राकृत	अपूर्ण	५४-७६
२. मूलसंख की पट्टावलि	×	संस्कृत		८०-८३
३. गर्भपञ्चरत्न	देवनन्दि	"		८४-९०
४. स्तोत्रप्रथ	×	संस्कृत		९०-१०५

एकीभाव, भक्तामर एवं भूनालचतुर्विंशति स्तोत्र हैं ।

५. वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनन्दि	"	१० पत्र हैं	१०५-१०६
६. पार्वतीनामस्तवन	राजसेन [वीरसेन के शिष्य]	"	६ "	१०६-१०७
७. परमात्माराजस्तोत्र	पद्मनन्दि	"	१४ "	१०७-१०९
८. सामायिक पाठ	अभिलिखित	"		११०-११३
९. तत्त्वसार	देवसेन	प्राकृत		११३-११६
१०. आराधनासार	"	"		११४-११४
११. रामयसारांगथा	आ० कुन्दकुन्द	"		११४-११८

५६११. गुटका सं० ८१ । पत्र सं० २-५६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७३० भाद्रपद सुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ३७४ ।

विशेष—कामशास्त्र एवं नायिका वर्णन है ।

५६१२. गुटका सं० ८२ । पत्र सं० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७४ ।

विशेष—भूजा तथा कथाओं का संग्रह है । अन्त में १०६ से ११३ तक १८ वीं शताब्दी का (१७०१ से १७५६ तक) वर्षा अकाल युद्ध आदि का योग दिया हुआ है ।

५६१३. गुटका सं० ८३ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७५ ।

१. कृष्णरास	×	हिन्दी	पद्य सं० ७६ है	१-१६
महापुराण के दशम स्कन्ध में से लिमा गया है ।				
२. कालीनागदमन कथा	×	"		१६-२६
३. कृष्णप्रेमाष्टक	×	"		२६-२८

५६१४. गुटका सं० ८४ । पद्य सं० १५२-२४१ । आ० ६३×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × ।

अपूर्ण । वे० सं० ३७६ ।

विशेष—वैद्यकसार एवं वैद्यवल्लभ ग्रन्थों का संग्रह है ।

५६१५. गुटका सं० ८५ । पद्य सं० ३०२ । आ० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

वे० सं० ३७७ ।

विशेष—दो गुटकों का एक गुटका कर दिया है । निम्न पाठ मुख्यतः उल्लेखनीय है ।

१. चिन्तामणिजयमाल	ठक्कुरसी	हिन्दी	११ पद्य हैं	२०-२२
२. बेलि	छोहल	"		२२-२५
३. टंडारागीत	बूचा	"		२५-२८
४. चेतनगीत	मुनिसिंहनन्दि	"		२८-३०
५. जिनलाहू	ब्रह्मरायमल्ल	"		३०-३१
६. नेमीश्वरचोमासा	सिंहनन्दि	"		३२-३३
७. पंथीगीत	छोहल	"		४१-४२
८. नेमीश्वर के १० भव	ब्रह्मधर्मरुचि	"		४३-४७
९. गीत	कवि पल्ह	"		४७-४८
१०. सीमंधरस्तवन	ठक्कुरसी	"		४९-५०
११. आदिनाथस्तवन	कवि पल्ह	"		४९-५०
१२. स्तोत्र	भ० जिनचन्द्र देव	"		५०-५१
१३. पुरन्दर चौपई	ब० मालदेव	"		५२-८७

ले० काल सं० १६०७ कागुण बुदो ६ ।

१४. मेघकुमार गीत	पूनी	"		१२-१५
१५. चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	ब्रह्मरायमल्ल	"		२६-२९

१६. वलिभद्र गीत	अमय-पद	"	३०-३६
१७. भविष्यदत्त कथा	ब्रह्मरायमञ्ज	"	४०-८५
१८. निर्दोषसप्तमीव्रत कथा	"	"	ले० काल १६४३ आसोज १३ ।
१९. हनुमन्तरास	"	"	अपूर्णा

५६१६. गुटका सं० ८६ । पत्र सं० १८८ । आ० ६५६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा एवं स्तोत्र । ले० काल सं० १८४२ भाद्रवा सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ३७८ ।

५६१७. गुटका सं० ८७ । पत्र सं० ३०० । आ० ५९५४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३७९ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों के अतिरिक्त रुचन्द, बनारसदास तथा विनोदीलाल आदि कवियों कृत हिन्दी पाठ हैं ।

५६१८. गुटका सं० ८८ । पत्र सं० ५८ । आ० ६५५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३८० ।

विशेष—भगतराम कृत हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५६१९. गुटका सं० ८९ । पत्र सं० २-२६६ । आ० ८५५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३८१ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. पञ्चमस्कारस्तोत्र	चमास्वामि	संस्कृत	१८-२०
२. बारह अनुप्रेक्षा	X	प्राकृत	४७ गायकें हैं । २१-२५
३. भावनाचतुर्विंशति	पद्मनन्दि	संस्कृत	
४. अन्य स्फुट पाठ एवं पूजायें	X	संस्कृत हिन्दी	

५६२०. गुटका सं० ९० । पत्र सं० ३-६१ । आ० ८५५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३८२ ।

विशेष—नलधराम के पदों का संग्रह है ।

५६२१. गुटका सं० ९१ । पत्र सं० १४-४६ । आ० ८५५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३८३ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पाठों का संग्रह है ।

५६२२. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० २६ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३८४ ।

विशेष—सम्प्रेदगिरि पूजा है ।

५६२३. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १२३ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३८५ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. चेतनचरित	भैया भगवतीदास	हिन्दी	१-१०
२. जिनसहस्रनाम	अज्ञात	संस्कृत	११-१५
३. लघुतत्त्वार्थसूत्र	X	"	३३-३४
४. चौरासी जाति की जयमाल	X	हिन्दी	३६-४०
५. सोलहकारकथा	ब्रह्मज्ञानसागर	हिन्दी	७१-७४
६. रत्नत्रयकथा	"	"	७४-७६
७. आदित्यवारकथा	भाऊकवि	"	७६-८६
८. दोहाशतक	रूपचन्द	"	८४-८६
९. शेषनक्रिया	ब्रह्मगुलाल	"	८७-८८
१०. अष्टाहिनका कथा	ब्रह्मज्ञानसागर	"	१००-१०४
११. अन्मराठ	X	"	१०५-१२३

५६२४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ७-७६ । आ० ५×३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३८६ ।

विशेष—देवाग्रह के पदों का संग्रह है ।

५६२५. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ३-६६ । आ० ६×५ इ० । भाषा हिन्दी ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३८७ ।

१. भविष्यवृत्तकथा	ब्रह्मरायमल	हिन्दी	अपूर्ण	३-७०
			ले० काल सं० १७६० कार्तिक	सुदी १२
२. हनुमतकथा	"	"		७१-८६

५६२६. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्र शास्त्र । ले० काल सं० १८६५ । पूर्ण । वे० सं० ३८८ ।

१. भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्रयंत्रसहित	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	१-४३
२. पद्मावतीकवच	×	"	४३-५२
३. पद्मावतीसहस्रनाम	×	"	५२-६३
४. पद्मावतीस्तोत्र बीजमंत्र एवं साधन विधि	×	"	६३-८६
५. पद्मावतीपटल	×	"	८६-८७
६. पद्मावतीवेडक	×	"	८७-८८

५६२७. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ६-११३ आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।
वे० सं० ३८६ ।

१. स्फुटवार्ता	×	हिन्दी	अपूर्ण	६-२२
२. हरिचन्द्रशतक	×	"		२३-६६
३. श्रीवृत्तरित	×	"		६७-६३
४. महारचरित	×	"	अपूर्ण	६३-११३

५६२८. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ५३ । आ० ५×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० ३६० ।

विशेष—स्तोत्र एवं तत्त्वार्थसूत्र आदि सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६२९. गुटका सं० ६९ । पत्र सं० ६-१२६ । आ० ८३×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले०
काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६१ ।

५६३०. गुटका सं० १०० । पत्र सं० ८८ । आ० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।
वे० सं० ३६२ ।

१. आदित्यवारकथा	×	हिन्दी		१४-३४
२. पक्की स्याही बनाने की विधि	×	"		३५
३. संकट चीरई कथा	×	"		३८-४३
४. कन्नका बत्तीसी	×	"		४५-४७
५. निरंजन शतक	×	"		५१-८४

विशेष—लिपि विकृत है पढ़ने में नहीं आती ।

५६३१. गुटका सं० १०१ । पत्र सं० २३ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X ।
अपूर्णा । सं० ३६३ ।

विशेष—कवि सुन्दर कृत नायिका लक्षण दिया हुआ है । ४२ से १५० पद्य तक है ।

५६३२. गुटका सं० १०२ । पत्र सं० ७५—१०१ । आ० ८×७ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह ।
ले० काल X । अपूर्णा । वे० सं० ३६४ ।

१. चतुर्विंशती कथा

आलूराम

हिन्दी २० काल १७६५ प्र. जेठ सुदी १०

ले० काल सं० १७६५ जेठ सुदी १४ । अपूर्णा ।

विशेष—२६ पद्य से २३० पद्य तक है ।

मध्य भाग—

माता ऐसी हृदय मति करी, संजम बिना जीव न निमतरे ।

कांकी माता काको बाप, आतमराम अकेलो आप ॥ १७६ ॥

दोहा—

आप देखि पर देखिये, दुख सुख दोउ भेद ।

आतम ऐक विचारिये, नामत कहू न लेख ॥ १७७ ॥

मंगलाचार कंवर को कीयो, दिखा लेण कंवर जब मयो ।

सुवामो आगे जौझा हाथ, दीख्य दोह सुनीसुर नाथ ॥ १७८ ॥

अन्तिमपाठ—

बुधि सार कथा कही, राजघाटी मुलतान ।

करम कटक मैं देहरी बँटो पचे मु जाण ॥ २२८ ॥

सतरासे पचावने प्रथम जेठ सुदि जानि ।

सोमवार दसमी माती पूरण कथा बखानि ॥ २२९ ॥

खंडेलवाल बौहरा मोत, आवावती मैं बास ।

डालु कहै मति मी हँसी, हूँ सबन की दास ॥ २३० ॥

महाराजा बीसनसिद्धजी आया, साह्या आल की लार ।

जो या कथा पढ़ै सुनौ, सो पुरिष मैं सार ॥ २३१ ॥

बीदश की कथा संपूर्ण । मिति प्रथम जेठ सुदी १४ संवत् १७६५

२. चौदशकीजयमाल

X

हिन्दी

६३-६४

३. तारातंबोलकी कथा

X

ले० काल सं० १७६३ ६४-६५

४. नवरत्न कवित्त	बनारसीदास	"	६७-६९
५. ज्ञानपञ्चीसी	"	"	६८-१००
६. पद	×	"	अपूर्ण १००-१०१

५६३३. गुटका सं० १०३ । पत्र सं० १०-५५ । आ० ८१×६१ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्ण । वे० सं० ३६५ ।

विशेष—महाराजकुमार इन्द्रजीत विरचित रसिकप्रिया है ।

५६३४. गुटका सं० १०४ । पत्र सं० ७ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० सं० ३६७ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

ज भण्डार [दि० जैन मन्दिर यति यशोदानन्दजी जयपुर]

५६३५. गुटका सं० १ । पत्र सं० १४० । आ० ७१×५१ इ० । लिपि काल × ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. देहली के बावशाहों की नामावलि एवं परिचय	×	हिन्दी	१-१६
		ले० काल सं० १८५२ जेठ बुदी ५ ।	
२. कवित्तसंग्रह	×	"	२०-४४
३. क्षतिश्चर की कथा	×	" यद्य	४५-६७
४. कवित्त एवं दोहा संग्रह	×	"	६८-६४
५. द्वादशमाला	कवि राजसुन्दर	"	६५-६६
		ले० काल १८५६ पौष बुदी ५ ।	

विशेष—रणथम्बोर में लक्ष्मणदास पाटनी ने प्रतिलिपि की थी ।

५६३६. गुटका सं० २ । पत्र सं० १०६ । आ० ५×४ इ० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६३७. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ३-१५३ । आ० ६×५ इ० ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. गीत-धर्मकीर्ति	×	हिन्दी	३-४
(जिरावर ध्याइयबावे, भनि चित्था फलु पाया)			
२. गीत-(जिरावर हो स्वामी चरण मनाय, सरसति स्वामिशि वीनऊ हो)			

१. पुष्पाञ्जलिजयमाल	×	अपभ्रंश	७-२४
२. लघुकल्याणपाठ	×	हिन्दी	२४-२६
३. सत्यसार	देवसेन	प्राकृत	४६-६०
४. अराधनासार	"	"	८३-१००
५. द्वादशानुप्रेक्षा	लक्ष्मीसेन	"	१००-१११
६. पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मनन्दि	संस्कृत	१११-११२
७. द्रव्यसंग्रह	आ० नेमिचन्द्र	प्राकृत	१४६-१५१

५६३८. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १८६ । आ० ६×८ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८४२

आषाढ सुदी १५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. पार्श्वपुराण	भूबरदास	हिन्दी	१-१०२
२. एकसोमुनहत्तरजीव वरणि	"	"	१८४२ १०४
३. हनुमन्त चौपाई	ब्र० रायमल	"	१८२२ आषाढ सुदी ३ "

५६३९. गुटका सं० ५ । पत्र सं० १४० । आ० ७३×४ इ० । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६४०. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २१३ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६४१. गुटका सं० ७ । पत्र सं० २२० । आ० ६×७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पं० देवीचन्द्रकृत हितोपदेश (संस्कृत) का हिन्दी भाषामें अर्थ दिया हुआ है । भाषा गद्य और पद्य दोनों में है । देवीचन्द्र ने अपना कोई परिचय नहीं लिखा है । जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी । भाषा साधारण है —

अब तेरी सेवा में रहि हों । ऐसे कहि गंगदत्त कुवा महि ते नीकरो ।

दोहा—छूटो काल के गल में अब कही काल न आय ।

ओ नर अरहट सालते नयो जनम तन पाय ॥

वार्ता—साँप की दाढ़ में तै छूटो अब कही नयो जनम पायो । कुनै में तै बाहरि आय यो कही वहाँ साँप कितनेक बेर तो बाट देखी । न आयो जब आतुर भयी । तब यो कही में कहा कीयो । जदपि कुवा के मेंढक सब खायो ऐ जब लग गंगदत्त की न खायो तब लग रख कहू खायो नहीं ।

५६४२. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १६६-४३० । आ० ६×३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X ।
अपूर्णा ।

विशेष—बुलाजीदास कृत पांडवपुराण भाषा है ।

५६४३. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १०१ । आ० ७½×६½ इ० । विषय-संग्रह । ले० काल X । पूर्णा ।

विशेष—स्तोत्र एवं सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६४४. गुटका सं० १० । पत्र सं० ११८ । आ० ८½×६ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-संग्रह ।
ले० काल सं० १८६० माह बुदी ५ । पूर्णा ।

१. गुन्दरविलास तुन्दरदास हिन्दी १ से ११६

विशेष—ब्राह्मण चतुर्भुज खंडेलवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२. बारहखंडी दत्तलाल "

विशेष—६ पद्य हैं ।

५६४५. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ४२ । आ० ८½×६ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल सं०
१९०८ चैत बुदी ६ । पूर्णा ।

विशेष—बृंदसतसई है जिसमें ७०१ दोहे हैं । दसकत श्रीमन्लाल कालख हल्ला का ।

५६४६. गुटका सं० १२ । पत्र सं० २० । आ० ८×६½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९६०
आसोज बुदी ६ । पूर्णा ।

विशेष—पंचमेरु तथा रत्नत्रय एवं पार्श्वनाथस्तुति है ।

५६४७. गुटका सं० १३ । पत्र सं० १५५ । आ० ८×६½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०
१७६० ज्येष्ठ सुदी १ । अपूर्णा ।

निम्नलिखित पाठ हैं—

कल्याणमंदिर भाषा, श्रीपालस्तुति, अठारा नाते का चौढाल्या, भक्तगमरस्तोत्र, सिद्धपूजा, पार्श्वनाथ
स्तुति [पद्यप्रभेदेन कृत] पंचपरमेष्ठी गुणमाल, शान्तिनाथस्तोत्र आदित्यवार कथा [भाउकृत] नवकार रासो, जोगी
रासो, भ्रमरगीत, पूजाष्टक, चिस्तामणि पार्श्वनाथ पूजा, नेमि रासो, गुरुस्तुति आदि ।

बीच के १०० से १३२ पत्र नहीं हैं । पीछे काटे गये मालूम होते हैं ।

भ भण्डार [शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर विजयराम पाड्या जयपुर]

५६४८. गुटका सं० १ । पत्र सं० २० । आ० ५३×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल सं० १९५८ । पूर्ण । वे० सं० २७ ।

विशेष—आलोचनापाठ, सामायिकपाठ, छहडाला (दीलतराम), कर्मप्रकृतिविधान (बनारसीदास), अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल आदि पाठों का संग्रह है ।

५६४९. गुटका सं० २ । पत्र सं० २२ । आ० ५३×४ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८ ।

विशेष—वीररस के कवित्तों का संग्रह है ।

५६५०. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ६० । आ० ६×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । जोर्ण शीर्ण । वे० सं० ३० ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६५१. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १०१ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. जिनसहस्रनामस्तोत्र	बनारसीदास	हिन्दी	१-११
२. लहुरी नेमीश्वरका	विश्वभूषण	"	१६-२१
३. पद-आत्म रूप मुहावना	ज्ञानतराय	"	२२
४. विनती	×	"	२३-२४

विशेष—रूपचन्द ने आगरे में स्वपठनार्थ लिखी थी ।

५. सुखपडो	हर्षकीर्ति	"	२४-२५
६. सिन्दूरप्रकरणा	बनारसीदास	"	२५-४७
७. अख्यात्मशोहा	रूपचन्द	"	४७-५५
८. साधुवंदना	बनारसीदास	"	५५-५८
९. मोक्षपडो	"	"	५८-६१
१०. कर्मप्रकृतिविधान	"	"	७६-६१

११. विनती एवं पदसंग्रह

X

हिन्दी

६१-१०१

५६५२. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ६-२६ । आ० ४X४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३२ ।

विशेष—नेमिरात्रुलपञ्चीसी (विनोदीलाल), बारहमासा, ननद भीजाई का भगवा आदि पाठों का संग्रह है ।

५६५३. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १६ । आ० ६X४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ४१ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—पद, चौरासी व्यास की जपमाला, चौरासी जाति वर्णन ।

५६५४. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ७ । आ० ६X४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १६४३ वैशाख सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० ४२ ।

विशेष—विषादहारस्तोत्र भाषा एवं निर्वाणकाण्ड भाषा है ।

५६५५. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १८४ । आ० ७X४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-स्तोत्र । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ४३ ।

१. उपदेशशतक	द्यानतराय	हिन्दी	१-३५
२. छहकाला (अक्षरबावनी)	"	"	३५-३६
३. धर्मपञ्चीसी	"	"	३६-४२
४. तत्त्वसारभाषा	"	"	४२-४६
५. सहस्रनामपूजा	धर्मचन्द्र	संस्कृत	४६-१७५
६. जिनसहस्रनामस्तवन	जिनसेनाचार्य	"	१-१२

ले० काल सं० १७६८ फागुन सुदी १०

५६५६. गुटका सं० ९ । पत्र सं० १३ । आ० ६ $\frac{१}{२}$ X४ इ० । भाषा-प्राकृत हिन्दी । ले० काल सं० १६१८ । पूर्ण । वे० सं० ४४ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६५७. गुटका सं० १० । पत्र सं० १०५ । आ० ८X७ इ० । ले० काल X ।

१. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	१-१६
२. तत्त्वसार	देवसेन	प्राकृत	२०-२४

३. बारहप्रभरी	×	संस्कृत	२४-२७
४. समाधिरास	×	पुरानी हिन्दी	२७-२९

विशेष—पं० डालूराम ने अपने पढ़ने के लिए लिखा था ।

५. द्वादशानुप्रेक्षा	×	पुरानी हिन्दी	२९-३१
६. योगीरासी	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	३२-३३
७. आवकाचार दोहा	रामसिंह	"	५३-६३
८. षट्पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	८४-१०४
९. षट्पद्या वर्णन	×	संस्कृत	१०४-१०५

१२७५. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ३२ । (खुले हुये शास्त्राकार) आ० ७३×५ इ० । भाषा—हिन्दी

ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है ।

१६५६. गुटका सं० १२ । पत्र सं० ५० । आ० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।
वे० सं० १०० ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

१६६०. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ४० । आ० ६×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।
वे० सं० १०१ ।

१. चन्द्रकथा	लक्ष्मण	हिन्दी	१-२१

विशेष—६७ पद्य में २६२ पद्य तक आभासेरी के राजा चन्द्र की कथा है ।

२. फुटकर कवित्त	अगरदास	"	२२-४०

विशेष—चन्दन मलियागिरि कथा है ।

१६६१. गुटका सं० १४ । पत्र सं० ३६६ । आ० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १६५३ । पूर्ण । वे० सं० १०२ ।

१. चौरासी जाति भेद	×	हिन्दी	१-१९
२. नेमिनाथ फागु	पुण्यरत्न	"	२०-२५

विशेष—अन्तिम पाठ :—

समुद्र विजय तन गुरा निलड सेव करइ जसु सुर नर वृन्द ।

पुण्यरत्न मुनिवर् भगवद् श्रीसर्व सुद्वान नेमि जिहन्द ॥ ६४ ॥

कुल ६४ पद्य हैं ।

॥ इति श्री नेमिनाथ फागु समाप्त ॥

३. प्रद्युम्नरास	ब० रायमल्ल	हिन्दी	२६-५०
४. सुदर्शनरास	"	"	५१-५०
५. श्रीपालरास	"	"	११६
ले० काल सं० १६५३ अष्ट बुद्धी २			
६. शीलरास	"	"	१३३
७. मेघकुमारगीत	पूनी	"	१३५
८. पद— चेतन हो परम निधान	जिनदास	"	२३६
९. " चेतन चिर भूलिउ भमिउ देखउ चित्त न बिचारि ।	रूपचन्द्र	"	२३८
१०. " चेतन तारक हो बतुर सयाने बै निर्मल दिष्टि अछत तुम भरम भुलाने ।	"	"	"
११. " बादि अनादि गवायो जीव विधिवस बहु दुख पायो चेतन ।	"	"	"
१२. "	दास	"	२४०
१३. " चेतन तेरो दानो बानी चेतन तेरी जाति ।	रूपचन्द्र	"	"
१४. " जीव भिथ्यात उदै चिरु भ्रम आयो । वा रत्नत्रय गरम धरम न भायो ॥	"	"	"
१५. " सुनि सुनि जियरा रे, तू त्रिभुवन का राउ रे दरिगह	"	"	"
१६. " हा हा भूता मेरा पद बना जिनवर धरम न बैये ।	"	"	"
१७. " जै जै जिन देवन के देवा, सुर नर सकल करे तुम सेवा ।	रूपचन्द्र	"	२४३
१८. अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	×	प्राकृत	२५१
१९. अक्षरगुणमाला	मनराम	हिन्दी	ले० काल १७३५ २५५
२०. चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	×	"	ले० काल १७३५ २५७
२१. जकडी	दयालदास	"	२६२

२२. पद— कायु बोले रँ भव दुख बोलणी

न यावे ।

हर्षकीर्ति

”

२३२

२३. रघिप्रत कथा

भानुकीर्ति

”

२० काल १६८७

३३६

(आठ सान सोलह के अंक बर्रा रचै सु कथा विमल)

२४. पद - जो बनीया का जोरा माही थी जिण

कोप न ध्यावे रँ ।

शिवसुन्दर

”

३४१

२५. शीलवत्तीसी

अकूमल

”

३४८

२६. टंडारणी गीत

वृधराज

”

३६२

२७. अमर गीत

मनसिध

”

१६ पद हैं

३६५

(बाडी फूली अति भली सुन अमरा रे)

५६६२. गुटका सं० १५ । पत्र सं० २७५ । आ० ५×४३ इ० । ले० काल सं० १७२७ । पूर्ण । वे०

सं० १०३ ।

१. नाटक समयसार

बनारसीदास

हिन्दी

१६३

२० काल सं० १६६३ । ले० काल सं० १७६३

२. मेवकुमार गीत

पुनी

”

१६३-१६६

३. तेरहकाठिया

बनारसीदास

”

१८८

४. विभेकाजकडी

जिनदास

”

२०६

५. गुणधरमाला

मनराम

”

६. मुनीश्वरों की जयमाल

जिनदास

”

७. बावनी

बनारसीदास

”

२४३

८. नगर स्थापना का स्वरूप

×

”

२५४

९. पंचमगति की बेलि

हर्षकीर्ति

”

२६६

५६६३. गुटका सं० १६ । पत्र सं० २१२ । आ० ६×६ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

वे० सं० १०८ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६६४. गुटका सं० १७ । पत्र सं० १४२ । आ० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० सं० १०८ ।

१. भविष्यदत्त चौरई	५० रायमल्ल	हिन्दी	११६
२. चौबोस तीर्थङ्कर परिचय	×	"	१४२

५६६५. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ८७ । आ० ८×६ ६० । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । ले० काल
 × । पूर्ण । वे० सं० ११० ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा है ।

५६६६. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ८८ । आ० ७×६ ६० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८७४ ।
 पूर्ण । वे० सं० १११ ।

१. लग्नचन्द्रिका भाषा	स्योजीराम सोगाणी	हिन्दी	१-४३

आरम्भ—आदि संत हूँ गुरुदेव, माताराम मनीस ।

जगत अथिर लखि तिन तज्यो, जिनै नमाउ सीस ॥ १ ॥

हूजा पूजुं सारदा, तीजा गुरु के पाय ।

लग्न चन्द्रिका ग्रन्थ की, भाषा कहूँ बरणाय ॥ २ ॥

गुरन मोहि आग्या दर्ह, मसतक धरि के बांह ।

लग्न चन्द्रिका ग्रंथ की, भाषा कहूँ बरणाय ॥ ३ ॥

मेरे श्री गुरुदेव का, आन्नावली निवास ।

नाम श्रीजैचन्द्रजी, पंडित बुध के वास ॥ ४ ॥

लालचन्द पंडित तरो, साती चेला नेह ।

फतेचंद के सिंग तिनै, मीकूँ हुकम करेह ॥ ५ ॥

कवि सोगाणी गोत्र है, जैन मती पहचानि ।

कंधरपाल को नंद ते, स्योजीराम बखारि ॥ ६ ॥

ठारसी के साल परि, वरष सात चालीस ।

माघ सुक्ल की पंचमी, वार सुरनकोईस ॥ ७ ॥

अन्तिम—

लग्न चन्द्रिका ग्रंथ की, भाषा कही खु सार ।

जे यासीखे ते नरा ज्योतिस को ले पार ॥ ५२३ ॥

२. शृन्दसतसई	शृन्दकवि	हिन्दी	५० ले० काल वैशाख वृदी १० १८७४

विशेष—७०६ पद्य हैं ।

३. राजनीति कवित्त

देवीदास

॥

×

१२२ पद्य हैं।

५६६७. गुटका सं० १६। पत्र सं० ३०। आ० ८×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। ले० काल ×।

पूर्ण। वे० सं० ११२।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है। गुटका अशुद्ध लिखा गया है।

५६६८. गुटका सं० २०। पत्र सं० २०१। आ० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-संग्रह।

ले० काल० सं० १७८३। पूर्ण। वे० सं० ११४।

विशेष—आदिनाथ की वीनती, श्रीपालस्तुति, मुनिश्वरों की जयमाल, ब्रह्मा कवका, भक्तामर स्तोत्र आदि हैं।

५६६९. गुटका सं० २१। पत्र सं० २७६। आ० ७×४ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। ले०

काल ×। पूर्ण वे० सं० ११५। ब्रह्मरायणल कृत भविष्यदत्तरास नेमिरास तथा हनुमत चौपई है।

५६७०. गुटका सं० २२। पत्र सं० २६-५३। आ० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। ले०

वा० ×। अपूर्ण। वे० सं० ११।

५६७१. गुटका सं० २३। पत्र सं० ८१। आ० ६×५ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा पाठ।

ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३१।

विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है।

५६७२. गुटका सं० २४। पत्र सं० २०१। आ० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत विषय-पूजा

पाठ। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३२।

विशेष—जिनसहस्रनाम (आशाधर) षट्भक्ति पाठ एवं पूजाओं का संग्रह है।

५६७३. गुटका सं० २५। पत्र सं० ६-८। आ० ६×५ इ०। भाषा-प्राकृत संस्कृत। विषय-पूजा

पाठ। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३३।

५६७४. गुटका सं० २६। पत्र सं० ८५। आ० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजापाठ। ले०

काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३४।

५६७५. गुटका सं० २७। पत्र सं० १०१। आ० ६×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।

वे० सं० १५२।

विशेष—बनारसीबिलास के कुछ पाठ, रूपचन्द्र की जकड़ी, द्रव्य संग्रह एवं पूजायें हैं।

५६७६. गुटका सं० २८। पत्र सं० १३३। आ० ६×७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८०२।

पूर्ण। वे० सं० १५३।

विशेष—समयसार नाटक, भक्तमरस्तोत्र भाषा-एवं सामान्य कथाएँ हैं ।

५६७७. गुटका सं० २६ । पत्र सं० ११६ । आ० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह ।
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५४ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र तथा अन्य साधारण पाठों का संग्रह है ।

५६७८. गुटका सं० २७ । पत्र सं० २० । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत प्राकृत । विषय-स्तोत्र ।
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५५ ।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र एवं निर्वाणकाण्ड गाथा हैं ।

५६७९. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ४० । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । ले०
काल × । पूर्ण । वे० सं० १६२ ।

विशेष—रविचरित कथा है ।

५६८०. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ४४ । आ० ४३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले०
काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७६ ।

विशेष—बीच २ में से पत्र खाली हैं १. बुलाखीदास खत्री की बरात जो सं० १६८४ मितरी मंगसिर सुदी ३
को भागदे से महमदाबाद गई, का विवरण दिया हुआ है । इसके अतिरिक्त पद, गणेशछंद, लहरियाजी की पूजा आदि हैं ।

५६८१. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ३२ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।
वे० सं० १६३ ।

१. राखुलपच्चीसी

विनोदीलाल लालचंद

हिन्दी

२. नेमिनाथ का बारहमासा

"

"

३. राखुलमंगल

×

×

प्रारम्भ—

तुम नीकस भवन सुढाढे, जब कमरी भई बरागी ।

प्रभुजी हमने भी ले चालो साथ, तुम बिन नहीं रहे दिन रात ।

अन्तिम—

आपा दोनु ही मुकली मिलाना, तहां फेर न होय आवागवना ।

राखुल अटल मुचड़ी नीहाइ, तिहां राणी नहीं छै कोई,

सोये राखुल मंगल गावत, मन बंछित फल पावत ॥१८॥

इति श्री राखुल मंगल संपूर्ण ।

५६८२. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० १६० । आ० ६५४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २३३ ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र एवं टीकम की चतुर्दशी कथा है ।

५६८३. गुटका सं० ३५ । पत्र सं० ४० । आ० ५५० इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २३४ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ है ।

५६८४. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० २४ । आ० ६५४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १७७६ फागुण वृद्धी ६ । पूर्ण । वे० सं० २३५ ।

विशेष—भक्ताभर स्तोत्र एवं कल्याण मंदिर संस्कृत और भाषा है ।

५६८५. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० २१३ । आ० ५५७ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र, जैन शतक तथा पदों का संग्रह है ।

५६८६. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० ५६ । आ० ७५४ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा स्तोत्र । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २४२ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

५६८७. गुटका सं० ३९ । पत्र सं० ५० । आ० ७५४ इ० । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २४३ ।

१. धावकप्रतिक्रमण	X	प्राकृत	१-१४
२. जयतिहुवणस्तोत्र	अभवदेवसुरि	"	१५-१६
३. अजितशान्तिजनस्तोत्र	X	"	२०-२५
४. श्रीदंतजयस्तोत्र	X	"	२६-३२

अन्य स्तोत्र एवं गौतमरारा आदि पाठ है ।

५६८८. गुटका सं० ४० । पत्र सं० २५ । आ० ५५४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २४४ ।

विशेष—सामाधिक पाठ है ।

५६८९. गुटका सं० ४१ । पत्र सं० ५० । आ० ६५४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २४६ ।

विशेष—हिन्दी पाठ संग्रह है ।

५६६०. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० २० । आ० ५×४ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २४७ ।

विशेष—सामायिक पाठ, कल्याणमन्दिरस्तोत्र एवं जिनरत्नीसी हैं ।

५६६१. गुटका सं० ४३ । पत्र सं० ४८ । आ० ५×४ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २४८ ।

५६६२. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० २५ । आ० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २४९ ।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी रामग्री है ।

५६६३. गुटका सं० ४५ । पत्र सं० १८ । आ० ८×५ इ० । भाषा हिन्दी । विषय—गुणावित । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २५० ।

५६६४. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० १७७ । आ० ७×५ इ० । ले० काल सं० १७५४ । पूर्ण । वै० सं० २५१ ।

१. भक्तामरस्तोत्र भाषा	अखयराज	हिन्दी गद्य	१-३४
२. हृष्टोपदेश भाषा	×	"	३४-५२
३. सम्बोधनचासिका	×	प्राकृत संस्कृत	५३-७१
४. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	७२-८२
५. चरचा	×	"	८२-१०३
६. योगसार दोहा	योगीन्द्रदेव	"	१०४-१११
७. द्रव्यसंग्रह गाथा भाषा सहित	×	प्राकृत हिन्दी	११२-१३३
८. अनित्यपंचाशिका	त्रिभुवनचन्द	"	१३४-१४७
९. जगन्दी	रूपचन्द	"	१४८-१५४
१०. "	हरिगह	"	१५५-१६६
११. "	रूपचन्द	"	१६७-१६९
१२. पद	"	"	१६४-१६६
१३. आत्मसंबोध जयमाल आदि	×	"	१७०-१७७

५६६५. गुटका सं० ४७ । पत्र सं० १६ । आ० ५×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २५४ ।

५६६६. गुटका सं० ४८ । पत्र सं० १०० । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७०५ पूर्ण । वे० सं० २५५ ।

विशेष—आदित्यनारकथा (भाऊ) विरहमंजरी (नन्ददास) एवं आयुर्वेदिक नुसखे हैं ।

५६६७. गुटका सं० ४९ । पत्र सं० ४-११६ । आ० ५×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६६८. गुटका सं० ५० । पत्र सं० १८ । आ० ५×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५८ ।

विशेष—पदों एवं सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६६९. गुटका सं० ५१ । पत्र सं० ४७ । आ० ८×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५९ ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ के पाठों का संग्रह है ।

६०००. गुटका सं० ५२ । पत्र सं० ६८ । आ० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० सं० १७२५ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० २६० ।

विशेष—समयसार नाटक तथा बनारसीविलास के पाठ हैं ।

६००१. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० २२८ । आ० ६×७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७२२ । पूर्ण । वे० सं० २६१ ।

१. समयसार नाटक

बनारसीदास

हिन्दी

१-६१

विशेष—विहारीदास के पुत्र नैनरी के पठनार्थ सदाराम ने लिखा था ।

२. सीतान्वरित्र

रामचन्द्र (बालक)

हिन्दी

१-१३७

३. पद

कवि संतीदास

"

४. ज्ञानस्वरोदय

चरणदास

"

५. षट्पञ्चासिका

×

"

६००२. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ५८ । आ० ४×३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८२७ भैठ बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २६२ ।

१. स्वरोदय

हिन्दी

१-२७

विशेष—उमा भूषण संवाद में से है ।

विशेष—कोटपुतली वास्तव्य श्रीवन्तलाल फकीरचन्द के पठमार्थ लिखी गई थी।

६००३. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० ७-१२६ । आ० ५३×३३ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल
X । पूर्ण । वे० सं० २७२ ।

१. अनन्त के छप्पय	भ० धर्मचन्द	हिन्दी	१४-२०
२. पद	बिनोदीलाल	"	
३. पद	जगतराम	"	

(नेमि रंगीलो छवीलो हटीलो चटकीले मुगति वधु संग मिलो)

४. सरस्वती चूर्ण का नुसला	X	"	

५. पद—प्रात उठी ले गौतम नाम जिम मन

वांछित सीधे काम ।	कुमुदचन्द	हिन्दी	

५. जीव बेलडी	देवीदास	"	

(सतगुरु कहत सुनो रे भाई यो संसार असारा)

७. नारीरासो	X	"	२१ पद्य हैं ।

८. चेलावनी गीत	नाथू	"	३१ पद्य हैं ।

९. जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	भ० जिराजन्द	संस्कृत	

१०. महावीरस्तोत्र	भ० अमरकीर्ति	"	

११. नेमिनाथ स्तोत्र	बं० शालि	"	

१२. पद्मावतीस्तोत्र	X	"	

१३. षट्मल शरणा	X	"	

१४. आराधनासार	जिनदास	हिन्दी	५६ पद्य हैं ।

१५. विनती	"	"	२० पद्य हैं ।

१६. राजुल की सज्जाय	"	"	३७ पद्य हैं ।

१७. झूलना	गंगादास	"	१२ पद्य हैं ।

१८. जानपैडी	मनोहरदास	"	

१९. श्रावकाशिया	X	"	

विशेष—विभिन्न कवित्त एवं बीतराग स्तोत्र आदि हैं।

६००४. गुटका सं० ५६। पत्र सं० १२०। आ० ४३×४६ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले० काल × पूर्ण। वे० सं० २७३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६००५. गुटका सं० ५७। पत्र सं० ३-८८। आ० ६३×४३ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १८४३ चैत बुदी १४। अपूर्ण। वे० सं० २७४।

विशेष—भक्तारस्तोत्र, स्तुति, कल्याणमन्दिर भाषा, शांतिपाठ, तीन चौबीसी के नाम, एवं देवा पूजा आदि है

६००६. गुटका सं० ५८। पत्र सं० ५६। आ० ६×४३ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७६।

१. तीसचौबीसी

×

हिन्दी

२. तीसचौबीसी चौपई

श्याम

२० काल १७४६ चैत सुदी ५

ले० काल सं० १७४६ कार्तिक बुदी ५

अन्तिल—नाम चौपई ग्रन्थ यह, जोरि करी कवि श्याम।

जेसरज सुत डोलिया, जीवनपुर तस धाम ॥२१६॥

सतरासी उतचास में, गुरन ग्रन्थ सुभाय।

चैत्र उजाली पंचमी, विजै स्कन्ध नृपराज ॥२१७॥

एक बार जे सरदहै, अथवा करिसि पाठ।

नरक नीच गति कै विषै, गाढे जड़े कपाट ॥२१८॥

॥ इति श्री तीस चौदसी जी की चौपई ॥

६००७. गुटका सं० ५९। पत्र सं० ५२। आ० ६×४३ इ०। भाषा—संस्कृत प्राकृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६३।

विशेष—तीसचौबीसी के नाम, भक्तामर स्तोत्र, पंचरत्न परीक्षा की गाथा, उपदेश रत्नमाला की भाषा आदि है।

६००८. गुटका सं० ६०। पत्र सं० ३४। आ० ६×८ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल सं० १९४३, पूर्ण। वे० सं० २६३।

१. समस्तमद्रकथा

जोधराज

हिन्दी २० काल १७२२ वैशाख बुदी ७

२. भावकों की उत्पत्ति तथा ८४ गीत	×	हिन्दी
३. सामुद्रिक पाठ	×	"

अन्तिम—समुद्र छलन सुमत सुभ सब जनक सुख देत ।

भाषा सामुद्रिक रच्यो, सजल जनों के हेल ॥

६००६. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ११-१८ । आ० ८३×६ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १६१६ । अपूर्ण । वे० सं० २६६ ।

विशेष—विरहमान तीर्थङ्कर अकडी (हिन्दी) दशलक्षण, रत्नप्रय पूजा (संस्कृत) पंचमेरु पूजा (भुधरदास) नन्दीश्वर पूजा जयमाल (संस्कृत) असन्तजित पूजा (हिन्दी) चमत्कार पूजा (स्वरूपचन्द) (१६१६), पंचकुमार पूजा आदि हैं ।

६०१०. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १६ । आ० ८३×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

६०११. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १६ । आ० ६३×४ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०८ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह एवं ज्ञानस्वरोदय है ।

६०१२. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ३६ । आ० ६×७ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२५ ।

विशेष—(१) कवित्त पदाकर तथा अन्य कवियों के (२) चौदह विद्या तथा कारखाने जात के नाम (३) अमेर के राजाओं की वंशावली, (४) मनोहरपुरा की पीढियों का वर्णन, (५) खंडेला की वंशावली, (६) खंडेलावालों के गोत्र, (७) कारखानों के नाम, (८) अमेर राजाओं का राज्यकाल का विवरण, (९) दिल्ली के बावशाहों पर कवित्त आदि हैं ।

६०१३. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ४२ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२६ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०१४. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० १३-३२ । आ० ७×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३२७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०१५. गुटका सं० ६७। पत्र सं० ५२। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२८।

विशेष—कवित्त एवं आयुर्वेद के मुसलों का संग्रह है।

६०१६. गुटका सं० ६८। पत्र सं० २६। आ० १२×४२ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३०।

विशेष—पदों एवं कविताओं का संग्रह है।

६०१७. गुटका सं० ६९। पत्र सं० ८४। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३२।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है।

६०१८. गुटका सं० ७०। पत्र सं० ४०। आ० ६१×५ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३३।

विशेष—पदों एवं पूजाओं का संग्रह है।

६०१९. गुटका सं० ७१। पत्र सं० ९८। आ० ४३×२३ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—कामशास्त्र। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३४।

६०२०. गुटका सं० ७२। स्फुट पत्र। वे० सं० ३३६।

विशेष—कर्मों की १४८ प्रकृतियाँ, इष्टवर्त्तीसी एवं जोधराज पञ्चीसी का संग्रह है।

६०२१. गुटका सं० ७३। पत्र सं० २८। आ० ८३×५ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३७।

विशेष—ब्रह्मविलास, चौबीसदण्डक, मार्गशास्त्रविधान, अकलङ्काष्टक तथा सम्यक्त्वपञ्चीसी का संग्रह है।

६०२२. गुटका सं० ७४। पत्र सं० ३६। आ० ८३×५ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३८।

विशेष—विनतियाँ, पद एवं अन्य पाठों का संग्रह है। पाठों की संख्या १९ है।

६०२३. गुटका सं० ७५। पत्र सं० १४। आ० ५×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल सं० १९५९। पूर्ण। वे० सं० ३३९।

विशेष—नरक दुःख वर्णन एवं नेमिनाथ के १२ अवतारों का वर्णन है।

६०२४. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० २५ । आ० ८६×६३ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।
वे० सं० ३४२ ।

विशेष—प्रायुर्वैदिक एवं यूनानी नुसखों का संग्रह है ।

६०२५. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० १४ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले०
काल × । वे० सं० ३४१ ।

विशेष—जोगीरासा, पद एवं विनितियों का संग्रह है ।

६०२६. गुटका सं० ७८ । पत्र सं० १६० । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।
पूर्ण । वे० सं० ३५१ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है । पृष्ठ ६४-१४६ तक वंशीधर कृत द्रव्यसंग्रह की बालावबोध टीका
है । टीका हिन्दी गद्य में है ।

६०२७. गुटका सं० ७९ । पत्र सं० ८६ । आ० ७×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद-संग्रह । ले०
काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५२ ।

ज भण्डार [शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, जयपुर]

६०२८. गुटका सं० १ । पत्र सं० २५८ । आ० ६×५ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है । लक्ष्मीसेन का चित्तामणिस्तवन तथा देवेन्द्रकीर्ति कृत प्रतिमासान्त
चतुर्दशी पूजा है ।

६०२९. गुटका सं० २ । पत्र सं० ५४ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं०
१८४३ । पूर्ण ।

विशेष—जीवराम कृत पद, भक्ताभर स्तोत्र एवं सामान्य पाठ संग्रह है ।

६०३०. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ५३ । आ० ६×५ । भाषा संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

जिनयज्ञ विधान, अभिषेक पाठ, गणधर वलय पूजा, ऋषि मंडल पूजा, तथा कर्मदहन पूजा के पाठ हैं ।

६०३१. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १२४ । आ० ८×७ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं०
१६२६ । पूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ के अतिरिक्त निम्न पाठों का संग्रह है—

१. सप्तसूत्रभेद

×

संस्कृत

२. मूढता जनांकुश इत्यादि	X	"
३. त्रेपनक्रिया	X	"
४. समयसार	आ० कुन्दकुन्द	प्राकृत
५. आदित्यवारकथा	भाऊ	हिन्दी
६. पोसहरास	ज्ञानभूषण	"
७. धर्मतन्त्रगीत	जिनदास	"
८. चतुर्गतिचौपई	X	"
९. नंसारअटवी	X	"
१०. चेतनगीत	जिनदास	"

सं० १६२६ में अंबावती में प्रतिलिपि हुई थी ।

६०३२. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ७५ । आ० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल सं० १६८२ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है ।

सं० १६८२ में नामौर में बाई ने दिखा ली उसका प्रतिज्ञा पत्र भी है ।

६०३३. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २२ । आ० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । ले० काल X । सं० ६ ।

१. नैमीश्वर का बारहमासा	लेतसिंह	हिन्दी
२. आदीश्वर के दशभव	गुराचंद	"
३. क्षीरहीर	X	"

६०३४. गुटका सं० ७ । पत्र सं० १७७ । आ० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण ।

विशेष—नित्यनैमित्तिक पाठ, सुभाषित (भूधरदास) तथा नाटक समयसार (बनारसीदास) हैं ।

६०३५. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १४६ । आ० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत, अपभ्रंश । ले० काल X । पूर्ण ।

१. चिन्तामणिपार्श्वनाथ जयमाल	सोम	अपभ्रंश
२. ऋषिमंडलपूजा	सुनि गुरानंद	संस्कृत

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह भी है ।

६०३६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २० । आ० ६×४ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह, लोक का वर्णन, अकृत्रिम चैत्यालय वर्णन, स्वर्गनरक दुख वर्णन, चारों गतियों की आयु आदि का वर्णन, इष्ट छत्तीसी, पञ्चमङ्गल, आलोचना पाठ आदि हैं ।

६०३७. गुटका सं० १० । पत्र सं० ३८ । आ० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामायिक पाठ, दर्शन, कल्याणमंदिर स्तोत्र एवं सहस्रनाम स्तोत्र है ।

६०३८. गुटका सं० ११ । पत्र सं० १६६ । आ० ४×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

१. भक्तामर स्तोत्र टब्बाटीका	×	संस्कृत हिन्दी ले० काल सं० १७२७ चैतसुदी ५
२. पद— हर्षकीर्ति	×	"
(जिण जिण जप जीवडा तीन भवन में सारोजी)		
३. पंचगुरु की जयमाल	श० रायमल	" ले० काल सं० १७२६
४. कवित्त	×	"
५. हितोपदेश टीका	×	"
६. पद—तै तर भव पाय कहा कियो	रूपचन्द	हिन्दी
७. जकड़ी	×	"
८. पद—मोहिनी बहकायो सब जग मोहनी	मनोहर	"

६०३९. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १३८ । आ० १०×८ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल × ।

पूर्ण । निम्न पाठ हैं—

क्षेत्रपाल पूजा (संस्कृत) क्षेत्रपाल जयमाल (हिन्दी) नित्यपूजा, जयमाल (संस्कृत हिन्दी) सिद्धपूजा (सं०) षोडशकारण, दशलक्षणा, रत्नत्रयपूजा, कलिकुण्डपूजा और जयमाल (प्राकृत) नंदीश्वरपूजा अनन्तचतुर्दशीपूजा, अक्षयनिधिपूजा तथा पार्श्वनास्तोत्र, आयुर्वेद ग्रंथ (संस्कृत ले० काल सं० १६८१) तथा कई तरह की रेखाओं के चित्र भी हैं, राशिफल आदि भी दिये हुये हैं ।

६०४०. गुटका सं० १३ । पत्र सं० २८३ । आ० ७×५ इ० । ले० काल सं० १७३८ । पूर्ण ।

गुटके में मुख्यतः निम्न पाठ हैं—

१. जिनस्तुति	सुमतिकीर्ति	हिन्दी
२. गुणस्थानकगीत	श० श्री वर्द्धन	"

अन्तिम-भणति श्री वर्द्धन ब्रह्म एह वाजी भविष्य सुख करइ

३. सम्यक्त्व जयमाला X अपभ्रंश

४. परमार्थगीत रूपचन्द हिन्दी

५. पद— छहो मेरे जीय तू कत भरमायो, तू

चेतन यह जड परम है यामै कहा लुभायो । मनराम ”

६. मेघकुमारगीत पूनी ”

७. मनोरथमाला अचलकीर्ति ”

अचला तिहि तरा गुण गाइस्यो,

८. सहेलीगीत सुन्दर हिन्दी

सहेल्यो हे यो संसार असार भो चित्त में या अपनी जी सहेल्यो है

ज्यो रांची सो गवार तन धन जोवन थिर नहीं ।

९. पद— मोहन हिन्दी

जा दिन हँस चली घर छोड़ि, कोई न साथ खड़ा है गोड़ि ॥

जरा जरा कै मुख ऐसी वाली, बड़ो वेग मिलो अन पारी ॥

अरा बिडह्यै उतरी सरीर, खोसि खोसि ले तनक चीर ।

चारि जरा जङ्गल ले जाहि, बर मैं घड़ी रहण दे नाहि ।

जबता बूढ़ दिडा में वास, यो मन मेरा भया उदास ।

कया माया भूकी जानि, मोहन होऊ भजन परमाणि ॥६॥

१०. पद— हर्षकीर्ति हिन्दी

नहि छोडौ हो जिनरान नाम, मोहि और मिथ्यास से क्या बने काम ।

११. ” मनोहर हिन्दी

सेव तौ जिन साहिब की कीजे नरभव लाहो लीजे

१२. पद— जिरादास हिन्दी

१३. ” स्यामदास ”

१४. मोहबिवेकपुष्ट बनारसीदास ”

१५. द्वादशानुप्रेक्षा सूरत ”

१६. द्वादशानुप्रेक्षा	×	"
१७. विनती	रूपचन्द्र	"

जै जै जिन देवनि के देवा, सुर तर सकल करै तुम सेवा ।

१८. पंचेन्द्रियवेलि	ठक्कुरसी	हिन्दी	२० काल सं० १५=५
१९. पञ्चगतिवेलि	हर्षकीर्ति	"	" " १८९३
२०. परमार्थ हिंदोलना	रूपचन्द्र	"	
२१. पंथीगीत	छीहल	"	
२२. मुक्तिपीहरगीत	×	"	
२३. पद-ग्रन्थ मोहि और कछु न सुहाय	रूपचन्द्र	"	
२४. पदसंग्रह	बनारसीदास	"	

६०४१. गुटका सं० १४ । पत्र सं० १०६-२३७ । आ० १०×७ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र, पूजा एवं उसकी विधि दी हुई है ।

६०४२. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ४३ । आ० ७×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

६०४३. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ५२ । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-सामान्य पाठ संग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

६०४४. गुटका सं० १७ । पत्र सं० १६६ । आ० १३×३ इ० । ले० काल सं० १६१३ ज्येष्ठ बुदा । पूर्ण ।

१. छियालीस ठाणा	ब्र० राममल्ल	संस्कृत	१९

विशेष—चौबीस तीर्थछुरों के नाम, नगर नाम, कुल, वंश, पंचकल्पाणकों की तिथि आदि विवरण है ।

२. चौबीस ठाणा चर्चा	×	"	२८
३. जीवसमाप्त	×	प्राकृत ले० काल सं० १६१३ ज्येष्ठ ५९	

विशेष—ब्र० राममल्ल ने देहली में प्रतिलिपि की थी ।

४. सुप्य दीहा	×	हिन्दी	८०
५. परमात्म प्रकाश भाषा	प्रभुदास	"	९२
६. रत्नकरण्डावकाचार	समंतभद्र	संस्कृत	९४

६०४५. गुटका सं० १८ । पत्र सं० १५० । आ० ७×२३ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

ट भण्डार [आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर]

६०४६. गुटका सं० १ । पत्र सं० ३७ । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १५०१ ।

१. मनोहरमंजरी

मनोहर मिश्र

हिन्दी

१-२६

प्रारम्भ—

अथ मनोहर मंजरी, अथ नव यौवना लक्ष्मण ।

याके योवनु मंजरी, अंग अंग छवि ओर ।

सुनि सुमान नव यौवना, कहत भेद द्वे ओर ॥

अन्तिमः—

लहलहाति अति रसमयी, बहु सुवानु भपाठ (?)

निरखि मनोहर मंजरी, रसिक मृङ्ग मंडरात ॥

सुनि सुजनि अभिमान तजि मन विचारि मुन दोष ।

कहा बिरहु कित प्रेम रसु, तहीं होत दुख मोख ॥

चंद अत द्वे दीप के, अंक बीच आकास ।

करी मनोहर मंजरी, मकर चांदनी ग्यास ॥

साधुर का हो मधुपुरी, बसत महोली पोरि ।

करी मनोहर मंजरी, अनूप रस सोरि ॥

इति श्री सकललोककृतमरिचमंजरीनिजसोराजितपदद्वन्द्वदावनविहारकारिलयाकटाक्षदोषासक

मनोहर मिश्र विरचिता मनोहरमंजरी समाप्ता ।

कुल ७४ पद्य हैं । सं० ७२ तक ही दिये हुये हैं । नायिका भेद वर्णित है ।

२. फुटकर दोहा

X

हिन्दी

३०-३९

विशेष— ७० दोहे हैं ।

३. आयुर्वेदिक वृत्तलेख

X

"

३७

६०४७. गुटका सं० २ । पत्र सं० २-५८ । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७६४ । अपूर्ण । वे० सं०

१५०२ ।

१. नाममंजरी

मंददास

हिन्दी पद्य सं० २९१

२-२८

२. अनेकार्थमंजरी

"

"

२८-४०

स्वामी खेमदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३. कवित्त	×	११	४१-४३
४. भोजरासो	उदयभानु	११	४३-४८

प्रारम्भ—

श्री गणेशाय नमः । दोहरा ।

कुंजर कर कुंजर करन कुंजर आनंद देव ।

सिद्धि समपन सस सूव सुरतर कीजिय सेव ॥ १ ॥

जगत जननि जग उद्धरन जगत ईस अरधम ।

मीन विचित्र विराजकर हंसासन सरवंग ॥ २ ॥

सूर शिरोमणि सूर सुत सूर टरै नहि आन ।

जहां तहां सबन सुन जिये तहां भूपति भोज बखान ॥ ३ ॥

अन्तिम—इति श्री भोजजी की रासो उदयभानजी की कियो । लिखत स्वामी खेमदास मिती काष्ठुरा बुदी ११ संवत् १७६५ । इसमें कुल १४ पद्य हैं जिनमें भोजराज का वैभव व यश वर्णन किया गया है ।

५. कवित्त टोडर हिन्दी कवित्त हैं ४६-४

विशेष—ये महाराज टोडरमल के नाम से प्रसिद्ध थे और अकबर के भूमिकर विभाग के मंत्री थे ।

६०४८. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ११८ । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १७२६ । अपूर्ण । वे० सं० १५०३ ।

१. मायाब्रह्म का विचार × हिन्दी गद्य अपूर्ण

विशेष—प्रारम्भ के कई पद्य फटे हुये हैं गद्य का नमूना इस प्रकार है ।

“माया काहे तै कहिये ब्रह्मस्यो सबल है तातै माया कहिये । अकास काहे तै कहिये पिंड ब्रह्मांड का भादि आकार है तातै आकास कहिये । सुती (शून्य) काहे तै कहिये—जड है तातै सुती कहिये । सबती काहे तै कहिये सकल संसार को जीति रही है तातै सकली कहिये ।”

अन्तिम—एता माया ब्रह्म का विचार परम हंस का खान ब्रह्म जगौस संपूर्ण समाप्ता । श्रीशंकाचारीज कीरव्यते । मिती प्रसाद सुदी १० सं० १७२६ का मुकाम गुहाटी उर कोस दोह देईदान चारण की पोधीस्यै उत्तरी पोधी सा.....म ठोल्या साह नेवसी का बेटा.....कर महाराज श्री रुघनाथस्थंघजी ।

२. गोरखपदावली गोरखनाथ हिन्दी अपूर्ण

विशेष—करीब ६ पद्य हैं ।

म्हारा रै बेरामी जोनी जोगरि संग न छाडै जी ।

मान सरोवर मनस भुलती प्रावै गगन मढ मंड भारीजी ॥

३. सतसई

बिहारीलाल

हिन्दी

अपूर्ण

३-६५

ले० काल सं० १७२५ माघ सुदी २ ।

विशेष—प्रारम्भ के १२ दोहे नहीं हैं । कुल ७१० दोहे हैं ।

४. वैद्यमनोत्सव

नयनसुख

”

अपूर्ण १७-११८

६०४६. गुटका सं० ४ । पत्र सं० २५ । भाषा—संस्कृत । विषय—नीति । ले० काल सं० १८३९ पीष

सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० १५०४ ।

विशेष—चाणक्य नीति का बर्णन है । श्रीचन्दजी गंगवाल के पठनार्थ जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६०५०. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ४० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८३१ । अपूर्ण । वे० सं०

१५०५ ।

विशेष—विभिन्न कवियों के शृङ्गार के अलूठे कवित्त है ।

६०५१. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ८६ । भा० ६४० इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १६८८ ।

ले० काल सं० १७६८ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १५०६ ।

विशेष—सुन्दरदास कृत सुन्दरशृङ्गार है । श्रेयदास गोधा मालपुरा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

६०५२. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ४५ । भा० ६४७ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८३१

वैशाख सुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० १५०७ ।

१. कवित्त

अनर (अग्रदास)

हिन्दी

अपूर्ण

१-१०

विशेष—कुल ६३ पद्य हैं पर प्रारम्भ के ७ पद्य नहीं हैं । इनका छन्द कुण्डलिया सा लगता है एक छन्द

निम्न प्रकार है—

आंधो बांटे जेवरी पाछै बछरा साय ।

पाछै बछरा साय कहत गुरु सीख न मानै ।

ग्यान पुरान मसान छिनक मैं घरम भुलानै ॥

करो विप्रलो रीत मृतग धन लेत न लाजै ।

नीच न समझै मोच परत विषया कै काजै ।

अगर जीव आदि ते यह बंध्योस करै उपाय ।

आंधो बांटे जेवरी पाछै बछरा साय ॥१०॥

३.

द्वादशानुप्रेक्षा

लोहट

हिन्दी

१७-२१

ले० काल सं० १८३१ वैशाख बुदी ८ ।

विशेष—१२ सवैये १२ कवित छप्पय तथा अन्त में १ दोहा इस प्रकार कुल २५ छंद हैं ।

अन्तिम—

अनुप्रेक्षा द्वादश सुनत, गयो तिमिर भ्रजान ।

अष्ट करम तसकर दुरे, जग्यो अनुभै भान ॥ २५ ॥

इति द्वादशानुप्रेक्षा संपूर्ण । मिति वैशाख बुदी ८ संवत् १८३१ दसकत देव करण का ।

४. कर्मपञ्चीसी

भारमल

हिन्दी

२१-२४

विशेष—कुल २२ पद्य हैं ।

अन्तिमपद्य—

करम धा तोर पंच महाभरत धरुं जपू चौवीस जिणंदा ।

भरहंत ध्यान लैव चहुं साह लीयण वंदा ॥

प्रकृति पन्नासी जारिण को करम पचीसी जान ।

सुंदर भारैमल.....स्योपुर भान ॥ कर्म प्रति० ॥ २२ ॥

॥ इति कर्म पञ्चीसी संपूर्ण ॥

५. पद—(बांसुरी दीजिये ब्रज नारि)

सूरदास

११

२६

६. पद—हम तो ब्रज को बसिवो ही तज्यो

११

११

२७-२८

ब्रज में बसि बैरिणि तू बंसुरी

७. श्याम बत्तीसी

श्याम

११

३७-४०

विशेष—कुल ३५ पद्य हैं जिनमें ३४ सवैये तथा १ दोहा है—

अन्तिम—

कृष्ण ध्यान चतु अष्ट में श्रवन्न सुनत प्रनाम ।

कहत श्याम कलमल कहु रहत न रञ्जक नाम ॥

८. पद—बिन भाली जो लगावै बाग

मनराम

हिन्दी

४०

९. दोहा—कबीर औगुन एक ही गुण है

कबीर

११

११

लाख करोरि

१० फुटकर कवित

×

११

४१

११ जम्बूद्वीप सम्बन्धी पंच भेष का वर्णन

×

११

अपूर्ण

४१-४५

६०५३. गुटका सं० ८ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×८ इ० । ले० काल सं० १७७६ आगरा बुकी ६ ।
पूर्ण । वे० सं० १५०८ ।

१. कृष्णस्वमणि वेलि पृथ्वीराज राठीर राजस्थानी डिगल १-८५
२० काल० सं० १६३७ ।

विशेष—ग्रंथ हिन्दी मय टीका सहित है । पहिले हिन्दी पत्र हैं फिर मय टीका दी गई है ।

२. विष्णु पंजर रक्षा	×	संस्कृत	८६
३. भजन (गढ़ बंका कैसे लीजे रे भाई)	×	हिन्दी	८७-८८
४. पद—(बैठे नव निकुंज कुटीर)	चतुर्भुज	"	८९
५. " (धुनिसुनि मुरली बन बाजै)	हरीदास	"	"
६. " (सुन्दर सांबरों आवै चलयो सखी)	मंददास	"	"
७. " (बालगोपाल लैगन मेरे)	परमानन्द	"	"
८. " (बन ते आवत गावत गौरी)	×	"	"

६०५४. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ८५ । आ० ६×७ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।
वे० सं० १५०९ ।

विशेष—केवल कृष्णस्वमणी वेलि पृथ्वीराज राठीर कृत है । प्रति हिन्दी टीका सहित है । टीकाकार अज्ञात है । गुटका सं० ८ में आई हुई टीका से भिन्न है । टीका काल नहीं दिया है ।

६०५५. गुटका सं० १० । पत्र सं० १७०-२०२ । आ० ६×७ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे सं० १५११ ।

१. कवित्त राजस्थानी डिगल १७१-७३

विशेष—शृङ्गार रस के सुन्दर कवित्त हैं । विरहिनी का वर्णन है । इसमें एक कवित्त छीहल का भी है ।

२. श्रीस्वमणिकृष्णजी की रासी तिपरदास राजस्थानी पत्र १७३-१८५

विशेष—इति श्री स्वमणी कृष्णजी की रासी तिपरदास कृत संपूर्ण ॥ संवत् १७३६ वर्षे प्रथम चैत्र मासे शुभ शुक्ल पक्षे तिथी दशम्यां बुधवासरे श्री भुक्तपुर मध्ये लिखापितं साह सजन कोष्ठ साह कृष्णजी तत्पुत्र सजन साह श्रेष्ठ द्वाखुजी वाचनाय । लिखतं व्यास जदूना नाम्ना ।

३. कवित्त × हिन्दी १८६-२०२

विशेष—भूधरदास, सुखराम, विहारो तथा केशवदास के कवित्तों का संग्रह है । ४७ कवित्त हैं ।

६०५६. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ४६ । आ० १०×८ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

वे० सं० १५१४ ।

१. रसिकप्रिया केशवदेव हिन्दी अपूर्ण १-४८

ले० काल सं० १७६१ जेष्ठ सुदी १४

२. कवित्त × " ४६

६०५७. गुटका सं० १२ । पत्र सं० २-२६ । आ० ५×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—निम्न पाठ उल्लेखनीय है ।

१. स्नेहलीला जनमोहन हिन्दी ६-१५

अन्तिम—या लीला ब्रज वास की गोपी कृष्ण सनेह ।

जनमोहन जो गाव ही सो पावै नर देह ॥११६॥

जो गावै सीखै सुनै भाव भक्ति करि हेत ।

रसिकराय पूरण कृपा मन बांछित फल दैत ॥१२०॥

॥ इति स्नेहलीला संपूर्ण ॥

विशेष—ग्रन्थ में कृष्ण ऊधव एवं ऊधव गोपी संवाद है ।

६०५८. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ७६ । आ० ८×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० × ।

पूर्ण । वे० सं० १५२२ ।

१. रागमाला श्याम मिश्र हिन्दी १-१२

१० काल सं० १६०२ फागुण बुदी १० । ले० काल सं० १७४६ सावन सुदी १५ ।

विशेष—ग्रन्थ के आदि में कासिमखा का वर्णन है । ग्रंथ का दूसरा नाम कासिम रसिक विलास भी है ।

अन्तिम—संबत् सौरह से वरण ऊपर बीते दोय ।

फागुन बदी सनो दसी सुनो सुनी जन लोय ॥

पोथी रची लहौर श्याम आगरे नबर के ।

राजघाट है ठौर पुत्र चतुर्भुज मिश्र के ॥

इति रागमाला ग्रन्थ श्याम मिश्र कृत संपूर्ण । संबत् १७४६ वर्षे सावन सुदी १५ सोबवार पोथी तेरगढ़ प्रगनें हिंडोण का में साहू गोरधनदास अग्रवाल की पोथी थे लिखी लिखत मौजीराम ।

२. द्वादशमासा (बारहमासा) महाकविराहुसुन्दर हिन्दी

विशेष—कुल २४ कवित्त है। प्रत्येक मास का विरहिनी वर्णन किया गया है। प्रत्येक कवित्त में सुन्दर पद हैं। सम्भव है रचना सुन्दर कवि की है।

३. नखशिखवर्णन

केशवदास

हिन्दी

१४-२८

ले० काल सं० १७४६ माह बुदी १४।

विशेष—धीरगढ़ में प्रतिलिपि हुई थी।

४. कवित्त—

गिरधर, मोहन सेवग आदि के

हिन्दी

६०५६. गुटका सं० १४। पत्र सं० ३६। आ० ५×५ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।

वे० सं० १५२३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६०. गुटका सं० १५। पत्र सं० ३६८। आ० ५×६ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—पद एवं पूजा।

ले० काल सं० १८३३ आसोज बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० १५२४।

१. पदसंग्रह

हिन्दी

१-५८

विशेष—जिनदास, हरीसिंह, बनारसीदास एवं रामदास के पद हैं। राग रागणियों के नाम भी दिये हुये हैं।

२. चौबीसतीर्थस्मरणपूजा

रामचन्द्र

हिन्दी

५८-१६८

६०६१. गुटका सं० १६। पत्र सं० १७१। आ० ७×६ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं०

१६४७। अपूर्ण। वे० सं० १५२५।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है।

१. विरदावली

×

संस्कृत

विशेष—पूरी भट्टारक पट्टावली दी हुई है।

२. ज्ञानबावनी

मतिशेखर

हिन्दी

६८-१०२

विशेष—रचना प्राचीन है। ५३ पद्यों में कवि ने अक्षरों की बावनी लिखी है। मतिशेखर की लिखी हुई

धारा चउपई है जिसका रचनाकाल सं० १५७४ है।

३. त्रिभुवन की विनती

गङ्गादास

विशेष—इसमें १०१ पद्य हैं जिसमें ६३ शलाका पुरुषों का वर्णन है। भाषा गुजराती लिपि हिन्दी है।

६०६२. गुटका सं० १७। पत्र सं० ३२-७०। आ० ५×६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल सं०

१५४७। अपूर्ण। वे० सं० १५२६।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६३. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ७० । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८६४
ज्येष्ठ शुदी ३३ । पूर्ण । वै० सं० १५२७ ।

१. चतुर्दशीकथा टीकम हिन्दी र० काल सं० १७१२
विशेष—३५७ पद्य हैं ।

२. कलियुग की कथा द्वारकादास ”
विशेष—पंचेवर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३. फुटकर कवित्त, रागों के नाम, रागमाला के दोहे तथा विनोदीलाल कृत चौबीसी स्तुति है ।

४. कपडा माला का दूहा सुन्दर राजस्थानी
विशेष—इसमें ३१ पद्यों में कवि ने नायिका को अलग २ कपड़े पहिना कर विरह जाग्रत किया तथा फिर
पिय मिलन कराया है । कविता सुन्दर है ।

६०६४. गुटका सं० १९ । पत्र सं० ५७-३०५ । आ० ६½×६½ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—
संग्रह । ले० काल सं० १६९० द्वि० वैशाख शुदी २ । अपूर्ण । वै० सं० १५३० ।

१. भविष्यदत्तचौपई अ० रायनल्ल हिन्दी अपूर्ण ५७-१०६

२. श्रीपालचरित्र परिमल्ल ” १०७-२८३

विशेष—कवि का पूर्ण परिचय प्रशस्ति में है । अकबर के शासन काल में रचना की गई थी ।

३. धर्मरास (श्रावकाचाररास) × ” २८३-२९८

६०६५. गुटका सं० २० । पत्र सं० ७३ । आ० ६×६½ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०
१८३६ चैत्र शुदी ३ । पूर्ण । वै० सं० १५३१ ।

विशेष—स्तोत्र पूजा एवं पाठों का संग्रह है । बनारसीदास के कवित्त भी हैं । उसका एक उदाहरण
निम्न है:—

कपडा की रोस जायौ हैवर की हीस जायौ ।

न्याय भी नवेरि जायौ राज रोस मारिणी ॥

राग तो छत्तीस जायौ लषिण बत्तीस जायौ ।

चूँप चतुराई जायौ महल में मांशिणी ॥

बात जायौ संवाद जायौ खूबी खसबोई जायौ ।

सगपग साधि जायौ अर्थ को जाणिनी ।

कहत बनारसीदास एक जिन नांख बिना ।

.... वृद्धी सब जाणिनी ॥

६०६६. गुटका सं० २१ । पत्र सं० १६४ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय संग्रह ।
ले० काल सं० १८६७ । अपूर्ण । वे० सं० १५३२ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्र पाठ संग्रह है ।

६०६७. गुटका सं० २२ । पत्र सं० ४८ आ० १०×७ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—संग्रह ।
ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १५३३ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पदों का संग्रह है ।

६०६८. गुटका सं० २३ । पत्र सं० १५-६२ । आ० ५×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं०
१८८८ । अपूर्ण । वे० सं० १५३४ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह हैः—भक्तामर भाषा, परमज्योति भाषा, आदिनाथ की वीनती, ब्रह्म
जिनदास एवं कनककीर्ति के पद, निर्वाणकाण्ड गाथा, त्रिभुवन की वीनती तथा मेघकुमारचौपई ।

६०६९. गुटका सं० २४ । पत्र सं० २० । आ० ६×४ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल १८८० ।
अपूर्ण । वे० सं० १५३५ ।

विशेष—जैन नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

६०७०. गुटका सं० २५ । पत्र सं० २४ । आ० ५×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण ।
वे० सं० १५३६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह हैः—विषाणहार भाषा (अचलकीर्ति) भूगलचौबीसी भाषा, भक्तामर
भाषा (हेमराज)

६०७१. गुटका सं० २६ । पत्र सं० ६० । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं०
१८७३ । अपूर्ण । वे० सं० १५३७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०७२. गुटका सं० २७ । पत्र सं० १५-१२० । भाषा—संस्कृत । ले० काल १८६५ । अपूर्ण । वे०
सं० १५३८ ।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है ।

६०७३. गुटका सं० २८ । पत्र सं० १५० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७५३ । अपूर्ण ।
वे० सं० १५३९ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है । सं० १७५३ अष्टाद सुदी ३ सु० मी० नन्दपुर गंगाजी का तट ।
दुर्गादास चांदवाई की पुस्तक से मनरूप ने प्रतिलिपि की थी ।

६०७४. गुटका सं० २६ । पत्र सं० १६ । आ० ५×६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजापाठ ।
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५४० ,

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६०७५. गुटका सं० ३० । पत्र सं० १५५ । आ० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।
वे० सं० १५४१ ।

१. भविष्यदत्त चौपाई अ० रायमल्ल हिन्दी १-७६

२० सं० १६३३ कार्तिक सुदी १४ ।

विशेष—फतेराम बज ने जयपुर में सं० १८१२ अषाढ सुदी १० को प्रतिलिपि की थी ।

२. वीरजिह्म की संघावली पुनो हिन्दी ७७-७८

विशेष—मेघकुमार गीत है ।

३. अठारह नाते की कथा सोहन " १०-११

४. रविवार कथा कुशलचन्द " २० काल सं० १७७५

विशेष—लिखत फतेराम ईसरदास बज वासी सांगानेर का ।

५. ज्ञानपञ्चीसी बनारसीदास " ११-१२

६. चौबीसतीर्थकरों की बंदना नेमीचन्द " १३

७. फुटकर सैवया × " ११३

८. षट्श्लेष्या वेलि हर्षकीर्ति " २० काल सं० १६८३ ११६

९. जिन स्तुति जोधराज गोदीका " ११८

१०. प्रीत्यंकर चौपाई मु० नेमीचन्द " ११९-१२४

२० काल सं० १७७१ वैशाख सुदी ११

६०७६. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ४-२६५ । आ० ८३×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले०
काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५४२ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है ।

६०७७. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ११६ । आ० ६×४३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल ×
पूर्ण वे० सं० १५४४ ।

विशेष—नित्य एवं भाद्रपद पूजा संग्रह है ।

६०७८. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ३२४ । आ० ५×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १७५६
वैशाख सुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० १५४५ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०७९. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० १३८ । आ० ६×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।
वे० सं० १५४६ ।

विशेष—मुख्यतः नाटक समयसार की प्रति है ।

६०८०. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० २४ । आ० ५×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पद संग्रह । ले०
काल × । पूर्ण । वे० सं० १५४७ ।

६०८१. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० १७० । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × ।
पूर्ण । वे० सं० १५४८ ।

विशेष—नित्यपूजा पाठ संग्रह है ।

६०८२. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० ६४ । आ० ५×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल १८४२
पूर्ण । वे० सं० १५४८ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. पदसंग्रह	मनराम एवं भूधरदास	हिन्दी
२. स्तुति	हरीसिंह	"
३. पार्श्वनाथ की गुरामाला	लोहट	"
४. पद— (दर्शन दीज्योजी नेमकुमार	मेलीराम	"
५. आरती	शुभचन्द	"

विशेष—अन्तिम—आरती करता आरति भाजै, शुभचन्द ज्ञान मगन मैं साजै ॥८॥

६. पद— (मैं तो बारी आज महिमा जानी)	मेला	"
७. शारदाष्टक	बनारसीदास	" ले० काल १८१०

विशेष—जयपुर में कानीदास के मकान में लालाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

८. पद— मोह नींद में छकि रहे हो लाल	हरीसिंह	हिन्दी
९. " उठि तेरो मुख देखूँ नाभि तू के नंदा	टोडर	"
१०. अतुलितस्तुति	विनोदीलाल	"
११. विनती	अजैराज	"

६८८३. गुटका सं० ३६ । पृष्ठ सं० २-१५६ । आ० १५५ इ० । भाषा-हिन्दी । जे० काष्ठ X । पूर्ण ।
 जे० सं० १५५० । मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है:—

१. आरती संग्रह	चानतराय	हिन्दी	(५ आरतियां हैं)
२. आरती-किहू विधि आरती करौ प्रभु तेरी	मानसिंह	"	
३. आरती-इहूविधि आरती करौ प्रभु तेरी	दोपचन्द	"	
४. आरती-करो आरती आलम देवा	विहारीदास	"	३
५. पद संग्रह	चानतराय	"	१७
६. पद-संगार अशिर भाई	मानसिंह	"	४०
७. पूजापुष्क	विनोदीलाल	"	५३
८. पद-संग्रह	भूधरदास	"	६७
९. पद-जाग विहारो अब बवा सोवै	कबीर	"	७७
१०. पद-कया सोवै उठि जाग रे प्रभाती मन	समयभुन्दर	"	७७
११. शिद्धपूजापुष्क	दीनतराम	"	८०
१२. आरती शिखों की	कुशलचन्द	"	८१
१३. गुरुपुष्क	चानतराय	"	८३
१४. साधु की आरती	हेमराज	"	८५
१५. वाणी अपुष्क व जयमाल	चानतराय	"	"
१६. पार्वतीपुष्क	मुनि सफलकीर्ति	"	"

अन्तिम—अष्ट विधि पूजा अर्च उत्तारो सकलकीर्तिगुनि काज मुदा ॥

१७. नेमिनाथापुष्क	भूधरदास	हिन्दी	११७
१८. पूजासंग्रह	लालचन्द	"	१३८
१९. पद-ठठ तेरी मुअ देखू नामिजी के नंद	टोडर	"	१४५
२०. पद-देखो भाई आज रिपभ घरि आई	साहकोरत	"	"
२१. पद-संग्रह	शोभाचन्द शुभचन्द आनंद	"	१४६
२२. लहरा भंगल	अंसो	"	१४७
२३. क्षेत्रपाल भैरवगीत	शोभाचन्द	"	१४८

५. नेमीश्वर राजुल की लहुरि (बारहमासा) खेतसिंह साह		हिन्दी	
६. ज्ञानार्प बमीवृहद् स्तवन	समयमुन्दर	"	
७. आदीश्वरगीत	रंगत्रिजय	"	
८. कुशलगुरुस्तवन	जिनरंगसूरि	"	
९. "	समयमुन्दर	"	
१०. चौबीसीस्तवन	जयसागर	"	
११. जिनस्तवन	कनककीर्ति	"	
१२. भोगीदास को जन्म कुण्डली	×	"	जन्म सं० १६६७

६०८७. गुटका सं० ४३ । पत्र सं० २१ । आ० ५२×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १७३०
अपूर्ण । वे० सं० १५५४ ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र तथा पद्मावतीस्तोत्र है । मलारना में प्रतिलिपि हुई थी ।

६०८८. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ४-७६ । आ० ७×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण
वे० सं० १५५५ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं ।

१. इवेताम्बर मत के ८४ बोल जगन्नाथ हिन्दी २० काल सं० १८११ ले० काल
सं० १८६६ आसोज सुदी ३ ।
२. अतविधानरासो दौलतराम पाठनी हिन्दी २० काल सं० १७६७ आसोज सुदी १०

६०८९. गुटका सं० ४५ । पत्र सं० ५-१०३ । आ० ६३×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं०
१८६८ । अपूर्ण । वे० सं० १५५६ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं ।

१. सुदामा की बारहखड़ी × हिन्दी ३२-३४

विशेष—कुल २८ पद्य हैं ।

२. जन्मकुण्डली महाराजा सवाई जगतसिंहजी की × , संस्कृत १०३

विशेष—जन्म सं० १८४२ चैत बुदी ११ रवौ ७।३० वनेष्टा ५७।२४ सिध योग जन्म नाम सदागुण ।

६०९०. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० ३० । आ० ६३×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल ×
पूर्ण । वे० सं० १५५७ ।

विशेष—हिन्दी पद संग्रह है ।

६०६१. गुटका सं० ४७ । पत्र सं० ३६ । आ० ६×५१ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १५५८ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६०६२. गुटका सं० ४८ । पत्र सं० ९ । आ० ६×५१ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १५५९ ।

विशेष—अनुभूतित्वरूपाचार्य कृत सारस्वत प्रक्रिया है ।

६०६३. गुटका सं० ४९ । पत्र सं० ६५ । आ० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८६८ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वै० सं० १५६२ ।

विशेष—देवाग्रज कृत विनयी संग्रह तथा जगहट कृत छठारह नाते का बीडालिया है ।

६०६४. गुटका सं० ५० । पत्र सं० ७४ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १५६४ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०६५. गुटका सं० ५१ । पत्र सं० १७० । आ० ५१×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १५६३ ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठ हैं ।

१. कवित्त	कन्हैयालाल	हिन्दी	१०५-१०७
विशेष—३ कवित्त हैं ।			
२. राजमाला के दोहे	जैतथी	"	११३-११८
३. बारहमासा	जसराम	" १२ दोहे हैं	११८-१२१

६०६६. गुटका सं० ५२ । पत्र सं० १७८ । आ० ६१×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १५६६ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०६७. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० ३०४ । आ० ६१×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७८३ भाद्र बुदी ४ । पूर्ण । वै० सं० १५६७ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१. अष्टाङ्गिकारासो	विनयकीर्ति	हिन्दी	१५८

२. रोहिणी विधिकाथा

बंसीदास

हिन्दी

१५६-६०

२० काल सं० १६६५ ज्येष्ठ सुदी २ ।

विशेष—

सोरह सै पचानऊ डई, ज्येष्ठ कृष्ण दुतिया भई

फातिहाबाद नगर सुखमात, अग्रवाल शिव जातिप्रधान ॥

मूलसिंह कीरति विख्यात, विशालकीर्ति गोयम सममान ।

ता शिष बंसीदास मुजान, मानै जिनवर की श्रान ॥८६॥

अक्षर पद तुक तनै छु हीन, पढौ बनाइ सदा परवीन ॥

क्षमौ शारदा पंडितराइ पढत सुनत उपजै धर्मो सुभाइ ॥८७॥

इति रोहिणीविधि कथा समाप्त ॥

१. सोलहकारसारासो	सकलकीर्ति	हिन्दी	१७२
२. रत्नत्रयका महार्घ व क्षमावणी	ब्रह्मसेन	संस्कृत	१७५-१८६
५. यित्ती चौपड की	मान	हिन्दी	२४३-२४४
६. पार्श्वनाथजयमाल	लोहट	"	२५१

६०६८. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० २२-३० । आ० ६१×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X ।
अपूर्णा । वे० सं० १५६८ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

६०६९. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० १०५ । आ० ६×५१ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०
१८८४ । अपूर्णा । वे० सं० १५६९ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१. अश्वलक्षण	पं० नकुल	संस्कृत	अपूर्णा	१०-२६

विशेष—श्लोकों के नीचे हिन्दी अर्थ भी है । अध्याय के अन्त में पृष्ठ १२ पर—

इति श्री महाराजि नकुल पंडित विरचिते अश्व सुभ विरचित प्रथमोऽध्यायः ॥

२. फुटकर दोहे	कबीर	हिन्दी

६१००. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० १४ । आ० ७१×५१ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण ।
वे० सं० १५७० ।

विशेष—कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

६१०१. गुटका सं० ५७। पत्र सं० ७५। आ० ६×४३ इ०। भाषा—संस्कृत। ले० काल० सं० १८४७
जेठ सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १५७१।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. वृन्दसतसई	वृन्द	हिन्दी	७१२ रोहे हैं।
२. प्रश्नावलि कवित्त	वैद्य नन्दलाल	"	
३. कवित्त चुगलखोर का	शिवलाल	"	

६१०२. गुटका सं० ५८। पत्र सं० ८२। आ० ५×५३ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल X।
पूर्णा। वे० सं० १५७२।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१०३. गुटका सं० ५९। पत्र सं० ९-९६। आ० ७×४३ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले० काल X।
अपूर्णा। वे० सं० १५७३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१०४. गुटका सं० ६०। पत्र सं० १८०। आ० ७×५३ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल X।
अपूर्णा। वे० सं० १५७४।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१. मधुतत्त्वार्थसूत्र	X	संस्कृत	
२. आराधना प्रतिबोधसार	X	हिन्दी	५५ पद्य हैं

६१०५. गुटका सं० ६१। पत्र सं० ९७। आ० ६×४ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं०
१८१४ भाद्रपद सुदी ६। पूर्णा। वे० सं० १५७५।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१. बारहखड़ी	X	हिन्दी	३६
२. विनती—पार्श्व जिनेश्वर वंदिये रे साहित्य मुक्ति तस्य दातार रे	कुशलविजय	"	४०
३. पद—किये आराधना तेरी हिये आनन्द व्यापत है	नवलराम	"	"
४. पद—हेली देहली कित आय छै नेम क'वार	टीलाराम	"	"

५.	पद—नेमकंवार रो बाटडी हो रागी राजुल जोवे खडी हो खडी	सुशालचंद	हिन्दी	४१
६.	पद—पल नहीं लगदी भाय में पल नहीं लगदी पीया मो मन भावे नेम पिया	बलतराम	"	४३
७.	पद—जिनजी को दरसण नित करां हो सुमति सहेल्यो	रूपचन्द	"	"
८.	पद—तुम नेम का भजन कर जिसते तेरा भला हो	बलतराम	"	४४
९.	विनती	अजैराज	"	४८
१०.	हमीररासो	×	हिन्दी	अपूर्ण ४९
११.	पद—भोग दुखदाई तगभवि	जगताराम	"	५०
१२.	पद	नवलराम	हिन्दी	५१
१३.	" (मङ्गल प्रभाती)	विनोदीलाल	"	५२
१४.	रेखाचित्र	आदिनाथ, चन्द्रप्रभ, वर्द्धमान एवं पार्श्वनाथ	"	५७-५८
१५.	वसंतपूजा	अजैराज	"	५९-६१

विशेष—अन्तिम पद्य निम्न प्रकार हैं :—

आवेरि सहर सुहावगू रति बसंत कूँ पाय ।

अजैराज करि जोरि कौ गावै हो मन बच काय ॥

६१०६. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १२० । आ० ६×५ ३/४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १९३८ पूर्ण । वे० सं० १५७६ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६१०७. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १७ । आ० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५८१ ।

विशेष—देवाग्रह्य कृत पद्य एवं भूधरदास कृत गुह्यों की स्तुति है ।

६१०८. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ४० । आ० ८ १/४×४ ३/४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल १८६७ । अपूर्ण । वे० सं० १५८० ।

६१०६. गुटका सं० ६५। पत्र सं० १७३। आ० ६३×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।
वे० सं० १५८१।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र संग्रह है।

६११०. गुटका सं० ६६। पत्र सं० ३२। आ० ६३×४३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।
अपूर्ण। वे० सं० १५८२।

विशेष—पंचमेरु पूजा, अष्टाह्निका पूजा तथा सोलहकारण एवं दशलक्षण पूजाएँ हैं।

६१११. गुटका सं० ६७। पत्र सं० १८५। आ० ८३×७ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल
सं० १७४३। पूर्ण। वे० सं० १५८६।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६११२. गुटका सं० ६८। पत्र सं० ११५। आ० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।
वे० सं० १५८८।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है।

६११३. गुटका सं० ६९। पत्र सं० १५१। आ० ४३×४ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण।
वे० सं० १५८८।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है।

६११४. गुटका सं० ७०। पत्र सं० १७-५०। आ० ७३×५ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×।
पूर्ण। वे० सं० १५८९।

विशेष—नित्य पूजा पाठों का संग्रह है।

६११५. गुटका सं० ७१। पत्र सं० १८। आ० ५×५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।
पूर्ण। वे० सं० १५९०।

विशेष—चौबीस ठाणा चर्चा है।

६११६. गुटका सं० ७२। पत्र सं० ३८। आ० ४३×३ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×।
पूर्ण। वे० सं० १५९१।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह एवं श्रीराम स्तुति आदि है।

६११७. गुटका सं० ७३। पत्र सं० ३-५०। आ० ६३×५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल
। अपूर्ण। वे० सं० १५९५।

६११८. गुटका सं० ७४ । पत्र सं० ६ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।
वे० सं० १५६६ ।

विशेष—मनोहर एवं पुनी कवि के पद हैं ।

६११९. गुटका सं० ७५ । पत्र सं० १० । आ० ६×५३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।
वे० सं० १५६८ ।

विशेष—गङ्गाकेवली भाषा एवं बार्सा परीषद् वर्णित है ।

६१२०. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० २६ । आ० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय सिद्धान्त ।
ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५६९ ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र है ।

६१२१. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० ६-४२ । आ० ६×४३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।
वे० सं० १६०० ।

विशेष—सम्यक् दृष्टि की भावना का वर्णित है ।

६१२२. गुटका सं० ७८ । पत्र सं० ७-२१ । आ० ६×४३ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० १६०१ ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्त्वार्थ सूत्र है ।

६१२३. गुटका सं० ७९ । पत्र सं० ३० । आ० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० १६०२ । सामान्य पूजा पाठ हैं ।

६१२४. गुटका सं० ८० । पत्र सं० ३४ । आ० ४×३३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० १६०५ ।

विशेष—देवाग्रह, मूधरदास, जगराम एवं बुधजन के पदों का संग्रह है ।

६१२५. गुटका सं० ८१ । पत्र सं० २-२० । आ० ४×३ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—विनती संग्रह ।
ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०६ ।

६१२६. गुटका सं० ८२ । पत्र सं० २८ । आ० ४×३ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा स्तोत्र । ले०
काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०७ ।

६१२७. गुटका सं० ८३ । पत्र सं० २-२० । आ० ६४×५३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल ×
अपूर्ण । वे० सं० १६०८ ।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र एवं पदों का संग्रह है ।

६१२८. गुटका सं० ८५ । पत्र सं० १५ । आ० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण ।
वे० सं० १६११ ।

विशेष—देवाग्रहा कृत पदों का संग्रह है ।

६१२९. गुटका सं० ८६ । पत्र सं० ४० । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १७२३ ।
पूर्ण । वे० सं० १६५६ ।

विशेष—जयराज भूषण वल्लभा के पुत्र तथा मेजीराज कृत कलागुप्तमन्दिर तोषभाषा है ।

६१३०. गुटका सं० ८७ । पत्र सं० ७०-१२८ । आ० ६×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८६४
अपूर्ण । वे० सं० १६५७ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

६१३१. गुटका सं० ८८ । पत्र सं० २८ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल X । अपूर्ण
वे० सं० १६५८ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है ।

६१३२. गुटका सं० ८९ । पत्र सं० १६ । आ० ७×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण ।
वे० सं० १६५९ ।

विशेष—भगवानदास कृत आचार्य शान्तिसागर की पूजा है ।

६१३३. गुटका सं० ९० । पत्र सं० २६ । आ० ६३×७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १९१८ ।
पूर्ण । वे० सं० १६६० ।

विशेष—स्वरूपचन्द कृत सिद्ध क्षेत्रों की पूजाओं का संग्रह है ।

६१३४. गुटका सं० ९१ । पत्र सं० ७२ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९१४
पूर्ण । वे० सं० १६६१ ।

विशेष—प्रारम्भ के १६ पत्रों पर १ से ५० तक पहाड़े हैं जिनके ऊपर नीति तथा शृङ्गार रस के ४७
दोहे हैं । गिरधर के कवित्त तथा क्षतिहर देव की कथा आदि हैं ।

६१३५. गुटका सं० ९२ । पत्र सं० २० । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण ।
वे० सं० १६६२ ।

विशेष—कौतुक रत्नमञ्जूषा (मंत्र सं०) तथा ज्योतिष सम्बन्धी साहित्य है ।

६१३६. गुटका सं० ९३ । पत्र सं० ३७ । आ० ५×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण ।
वे० सं० १६६३ ।

विशेष—संधीजी श्रीदेवजी के पठनार्थ लिखा गया था। स्तोत्रों का संग्रह है।

६१३७. गुटका सं० ६४। पत्र सं० ८-११। आ० ६४५ इ०। भाषा गुजराती। ले० काल X।
अपूर्ण। वे० सं० १६६४।

विशेष—बल्लभकृत रत्नमणि विवाह वर्णन है।

६१३८. गुटका सं० ६५। पत्र सं० ४२। आ० ४४३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल X।
पूर्ण। वे० सं० १६६७।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र एवं पद (चारु रथ की वज्रत बधाई जी सब जनमन भानन्द दाई) है। चारों
रथों का मेला सं० १६१७ कागुण बुदी १२ को जयपुर हुआ था।

६१३९. गुटका सं० ६६। पत्र सं० ७६। आ० ६६५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल X।
पूर्ण। वे० सं० १६६८।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

६१४०. गुटका सं० ६७। पत्र सं० ६०। आ० ६१४ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल X।
पूर्ण। वे० सं० १६६९।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है।

६१४१. गुटका सं० ६८। पत्र सं० ५८। आ० ७४७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल X। अपूर्ण।
वे० सं० १६७०।

विशेष—सुभाषित दोहे तथा सर्वथे, लक्षणा तथा नीतिग्रन्थ एवं शनिश्चरदेव की कथा है।

६१४२. गुटका सं० ६९। पत्र सं० २-१२। आ० ६४५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल X।
अपूर्ण। वे० सं० १६७१।

विशेष—मन्त्र मन्त्रविधि, आयुर्वेदिक दुसले, खण्डेलवालों के ८४ गोत्र, तथा दि० जैनों की ७२ जातियां
जिसमें से ३२ के नाम दिये हैं तथा चाणक्य नीति भावि है। शुभाचारीराम की पुस्तक से चाकसू में सं० १७२७ में लिखा
गया।

६१४३. गुटका सं० १००। पत्र सं० ५४। आ० ६४४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल X।
अपूर्ण। वे० सं० १६७२।

विशेष—बनारसीदास कृत समयसार नाटक है। ५४ से आगे पत्र खाली हैं।

६१४४. गुटका सं० १०१। पत्र सं० ८-२५। आ० ६४४ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले०
काल सं० १८५२। अपूर्ण। वे० सं० १६७३।

विशेष—स्तोत्र संस्कृत एवं हिन्दी पाठ हैं।

६१४५. गुटका सं० १०२ । पत्र सं० ३३ । आ० ७×७ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल । अपूर्ण । वे० सं० १६७४ ।

विशेष—बारहखड़ी (सूरत), नरक दोहा (भूषर), तत्त्वार्थसूत्र (उमास्वामि) तथा फुटकर सबैया हैं ।

६१४६. गुटका सं० १०३ । पत्र सं० १६ । आ० ५×४ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७५ ।

विशेष—विषाधहार, निर्वाणकाण्ड तथा भक्तामरस्तोत्र एवं परीषद् वर्णन है ।

६१४७. गुटका सं० १०४ । पत्र सं० ३८ । आ० ६×५ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७६ ।

विशेष—पञ्चपरमेष्ठीगुण, बारहभावना, बाईस परिषद्, सोलहकारण भावना आदि हैं ।

६१४८. गुटका सं० १०५ । पत्र सं० ११-४७ । आ० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७७ ।

विशेष—स्वरोदय के पाठ है ।

६१४९. गुटका सं० १०६ । पत्र सं० ३६ । आ० ७×३ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७८ ।

विशेष—बारह भावना, पंचमंगल तथा दशलक्षण पूजा हैं ।

६१५०. गुटका सं० १०७ । पत्र सं० ८ । आ० ७×५ । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७९ ।

विशेष—सम्पेदशिखरमहात्म्य, निर्वाणकाण्ड (सेखर) फुटकर रत्न एवं नेमिनाथ के दश भव हैं ।

६१५१. गुटका सं० १०८ । पत्र सं० २-४ । आ० ७×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८० ।

विशेष—देवाब्रह्मा कृत कलियुग की चीनती है ।

६१५२. गुटका सं० १०९ । पत्र सं० ६६ । आ० ६×६ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८१ ।

विशेष—१ से ४ तथा ३४ से ५२ पत्र नहीं हैं । निम्न पाठ हैं:—

१. हरजी के दोहा × हिन्दी ।

विशेष—७६ से २१४, ४४७ से ५५१ दोहे तक हैं मगरे नहीं हैं ।

हरजी रसना सो कहैं, ऐसी रस न ओर ।

तिसना तु पीवत नहीं, फिर पीहै किहि ओर ॥ ६३ ॥

हरजी हरजी जो कहै रसना बारंवार ।

पिस तजि मन हूँ क्यों न हूँ जमन ताहि तिहि बार ॥ १६४ ॥

२. पुरन-स्त्री संवाद	रामचन्द	हिन्दी	१२ पद्य हैं ।
३. फुटकर कवित्त (शृंगार रस)	×	"	४ कवित्त है ।
४. दिल्ली राज्य का ब्योरा	×	"	

विशेष—बीहान राज्य तक वर्णन दिया है ।

५. आधाजीर्ण के मंत्र य यन्त्र हैं ।

६१५३. गुटका सं० ११० । पत्र सं० ६५ । आ० ७×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८२ ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड, भक्तामरस्तोत्र, तत्त्वार्थमूत्र, एकीभात्रस्तोत्र आदि पाठ हैं ।

६१५४. गुटका सं० १११ । पत्र सं० ३८ । आ० ६×४ । भाषा हिन्दी । विषय—संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८३ ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड-सेवग पद संग्रह—भूषरदास, जोधा, मनोहर, सेवग, पद—महेन्द्रकीर्ति (ऐसा देव जिनंद है सेवो भवि प्राणी) तथा चौरासी गोत्रोत्पत्ति वर्णन आदि पाठ हैं ।

६१५५. गुटका सं० ११२ । पत्र सं० ६१ । आ० ५×६ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८४ ।

विशेष—जैनेतर स्तोत्रों का संग्रह है । गुटका पेमसिंह भाटी का लिखा हुआ है ।

६१५६. गुटका सं० ११३ । पत्र सं० १३६ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । ले० काल × । १८८३ । पूर्ण । वे० सं० १६८५ ।

विशेष—२० का १०००० का, १५ का २० का यंत्र, दोहे, पाशा केवली, भक्तामरस्तोत्र, पद संग्रह तथा राजस्थानी में शृंगार के दोहे हैं ।

६१५७. गुटका सं० ११४ । पत्र सं० १२३ । आ० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—अथर्व परीक्षा । ले० काल × । १८०४ अष्टादश तुरी ६ । पूर्ण । वे० सं० १६८६ ।

विशेष—पुस्तक ठाकुर हमीरसिंह गिलवाडी वालों की है खुशालचन्द ने पाशटा में प्रतिलिपि की थी । गुटका सजिल्द है ।

६१५८. गुटका सं० ११५ । पत्र सं० ३२ । आ० ६१×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० ११५ ।

विशेष—आधुनिक नुसखे हैं ।

६१५९. गुटका सं० ११६ । पत्र सं० ७७ । आ० ८×६ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।
वे० सं० १७०२ ।

विशेष—गुटका राजस्थान है । खण्डेलवालों के ८४ गोश, विभिन्न कवियों के पद, तथा दोवारा प्रभयचन्द्रजी के पुत्र आनन्दीलाल की सं० १९१९ की जन्म पथी तथा आधुनिक नुसखे हैं ।

६१६०. गुटका सं० ११७ । पत्र सं० ६१ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७०३ ।

विशेष—नित्य नियम पूजा संग्रह है ।

६१६१. गुटका सं० ११८ । पत्र सं० ७६ । आ० ८×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० १७०५ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं स्तोत्र संग्रह है ।

६१६२. गुटका सं० ११९ । पत्र सं० २४० । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८४१
अपूर्ण । वे० सं० १७११ ।

विशेष—भागवत, गीता हिन्दी पद्य टीका तथा नासिकेतोपाख्यान हिन्दी पद्य में हैं दोनों ही अपूर्ण हैं ।

६१६३. गुटका सं० १२० । पत्र सं० ३२-१२८ । आ० ४×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० १७१२ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं —

१. नवपदपूजा	देवचन्द्र	हिन्दी	अपूर्ण	३२-४३
२. अष्टप्रकारीपूजा	"	"		४४-५०
३. सत्तरभेदी पूजा	साधुकीर्ति	"	२० सं० १६७५	५०-६५
४. पदसंग्रह	×	"		

६१६४. गुटका सं० १२१ । पत्र सं० ६-१२२ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल
× । अपूर्ण । वे० सं० १७१३ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है —

१. गुरुजयमाला	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	१३
२. नन्दीश्वरपूजा	मुनि सकलकीर्ति	संस्कृत	३८
३. सरस्वतीस्तुति	आशाधर	"	५२
४. देवशास्त्रगुरुपूजा	"	"	६८
५. गणेशरत्नमय पूजा	"	"	१-२-११२
६. आरती पंचपरमेष्ठी	पं० चिमना	हिन्दी	११४

ग्रन्थ में लेखक प्रशस्ति दी है। भट्टारकों का विवरण है। सरस्वती गच्छ बलात्कार गरा भूल संघ के विशाल कीर्ति देव के पट्ट में भट्टारक शांतिकीर्ति ने नागपुर (नागौर) नगर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

६१६५. गुटका सं० १२२। पत्र सं० २८-१२६। आ० ५३×५३ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी।

ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १७१४।

विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है।

६१६६. गुटका सं० १२३। पत्र सं० ६-४६। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल X।

अपूर्ण। वे० सं० १७१५।

विशेष—विभिन्न कवियों ने हिन्दी पदों का संग्रह है।

६१६७। गुटका सं० १२४। पत्र सं० २५-७०। आ० ४×५ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल X।

अपूर्ण। वे० सं० १७१६।

विशेष—विनती संग्रह है।

६१६८ गुटका सं० १२५। पत्र सं० २-४५। भाषा—संस्कृत। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १७१७।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है।

६१६९. गुटका सं० १२६। पत्र सं० ३६-१८२। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल X।

अपूर्ण। वे० सं० १७१८।

विशेष—भूधरदास कृत पार्श्वनाथ पुराण है।

६१७०. गुटका सं० १२७। पत्र सं० ३६-२४६। आ० ८×४ इ०। भाषा—गुजराती। लिपि—

हिन्दी। विषय—वधा। २० काल सं० १७८३। ले० काल सं० १८०५। अपूर्ण। वे० सं० १७१९।

विशेष—मोहन विजय कृत खन्दना चरित्र है।

६१७१. गुटका सं० १२८ । पत्र सं० ३१-६२ । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७२० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६१७२. गुटका सं० १२९ । पत्र सं० १२ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० १७२१ ।

विशेष—भक्तामर भाषा एवं चौबीसी स्तवन आदि है ।

६१७३. गुटका सं० १३० । पत्र सं० ५-१६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी पद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७२२ ।

रसकौतुक राजसभारंजन ३२ से १०० तक पद्य हैं ।

अन्तिम— कंता प्रेम समुद्र हैं माहक चतुर गुजान ।

राजसभा रंजन यहै, मन हित प्रीति निदान ॥१॥

इति श्रीरसकौतुक राजसभारंजन समस्या प्रबन्ध प्रथम भाग संदूरित ।

६१७४. गुटका सं० १३१ । पत्र सं० ६-४१ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १८६१ अपूर्ण । वे० सं० १७२३ ।

विशेष—भवानी सहस्रनाम एवं कवच है ।

६१७५. गुटका सं० १३२ । पत्र सं० ३-१६० । आ० १०×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७८७ । अपूर्ण । वे० सं० १७२४ ।

विशेष—हनुमन्त कथा (ब्र० रायमल्ल) घंटाकरण मंत्र, त्रिनखी, वशावलि, (भगवान महावीर से लेकर सं० १८२२ सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारक तक) आदि पाठ हैं ।

६१७६. गुटका सं० १३३ । पत्र सं० ५२ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० १७१५ ।

विशेष—समयसार नाटक एवं सिन्दूर प्रकरण दोनों के ही अपूर्ण पाठ है ।

६१७७. गुटका सं० १३४ । पत्र सं० १६ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० १७२६ ।

विशेष—सामान्य पाठ संग्रह है ।

६१७८. गुटका सं० १३५ । पत्र सं० ४६ । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८१८ । अपूर्ण । वे० सं० १७२८ ।

१. पद— राखो हो बुजराज लाज मेरी	सूरदास	हिन्दी
२. " महिबो बिसगि पदो सोइ कोउ काहुन	अनूपदास	"
३. पद—राजा एक पंडित पोली तुहारी	सूरदास	हिन्दी
४. पद—मेरो मुखनीकी अक तेरो मुख थारी ०	चंद	"
५. पद—अब मैं हरिरस चाखा लागी भक्ति खुमारी ०	कवीर	"
६. पद—बादि गये दिम साहिब बिना सतगुरु चरण सनेह बिना	"	"
७. पद—जा दिन मन पंछी उडि जी है	"	"

फुटकर मंत्र, श्लोकाधियों के तुल्य आदि हैं ।

६१७६. गुटका सं० १३६ । पत्र सं० ५-१६ । आ० ७×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । ले० काल १७८४ । अपूर्ण । वे० सं० १७५५ ।

विशेष—वल्लराम, देवान्नह्य, चैतमुख आदि के पदों का संग्रह है । १० पत्र से आगे खाली हैं ।

६१८०. गुटका सं० १३७ । पत्र सं० ८८ । आ० ६१×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १७५६ ।

विशेष—बनारसोबिलास के कुछ पाठ एवं शिलाराम, दीनाराम, जिनदास, सेवग, हरीसिंह, हरषचन्द, लालचन्द, गरीबदास, भूधर एवं किसनगुलाब के पदों का संग्रह है ।

६१८१. गुटका सं० १३८ । पत्र सं० १२१ । आ० ६३×५ इ० । वे० सं० २०४३ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न हैं—

१. बीस विरहमान पूजा	नरेन्द्रकीर्ति	हिन्दी संस्कृत
२. नेमिनाथ पूजा	कुदलयचन्द	संस्कृत
३. क्षीरोदानी पूजा	अभयचन्द	"
४. हेमकारी	विश्वभूषण	हिन्दी
५. क्षेत्रपालपूजा	मुमतिकीर्ति	"
६. शिखर विलास भाषा	धनराज	" २० काल सं० १८४८

६१८२. गुटका सं० १३९ । पत्र सं० ३-४६ । आ० १०३×७ इ० । भाषा—हिन्दी ५० । ले० काल सं० १८५५ । अपूर्ण वे० सं० २०४० ।

विशेष—जातकाभरण ज्योतिष का ग्रन्थ है इसका दूसरा नाम जातकार्लकार भी है । भैरूलाल जोशी ने प्रतिलिपि की थी ।

६१८३. गुटका सं० १४० । पत्र सं० ४-४३ । आ० १०३×७ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १६०६ द्वि० भादवा सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० २०४५ ।

विशेष—अमृतचन्द सूरि कृत समयसार वृत्ति है ।

६१८४. गुटका सं० १४१ । पत्र सं० ३-१०६ । आ० १०३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८५३ अषाढ सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० २०४६ ।

विशेष—नयनसुख कृत वैद्यमनोत्सव (२० सं० १६४६) तथा बनारसीविलास भादि के पाठ हैं ।

६१८५. गुटका सं० १४२ । पत्र सं० ५-६३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०४७ ।

विशेष—द्यानतराय कृत चर्चाशतक हिन्दी टप्पा टीका सहित है ।

६१८६. गुटका सं० १४३ । पत्र सं० ११-१७१ । आ० ७३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १६१५ । अपूर्ण । वे० सं० २०४८ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

संवत् १९१५ वर्षे क्वार सुदी ५ दिने श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीआदिनायचंद्रपालयेनु-
ग्रामी शुभस्थाने भ० श्रीसकलकीर्ति, भ० भुवनकीर्ति, भ० ज्ञानभूषण, भ० विजयकीर्ति, भ० शुभचन्द्र, आ० गुरुदेवेश्वर
आ० श्रीरत्नकीर्ति आ० यशःकीर्ति गुणचन्द्र ।

६१८७. गुटका सं० १४४ । पत्र सं० ४६ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । ले० काल सं० १६२० । पूर्ण । वे० सं० २०४९ ।

विशेष—विभिन्न पाठों का संग्रह है ।

१. मुक्तावलि-कथा	भारमल्ल	हिन्दी	२० काल सं० १७८८
२. रोहिणीव्रत-कथा	×	"	
३. पुष्पाञ्जलि-व्रत-कथा	ललितकीर्ति	"	
४. दशलक्षणा-व्रत-कथा	ब० ज्ञानसागर	"	
५. अष्टाह्निका-कथा	विजयकीर्ति	"	
६. सङ्कटचौथ-व्रत-कथा	देवेन्द्रभूषण [भ० विश्वभूषण के शिष्य]	"	
७. आकाशपञ्चमी-कथा	पांडे हरिकृष्ण	"	२० काल सं० १७०६
८. निर्दोषसप्तमी-कथा	"	"	" " १७७१

९. निशल्याष्टमीकथा	पाण्डे हरिकृष्ण	हिन्दी
१०. सुगन्धीदशमीकथा	हेमराज	"
११. अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	पाण्डे हरिकृष्ण	"
१२. बारहसौ चौतीसव्रतकथा	जिनेन्द्रभूषण	"

६१८८. गुटका सं० १४५। पत्र सं० २१२। आ० ६×६३ इ०। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० २०५०।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं।

१. विद्यावली (पट्टावलि)	X	संस्कृत	७
२. सोलहकारणपूजा	ब० जिनदास	"	६१
३. दशलक्षण जयमाल	सुमतिसागर [अभयनन्दि के शिष्य]	हिन्दी	८०
४. दशलक्षण जयमाल	सोमसेन	संस्कृत	६०
५. मेरूपूजा	"	"	
६. चौरासी ज्योतिमाला	ब० जिनदास	हिन्दी	१४७

विशेष—इन्हीं की एक चौरासी ज्योतिमाला और है।

७. आदिनाथपूजा	ब० शांतिदास	"	१५०
८. अनन्तनाथपूजा	"	"	१६६
९. सप्तशक्तिपूजा	ब० देवेन्द्रकोटि	संस्कृत	१७६
१०. ज्येष्ठजिनवरभोटा	श्रुतसागर	"	१७८
११. ज्येष्ठजिनवर लाहान	ब० जिनदास	संस्कृत	१७८
१२. पञ्चक्षेत्रपालपूजा	सोमसेन	हिन्दी	१८१
१३. शीतलनाथपूजा	धर्मभूषण	"	२१०
१४. व्रतजयमाला	सुमतिसागर	हिन्दी	२१३
१५. आदित्यवारकथा	पं० गङ्गादास [धर्मचन्द का शिष्य]	"	२१६

६१८९. गुटका सं० १४६। पत्र सं० ११-८८। आ० ८३×४३ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १७०१। अपूर्ण। वे० सं० २०५१।

विशेष—बनारसीविलास एवं नाममाला आदि के पाठों का संग्रह है।

६१६०. गुटका सं० १४७। पत्र सं० ३०-६३। आ० ४५४^३ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल X।
अपूर्ण। वे० सं० २१८६।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है।

६१६१. गुटका सं० १४८। पत्र सं० ३५। आ० ८५१० इ०। ले० काल सं० १८४३। पूर्ण। वे० सं० २१८७।

१. पञ्चकल्याणक

हरिचन्द्र

हिन्दी

१-२०

२० काल सं० १८३३ ज्येष्ठ सुदी ७

२. श्रवणक्रियाप्रतोषागम

देवेन्द्रकीर्ति

संस्कृत

विशेष—नीमैडा में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

३. पट्टावलि

X

हिन्दी

३५

६१६२. गुटका सं० १४९। पत्र सं० २१। आ० ९५६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। ले० काल सं० १८२६ ज्येष्ठ सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० २१९१।

विशेष—गिरनार यात्रा का वर्णन है। चांदनगांव के महावीर का भी उल्लेख है।

६१६३. गुटका सं० १५०। पत्र सं० ३४६। आ० ८५६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल १७१७। पूर्ण। वे० सं० २१९२।

विशेष—पूजा पाठ एवं दिल्ली की बादशाहत का झोरा है।

६१६४. गुटका सं० १५१। पत्र सं० ६२। आ० ९५६ इ०। भाषा-प्राकृत-हिन्दी। ले० काल X।
अपूर्ण। वे० सं० २१९५।

विशेष—मार्गणा चौबीस ठाणा चर्चा तथा भक्तामरस्तोत्र आदि हैं।

६१६५. गुटका सं० १५२। पत्र सं० ४०। आ० ७१५^३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल X।
अपूर्ण। वे० सं० २१९६।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६१६६. गुटका सं० १५३। पत्र सं० २७-२९१। आ० ६१५^३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २१९७।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६१६७. गुटका सं० १५४। पत्र सं० २७-१४७। आ० ८५७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल X।
अपूर्ण। वे० सं० २१९८।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६१६८. गुटका सं० १५४ क। पत्र सं० ३२। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २१६६।

विशेष—समवशरण पूजा है।

६१६९. गुटका सं० १५५। पत्र सं० ५७-१५२। आ० ७३X६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २२००।

विशेष—नासिकेत पुराण हिन्दी गद्य तथा गोरख संवाद हिन्दी पद्य में है।

६२००. गुटका सं० १५६। पत्र सं० १८-३६। आ० ७३X६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २२०१।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र आदि है।

६२०१. गुटका सं० १५७। पत्र सं० १०। आ० ७३X६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २२०२।

विशेष—आयुर्वेदिक मुसखे हैं।

६२०२. गुटका सं० १५८। पत्र सं० २-३०। आ० ७X५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८२७। अपूर्ण। वे० सं० २२०३।

विशेष—मंत्रों एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

६२०३. गुटका सं० १५९। पत्र सं० ६३। आ० ७३X६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० २२०४।

विशेष—बख्शवाह बंश के राजाओं की वंशावली, १०० राजाओं के नाम दिये हैं। सं० १७५६ तक वंशावली है। पत्र ७ पर राजा पृथ्वीसिंह का गद्दी पर सं० १८२४ में बैठना लिखा है।

२. दिल्ली नगर की बसापत तथा बादशाहत का व्योरा है किन बादशाह ने कितने वर्ष, महीने, दिन तथा बड़ी राज्य किया इसका वृत्तांत है।

३. बारहमासा, प्राणीका गीत, जिनवर स्तुति, शृङ्गार के सबैवा आदि है।

६२०४. गुटका सं० १६०। पत्र सं० ५६। आ० ६X४३ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० २२०५।

विशेष—बनारसी विलास के कुछ पाठ तथा भक्तामर स्तोत्र आदि पाठ हैं।

६२०५. गुटका सं० १६१ । पत्र सं० ३५ । आ० ७×६ इ० । भाषा—प्राकृत हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० २२०६ ।

विशेष—आवक प्रतिक्रमण हिन्दी अर्थ सहित है । हिन्दी पर गुजराती का प्रभाव है ।

१ से ५ तक की गिनती के यंत्र हैं । इसके बीस यंत्र हैं १ से ६ तक की गिनती के ३६ खानों का यंत्र
है । इसके १२० पंज हैं ।

६२०६. गुटका सं० १६२ । पत्र सं० १६-४६ । आ० ६३×७ १/२ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पद ।
ले० काल सं० १६५५ । अपूर्ण । वे० सं० २२०८ ।

विशेष—देवग, जगन्नाथ, नवल, बलदेव, माणिक, कलराज, बनारसीदास, खुशालचन्द, बुधजन, न्यामत
आदि कवियों के विभिन्न राग रागिनियों में पद हैं ।

६२०७. गुटका सं० १६३ । पत्र सं० ११ । आ० ५ ३/४×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० २२०७ ।

विशेष—नित्य नियम पूजा पाठ है ।

६२०८. गुटका सं० १६४ । पत्र सं० ७७ । आ० ६ ३/४×६ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० २२०९ ।

विशेष—विभिन्न स्तोत्रों का संग्रह है ।

६२०९. गुटका सं० १६५ । पत्र सं० ५२ । आ० ६ ३/४×४ ३/४ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । ले०
काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१० ।

विशेष—नवल, जगतराम, उदयराम, गुनपूरण, चैनविजय, रेखराज, जोधराज, चैनमुख, धर्मपाल,
भगतराम, भूधर, साहिबराम, विनोदीलाल आदि कवियों के विभिन्न राग रागिनियों में पद हैं । पुस्तक गोमतीलालजी
ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

६२१०. गुटका सं० १६६ । पत्र सं० २४ । आ० ६ ३/४×४ ३/४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० २२११ ।

१. अठारह नाते का चौढालिया	लोहट	हिन्दी	१-७
२. मुहूर्तमुक्तावलीभाषा	शङ्कराचार्य	"	१-२३

६२११. गुटका सं० १६७ । पत्र सं० १४ । आ० ६×४ ३/४ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र ।
ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१२ ।

विशेष—पद्मावतीयन्त्र तथा बुद्ध में जीत का यन्त्र, सीचा जाने का यन्त्र, नजर तथा वशीकरण यन्त्र तथा महालक्ष्मीसप्तमाधिकस्तोत्र हैं ।

६२१२. गुटका सं० १६८ । पत्र सं० १२-३६ । आ० ७३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २२१३ ।

विशेष—धृन्द् सतसई है ।

६२१३. गुटका सं० १६९ । पत्र सं० ४० । आ० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २२१४ ।

विशेष—भक्तामर, कल्याणमन्दिर आदि स्तोत्रों का संग्रह है ।

६२१४. गुटका सं० १७० । पत्र सं० ६६ । आ० ८×५३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २२१५ ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, रसिकप्रिया (केशव) एवं रत्नकोश हैं ।

६२१५. गुटका सं० १७१ । पत्र सं० ३-८१ । आ० ५३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २२१६ ।

विशेष—अनंतराम के पदों का संग्रह है । एक पद हरीसिंह का भी है ।

६२१६. गुटका सं० १७२ । पत्र सं० ५१ । आ० ५×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २२१७ ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे एवं रति रहस्य है ।

अवशिष्ट-साहित्य

६२१७. अष्टोत्तरीयनात्रविधि..... । पत्र सं० १ । आ० १०×५३ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । २० काल X । ले० का० X । पूर्ण । वे० सं० २६१ । अ भण्डार ।

६२१८. जन्माष्टमीपूजन..... । पत्र सं० ७ । आ० ११३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल X । ले० काल X । वे० सं० ११५७ । अ भण्डार ।

६२१९. तुलसीविवाह..... । पत्र सं० ५ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-विधिविधान । २० काल X । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २२२२ । अ भण्डार ।

६२२०. परमाणुनामविधि (नाप तोल परिमाण)..... । पत्र सं० २ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-नापने तथा तोलने की विधि । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २१३७ । अ भण्डार ।

६२२१. प्रतिष्ठापाठविधि..... । पत्र सं० २० । आ० ८३×६३ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा विधि । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७७२ । अ भण्डार ।

६२२२. प्रायश्चित्तचूलिकाटीका—नन्दिगुरु । पत्र सं० २५ । आ० ८×५ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—आचारशास्त्र । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५२८ । क भण्डार ।

विशेष—दादा दुलीचन्द ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५२९) भी है ।

६२२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०५ । ले० काल X । वे० सं० ६५ । घ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम 'प्रायश्चित्त विनिश्चयवृत्ति' दिया है ।

६२२४. भक्तिरत्नाकर—धनमाली भट्ट । पत्र सं० १६ । आ० ११३×५ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तीव्र । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २२६१ । अ भण्डार ।

६२२५. भद्रबाहुसंहिता—भट्टबाहु । पत्र सं० १७ । आ० ११३×४३ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ५१ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६६) भी है ।

६२२६. विधि विधान..... । पत्र सं० ७२-१५३ । आ० १२×५ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा विधान । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १०८३ । अ भण्डार ।

६२२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल X । वे० सं० ६६१ । क भण्डार ।

६२२८. समयशरणपूजा—पन्नालाल दूनीवाल । पत्र सं० ८५ । आ० १२३×८ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १६२१ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७७५ । क भण्डार ।

६२२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १८२६ भाद्रपद शुक्ला १२ । वे० सं० ७७७ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७७६) भी है ।

६२३०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १६२८ भाद्रपद शुद्ध ३ । वे० सं० २०० । क भण्डार ।

६२३१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३६ । ले० काल X । वे० सं० २७८ । घ भण्डार ।

६२३२. समुख्यचौबीसतीर्थक्षरपूजा..... । पत्र सं० २ । आ० ११३×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २०५० । अ भण्डार ।



ग्रन्थानुक्रमसूची

अ

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अकबर और बल वार्ता	—	(हि०)	६८१	अक्षयदशमीकथा	ललितकीर्ति	(सं०)	६६५
अकलङ्कचरित्र	—	(हि० ग०)	१६०	अक्षयदशमीविधान	—	(सं०)	५३८
अकलङ्कचरित्र	नाथूराम	(हि०)	१६०	अक्षयनिधिपूजा	—	(सं०)	४५४
अकलङ्कदेव कथा	—	(सं०)	२१३			५०६, ५३६, ७६३	
अकलङ्कताटक	मकखनलाल	(हि०)	३१६	अक्षयनिधिपूजा	ज्ञानभूषण	(हि०)	४५४
अकलङ्काष्टक	भट्टाकलङ्क	(सं०)	५७५	अक्षयनिधिमुष्टिकाविधानव्रतकथा	—	(सं०)	२१३
		६३७, ६४६, ७१२		अक्षयनिधिमंडल [मंडलविश्व]	—		५२५
अकलङ्काष्टक	—	(सं०)	३७६	अक्षयनिधिविधान	—	(सं०)	४५४
अकलङ्काष्टकभाषा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	३७६	अक्षयनिधिविधानकथा	—	(सं०)	२४४
अकलङ्काष्टक	—	(हि०)	७६०	अक्षयनिधिव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४४
अकंपनाचार्यपूजा	—	(हि०)	६८६	अक्षयविधानकथा	—	(सं०)	२४६
अकलमंदवार्ता	—	(हि०)	३२४	अक्षरवावनी	द्यानतराय	(हि०)	१५, ६७६
अकृत्रिमजितचैत्यालयजयमाल	—	(प्रा०)	४५३	अजितपुराण	पंडिताचार्य अरुणमणि	(सं०)	१४२
अकृत्रिमजितचैत्यालय जयमाल	भगवतीदास	(हि०)	६६४	अजितनाथपुराण	विजयसिंह	(प्रा०)	१४२
		७२०		अजितशान्तिजिनस्तोत्र	—	(प्रा०)	७५४
अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	—	(हि०)	७०४, ७४६	अजितशान्तिस्तवन	नन्दिपेरा	(प्रा०)	३७६
अकृत्रिमचैत्यालयपूजा	मनरङ्गलाल	(हि०)	४५४			६८१	
अकृत्रिमचैत्यालयपूजा	—	(सं०)	५१५	अजितशान्तिस्तवन	—	(प्रा० सं०)	३८१
अकृत्रिमचैत्यालय वर्णन	—	(हि०)	७६३	अजितशान्तिस्तवन	—	(सं०)	३७६
अकृत्रिमजितचैत्यालयपूजा	जिनदास	(सं०)	४५३	अजितशान्तिस्तवन	मेरुनन्दन	(हि०)	६१६
अकृत्रिमजितचैत्यालयपूजा	चैनसुख	(हि०)	४५३	अजितशान्तिस्तवन	—	(हि०)	६१६
अकृत्रिमजितचैत्यालयपूजा	लालजीत	(हि०)	४५३	अजितशान्तिस्तवन	—	(सं०)	४२३
अकृत्रिमजितचैत्यालयपूजा	पांडे जिनदास	(सं०)	४५३	अजीर्णमञ्जरी	काशीराज	(सं०)	२६६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अजीर्णमञ्जरी	—	(सं०)	२६३	अनन्तचतुर्दशीकथा	—	(सं०)	२१४
अठारह का मंडल [चित्र]	—		५२५	अनन्तचतुर्दशीकथा	सुनीन्द्रकीर्ति	(प्रा०)	२१४
अठारह का ब्यौरा	—	(सं०)	५४३	अनन्तचतुर्दशीकथा	अ० ज्ञानसागर	(हि०)	२१४
अट्टाईस मूलगुण वर्णन	—	(सं०)	४८	अनन्तचतुर्दशीपूजा	भ० मेरुचन्द्र	(सं०)	६०७
अठारह नाते की कथा	ऋषि लालचन्द्र	(हि०)	२१३	अनन्तचतुर्दशीपूजा	शान्तिदास	(सं०)	४५६
अठारह नाते की कथा	लोहट	(हि०)	६२३, ७७५	अनन्तचतुर्दशीपूजा	—	(सं०)	५५७, ७६३
अठारह नाते का चौदाला	लोहट	(हि०)	७२३ ७२०, ७६५	अनन्तचतुर्दशीपूजा	श्री भूषण	(हि०)	४५६
अठारह नाते का चौदाला	—	(हि०)	७४५	अनन्तचतुर्दशीपूजा	—	(सं० हि०)	४५६
अठारह नाते का ब्यौरा	—	(हि०)	६२३	अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा व पूजा	सुशालचन्द्र	(हि०)	५१६
अठावीसमूलगुणरास	ब० जिनदास	(हि०)	७०७	अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	ललितकीर्ति	(सं०)	६६५
अठोत्तरासनाथविधि	—	(हि०)	६६८	अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	पांडे हरिकृष्ण	(हि०)	७८५
अट्टाई [साद्धाद्वय] द्वीपपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	४५५	अनन्त के अष्टम्य	धर्मचन्द्र	(हि०)	७५७
अट्टाईद्वीप पूजा	डालू राम	(हि०)	४५५	अनन्तजिनपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	(सं०)	४५६
अट्टाईद्वीप पूजा	—	(हि०)	७३०	अनन्तजिनपूजा	—	(हि०)	७५६
अट्टाईद्वीपवर्णन	—	(सं०)	३१६	अनन्तनाथपुराण	गुणभद्राचार्य	(सं०)	१४२
अण्णमिति संधि	हरिश्चन्द्र अग्रवाल	(अप०)	२४३ ६२८, ६४२	अनन्तनाथपूजा	श्री भूषण	(सं०)	४५६
अण्ण का मंडल [चित्र]	—		५२५	अनन्तनाथपूजा	सेवग	(हि०)	४५६
अतिशयशेषपूजा	—	(हि०)	५५३	अनन्तनाथपूजा	—	(सं०)	४५६
अश्चुतसागर	—	(हि०)	२६६	अनन्तनाथपूजा	अ० शान्तिदास	(हि०)	६६०, ७६५
अध्ययन गीत	—	(हि०)	६८०	अनन्तनाथपूजा	—	(हि०)	४५७
अध्यात्मकमन्त्रमार्तण्ड	कवि राजमल्ल	(सं०)	१२६	अनन्तपूजा	—	(सं०)	५१६
अध्यात्मतरङ्गिणी	सोमदेव	(सं०)	६६	अनन्तपूजाप्रतमहात्म्य	—	(सं०)	४५७
अध्यात्मदोहा	रूपचन्द्र	(हि०)	७४६	अनन्तविधानकथा	—	(अप०)	६३३
अध्यात्मपत्र	जयचन्द्र छाबड़ा	(हि०)	६६	अनन्तव्रतकथा	अ० पद्मनन्दि	(सं०)	२१४
अध्यात्मवत्तीसी	बनारसीदास	(हि०)	६६	अनन्तव्रतकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२१४
अध्यात्मबारद्वजड़ी	कवि सुरत	(हि०)	६६	अनन्तव्रतकथा	ललितकीर्ति	(सं०)	६४५
अनगारधर्मसूत	पं० आशाधर	(सं०)	४८	अनन्तव्रतकथा	मदनकीर्ति	(सं०)	२४७
अनन्तगंडीवर्णन [मन्त्र सहित]	—	(सं०)	५७६	अनन्तव्रतकथा	—	(सं०)	२१४
				अनन्तव्रतकथा	—	(अप०)	२४५
				अनन्तव्रतकथा	सुशालचन्द्र	(हि०)	२१४

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अनन्तव्रतपूजा	श्री भूषण	(सं०)	५१५	अनेकार्थमञ्जरी	नन्ददास	(हि०)	२७१ ७६६
अनन्तव्रतपूजा	—	(सं०)	४५७	अनेकार्थशत	भ० हर्षकीर्ति	(सं०)	२७१
		५३६, ६६३, ७२८		अनेकार्थसंग्रह	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२७१
अनन्तव्रतपूजा	भ० विजयकीर्ति	(हि०)	४५७	अनेकार्थसंग्रह [महोपकोश]	—	(सं०)	२७१
अनन्तव्रतपूजा	साहू सेवगराम	(हि०)	४५७	अन्तरायवर्णन	—	(हि०)	५६०
अनन्तव्रतपूजा	—	(हि०)	५१८	अन्तरिक्षपादर्वनाभाष्टक	—	(सं०)	५६०
		५१६, ५८६, ७२८		अन्ययोगव्यवच्छेदकदाविशिका	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	५७३
अनन्तव्रतपूजाविधि	—	(सं०)	४५७	अन्यस्फुट पाठ संग्रह	—	(हि०)	६२७
अनन्तव्रतविधान	मदनकीर्ति	(सं०)	२१४	अपराधसूदनस्तोत्र	शङ्कराचार्य	(सं०)	६६२
अनन्तव्रतरास	ब्र० जिनदास	(हि०)	५६०	अवजदकेवली	—	(सं०)	२७६
अनन्तव्रतोद्यानपूजा	श्री० गुरुचन्द्र	(सं०)	४५७	अभिज्ञान शाकुन्तल	कालिदास	(सं०)	३१६
		५१३, ५३६, ५४०		अभिधानकोश	पुरुषोत्तमदेव	(सं०)	२७१
अनाथारभसि	—	(सं०)	६२७	अभिधानविलाससिन्धुनाममाला	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२७१
अनाथी ऋषि स्वाध्याय	—	(हि० पुत्र०)	३७६	अभिधानरत्नाकर	धर्मचन्द्रगणि	(सं०)	२७२
अनाथानोचोडात्या	खेम	(हि०)	४३५	अभिधानसार	पं० शिवजीलाल	(सं०)	२७२
अनाथीसाध चौडालिया	विमलविजयगणि	(हि०)	६८०	अभिषेक पाठ	—	(सं०)	४५८
अनाथीमुनि सञ्जय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८			५६५, ७६१	
अनाथीमुनि सञ्जय	—	(हि०)	४३५	अभिषेकविधि	लक्ष्मीसेन	(सं०)	४५८
अनादिनिधनस्तोत्र	—	(सं०)	३७६, ६०४	अभिषेकविधि	—	(सं०)	३६८
अनिटकारिका	—	(सं०)	२५७			४५८, ५७०	
अनिटकारिकावचूरि	—	(सं०)	२५७	अभिषेकविधि	—	(हि०)	४५८
अनित्यपञ्चीसी	भगवतीदास	(हि०)	६८६	अमरकोश	अमरसिंह	(सं०)	२७२
अनित्यपञ्चासिका	त्रिभुवनचन्द्र	(हि०)	७५५	अमरकोशटीका	भानुजी दीक्षित	(सं०)	२७२
अनुभवप्रकाश	दीपचन्द्र कासलीवाल	(हि०)	४८	अमरचन्द्रिका	—	(हि०)	३०८
अनुभवविलास	—	(हि०)	५११	अमरुशतक	—	(सं०)	१६०
अनुभवानन्द	—	(हि० ग०)	४८	अमृतधर्मसकाव्य	गुणचन्द्रदेव	(सं०)	४८
अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	सहीरूपणकवि	(सं०)	२७१	अमृतसागर	म० सवाई प्रतापसिंह	(हि०)	२६६
अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	—	(सं०)	२७१	अरहना सञ्जय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८
अनेकार्थनाममाला	नन्दिकवि	(हि०)	७०६	अरहन्तस्तवन	—	(सं०)	३७६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अरिष्टवर्त्ता	—	(सं०)	२७६	अष्टप्रकारीपूजा	देवचन्द्र	(हि०)	७६०
अरिष्टाध्याय	—	(प्रा०)	४५६	अष्टशती [देवागम स्तोत्र टीका]	अकलङ्कदेव	(सं०)	१२६
अरिहन्त केवलीपादा	—	(सं०)	२७६	अष्टसहस्री	आ० विद्यानन्दि	(सं०)	१२६
अर्थदीपिका	जितभद्रगणि	(प्रा०)	१	अष्टांगसम्यग्दर्शनकथा	सकलकीर्त्ति	(सं०)	२१५
अर्थप्रकाश	लङ्कानाथ	(सं०)	२६६	अष्टांगोपाख्यान	पं० मेधावी	(सं०)	२१५
अर्थप्रकाशिका	सदासुख कासलीवाल	(हि० ग०)	१	अष्टादशसहस्रशीलभेद	—	(सं०)	५६१
अर्थसार टिप्पण	—	(सं०)	१७	अष्टालिकाकथा	यशःकीर्त्ति	(सं०)	६४५
अर्हत्प्रवचन	—	(सं०)	१	अष्टालिकाकथा	शुभचन्द्र	(सं०)	२१५
अर्हत्प्रवचन व्याख्या	—	(सं०)	२	अष्टालिकाकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७४०
अर्हनकचौडालियागीत	विमलधिनय [विनयरंग]	(हि०)	४३५	अष्टालिकाकथा	नथमल	(हि०)	२१५
अर्हद्भुक्तिविधान	—	(सं०)	५७४, ६५८	अष्टालिका कौमुदी	—	(सं०)	२१५
अलङ्कारटीका	—	(सं०)	३०८	अष्टालिकागीत	भ० शुभचन्द्र	(हि०)	६८६
अलङ्काररत्नावर	दलपतिराय वंशीधर	(हि०)	३०८	अष्टालिका जयमाल	—	(सं०)	४५६
अलङ्कारवृत्ति	जिनषट्चरन सूरि	(सं०)	३०८	अष्टालिका जयमाल	—	(प्रा०)	४५६
अलङ्कारशास्त्र	—	(सं०)	३०८	अष्टालिकापूजा	—	(सं०)	४५६, ५७०, ५६६, ६५८, ७८४
अवन्ति पार्श्वनाथजिनस्तवत	दृषसूरि	(हि०)	३७६	अष्टालिकापूजा	द्यानतराय	(हि०)	४६०, ७०५
अव्ययप्रकरण	—	(सं०)	२५७	अष्टालिकापूजा	—	(हि०)	४६१
अव्ययार्थ	—	(सं०)	२५७	अष्टालिकापूजाकथा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४६०
अक्षनसमितिरूप	—	(प्रा०)	५७२	अष्टालिकाभक्ति	—	(सं०)	५६४
अशोकरोहिणीकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२१६	अष्टालिकाव्रतकथा	विनयकीर्त्ति	(हि०)	६१४, ७८०, ७६४
अशोकरोहिणीव्रतकथा	—	(हि० ग०)	२१६	अष्टालिकाव्रतकथा	—	(सं०)	२१५
अश्वलक्षण	पं० नकुल	(हि०)	७८१	अष्टालिकाव्रतकथासंग्रह	गुणचन्द्रसूरि	(सं०)	२१६
अश्वपरीक्षा	—	(सं०)	७८६	अष्टालिकाव्रतकथा	लालचंद विनोदीलाल	(हि०)	६२२
अपादएकादशीमहात्म्य	—	(सं०)	२१५	अष्टालिकाव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
अष्टक [पूजा]	नेमिदत्त	(सं०)	५६०	अष्टालिकाव्रतकथा	—	(हि०)	२४७, ७२७
अष्टक [पूजा]	—	(हि०)	५६०, ७०१	अष्टालिकाव्रतपूजा	—	(सं०)	५१६
अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन	—	(सं०)	१	अष्टालिकाव्रतपूजा	भ० शुभचन्द्र	(हि०)	४६१
अष्टपाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	६६				
अष्टपाहुडभाषा	जयचन्द्र छावडा	(हि० ग०)	६६				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
ग्रष्टालिकाव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६
ग्रष्टालिकाव्रतोद्यापन	—	(हि०)	४६१
शंकुरारोपणविधि	५० आशाधर	(सं०)	४५३
			५१७
शंकुरारोपणविधि	इन्द्रनन्दि	(सं०)	४५३
शंकुरारोपणविधि	—	(सं०)	४५३
शंकुरारोपणमंडलचित्र			५२५
श्रृङ्गनचोरकथा	—	(हि०)	२१५
श्रृङ्गना को रास	धर्मभूषण	(हि०)	५६३
श्रृङ्गनारास	शांतिकुशल	(हि०)	३६०

आ

आकाशपञ्चमीकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६४५
आकाशपञ्चमीकथा	मदनकीर्त्ति	(सं०)	२४७
आकाशपञ्चमीकथा	—	(सं०)	२१६
आकाशपञ्चमीकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४५
आकाशपञ्चमीकथा	पांडे हरिकृष्ण	(हि०)	७६४
आकाशपञ्चमीप्रतकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२१६
आगमपरीक्षा	—	(सं०)	३५५
आगमविलास	आनतराय	(हि०)	४६
आगामी घेसठशलाका पुरुष वर्णन	—	(हि०)	१४२
आचारसार	वीरनन्दि	(सं०)	४६
आचारसार	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४६
आचारसंग्रह	—	(ग्रा०)	२
आचार्यभक्ति	—	(सं०)	६३३
आचार्यभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
आचार्यों का व्यौरा	—	(हि०)	३७०
आठकोडिमुनिपूजा	विश्वभूषण	(सं०)	४६१
आत्मशिक्षा	पद्मकुमार	(हि०)	६१६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
आत्मशिक्षा	प्रसन्नचन्द	(हि०)	६१६
आत्मशिक्षा	राजसमुद्र	(हि०)	६१६
आत्मशिक्षा	सालम	(हि०)	६१६
आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक	—	(ग्रा०)	२
आत्मध्यान	बनारसीदास	(हि०)	१००
आत्मनिन्दास्तवन	रत्नाकर	(सं०)	३८०
आत्मप्रबोध	कुमार कवि	(सं०)	१००
आत्मसंबोध जयमाल	—	(हि०)	७५५
आत्मसंबोधन	द्यानतराय	(हि०)	७१४
आत्मसंबोधनकाव्य	—	(सं०)	१००
आत्मसंबोधनकाव्य	—	(अग०)	१००
आत्मानुशासन	गुणभद्राचार्य	(सं०)	१०५
आत्मानुशासनटीका	प्रभाचन्द्राचार्य	(सं०)	१०१
आत्मानुशासनभाषा	पं० टोडरमल	(हि० ग०)	१०९
आत्मावलोकन दीपचन्द कासलीवाल	(..)		१०७
आत्रेयवैद्यक	आत्रेय ऋषि	(सं०)	२६६
आदिजिनवरस्तुति	कमलकीर्त्ति	(हि०)	४३६
आदित्यवारकथा	—	(सं०)	६६६
आदित्यवारकथा	गंगाराम	(हि०)	७६५
आदित्यवारकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
आदित्यवारकथा	भाऊ कवि	(हि०)	२४४
	६०१, ६८३, ६८५, ७२३, ७४०, ७४५, ७५६, ७६२		
आदित्यवारकथा	ब्र० राधमल्ल	(हि०)	७१२
आदित्यवारकथा	वादीचन्द्र	(हि०)	६०७
आदित्यवारकथाभाषा टीका	मूलकर्ता- सकलकीर्त्ति		
	भाषाकार- सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं० हि०)	७०७
आदित्यवारकथा	—	(हि०)	६२३
	६७६, ७१३, ७१४, ७१८, ७४१		
आदित्यवारपूजा	—	(हि०)	४६१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
आदित्यव्रतपूजा	—	(सं०) ४६१	आदीश्वर का समयसरण	—	(हि०) ५६६
आदित्यवारव्रतोद्यापन	—	(सं०) ५४०	आदीश्वरस्तवन	जितचन्द्र	(हि०) ७००
आदित्यव्रतकथा	सुशालचन्द्र	(हि०) ७३१	आदीश्वरविभक्ति	—	(हि०) ४३७
आदित्यव्रतपूजा	केशवसेन	(सं०) ४६१	आद्रकुमारधमाल	वनकसोम	(हि०) ६१७
आदित्यव्रतोद्यापन	—	(सं०) ५४०	आध्यात्मिकगाथा	भ० लक्ष्मीचन्द्र	(अग०) १०३
आदिनाथवल्याणकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०) ७०७	आनन्दलहरीस्तोत्र	शङ्कराचार्य	(सं०) ६०८
आदिनाथ गीत	मुनि हेमसिद्ध	(हि०) ४३६	आनन्दस्तवन	—	(सं०) ५१४
आदिनाथपूजा	मनहरदेव	(हि०) ५११	आप्तपरीक्षा	विद्यानन्दि	(सं०) १३६
आदिनाथपूजा	रामचन्द्र	(हि०) ४६१ ६५०	आप्तमीमांसा	समन्तभद्राचार्य	(सं०) १३०
आदिनाथपूजा	ब्र० शांतिदास	(हि०) ७६५	आप्तमीमांसाभाषा	जयचन्द्र छावड़ा	(हि०) १३०
आदिनाथपूजा	सेवगराम	(हि०) ६७४	आप्तमीमांसाभक्तिकृति	विद्यानन्दि	(सं०) १३०
आदिनाथपूजा	—	(हि०) ४६२	आमनीबू का भगड़ा	—	(हि०) ६६३
आदिनाथ की विनती	—	(हि०) ७७४ ७५२	आमेर के राजाओंका राज्यकाल विवरण	—	(हि०) ७५६
आदिनाथ विनती	कनककीर्ति	(हि०) ७२२	आमेर के राजाओंकी वंशावलि	—	(हि०) ७५६
आदिनाथसज्जामय	—	(हि०) ४३६	आयुर्वेदिक ग्रन्थ	—	(सं०) २६७, ७६३
आदिनाथस्तवन	कवि पल्लव	(हि०) ७३८	आयुर्वेदिक नुसखे	—	(सं०) २६७, ५७६
आदिनाथस्तोत्र	समयसुन्दर	(हि०) ६१६	आयुर्वेदिक नुसखे	—	(हि०) ६०१
आदिनाथाष्टक	—	(हि०) ५६४	६६७, ६७७, ६६०, ६६६, ६६७, ७०१, ७०२, ७१४,		
आदिपुराण	जिनसेनाचार्य	(सं०) १४२ ६४६	७१८, ७१६, ७२३, ७२०, ७२६, ७६०, ७६१, ७६६,		
आदिपुराण	पुष्पदन्त	(अप०) १४३ ६४२	७६७, ७६६		
आदिपुराण	दौलतराम	(हि० ग०) १४४	आयुर्वेद नुसखों का संग्रह	—	(हि०) २६६
आदिपुराण टिप्पण	प्रभाचन्द्र	(सं०) १४३	आयुर्वेदमहोदधि	सुखदेव	(सं०) २६७
आदिपुराण विनती	गङ्गादास	(हि०) ७०१	आरती	—	(सं०) ६३५
आदीश्वर आरती	—	(हि०) ५६४	आरती	चान्ताराय	(हि०) ६२१, ६२२
आदीश्वरगीत	रङ्गविजय	(हि०) ७७६	आरती	दीपचन्द्र	(हि०) ७७७
आदीश्वर के १० भव	गुणचन्द्र	(हि०) ७६२	आरती	मानसिंह	(हि०) ७७७
आदीश्वरपूजाष्टक	—	(हि०) ४६२	आरती	लालचन्द्र	(हि०) ६२२
आदीश्वरकाग	ज्ञानभूषण	(हि०) ३६०	आरती	बिहारीदास	(हि०) ७७७
आदीश्वररेखता	सहस्रकीर्ति	(हि०) ६८२	आरती	शुभचन्द्र	(हि०) ७७६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भारती पञ्चपरमेष्ठी	पं० बिमना	(हि०)	७६१	आश्विन वर्णन	—	(हि०)	२
भारती सरस्वती	ब्र० जिनदास	(हि०)	३८६	आषाढभूति चौडालिया	कनकसोम	(हि०)	६१७
भारती संग्रह	ब्र० जिनदास	(हि०)	३८६	आहार के ४६ दोषवर्णन	भैया भगवतीदास	(हि०)	५०
भारती संग्रह	द्यानतराय	(हि०)	७७७	इ			
भारती सिद्धों की	खुशालचन्द	(हि०)	७७७	इक्कीसठाणाचर्चा	सिद्धसेन सूरि	(प्रा०)	२
आराधना	—	(प्रा०)	४३२	इन्द्रजाल	—	(हि०)	३४७
आराधना	—	(हि०)	३८०	इन्द्रध्वजपूजा	विश्वभूषण	(सं०)	४६२
आराधना कथा कोश	—	(सं०)	२१६	इन्द्रध्वजमण्डलपूजा	—	(सं०)	४६२
आराधना प्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीर्ति	(हि०)	६५८	इष्टछत्तीसी	बुधजन	(हि०)	६६१
आराधना प्रतिबोधसार	सकलकीर्ति	(हि०)	६८५	इष्टछत्तीसी	—	(हि०)	७६० ७६३
आराधना प्रतिबोधसार	—	(हि०)	७८२	इष्टोपदेश	पूज्यपाद	(सं०)	३८०
आराधना विधान	—	(सं०)	४६२	इष्टोपदेशटीका	पं० आशाधर	(सं०)	३८०
आराधनासार	देवसेन	(प्रा०)	४६	इष्टोपदेशभाषा	—	(हि०)	७५५
५७३, ६२८, ६३५, ७०६, ७३७, ७४४				इष्टोपदेशभाषा	—	(हि० गद्य)	३८०
आराधनासार	जिनदास	(हि०)	७५७	ई			
आराधनासारप्रबन्ध	प्रभाचन्द	(सं०)	२१६	ईश्वरवाद	—	(सं०)	१३१
आराधनासारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४६	उ			
आराधनासारभाषा	—	(हि०)	५०	उच्चरहफल	बलदत्त	(सं०)	२७६
आराधनासार वचनिका	बा० दुलीचन्द	(हि० ग०)	५०	उणादिसूत्रसंग्रह	उज्जलदत्त	(सं०)	२५७
आराधनासारवृत्ति	पं० आशाधर	(सं०)	५०	उत्तरपुराण	गुणभद्राचार्य	(सं०)	१४५ ४१५
आरामशोभाकथा	—	(सं०)	२१७	उत्तरपुराणटिप्पण	प्रभाचन्द	(सं०)	१४५
आलापपद्धति	देवसेन	(सं०)	१३०	उत्तरपुराणभाषा	खुशालचन्द	(हि० पद्य)	१४५
आलोचना	—	(प्रा०)	५७२	उत्तरपुराणभाषा	संधी पन्नालाल	(हि० गद्य)	१४६
आलोचनापाठ	जौहरीलाल	(हि०)	५६१	उत्तराध्ययन	—	(प्रा०)	२
आलोचनापाठ	—	(हि०)	४२६	उत्तराध्ययनभाषाटीका	—	(हि०)	३
६८५, ७६३, ७४६				उदयसत्ताबंधप्रकृतिवर्णन	—	(सं०)	३
आश्वविभङ्गी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	२	उद्धवगोपीसंवाद	रसिकरास	(हि०)	६६४
आश्वविभङ्गी	—	(प्रा०)	७००	उद्धवसंदेशाख्यप्रबन्ध	—	(सं०)	१६०
आश्वविभङ्गी	—	(हि०)	२	उपदेशछत्तीसी	जिनहर्ष	(हि०)	३२४
				उपदेशपञ्चीसी	—	(हि०)	६५६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
उपदेशरत्नमाला	सकलभूषण	(सं०)	५०	ऋद्धिघातक	स्वरूपचन्द बिलास	(हि०)	५२ ५११
उपदेशरत्नमाला	धर्मदासगणि	(प्रा०)	७५८	ऋषभदेवस्तुति	जिनसेन	(सं०)	३८१
उपदेशरत्नमालाभाषा	—	(प्रा०)	५२	ऋषभदेवस्तुति	पद्यनन्दि	(प्रा०)	३८१ ५०६
उपदेशरत्नमालाभाषा	देवीसिंह छाबडा	(हि० पद्य)	५२	ऋषभनाथचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	१६०
उपदेशरत्नमालाभाषा	बा० दुलीचन्द	(हि०)	५१	ऋषभस्तुति	—	(सं०)	३८२
उपदेशशतक	द्यानतराय	(हि०)	३२५ ७४७	ऋषिमण्डल [चित्र]	—	(सं०)	५२४
उपदेशसङ्ग्राह	देवादित	(हि०)	३८१	ऋषिमण्डलपूजा	आ० गुणनन्दि	(सं०)	४६३
उपदेशसङ्ग्राह	रामचन्द्र	(हि०)	३८१				५३७, ५३६, ७६२
उपदेशसङ्ग्राह	ऋषि रामचन्द	(हि०)	३८०	ऋषिमण्डलपूजा	मुनि द्यानभूषण	(सं०)	४६३ ६३६
उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला	भंडारी नेमिचन्द	(प्रा०)	५१	ऋषिमण्डलपूजा	—	(सं०)	४६४ ७६१
उपदेशसिद्धान्तरत्नमालाभाषा	भागचन्द	(हि०)	५१	ऋषिमण्डलपूजा	दौलत आसेरी	(हि०)	४६४
उपवासग्रहणविधि	—	(प्रा०)	४६३	ऋषिमण्डलपूजा	—	(हि०)	७२७
उपवास के दश भेद	—	(सं०)	५७३	ऋषिमण्डलपूजा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	७२६
उपवासविधान	—	(हि०)	५७३	ऋषिमण्डलमन्त्र	—	(सं०)	५६३
उपवासों का व्योरा	—	(हि०)	७०१	ऋषिमण्डलस्तवन	—	(सं०)	६४५ ६८३
उपसर्गहरस्तोत्र	पूर्णचन्द्राचार्य	(सं०)	३८१	ऋषिमण्डलस्तवनपूजा	—	(सं०)	६५८
उपसर्गहरस्तोत्र	—	(सं०)	४२४	ऋषिमण्डलस्तोत्र	गौतमस्वामी	(सं०)	३८२
उपसर्गार्थविवरण	बुपाचार्य	(सं०)	५२				४२४, ४२८, ४३१, ६४७, ७३२
उपांगनलितव्रतकथा	—	(सं०)	२१७	ऋषिमण्डलस्तोत्र	—	(सं०)	३८२ ६६२
उपाधिष्ठाकरण	—	(सं०)	२५७				ए
उपासकाचार	—	(सं०)	५२	एकसौष्ठुनहत्तर जीववर्णन	—	(हि०)	७४४
उपासकाचारदीप्ता	आ० लक्ष्मीचन्द्र	(अप०)	५२	एकाक्षरकोश	रूपराज	(सं०)	२७४
उपासकाध्ययन	—	(सं०)	५२	एकाक्षरनाममाला	—	(सं०)	२७४
उमेश्वरस्तोत्र	—	(सं०)	७३१	एकाक्षरीकोश	वररुचि	(सं०)	२७४
				एकाक्षरीकोश	—	(सं०)	२७४
				एकाक्षरीस्तोत्र [तकाराक्षर]	—	(सं०)	३८२
				एकीभावस्तोत्र	बादिराज	(सं०)	२२४
ऋणसम्बन्धकथा	अभयचन्द्रगणि	(प्रा०)	२१८				३८२, ४२४, ४२५, ४२८, ४३०, ४३२, ४३३, ५७२,
ऋतुप्रहार	कालिदास	(सं०)	१६१				५७५, ५६५, ६०५, ६३३, ६३७, ६४४, ६५१, ६५२,
ऋद्धिमन्त्र	—	(सं०)	७२३				६६४, ७२०, ७३७, ७८६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
एकीभावस्तोत्रटीका	नागचन्द्रमूरि	(सं०)	४०१
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	(हि०)	३८३
४२६, ४४८, ६५२, ६६२, ७१६, ७२०			
एकीभावस्तोत्रभाषा	पद्मलाल	(हि०)	३८३
एकीभावस्तोत्रभाषा	जगजीवन	(हि०)	६०५
एकीभावस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	३८३
एकश्लोकरामायण	—	(सं०)	६४६
एकीश्लोकभाष्यवत्	—	(सं०)	६४६

श्री

श्रीषधियों के नुमखे	—	(हि०)	५७५

क

कवका	गुलाबचन्द	(हि०)	६४३
कवकाबत्तीसी	अ० गुलाल	(हि०)	६७६
कवकाबत्तीसी	नन्दराम	(हि०)	७३२
कवकाबत्तीसी	मनराम	(हि०)	७२३
कवकाबत्तीसी	—	(हि०)	६५१

६७५, ६८५, ७१३, ७१५, ७२३, ७४१

कवका बिनती [बारहखड़ी]	धनराज	(हि०)	६२३
कच्छावतार [चित्र]	—		६०३

कछवाहा वंशके राजाओंके नाम	—	(हि०)	६८०

कछवाहा वंश के राजाओंकी वंशावलि	—	(हि०)	७६७

कठियार कान्हरीचौपई	मानसागर	(हि०)	२१८

कथाकोश	हरिषेणार्थ	(सं०)	२१६

कथाकोश [भारधनाकथाकोश]	अ० नेमिदत्त	(सं०)	२१६

कथाकोश	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	२१६

कथाकोश	—	(सं०)	२१६

कथाकोश	—	(हि०)	२१६

कथारत्नसागर	नारचन्द्र	(सं०)	२२०

कथासंग्रह	—	(सं०)	२२०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
कथासंग्रह	—	(सं० हि०)	२२०
कथासंग्रह	—	(प्रा० हि०)	२२०
कथासंग्रह	अ० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
कथासंग्रह	—	(हि०)	७३७
कपटामाला का वृहत्	सुन्दर	(राज०)	७७३
कमलाष्टक	—	(सं०)	६०७
कवचनाचोपई	जिनचन्द्रमूरि	(हि० रा०)	२२१
करकण्डुचरित्र	अ० शुभचन्द्र	(सं०)	१६१

करकुण्डचरित्र	मुनि कनकाभर	(अप०)	१६१

करणकौतूहल	—	(सं०)	२७६

करलक्षण	—	(प्रा०)	२७६

करणाष्टक	पद्मनन्दि	(सं०)	६३३

६३७, ६६८

करणाष्टक	—	(हि०)	६४२

कर्णपिप्पलाचिनोयन्त्र	—	(सं०)	६१२

कपूरचक्र	—	(सं०)	२७६

कपूरप्रकरण	—	(सं०)	३२५

कपूरमञ्जरी	राजशेखर	(सं०)	३१६

कर्मग्रन्थसप्तरी	—	(प्रा०)	३

कर्मचूर [मण्डलचित्र]	—		५२५

कर्मचूरव्रतवैलि	मुनि सकलकीर्ति	(हि०)	५६२

कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा	लक्ष्मीसेन	(सं०)	४६४, ५१६

कर्मचूरव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५०६, ४६४, ५४०

कर्मछत्तीसी	समयसुन्दर	(हि०)	६१६

कर्मछत्तीसी	—	(हि०)	६८६

कर्मदहनपूजा	वादिचन्द्र	(सं०)	५६०

कर्मदहनपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	४६५

५३७, ६४५

कर्मदहनपूजा	—	(सं०)	४६५

५१७, ५४०, ७६१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
कर्मदहनपूजा	देवचन्द्र	(हि०)	४६५	कलशारोपणविधि	—	(सं०)	४६६
कर्मदहन [मण्डल चित्र]	—		५२५	कलिकुण्डपार्वनाथपूजा	भ० प्रभाचन्द्र	(सं०)	४६७
कर्मदहन का मण्डल	—	(हि०)	६३८	कलिकुण्डपार्वनाथपूजा	यशोविजय	(सं०)	६५८
कर्मदहनव्रतमन्त्र	—	(सं०)	३४७	कलिकुण्डपार्वनाथपूजा	—	(हि०)	५६७
कर्म नौकर्म वर्णन	—	(प्रा०)	६२६	कलिकुण्डपार्वनाथ [मंडलचित्र]	—		५२५
कर्मपञ्चीसी	भारमल	(हि०)	७६६	कलिकुण्डपार्वनाथस्तवन	—	(सं०)	६०६
कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३	कलिकुण्डपूजा	—	(सं०)	४६७
कर्मप्रकृतिचर्चा	—	(हि०)	५, ७२०				४७५, ५१४, ५७४, ६०६, ६४०
कर्मप्रकृतिचर्चा	—	(हि०)	६७०	कलिकुण्डपूजा श्रीर जयमाल	—	(प्रा०)	७६३
कर्मप्रकृतिटीका	सुमतिकीर्ति	(सं०)	५	कलिकुण्डस्तवन	—	(सं०)	६०७
कर्मप्रकृति का व्योरा	—	(हि०)	७१८	कलिकुण्डस्तवन	—	(प्रा०)	६५५
कर्मप्रकृतिवर्णन	—	(हि०)	७०१	कलिकुण्डरत्न	—	(सं०)	४७५
कर्मप्रकृतिविधान	बनारसीदास	(हि०)	५	कलियुग की कथा	केशव	(हि०)	६२२
			३६०, ६७७, ७४६	कलियुग की कथा	द्वारकादास	(हि०)	७७३
कर्मबत्तीसी	राजसमुद्र	(हि०)	६१७	कलियुग की विनती	देवाब्रह्म	(हि०)	६१५
कर्मयुद्ध की विनती	—	(हि०)	६६४				६८५, ७८८
कर्मविपाक	—	(सं०)	२२१, ५६६	कल्किवतार [चित्र]	—		६०३
कर्मविपाकटीका	सकलकीर्ति	(सं०)	५	कल्पद्रुमपूजा	—	(सं०)	६६५
कर्मविपाकफल	—	(हि०)	२८०	कल्पसिद्धांतसंग्रह	—	(प्रा०)	६
कर्मराशिफल [कर्मविपाक]	—	(सं०)	२८०	कल्पसूत्र	भद्रबाहु	(प्रा०)	६
कर्मस्तवसूत्र	देवेन्द्रसूरि	(प्रा०)	५	कल्पसूत्र	भिक्षू अज्जगण	(प्रा०)	६
कर्महिण्डोलना	—	(हि०)	६२२	कल्पसूत्रमहिमा	—	(हि०)	३८३
कर्म की १४८ प्रकृतियाँ	—	(हि०)	७६०	कल्पसूत्रटीका	समयसुन्दरोपाध्याय	(सं०)	७
कलशविधान	मोहन	(सं०)	४६६	कल्पसूत्रवृत्ति	—	(प्रा०)	७
कलशविधान	—	(सं०)	४६६	कल्पस्थान [कल्पव्याख्या]	—	(सं०)	२६७
कलशविधि	—	(सं०)	४२८, ६१२	कल्याणक	समन्तभद्र	(प्रा०)	३८३
कलशविधि	विश्वभूषण	(हि०)	४६६	कल्याण [बडा]	—		५७६
कलशाभिषेक	पं० आशाधर	(सं०)	४६७	कल्याणमञ्जरी	विनयसागर	(सं०)	३८४
कलशारोपणविधि	पं० आशाधर	(सं०)	४६६	कल्याणमन्दिर	हर्षकीर्ति	(सं०)	४०१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	(सं०)	३८४
४०२, ४२५, ४३०, ४३१, ४३३, ५६५, ५७२, ५७५,			
५६५, ६०५, ६१५, ६१६, ६३३, ६३७, ६५१, ६८०			
६८१, ६६३, ७०१, ७३१, ७६३			
कल्याणमन्दिरस्तोत्रटीका	—	(सं०)	३८५
कल्याणमन्दिरस्तोत्रवृत्ति	देवतिलक	(सं०)	३८५
कल्याणमन्दिरस्तोत्र हिन्दी टीका	—	(सं० हि०)	६८१
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	पञ्जालाल	(हि०)	३८५
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	वाराणसीदास	(हि०)	३८५
४२६, ५६६, ५६६, ६०३, ६०४, ६२२, ६४३, ६४८,			
६६२, ६६५, ६७७, ७०३, ७०५			
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	मेळीराम	(हि०)	७८६
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	ऋषि रामचन्द्र	(हि०)	३८५
कल्याणमन्दिरभाषा	—	(हि०)	६८६
७४५, ७५४, ७५५, ७५८, ७६८			
कल्याणमाला	पं० आशाधर	(सं०)	५७५, ३८५
कल्याणविधि	मुनि धिनयचन्द्र	(अप०)	६४१
कल्याणशृङ्खला	पद्मनन्दि	(सं०)	५७४
कवलचन्द्रायणव्रतकथा	—	(सं०)	२२१, २४६
कविकर्पटी	—	(सं०)	३०६
कवित्त	अग्रदास	(हि०)	७६८
कवित्त	कन्हैयालाल	(हि०)	७८०
कवित्त	केसवदास	(हि०)	६४३
कवित्त	शिरधर	(हि०)	७७२, ७८६
कवित्त	म० गुलाल	(हि०)	६७०, ६८२
कवित्त	छीइल	(हि०)	७७०
कवित्त	जयकिशोर	(हि०)	६४३
कवित्त	देवीदास	(हि०)	६७५
कवित्त	पद्माकर	(हि०)	७५६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
कवित्त	बनारसीदास	(हि०)	७०६, ७७३
कवित्त	मोहन	(हि०)	७७२
कवित्त	वृन्दावनदास	(हि०)	६८२
कवित्त	सन्तराम	(हि०)	६६२
कवित्त	सुखलाल	(हि०)	६५६
कवित्त	सुन्दरदास	(हि०)	६४३
कवित्त	सेवग	(हि०)	७७२
कवित्त	—	(राज० डिगल)	७७०
कवित्त	—	(हि०)	६८१
७१७, ७५८, ७६०, ७६३, ७६७, ७७१			
कवित्त	चुगलसोर का शिवलाल	(हि०)	७८२
कवित्तसंग्रह	—	(हि०)	६५६, ७४३
कविप्रिया	केशवदेव	(हि०)	१६१
कविवल्लभ	हरिचरणदास	(हि०)	६८८
कक्षपुट	सिद्धनागार्जुन	(सं०)	२६७
कातन्त्रटीका	—	(सं०)	२५७
कातन्त्ररूपमालाटीका	दौर्गसिंह	(सं०)	२५८
कातन्त्ररूपमालावृत्ति	—	(सं०)	२५८
कातन्त्रविभ्रमसूभावचूरि	चारित्र्यसिंह	(सं०)	२५७
कातन्त्रव्याकरण	शिववर्मा	(सं०)	२५६
कादम्बरीटीका	—	(सं०)	१६१
कामन्दकीयनीतिसारभाषा	—	(हि०)	३२६
कामशास्त्र	—	(हि०)	७३७
कामसूत्र	कविहाल	(प्रा०)	३५३
कारकप्रक्रिया	—	(सं०)	२५६
कारकविवेचन	—	(सं०)	२५६
कारकसमासप्रकरण	—	(सं०)	२५६
कारखानों के नाम	—	(हि०)	७५६
कार्तिकेयानुप्रेक्षा	स्वामी कार्तिकेय	(प्रा०)	१०३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
कार्तिकेयानुप्रेक्षाटीका	शुभचन्द्र	(सं०)	१०४	कृष्णरत्नमणिबेलि	पृथ्वीरज राठौर	(राज० दिगल)	७७०
कार्तिकेयानुप्रेक्षाटीका	—	(सं०)	१०४	कृष्णरत्नमणिबेलिटीका	—	—	७७०
कार्तिकेयानुप्रेक्षाभाषा	जयचन्द्र झाबड़ा	(हि० गद्य)	१०४	कृष्णरत्नमणिबेलि हिन्दोटोका सहित	—	(हि०)	६५६
कालचक्रवर्णन	—	(हि०)	७७०	कृष्णरत्नमणिमङ्गल	पद्म भगत	(हि०)	२२१
कालीनागदमनकथा	—	(हि०)	७३८	कृष्णावतारचित्र	—	—	६०३
कालीसहस्रनाम	—	(सं०)	६०८	केवलज्ञान का व्यौरा	—	(हि०)	५३
काले विच्छुके डङ्क उतारनेका मंत्र	—	(सं० हि०)	५७१	केवलजीवीसज्जमाय	धिनयचन्द्र	(हि०)	३८५
काव्यप्रकाशटीका	—	(सं०)	१६१	कोकमञ्जरी	—	(हि०)	६५७
कासिम रसिकविलास	—	(हि०)	७७१	कोकशाब्ज	—	(सं०)	३५३
किरातार्जुनीय	महाकवि भारवि	(सं०)	१६१	कोकम्यार	आनन्द	(हि०)	३५३
कुगुरुलक्षणा	—	(हि०)	५५	कोकसार	—	(हि०)	३५३, ६६६
कुण्डलगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(सं०)	४६७	कोकिलारश्मीकथा	ब्र० हर्षा	(हि०)	२२८
कुण्डलिया	अगरदास	(हि०)	६६०	कौतुकरत्नमञ्जूषा	—	(हि०)	७८६
कुदेवस्वरूपवर्णन	—	(हि०)	७२०	कौतुकलोलायली	—	(सं०)	२८०
कुमारसम्भव	कालिदास	(सं०)	१६२	कौमुदीकथा	आ० धर्मकीर्ति	(सं०)	२२२
कुमारसम्भवटीका	कनकसागर	(सं०)	१६२	कस्त्रिकाग्रतोद्यापनपूजा	ललितकीर्ति	(सं०)	४६८
कुवलयानन्द	अपय दीक्षित	(सं०)	३०८	कस्त्रिकाग्रतोद्यापन	—	(सं०)	४६४
कुवलयानन्द	—	(सं०)	३०८				४६८, ५१७
कुवलयानन्दकारिका	—	(सं०)	३०६	कांजीवारस (मण्डल चित्र)	—	—	५२५
कुशलस्तवन	जिनरङ्गसूरि	(हि०)	७७६	कांजीव्रतोद्यापनमण्डलपूजा	—	(सं०)	५१२
कुशलस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	७७६	क्रियाकलाप	—	(सं०)	५७६
कुशलाणुबन्धि अञ्जमुपरां	—	(प्रा०)	१०४	क्रियाकलापटीका	प्रभाचन्द्र	(सं०)	५३, ४३४
कुशीलखण्डन	जयलाल	(हि०)	५२	क्रियाकलापटीका	—	(सं०)	५३
कुदन्तपाठ	—	(सं०)	२५६	क्रियाकलापवृत्ति	—	(प्रा०)	५३
कुपणछन्द	ठक्कुरसी	(हि०)	६५८	क्रियाकोशभाषा	किशनसिंह	(हि०)	५३, ६१५
कुपणछन्द	चन्द्रकीर्ति	(हि०)	३८६	क्रियाकोशभाषा	—	(हि०)	५३
कुपणपञ्चसी	विनोदीलाल	(हि०)	७३३	क्रियावादियों के ३६ भेद	—	(हि०)	६७१
कुष्माण्णप्रमाणक	—	(हि०)	७३८	क्रोधमानमामालोभ की सज्जमाय	—	(हि०)	४४८
कुष्णाबालविलास	श्री किशनलाल	(हि०)	४३७	क्षत्रचूडामणि	वादीभसिंह	(सं०)	१६२
कुष्णरास	—	(हि०)	७३८	क्षपणासारटीका	—	(सं०)	७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
क्षपणासारवृत्ति	माधवचन्द्र त्रैविधदेव	(सं०)	७	खण्डेलवालोत्पत्तिवर्णन	—	(हि०)	३७०
क्षपणासारभाषा	पं० टोडरमल	(हि०)	७	खण्डेलवालों की उत्पत्ति	—	(हि०)	७०२
क्षमाछत्तीसी	समयसुन्दर	(हि०)	६१७	खण्डेलवालों की उत्पत्ति और उनके २४ गोत्र	—	(हि०)	७२१
क्षमाचत्तीसी	जिनचन्द्रसूरि	(हि०)	५४	खण्डेला की चरचा	—	(हि०)	७०२
क्षमावर्णपूजा	ब्रह्मसेन	(सं०)	५६४	खण्डेला की वशावलि	—	(हि०)	७५६
क्षीर नीर	—	(हि०)	७६२	ख्यान गोपीचन्द्रका	—	(हि०)	२२२
क्षीररत्ननिधिपूजा	—	(सं०)	५१५	ग			
क्षीरोदानीपूजा	अभयचन्द्र	(सं०)	७६३				
क्षेत्रपाल की आरती	—	(हि०)	६०७	गजपंथागण्डलपूजा	भ० सेमेन्द्रकीर्ति	(सं०)	४६८
क्षेत्रपालगीत	शुभचन्द्र	(हि०)	६२३	गजमांसाकथा	—	(हि०)	६००
क्षेत्रपाल जयमाल	—	(हि०)	७६३	गजसिंहकुमारचरित्र	विनयचन्द्रसूर	(सं०)	१६३
क्षेत्रपाल नामावली	—	(सं०)	३८६	गङ्गाराशांतिकविधि	—	(सं०)	६१२
क्षेत्रपालपूजा	मणिभद्र	(सं०)	६८३	गणधरधररातरविद्रूपजा	—	(सं०)	४६६
क्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	(सं०)	४६७	गणधरजयमाल	—	(प्रा०)	४६६
क्षेत्रपालपूजा	—	(सं०)	४६८	गणधरवल्लयपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	६६०
	५१५, ५१७, ५६७, ६४०, ६५५, ७६३			गणधरवल्लयपूजा	आशाधर	(सं०)	७६१
क्षेत्रपालपूजा	सुमतिकीर्ति	(हि०)	७१३	गणधरवल्लयपूजा	—	(सं०)	४६६
क्षेत्रपाल भैरवी गीत	शोभाचन्द्र	(हि०)	७७७		५१४, ६३६, ६४५, ७६१		
क्षेत्रपालस्तोत्र	—	(सं०)	३४७	गणधरवल्लय [मंडलचित्र]	—		५२५
	५६१, ५७५, ६४४, ६४६, ६४७			गणधरवल्लयमन्त्र	—	(सं०)	६०७
क्षेत्रपालाष्टक	—	(सं०)	६५५	गणधरवल्लयमन्त्रमंडल [कोठे]	—	(हि०)	६३८
क्षेत्रपालव्यवहार	—	(सं०)	२८०	गणपाठ	बादिराज जगन्नाथ	(सं०)	२५६
क्षेत्रसमासटीका	हरिभद्रसूरि	(सं०)	५४	गणसार	—	(सं०)	५४
क्षेत्रसमासप्रकरण	—	(प्रा०)	५४	गणितनाममाला	—	(सं०)	३६८
ख				गणितशास्त्र	—	(सं०)	३६८
				गणितसार	हेमराज	(हि०)	३६८
खण्डप्रशस्तिकाव्य	—	(सं०)	१६३	गणेशछन्द	—	(हि०)	७५३
खण्डेलवालगोत्र	—	(हि०)	७५६	गणेशद्वन्द्वनाम	—	(सं०)	६४६
खण्डेलवालों के २४ गोत्र	—	(हि०)	७६०	गर्गभनोरमा	—	(सं०)	२८०
				गर्गसंहिता	गर्गऋषि	(सं०)	२८०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
गर्भकल्याणकक्रियामें भक्तियां	—	(हि०)	५७३	गुरुस्थानवर्णन	—	(हि०)	६
गर्भषट्कारचक्र	देवनन्दि (स०)	१३१, ७३७		गुरुस्थानव्याख्या	—	(सं०)	५७३
गिरनारक्षेत्रपूजा	भ० विश्रभूषण	(सं०)	४०६	गुणाक्षरमाला	मनराम	(हि०)	७५०
गिरनारक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	४६६, ५१३	गुरावली	—	(सं०)	६२८, ६८६
गिरनारक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	५१८	गुरुप्रष्टक	द्यानतराय	(हि०)	७७७
गिरिधरदासकी रचना	—	(हि०)	७६०	गुरुश्रुद्ध	शुभचन्द्र	(हि०)	३८६
गीत	कवि पल्ह	(हि०)	७३८	गुरुत्रयमाला	भ० जिनदास	(हि०)	६५८
गीत	धमेकीर्ति	(हि०)	७४३				६८५, ७६१
गीत	पांडे नाथूराम	(हि०)	६२२	गुरुदेव की विनती	—	(हि०)	७०२
गीत	विद्याभूषण	(हि०)	६०७	गुरुनामावल्लिखन्द	—	(हि०)	३८६
गीत	—	(हि०)	७४३	गुरुपारतन्त्र एवं सप्तस्मरण	जिनदत्तसूरि	(हि०)	६१६
गीतगोविंद	जयदेव	(सं०)	१६३	गुरुपूजा	जिनदास	(हि०)	५३७
गीतप्रबन्ध	—	(सं०)	३८६	गुरुपूजाष्टक	—	(सं०)	६४६
गीतमहात्म्य	—	(सं०)	६७७	गुरुसहस्रनाम	—	(सं०)	३८७
गीतवीतराग	अभिनवचाराकीर्ति	(सं०)	३८६	गुरुस्तवन	शांतिदास	(सं०)	६५७
गुणत्रैलि [चन्द्रमाला गीत]	—	(हि०)	६२३	गुरुस्तुति	—	(सं०)	६०७
गुणत्रैलि	—	(हि०)	६४०	गुरुस्तुति	भूधरदास	(हि०)	१५
गुणमञ्जरी	—	(हि०)	७१६				४३७, ४४७, ६१४, ६४२, ६६३, ७८३
गुणस्तवन	—	(सं०)	३२७	गुरुओं की विनती	—	(हि०)	७०४
गुणस्थानगीत	श्रीवर्द्धन	(हि०)	७६३	गुरुओं की स्तुति	—	(सं०)	६२३
गुणस्थानकमारीहसूत्र	रत्नशेखर	(सं०)	८	गुर्वाष्टक	बादिराज	(सं०)	६५७—
गुणस्थानचर्चा	—	(प्रा०)	८, ६२८	गुर्वावलि	—	(सं०)	५६५, ६३३
गुणस्थानचर्चा	चन्द्रकीर्ति	(हि०)	८	गुर्वावलीपूजा	—	(सं०)	५१६
गुणस्थानचर्चा	—	(हि०)	७५१	गुर्वावलीवर्णन	—	(हि०)	३७१
गुणस्थानचर्चा	—	(सं०)	८	गोकुलगांवकी लीला	—	(हि०)	३६८
गुणस्थानप्रकरण	—	(सं०)	८	गोष्मटसार [कर्मकाण्ड]	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	१२
गुणस्थानभेद	—	(सं०)	८	गोष्मटसार [कर्मकाण्ड] टीका	कनकनन्दि	(सं०)	१२
गुणस्थानमार्गशा	—	(हि०)	८	गोष्मटसार [कर्मकाण्ड] टीका	ज्ञानभूषण	(सं०)	१२
गुणस्थानमार्गशा रचना	—	(सं०)	८	गोष्मटसार [कर्मकाण्ड] टीका	—	(सं०)	१३
गुणस्थानवर्णन	—	(सं०)	६				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
गोम्मटसार [कर्मकांड] भाषा पं० टोडरमल (हि०)			१३	भ्यारह भंग एवं चौदह पूर्व का वर्णन —		(हि०)	६२६
गोम्मटसार [कर्मकांड] भाषा हेमराज (हि०)			१३	ग्रहप्रवेश विचार	—	(सं०)	५७१
गोम्मटसार [जीवकांड] नेमिचन्द्राचार्य (प्रा०)			६	ग्रहबिबलक्षण	—	(सं०)	५७६
गोम्मटसार [जीवकांड] (तत्त्वप्रदीपिका) (सं०)			१२	ग्रहदशावर्णन	—	(सं०)	२८०
गोम्मटसार [जीवकांड] भाषा टोडरमल (हि०)			१०	ग्रहफल	—	(हि०)	६६४
गोम्मटसारटीका धर्मचन्द्र (सं०)			६	ग्रहफल	—	(सं०)	२८०
गोम्मटसारटीका सकलभूषण (सं०)			१०	ग्रहों की ऊंचाई एवं आयुवर्णन	—	(हि०)	३१६
गोम्मटसारभाषा टोडरमल (हि०)			१०	घ			
गोम्मटसारपीठिकाभाषा टोडरमल (हि०)			११				
गोम्मटसारवृत्ति केशववर्मा (सं०)			१०	घटकर्पूरकाव्य	घटकर्पूर	(सं०)	१६४
गोम्मटसारवृत्ति — (सं०)			१०	वधरनिसारणी	जिनहर्ष	(सं०)	३८७, ७३४
गोम्मटसार संदृष्टि पं० टोडरमल (हि०)			१२	घण्टाकर्णकल्प	—	(सं०)	३४७
गोम्मटसारस्तोत्र — (सं०)			३८७	घण्टाकर्णमन्त्र	—	(सं०)	३४७
गोरखपञ्चवली गोरखनाथ (हि०)			७६७	घण्टाकर्णमन्त्र	—	(हि०)	६५०, ७६२
गोरखसंवाद — (हि०)			७६४	घण्टाकर्णबुद्धिकल्प	—	(हि०)	३४८
गोविंदाष्टक शङ्कराचार्य (सं०)			७३३	च			
गौडोपार्श्वनाथस्तवन जोधराज (राज०)			६१७				
गौडोपार्श्वनाथस्तवन समयसुन्दरगणि (राज०)			६१७ ६१६	चउबीसीठाणवर्चा	—	(हि०)	७००
गौतमकुलक गौतमस्वामी (प्रा०)			१४	चउसरप्रकरण	—	(प्रा०)	५४
गौतमकुलक — (प्रा०)			१४	चक्रवर्ति की बारहभावना	—	(हि०)	१०५
गौतमपृच्छा — (प्रा०)			६४३	चक्रेश्वरीस्तोत्र	—	(सं०)	३४८
गौतमपृच्छा समयसुन्दर (हि०)			६१६			३८७, ४३२, ४२८, ६४७	
गौतमरासा — (हि०)			७५४	चतुर्गति की पञ्चड़ी	—	(मप०)	६४२
गौतमस्वामीचरित्र धर्मचन्द्र (सं०)			१६३	चतुर्दशपुराणज्ञानवर्चा	—	(हि०)	६८४
गौतमस्वामीचरित्रभाषा पञ्चालाल चौधरी (सं०)			१६३	चतुर्दशतीर्थङ्करपूजा	—	(सं०)	६७२
गौतमस्वामीरास — (हि०)			६१७	चतुर्दशमार्गणावर्चा	—	(हि०)	६७१
गौतमस्वामीसंज्ञाय समयसुन्दर (हि०)			६१८	चतुर्दशसूत्र	विनयचन्द्र	(सं०)	१४
गौतमस्वामी संज्ञाय — (हि०)			६१८	चतुर्दशसूत्र	—	(प्रा०)	१४
गंधकुटीपूजा — (सं०)			५१७	चतुर्दशमवाह्यविवरण	—	(सं०)	१४
				चतुर्दशकथा	टीकम	(हि०)	७५४, ७७३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चतुर्दशीकथा	डालूरास	(हि०)	७४२	चतुर्विंशतितीर्थङ्कराष्टक	चन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५६४
चतुर्दशीविधानकथा	—	(सं०)	२२२	चतुर्विंशतिपूजा	—	(हि०)	४७१
चतुर्दशीव्रतपूजा	—	(सं०)	४६६	चतुर्विंशतियज्ञविधान	—	(हि०)	३४८
चतुर्विधध्यान	—	(सं०)	१०५	चतुर्विंशतिविनती	चन्द्रकवि	(हि०)	६८५
चतुर्विंशति	गुणकीर्त्ति	(हि०)	६०१	चतुर्विंशतिव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६
चतुर्विंशतिपुण्यस्थानरीठिका	—	(सं०)	१८	चतुर्विंशतिस्थानक	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	१८
चतुर्विंशतिजयमाल	यति माधनन्दि	(सं०)	४६६	चतुर्विंशतिसमुच्चयपूजा	—	(सं०)	५०६
चतुर्विंशतिजिनपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	७२६	चतुर्विंशतिस्तवन	—	(सं०)	३८७ ४२६
चतुर्विंशतिजिनराजस्तुति	जितसिंहसूरि	(हि०)	७००	चतुर्विंशतिस्तुति	—	(प्रा०)	७७८
चतुर्विंशतिजिनस्तवन	जयसागर	(हि०)	६१६	चतुर्विंशतिस्तुति	विनोदीलाल	(हि०)	७७६
चतुर्विंशतिजिनस्तुति	जिनलामसूरि	(सं०)	३८७	चतुर्विंशतिस्तोत्र	भूधरदास	(हि०)	४२६
चतुर्विंशतिजिनाष्टक	शुभचन्द्र	(सं०)	५७८	चतुर्विंशतिस्तोत्र	—	(सं०)	६७६
चतुर्विंशतितीर्थङ्कर जयमाल	—	(प्रा०)	३८७	चतुर्विंशतिस्तोत्र	—	(सं०)	६६२
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	—	(सं०)	४७०, ६४५	चतुर्विंशतिस्तोत्र	—	(सं०)	३८८
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	नेमीचन्द्र पाटनी	(हि०)	४७२	चन्दकथा	लक्ष्मण	(हि०)	७४८
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	बख्तावरलाल	(हि०)	४७३	चन्दकुंवर की वार्ता	—	(हि०)	७३४
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	मनरङ्गलाल	(हि०)	४७३	चन्दनबालारास	—	(हि०)	३६१
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	४७२	चन्दनमलयागिरीकथा	भद्रसेन	(हि०)	२२३
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	चुन्दावन	(हि०)	४७१	चन्दनमलयागिरीकथा	चनर	(हि०)	२२३
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	सुगनचन्द्र	(हि०)	४७३	चन्दनमलयागिरीकथा	—	(हि०)	७४८
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	सेवारास साह	(हि०)	४७०	चन्दनषष्ठिकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२२४, ५१४
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	—	(हि०)	४७३	चन्दनषष्ठिकथा	—	(सं०)	२२४
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तवन	हेमविमलसूरि	(हि०)	४३७	चन्दनषष्ठिकथा	पं० हरिचन्द्र	(ग्रन्०)	२४३
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र	कमलविजयगण्धि	(सं०)	३८८	चन्दनषष्ठीपूजा	सुशालचन्द्र	(हि०)	५१६
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति	चन्द्र	(हि०)	७२०	चन्दनषष्ठीविधानकथा	—	(ग्रन्०)	२४६
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति	समन्तभद्र	(सं०)	६४७	चन्दनषष्ठीव्रतकथा	आ० छत्रसेन	(सं०)	६३१
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति	—	(सं०)	३८८ ६२८	चन्दनषष्ठीव्रतकथा	श्रुतसागर	(सं०)	५१०
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र	माधनन्दि	(सं०)	३८८ ५७६	चन्दनषष्ठीव्रतकथा	सुशालचन्द्र	(हि०)	२२४
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र	—	(सं०)	३८८				२४४, २४६

क्र.	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
	चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	चोखचन्द	(सं०)	४७३	चन्द्रहंसकथा	हर्षकवि	(हि०)	७१४
	चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	४७३	चन्द्रावलीक	—	(सं०)	३०६
	चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	विजयकीर्ति	(सं०)	५०६	चन्द्रोन्मीलन	—	(सं०)	२५६
	चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	४७३	चमत्कारप्रतिशयशेवपूजा	—	(हि०)	४७४
	चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	—	(सं०)	४७४	चमत्कारपूजा	स्वरूपचन्द्र	(हि०)	५११
	चन्दनाक्षरित्र	शुभचन्द्र	(सं०)	१६४				६६३, ७५६
	चन्दनाक्षरित्र	मोहनविजय	(मु०)	७६१	चम्पानलक	चम्पाबाई	(हि०)	४३७
	चन्द्रकीर्तिछन्द	—	(हि०)	३८६	चरचा	—	(प्रा०, हि०)	६६५
४	चन्द्रकुंवर की वार्ता	प्रतापसिंह	(हि०)	२२३	चरचा	—	(हि०)	६५२, ७५५
	चन्द्रकुंवरकी वार्ता	—	(हि०)	७११	चरचावर्णन	—	(हि०)	१५
	चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	—	(हि०)	७१८	चरचाशतक	द्यानतराय	(हि०)	१४
				७२३, ७३८				६६४, ७६४
	चन्द्रगुप्तके सोलह स्वप्नोंका फल	—	(हि०)	६२१	चर्चासमाधान	भूधरदास	(हि०)	१५
	चन्द्रप्रजति	—	(प्रा०)	३१६				६०६, ६४६, ७३३
	चन्द्रप्रभचरित्र	वीरनन्दि	(सं०)	१६४	चर्चासागर	चम्पालाल	(हि०)	१६
	चन्द्रप्रभकाव्यपञ्जिका	गुणनन्दि	(सं०)	१६५	चर्चासागर	—	(हि०)	१६
	चन्द्रप्रभचरित्र	शुभचन्द्र	(सं०)	१६४	चर्चासार	शिवजीलाल	(हि०)	१६
	चन्द्रप्रभचरित्र	दामोदर	(अप०)	१६५	चर्चासार	—	(हि०)	१६
	चन्द्रप्रभचरित्र	यशःकीर्ति	(अप०)	१६५	चर्चासंग्रह	—	(सं० हि०)	१५
	चन्द्रप्रभचरित्र	जयचन्द छावड़ा	(हि०)	१६६	चर्चासंग्रह	—	(हि०)	१५, ७१०
	चन्द्रप्रभचरित्रपञ्जिका	—	(सं०)	१६५	चहुंगति चौपई	—	(हि०)	७६२
	चन्द्रप्रभजिनपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	४७४	चाणक्यनीति	चाणक्य	(सं०)	३२६
	चन्द्रप्रभजिनपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	४७४				७२३, ७६८
	चन्द्रप्रभपुराण	हीरालाल	(हि०)	१४६	चाणक्यनीतिभाषा	—	(हि०)	३२७
	चन्द्रप्रभपूजा	—	(सं०)	५०६	चाणक्यनीतिसारसंग्रह	मथुरेश भट्टाचार्य	(सं०)	३२७
	चन्द्रलेहारास	मतिकुशल	(हि०)	३६१	चांदनपुरके महावीरकीपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	(सं०)	५४८
	चन्द्रवरदाई की वार्ता	—	(हि०)	६७६	चामुण्डस्तोत्र	पृथ्वीधराचार्य	(सं०)	३८८
	चन्द्रसागरपूजा	—	(हि०)	७३३	चामुण्डोपनिषद्	—	(सं०)	६०८
	चन्द्रहंसकथा	टीकमचन्द्र	(हि०)	२२४, ६३६	चारभावना	—	(सं०)	५५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चारमाहकी पञ्चमी [मङ्गलचित्र] —			५२५	चिन्तामणिपार्ष्वनाथपूजा एवं स्तोत्र लक्ष्मीसेन (सं०)			४२३
चारमित्रों की कथा	अजयराज	(हि०)	२२५	चिन्तामणिपार्ष्वनाथपूजास्तोत्र —		(सं०)	५६७
चारित्रपूजा	—	(सं०)	६५८	चिन्तामणिपार्ष्वनाथस्तवन —		(सं०)	६४५
चारित्रभक्ति	—	(सं०)	६२७, ६३३	चिन्तामणिपार्ष्वनाथस्तवन लालचन्द		(राज०)	६१७
चारित्रभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०	चिन्तामणिपार्ष्वनाथस्तवन —		(हि०)	४५१
चारित्रशुद्धिविधान	श्रीभूषण	(सं०)	४७४	चिन्तामणिपार्ष्वनाथस्तोत्र —		(सं०)	५६३
चारित्रशुद्धिविधान	शुभचन्द्र	(सं०)	४७५				६१४, ६५०
चारित्रशुद्धिविधान	सुमतिब्रह्म	(सं०)	४७५	चिन्तामणिपार्ष्वनाथस्तोत्र [मंत्र सहित]		(सं०)	३८८
चारित्रसार	श्रीमन्मामुण्डराय	(सं०)	५५	चिन्तामणिपूजा [वृहद्] विद्याभूषणसूरि		(सं०)	४७५
चारित्रसार	—	(सं०)	५६	चिन्तामणिपूजा	—	(सं०)	६४७
चारित्रसारभाषा	मन्नालाल	(हि०)	५६	चिन्तामणियन्त्र	—	(सं०)	३४८
चारुदत्तचरित्र	कल्याणकीर्त्ति	(हि०)	१६७	चिन्तामणिलक्षण	—	(सं०)	५६५
चारुदत्तचरित्र	उदयलाल	(हि०)	१६६	चिन्तामणिस्तवन	लक्ष्मीसेन	(सं०)	७६१
चारुदत्तचरित्र	भारामल्ल	(हि०)	१६८	चिन्तामणिस्तोत्र	—	(सं०)	३४८
चारों गतिदोंकी श्रायु आदिका वर्णन		(हि०)	७६३				४७५, ६४५
चिकित्सासार	—	(हि०)	२६८	चिद्विवेकाल दीपचन्द कामलीबाल		(हि०)	१०५
चिकित्साजनन	उपाध्याय विद्यापति	(सं०)	२६८	चूतडी	विनयचन्द	(सं०)	६४१
चित्र तीर्थकुर	—		५६४	चूतडीरास	विनयचन्द	(सं०)	६२८
चित्रबंधस्तोत्र	—	(सं०)	३८६ ४२६	चूर्णाधिकार	—	(सं०)	२६७
चित्रसेनकथा	—	(सं०)	२२५	चेतनकर्मचरित्र	भगवतीदास	(हि०)	६०५, ६८६
चिद्रूपभास	—	(हि०)	७०७	चेतनगीत	जिनदाम	(हि०)	७६२-
चिन्तामणिजयमाल	ठक्कुरसी	(हि०)	७३८	चेतनगोत	मुनि सिंहनन्दि	(हि०)	७३८
चिन्तामणिजयमाल	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	६५५	चेतनचरित्र	भगवतीदाम	(हि०)	६१३
चिन्तामणिजयमाल	मनरथ	(हि०)	६४४				६४८, ७४०
चिन्तामणिपार्ष्वनाथ [मङ्गलचित्र]			५२४	चेतनहाल	कलेहमल	(हि०)	४५२
चिन्तामणिपार्ष्वनाथजयमाल	सोम	(सं०)	७६२	चेतननारीसज्जाय	—	(हि०)	६१६
चिन्तामणिपार्ष्वनाथजयमालस्तवन	—	(सं०)	३८८	चेतावनीगीत	नाथू	(हि०)	७५७
चिन्तामणिपार्ष्वनाथपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	४७५	चेतनासज्जाय	समयसुन्दर	(हि०)	४३७
			६०६, ६४५, ७४५	चेत्यपरिपाटी	—	(हि०)	४३७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	प्रसंग	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	क्रमसं०
चैत्यवन्दना	सकलचन्द्र	(सं०)	६६८	चौबीसतीर्थकुरराम	—	(हि०)	७२२
चैत्यवन्दना	—	(सं०)	३८६	चौबीसतीर्थकुरवर्गन	—	(हि०)	४३८
			३६२, ६५०, ७१८	चौबीसतीर्थकुरस्तवन	देवनन्दि	(सं०)	६०६
चैत्यवन्दना	—	(हि०)	४२६, ४३७	चौबीसतीर्थकुरस्तवन लूणकरणकामलीबाल	(हि०)	४३८	
चौधाराधनाउद्योतककथा	जोधराज	(हि०)	२२५	चौबीसतीर्थकुरस्तवन	—	(हि०)	६५०
चौतीस श्रतिजयभक्ति	—	(सं०)	६२७	चौबीसतीर्थकुरस्तुति	—	(प्रग०)	६२५
चौदश की जयमाल	—	(हि०)	७४२	चौबीसतीर्थकुरस्तुति	महादेव	(हि०)	४३८
चौदहगुणस्थानचर्चा	अन्नयराज	(हि०)	१६	चौबीसतीर्थकुरस्तुति	—	(हि०)	६०१, ६६४
चौदहपूजा	—	(सं०)	४७६	चौबीसतीर्थकुरों के चिह्न	—	(सं०)	६२३
चौदहमार्गगा	—	(हि०)	१६	चौबीसतीर्थकुरोंके पञ्चकल्याणक की तिथियां—	(हि०)	५३८	
चौदहविद्या तथा कारखानेजालके नाम	—	(हि०)	७५६	चौबीसतीर्थकुरों की वन्दना	—	(हि०)	७७५
चौबीसगणधरस्तवन	गुणकीर्त्ति	(हि०)	६८६	चौबीसदण्डक	दौलतराम	(हि०)	५६
चौबीसजिनमातपितास्तवन	आनन्दमूरि	(हि०)	६१६		४२६, ४४८, ५११, ६७२, ७६०		
चौबीसजिनदजयमाल	—	(प्रग०)	६३७	चौबीसदण्डकविचार	—	(हि०)	७२२
चौबीसजिनस्तुति	सोमचन्द्र	(हि०)	४३७	चौबीसस्तवन	—	(हि०)	३८६
चौबीसठाणाचर्चा	—	(सं०)	१८, ७६५	चौबीसीमहाराज [मंडलचित्र]	—		५२४
चौबीसठाणाचर्चा	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रग०)	१६	चौबीसी विनती	भ० रत्नचन्द्र	(हि०)	६४६
			७२०, ६६६	चौबीसीस्तवन	जयसागर	(हि०)	७७६
चौबीसठाणाचर्चा	—	(हि०)	१८	चौबीसीस्तुति	—	(हि०)	४३७, ७७३
			६२७, ६७०, ६८०, ६८६, ६६४, ७८४	चौरासीमसादना	—	(हि०)	५७
चौबीसठाणाचर्चावृत्ति	—	(सं०)	१८	चौरासीगीत	—	(हि०)	६८०
चौबीसतीर्थकुरतीर्थपरिचय	—	(हि०)	४३७	चौरासीगोत्रातिवर्गन	—	(हि०)	७८६
चौबीसतीर्थकुरपरिचय	—	(हि०)	५६४	चौरासीजातिकी जयमाल	बिनोदीलाल	(हि०)	३७०
			६२१, ७००, ७५१	चौरासीजातिस्तुति	—	(हि०)	३७०
चौबीसतीर्थकुरपूजा [समुच्चय]	द्यानतराय	(हि०)	७०५	चौरासी जातिकी जयमाल	—	(हि०)	७४०
चौबीसतीर्थकुरपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	६६६	चौरासीजाति भेद	—	(हि०)	७४८
			७१२, ७२७, ७७२	चौरासीजातिवर्गन	—	(हि०)	७४७
चौबीसतीर्थकुरपूजा	—	(हि०)	५६२, ७२७	चौरासीन्यास की जयमाल	—	(हि०)	७४७
चौबीसतीर्थकुरभक्ति	—	(सं०)	६०४	चौरासीन्यासमाला	अ० जिनदास	(हि०)	७६५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चौरासीबील	कथरपाल	(हि०)	७०१	छंदविरोमंश	सोमनाथ	(हि०)	३५५
चौरासीलाखउत्तरगुरु	—	(हि०)	५७	छंदसंग्रह	—	(हि०)	३८६
चौसठकृद्धिपूजा	स्वरूपचन्द	(हि०)	४७६	छदानुशासनवृत्ति	हंमचन्द्राचार्य	(सं०)	३०६
चौसठकला	—	(हि०)	६०६	छंदशतक	हर्षकीर्ति	(सं०)	३०६
चौसठयोगिनीयन्त्र	—	(सं०)	६०३	ज			
चौसठयोगिनीस्तोत्र	—	(सं०)	३४८, ४२४				
चौसठशिवकुमारकाजी की पूजा ललितकीर्ति (सं०)	—	—	५१४	जकडी	दरिगह	(हि०)	७५५, ६६१
छ				जकडी	द्यानतराय	(हि०)	६४३ ६५०, ७१६
छठा घारा का विस्तार	—	(हि०)	३७०	जकडी	देवेन्द्रकीर्ति	(हि०)	६२१
छत्तीस कारखानोंके नाम	—	(हि०)	६८०	जकडी	नेमिचन्द	(हि०)	६६२
छहवाला	किशन	(हि०)	६७४	जकडी	रामकृष्ण	(हि०)	४३८
छहवाला	द्यानतराय	(हि०)	६५२ ५७३, ६७४, ७१७	जकडी	रूपचन्द	(हि०)	६५० ६६१, ७५२, ७५५
छहवाला	दौलतराम	(हि०)	५७ ७०७, ७४६	जकडी	—	(हि०)	७६३
छहवाला	बुधजन	(हि०)	५७	जगन्नाथनारायणकवच	—	(हि०)	६०१
छातीमुखकी औषधि का नुसखा	—	(हि०)	५७३	जगन्नाथपृथक	शङ्कराचार्य	(सं०)	३८६
छिनई क्षेत्रपाल व चौकीस तोर्थङ्क [मंडलचित्र] —	—	—	५२५	जन्मकुंडली [महाराजा सवाई जगतसिंह] —	—	(सं०)	७७६
छियालीसगुरु	—	(हि०)	५६४	जन्मकुंडलीविचार	—	(हि०)	६०३
छियालीसठाणा	ब्र० रायमल्ल	(सं०)	७६५	जन्मपत्री दीवाण आनन्दीनाल	—	(हि०)	७६०
छियालीसठाणाचर्चा	—	(सं०)	१६	जम्बूकुमारसम्भाषण	—	(हि०)	४३८
छेदपिण्ड	इन्द्रनन्द	(प्रा०)	५७	जम्बूद्वीपपूजा	पांडे जिनदास	(सं०)	४७७ ५०६, ५३७
छोटादर्शन	बुधजन	(हि०)	३६८	जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३१६
छोतीनिवारणविधि	—	(हि०)	४७६	जम्बूद्वीपफल	—	(सं०)	१६
छंदकीयकवित्त	भ० सुरेन्द्रकीर्ति	(सं०)	३५५	जम्बूद्वीप सम्बन्धी पञ्चमेकवर्गान	—	(हि०)	७६६
छंदकोश	—	(सं०)	३१०	जम्बूस्वामीचरित्र	ब्र० जिनदास	(सं०)	१६८
छंदकोश	रत्नशेखरसूरि	(सं०)	३०६	जम्बूस्वामीचरित्र	पं० राजमल्ल	(सं०)	१६६
छंदशतक	वृन्दाजनदास	(हि०)	३२७	जम्बूस्वामीचरित्र	विजयकीर्ति	(हि०)	१६६
				जम्बूस्वामीचरित्रभाषा	पद्मलाल चौधरी	(हि०)	१६६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
जम्बूस्वामीचरित्र	नाथूराम	(हि०)	१६६	जिनगुणसंपत्तिपूजा	केशवसेन	(सं०)	५३७
जम्बूस्वामीचरित्र	—	(हि०)	६४६	जिनगुणसंपत्तिपूजा	रत्नचन्द्र	(सं०)	४७७, ५११
जम्बूस्वामीचौपई	ब० रायमल्ल	(हि०)	७१०	जिनगुणसंपत्तिपूजा	—	(सं०)	५३६
जम्बूस्वामीपूजा	—	(हि०)	४७७	जिनगुणस्तवन	—	(सं०)	५७५
जयकुमार गुलोचना कथा	—	(हि०)	२२५	जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	भ० जिग्मचन्द्र	(सं०)	५५७
जयतिहुवरणरत्नोत्र	अभयदेवसूरि	(प्रा०)	७५४	जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	—	(सं०)	४३३
जयपुरका प्राचीन ऐतिहासिकवर्णन	—	(हि०)	३७०	जिनचरित्र	ललितकीर्ति	(सं०)	६४५
जयपुरके मंदिरोंकी बंदना स्वरूपचन्द्र	हि०)	४३८, ५३८		जिनचरित्रकथा	—	(सं०)	१६६
जयमाल [मालारंहरण]	—	(अप०)	५७३	जिनचैत्यबंदना	—	(सं०)	३६०
जयमाल	रायचन्द्र	(हि०)	४७७	जिनचैत्यालयजयमाल	रत्नभूषण	(हि०)	५६४
जलगलण/रास	ज्ञानभूषण	(हि०)	३६२	जिनचौबीसभवान्तररास	विमलेंद्रकीर्ति	(हि०)	५७८
जलयात्रा [तीर्थोदकदानविधान]	—	(सं०)	४७७	जिनदत्तचरित्र	गुणभद्राचार्य	(सं०)	१६६
जलयात्रा	ब० जिनदास	(सं०)	६२३	जिनदत्तचरित्रभाषा	पद्मलाल चौधरी	(हि०)	१७०
जलयात्रापूजाविधान	—	(हि०)	४७७	जिनदत्त चौपई	रत्न कवि	(हि०)	६८२
जलयात्राविधान	पं० आशाधर	(सं०)	४७७	जिनदत्तसूरिगीत	सुन्दरगणि	(हि०)	६१८
जलहरतेलाविधान	—	(हि०)	४७७	जिनदत्तसूरि चौपई	जयसागर उपाध्याय	(हि०)	६१८
जलालगहाणी की वार्ता	—	(हि०)	४७७	जिनदर्शन	भूधरदास	(हि०)	६०५
जातकसार	नाथूराम	(हि०)	६८४	जिनदर्शनस्तुति	—	(सं०)	४२४
जातकाभरण [जातकालङ्कार]	—	(हि०)	७६३	जिनदर्शनाष्टक	—	(सं०)	३६०
जातकवर्णन	—	(सं०)	५७४	जिनपञ्चोसी	नवलराम	(हि०)	६५१
जाप्य इष्ट अनिष्ट [माला फेरनेकी विधि]	—	(सं०)	५५५		६६३, ७०४, ७२५, ७५५		
जिनकुशलकी स्तुति	साधुकीर्ति	(हि०)	७७८	जिनपञ्चोसी व अन्य संग्रह	—	(हि०)	४३८
जिनकुशलसूरिस्तवन	—	(हि०)	६१८	जिनपिंगलछंदकोश	—	(हि०)	७०६
जिनगुणउद्घापन	—	(हि०)	६३८	जिनपुरन्दरव्रतपूजा	—	(सं०)	४७८
जिनगुणपञ्चोसी	सेवगराम	(हि०)	४४७	जिनपूजापुरन्दरकथा	सुशालचन्द्र	(हि०)	२४४
जिनगुणमाला	—	(हि०)	३६०	जिनपूजापुरन्दरविधानकथा	अमरकीर्ति	(अप०)	२४६
जिनगुणसंपत्ति [मंडलचित्र]	—		५२४	जिनपूजाफलप्राप्तिकथा	—	(सं०)	४७८
जिनगुणसंपत्तिकथा	—	(सं०)	२२५, २४६	जिनपूजाविधान	—	(हि०)	६५२
जिनगुणसंपत्तिकथा	ब० ज्ञानसागर	(हि०)	२२८	जिनपञ्जरस्तोत्र	कमलप्रभाचार्य	(सं०)	३६०, ४३२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
जिनपञ्जरस्तोत्र	—	(सं०)	३६० ४२४, ४३१, ४३३, ६४७, ६४८, ६६३	६५८, ६८३, ६८६, ६६२, ७१२, ७१५, ७२०, ७५२, ७४० ।	जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	(सं०) ३६३ ४२५, ५७३, ७०७, ७४७
जिनपञ्जरस्तोत्रभाषा	स्वरूपचन्द्र	(हि०)	५११	जिनसहस्रनाम	सिद्धसेन दिवाकर	(सं०)	३६३
जिनभक्तिपद	हर्षकीर्ति	(हि०)	४३८, ६२१	जिनसहस्रनाम [लघु]	—	(सं०)	३६३
जिनमुखाः लोकनकथा	—	(सं०)	२४६	जिनसहस्रनामभाषा	वनारसीदास	(हि०)	६६०, ७४६
जिनयज्ञकल्प [प्रतिष्ठासार]	पं० आशाधर	(सं०)	४७८ ६०८, ६३६, ६६७, ७६१	जिनसहस्रनामभाषा	नाथूराम	(हि०)	३६३
जिनयज्ञविधान	—	(सं०)	४७६, ६५५	जिनसहस्रनामटीका	अमरकांति	(सं०)	३६३
जिनयज्ञमङ्गल	सेधगराम	(हि०)	४४७	जिनसहस्रनामटीका	शतसागर	(सं०)	३६३
जिनराजमहिमास्तोत्र	—	(हि०)	५७६	जिनसहस्रनामटीका	—	(सं०)	३६३
जिनरात्रिविधानकथा	—	(सं०)	२४२	जिनसहस्रनामपूजा	धर्मभूषण	(सं०)	४८०
जिनरात्रिविधानकथा	नरसेन	(अप०)	६२८	जिनसहस्रनामपूजा	—	(सं०)	५१०
जिनरात्रिविधानकथा	—	(अप०)	२४६, ६३१	जिनसहस्रनामपूजा	चैनसुख लुहाडिया	(हि०)	४८०
जिनरात्रिविधानकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०	जिनसहस्रनामपूजा	स्वरूपचन्द्र विलास	(हि०)	४८०
जिनलाहू	ब्र० रायमङ्गल	(हि०)	७३८	जिनस्तनपन [अभिषेकपाठ]	—	(सं०)	४७६, ५७४
जिनवरकी विनती	देवापांडे	(हि०)	६८५	जिनसहस्रनामपूजा	—	(हि०)	४८१
जिनवर दर्शन	पद्मानन्दि	(प्रा०)	३६०	जिनस्तवन	कनककीर्ति	(हि०)	७७६
जिनवरत्रयजयमाला	ब्र० गुलाल	(हि०)	३६०	जिनस्तवन	दौलतराम	(हि०)	७०७
जिनवरस्तुति	—	(हि०)	७६७	जिनस्तवनद्वानिश्चिका	—	(सं०)	३६१
जिनवरस्तोत्र	—	(सं०)	३६०, ५७८	जिनस्तुति	शोभनमुनि	(सं०)	३६१
जिनवाणीस्तवन	जगताराम	(हि०)	३६०	जिनस्तुति	जोधराज गोदीका	(हि०)	४७६
जिनशतकटीका	नरसिंह	(सं०)	३६१	जिनस्तुति	रूपचन्द्र	(हि०)	७०२
जिनशतकटीका	शंभुसाधु	(सं०)	३६०	जिनसंहिता	सुमतिकीर्ति	(हि०)	७६३
जिनशतकालङ्कार	समन्तभद्र	(सं०)	३६१	जिनस्तुति	—	(हि०)	६१८
जिनशासनभक्ति	—	(प्रा०)	६३८	जिनानन्तर	वीरचन्द्र	(हि०)	६२७
जिनसतसई	—	(हि०)	७०६	जिनाभिषेकनिर्णय	—	(हि०)	४८१
जिनसहस्रनाम	पं० आशाधर	(सं०)	३६१ ५४०, ५६६, ६०५, ६०७, ६३६, ६४६, ६४७, ६५५,	जिनेन्द्रपुराण	भ० जिनेन्द्रभूषण	(सं०)	१४६
				जिनेन्द्रभक्तिस्तोत्र	—	(हि०)	४२८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
ज्वालामालिनीस्तोत्र	—	(सं०)	४२४	जानांकुश	—	(सं०)	६३५
४२८, ४३३, ५६१, ६०८, ६४६, ६४७, ६४८				जानांकुशाष्ट	भद्रबाहु	(सं०)	४२०
ज्ञानचिन्तामणि	मनोहरदास	(हि०)	५८	जानांकुशस्तोत्र	—	(सं०)	४२६
			७१४, ७३६	जानार्णव	शुभचन्द्राचार्य	(सं०)	१०६
ज्ञानदर्पण	साहू दीपचन्द्र	(हि०)	१०५	ज्ञानार्णवटीका [गद्य]	श्रुतभारार	(सं०)	१०७
ज्ञानदीपक	—	(हि०)	१३०, ६६०	ज्ञानार्णवटीका	नयाचल्लास	(सं०)	१०८
ज्ञानदीपकवृत्ति	—	(हि०)	१३१	ज्ञानार्णवभाषा	जयचन्द्र झावड़ा	(हि०)	१०८
ज्ञानपञ्चीसी	बनारसीदास	(हि०)	६१४	ज्ञानार्णवभाषाटीका	लालध्व विमलमणि	(हि०)	१०८
६३४, ६५०, ६८५, ६८६, ७४३, ७७५				ज्ञानोपदेश के पद्य	—	(हि०)	६६२
ज्ञानपञ्चीसीस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	४३८	ज्ञानोपदेशवृत्तीसी	—	(हि०)	६६२
ज्ञानपद्धती	मनोहरदास	(हि०)	७१८				
ज्ञानपञ्चविंशतिका अलोद्यापन	सुरेन्द्रकीर्ति	(सं०)	४८१				
			५३६				
ज्ञानपञ्चमोदहस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	७७६				
ज्ञानपिण्डकी विंशतिपद्धतिका	—	(अप०)	६३५				
ज्ञानपूजा	—	(सं०)	६५८				
ज्ञानपैडो	मनोहरदास	(हि०)	७५७				
ज्ञानबावनी	मतिशेखर	(हि०)	७७२				
ज्ञानभक्ति	—	(सं०)	६२७				
ज्ञानसूर्योदयनाटक	वादिचन्द्रसूरि	(सं०)	३१६				
ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	पारसदास निगोत्या	(हि०)	३१७				
ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	बख्ताचरमल	(हि०)	३१७				
ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	भगवतीदास	(हि०)	३१७				
ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	भागचंद	(हि०)	३१७				
ज्ञानस्वरोदय	चरणदास	(हि०)	७५६				
ज्ञानस्वरोदय	—	(हि०)	७५६				
ज्ञानानन्द	रायसह	(हि०)	५८				
ज्ञानबावनी	बनारसीदास	(हि०)	१०५				
ज्ञानसागर	मुनि पद्मसिंह	(प्रा०)	१०५				

५

ट-ठ-ड-ढ-ण

टंडाणागीत	बृन्तराज	(हि०)	७५०
ठाणांग सूत्र	—	(सं०)	२०
डोकरी और राजा भोजराज की वार्ता	—	(हि०)	६६५
ढाढसी गाथा	—	(प्रा०)	६२८
ढाढसी गाथा	ढाढसी मुनि	(प्रा०)	७०७
ढालगण	—	(हि०)	३२७
ढाल मङ्गलमती	—	(हि०)	६५५
ढोला मारुणी की बात	—	(हि०)	२२६, ६००
ढोला मारुणी की वार्ता	—	(हि०)	७११
ढोला मारुणी चौपार्ह कुशल लाभ	—	(हि०)	२२५
णञ्जकार पंचविंशति पूजा	—	(सं०)	५१०
णमोकारकल्प	—	(सं०)	३४८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
तद्धित प्रक्रिया	—	(सं०)	२६०	तीर्थमालास्तवन	समयसुन्दर	(राज०)	६१७
तपलक्षणा कथा	सुशालचन्द्र	(हि०)	५१६	तीर्थावलीस्तोत्र	—	(सं०)	४३२
तमास्तु की जयमाला	आणंदमुनि	(हि०)	४३८	तीर्थोदकविधान	—	(सं०)	६३३
तर्कदीपिका	—	(सं०)	१३१	तीर्थकरजकडी	हर्षकीर्ति	(हि०)	६२२, ६४४
तर्कप्रकरण	—	(सं०)	१३१	तीर्थकरपरिचय	—	(हि०)	३७०
तर्कप्रमाण	—	(सं०)	१३२				६५०, ६५२
तर्कभाषा	केशव मिश्र	(सं०)	१३२	तीर्थकरस्तोत्र	—	(सं०)	४३०
तर्कभाषा प्रकाशिका	बालचन्द्र	(सं०)	१३२	तीर्थकरों का अंतराल	—	(हि०)	३७०
तर्करहस्य दीपिका	गुणरत्न सूरि	(सं०)	१३२	तीर्थकरों के ६२ स्थान	—	(हि०)	७२०
तर्कसंग्रह	अभनंभट्ट	(सं०)	१३२	तीसचौबीसी	—	(हि०)	६५१, ७५८
तर्कसंग्रहटीका	—	(सं०)	१३३	तीसचौबीसीचौपई	श्याम	(हि०)	७५८
तारातंबोल की कथा	—	(हि०)	७४२	तीसचौबीसीनाम	—	(हि०)	४८३
तार्किकशिरोमणि	रघुनाथ	(सं०)	१३३	तीसचौबीसीपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	५३७
तीनचौबीसी	—	(हि०)	६६३	तीसचौबीसीपूजा	वृन्दायन	(हि०)	४८३
तीनचौबीसीनाम	—	(हि०)	५६६	तीसचौबीसीसमुच्चयपूजा	—	(हि०)	४८३
			६७०, ६६३, ७०३, ७५८	तीसचौबीसीस्तवन	—	(सं०)	३६४
तीनचौबीसीपूजा	—	(सं०)	४८२	तीसचौबीसीविवरण	—	(हि०)	७३२
तीनचौबीसीपूजा	नेमीचन्द्र	(हि०)	४८२	तेरहकाठिया	अनारसीदास	(हि०)	४२६
तीनचौबीसीपूजा	—	(हि०)	४८२				६०४, ७५०
तीनचौबीसीरास	—	(हि०)	६५१	तेरहद्वीपपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	४८३
तीनचौबीसी समुच्चय पूजा	—	(सं०)	४८२	तेरहद्वीपपूजा	भ० विश्वभूषण	(सं०)	४८४
तीन मिथों की जकडी	धनराज	(हि०)	६२३	तेरहद्वीपपूजा	—	(सं०)	४८४
तीनलोककथन	—	(हि०)	३१६	तेरहद्वीपपूजा	लासजीत	(हि०)	४८४
तीनलोक चार्ड	—	(हि०)	३१६	तेरहद्वीपपूजा	—	(हि०)	४८४
तीनलोकपूजा [त्रिलोक सार पूजा, त्रिलोक पूजा]				तेरहद्वीपपूजाविधान	—	(सं०)	४८४
	नेमीचन्द्र	(हि०)	४८३	तेरहपंथपञ्चीसी	माणिकचन्द्र	(हि०)	४४८
तीनलोकपूजा	टेकचन्द्र	(हि०)	४८३	तेरहपंथबीसपंथभेद	—	(हि०)	७३३
तीनलोकवर्णन	—	(हि० ग०)	३१६	तंत्रसार	—	(हि०)	७३४
तीर्थमालास्तवन	तेजराज	(हि०)	६१७	त्रयोविंशतिका	—	(सं०)	१०६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
त्रिकाण्डशेषसूची [अमरकोश]	अमरसिंह	(सं०)	२७४	त्रिलोकवर्णन	—	(हि०)	६६०
त्रिकाण्डशेषमिथान	पुरुषोत्तमदेव	(सं०)	२७५			७००	७०२
त्रिकालचतुर्विंशीपूजा	—	(सं०)	६६६	त्रिलोकसार	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३२०
त्रिकालचौबीसी	—	(हि०)	६५१	त्रिलोकसारकथा	—	(हि०)	२२७
त्रिकालचौबीसीकथा [रोटतीज]	अभ्रदेव	(सं०)	२२६, २४२	त्रिलोकसारचौपई	स्वरूपचंद	(हि०)	५११
त्रिकालचौबीसीकथा [रोटतीज]	गुणनन्दि	(सं०)	२२६	त्रिलोकसारपूजा	अभयनन्दि	(सं०)	४८५
त्रिकालचौबीसीनाम	—	(सं०)	४२४	त्रिलोकसारपूजा	—	(सं०)	४८५, ५१३
त्रिकालचौबीसीपूजा	त्रिभुवनचंद्र	(सं०)	४८४,	त्रिलोकसारभाषा	टोडरमल	(हि०)	३२१
त्रिकालचौबीसीपूजा	—	(सं०)	४८४, ५१७	त्रिलोकसारभाषा	—	(हि०)	३२१
त्रिकालचौबीसीपूजा	—	(प्रा०)	५०६	त्रिलोकसारभाषा	—	(हि०)	३२१
त्रिकालदेवबंदना	—	(हि०)	६२७	त्रिलोकसारवृत्ति	माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव	(सं०)	३२२
त्रिकालपूजा	—	(सं०)	४८५	त्रिलोकसारवृत्ति	—	(सं०)	३२२
त्रिचतुर्विंशतिविधान	—	(सं०)	२४६	त्रिलोकसारसंहृष्ट	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३२२
त्रिपंचाशतक्रिया	—	(हि०)	५१७	त्रिलोकस्तोत्र	भ० महीचन्द्र	(हि०)	६८१
त्रिपंचाशतस्तोत्रोद्यापन	—	(सं०)	५१३	त्रिलोकस्थजिनालयपूजा	—	(हि०)	४८५
त्रिभुवन की विनती	गंगादास	(हि०)	७७२	त्रिलोकस्वरूप व्याख्या उदयलाल गंगवाल	(हि०)	३२२	
त्रिभुवन की विनती	—	(हि०)	७७४	त्रिवर्णाचार	भ० सोमसेन	(सं०)	५८
त्रिभंगीसार	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३१	त्रिशती	शार्ङ्गधर	(सं०)	२६८
त्रिभंगीसारटीका	चित्रकानन्दि	(सं०)	३२	त्रिपाण्डुशलाकाछंद	श्रीपाल	(सं०)	६७०
त्रिलोकक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	४८५	त्रिषष्ठशलाका पुरुषवर्णन	—	(सं०)	१४६
त्रिलोकचित्र	—	(हि०)	३२०	त्रिषाष्टिस्मृति	आशाधर	(सं०)	१४६
त्रिलोकतिलकस्तोत्र	भ० महीचन्द्र	(सं०)	७१२	त्रिशतजिणचतुर्विंशी	महारासिंह	(अप०)	६८६
त्रिलोकदीपक	वामदेव	(सं०)	३२०	त्रेपनक्रिया	—	(सं०)	५६, ७६२
त्रिलोकदर्पणकथा	खड्गसेन	(हि०)	६८६, ६६०, ३२१	त्रेपनक्रिया	भ० गुलाल	(हि०)	७४०
त्रिलोकवर्णन	—	(सं०)	३२२	त्रेपनक्रियाकोश	दौलतराम	(हि०)	५६
त्रिलोकवर्णन	—	(प्रा०)	३२२	त्रेपनक्रियापूजा	—	(सं०)	४८५
त्रिलोकवर्णन [चित्र]	—	३२३		त्रेपनक्रिया [मण्डल चित्र]	—		५२४
त्रिलोकवर्णन	—	(सं०)	३२३	त्रेपनक्रियाव्रतपूजा	—	(सं०)	४८५
				त्रेपनक्रियाव्रतोद्यापन	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	६३८, ७६६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
त्रैलोक्यविद्याप्रदीपन	—	(सं०)	५४०	दर्शनसार	देवसेन	(प्रा०)	१३३
त्रैलोक्यशलाकापुरुषचित्र	—	(प्रा०)	१७१	दर्शनसारभाषा	नथमल	(हि०)	१३३
त्रैलोक्यशलाकापुरुषवर्णन	—	(हि०)	७०२	दर्शनसारभाषा	शिवजीलाल	(हि०)	१३३
त्रैलोक्य तीज कथा अ० ज्ञानसागर	—	(हि०)	२२०	दर्शनसारभाषा	—	(हि०)	१३३
त्रैलोक्य मोहनकवच	रायमल्ल	(सं०)	६६०	दर्शनस्तुति	—	(सं०)	६५८, ६७०
त्रैलोक्यसारटीका	सहस्रकीर्ति	(प्रा०)	३२३	दर्शनस्तुति	—	(हि०)	६५२
त्रैलोक्यसारपूजा	सुमतिसागर	(सं०)	४८५	दर्शनस्तोत्र	सकलचन्द्र	(सं०)	५७४
त्रैलोक्यसारमहापूजा	—	(सं०)	४८६	दर्शनस्तोत्र	—	(सं०)	३८१
थ				दर्शनस्तोत्र	पद्मनन्दि	(प्रा०)	५०६
धूलभद्रजीकारासी	—	(हि०)	७२५	दर्शनस्तोत्र	—	(प्रा०)	५७४
धर्मसागरवर्णनाथस्तवन	मुनि अभयदेव	(हि०)	६१६	दर्शनश्लोक	—	(हि०)	६४४
धर्मसागरवर्णनाथस्तवन	—	(राज)	६१६	दलासीनीसञ्ज्ञाय	—	(हि०)	३६४
द				दश प्रकारके आहारा	—	(सं०)	५७१
दक्षणास्तुतिस्तोत्र	शङ्कराचार्य	(सं०)	६६०	दशप्रकार विप्र	—	(सं०)	५७६
दण्डकपाठ	—	(सं०)	५६	दशबोल	—	(हि०)	३२८
दत्तात्रय	—	(सं०)	२२७	दशबोलपञ्चीसी	द्यानतराय	(हि०)	४४८
दर्शनकथा	भारामल्ल	(हि०)	२२७	दशभक्ति	—	(हि०)	५६
दर्शनकथाकोश	—	(सं०)	२२७	दशमूर्तियोंकी कथा	—	(हि०)	२२७
दर्शनपञ्चीसी	—	(हि०)	७१६	दशलक्षसुखापन पाठ	—	(सं०)	५५७
दर्शनपाठ	—	(सं०)	५६६	दशलक्षश्लोकथा	लोकसेन	(सं०)	२२७
६००, ६०४, ६५०, ६६३, ६७७, ६८३, ७०३, ७६३				दशलक्षश्लोकथा	—	(सं०)	२२७
दर्शनपाठ	बुधजन	(हि०)	४३६	दशलक्षश्लोकथा	मुनि गुरुभद्र	(अप०)	६३१
दर्शनपाठ	—	(हि०)	६००	दशलक्षश्लोकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४४
		६६२, ६६३, ७०५		दशलक्षण जयमाल	सोमसेन	(सं०)	७६५
दर्शनपाठस्तुति	—	(हि०)	४३६	दशलक्षणजयमाल	पं० भावशर्मा	(प्रा०)	४२६, ५१७
दर्शनपाठद्विभाषा	—	(हि०)	१०६	दशलक्षणजयमाल	—	(प्रा०)	४८७
दर्शनप्रतिमास्वरूप	—	(हि०)	५६	दशलक्षणजयमाल	—	(प्रा० सं०)	४८७
दर्शनभक्ति	—	(सं०)	६२७	दशलक्षणजयमाल	पं० रङ्गधू	(अप०)	२४३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
दशलक्षराजयमाल	सुमतिसागर	(हि०)	७६५	दशलक्षणीकथा	ललितकीर्ति	(सं०)	६६५
दशलक्षराजयमाल	—	(हि०)	४८८	दशलक्षणीरास	—	(अप०)	६४२
दशलक्षराधर्मवर्णन पं० सदासुखकासलीवाल	(हि०)	५६		दशवैकालिकगीत	जैतसिंह	(हि०)	७००
दशलक्षराधर्मवर्णन	—	(हि०)	६०	दशवैकालिकसूत्र	—	(प्रा०)	३२
दशलक्षरापूजा	अभयनन्दि	(सं०)	४८८	दशवैकालिकसूत्रटीका	—	(सं०)	३२
दशलक्षरापूजा	—	(सं०)	४८८	दशश्लोकीशम्भुस्तोत्र	—	(सं०)	६६०
५१७, ५३६, ५७४, ५६४, ५६६, ६०६, ६०७, ६४०, ६४४, ६४६, ६५२, ६५८, ६६४, ७०४, ७३१, ७५६, ७६३, ७८४				दशसूत्राष्टक	—	(सं०)	६७०
दशलक्षरापूजा	—	(अप० सं०)	७०५	दशारास	ब्र० चन्द्र	(सं०)	६८३
दशलक्षरापूजा	अभ्रदेव	(सं०)	४८८	दाहूपद्यावली	—	(हि०)	३७१
दशलक्षरापूजा	सुशालचन्द्र	(हि०)	५१६	दानकथा	ब्र० जिनदास	(हि०)	७०७
दशलक्षरापूजा	द्यानतराय	(हि०)	४८८	दानकथा	भारामल्ल	(हि०)	२२८
५१६, ७०५				दानकुल	—	(प्रा०)	६०
दशलक्षरापूजा	भूधरदास	(हि०)	५६१	दानतपशीलसंवाद	समयसुन्दर	(राज०)	६१७
दशलक्षरापूजा	—	(हि०)	४८६	दानपञ्चाशत्	पद्मनन्दि	(सं०)	६०
७२०, ७८८				दानवावनी	द्यानतराय	(हि०)	६०५, ६८६
दशलक्षरापूजाजयमाल	—	(सं०)	५६६	दानलीला	—	(हि०)	६००
दशलक्षरा [मंडलचित्र]	—		५२५	दानदर्शन	—	(हि०)	६८६
दशलक्षरामण्डलपूजा	—	(हि०)	४८६	दानविनती	जतीदास	(हि०)	६४३
दशलक्षराविधानकथा	लोकसेन	(सं०)	२४२, २४६	दानशीलतपभावना	—	(सं०)	६०
दशलक्षराविधानपूजा	—	(हि०)	४६०	दानशीलतपभावना	धर्मसी	(हि०)	६०
दशलक्षराव्रतकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२२७	दानशीलतपभावना	—	(हि०)	६०, ६०१
दशलक्षराव्रतकथा	सुशालचन्द्र	(हि०)	७३१	दानशीलतपभावना का चौढाल्या	समयसुन्दरगण	(हि०)	२२८
दशलक्षराव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७६४	दिल्ली की बादशाहतका व्यौरा	—	(हि०)	७६६
दशलक्षराव्रतकथा	—	(हि०)	२४७	दिल्लीके बादशाहों पर कविता	—	(हि०)	७५६
दशलक्षराव्रतोद्यापन	जिनचन्द्रसूरि	(सं०)	४८६	दिल्ली नगरकी बसापत तथा बादशाहत का व्यौरा	—	(हि०)	७८४
दशलक्षराव्रतोद्यापनपूजा	सुमतिसागर	(सं०)	४८६	दिल्ली राजका व्यौरा	—	(हि०)	७८६
५४०, ६३८				दीक्षापटल	—	(सं०)	५७५
दशलक्षराव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५१३	दीपमालिका निर्णय	—	(हि०)	६०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
दीपावतारमन्त्र	—	(सं०)	५७१, ५७६	देवागमस्तोत्रभाषा	—	(हि० पद्य)	३६६
दुधारसविधानकथा	मुनि विनयचन्द्र	(अप०)	२४४	देवाग्रमस्तोत्रवृत्ति	आणुभा	[शिष्य विजयसेनसूरि]	
दुर्घटकाव्य	—	(सं०)	१७१			(सं०)	३६६
दुर्लभानुप्रेक्षा	—	(प्रा०)	६३७	देवीसूक्त	—	(सं०)	६०८
देवकीढाल	रतनचन्द्र	(हि०)	४४०	देशों [भारत] के नाम	—	(हि०)	६७१
देवकीढाल	लूणकरण कासलीवाल	(हि०)	४३६	देहलीके बादशाहोंकी नामावली एवं परिचय	—		
देवतास्तुति	पद्मनन्दि	(हि०)	३६४			(हि०)	७४३
देवपूजा	इन्द्रनन्दि योगीन्द्र	(सं०)	४६०	देहलीके बादशाहोंके परगनोंके नाम	—	(हि०)	६८०
देवपूजा	—	(सं०)	४१५	देहलीके बादशाहोंका व्यौरा	—	(हि०)	३७२
	५६४, ६०५, ७२५, ७३१			देहलीके राजाओंकी वंशावलि	—	(हि०)	६८०
देवपूजा	—	(हि० सं०)	५६६, ७०४	दोहा	कबीर	(हि०)	७६६
देवपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५१६	दोहावाहु	रामसिंह	(अप०)	६०
देवपूजा	—	(हि०)	६४६	दोहाशतक	रूपचन्द्र	(हि०)	६७३, ७४०
	६७०, ७०६, ७३५, ७५८			दोहासंग्रह	नानिगराम	(हि०)	६२३
देवपूजाटीका	—	(सं०)	४६०	दोहासंग्रह	—	(हि०)	७४३
देवपूजाभाषा	जयचन्द्र झाबड़ा	(हि०)	४६०	द्यानतविलास	द्यानतराय	(हि०)	३२८
देवपूजाष्टक	—	(सं०)	६५७	द्रव्यसंग्रह	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३२
देवराज बच्छराज चौपई	सोमदेवसूरि	(हि०)	२२८		५७५, ६२८, ७४४, ७११		
देवलोकनकथा	—	(सं०)	२२८	द्रव्यसंग्रहटीका	—	(सं०)	३५, ६६४
देवशास्त्रगुरुपूजा	आशाधर	(सं०)	६३६, ७६१	द्रव्यसंग्रहगाथा भाषा सहित	(प्रा० हि०)	७५५, ६८६	
देवशास्त्रगुरुपूजा	—	(सं०)	६०७	द्रव्यसंग्रहचालावबोध टीका	वंशीधर	(हि०)	७६१
देवशास्त्रगुरुपूजा	—	(हि०)	५६२	द्रव्यसंग्रहभाषा	जयचन्द्र झाबड़ा	(हि० पद्य)	३६
देवसिद्धपूजा	—	(सं०)	४२८	द्रव्यसंग्रहभाषा	जयचन्द्र झाबड़ा	(हि० गद्य)	३६
	४६०, ६४०, ६४४, ७३०			द्रव्यसंग्रहभाषा	बा० दुलीचन्द्र	(हि० गद्य)	३७
देवसिद्धपूजा	—	(हि०)	७०५	द्रव्यसंग्रहभाषा	द्यानतराय	(हि०)	७१२
देवागमस्तोत्र	आ० समन्तभद्र	(सं०)	३६४	द्रव्यसंग्रहभाषा	पद्मलाल चौधरी	(हि०)	३६
	३६५, ४२५, ५७५, ६०४, ७२०			द्रव्यसंग्रहभाषा	हेमराज	(हि०)	७३३
देवागमस्तोत्रभाषा	जयचन्द्र झाबड़ा	(हि०)	३६५	द्रव्यसंग्रहभाषा	—	(हि०)	३५
				द्रव्यसंग्रहभाषा	पर्वत धर्मार्थी	(गुज०)	३६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठसं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	क्रम सं०
द्रव्यसंग्रहवृत्ति	अष्टादेव	(सं०)	३४	द्वादशानुप्रेक्षा	—	(हि०)	१०६
द्रव्यसंग्रहवृत्ति	प्रभाचन्द्र	(सं०)	३४				६५२, ७४८, ७६५
द्रव्यस्वरूपवर्णन	—	(सं०)	३७	द्वादशांगपूजा	—	(सं०)	४६१
दृष्टांतशतक	—	(सं०)	३२८	द्वादशांगपूजा	डासूगाम	(हि०)	४६१
द्वादशभावनाटीका	—	(हि०)	१०६	द्वाध्वकाव्य	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	१७१
द्वादशभावनादृष्टांत	—	(मुज०)	१०६	द्विजवचनचपेटा	—	(सं०)	१३३
द्वादशमाला	कवि राजसुन्दर	(हि०)	७४३	द्वितीयसमोसरण	ब० गुलाल	(हि०)	५६६
द्वादशमासा [नारहणसा]	कवि राजसुन्दर	(हि०)	७७१	द्विपंचकल्याणकपूजा	—	(सं०)	५१७
द्वादशमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६	द्विसंधानकाव्य	धनञ्जय	(सं०)	१७१
द्वादशराशिफल	—	(सं०)	६६०	द्विसंधानकाव्यटीका [पदकीमुदी]	नेमिचन्द्र	(सं०)	१७२
द्वादशव्रतकथा	पं० अष्टादेव	(सं०)	२२८	द्विसंधानकाव्यटीका	धिनयचन्द्र	(सं०)	१७२
			२४६, ४६०	द्विसंधानकाव्यटीका	—	(सं०)	१७२
द्वादशव्रतकथा	चन्द्रसागर	(हि०)	२२८	द्वीपसमुद्रों के नाम	—	(हि०)	६७१
द्वादशव्रतकथा	—	(सं०)	२२८	द्वीपायनडाल	गुणसागरसूरि	(हि०)	४४०
द्वादशव्रतपूजाजयमाला	—	(सं०)	६७६	ध			
द्वादशव्रतमण्डलोद्यापन	—	(सं०)	५४०				
द्वादशव्रतोद्यापन	—	(सं०)	४६१, ६६६	धनदत्त सेठ की कथा	—	(हि०)	२२६
द्वादशव्रतोद्यापन	जगतकीर्ति	(सं०)	४६१	धन्नाकथानक	—	(सं०)	२२६
द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	४६१	धन्नाचौपई	—	(हि०)	७७२
द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	पद्मनन्दि	(सं०)	४६१	धन्नाशलिभद्रचौपई	—	(हि०)	२२६
द्वादशानुप्रेक्षा	—	(सं०)	१०६, ६७२	धन्नाशलिभद्ररास	जिनराजसूरि	(हि०)	३६२
द्वादशानुप्रेक्षा	लक्ष्मीसेन	(सं०)	७४४	धन्यकुमारचरित्र	आ० गुणभद्र	(सं०)	१७२
द्वादशानुप्रेक्षा	—	(प्रा०)	१०६	धन्यकुमारचरित्र	ब० नेमिदत्त	(सं०)	१७३
द्वादशानुप्रेक्षा	जलदण	(अप०)	६२८	धन्यकुमारचरित्र	सकलकीर्ति	(सं०)	१७२
द्वादशानुप्रेक्षा	—	(अप०)	६२८	धन्यकुमारचरित्र	—	(सं०)	१७४
द्वादशानुप्रेक्षा	साह आलु	(हि०)	१०६	धन्यकुमारचरित्र	सुशालचन्द्र	(हि०)	१७३, ७२६
द्वादशानुप्रेक्षा	कायि छत्त	(हि० पद्य)	१०६	धर्मचक्र [मण्डल चित्र]	—		५२५
द्वादशानुप्रेक्षा	लोहट	(हि०)	७६६	धर्मचक्रपूजा	यशोनन्दि	(सं०)	४६१, ५६५
द्वादशानुप्रेक्षा	सूरत	(हि०)	७६४	धर्मचक्रपूजा	साधु रणमङ्ग	(सं०)	४६२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
धर्मचक्रपूजा	—	(सं०)	४६२	धर्मरत्ना	—	(हि०)	३६२
		५१०, ५३०		धर्मरत्नो	—	(हि०)	६२३, ६७७
धर्मचन्द्रप्रबंध	धर्मचन्द्र	(प्रा०)	३६६	धर्मलक्षण	—	(सं०)	६२
धर्मवाह	—	(हि०)	७२७	धर्मविलास	द्यानतराय	(हि०)	३२८, ७१०
धर्मवाहना	—	(हि०)	६१	धर्मशर्माभ्युदय	महाकवि हरिश्चन्द्र	(सं०)	१७४
धर्मतत्त्वगीत	जिनदास	(हि०)	७६२	धर्मशर्माभ्युदयटीका	यशःकीर्ति	(सं०)	१७४
धर्मदशावतार नाटक	—	(सं०)	३१७	धर्मशास्त्रप्रदीप	—	(सं०)	६३
धर्म दुहेला जैनी का [त्रेपल किया]		(हि०)	६३८	धर्मसरोवर	जोधराज गोदीका	(हि०)	६३
धर्मरञ्चीसी	द्यानतराय	(हि०)	७४७	धर्मसार [चौपई]	पं० शिरोमणिदास	(हि०)	६३, ६६६
धर्मपरीक्षा	अमितिगति	(सं०)	३५५	धर्मसंग्रहश्रावकाचार	पं० मेधावी	(सं०)	६२
धर्मपरीक्षा	विशालकीर्ति	(हि०)	७३५	धर्मसंग्रहश्रावकाचार	—	(सं०)	६३
धर्मपरीक्षाभाषा	मनोहरदास सोनी	३५७, ७१६		धर्मसंग्रहश्रावकाचार	—	(हि०)	६३
धर्मपरीक्षाभाषा	दशरथ निगोस्था	(हि० ग०)	३५६	धर्मधर्मस्वरूप	—	(हि०)	७०७
धर्मपरीक्षाभाषा	—	(हि०)	३५८, ७१०	धर्ममृतसूक्तिसंग्रह	आशाधर	(सं०)	६४
धर्मपरीक्षारास	ब्र० जिनदास	(हि०)	३५७	धर्मोपदेशपद्मश्रावकाचार	सिंहनन्दि	(सं०)	६४
धर्मपंचविंशतिका	ब्र० जिनदास	(हि०)	६१	धर्मोपदेशश्रावकाचार	अमोघवर्ष	(सं०)	६४
धर्मप्रदीपभाषा	पन्नालाल संघी	(हि०)	६१	धर्मोपदेशश्रावकाचार	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	६४
धर्मप्रश्नोत्तर	विमलकीर्ति	(सं०)	६१	धर्मोपदेशश्रावकाचार	—	(सं०)	६४
धर्मप्रश्नोत्तर	—	(हि०)	६१	धर्मोपदेशसंग्रह	सेवाराससाह	(हि०)	६४
धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचार भाषा	—	(सं०)	६२	धवल	—	(प्रा०)	३७
धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचार भाषा	चम्पाराम	(हि०)	६१	धातुपाठ	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२६०
धर्मप्रश्नोत्तरी	—	(हि०)	६१	धातुपाठ	—	(सं०)	२६०
धर्मबुद्धिचौपई	लालचन्द्र	(हि०)	२२६	धातुप्रत्यय	—	(सं०)	२६१
धर्मबुद्धि पाप बुद्धि कथा	—	(सं०)	२२६	धातुरूपावलि	—	(सं०)	२६१
धर्मबुद्धि मंत्री कथा	वृन्दाधन	(हि०)	२२६	धू लीला	—	(हि०)	६००
धर्मरत्नाकर	पं० मंगल	(सं०)	६२	श्रीधूचरित्र	—	(हि०)	७४१
धर्मरसायन	पद्मानन्दि	(प्रा०)	६२	ध्वजारोपणपूजा	—	(सं०)	५१३
धर्मरसायन	—	(सं०)	६२	ध्वजारोपणमंत्र	—	(सं०)	४६२
धर्मरस [श्रावकाचार]	—	(हि०)	७७३	ध्वजारोपणमंत्र	—	(सं०)	४६२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
ध्वजारोपणविधि	आशाधर	(सं०)	४६२	नन्दीश्वरपूजा	—	(प्रा०)	४६३, ७०५
ध्वजारोपणविधि	—	(सं०)	४६२	नन्दीश्वरपूजा	—	(सं० प्रा०)	४६३
ध्वजारोहणविधि	—	(सं०)	४६२	नन्दीश्वरपूजा	—	(अप०)	४६३
न				नन्दीश्वरपूजा	—	(हि०)	४६३
नखशिखवर्णन	केशवदास	(हि०)	७७२	नन्दीश्वरपूजा जयमाल	—	(सं०)	७५६
नखशिखवर्णन	—	(हि०)	७१४	नन्दीश्वरपूजाविधान	टेकचन्द	(हि०)	४६४
नगर स्थापना का स्वरूप	—	(हि०)	७५०	नन्दीश्वरपूजा	पद्मनन्दि	(सं०)	६३६
नगरों की बसावट का संवत्वार विवरण	—	(हि०)	७५०	नन्दीश्वरपूजा	—	(सं०)	४६३
मुनि कनककीर्ति	—	(हि०)	५६१	नन्दीश्वरपूजा	—	(हि०)	४६३
नन्द भीजाई का भगड़ा	—	(हि०)	७४७	नन्दीश्वरभक्ति	—	(सं०)	६३३
नन्दिताढ्यछंद	—	(प्रा०)	३१०	नन्दीश्वरभक्ति	पन्नालाल	(हि०)	४६४, ४५०
नन्दिपेण महामुनि सज्जाय	—	हि०	६१६	नन्दीश्वरविधान	जिनेश्वरदास	(हि०)	४६४
नन्दीश्वरउद्यापन	—	(सं०)	५३७	नन्दीश्वरविधानकथा	हरिषेण	(सं०)	२२६, ५१४
नन्दीश्वरकथा	म० शुभचन्द्र	(सं०)	२२६	नन्दीश्वरविधानकथा	—	(सं०)	२२६, २४६
नन्दीश्वरजयमाल	—	(सं०)	४६२	नन्दीश्वरव्रतविधान	टेकचन्द	(हि०)	५१५
नन्दीश्वरजयमाल	—	(प्रा०)	६३६	नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	अनन्तकीर्ति	(सं०)	४६४
नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्ति	(अप०)	५१६	नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	नन्दिपेण	(सं०)	४६४
नन्दीश्वरजयमाल	—	(अप०)	४६२	नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	४६४
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	रत्ननन्दि	(सं०)	४६२	नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	—	(हि०)	४६४
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	—	(सं०)	४६३	नन्दीश्वरादिभक्ति	—	(प्रा०)	६२७
			६०१, ६५२	नान्दीसूत्र	—	(प्रा०)	३७
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	—	(प्रा०)	६५५	नन्दूसप्तमीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	४६४
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५१६, ५६२	नमस्कारमन्त्रवल्गुविधिसहित	सिद्धनन्दि	(सं०)	३४६
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	मङ्गल	(हि०)	४६३	नमस्कारमन्त्रसटीक	—	(सं० हि०)	६०१
नन्दीश्वरपुष्पाञ्जलि	—	(सं०)	५७६	नमस्कारस्तोत्र	—	(सं०)	४२८
नन्दीश्वरपूजा	सकलकीर्ति	(सं०)	७६१	नमिऊणस्तोत्र	—	(प्रा०)	६८१
नन्दीश्वरपूजा	—	(सं०)	४६३	भवचक्र	देवसेन	(प्रा०)	१३४
			५१५, ६०७, ६४४, ६५५, ६६६, ७०४	नयचक्रटीका	—	(हि०)	६८६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नवग्रहभाषा	हेमराज	(हि०)	१३४	नवग्रहपूजाविधान	भद्रबाहु	(सं०)	४६४
नवग्रहभाषा	—	(हि०)	१३४	नवग्रहस्तोत्र	वेदव्यास	(सं०)	६४६
नरकदुःखवर्णन [तीहा]	भूधरदास	(हि०)	६५	नवग्रहस्तोत्र	—	(सं०)	४३०
			७६०, ७८८	नवग्रहस्थापनाविधि	—	(सं०)	६१२
नरकवर्णन	—	(हि०)	६५	नवतत्त्वगाथा	—	(प्रा०)	३७
नरकस्वर्गकेयश्र पृथ्वी आदिका वर्णन	—	(हि०)	६५२	नवतत्त्वप्रकरण	—	(प्रा०)	७३२
नरपतिजयचर्चा	नरपति	(सं०)	२८५	नवतत्त्वप्रकरण	लक्ष्मीबल्लभ	(हि०)	३७
नल दमयन्ती नाटक	—	(सं०)	३१७	नवतत्त्ववचनिका	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	३८
नलोदयकाव्य	कालिदास	(सं०)	१७५	नवतत्त्ववर्णन	—	(हि०)	३८
नलोदयकाव्य	माणिक्यसूरि	(सं०)	१७४	नवतत्त्वचिन्तार	—	(हि०)	६१६
नवकारकल्प	—	(सं०)	३४६	नवतत्त्वचिन्तार	—	(हि०)	३८
नवकारपैतीसी	—	(सं०)	६६६	नवपदपूजा	देवचन्द्र	(हि०)	७६०
नवकारपैतीसीपूजा	—	(सं०)	५३७	नवमङ्गल	विनोदीलाल	(हि०)	६८५, ७३४
नवकार बड़ो विनतो	ब्रह्मदेव	(हि०)	६५१	नवरत्नकवित्त	—	(सं०)	३२६
नवकारमहिभारतवन	जितबल्लभसूरि	(हि०)	६१८	नवरत्नकवित्त	बनारसीदास	(हि०)	७४३
नवकारमन्त्र	—	(सं०)	४३१	नवरत्नकवित्त	—	(हि०)	७१७
नवकारमन्त्र	—	(प्रा०)	६३६	नवरत्नकाव्य	—	(सं०)	१७५
नवकारमन्त्रचर्चा	—	(हि०)	७१८	नष्टोदिष्ट	—	(सं०)	६५
नवकाररास	अचलकीर्त्ति	(हि०)	६४७	नहनसीपाराविधि	—	(हि०)	२६८
नवकाररास	—	(हि०)	३६२	नागकुमारचरित्र	धर्मधर	(सं०)	१७६
नवकाररासो	—	(हि०)	७४५	नागकुमारचरित्र	मल्लिषेणसूरि	(सं०)	१७५
नवकारश्रावकाचार	—	(प्रा०)	६५	नागकुमारचरित्र	—	(सं०)	१७६
नवकारसञ्ज्ञाय	गुणप्रभसूरि	(हि०)	६१८	नागकुमारचरित्र	उदयलाल	(हि०)	१७६
नवकारसञ्ज्ञाय	पद्मराजगणि	(हि०)	६१८	नागकुमारचरित्र	—	(हि०)	१७६
नवग्रह [मण्डलविधि]	—		५२५	नागकुमारचरितटीका	प्रभाचन्द्र	(सं०)	१७६
नवग्रहगर्भितपार्श्वनाभस्तवन	—	(सं०)	६०६	नागमंता	—	(हि० राज०)	२२६
नवग्रहगर्भितपार्श्वस्तोत्र	—	(प्रा०)	७३२	नागश्रीला	—	(हि०)	६६५
नवग्रहपूजा	—	(सं०)	४६५	नागश्रीकथा	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	२३१
नवग्रहपूजा	—	(सं० हि०)	५१८	नागश्रीकथा	किशनसिंह	(हि०)	२३१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नागधौसज्जाय	विनयचन्द्र	(हि०)	४४१	नित्यनियमपूजा सदासुख कामलीबाल (हि०)	—	(हि०)	४६६
नाटकसमयसार	बनारसीदास	(हि०)	६४०	नित्यनियमपूजासंग्रह	—	(हि०)	७१२
६५७, ६८२, ७२१, ७५०, ५६१, ७७६				नित्यनैमित्तिकपूजापाठ संग्रह	—	(सं०)	५६६
नाडीपरीक्षा	—	(सं०)	२६८	नित्यपाठसंग्रह	—	(सं० हि०)	३६८
			६०२, ६२७	नित्यपूजा	—	(सं०)	५६०
नाडीमङ्गलपूजा	—	(सं०)	५६८				६६४, ६६४, ६६७
नाममाला	धनञ्जय	(सं०)	२७५	नित्यपूजा	—	(हि०)	४६८
२७६, ५७४, ६८६, ६६६, ७०१, ७११, ७१२, ७३६				नित्यपूजाजयमाल	—	(हि०)	४६८
नाममाला	बनारसीदास	(हि०)	२७६	नित्यपूजापाठ	—	(सं० हि०)	६६३
			६०६, ७६५				७०२, ७१५
नाममञ्जरी	नन्ददास	(हि०)	६६७ ७६६	नित्यपूजापाठसंग्रह	—	(प्रा० सं०)	६६४
नायिकालक्षण	कवि सुन्दर	(हि०)	७४२	नित्यपूजापाठसंग्रह	—	(सं०)	६६३
नायिकावर्णन	—	(हि०)	७३७	नित्यपूजापाठसंग्रह	—	(सं०)	७००
नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र	नारचन्द्र	(सं०)	२८५				७७५, ७७६
नारायणकवच एवं मण्डक	—	(सं०)	६०८	नित्यपूजासंग्रह	—	(प्रा० प्रप०)	४६७
नारीरासी	—	(हि०)	७५७	नित्यपूजासंग्रह	—	(सं०)	४६७, ७६३
नासिकेतपुराण	—	(हि०)	७६७	नित्यवन्दनासामायिक	—	(सं० प्रा०)	६३३
नासिकेतोपाख्यान	—	(हि०)	७६०	निमित्तज्ञान [भद्रबाहु संहिता] भद्रबाहु	(सं०)	२८५	
निर्घट्ट	—	(सं०)	२६६	नियमभार	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	३८
निजस्मृति	जयतिलक	(सं०)	३८	नियमभारटीका	पद्मप्रभमलधारिदेव	(सं०)	३८
निजामणि	ज० जिनदास	(हि०)	६५	निरमलखीसूत्र	—	(प्रा०)	३८
नित्य एवं भाद्रपदपूजा	—	(सं०)	६४४	निरञ्जनशतक	—	(हि०)	७४१
नित्यकृत्यवर्णन	—	(हि०)	६५, ४६५	निरञ्जनस्तोत्र	—	(सं०)	४२४
नित्यक्रिया	—	(सं०)	४६५	निर्माणप्रश्नोत्तरावधानकथा विनयचन्द्र	(अप०)	२४५, ६२८	
नित्यनियम के दोहे	—	(हि०)	७१८	निर्दोषगणसमीक्षा	—	(अप०)	२४५
नित्यनियमपूजा	—	(सं०)	४६५	निर्दोषगणसमीक्षा पांडे हरिकृष्ण	(हि०)	७६४	
			५१६, ६७६	निर्दोषगणसमीक्षा कथा ज० रायमल्ल	(सं०)	६७६, ७३६	
नित्यनियमपूजा	—	(सं० हि०)	४०६	निर्मलदोषवर्णन	बा० दुलीचन्द	(हि०)	६५
			५६७, ६८६	निर्वाणकल्याणपूजा	—	(सं०)	४६८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
निर्वाणकाण्डभाषा	—	(प्रा०)	३६८	नीतिवाक्यामृत	सोमदेवसूरि	(सं०)	३३०
४२६, ४३१, ५२६, ६२१, ६२८, ६३५, ६३८, ६६२, ६७०, ६६४, ७१६, ७५३, ७७४, ७८८, ७८६				नीतिविनोद	—	(हि०)	३३०
निर्वाणकाण्डटीका	—	(प्रा० सं०)	३६६	नीतिशतक	भर्तृहरि	(सं०)	३२६
निर्वाणकाण्डपूजा	—	(सं०)	४६८	नीतिशास्त्र	चाणक्य	(सं०)	७१७
निर्वाणकाण्डभाषा	भैया भगवतीदास	(सं०)	३६६	नीतिसार	इन्द्रनन्दि	(सं०)	३२६
४२३, ४२६, ४४१, ५६२, ५७०, ५६६, ६००, ६०५, ६१४, ५६५, ६४३, ६५०, ६५१, ६६२, ६७५, ७०४, ७२०, ७४७				नीतिसार	—	(सं०)	३२६
निर्वाणकाण्डभाषा	सेवग	(हि०)	७८८	नीलकण्ठताजिक	नीलकण्ठ	(सं०)	२८५
निर्वाणकौशिकपूजा	—	(हि०)	४६६, ५१८	नीलसूक्त	—	(सं०)	३३०
निर्वाणकौशिकमण्डलपूजा	—	(हि०)	४६२	नेमिगीत	पासचंद	(हि०)	४४१
निर्वाणपूजा	—	(सं०)	४६६	नेमिगीत	भूधरदास	(हि०)	४३२
निर्वाणपूजापाठ	मनरङ्गलाल	(हि०)	४६६	नेमिजिनंश्रव्याहलो	खेतसी	(हि०)	६३८
निर्वाणप्रकरण	—	(हि०)	६५	नेमिजिनस्तवन	मुनि जोधराज	(हि०)	६१८
निर्वाणभक्ति	—	(सं०)	३६६, ६३३	नेमिजाका चरित्र	आणन्द	(हि०)	१७६
निर्वाणभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०	नेमिजीकी लहुरी	विश्वभूषण	(हि०)	७७६
निर्वाणभक्ति	—	(हि०)	३६६	नेमिदूतकाव्य	महाकवि विक्रम	(सं०)	१७६
निर्वाणभूमिमङ्गल	विश्वभूषण	(हि०)	६६८	नेमिनरेन्द्रस्तोत्र	जगन्नाथ	(सं०)	३६६
निर्वाणमोक्षनिर्णय	नेमिदास	(हि०)	६५	नेमिनाथएकाक्षरीस्तोत्र	पं० शालि	(सं०)	४२६
निर्वाणविधि	—	(सं०)	६०८	नेमिनाथका बारहमासा	विनोदीलाल लालचन्द	—	
निर्वाणसप्तशतीस्तोत्र	—	(सं०)	३६६		(हि०)	७५३	
निर्वाणस्तोत्र	—	(सं०)	३६६	नेमिनाथका बारहमासा	—	(हि०)	६६२
निःशल्याष्टमीकथा	—	(सं०)	२३१	नेमिनाथकी भावना	सेवकराम	(हि०)	६७४
निःशल्याष्टमीकथा	अ० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०	नेमिनाथ के दशभव	—	(हि०)	१७७
निःशल्याष्टमीकथा	पांडे हरिकृष्ण	(हि०)	७६५				६००, ७०४, ७८८
निःशिभोजनकथा	अ० नेमिदत्त	(सं०)	२३१	नेमिनाथ के नवमङ्गल	विनोदीलाल	(हि०)	४४०
निःशिभोजनकथा	—	(हि०)	२३१	नेमिनाथ के बारह भव	—	(हि०)	७६०
निषेवाध्यायवृत्ति	—	(सं०)	२८५	नेमिजीकीमङ्गल	जगतभूषण	(हि०)	५६७
				नेमिनाथचरित्र	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	१७७
				नेमिनाथछन्द	शुभचन्द्र	(हि०)	३८६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नेमिनाथपुराण	ब्र० जिनदास	(सं०)	१४७	नेमिराजुलगीत	जिनदर्यसूरि	(हि०)	६१८
नेमिनाथपुराण	भागचन्द	(हि०)	१४६	नेमिराजुलगीत	भुवन्कोत्ति	(हि०)	६१८
नेमिनाथपूजा	कुवलयचन्द	(सं०)	७६३	नेमिराजुलपञ्चीसी	वितोदीलाल	(हि०)	४४१, ७४७
नेमिनाथपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	(सं०)	४६६	नेमिराजुलसञ्ज्ञाय	—	(हि०)	४४३
नेमिनाथपूजा	—	(हि०)	४६६	नेमिरासी	—	(हि०)	७४५
नेमिनाथपूजाष्टक	शंभूराम	(सं०)	४६६	नेमिस्तवन	जितसागरगणी	(हि०)	४००
नेमिनाथपूजाष्टक	—	(हि०)	४६६	नेमिस्तवन	ऋषि शिव	(हि०)	४००
नेमिनाथफागु	पुण्यरत्न	(हि०)	७४८	नेमिस्तोत्र	—	(सं०)	४३२
नेमिनाथमङ्गल	लालचन्द	(हि०)	६०५	नेमिपुरविविक्त [नेमिनुर राजमनिवोन्नि]	कवि ठक्कुरसी	(हि०)	६३८
नेमिनाथराजुल का बारहमासा	—	(हि०)	७५१	नेमीश्वरका गीत	नेमीचन्द	(हि०)	६२१
नेमिनाथरास	ऋषि रामचन्द	(हि०)	३६२	नेमीश्वरका बारहमासा	खेतसिंह	(हि०)	७६२
नेमिनाथस्तोत्र	पं० शालि	(सं०)	७५७	नेमीश्वरकी वेलि	ठक्कुरसी	(हि०)	७२२
नेमिनाथरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७१६, ७५२	नेमीश्वरकी स्तुति	भूधरदास	(हि०)	६१०
नेमिनाथरास	रत्नकीर्ति	(हि०)	६३८	नेमीश्वरका हिंडोलना	मुनि रतनकीर्ति	(हि०)	७२२
नेमिनाथरास	सित्तदेवसूरि	(हि०)	३६०	नेमीश्वरके दशभव	ब्र० धर्मराज	(हि०)	७३८
नेमिनाथस्तोत्र	पं० शालि	(सं०)	३६६	नेमीश्वरका राम	भाऊकाय	(हि०)	६३८
नेमिनाथाष्टक	भूधरदास	(हि०)	७७७	नेमीश्वरचीमाभा	सिद्धनन्दि	(हि०)	७२८
नेमिपुराण [हरिवंशपुराण]	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	१४७	नेमीश्वरका फाग	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७६३
नेमिनिर्वाण	महाकवि वाग्भट्ट	(सं०)	१७७	नेमीश्वरराजुलकी लहुरी	खेतसिंह सा	(हि०)	७७६
नेमिनिर्वाणपञ्जिका	—	(सं०)	१७७	नेमीश्वरराजुलविवाद	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	६१३
नेमिव्याहलो	—	(हि०)	२३१	नेमीश्वररास	मुनि रतनकीर्ति	(हि०)	७२२
नेमिराजमतीका खोमासिया	—	(हि०)	६१६	नेमीश्वररास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	६०१
नेमिराजमती की घोड़ी	—	(हि०)	४४१				६२१, ६३८
नेमिराजमतीका गीत	हीरानन्द	(हि०)	४४१	नेमितिक प्रयोग	—	(सं०)	६३३
नेमिराजमति बारहमासा	—	(हि०)	६५७	नेषधचरित्र	दर्पकीर्ति	(सं०)	१७७
नेमिराजमतिरास	रत्नसुक्ति	(हि०)	६१७	नीशेरवां बादशाहकी दस ताज	—	(हि०)	३३०
नेमिराजलव्याहलो	गोपीकृष्ण	(हि०)	२३२	न्यायकुमुदचन्द्रिका	प्रभाचन्द्रदेव	(सं०)	१३४
नेमिराजलबारहमासा	ज्ञानन्दसूरि	(हि०)	६१८	न्यायकुमुदचन्द्रोदय	भट्टकलङ्कदेव	(सं०)	१३४
राज विसञ्ज्ञाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
न्यायदीपिका	यति धर्मभूषण	(सं०)	१३५	पञ्चकल्याणकपूजा	छोटेलाल सित्तल	(हि०)	५००
न्यायदीपिकाभाषा	मंघी पन्नालाल	(हि०)	१३५	पञ्चकल्याणकपूजा	टेकचन्द्र	(हि०)	५०१
न्यायदीपिकाभाषा	मदासुख कामलीवाल	(हि०)	१३५	पञ्चकल्याणकपूजा	पन्नालाल	(हि०)	५०१
न्यायमाला	परमहंस परिव्राजकाचार्य	(सं०)	१३५	पञ्चकल्याणकपूजा	भैरवदान	(हि०)	५०१
न्यायशास्त्र	—	(सं०)	१३५	पञ्चकल्याणकपूजा	रूपचन्द्र	(हि०)	५००
न्यायसार	माधवदेव	(सं०)	१३५	पञ्चकल्याणकपूजा	शिवजीलाल	(हि०)	४६६
न्यायसार	—	(सं०)	१३५	पञ्चकल्याणकपूजा	—	(हि०)	४२६
न्यायसिद्धान्तमञ्जरी	भ० चूडामणि	(सं०)	१३६				५०१, ७१२
न्यायसिद्धान्तमञ्जरी	जानकीदास	(सं०)	१३५	पञ्चकल्याणकपूजाष्टक	—	(सं०)	६८३
न्यायसूत्र	—	(सं०)	१३६	पञ्चकल्याणक [मण्डलचित्र]	—		५२५
नृसिंहपूजा	—	(हि०)	६०८	पञ्चकल्याणकस्तुति	—	(प्रा०)	६१८
नृसिंहावतारचित्र	—		६०३	पञ्चकल्याणकोद्यापनपूजा	ज्ञानभूषण	(सं०)	६६०
नृवराष्ट्रारती	धिरुपाल	(हि०)	७७७	पञ्चकुमारपूजा	—	(हि०)	५०२, ७५६
नृवराष्ट्रमञ्जल	वंसी	(हि०)	७७७	पञ्चमेवपालपूजा	गङ्गादास	(सं०)	५०२
नृवराष्ट्रविधि	—	(सं०)	५६४, ६४०	पञ्चमेवपालपूजा	सोमसेन	(सं०)	७६५

प

पञ्चकरणवार्त्तिक	सुरेश्वराचार्य	(सं०)	२६१	पञ्चगुरुकल्याणपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	५०२
पञ्चकल्याणकपाठ	हरचन्द्र	(हि०)	४००	पञ्चगुरुको जयमाल	ब० रायमल्ल	(हि०)	७६३
पञ्चकल्याणकपाठ	हरिचन्द्र	(हि०)	७६६	पञ्चतत्त्वधारणा	—	(सं०)	१०६
पञ्चकल्याणकपाठ	—	(सं०)	६६६	पञ्चतन्त्र	पं० विष्णुशर्मा	(सं०)	३३०
पञ्चकल्याणकपूजा	अरुणमणि	(सं०)	५००	पञ्चतन्त्रभाषा	—	(हि०)	३३०
पञ्चकल्याणकपूजा	गुणकीर्ति	(सं०)	५००	पञ्चदश [१५] यन्त्रकी विधि	—	(सं०)	३४६
पञ्चकल्याणकपूजा	वादीभसिंह	(सं०)	५७०	पञ्चनमस्कारस्तोत्र	उमास्वामी	(सं०)	५७६, ७३६
पञ्चकल्याणकपूजा	सुधासागर	(सं०)	५००	पञ्चनमस्कारस्तोत्र	विद्यानन्दि	(सं०)	४०१
			५१६, ५३७	पञ्चनरमेष्ठीउद्यापन	—	(सं०)	५०२
पञ्चकल्याणकपूजा	सुयशकीर्ति	(सं०)	५००	पञ्चनरमेष्ठीगुण	—	(हि०)	६६
पञ्चकल्याणकपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	(सं०)	४६६				४२६, ७८८
पञ्चकल्याणकपूजा	—	(सं०)	५००	पञ्चनरमेष्ठीगुणमाल	—	(हि०)	७४५
			५१४, ५१८, ५१९, ६३६, ६६६	पञ्चनरमेष्ठीगुणवर्णन	डा. लूराम	(हि०)	६६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	सं० पृष्ठ
पञ्चपरमेष्ठीपुण्यस्तवन	—	(हि०)	७०७	पंचमीव्रतोद्यापन	हर्षकल्याण	(सं०)	५०४, ५३६
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	यशोनन्दि	(सं०)	५०२, ५१८	पंचमीव्रतोद्यापनपूजा	केशवसेन	(सं०)	६३८
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	५०२	पंचमीव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५०४
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	—	(सं०)	५०३	पंचमीस्तुति	—	(सं०)	६१८
			५१४, ५६३	पंचमेरुउद्यापन	भ० रत्नचन्द्र	(सं०)	५०५
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	डालूराम	(हि०)	५०३	पंचमेरुजयमाल	भूधरदास	(हि०)	५३६
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	देवचन्द्र	(हि०)	५०३, ५१८	पंचमेरुजयमाल	—	(हि०)	७१७
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	—	(हि०)	५०३	पंचमेरुपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	५१६
			५१८, ५१९, ६५२, ७१२	पंचमेरुपूजा	भ० गद्दीचन्द्र	(सं०)	६०७
पञ्चपरमेष्ठी [मण्डनचित्र]	—		५२५	पंचमेरुपूजा	—	(सं०)	५३६
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	—	(सं०)	४२२				५५७, ४६४, ६६४, ६६६, ७८४
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	—	(प्रा०)	६६१	पंचमेरुपूजा	—	(प्रा०)	६३५
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	जितशङ्करभस्मुरि	(हि०)	४४३	पंचमेरुपूजा	—	(प्रा०)	६३६
पञ्चपरमेष्ठीसप्तपञ्चपूजा	—	(सं०)	५०२	पंचमेरुपूजा	डालूराम	(हि०)	५०५
पञ्चपरवर्तन	—	(सं०)	३८	पंचमेरुपूजा	देवचन्द्र	(हि०)	५०५
पञ्चपालपैतृसी	—	(हि०)	६८६	पंचमेरुपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५०५
पञ्चप्ररूपणा	—	(सं०)	२६६				५१६, ५६२, ५६६, ७०४, ७५६
पञ्चवधावा	—	(हि०)	६४३, ६६१	पंचमेरुपूजा	सुखानन्द	(हि०)	५०५
पंचवधावा	—	(राज०)	६८२	पंचमेरुपूजा	—	(हि०)	५०५
पंचदालयतिपूजा	—	(हि०)	५०४				५१६, ७४५
पंचमगतिवेदि	हर्षकीर्ति	(हि०)	६२१	पंचमङ्गलपाठ, पंचमङ्गलार्णवकमङ्गल, पंचमङ्गल	—		
			६६१, ६६८, ७५०, ७६५		रूपचन्द्र	(हि०)	३६८,
पंचमासचतुर्दशीपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	(सं०)	५४०				४२८, ४०१ ५०४, ५१८, ५६५, ५७०, ६०४, ६२४,
पंचमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	सुरेन्द्रकीर्ति	(सं०)	५०४				६४२, ६४६, ६५०, ६५२, ६६१, ६६४, ६७०, ६७३,
पंचमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६				६७५, ६७६, ६८१, ६८१, ६८३, ७०४, ७०५, ७१०,
पंचमीव्रतोद्यापन	—	(सं० हि०)	५१७				७१४, ७२०, ७३५, ७६३, ७८८
पंचमीव्रतपूजा	केशवसेन	(सं०)	५१५	पंचयतिस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
पंचमीव्रतपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	५०४	पंचरत्नपरीक्षा की गाथा	—	(प्रा०)	७५८
पंचमीव्रतपूजा	—	(सं० हि०)	५१७	पंचलब्धिविचार	—	(प्रा०)	७०७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पंचसंग्रह	आ० नेमिचन्द्र	(प्रा०)	३८	पक्षीशास्त्र	—	(सं०)	६७४
पंचसंग्रहटीका	अमितगति	(सं०)	३६	पट्टीपहाड़ीकी पुस्तक	—	(हि०)	३६८
पंचसंग्रहटीका	—	(सं०)	४०	पट्टरीति	विष्णुभट्ट	(सं०)	१३६
पञ्चसंग्रहवृत्ति	अभयचन्द्र	(सं०)	३६	पट्टावलि	—	(हि०)	३७३, ७६६
पंचसंधि	—	(सं०)	२६१	पठिकम्मगासूत्र	—	(प्रा०)	६१६
पंचस्तोत्र	—	(सं०)	५७८	पराकरहाजयमाल	—	(अप०)	६३६
पंचस्तोत्रटीका	—	(सं०)	४०१	पत्रपरीक्षा	पात्रकेशरी	(सं०)	१३६
पंचस्तीव्रसंग्रह	—	(सं०)	४०१	पत्रपरीक्षा	विद्यानाम्बे	(सं०)	१३६
पंचाख्यान	विष्णुशर्मा	(सं०)	२३२	पद्यापथ्यविचार	—	(सं०)	१२६
पंचाङ्ग	चण्ड		२८५	पद	अखैराम	(हि०)	५८५
पंचाङ्गप्रबोध	—	(सं०)	२८५	पद	अक्षयराम	(हि०)	५८५
पंचाङ्गमाधन	गणेश [बेजवधुत्र]	(सं०)	२८५	पद	अजयराज	(हि०)	५८१
पंचाधिकार	—	(सं०)	३७३, ५१६				६६७, ७२४, ५८०
पंचाध्यायी	—	(हि०)	७५६	पद	अनन्तकीर्ति	(हि०)	५८५
पंचासिका	त्रिभुवनचन्द्र	(हि०)	६७३	पद	अमृतचन्द्र	(हि०)	५८६
पंचास्तिकाय	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	४०	पद	उदयराम	(हि०)	७८६, ७८८
पंचास्तिकायटीका	अमृतचन्द्रसूरि	(सं०)	४१	पद	कनकीकीर्ति	(हि०)	५८१
पंचास्तिकायभाषा	बुधजन	(हि०)	४१				६६६, ७०२, ७२४, ७७४
पंचास्तिकायभाषा	पं० हीरानन्द	(हि०)	४१	पद	अ० कपूरचन्द्र	(हि०)	५७०
पंचास्तिकायभाषा	पांडे हेमराज	(हि०)	४१				६१५, ६२४
पंचास्तिकायभाषा	—	(हि०)	७१६, ७२०	पद	कबीर	(हि०)	७७७, ७६३
पंचेन्द्रिवेलि	छीदल	(हि०)	७३८	पद	कर्मचन्द्र	(हि०)	५८७
पंचेन्द्रिवेलि	ठक्कुरसी	(हि०)	७०३	पद	किशनगुलाब	(हि०)	६६४, ७६३
			७२२, ७६५	पद	किशनदास	(हि०)	६४६
पंचेन्द्रधराम	—	(हि०)	६६३	पद	किशनसिंह	(हि०)	५६०, ७०४
पंडितमरणा	—	(सं०)	६०४	पद	कुमुदचन्द्र	(हि०)	७५७, ६७०
पंथीगीत	छीदल	(हि०)	८३८, ७६५	पद	केशरगुलाब	(हि०)	४४५
पंद्रहतिथी	—	(हि०)	११०	पद	खुशालचन्द्र	(हि०)	५८२
पक्की स्याही बनानेकी विधि	—	(हि०)	७४१				६२४, ६६४, ६६४, ६६८, ७०३, ७८३, ७६८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद	खेमचन्द्र	(हि०)	५८०	पद	जीवराम	(हि०)	५६०, ७६१
			५८३, ५६१, ६४६	पद	जोधराज	(हि०)	४६४
पद	गरीबदास	(हि०)	७६३				६६६, ७०६, ७८६, ७६८
पद	गुणचन्द्र	(हि०)	५८१	पद	टोडर	(हि०)	५८२
			५८५, ५८७, ५८८				६१४, ६२३, ७७६, ७७७
पद	गुणपूरण	(हि०)	७६८	पद	त्रिलोककीर्ति	(हि०)	५८०, ५८१
पद	गुमानीराम	(हि०)	६६६	पद	म० दयाल	(हि०)	५८७
पद	गुलाबकृष्ण	(हि०)	५८४, ६१४	पद	दयालदास	(हि०)	७४६
पद	घनश्याम	(हि०)	६२३	पद	दुरिगह	(हि०)	७४६
पद	चतुर्भुज	(हि०)	७७०	पद	दलजी	(हि०)	७४६
पद	चन्द्र	(हि०)	५८७, ७६३	पद	दास	(हि०)	७४६
पद	चन्द्रभान	(हि०)	५६१	पद	दिलाराम	(हि०)	७६३
पद	चैनविजय	(हि०)	५८८, ७६८	पद	दीपचन्द्र	(हि०)	५८३
पद	चैनमुख	(हि०)	७६३	पद	दुलीचन्द्र	(हि०)	६६३
पद	छीदल	(हि०)	७२३	पद	देवसेन	(हि०)	५८६
पद	जगताराम	(हि०)	५८१	पद	देवाग्रज	(हि०)	७८५
			५८२, ५८४, ५८५, ५८८, ५८९, ६१५, ६६७, ६६६,				७८६, ७६३
			७२४, ७५७, ७६८, ७६९	पद	देवीदास	(हि०)	६४६
पद	जगराम	(हि०)	४४५, ७८५	पद	देवीसिंह	(हि०)	६६४
पद	जनमल	(हि०)	५८५	पद	देवेन्द्रभूषण	(हि०)	५८७
पद	जयकीर्ति	(हि०)	५८५, ५८८	पद	दौलतराम	(हि०)	६५४
पद	जयचन्द्र छामडा	(हि०)	४४६				७०६, ७८२, ७६३
पद	जादूराम	(हि०)	४४५	पद	द्यानतराय	(हि०)	५८३
पद	जानिमोहम्मद	(हि०)	५८६				५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ६२२,
पद	जिनदास	(हि०)	५८१				६२४, ६४३, ६४६, ६५४, ७०४, ७०६, ७१३, ७४६
			५८८, ६१५, ६६८, ७४६, ७६४, ७७४, ७६३,	पद	धर्मपाल	(हि०)	५८८, ७६८
पद	जिनहर्ष	(हि०)	५६०	पद	धनराज	(हि०)	७६८
पद	जीवणदास	(हि०)	४४५	पद	नथ विमल	(हि०)	५८१
पद	जीवणराम	(हि०)	५८०	पद	नन्ददास	(हि०)	५८७
							७७०, ७०४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद	नयनसुख	(हि०)	५८३	पद	भाउ	(हि०)	५८७
पद	नरपाल	(हि०)	५८८	पद	भागचन्द	(हि०)	५७०
पद	नवल	(हि०)	५७१	पद	भानुकीर्ति	(हि०)	५८३
५८२, ५८६, ५८०, ६१५, ६४८, ६५३, ६५४, ६५५, ७०६, ७८२, ७८३, ७८८							५८५, ६१५
पद	ब्र० नाथू	(हि०)	६२२	पद	भूधरदास	(हि०)	५८०
पद	निर्मल	(हि०)	५८१	५८६, ५८६, ५८०, ६१४, ६१५, ६४८, ६५४, ६६४			
पद	नेमिचन्द	(हि०)	५८०	६६४, ७८५, ७८३, ७८८			
			६२२, ६३३	पद	मञ्जलसराय	(हि०)	५८१
पद	न्यासत	(हि०)	७८८	पद	मनराम	(हि०)	६६०
पद	पद्मातिलक	(हि०)	५८३	७२४, ७४६, ७६४, ७६६, ७७६			
पद	पद्मानन्द	(हि०)	६४३	पद	मनसाराम	(हि०)	५८०
पद	परमानन्द	(हि०)	७७०				६६३, ६६४
पद	पारसदास	(हि०)	६५४	पद	मनोहर	(हि०)	७६३
पद	पुरुषोत्तम	(हि०)	५८१				७६४, ७८५
पद	पूनी	(हि०)	७८५	पद	मलूकचन्द	(हि०)	४४६
पद	पूरणदेव	(हि०)	६६३	पद	मलूकदास	(हि०)	७६३
पद	फतेहचन्द	(हि०)	५७६	पद	मदीचन्द	(हि०)	५७६
			५८०, ५८१, ५८२	पद	महेन्द्रकीर्ति	(हि०)	६२०, ७८६
पद	शिवतराम	(हि०)	५८३	पद	माणिकचन्द	(हि०)	४४७
			५८६, ६६८, ७८२, ७८६, ७८३				४४८, ८६८
पद	अनारसीदास	(हि०)	५८२	पद	मुकुन्ददास	(हि०)	६६०
५८३, ५८५, ५८६, ५८७, ५८६, ६२१, ६२३, ६६७, ७८८				पद	मेला	(हि०)	७७६
पद	अलदेव	(हि०)	७८८	पद	मेलीराम	(हि०)	७७६
पद	आलचन्द	(हि०)	६२५	पद	मोतीराम	(हि०)	५६१
पद	बुधजन	(हि०)	५७०	पद	मोहन	(हि०)	७६४
५७१, ६५३, ६५४, ७०६, ७८५, ७८८				पद	राजचन्द्र	(हि०)	५७७
पद	भगताराम	(हि०)	७८८	पद	राजसिंह	(हि०)	५८७
पद	भगवतीदास	(हि०)	७०६	पद	राजाराम	(हि०)	५६०
पद	भगोसाह	(हि०)	५८१	पद	राम	(हि०)	६५३
				पद	रामकिशन	(हि०)	६६८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद	रामचन्द्र	(हि०)	५८१	पद	सकलकीर्ति	(हि०)	५८८
			६६८, ६६९	पद	सन्तदास	(हि०)	६५४, ७५६
पद	रामदास	(हि०)	५८३	पद	सबलसिंह	(हि०)	६२४
			५८८, ६६७	पद	समयसुन्दर	(हि०)	५७६
पद	रामभगत	(हि०)	५८२				५८८, ५८९, ७७७
पद	रूपचन्द्र	(हि०)	५८५	पद	श्यामदास	(हि०)	७६४
			५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ६२४, ६६१, ७२४, ७४६	पद	सवाईराम	(हि०)	५६०
			७५५, ७६३, ७६५, ७८३	पद	साईदास	(हि०)	६२०
पद	रेखराज	(हि०)	७६८	पद	साहकीर्ति	(हि०)	७७७
पद	लक्ष्मीसागर	(हि०)	६८२	पद	साहिवराम	(हि०)	७६८
पद	ऋषि लहरी	(हि०)	५८५	पद	सुन्देव	(हि०)	५८०
पद	लालचन्द्र	(हि०)	५८२	पद	सुन्दर	(हि०)	७२४
			५८३, ५८७, ६६६, ७६३	पद	सुन्दरभूषण	(हि०)	५८७
पद	विजयकीर्ति	(हि०)	५८०	पद	सूरजमल	(हि०)	५८१
			५८२, ५८४, ५८७, ५८८, ५८९, ५८९, ६६७	पद	सूरदास	(हि०)	७६६, ७६३
पद	घिनोदीलाल	(हि०)	५६०	पद	सुरेन्द्रकीर्ति	(हि०)	६२२
			७२३, ७५७, ७८३, ७६८	पद	सेवग	(हि०)	७६३, ७६८
पद	विश्वभूषण	(हि०)	५६१, ६२१	पद	दटमलदास	(हि०)	६२४
पद	विमनदास	(हि०)	५८७	पद	हरखचन्द्र	(हि०)	५८३
पद	विहारीदास	(हि०)	५८७				५८४, ५८५, ७६३
पद	वृन्दावन	(हि०)	६४३	पद	दर्पकीर्ति	(हि०)	५८६
पद	ऋषि शिवलाल	(हि०)	४४३				५८५, ५८८, ५९०, ६२०, ६२४, ६६३, ७०१, ७५०
पद	शिवसुन्दर	(हि०)	७५०				७६३, ७६४
पद	शुभचन्द्र	(हि०)	७०२, ७२४	पद	हरिचन्द्र	(हि०)	६४६
पद	शोभाचन्द्र	(हि०)	५८३	पद	हरिसिंह	(हि०)	५८२
पद	श्रीपाल	(हि०)	६७०				५८५, ६२०, ६४३, ६४४, ६६३, ६६६, ७७२, ७७६
पद	श्रीभूषण	(हि०)	५८३				७६३, ७६६
पद	श्रीराम	(हि०)	५६०	पद	हरीदास	(हि०)	७७०
				पद	मुनि हीराचन्द्र	(हि०)	५८१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद	हेमराज	(हि०)	५६०		४७५, ५०६, ५६७, ६५५, ६६२		
पद	—	(हि०)	४४६	पद्मावतीमण्डलपूजा	—	(सं०)	५०६
५७०, ५७६, ६०१, ६४३, ६४४, ६५०, ६५३, ७०३				पद्मावतीरानीआराधना	समयसुन्दर	(हि०)	६१७
७०४, ७०५, ७२४, ७३१, ७५३, ७५४, ७७०, ७७७				पद्मावतीशांतिका	—	(सं०)	५०६
पदवी	यशःकीर्ति	(अप०)	६४२	पद्मावतीसहस्रनाम	—	(सं०)	४०२
पदवी	सहस्रपात	(अप०)	६४१		५०६, ५६६, ६३६, ७११, ७४१		
पद्यकोष	गोवर्धन	(सं०)	६६६	पद्मावतीसहस्रनामपूजा	—	(सं०)	५०६
पद्यचरितसार	—	(हि०)	१७७	पद्मावतीस्तवनमंत्रसहित	—	(सं०)	४२३
पद्यपुराण	भ० धर्मकीर्ति	(सं०)	१४६	पद्मावतीस्तोत्र	—	(सं०)	४०२
पद्यपुराण	रावधेराचार्य	(सं०)	१४६	४२३, ४३०, ४३२, ४३३, ५०६, ५३६, ५६६, ६४५			
पद्यपुराण (रामपुराण): भ० सोमसेन		(सं०)	१४६	६४६, ६४७, ६७६, ७३५, ७५७, ७७६			
पद्यपुराण (उत्तरखण्ड)	—	(सं०)	१४६	पद्मावतीस्तोत्र	समयसुन्दर	(हि०)	६५५
पद्यपुराणभाषा	सुशालचन्द्र	(हि०)	१४६	पद्मावतीस्तोत्रबीजएवंसाधनविधि	—	(सं०)	७४१
पद्यपुराणभाषा	दौलतराम	(हि०)	१४६	पदविनती	—	(हि०)	७१५
पद्यनंदिपंचविंशतिका	पद्मानंदि	(सं०)	६६	पद्यसंग्रह	बिहारी	(हि०)	७१०
पद्यनंदिपंचविंशतिकाटीका	—	(सं०)	६७	पद्यसंग्रह	गंग	(हि०)	७१०
पद्यनंदिपंचविंशतिका	जगताराम	(हि०)	६७	पदसंग्रह	आनन्दधन	(हि०)	७१०, ७७७
पद्यनंदिपञ्चोत्तीमाभाषा मञ्जालाल खिदूका		(हि०)	६८	पदसंग्रह	भ० कपूरचन्द्र	(हि०)	४४५
पद्यनंदिपञ्चोत्तीमाभाषा	—	(हि०)	६८	पदसंग्रह	खेमराज	(हि०)	४४५
पद्यनंदिश्रावकाचार	पद्मानंदि	(सं०)	६८	पद्यसंग्रह	गंगाराम वैद्य	(हि०)	६१५
पद्मावतीपद्यकवृत्ति	पाशवंदेय	(सं०)	४०२	पदसंग्रह	चैनविजय	(हि०)	४४५
पद्मावती की ढाल	—	(हि०)	४०२	पदसंग्रह	चैनसुख	(हि०)	४४६
पद्मावतीकल्प	—	(सं०)	३४६	पदसंग्रह	जगताराम	(हि०)	४४५
पद्मावतीकवच	—	(सं०)	५०६, ७४१	पदसंग्रह	जिनदास	(हि०)	७७२
पद्मावतीचक्रेश्वरीस्तोत्र	—	(सं०)	४३२	पदसंग्रह	जोधा	(हि०)	४४५
पद्मावतीछंद	महाचन्द्र	(सं०)	६०७	पदसंग्रह	भांभूराम	(हि०)	४४५
पद्मावती दण्डक	—	(सं०)	४०२, ७४१	पदसंग्रह	दलाराम	(हि०)	६२०
पद्मावतीपटल	—	(सं०)	५०६, ७४१	पदसंग्रह	देवाग्रज	(हि०)	४४६
पद्मावतीपूजा	—	(सं०)	४०२		६३५, ७४०, ७८३		

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पदसंग्रह	दौलतराम	(हि०)	४४५, ४४६	पदस्तुति	—	(हि०)	७११
पदसंग्रह	द्यानतराय	(हि०)	४४५, ७७७	परमज्योति	बनारसीदास	(हि०)	४०२
पदसंग्रह	नयनसुख	(हि०)	४४५, ७२६			५६०, ६६४, ७७४	
पदसंग्रह	नवल	(हि०)	४४५, ७२६	परमसन्तस्थानकव्यूजा	सुधासागर	(सं०)	५१६
पदसंग्रह	परमासन्द	(हि०)	६८४	परमात्मपुराण	दीपचन्द	(हि०)	१०६
पदसंग्रह	बलतराम	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	(अप०)	११०
पदसंग्रह	बनारसीदास	(हि०)	६२२, ७६५			५७५, ६३७, ६६३, ७०७, ७४७	
पदसंग्रह	बुधजन	(हि०)	४४५, ६८२	परमात्मप्रकाशटीका	आ० अमृतचन्द	(सं०)	११०
पदसंग्रह	भगतराम	(हि०)	७३६	परमात्मप्रकाशटीका	ब्रह्मदेव	(सं०)	१११
पदसंग्रह	भागचन्द	(हि०)	४४५, ४४६	परमात्मप्रकाशटीका	—	(सं०)	१११
पदसंग्रह	भूधरदास	(हि०)	४४५, ६२०, ७७६, ७७७, ७८६	परमात्मप्रकाशटीका	—	(सं०)	१११
पदसंग्रह	मंगलचन्द	(हि०)	४४७	परमात्मप्रकाशटीका	—	(सं०)	१११
पदसंग्रह	मनोहर	(हि०)	४४५, ७८६	परमात्मप्रकाशटीका	—	(सं०)	१११
पदसंग्रह	लाल	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाशटीका	—	(सं०)	१११
पदसंग्रह	विश्वभूषण	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाशटीका	—	(सं०)	१११
पदसंग्रह	शोभाचन्द	(हि०)	७७७	परमात्मप्रकाशटीका	—	(सं०)	१११
पदसंग्रह	शुभचन्द	(हि०)	७७७	परमात्मप्रकाशटीका	—	(सं०)	१११
पदसंग्रह	साहिबराम	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाशटीका	—	(सं०)	१११
पदसंग्रह	सुन्दरदास	(हि०)	७१०	परमात्मप्रकाशटीका	—	(सं०)	१११
पदसंग्रह	सूरदास	(हि०)	६८४	परमात्मप्रकाशटीका	—	(सं०)	१११
पदसंग्रह	सेबक	(हि०)	४४७	परमात्मप्रकाशटीका	—	(सं०)	१११
पदसंग्रह	हरखचन्द	(हि०)	६६३	परमात्मप्रकाशटीका	—	(सं०)	१११
पदसंग्रह	हरीसिंह	(हि०)	७७२	परमात्मप्रकाशटीका	—	(सं०)	१११
पदसंग्रह	हीराचन्द	(हि०)	४४५, ४४७	परमात्मप्रकाशटीका	—	(सं०)	१११
पदसंग्रह	—	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाशटीका	—	(सं०)	१११
			४४५, ६७६, ६८०, ६८१, ७०१, ७०८, ७०९, ७१०				
			७१६, ७१७, ७१८, ७२१, ७४३, ७४६, ७५६, ७६०				
			७५२, ७५६, ७५७, ७६१, ७७४, ७७६, ७८१, ७८०				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
परमार्थहिण्डोलना	रूपचन्द्र	(हि०)	७६५	पाँचपरवीप्रतकीकथा	देणीदास	(हि०)	६२१
परमेष्ठिगोकेशगुणव्यतिशय	—	(प्रा०)	५७५	पाँचबोल	—	(गुजराती)	३३०
पर्युषणकला	—	(सं०)	११७	पाँचमाहकीचौदस (मण्डलचित्र)	—		५२५
पर्युषणस्तुति	—	(हि०)	४५२	पाँचवासीकामंडलचित्र	—		५२५
परसरामकथा	—	(सं०)	२३३	पाटनपुरसज्जाय	श्यामसुन्दर	(हि०)	४४६
परिभाषासूत्र	—	(सं०)	२६१	पाठसंग्रह	—	(सं०)	४०५, ५७६
परिभाषेन्दुशेखर	नागोजीभट्ट	(सं०)	२६१	पाठसंग्रह	—	(सं० प्रा०)	५७३
परिशिष्टपर्व	—	(सं०)	१७८	पाठसंग्रह	—	(प्रा०)	५७३
परीक्षामुख	माणिक्यनंदि	(सं०)	१३६	पाठसंग्रह	—	(सं० हि०)	४०५
परीक्षामुखभाषा	जयचन्द्र छावड़ा	(हि०)	१३७	पाठसंग्रह	संग्रहकर्ता जैतरामबाफना	—	
परीषद्वाचन	—	(हि०)	६८			(हि०)	४०५
पल्यमंडलविधान	शुभचन्द्र	(सं०)	५३८	पाण्डवपुराण	यशःकीर्ति	(सं०)	१५०
पल्यविचार	—	(सं०)	२८६	पाण्डवपुराण	श्रीभूषण	(सं०)	१५०
पल्यविचार	—	(हि०)	२८६	पाण्डवपुराण	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	१५०
पल्यविधानकथा	—	(सं०)	२४३, २४६	पाण्डवपुराणभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	१५०
पल्यविधानकथा	सुशालचन्द्र	(हि०)	२३३	पाण्डवपुराणभाषा	बुलाकीदास	(हि०)	१५०, ७४५
पल्यविधानपूजा	अनन्तकीर्ति	(सं०)	५०७	पाण्डवचरित्र	लालबर्द्धन	(हि०)	१७८
पल्यविधानपूजा	रत्ननंदि	(सं०)	५०६	पारिणीयव्याकरण	पाणिनि	(सं०)	२६१
			५०६, ५१६	पात्रकेशरीस्तोत्र	—	(सं०)	४०५
पल्यविधानपूजा	ललितकीर्ति	(सं०)	५०६	पात्रदानकथा	ब० नेमिदत्त	(सं०)	२३३
पल्यविधानपूजा	—	(सं०)	५०७	पार्थिवेश्वर	—	(सं०)	४०५
पल्यविधानरास	भ० शुभचन्द्र	(हि०)	३६३	पार्थिवेश्वरचिंतामणि	—	(सं०)	४०५
पल्यविधानसप्तोपाख्यानकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२३३	पार्श्वछन्द	ब० लेखराज	(हि०)	३८६
पल्यविधि	—	(सं०)	६७०	पार्श्वजिनगीत	छाजू समयसुन्दर के शिष्य)	—	
पल्यव्रतोद्यापन	शुभचन्द्र	(सं०)	५०७			(हि०)	४४८
पल्योपमोपवासविधि	—	(सं०)	५०७	पार्श्वजिनपूजा	साह लोहट	(हि०)	५०७
पवनदूतकाव्य	वादिचन्द्रसूरि	(सं०)	१७८	पार्श्वजिनस्तवन	जितचन्द्र	(हि०)	७००
पहेलियाँ	मारू	(हि०)	६५१	पार्श्वजिनेश्वरस्तोत्र	—	(सं०)	४२६
पाँचपरवीकथा	ब्रह्मवेणु	(हि०)	६८५	पार्श्वनाथपञ्चवर्द्धमानस्तवन	—	(सं०)	४०५
				पार्श्वनाथकीभारती	मुनि कनककीर्ति	(हि०)	५६१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पार्श्वनाथकीपुराणमाल	लोहट	(हि०)	७७५
पारसनाथकीनिसारी	—	(हि०)	६५०
पार्श्वनाथकीनिशानी	जिनद्वर्प	(हि०)	४४८, ५७६
पार्श्वनाथकीनिशानी	—	(हि०)	७०२
पार्श्वनाथकेदर्शन	वृन्दावन	(हि०)	६२५
पार्श्वनाथचरित्र	रङ्गधू	(अ०)	१७६
पार्श्वनाथचरित्र	घादिराजसूरि	(सं०)	१७६
पार्श्वनाथचरित्र	भ० सकलकीर्ति	(सं०)	१७६
पार्श्वनाथचरित्र	विश्वभूषण	(हि०)	५६८
पार्श्वजिनचैत्यालयचित्र	—		६०३
पार्श्वनाथजयमाल	लोहट	(हि०)	६४२
पार्श्वनाथजयमाल	—	(हि०)	६५५, ६७६
पार्श्वनाथपद्मावलीस्तोत्र	—	(सं०)	४०५
पार्श्वनाथपुराण [पार्श्वपुराण]	भूधरदास	—	(हि०) १७६, ७४४, ७६१
पार्श्वनाथपूजा	—	(सं०)	४२३
			५६०, ६०६, ६४०, ६५५, ७०४, ७३१
पार्श्वनाथपूजा (विधानसहित)	—	(सं०)	५१३
पार्श्वनाथपूजा	हर्षकीर्ति	(हि०)	६६३
पार्श्वनाथपूजा	—	(हि०)	५०७
			५६६, ६००, ६२३, ६४५, ६४८
पार्श्वनाथपूजामंत्रसहित	—	(सं०)	५७५
पार्श्वमहिम्नस्तोत्र	महामुनि रामसिंह	(सं०)	४०६
पार्श्वनाथलक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(सं०)	४०५
पार्श्वनाथस्तवन	देवचंद्रसूरि	(सं०)	६३३
पार्श्वनाथस्तवन	राजसेन	(हि०)	७३७
पार्श्वनाथस्तवन	जगरूप	(हि०)	६८१
पार्श्वनाथस्तवन [पार्श्वविनती]	ल० नाथू	—	(हि०) ६७०, ६८३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पार्श्वनाथस्तवन	समथराज	(हि०)	६६७
पार्श्वनाथस्तवन	समथमुन्दरगणि	(राज०)	६१७
पार्श्वनाथस्तवन	—	(हि०)	४४६, ६४५
पार्श्वनाथस्तुति	—	(हि०)	७४५
पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(सं०)	६१४
			७०२, ७४५
पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मनंदि	(सं०)	५६६, ७४४
पार्श्वनाथस्तोत्र	रघुनाथदास	(सं०)	४१३
पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	(सं०)	५६६
पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(सं०)	४०५
			४०६, ४२४, ४२५, ४२६, ४३२, ५६६, ५७८, ६४५,
			६४७, ६४८, ६५१, ६७०, ७६३
पार्श्वनाथस्तोत्र	द्यानतराय	(हि०)	४०६
			४०६, ५६६, ६१५
पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(हि०)	४०६
			४४६, ५६६, ७३३
पार्श्वनाथस्तोत्रटीका	—	(सं०)	४०६
पार्श्वनाथाष्टक	—	(सं०)	४०६, ६७६
पार्श्वनाथाष्टक	सकलकीर्ति	(हि०)	७७७
पाराविधि	—	(हि०)	२६६
पारावारी	—	(सं०)	२८६
परावारीसज्जनरंजनीटीका	—	(सं०)	२८६
पावागिरीपूजा	—	(हि०)	७३०
पाशाकेवली	गर्गमुनि	(सं०)	२८६, ६४७
पाशाकेवली	ज्ञानभास्कार	(सं०)	२८६
पाशाकेवली	—	(सं०)	२८६, ७०१
पाशाकेवली	अबजद	(हि०)	७१३
पाशाकेवली	—	(हि०)	२८७
			५६५, ६०३, ७१३, ७१८, ७८५, ७८६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
विंगलछंदशास्त्र	माखन कवि	(हि०)	३१०	पुरुषार्थसिद्धयुपायभाषा	टोडरमल	(हि०)	६६
विंगलछंदशास्त्र (छंद रत्नावली)---				पुष्कराष्टपूजा	विश्वभूषण	(सं०)	४६७
	हरिरामदास	(हि०)	३११	पुष्पदन्तजिनपूजा	—	(सं०)	५०६
विंगलप्रदीप	भट्ट लक्ष्मीनाथ	(सं०)	३११	पुष्पाञ्जलिकथा	—	(अप०)	६३३
विंगलभाषा	रूपदीप	(हि०)	७०६	पुष्पाञ्जलिजयमाल	—	(अप०)	७४४
विंगलशास्त्र	नागराज	(सं०)	३११	पुष्पाञ्जलिविधानकथा	पं० हरिश्चन्द्र	(अप०)	२४५
विंगलशास्त्र	—	(सं०)	३११	पुष्पाञ्जलिविधानकथा	—	(सं०)	२४३
पीठपूजा	—	(सं०)	६०८	पुष्पाञ्जलिब्रतकथा	जिनदास	(सं०)	२३४
पीठप्रक्षालन	—	(सं०)	६७२	पुष्पाञ्जलिब्रतकथा	श्रुतकीर्ति	(सं०)	२३४
पुच्छीसेरा	—	(अ०)	६६	पुष्पाञ्जलिब्रतकथा	ललितकीर्ति	(सं०)	६६५, ७६४
पुष्पकलीसी	समयसुन्दर	(हि०)	६१६	पुष्पाञ्जलिब्रतकथा	सुशालचन्द्र	(हि०)	२३४
पुष्पतत्ववर्चा	—	(सं०)	४१				२४५, ७३१
पुष्पास्त्रवकथाकोश	मुमुक्षु रामचंद्र	(सं०)	२३३	पुष्पाञ्जलिव्रतोद्यापन [पुष्पाञ्जलिब्रतपूजा]	गङ्गादास	(सं०)	५०८, ५१६
पुष्पास्त्रवकथाकोश	टेकचंद्र	(हि०)	२३४				
पुष्पास्त्रवकथाकोश	दौलतराम	(हि०)	२३३	पुष्पाञ्जलिब्रतपूजा	भ० रतनचन्द्र	(सं०)	५०८
पुष्पास्त्रवकथाकोश	—	(हि०)	२३३	पुष्पाञ्जलिब्रतपूजा	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	५०८
पुष्पास्त्रवकथाकोशसूची	—	(हि०)	२३४	पुष्पाञ्जलिब्रतपूजा	—	(सं०)	५०८, ५३६
पुष्पाह्वाचन	—	(सं०)	५०७, ६६६	पुष्पाञ्जलिब्रतविधानकथा	—	(सं०)	२३४
पुरन्दरचीर्घ	मालदेव	(हि०)	७३८	पुष्पाञ्जलिब्रतोद्यापन	—	(सं०)	५४०
पुरन्दरपूजा	—	(सं०)	५१६	पूजा	पद्मनन्दि	(सं०)	५६०
पुरन्दरविधानकथा	—	(सं०)	२४३	पूजा एवं कथासंग्रह	सुशालचन्द्र	(हि०)	५१६
पुरन्दरब्रतोद्यापन	—	(सं०)	५०८	पूजाक्रिया	—	(हि०)	५०८
पुरश्चरणविधि	—	(सं०)	२८७	पूजासामग्री की सूची	—	(हि०)	६१२
पुराणसार	श्रीचन्द्रमुनि	(सं०)	१५१	पूजा व जयमाल	—	(सं०)	५६१
पुराणसारसंग्रह	भ० सकलकीर्ति	(सं०)	१५१	पूजा धमाल	—	(सं०)	६५५
पुरुषस्त्रीसंवाद	—	(हि०)	७८६	पूजापाठ	—	(हि०)	५१२
पुरुषार्थानुशासन	गोविन्दभट्ट	(सं०)	६६	पूजापाठसंग्रह	—	(सं०)	५०८
पुरुषार्थसिद्धयुपाय	अमृतचन्द्राचार्य	(सं०)	६८				६४६, ६८२, ६६७, ६६६, ७१३, ७१५, ७१८, ७१६
पुरुषार्थसिद्धयुपायवचनिका	भूधर मिश्र	(हि०)	६६				७८०, ७६६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पूजापाठसंग्रह	—	(हि०)	५१०	प्रक्रियाकीमुदी	—	(सं०)	२६१
			५११, ७४३, ७४४	पृच्छावली	—	(हि०)	६५७
पूजापाठस्तोत्र	—	(सं० हि०)	७१०	प्रत्याख्यान	—	(प्रा०)	७०
			७५४	प्रतिक्रमण	—	(सं०)	६६
पूजाप्रकरण	रमाध्वामी	(सं०)	५१२				४२६, ५७१
पूजाप्रतिष्ठापाठसंग्रह	—	(सं०)	६६६	प्रतिक्रमण	—	(प्रा०)	६६
पूजामहात्म्यविधि	—	(सं०)	५१२	प्रतिक्रमण	—	(प्रा० सं०)	४२५
पूजावर्णविधि	—	(सं०)	५१२				५७३
पूजाविधि	—	(प्रा०)	५१२	प्रतिक्रमणपाठ	—	(प्रा०)	६६
पूजाष्टक	विश्वभूषण	(सं०)	५१३	प्रतिक्रमणसूत्र	—	(प्रा०)	६६
पूजाष्टक	अभयचन्द्र	(हि०)	५१२	प्रतिक्रमणसूत्र [वृत्तिसहित]	—	(प्रा०)	६६
पूजाष्टक	आशानन्द	(हि०)	५१२	प्रतिमाउत्थापकहूँ उपदेश जगरूप		(हि०)	७०
पूजाष्टक	लोहट	(हि०)	५१२	प्रतिमासांतचतुर्दशी [प्रतिमासांतचतुर्दशीप्रतोद्यापनपूजा]			
पूजाष्टक	विनोदलाल	(हि०)	७७७				
पूजाष्टक	—	(हि०)	५१२, ७०१	अक्षयराम	(सं०)	५१६	
पूजासंग्रह	—	(सं०)	६०३	प्रोतमासांतचतुर्दशीपूजा देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	७६१	
			६६४, ६६५, ७११, ७१२, ७२५	प्रतिमासांतचतुर्दशीप्रतोद्यापन	—	(सं०)	५१४,
पूजासंग्रह	रामचन्द्र	(हि०)	५२०				५२०, ५४०
पूजासंग्रह	लालचन्द	(हि०)	७७७	प्रतिमासान्तचतुर्दशीप्रतोद्यापनपूजा रामचन्द्र	(सं०)	५२०	
पूजासंग्रह	—	(हि०)	५६५	प्रतिष्ठाकु कुंभपत्रिका	—	(सं०)	३७३
			६०४, ६६२, ६६५, ७०७, ७०८, ७११, ७१४, ७२६,	प्रतिष्ठादर्श	श्रीराजकीर्ति	(सं०)	५२०
			७३०, ७३१, ७३३, ७३४, ७३६, ७४८ ।	प्रतिष्ठादीपक	पं० नरेन्द्रसेन	(सं०)	५२१
पूजासार	—	(सं०)	६२०	प्रतिष्ठापाठ	आशाधर	(सं०)	५२१
पूजास्तोत्रसंग्रह	—	(सं० हि०)	६६६	प्रतिष्ठापाठ [प्रतिष्ठासार]	वसुनंदि	(सं०)	५२१, ५२२
			७०२, ७०८, ७०९, ७११, ७१३, ७१४, ७१६, ७२५,	प्रतिष्ठापाठ	—	(सं०)	५२२
			७३४, ७५२, ७५३, ७५४, ७७८ ।				६६६, ७५६
पूर्वमीमांसार्थप्रकरणसंग्रह	लोगाक्षिभास्कर	(सं०)	१३७	प्रतिष्ठापाठभाषा	बा० दुलीचन्द	(हि०)	५२२
पैसठबोल	—	(हि०)	३३१	प्रतिष्ठानामावलि	—	(हि०)	३७४, ७२६
पोसहरास	ज्ञानभूषण	(हि०)	७६२	प्रतिष्ठाविधानकी सामग्रीवर्णन	—	(हि०)	७२३
				प्रतिष्ठाविधि	—	(सं०)	५२२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
प्रतिष्ठासम्बन्धीयन्त्र	—		६६८	प्रवचनसार	आ० कुन्दकुन्द	(मा०)	११६
प्रतिष्ठासार	—	(सं०)	५२२	प्रवचनसारटीका	अमृतचन्द्र	(सं०)	११७
प्रतिष्ठासार	पं० शिवजीलाल	(हि०)	५२२	प्रवचनसारटीका	—	(सं०)	११३
प्रतिष्ठासारोद्धार	—	(सं०)	५२२	प्रवचनसारटीका	—	(हि०)	११३
प्रतिष्ठासूक्तिग्रह	—	(सं०)	५२२	प्रवचनसारप्राभुतवृत्ति	—	(सं०)	११३
प्रद्युम्नकुमाररास [प्रद्युम्नरास]	अ० रायमल्ल			प्रवचनसारभाषा	जोधराज गोदीका	(हि०)	११४
	(हि०)	५६५, ६३६, ७१२, ७३७		प्रवचनसारभाषा	वृन्दावनदास	(हि०)	११४
प्रद्युम्नचरित्र	महासेनाचार्य	(सं०)	१८०	प्रवचनसारभाषा १	पांडे हेमराज	(हि०)	११३
प्रद्युम्नचरित्र	सोमकीर्ति	(सं०)	१८१	प्रवचनसारभाषा	—	(हि०)	११४, ७१७
प्रद्युम्नचरित्र	—	(सं०)	१८२	प्रस्ताविकश्लोक	—	(सं०)	३३२
प्रद्युम्नचरित्र	सिंहकवि	(अप०)	१८२	प्रश्नचूडामणि	—	(सं०)	२८७
प्रद्युम्नचरित्रभाषा	समालाल	(हि०)	१८२	प्रश्नमनोरमा	गर्ग	(सं०)	२८७
प्रद्युम्नचरित्रभाषा	—	(हि०)	१८२	प्रश्नमाला	—	(सं०)	२८८
प्रद्युम्नरास	कृष्णराय	(हि०)	७२२	प्रश्नविद्या	—	(सं०)	२८७
प्रद्युम्नरास	—	(हि०)	७४६	प्रश्नविनीद	—	(सं०)	२८७
प्रबोधचन्द्रिका	वैजलभूपति	(सं०)	३१७	प्रश्नसार	हयग्रीव	(सं०)	२८८
प्रबोधसार	यशःकीर्ति	(सं०)	३३१	प्रश्नसार	—	(सं०)	२८८
प्रभावतीकल्प	—	(हि०)	६०२	प्रश्नसुमनावलि	—	(सं०)	२८८
प्रमाणपञ्चतन्त्रालोकलंकारटीका [रत्नाकरावतारिका]				प्रश्नावलि	—	(सं०)	२८८
	रत्नप्रभसूरि	(सं०)	१३७	प्रश्नावलि कवित्त	वैद्य नंदलाल	(हि०)	७८२
प्रमाणनिर्णय	—	(सं०)	१३७	प्रश्नोत्तर भागिक्यमाला	अ० ज्ञानसागर	(सं०)	२८८
प्रमाणपरीक्षा	आ० विद्यानन्दि	(सं०)	१३७	प्रश्नोत्तरमाला	—	(सं०)	२८८
प्रमाणपरीक्षाभाषा	भागचन्द	(हि०)	१३७	प्रश्नोत्तरमालिका [प्रश्नोत्तररत्नमाला]	अमोघवर्ष		
प्रमाणप्रमेयकलिका	नरेन्द्रसूरि	(सं०)	५७५		(सं०)	३३२, ५७३	
प्रमाणमीमांसा	विद्यानन्दि	(सं०)	१३८	प्रश्नोत्तररत्नमाला	तुलसीदास	(गुज०)	३३२
प्रमाणमीमांसा	—	(सं०)	१३८	प्रश्नोत्तरश्वाक्याचार	—	(सं०)	७०
प्रमाणप्रमेयकलिका	नरेन्द्रसेन	(सं०)	१३७	प्रश्नोत्तरश्वाक्याचारभाषा	बुलाकीदास	(हि०)	७०
प्रमेयकमलमार्तण्ड	आ० प्रभाचन्द्र	(सं०)	१३८	प्रश्नोत्तरश्वाक्याचारभाषा	पद्मलाल चौधरी	(हि०)	७०
प्रमेयरत्नमाला	अनन्तबीये	(सं०)	१३८	प्रश्नोत्तरश्वाक्याचार	—	(हि०)	७१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
प्रश्नोत्तरस्तोत्र	—	(सं०)	४०६	प्रीत्यङ्कुरचौपई	नेमिचन्द्र	(हि०)	७७५
प्रश्नोत्तरोपासकाचार	भ० सकलकीर्ति	(सं०)	७१	प्रीत्यङ्कुरचरित्र	—	(हि०)	६८६
प्रश्नोत्तरोद्धार	—	(हि०)	७३	प्रोषधदोषवर्णन	—	(हि०)	७५
प्रशस्ति	भ० दामोदर	(सं०)	६०८	प्रोषधोपवासप्रतोद्यायन	—	(सं०)	६६६
प्रशस्ति	—	(सं०)	१७७	फ			
प्रशस्तिकाशिका	बालकृष्ण	(सं०)	७३				
प्रह्लाद चरित्र	—	(हि०)	६००	फलफांदल [पञ्चमेरु]	मण्डलवित्र	—	५२५
प्राकृतछन्दकोश	—	(प्रा०)	३११	फलवधीपार्वनावस्तवन	समयसुन्दरगणि	(सं०)	६१६
प्राकृतछन्दकोश	रत्नशेखर	(प्रा०)	३११	फुटकरकवित्त	—	(हि०)	७४८
प्राकृतछन्दकोश	अन्हु	(प्रा०)	३११				७६६, ७७३
प्राकृतपिंगलशास्त्र	—	(सं०)	३१२	फुटकरज्योतिषपथ	—	(सं०)	५७३
प्राकृतव्याकरण	चण्डकवि	(सं०)	२६२	फुटकर दोहे	—	(हि०)	६६५
प्राकृतरूपमाला	श्रीरामभट्ट	(प्रा०)	२६२				६६६, ७८१
प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका	सौभाग्यगणि	(सं०)	२६२	फुटकरपथ	—	(हि०)	
प्राणप्रतिष्ठा	—	(सं०)	५२३	फुटकरपथ एवं कवित्त	—	(हि०)	६४३
प्राणायामशास्त्र	—	(सं०)	११४	फुटकरपाठ	—	(सं०)	५७३
प्राणीवर्गीत	—	(हि०)	७६७	फुटकरवर्णन	—	(सं०)	५७४
प्रातःक्रिया	—	(सं०)	७४	फुटकरसवैया	—	(हि०)	७७५
प्रातःस्मरणमन्त्र	—	(सं०)	४०६	फूलभीतरणी का वृहा	—	(हि०)	६७५
प्राभृतसार	भ्रा० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	१३०	व			
प्रायश्चित्तग्रन्थ	—	(सं०)	७४				
प्रायश्चित्तविधि	अकलकृचरित्र	(सं०)	७४	वंकचूलरास	अयकीर्ति	(हि०)	३६३
प्रायश्चित्तविधि	भ० एकसंधि	(सं०)	७४	वंभगुवाडीस्तवन	कमलकलश	(हि०)	६१६
प्रायश्चित्तविधि	—	(सं०)	७४	वसंतविलास	—	(हि०)	७२६
प्रायश्चित्तशास्त्र	इन्द्रनगि	(प्रा०)	७४	वडाकनका	गुलाबराय	(हि०)	६८५
प्रायश्चित्तशास्त्र	—	(गुज०)	७४	वडाकनका	—	(हि०)	६६३, ७५२
प्रायश्चित्तसमुच्चटीका	नंदिगुरु	(सं०)	७५	वडादर्शन	—	(सं०)	३६८, ४३२
प्रीतिङ्कुरचरित्र	भ० नेमिदत्त	(सं०)	१८२	बडी सिद्धपूजा [कर्मदहनपूजा]	सोमदत्त	(सं०)	६३६
प्रीतिङ्कुरचरित्र	जोधराज	(हि०)	१८३	बदरीनाथ के छंद	—	(हि०)	६००
				बधावा	—	(हि०)	७१०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
बधावा व विनतो	—	(हि०)	६८५	बारहखड़ी	पाशवदास	(हि०)	३३२
बन्दना जकड़ी	बुधजन	(हि०)	४४६	बारहखड़ी	रामचन्द्र	(हि०)	७१५
बन्दना जकड़ी	बिहारीदास	(हि०)	४४६, ७२७	बारहखड़ी	सूरत	(हि०)	३२२
बन्दे तू सूत्र	—	(प्र०)	६१६			६७०, ७१५, ७८८	
बन्दोमोक्षस्तोत्र	—	(सं०)	६०८	बारहखड़ी	—	(हि०)	३३२
बधउदयसत्ताचीपई	श्रीलाल	(हि०)	४१			४४६, ६०१, ६६४, ७८२	
बधस्थिति	—	(सं०)	५७२	बारहभावना	रइधू	(हि०)	११४
बनारसीविलास	बनारसीदास	(हि०)	६४०	बारहभावना	आलु	(हि०)	६६१
६८६, ६६८, ७०६, ७०८, ७२१, ७३४, ७६३, ७६५				बारहभावना	जसोमगणि	(हि०)	६१७
७६७				बारहभावना	जितचन्द्रसूरि	(हि०)	७००
बनारसीविलास के कुछ पाठ	—	(हि०)	७५२, ७५६	बारहभावना	नवल	(हि०)	१५
बरहातारचित्र	—		६०३			११५, ४२६	
बलदेव महामुनि सञ्ज्ञाय समयसुन्दर		(हि०)	६१६	बारहभावना	भगवतदास	(हि०)	७२०
बलभद्रगीत	—	(हि०)	७२३	बारहभावना	भूधरदास	(हि०)	११५
बलात्कारमरणगुर्वावलि	—	(सं०)	३७४	बारहभावना	दौलतराम	(हि०)	५६१, ६७५
			५७२, ५७४	बारहभावना	—	(हि०)	११५
बलिभद्रगीत	अभयचन्द्र	(हि०)	७३६			३८३, ६४४, ६८५, ६८६, ७८८	
बसंतराजशकुनावली	—	(सं० हि०)	७११	बारहमासकी चौदस	[मण्डलचित्र]	—	५२५
वसंतपूजा	अजैराज	(हि०)	६८३	बारहमासा	गोविन्द	(हि०)	६६६
बहतरकलापुरुष	—	(हि०)	६०६	बारहमासा	चूहरकवि	(हि०)	६६६
बाईसअभक्ष्यवर्णन	बा० दुलीचन्द्र	(हि०)	७५	बारहमासा	जसराज	(हि०)	७८०
बाईसपरिषहवर्णन	भूधरदास	(हि०)	७५	बारहमासा	—	(हि०)	६६३
			६०५, ६७०, ७२०, ७८५, ७८८			७४७, ७६७	
बाईसपरिषह	—	(हि०)	७५	बारहमाहकी पञ्चमी [मण्डलचित्र]	—		५२५
			५६६, ६४६	बारहव्रतों का स्मारा	—	(हि०)	५१६
बारहअक्षरी	—	(सं०)	७४७	बारहसी चौतीसव्रतकथा	जिनेन्द्रभूषण	(हि०)	६६५
बारहअनुप्रेक्षा	—	(प्र०)	७३६	बारहसी चौतीसव्रतपूजा	श्रीभूषण	(सं०)	५३७
बारहअनुप्रेक्षा	अवधू	(हि०)	७२२	बालयज्ञपुराण	पं० पन्नालाल याकलीवाल	(हि०)	१५१
बारहअनुप्रेक्षा	—	(हि०)	७७७	बाल्यकालवर्णन	—	(हि०)	५२३
बारहखड़ी	दत्तलाल	(हि०)	७४५				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
बालविबोध [रामाकार पाठका अर्थ]	—	(प्रा० हि०)	७५
बावनी	बनारसीदास	(हि०)	७४०
बावनी	हंनराज	(हि०)	६१७
बासठकुमार	[माण्डलविध]		५२५
बाहुबलीसज्जमाय	विमलकीर्ति	(हि०)	४४६
बाहुबलीसज्जमाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
बिम्बनिर्माणविधि	—	(सं०)	३५४
बिम्बनिर्माणविधि	—	(हि०)	३५४, ६६१
बिहारीसतसई	बिहारीलाल	(हि०)	६७५
बिहारीसतसईटीका	कृष्णदास	(हि०)	७२७
बिहारीसतसईटीका	हरिचरणदास	(हि०)	६८७
बिहारीसतसईटीका	—	(हि०)	७०६
बीजक [कोश]	—	(हि०)	२७६
बीजकोश [मातृका निर्व्यङ्ग]	—	(सं०)	३४६
बीसतीर्थङ्करजयमाल	—	(हि०)	५११
बीसतीर्थङ्करजिनस्तुति	जितसिंह	(हि०)	७००
बीसतीर्थङ्करपूजा	—	(सं०)	५१४
			५१६, ७३०
बीसतीर्थङ्करपूजा	धानजी अजमेरा	(हि०)	५२३
बीसतीर्थङ्करपूजा	—	(हि०)	५२३, ५३७
बीसतीर्थङ्करस्तवन	—	(हि०)	४००
बीसतीर्थङ्करोंकी जयमाल [बीस विरह पूजा]			
	हर्षकीर्ति		१६५, ७२२
बीसविद्यमान तीर्थङ्करपूजा	—	(सं०)	५६५
बीसविरहमानजकड़ी	समयसुन्दर	(हि०)	६१७
बीसविरहमानजयमाल तथा स्तवनविधि	—	(हि०)	५०५
बीसविरहमासपूजा	—	(सं०)	६३६
बीसविरहमानपूजा	सरेन्द्रकीर्ति	(सं० हि०)	७६३
बुधजनविलास	बुधजन	(हि०)	३३०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
बुधजनसतसई	बुधजन	(हि०)	३३२, ३३३
बुद्धावतारविध	—		६०३
बुद्धिचिंतास	बलतरामसाहू	(हि०)	७५
बुद्धिरास	शालिभद्र द्वारा संकलित	(हि०)	६१७
बुलाखीदास खत्रीकी बरात	—	(हि०)	७५३
बेलि	छोहल	(हि०)	७३८
बैतालपच्चीसी	—	(सं०)	२३४
बोधप्राप्त	कुंदकुंदाचार्य	(प्रा०)	११५
बोधसार	—	(हि०)	७५
ब्रह्मचर्याष्टक	—	(सं०)	३३३
ब्रह्मचर्यवर्णन	—	(हि०)	७५
ब्रह्मविलास	भैया भगवतीदास	(हि०)	३३३, ७६०

भ

भक्तामरपञ्चिका	—	(सं०)	४०६
भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	(सं०)	४०२
			४०७, ४२५, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३३, ४६६, ४७२, ४७३, ४६६, ४६७, ६०३, ६०५, ६१६, ६२८, ६३४, ६३७, ६४४, ६४८, ६५१, ६५२, ६६४, ६६५, ६५२, ६६४, ६४८, ६५१, ६५२, ६६४, ६६५, ६७०, ६७३, ६७५, ६७६, ६७७, ६८०, ६८१, ६८५, ६८६, ६८१, ६८३, ६८६, ७०३, ७०६, ७०७, ७३५, ७३७, ७४५, ७५२, ७५४, ७५८, ७६१, ७८८, ७८६, ७८६, ७८७
भक्तामरस्तोत्र [मन्त्रसहित]	—	(सं०)	६१२
			६२६, ६३०, ६६७, ७०५, ७१४, ७४१
भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमन्त्रसहित	—	(सं०)	४०६
भक्तामरस्तोत्रकथा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	२३५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
भक्तामरस्तोत्रकथा			भक्तिपाठ	कनककीर्ति	(हि०) ६५१
भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमन्त्रसहित नथमल्ल (हि०)		२३४, ७०६	भक्तिपाठ	पद्मलाल चौधरी	(हि०) ४४६
भक्तामरस्तोत्रकथा	विनोदीलाल	(हि०) २३४	भक्तिपाठ	—	(हि०) ४५०
भक्तामरस्तोत्रटीका	हर्षकीर्तिसूरि	(सं०) ४०६	भक्तिपाठसंग्रह	—	(सं०) ४२६
भक्तामरस्तोत्रटीका	—	(सं०) ४०६, ६१५	भक्तिमंत्र [आचार्य भक्ति तक]	—	(सं०) ५७३
भक्तामरस्तोत्रटीका	—	(सं० हि०) ४०६	भगतवत्सावनि	—	(हि०) ६००
भक्तामरस्तोत्रपूजा	केशवसेन	(सं०) ५१५, ५४०	भगवतीआराधना	शिवाचार्य	(सं०) ७६
भक्तामरस्तोत्रपूजा			भगवती आराधनाटीका	अपरराजितसूरि	(सं०) ७६
भक्तामरपूजा उद्यापन	श्रीज्ञानभूषण	(सं०) ५२३	भगवतीआराधनाभाषा	सदासुख कामलीवाल	(हि०) ७६
भक्तामरस्तोत्रपूजा	विश्वकीर्ति	(सं०) ५२३	भगवतीसूत्र	—	(प्रा०) ४२
भक्तामरस्तोत्रपूजा	श्रीभूषण	(सं०) ५४०	भगवतीमंत्र	—	(सं०) ४२५
भक्तामरस्तोत्रपूजा	—	(सं०) ५१६	भगवद्गीता [कृष्णार्जुन संवाद]	—	(हि०) ७६ ७६०
		५२४, ६६६	भगवद्गीता के कुछ स्थल	—	(सं०) ६७३
भक्तामरस्तोत्रभाषा	आलयराज	(हि०) ७५५	भजन	—	(हि०) ७७०
भक्तामरस्तोत्रभाषा	गंगाराम	(सं०) ४१०	भजनसंग्रह	नयनकवि	(हि०) ४५०
भक्तामरस्तोत्रभाषा	जयचन्द छात्रडा	(हि०) ४१०	भजनसंग्रह	—	(हि०) ५६७, ६४३
भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	(हि० ५०) ४१०	भट्टाभिषेक	—	(सं०) ५५७
		४२६, ५२६, ६०४, ६४८, ६६१, ७७०,	भट्टारकविजयकीर्तिअष्टक	—	(सं०) ६८६
		७७४, ७६२	भट्टारकपट्टावलि	—	(हि०) ३७४, ६७५
भक्तामरस्तोत्रभाषा	नथमल्ल	(हि०) ७२०	भडली	—	(सं०) २८६
भक्तामरस्तोत्रभाषा	—	(हि०) ४११	भद्रबाहुचरित्र	रत्ननन्दि	(सं०) १८३
		६१५, ६४४, ६६४, ६६६, ७०६, ७५३, ७७४,	भद्रबाहुचरित्र	चंपाराम	(हि०) १८३
		७६८, ७६६	भद्रबाहुचरित्र	नयनकवि	(हि०) १८३
भक्तामरस्तोत्र [मण्डलत्रिज]	—	५०४	भद्रबाहुचरित्र	—	(हि०) १८३
भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	ब्र० रामलाल	(सं०) ४०८	भयहरस्तोत्र	—	(सं०) ३८१
भक्तामरस्तोत्रश्रीरामकथा	—	(हि०) ७०६	भयहरस्तोत्र व मन्त्र	—	(सं०) ५७२
भक्तिनामवर्णन	—	(सं० हि०) ५७१	भयहरस्तोत्र	—	(प्रा०) ४२३
भक्तिपाठ	—	(सं०) ५७१	भयहरस्तोत्र	—	(प्रा० हि०) ६६१
		५६५, ६८६, ७०६			

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भयहरस्तोत्र	—	(हि०)	६१६	भावनाचोतीसी	म० पद्मनन्दि	(सं०)	६३४
भरतेश्वरभव	—	(हि०)	१८३	भावनाद्वात्रिशिका	आ० अमितगति	(सं०)	५७३
भर्तृहरिशतक	भर्तृहरि (सं०)	३३३, ७१५		भावनाद्वात्रिशिकाटीका	—	(सं०)	११५
भववैराग्यशतक	—	(प्रा०)	११७	भावनाद्वात्रिशिका	—	(सं०)	११५, ६३७
भवानीवाक्य	—	(हि०)	२८८	भावपाहुड	कुंडकुंदाचार्य	(प्रा०)	११५
भवानीसहस्रनाम एवं कवच	—	(सं०)	७६२	भावनारञ्जीसीसतोद्यापन	—	(सं०)	५२४
भविष्यदत्तकथा ^१	म० रायमल्ल	(हि०)	३६४	भावनापद्धति	पद्मनन्दि	(सं०)	५७५
	५६४, ६४८, ७४०, ७५१, ७५२, ७७३, ७७५			भावनाचोतीसी	—	(सं०)	६२८, ६३३
भविष्यदत्तचरित्र	पं० श्रीधर	(सं०)	१८४	भावनासारसंग्रह	चामुण्डराय	(सं०)	७७, ६१५
भविष्यदत्तचरित्रभाषा	पद्मलाल चौधरी	(हि०)	१८४	भावनास्तोत्र	द्यानतराय	(हि०)	६१४
भविष्यदत्ततिलकामुन्दरीनाटक	न्यामतसिंह	(हि०)	३१७	भावप्रकाश	मानमिश्र	(सं०)	२६६
भग्यकुमुदचन्द्रिका	[सागारधर्माभूतस्वोपज्ञटीका]			भावप्रकाश	—	(सं०)	२६६
	पं० आशाधर	(सं०)	६३	भावशतक	श्री नागराज	(सं०)	३३४
भागवत	—	(सं०)	६७५	भावसंग्रह	देवसेन	(प्रा०)	७७
भागवतद्वादशमुक्कंधटीका	—	(सं०)	१५१	भावसंग्रह	श्रुतमुनि	(प्रा०)	७८
भागवतपुराण	—	(सं०)	१५१	भावसंग्रह	चामदेव	(सं०)	७८
भागवतमहिमा	—	(हि०)	६७६	भावसंग्रह	—	(सं०)	७८, २६६
भागवतमहापुराण [सप्तमस्कंध]	—	(सं०)	१५१	भाषा भूषण	जसवंतसिंह	(हि०)	३१२
भाद्रपदपूजा	—	(हि०)	७७५	भाषाभूषण	धीरजसिंह		
भाद्रपदपूजासंग्रह	द्यानतराय	(हि०)	५२४	भाष्यप्रदीप	कैटयट	(सं०)	२६२
भावविभङ्गी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	४२, ७००	भाष्यटी	पद्मनाभ	(सं०)	२८६
भावदीपक	जोधराज गोदीका	(हि०)	७७	भुवनकोलि	यू० राज	(हि०)	२८६
भावदीपक	—	(हि०)	६६०	भुवनदीपक	पद्मभसूरि	(सं०)	२८६
भावदीपिका	कृष्णशर्मा	(सं०)	१३८	भुवनदीपिका	—	(सं०)	२८६
भावदीपिकामाषा	—	(हि०)	४२	भुवनेश्वरीस्तोत्र [सिद्धमहामंत्र]			
भावनाउत्तीसी	—	(प्रा०)	६४२		पृथ्वीधराचार्य	(सं०)	३४
भावनाचतुर्विंशति	पद्मनन्दि	(सं०)	७३६	भूगोलनिर्माण	—	(हि०)	३२३
नोट—रचना के यह नाम और हैं—				भूतकालचोतीसी	बुधजन	(हि०)	३६८
१ भविष्यदत्तचोपर्व भविष्यदत्तपञ्चमीकथा भविष्यदत्तपञ्चमीरास							

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भूत भविष्य वर्तमानजिनपूजा पांडे जिनदास (सं०)	४७०			मंडपविधि	—	(हि०)	५२५
भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्र	भूपाल	(सं०)	४०२	मन्त्र	—	(सं०)	५७३
४११, ४२५, ४०८, ४३२, ५७२, ५६४, ६०५, ६३३, ६३७, ७३७				मन्त्र व शौपथिका नुमत्ता	—	(हि०)	३००
भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्रटीका आशाधर (सं०)	४०१, ४११			मन्त्र महीदधि	पं० महीधर	(सं०)	३५१, ५७७
भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्रटीका विनयचन्द्र (सं०)	४१२			मन्त्रशास्त्र	—	(सं०)	३५०
भूपालचौबीसीभाषा पन्नालाल चौधरी (हि०)	४१२			मन्त्रशास्त्र	—	(हि०)	३५०
भूपालचौबीसीभाषा	—	(हि०)	७७४	मन्त्रसंग्रह	—	(सं०)	३५१
भूपाल	—	(सं०)	३४६	६७५, ६६६, ७०३, ७३६, ७६७			
भैरवनामस्तोत्र	—	(सं०)	२६६	मन्त्रमहिता	—	(सं०)	६०८
भैरवपद्यावतीकल्प	मल्लिषेणसूरि	(सं०)	३४६	मन्त्रविशाल	—	(सं०)	५७२
भैरवपद्यावतीकल्प	—	(सं०)	३५०	मन्त्रीपार्श्वनाथस्तवन	जोधरा मुनि	(हि०)	६१८
भैरवाष्टक	—	(सं०)	६१२, ६४६	मन्त्रावतार [चित्र]	—		६०३
भोगीदासकी जन्मकुंडली	—	(हि०)	७७६	मणिरत्नाकर जयभाल	—	(हि०)	५६४
भोजप्रबन्ध	पं० बल्लाल	(सं०)	१८५	मणुवसंधि	—	(अप०)	६४२
भोजप्रबन्ध	—	(सं०)	२३५	मदनपराजय	जिनदेवसूरि	(सं०)	३१७
भोजरासी	उदयभानु	(हि०)	७६७	मदनपराजय	—	(अप०)	३१८
भीमचरित्र	भ० रत्नचन्द्र	(सं०)	१८५	मदनपराजय	स्वरूपचन्द्र	(हि०)	३१८
भृगुसंहिता	—	(सं०)	२८६	मदनमोदन मन्त्रावतीभाषा छत्रपति जैसवाल	हि०)	३३४	
अमरगीत	मानसिंह	(हि०)	७५०	मदनविनोद	मदनपाल	(सं०)	३००
अमरगीत	—	(हि०)	६००, ७४५	मधुकैटभवध [महिषासुरवध]	—	(सं०)	२३५
म				मधुमानतीकथा	चतुर्भुजदास	(हि०)	६३६
मङ्गल	विनोदोलाल	(हि०)	७२०	मध्यलोकपूजा	—	(सं०)	५२५
मङ्गलकलशमहामुनिचतुष्टी				मनोरथमाला	अचलकोटि	(हि०)	७६४
रंगविनयगणि (हि० राज०)	१८५			मनोरथमाला	—	(हि०)	७८
मङ्गलपाठ	—	(सं०)	५६६	मनोहरपुराको पीठियोंका वर्णन	—	(हि०)	७५६
मङ्गलाष्टक	—	(सं०)	५६०, ६३४	मनोहरमञ्जरी	मनोहर मिश्र	(हि०)	७६६
मंडपविधि	—	(सं०)	५२५	मरकतविलास	पन्नालाल	(हि०)	७८
				मरणाकरंडिका	—	(अप० हि०)	४२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
महादेवीकी सज्जाय	ऋषि लालचन्द्र	(हि०)	४५०	महावीरस्तोत्र	स्वरूपचन्द्र	(हि०)	५११
मल्लिनाथपुराण	सकलकीर्ति	(सं०)	१५२	महावीराष्टक	भारगचन्द्र	(सं०)	४१३
मल्लिनाथपुराणभाषा	सेवारास पाटनी	(हि०)	१५२	महाशान्ति कविधान	पं० धर्मदेव	(सं०)	६२५
मल्हारचरित्र	—	(हि०)	७४१	महिम्नस्तवत	जयकीर्ति	(सं०)	४२५
महर्षिरत्नवन	—	(सं०)	६५८	महिम्नस्तोत्र	—	(सं०)	४१३
			४१३, ४२६	महीपालचरित्र	चारित्रभूषण	(सं०)	१८६
महर्षिरत्नवन	—	(हि०)	४१२	महीपालचरित्र	भ० रत्नचन्द्र	(सं०)	१८६
महागणपतिकवच	—	(सं०)	६६२	महीपालचरित्रभाषा	नरभक्त	(हि०)	१८६
महादण्डक	—	(हि०)	७३५	मांगीतुंगीगिरिमंडलपूजा	विश्वभूषण	(सं०)	५२६
महापुराण	जितसेनाचार्य	(सं०)	१५३	मार्णवयमालाग्रन्थप्रदोत्तरी	संग्रहकर्ता—		
महापुराण [संक्षिप्त]	—	(सं०)	१५२	म० ज्ञानसागर	(सं० प्रा० हि०)		६०४
महापुराण	महाकवि पुष्पदन्त	(प्रप०)	१५३	माताके सोलह स्वप्न	—	(हि०)	४२४
महाभारतविष्णुसहस्रनाम	—	(सं०)	६७६	माता पद्मावतीछन्द	भ० महीचन्द्र	(सं० हि०)	५६०
महाभियेकपाठ	—	(सं०)	६०७	माधवनिदान	माधव	(सं०)	३००
महाभियेकसामग्री	—	(हि०)	६६८	माधवानलकथा	आनन्द	(सं०)	२३५
महामहर्षिस्तवनटीका	—	(सं०)	४१३	मानतुंगमानवलि चौधई	मोहनविजय	(सं०)	२३५
महामहिम्नस्तोत्र	—	(सं०)	४१३	मानकी बड़ी बावनी	मनासाह	(हि०)	६३८
महालक्ष्मीस्तोत्र	—	(सं०)	४१३	मानबावनी	मानकवि	(हि०)	३३४, ६०१
महाविद्या [मन्त्रोक्त संग्रह]	—	(सं०)	३५१	मानमञ्जरी	नन्दराम	(हि०)	६५१
महाविद्याविडम्बन	—	(सं०)	१३८	मानमञ्जरी	नन्ददास	(हि०)	२७६
महावीरजीका चौदाव्या ऋषि लालचन्द्र	(हि०)	४५०		मानलघुबावनी	मनासाह	(हि०)	६३८
महावीरछन्द	शुभचन्द्र	(हि०)	३८६	मानविनोद	मानसिंह	(सं०)	३००
महावीरनिर्वाणपूजा	—	(सं०)	५२६	मानुषोत्तरगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(सं०)	४६७
महावीरनिर्वाणकल्याणपूजा	—	(सं०)	५२६	मायाब्रह्मका विचार	—	(हि०)	७६७
महावीरनिर्वाणकल्याणकपूजा	—	(हि०)	२६८	मार्कण्डेयपुराण	—	(सं०)	१५३, ६०७
महावीरपूजा	वृन्दावन	(हि०)	५२६	मार्गणा व गुणस्थान वर्णन	—	(प्रा०)	४३
महावीरस्तवन	जितचन्द्र	(हि०)	७००	मार्गणावर्णन	—	(प्रा०)	७६६
महावीरस्तवनपूजा	समयसुन्दर	(हि०)	७३५	मार्गणाविधान	—	(हि०)	७६०
महावीरस्तोत्र	भ० अमरकीर्ति	(सं०)	७५७	मार्गणासमाप्त	—	(प्रा०)	४३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
मालीरासो	जिनदास	(हि०)	५७७	मुनिसुव्रतपूराण	ब्र० कृष्णदास	(सं०)	१५३
मिच्छादुर्वकड	ब्र० जिनदास	(हि०)	६८६	मुनिसुव्रतपूराण	इन्द्रजीत	(हि०)	१५३
मिश्रविनास	घासी	(हि०)	३३४	मुनिसुव्रत चिनती	देवाग्रहा	(हि०)	४५०
मिथ्यात्वखंडन	वस्तराम	(हि०)	७८, ५६०	मुनीश्वरोंकी जयमाल	—	(सं०)	४२८
मिथ्यात्वखंडन	—	(हि०)	७६				५७६, ५७८, ६४६, ७५२
मुकुटसप्तमीकथा	पं० अश्रदेव	(सं०)	२४४	मुनीश्वरोंकी जयमाल	—	(अप०)	६३७
मुकुटसप्तमीकथा	सुशालचन्द्र	(हि०)	२४४, ७३१	मुनीश्वरोंकी जयमाल	ब्र० जिनदास	(हि०)	५७१
मुकुटसप्तमीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५२७				६२२, ७५०
मुक्तावलि कथा	—	(सं०)	६३१	मुनीश्वरोंकी जयमाल	—	(हि०)	६२१
मुक्तावलि कथा	भारामल	(हि०)	७६४	मुष्टिज्ञान	ज्योतिषाचार्य देवचन्द्र	(हि०)	३००
मुक्तावलिगीत	सकलकीर्ति	(हि०)	६८६	मुहूर्तचिन्तामणि	—	(हि०)	२८६
मुक्तावलि [मण्डलचित्र]	—	—	५२५	मुहूर्तदोषक	महादेव	(सं०)	२६०
मुक्तावलिपूजा	वर्णी सुखसागर	(सं०)	५२७	मुहूर्त मुक्तावली	परमहंसपरिव्राजकाचार्य—		
मुक्तावलिपूजा	—	(सं०)	५३६, ६६६	मुहूर्तमुक्तावली	शङ्कराचार्य	(हि०)	७६८
मुक्तावलि विधानकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२३६	मुहूर्तमुक्तावली	—	(सं० हि०)	२६०
मुक्तावलि व्रतकथा	सोमप्रभ	(सं०)	२३६	मुहूर्तसंग्रह	—	(सं०)	२६०
मुक्तावलि विधानकथा	—	(अप०)	२३६	मूढताज्ञानांकुश	—	(सं०)	७६२
मुक्तावलि व्रतकथा	सुशालचन्द्र	(हि०)	२४५	मूर्खकेलक्षण	—	(सं०)	३५८
मुक्तावलि व्रतकथा	—	(हि०)	६७३	मूलसंबन्धीपट्टावलि	—	(सं०)	७३७
मुक्तावलि अतकी तिथियां	—	(हि०)	५७१	मूलाचारटीका	आ० वसुनन्दि	(प्रा० सं०)	७६
मुक्तावलि व्रतपूजा	—	(सं०)	५२७	मूलाचारप्रदीप	सकलकीर्ति	(सं०)	७६
मुक्तावलि व्रतविधान	—	(सं०)	५२७	मूलाचारभाषा	ऋषभदास	(हि०)	८०
मुक्तावलि व्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५२७	मूलाचारभाषा	—	(हि०)	८०
मुक्तिरीहरगीत	—	(हि०)	७६५	मुगापुत्र-उदाला	—	(हि०)	२३५
मुक्तावलि अंकनकथा	—	(सं०)	२४३	मृत्पुमहोत्सव	—	(सं०)	११५, ५७६
मुनिराजका बारहमासा	—	(हि०)	७८७	मृत्पुमहोत्सवभाषा	सदासुख कासलीवाल—		
मुनिसुव्रतचन्द्र	भ० प्रभाचन्द्र	(सं० हि०)	५५७			(हि०)	११५
मुनिसुव्रतनाथपूजा	—	(सं०)	५०६	मृत्पुमहोत्सवभाषा	—	(हि०)	४१२
मुनिसुव्रतनाथरुति	—	(अप०)	६३७				६६१, ७२२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
मेघकुमारगीत	पूनी	(हि०)	७३८ ७४६, ७५०, ७६४	मोहविवेककुण्ड	बनारसीदास	(हि०)	७१४, ७६४
मेघकुमारचौकालिया	कनकसोम	(हि०)	६१७	मीनएकादशीकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२२८
मेघकुमारचौपई	—	(हि०)	७७४	मीनएकादशीस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	६२०
मेघकुमारवार्ता	—	(हि०)	६६४	मीनिव्रतकथा	गुणभद्र	(सं०)	२३६
मेघकुमारसज्जाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८	मीनिव्रतकथा	—	(सं०)	२३७
घटूत	कालिदास	(सं०)	१८७	मीनिव्रतविधान	रत्नकीर्ति	(सं० ग०)	२४४
मेघदूतटीका	परमहंसपरिव्राजकः चार्य—			मीनिव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५१७
मेघमाला	—	(सं०)	२६०	य			
मेघमालाविविध	—	(सं०)	५१७				
मेघमालाव्रतकथा	श्रुतसागर	(सं०)	५१४	यन्त्र [भगे हुए व्यक्तिके वापस आनेका]			६०३
मेघमालाव्रतकथा	—	(सं०)	२२६, २४२	यन्त्रमन्त्रविधिकल	—	(हि०)	३५१
मेघमालाव्रतकथा	सुशालचन्द	(हि०)	२२६, २४४	यन्त्रमन्त्रसंग्रह	—	(सं०)	७०१, ७६६
मेघमालाव्रत	[मण्डलवित्र]—		५२५	यन्त्रसंग्रह	—	(सं०)	३५२ ६६७, ७६८
मेघमालाव्रतोद्यापनकथा	—	(सं०)	५२७	यक्षिणीकल्प	—	(सं०)	३५१
मेघमालाव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५२७	यज्ञकीसामग्रीका व्यौरा	—	(हि०)	५६५
मेघमालाव्रतोद्यापन	—	(सं० हि०)	५१७ ५३६	यज्ञमहिमा	—	(हि०)	५६५
मेदिनीकोश	—	(सं०)	२७६	यतिदिनचर्या	देवसूरि	(ग्रा०)	८०
मेरूपूजा	सोमसेन	(सं०)	७६५	यतिभावनाष्टक	आ० कुन्दकुन्द	(ग्रा०)	५७३
मेरुपंक्ति तपकी कथा	सुशालचन्द	(हि०)	५१६	यतिभावनाष्टक	—	(सं०)	६३७
मोक्षपेड़ी	बनारसीदास	(हि०)	८० ६४३, ७४६	यतिआहार के ५६ दीप	—	(हि०)	६२७
मोक्षमार्गप्रकाशक	पं० टोडरमल	(राज०)	८०	यत्याचार	आ० वसुनन्दि	(सं०)	८०
मोक्षशास्त्र	उमास्वामी	(सं०)	६६४	यमक	—	(सं०)	४२६
मोरपिच्छधारी [कृष्ण] के कवित्त	कपोत	(हि०)	६७३	(यमकाष्टक)			
मोरपिच्छधारी [कृष्ण] के कवित्त	धर्मदास	(हि०)	६७३	यमकाष्टकस्तोत्र	भ० अमरकीर्ति	(सं०)	४१३, ४२६
मोरपिच्छधारी [कृष्ण] के कवित्त	विचित्रदेव	(हि०)	६७३	यमपालमातृकी कथा	—	(सं०)	२३७
मोहम्मदराजाकी कथा	—	(हि०)	६००	यशस्तिलकचम्पू	सोमदेवसूरि	(सं०)	१८७
				यशस्तिलकचम्पूटीका	श्रुतसागर	(सं०)	१८७
				यशस्तिलकचम्पूटीका	—	(सं०)	१८८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
यशोधरकथा [यशोधरचरित्र]	खुशालचन्द्र	(हि०)	१११	योगशास्त्र	वररुचि	(सं०)	३०२
			७११	योगशास्त्र	—	(सं०)	३०२
यशोधरचरित्र	ज्ञानकीर्ति	(सं०)	११२	योगशास्त्र	—	(हि०)	३०२
यशोधरचरित्र	कायस्थपञ्चानाभ	(सं०)	१८६	योगशास्त्रटीका	—	(सं०)	३०२
यशोधरचरित्र	पूरणदेव	(सं०)	११०	योगशास्त्र	हेमचन्द्रसूरि	(सं०)	११६
यशोधरचरित्र	बादिराजसूरि	(सं०)	१११	योगशास्त्र	—	(सं०)	११६
यशोधरचरित्र	वासधसेन	(सं०)	१११	योगसार	योगचन्द्र	(सं०)	५७५
यशोधरचरित्र	श्रतसागर	(सं०)	११२	योगसार	योगीन्द्रदेव (अ०)	११६, ७५५	
यशोधरचरित्र	सकलकीर्ति	(सं०)	१८८	योगसारभाषा	नन्दराम	(हि०)	११६
यशोधरचरित्र	पुष्पदन्त	(अ०)	१८८ ६४२	योगसारभाषा	बुधजन	(हि०)	११७
यशोधरचरित्र	गारवदास	(हि० प०)	१११	योगसारभाषा	पञ्चालाल चौधरी	(हि० ग०)	११६
यशोधरचरित्र	पञ्चालाल	(हि०)	१६	योगसारभाषा	—	(हि० प०)	११७
यशोधरचरित्र	—	(हि०)	११२	योगसारसंग्रह	—	(सं०)	११७
यशोधरचरित्रटिप्पण	प्रभाचन्द्र	(सं०)	११२	योगिनीकवच	—	(सं०)	६०८
मात्रावर्त्तन	—	(हि०)	३७४	योगिनीस्तोत्र	—	(सं०)	४३०
पादपञ्चशालि	—	(हि०)	६७६	योगीश्वर्या	महात्मा ज्ञानचन्द्र	(अ०)	६२८
युक्त्यानुशासन	आ० समन्तभद्र	(सं०)	१३६	योगोपासो	योगीन्द्रदेव	(अ०)	६०३
युक्त्यानुशासनटीका	विद्यानन्द	(सं०)	१३६				७१२, ७४८
पुगादिदेवमहिम्नस्तोत्र	—	(सं०)	४१३	योगीन्द्रपूजा	—	(सं०)	६७६
यूनानी नूतन	—	(सं०)	६६१				
योगचिन्तामणि	मनूसिंह	(सं०)	३०१				
योगचिन्तामणि	उपाध्याय हर्षकीर्ति	(सं०)	३०१	रङ्ग बनाने की विधि	—	(हि०)	६२३
योगचिन्तामणि	—	(सं०)	३०१	रक्षाबंधनकथा	—	(सं०)	२३७
योगचिन्तामणिबीजक	—	(सं०)	३०१	रक्षाबंधनकथा	आ० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
योगफल	—	(सं०)	२६०	रक्षाबंधनकथा	नाथूराम	(हि०)	२४३
योगविन्दुप्रकरण	आ० हरिमद्रसूरि	(सं०)	११६	रक्षाविधानकथा	—	(सं०)	२४३, ७३१
योगभक्ति	—	(सं०)	६३३, ६२८	रघुनाथविलास	रघुनाथ	(हि०)	३१२
योगभक्ति	—	(अ०)	११६	रघुवंशटीका	मल्लिनाथसूरि	(सं०)	१६३
योगभक्ति	पञ्चालाल चौधरी	(हि०)	४५०	रघुवंशटीका	गुणाधिनयगणि	(सं०)	१६४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	वृष्ट सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	वृष्ट सं०
रघुवंशटीका	समयसुन्दर	(सं०)	१६४	रत्नत्रयपूजा	पं० नरेन्द्रसेन	(सं०)	५६४
रघुवंशटीका	सुमतिविजयरणि	(सं०)	१६४	रत्नत्रयपूजा	—	(सं०)	५१६
रघुवंशमहाकाव्य	कालिदास	(सं०)	१६३	५२६, ५३७, ५५५, ५७४, ६०६, ६४०, ६४६,			
रतिरहस्य	—	(हि०)	७६६	६५२, ६६४, ७०४, ७०५, ७५६, ७६३			
रत्नकरं डध्रावकाचार	समन्तभद्र	(सं०)	८१	रत्नत्रयपूजा	—	(सं० हि०)	५१८
			६६१, ७६५	रत्नत्रयपूजा	—	(प्रा०)	६३५, ६५५
रत्नकरं डध्रावकाचार पं० सदासुख कासलीवाल				रत्नत्रयपूजा	शृषभदास	(हि०)	५३०
(हि० गद्य)			८२	रत्नत्रयपूजाजयमाल	शृषभदास	(प्रप०)	५३७
रत्नकरं डध्रावकाचार	नथमल	(हि०)	८३	रत्नत्रयपूजा	द्यानतराय	(हि०)	४८८
रत्नकरं डध्रावकाचार संघी पन्नालाल		(हि०)	८३				५०३, ५२६
रत्नकरं डध्रावकाचारटीका	प्रभाचन्द्र	(सं०)	८२	रत्नत्रयपूजा	खुशालचन्द्र	(हि०)	५१६
रत्नकोष	—	(सं०)	३३४, ७७६	रत्नत्रयपूजा	—	(हि०)	५१६
रत्नकोष	—	(हि०)	३३५				५३०, ६४५, ७४५
रत्नत्रयउच्चापनपूजा	—	(सं०)	५२७	रत्नत्रयपूजाविधान	—	(सं०)	६०७
रत्नत्रयकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७४०	रत्नत्रयमण्डल [चित्र]			५२५
रत्नत्रयका महार्घ व क्षमावली ब्रह्मसेन		(सं०)	७८१	रत्नत्रयमण्डलविधान	—	(हि०)	५३०
रत्नत्रयगुणकथा	पं० शिवजीलाल	(सं०)	२३७	रत्नत्रयविधान	—	(सं०)	५३०
रत्नत्रयजयमाल	—	(प्रा०)	५२७	रत्नत्रयविधानकथा	रत्नकीर्ति	(सं०)	२२०, २४२
रत्नत्रयजयमाल	—	(सं०)	५२८	रत्नत्रयविधानकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२३७
रत्नत्रयजयमाल	शृषभदास बुधदास	(हि०)	५१६	रत्नत्रयविधानपूजा	रत्नकीर्ति	(सं०)	५३०
रत्नत्रयजयमाल	—	(प्रप०)	५२८	रत्नत्रयविधान	देवचन्द्र	(हि०)	५३१
रत्नत्रयजयमाल	—	(हि०)	५२६	रत्नत्रयविधि	आशाधर	(सं०)	२४२
रत्नत्रयजयमालभाषा	नथमल	(हि०)	५२८	रत्नत्रयव्रतकथा [रत्नत्रयकथा]			
रत्नत्रयजयमाल तथा विधि	—	(प्रा०)	६५८				ललितकीर्ति (सं०) ६४५, ६६५
रत्नत्रयपाठविधि	—	(सं०)	५६०	रत्नत्रयव्रत विधि एवं कथा	—	(हि०)	७३३
रत्नत्रयपूजा	पं० आशाधर	(सं०)	५२६	रत्नत्रयव्रतोच्चापन	केशवसेन	(सं०)	५३६
रत्नत्रयपूजा	केशवसेन	(सं०)	५२६	रत्नत्रयव्रतोच्चापन	—	(सं०)	५१३
रत्नत्रयपूजा	पद्मनन्दि	(सं०)	५२६				५३१, ५३६, ५४०
			५७५, ६३६	रत्नवीपक	गणपति	(सं०)	२६०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
रत्नदीपक	—	(सं०)	२६०	रसप्रकरण	—	(सं०)	३०२
रत्नदीपक	रामकवि	(हि०)	३५८	रसप्रकरण	—	(हि०)	३०२
रत्नमाला	आ० शिवकोटि	(सं०)	८३	रसमञ्जरी	शालिनाथ	(सं०)	३०२
रत्नमञ्जूषा	—	(सं०)	३१२	रसमञ्जरी	शङ्करधर	(सं०)	३०२
रत्नमञ्जूषिका	—	(सं०)	३१२	रसमञ्जरी	भानुदत्त मिश्र	(हि०)	३५६
रत्नावलिप्रतकथा	गुणनन्दि	(हि०)	२४६	रसमञ्जरीटीका	गोपालभट्ट	(सं०)	३५६
रत्नावलिप्रतकथा	जोशी रामदास	(सं०)	२३७	रससागर	—	(हि०)	६८६
रत्नावलिप्रतविधान	ब्र० कृष्णदास	(हि०)	५३१	रसायनविधि	—	(हि०)	५६०
रत्नावलिप्रतोद्यापत	—	(सं०)	५३६	रसालकुंवरकी चौपई	नरवर कवि	(हि०)	५७७
रत्नावलिप्रतोंकी तिथियों के नाम	—	(हि०)	६५५	रसिकप्रिया	इन्द्रजीत	(हि०)	६७६ ७४३
रथयात्रावर्णन	—	(हि०)	७१६	रसिकप्रिया	केशव	(हि०)	७७१ ७६६
रमलज्ञान	—	(हि० ग०)	२६१	रामचीतराकावूहा	—	(हि०)	६७५
रमलशास्त्र	पं० चिंतामणि	(सं०)	२६०	रागमाला	—	(सं०)	३१८
रमलशास्त्र	—	(हि०)	२६०	रागमाला	श्याममिश्र	(हि०)	७७१
रथशास्त्र	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	८४	रागमाला के दोहे	जैतश्री	(हि०)	७८०
रविवारकथा	सुशालचन्द	(हि०)	७७५	रागमाला के दोहे	—	(हि०)	७७७
रविथारपूजा	—	(सं०)	५३७	रागरागनियों के नाम	—	(हि०)	३१८
रविवारप्रतमण्डल [चित्र]	—		५२५	रागु आमावरी	रूपचन्द	(सं०)	६४१
रविप्रतकथा	श्रुतसागर	(हि०)	२३७	रागों के नाम	—	(हि०)	७७३
रविप्रतकथा	जयकीर्ति	(हि०)	६६६	राजनीति कवित्त	देवीदास	(हि०)	७५२
रविप्रतकथा [रविवारकथा]	देवेन्द्रभूषण	(हि०)	२३७ ७०७	राजनीतिशास्त्र	चरणकव्य	(सं०)	६४०, ६४६
रविप्रतकथा	भारुकवि	(हि० प०)	२३७, ५६५	राजनीतिशास्त्र	जसुराम	(हि०)	३३६
रविप्रतकथा	भानुकीर्ति	(हि०)	७५०	राजनीतिशास्त्रभाषा	देवीदास	(हि०)	३३६
रविप्रतकथा	—	(हि०)	२४७ ६०३, ७५३	राजप्रशस्ति	—	(सं०)	३७४
रविप्रतोद्यापनपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	५३२	राजा चन्द्रगुप्तकी चौपई	ब्र० गुलाल	(हि०)	६२०
रसकौतुक राजसभारंजन	गंगादास	(हि०)	५७६	राजादिफल	—	(सं०)	२६१
रसकौतुकराजसभारंजन	—	(हि०)	७६२	राजा प्रजाकी वशमें करने का मन्त्र	—	(हि०)	५७१
				राजारानीसञ्जाय	—	(हि०)	४५०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
राजुलपञ्चीसी	लालचंद त्रिनौदीलाल	(हि०)	६००	रामायणमहाभारतकथाप्रश्नोत्तर	—	(हि०-ग०)	५६२
६१३, ६२२, ६४३, ६५१, ६८३, ६८५, ७२२, ७५३				रामावतार	[चित्र]	—	६०३
राजुलमञ्जल	—	(हि०)	७५३	राघवसेनीसूत्र	—	(ग्रा०)	४३
राजुलकी सज्जाम	जिनदास	(हि०)	७५७	राशिफल	—	(सं०)	७६३
राठौडरतन महेश दशोत्तरी	—	(हि०)	२३८	रासामनिकशास्त्र	—	(हि०)	३३०
रांडपुरास्तवन	—	(हि०)	४५०	राहुफल	—	(हि०)	२६१
रांडपुरका स्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	६१६	रक्तविभागप्रकरण	—	(सं०)	८४
रात्रिभोजनकथा	—	(सं०)	२३८	रिट्टोमिन्नरिड	स्वयंभू	(ग्र०)	६४२
रात्रिभोजनकथा	किशनसिंह	(हि०)	२३८	स्वमणिकथा	मदनकीर्ति	(सं०)	२४७
रात्रिभोजनकथा	भारामल	(हि०)	२३८	स्वमणिकृष्णजी की रासी	तिपरदास	(हि०)	७७०
रात्रिभोजनकथा	—	(हि०)	२३८	स्वमणिविधानकथा	छत्रसेन (सं०)	२४४, २४६	
रात्रिभोजनचोपई	—	(हि०)	२३६	नरन्निविवाह	वल्लभ	(हि०)	७८७
रात्रिभोजनत्यागवर्णन	—	(हि०)	८४	हविमणितिवाहवेलि	पृथ्वीराज राठौड	(हि०)	३६४
राधाजन्मोत्सव	—	(हि०)	८४	रुनविनिश्चय	—	(सं०)	७३३
राधिकानाममाला	—	(हि०)	४१४	हविकरगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(सं०)	७३३
रामकवच	विश्वामित्र	(हि०)	६६७	रुद्रज्ञान	—	(सं०)	२६१
रामकृष्णकाव्य	दैवज्ञ प० सूर्य	(सं०)	१६४	रूपमञ्जरीनाममाला	गोपालदास	(सं०)	२७६
रामचन्द्रचरित्र	बधीचन्द	(हि०)	६६१	रूपमाला	—	(सं०)	२६२
रामचन्द्रस्तवन	—	(सं०)	४१४	रूपसेनचरित्र	—	(सं०)	२३६
रामचन्द्रिका	केशवदास	(हि०)	१६४	रुक्मिणीध्यानवर्णन	—	(सं०)	११७
रामचरित्र [कवित्तबंध]	तुलसीदास	(हि०)	६६७	रेखाचित्र [आदिनाथ चन्द्रप्रभ वर्द्धमान एवं पार्श्वनाथ]	—		७८३
रामबत्तीसी	जगनकवि	(हि०)	४१४	रेखाचित्र	—		७६३
रामविनोद	रामचन्द्र	(हि०)	३०२	रेवानदीपूजा [ग्राहककोटिपूजा]	विश्वभूषण (सं०)	५३२	
रामविनोद	रामविनोद	(हि०)	६४०	रैदवत	गंगाराम	(सं०)	५३२
रामविनोद	—	(हि०)	६०३	रैदवतकथा	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	२३६
रामस्तवन	—	(सं०)	४१४	रैदवतकथा	—	(सं०)	२३६
रामस्तोत्र	—	(सं०)	४१४	रैदवतकथा	भ० जिनदास	(हि०)	२४६
रामस्तोत्रकवच	—	(सं०)	६०१				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
रोहिणीचरित्र	देवनन्दि	(अप०)	२४३	लग्नचन्द्रिकाभाषा	—	(सं०)	२६१
रोहिणीविधान	मुनि गुणभद्र	(अप०)	६२६	लग्नशास्त्र	वर्द्धमानसूरि	(सं०)	२६१
रोहिणीविधानकथा	—	(सं०)	२४०	लघुअनन्तव्रतपूजा	—	(सं०)	५३३
रोहिणीविधानकथा	देवनन्दि	(अप०)	२४३	लघुअभिषेकविधान	—	(सं०)	५३३
रोहिणीविधानकथा	वसीदास	(हि०)	७८१	लघुकल्याण	—	(सं०)	५१४, ५३३
रोहिणीव्रतकथा	आ० भानुकीर्त्ति	(सं०)	२३६	लघुकल्याणपाठ	—	(हि०)	७४४
रोहिणीव्रतकथा	कलितकीर्त्ति	(सं०)	६४५	लघुचारणवराजनीति	चाणिक्य	(सं०)	३३६ ७१२, ७२०
रोहिणीव्रतकथा	—	(अप०)	२४५	लघुजातक	मण्डोत्पल	(सं०)	२६१
रोहिणीव्रतकथा	अ० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०	लघुजिनसहस्रनाम	—	(सं०)	६०६
रोहिणीव्रतकथा	—	(हि०)	२३६	लघुसत्त्वार्थसूत्र	—	(सं०)	७४०, ७८२
रोहिणीव्रतकथा	—	(हि०)	७६४	लघुनाममाला	हर्षकीर्त्तिसूरि	(सं०)	२७६
रोहिणीव्रतपूजा	केशवसेन कृष्णसेन	(सं०)	५१२, ५१६	लघुन्यासवृत्ति	—	(सं०)	२६२
रोहिणीव्रतपूजामंडल [चित्रसहित] -	—	(सं०)	५३२, ७२६	लघुप्रतिक्रमण	—	(प्रा०)	७१७
रोहिणीव्रतमण्डलविधान	—	—	—	लघुप्रतिक्रमण	—	(प्रा० सं०)	५७२
रोहिणीव्रतपूजा	—	(हि०)	६३८	लघुमङ्गल	रूपचन्द्र	(हि०)	६२४
रोहिणीव्रतमण्डल [चित्र]	—	—	५२५	लघुमङ्गल	—	(हि०)	७१६
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५१३	लघुवाचणी	—	(सं०)	६७२
—	—	—	५३२, ५४०	लघुरविव्रतकथा	अ० ज्ञानसागर	(हि०)	२४४
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	(हि०)	५४०	लघुरूपसर्गवृत्ति	—	(सं०)	२६३
ल	—	—	—	लघुशांतिकविधान	—	(सं०)	५३२
लघनपद्यनिर्याय	—	(सं०)	३०३	लघुशांतिकमन्त्र	—	(सं०)	४२४
लक्ष्मणोत्सव	श्रीलक्ष्मण	(सं०)	२०३	लघुशांतिक [मण्डलचित्र]	—	—	५२५
लक्ष्मीमहास्तोत्र	पद्मनन्दि	(सं०)	६३७	लघुशांतिस्तोत्र	—	(सं०)	४१४, ४२३
लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(सं०)	४१४	लघुश्रेयविधि [श्रेयोविधान]	अभयनन्दि	(सं०)	५३३
—	—	—	४२३, ४२६, ४३२, ५६६, ५७२, ५७४, ५६६,	लघुसहस्रनाम	—	(सं०)	३६२
—	—	—	६४४, ६४८, ६६३, ६६५, ६७०, ७०३, ७१६	—	—	—	६३७, ६६०
लक्ष्मीस्तोत्र	—	(सं०)	४१४	लघुसामायिक [पाठ]	—	(सं०)	८४
—	—	—	४२४, ६४०, ६४५, ६५०	—	—	—	३६२, ४०५, ४२६, ५२६
लक्ष्मीस्तोत्र	श्यामतराय	(हि०)	५६२	लघुसामायिक	—	(सं० हि०)	८४
लग्नचन्द्रिकाभाषा	स्थोजीराम सोमानी	(हि०)	७५१	—	—	—	—

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
लघुसामायिक	—	(हि०) ७१८	लहरियाजी की पूजा	—	(हि०) ७५२
लघुसामायिकभाषा	महाचन्द्र	(हि०) ७१९	लहुरी	नाथू	(हि०) ६६३
लघुसारस्वत अनुभूति स्वरूपाचार्य	—	(सं०) २२२	लहुरी नेमीश्वरकी	विश्वभूषण	(हि०) ७२४
लघुसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	(सं०) २६३	लाटीसंहिता	राजमल	(सं०) ८४
लघुसिद्धान्तकीस्तुभ	—	(सं०) २६३	लावणी मांगीतुं गीकी	हर्षकीर्ति	(हि०) ६६७
लघुस्तोत्र	—	(सं०) ४१५	लिंगपाहुड	आ० कुंदकुंद	(प्रा०) ११७
लघुभगवत	—	(सं०) ५३३	लिंगपुराण	—	(सं०) १५३
लघुसप्तमटीका	भावशर्मा	(सं०) ५३३	लिंगानुशासन	हेमचन्द्र	(सं०) २७७
लघुरत्नविधि	—	(सं०) ६५८	लिंगानुशासन	—	(सं०) २७६
लघुस्वयंभूस्तोत्र	समन्तभट्ट	(सं०) ५१५	लीलावती	भास्कराचार्य	(सं०) ३६६
लघुस्वयंभूस्तोत्र	—	(सं०) ५३७, ५६४	लीलावतीभाषा	व्यास मथुरादास	(हि०) ३६६
लघुशब्देन्दुशेखर	—	(सं०) २६३	लुहरी	नेमिचन्द्र	(हि०) ६२२
लब्धिविधानकथा	पं० अभ्रदेव	(सं०) २३६	लुहरी	सभाचन्द्र	(हि०) ७२४
लब्धिविधानकथा	खुशालचन्द्र	(हि०) २४४	लोकप्रत्याख्यानधर्मिलकथा	—	(सं०) २४०
लब्धिविधानचीपई	भीषमकवि	(हि०) ७७८	लोकवर्णन	—	(हि०) ६२७, ७६३
लब्धिविधानपूजा	अभ्रदेव	(सं०) ५१७	व		
लब्धिविधानपूजा	हर्षकीर्ति	(सं०) ३३३			
लब्धिविधानपूजा	—	(सं०) ५१३	वक्ता श्रोता लक्षण	—	(सं०) ३५६
		५३४, ५४०	वक्ता श्रोता लक्षण	—	(हि०) ३५६
लब्धिविधानपूजा	ज्ञानचन्द्र	(हि०) ५३४	वज्रदन्तनक्षत्राति का बारहमासा	—	(हि०) ७२७
लब्धिविधानपूजा	—	(हि०) ५३४	वज्रनाभिकक्षत्राति की भावना	भूधरदास	(हि०) ८५
लब्धिविधानमण्डल [चित्र]	—	५२५			४४६, ६०४, ७३६
लब्धिविधानलक्षाग्रपूजा	—	(सं०) ५३५	वज्रपञ्जरस्तोत्र	—	(सं०) ४१५, ४३२
लब्धिविधानोद्यापन	—	(सं०) ५४०	वमस्पतिसत्तरी	मुनिचन्द्रसूरि	(प्रा०) ८५
लब्धिविधानलक्षोद्यापनपूजा	—	(सं०) ५३४	वन्देतातकीजयमाल	—	(सं०) ५७२
लब्धिसार	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०) ४३, ७३६			६६५, ६५५
लब्धिसारटीका	—	(सं०) ४३	वरांगचरित्र	भर्तृहरि	(सं०) १६५
लब्धिसारभाषा	पं० टोडरमल	(हि०) ४३	वरांगचरित्र	पं० वर्द्धमानदेव	(सं०) १६५
लब्धिसारक्षणसारभाषा	पं० टोडरमल	(हि० गण) ४३	वर्द्धमानकथा	जयमित्रहल	(अप०) १६६
लब्धिसारक्षणसारसंहति	पं० टोडरमल	(हि०) ४३	वर्द्धमानकाव्य	श्रीमुनि पद्मनन्दि	(सं०) १६५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
वर्द्धमानचरित्र	पं० केशरीसिंह (हि०)	१५४, १६६		विज्जुचरको जयमाल	—	(हि०)	६३८
वर्द्धमानद्वात्रिंशिका	सिद्धसेन दिवाकर	(सं०)	४१५	विशतिपत्र	हंसराज	(हि०)	३७५
वर्द्धमानपुराण	सकलकीर्ति	(सं०)	१५३	विदग्धमुखमंडन	धर्मदास	(सं०)	१६६
वर्द्धमानविद्याकल्प	सिंहतिलक	(सं०)	३५१	विदग्धमुखमंडनटीका	विनयरत्न	(सं०)	१६७
वर्द्धमानस्तोत्र	आ० गुणभद्र	(सं०)	४१५ ४२४, ४२६	विद्वज्जनबोधक	—	(सं०)	८६, ४८१
वर्द्धमानस्तोत्र	—	(सं०)	६१५, ६५१	विद्वज्जनबोधकभाषा	संधी पञ्चालाल	(हि०)	८६
वर्षबंध	—	(सं०)	२६१	विद्वज्जनबोधकटीका	—	(हि०)	८६
वसुनन्दि श्रावकाचार	आ० वसुनन्दि	(प्रा०)	८५	विद्यमानबीसतीर्थस्मरपूजा नरेन्द्रकीर्ति	(सं०)	५३५, ६५५	
वसुनन्दिश्रावकाचार	पञ्चालाल	(हि०)	८५	विद्यमानबीसतीर्थस्मरपूजा जौहरीलाल बिलास	(हि०)	५३५	
वसुधाराशठ	—	(सं०)	४१५	विद्यमानबीसतीर्थस्मरकी पूजा	—	(हि०)	५११
वसुधारास्तोत्र	—	(सं०)	४१५, ४२३	विद्यमानबीसतीर्थस्मरस्तवन मुनि दीप	(हि०)	४१५	
वाग्भट्टालङ्कार	वाग्भट्ट	(सं०)	३१२	विद्यानुशासन	—	(सं०)	३५२
वाग्भट्टालङ्कारटीका	वादिराज	(सं०)	३१३	विनतियां	—	(हि०)	६८५
वाग्भट्टालङ्कारटीका	—	(सं०)	३१३	विनती	अजैराज	(हि०)	७७६, ७८३
वाजिदजी के अडिह	वाजिद	(हि०)	६१३	विनती	कनककीर्ति	(हि०)	६२१
वाणी ग्रन्थक व जयमाल	द्यानतराय	(हि०)	७७७	विनती	कुशलविजय	(हि०)	७८२
वारिपेणमुनिकथा	जोधराज गोदीका	(हि०)	२४०	विनती	ब्र० जिनदास	(हि०)	४२४, ७५७
वार्त्तसंग्रह	—	(हि०)	८६	विनती	बनारसीदास	(हि०)	६१५ ६४२, ६६३, ६६४
वासुज्जयपुराण	—	(हि०)	११५	विनती	रूपचन्द्र	(हि०)	७६५
वास्तुतूजा	—	(सं०)	५३५	विनती	समयसुन्दर	(हि०)	७३२
वास्तुतूजाविधि	—	(सं०)	५१८	विनती	—	(हि०)	७४६
वास्तुविन्यास	—	(सं०)	३५४	विनती गुरुश्रीकी	भूधरदास	(हि०)	५११
विक्रमचरित्र	दाचनाचार्य अभयसोम	(हि०)	१६६	विनती चौपड़की	मान	(हि०)	७८१
विक्रमचौबोली चौपड़	अभयचन्द्रमूरि	(हि०)	२४०	विनतीपाठस्तुति	जितचन्द्र	(हि०)	७००
विक्रमादित्यराजाकी कथा	—	(हि०)	७१३	विनतीसंग्रह	ब्रह्मदेव	(हि०)	४५१
विचारगाथा	—	(प्रा०)	७००	विनतीसंग्रह	देशाब्रह्म	(हि०)	६६५, ७८०
विजयकुमारसङ्काय	ऋषि लालचन्द्र	(हि०)	४५०	विनतीसंग्रह	—	(हि०)	४५० ७१०, ७४७
विजयकीर्तिचन्द्र	शुभचन्द्र	(हि०)	३८६	विनोदसप्तसई	—	(हि०)	६८०
विजयवन्दविधान	—	(सं०)	३५२				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
विषाकसूत्र	—	(प्रा०)	४३	विष्णुकुमारमुनिकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२४०
विमलनाथपुराण	ब० कृष्णदास	(सं०)	१५५	विष्णुकुमारमुनिकथा	—	(सं०)	२४०
विमानशुद्धि	चन्द्रकीर्ति	(सं०)	५३५	विष्णुकुमारमुनिपूजा	बाबूचाल	(हि०)	५३६
विमानशुद्धिपूजा	—	(सं०)	५३६	विष्णुपञ्जररक्षा	—	(सं०)	७७०
विमानशुद्धिशान्तिक [मण्डलचित्र]	—		५२५	विष्णुसहस्रनाम	—	(सं०)	६७४
विरदावली	—	(सं०)	६५८	विशेषसत्ताविभङ्गी	आ० नेमिचन्द्र	(प्रा०)	४३
		७७२, ७६५		विश्वप्रकाश	वैद्यराज महेश्वर	(सं०)	४३
विरहमानतीर्थस्मरणकड़ी	—	(हि०)	७५६	विश्वलोचन	धरसेन	(सं०)	२७७
विरहमानपूजा	—	(सं०)	६०५	विश्वलोचनकोषकी शब्दानुक्रमणिका	—	(सं०)	२७७
विरहमञ्जरी	नन्ददास	(सं०)	६५७	विहारकाव्य	कालिदास	(सं०)	१६७
विरहमञ्जरी	—	(हि०)	५०१	वीतरागगाथा	—	(प्रा०)	६३३
विरहिनो का वर्णन	—	(हि०)	७७०	वीतरागस्तोत्र	शङ्करदि	(सं०)	४२४
विवाहप्रकरण	—	(सं०)	५३६		४३१, ५७४, ६३४, ७३७		
विवाहपद्धति	—	(सं०)	५३६	वीतरागस्तोत्र	आ० हेमचन्द्र	(सं०)	१३६, ४१६
विवाहविधि	—	(सं०)	५३६	वीतरागस्तोत्र	—	(सं०)	७५८
विवाहशोधन	—	(सं०)	२६१	वीरचरित्र [मनुप्रेक्षा भाग]	रङ्गधू	(सं०)	६४२
विवेकजङ्घी	—	(सं०)	२६१	वीरछत्तीसी	—	(सं०)	४१६
विवेकजङ्घी	जिनदास	(हि०)	७२२, ७५०	वीरजिगादगीत	भगौतीदास	(हि०)	५६६
विवेकजिलास	—	(हि०)	८६	वीरजिसुन्दको संभावलि			
विषहरनविधि	संतोषकवि	(हि०)	३०३	मेघकुमारगीत	पूनी	(हि०)	७७५
विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	(सं०)	४०२	वीरद्वानिशान्तिका	हेमचन्द्रसूरि	(सं०)	१३६
		४१५, ४२३, ४२५, ४२८, ४३२, ५६५, ५७२,		वीरनाथस्तवन	—	(सं०)	४२६
		५६५, ६०५, ६३७, ६४६, ७८८		वीरभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
विषापहारस्तोत्रटीका	नागचन्द्रसूरि	(सं०)	४१६	वीरभक्ति तथा निर्वाणभक्ति	—	(हि०)	४५१
विषापहारस्तोत्रभाषा	अचलकीर्ति	(हि०)	४१६	वीररस के कवित्त	—	(हि०)	७४६
		६०४, ६५०, ६७०	५६५, ७७४	वीरस्तवन	—	(प्रा०)	४१६
विषापहारभाषा	पन्नालाल	(हि०)	४१६	वृजलालकी बारहभावना	—	(हि०)	६८५
विषापहारस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	४३०	वृत्तरत्नाकर	कालिदास	(सं०)	३१४
		७१६, ७४७		वृत्तरत्नाकर	भट्ट केदार	(सं०)	३१४
विष्णुकुमारपूजा	—	(हि०)	६८६	वृत्तरत्नाकर	—	(सं०)	३१४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
वृत्तरत्नाकरछन्दटोका	समयसुन्दरगणि	(सं०)	३१४	वैद्यवक्त्रभ	—	(सं०)	३०४, ७२८
वृत्तरत्नाकरटोका	सुल्हणकवि	(सं०)	३१४	वैद्यविनोद	भट्टशङ्कर	(सं०)	३०५
वृन्दसतई	वृन्दकवि	(हि०)	३३६	वैद्यविनोद	—	(हि०)	३०५
	६७५, ७४५, ७५१, ७८२, ७८६			वैद्यसार	—	(सं०)	७३८
वृहदकलिकुण्डपूजा	—	(सं०)	६३६	वैद्यामृत	माणिक्यभट्ट	(सं०)	३०५
वृहदकल्याण	—	(हि०)	५७१	वैद्याकरणाभूषण	कौहनभट्ट	(सं०)	२६३
वृहदगुरावलीशांतिमण्डलपूजा [चौसठकृद्धिपूजा]	स्वरूपचन्द	(हि०)	५४१	वैद्याकरणाभूषण	—	(सं०)	२६३
वृहदधंटाकर्णिकल्प	कवि भोगीलाल	(हि०)	७२६	वैराग्यगीत [उदरगीत]	क्रीडल	(हि०)	६३७
वृहद्व्याख्याननीतिशास्त्रभाषा	मिश्ररामराय	(हि०)	३३६	वैराग्यगीत	महाराज	(हि०)	५१६
वृहद्व्याख्यानवराजनीति	चाणक्य	(सं०)	७१२	वैराग्यपञ्चीसा	भगवतीदास	(हि०)	६८५
वृहज्जातक	भट्टोत्पल	(सं०)	२६१	वैराग्यशतक	भट्टहरि	(सं०)	११७
वृहद्वनवकार	—	(सं०)	४३१	व्याकरण	—	(सं०)	२६४
वृहद्व्यतिक्रमण	—	(सं०)	८६, ८७	व्याकरणटीका	—	(सं०)	२६४
वृहद्व्यतिक्रमण	—	(प्रा०)	८६	व्याकरणभाषाटीका	—	(सं०)	२६४
वृहद्व्योडसकारणपूजा	—	(सं०)	५०६, ७३०	व्रतकथाकोश	पं० दामोदर	(सं०)	२४१
वृहद्व्योडसकारणपूजा	—	(सं०)	४२३	व्रतकथाकोश	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	२४२
वृहद्व्योडसकारणपूजा	—	(सं०)	६५८	व्रतकथाकोश	श्रुतसागर	(सं०)	२४१
वृहद्व्योडसकारणपूजा	—	(सं०)	५७२	व्रतकथाकोश	सकलकीर्ति	(सं०)	२४२
वृहद्व्योडसकारणपूजा	—	(सं०)	६२८, ६६१	व्रतकथाकोश	—	(सं०)	२४४
वृहद्व्योडसकारणपूजा	—	(सं०)	६६१	व्रतकथाकोश	—	(सं० प्रा०)	२४२
वृहद्व्योडसकारणपूजा	—	(सं०)	५४०	व्रतकथाकोश	सुशालचन्द	(हि०)	२४४
वृहद्व्योडसकारणपूजा	—	(सं०)	५२४	व्रतकथाकोश	—	(हि०)	२४४
वृहद्व्योडसकारणपूजा	—	(सं०)	२४०	व्रतकथासंग्रह	—	(सं०)	२४६
वृहद्व्योडसकारणपूजा	—	(सं०)	३०४	व्रतकथासंग्रह	—	(प्रा०)	२४५
वृहद्व्योडसकारणपूजा	—	(सं०)	३०५	व्रतकथासंग्रह	ब्र० महतिसागर	(हि०)	२४६
वृहद्व्योडसकारणपूजा	—	(सं०)	३०५	व्रतकथासंग्रह	—	(हि०)	२४७
वृहद्व्योडसकारणपूजा	—	(सं०)	३०५	व्रतकथासंग्रह	—	(हि०)	७६५
वृहद्व्योडसकारणपूजा	—	(सं०)	३०५	व्रतकथासंग्रह	—	(हि०)	५३६
वृहद्व्योडसकारणपूजा	—	(सं०)	३०५	व्रतकथासंग्रह	—	(सं०)	८७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
व्रतनिर्णय	मोहन	(सं०)	५३६
व्रतसूत्रसंग्रह	—	(सं०)	५३७
व्रतविधान	—	(हि०)	५३८
व्रतविधानरामो	दौलतराम गंधी	(हि०)	५३८, ७७८
व्रतविवरण	—	(सं०)	५३८
व्रतविवरण	—	(हि०)	५३८
व्रतसार	आ० शिवकोटि	(सं०)	५३८
व्रतसार	—	(सं०)	८७
व्रतसंख्या	—	(हि०)	८७
व्रतोद्यापनश्रावकाचार	—	(सं०)	८७
व्रतोद्यापनसंग्रह	—	(सं०)	५३८
व्रतोपवासवर्णन	—	(सं०)	८७
व्रतोपवासवर्णन	—	(हि०)	८७
व्रतों के चित्र	—		७२३
व्रतोंकी तिथियोंका व्यौरा	—	(हि०)	६५५
व्रतों के नाम	—	(हि०)	८७
व्रतोंका व्यौरा	—	(हि०)	६०३

ष

षट्पादव्ययक [लघु सामायिक]	महाचन्द्र	(हि०)	८७
षट्पादव्ययकविधान	पन्नालाल	(हि०)	८७
षट्पादनुवर्णनवारहमासा	जनराज	(हि०)	६५६
षट्कर्मकथन	—	(सं०)	३५२
षट्कर्मोपदेशरत्नमाला [छत्कर्मोपदेशमाला]			
	महाकवि अमरकीर्ति	(अ०)	८८
षट्कर्मोपदेशरत्नमालाभाषा	पंडित लालचन्द्र	(हि०)	८८
षट्पंचासिका	बराहमिह	(सं०)	२६२
षट्पञ्चासिका	—	(हि०)	६५६
षट्पञ्चासिकावृत्ति	भट्टोत्पल	(सं०)	२६२
षट्पाठ	—	(सं०)	४१७
षट्पाठ	बुधजन	(हि०)	४१६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
षट्पादहृद [गोभूत]	आ० कुन्दकुन्द	(अ०)	११७, ७४८
षट्पादहृदटीका	श्रुतसागर	(सं०)	११६
षट्पादहृदटीका	—	(सं०)	११८
षट्पादहृदटीका	—	(सं०)	७५७
षट्पादसंख्या	—	(सं०)	६८३
षट्पादसंख्यावर्णन	—	(सं०)	७४८
षट्पादसंख्यावर्णन	—	(हि०)	४४
षट्पादसंख्यावर्णन	हर्षकीर्ति	(हि०)	७७५
षट्पादसंख्यावर्णन	साह लोहट	(हि०)	३६६
षट्पादसंख्यावर्णन	मनरन्द	(हि०)	८८
षट्पादसंख्यावर्णन	—	(सं०)	१३६
षट्पादसंख्यावर्णन	—	(सं०)	१३६
षट्पादसंख्यावर्णन	हरिभद्रसूरि	(सं०)	१३६
षट्पादसंख्यावर्णन	—	(सं०)	१४०
षट्पादसंख्यावर्णन	गणरतनसूरि	(सं०)	१३६
षट्पादसंख्यावर्णन	—	(सं०)	७५२
षट्पादसंख्यावर्णन	—	(सं०)	८८
षट्पादसंख्यावर्णन	विश्वसेन	(सं०)	५१६, ५४१
षट्पादसंख्यावर्णन	भक्तिलाल	(सं०)	३३६
षट्पादसंख्यावर्णन	राजहंसोपाध्याय	(सं०)	४४
षट्पादसंख्यावर्णन	—	(सं०)	५४२
षट्पादसंख्यावर्णन	ललितकीर्ति	(सं०)	६४५
षट्पादसंख्यावर्णन	—	(अ०)	५४१
षट्पादसंख्यावर्णन	—	(अ० सं०)	५४२
षट्पादसंख्यावर्णन	रङ्गभू	(अ०)	५१७, ५४२
षट्पादसंख्यावर्णन	—	(अ०)	५४२
षट्पादसंख्यावर्णन	—	(हि० सं०)	५४२
षट्पादसंख्यावर्णन	केशवसेन	(सं०)	५३६, ५४२, ६७६
षट्पादसंख्यावर्णन	श्रुतसागर	(सं०)	५१०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
षोडशकारणपूजा [षोडशकारणवर्तोद्यापनपूजा]				शत्रुञ्जयतीर्थरास [शत्रुञ्जयरास]			
सुमनिसागर (सं०)	५१७, ५४३, ५५७			समयसुन्दर (सं०)	६१७, ७००		
षोडशकारणपूजा	—	(सं०)	५१५	शत्रुञ्जयभास	राजसमुद्र	(हि०)	६१६
५३७, ५४२, ५४३, ५६६, ५७४, ५६४, ५८६.				शत्रुञ्जयस्तवन	राजसमुद्र	(हि०)	६१६
६०७, ६४६, ६५८, ७६३				शनिश्चरदेवकी कथा	शुशालचन्द्र	(हि०)	६८३
षोडशकारणपूजा	शुशालचन्द्र	(हि०)	५१६	शनिश्चरदेवकी कथा [शनिश्चरकथा]	—	(हि०)	६६२
षोडशकारणपूजा	आनतराय	(हि०)	७०५	६६४, ७११, ७१३, ७१४, ७२३, ७४३, ७८६			
षोडशकारणभावना	—	(सं०)	८६	शनिश्चरहृष्टिचिन्ता	—	(सं०)	२६३
षोडशकारणभावना	पं० सदाशुख	(हि० ग०)	८८	शनिस्तोत्र	—	(सं०)	४२४
षोडशकारणभावना	—	(हि०)	८८	शब्दप्रभेद व धातुप्रभेद	श्री महेश्वर	सं०	२७७
षोडशकारणभावनाजयमाल	नथमल	(हि०)	८८	शब्दरत्न	—	(सं०)	२७७
षोडशकारणभावनावर्णनवृत्ति	पं० शिवजीलाल	(हि०)	८८	शब्दरूपावलि	—	(सं०)	२६४
षोडशकारणविधानकथा	पं० अश्वदेव	(सं०)	२२०	शब्दरूपिणी	आ० वररुचि	(सं०)	२६४
२४२, २४५, २३७				शब्दशोभा	कवि नीलकण्ठ	(सं०)	२६४
षोडशकारणविधानकथा	मदनकीर्ति	(सं०)	५१४	शब्दानुशासन	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२६४
षोडशकारणवर्तकथा	शुशालचन्द्र	(हि०)	२४४	शब्दानुशासनवृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२६४
षोडशकारणवर्तकथा	—	(गु०)	२४७	शरदुत्सवदीपिका [मण्डलविधानपूजा]			
षोडशकारणवर्तोद्यापनपूजा	राजकीर्ति	(सं०)	४४३	सिंहनन्दि	(सं०)	५४३	
श				शहरमारोठ की पत्रो	मुनि महीचन्द्र	(हि०)	५६२
				शाकटायनव्याकरण	शाकटायन	(सं०)	२६५
शम्भुप्रद्युम्नप्रबन्ध	समयसुन्दरगणि	(सं०)	१६७	शान्तिकनाम	—	(हि०)	६६८
शकुनचिन्ता	—	(सं०)	२६२	शान्तिकरस्तोत्र	विद्यासिद्धि	(सं०)	६८१
शकुनशास्त्र	—	(हि०)	६०७	शान्तिकरस्तोत्र	सुन्दरसूर्य	(सं०)	४२३
शकुनावली	गर्ग	(सं०)	२६२	शान्तिकविधान	—	(हि०)	५४४
शकुनावली	—	(सं०)	२६२, ६०३	शान्तिकविधान (बृहद्)	—	(सं०)	५४४
शकुनावली	अथजद	(हि०)	२६२	शान्तिकविधि	अर्हदेव	(सं०)	५४४
शकुनावली	—	(हि०)	२६३, ६४३	शान्तिकहोमविधि	—	(सं०)	६४६
शतप्रभृत्तरी	—	(हि०)	६८६	शान्तिघोषणास्तुति	—	(सं०)	४१७
शतक	—	(सं०)	२७७	शान्तिचक्रपूजा	—	(सं०)	५१७
शत्रुञ्जयगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(सं०)	५१३, ५४३	शान्तिचक्रमण्डल (चित्र)			५२४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
शांतिनाथचरित्र	अजितप्रभसूरि	(सं०) १९८	शारदाष्टक	बनारसीदास	(हि०) ७७६
शांतिनाथचरित्र	भ० सकलकीर्ति	(सं०) १९८	शारदाष्टक	—	(हि०) ४७०
शांतिनाथपुराण	महाकवि अशग	(सं०) १५५	शारदीयाममाला	—	(सं०) २७७
शांतिनाथपुराण	खुशालचन्द्र	(हि०) १५५	शार्ङ्गधरसंहिता	शार्ङ्गधर	(सं०) ३०५
शांतिनाथपूजा	रामचन्द्र	(हि०) ५४५	शार्ङ्गधरसंहिताटीका	नाडमल्ल	(सं०) ३०६
शांतिनाथपूजा	—	(सं०) ५०६	शालिभद्रभीष्ट	जितसिंहसूरि	(हि०) ७००
शांतिनाथस्तवन	—	(सं०) ४१७	शालिभद्रमहामुनिगजभाष्य	—	(हि०) ६१६
शांतिनाथस्तवन	गुणसागर	(हि०) ७०२	शालिभद्र चौपई	मतिसागर	(हि०) १९८, ७२६
शांतिनाथस्तवन	ऋषि लालचंद्र	(हि०) ४१७	शालिभद्रयज्ञाभीष्टाई	जितसिंहसूरि	(हि०) २५३
शांतिनाथस्तोत्र	मुनि गुणभद्र	(सं०) ६१४	शालिभद्रमहामुनिगजभाष्य	—	(हि०) ६१६
शांतिनाथस्तोत्र	गुणभद्र स्वाभी	(सं०) ७२२	शालिभद्रसज्जभाष्य	—	(हि०) ७२४
शांतिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	(सं०) ४१७, ७१५	शालिहोत्र	—	(सं०) ७३०
शांतिनाथस्तोत्र	—	(सं०) ३८३	शालिहोत्र [अष्टवचिर्विस्तार]		
	४०२, ४१८, ६४६, ६७३, ७४५		पं० नकुल (सं०-हि०)		३०६
शांतिपाठ	—	(सं०) ४१८	शालिहोत्र [अष्टवचिर्विस्तार]	—	(सं०) ३०६
४२८, ५४५, ५६६, ६४०, ६६१, ६६७, ७०४, ७०५			शास्त्रगुरुजयमाला	—	(प्रा०) ५४५
७३३, ७५८			शास्त्रजयमाला	ज्ञानभूषण	(सं०) ४५५
शांतिपाठ (बृहद्)	—	(सं०) ५४५	शास्त्रजयमाला	—	(प्रा०) ५४५
शांतिपाठ	द्यानतराय	(हि०) ५१६	शास्त्रपूजा	—	(सं०) ५३६
शांतिपाठ	—	(हि०) ६४५			५६४, ५६५, ६५२
शांतिपाठ	—	(हि०) ५०६	शास्त्रपूजा	—	(हि०) ५१६
शांतिमंडलपूजा	—	(सं०) ५०६	शास्त्रप्रवचन प्रारंभ करने		
शांतिरत्नसूची	—	(सं०) ५४५	की विधि	—	(सं०) ५४६
शांतिविधि	—	(सं०) ५४०	शास्त्रजीकागंडल [चित्र]	—	५२५
शांतिविधान	—	(सं०) ४१८	शासनदेवताचर्चविधान	—	(सं०) ५४६
आचार्यशांतिमागरपूजा	भगवानदास	(हि०) ४६१, ७८६	शिक्षाचतुष्क	नवलराम	(हि०) ६६८
शांतिस्तवन	देवसूरि	(सं०) ४१६	शिक्षरविलास	रामचन्द्र	(हि०) ६६३
शांतिहोमविधान	आशाधर	(सं०) ५४५	शिक्षरविलासपूजा	—	(हि०) ५४६
शारदाष्टक	—	(सं०) ४२४	शिक्षरविलासभाषा	धनराज	(हि०) ७६३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
शिलालेखसंग्रह	—	(सं०)	३७५
शिलोज्ज्वलकोश	कवि सारस्वत	(सं०)	२७७
शिवरात्रिउत्थापनविधिकथा	शंकरभट्ट	(सं०)	२४७
शिशुपालवध	महाकवि जगन्नाथ	(सं०)	१८६
शिशुपालवधटीका	मल्लिनाथसूरि	(सं०)	१८६
शिशुबोध	काशीनाथ	(सं०)	२६५
	२६३, ६०३, ६७२, ६७५		
शीतलनाथपूजा	धर्मभूषण	(सं०)	५४६, ७६५
शीतलनाथस्तवन	ऋषिलालचंद	(हि०)	४५१
शीतलनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	(राज०)	६१६
शीतलाष्टक	—	(सं०)	६४७
शीलकथा	भारामल्ल	(हि०)	२४७
शीलनववाह	—	(हि०)	८६
शीलव्रत्तीसी	अकूमल	(हि०)	७५०
शीलव्रत्तीसी	—	(हि०)	६१६
शीलराम	ज० रायमल्ल	(हि०)	७४६
शीलरात	विजयदेवसूरि	(हि०)	३६५, ६१७
शीलविधानकथा	—	(सं०)	२४६
शीलव्रतकेभेद	—	(हि०)	६१५
शीलगुदर्शनराशो	—	(हि०)	६०३
शालोपदेशमाला	मेरुसुन्दरगणि	(गुज०)	२४७
शुक्लपञ्चमि	—	(सं०)	२४७
शुक्लपञ्चमीव्रतपूजा	—	(सं०)	५४०
शुक्लपञ्चमीव्रतपूजा	—	(सं०)	५४६
शुक्लपञ्चमीव्रतोत्थापन	—	(सं०)	५४६
शुद्धिविधान	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	५१८
शुभमालिका	श्रीधर	(सं०)	५७४
शुभमुहूर्त	—	(हि०)	५६६
शुभसीख	—	(हि.ग.)	३३६, ७१८
शुभाशुभयोग	—	(सं०)	२६३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
शृंगारकवित्त	—	(हि०)	६६६
शृंगारतिलक	कालिदास	(सं०)	३५६
शृंगारतिलक	रुद्रभट्ट	(सं०)	३५६
शृंगाररसकेकवित्त	—	(हि०)	७७०
शृंगाररस के फुटकरखंड	—	(हि०)	५६३
शृंगारसंबंध	—	(हि०)	७६७
श्यामव्रत्तीसी	नन्ददास	(हि०)	६८४
श्यामव्रत्तीसी	श्याम	(हि०)	७६६
श्यामभूषण	नरहरिभट्ट	(सं०)	१८६
श्यामव्रत्तीसी	—	(प्रा०)	८६
श्यामव्रत्तीसी	—	(हि०)	३७५
श्यामव्रत्तीसी	हृषीकृति	(हि०)	५६७
श्यामव्रत्तीसी	—	(हि०)	७५७
श्यामव्रत्तीसी	—	(सं०)	८६
श्यामव्रत्तीसी	—	(सं०)	८६, ५७५
श्यामव्रत्तीसी	—	(प्रा०)	८६
श्यामव्रत्तीसी	—	(सं०)	५७२
श्यामव्रत्तीसी	—	(प्रा०)	७५४
श्यामव्रत्तीसी	—	(प्रा० हि०)	७६८
श्यामव्रत्तीसी	पद्मलालचौधरी	(हि०)	८६
श्यामव्रत्तीसी	वीरसेन	(सं०)	८६
श्यामव्रत्तीसी	उमास्वामि	(सं०)	६०
श्यामव्रत्तीसी	अमितगति	(सं०)	६०
श्यामव्रत्तीसी	आशाधर	(सं०)	६३५
श्यामव्रत्तीसी	शुभभूषण	(सं०)	६०
श्यामव्रत्तीसी	पद्मनंद	(सं०)	६०
श्यामव्रत्तीसी	पूज्यपाद	(सं०)	६०
श्यामव्रत्तीसी	सकलकीर्ति	(सं०)	६१
श्यामव्रत्तीसी	—	(सं०)	६१
श्यामव्रत्तीसी	—	(प्रा०)	६१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
श्रावकाचारदीप्ता	रामसिंह (अप०)	६४२, ७४८	
श्रावकाचारभाषा	पं० भागवन्द	(हि०)	६१
श्रावकाचार	—	(हि०)	६१
श्रावकों की उत्पत्ति तथा ८४ गोत्र	—	(हि०)	७५६
श्रावकों की चौरासी जातियां	—	(हि०)	३७५
श्रावकों को बहलर जातियां	—	(सं० हि०)	३७५
श्रावणीद्वादशीउपाख्यान	—	(सं०)	२४७
श्रावणीद्वादशीकथा	पं० अभ्रदेव	(सं०)	२४२, २४५
श्रावणीद्वादशीकथा	—	(सं०)	२४८
श्रीपतिस्तोत्र	चैनमुखजी	(सं०)	४१८
श्रीपालकथा	—	(हि०)	२४८
श्रीपालचरित्र	अ० नेमिदत्त	(सं०)	२००
श्रीपालचरित्र	अ० सकलकीर्ति	(सं०)	२०१
श्रीपालचरित्र	—	(सं०)	२००
श्रीपालचरित्र	—	(अप०)	२०१
श्रीपालचरित्र	परिमल	(हि०)	२२, ७७३
श्रीपालचरित्र	—	(हि०)	२०२
श्रीपालचरित्र	—	(हि०)	२०३
श्रीपालदर्शन	—	(हि०)	६१५
श्रीपालराम	जिनहर्ष गणि	(हि०)	३६५
श्रीपालराम	अ० राधमल्ल	(हि०)	६३८
	६५४, ७१२, ७१७, ७४६		
श्रीपालविनती	—	(हि०)	६५१
श्रीपालस्तवन	—	(हि०)	६२३
श्रीपालस्तुति	—	(सं०)	४२३
	७४५, ७५२, ७८४,		
श्रीपालजी कीस्तुति	टीकमसिंह	(हि०)	६३६
श्रीपालजी कीस्तुति	भगवतीदास	(हि०)	६४३
श्रीपालस्तुति	—	(हि०)	६०६
	६४४, ६५०		

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
श्रीवतजयस्तोत्र	—	(प्रा०)	७५४
श्रीस्तोत्र	—	(सं०)	४१८
श्रुतज्ञानपूजा	—	(सं०)	७२७, ५४६
श्रुतज्ञानभक्ति	—	(सं०)	६२७
श्रुतज्ञानमण्डलचित्र	—	(सं०)	५२५
श्रुतज्ञानवर्णन	—	(हि०)	६२
श्रुतज्ञानव्रतोत्तनपूजा	—	(हि०)	५१३
श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५१३
श्रुतभक्ति	—	(सं०)	६३३
श्रुतभक्ति	—	(सं०)	४२५
श्रुतभक्ति	पद्मलाल चौधरी	(हि०)	४५०
श्रुतज्ञानव्रतपूजा	—	(सं०)	५४६
श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५४६
श्रुतपंचमीकथा	स्वयंभू	(अप०)	६४२
श्रुतपूजा	ज्ञानमूषण	(सं०)	५३७
श्रुतपूजा	—	(सं०)	५४६
	५६५, ६६६		
श्रुतबोध	कालिदास	(सं०)	३१५, ६६४
श्रुतबोधटीका	मनोहरश्याम	(सं०)	३१५
श्रुतबोध	वररुचि	(सं०)	३१५
श्रुतबोधटीका	—	(सं०)	३१५
श्रुतबोधवृत्ति	हर्षकीर्ति	(सं०)	३१५
श्रुतस्कंध	अ० हेमचन्द	(प्रा०)	३७६
	५७२, ७०६, ७३७		
श्रुतस्कंधपूजा	श्रुतसागर	(सं०)	५४७
श्रुतस्कंधपूजा	—	(सं०)	५४७
श्रुतस्कंधपूजा [ज्ञानपंचविधतिपूजा]	सुरेन्द्रकीर्ति	(सं०)	५४७
श्रुतस्कंधपूजाकथा	—	(हि०)	५४७
श्रुतस्कंधमंडल [चित्र]	—		५२४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
श्रुतस्कंधविधानकथा	पं० अश्वदेव (सं०)		२४५
श्रुतस्कंधव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर (हि०)		२२८
श्रुतावतार	पं० श्रीधर (सं०)		३७६, ५७२
श्रुताष्टक	— (सं०)		६५७
श्रेणिकचरित्र	भ० शुभचन्द्र (सं०)		२०३
श्रेणिकचरित्र	भ० सकलकीर्ति (सं०)		२०३
श्रेणिकचरित्र	— (प्रा०)		२०३
श्रेणिकचरित्र	विजयकीर्ति (हि०)		२०४
श्रेणिकचौपई	डूंगा वैद (हि०)		२४८
श्रेणिकराजासम्भाषण	समयसुन्दर (हि०)		५१६
श्रेयांसस्तवन	विजयमानसूरि (हि०)		४५१
दलोकवास्तिक	आ० विद्यानन्दि (सं०)		४४
श्वेताम्बरमतकेचौरासीबोल	जगरूप (हि०)		७७६
श्वेताम्बरमतकेचौरासीबोल	— (हि०)		५८२
श्वेताम्बरों के ८४ बाद	— (हि०)		६२६

स

सङ्कटचौपदकथा	देवेन्द्रभूषण (हि०)		७६४
सङ्कटचौपदकथा	— (हि०)		७४१
संक्रांतिफल	— (सं०)		२६३, २६४
संक्षिप्तवेदान्तशास्त्रप्रक्रिया	— (सं०)		१४०
संगीतबंधशास्त्रजिनस्तुति	— (हि०)		६१८
संग्रहणीवालाबोध शिवनिधानगणि	(प्रा० हि०)		४५
संग्रहणीसूत्र	— (प्रा०)		४५
संश्रुतसूक्ति	— (सं०)		५७५
संघपण्टपत्र	— (प्रा०)		३२३
संधोतरत्तिकथन	— (हि०)		६२६
संघपञ्चीसी	द्यानतराय (हि०)		३७६
संज्ञाप्रक्रिया	— (सं०)		२६५, २६७
संतानविधि	— (हि०)		३०६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
संधाराविधि	—	(सं०)	५४८
संहृष्टि	—	(सं०)	५७३
सबन्धविवक्षा	—	(सं०)	२६५
संबोधयक्षरबावनी	द्यानतराय (हि०)		११६
संबोधपंचासिका	गौतमस्वामी (प्रा०)		११६, १२८
संबोधपंचासिका	— (प्रा०)		५७२
			६२८, ७०६, ७५५
संबोधपंचासिका	रङ्गू (अप०)		१२८
संबोधपंचासिका	— (अप०)		५७३
संयोगपञ्चासिका	द्यानतराय (हि०)		६०५
			६४८, ६८५, ६९३, ७१३, ७१६, ७२५
संबोधपंचासिका	—	(हि०)	४३०
संबोधसतक	द्यानतराय (हि०)		१२८
संबोधसतरी	— (प्रा०)		१२८
संबोधसत्ताणु	धीरचन्द्र (हि०)		३३६
संभवजिनस्तोत्र	मुनिगुणनन्दि (सं०)		४१६
संभवजिराणाहचरित्र	तेजपाल (अप०)		२०४
संभवनाथपद्धती	— (अप०)		५७६
संयोगपञ्चमीकथा	धर्मचन्द्र (हि०)		२५३
संयोगबत्तीसी	मानकवि (हि०)		६१३
संवत्सरवर्णन	— (हि०)		३७६
संवत्सरीविचार	— (हि० ग०)		२६४
संसारप्रवृत्ति	— (हि०)		७६२
संसारस्वरूपवर्णन	— (हि०)		६३
संस्कृतमंजरी	— (सं०)		२६५
संहनननाम	— (हि०)		६२६
सकलीकरण	— (सं०)		५४८
सकलीकरणविधि	— (सं०)		५१४, ५७८
सकलीकरणविधि	— (सं०)		५१५
			५४७, ६३६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सज्जनचित्तवल्लभ	मल्लिषेण (सं०)	३३७, ५७३		सप्तपदार्थी	शिवादित्य	(सं०)	१४०
सज्जनचित्तवल्लभ	शुभचन्द	(सं०)	३३७	सप्तपदार्थी	—	(सं०)	१४०
सज्जनचित्तवल्लभ	—	(सं०)	३३७	सप्तपदी	—	(सं०)	५४८
सज्जनचित्तवल्लभ	मिहरचन्द्र	(हि०)	३३७	सप्तपरमस्थान	सुशालचन्द्र	(हि०)	७३१
सज्जनचित्तवल्लभ	हर्गूलाल	(हि०)	३३७	सप्तपरमस्थानकथा	आ० चन्द्रकीर्ति	(सं०)	२४६
सज्जाम [वीरह बोल]	अपि रामचन्द्र	(हि०)	४५१	सप्तपरमस्थानकपूजा	—	(सं०)	५१७, ५४८
सज्जाम	समयसुन्दर	(हि०)	६१८	सप्तपरमस्थानव्रतकथा	सुशालचन्द्र	(हि०)	२४४
सत्सई	बिहारीलाल (हि०)	५७६, ७६८		सप्तपरमस्थानव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६
सतियों की सज्जाम	अभिज्जमलजी (हि०)	४५१		सप्तभंगीवासी	भगवतीदास	(हि०)	६८८
सत्तरभेदपूजा	साधुकीर्ति (हि०)	७३५, ७६०		सप्तविधि	—	(हि०)	३०७
सत्तात्रिभंगी	नेमिचन्द्राचार्य (प्रा०)	४५		सप्तव्यसनकथा	आ० सोमकीर्ति	(सं०)	२५०
सत्ताद्वार	—	(सं०)	४५	सप्तव्यसनकथा	भारामल	(हि०)	२५०
सद्भाषितावली	सकलकीर्ति (सं०)	३३८		सप्तव्यसनकथा भाषा	—	(हि०)	२५०
सद्भाषितावलीभाषा	पन्नालाल चौधरी (हि०)	३३८		सप्तव्यसनकवित्त	बनारसीदास	(हि०)	७२३
सद्भाषितावली	—	(हि०)	३३८	सप्तशती	गोवर्धनाचार्य	(सं०)	७१५
सत्त्रिपातकलिका	—	(सं०)	३०७	सप्तश्लोकीगीता	—	(सं०)	६२ ३६८, ६६२
सत्त्रिपातनिदान	—	(सं०)	३०६	सप्तसूत्रभेद	—	(सं०)	७६१
सत्त्रिपातनिदानचिकित्सा	बाहडदास (सं०)	३०६		सभातरंग	—	(सं०)	३३८
सन्देहसमुच्चय	धर्मकलशसूरि (सं०)	३३८		सभाशृंगार	—	(सं०)	३३६
सन्मतिलर्क	सिद्धसेनदिवाकर (सं०)	१४०		सभाशृंगार	—	(सं० हि०)	३३८
सप्तर्षिजिनस्तवन	—	(प्रा०)	६१६	सभासारनाटक	रघुराम	(हि०)	३३८
सप्तर्षिपूजा	जिणदास (सं०)	५४८		सप्तवित्तदाल	आसकरण	(हि०)	६२
सप्तर्षिपूजा	देवेन्द्रकीर्ति (सं०)	७६६		सप्तवित्तविषयोधर्म	जिनदास	(हि०)	७०१
सप्तर्षिपूजा	लक्ष्मीसेन (सं०)	५४८		सप्तमंभद्रकथा	जोधराज	(हि०)	७५८
सप्तर्षिपूजा	विश्वभूषण (सं०)	५४८		सप्तमंभद्रस्तुति	सप्तमंभद्र	(सं०)	७७८
सप्तर्षिपूजा	—	(सं०)	५४६	समयसार (गाथा)	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	११६
सप्तर्षिमंडल [चित्र]	—	(सं०)	५२४				५७४, ७०३, ७६२
सप्तपविचारस्तवन	—	(सं०)	४१८	समयसारकलशा	अमृतचन्द्राचार्य	(सं०)	१२०
सप्तपयावबोध	मुनिनेत्रसिंह (सं०)	१४०		समयसारकलशाटीका	—	(हि०)	१२५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
समयसारवक्त्रभाषा	—	(हि०)	१२५	समाधिमरण	—	(अप०)	९२८
समयसारटीका	—	(सं०)	१२२, ६६५	समाधिमरणभाषा	पन्नालालचौधरी	(हि०)	१२७
समयसारनाटक	बनारसीदास	(हि०)	१२३	समाधिमरणभाषा	सूरचन्द्र	(हि०)	१२७
	६०४, ६३६, ६८०, ६८३, ६८८,			समाधिमरण	—	(हि०)	१५, १२७
	६८६, ६८८, ७०२, ७१६, ७२०,						७१०, ७४८
	७३१, ७५३, ७५६,			समाधिमरणपाठ	द्यानतराय	(हि०)	१२६, ३६४
	७७८, ७८७, ७६२			समाधिमरण स्वरूपभाषा	—	(हि०)	१२७
समयसारभाषा	जयचन्द्रछावडा	(हि० सं०)	१२४	समाधिलतक	पूज्यपाद	(सं०)	१२७
समयसारवचनिका	—	(हि०)	१२५	समाधिशतकटीका	प्रभाचन्द्राचार्य	(सं०)	१२७
समयसारभुक्ति	अमृतचन्द्रसूरि	(सं०)	५७५, ७६४	समाधिशतकटीका	—	(सं०)	१२८
समयसारवृत्ति	—	(अप०)	१२२	समुद्रमंथन	विश्वसेन	(सं०)	४१६
समरसार	रामबाजपेय	(सं०)	२६४	समुद्रघातभेद	—	(सं०)	६२
समवशरणपूजा	ललितकीर्ति	(सं०)	५४६	सम्मेदगिरिपूजा	—	(हि०)	७३६, ७४०
समवशरणपूजा	रत्नशेखर	(सं०)	५३७	सम्मेदशिखरपूजा	गंगादास	(सं०)	५४६ ७२७
समवशरणपूजा [वृहद्]	रूपचन्द्र	(सं०)	५७६	सम्मेदशिखरपूजा	पं० जवाहरलाल	(हि०)	४५०
समवशरणपूजा	—	(सं०)	५४६, ७६७	सम्मेदशिखरपूजा	भागचन्द्र	(हि०)	५५०
समवशरणस्तोत्र	विष्णुसेन मुनि	(सं०)	४१६	सम्मेदशिखरपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	५५०
समवशरणस्तोत्र	विश्वसेन	(सं०)	४१५	सम्मेदशिखरपूजा	—	(हि०)	५११
समवशरणस्तोत्र	—	(सं०)	४१६				५१८, ६७८
समस्तत्रत की जयमाल	चन्द्रकीर्ति	(हि०)	५६४	सम्मेदशिखरनिर्वाणकाण्ड	—	(हि०)	५६६
समाधि	—	(अप०)	६४२	सम्मेदशिखरमहात्म्य	दीक्षित देवदत्त	(सं०)	६२
समाधितन्त्र	पूज्यपाद	(सं०)	१२५	सम्मेदशिखरमहात्म्य	मनसुखलाल	(हि०)	६२
समाधितंत्र	—	(सं०)	१२५	सम्मेदशिखरमहात्म्य	लालचन्द्र	(हि० प०)	६२, २५१
समाधितन्त्रभाषा	नाथूरामदोसी	(हि०)	१२६	सम्मेदशिखरमहात्म्य	—	(हि०)	७८८
समाधितन्त्रभाषा	पर्वतचर्मार्थी	(हि०)	१२६	सम्मेदशिखरविलास	केशरीसिंह	(हि०)	६२
समाधितन्त्रभाषा	माणिकचन्द्र	(हि०)	१२५	सम्मेदशिखरविलास	देवाब्रह्म	(हि० प०)	६३
समाधितन्त्रभाषा	—	(हि० ग०)	१२५	सम्यक्त्वकीमुदीकथा	स्नेहा	(सं०)	५५१
समाधिमरण	—	(सं०)	६१२	सम्यक्त्वकीमुदीकथा	गुणाकरसूरि	(सं०)	२५१
समाधिमरण	—	(अप०)	१२६	सम्यक्त्वकीमुदीभाग १	सद्गुणपाल	(अप०)	६४८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
समन्वदशमीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५५५	सुभाषितपद्य	—	(हि०)	६२३
सुगुह्यतक	जिनदासगोधा	(हि०प०)	३४०, ४४७	सुभाषितपाठसंग्रह	—	(सं०हि०)	६६८
सुगुरुस्तोत्र	—	(सं०)	४२२	सुभाषितमुक्तावली	—	(सं०)	३४१
सुदयवच्छसावलिमाकी चौपई	—	(सं०)	४२२	सुभाषितरत्नसंदोह	अमितिगति	(सं०)	३४१
सुनिकेशव	(हि०)	२५४		सुभाषितरत्नसंदोहभाषा	पन्नालालचौधरी	(हि०)	३४१
सुदयवच्छसावलिगारीवार्ता	—	(हि०)	७३४	सुभाषितसंग्रह	—	(सं०)	३४१, ५७५
सुदर्शनचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	२०८	सुभाषितसंग्रह	—	(सं०प्रा०)	३४२
सुदर्शनचरित्र	मुमुक्षुविद्यानंदि	(सं०)	२०६	सुभाषितसंग्रह	—	(सं०हि०)	३४२
सुदर्शनचरित्र	भ० सकलकीर्ति	(सं०)	२०८	सुभाषितावली	शुभचन्द्र	(सं०)	३४१
सुदर्शनचरित्र	—	(सं०)	२०६	सुभाषितावली	सकलकीर्ति	(सं०)	३४३
सुदर्शनचरित्र	—	(हि०)	२०६	सुभाषितावली	—	(सं०)	३४३, ७०६
सुदर्शनरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	३६६	सुभाषितावलीभाषा	बा० दुखीचन्द्र	(हि०)	३४४
			६२६, ७१२, ७४६	सुभाषितावलीभाषा	पन्नालालचौधरी	(हि०)	३४४
सुदर्शनसेयकीढाल [कथा]	—	(हि०)	३५४	सुभाषितावलीभाषा	—	(हि०प०)	३४४
सुदामाकीबारहखडी	—	(हि०)	७७६	सुभौमचरित्र	भ० रतनचन्द्र	(सं०)	२०६
सुदृष्टिरंगिणीभाषा	देकचन्द्र	(हि०)	६७	सुभौमचक्रवर्तिरास	ब्र० जिनदास	(हि०)	३६७
सुदृष्टिरंगिणीभाषा	—	(हि०)	६७	सूक्तावली	—	(सं०)	३४५, ६७२
सुन्दरविलास	सुन्दरदास	(हि०)	७४५	सूक्तिमुक्तावली	सोमप्रभाचार्य	(सं०)	३४४, ६३५
सुन्दरशृङ्गार	महाकविराय	(हि०)	६८३	सूक्तिमुक्तावलीस्तोत्र	—	(सं०)	६०६
सुन्दरशृङ्गार	सुन्दरदास	(हि०)	७२३, ७६८	सूतकनिर्णय	—	(सं०)	५५५
सुन्दरशृङ्गार	—	(हि०)	६८५	सूतकवर्णन [यशस्तिलक से]	सोमदेव	(सं०)	५७१
सुगार्द्वनाथपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	५५५	सूतकवर्णन	—	(सं०)	५५५
सुपय दोहा	—	(प्रप०)	६२८	सूतकविधि	—	(सं०)	५७६
सुपय दोहा	—	(प्रप०)	६३७	सूत्रकृतांग	—	(प्रा०)	४७
सुपय दोहा	—	(हि०)	७६५	सूर्यकवच	—	(सं०)	६४०
सुप्रभातस्तवन	—	(सं०)	५७४	सूर्यकेदशनाम	—	(सं०)	६०८
सुप्रभाताष्टक	यति नेमिचन्द्र	(सं०)	६३३	सूर्यगमनविधि	—	(सं०)	२६५
सुप्रभातिकस्तुति	भुवनभूषण	(सं०)	६३३	सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	ब्र० जयसागर	(सं०)	५५७
सुभाषित	—	(सं०)	५७५				
सुभाषित	—	(हि०)	७०१				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सूर्यस्तोत्र	—	(सं०)	६४६, ६६२	सोलहसतियोंकेनाम	राजसमुद्र	(हि०)	६१६
सोनागिरिपञ्चीसी	भागीरथ	(हि०)	६८	सोलहसतीसज्जाय	—	(हि०)	४५२
सोनागिरिपञ्चीसी	—	(हि०)	६६२	सौंदर्यलहरी स्तोत्र	—	(सं०)	४२२
सोनागिरिपूजा	आशा	(सं०)	५५५	सौंदर्यलहरीस्तोत्र भट्टारक जगद्भूषण	(सं०)	४२२	
सोनागिरिपूजा	—	(हि०)	५५६	सौख्यत्रतोद्यापन	अक्षयराम	(सं०)	५१६, ५५६
			६७४, ७३०	सौख्यप्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६
सोमजस्तोत्र	—	(सं०)	२६५	सौभाग्यपंचमीकथा सुन्दरविजयगणि	(सं०)	२५५	
सोमशर्माकारिषेणुकथा	—	(प्रा०)	२५५	स्वन्दपुराण	—	(सं०)	६७०
सोलहकारणकथा	रत्नपाल	(सं०)	६६५	स्तवन	—	(अप०)	६६०
सोलहकारणकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७४०	स्तवनअरिहन्त	—	(हि०)	६४८
सोलहकारण जयमाल	—	(अप०)	६७६	स्तवन	आशाधर	(सं०)	६६१
सोलहकारणपूजा	ब्र० जिनदास	(सं०)	७६५	स्तुति	—	(सं०)	४४२
सोलहकारणपूजा	—	(सं०)	६०६	स्तुति	कनककीर्ति	(हि०)	६०१ ६५०
			६४४, ६५२, ६६४, ७०४,	स्तुति	टीकमचन्द्र	(हि०)	६३६
			७३१, ७८४	स्तुति	नवल	(हि०)	६६२
सोलहकारणपूजा	—	(अप०)	७०५	स्तुति	बुधजन	(हि०)	७०४
सोलहकारणपूजा	ज्ञानतराय	(हि०)	५११	स्तुति	हरीसिंह	(हि०)	७७६
			५१६, ५५६	स्तुति	—	(हि०)	६६३
सोलहकारणपूजा	—	(हि०)	५५६ ६७०				६७३, ७५८
सोलहकारणभावनावर्णन	सदासुख	(हि०)	६८	स्तोत्र	पद्मानंदि	(सं०)	५७५
सोलहकारणभावना	—	(हि०)	७८८	स्तोत्र	लक्ष्मीचन्द्रदेव	(प्रा०)	५७६
सोलहकारणभावना एवं दशलक्षणा				स्तोत्रसंग्रह	—	(सं०हि०)	६२८ ६५१
वर्णन-सदासुखकासलीवाल		(हि०)	६८				६६८, ७०३, ७१४, ७१५
सोलहकारणमंडलविधान	टेकचद्	(हि०)	५५६				७३६, ७४१, ७६२, ७६६, ७६७
सोलहकारणमंडल [त्रिश]	—		५२४	स्तोत्रसंग्रह	—	(सं०हि०)	७२१
सोलहकारणव्रतोच्चारन	केशवसेन	(सं०)	५१७				७३८, ७४५, ७४८, ७७४
सोलहकारणराम	ब्र० सकलकीर्ति	(हि०)	५६४	स्तोत्रपूजापाठसंग्रह	—	(सं०हि०)	६६८,
			६३६, ७८१				७७३
सोलहतिथिवर्णन	—	(हि०)	५६४				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
स्त्रीमुक्तिखंडत	—	(हि०)	६४०	स्वयंभूस्तोत्र टीका	प्रभाचन्द्राचार्य	(सं०)	४३४
स्त्रीलक्षण	—	(सं०)	३५६	स्वयंभूस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	(सं०)	७१५
स्त्रीशृंगारवर्णन	—	(सं०)	३७१	स्वप्नविचार	—	(सं०)	५७२
स्थापनानिर्णय	—	(सं०)	६८	स्वरोदय	—	(सं०)	१२८
स्थूलभद्रकाचोमासावर्णन	—	(हि०)	३७७	स्वरोदय रनजीतदास (चरनदास)	(हि०)	३४५	
स्थूलभद्रगीत	—	(हि०)	६१८	स्वरोदय	—	(हि०)	६४०, ७५६
स्थूलभद्रशीलरासो	—	(हि०)	५६६	स्वरोदयविचार	—	(हि०)	५६६
स्थूलभद्रसज्जकाय	—	(हि०)	४५२, ६१६	स्वर्गनरकवर्णन	—	(हि०)	६२७
स्तनपनविधान	—	(हि०)	५५६, ६५५,				७०१, ७६३
स्तनपनविधि [वृहद्]	—	(सं०)	५५६	स्वर्गसुखवर्णन	—	(हि०)	७२०
स्नेहलीला	जनमोहन	(हि०)	७७३	स्वर्गाकर्षणविधान	महीधर	(सं०)	४२८
स्नेहलीला	—	(हि०)	३६८	स्वस्त्ययनविधान	—	(सं०)	५७४
स्फुटकवित्त	—	(हि०)	७०१				६५८, ६४६
स्फुटकवित्तएवंपद्यसंग्रह	—	(सं० हि०)	६७२	स्वाध्याय	—	(सं०)	५७१
स्फुट दोहे	—	(हि०)	६२३, ६७३	स्वाध्यायपाठ	—	(सं० प्रा०)	५६४
स्फुटपद्यएवं मंत्रभादि	—	(हि०)	६७०	स्वाध्यायपाठ	—	(प्रा० सं०)	६८ ६३३
स्फुटपाठ	—	(हि०)	६६४, ७२६	स्वाध्यायपाठ	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
स्फुटवार्ता	—	(हि०)	७४१	स्वाध्यायपाठभाषा	—	(हि०)	६८
स्फुटश्लोकसंग्रह	—	(सं०)	३४५	स्वानुभवदर्पण	नाथूराम	(हि० प०)	१२८
स्फुटहिन्दीपद्य	—	(हि०)	५६५	स्वार्थबीसी	मुनि श्रीधर	(हि०)	६१६
स्वप्नविचार	—	(हि०)	२६५				
स्वप्नाध्याय	—	(सं०)	२६५				
स्वप्नावली	देवनन्दि	(सं०)	२६५, ६३३	हंसकीढालतथाविनतीढाल	—	(हि०)	६८५
स्वप्नावली	—	(सं०)	२६५	हंसतिलकरास	ब्र० अजित	(हि०)	७०७
स्याद्वादचुलिका	—	(हि० ग०)	१४१	हठयोगदीपिका	—	(सं०)	१२८
स्याद्वादमंजरी	मल्लिषेणसूरि	(सं०)	१४१	हणवंतकुमारजयमाल	—	(सं०)	६३८
स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्र	(सं०)	४२३	हनुमन्चरित्र	ब्र० अजित	(सं०)	२१०
			४२५, ४२७, ५७४, ५६५,	हनुमन्चरित्र	ब्र० रायसह	(हि०)	२११
			६३३ ६६५, ६८६,				
			७२०, ७३१	(हनुमन्तकथा)		५६५, ५६६, ७१७,	
				(हनुमतकथा)		७३४, ७३६,	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
(हनुमतरास)		७४०, ७४४,	हरिवंशपुराणभाषा	—	(हि०) १५८, १५९
(हनुमंत चौपई)		७५२, ७६२	हरिवंशवर्णन	—	(हि०) २५५
हनुमान स्तोत्र	—	(हि०) ४३२	हरिहरनामावलिबर्णन	—	(सं०) ६६०
हनुमतानुमेका	महाकवि स्वयंभू	(प्रप०) ६३५	हवनविधि	—	(सं०) ७३१
हमीरचौपई	—	(हि०) ३७८	हारात्रलि	महामहोपाध्याय पुरुत्तपोमदैव	(सं०) २११
हमीररासो	महेशकवि (हि०)	३६७, ७८३	हिप्योलना	शिवचंदमुनि	(सं०) ६८३
हयग्रीवावतारचित्र	—	६०३	हिसोपदेश	इलीचन्द्र	(सं०) ७४४
हरगोरीसंवाद	—	(सं०) ६०८	हिसोपदेश	विष्णुशर्मा	(सं०) ३४५
हरजीके दोहे	हरजी	(हि०) ७८८	हिसोपदेशभाषा	—	(हि०) ३४६, ७६३
हरकेल्प	—	(हि०) ३०७	दृष्टावसर्पिणीकालदोष	माणकचन्द्र (हि०)	६८, ४४८
हरिचन्द्रशतक	—	(हि०) ७४१	हेमभारी	विश्वभूषण	(हि०) ७६३
हरिनाम्माला	शंकराचार्य	(सं०) ३६८	हेमनीबृहदवृत्ति	—	(सं०) २७०
हरिबोलचित्रावली	—	(हि०) ६०१	हेमाव्याकरण [हेमाव्याकरणावृत्ति]	हेमचन्द्राचार्य	(सं०) २७०
हरिरस	—	(हि०) ६०१	होडाचक्र	—	(सं०) ६६६
हरिवंशपुराण	प्र० जिनदास	(सं०) १५६	होराज्ञान	—	(सं०) २६५
हरिवंशपुराण	जिनसेनाचार्य	(सं०) १५५	होलीकथा	जिनचन्द्रसूरि	(सं०) २५६
हरिवंशपुराण	श्री भूषण	(सं०) १५७	होलिकाकथा	—	(सं०) २५५
हरिवंशपुराण	सकलकीर्ति	(सं०) १५७	होलिकाचौपई	कुंजर कवि (हि०प्र०)	२५५
हरिवंशपुराण	धवल	(प्रप०) १५७	होलीकथा	छीतर ठोलिया	(हि०) २४६, २५५, ६८५
हरिवंशपुराण	यशः कीर्ति	(प्रप०) १५७	होलीरेणुकाचरित्र	प्र० जिनदास	(सं०) २११
हरिवंशपुराण	महाकवि स्वयंभू	(प्रप०) १५७			
हरिवंशपुराणभाषा	खुशालचन्द्र	(हि०प्र०) १५८			
हरिवंशपुराणभाषा	दौलतराम	(हि०प्र०) १५७			



ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सम्यक्त्वकौमुदीकथा	—	(सं०)	२५१
सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा	जगतराम	(हि०)	२५२
सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा	जोधराजगोदीका	(हि०)	२५२, ६८६
सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा	बिनोदीलाल	(हि० ग०)	२५२
सम्यक्त्वकौमुदी भाषा	—	(हि०)	२५३
सम्यक्त्वजयमाल	—	(सं०)	७६४
सम्यक्त्वपञ्चीसी	—	(हि०)	७६०
सम्भजानचन्द्रिका	पं० टोहरमल	(हि०)	७
सम्भजानीधमाल	भगौतीदास	(हि०)	५३६
सम्भदर्शनपूजा	—	(सं०)	६१०
सम्भदृष्टिकीभावनावर्तन	—	(हि०)	७८५
सरस्वतीअष्टक	—	(हि०)	४५२
सरस्वतीकल्प	—	(सं०)	६५२
सरस्वतीचूर्णकानुमाला	—	(हि०)	७५७
सरस्वती जयमाल	अ० जिनदास	(हि०)	६५८
सरस्वतीपूजा	आशाधर	(सं०)	६५८
सरस्वतीपूजा [जयमाल]	ज्ञानभूषण	(सं०)	५१५, ५६५
सरस्वतीपूजा	पद्मनंदि	(सं०)	५५१, ७१६
सरस्वतीपूजा	—	(सं०)	५५१
सरस्वतीपूजा	नेमीचन्दबरुशी	(हि०)	५५१
सरस्वतीपूजा	संघी पन्नालाल	(हि०)	५५१
सरस्वतीपूजा	पं० बुधजन	(हि०)	५५१
सरस्वतीपूजा	—	(हि०)	५५१, ६५२
सरस्वतीस्तवन	लघुकवि	(सं०)	४१६
सरस्वतीस्तुति	ज्ञानभूषण	(सं०)	६५७
सरस्वतीस्तोत्र	आशाधर	(सं०)	६५७, ७६१
सरस्वतीस्तोत्र	बृहस्पति	(सं०)	४२०
सरस्वतीस्तोत्र	श्रुतसागर	(सं०)	४२०
सरस्वतीस्तोत्र	—	(सं०)	४२०, ५७५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सरस्वतीस्तोत्रमाला [आशरदास्तवन]	—	(सं०)	४२०
सरस्वतीस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	(हि०)	५४७
सर्वतोभद्रपूजा	—	(सं०)	५५१
सर्वतोभद्रमंत्र	—	(सं०)	४१६
सर्वज्वर समुच्चयदर्पण	—	(सं०)	३०७
सर्वार्थसाधनी	भट्टवररुचि	(सं०)	२७८
सर्वार्थसिद्धि	पृथ्वीपाद	(सं०)	४५१
सर्वार्थसिद्धिभाषा	नन्दचंदलाल	(हि०)	४६
सर्वार्थसिद्धिसंग्रह	—	(हि०)	४५२
सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र	जिनदत्तमूरि	(हि०)	६१६
सर्वेयाएवंपद	सुन्दरदास	(हि०)	६८१
सहस्रकूर्तजिनालयपूजा	—	(सं०)	५५१
सहस्रगुणितपूजा	धर्मकीर्ति	(सं०)	५५२
सहस्रगुणितपूजा	—	(सं०)	५५२
सहस्रनामपूजा	धर्मभूषण	(सं०)	५५२, ७४७
सहस्रनामपूजा	—	(सं०)	५५२
सहस्रनामपूजा	चैनमुख	(हि०)	५५२
सहस्रनामपूजा	—	(हि०)	५५२
सहस्रनामस्तोत्र	पं० आशाधर	(सं०)	५६६
सहस्रनामस्तोत्र	—	(सं०)	६६६, ७०५
सहस्रनामस्तोत्र	—	(सं०)	६६४
सहस्रनामस्तोत्र	—	(सं०)	७५३, ७६३
सहस्रनाम [बड़ा]	—	(सं०)	४३१
सहस्रनाम [लघु]	आ० समंतभद्र	(सं०)	४२०
सहस्रनाम [लघु]	—	(सं०)	४३१
सहेलीगीत	सुन्दर	(हि०)	७६४
साखी	कवीर	(हि०)	७२३
सागरदत्तचरित्र	हीरकवि	(हि०)	२०४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सागरधर्ममृत	आशाधर	(सं०)	६३	नाट्यप्रकाश	—	(हि०)	७५६
सातव्यसप्तम्याध्याय	—	(हि०)	६४	भाषाप्रतिपत्ति	—	(सं०)	२६४
साधुकीयास्तो	हेमराज	(हि०)	७७७	सामुद्रिकविचार	—	(हि०)	२६४
साधुदिनचर्या	—	(प्रा०)	६४	सामुद्रिकशास्त्र	श्री निधिसमुद्र	(सं०)	२६४
साधुवन्दना	आसन्दसूरि	(हि०)	६१७	सामुद्रिकलास्त्र	—	(सं०)	२६४, २६५
साधुवन्दना	मुण्णमागर (पृथगीहि०)		४५२	सामुद्रिकलास्त्र	—	(प्रा०)	२६४
साधुवन्दना	बनारसीदास	(हि०)	६४४	सामुद्रिकलास्त्र	—	(हि०)	२६५
			६५२, ७१६, ७४६				६०३, ६२७, ७०२
साधुवन्दना	मणिकचन्द्र	(हि०)	४५२	सायंकथापाठ	—	(सं०)	४२०
साधुवन्दना	—	(हि०)	६६४	सारस्वतीविशाल	—	(सं०)	४२०
सामायिकपाठ	अकितमति	(सं०)	६०४, ७३७	सारस्वतीवीरभाषा पारसदासनिगोत्या	(हि०)	४५३	
सामायिकपाठ	—	(सं०)	६५	सारस्वती	—	(अप०)	२६५
			४२५, ४२६, ४२६, ४३०,	सारस्वती	—	(हि०)	६७२
			५२५, ५२७, ६०३, ६३७,	सारस्वती	वरदराज	(सं०)	१४०
			६४६, ६५६, ७६३	सारस्वती	—	(सं०)	३०७
सामायिकपाठ	बहुमुनि	(प्रा०)	६४	सारसमुच्चय	कुलभद्र	(सं०)	६७, ५७४
सामायिकपाठ	—	(प्रा०)	६४, ५७५	सारसुतयंत्रमंडल [चित्र]	—		५२५
सामायिकपाठ	—	(सं० प्रा०)	५७५	सारस्वत दशाध्यायी	—	(सं०)	२६६
सामायिकपाठ	महाचन्द्र	(हि०)	४२६	सारस्वतदीपिका	चन्द्रकीर्तिसूरि		२६६
सामायिकपाठ	—	(हि०)	६७१	सारस्वतपंचसंधि	—	(सं०)	२६५
			७४६, ७५४, ७५५	सारस्वतप्रक्रिया अनुभूतिस्वरूपाचार्य	(सं०)	२६५, ७५०	
सामायिकपाठभाषा	जयचन्द्रदाबडा	(हि०)	६६, ५६७	सारस्वतप्रक्रियाटीका	महीभट्ट	(सं०)	२६७
सामायिकपाठभाषा	तिलोकचन्द्र	(हि०)	६६	सारस्वतयंत्रपूजा	—	(सं०)	५१०
सामायिकपाठभाषा	बुधसहाचन्द्र	(हि०)	६५	सारस्वतयंत्रपूजा	—	(सं०)	५५२, ६३६
सामायिकपाठभाषा	—	(हि० ग०)	६६	सारस्वती धातुपाठ	—	(सं०)	२६५
सामायिकवडा	—	(सं०)	४३१, ६०५	सारावली	—	(सं०)	२६५
सामायिकलघु	—	(सं०)	४३१	सालोत्तररास	—	(हि०)	३०७
			५६६, ६०५, ६०७	सावधम्म दोहा	मुनि रामसिंह	(अप०)	६७
सामायिकपठवृत्तसहित	—	(सं०)	७०३	सांख्यिका के मन्दिर की			
				रथवाचा का वर्णन	—	(हि०)	७१६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सांख्यवृत्तांशगङा	ब्रह्मदेव	(हि०)	४५१, ६४८	सिद्धवन्दना	—	(सं०)	४२०
सिद्धकूटपूजा	विश्वभूषण	(सं०)	५१६	सिद्धभक्ति	—	(सं०)	६२७
सिद्धकूटमंडल [चित्र]	—	—	५२४	सिद्धभक्ति	—	(ग्रा०)	५७८
सिद्धशैव पूजा	स्वरूपचन्द्र	(हि०)	४६७ ५५३	सिद्धभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	—
सिद्धशैवपूजा	—	(हि०)	५५३	सिद्धराजवन	—	(सं०)	४००
सिद्धशैवपूजाष्टक	द्यानतराय	(हि०)	७०५	सिद्धस्तुति	—	(सं०)	५७४
सिद्धशैवमहास्थवृत्ता	—	(सं०)	५५३	सिद्धहेमराजवृत्ति	जिनप्रभसूरि	(सं०)	२६७
सिद्धचक्रकथा	—	(हि०)	२५३	सिद्धान्तार्थसार	पं० रङ्गभू	(सं०)	४६
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचन्द्र	(सं०)	५६० ५१४, ५१३	सिद्धान्तकौमुदी	महो जीदीक्षित	(सं०)	२६७
सिद्धचक्रपूजा	श्रुतमागर	(सं०)	५५३	सिद्धान्तकौमुदी	—	(सं०)	२६७
सिद्धचक्रपूजा [वृहत्]	भानुकीर्ति	(सं०)	५५३	सिद्धान्तकौमुदी टीका	—	(सं०)	२६८
सिद्धचक्रपूजा [वृहत्]	शुभचन्द्र	(सं०)	५५३	सिद्धान्तचन्द्रिका	रामचन्द्राश्रम	(सं०)	२६८
सिद्धचक्रपूजा [वृहत्]	—	(सं०)	५५४	सिद्धान्तचन्द्रिका टीका	लोकेशकर	(सं०)	२६६
सिद्धचक्रपूजा	—	(सं०)	५१४	सिद्धान्तचन्द्रिका टीका	—	(सं०)	२६६
	५५४, ६३८, ६५८, ७३५			सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति	सदानन्दगणि	(सं०)	२६६
सिद्धचक्रपूजा [वृहत्]	संतलाल	(हि०)	५५३	सिद्धान्तचिन्ताकरीषक	धामदेव	(सं०)	३२३
सिद्धचक्रपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५५३	सिद्धान्तधर्मोपदेशमाला	—	(ग्रा०)	६८
सिद्धपूजा	आशाधर	(सं० ५५४, ७१६)		सिद्धान्तविन्दु	श्रीमधुसूदन सरस्वती	(सं०)	२७०
सिद्धपूजा	पद्मनन्दि	(सं०)	५३७	सिद्धान्तभञ्जरी	—	(सं०)	१३८
सिद्धपूजा	रत्नभूषण	(सं०)	५५४	सिद्धान्तमंजूषिका	नागेशभट्ट	(सं०)	२७०
सिद्धपूजा	—	(सं०)	४१५	सिद्धान्तमुक्तावली	पंचानन भट्टाचार्य	(सं०)	२७०
	५५४, ५७४, ५६४, ६०५			सिद्धान्तमुक्तावली	—	(सं०)	२७०
	६०७, ६४६, ६५१, ६७०			सिद्धान्तमुक्तावलीटीका	महादेवभट्ट	(सं०)	१४०
	६७६, ६७८, ७०४, ७३१			सिद्धान्तलेश संग्रह	—	(हि०)	४६
	७४५, ७६३			सिद्धान्तसारदीपक	सकलकीर्ति	(सं०)	४६
सिद्धपूजा	—	(सं० हि०)	५६६	सिद्धान्तसारदीपक	—	(सं०)	४७
सिद्धपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५१६	सिद्धान्तसारभाषा	नथमलविलास	(हि०)	४७
सिद्धपूजा	—	(हि०)	५५५	सिद्धान्तसारभाषा	—	(हि०)	४६
सिद्धपूजाष्टक	दौलतराम	(हि०)	७७७	सिद्धान्तसार संग्रह	आ० नरेन्द्रदेव	(सं०)	४७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवमीन्द्र	(सं०)	४००	सीमन्धरस्वामीपूजा	—	(सं०)	५५५
	४२१, ४२२, ४२५, ४२६, ४३१,			सीमन्धरस्वामीस्तवन	—	(हि०)	६१६
	४३२, ५७२, ५७८, ५७९, ५८५,			सीतरास	गुणकीर्त्ति	(हि०)	६०२
	५८७, ६०५, ६४०, ६३३			सुकुमालचरित्र	म० सकलकीर्त्ति	(सं०)	२०६
	६३७, ७०१			सुकुमालचरित्र	श्रीधर	(अप०)	२०६
सिद्धिप्रियस्तोत्रटीका	—	(सं०)	४२१	सुकुमालचरित्रभाषा	पं० नाथूलालदेसी	(हि०ग)	२०७
सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा	नथमल	(हि०)	४२१	सुकुमालचरित्र	हरचंद गंगवाल	(हि०प०)	२०७
सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा	पद्मलालचौधरी	(हि०)	४२१	सुकुमालचरित्र	—	(हि०)	२०७
सिद्धिगोम	—	(सं०)	२०७	सुकुमालपुनिकथा	—	(हि०ग०)	२५३
सिद्धोक्तान्वरण	—	(हि०)	६७	सुकुमालस्वामीरा	म० जिनदास	(हि०गुज)	३६६
सिन्दूरप्रकरण	सोमप्रभाचार्य	(सं०)	३४०	सुखषडी	धनराज	(हि०)	६२३
सिन्दूरप्रकरणभाषा	बनारसीदास	(हि०)	२२४	सुखषडी	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	७४६
	३४०, ५६१, ५६२, ७१०, ७१२			सुखनिधान	कवि अगन्नाथ	(सं०)	२०७
	७४६, ७५५, ७६२			सुखसंपत्तिपूजा	—	(सं०)	५१७
सिन्दूरप्रकरणभाषा	सुन्दरदास	(हि०)	३४०	सुखसंपत्तिविधानकथा	—	(सं०)	२४६
सिरिपालचरित्र	पं० नरसेन	(अप०)	२०५	सुखसंपत्तिविधानकथा	विमलकीर्त्ति	(अप०)	२४५
सिंहासनहाविशिका	हेमकरमुनि	(सं०)	२५३	सुखसंपत्तिव्रतपूजा	अखयराम	(सं०)	५५५
सिंहासनद्वारिशिका	—	(सं०)	२५३	सुखसंपत्तिव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५१४
सिंहासनवर्त्तनी	—	(सं०)	२५३	सुगन्धदशमीकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६४५
सीखसतरी	—	(हि०)	६८०	सुगन्धदशमीकथा	श्रुतसागर	(सं०)	५१४
सीताचरित्र	कविरामचन्द्र (बालक)	(हि०र०)	२०६	सुगन्धदशमीकथा	—	(सं०)	२५४
	७२५, ७५५			सुगन्धदशमीकथा	—	(अप०)	६३२
सीताचरित्र	—	(हि०)	५६६	सुगन्धदशमीव्रतकथा [सुगन्धदशमीकथा]	हेमराज	(हि०)	२५४, ७६५
सीताढाल	—	(हि०)	४५२	सुगन्धदशमीपूजा	स्वरूपचन्द्र	(हि०)	५११
सीताजीका वारहमास	—	(हि०)	७२७	सुगन्धदशमीमण्डल [चित्र]	—		५२५
सीताजीकीधिननी	—	(हि०)	६४८, ६८५	सुगन्धदशमीव्रतकथा	—	(सं०)	२४२
सीताजीकीसंज्ञाप	—	(हि०)	६१८	सुगन्धदशमीव्रतकथा	—	(अप०)	४
सीमन्धरवीजकडी	—	(हि०)	६४४	सुगन्धदशमीव्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	५१६
सीमन्धरस्तवन	ठक्कुरसी	(हि०)	७३८				

← ग्रंथ एवं ग्रंथकार →

प्राकृत भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अभयचन्द्रगणि—	भूरासंबंधकथा	२१८	देवसेन—	भाराधनासार	४६
अभयदेवसूरि—	जयतिहुवणस्तोत्र	७५४		५७२, ५७३, ६२२, ६३५,	
अष्टहू—	राष्ट्रगर्भस्तोत्र	३११		७०६, ७३७, ७४४	
इन्द्रनदि—	छेदधिष्ठ	५७		तत्त्वसार	२०, ५७५
	प्रायश्चित्तविधि	७४		६३७, ७३७, ७४४, ७४७	
कार्तिकेय—	कार्तिकेयानुप्रेक्षा	१०३		दशोत्तर	१३३
कुंदकुंदाचार्य—	अष्टपाहुड	६६		नमचक्र	१३४
	पंचास्तिकाय	४०		भावसंग्रह	७७
	प्रवचनसार	११२	देवेन्द्रसूरि—	कर्मरत्नसूत्र	५
	नियमसार	३८	धर्मचन्द्र—	धर्मचन्द्रप्रवचन	३६६
	बोधप्राप्त	११५	धर्मदासगणि—	उपदेशरत्नमाला	५०
	यतिभावनाष्टक	५७३	नन्दिषेण—	अजितशक्तिस्तवन	३७६
	रघुसार	८४	भंडारी नेमिचन्द्र—	उपदेशसिद्धान्त	
	लिंगपाहुड	११७		रत्नमाला	५१
	षट्पाहुड	११७, ७४८	नेमिचन्द्राचार्य—	आश्रवप्रतिभंगो	२
	समयसार	११६, १७४, ७३७, ७६२		कर्मप्रकृति	३
				गोम्मटसारकर्मकाण्ड	५२
				गोम्मटसारजीवकाण्ड	६, १६, ७२०
गौतमस्वामी—	गौतमकुलक	१४		चतुरविंशतिस्थानक	१८
	संबोधपंचास्तिका	११६, १२८		जीवविचार	७३२
जिनभद्रगणि	अर्थद्विपिका	१		विभंगीसार	३१
ढाढसीमुनि—	ढाढसीगाथा	७०७		द्रव्यसंग्रह	३२, ५७५, ६२८, ७४४
देवसूरि—	यतिदिनचर्या	८१			
	जीवविचार	६१६			

ग्रन्थकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रन्थकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	त्रिलोकसार	३२०	अपभ्रंश भाषा		
	त्रिलोकसारसंहृष्टि	१२२			
	पंचसंग्रह	३८			
	भावविभंगी	४२			
	लब्धिसार	४३			
	विशेषसत्ताविभंगी	४३	अमरकीर्ति—	पट्कर्मोपदेशरत्नमाला	८८
	सत्ताविभंगी	४५	अष्टमदास—	रत्नत्रयपूजाजयमाला	५३७
पद्मनंदि—	अष्टमदेवस्तुति	३८१	कनककीर्ति—	नन्दोद्वरजयमाला	५१६
	जिनवरदर्शन	३८०	मुनिकनकासर—	करकण्डुचरित्र	१६१
	जम्बूद्वीपप्रशंसा	३१६	मुनिगुणभद्र—	दशलक्षणाकथा	६३१
मुनिपद्मसिंह—	ज्ञानसार	१०५	जयमित्रहल—	रोहिणीविधान	६२६
भद्रबाहु—	कल्पसूत्र	६७	जटहरा—	वर्द्धमानकथा	१६६ *
भाथशर्मा—	दशलक्षणाजयमाला	४८६, ५१७	ज्ञानचंद्र—	द्वादशानुप्रेक्षा	६२८
मुनिचन्द्रसूरि—	वनस्पतिसत्तरी	८५	तेजपाल—	योगचर्चा	६२८
मुनीन्द्रकीर्ति—	अनन्तचतुर्दशीकथा	२१४	देवमंदि—	संभवजिह्वाहचरित्र	२०४
रत्नशेखरसूरि—	प्राकृतछंदकोश	३११		रोहिणीचरित्र	२४३
लक्ष्मीचन्द्रदेव—	स्तोत्र	५७६		रोहिणीविधानकथा	२४३
लक्ष्मीसेन—	द्वादशानुप्रेक्षा	७४४	धवल—	हरिवंशपुराण	१५७
वसुनन्दि—	वसुनन्दिश्वावकाचार	८५	नरसेन—	जिनरात्रिविधानकथा	६२८
विद्यासिद्धि—	शांतिकरस्तोत्र	६८१		सिरिपालचरित्र	२०५
शिवार्य—	भगवतीप्राराधना	७६	पुरुषदन्त—	यादिपुराण	१४३, ६४२
श्रीराम—	प्राकृतरूपमाला	२६२		महापुराण	१५३
श्रुतमुनि—	भावसंग्रह	७८	महर्षिसिंह—	यशोधरचरित्र	१८८
समंतभद्र—	कल्याणक	३८३	यशः कीर्ति—	त्रिसप्तजिह्वाचन्द्रकीर्ति	६८६ ४
सिद्धसेनसूरि—	इतकीसठाणावर्चा	२		चन्द्रभक्तचरित्र	१६५
सुन्दरसूर्य—	शांतिकरस्तोत्र	४२३	योगीन्द्रदेव—	पद्मिनी	६४२
कविहाता—	कामसूत्र	३५३		पाण्डवपुराण	१५०
ब्र० हेमचन्द्र—	श्रुतस्कंध	३७६, ५७२, ७०७, ७३७	रङ्गधू—	हरिवंशपुराण	१५७
				परमात्मप्रकाश	११०,
					५७५, ६६३, ७०७ ७४७
				योगसार	११६, ७४८, ७५५
				दशलक्षणाजयमाला	२४३,
					४८६, ५१८, ५३७ ५७२, ६३७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पार्श्वनाथचरित्र	१७६	संस्कृत भाषा		
	वीरचरित्र	६४२			
	षोडशकारण जयमाल	५१७, ५४२	अकलंकदेव—	अकलंकाष्टक	५७५
	खंबोधपंचासिका	१२८		६३७ - १, ७१२	
	सितान्तार्थसार	५६		तत्त्वार्थराजवार्त्तिक	३२
रामसिंह—	सावयधम्म दोहा (भावकाचार)	६७ ६४१, ७४८		न्यायकुमुदचन्द्रोदय	१३४
	दोहापाहुड	६०	अक्षयराम—	प्रायश्चित्तसंग्रह	७४
रूपचन्द्र—	रागभासावरी	६४१		रामोकारपैतीसी पूजा	५८२, ५१७
लक्ष्मण—	रोमिराहाचरित्र	१७१		प्रतिमासन्त चतुर्दशी	
लक्ष्मीचन्द्र—	प्राध्यात्मिकनाथा	१०३		व्रतोद्यापन पूजा	५१६, ५२०
	उपासकाचार दोहा	५२		सुखसंपत्तिव्रत पूजा	५५५
	चूतडी	६२८, ६४१		सौख्यकाव्य व्रतोद्यापन	५१६, ५५६
	कल्याणकविधि	६४१	ब्रह्म अजित—	हनुमच्चरित्र	२१०
श्रिनयचन्द्र—	दुधारसविधानकथा	२४५, ६२८	अजितप्रभसूरि—	शान्तिनाथचरित्र	१६८
	निर्भर चमोविधानकथा	२४५, ६२८	अनन्तकीर्ति—	नन्दीश्वरव्रतोद्यापन पूजा	४६४
विजयसिंह—	अजितनाथपुराण	१४२	अनन्तवीर्य—	पत्तरविधान पूजा	५०७
विमलकीर्ति—	सुगन्धदशमीकथा	६३२	अन्नमठ—	प्रमेयरत्नमाला	१३८
सहृणपाल—	पद्मडी (कौमुदीमध्यात्)	६४१	अनुभूतिस्वरूपाचार्य—	तर्कसंग्रह	१३२
	सम्यक्त्वकौमुदी	६४२		सारस्वतप्रक्रिया	६२५
सिंहकवि—	प्रद्युम्नचरित्र	१८२		२६६, ७८०	
महाकविस्वयंभू—	रिद्धिणेमिचरित्र	१५७, ६४२	अपराजितसूरि	अनुसारस्वत	२६३
	श्रुतपंचमीकथा	६४२	अपयदीक्षित—	भगवतीआराधनाटिका	७६
	हनुमत्तामुपेक्षा	६३५	अभवचन्द्रगणि—	कुवलयानन्द	३०८
श्रीधर—	सुकुमालचरित्र	२०६	अभयचन्द्र—	पंचसंग्रहवृत्ति	३६
हरिश्चन्द्र—	अणुस्तमितिसंधि	२४३, ६२८, ६४३	अभयचन्द्र—	क्षीरोदानीपूजा	७६३
			अभयनंदि—	जैनेन्द्रमहावृत्ति	२६०
			अभयनन्दि—	वित्तोकसार पूजा	४८५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अभयसोम— पं० अश्वदेव—	दशलक्षण पूजा	४८६	अमोलकचन्द्र— अमृतचन्द्र—	रथयात्राप्रभाव	२७४
	लघुश्रेयसविधि	५३३		तत्त्वार्थसार	२२
	विक्रमचरित्र	१९६		पंचास्तिकापटीका	४१
	त्रिकालचोबीसीकथा	२२६,		परमात्मप्रकाश टीका	११०
	(रोडतीजकथा)	२४२		प्रवचनसार टीका	११२
	दशलक्षण पूजा	४८८		पुरुषार्थसिद्धयुपाय	६८
	द्वादशव्रतकथा	२२८, २४६		समयसारकलशा	१२०
	द्वादशव्रत पूजा	४९०		समयसार टीका	१२१
	मुकुटसप्तमीकथा	२४४			७५५, ७६४
	लब्धिविधानकथा	२३६	अरुणमणि—	अजितपुराण	१४२
अमरकीर्ति—	लब्धिविधान पूजा	५१७	अर्हदेव—	पंचकल्पाणक पूजा	५००
	श्रवणद्वादशीकथा	२४५		शान्तिकविधि	५४४
	श्रुतस्कंधविधानकथा	२४५		शान्तिनाथपुराण	१५५
	षोडशकारणकथा	२४२,		आश्रयवैद्यक	२६६
		२४५, २४७		माधवान्तकथा	२३५
	जिनमहत्त्वनामटीका	३६३		सोनागिर पूजा	५५५
	महावीरस्तोत्र	७५२		अंकुरारोपणविधि	४५३,
	यमकाष्टकस्तोत्र	४१३, ४२६			५१७
	अमरकोश	२७२		अनगारधर्माभूत	४८
	त्रिकाण्डशेषसूची	२७४		आराधनासारवृत्ति	६४
अमरसिंह—	धर्मपरीक्षा	३५६	आशाधर—	हृष्टोपदेशटीका	३८०
	पंचसंग्रह टीका	३९		कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका	३८५
	भावनाद्वाविशतिका	५७३		कल्याणमाला	५७५
	(सामायिक पाठ)	७३७		कलशार्चिवेक	४६७
	आवकावार	६०		कलशारोपणविधि	४६६
	सुभाषितरत्नसन्दीप	३४१		गणधरवल्लयपूजा	७६१
	धर्मोपदेशआवकावार	६४		जलयात्राविधान	४७७
	प्रश्नोत्तररत्नमाला	५७३		जितयज्ञकल्प	
				(प्रतिष्ठापाठ)	५२१
					४७८, ६०८, ६३६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	जिनराहुमनामस्तोत्र	३६१,		६४४, ६४५, ६४७, ६४८, ६५०,	
	५४०, ५६६, ५६६, ६०५,			६५२, ६५६, ६६४, ७००, ७०४,	
	६०७, ६३६, ६४६, ६५५,			७०५, ७०७, ७२७, ७८५, ७८८	
	६८३, ६८६, ६८२, ७१२,			पंचनमस्कारस्तोत्र	५७६
	७१५, ७२०, ७४०, ७५२			पूजाप्रकरण	५१२
	धर्माभूतसूक्तिसंग्रह	६३		श्रावकाचार	६०
	ध्वजारोपणविधि	४६२	भ० एकसंधि—	प्रायश्चित्तविधि	७४
	त्रिषष्टिस्मृति	१४६	कनककीर्ति—	रामोकारपतीसीमत्	
	देवशास्त्रगुरुपूजा	७६१	कनककुशल—	विधान	४८२, ५१७
	भूपालचतुर्विंशतिका		कनकनंदि—	देवगमस्तोत्रवृत्ति	३६६
	टीका	४११	कनकसागर—	गोम्मटसार कर्मकाण्डटीका	१२
	रत्नत्रयपूजा	५२६	कनकसागर—	कुमारसंभवटीका	१६२
	श्रावकाचार		कमलप्रभाचार्य—	जिनपंजरस्तोत्र	३६०,
	(सागरधर्माभूत)	६३५	कमलविजयगण—	४३०, ६४६	
	शांतिहोमविधान	५४५		चतुर्विंशति तीर्थकर	
	सरस्वतीस्तुति	६४७, ६५८, ७६१	कालिदास—	स्तोत्र	३८८
	सिद्धपूजा	५५४, ७१६		कुमारसंभव	१९२
	स्तवन	६६१		ऋतुसंहार	१९१
इन्द्रनेदि—	अंकुरारोपणविधि	४५३		मेघदूत	१८७
	देवपूजा	४६०		रघुवंश	१६३
	नीलसार	३२६		वृत्तरत्नाकर	३१४
उज्जवलदत्त (संग्रहकर्ता)—				श्रुतबोध	६४४
	उणादिसूत्रसंग्रह	२५७	कालिदास—	शाकुन्तल	३१६
उमास्वामि—	तत्त्वार्थसूत्र	२३, ४२५		नलोदयकाव्य	१७५
	४२७, ४३७, ५३७, ५६२, ५६६,		काशीनाथ—	शृंगारतिलक	३५६
	५७१, ५७३, ५६५, ५६६, ६०१,			ज्योतिषसारलग्नचंद्रिका	२८३
	६०३, ६०५, ६३३, ६३७, ६३६		काशीराज—	शीघ्रबोध	२६२, ६०३
			कुमुदचन्द्र—	अजीर्णमंजरी	२६६
				कल्याणमंदिरस्तोत्र	३८४
				४२५, ४२७, ४३०, ४३१,	

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	५६५, ५७२, ५७५, ५६५, ६१६, ६३३, ६३७, ६७०, ७२०, ७२७		गणपति—	रत्नदीपक	२६०
			गणितरत्नसूत्रि—	षडदर्शनसमुच्चयवृत्ति	१३६
			गणेश—	ग्रहलाघव	२८०
कुसुमभद्र—	सारसमुच्चय	६७, ५७४		पंचांगसाधन	२८५
भट्टकेशव—	वृत्तरत्नाकर	३१४	गर्गश्रुति—	गर्गसंहिता	२८०
केशव—	जातकपद्धति	२८१		पाशाकेवली	२८६, ६४७
	ज्योतिषमणिमाला	२८२		प्रश्नमनोरमा	२८७
केशवमिश्र—	तर्कभाषा	१३२		शकुनावली	२६२
केशववर्णी—	गोष्मटसारवृत्ति	१०	गुणकीर्ति—	पंचकल्याणकपूजा	५००
	मादित्यव्रतपूजा	४६१	गुणचन्द्र—	अनन्तव्रतोद्यापन	५१३
केशवसेन—	रत्नत्रयपूजा	५२६		५३६, ५४०	
	रोहिणीव्रतपूजा	५१३, ५३२, ७२६		अष्टाह्निकाव्रतकथा	
	षोडशकारणपूजा	५४२, ६७६	गुणचन्द्रदेव—	संग्रह	२१६
	भाष्यप्रदीप	२६२	गुणनन्दि—	अमृतधर्मरसकाव्य	४८
कैश्यट—	शैल्याकरणभूषण	२६३		ऋषिमंडलपूजाविधान	४६३, ५३६, ७६२
कौहनभट्ट—	मुनिसुव्रतपुराण	१५३		चंद्रप्रभकाव्यपंजिका	१६५
म० कृष्णदास	विमलनाथपुराण	१५४		त्रिकालचौबीसीकथा	६२२
	भावदीपिका	१३८	गुणभद्र—	संभवजिनस्तोत्र	४१६
कृष्णशर्मा—	एकाक्षरकोश	२७४		शारितनाथस्तोत्र	६१४, ७२२
कृष्णक—	सिंहासनद्वारत्रिशिका	२५३		अनन्तनाथपुराण	१४२
क्षेमंकरमुनि—	गजपंथामंडलपूजा	४६८	गुणभद्राचार्य—	आत्मानुशासन	१००
क्षेमेन्द्रकीर्ति—	सम्यक्सर्वकौमुदीकथा	२५१		उत्तरपुराण	१४४
क्षेता—	पंचदोशपालपूजा	५०२		जिनदत्तचरित्र	१६६
मंगादास—	पुष्पांजलिब्रतोद्यापन	५०८ ५१६		धन्यकुमारचरित्र	१७२
	देवव्रत	५३२		मौनिव्रतकथा	२३६
	सम्मोदशिखरपूजा	५४६, ७२७	गुणभूषणाचार्य—	वर्द्धमानस्तोत्र	४१५
				श्रावकाचार	६०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
गुणरत्नसूति---	चरितचूषणटीका	१३२	निजामणि—	रमलशास्त्र	२१०
गुणविनयगणि—	रघुवंशटीका	१६४	चूडामणि—	न्यायसिद्धान्तमंजरी	१३६
गुणाकरसूरि—	सम्यक्त्वकौमुदीकथा		चोखचन्द—	चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	४७२
गोपालदास—	रसमंजरीनाममाला	२७६	छत्रसेन—	चन्दनषष्ठीव्रतकथा	६३१
गोपालभट्ट—	रसमंजरीटीका	३५६	जगतकीर्त्ति—	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	४६१
गोवर्द्धनाचार्य—	सप्तशती	७६५	जगद्भूषण—	सौन्दर्यलहरीस्तोत्र	४२२
गोविन्दभट्ट—	पुरुषार्थपुशासन	६६	जगन्नाथ—	गरापाठ	२५६
गौतमस्वामी—	ऋषिमंडलपूजा	६०७		नेमिनरेन्द्रस्तोत्र	३६६
	ऋषिमंडलस्तोत्र	३८२		सुखनिधान	२०७
	४२४, ६४६, ७३२		जसीदास—	दानकोवीनती	६४२
घटकपर्प—	घटकपर्पकाव्य	१६४	जयतिलक—	निजस्मृत	३८
चंड कवि—	प्राकृतव्याकरण	२६२	जयदेव—	गीतगोविन्द	१६३
चन्द्राकीर्त्ति—	चतुर्विंशतितीर्थकिराष्टक	५६४	ब्र० जयसागर—	सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	५५७
	विमानशुद्धि	५३५	जानकीनाथ—	न्यायसिद्धान्तमंजरी	१३५
	सप्तपरमस्थानकथा	२४६	भ० जिणचन्द्र—	जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	७५७
चन्द्रकीर्त्तिसूरि—	सारस्वतदीपिका	२६६	जिनचन्द्रसूरि—	दशलक्षणव्रतोद्यापन	४८६
आणक्य—	आणक्यराजनीति	३२६,	भ० जिनदास—	जम्बूद्वीपपूजा	४७७
	६४०, ६४६, ६८३, ७६२,			५०२, ५३७	
	७१७, ७२३, ७८७			जम्बूस्वामीचरित्र	१६८
	सधुवाणक्यराजनीति	३३६		ज्येष्ठजिमवरलाहान	७६५
	७१२, ७२०			नेमिनाथपुराण	१४७
चामुण्डराय—		५५		पुष्पांजलीव्रतकथा	२३४
	ज्वरतिमिरभास्कर	२६८		सप्तक्षिपूजा	५४८
	भावनासारसंग्रह	५५, ७७, ६१५		हरिवंशपुराण	१५६
चाण्कीर्त्ति—	गीतगीतराग	३८३		सोलहकारणपूजा	७६५
चारित्रभूषण—	महीपालचरित्र	१८६	पं० जिनदास—	जलयात्राविधि	६८३
चारित्रसिंह—	कातन्त्रविभ्रमसूत्राव-			होलीरेणुकाचरित्र	२११
	धुरि	२५७		भक्तविमजिनचैत्यालय	
				पूजा	४५३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
जितप्रभसूरि—	सिद्धहेमतंत्रवृत्ति	२६७	दामोदर—	चन्द्रप्रभचरित्र	१६५
जिनदेवसूरि—	मदनपराजय	३१७		प्रशस्ति	६०८
जिनलाभसूरि—	चतुर्विंशतिजिनस्तुति	३८७		व्रतकथाकोश	२४१
जिनवद्वेनसूरि—	अलंकारवृत्ति	३०८	देवचन्द्रसूरि—	पार्श्वनाथस्तवन	६३३
जिनसेनाचार्य—	आदिपुराण	१४२, ६४६	दीक्षितदेवदत्त—	सम्मेदशिक्षरमहात्म्य	६२
	ऋषभदेवस्तुति	३८१	देवनदि—	गर्भपञ्चरत्न	१३१, ७३७
	जिनसहस्रनामस्तोत्र	३६२		जैनेन्द्रव्याकरण	२५६
	४२५, ५७३, ६४७			लोचोसंतार्थकरस्तवन	६०६
	७०७, ७४७			सिद्धिप्रियस्तोत्र	४२१
जिनसेनाचार्य—	हरिवंशपुराण	१५५		४२५, ४२७, ४२६, ४३१,	
जिनसुन्दरसूरि—	होलीः	२८६		५७२, ५६५, ५७८, ५६७,	
म० जिनेन्द्रभूषण—	जिनेन्द्रपुराण	१४६		६०५, ६०६, ६३३,	
म० ज्ञानकीर्ति—	यशोधरचरित्र	१६२		६३७, ६४४	
ज्ञानभास्कर—	पाषाणिकेली	२८६	देवसूरि—	शांतिस्तवन	६१६
ज्ञानभूषण—	आत्मसंबोधनकाव्य	१००	देवसेन—	आलापपद्धति	१३०
	ऋषिमंडलपूजा	४६३, ६२६	देवेन्द्रकीर्ति—	चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	५७३
	गौममत्सारकर्मकाण्डटीका	१२		चन्द्रप्रभजिनपूजा	४७४
	तत्त्वज्ञानतरेंगिणी	५८		त्रैलोक्योद्यापन	६३८, ७६६
	पंचकल्याणकोद्यापनपूजा	६६०		द्वादशप्रतोद्यापनपूजा	४६१
	भक्तामरपूजा	५२		पंचमीव्रतपूजा	५०४
	श्रुतपूजा	५३७		पंचमेरुपूजा	५१६
	सरस्वतीपूजा	५१५		प्रतिभासांतचतुर्दशांपूजा	७६१
	५४५, ५५१			रविव्रतकथा	२३७, ५३५
	सरस्वती स्तुति	६५७		रैव्रतकथा	२३६
देवशङ्खद्विराज—	जातकाभरण	२८२		व्रतकथाकोश	२४२
त्रिभुवनचंद्र—	त्रिकालबीबीसी	४८४		सप्तऋषिपूजा	७६५
दयाचंद्र—	तत्त्वार्थसूत्रदशाव्यापनपूजा	४८२	दीर्गसिंह—	कातन्त्ररूपमालाटीका	२५८
			धनञ्जय—	द्विसंधानकाव्य	१७१
दलपतराय वंशीधर—	अलंकाररत्नाकार	३०८		नाममाला	२७५, ५७४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
		६८६, ६८६, ७११, ७१२, ७१३	नरहरिभट्ट—	श्रवणभूषण	१६६
	विषापहारस्तोत्र	४१५, ४२५	नरेन्द्रकीर्ति—	विद्यमानबीसतीर्थकर	
	४२७, ५६५, ५७२, ५८५, ६०५, ६३३, ६३७, ६४६			पूजा	५३५
धर्मकलशसूरि—	सन्देहसमुच्चय	३३८		६५५, ७६३	
धर्मकीर्ति—	कौमुदीकथा	२२२		पद्मावती पूजा	६५५
	पद्मपुराण	१४६	नरेन्द्रसेन—	प्रमाणप्रमेयकनिका	
	सहस्रगुणितपूजा	५५२		१३७, ५७५	
मं० धर्मचन्द्र—	कथाकोश	२१६		प्रतिष्ठादीपक	५२१
	गौतमस्वामीचरित्र	१६३		रत्नत्रय पूजा	५६४
	गोम्मटसारटीका	१०		सिद्धान्तसारसंग्रह	४७
	संयोगपंचमीकथा	२५३	नागचन्द्रसूरि—	विषापहारस्तोत्रटीका	४१६
	सहस्रनामपूजा	७४७	नागराज—	पिंगलशास्त्र	३११
धर्मचन्द्रगणि—	आभेधानरत्नकर	२७२	नागेशभट्ट—	सिद्धान्तमंजूषिका	२७०
धर्मदास—	विदग्धसुखमडन	१६६	न गोर्जाभट्ट—	परिभाषेन्दुलोचर	२६१
धर्मधर—	नागकुमारचरित्र	१७६	नादमल्ल—	शाङ्गधरसंहिताटीका	३०६
धर्मभूषण—	जिनसहस्रनामपूजा	४८०, ५५८	नारचन्द्र—	कथारत्नसागर	२२०
	न्यायदीपिका	१३५		ज्योतिषसारसूत्रटिप्पण	२८३
	नीलबनाथपूजा	५४६		नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र	२८५
रंदिगुरु—	प्रायश्चित्त समुच्चय		कविनीलकंठ—	नीलकंठताजिक	२८५
	चूलिका टीका	७५, ७८०		शब्दशोभा	२६४
नन्दिधरेण—	नन्दीश्वरव्रतोद्यापन	४६४	मुनिनेत्रसिंह—	सप्तमयावबोध	१४०
पं० तकुल—	अश्वलक्षणा	७८१	नेमिचन्द्र—	द्विसंधानवाच्यटीका	१७२
	शालिहोत्र	३०६		सुप्रभातष्टक	६३३
प० नयविलास—	जानार्णवटीका	१०८	ब्र० नेमिदत्त—	श्रीषधदानकथा	२१८
नरपति—	नरपतिजयचर्चा	२८५		भट्टकपूजा	५६०
नरसिंहभट्ट—	जिदक्षतटीका	३६१		कथाकोश (आराधना- कथा कोश)	२१६
				नाग श्री कथा	२३१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	धन्यकुमार चरित्र	१७३		सिद्धपूजा	१३७
	धर्मोपदेशश्चावकाचार	६४		स्तोत्र	५७५
	निःशंभोजनकथा	२३१	पद्मनाभ—	भाष्यती	२८६
	पात्रदानकथा	२३३	पद्मनाभकावस्थ—	मशोधरचरित्र	१८६
	प्रीतिकरचरित्र	१८२	प्रह्लादभक्तदेव—	पार्श्वनाथस्तोत्र	४०५
	श्रीपालचरित्र	२००		६१४, ७०२, ७४५	
	सुदर्शनचरित्र	२०८		लक्ष्मीस्तोत्र	४१४, ४२३
परमानन्दभट्टाचार्य—	सिद्धान्तमुक्तावली	२७०		४२६, ४३२, ५६६, ५७२,	
पद्मसंदि ।—	पद्मनन्दिपञ्चविंशतिका	६६		५७४, ५८६, ६४४, ६४८	
	पद्मनन्दिश्चावकाचार	६८, ६०		६६३, ६६५, ७०३, ७१६	
पद्मसंदि II—	अनन्तव्रतकथा	२१४	पद्मप्रभसूरि—	भुवनदीपक	२८६
	करुणाष्टक	५७४	परमहंसपरिव्राजकाचार्य—	मुहूर्तमुक्तावली	२८६
	६३३ ६३७, ६८८			मेघदूतटीका	१८७
	द्वादशव्रतीधापनपूजा	४११	पाणिनी—	पाणिनीव्याकरण	२६१
	दानपञ्चाशत	६०	पात्रकेशरी—	पत्रपरीक्षा	१३६
	धर्मरसाधन	६१	पार्श्वदेव—	पञ्चावल्याष्टकवृत्ति	४०२
	पार्श्वनाथस्तोत्र	५६६	पुरुषोत्तमदेव—	अभिधानकोश	२७१
		७४४		त्रिकाण्डशेषाभिधान	२७५
	पूजा	५६०		हारावलि	२११
	नवोत्तरपञ्क्तिपूजा	६३६	पूज्यपाद—	इष्टोपदेश (स्वयंभूस्तोत्र)	१३५, ६३७
	भावनाचोत्तरी			परमानन्दस्तोत्र	५७४
	(भावनापद्धति)	५७५, ६३४		श्चावकाचार	६०
	रत्नत्रयपूजा	५६६		समाधित्त	१२५
		५७५, ६३६		समाधिस्तक	१२७
	लक्ष्मीस्तोत्र	६३७		सर्वार्थसिद्धि	४५
	कीर्तनस्तोत्र	४२४,			
	४३१, ५७४, ६३४, ७३१		पूर्णदेव—	मशोधरचरित्र	१६०
	सरस्वतीपूजा	५५१, ७११	पूर्णचन्द्र—	अपसर्गहरस्तोत्र	३८१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
पृथ्वीधराचार्य—	चामुण्डस्तोत्र	३८८	भक्तिलाभ—	षष्ठिशतकटिप्पण	३३६
	भुवनेश्वरीस्तोत्र		भट्टशंकर—	वैद्यविनोद	३०५
	(सिद्धमहामंत्र)	३४६	भट्टोजीदीक्षित—	सिद्धान्तकोमुदी	२६७
प्रभाचन्द्र—	आत्मानुशासनटीका	१०१	भट्टारपल—	लघुसूत्र	२६१
	आराधनासारप्रबंध	२१६		बृहज्जातक	२६१
	आदिपुराणटिप्पण	१४३		षटपंचासिकावृत्ति	२६२
	उत्तरपुराणटिप्पण	१४५	भद्रबाहु—	नवग्रहपूजाविधान	४६४
	क्रियाकलापटीका	५३		भद्रबाहुसंहिता	२८५
	तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	२१		(निमित्तज्ञान)	४८०, ८००
	द्रव्यसंग्रहवृत्ति	३४	भर्तृहरि—	नीतिशतक	३२५
	नागकुमारचरित्रटीका	१७६		वरांगचरित्र	१६५
	न्यायकुमुदचन्द्रिका	१३५		वेराग्यशतक	११७
	प्रमेयकमलमार्तण्ड	१३८		भर्तृहरिशतक	३३३, ७१५
	रत्नकरण्डश्रावकाचार-			महावीराष्टक	४१३, ४२६
	टीका	८२	भागवद—	रोहिणीव्रतकथा	२२६
	यशोधरचरित्रटिप्पण	१६२	भानुकीर्ति—	सिद्धचक्रपूजा	५५३
	समाधिजातकटीका	१२७	भानुजीदीक्षित—	अमरकोषटीका	२७४
	स्वयंभूस्तोत्रटीका	४३४	भानुदत्तमिश्र—	रसमंजरी	३५६
भ० प्रभाचन्द्र—	कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	४६७	तीर्थमुनि—	न्यायमाला	१३५
	मुनितुष्टतर्क	५५७	परमहंसपरिभाषकाचार्यश्रीभारती—		
	सिद्धचक्रपूजा	५५३	तीर्थमुनी—	न्यायमाला	१३५
बहुमुनि—	सामागिकपाठ	६४	भारती—	किराताकुर्नीय	१६१
बालचन्द्र—	तर्कभाषाप्रकाशिका	१३२	भावशर्मा—	लघुस्नपनटीका	५३३
ब्रह्मदेव—	द्रव्यसंग्रहवृत्ति	३४	भास्कराचार्य—	लीलावती	३६८
	परमात्मप्रकाशटीका	१११	भूपालकवि—	भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्र	४११
ब्रह्मसेन—	क्षमावणीपूजा	५६४			४२५, ५७२, ५६५
	रत्नत्रयकामहार्घ व				६०५, ६३३
	क्षमावणी	७८१			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
पं० मंगल (संप्रह कर्त्ता) —	धर्मरत्नाकर	६२		शब्द व धातुभेदप्रमेद	२७७
मणिभद्र —	क्षेत्रपालपूजा	६८६	माघ —	शिशुपालवध	१८६
मदनकीर्ति —	अनंतव्रतविधान	२१४	माघनंदि —	चतुर्विंशतितोयकर	
	लोकात्म्यविधान	५१४		जयमाल ३८८, ४६६	
मदनपाल —	मदनविनोद	३००		५७६	
मानमिश्र —	भावप्रकाश	२४६	माणिक्यनंदि —	परीक्षामुख	१३६
मधुसूदनसरस्वती —	सिद्धान्तचिन्तु	२७०	माणिक्यभट्ट —	वैद्यामृत	३०५
मनूसिंह —	योगचिन्तामणि	३०१	माणिक्यसूरि —	नलोदयकाव्य	१७४
मनोहरश्याम —	श्रुतबोधटीका	३१५	माधवचन्द्रत्रैविद्यादेव —	त्रिलोकसारवृत्ति	३२२
मल्लिनाथसूरि —	रघुवंशटीका	१६३		क्षयणासारवृत्ति	७
	शिशुपालवधटीका	१६६	माधवदेव —	न्यायसार	१३५
मल्लिभूषण —	दशलक्षणकृतोद्यापन	४८६	मानतुंगाचार्य —	भक्तामरणतोत्र	४०७,
मल्लिषेणसूरि —	नागकुमारचरित्र	१७५		४२५, ४३६, ४३१, ५६६,	
	भैरवपञ्चावतोकल्प	३४६		५६६, ६०३, ६०५, ६१६,	
	सज्जनवित्तवत्सलभ	३३७		६२८, ६३४, ६३७, ६३६,	
		५७३		६४४, ६४८, ६५१, ६५२,	
	स्माद्वदमंजरी	१४१		६६४, ६६५, ६७०, ६८१,	
महादेव —	मुहूर्तदीपक	२६०		६८५, ६८१, ७०३, ७०५,	
	सिद्धान्तमुक्तावलि	१४०		७०६, ७०७, ७४१	
महासेनाचार्य —	प्रद्युम्नचरित्र	१८०	मुनिभद्र —	दांतिनाथस्तोत्र	४१७, ७१५
महीचरणकवि —	अनेकार्थध्वनिमंजरी	२७१	पं० मेधावी —	अष्टांगोपाख्यान	२१५
भ० महीचन्द्र —	त्रिलोकतिलकस्तोत्र			धर्मसंग्रहथावकाचार	६९
		६८२, ७१२	भ० मेरूचंद —	अनन्तचतुर्दशीपूजा	६०७
	पंचमेरूपूजा	६०७	मोहन —	कलशविधान	४६६
	पद्मावतीछंद	५६०, ६०७	यशःकीर्ति —	अष्टाङ्गिकाकथा	६४५
महीधर —	मंत्रमहोदधि	३५१, ५७७		धर्मशर्माभ्युदयटीका	१७४
	स्वर्णकिर्णविधान	४२८	यशोनन्दि —	प्रबोधसार	३३१
महीभट्टी —	सारस्वतप्रक्रियाटीका	२६७		धर्मचक्रपूजा	४६१, ५१५
महेश्वर —	विश्वप्रकाश	२७७		पंचपरमेष्ठीपूजाविधि	५०२,
				५०६, ५१८	

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
यशोविजय —	कलिकुण्डपाईर्वानाथपूजा	६५८	राजमल्ल —	अध्यात्मकमलमार्तण्ड	१२६
योगदेव —	तत्त्वार्थवृत्ति	२२		जम्बूस्वामीचरित्र	१६६
रघुनाथ —	तार्किकशिरोमणि	१३३		लाटीसंहिता	८४
	रघुनाथविलास	३१२	राजशेखर —	नमूरमंजरी	३१६
साधुरणमल्ल —	धर्मचक्रपूजा	४६२	राजसिंह —	पार्श्वमहिम्नरत्नोत्र	४०६
रत्नशेखरसूरि —	छंदकोश	३०६	राजसेन —	पार्श्वनाथस्तोत्र	५६६, ७३७
रत्नकीर्त्ति —	रत्नत्रयविधानकथा	२४२	राजहंसः पाध्याय —	पञ्चधाधिकशतकटीका	४४
	रत्नत्रयविधानपूजा	५३०	सुमुक्तुरामचन्द्र —	पुण्याश्रमकथाकोष	२३३
रत्नचन्द्र —	जिनगुणसंपत्तिपूजा	४७७, ५१०	रामचंद्राश्रम —	सिद्धान्तचन्द्रिका	२६८
	पंचमेरूपूजा	५०५	रामवाजपेय —	समरसार	२६४
	पुष्पांजलिश्रुतपूजा	५०८	रायमल्ल —	त्रैलोक्यमोहनकवच	६६०
	मुभौमचरित्र		रुद्रभट्ट —	वीरजीवनटीका	३०४
	(भौमचरित्र) १८५, २०६			शृङ्गारतिलक	३५६
रत्ननंदि —	नन्दीश्वरद्वीपपूजा	४६२	रोमकाचार्य —	जन्मप्रदीप	२८१
	पत्न्याविधानपूजा	५०६, ५०६, ५१३	लकानाथ —	अर्थप्रकाश	२६६
	भद्रबाहुचरित्र	१८३	लक्ष्मण (अमरसिंहात्मज) —	लक्ष्मणोत्सव	३०३
	महीपालचरित्र	१८६		विंगलप्रदीप	३११
रत्नपाल —	लोलहकारणकथा	६६५	लक्ष्मीसेन —	प्रभिषेकविधि	४५८
रत्नभूषण —	मिश्रपूजा	५५४		कर्मचूरत्नतोद्यापनपूजा	४६४, ५१७
रत्नशेखर —	गुणस्थान क्रमारोहसूत्र	८		विन्तामणि पार्श्वनाथ	
	समवसरणपूजा	५३७		पूजा एवं स्तोत्र	४२३
रत्नप्रभसूरि —	प्रमाणनयतश्चावलोक- लंकार टीका	१३७		विन्तामणिस्तवन	७६१
रत्नाकर —	आत्मनिर्दिष्टस्तवन	३८०		सप्तपिपूजा	५४८
रविषेणाचार्य —	पद्मपुराण	१४८	लघुकवि —	सरस्वतीस्तवन	४१६
राजकीर्त्ति —	प्रतिष्ठादर्श	५२०	ललितकीर्त्ति —	अक्षयव्रतमीकथा	६६५
	षोडशकारणरत्नतोद्यापन पूजा	५४३		अनंतव्रतकथा	६४५, ६६५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	आकाशचम्पीकथा	६४५	वराहमिहिर—	पट्टपंचासिका	२६२
	कञ्जिकावतोरघरपूजा	४६८	भ० चर्द्धमानदेव—	वरांगचरित्र	१६४
	चौसठशिवकुमारका		चर्द्धमानसूरि—	लम्पशास्त्र	२६१
	कांजी की पूजा	५१४	वल्लाल—	भोजप्रबन्ध	१८५
	जिनचरित्रकथा	६४५	वसुनन्दि—	देवागमस्तोत्रटीका	३६५
	दयालक्षणीकथा	६६५		प्रतिष्ठापाठ	५२१
	पत्यविधानपूजा	५०६		प्रतिष्ठासारसंग्रह	५२२
	पुष्पांजलिब्रतकथा	६६५		मूलाचारटीका	७६
		७६४	धारमद्व—	नेमिनिर्वाण	१७७
	रत्नत्रयव्रतकथा	६४५, ६६५		वाग्भट्टालंकार	३१२
	रंगहंसीव्रतकथा	६४५	नाडिचन्द्रसूरि—	कर्मदहनपूजा	५६०
	षोडशकारणकथा	६४५		ज्ञानसूर्योदयनाटक	३१६
	समवसरणपूजा	५४६		पथनदूतकाव्य	१७८
	सुगंधदशमीकथा	६४५	वाहिराज—	एकीभावस्तोत्र	३८२
लोकसेन—	दशलक्षणकथा	२२७, २४२		४२५, ४२७, ५७२, ५७४,	
लोकेशकर—	सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका	२६६		५६५, ६०५, ६३३, ६३७	
लोलिम्बराज—	वैद्यजीवन	७१५		६४४, ६५१, ६५२, ६५७,	
लोगादिभास्कर—	पूर्वमीमांसार्थप्रकरण			७२१	
	संग्रह	१३७		गुर्वाष्टक	६५७
लोलिम्बराज—	वैद्यजीवन	३०३		पार्श्वनाथचरित्र	१७८
वनमालीभट्ट—	भक्तिरत्नाकर	८००		यशोधरचरित्र	१६०
वरदराज—	लघुसिद्धान्तवीमुनी	२६३	वाहीभसिंह—	क्षत्रकुडामणि	१६२
	सारसंग्रह	१४०		पंचकल्याणकपूजा	५००
वररुचि—	एकाक्षरीवोश	२७०	वामदेव—	त्रिलोकदीपक	३२०
	योगशत	३०२		भावसंग्रह	७८
	शब्दरूपिणी	२६४		सिद्धान्तत्रिलोकदीपक	३२३
	श्रुतबोध	३१५	वासवसेन—	यशोधरचरित्र	१६०
	सर्वार्थसाधनी	२७८	वाहडदास—	सन्निपातनिदान	३०६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
विजयकीर्ति—	चन्दनपङ्क्तिप्रत्यूषा	५०६		तेरहट्टीपूजा	४८४
आ० विद्वानन्दि—	अष्टसहस्री	१२६, १३०		पद	५६१
	आप्तपरीक्षा	१२६		पूजाष्टक	५१३
	पत्रपरीक्षा	१३६		मांगीतुंगीगिरिमंडल	
	पंचनमस्कारस्तोत्र	४०१		पूजा	५२६
	प्रमाणपरीक्षा	१३७		रेवानदीपूजा	५३२
	प्रमाणमीमांसा	१३८		शत्रुञ्जयगिरिपूजा	५१३
	युक्त्यनुशासनटीका	१३६		सप्तर्षिपूजा	५४८
	दलोकवातिक	४४		सिद्धकूटपूजा	५१६
मुमुक्षुविद्यानन्दि—	मुदर्शनचरित्र	२०६	विश्वसेन—	देवपालपूजा	४६७
उपाध्यायविद्यापति—	चिकित्साजनम्	२५८		परवत्तिशेखरपालपूजा	५१६
विद्याभूषणसूरी—	चिन्तामणिपूजा (वृहद्)	४७५		परवत्तिशेखरपूजा	५४१
विनयचन्द्रसूरी—	गजसिंहकुमारचरित्र	१६३		समवसरणस्तोत्र	४१६
विनयचन्द्रमुनि—	चतुर्दशसूत्र	१४	विष्णुभट्ट—	भट्टरीति	१३६
विनयचन्द्र—	द्विसंधानकाव्यटीका	१७२	विष्णुशर्मा—	पंचतन्त्र	३३०
	भूपालचतुर्विंशतिका			पंचाख्यान	२३२
	स्तोत्रटीका	४१२		हितोपदेश	३४५
विनयरत्न—	विदग्धमुखमंडनटीका	१६७	विष्णुसेनमुनि—	समवसरणस्तोत्र	४१६, ४२५
विमलकीर्ति—	धर्मप्रश्नोत्तर	६१	वीरनन्दि—	आचारसार	४६
	गुह्यतन्त्रविधानकथा	२४५		चन्द्रप्रभचरित्र	१६४
विदेकनन्दि—	त्रिभंगीसारटीका	३२	वीरसेन—	श्रावकप्रायश्चित्त	८६
विश्वकीर्ति—	भक्तामरत्रतोद्यापनपूजा	५२३	गुपाचार्य—	उत्तसर्गार्थविवरण	५२
विश्वभूषण—	महाईद्वीपपूजा	४४५	वेदव्यास—	नवग्रहस्तोत्र	६४६
	आठकोटमुक्तिपूजा	४६१	वैजलभूपति—	प्रबोधचंद्रिका	३१७
	इन्द्रध्वजपूजा	४६२	वृहस्पति—	सरस्वतीस्तोत्र	४२०
	कलशविधि	४६६	शंकरभगति—	बालबोधिनी	१३८
	कुण्डलगिरिपूजा	४६७	शंकरभट्ट—	शिवरात्रिउद्यापन	
	गिरितारक्षेत्रपूजा	४६६		विधिकथा	२४७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
शंकराचार्य—	आनन्दलहरी	६०८		गराधरवल्लभपूजा	६६०
	अपराधसूदनस्तोत्र	६६२		चन्दनषष्ठित्तपूजा	४७६
	गोविन्दाष्टक	७३३		चन्दनाचरित्र	१६४
	जगन्नाथाष्टक	३८६		चतुर्विंशतिजिनाष्टक	५७८
	वक्षणाभूतिस्तोत्र	६६०		चन्द्रमभचरित्र	१६५
	हरिताममाला	३६७		चारित्र्यशुद्धिविधिन	४७५
शंभूसाधु—	जिनशतटीका	३६०		चिन्तामणिपार्श्वनाथ	
शंभूराम—	नेमिनाथपूजाष्टक	४६६		पूजा	६४५
शाकटायन—	शाकटायनव्याकरण	२६५		जीवन्धरचरित्र	१७०
शान्तिदास—	अनंतचतुर्दशीपूजा	४५६		तत्त्वदर्शन	२०
	गुरुस्तवन	६५७		तीसचौबीसीपूजा	५३७
शाङ्गधर—	रसमंजरी	३०२		तेरहद्वीपपूजा	४८३
	शाङ्गधरसंहिता	३०५		पंचकल्पाष्टपूजा	५०२
पं० शाली—	नेमिनाथस्तोत्र	३९६, ७५७		पंचपरमेष्ठीपूजा	५०२
शालिनाथ—	रसमंजरी	३०२		पत्यव्रतोच्चापन	५०७, ५३८
आ० शिवकोटि—	रत्नमाला	८३		पांडवपुराण	१५०
शिवजीलाल—	अभिधानसार	२७२		पुष्पांजलिस्तपूजा	५०८
	पंचकल्पाष्टपूजा	४८६		श्रेणिकचरित्र	२०३
	रत्नत्रयगुणकथा	२३७		सज्जनचित्तवत्त्वभ	३३४
	प्रेक्ष्यकारणभावनावृत्ति	८८		सार्द्धद्वयदीपपूजा	
शिवरमा—	कालन्त्रव्याकरण	२५६		(अडाईद्वीपपूजा)	४५५
शिवादित्य—	सप्तपदार्थी	१४०		सुभाषितार्णव	३४१
शुभचन्द्राचार्य—	ज्ञानार्णव	१०६		सिद्धचक्रपूजा	५५३
शुभचन्द्र—	अष्टाङ्गिकावथा	२१५	शोभनमुनि—	जिनस्तुति	३६१
	करकण्डुचरित्र	१६१	श्रीचन्द्रमुनि—	पुराणसार	१५१
	कर्मदहनपूजा	४६५, ५३७	श्रीधर—	भविष्यदत्तचरित्र	१८४
		६४५		शुभमालिका	५७४
	कालिकेयानुप्रेक्षाटीका	१०४		श्रुतावतार	३७५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
नागराज—	भावशतक	३३४		व्रतकथाकोष	२४१
श्रीनिधिसमुद्र—				षट्पादुडटीका	११६
श्रीपति—	जातककर्मपद्धति	२८१		श्रुतस्कंधपूजा	५४७
	ज्योतिषयटलमाला	६७२		षोडशकारणपूजा	५१०
श्रीभूषण—	अनन्तव्रतपूजा	४५६, ५१५		सरस्वतीस्तोत्र	४२०
	चारित्र्यशुद्धिविधान	४७४		सिद्धचक्रपूजा	५५३
	पाण्डवपुराण	१५०		सुगन्धदंशमीकथा	५१४
	भक्तामरतद्यापनपूजा	५१३, ५४०		अष्टांगसम्यग्दर्शन	२१५
	हरीवंशपुराण	१५७	सकलकीर्ति—	ऋषभनाथचरित्र	१६०
श्रुतकीर्ति—	पृष्णोजलीव्रतकथा	२३४		कर्मविपाकटीका	५
श्रुतसागर—	अनन्तव्रतकथा	२१४		तत्त्वार्थसारदीपक	२३
	अशोकरोहिणीकथा	२१६		द्वादशानुप्रेक्षा	१०६
	आकाशचर्ममीव्रतकथा	२१६		धन्यकुमारचरित्र	१७२
	चन्दनषष्ठिव्रतकथा	२२४		परमात्मराजस्तोत्र	४०३
		५१४, ५१७		पुराणसारसंग्रह	१५१
	जितसहस्रनामटीका	३६३		प्रश्नोत्तरोपासकाचार	७१
	शान्तार्णवपद्यटीका	१०७			६१
	तत्त्वार्थसूत्रटीका	२८		पार्वनाथचरित्र	१७६
	दशलक्षरात्रतकथा	२२७		मल्लिनाथपुराण	१५२
	पल्यनिधानव्रतोपाख्यान			मूलाचारप्रदीप	७६
	कथा	२३३		यशोधरचरित्र	१२८
	मुक्तवलिव्रतकथा	२३६		वर्द्धमानपुराण	१५३
	भेवमालाव्रतकथा	५१४		व्रतकथाकोश	२४२
	यशस्तिलकचम्पूटीका	१८७		शान्तिनाथचरित्र	१६८
	यशोधरचरित्र	१६२		श्रीपालचरित्र	२०१
	रत्नत्रयविधानकथा	२३७		राज्यापितावलि	३३८, ३४२
	रविव्रतकथा	२३७		विद्वान्तसारदीपक	४६
	विष्णुकुमारमुनिकथा	२४०		गुदर्शनचरित्र	२०८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
मुनिसकलकीर्ति—	नंदीश्वरपूजा	७६१	सिद्धनागार्जुन—	नमस्कारमंत्रकल्पविधि	
सकलचन्द्र—	चैत्यबंदना	६६८		सहित ३४६	
	दर्शनस्तोत्र	१७४		नक्षत्रपुट	२६७
सकलभूषण—	उपदेशरत्नमाला	५०	सिद्धसेनदिवाकर—	जिनसहस्रनामस्तोत्र	३६२
	गोम्मटसारटीका	१०		वर्द्धमानद्विधिशिक्षा	४१५
सदानंदगणि—	सिद्धास्तचन्द्रिकावृत्ति	२६६	सुखदेव—	सन्मतिकर्क	१४०
आचार्यसमंतभद्र—	प्राप्तभीमांसा	६४७	वर्णसुखसागर—	आयुर्वेदमहोदधि	२६७
	जिनशतकार्लकार	३६१	सुधासागर—	सुप्रतावलीपूजा	५२७
	देवागमस्तोत्र	३६४		पंचकल्याणकपूजा	५००,
	४२५, ५७५, ७२०			५१६, ५३७	
	युक्त्यनुशासन	१३० १३६	सुन्दरविजयगणि—	परमसत्स्थानकपूजा	५१६
		६४७	सुमतिकीर्ति—	सौभाग्यचमीकथा	२५५
	रत्नकरण्डश्रावकाचार		सुमतिग्रन्थ—	कर्मप्रकृतिटीका	३
	८१, ६६१, ७६५		सुमतिविजयगणि—	चारित्र्यशुद्धिविधान	४७५
	बृहद्वैद्ययंस्तोत्र	५७२, ६२८	सुमतिसागर—	रघुवंशटीका	१६४
	समंतभद्रस्तुति	५७८		धैर्योपयसारपूजा	४८५
	सहस्रनामलघु	४२०		दशलक्षणशतपूजा	४८६,
	स्वयंभूतोत्र	४२५, ४३३,		५४०	
	५७४, ५६५, ६३३,			पोद्दशकारणपूजा	५१७
	७२०			५५७	
समयसुन्दरगणि—	रघुवंशटीका	१६४	सुरेन्द्रकीर्ति—	अनन्तजिनपूजा	४५६
	कुत्तरत्नाकरछंदटीका	३१४		अष्टाह्निकपूजाकथा	४६०
	शंखुप्रद्युम्नप्रबंध	१६७		छंदकीयकवित्त	३५५
समयमुन्दरोपध्याय—	कल्पमूत्रटीका	७		ज्ञानपंचविंशतिका	
सहसकीर्ति—	चैलोक्यसारटीका	३२३		अतोद्यापन	४८१
कविसारस्वत—	शिलोच्छकोश	२७०		(भुतस्कंधपूजा)	५४७
सिद्धतिलक—	वर्द्धमानविद्याकल्प	३५१		अष्टजिनवरपूजा	५१६
सिद्धनन्दि—	धर्मोपदेशपीयूषश्रावका			पंचकल्याणकपूजा	४६६
	चार ६४			पंचमासचतुर्विंशीपूजा	५०४
				५४०	

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	नेमिनाथपूजा	४६६		छंदोशतक	३०६
	मुखसपत्तिवतोद्यान	१५५		पंचमीवतोद्यान	५०४
सुरेश्वराचार्य—	पंचिकरणवार्त्तिक	२६१		भक्तामरस्तोत्रटीका	४०६
सुयशकीर्ति—	पंचतन्त्राष्टक	५००		योगचिन्तामणि	३०१
सुहृण कवि—	वृत्तरत्नाकरटीका	३१४		लघुनाममाला	२७६
दैवज्ञ पं० सूर्य—	रामवृष्ठाकाव्य	१६४		लब्धिविधानपूजा	५३३
श्री० सोमकीर्ति—	प्रद्युम्नचरित्र	१८१		श्रुतबोधवृत्ति	३१५
	सप्तव्यसनकथा	२५०	महाकविहरिचन्द्र—	धर्मशर्माभ्युदय	१७४
	समवशरणपूजा	५४६	हरिभद्रसूरि—	क्षेत्रसमासटीका	५४
सोमदत्त—	बडोसिद्धपूजा			योगविन्दुप्रकरण	११६
	(कर्मदहनपूजा)	६३६		षट्दर्शनसमुच्चय	१३६
सोमदेव—	अध्यात्मतरंगिणी	६६	हरिरामवास—	पिणलछंदशास्त्र	३११
	नीतिवाक्यमृत	३३०	हरिषेण—	नन्दीश्वरविधानकथा	२२६
	मशस्तिलकचम्पू	१८७			५१४
सोमदेव—	सूतक वर्णन			कथाकोश	२१६
सोमप्रभाचार्य—	मुक्तावलिचित्रकथा	२३६	हेमचन्द्राचार्य—	अभिधानचिन्तामणि	
	सिन्दूरप्रकरण	३४०		नाममाला	२७१
	सूक्तिमुक्तावलि	३४२, ६३५		अनेकार्थसंग्रह	२७१
सोमसेन—	त्रिगर्णचार	५८		अन्ययोगव्यवच्छेदकादिवि-	
	दशरथराजयमाला	७६५		शिका	५७३
	पद्मपुराण	१४८		छंदानुशासनवृत्ति	३०६
	मेरूपूजा	७६५		ह्याश्रयकाव्य	१७१
	विनाहभक्ति	५३६		धानुपाठ	२६०
सौभाग्यगणि—	प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका	२६२		नेमिनाथचरित्र	१७७
हयग्रीव—	प्रश्नसार	२८८		योगशास्त्र	११६
हर्ष—	नैषधचरित्र	१७७		लिंगानुशासन	२७७
हर्षकल्याण—	पंचमीवतोद्यान	५३६		वीतरागस्तोत्र	१३६, ४१६
हर्षकीर्ति—	अनेकार्थशतक	२७१		वीरदात्रिशतिका	१३८
				शब्दानुशासन	२६४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	भक्तिपाठ	६५१		रात्रिभोजनकथा	२३८
	पद	६६४, ७०२ ७२४, ७७४	कुवलयचन्द—	नेमिनाथपूजा	७९३
	विनती	६२१	कुशललाभरामि—	ढोलामाखबरी चौपई	२२५
	स्तुति	६०१, ६५०	कुशल विजय—	विनती	७८२
कनकसोम—	यादुकुमारधमाल	६१७	केशरगुलाब—	पद	४४५
	आषाढभूतिचौडालिया	६१७	केशरीसिंह—	सम्मेदशिवरविलास	६२
	मेघकुमारचौडालिया	६१७		नन्दमानपरारण्य	१५४
कन्हैयालाल—	कवित्त	७८०	केशव—		१६६
कपोत—	मोरपिच्छधारीकृष्ण			कलियुगकीकथा	६२२
	के कवित्त	६७३		सदपवनछसायलिगा	
अ. कपूरचन्द—	पद	४४५ ५७०, ६२४	केशवदास—I	की चौपई	२५४
			केशवदास—II	वेद्यमनोत्सव	६४६
कबीर—	दोहा	७६०, ७८१		कवित्त	६४१, ७७०
	पद	७७७, ७९३		कविप्रिया	१६१
	साखी	७२३		नखसिखधर्शन	७७२
कमलकलश—	वंभरावाडीस्तवन	६१६	केशवसेन—	रसिकप्रिया	७७१, ७९६
कमलकीर्ति—	आदिजिनवरस्तुति		कौरपाल—	रामचन्द्रिका	१६४
	(गुजराती)	४२६		पंचमोक्षतोद्यापन	६३८
कर्मचन्द—	पद	५८७	कृपाराम—	चौरासीबोल	७०१
कल्याणकीर्ति—	चाहदत्तनरिञ्ज	१६७	कृष्णदास—	ज्यांतिपसारभाषा	२८२
किशन—	छहदाला	६७४,	कृष्णदास—		५६८
किशनगुलाब—	पद	५८४, ६१४, ६६६	कृष्णराय—	रत्नावलीव्रतविधान	५३१
किशनदास—	पद	६४९		सतसईटीका	७२७
किशनलाल—	कृष्णवालविलास	४३७	खजमल—	प्रद्युम्नरास	७२२
किशनसिंह—	क्रियाकोशभाषा	५३	खजसेन—	सतिमों की सज्जाप	४५१
	पद	५६०, ७०४		त्रिलोकसारदर्शनकथा	३२१
			खानचन्द—		६८६, ६९०,
				परमात्मप्रकाशबालाव	
				बोधटीका	१११

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
खुशालचन्द —	अनन्तव्रतकथा	२१४		पद	५८२, ६२४
	आकाशपंचमीकथा	२४५			६६४, ६६८, ७०२,
	आदित्यव्रतकथा				७८३, ७८८
	(रविवारकथा)	७७५	खेतसिंह —	नेमीश्वर का बारहमासा	७६२
	भारतसिद्धोंकी	७७७		नेमीश्वरराजुलकीलहुरि	७७६
	उत्तरपुराणभाषा	१४५		नेमिजिनंदव्याहली	६३८
	चन्दनपट्टीव्रतकथा	२२४		चौबीसजिनस्तुति	४३७
		२४४, २४६	खेमचन्द —	पद	५८०, ५८३,
	जिनपूजापुरन्दकथा	२४४			५६१, ६४६
	ज्येष्ठजिनवरकथा	२४४		पद्यसंग्रह	७१०
	धन्यकुमारचरित्र	१७३, ७२६	गङ्ग —	रसकौतुक	
	दशालक्षणाकथा	२४४, ७३१	गंगादास —		राजसभारंजन ५७६
	पद्मपुराणभाषा	१४६		गंगादास —	आदिपुराणविनती ७०१
	पद्मविधानकथा	२३३			आदित्यवारकथा ७६५
	पुष्पांजलिप्रसक्तथा	२३४			भूलना ७५७
		२४४, ७३१			त्रिभुवनकीकीमती ७७२
	पूजाएवंकथासंग्रह	५१६			पद ६१५
	मुकुटसप्तमीकथा	२४४	गंगाराम —		भक्ताभरस्तोत्रभाषा ४१०
		७३१			यशोधरचरित्र १६१
	मुक्तावली व्रतकथा	२४५	गारुडास —		कवित्त ७७२, ७८६
	मेघमालाव्रतकथा	२३६	गिरधर —		चतुर्विंशतिछप्पय ६०१
		२४४	गुणकीर्त्ति —		चौबीसगणधरस्तवन ६-६
	यशोधरचरित्र	१६१, ७११			सीलरास ६०२
	लब्धिविधानकथा	२४४	गुणचन्द्र —		आदिश्वरकेदशभव ७६२
	शान्तिनाथपुराण	१५५			पद ५८१, ५८५, ५८७
	षोडशकारणव्रतकथा	२४४			६८८
	सप्तपरमस्थानव्रतकथा	२४४	गुणनंदि —		रत्नावलिकथा २४६
	हरिवंशपुराण	१५८			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
गुणपूरण—	पद	७६८	चम्पालाल—	चर्चासागर	१६
गुणप्रभसूरी—	नवकारसङ्काय	६१८	चतर—	चन्दनमलयगिरिकथा	२२३
गुणसागर—	द्वीपायनठाल	४४०	चतुर्भुजदास—	पद	७७८
	शांतिनाथस्तवन	७०२		मधुमालतीकथा	२३५
गुमानीराम—	पद	६६६	चरणदास—	ज्ञानस्वरोदय	७५६
गुलाबचन्द—	कविका	६४३	चिमना—	आरतीपंचपरमेष्ठी	७६१
गुलाबराय—	बडाकक्का	६८५	चैतविजय—	पद	५८८, ७६८
ग्रह गुलाल—	कक्काबत्तीसी	६७६	चैतसुखलुदाडिया—	प्रकृष्टिमजिनचैत्यालमपूजा	४५२
	कवित्त	६७०, ६८२		जिनसहस्रनामपूजा	४८०
	गुलालपन्चीसी	७१४			५५२
	जैपनक्रिया	७४०		पद	४४६, ७६८
	द्वितीयसमोसरण	५६६		धीपतिस्तोत्र	४१८
गोपीकृष्ण—	नेमिराजुलव्याहणो	२३२	छत्रपति जैसवाल—	द्वादशानुप्रेक्षा	१०६
गोरखनाथ—	गोरखपदावली	७६७		मनमोदनपंचशतीभाषा	३३४
गोविन्द—	धारहमासा	६६६	छाजू—	पार्वजिनगीत	४ ८
घनश्याम—	पद	६२३	छीतरठोलिया—	होलीकीकथा	२५५,
घासी—	मित्रविलास	३३४			६८५
चन्द—	चतुर्विंशतितीर्थकरस्तुति	६८५	छीदल—	पंचेन्द्रमवेलि	६३८
		७२०		पंथीगीत	७६५
	पद	५८७, ७६३		पद	७२३
	गुणस्थानचर्चा	८		धैरव्यगीत (उदरगीत)	६३७
चंद्रकीर्ति—	समस्तव्रतकीजयमाल	५६४	छोटीलाल जैसवाल—	तत्त्वार्थसारभाषा	३०
चन्द्रमान—	पद	५६१	छोटेलालभित्तल—	पंचव्याणकपूजा	५०७
चन्द्रसागर—	द्वादशव्रतकथासंग्रह	२२८	जगजीवन—	एकीभावस्तोत्रभाषा	६०५
चम्पाबाई—	चम्पाशतक	४३७	जगतारामगोदीका—	पद	४४५, ५८१, ५८२
चम्पाराम—	धर्मप्रश्नोत्तरभावका				५८४, ६१५, ६६७,
		चार			६६६, ७२४, ७५७,
	भद्रवाहुचरित्र	१८३			७८३, ७६८, ७६६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	जिनचारणीस्तवन	३६०		द्रव्यसंग्रहभाषा	३६
जगत्तराय—	पद्मनंदिचौबीसीभाषा	६७		परीक्षामुखभाषा	१३६
	सम्यक्त्वकीमुदीकथा	२५२		भक्तमस्तोत्रभाषा	४१०
जगन्कवि—	रामचत्तीसी	४१४		समयसारभाषा	१२४
जगराम—	पद	४०५, ६६८ ७८५		सर्वार्थसिद्धिभाषा	४६
				सामायिकपाठभाषा	६६
जगरूप—	प्रतिभाः व्यापककूट				५६७
	उद्देश	७०	जगन्नाथ—	कुशीलखंडन	५२
	पादवंनाथस्तवन	६८१	पांडे जयवंत—	तत्त्वार्थसूत्रटीका	२६
	शैलेश्वरमतके ८४ बोल	७७६	जयसागर—	चतुर्विंशतिजिनस्तवन	
				(चौबीसीस्तवन)	
जसमल	पद	५८५			६१६, ७०६
जसमोहन—	स्नेहलीला	७७१		जिनकुशलसूरिचौपई	६१८
जसराज—	षट्चतुर्दशतवारहमासा	६५६	जयमोमगरिण—	बारहभावना	६१७
			जवाहरलाल—	सम्मेदशस्त्रपूजा	५५०
जयकिशन—	कवित्त	६४३	जसकीर्ति—	ज्येष्ठजिनवरकथा	२२५
जयकीर्ति—	पद	५८५ ५८८	जसराज—	बारहमासा	७८०
	लंकचूलरास	३६३	जसवंतसिद्धराठौड—	भाषाभूषण	३१२
	महिम्नस्तवन	४२५	जसुराम—	राजनीतिशास्त्रभाषा	३३५
	रविग्रनकथा	६६६	जादूराम—	पद	४४५
जयचन्द्रदाबडा—	अध्यात्मपत्र	६६	जितचंद्रसूरि—	आदीश्वरस्तवन	७००
	अष्टपाहुडभाषा	६६		पार्श्वजिनस्तवन	७००
	आप्तमीमासाभाषा	१३०		बारहभावना	७००
	कार्तिकेयानुप्रेक्षाभाषा	१०४		महावीरस्तवन	७००
	चंद्रप्रभचरित्रभाषा	१६६		विजतीपाठस्तुति	७००
	ज्ञानार्णवभाषा	१०८	जितसागरगणि—	नेमिस्तवन	४००
	तत्त्वार्थसूत्रभाषा	२६	जितसिंहसूरि—	चतुर्विंशतिजिनराज	
	देवपूजाभाषा	४६०		स्तुति	७००
	देवागमस्तोत्रभाषा	३६५			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	बौरातीर्थकरस्तुति	७००		धर्मपत्रविशतिका	६१
	शालिभद्रचौपई	७००		निजामरिण	६५
जिनधंदसूरि—	नयनघाचौपई	२२१		मिच्छादुःखकण्ड	६८६
	अमावलीसी	६४		रैदवतकथा	२४६
जिनदत्तसूरि—	गुरुवारर्तत्रयसप्तस्मरण	६१६		समकितविराजोधर्म	७०१
	सर्गारिष्टनिवारणस्तोत्र	६१६		सुकुमालस्वामीरास	३६६
पं० जिनदास—	चेतनगीत	७६२		सुभौमचक्रवर्तिरास	३६७
	धर्मतन्त्रीगीत	७६२	जिनरंगसूरि—	कुशलगुरुद्वयवन	७७६
	पद ५८१, ५८८, ६६८		जिनराजसूरि—	धमाशालिभद्ररास	३६२
	७६४, ७७२, ७७४		जिनवल्लभसूरि—	नवकारमहिमास्तवन	६१८
	मालीरासो	७०७	जिनसिंहसूरि—	शालिभद्रधमाचौपई	२५३
	सुनीश्वरोकीजयमाल	५७१	जिनहर्ष—	धधरनिमग्री	३८७, ७३४
	५७६, ६२२, ६५८			उपदेशछत्तीसी	३२४
	६८३, ७५०, ७६१			पद	५६०
	राजुलसङ्काय	७५०		नेमिराजुलगीत	६१८
	विनती	७७५		पार्श्वनाथकीमिशानी	४४८
	विवेकजकडी	७२२, ७५०	जिनहर्षगणि—	श्रीपालरास	३६५
	सरस्वतीजयमाल	६५८	जिनेन्द्रभूषण—	बारहसीचौतीसव्रतकथा	७६५
		७७८,	जिनेश्वरदास—	तर्दःश्वरविधान	४६४
पाण्डेजिनदास—	योगीरासा	१०५, ६०१	जीवणदास—	पद	४४५
		६०३, ६२२, ६३६	जीवणराम—	पद	५८०
		६५२, ७०३, ७१२	जीवराम—	पद	५६०, ७६१
		७२३	जैतराम—	जीवजीतसंहार	२२५
	मालीरासो	५०६	जैतथी—	रायभालाके दोहे	७८०
जिनदासगोधा—	सुगुणशतक	३४० ४४७	जैतसिंह—	दशवैकालिकगीत	७००
ब० जिनदास—	अठावीसमूलगुणरास	७०७	जोधराजगोदीका—	चौआराधनाउद्योतकथा	२२५
	अनन्तव्रतरास—	५६०		गौडीपार्श्वनाथस्तवन	६१७
	बौरासीन्यातिमाला	७६५		जिनस्तुति	७७५
				धर्मसरोवर	६३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	नेमिजिमस्तवन	६१८		सोलहकारणकथा	७४०
	प्रवचनसार	११४	भांभूराम—	पद	४४५
	प्रीतिकरचरित्र	१८३	टीकमचंद—	चतुर्दशीकथा	७५४, ७७३
	भावदीपक	७७		चंद्रहंसकथा	६३६
	चारिषेणमुनिकथा	२४०		श्रीपालजीकीस्तुति	६३६
	सम्पत्त्वकीमुदीभाषा	२५२		स्तुति	६३६
		६८६	टीलाराम—	पद	७८२
	समन्तभद्रकथा	७५८	टेकचंद—	कर्मदहनपूजा	४९५, ५१८
	पद	४४५, ६६४, ६६६			७१२
		७८६, ७८८		तीनलोकपूजा	४८३
जौहरीलालभिलाला—	विद्यमानबीसतीर्थकर			नंदीश्वरव्रतविधान	४६४
	पूजा	५३५			५१८
	आलोचनापाठ	५६१		पंचकल्याणकपूजा	५०१
ज्ञानचंद—	लब्धिविधानपूजा	५३४		पंचपरमेष्ठीपूजा	५०३, ५१८
ज्ञानभूषण—	अश्वयनिधिपूजा	४५४		पंचमेरुपूजा	५०५
	आदीश्वरफाग	३९०		पुण्याश्रवकथाकोश	२३४
	जलमालारस	३६२		रत्नत्रयविधानपूजा	५३१
	पोसहरास	७६२		सुदृष्टितरंगिणीभाषा	६७
म० ज्ञानसागर—	अनन्तचतुर्दशीकथा	२१४		सोनहकारणमंडलविधान	
	अष्टालिकाकथा	७४०			५५६
	आदिनाथकल्याणकथा	७०७	टोडर—	पद	५८२, ६१४, ६२३
	कथासंग्रह	२२०			७६७, ७७६, ७७७
	दशलक्षणव्रतकथा	७६४	पं० टोडरमल—	आत्मानुशासनभाषा	१०२
	नेमीश्वरराजुलविवाद	६१३		क्षपणासारभाषा	७
	माणिक्यमालाग्रंथ			गोम्मटसारकर्मकाण्डभाषा	४३
	प्रश्नोत्तरी	६०४		गोम्मटसारजीकाण्डभाषा	१०
	रत्नत्रयकथा	७४०		गोम्मटसारपीठिका	११
	लघुरविब्रतकथा	२४४		गोम्मटसारसंदृष्टि	१२
				त्रिलोकसारभाषा	३२१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पुरुषार्थसिद्धधुपामभाषा	६६	थानजीअजमेरा—	बीसतीर्थकरपूजा	५२३
	मोक्षमार्गप्रकाशक	५०	थिरूमल—	हृदयप्रारती	७७८
	लब्धिसारभाषा	४३	दत्तलाल—	बारहखंडी	७४५
	लब्धिसारक्षपणसार	४३	ब्रह्मदयाल—	पद	५८७
	लब्धिसारसंहृष्टि	४३	दयालराम—	जकड़ी	७४६
ठक्कुरसी—	कृपणुर्जद	६३८	दरिगाह—	जकड़ी	६६१, ७४५
	नेमीश्वरकीबेलि			पद	७४६
	(नेमीश्वरकवित्त)	७२२	दलजी—	बारहभाषना	५७१
	पंचेन्द्रियबेलि	७०३	दलाराम—	पद	६२०
		७२२, ७२५	दशरथनिगोस्या—	धर्मपरीक्षाभाषा	३५५
कविठाकुर—	रामोकारपञ्चमीसी	४३६	दास—	पद	७४६
	सज्जनप्रकाश दोहा	२८४	मुनिदीप—	विद्यमानबीसतीर्थकर	
हालूराम—	अढाईद्वीपपूजा	४५५		पूजा	४१५
	चतुर्दशीकथा	७४२	दीपचन्द—	अनुभवप्रकाश	४८
	द्वादशांगपूजा	४६१		आत्मावलोकन	१००
	पंचपरमेष्ठीगुणवर्णन	६६		चिह्निलास	१०५
	पंचपरमेष्ठीपूजा	५०३		आरती	७७७
	पंचमेरूपूजा	५०५		ज्ञानदर्पण	१०५
हूंगरकवि—	होलिकाचौपई	२५५		परमात्मपुराण	११०
हूंगावैद—	श्रेणिकचौपई	२४८		पद	५८३
तिपरदास—	श्री स्वमणिकृष्णजी		दुलीचंद—	आराधनासारवचनिका	५०
	की रासो	७७०		उपदेशरत्नमाला	५१
तिलोकचंद—	सामायिकपाठभाषा	६६		जैनसदाचारमार्तिण्ड	
तुलसीदास—	कविसंबंधरामचरित्र	६६७		नामकपत्रकाप्रत्युत्तर	२०
तुलसीदास—	प्रश्नोत्तररत्नमाला	३३२		जैनगारप्रक्रियाभाषा	५७
तेजराम—	तीर्थमालास्तवन	६१७		द्रव्यसंग्रहभाषा	३७
		६७३		निर्मल्यदोषवर्णन	६५
त्रिभुवनचंद—	अनित्यपंचमसिका	७५५		पद	६६३
	पद	७१५			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	प्रतिष्ठाभाषाभाषा	५२२		संकटचौथकृतकथा	७६४
	बार्सिग्रभक्ष्यवर्णन	७५	दौलतराम—	छहदाला	५७, ७४६
	मुभाषितावली	३४४			७०७
देवचन्द—	मुष्टिज्ञान	५००		जिगस्तपत्र	७०७
देवचन्द—	अष्टप्रकारीपूजा	७६०		पद	४४६, ६५४
	नवपदपूजा	७६०		बारहभावना	५६१, ६७५
देवसिंह—	पद	६६४	दौलतरामपाटनी—	व्रतविधानरासो	७७६
देवसेन—	पद	५८६	दौलतराम—	आदिपुराण	१४४
देवादिल—	उपदेशसञ्ज्ञाप	३८१		चौबीसदण्डकभाषा	५६,
देवापारङ्गे—	जिनवरजीकीविनती	६५५			४२६, ४४८
देवावका—	कल्पियुगकोविनती	६१५,			५११, ६७२
		६८५		त्रेपनक्रियाकोश	५६
	चौबीसतीर्थकरस्तुति	४७८		पञ्चपुराणभाषा	१४६
	पद	४४६, ७८३, ७८५		परमात्मप्रकाशभाषा	१११
	विनती	४५१, ६६५, ७८०		पुण्याश्रवकथाकोश	२३३
	नवकारबडीधीनती	६५१		सिद्धपूजाष्टक	७७७
	मृत्तिसुश्रुतकीनती	४५०		हरिवंशपुराण	१५७
	सम्भेदशिखरविलास	६३	दौलतआसेरी—	श्रद्धिमंजलपूजा	४६४
	सासबहुकाभगाडा	६४८	द्यानतराय—	अष्टालिकापूजा	७०५, ४६०
देवीचन्द—	हितोपदेशभाषा	७४४		अक्षरबावनी	६७६
देवीदास—	कवित्त	६७५		आगमविलास	४६
	जीवनेलडी	७५७		भारतीसंग्रह	६२१, ६२२
	पद	६४६			७७७
	राजनीतिकवित्त	३३६, ७५२		उपदेशशतक	३२५, ७५७
देवीसिंहझावडा—	उपदेशरत्नमालाभाषा	५२		चर्चाशतक	१४, ६२४,
देवेन्द्रकीर्ति—	जकडी	६२१			७६४
देवेन्द्रभूषण—	पद	५८७		चौबीसतीर्थकरपूजा	७०४
	रविवारकथा	७०७		छहदाला	६५२, ६७२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
		६७४, ७४७		संनोधप्रक्षरबावनी	११६
	गुरुप्रष्टक	७७७		समाधिमरणभाषा	१२६
	जकडी	६४३		सिद्धक्षेत्रपूजाष्टक	७०५
	तत्त्वसारभाषा	७४७		स्वयंभूस्तोत्रभाषा	४२६
	दशबोलपञ्चीति	४४८		भाष्यप्रपञ्च	५२४
	दशलक्षणापूजा	५१६, ७०५	द्वारिकादास—	कलियुगकीकथा	७७३
	दानबावनी	६०५, ६८६	धनराज—	तीनमियांकीजकडी	६२३
	द्यानतविलास	३२८		पद	७६८
	द्रव्यसंग्रहभाषा	७१२		खिलरविलासभाषा	७६३
	धर्मविलास	३२८	धर्मचन्द—	अनन्तकेछापय	७५७
	धर्मपञ्चीसी	७१०, ७४७	धर्मदास—	मोरपिच्छधारीकृष्ण के कवित्त	६७३
	पंचमेरुपूजा	५०५, ७०५		पद	५८८, ७६८
	पार्वनाभस्तोत्रभाषा	५६६	धर्मपाल—	अंजनाकोरास	५६३
		६१५, ४०६	धर्मभूषण—	दानशीलतरभावना	६०
	पदसंग्रह	४४५, ५८३	धर्मसी—	भाषाभूषण	६६८
		५८४, ५८५, ५८६	धीरजसिहराठौड—	अनेकार्थनाममाला	७०६
		५८८, ५८९, ५९०	चन्ददास—	अनेकार्थमंजरी	२७१, ७६६
		६२२, ६२४, ६४३		पद	५८७, ७०४
		६४६, ६५४, ७०४			७७०
		७४६, ७८७		नाममंजरी	६६७, ७६६
	भावनास्तोत्र	६१४		मानमंजरी	२७६, ६६१
	रत्नत्रयपूजा	५२६, ७०५		विरहमंजरी	६५७, ७५६
	बाणीप्रष्टभवजयमाल	७७७		स्यामवत्तीसी	६८३
	षोडशकारणपूजा	५११		योगसारभाषा	११६
		५१६, ५५६, ७०५		कम्पकावत्तीसी	७३२
	संघपञ्चीसी	३७५	चन्द्रराम—	प्रश्नावलिकवित्त	७८२
	संनोधपंचासिका	१२८	वैद्यचन्द्रलाल—	रसालकुंवरकीचौपई	५७७
		६०५, ६४८, ६८५, ६६३			
		७१३, ७१६, ७२५			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
नथमलबिजाला—	अष्टाद्विककथा	२१५		६५३, ६५४, ६५५ ७८२	
	जीवधरचरित्र	१७०		७८३, ७८८	
	दर्शनसारभाषा	१३३		बारहभावना	११५
	परमात्मप्रकाशभाषा	१११		४२६, ५७१	
	महीपालचरित्र	१८६		मद्रवाहुचरित्र	१८३
	भक्तामरस्तोत्रकथा			शिक्षाचतुष्क	६६८
	भाषा २३४, ७२०		नाथूरामदोसी—	समाधितंत्रभाषा	१२६
	रत्नकरणश्रावकाचार		ब्रह्मनाथू—	चेलावनीगीत	७५७
	भाषा ८३			पद	६२२
	रत्नत्रयजयमालभाषा	५२८		पार्श्वनाथस्तवन	६२२
	बौद्धशकारणभावना		नाथूराम—	अकलंकचरित्रगीत	१६०
	जयमाल ८८			गीत	६२२
	सिद्धांतसारभाषा	४७		जम्बूस्वामीचरित्र	१६६
	सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा	४२१		जातकसार	६८३
नयविमल—	पद	५८१		जिनसहस्रनामस्तोत्र	३६३
नयनसुख—I	वेद्यमनोत्सव	३०४, ६०३, ६६५, ७६८, ७६४		रक्षाबंधनकथा	२३७
	पद	४४५, ५८३	नाथूलालदोसी—	स्वानुभवदर्पण	१२८
	भजनसंग्रह	४५०	नानिगराम—	सुकुमालचरित्र	२०७
नरपाल—	पद	५८८	निर्मल—	दोहासंग्रह	६२३
नरेन्द्रकीर्ति—	हालसंगलकी	६५५	निहालचंद्रअमवाल—	पद	५८१
	रत्नावलीव्रतों की तिथियों			नयचक्रभावप्रकाशिनी	
	के नाम ६५५			टीका	१३४
नयलराम—	गुरुग्रंथीवीनती	७०४	नेमीचन्द—	जकडी	६२२
	जिनपञ्चीसी	६५१, ६७०		तीनलोकपूजा	४८३
	६७५, ६६३, ७२५			चौबीसतीर्थकरोकी	
	पद	४४५, ५८२		वंदना	७७४
	५८६, ५६०, ६१५, ६४८			पद	५८०, ६२२
				प्रीत्यंकरचौपई	७७५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	नेमीश्वरगीत	६२१		जीवंधरचरित्र	१७१
	लुहरि	६२२		तन्वकीस्तुभ	२०
	विनती	६६३		तत्त्वार्थसारभाषा	२३
नेमीचंद्रपाटनी—	चतुर्विंशतितीर्थकर			तत्त्वसारभाषा	२१
	पूजा	४७२		द्रव्यसंग्रहभाषा	३६
	तीनचौबीसीपूजा	४८२		धर्मप्रदीपभाषा	६१
नेमीचंद्रबख्शी—	सरस्वतीपूजा	५५१		नंदीश्वरभक्तिभाषा	४६४
नेमीदास—	निर्वणिमोदकनिर्णय	६५		नवतत्त्ववचनिका	३८
न्यामतसिंह—	पद	७६५		न्यायदीपिकाभाषा	१३५
	भविष्यदस्ततिलका—			पांडवपुराण	१५०
	सुन्दरीनाटक	३१७		प्रश्नोत्तरभावकाचार	
	पद	७६५		भाषा	७०
पद्मभगत—	कृष्णरुक्मिणीमंगल	२२१		भक्तमरस्तोत्रकथा	२३५
पद्मकुमार—	आत्मशिक्षासञ्ज्ञाय	६१६		भक्तिपाठ	४४६
पद्मतिलक—	पद	५८३		भविष्यदस्तचरित्र	१८४
पद्मनंदि—	देवतास्तुति	३६४		भूपालचौबीसीभाषा	४१२
	पद	६४३		सरकतविलास	७८
	परमात्मराजस्तवन	४०२		योगसारभाषा	११६
पद्मराजगणि—	नवकारसञ्ज्ञाय	६१८		यशोधरचरित्र	१६२
पद्माकर—	कवित्त	७५६		रत्नकरण्डभावकाचार	८३
चौधरीपन्नालालसंधी—	आचारसारभाषा	४६		बसुनंदिभावकाचारभाषा	८५
	भाराधनासारभाषा	४६		विषापहारस्तोत्रभाषा	४१६
	उत्तरपुराणभाषा	१४६		षट्प्रावश्यकविधान	८७
	एकीभावस्तोत्रभाषा	३८३		भावकप्रतिक्रमणभाषा	८६
	कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	३८५		सद्भाषितावलीभाषा	३३८
	गौतमस्वामीचरित्र	१६३		समाधिभरणभाषा	१२७
	जम्बूस्वामीचरित्र	१६६		सरस्वतीपूजा	५५१
	जिनदत्तचरित्र	१७०		सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा	४२१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
पद्मालालदूनीवाले—	सुभाषितावलीभाषा	३४४	प्रभुदास—	परमात्मप्रकाशभाषा	७६५
	पंचकल्याणकपूजा	५०१	प्रसन्नचंद—	भारतमणिशासनाय	६१६
	विद्वज्जनबोधकभाषा	८६	फतेहचंद—	पद	५७६, ५८०, ५८१ ५८२, ५८३
	समवसरणपूजा	८००	अंशी—	नृवणमंगल	७७७
पद्मालालबाकलीवाल—	बालपद्यपुराण	१५१	अंशीदास—	रोहिणीविधिकथा	७८१
परमानंद—	पद	६८४, ७७०	अंशीधर—	द्रव्यसंग्रहबालावबोधटीका	७६१
परिमल—	श्रीपालचरित्र	२०१, ७७३	अक्षतराम—	पद	५८३, ५८६, ६६८ ७८३, ७८६
पर्वतधर्मार्थी—	द्रव्यसंग्रहभाषा	३६		मित्यात्वखंडन	७८
पारसदासनिगोत्या—	समाधितंत्रभाषा	१२६		बुद्धिविलास	७५
	ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	३१७	बरुतावरलाल—	चतुर्विंशतितीर्थकरपूजा	४७३
पारसदास—	सारचौबीसी	४५२		ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	३१७
	पद	६५४	बधीचन्द—	रामचन्द्रचरित्र	६६१
पार्श्वदास—	बारहसूत्री	३३२	बनारसीदास—	अध्यात्मवत्तीसी	६६
पुण्यरत्न—	नेमिनाथफागु	७४८		आत्मध्यान	१००
पुण्यसागर—	साधुबंदन	४५२		कर्मप्रकृतिविधान	५ ३६०, ६७७, ७४६
पुरुषोत्तमदास—	बोहे	६८७		कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	३८५, ४२६, ५६६ ५६६, ६०३, ६४३ ६४८, ६५०, ६६१ ६६२, ६६५, ६७० ७०३, ७०५
पून्थो—	पद	७८५		कविता	७०६, ७७३
	मेघकुमारगीत	६६१, ७२२ ७४६, ७५०, ७६४ ७७५		जिनसहस्रनामभाषा	६६० ७४६
पूरणदेव—	वीरजिणंदकीसंघावली	७७५		ज्ञानचौबीसी	६१४, ६२४ ६५०, ७४३, ७७५
पेमराज—	पद	६६३			
पृथ्वीराजराठौड़—	वैदरभीविवाह	२४०			
	कृष्णरूक्मिणीबेलि	३६४ ६५६, ७००			
महाराजासवाईप्रतापसिंह—					
	अमृतसागर	२६६			
	चंदकुंवरकीवार्ता	२२३			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	ज्ञानबावनी	१०५, ७५०	बलदेव—	पद	७६८
	तेरहकाठिया	४२६, ७५०	बाबूलाल—	विष्णुकुमारमुनिपूजा	५३६
	नवरत्नकवित्त	७४३,	बालचंद—	पद	६२५
	नाममाला	२७६, ७०६	बिहारीदास—	भारती	७७७
	पद	५८२, ५८३		कवित्त	७७०
	५८५, ५८६, ५८६,			पद	५८७
	५६०, ६१५, ६२१			पद्यसंग्रह	७१०
	६२२, ६२३ ६६७			बंदनाजकडी	४४६, ७२७
	पार्श्वनाथस्तुति	७२३	बिहारीलाल—	सतराई	५७६, ६७५
	परमज्योतिरतोषभाषा	४०२		६८८, ७२७, ७६८	
		५६०	बुधजन—	दृष्टछत्तीसी	६६१
	परमानंदस्तोत्रभाषा	५६२		छद्माला	५७
	बनारसीविलास	६४०		तत्त्वार्थबोध	२१
	६८६, ७०६			दर्शनपाठ	४३६
	मोहविवेकयुद्ध	७१४, ७६४		परमार्थस्तिकामभाषा	४१
	मीक्षपैडी	८०, ७१६		पद	४४५, ४४६, ५७१
		७४६		६४८, ६५३, ६५४	
	शारदाष्टक	७७६		७८५, ७८८	
	समयसारनाटक	१२३, ६०४		बंदनाजकडी	४४६
	६३६, ६४०, ६५७			बुधजनविलास	३३२
	६००, ६८३, ६८८			बुधजनसतसई	३३२, ३३३
	६८६, ६८४ ६६८			योगसारभाषा	११७
	७०२, ७१६, ७२०			पदपाठ	४१६
	७२१, ७३१, ७५६			संबोधपंचसिकाभाषा	५७०
	७७८, ७८७			सरस्वतीपूजा	५५१
	साधुबंदना	६४०, ६५२	बुधमहाचंद—	स्तुति	७०४
	७१६		बुलाकीदास—	सामायिकपाठभाषा	६५
	सिद्धप्रकरणा	३४०, ७१०		पाण्डवपुराण	१५०, ७४५
	७१२, ७४६			प्रश्नोत्तरभाषाकाचार	७०
			बूचराज—	हंढाणागीत	७२२, ७५०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
भगत राम—	भुवनकीर्तिगीत	६६६	भागचंद्र—	पद	५८७
भैयाभगतीदास—	पद	७६८		नेमीधरकोरास	६३८
	भाहारके ४६ दोष वर्णन	५०		उपदेशसिद्धान्तरत्न	
	प्रकृतिमन्त्रालय			माला	५१
	जयमाल	६६४, ७२०		ज्ञानसूर्योदयनाटक	३१७
	चेतनकर्मचरित्र	७४०		नेमिनाथपुराण	१४६
	६१३, ६०५, ६८६			प्रमाणपरीक्षाभाषा	१३७
	अनित्यपञ्चीसी	६८६		पद	४४५, ४४६, ५७०
	निर्वाणकाण्डभाषा	३२६		श्रावकाचारभाषा	६१
	४२६, ५६२, ५६५, ५७०, ६५०, ५६६		भागीरथ—	सम्भेदशिक्षरपूजा	५५०
	६००, ६०५, ६१४		भानुकीर्ति—	मोनागिरपञ्चीसी	६८
	६२०, ६४३, ६५१			जीवकायासज्जाय	६१६
	६६२, ७०४, ७२०			पद	५८३, ५८५, ६१५
	ब्रह्मविलास	३३३		रविप्रतकथा	७५०
	बारहभावना	७२०	भारामस्ती—	कर्मरञ्चीसी	७६६
	चैराग्यपञ्चीसी	६८५		चारुदत्तचरित्र	१६८
	श्रीपालजीकीस्तुति	६४३		दर्शनकथा	१२७
	सप्तभंगीबाणी	६८८		दानकथा	२२८
भगौतीदास—	कीरगिरांदगीत	५६६		मुक्तावलिकथा	७६४
भगवानदास—	आ, शीतिसागरपूजा	४६१		रात्रिभोजनकथा	२३८
		७८६		शीलकथा	२४७
भगोसाह—	पद	५८१		सप्तधर्मसप्तकथा	२५०
भद्रसेन—	चन्दनमलयामिरी	२२३	भीषमकवि—	लब्धिविधानचौपई	७७२
भाऊ—	आदित्यवारकथा		भुवनकीर्ति—	नेमिराजुलगीत	६१८
	(रविप्रतकथा)	२३७, २४४	भुवनभूषण—	प्रभातिकस्तुति	६३३
	६०१, ६८५, ७४०			एकीभावस्तोत्रभाषा	३८३
	७४५, ७५६, ७६२			४२६, ४४८, ६५२	
				६६२, ७१६, ७२०	

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
भूधरदास—	कवित्त	७७०		वारहभावना	११४
	गुरुगोपीकीवीनती	४४७		वज्रनाभिचक्रवर्तिका	
	५११, ६१४, ६४२, ६६३			भावना	८५
	चर्चासमाधान	१५, ६०६			४४८, ७३६
		६४६		विनती	६४२, ६६३
	चतुर्विंशतिस्तोत्र	४२६			६६४
	जकडो	६५०, ७१६		स्तुति	७१०
	जिनदर्शन	६०५	भूधरमिश्र—	गुरुघार्यसिद्धचुपाय	
	जैनशतक	३२७, ४२६		वचनिका	६६
		६५२, ६७०, ६८६		पद	७७६
		६६८, ७०६, ७१०	भेलीराम—	पचवत्पाराणकपूजा	५०१
		७१३, ७१६, ७३२	भैरवदास—	बृहद्वर्षटाकशीकल्प	७२६
	द्वालक्षणापूजा	५६२	भोगीलाल—	नन्दीश्वरद्वीपपूजा	४६३
	नरकदुखवर्णन	६५, ७८८	मंगलचंद—	पदसंग्रह	४४७
	नेमीश्वरकीस्तुति	६५०		मकरंदपद्मावतिपुरवाल—	षट्संहननवर्णन
		७७७		मकलकनाटक	३१६
	पंचमेरूपूजा	५०५, ५६६	मखनलाल—	जैनबद्रोदेशकीपञ्ची	५८१
		७०४, ७५६	मजलसराय—	चन्द्रलेहारास	३६१
	पार्श्वपुराण	१७६, ७४४	मतिकुसल—	ज्ञानकावनी	७७२
		७६१	मतिशेखर—	शालिभद्रचौपई	१६८, ७२६
	गुरुघार्यसिद्धचुपाय		मतिसागर—	लीलावतीभाषा	३६८
	भाषा	६६	मथुरादासव्यास—	प्रकृतिमचैर्यालयपूजा	४५४
	पद	४४५, ५८०, ५८६	मनरंगलाल—	चतुर्विंशतितीर्थकरपूजा	४७३
		५६०, ६१५, ६२०		निर्वाणपूजापञ्च	४६६
		६४८, ६६४, ६५४		चित्तमणिजीकीजयमाल	
		६६४, ७७६, ७७७	मनरथ—		६४४
		७८५, ७८६, ७८८			
	वाइसपरीषद्द्वर्णन	७५, ६०५	मनराम—	प्रक्षरगुणमाला	७४६
				गुणोत्तरमाला	७५०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पद	६६०, ७२३, ७२४ ७६४, ७६६, ७७६		पद	४४७, ४४८, ७६८
मनसाराम—	पद	६६३, ६६४		समाधित्वभाषा	१२५
मनसुखलाल—	सम्भेदशिखरमहात्म्य	६२		साधुबंदना	४५२
मनहरदेव—	आदिनाथपूजा	५११		हुण्डावसपिसीकाल	
मन्नालालखिन्दूका—	चारित्रसारभाषा	५६	मानकवि—	दो वर्णन	६८
	पञ्चनक्षिपञ्चीसीभाषा	६८		मानवावनी	३३४, ६०१
	प्रद्युम्नचरित्रभाषा	१८२		विनतीचौपड़की	७८१
मनासाह—	मानकीबड़ीबावनी	६३८	मानसागर—	संयोगवत्तीसी	६१३
	मानकीलघुबावनी	६३८	मानसिंह—	कठियारकानठरीचौपड़	२१८
मनोहर—	पद	४४५, ७६३, ७६४ ७८५, ७८६		आरती	७७७
मनोहरदास—	ज्ञानविज्ञानमणि	१८, ७१४ ७३६		पद	७७७
	ज्ञानपदवी	७१८		भमरगीत	७५०
	ज्ञानपैड़ी	७५७		मानविनोद	३००
	धर्मपरोक्षा	३५७, ७१६		पहेलियाँ	६५१
मलकचंद—	पद	४४६	मारु—	सज्जनचित्तवल्लभ	३३७
मलकदास—	पद	७६३	मिहरचंद—	पद	६६०
महमत—	श्रीराग्यगीत	४१६	सुकन्ददास—	अजितशंतिस्तवन	६१६
महाचन्द—	लघुस्वयंभूस्तोत्र	७१६	मेरुनन्दन—	शीलोपदेशमाला	२४७
	षट्प्रावश्यक	८७	मेरुसुन्दरगणि—	पद	७७६
	सामायिकपाठ	४२६	मेला—	कल्याणमंदिरस्तोत्र	७८६
महोचन्द्रपुरि—	पद	५७६	मेलीराम—	हमीररासो	३६७
महेन्द्रकीर्ति—	जकड़ी	६२०	मदेशकवि—	पद	५६१
	पद	७८६	मोतीराम—	कवित्त	७७२
माखनकवि—	पिंगलछंदशास्त्र	३१०	मोहन—	लीलावतीभाषा	३६७
माणिकचंद—	तेरहपंचपञ्चीसो	४४८	मोहनमिश्र—	चन्दनाचरित्र	७६१
			मोहनविजय—	मानतुंगमानवतिचौपड़	२३५
			रंगविजय—	आदीश्वरगीत	७७६
			रंगविजयगणि—	उपदेशसज्जनाय	
				मंगलकलशमहामुनि	
				चतुष्पदी	१८५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
रङ्गधु—	बारहभावना	११४		चतुर्विंशतितीर्थवरपूजा	
रघुराम—	सभासारभाटक	३३८		४७२, ६६६, ७२७,	
रणजीतदास—	स्वरोदय	३४५		७२६, ७७२	
रत्नकीर्ति—	नेमीश्वरकाहिष्णोलला	७२२		पद ५८१, ६६८, ६८६	
	नेमीश्वररास	६३८		पूजासंग्रह	५२०
		७२२		प्रतिमासान्तचतुर्दशी	
रतनचंद—	चौबीसीविनली	६४६		अतोद्यापन	५२०
	देवकीकीर्तन	४४०		पुरुपरत्रीलंवाद	७८६
रत्नमुक्ति—	नेमीराजमतीरास	६१७		बारहखंडी	७१५
रत्नभूषण—	जिनचैत्यालयजमाल	५६४		शान्तिनाथपूजा	५४५
रत्नकवि—	जिनदत्तलीलाई	६८२		शिवरविलारा	६६३
रसिकराय—	नेहलीला	६६४		सम्भेदशिखरपूजा	५५०
राजमल—	तत्त्वार्थसूचटीका	३०		सोताचरित्र	२०६, ७२५
राजसमुद्र—	कर्मबलीसी	६१७			७५६
	जीवकाम्यासञ्ज्ञाय	६१६	ऋषिरामचन्द्र—	सुपार्ष्णिनाथपूजा	५५५
	शत्रुञ्जयभास	६१६		उपदेशसञ्ज्ञाय	३८०
	शत्रुञ्जयस्तवन	६१६		कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	
	सोलहसतिषोकेनाम	६१६			३८५
राजसिंह—	पद	५८७		नेमिनाथरास	३६२
राजसुन्दर—	दशमाला	७४३, ७७१	रामचन्द्र—	रामविनोद	३०२
	सुन्दरशृंगार	६८३, ७२६	रामदास—	पद	५८३, ५८८
राजाराम—	पद	५६०		६६३, ६६७, ७७२	
राम—	पद	६५३	रामभगत—	पद	५८२
	रत्नपरीक्षा	३५८	मिश्ररामराय—	कृहद्वाणिज्यनीति	
रामकृष्ण—	जकडी	४३८		शास्त्रभाषा	३३६
	पद	६६८	रामविनोद—	रामविनोदभाषा	६४०
रामचंद्र—	आदिनाथपूजा	६५१	ब० रायमल्ल—	आदित्यनारकथा	७१२
	चंद्रप्रभजिनपूजा	४७४		चिंतामणिजयमाल	६५५
				द्विपालीसंवादा	७६५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	जम्बूस्वामीचरित्र	७१०		पंचमंगल	४०१, ४२८, ४४७
	त्रिदोषसप्तमीपरा	८८६			५१८, ५६५, ५७०
	शेमीश्वरकाग	३६३, ६०१			६२४, ६४२, ६५०
		६२१, ६३८, ७५२			६५८, ६६१, ६६४,
	पंचगुरुकी अममाल	७६३			६७३, ७०४, ७०५
	प्रद्युम्नरास	६६५, ६३६			७१५, ७२०
		७१२, ७३७, ७४६		पंचकल्याणकपूजा	५००
	भक्तभस्मस्तोत्रवृत्ति	४०८		दोहासतक	७४०, ७४३
	भविष्यदत्तरास	३६४, ५६४		पद	५८५, ५८७, ५८८
		६४८, ७४०, ७५१			६२४, ६६१, ७२४
		७५२, ७७३, ७७५			७४६, ७५५, ७६३
	राजाचन्द्रगुप्तकीचौपई	६२०			७६५, ७८३
	शौलरास	७४६		परमार्थगीत	७६४
	श्रीपालरास	६३८		परमार्थदोहा	७०६
		६८४, ७१२		परमार्थहिंदोलना	७६४
		७१७, ७४६		सधुमंगल	६२४, ७१६
	सुदर्शनरास	३६६, ६३६		विनती	७६५
		७१२, ७४६		समवसरणपूजा	५४६
	हनुमच्चरित्र	२१६, ५६५	पांडे रूपचंद—	तत्त्वार्थसूत्रभाषाटीका	६४०
		५६६, ७१७, ७३४	रूपदीप—	विभक्तभाषा	७०६
		७४०, ७५२	रेखराज—	पद	७६८
		७४४, ७६२	लक्ष्मण—	चन्दकथा	७४८
साधर्म्यभाईरायमल्ल—	ज्ञानानन्दश्रावका		लक्ष्मीवल्लभ—	नवतत्त्वप्रकरण	३७
	चार	५८	लक्ष्मीसागर—	पद	६८२
रूपचंद—	अध्यात्मदोहा	७४६	लब्धिविभक्तगण—	ज्ञानार्णवटीकाभाषा	१०८
	जकडी	६५०, ७५२	पं० लालो—	पार्श्वनाथचौपई	४४८
		६६१, ७५५	लाल—	पद	४४५, ६८६
	जिनस्तुति	७०२	लालचन्द—	आरती	६२२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	चिन्तामणिपार्श्वनाथ			पार्श्वजिनपूजा	५०७
	स्तवन	६१७		पूजाष्टक	५१२
	धर्मबुद्धिचौपई	२२६		षट्पद्यावेलि	३६६
	नेमिनाथमंगल	६०५, ७२२	वल्लभ—	रुक्मिणीविवाह	७८७
	नेमीश्वरका व्याहृता	६५१	बाजिद—	बाजिदकेषडिल्ल	६७३
	पद	५८२, ५८३, ५८७	षादिचन्द्र—	षादिचन्द्रवारकथा	६०७
	पूजासंग्रह	७७७	विचित्रदेव—	मोरपिच्छधारीके	
पांडे लालचंद—	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला	८८		कवित्त	६७३
	सम्पेदशिक्षरमहात्म्य	६२	विजयकीर्ति—	अनन्तव्रतपूजा	४५७
श्रीवि लालचंद—	अठारहनातेकीकथा	२१३		जम्बूस्वामीचरित्र	१६६
	मरुदेवीसज्जाप	४५०		पद	५८०, ५८२
	महावीरजीचौढालया	४५०			५८३, ५८४, ५८५
	विजयकुमारसज्जाप	४५०			५८६, ५८७, ५८८
	शान्तिनाथस्तवन	४१७		क्षेत्रिकचरित्र	२०४
	शीतलनाथस्तवन	४५१	विजयदेवसूरि—	नेमिनाथरास	३६२
लालजीत—	तेरहकी गूजा	४८४		शीलरास	३६५, ६१७
ब्रह्मलाल—	जिनवरव्रतजयमाला	६८५	विजयमानसूरि—	श्रीवांसस्तवन	४५१
लालचर्द्धन—	पाण्डवचरित्र	१७८	विद्याभूषण—	गीत	६०७
ब्रह्मलालसागर—	राभोकारछंद	६८३	विजयकीर्ति—	अष्टाह्निकाव्रतकथा	६१४
लूणकरणकासलीवाल—	चौबीसतीर्थकरस्तवन	४३८			७८०, ७८४
	देवकीकीढाल	४३६	विजयचंद—	केवलज्ञानसज्जाप	३८५
साहलोहट—	अठारहनातेकीकथा		विनोदीलाललालचंद—	कृष्णपञ्चमी	७७३
	(चौढालया)	६२३		चौबीसीस्तुति	७७३, ७७६
		७२३, ७७५, ७८०, ७८८		चौरासीजातिका	
	द्वादशानुप्रेक्षा	७६६		जयमाल	३६६
	पार्श्वनाथकीगुणमाला	७७६		नेमिनाथकेनवमंगल	४४०
	पार्श्वनाथजयमाल	६४२			६८५, ७२०, ७३४
		७८१		नेमिनाथकाबारहमासा	७५३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पूजाष्टक	७७७	वृजलाल—	बारहभावना	६८५
	पद	५६०, ६२३ ७५७, ७८३, ७९८	वृन्दकवि—	वृन्दसतसई	३३३ ६७५, ७५१, ७८५
	भक्तामरस्तोत्रकथा	२३४	वृन्दावन—	कवित्त	६८२
	सम्पत्त्वकौमुदीकथा	२५२		चतुर्विंशतितीर्थं रपूजा	४७१
	राजुलपञ्चवीसी	६०० ६१३, ६२२, ६४३ ६५१, ६८५ ७४७, ७५३		छंदशतक	३२७
				तीस चौबीसीपूजा	४८३
				पद	६२५, ६४३
				प्रवचनसारभाषा	११४
विमलकीर्ति—	बाहुबलीसज्जाय	४४६	शंकराचार्य—	पुहूर्तमुक्तावलिभाषा	७६८
विमलेन्द्रकीर्ति—	आराधनाप्रतिबोधसार	६५८	शांतिकुशल—	अञ्जनाभारत	३६०
	जिनचौबीसीभवान्तर	रास ५७८	ब० शांतिदास—	अनन्तनाथपूजा	६६०, ७६५
विमलविनयगणि—	अनाथोसाधचौढालिया	६८०		आदिनाथपूजा	७६५
	ग्रहचक्रचौढालियागीत	४३५	शालिभट्ट—	बुद्धिरास	६१७
विशाखकीर्ति—	धर्मपरीक्षाभाषा	७३५	शिवरचंद—	तत्त्वार्थसूत्रभाषा	३०
विश्वभूषण—	अष्टकपूजा	७०१	शिरोमणिदास—	धर्मसार	६३, ६६६
	नेमिजीकीर्मंगल	५६७	ऋषिशिष्य—	नेमिस्तवन	४००
	नेमिजीकीलहुरि	७४६, ७७८	शिवजीलाल—	चर्चासार	१६
	पद	४४५, ६६८		दर्शनसारभाषा	१३३
	पार्श्वनाथचरित्र	५६८		प्रतिष्ठासार	५२२
	विनती	६२१	शिवनिधानगणि—	संयहणीबालावबोध	४५
	हेमकारी	७६३	शिवलाल—	कवित्तचुगलखोरका	७८२
विश्वामित्र—	रामकवच	६६७	शिवसुन्दर—	पद	७५०
त्रिसनदास—	पद	५८७	शुभचन्द्र—	अष्टाङ्गकागीत	६८६
वीरचंद—	जिनान्तर	६२७		आरती	७७६
	संबोधसत्ताणु	३३६		क्षेत्रपालगीत	६२३
वेणीदास [ब० वेणु]—	पांचपरवीरतकीकथा	६२१ ६८५		पद	७०२, ७२४ ७७७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
श्रीभाचन्द्र—	शिवादेवीमाताकोम्राठवों	७२४		श्रकलकाष्टकभाषा	३७६
	श्रीनृपालभैरवगीत	७७७		वृषिमंडलपूजा	७२६
	पद	५८३, ७७७		तत्त्वार्थसूत्रभाषा	२६
श्यामदास—	तीसवीं बीसी	७५८		दशलक्षणधर्मवर्णन	५६
	पद	७६४		नित्यनियमपूजा	४६६
	श्यामबत्तीसी	७६६		न्यायदीपिकाभाषा	१३५
श्याममिश्र—	रागमाला	७७१		भगवतीप्राराधनाभाषा	७६
श्रीपाल—	विषष्टिशलाकाखंड	६७०		मृत्युमहोत्सवभाषा	११५
	पद	६७०		रत्नकरण्डधावकाचार	८२
श्रीभूषण—	अनन्तचतुर्दशीपूजा	४५६		षोडशकारणभावना	८८, ६८
	पद	५८३	सबलसिंह—	पद	६२४
श्रीराम—	पद	५६०	सभाचन्द्र—	चुहरि	७२४
श्रीवद्वत्—	गुरारुपानगीत	७६३	सवाईराम—	पद	५६०
मुनिश्रीसार—	स्वार्थदीपी	६१६	समयराज—	पार्श्वनाथस्तवन	६६७
संतदास—	पद	६५४	समयसुन्दर—	अनाशीमुनिसंज्ञा	६१८
संतराम—	कवित्त	६६२		अरहनासज्जाय	६१८
संतलाल—	सिद्धचक्रपूजा	५५४		आदिनाथस्तवन	६१६
संतीदास—	पद	७५६		कर्मछत्तीसी	६१६
संतोषकवि—	विषहरणविधि	३०३		कुशलगुरुस्तवन	७७६
मुनिसकलकीर्ति—	आराधनाप्रतिबोधसार	६८५		क्षमाछत्तीसी	६१७
	कर्मचुरव्रतवेलि	५६२		गौडीपार्श्वनाथस्तवन	६१७
	पद	५८८			६१६
	पार्श्वनाथाष्टक	७७७		गीतमपृच्छा	६१६
	मुक्तावलिगीत	६८६		गीतमस्वामीसज्जाय	६१८
	सोलहकारणरास	५६४		ज्ञानपंचमीवृहदस्तवन	७७६
		६३६, ७८१		तीर्थमालास्तवन	६१७
सदासागर—	पद	५८०		दानतपशोलसंबाद	६१७
सदासुखकासलीवाल—	अर्थप्रकाशिका	१		नमिराजपिसज्जाय	६१८
				पंचयतिस्तवन	६१६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पद	५७६, ५८८	सुखानंद—	पंचमेखपूजा	५०५
		५८६, ७७७	सुगनचंद—	चतुर्विंशतितीर्थकर	
	पद्मलतोराजीप्राराधना	६१७		पूजा	४७३
	पद्मावतीस्तोत्र	६८५	सुन्दर—	कपडामाला का दूहा	७७३
	पार्श्वनाथस्तवन	६१७		नारिकेलक्षणा	७४२
	पुण्यलक्ष्मीसी	६१६		पद	७२४
	फलवर्धनीपार्श्वनाथस्तवन	६१६		सहेलीगीत	७६४
	बाहुबलिसंज्ञाय	६१६	सुन्दरगणि—	जिनदत्तशूरिगीत	६१८
	वीरधिरहमानजकडी	६१७	सुन्दरदास—।	कवित्त	६४३
	महावीरस्तवन	७३५		पद	७१०
	मेघकुमारसंज्ञाय	६१८		सुन्दरविलास	७४५
	मौनएकादशीस्तवन	६२०		सुन्दरशृंगार	७६८
	राणपुरस्तवन	६१६	सुन्दरदास—II	सिन्दूरप्रकरणभाषा	३४०
	बलदेवमहामुनिसंज्ञाय	६१६	सुन्दरभूषण—	पद	५८७
	विनती	७३२	सुमतिकीर्त्ति—	क्षेत्रपालपूजा	७६३
	शत्रुञ्जयतीर्थरास	६१७, ७०७		जिनस्तुति	७६३
	श्रेणिकराजासंज्ञाय	६१६	सुमतिमागर—	दशलक्षणव्रताद्यापन	६३८
	संज्ञाय	६१८			७६५
सहसकीर्त्ति—	आदीश्वररेखता	६८२		व्रतजयमाला	७६५
साईदास—	पद	६२०	सुरेन्द्रकीर्त्ति—	आदित्यवारकथाभाषा	७०७
साधुकीर्त्ति—	सत्तरभेदपूजा	७३५, ७६०		जैनबट्टीमूडबट्टीकीयात्रा	३६६
	जिनकुशलकीस्तुति	७७८		पद	६२२
सालम—	आत्मशिक्षासंज्ञाय	६१६	सूरचंद—	सम्मोदशिक्षरपूजा	५५०
साहकीरत—	पद	७७७	सूरदास—	समाधिमरणभाषा	१२७
साहिवराम—	पद	४४५, ७६८		पद	६८४
सुखदेव—	पद	५८०			७६६, ७६३
सुखराम—	कवित्त	७७०	सूरजभानथोसवाल—	परमात्मप्रकाशभाषा	११३
सुखलाल—	कवित्त	६५६	सूरजमल—	पद	५८१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
कविसूरत—	द्वादशानुप्रेक्षा	७६४		निर्वाणक्षेत्रमंडलपूजा	४६८
	बारहखंडी	६६, ३३२, ७१५		पंचकुमारपूजा	७५६
		७८८		पूजापाठसंग्रह	५११
सेवगराम—	अनन्तनाथपूजा	४५६		मदनपराजय	३१८
	आदिनाथपूजा	६७५		महावीरस्तोत्र	५११
	कविल	७७२		सृष्ट्युरावलीशांतिमंडल	
	जिनगुणपञ्चीसो	४४७		(चौसठऋद्धिपूजा)	४७६, ५११
	जिनयशमंगल	४४७		सिद्धक्षेत्रीकीपूजा	५५३, ७८६
	पद	४४७, ७८६, ७६८		सुगन्धदशमीपूजा	५११
	निर्वाणकाण्ड	७८८	हंसराज—	विज्ञप्तिपत्र	३७४
	नेमिनाथकीभावना	६७४	हठमलदास—	पद	६२४
सेवारामपाटनी—	मल्लिनाथपुराण	१५२	हरखचंद—	पद	५८३, ५८४
सेवारामसाहू—	अनन्तग्रन्थपूजा	४५७			५८५
	चतुर्विंशतितोर्थकरपूजा	४७०	हरचंदअमवाल—	सुकुमालचरित्र	२०७
	धर्मोपदेशसंग्रह	६४		पंचकल्याणकपाठ	४००
सोम—	चितामणिपार्श्वनाथ				७६६
	जयमाल	७६२	हर्गूलाल—	सज्जनचित्तकलसभ	३३७
सोमदेवसूरि—	देवराजवच्छराजचौपई	२२८	हर्षकवि—	चंद्रहंसकथा	७१४
सोमसेन—	पंचक्षेत्रपालपूजा	७६५		पद	५७६
ह्यो जीरामसौगण्डी—	लग्नचंद्रिका	७५१	हर्षकीर्ति—	जिणभक्ति	४३८
रत्नरूपचंद—	ऋद्धिसिद्धिशतक	५२, ५११		तीर्थकरजकशी	६२२
	चमत्कारजिनेश्वरपूजा	५११		पद	५८६, ५८७
		६६३			५८८, ५६०, ६२१
	जयपुरनगरसंबंधी				६२४, ६६३, ७०१
	चेत्यालयोंकीवंदना	४३८			७५०, ७६३, ७६४
		५११		पंचमणिवेलि	६२१
	जिनसहस्रनामपूजा	४८०			६६१, ६६८, ७५०
	त्रिलोकसारचौपई	५११			७६५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पार्श्वनाथपूजा	६६३		विनती	६६३
	बीसतीर्थंकरों की जकड़ी			स्तुति	७७६
	(जयमाल) ६४४, ७२२		हीरकवि—	सागरदत्तचरित्र	२०४
	बीस विरहमानपूजा	५६५	हीराचंद—	पद	४४७, ५८१
	भावककीकरणौ	५६७		पूजासंग्रह	५१६
	षट्क्षेप्याबेलि	७७५	हीरानंद—	पंचास्तिकायभाषा	४१
	सुखधनी	७४६	हीरालाल—	चन्द्रप्रभपुराण	१४६
हर्षचन्द—	पद	५८५, ६२०	हेमराज—	गणितसार	३६७
हर्षसूरि—	अर्वाक्षिपार्श्वजिनस्तवन	३७६		गोम्मटसारकर्मकाण्ड	१३
पांडेहरिकृष्ण—	अनन्तचतुर्दशीप्रत			द्रव्यसंग्रहभाषा	७३३
	कथा	७६६		पंचास्तिकायभाषा	४१
	आकाशपंचमीकथा	७६४		पद	५६०
	निर्दोषसप्तमीकथा	७६८		शतवत्सलभाषा	११३
	निशल्याष्टमीकथा	७६५		तयचक्रभाषा	१३४
हरिचरणदास—	कविवल्लभ	६८८		बावनी	६५७
	बिहारीसतसईटीका	६८७		भक्तामरस्तोत्रभाषा	४१०
हरीदास—	ज्ञानोपदेशबत्तीसी	७१३		५६६, ६४८, ६६१	
	पद	७७०		७०७, ७७४	
हरिचन्द—	पद	६४६		साधुकीश्वरती	७७७
हरिसिंह—	पद	५८२, ५८५, ६२०		सुमन्धदशमीकथा	२५४
		६४३, ६४४, ६६६			७६५
		७७२, ७७६, ७६६	मुनिदेमसिद्ध—	आदिनाथगीत	४३६



→ शासकों की नामावलि →

अकबर	६, १२२, १६७, ५६१, ५६२	चन्द्रगुप्त	६२०
(इकबतर)	६८१, ७६७, ७७३	चित्रगदमोडीये	५६२
अजैपालपवार	५६२	छत्रसाल	४०६
अणहलगुवाल	५६२	जगतसिंह	१७०, १८१, ३६६, ७७६
अनंग गालतुंबर	५६१	जगपाल	६६
अरविंद	५६८	जयसिंह (सवाई)	५३, ७१, ६३, ६६, १२०
अलाउद्दीन	३५६, २५६		१२८, २०४, ३०५, ४८२
(अलावदीन)			५१५, ५२०, ५६१
अलावलखा	१५७	जयसिंहदेव	१४५, १७६
अलावद्दीनलोदी	५६	जहांगीर	४१, १४४
अहमदशाह	२१६, ५६१	जैतसी	५६२
आलम	२५१	जैसिंह (सिधराव)	५६२
औरंगजेब	६७, ४७८, ५५४, ६६८	जोधावत	५६१
औरंगसाहि पालसाहि	३१, ३६, ५६२	जोषी	५६१
इन्द्रजीत	७४३	टोडरमल	७६७
इब्राहीमलोदी	१४२	इंगरेन्द्र	१७२
इब्राहीम (सुलतान)	१४५	तैतबो	५६२
ईसरीसिंह	२२६	देवडो	५६२
ईश्वरसिंह	२३१	नाहरराव (पवार)	५६१
उदयसिंह	२०६, २५१, ५६१, ५६२	नौरंगजीव	३०५
उभेसिंह	२१६	नौरंग	४४८
किशनसिंह	५६२	पूरणमल्ल	१६४
कीर्तिसिंह	२६५	पेरोजामाह	७८
कुशलसिंह	४८	पृथ्वीराज	१०७
केशरीसिंह	३४७	पृथ्वीसिंह	७१, १४४, ६८३, ७६७
सेतसी	१६०	प्रतापसिंह	२७, १४६, १८६, ४५७, ४६१
गयामुद्दीन	५३	फतेसिंह	४८०
गजुद्दीहबहादुर	१२५	वस्तावरसिंह	७२६
बडसीराय	१७२	बहलोलशाह	६२

बाबर	१६३	रामस्यंघ	२२६
बीबी	५६१	रायचंद	४४
बुधसिंह	५, १०॥	रायमल्ल	३८१
भगवंतसिंह	३४	रायसिंह	२४६, ३२०
भाटीजीसे	१५१, १८८	लालाह	५२२
भारामल	५६१	सिद्धमण्युख	२२६
भाबसिंह	७१	बसुदेव	४३६
भाबसिंह (हाडा)	३६	विक्रमसाहि	५६७
भोज	५६१	विक्रमादित्य	२५१, २५३, ६१२
भोजदेव	३५	विजयसिंह	२८३
भकरधुज	४३६	विमलमंथेश्वर	५६२
मदन		विश्वसिंह	२८३
महमदखान	१०	वीदे	५६१
महमदसाह	१५६	वीरनारायण (राजाभोजकापुत्र)	५६१
महमूदसाहि	१८८	वीरमदे	५६२
महाशेरखान	५३	वीरबल	६८१
माधोसिंह	१०४, १६२, ५५१, ६३६	शक्तिसिंह	३७
माधवसिंह	६३८	शाहजहां	६०२, ६६८
मानसिंह	३४, १५६, १८४, १८६ १६२, १६६, ३१३ ४७६, ४८०	श्रीपाल	३५
	५६१, ५६२	श्रीमालदे	१६०
मालदे	१३२	श्रीराव	५६५
मूलराज	६००	श्रेणिक	३६३
मोहम्मदराज	३८६	सलेमसाह	७७, २०६, २१२
रणधीरसिंह	१३१, २७१, ३१३	सांवलवास	१८४
राजसिंह	७२६	सिकन्दर	१४५
राजामल्ल	७७, २४०	सूर्यसेन	४, १६४
रामचन्द्र	२७, १४६, २७४, २७५	सूर्यमल्ल	२६६
रामसिंह	६१०, ६११	संग्रामसिंह	२६३
		मोनदारी	५६१
		हमीर	३७८, ५६१, ६०६



★ ग्राम एवं नगरों की नामावलि ★

अंजनगीर्	७२६	भागरा	१२३, २०१, २५५, ५६१
अंबावतीगढ (आमेर)	४, ३४, ४०, ७१, १२० १६३, १८७, १६६, ४५६		७४६, ७५३, ७७१
अकबरानगर	४७६	आभानेरी	७४८
अकबरवाड़	६, ३६१	आमेर	३१, ७१, ८३, ११६, १२० १३२, १३३, १७२, १८४, १८८, १९०, २३३, २६४ ३३७, ३६४, ३६५, ४२२ ४६२, ६८३, ७५६
अकबरपुर	२५०		
अकीर	३६७	आअगढ	१५१
अजमेर	२१६, ३२१, ३४७, ३७३ ४६६, ५०५, ५६२, ७२६	आलमगंज	२०१
अडोशिनगर	१२	आवर (आमेर)	१८१
अणहिलपत्तन (अणहिलगाट)	१७५, ३५१	आश्रम नगर	३५
अमरसर	६१७	इन्दौर (तुकोगंज)	५४७
अमरावती	४८७	इन्द्रपुरी	३५८, ३६३
अचंती	६६, २७६, ५६७	इं बानतिपुर (मालवदेश में)	३४०
अर्धलपुरदुर्ग (आगरा)	२०६, ३४६	इंदोलली	३७१
अराह्यपुर	१७	ईढर	३७७
अलकापुरी	४३५	ईसरदा	२७, ३०, ५०३
अलवर	२४, ५६७	उग्रियावास	६१६
अलाउपुर (अलवर)	१४४	उज्जैन	१२१, ६८३
अलीगढ (उ. प्र)	३०, ४३७	उज्जैणी (उज्जैन)	५६१
अवन्तिकापुरी	६६०	उदयपुर	३६, १७६, १६६, २४२ २६३, ५६१
अहमदाबाद	२३३, ३०५, ५६१ ५६२, ७५३	एकीहमा नगर	४५४
अहिपुर (नागौर)	८६, २५१	एलिचपुर	१८१
अधी	३७२	औरंगाबाद	७०, ५६२, ६१७
अंबावती	३७२	ककरणलाट	३६७
आवां महानगर	१६४	कद्योविदा	५६२
आवैर (आमेर)	१०७		

कटक	२५४	केरल	३६७
कफोतपुर	१६१	केरवाग्राम	२५०
कमण्ड	३६७	कैलाश	६८२
कडीग्राम	१६३	कोटपुतली	७५७
कनारा (जिला)	२२	कोटा	६४, २२७, ४५०
कर्णाटक	३८६	कोरटा	३२३
कराड	३६७	कोणबी	५६२
करीली	६०४	कुण्ठगढ	१८३, २२१, २६८, ३१६
कलकत्ता	१५१	कुण्ठग्रह (कालाबेहरा)	२१०
कल्पवल्लीपुर	३६३	कुण्डार	४८०
कलिंग	३६७	कुत्तीली	३३७
काडीग्राम	२४६	खिराडदेश	७१
काणोता	३७२	खेटक	२५१
कानपुरफैट	१३४	गंधार	१५५
कामानगर	१२०	गऊड	३६७
कारंजा	२०४	गडकोटा	६३८
कालस	८२	गाजीकाथाना	७१४
कालाबेरा (कालाबेहरा)	४५, २१०	गिरनार	६७०
	३०६, ३७२	गिरपोर	३६२
किरात	३६७	ग्रीवापुर	४०८
किशनगढ	५४, २५३, ५६२	गुजरात	२२४
किहरोर	२१८	गुज्जर (गुजरात)	३६७
कुंकुणदेश	५२२	गुज्जरदेश (गुजरात)	३६३
कुचामण	४४१	गुरुवचनगर	४३६
कुंभनगर	२२	गूलर	३७१
कुंभलमेरुदुर्ग	२५१	गोपावलनगर (बवालियर)	१५५, १७२, २६५, ४५३
कुंभलसेत	३६७	गोलागिरि	३७२
कुरंगण	३६७	गोवटोपुरी	१८१
कुरुआंगलदेश	१४५	गोविन्दगढ	४१०
केकडी	२००	गौन्देर (गोनेर)	३७२

भालिवर	१७२, ४५३
भडसोला	४७५
घाटडी	३७१
घाटमपुर	४१२
घाटसल	२३८
चऊड	३६०
चन्द्रपुरी	४१, १८८, ५३१
चन्द्रापुरी	१७, ३०३
चन्देरीदेश	५३, १७१
चंपनेरी	५६३
चम्पावती (चाकसू)	३०२, ३२८
चम्पापुर	१६४
चमत्कार क्षेत्र	६६३
चाकसू	२२५, २८७, ४३४, ४६७ ४६८, ५६३, ७८०
चान्दनपुर	५४८
चावडरुम	३७२
चावली (आगरा)	५४७
चितीडा	२१३, ५६२
चित्रकूट	३६, १३६, २०६
चीतीडा	१८५, १८६
चूरु	५०२
चोसू	४४०
जम्बूद्वीप	२१८
जयदुर्ग	२७३
जयनगर (जयपुर)	१६, ११२, १२४ १६८, ३०१, ३१६
(सवाई) जयनगर (जयपुर)	१६६, १७०, २६८ ३१८, ३३०
जयपुर (सवाई) जयपुर	७, १६, २५, २७ ३१ ३४, ३६, ४२, ४४, ५२

५३, ६१, ६६, ७१, ७२
७४, ७७, ७८, ८५, ८६, ८९
९३, ९६, ९८, १०२, १०४
११०, १२१, १२८, १३०
१३४, १४०, १४२, १४५
१५२, १५३, १५४, १५५
१५८, १६२, १६६, १७२
१७३, १८०, १८२, १८३
१८६, १८५, १८६, १८७
१८८, २००, २०१, २०२
२०५, २०७, २२०, २२५
२३०, २३१, २३४, २३५
२३६, २३८, २५०, २५३
२५५, २६२, २७४, २७५
२८०, ३०२, ३०४, ३०८
३०६, ३४१, ३५०, ३५७
३६२, ३६४, ३७५, ३८६
३९४, ४१०, ४११, ४२१
४४५, ४५०, ४५६, ४६०
४६१, ४६६, ४७२, ४८१
४८७, ४९४, ४९६, ५०४
५०५, ५११, ५२०, ५२१
५२७, ५३३, ५४६, ५७७
५८१, ६००, ६१५, ६६६
६८३, ७१५, ७२८, ७४४
७६८, ७७५, ७७६
७८०
जलपथ (पानीपत)
जहानाबाद
४१, ७०, ८१, १४२
५५२, ६६८
३८०

जलपथ (पानीपत)

जहानाबाद

जागरू

मालोर	१०६, २०५, ५६२	तिलास	३६७
मौसलपुर	१३२	तुमक	३६७
मौसलमेर	५६१, ६२०	तुमक	३६७
मौसलपुरा	२५, ३१, ६१, ४४६	तोडा (टोडा)	६०६
	५०२, ६०१	दक्खण	३, ६७
मोघपुर	२०५, ३८१, ५६१	द्विविरा	३६७
मोघनेर	२६, ३४, ७४, २३१	बारू	३६५
	२६३, ३०२, ३३३	दिल्ली-देहली	३७, ८८, १२८, १४०
	४५५, ४६१, ४६६		१५६, १७५, १६७, ४४८
	४८७, ४६१, ६४४		४४६, ५६१, ७५६, ७६७
मालरापाटन	१६३	दिवसानगर (दीसा)	३५५
मालाणा	३७२	दूङ्ग	१७२
मिलती	३१४	दुनी	३८०
मिलाय	१७०, ३२६, ४७७	देवगाग्राम	२६१
मोटवाडा	३७२	देवगिरि (दीसा)	१७३, २८६, ३६४
टहटडा	३०२	देवपत्नी	१५६
टीक	३२, १८६, २०३	देवुली	६६
टोडाग्राम	१४८, ३१३	देवल	३७१
छयोडीग्राम	२६३	दीसा-दीसा	१७३, ३२८, ३७२, ३७३
दिगी	४१	द्वयपुर (मालपुरा)	२६२, ४०६
डिडवाना	३११, ३७१	द्वारिका	५९७
दूँदारदेश	३१६, ३२८	घवलखपुर	२५८
एगववाल (नागरवाल)	३६७	घाणानगर	१८
तक्षकगढदुर्ग (टोडारामसिंह)	७७	धारानगरी	३५, १३३, १४५, १७६
	१३८, १७५, १८३, २००	नंदतटग्राम	६२
	२०५, २३६, ३१३, ४६४	नंदपुर	७७४
तमाल	३६७	नगर	२२७, ५६२
तारणपुर	२०१	नगरा	४३५
तिजारा	१४४, १५७	नयनपुर	११८
तिलस	३६७	नखरनगर	५२

ग्राम एवं नगरों की नामावलि]

[६३५]

नरवल	२३७	पाली	३६३
नरायणा	११७, ३५३, ३६२, ४१४	पावटा	६४६, ७०६
नरायणा (बडा)	२८४	पावागिरि	७३०
नलकच्छपुरा	१४५	पिपलाइ	३६३
नलवर दुर्ग	५२४	पिपलीन	३७३
नवलक्षपुर	२१२	पुण्या	४४१
नागल	३७२	पूर्णासनगर	२००
नागरचालवेश	४४८	पूरवदेश	३६७
नागपुरनगर	३३, ३६, ८८, २८०, २८२ ३८४, ४७३, ५४३	पैरोजकोट	२७८
नागपुर (नामौर	७३५, ७६९	पैरोजापत्तन	६२
नागौर	३७३, ४६६, ४८८ ५६०, ७१८, ७६२	पोदमानगर	५६८
नामादेश	३७	फलीहपुर	३७१
निमखपुर	४०७	फलीधी	५६२
निराही (नरायणा)	३७०	फागपुर	३४
निवासपुरी (सांगानैर)	२८६	फागी	३१, ६८, १७०
नीमैडा	७६६	फौकली	३७१
नेवटा	१६८, २५०, ४८४, ४८७	बंग	३६७
नेणवा	१७, ३४१	बंगाल	४७६
पइलतपुर	४३६	बंधगोपालपुर	३६३
पखिरनगर	४२, ४८०	बगरू	६६
पहन	३८७	बगरू-नगर	७४, २७०
पनवाडेनगर	७१	बणहटा	३४२, ४४८
पलाडा	५६२	बटेरपुर	१५३
पांखोलास	७३	बनारस	४५३
पाटण	२३०, ३०४, ३६६, ५६२	बरब्बर	३६७
पादनपुर	४४६	बराह	३६७
पानीपत	७०	बसई (बस्सी)	१८६, २६६, ४१५
पालव	६८२	बसवानगर	१६५, १७०, ३२०, ४४६
			४८४, ७२१
		बहादुरपुर	१६७, १६८

वागडदेश	६७, १५४, २३४	भथुरा	४७८
वाणपुर	११६	मधुपुरी	३१६
वापनगर	५७६	मनोहरपुरा	७५६
बाराहदरी	३७२	मनारना	०७६
बालाहेडी	२८८	मस्तथल	३६७
बासी	५०६	मसूतिकापुर	४०
बीकानेर	५६१, ५६२, ६८४	मलयखेड	२०४
बुन्दी	८४, ४०६	महाराष्ट्र	२५३
बैराठ	६७, ५६४	महुवा	२५, २६४, ४५५, ४७३
बैराठ (बैराठ)	२०४	महेत्रो	५६१
बीलीनगर	४८, १५६, १८३	माधोगुर	२६८
ब्रह्मपुरी	६६८	माधोराजपुरा	३३३, ४५५
भडोच	३७१	मारवाड	४४०
भदावरदेवा	२५४, ३४०	मारोठ	१६३, ३१२, ३७२
भरतखण्ड	१४३		३८४, ५६२, ५६३
भरतपुर	३८६	मालकोट	५६१
भानगड	३७२	मालपुरा	४, २८, ३४, ५६, १२२, १३०
भानुमतीनगर	३०५		२३१, २४८, २४६, २६२, ३०१
भाननगर	११७		३४२, ३४३, ३४४, ४६०, ५६२
भिण्ड	२५४		६३६, ७६८
भिरुद	२६७	मालखदेश	३५, २००, ३४०, ३६७
भिलोड	१६८	मालहपुर	३४
भैसलाना	३०३	मिथिलापुरी	५४३
भोपाल	३७३	मुकुन्दपुर	७७०
भृगुवल्हपुरी	२१०	मुलतान	१११, ५६२
मंडोघर	५६१	मूलतान (मुलतान)	१७७
मंडानगर	७०६	मेडता	१८४, ३७२, ५६१
मांडोडी	३७१	मेहरग्राम	३०
मांडोगढ	५३	मेदपाठ	२०५, ३८१
मुंदावसी	७४	मेवाड	३७१
मंडलाणापुर	२५१	मेवाडा	३७२

ग्राम एवं नगरों की नामावलि]

[६३७]

मोहनवाडी	४६०	रैगवात	४१०
मोहा	११२, ४५७, ५२०	रैनवाल	३४५, ६६५
मोहाणा	१२८	रैवासा	२००
मैनपुरी	४६	लखनऊ	१२५
भोजमाबाद	५६, ७१, १०४, १७४	ललितपुर	१७८
	१६२, २०८, २५५, ४११	लश्कर	२३६, ३८६, ७००
	४१२, ४१६, ४१७, ५४३	लाखेरी	६६५
यशनपुर	३४३	लाइशा	१८६
योगिनीपुर (दिल्ली)	२६४	लावा	४२
यीवनपुर	३०७	जालसोड	३०
रामतभंवर (रणथंभीर)	३७१	लाहौर	६६८, ७७१
रणथंभीरगढ़	७१२, ७४३	लूणाकर्णसर	७
रणस्तभदुर्ग (रणथंभीर)	२१२	वनपुर	२११
रतीय	३७१	बाम	२०१
रुहितगपुर (रोहतक)	१०१	विक्रमपुर	१६४, २२३
राजपुर नगर		विदाध	३७१
राजगढ़	१७६	विमल	५६२
राजग्रह	२१७, २५४, ३६३	वीरमपुर	१७८
रांछपुरा	४५०	वृन्दावती नगरी	५, ३६, १०१, १७८, २००
राणपुर	६१६		४२२
रामगढ़ नगर	१४६, ३७०	वृन्दावन	४, ११०, २७६
रामपुर	१३, ३५६, ३७१	वेसरे ग्राम	५३
रामपुरा	५६, ४५१	वैरागर ग्राम	४६, २१०
रामसर (नगर)	१८१	वैराट (वैराठ)	१०६
रामसरि	६६	वोराब (वोराज) नगर	५६४
रामदेश	१६७	वेमलासा नगर	१५४
रावतफलोधी	५६१	शाकमडगपुर	४५८
राहेरी	३७२	शाकवाटपुर	१५०
रेवाडी	६२, २५१	शाहजहांनाबाद	४७, १०८, ५०२
रैगपुरा	५६२		६०१

शिवपुरी	७३५	सागवत्तन नगर (सागवाडा)	१५४
शुजाउलपुर	८०	सागवाडपुर	५०८
शेरगढ	६८२, ७७१	सागवाडा	६७, १४१
शेरपुर	५०, २१२, ३६६	सावडी	३१३
शेरपुरा	१३६	सामोद	८३
श्रीपत्तन	१३८	सारकग्राम	७
श्रीपथ	८५, ३६५	सारंगपुर	८५, १२६
संग्रामगढ	२१४	सालकोट	५६६
संग्रामपुर	३४१, ५५४	साहीवाड	४६०
सांखीरा	१६०	सिकंदरपुर	४४
सांगानाथर (सांगानेर)	६७८	सिकंदराबाद	७७, १४२, १५५, ३६७
सांगानेर	३४, ६३, ७३, ६३, १३६ १४४, १४८, १४६, १५३ १५६, १६४, १८१, २०२ २०७, २२६, ३०१, ३७१ ३८४, ३६५, ४०८, ४२० ४६०, ४८५, ४८८, ७७५	सिमरिया	५६५
सागावती (सांगाथर)	१६५	सिरोही	५६२
सांभर	३७१	सीकर	४६६
सयाणा नगर	२६०	सिरोज	८४, ६१३
सनाबद	३४२	सीलपुर	२५६
समरपुर	४८७	सीलीरनगर	३४, १२६
समीरपुर	१२७	सुपौट	३६७
सम्भेदशिखर	३७३, ६७८	सुवेट	३६७
सल्लक्षणापुर	२४३	सुभोट	३६७
सवाई माधोपुर	६३, ७०, १३२, १५४ ३७०, ६६३	सुम्हेरवाली आंधी	३७२
सहारनपुर	३३७	सुरंगपत्तन	३८६
सहिजानन्दपुर	२७६	सुप्रानगर	५८१
साकेत नगरी	३	सुरत	६७०
		सूर्यपुर	५५६
		सेवाणो	५६१
		सौनागिरि	५५६, ६७४, ७३०
		सोभवा (सोजत)	१६१
		सीरठदेश	५६७
		हांसी	१८१

ग्राम एवं नगरों की नामावलि]

(६३६

हिण्डीन	२५०, २६६, ७०१, ७२६	हाथरस	१४३
हथिकंतपुर	५६७	हिरण्ड	२०२
हरसौर	१८४	हिमाचल	३६७
(गढ) हरसौर	६३६	हिरणोदा	६४४
हरिदुर्ग	२००, २६६	हिसार	६२, २७८
हरिपुर	१६७	हीरापुर	२३०
हलसूरि	७३४	हुडवतीदेश	१७
हाडौती	९०५	होलीपुर	१५८



★ शुद्धाशुद्धि पत्र ★

पत्र ए ' पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१×४	अथ प्रकाशिका	अर्थ प्रकाशिका
६×८	धिकठ	किषठ
७×२६	गोमट्टसार	गोमसट्टसार
१६×६	३०४	३१४
१७×१६	१८१४	१८४४
३१×११	तत्त्वार्थ सूत्र भाषा	तत्त्वार्थ सूत्र भाषा-जयवंत
३८×१०	वे. सं. २३१	वे. सं. १६६२
४४×४	५४५	५४६
४४×२४	वष	वर्षे
४८×२२	—	५६६
५०×१२	नयचन्द्र	नयनचन्द्र
५३×१	कात	काल
५५×२६	साह	साह
५६×१५	र. काल	ले० काल
६३×६	न्योपार्जित	न्यायोपार्जित
६६×१०	भूधरदास	भूधरमिश्र
६६×१३	१८७१	१८०१
७५×१८	बालाविबोध	बालावबोध
७५×२१	आधार	आचार
७६×१३	श्रीनंदिगण	—
८८×१	सोनगिर पच्चीसी	सोनागिरपच्चीसी
८८×६	१४ वीं शताब्दी	१६ वीं शताब्दी
१०४×२०	१४४१	१३४१
१२१×१	धर्म एवं आचारशास्त्र	अध्यात्म एवं योग शास्त्र

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१३१×१	त्र	च
१४०×२८	१७२८	१८२८
१४६×७		१० कालसं० १६६६
१४६×७	१० काल	ले० काल
१६४×१०	१०४०	२०४०
१६४×१	सं० १७८४	सं० १४८४
१७१से१७६	क्र० सं० ३००० से ३०४८	क्र० सं० २१०० से २१४८
१७६×२८	रङ्गू	कवि तेजपाल
१८१×१७	दमस्त	नादमस्त
१८२×६	३२१८	२३१८
१८२×१४	भट्टार	भट्टारक
२०८×६	१७७४	१७१४
२१६×११	आकाशपंचमीकथा	आकाशपंचमीकथा
२१६×६	धर्मचन्द्र	देवेन्द्रकीर्ति
२४२×२४	वर्द्धमानमानस्य	वर्द्धमानमानस्य
२६४×१६	२१२०	३१२०
३११.१२	३२८	३२८०
३१६×१०	नेमिचन्द्राचार्य	पद्मानन्दि
३२०×१४	३६३	३३६३
३३६×१३	भक्तिलाल	भक्तिलाभ
३६६×-	३६८-३७४	३६६-३७६
३८४×१	कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका	कल्याणमाला
३८६×४		और
३६६×४	अणुभा	कनककुशल
४०१×२१	भूपालचतुर्विंशति	भूपालचतुर्विंशतिटीका
४४६×२४	संस्कृत	हिन्दी
४६४×१२	भादवापुरी	भादवासुदी
४०२×८	पञ्चगुरुकल्याण पूजा	पञ्चगुरुकल्याण पूजा
४४७×२	पाटोंकी	पाटोकी

पत्र एवं पक्ति

५७३×१६

५७४×१२

५७४×१३

५७५×१०

५७६ २०

५८८×१७

५९१×१०

५९४×१८

६०७×२२

६१६×२

६१४×१७

६२३×२३

६२३×२४

६२८×१४

६२८×२१

६३५×१०

„ ×१६

६३६×१४

६३७×१०

६३८×१०

„ ×२६

६४२×६

६४५×४

६४८×६

६४९×१७

६६१×२

६७०×१५

६७१×१२

६८०×२५

६९१×६

अशुद्ध पाठ

संस्कृत

संस्कृत

—

संस्कृत

रसकौतुकरायसभा रञ्जन

छानतराय

„

सोलकारणरास

पद्मावतीछन्द

पडिकम्मणसूत्र

५४५१

नानिगरास

जग

प्राकृत

योगचर्चा

अपभ्रंश

आ० सोमदेव

अपभ्रंश

स्वयम्भूस्तोत्रदृष्टोपदेश

पंचकल्याण पूजा

त

रामसेन

„

रायमल्ल

कमलमलसूरि

पधात्रा

पञ्चीसी

ज्योतिर्व्यटमाला

कल्याणमन्दिर स्तोत्र

नन्दराम

शुद्ध पाठ

प्राकृत

प्राकृत

संस्कृत

अपभ्रंश

रसकौतुकराजसभा रञ्जन

द्यानतराय

—

सोलहकारणरास

पद्मावतीछन्द

पडिकम्मणसूत्र

५४३१

नानिगरास

जग

अपभ्रंश

योगचर्चा

प्राकृत

सोमप्रभ

संस्कृत

दृष्टोपदेश

पंचकल्याणपूजा

कृत

रामसिंह

संस्कृत

ब्रह्म रायमल्ल

कमलप्रभसूरि

वधावा

जैन पञ्चीसी

ज्योतिर्पटलमाला

कल्याणमन्दिर स्तोत्र

नन्ददास

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
७१६×६	नन्दराम	हिन्दी
७३१×२१	"	—
७३२×६	"	हिन्दी
७३३×३,४	हिन्दी	संस्कृत
७३३×५	"	हिन्दी
७३८×२६	ब्रह्मरायवल्ल	ब्रह्म रायमल्ल
७५०×६	मानसिंह	मानसिंह
७५४×१८	अभयदेवसूरि	अभयदेवसूरि
७५५×१७	"	अपभ्रंश
७६५×५	१८६३	१६६३

